

الدُّرُّ الْمُنْضُودُ

لِحِكْمَةِ

سَيِّدِنَا أَبِي دَاوُدَ

أَقَادِمَاتُ

حَضْرَتِ قَوْلَانَا الْمُتَمَيِّزِ صَيْبِ
صَدْرِهِ مَدْرَسَةِ عِلْمِهَا بِمَدِينَةِ نَجْدِ تَبُوكَ عِنْدَ

مَجْمُوعَاتُ

- 1) دِكْرَابِهَا أَقَابُهَا كَيْفَ وَأَكْبَرُ عَزِيمَتِهَا كَيْفَ تَقْتَضِيهَا
- 2) دِهْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا
- 3) دَقَائِقُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا
- 4) كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا
- 5) كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا
- 6) كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا
- 7) كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا
- 8) كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا وَأَوْدَانُهَا كَيْفَ تَقْوِيهَا





www

Maktaba Tul Ishaat .com



تمام فنون کے کتب کے پی-ڈی-ایف ہمارے ویب سائٹ سے اور پلے سٹور سے فری ڈاؤن لوڈ کریں۔ ہم روزانہ کی بنیاد پر اس میں مزید کتب شامل کر رہے ہیں اس لیے آپ ہفتے میں ایک بار ضرور ہمارے پلے سٹور اور ویب سائٹ کو چیک کیا کریں۔

ابھی مطلوبہ پی-ڈی-ایف مفت ڈاؤن لوڈ کریں

| | | |
|-------------|-------|------------|
| منطق | خطبات | تفاسیر |
| معانی | سیرت | احیث |
| تصوف | تاریخ | فقہ |
| تقابل ادیان | صرف | سوانح حیات |
| تجوید | نحو | درس نظامی |
| نعت | فلسفہ | لغت |
| تراجم | حکمت | فتاوی |
| تبلغ و دعوت | بلاغت | اصلاحی |

تمام فنون

مکتبۃ الاشاعت ڈاٹ کام
Maktaba Tul Ishaat.com

الدر المنضود

فی حل

سنن ابي داؤد

افادات:- حضرت مولانا محمد عاقل صيب

صدر مدرس مظهر العلوم سهارنپور (هند)

مترجمين

[رفقاء] دار التصنيف والتحقيق

زیر نگرانی

مولانا شاة فيصل فاضل وفاق المدارس

پشتو..... شپيرم جلد

خصوصيات

- ① د کتاب په اول کښې د اصول حديث مفیده مقدمه
- ② د بذل المجهود شرح ابي داود عربي شرحي خلاصه اونجوړ
- ③ د متن ټولو احاديث ته اعراب ورکول
- ④ د هر کتاب په اول کښې هغې سره متعلقه ضروري مباحث
- ⑤ د هر حديث تخريج د مصدر، کتاب او رقم په حولي سره
- ⑥ د مشکوٰلغاتو حل
- ⑦ په فقهي مباحثو کښې د مذاهبيو بيان
- ⑧ د فريق مخالف دلائل
- ⑨ د فريق مخالف د دلائلو څخه جوابونه
- ⑩ د مذهب حنفي دلائل او وجوه ترجيح

خوړونکي

فيصل کتب خانہ محلہ جنگی پيښور

د چھاپ حقوق صرف ناشر سره محفوظ دی

د کتاب نوم: الدر المنضود فی حل سنن ابی داؤد
 مؤلف: حضرت مولانا محمد عاقل صاحب دامت برکاتہم
 زیر نگرانی: مولانا شاہ فیصل فاضل وفاق المدارس
 خورونکی: فیصل کتب خانہ محلہ جنگی پینبور

د ملاویدو پتی

- د مکتبه فخر الدین رازی ہرات [نمائندہ فیصل کتب خانہ دہرات]
- د جدید اسلامی کتب خانہ خوست
 - د المصباح کتب خانہ کابل
 - د روغانیوال کتب خانہ جلال آباد
 - د رحیمی کتب خانہ خوست
 - د حرم کتب خانہ کابل
 - د فلاح کتب خانہ جلال آباد
 - د موئے مبارک کتب خانہ غزنی
 - د مکتبه خواجہ عبداللہ انصاری غزنی
 - د واحدی کتب خانہ خوست
 - د مکتبه رحمانیہ قندھار
 - د دعوت کتب خانہ جلال آباد
 - د تقوی کتب خانہ جلال آباد
 - د نعت کتب خانہ کابل
 - د شریف اللہ کتب خانہ کابل
 - د حقانیہ کتب خانہ گردیز
 - د مسلم کتب خانہ جلال آباد
 - د مکتبه نعمانیہ غزنی
 - د کودر کتب خانہ جلال آباد
 - د مسلم کتب خانہ خوست
 - د حاجی سردار کتب خانہ کابل
 - د مکتبه رشیدیہ کابل

خپرونکی

فیصل کتب خانہ

مدینہ تاور محلہ جنگی پینبور قصہ خوانی پینبور
 موبائل ۰۳۲۱۹۰۹۱۸۳۵

فهرست ابواب جلد شتم

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۲۵ | باب في كراهية حرق العدو بالنار..... | ۲۵ |
| ۲۵ | په مسئله الباب باندي كلام..... | ۲۵ |
| ۲۶ | شرح حديث..... | ۲۶ |
| ۲۷ | شرح حديث..... | ۲۷ |
| ۲۷ | باب في الرجل يكره دابته على التصيف او السهم..... | ۲۷ |
| ۲۸ | شرح حديث..... | ۲۸ |
| ۲۹ | يو اشكال او دهغي جواب..... | ۲۹ |
| ۳۰ | د يو بل سوال جواب..... | ۳۰ |
| ۳۰ | باب في الأسير يوثق..... | ۳۰ |
| ۳۱ | مضمون حديث..... | ۳۱ |
| ۳۵ | د ابو جهل د قاتلانو تعيين..... | ۳۵ |
| ۳۵ | باب في الأسير ينال منه ويضرب ويقرّر..... | ۳۵ |
| ۳۶ | مضمون حديث..... | ۳۶ |
| ۳۷ | باب في الأسير يكره على الإسلام..... | ۳۷ |
| ۳۷ | (د كافر قيديانو سره څه معامله كول پكار دى؟)..... | ۳۷ |
| ۳۸ | شرح حديث..... | ۳۸ |
| ۳۹ | ايا په جهاد مع الكفار كنبې اكراه في الدين نشته؟..... | ۳۹ |
| ۳۹ | باب قتل الأسير ولا يعرض عليه الإسلام..... | ۳۹ |
| ۴۱ | په حديث كنبې اشكال او دهغي جواب..... | ۴۱ |
| ۴۲ | مضمون حديث..... | ۴۲ |
| ۴۳ | په حديث كنبې دوه اختلافي فقهي مسائل..... | ۴۳ |
| ۴۴ | باب في قتل الأسير صبراً..... | ۴۴ |
| ۴۴ | شرح حديث..... | ۴۴ |
| ۴۵ | باب في قتل الأسير بالتبيل..... | ۴۵ |
| ۴۶ | باب في المن على الأسير بغير فداء..... | ۴۶ |
| ۴۶ | مضمون حديث..... | ۴۶ |
| ۴۷ | شرح حديث..... | ۴۷ |
| ۴۸ | باب في فداء الأسير بالمال..... | ۴۸ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ٤٨ | شرح حدیث..... | |
| ٤٩ | مشهور اشکال او د هغې جواب..... | |
| ٥٢ | جعراڼه ته د وفد هوازن راتلل..... | |
| ٥٣ | د رسول الله ﷺ سفارش د صحابه کرامو نه د قبيله هوازن دپاره..... | |
| ٥٤ | شرح حدیث..... | |
| ٥٥ | په مال غنیمت کښې د رسول الله ﷺ د حصې بیان..... | |
| ٥٥ | باب فِي الْإِمَامِ يُقِيمُ عِنْدَ الظُّهُورِ عَلَى الْعَدُوِّ بَعْرَضَتِهِمْ..... | |
| ٥٦ | شرح حدیث..... | |
| ٥٦ | باب فِي التَّفْرِيقِ بَيْنَ السَّبِي..... | |
| ٥٧ | په مسئله مترجم بها کښې مذاهب ائمه..... | |
| ٥٨ | د وقعة الحرة ذکر..... | |
| ٥٩ | باب الرُّخْصَةِ فِي الْمُدْرِكِينَ يُفَرِّقُ بَيْنَهُمْ..... | |
| ٦٠ | باب فِي الْمَالِ يُصِيبُهُ الْعَدُوُّ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ثُمَّ يُدْرِكُهُ صَاحِبُهُ فِي الْغَنِيمَةِ..... | |
| ٦٠ | د مسئله مترجم بها تشریح سره د اختلاف ائمه نه..... | |
| ٦١ | د حدیث شرح من حیث الفقه..... | |
| ٦١ | په مسئله مترجم بها کښې د ائمه اربعه مذاهب..... | |
| ٦٢ | د عبد ابق په باره کښې د امام صاحب او صاحبینو رائي..... | |
| ٦٣ | باب فِي عِبَادِ الْمُشْرِكِينَ يَلْحَقُونَ بِالْمُسْلِمِينَ فَيُسْلِمُونَ..... | |
| ٦٤ | په حدیث الباب کښې دوه کارونه قابل تحقیق دی..... | |
| ٦٤ | باب فِي إِبَاحَةِ الطَّعَامِ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ..... | |
| ٦٥ | مضمون حدیث..... | |
| ٦٦ | باب فِي التَّهْيِ عَنِ التَّهْيِ، إِذَا كَانَ فِي الطَّعَامِ قِلَّةٌ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ..... | |
| ٦٦ | شرح حدیث..... | |
| ٦٧ | د حدیث توجیه او تشریح..... | |
| ٦٨ | باب فِي حَمْلِ الطَّعَامِ مِنْ أَرْضِ الْعَدُوِّ..... | |
| ٦٨ | د ترجمه الباب شرح..... | |
| ٦٨ | شرح حدیث..... | |
| ٦٩ | باب فِي بَيْعِ الطَّعَامِ إِذَا فَضَلَ عَنِ النَّاسِ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ..... | |
| ٦٩ | د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت..... | |
| ٧٠ | باب فِي الرَّجُلِ يَنْتَفِعُ مِنَ الْغَنِيمَةِ بِالشَّيْءِ..... | |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|---|------|
| ۷۰ | د ترجمه الباب والا مسئله کښې مذاهب ائمه | ۷۰ |
| ۷۱ | باب فِي الرُّخْصَةِ فِي السَّلَاحِ يُقَاتِلُ بِهِ فِي الْمَعْرَكَةِ | ۷۱ |
| ۷۲ | شرح حديث | ۷۲ |
| ۷۳ | باب فِي تَعْظِيمِ الْغُلُولِ | ۷۳ |
| ۷۴ | شرح حديث | ۷۴ |
| ۷۵ | باب فِي الْغُلُولِ إِذَا كَانَ يَسِيرًا يَتْرُكُهُ الْإِمَامُ وَلَا يُحَرِّقُ رَحْلَهُ | ۷۵ |
| ۷۵ | د ترجمه الباب تشریح : | ۷۵ |
| ۷۵ | د حديث مضمون | ۷۵ |
| ۷۶ | باب فِي عُقُوبَةِ الْغَالِ | ۷۶ |
| ۷۶ | ترجمه الباب والا مسئله کښې د ائمه کرامو اختلاف | ۷۶ |
| ۷۷ | د تحريق متاع الغال حديث په باره کښې د مصنف رائي | ۷۷ |
| ۷۸ | باب التَّهْيِ عَنِ السَّيْرِ، عَلَى مَنْ غَلَّ | ۷۸ |
| ۷۹ | باب فِي السَّلْبِ يُعْطَى الْقَاتِلُ | ۷۹ |
| ۷۹ | د احكام سلب ابتداء | ۷۹ |
| ۸۰ | شرح حديث | ۸۰ |
| ۸۱ | شرح حديث | ۸۱ |
| ۸۳ | د مصنف د كلام مطلب | ۸۳ |
| ۸۳ | باب فِي الْإِمَامِ يَمْنَعُ الْقَاتِلَ السَّلْبَ إِنْ رَأَى وَالْفَرَسَ وَالسَّلَاحَ مِنَ السَّلْبِ | ۸۳ |
| ۸۴ | شرح حديث | ۸۴ |
| ۸۶ | باب فِي السَّلْبِ لَا يُخْمَسُ | ۸۶ |
| ۸۶ | په دې مسئله کښې مذاهب ائمه | ۸۶ |
| ۸۷ | باب مَنْ أَجَارَ عَلَى جَرِيحٍ مُتَخَنٍ يُنْقَلُ مِنْ سَلْبِهِ | ۸۷ |
| ۸۷ | د ترجمه الباب شرح | ۸۷ |
| ۸۷ | د حديث شرح من حيث الفقه ومذاهب الائمة | ۸۷ |
| ۸۸ | باب فِيمَنْ جَاءَ بَعْدَ الْغَنِيمَةِ لَا سَهْمَ لَهُ | ۸۸ |
| ۸۸ | په دې مسئله کښې مذاهب ائمه | ۸۸ |
| ۸۹ | مضمون حديث | ۸۹ |
| ۸۹ | د حديث توجيه د احنافو د طرف نه | ۸۹ |
| ۹۰ | شرح حديث | ۹۰ |
| ۹۱ | شرح حديث | ۹۱ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ٩٣ | باب فِي الْمَرْأَةِ وَالْعَبْدِ يُحْدِيَانِ مِنَ الْغَنِيمَةِ..... | ٩٣ |
| ٩٤ | مضمون الحديث..... | ٩٤ |
| ٩٦ | شرح حديث..... | ٩٦ |
| ٩٧ | شرح حديث..... | ٩٧ |
| ٩٧ | باب فِي الْمُشْرِكِ يُسَهَّمُ لَهُ..... | ٩٧ |
| ٩٧ | استعانة بالمشرك كنبی مذاهب ائمه..... | ٩٧ |
| ٩٨ | باب فِي سُهْمَانِ الْخَيْلِ..... | ٩٨ |
| ٩٩ | باب فِي مَنْ أَسْهَمَ لَهُ سَهْمًا..... | ٩٩ |
| ١٠٠ | مضمون حديث..... | ١٠٠ |
| ١٠٠ | د مجمع بن جاريه حديث د احنافو دليل دي..... | ١٠٠ |
| ١٠١ | د خيبر د غنيمتونو په باره كنبی دوه مختلف روايتونه..... | ١٠١ |
| ١٠١ | د جمهورو د طرف نه د دليل حنفيه جواب..... | ١٠١ |
| ١٠٢ | د جمهور د نقد جواب..... | ١٠٢ |
| ١٠٢ | باب فِي التَّقْلِ..... | ١٠٢ |
| ١٠٢ | د ترجمه الباب شرح :..... | ١٠٢ |
| ١٠٣ | د حديث مضمون او د هغې شرح..... | ١٠٣ |
| ١٠٥ | مضمون حديث..... | ١٠٥ |
| ١٠٥ | باب فِي نَفْلِ السَّرِيَّةِ تَخْرُجُ مِنَ الْعَسْكَرِ..... | ١٠٥ |
| ١٠٦ | شرح حديث..... | ١٠٦ |
| ١٠٧ | د سريه ابو قتاده <small>رضي الله عنه</small> ذكر..... | ١٠٧ |
| ١٠٧ | يو قوی اشكال او د هغې جواب..... | ١٠٧ |
| ١٠٧ | شرح الحديث:..... | ١٠٧ |
| ١١٠ | د اصحاب بدر تعداد..... | ١١٠ |
| ١١٠ | د حديث د ترجمه الباب سره مطابقت..... | ١١٠ |
| ١١١ | باب فِي مَنْ قَالَ الْخُمْسُ قَبْلَ التَّقْلِ..... | ١١١ |
| ١١١ | په محل تنفيل كنبی د ائمه كرامو مذاهب..... | ١١١ |
| ١١٢ | شرح حديث..... | ١١٢ |
| ١١٣ | د مكحول شامی د تحصيل علم عجيب حال..... | ١١٣ |
| ١١٣ | باب فِي السَّرِيَّةِ تَرُدُّ عَلَى أَهْلِ الْعَسْكَرِ..... | ١١٣ |
| ١١٤ | شرح حديث..... | ١١٤ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|---|------|
| ۱۱۵ | مسلمان به د ذمی په بدل کښې قصاصاً قتل کولې شی یا نه په دې کښې مذاهب ائمه..... | ۱۱۵ |
| ۱۱۵ | دا حدیث د احنافو دلیل دې او څنګه؟..... | ۱۱۵ |
| ۱۱۷ | د غزوة الغابة قصه..... | ۱۱۷ |
| ۱۱۹ | باب فِي التَّقْلِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَمِنْ أَوَّلِ مَغْنَمٍ..... | ۱۱۹ |
| ۱۱۹ | د ترجمه الباب تشریح..... | ۱۱۹ |
| ۱۲۰ | مضمون حدیث..... | ۱۲۰ |
| ۱۲۰ | د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت..... | ۱۲۰ |
| ۱۲۱ | باب فِي الإِمَامِ يَسْتَأْذِنُ بِشَيْءٍ مِنَ الْفَيْءِ لِنَفْسِهِ..... | ۱۲۱ |
| ۱۲۱ | شرح الحدیث..... | ۱۲۱ |
| ۱۲۲ | د رسول الله ﷺ دپاره به په مال غنیمت کښې درې حصې وې..... | ۱۲۲ |
| ۱۲۲ | باب فِي الْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ..... | ۱۲۲ |
| ۱۲۳ | باب فِي الإِمَامِ يُسْتَجَنُّ بِهِ فِي الْعُهُودِ..... | ۱۲۳ |
| ۱۲۳ | شرح الحدیث..... | ۱۲۳ |
| ۱۲۴ | مضمون حدیث..... | ۱۲۴ |
| ۱۲۵ | باب فِي الإِمَامِ يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْعَدُوِّ عَهْدٌ فَيَسِيرُ إِلَيْهِ..... | ۱۲۵ |
| ۱۲۵ | د حدیث مضمون..... | ۱۲۵ |
| ۱۲۶ | باب فِي الْوَفَاءِ لِلْمُعَاهِدِ وَحُرْمَةِ ذِمَّتِهِ..... | ۱۲۶ |
| ۱۲۷ | باب فِي الرُّسُلِ..... | ۱۲۷ |
| ۱۲۷ | مضمون حدیث..... | ۱۲۷ |
| ۱۲۸ | شرح حدیث..... | ۱۲۸ |
| ۱۲۸ | باب فِي أَمَانِ الْمَرْأَةِ..... | ۱۲۸ |
| ۱۲۹ | باب فِي صُلْحِ الْعَدُوِّ..... | ۱۲۹ |
| ۱۲۹ | د ترجمه الباب شرح او د علماء کرامو مذاهب..... | ۱۲۹ |
| ۱۳۲ | د صلح حدیبیه والا حدیث شرح..... | ۱۳۲ |
| ۱۳۷ | شرح الحدیث..... | ۱۳۷ |
| ۱۳۸ | باب فِي الْعَدُوِّ يُؤْتَى عَلَى غِرَّةٍ وَيَتَّشَبَّهُ بِهِمْ..... | ۱۳۸ |
| ۱۳۹ | د کعب بن اشرف یهودی د قتل قصه..... | ۱۳۹ |
| ۱۴۲ | باب فِي التَّكْبِيرِ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ فِي الْمَسِيرِ..... | ۱۴۲ |
| ۱۴۲ | باب فِي الإِذْنِ فِي الْقُفُولِ بَعْدَ التَّهْيِ..... | ۱۴۲ |
| ۱۴۲ | د ترجمه الباب تشریح..... | ۱۴۲ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | تحقیق مقام | ۱۴۳ |
| | باب فِي بَعْنَةِ الْبُشْرَاءِ | ۱۴۴ |
| | شرح حدیث | ۱۴۴ |
| | باب فِي إِعْطَاءِ الْبَشِيرِ | ۱۴۵ |
| | باب فِي سُجُودِ الشُّكْرِ | ۱۴۶ |
| | مضمون حدیث | ۱۴۷ |
| | شرح السند | ۱۴۸ |
| | باب فِي الطَّرُوقِ | ۱۴۸ |
| | شرح الحدیث | ۱۴۸ |
| | شرح الحدیث | ۱۴۹ |
| | باب فِي التَّلَقِّي | ۱۵۱ |
| | شرح الحدیث | ۱۵۱ |
| | باب فِي مَا يُسْتَحَبُّ مِنْ إِنْفَازِ الزَّادِ فِي الْعَزْوِ إِذَا قَعَلَ | ۱۵۱ |
| | باب فِي الصَّلَاةِ عِنْدَ الْقُدُومِ مِنَ السَّفَرِ | ۱۵۲ |
| | باب فِي كِرَاءِ الْمَقَاسِمِ | ۱۵۳ |
| | شرح الحدیث | ۱۵۴ |
| | باب فِي التَّجَارَةِ فِي الْعَزْوِ | ۱۵۵ |
| | باب فِي حَمْلِ السَّلَاحِ إِلَى أَرْضِ الْعَدُوِّ | ۱۵۶ |
| | شرح الحدیث | ۱۵۶ |
| | باب فِي الْإِقَامَةِ بِأَرْضِ الشَّرِكِ | ۱۵۷ |
| | شرح الحدیث | ۱۵۷ |
| | مکتوب گرامی | ۱۵۸ |
| | مکرم و محترم مولانا برهان الدین صاحب سنهلی زید مجدهم | ۱۵۸ |
| | اول کِتَابُ الضَّحَايَا | ۱۵۸ |
| | مباحث سته مفیده: | ۱۵۸ |
| | بحث اول: (ما قبل سره مناسبت) | ۱۵۹ |
| | بحث ثانی: (د اضحیه لغوی تحقیق) | ۱۵۹ |
| | بحث ثالث: (د قربانی شرعی حکم) | ۱۵۹ |
| | انواع اضحیه: | ۱۶۰ |
| | د اضحیه دپاره غنی شرط ده ک نه؟ | ۱۶۰ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|---|------|
| ۱۶۰ | بحث رابع: (د اضحیه د ورځو تعیین او تعداد)..... | ۱۶۰ |
| ۱۶۱ | بحث خامس: (د ذبح د وخت ابتداء)..... | ۱۶۱ |
| ۱۶۱ | بحث سادس: (قربانی دکله نه مشروع شوه؟)..... | ۱۶۱ |
| ۱۶۲ | باب مَا جَاءَ فِي إِجَابِ الْأَصَاحِي | ۱۶۲ |
| ۱۶۲ | د قربانی د وجوب دلیل:..... | ۱۶۲ |
| ۱۶۳ | شرح الحديث:..... | ۱۶۳ |
| ۱۶۴ | باب الْأُضْحِيَّةِ عَنِ الْمَيْتِ | ۱۶۴ |
| ۱۶۴ | مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:..... | ۱۶۴ |
| ۱۶۵ | باب الرَّجُلُ يَأْخُذُ مِنْ شَعْرِهِ فِي الْعَشْرِ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يُصَحِّي | ۱۶۵ |
| ۱۶۵ | مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:..... | ۱۶۵ |
| ۱۶۶ | باب مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الضَّحَايَا | ۱۶۶ |
| ۱۶۶ | شرح الحديث:..... | ۱۶۶ |
| ۱۶۷ | د قربانی په څاروی کښې شرکت او په هغې کښې د مذاهب ائمه تفصیل او تحقیق..... | ۱۶۷ |
| ۱۶۸ | شرح الحديث:..... | ۱۶۸ |
| ۱۷۰ | باب مَا يَجُوزُ مِنَ السَّنِّ فِي الضَّحَايَا | ۱۷۰ |
| ۱۷۰ | د مسنة مصداق سره د اختلاف د ائمه:..... | ۱۷۰ |
| ۱۷۲ | شرح الحديث:..... | ۱۷۲ |
| ۱۷۳ | شرح الحديث:..... | ۱۷۳ |
| ۱۷۴ | د قربانی وخت کله شروع کیږي:..... | ۱۷۴ |
| ۱۷۵ | باب مَا يُكْرَهُ مِنَ الضَّحَايَا | ۱۷۵ |
| ۱۷۶ | شرح الحديث:..... | ۱۷۶ |
| ۱۷۷ | شرح الحديث:..... | ۱۷۷ |
| ۱۷۸ | په حدیث الباب کښې مذاهب ائمه:..... | ۱۷۸ |
| ۱۸۰ | باب فِي الْبَقَرِ وَالْجَزُورِ عَنْ كَمْ، تُجْزَى | ۱۸۰ |
| ۱۸۱ | باب فِي الشَّاةِ يُصَحِّي بِهَا عَنْ جَمَاعَةٍ | ۱۸۱ |
| ۱۸۱ | باب الْإِمَامُ يَذْبَحُ بِالْمُصَلِّ | ۱۸۱ |
| ۱۸۲ | باب فِي حَبْسِ لَحُومِ الْأَصَاحِي | ۱۸۲ |
| ۱۸۲ | د حدیث مضمون:..... | ۱۸۲ |
| ۱۸۳ | مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:..... | ۱۸۳ |
| ۱۸۴ | باب فِي الرَّفْقِ بِالذَّبِيحَةِ | ۱۸۴ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|---|------|
| ۱۸۵ | شرح الحديث: | ۱۸۵ |
| ۱۸۵ | باب فِي الْمُسَافِرِ يُضَحِّي | ۱۸۵ |
| ۱۸۵ | باب فِي ذَبَائِحِ أَهْلِ الْكِتَابِ | ۱۸۵ |
| ۱۸۷ | باب مَا جَاءَ فِي أَكْلِ مُعَاقَرَةِ الْأَعْرَابِ | ۱۸۷ |
| ۱۸۷ | شرح الحديث: | ۱۸۷ |
| ۱۸۸ | باب فِي الذَّبِيحَةِ بِالْمَرْوَةِ | ۱۸۸ |
| ۱۸۸ | شرح الحديث: | ۱۸۸ |
| ۱۸۹ | آله ذبح ځنګه کیدل پکار دی؟ په دې کښې مذاهب د ائمه | ۱۸۹ |
| ۱۹۰ | شرح الحديث: | ۱۹۰ |
| ۱۹۲ | باب مَا جَاءَ فِي ذَبِيحَةِ الْمُتَرَدِّيَةِ | ۱۹۲ |
| ۱۹۲ | شرح الحديث: | ۱۹۲ |
| ۱۹۳ | باب فِي الْمُبَالِغَةِ فِي الذَّبْحِ | ۱۹۳ |
| ۱۹۳ | حقیقه الذبح: | ۱۹۳ |
| ۱۹۴ | شرح الحديث: | ۱۹۴ |
| ۱۹۴ | باب مَا جَاءَ فِي ذَكَاةِ الْجَنِينِ | ۱۹۴ |
| ۱۹۵ | په مسئله الباب کښې اختلاف ائمه: | ۱۹۵ |
| ۱۹۵ | الجواب عن الامام ابی حنیفه رحمه الله: | ۱۹۵ |
| ۱۹۶ | باب مَا جَاءَ فِي أَكْلِ اللَّحْمِ لَا يُدْرَى أَذْكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ أَمْ لَا | ۱۹۶ |
| ۱۹۶ | شرح السند: | ۱۹۶ |
| ۱۹۷ | باب فِي الْعَبِيرَةِ | ۱۹۷ |
| ۱۹۷ | فرع وعتیره کښې بحث مع مذاهب ائمه: | ۱۹۷ |
| ۱۹۸ | د فرع په تفسیر کښې اقوال: | ۱۹۸ |
| ۲۰۰ | باب فِي الْعَقِيقَةِ | ۲۰۰ |
| ۲۰۰ | د عقیقې متعلق ضروری مباحث: | ۲۰۰ |
| ۲۰۱ | (په عقیقه کښې په غلام او وینځه کښې فرق) | ۲۰۱ |
| ۲۰۲ | شرح الحديث: | ۲۰۲ |
| ۲۰۳ | شرح الحديث: | ۲۰۳ |
| ۲۰۴ | عقیقه کښې د یوم السابع قید: | ۲۰۴ |
| ۲۰۵ | حديث العقیقه کښې د لفظ یدمی تحقیق: | ۲۰۵ |
| ۲۰۷ | شرح الحديث: | ۲۰۷ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|---|------|
| ۲۰۸ | کِتَابُ الصَّيْدِ..... | ۲۰۸ |
| ۲۰۸ | باب فِي اتِّخَاذِ الْكَلْبِ لِلصَّيْدِ وَغَيْرِهِ..... | ۲۰۸ |
| ۲۰۹ | د قيراط او قيراطان توجیه:..... | ۲۰۹ |
| ۲۰۹ | شرح الحديث:..... | ۲۰۹ |
| ۲۱۰ | باب فِي الصَّيْدِ..... | ۲۱۰ |
| ۲۱۰ | د ذکاة دوه قسمونه اختیاری او اضطراری:..... | ۲۱۰ |
| ۲۱۱ | تسمیه عند الذبح وعند الارسال کنبی اختلاف د ائمه:..... | ۲۱۱ |
| ۲۱۲ | د تعلیم کلب په باره کنبی د جمهورو او امام مالک <small>رضی اللہ عنہ</small> دلیل:..... | ۲۱۲ |
| ۲۱۲ | د بندوق بنکار او په هغې کنبی اختلاف:..... | ۲۱۲ |
| ۲۱۳ | د صحیح مسلم د یو حدیث د جملې تشریح:..... | ۲۱۳ |
| ۲۱۴ | بنکار که د غشی د لکیدونه پس غائب شی نو څه حکم دي:..... | ۲۱۴ |
| ۲۱۹ | شرح الحديث او د لحم منتن حکم:..... | ۲۱۹ |
| ۲۲۰ | د مشرکانو د لوښو استعمال کله جائز دي؟ :..... | ۲۲۰ |
| ۲۲۰ | باب فِي صَيْدٍ قُطِعَ مِنْهُ قِطْعَةٌ..... | ۲۲۰ |
| ۲۲۱ | باب فِي اتِّبَاعِ الصَّيْدِ..... | ۲۲۱ |
| ۲۲۲ | کِتَابُ الوَصَايَا..... | ۲۲۲ |
| ۲۲۲ | باب مَا جَاءَ فِيْمَا يُؤْمَرُ بِهِ مِنَ الوَصِيَّةِ..... | ۲۲۲ |
| ۲۲۳ | شرح الحديث وحکم الوصية :..... | ۲۲۳ |
| ۲۲۳ | شرح الحديث:..... | ۲۲۳ |
| ۲۲۴ | باب مَا جَاءَ فِيْمَا لَا يَجُوزُ لِلْمُوصِي فِي مَالِهِ..... | ۲۲۴ |
| ۲۲۵ | شرح الحديث:..... | ۲۲۵ |
| ۲۲۶ | شرح الحديث:..... | ۲۲۶ |
| ۲۲۷ | د وصیت متعلق بعض ضروری مسائل او د ائمه اختلاف :..... | ۲۲۷ |
| ۲۲۸ | باب مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَّةِ الْإِضْرَارِ فِي الوَصِيَّةِ..... | ۲۲۸ |
| ۲۲۹ | باب مَا جَاءَ فِي الدُّخُولِ فِي الوَصَايَا..... | ۲۲۹ |
| ۲۳۰ | شرح الحديث:..... | ۲۳۰ |
| ۲۳۰ | باب مَا جَاءَ فِي نَسْخِ الوَصِيَّةِ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ..... | ۲۳۰ |
| ۲۳۱ | باب مَا جَاءَ فِي الوَصِيَّةِ لِلْوَارِثِ..... | ۲۳۱ |
| ۲۳۱ | باب مَخَالَطَةِ الْيَتِيمِ فِي الطَّعَامِ..... | ۲۳۱ |
| ۲۳۲ | باب مَا جَاءَ فِيْمَا لَوْلِيِ الْيَتِيمِ أَنْ يَنَالَ مِنْ مَالِ الْيَتِيمِ..... | ۲۳۲ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۲۳۲ | شرح الحديث: | ۲۳۲ |
| ۲۳۳ | باب مَا جَاءَ مَتَى يَنْقَطِعُ التُّنْمُ..... | ۲۳۳ |
| ۲۳۳ | باب مَا جَاءَ فِي التَّشْدِيدِ فِي أَكْلِ مَالِ الْيَتِيمِ..... | ۲۳۳ |
| ۲۳۴ | شرح الحديث: | ۲۳۴ |
| ۲۳۴ | په گناهونو کښي د صغائرو او کبائرو بحث: | ۲۳۴ |
| ۲۳۵ | باب مَا جَاءَ فِي الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْكَفْنَ مِنْ جَمِيعِ الْمَالِ..... | ۲۳۵ |
| ۲۳۶ | باب مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يَهَبُ ثُمَّ يُوصَى لَهُ بِهَا أَوْ يَرِثُهَا..... | ۲۳۶ |
| ۲۳۶ | شرح الحديث: | ۲۳۶ |
| ۲۳۶ | باب مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يُوقِفُ الْوَقْفَ..... | ۲۳۶ |
| ۲۳۶ | ذکر د وقف کښي د مصنفينو طرز عمل: | ۲۳۶ |
| ۲۳۷ | د وقف حقيقت کښي د امام صاحب <small>رحمته الله</small> او د جمهورو اختلاف: | ۲۳۷ |
| ۲۳۸ | مضمون حديث (وقف عمر): | ۲۳۸ |
| ۲۴۰ | د كتاب الوقف شرح: | ۲۴۰ |
| ۲۴۱ | باب مَا جَاءَ فِي الصَّدَقَةِ عَنِ الْمَيِّتِ..... | ۲۴۱ |
| ۲۴۱ | شرح الحديث: | ۲۴۱ |
| ۲۴۱ | باب مَا جَاءَ فِيمَنْ مَاتَ عَنْ غَيْرِ، وَصِيَّةٍ، يُتَصَدَّقُ عَنْهُ..... | ۲۴۱ |
| ۲۴۲ | باب مَا جَاءَ فِي وَصِيَّةِ الْحَرْبِيِّ يُسَلِّمُ وَلِيَّهُ أَيْلِزْمُهُ أَنْ يُنْفِذَهَا..... | ۲۴۲ |
| ۲۴۳ | باب مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يَمُوتُ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ وَلَهُ وَفَاءٌ يُسْتَنْظَرُ غَرْمَاؤُهُ وَيُرْفَقُ بِالْوَارِثِ..... | ۲۴۳ |
| ۲۴۴ | د حديث دين جابر <small>رحمته الله</small> شرح: | ۲۴۴ |
| ۲۴۵ | كتاب الفرائض..... | ۲۴۵ |
| ۲۴۵ | باب مَا جَاءَ فِي تَعْلِيمِ الْفَرَايِضِ..... | ۲۴۵ |
| ۲۴۵ | شرح الحديث: | ۲۴۵ |
| ۲۴۶ | باب فِي الْكَلَالَةِ..... | ۲۴۶ |
| ۲۴۷ | په وصيت کښي د حديث جابر <small>رحمته الله</small> مضمون: | ۲۴۷ |
| ۲۴۷ | د جابر <small>رحمته الله</small> په باره کښي د کوم آيت نزول اوشو؟ | ۲۴۷ |
| ۲۴۸ | باب مَنْ كَانَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أَخَوَاتٌ..... | ۲۴۸ |
| ۲۴۹ | شرح الحديث: | ۲۴۹ |
| ۲۵۲ | باب مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الصُّلْبِ..... | ۲۵۲ |
| ۲۵۲ | مضمون حديث: | ۲۵۲ |
| ۲۵۳ | باب فِي الْجَدَّةِ..... | ۲۵۳ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۲۵۴ | توضیح الحدیث | ۲۵۴ |
| ۲۵۵ | باب مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الْجَدِّ | ۲۵۵ |
| ۲۵۵ | مضمون الحدیث: | ۲۵۵ |
| ۲۵۶ | مضمون الحدیث: | ۲۵۶ |
| ۲۵۶ | باب فِي مِيرَاثِ الْعَصَبَةِ | ۲۵۶ |
| ۲۵۷ | باب فِي مِيرَاثِ ذَوِي الْأَرْحَامِ | ۲۵۷ |
| ۲۵۷ | ترجمة الباب والا مسئله کښې د ائمه اختلاف او دلیل: | ۲۵۷ |
| ۲۵۸ | شرح الحدیث: | ۲۵۸ |
| ۲۵۹ | د رسول الله ﷺ د امت سره ډیر زیات محبت: | ۲۵۹ |
| ۲۶۱ | الكلام على الحدیث من حیث الفقه: | ۲۶۱ |
| ۲۶۱ | آیا رسول الله ﷺ د چا وارث کیدو؟ | ۲۶۱ |
| ۲۶۱ | شرح الحدیث: | ۲۶۱ |
| ۲۶۳ | باب مِيرَاثِ ابْنِ الْمَلَاعِنَةِ | ۲۶۳ |
| ۲۶۴ | الكلام على الحدیث من حیث الفقه: | ۲۶۴ |
| ۲۶۵ | باب هَلْ يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ | ۲۶۵ |
| ۲۶۵ | د مرتد د وراثت مسئله: | ۲۶۵ |
| ۲۶۶ | شرح الحدیث: | ۲۶۶ |
| ۲۶۶ | حدیث الباب کښې مذاهب ائمه: | ۲۶۶ |
| ۲۶۷ | باب فَيَمَنَ أَسْلَمَ عَلَى مِيرَاثِ | ۲۶۷ |
| ۲۶۷ | شرح الترجمة: | ۲۶۷ |
| ۲۶۸ | باب فِي الْوَلَاءِ | ۲۶۸ |
| ۲۶۸ | د ولاء قسمونه سره د اختلاف علماء کرامو: | ۲۶۸ |
| ۲۶۹ | د بربره رضی الله عنها د شراء والا حدیث باندي کلام: | ۲۶۹ |
| ۲۷۱ | شرح الحدیث والكلام عليه باسط: | ۲۷۱ |
| ۲۷۳ | باب فِي الرَّجُلِ يُسَلِّمُ عَلَى يَدِي الرَّجُلِ | ۲۷۳ |
| ۲۷۳ | شرح الحدیث والكلام عليه من حیث الفقه: | ۲۷۳ |
| ۲۷۴ | باب فِي بَيْعِ الْوَلَاءِ | ۲۷۴ |
| ۲۷۴ | شرح الحدیث: | ۲۷۴ |
| ۲۷۵ | باب فِي الْمَوْلُودِ يَسْتَهْلُ ثُمَّ يَمُوتُ | ۲۷۵ |
| ۲۷۵ | حدیث الباب کښې اختلاف ائمه: | ۲۷۵ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۲۷۶ | باب نَسَخِ مِيرَاثِ الْعَقْدِ بِمِيرَاثِ الرَّجْمِ | ۲۷۶ |
| ۲۷۶ | شرح الحديث وايضاح المسئلة : | ۲۷۶ |
| ۲۷۸ | مضمون الحديث: | ۲۷۸ |
| ۲۷۹ | باب في الحليف | ۲۷۹ |
| ۲۷۹ | شرح الحديث: | ۲۷۹ |
| ۲۸۰ | باب في المرأة تَرِثُ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا | ۲۸۰ |
| ۲۸۱ | د دية په باره كښې په شروع كښې د عمر ^{رضي الله عنه} راڼې او بيا د هغې نه رجوع: | ۲۸۱ |
| ۲۸۲ | آخر كتاب الفرائض | ۲۸۲ |
| ۲۸۵ | كِتَابُ الْخِرَاجِ وَالْفَيْءِ وَالْإِمَارَةِ | ۲۸۵ |
| ۲۸۵ | د كتاب الخراج موضوع او حاصل: | ۲۸۵ |
| ۲۸۶ | باب مَا يَلْزَمُ الْإِمَامَ مِنْ حَقِّ الرَّعِيَّةِ | ۲۸۶ |
| ۲۸۶ | باب مَا جَاءَ فِي طَلْبِ الْإِمَارَةِ | ۲۸۶ |
| ۲۸۷ | باب في الضرير يُوَلَّى | ۲۸۷ |
| ۲۸۸ | باب في اتِّخَاذِ الْوَزِيرِ | ۲۸۸ |
| ۲۸۹ | باب في الْعِرَافَةِ | ۲۸۹ |
| ۲۹۰ | مضمون حديث : | ۲۹۰ |
| ۲۹۱ | د رجوع في الهبة د جواز دليل : | ۲۹۱ |
| ۲۹۱ | باب في اتِّخَاذِ الْكَاتِبِ | ۲۹۱ |
| ۲۹۲ | د رسول الله ^{صلى الله عليه وسلم} د كاتبين أسماء : | ۲۹۲ |
| ۲۹۲ | باب في السَّعَايَةِ عَلَى الصَّدَقَةِ | ۲۹۲ |
| ۲۹۲ | شرح الحديث: | ۲۹۲ |
| ۲۹۳ | باب في الخليفة يَسْتَخْلِفُ | ۲۹۳ |
| ۲۹۳ | شرح الحديث: | ۲۹۳ |
| ۲۹۴ | باب مَا جَاءَ فِي الْبَيْعَةِ | ۲۹۴ |
| ۲۹۶ | باب في أَرْزَاقِ الْعُمَّالِ | ۲۹۶ |
| ۲۹۷ | باب في هَدَايَا الْعُمَّالِ | ۲۹۷ |
| ۲۹۸ | شرح الحديث: | ۲۹۸ |
| ۲۹۸ | كوم خيز چه د امر محظور ذريعه جوړه شي هغه هم محظور دي : | ۲۹۸ |
| ۲۹۹ | باب في غُلُولِ الصَّدَقَةِ | ۲۹۹ |
| ۲۹۹ | باب فيما يَلْزَمُ الْإِمَامَ مِنْ أَمْرِ الرَّعِيَّةِ وَالْحَجَبَةِ عَنْهُ | ۲۹۹ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۲۹۹ | مضمون حدیث | ۲۹۹ |
| ۳۰۱ | د مال فئ په باره کښې د عمر <small>رضی اللہ عنہ</small> د اثر تشریح : | ۳۰۱ |
| ۳۰۱ | مال فئ او غنیمت کښې فرق او د هریو حکم او مصرف : | ۳۰۱ |
| ۳۰۲ | د حکم فئ په باره کښې نور تحقیق : | ۳۰۲ |
| ۳۰۳ | باب في قَسَمِ الْفَيْءِ | ۳۰۳ |
| ۳۰۳ | مضمون الحدیث : | ۳۰۳ |
| ۳۰۴ | باب في أَرْزَاقِ الذَّرِّيَّةِ | ۳۰۴ |
| ۳۰۵ | باب مَتَى يُفْرَضُ لِلرَّجُلِ فِي الْمُقَاتِلَةِ | ۳۰۵ |
| ۳۰۵ | شرح الحدیث : | ۳۰۵ |
| ۳۰۶ | باب في كَرَاهِيَةِ الْإِفْتِرَاضِ فِي آخِرِ الزَّمَانِ | ۳۰۶ |
| ۳۰۷ | شرح الحدیث : | ۳۰۷ |
| ۳۰۸ | باب في تَدْوِينِ الْعَطَاءِ | ۳۰۸ |
| ۳۰۸ | مضمون حدیث : | ۳۰۸ |
| ۳۰۹ | مناسبة الحدیث للترجمة : | ۳۰۹ |
| ۳۰۹ | شرح الحدیث : | ۳۰۹ |
| ۳۱۰ | باب في صَفَايَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْأَمْوَالِ | ۳۱۰ |
| ۳۱۰ | د ترجمه الباب تشریح او غرض د مصنف <small>رحمته اللہ علیہ</small> : | ۳۱۰ |
| ۳۱۱ | د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> د پاره به په غنیمت کښې درې حصې وې : | ۳۱۱ |
| ۳۱۱ | د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> د صفایا مصداق او تعین : | ۳۱۱ |
| ۳۱۲ | د هغه صفایا د مصارفو بیان په ژوند د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> او پس د وفات نه : | ۳۱۲ |
| ۳۱۲ | د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> د بعض وارثانو میراث طلب کول : | ۳۱۲ |
| ۳۱۵ | د عمر <small>رضی اللہ عنہ</small> او د حدیث اختصام د علی او عباس <small>رضی اللہ عنہما</small> په باره کښې اودهغې تفصیلی وضاحت | ۳۱۵ |
| ۳۱۶ | د عباس <small>رضی اللہ عنہ</small> د علی <small>رضی اللہ عنہ</small> په باره کښې سخت الفاظ او د هغې توجیه : | ۳۱۶ |
| ۳۱۹ | د طلب میراث په سلسله کښې بعض اشکال او جواب : | ۳۱۹ |
| ۳۲۱ | د بنو النضیر د زمکې په مال فئ کیدو کښې اختلاف : | ۳۲۱ |
| ۳۲۲ | شرح الحدیث : | ۳۲۲ |
| ۳۲۴ | شرح الحدیث : | ۳۲۴ |
| ۳۲۵ | شرح الحدیث : | ۳۲۵ |
| ۳۲۶ | د علی او عباس <small>رضی اللہ عنہما</small> ترمینځه په تولیت کښې د اختلاف منشاء : | ۳۲۶ |
| ۳۲۷ | د سورة حشر د آیتونو نزول د ارض فدک په باره کښې : | ۳۲۷ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۳۲۸ | د عمر بن عبدالعزیز <small>رضی اللہ عنہ</small> کمال انصاف : | ۳۲۸ |
| ۳۳۰ | د فاطمې <small>رضی اللہ عنہا</small> د صدیق اکبر <small>رضی اللہ عنہ</small> نه خفه کیدل او خبرې پر بخودل او د هغې توجیه | ۳۳۰ |
| ۳۳۴ | باب فِي بَيَانِ مَوَاضِعِ قَسْمِ الْخُمْسِ وَسَهْمِ ذِي الْقُرْبَى | ۳۳۴ |
| ۳۳۴ | د تقسیم غنیمت په باره کښې آیه کریمه : | ۳۳۴ |
| ۳۳۵ | د ترجمه الباب والا مسئله کښې مذاهب د امامانو : | ۳۳۵ |
| ۳۳۶ | مضمون الحديث: | ۳۳۶ |
| ۳۳۹ | مضمون حديث : | ۳۳۹ |
| ۳۳۹ | د علی <small>رضی اللہ عنہ</small> تولیة په خمس الخمس کښې : | ۳۳۹ |
| ۳۴۳ | په حدیث کښې د ودونو د مسائلو متعلق یو ښکلې واقعه : | ۳۴۳ |
| ۳۴۶ | د حضرت علی <small>رضی اللہ عنہ</small> د ولیمې سره متعلق یوه واقعه | ۳۴۶ |
| ۳۴۸ | د سند تحقیق : | ۳۴۸ |
| ۳۵۱ | د ابدالو او اوتاد ثبوت د احادیثو نه : | ۳۵۱ |
| ۳۵۲ | مضمون حديث: | ۳۵۲ |
| ۳۵۳ | باب مَا جَاءَ فِي سَهْمِ الصَّفِيِّ | ۳۵۳ |
| ۳۵۵ | صفیه <small>رضی اللہ عنہا</small> د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> په حصه کښې څنگه راغلل ؟ : | ۳۵۵ |
| ۳۵۷ | مضمون الحديث: | ۳۵۷ |
| ۳۵۷ | باب كَيْفَ كَانَ إِخْرَاجُ الْيَهُودِ مِنَ الْمَدِينَةِ | ۳۵۷ |
| ۳۵۷ | مختصر تاریخ د یهودو د غزواتو متعلق : | ۳۵۷ |
| ۳۶۰ | د کعب بن اشرف یهودی د قتل قصه : | ۳۶۰ |
| ۳۶۲ | مضمون الحديث : | ۳۶۲ |
| ۳۶۳ | مضمون حديث : | ۳۶۳ |
| ۳۶۴ | د یو اشکال جواب : | ۳۶۴ |
| ۳۶۴ | باب فِي خَبَرِ النَّضِيرِ | ۳۶۴ |
| ۳۶۶ | مضمون حديث : | ۳۶۶ |
| ۳۶۷ | د بنو نضیر د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> سره د جنگ کولو اراده : | ۳۶۷ |
| ۳۶۹ | باب مَا جَاءَ فِي حُكْمِ أَرْضِ خَيْبَرَ | ۳۶۹ |
| ۳۶۹ | د باب سره متعلق مباحث اربعه مفیده : | ۳۶۹ |
| ۳۶۹ | بحث اول : | ۳۶۹ |
| ۳۶۹ | دویم بحث : | ۳۶۹ |
| ۳۷۰ | بحث ثالث : | ۳۷۰ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۳۷۱ | بجث رابع: | ۳۷۱ |
| ۳۷۱ | د هندوستان زمکي عشری دی که خراجی: | ۳۷۱ |
| ۳۷۲ | د گنګوهی <small>رضی اللہ عنہ</small> راثی: | ۳۷۲ |
| ۳۷۳ | د مولانا انور شاه صاحب راثی: | ۳۷۳ |
| ۳۷۵ | د غزوه خیبر بیان: | ۳۷۵ |
| ۳۷۶ | د خیبر فتح عنوة ده یا صلحا: | ۳۷۶ |
| ۳۷۷ | مضمون حدیث: | ۳۷۷ |
| ۳۷۹ | شرح الحدیث: | ۳۷۹ |
| ۳۸۲ | د مصنف <small>رضی اللہ عنہ</small> د حارث بن مسکین نه د روایت کولو طرز: | ۳۸۲ |
| ۳۸۳ | د ارض مفتوحه په باره کښې د عمر <small>رضی اللہ عنہ</small> اثر او د هغې شرح: | ۳۸۳ |
| ۳۸۴ | باب مَا جَاءَ فِي خَبَرِ مَكَّةَ | ۳۸۴ |
| ۳۸۴ | فتح مکه نه پس د مکې د زمکې سره رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> حثه معامله او فرمائیله: | ۳۸۴ |
| ۳۸۵ | مضمون حدیث او فتح مکه مکرمه: | ۳۸۵ |
| ۳۸۸ | د رسول الله <small>صلی اللہ علیہ وسلم</small> د طرف نه د لښکر په مکه مکرمه کښې د دخول ترتیب: | ۳۸۸ |
| ۳۸۹ | باب مَا جَاءَ فِي خَبَرِ الطَّائِفِ | ۳۸۹ |
| ۳۸۹ | غزوه طائف: | ۳۸۹ |
| ۳۹۱ | په اسلام کښې د ټولو نه زیات اهمیت د مانخه دې: | ۳۹۱ |
| ۳۹۱ | باب مَا جَاءَ فِي حُكْمِ أَرْضِ الْيَمَنِ | ۳۹۱ |
| ۳۹۲ | شرح الحدیث: | ۳۹۲ |
| ۳۹۳ | شرح الحدیث: | ۳۹۳ |
| ۳۹۴ | ما استفيد من الحدیث: | ۳۹۴ |
| ۳۹۴ | باب فِي إِخْرَاجِ الْيَهُودِ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ | ۳۹۴ |
| ۳۹۴ | د جزیره العرب تحدید او د دې مصداق: | ۳۹۴ |
| ۳۹۵ | شرح الحدیث: | ۳۹۵ |
| ۳۹۸ | شرح الحدیث: | ۳۹۸ |
| ۳۹۸ | د راتلونکي باب نه د کتاب الخراج شروع ده: | ۳۹۸ |
| ۳۹۹ | باب فِي إِقَافِ أَرْضِ السَّوَادِ وَأَرْضِ الْعَنُودِ | ۳۹۹ |
| ۳۹۹ | په عشر او خراج کښې فرق: | ۳۹۹ |
| ۴۰۰ | شرح الحدیث: | ۴۰۰ |
| ۴۰۱ | د صحیفه همام بن منبه تعارف: | ۴۰۱ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۴۰۱ | شرح الحديث ومطابقته للترجمة : | ۴۰۱ |
| ۴۰۲ | باب في أخذ الجزية | ۴۰۲ |
| ۴۰۲ | د جزئي د وجوب شرائط : | ۴۰۲ |
| ۴۰۴ | شرح الحديث المتعلق بمصالحة نصارى بنى تغلب : | ۴۰۴ |
| ۴۰۵ | د رسول الله ﷺ د نجران د نصارى سره مصالحت : | ۴۰۵ |
| ۴۰۶ | باب في أخذ الجزية من المجوس | ۴۰۶ |
| ۴۰۷ | شرح الحديث : | ۴۰۷ |
| ۴۰۸ | د مجوس نه د جزیه اخستلو په باره کښي د عمر فاروق رضی الله عنه تردد : | ۴۰۸ |
| ۴۰۸ | يو اصولی مسئله د تحديت د صیغې متعلق : | ۴۰۸ |
| ۴۰۹ | شرح الحديث : | ۴۰۹ |
| ۴۱۰ | باب في التثدييد في جباية الجزية | ۴۱۰ |
| ۴۱۰ | باب في تعشير أهل الذمة إذا اختلفوا بالتجارات | ۴۱۰ |
| ۴۱۰ | د مسئله مذکوره الباب تشریح او تنقیح : | ۴۱۰ |
| ۴۱۱ | د ترجمه الباب والا مسئله کښي مذاهب ائمه : | ۴۱۱ |
| ۴۱۲ | شرح الحديث : | ۴۱۲ |
| ۴۱۴ | مضمون حديث : | ۴۱۴ |
| ۴۱۶ | باب في الذمي يسلم في بعض السنة هل عليه جزية | ۴۱۶ |
| ۴۱۶ | شرح الحديث ومذاهب ائمة : | ۴۱۶ |
| ۴۱۷ | باب في الإمام يقبل هدايا المشركين | ۴۱۷ |
| ۴۱۹ | د رسول الله ﷺ د معيشت او د وخت د وخت تيرولو په باره کښي يو اوږد حديث | ۴۱۹ |
| ۴۲۲ | د مشرکينو د هدايا قبلولو او نه قبلولو په باره کښي دوه مختلف احاديث : | ۴۲۲ |
| ۴۲۲ | باب في إقطاع الأرضين | ۴۲۲ |
| ۴۲۲ | د اقطاع او احياء او په دواړو کښي فرق : | ۴۲۲ |
| ۴۲۴ | شرح الحديث : | ۴۲۴ |
| ۴۲۵ | په معدن کښي زکوة واجب وي يا خمس : | ۴۲۵ |
| ۴۲۵ | د معادن قبله والا حديث د احنافو د طرف نه جوابات : | ۴۲۵ |
| ۴۲۸ | شرح الحديث : | ۴۲۸ |
| ۴۳۰ | شرح الحديث : | ۴۳۰ |
| ۴۳۱ | په حديث باندي يو قوی اشکال او د هغې جواب : | ۴۳۱ |
| ۴۳۲ | د رسول الله ﷺ د عضباء اوښي واقعه : | ۴۳۲ |

| شمار | مضمون | صفحہ |
|-------|--|------|
| | شرح الحدیث : | ۴۳۳ |
| | الكلام على الحديث من حيث الفقه : | ۴۳۴ |
| | مضمون حدیث مع الشرح : | ۴۳۵ |
| | مضمون حدیث : | ۴۳۷ |
| | باب فِي إِحْيَاءِ الْمَوَاتِ : | ۴۳۸ |
| | شرح الحدیث : | ۴۳۹ |
| | شرح الحدیث : | ۴۴۰ |
| | شرح الحدیث : | ۴۴۱ |
| | مناسبة الحديث للترجمة : | ۴۴۲ |
| | مضمون حدیث : | ۴۴۳ |
| | پہ حدیث باندی یو اشکال او د هغی توجیه : | ۴۴۳ |
| | باب مَا جَاءَ فِي الدُّخُولِ فِي أَرْضِ الْحَرَّاجِ : | ۴۴۴ |
| | الكلام على الحديث شرحا وفقها : | ۴۴۴ |
| | شرح الحدیث : | ۴۴۶ |
| | باب فِي الْأَرْضِ يَحْمِيهَا الْإِمَامُ أَوْ الرَّجُلُ : | ۴۴۶ |
| | شرح الحدیث : | ۴۴۷ |
| | پہ حمی او احياء کنبی فرق : | ۴۴۷ |
| | باب مَا جَاءَ فِي الرَّكَازِ وَمَا فِيهِ : | ۴۴۸ |
| | الكلام على الحديث من حيث الفقه ومذاهب العلماء : | ۴۴۸ |
| | شرح الحدیث وتوضیح المسئلة الثابتة بالحدیث : | ۴۴۹ |
| | باب تَبَشُّرِ الْقُبُورِ الْعَادِيَةِ يَكُونُ فِيهَا الْمَالُ : | ۴۵۰ |
| | شرح الحدیث او د ابورغال تذکرہ : | ۴۵۱ |
| | كِتَابُ الْجَنَائِزِ : | ۴۵۲ |
| | فائده تاریخیہ د بذل المجهود سره متعلق : | ۴۵۲ |
| | باب الْأَمْرَاضِ الْمُكْفَّرَةِ لِلذُّنُوبِ : | ۴۵۲ |
| | مضمون حدیث : | ۴۵۴ |
| | د الله پاک پہ خپلو بندگانو باندی غیر محدود رافت او رحمت : | ۴۵۵ |
| | باب إِذَا كَانَ الرَّجُلُ يَعْمَلُ عَمَلًا صَالِحًا فَشَعَلَهُ عَنْهُ مَرَضٌ أَوْ سَفَرٌ : | ۴۵۵ |
| | مضمون حدیث : | ۴۵۶ |
| | باب عِيَادَةِ النِّسَاءِ : | ۴۵۷ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|---|------|
| ۴۵۸ | باب فِي الْعِيَادَةِ..... | ۴۵۸ |
| ۴۵۹ | شرح الحديث :..... | ۴۵۹ |
| ۴۶۰ | باب فِي عِيَادَةِ الذَّمِّيِّ..... | ۴۶۰ |
| ۴۶۱ | باب الْمَشْيِ فِي الْعِيَادَةِ..... | ۴۶۱ |
| ۴۶۱ | باب فِي فَضْلِ الْعِيَادَةِ عَلَى وَضْءِ..... | ۴۶۱ |
| ۴۶۳ | باب فِي الْعِيَادَةِ مِرَارًا..... | ۴۶۳ |
| ۴۶۳ | شرح الحديث :..... | ۴۶۳ |
| ۴۶۴ | باب فِي الْعِيَادَةِ مِنَ الرَّمَدِ..... | ۴۶۴ |
| ۴۶۴ | غرض المصنف من الترجمة :..... | ۴۶۴ |
| ۴۶۴ | باب الْخُرُوجِ مِنَ الطَّاعُونَ..... | ۴۶۴ |
| ۴۶۵ | شرح الحديث :..... | ۴۶۵ |
| ۴۶۵ | باب الدُّعَاءِ لِلْمَرِيضِ بِالشِّفَاءِ عِنْدَ الْعِيَادَةِ..... | ۴۶۵ |
| ۴۶۶ | باب الدُّعَاءِ لِلْمَرِيضِ عِنْدَ الْعِيَادَةِ..... | ۴۶۶ |
| ۴۶۷ | باب فِي كِرَاهِيَّةِ تَمَنِّي الْمَوْتِ..... | ۴۶۷ |
| ۴۶۸ | باب مَوْتِ الْفَجَاءَةِ..... | ۴۶۸ |
| ۴۶۹ | باب فِي فَضْلِ مَنْ مَاتَ فِي الطَّاعُونَ..... | ۴۶۹ |
| ۴۷۰ | مضمون حديث :..... | ۴۷۰ |
| ۴۷۰ | د شهادت د اسباب سبعة تشریح :..... | ۴۷۰ |
| ۴۷۱ | د اسباب الشهادة تعداد :..... | ۴۷۱ |
| ۴۷۲ | باب الْمَرِيضِ يُؤَخَذُ مِنْ أَظْفَارِهِ وَعَانَتِهِ..... | ۴۷۲ |
| ۴۷۲ | د خبيب بن عدی ^{رضي الله عنه} د قتل قصه :..... | ۴۷۲ |
| ۴۷۳ | باب مَا يُسْتَحَبُّ مِنْ حُسْنِ الظَّنِّ بِاللَّهِ عِنْدَ الْمَوْتِ..... | ۴۷۳ |
| ۴۷۳ | شرح الحديث :..... | ۴۷۳ |
| ۴۷۴ | باب مَا يُسْتَحَبُّ مِنْ تَطْهِيرِ ثِيَابِ الْمَيِّتِ عِنْدَ الْمَوْتِ..... | ۴۷۴ |
| ۴۷۴ | د حضرت الشيخ او والد صاحب حال د وفات په وخت :..... | ۴۷۴ |
| ۴۷۴ | د دوه احاديثو تر مينځه تطبيق :..... | ۴۷۴ |
| ۴۷۵ | باب مَا يُسْتَحَبُّ أَنْ يُقَالَ عِنْدَ الْمَيِّتِ مِنَ الْكَلَامِ..... | ۴۷۵ |
| ۴۷۶ | شرح الحديث :..... | ۴۷۶ |
| ۴۷۶ | باب فِي التَّلْقِينِ..... | ۴۷۶ |
| ۴۷۸ | باب تَغْيِيبِ الْمَيِّتِ..... | ۴۷۸ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۴۷۹ | باب فِي الْإِسْتِرْجَاعِ | ۴۷۹ |
| ۴۷۹ | باب فِي الْمَيْتِ يُسَجَّى | ۴۷۹ |
| ۴۸۰ | باب الْقِرَاءَةُ عِنْدَ الْمَيْتِ | ۴۸۰ |
| ۴۸۱ | هره جمع د خپل مور پلار په قبرونو باندې سورة ياسين لوستل : | ۴۸۱ |
| ۴۸۱ | باب الْجُلُوسِ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ | ۴۸۱ |
| ۴۸۱ | شرح الحديث : | ۴۸۱ |
| ۴۸۲ | باب فِي التَّعْزِيَةِ | ۴۸۲ |
| ۴۸۳ | د امام ابوداؤد يو خاص عادت شريفه په سلوک او ادب کښې : | ۴۸۳ |
| ۴۸۳ | د رسول الله ﷺ د مور پلار اخروي حکم : | ۴۸۳ |
| ۴۸۴ | باب الصَّبْرِ عِنْدَ الصَّدْمَةِ | ۴۸۴ |
| ۴۸۵ | باب فِي الْبُكَاءِ عَلَى الْمَيْتِ | ۴۸۵ |
| ۴۸۵ | مضمون حديث : | ۴۸۵ |
| ۴۸۷ | باب فِي التَّوَجُّعِ | ۴۸۷ |
| ۴۸۸ | د « الميت يعذب ببكاء اهله عليه » حديث تحقيق او توجيه | ۴۸۸ |
| ۴۹۱ | شرح الحديث : | ۴۹۱ |
| ۴۹۱ | باب صَنْعَةِ الطَّعَامِ لِأَهْلِ الْمَيْتِ | ۴۹۱ |
| ۴۹۱ | الكلام على الحديث شرحا وفقها : | ۴۹۱ |
| ۴۹۲ | باب فِي الشَّهِيدِ يُغَسَّلُ | ۴۹۲ |
| ۴۹۳ | د صلوة على الشهيد بحث : | ۴۹۳ |
| ۴۹۵ | شرح الحديث : | ۴۹۵ |
| ۴۹۶ | په حديث الباب باندې د امام ترمذی نقد : | ۴۹۶ |
| ۴۹۸ | باب فِي سُتْرِ الْمَيْتِ عِنْدَ غَسْلِهِ | ۴۹۸ |
| ۴۹۹ | شرح الحديث : | ۴۹۹ |
| ۴۹۹ | په صديق اکبر <small>رضي الله عنه</small> کښې قدرة د آثار خلافت پيدا کيدل : | ۴۹۹ |
| ۴۹۹ | شرح الحديث : | ۴۹۹ |
| ۵۰۰ | د احد الزوجين يو بل ته غسل ورکول او مذاهب الائمة په دې کښې : | ۵۰۰ |
| ۵۰۱ | شرح الحديث : | ۵۰۱ |
| ۵۰۲ | د استبراک بآثار الصالحين ثبوت او استحباب : | ۵۰۲ |
| ۵۰۲ | باب كَيْفَ غُسِّلَ الْمَيْتُ | ۵۰۲ |
| ۵۰۳ | د تجهيز په وخت د زنانه وينتو سره مخه او کړې شی؟ | ۵۰۳ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|------|--|------|
| ۵۰۴ | باب فِي الْكَفَنِ..... | ۵۰۴ |
| ۵۰۶ | د رسول الله ﷺ د كفن متعلق تحقيق كښې د عائشې رايې راني : | ۵۰۶ |
| ۵۰۶ | د سړي د كفن په مصداق كښې د ائمه اربعه مسلكونه : | ۵۰۶ |
| ۵۰۶ | په حديث د عائشې رايې كښې د چا دليل دي؟ | ۵۰۶ |
| ۵۰۷ | د كفن درې درجې دي : | ۵۰۷ |
| ۵۰۸ | باب كَرَاهِيَةِ الْمُغَالَاةِ فِي الْكَفَنِ..... | ۵۰۸ |
| ۵۰۸ | د حديث د يو مشكل لفظ تحقيق : | ۵۰۸ |
| ۵۰۹ | د مصعب بن عمير رضی اللہ عنہم ذكر : | ۵۰۹ |
| ۵۱۰ | باب فِي كَفَنِ الْمَرْأَةِ..... | ۵۱۰ |
| ۵۱۰ | د زنانه د كفن تفصيل د ائمه اربعه په نزد: | ۵۱۰ |
| ۵۱۱ | باب فِي الْمِسْكِ لِلْمَيِّتِ..... | ۵۱۱ |
| ۵۱۲ | د ترجمه الباب والا مسئله كښې د علماء كرامو اختلاف : | ۵۱۲ |
| ۵۱۲ | باب التَّعْجِيلِ بِالْجَنَازَةِ وَكَرَاهِيَةِ حَبْسِهَا..... | ۵۱۲ |
| ۵۱۳ | په تعجيل كښې مصحلت : | ۵۱۳ |
| ۵۱۳ | باب فِي الْغُسْلِ مِنْ غَسْلِ الْمَيِّتِ..... | ۵۱۳ |
| ۵۱۴ | په مسئله الباب كښې د علماء كرامو اختلاف : | ۵۱۴ |
| ۵۱۶ | باب فِي تَقْبِيلِ الْمَيِّتِ..... | ۵۱۶ |
| ۵۱۶ | د مړي د غسل علت كښې د علماء كرامو اقوال: | ۵۱۶ |
| ۵۱۷ | باب فِي الدَّفْنِ بِاللَّيْلِ..... | ۵۱۷ |
| ۵۱۷ | د يو ذكر جهري كونكي خوش نصيبي : | ۵۱۷ |
| ۵۱۸ | د رسول الله ﷺ د بعض صحابه كرامو قبر ته كوزيدل : | ۵۱۸ |
| ۵۱۸ | باب فِي الْمَيِّتِ يُحْتَمَلُ مِنْ أَرْضٍ إِلَى أَرْضٍ وَكَرَاهِيَةِ ذَلِكَ..... | ۵۱۸ |
| ۵۱۸ | د مړي د نقل په باره كښې مذاهب ائمه : | ۵۱۸ |
| ۵۲۰ | باب فِي الصُّفْرِ عَلَى الْجَنَازَةِ..... | ۵۲۰ |
| ۵۲۰ | د جنازي د صفونو په باره كښې د امام مالك رضي الله عنه مذهب : | ۵۲۰ |
| ۵۲۱ | باب اتِّبَاعِ النِّسَاءِ الْجَنَائِزِ..... | ۵۲۱ |
| ۵۲۱ | په مسئله الباب كښې مذاهب ائمه : | ۵۲۱ |
| ۵۲۱ | باب فَضْلِ الصَّلَاةِ عَلَى الْجَنَائِزِ وَتَشْيِيعِهَا..... | ۵۲۱ |
| ۵۲۴ | باب فِي التَّارِ يُتَّبَعُ بِهَا الْمَيِّتُ..... | ۵۲۴ |
| ۵۲۴ | باب الْقِيَامِ لِلْجَنَازَةِ..... | ۵۲۴ |

| شمار | مضمون | صفحه |
|-------|--|------|
| | (ههنا مسئلتان) المسئلة الاولى : | ۵۲۵ |
| | المسئلة الثانية : | ۵۲۶ |
| | باب الرُّكُوبِ فِي الْجَنَازَةِ | ۵۲۸ |
| | باب الْمَشْيِ أَمَامَ الْجَنَازَةِ | ۵۳۰ |
| | په مسئله الباب كښې مذاهب ائمه: | ۵۳۰ |
| | صلوة على الطفل كښې د ائمه مذاهب : | ۵۳۱ |
| | باب الإِسْرَاعِ بِالْجَنَازَةِ | ۵۳۲ |
| | باب الإمام لا يُصَلِّي عَلَى مَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ | ۵۳۳ |
| | د ترجمة الباب والا مسئله كښې مذاهب ائمه : | ۵۳۳ |
| | مضمون حديث : | ۵۳۴ |
| | باب الصَّلَاةِ عَلَى مَنْ قَتَلْتَهُ الْخُدُودُ | ۵۳۵ |
| | باب فِي الصَّلَاةِ عَلَى الطِّفْلِ | ۵۳۶ |
| | رسول الله ﷺ د خپل ځوی ابراهيم <small>رضي الله عنه</small> د جنازې مونځ او كړو كه نه؟ | ۵۳۶ |
| | د ابراهيم <small>رضي الله عنه</small> د عمر په موده كښې د رواياتو اختلاف : | ۵۳۸ |
| | باب الصَّلَاةِ عَلَى الْجَنَازَةِ فِي الْمَسْجِدِ | ۵۳۸ |
| | باب الدَّفْنِ عِنْدَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَعِنْدَ غُرُوبِهَا | ۵۴۰ |
| | اوقات منهيه كښې په صلوة جنازة كښې مذاهب اربعه : | ۵۴۰ |
| | اوقات منهيه كښې د مړي د دفن كولو كښې اختلاف د امامانو : | ۵۴۱ |
| | باب إِذَا حَضَرَ جَنَائِزَ رِجَالٍ وَنِسَاءٍ مَنْ يُقَدِّمُ | ۵۴۱ |
| | باب أَيْنَ يَقُومُ الْإِمَامُ مِنَ الْمَيِّتِ إِذَا صَلَّى عَلَيْهِ | ۵۴۲ |
| | مسئلة الباب كښې مذاهب ائمه : | ۵۴۲ |
| | باب التَّكْبِيرِ عَلَى الْجَنَازَةِ | ۵۴۶ |
| | باب مَا يُقْرَأُ عَلَى الْجَنَازَةِ | ۵۴۷ |
| | باب الدُّعَاءِ لِلْمَيِّتِ | ۵۴۸ |
| | د جنازې په مانځه كښې چه كومې دعا گانې راغلي دي : | ۵۴۸ |
| | باب الصَّلَاةِ عَلَى الْقَبْرِ | ۵۵۰ |
| | په دې مسئله كښې مذاهب ائمه : | ۵۵۰ |
| | په حديث الباب كښې د رواياتو اختلاف : | ۵۵۱ |
| | د احنافو د طرف نه د حديث الباب توجيه : | ۵۵۲ |
| | باب فِي الصَّلَاةِ عَلَى الْمُسْلِمِ يَمُوتُ فِي بِلَادِ الشَّرْكِ | ۵۵۳ |

| شمار | مضمون | صفحہ |
|------|---|-------|
| ۵۵۵ | باب في جمع الموتى في قبر والقبر يعلم | |
| ۵۵۶ | باب في الحفار يجد العظم هل يتنكب ذلك المكان | |
| ۵۵۷ | باب في اللحد | |
| ۵۵۷ | (د لنا او غيرنا نه مراد) | |
| ۵۵۸ | باب كم يدخل القبر | |
| ۵۵۹ | باب في الميت يدخل من قبل رجليه | |
| ۵۶۰ | (نبي كريم ﷺ قبر ته خنكه كوز كره شو؟) | |
| ۵۶۰ | باب كيف يجلس عند القبر | |
| ۵۶۱ | باب في الدعاء للميت اذا وضع في قبره | |
| ۵۶۲ | باب الرجل يموت له قرابة مشرك | |
| ۵۶۲ | باب في تعميق القبر | |
| ۵۶۳ | باب في تسوية القبر | |
| ۵۶۵ | شرح الحديث : | |
| ۵۶۶ | باب الاستغفار عند القبر للميت في وقت الانصراف | |
| ۵۶۷ | د تدفين نه پس د مری دپاره دعا كول : | |
| ۵۶۷ | باب كراهية الدبح عند القبر | |
| ۵۶۷ | شرح الحديث : | |
| ۵۶۸ | باب الميت يصلى على قبره بعد حين | |
| ۵۶۹ | باب في البناء على القبر | |
| ۵۶۹ | شرح الحديث : | |
| ۵۷۱ | شرح الحديث : | |
| ۵۷۱ | باب في كراهية القعود على القبر | |
| ۵۷۲ | باب المشي في التعل بين القبور | |
| ۵۷۴ | باب في تحويل الميت من موضعه للأمر يحدث | |
| ۵۷۴ | باب في الثناء على الميت | |
| ۵۷۵ | باب في زيارة القبور | |
| ۵۷۷ | باب في زيارة النساء القبور | |
| ۵۷۸ | باب ما يقول إذا زار القبور أو مر بها | |
| ۵۷۸ | باب المحرم يموت كيف يصنع به | |

بَابُ فِي كَرَاهِيَةِ حَرْقِ الْعَدُوِّ بِالنَّارِ

دشمن لره په اور باندي د سوزولو ممانعت

په مسئله الباب باندي کلام

دا د تعذيب بالنار مسئله ده، په دې کښې تفصيل دې کما قال ابن قدامة، چه په دشمن باندي د قابو موندلو نه پس د هغه په اور سيزل بالاتفاق ناجائز دی، او د قابو موندلو او د هغوی د قيد کولو نه مخکښ، په دې صورت کښې دا حکم دې چه که بغير د تحريق نه په هغوی باندي قابو موندل ممکن وی نو بيا خو ئې تحريق جائز نه دې، البته په کوم صورت کښې چه بغير د تحريق نه قابو موندل ممکن نه وی نو په دې صورت کښې د اکثر اهل علم په نزد تحريق جائز دې. (تراجم بخاری ص ۱۱۶، ج ۴) د امام بخاری ترجمه ده ﴿لا يعذب بعذاب الله﴾ د دې ترجمې د لاندي د سلفو اختلاف دې بعض صحابه کرام لکه عمر او ابن عباس دې ته مطلقا مکروه وائی، برابره خبره ده که په سبب د کفر وی او که د جنگ په حالت کښې وی، او يا قصاص وی، او بعض صحابه لکه علی او خالد بن الوليد رضی الله عنهم ورته جائز وائی، الی اخر ما ذکر، او ابن قدامة فرمائی چه اگر چه ابوبکر صدیق رضی الله عنه د اهل رده د تحريق حکم کړې وو او د هغه د دې حکم تعمیل خالد بن الوليد رضی الله عنه کړې وو خو اوس په دې مسئله کښې هيڅ اختلاف نه دې پاتې، یعنی د دې په عدم جواز باندي اتفاق اوشو، (ای بعد اخذهم والقذوة عليهم) زه وایم، د کتاب الحدود د اولنی باب باب الحكم فيمن ارتد د لاندي دا روایت راروان دې، ﴿ان عليا عليه السلام احرق ناسا ارتدوا عن الاسلام فبلغ ذلك ابن عباس فقال : لم اكن لاحرقهم بالنار ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا تعذبوا بعذاب الله﴾ الحديث... دا خلق کوم چه علی رضی الله عنه سيزلې وو د دې مصداق فرقه سبائيه ده کوم چه د عبدالله بن سبا يهودی طرف ته منسوب دی دې خلقو د علی رضی الله عنه په باره کښې د الوهيت دعوی کړې وه، کما هو مذکور فی البذل ص ۱۲۱ ج ۵ فی کتاب الحدود.

[۲۶۷۳] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا مُغْبِرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحَزَامِيُّ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَمَزَةَ الْأَسْلَمِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ أَمْرَةً عَلَى سَرِيَّةٍ قَالَتْ: فَخَرَجْتُ فِيهَا، وَقَالَ: "إِنْ وَجَدْتُمْ فَلَانًا فَأَحْرِقُوهُ بِالنَّارِ، قَوْلَيْتُ فَنَادَانِي فَرَجَعْتُ إِلَيْهِ فَقَالَ: إِنْ وَجَدْتُمْ فَلَانًا فَأَقْتُلُوهُ وَلَا تَحْرِقُوهُ، قَالَتْ لَا يُعَذَّبُ بِالنَّارِ إِلَّا الرَّبُّ النَّارِ".

محمد بن حمزه اسلمي دخپل پلار نه روایت کوی چه نبی صلی الله علیه و آله دلره په یو وړوکی لښکر باندي امیر مقرر کړې وو دې وائی چه زه جهاد ته او وتم او نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی وو که فلانې مشرک موگیر کړو نو په اور کښې ئې واچوئ او وئې سوزوئ، کله چه ماشاه کړه او روان شوم نو نبی صلی الله علیه و آله بیا آواز او کړو اوزه راوگرزیدم او وئې فرمائیل که چرې فلانې موگیر کړو نو مړئې کړئ او مه ئې سوزوئ ځکه چه په اور باندي څوک چالره عذاب نه شی ورکولې علاوه دالله تعالی نه.

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۳۴۴۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۹۴/۳) (صحيح)

شرح حدیث

حمزه بن عمرو الاسلمی رضی اللہ عنہ فرمائی چه رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم زه د یوې سربه امیر جوړ کړم او وې لیرلم، د ټلو په وخت ئې ماته او فرمائیل **(ان وجدتم فلانا فاحرقوه بالنار)** چه که فلانی سړې ته بیا مومي نو هغه په اور اوسیزه، چه کله زه روان شوم نو زه ئې په اواز سره واپس راوبللم او وې فرمائیل چه که ته هغه سړې بیا مومي نو قتل ئې کړه، سیزه ئې مه **(فانه لا يعذب بالنار الا رب النار)** گویا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم د خپل سابقه حکم نه رجوع او فرمائیله، د فلانی نه مراد لکه چه په بعض روایاتو کښې تصریح ده هبار بن الاسود دی، د روایاتو نه معلومیری چه د هبار یو ملگری هم وو کوم چه د هبار سره شوې وو، دی دواړو ته د سزا ورکولو حکم په دې وجه شوې وو چه د رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لور سیده زینب رضی اللہ عنہا چه کله د هغې خاوند ابو العاص بن الربیع رضی اللہ عنہ د رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم د معاهدې مطابق د مکې مکرمې نه د مدینې منورې طرف ته په سورلئ باندې کینولو سره روانه کړې وه، نو دې هبار چه د هغه سره یو بل سړې هم وو نو دې دواړو د زینب رضی اللہ عنہا سورلئ اوبښ په نیزه باندې وهلې وه او هغه ئې راغورخولې وه او دې وخت کښې زینب رضی اللہ عنہا حامله هم وه، او هم د هغه ځانې نه د هغې بیماری شروع شوې وه، په بعض کتابونو کښې د هبار بن الاسود د ملگری نوم نافع بن عبد قیس راغلي دي، په بذل کښې د بعض کتابونو نه نقل کړې شوي دي چه دا سربه د چا چه دلته په حدیث الباب کښې ذکر دې د هبار سره ملاؤ نه شوه، لهذا هغه قتل هم نه شو، بلکه په روایاتو کښې دی چه هبار روستو اسلام قبول کړې وو، والله تعالی اعلم بالصواب، د سیده زینب رضی اللہ عنہا دا واقعه په کتاب النکاح کښې هم په "رد زینب الی ابی العاص بن الربیع" والا حدیث د لاندې تیره شوي ده.

[۲۶۷۴] (۱) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدٍ، وَقُتَيْبَةُ، أَنَّ اللَّيْثَ بْنَ سَعْدٍ، حَدَّثَهُمْ عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَّارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْثٍ فَقَالَ: "إِنْ وَجَدْتُمْ فَلَانًا وَفَلَانًا"، فَذَكَّرْهُمَا مَعْنَاهُ.

د ابو هريره نه روایت دې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم مونږ په جنگ کښې اولیرلو او وئې فرمائیل که چرې فلانی فلانی موگیر کړو باقی روایت د تیر روایت په شان دې.

[۲۶۷۵] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ مَجْبُوبُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا أَبُو اسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ أَبِي اسْحَاقَ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ ابْنِ سَعْدٍ، قَالَ: غَزَى أَبِي صَالِحٍ، عَنْ الْحَسَنِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَأَنْطَلَقَ لِحَاجَتِهِ فَرَأَيْنَا حَمْرَةً مَعَهَا فَرْخَانٌ فَأَخَذْنَا فَرْخِيهَا فَجَاءَتِ الْحَمْرَةُ فَجَعَلَتْ تَفْرِشُ فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ مَنْ فَعَرَ هَذِهِ بَوْلًا هَارِدًا وَوَلَدَهَا إِلَيْهَا وَرَأَى قَرْيَةً تَمْلَأُ قَدْحًا حَرَفْنَا هَا فَقَالَ مَنْ حَرَّقَ هَذِهِ قُلْنَا نَحْنُ قَالَ: "إِنَّهُ لَا يَنْبَغِي أَنْ يُعَذَّبَ بِالنَّارِ إِلَّا رَبُّ النَّارِ".

عبد الرحمن بن عبد الله دخپل پلار نه روایت کوي فرمائی چه مونږ د نبی صلی اللہ علیہ وسلم سره په یوسف کښې رو نبی صلی اللہ علیہ وسلم دخپل څه حاجت دپاره. لارو نومونږه یوه مرغی اولیدله چه دوه

^۱: صحیح البخاری/الجهاد ۱۴۹ (۳۰۱۶)، سنن الترمذی/السير ۲۰ (۱۵۷۱)، (تحفة الأشراف: ۱۳۴۸۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۰۷/۲، ۳۳۸، ۴۵۳) (صحیح)

^۲: تفرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۹۳۶۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۰۴/۱)، ويأتي هذا الحديث في الأدب (۵۳۸) (صحیح)

بچی ورسره وو مونږ دهغې دواړه بچی اونیول نومرغی راغله او خپلې وزرې ئې اوغورولې نبي ﷺ چه راغې وئې فرمائیل داچا دردولې ده په خپلو بچوباندې بچی ورواپس کړئ دي ته او د میړیانو کلې ئې هم اولیدو چه مونږ سوزولې وونبې ﷺ او فرمائیل داچا سوزولې دي مونږ ورته اووئیل مونږه هغه او فرمائیل پکارنه دی چه څوک په اور باندې عذاب ورکړی مگر پیدا کونکی داور.

شرح حدیث

﴿ کنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في سفر فانطلق لحاجته ﴾ د حدیث مضمون دا دی چه عبدالله بن مسعود رضي الله عنه فرمائی چه مونږ د رسول الله ﷺ سره په یو سفر کښې وو چه کله په لاره کښې په یو منزل باندې کوز شو نو هغه خو د قضاء حاجت دپاره تشریف یورلو، نو مونږ یوه مرغی اولیده، د هغې سره دوه بچی هم وو، مونږ د هغې بچی اونیول، لږ ساعت پس هغه مرغی یعنی د بچو مور راغله، او د چا په لاس کښې چه ئې بچی وو په د هغه دپاسه الوتله، لږ ساعت پس رسول الله ﷺ تشریف راوړلو او چه کله ئې د هغه بچو او مرغی منظر اولیدو نو وې فرمائیل چه دې ته چا تکلیف ورکړې دې، د دې د بچو په وجه باندې، دا بچی د دې مور طرف ته واپس کړئ (په دې سفر کښې یوه واقعه خو دا راغله او بله واقعه هغه کومه چه راوی بیانوی، او هغه د میړو سوړه اولیده چه مونږ هغه سیزلې وه نو په دې باندې هغه سوال اوکړو ﴿ من حرق هذه؟ ﴾ الی اخره... دا د مرغی او د هغې د بچو واقعه په یو بل سیاق سره د کتاب الجنائز په شروع کښې هم راروانه ده، په هغې کښې بل څه اضافه هم ده، هم دغه شان د کتاب الادب په اخیر کښې "باب فی قتل الذر" کښې هم دا حدیث راروان دی.

باب فی الرجل یکرّی دابته علی النصف أو السهم

خپل څاروې په کرایه ورکول په عوض د غنیمت د نیمې حصې یا د پوره حصې

دا مسئله دلته خو په خپل محل کښې ده او د دې نه مخکښې په کتاب الطهارة کښې د "باب ما ینهی عنه ان یستنجی به" د حدیث د لاندې تبعاً راغلې ده، د هغې طرف ته دې رجوع اوکړې شی، دا قسم اجاره د امام احمد او امام اوزاعی په نزد جائز ده، د جمهورو په نزد جائز نه ده، د جمهورو د طرف نه جواب په دغه مقام کښې تیر شوې دې.

[۲۶۷۶] حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبرَاهِيمَ الدِّمَشْقِيُّ أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ شُعَيْبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو زُرْعَةَ يَحْيَى بْنُ أَبِي عَمْرٍو السَّيْبَانِيُّ، عَنْ عَمْرٍو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنْ وَائِلَةَ بِنِ الْأَسْعَدِ، قَالَ: نَادَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، فَخَرَجْتُ إِلَى أَهْلِي فَأَقْبَلْتُ وَقَدْ خَرَجَ أَوَّلَ صَحَابَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَطَفِقْتُ فِي الْمَدِينَةِ أَنْ أَدَى الْأَمَنُ يَجْعَلُ رَجُلًا لَهُ سَهْمُهُ؟ فَتَادَى شَيْخٌ مِنَ الْأَنْصَارِ قَالَ لَنَا: سَمِعُهُ عَلَى أَنْ تَجْعَلَهُ عَقَبَةً وَطَعَامُهُ مَعَنَا، قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: فَبَرَكَةَ اللَّهُ تَعَالَى قَالَ: فَخَرَجْتُ مَعَ خَيْرِ صَاحِبٍ حَتَّى أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْنَا، فَأَصَابَنِي قَلَابِصٌ فَسَقَطَتْ حَتَّى أَتَيْتُهُ فَخَرَجَ فَقَعَدَ عَلَيَّ حَقِيبَةً مِنْ حَقَائِبِ إِبِلِهِ، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُنِ مُدِيرَاتٍ لَمْ قَالَ: سَمِعْتُنِ مَقِيلَاتٍ، فَقَالَ: مَا أَرَى قَلَابِصَكَ إِلَّا كِرَامًا قَالَ: إِنَّمَا هِيَ غَنِيمَتُكَ الَّتِي شَرَطْتَ لَكَ قَالَ: خُذْ قَلَابِصَكَ يَا ابْنَ

(۱) تفرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۴۷) (ضعيف)

أَخِي فَقَبِّرْ سَهْمِكَ أَرْضًا.

دواثله بن اسقع رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله په غزوه تبوك كښې آواز اوکړو، دتبوك په جنگ كښې دمجاهدينو دراجمع كولو دپاره اوزه خپل كور ته تلې وم دهغه ځانې نه چه راتلم نو اولنې صحابي وتلې وو ماپه ښار كښې اعلان شروع كړو چه ايا داسې څوك شته چه دمال غنيمت دحصې په عوض كښې څوك په سورلئ سور كړئ يو بوډا انصاري اووئيل خه نودهغه حصه به مونږه اخلو اودې به دخان سره سورور او يوځانې به خوراك كوو ما اووئيل بالكل تيك ده ماته قبوله ده نوبيا هغه بوډا اووئيل په الله تعالى باندي اعتماد كوو او هغه اووئيل البته زه ديو بهترين ملگري سره او وتلم تردې چه الله تعالى مونږ ته مال غنيمت راكړو اوزما په حصه كښې يوڅو تيز رفتار ه اوبښې راغلي نوماهغه روانې كړي اودده خواته راغلمه اودې وتلې وو اودخپل اوبښ په شاته حصه باندي ناست وو اووئې وئيل دا اوبښان په ما پسې شاته راشره او راځه اوددې نه پس ئې اووئيل زما خيال دې چه ستا اوبښې ډيري ښي اوبښې دي ما اووئيل داخوستا مال دي دكوم چه ما شرط مقرر كړې وو هغه اووئيل اي زما وراره خپله حصه واخله زمونږه مقصد دا حصه اخستل نه وو.

شرح حديث

د حديث مضمون دا دي چه سيدنا واثله بن الاسقع رضي الله عنه فرمائی چه د رسول الله صلی الله علیه و آله د طرف نه غزوه تبوك ته د تلو اعلان اوشو، زه اعلان اوريدلو سره خپل كور ته لاړم او هلته تلو سره زه هم دې طرف ته متوجه شوم، خو ډير صحابه كرام وتلې وو (د هغوی سره چونكه سورلئ نه وه په دې وجه هغوی وئيل چه) زه د مدينې په كوڅو كښې اعلان كونكې گرځيدم (الا من يحمل رجلا له سهمه) د رجل نه مراد د هغه خپل ذات دي، چه څوك شته چه ما په خپله سورلئ باندي سور كړی په داسې طريقه چه زما د مال غنيمت حصه به د هغه دپاره وي، گویا د غنيمت حصه ئې د سورلئ اجرت مقرر كړو (او ظاهره ده چه د غنيمت حصه معلومه نه ده چه حاصليری به يا نه او نه ئې مقدار معلوم دي لهذا دا (اجاره په اجرت مجهوله سره شوه) زما په دې اعلان باندي يو انصاري شيخ لييك اووي، يعنی هغه د دې دپاره تيار شو او هغه اووي چه زما دپاره به د هغه حصه وي په داسې طور چه زه به دې په خپله سورلئ باندي سوروم په نوبت نوبت، او د هغې خوراك به هم مونږ سره وي، واثله فرمائی چه ما اووي چه خوښه مې ده، شيخ انصاري اووي چه بيا څه چه څو د الله پاک په نوم، واثله فرمائی چه زه د ډير ښه ملگري سره وتلم، مطلب دا دي چه ما هغه ډير ښه بيا موندلو، تردې چه الله پاک مونږ ته مال غنيمت راكړو چه په هغې كښې بعض اوبښانې ملاؤ شوې، ما هغه دې شيخ انصاري ته راوستلې هغه هم د دننه نه بهر راغلو، هغه د دې اوبښانو نه د يو اوبښ په كيجاوه باندي كيناستلو او د كيناستلو نه پس هغه انصاري ماته اووي چه دا خو لږ په شا بوڅه، بيا ئې اووي چه اوس ئې لږ وړاندي بوڅه (يعنی په هغه اوبښانو باندي د زمينبت دپاره) بيا هغه انصاري ماته اووي چه دا ستا اوبښانې خو ډيري غوره دي، واثله فرمائی چه ما ورته اووي چه دا خو ستاسو دي لكه چه ما شرط لگولې وو، هغه انصاري

راته په جواب کښې اووې چه گرانه اونيسه دا خپلې اوبښې (فغير سهمک اردنا) زمونږ مطلوب ستا دا اوبښې خو نه دي، زمونږ مراد خوبل څه دي يعنې د آخرت ثواب.

د اجاره کوم صورت چه دلته موندلې شوې دي هغه من حيث المسئلة والفقہ، د ائمه ثلاث او جمهورو خلاف دي، د دي يو جواب دا کيدې شي چه دا د صحابي فعل دي، مرفوع حديث نه دي فلا حجة فيه، امام احمد رضي الله عنه د دي د جواز قائل دي.

يو اشکال او د هغې جواب

د دي نه پس خان پوهه کړې چه دلته يو اشکال ظاهر دي هغه دا چه په غزوه تبوک کښې نه خو قتال ته خبره رسيدلې وه او نه مال غنيمت حاصل شوې وو، نو بيا دا څنگه غنيمت دي د دي څه صورت شو، د دي جواب دا کړې شوې دي چه ډير کرته په لويو لويو غزواتو کښې داسې کيږي چه يو لښکر يو ځانې ته د جنگ دپاره روان دي چه د هغه سفر اوږد دي، په لاره کښې د لښکر د امير رائي دا وي چه نژدې چه کومه کلې دي هلته په دي لښکر کښې يوه دسته جوړولو سره د هغې د فتح کولو دپاره اوليرلې شي، دا موقع پکښې کله کله راځي، پس ليکلې دي چه په غزوه تبوک کښې هم داسې شوې وو چه تبوک ته نژدې يو کلې واقع دي، د دومة الجندل په نوم باندې، چه د هغې رئيس او امير د اکيدر په نوم باندې سړې وو، په حاشيه د نسائي کښې ليکلې شوې دي چه دا لوئي زميندار او نواب وو، الحاصل رسول الله صلى الله عليه وسلم د قيام تبوک دوران خالد بن الوليد ته يوه دسته ورکړه او د هغې امير نې جوړ کړو او د هغې طرف ته نې اوليرلو، سيدنا خالد رضي الله عنه په هغه اکيدر باندې قابو بيا موندلو او هغه نې قيد کړو، د هغه اوږده قصه ده، د سيرة په کتابونو کښې دي اوکتلې شي، الغرض د دومة الجندل د فتح کولو نه پس د اکيدر سره مصالحت شوې وو، کوم مال چه په مصالحت کښې مقرر شوې وو د هغې مقدار په کتابونو کښې دا ليکلې شوې دي، ابل دوه زره او فرس اته سوه. دروع (زغري) څلور سوه، غشي څلور سوه، نو د حصول غنيمت دا صورت شوې وو، د دي واقعي ذکر په ابوداود کښې وړاندې په کتاب الخراج کښې په باب في اخذ الجزية کښې داسې راروان دي: (أَنَّ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بَعَثَ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى أَكْبَدِرِ ذُوْمَةَ فَأَخَذَ فَاتَوْهُ بِهِ فَحَقَّنَ لَهُ دَمَهُ وَصَالَحَهُ عَلَى الْجَزِيَّةِ) او د دي تفصيل هلته په بذل کښې حضرت ليکلې دي چه د هغې خلاصه په سيرة المصطفى ص ۹۲ ج ۳ کښې داسې ليکلې شوې ده، چه د تبوک نه رسول الله صلى الله عليه وسلم خالد د څلور سوه او شلو شهسوارانو سره د اکيدر طرف ته اوليرلو کوم چه د هرقل د طرف نه د دومة الجندل حاکم او گورنر وو، رسول الله صلى الله عليه وسلم د ليرلو په وخت خالد رضي الله عنه ته او فرمائيل چه هغه به تاسو ته د ښکار په حالت کښې ملاويږي هغه قتل کوي مه بلکه گرفتارولو سره نې ماته راولئ، او ا که هغه انکار او کړو نو بيا نې قتل کړي، خالد په داسې شپه هلته اورسيدو چه سپوږمې روښانه وه، د گرمي موسم وو او اکيدر او د هغه ښځه د قلعه په برج باندې ناست سندرې اوريدلې، ناڅاپه يوه ځنگلي غوا راغله او د قلعه د پاتک سره نې تکره او وهله (د دي غوا ښکار ډير گران وي هغه ډيره تيزه منده وهی، د هر يو ښکاري په قابو کښې هم نه راځي، د دي د ښکار دپاره د هغه ځانې

ښکاری خلق اسونو ته ټریننگ ورکوی نخو دې وخت کښې د الله پاک شان ته اوگوره چه الله پاک ته د دې سربیه د فتح انتظام مقصود وو نو هغه غوا خپله راغله او د هغه قلعه د دراوژې سره ئې سر وهلو، اکیدر فوراً د خپل رور او خو خپلوانو سره د ښکار دپاره راکوز شو او په اسونو باندې سوریډلو سره په غوا پسې شو لږ مخکښې تلې وو چه د خالد بن الولید رضی الله عنہ ښکار شو، خالد اووې چه زه تاته د قتل نه پناه درکولې شم په دې شرط چه ته ما سره د رسول الله صلی الله علیه و سلم په خدمت کښې حاضریدل منظور کړې، اکیدر دا خبره منظوره کړه، خالد بن الولید د رسول الله صلی الله علیه و سلم په خدمت کښې حاضر شو، اکیدر دوه زره اوبښان او اته سوه اسونه او څلور سوه زغرې او څلور سوه نیزې ورکولو سره صلح اوکړه. اه

د یو بل سوال جواب

بیا دلته یو سوال واردیږی چه د غزوه تبوک د لښکر تعداد خو تقریباً دیرش زره وو او دا قلائص کوم چه د اکیدر نه حاصل شوې وو د هغې تعداد صرف دوه زره وو نو د وائله په حصه کښې خو اوبښان څنگه راغلل ځکه چه مال غنیمت خو برابر تقسیمیرې؟ د دې جواب دا دې لکه چه په بعض احادیثو کښې راتلونکې دې چه کله په یو لښکر کښې یوه سربیه ویستلو سره لیرلې شی نو په حاصلیدونکې غنیمت کښې خاص اصحاب سربیه ته د مال غنیمت ثلث یا ربع ورکولې شی، او ما بقی په جیش باندې واپس کولې شی، لهذا کیدې شی چه په دې ثلث مال غنیمت کښې د وائله په حصه کښې کوم چه په دې سربیه کښې شریک وی دومره اوبښان راغلل.

باب فی الأسیر یوثق

قیدی په مضبوط تړلې شی

یعنی کافر قیدی تړلې کیدې شی یا نه؟ پس د حدیث الباب نه د دې جواز معلومیرې.

[۲۶۷۷] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زَيَْادٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "عَجِبَ رَبُّنَا عَزَّ وَجَلَّ مِنْ قَوْمٍ يُقَادُونَ إِلَى الْجَنَّةِ فِي السَّلَاسِلِ".

د ابوهریر رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و سلم نه مې اوریدلی دی چه الله تعالی تعجب کوي دهغه خلقو نه چه په زنخیرونو به تړلې شوي جنت ته بوتلې شی.

« سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ -صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- يَقُولُ « لَقَدْ عَجِبَ رَبُّنَا عَزَّ وَجَلَّ مِنْ قَوْمٍ يُقَادُونَ إِلَى الْجَنَّةِ فِي السَّلَاسِلِ »

یعنی الله پاک خوښوی هغه خلق کوم چه د جنت طرف ته بوتلې شی په زنخیرونو او بیرو کښې تړلې، په حدیث کښې د دې نه مراد هغه کافر دی کوم چه مسلمانان اونیسی او د دار الاسلام طرف ته ئې راوولی او بیا هغه دلته په اسلام سره مشرف شی، نو گویا هغوی تړلو سره د اسلام طرف ته راوستلې شی او د اسلام طرف ته راتلل په جنت کښې داخلیدل دی، لهذا وئیلې کیدې شی چه هغوی تړلو سره جنت ته بوتلې شی، د دې حدیث نه

(۱) تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۳۶)، وقد أخرج: صحيح البخاري للجهاد ۱۴۴ (۳۰۱۰)، مسند احمد (۳۰۲/۲)، (صحيح) (۴۰۶)

د کافر قیدی د ربط جائز کیدل ثابتیږي، والحديث اخرجه البخاری، قاله الشيخ محمد عوامه.

[۲۶۷۸] (حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ أَبِي أَحْجَّاجٍ أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ مُسْلِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ جُنْدُبِ بْنِ مَكِيثٍ، قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ غَالِبِ اللَّيْثِيِّ فِي سَرِيَّةٍ، وَكُنْتُ فِيهِمْ وَأَمْرَهُمْ أَنْ يَشْتَوْا الْغَارَةَ عَلَى بَنِي الْمَلُوحِ بِالْكَدِيدِ، فَخَرَجْنَا حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْكَدِيدِ لَقِينَا الْحَارِثَ بْنَ الْبُرْصَاءِ اللَّيْثِيَّ فَأَخَذَنَا فَقَالَ: إِنَّمَا جِئْتُ أُرِيدُ الْإِسْلَامَ، وَإِنَّمَا خَرَجْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا: إِنْ تَكُنْ مُسْلِمًا لَمْ يَضُرَّكَ رَبَّا طَلْنَا يَوْمًا وَلَيْلَةً، وَإِنْ تَكُنْ غَيْرَ ذَلِكَ نَسْتَوْقُ مِنْكَ فَشَدَدْنَا وَثَاقًا.

د جند بن مكيث رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله عبد الله بن غالب ليشي په يوه غصوه كښې اوليرلو او زه هم په هغوی كښې ووم او دوی ته ئې حكم او كړو چه ديو طرف نه حمله او كړي په بنی ملوح خلقو باندي په كديد مقام كښې نومونږ روان شو تردي چه كديد ته اورسيده او د حارث بن برصاع ليشي سره مخامخ شو نومونږه هغه اونيوو نو هغه او وئيل زه خود اسلام راوړو په اراده باندي راغلي يم او زه خو در رسول الله په اراده راوتلي يم مونږ ورته او وئيل كه چرې ته مسلمان ئې نو زمونږ ترل به تاته په دي يوه شپه او ورځ كښې ضرر اونه رسوي او كه چرې مسلمان نه ئې مونږه تا مضبوط ترو، بيا مونږه هغه لره مضبوط او ترلو.

مضمون حديث

قوله: عَنْ جُنْدُبِ بْنِ مَكِيثٍ، قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ غَالِبِ (٢) اللَّيْثِيِّ فِي سَرِيَّةٍ، وَكُنْتُ فِيهِمْ.. الخ:

جندب بن مكيث فرمائي چه رسول الله صلی الله علیه و آله عبد الله بن غالب رضي الله عنه د يوې سريه امير جوړ كړو او بنو الملوح ته ئې د قتال دپاره مقام كديد طرف ته اوليرلو، جندب وائي چه مونږ د كديد طرف ته روان شو نو (لقينا الحارث بن البرصاء الليثي) (٣) هلته مونږ د حارث بن الصبر صالحيشي سره مخامخ شو، مونږ هغه اونيوولو، هغه اووې چه زه خود اسلام په اراده باندي راغلي يم، اوس زه د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت كښې د تلو دپاره وتلي يم (او هغه خلقو د هغه د ترلو اراده او كړه) پس مونږ هغه ته اووې چه كه واقعي ته مسلمان شوي ئې نو زمونږ تالره صرف د يوې شپې او يوې ورځې دپاره ترل څه نقصان دي، او كه داسې نه وي، يعنې واقعي ستا اراده د اسلام قبلولو نه وي نو مونږ خپل اطمينان غواړو، ځكه چه په دي صورت كښې دا ترل يقينا مفيد او قرين قياس دي، پس مونږ هغه په ښه طريقه او ترلو.

د دي واقعي نه هم ظاهر دي چه د ربط الاسير جواز معلوميری.

١: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ٣٢٧٠)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٦٧/٣، ٤٦٨) (ضعيف)

٢: قيل هو الصحيح وقيل الصواب غالب بن عبدالله واليه ميل الحافظ وقيله المنذري حيث قال: الصواب غالب بن عبدالله.

٣: دا د فاعل كيدو په وجه مروع هم كيدي شي او منصوب هم په وجه د مفعوليت، ځكه چه د دي نه مخكښې كوم فعل دي يقينا كه هغه مفرد صيغه او وئيلي شي نو الحارث به فاعل وي، او كه يقينا په صيغه د جمع متكلم او وئيلي شي نو په دي صورت كښې به الحارث مفعول به وي.

[۲۶۷۹] حَدَّثَنَا عَيْسَى بْنُ حَمَادٍ الْمِصْرِيُّ، وَقُتَيْبَةُ، قَالَ قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْلًا قَبْلَ تَحْيَاةِ بَرَجِلٍ مِنْ بَنِي حَنِيفَةَ يُقَالُ لَهُ: ثَمَامَةُ بْنُ أَثَالٍ، سَيِّدُ أَهْلِ الْيَمَامَةِ فَرَبَطُوهُ بِسَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ فَخَرَجَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "مَاذَا عِنْدَكَ يَا ثَمَامَةُ؟" قَالَ: عِنْدِي يَا مُحَمَّدُ خَيْرَانِ تَقْتُلُ تَقْتُلُ ذَاذِمِرَانَ تُنْعِمُ تُنْعِمُ عَلَيَّ شَاكِرًا وَإِنْ كُنْتُ تُرِيدُ الْمَالَ فَسَلْ تُعْطِ مِنْهُ مَا شِئْتَ فَتَرَكَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِذَا كَانَ الْغَدُ، ثُمَّ قَالَ لَهُ: مَا عِنْدَكَ يَا ثَمَامَةُ؟ فَأَعَادَ مِثْلَ هَذَا الْكَلَامِ فَتَرَكَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ بَعْدَ الْغَدِ فَذَكَرَ مِثْلَ هَذَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَطْلِقُوا ثَمَامَةَ، فَأَنْطَلِقَ إِلَى مَخَلٍّ قَرِيبٍ مِنَ الْمَسْجِدِ فَأَغْتَسِلَ فِيهِ ثُمَّ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ" وَسَاقَ الْحَدِيثَ، قَالَ عَيْسَى: أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، وَقَالَ ذَاذِمِرًا.

د سعید بن ابی سعید نه روایت دې فرمائی چه د ابوهریره رضی الله عنه نه مې اوریدلی دی چه نبی صلی الله علیه و آله د نجد مقام طرف ته یولنسکر اولیرو نو د بنی حنیفه قبیلې یوکس ئې په قید کښې راوستو چه ثمامه بنت اثال ورته وئیلې شو او دیمامی سردار وو او د مسجد نبوی په یوې ستن پورې ئې اوترو نبی صلی الله علیه و آله دده طرف ته ورغی او ورته ئې اووئیل خه درسره دي اي ثمامه یعنی ستاخه حال دې پائې داسې اووئیل چه ستاپه گمان کښې زما سره خه دي یعنی زه به ستاسره خه معامله کوم؟ ده اووئیل اي محمد زما سره ډیر خیر دې او ډیر مال راسره دي که چرې مې دي کرم نویو گنهگار به مې کړي او که چرې احسان دي او کړو په ما باندې نو احسان به او کړي په یوشکر گزار باندې او که منال دي پکاروي نو او غواره چه درکرم خومره چه دي خوښه وي نونبې صلی الله علیه و آله ده لره په هم دي حال پریخودو کله چه بله ورخ شوه نوبیا ئې تري دتیري ورخې په شان سوال او کړو او ده هم هغسي جواب ورکړو نونبې صلی الله علیه و آله ده لره په هم دي حال پریخودو کله چه بله ورخ شوه نوبیا ئې تري دتیري ورخې په شان سوال او کړو او ده هم هغسي جواب ورکړو نوبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ثمامه پریږدئ کله چه پریخود شو نو مسجد ته نزدې د کجورو باغ وو دې ورغې او هلته ئې غسل او کړو او دوباره جومات ته راغې او وئې وئیل «أشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله» زه گواهي کوم چه دالله نه علاوه بل معبود نشته او محمد & دالله پاک بنده اورسول دې، او حدیث ئې تر اخره بیان کړو، او دلیث په روایت کښې د ذادم په خائې باندې ذادم لفظ نقل شوې دي.

﴿بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم خيلا قبل تحيية براجل من بني حنيفة يو﴾
طرف ته اولیږله (د دې نه مراد د محمد بن مسلمه سربیه ده) نو هغه سربیه د قبيله بنو حنیفه یو سړې راوستلو چه د هغه نوم ثمامه بن اثال رضی الله عنه وو کوم چه د اهل یمامه سردار وو دې خلقو هغه راوستلو او په مسجد نبوی کښې ئې په یوه ستن پورې اوتړلو (د دې نه ربط الاسیر ثابت شو لهذا د ترجمه الباب مطابقت هم د دې جزء سره دې) وړاندې په روایت کښې دی چه کله په رسول الله صلی الله علیه و آله باندې ورتیر شو نو رسول الله صلی الله علیه و آله د هغه طرف ته متوجه کیدو سره تپوس

۱: صحيح البخاري للصلاة ٧٦ (٤٦٢)، والمغازي ٧٠ (٤٢٧٢)، صحيح مسلم للجهاد ١٩ (١٧٦٤)، سنن النسائي للطهارة ١٢٧ (١٨٩)، المساجد ٢٠ (٧١٣)، (تحفة الأشراف: ١٣٠٠٧)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٥٢/٢) (صحيح)

او کړو (ما ذا عندک یا ثمامة) چه اې ثمامه ستا په ذهن کښې څه دی یعنی د اسلام قبلولو اراده دې شته یا نه؟ یا د دې جملې مطلب دا دې چه ستا گمان زمونږ په باره کښې څه دې، چه مونږ به تا سره څه کوو، نو هغه جواب ورکړو: (عندی یا محمد خیر ان تقتل تقتل ذا دم وان تنعم تنعم علی شاکر) ثمامه په سنجیده لهجه کښې ډیر مناسب جواب ورکړو چه اې محمد ﷺ ما سره خیر دې، یعنی د اسلام راوړلو اراده ده، او وړاندې ئې عرض او کړو چه که تاسو ما قتل کوئ نو داسې سړې به قتل کړئ کوم چه د وینې خاوند دې، نو داسې سړې به قتل کړئ چه د هغه د وینې بدله اخستلو والا شته، یعنی هغه متې لری ځکه چه دې د اهل یمامه سردار وو کما تقدم فی الروایة، د دې نه روستو هغه اووې: او که تاسو په ما باندې انعام کوئ نو په داسې سړې به انعام کوئ کوم چه به ستاسو شکر گزار وی، بیا وړاندې هغه یوه خبره او کړه ډیره غلطه چه که تاته د مال ضرورت وی نو اوایئ تاسو ته به مال درکولې شی څومره چه ستاسو پیکار وی، رسول الله ﷺ په خاموشی سره د هغه جواب واوریډو او هغه ئې پریخودلو او وړاندې لاړو، وړاندې په روایت کښې دی چه کله بله ورځ راغله نو رسول الله ﷺ د هغه په خوا باندې راتیر شو، په دویمه ورځ هم دغه شان سوال او جواب اوشو او بیا رسول الله ﷺ هغه لره پریخودلو سره وړاندې لاړو، تردې چه کله دریمه ورځ شوه نو بیا هم دا سوال او جواب اوشو، خو دې ځل رسول الله ﷺ او فرمائیل (اطلقوا ثمامة) چه ثمامه دې پریخودلې شی، هغه چه پرانستلې شو نو په تندئ مسجد ته نزدې یو باغ ته لاړو چرته چه اوبه وې او هلته ئې غسل او کړو او بیا ئې په مسجد کښې کلمه شهادت اولوستله: اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله (صلی الله علیه وسلم).

عیسی بن حماد، د مصنف استاد فرمائی چه په یو روایت کښې (ذا دم) په ځانې (ذا دم)، ذم په معنی د ذمه او حرمت دې، ای ذی حرمة عند قومه یعنی که ته ما قتل کوی نو داسې سړې به قتل کړې کوم چه د خپل قوم معزز او محترم دې. والحديث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی قاله المنذری.

[۲۶۸۰] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو الرَّازِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَلْمَةُ يَعْنِي ابْنَ الْفَضْلِ، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعْدِ بْنِ زُرَّارَةَ، قَالَ: قَدِمَ بِالْأَسَارِيِّ جَيْنَ قَدِمَ بِهِمْ وَسُودَةَ بِنْتُ زَمْعَةَ عِنْدَ آلِ عَفْرَاءَ فِي مَنَاجِمِهِمْ عَلَي عَوْفٍ، وَمَعُوذِ ابْنِ عَفْرَاءَ قَالَ: وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُضْرَبَ عَلَيْهِنَ الْحِجَابُ قَالَ: تَقُولُ سُودَةُ: وَاللَّهِ إِنِّي لَعِنْدَهُمْ إِذَا أَتَيْتُ، فَقِيلَ: هَؤُلَاءِ الْأَسَارِيُّ قَدْ أَتَى بِهِمْ فَرَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِ وَإِذَا أَبُو يَزِيدَ سَمِئِلُ بْنُ عَمْرٍو فِي نَاحِيَةِ الْحَجْرَةِ مَجْمُوعَةً يَدَاةَ إِلَى عُنُقِهِ يَجِبِلُ، ثُمَّ ذَكَرَ الْحَدِيثَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا قَتْلًا أَبَا جَهْلٍ بْنِ هِشَامٍ وَكَانَا اتَّخَذَا بَالَهُ وَلَمْ يَعْرِفَاةَ وَقَتْلًا يَوْمَ بَدْرٍ.

د یحی بن عبد الله بن عبد الرحمن بن سعد بن زرارہ ^{رضی اللہ عنہ} نه روایت د فرمائی چه هر کله چه دعضوه بدر قیدیان راوستي شو نو سوده بن زمعة د عفراء دخاندان سره وه چرته چه دهغوی اوبسان به کینولې شو دعروف بن عفراه او معوض بن عفراء سره ترڅو چه دحجاب او پردې

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۸۹۷) (ضعیف)

حکم نه وو نازل شوي نو سوده وائی چه زه ددوی سره وم او وویلی شول دا قیدیان راوستلې شوي دي زه خپل کورته راغلم او رسول الله هلته موجود وو او ابویزید سهیل بن عمرو دحجرې په یوگوت کښې هم موجود وو او دهغه دواړه لاسونه په خټ پورې په یو پری باندي ترلې شوي وو او بیا ئې پوره حدیث ذکر کړو، ابوداود وائی عوف بن عفراء او معوذ بن عفراء هغه کسان دي چاچه ابوجهل بن هشام وژلې وو او هغه ته نه رسیدل لیکن دهغه طرف ته روان وو او دې ئې دبدر په ورځ قتل کړو

﴿ قال : قدم بالاسارى حين قدم بهم وسودة بنت زمعة الخ ﴾ راوی وائی : چه کوم وخت کښې د بدر قیدیان مدینې منورې ته راوستلې شو نو هغه وخت اتفاقی ام المومنین سیده سوده رضی الله عنہا د آل عفراء کره د هغوی د اوسانو په غوجل کښ، یعنی د هغوی په قیامگاه کښ، د عوف بن عفراء او معوذ بن عفراء سره نزدې ناسته وه، خو په دې ترجمه باندي دا اشکال دې چه عوف او معوذ دواړه خو په جنگ بدر کښې شهیدان شوي وو لهذا ﴿ علی عوف ومعوذ ﴾ به د هغې د ظاهر نه لرې کولو سره بله معنی مراد کړې شی، یعنی سیده سوده رضی الله عنہا دې وخت د آل عفراء په وخت ولاړه وه، د عوف او معوذ په سلسله کښې یعنی تعزیت وغیره، د دې خلاف ظاهر تاویل حاجت زمونږ د موجوده نسخې په اعتبار سره دې چه په هغې کښې ﴿ فی مناختم ﴾ په ځاى معجمه سره دې او په بعض نسخو کښې دا لفظ د ځاى معجمه په ځانې په ځاى مهمله سره دې ﴿ فی مناختم ﴾ یعنی محل نوح او نوحه ځوانی مجلس، په دې صورت کښې به هیڅ قسم اشکال نه وی ﴿ قال وذلك قبل ان يضرب عليهن الحجاب ﴾ دلته چونکه دا سوال کیدی شی چه سیده سوده د آل عفراء کره تلی وه نو د دې جواب راوی دا ورکړو چه دا د حجاب نه مخکښې واقعه ده، سیده سوده رضی الله عنہا فرمائی چه کله هلته ناسته اوم نو هلته څه گورم چه د جنگ بدر یو کافر قیدی ابو یزید سهیل بن عمرو رضی الله عنہ د حجرې په مینځ کښې ترلې شوي دي، چه د هغه لاسونه دست سره ترلې شوي وو، ددې حدیث داخری جملې نه دربط الاسیر ثبوت ملاویږی ﴿ ثم ذکر الحدیث ﴾ مصنف فرمائی چه وړاندي په حدیث کښې نور هم څه دی کوم چه مونږ اختصارا حذف کړل. ﴿ قال ابوداود: وهما قتلا ابا جهل بن هشام وكانا انتدبا له ولم يعرفاه وقتلا يوم بدر ﴾ امام ابوداود کله کله د حدیث نه روستو تبعا او استطرادا څه علمی فائده ذکر کوی چه د د هغې مثالونه به وړاندي هم راشی، او یو د هغې نه دا مقام دي

بهر حال په حدیث الباب کښې د عوف بن عفراء او معوذ بن عفراء رضی الله عنهما ذکر وو نو د دې دواړو په پاره کښې مصنف فرمائی چه دواړو په جنگ بدر کښې د مشرکانو سردار ابوجهل قتل کړې وو، او دې دواړو د هغه د قتل اراده کړې وه خو هغه ئې نه پیژندلوو پس قصه مشهوره ده چه دې دواړو انصاری هلکانو د سیدنا عبدالرحمن بن عوف رضی الله عنہ نه په جنگ بدر کښې تپوس او کړو چه ابوجهل چرته دي، هغه تپوس او کړو چه ته

١، نه هلي اختلاف النسخ الشيخ محمد عوامه في تحقيقه لسنن ابی داؤد، جزاه الله تعالی

څه دپاره د هغه تپوس کوي؟ هغه اووي چه مونږ به هغه ختموو، هغه د هغوی په بهادری ډیر حیران شو چه دوه کم عمره انصاری هلکان د قریشو د سردار د قتل سوچ کوی، خیر بهر حال هغه ورته او فرمائیل چه کله ماته په نظر راشی نوزه به ئی درته اوبنائم، پس چه کله ئی په هغه باندي نظر پریوتلو نو هغه د دې خبر هغوی ته ورکړو الی اخر القصة....

د ابو جهل د قاتلانو تعیین

امام ابوداود په دې خپل کلام کښې د قاتلین ابو جهل نشاندهی کړې ده، د عوف او معوذ په باره کښې فرمائی چه دې دواړو قتل کړې دي، دا د مشهورې خبرې خلاف ده، د صحیحین په روایاتو کښې د ابو جهل په قاتلانو کښې دا درې نومونه ملاویږی، معاذ بن عفراء، معوذ بن عفراء او معاذ بن عمرو بن الجموح (۱) د عوف بن عفراء نوم نشته، حضرت په بذل کښې د عوف رضی اللہ عنہ ذکر شاذ منلې دي، حضرت لیکي (ولم ار احدا ذکر عوفا فیمن قتل ابا جهل الا ابوداود وابن سعد) زه وائم چه دغه شان د هغه په قاتلینو کښې د عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ نوم د صحیحین په روایاتو کښې موجود دي خپله په ابوداود کښې هم وړاندې د هغه ذکر راروان دي، خو په شروع کښې په هغه باندي حمله کونکی هم هغه درې کسان دی د چا ذکر چه پورته راغلو، عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ روستو هغه لره قتل کونکې دي، هسې د دې سلسلې په روایاتو کښې کافی اختلاف او انتشار دي لکه چه د بخاری د شروع نه معلومیږی، او په دې روایات مختلفه کښې تطبیق باندي هم حافظ وغیره تفصیلی کلام کړې دي، خو د عوف بن عفراء ذکر څنگه امام ابوداود رضی اللہ عنہ کړې دي، حافظ او هم دغه شان علامه عینی داسې نه دي کړې په لامع الدراری او الحل المفهم کښې هم په دې باندي ډیر بحث کړې شوي دي.

بَابُ فِي الْأَسِيرِينَ مِنْهُ وَيُضْرَبُ وَيَقْرَرُ د قیدی د وهلو او د رتلیو بیان

[۲۶۸۱] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَدَبَ أَصْحَابَهُ فَأَنْطَلَقُوا إِلَيَّ بِدِرْقَادٍ أَهْمُ بَرَوَايَا قُرَيْشٍ فِيهَا عَبْدُ أُسُودِ بْنِ الْحَجَّاجِ، فَأَخَذَهُ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلُوا يَسْأَلُونَهُ أَيْنَ أَبُو سُفْيَانَ؟ فَيَقُولُ: وَاللَّهِ مَا لِي بِشَيْءٍ مِنْ أَمْرِهِ عِلْمٌ وَلَكِنْ هَذِهِ قُرَيْشٌ قَدْ جَاءَتْ فِيهِمْ أَبُو جَهْلٍ، وَعُتْبَةُ، وَشَيْبَةُ ابْنَا رَبِيعَةَ، وَأُمَيَّةُ بْنُ خَلْفٍ فَإِذَا قَالَ هُمْ ذَلِكَ ضَرَبُوهُ فَيَقُولُ: دَعُونِي، دَعُونِي أَخْبِرْكُمْ فَإِذَا تَرَكَوهُ قَالَ: وَاللَّهِ مَا لِي بِأَبِي سُفْيَانَ مِنْ عِلْمٍ، وَلَكِنْ هَذِهِ قُرَيْشٌ قَدْ أَقْبَلَتْ فِيهِمْ أَبُو جَهْلٍ، وَعُتْبَةُ، وَشَيْبَةُ ابْنَا رَبِيعَةَ، وَأُمَيَّةُ بْنُ خَلْفٍ، قَدْ أَقْبَلُوا وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي وَهُوَ يَمْنَعُ ذَلِكَ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّكُمْ لَتَضْرِبُونَهُ إِذَا صَدَقْتُمْ وَتَدْعُونَهُ إِذَا كَذَبْتُمْ، هَذِهِ قُرَيْشٌ قَدْ أَقْبَلَتْ لِيَمْنَعَهُ أَبَا سُفْيَانَ قَالَ أَنَسٌ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "هَذَا مَضْرَعُ فَلَانَ عَدَا وَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى الْأَرْضِ وَهَذَا مَضْرَعُ فَلَانَ عَدَا وَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى الْأَرْضِ فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا جَاوَزَ أَحَدٌ

(۱) په دې کښې یو قول دا دي چه معاذ بن عمرو او معاذ بن عفراء دواړه د یو کس نومونه دي، یو ځانې کښې ئی د مور طرف ته نسبت دي او بل ځانې کښې ئی د پلار طرف ته.
(۲) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۳۷۶)، وقد أخرج: صحيح مسلم/الجهاد ۳۰ (۱۷۷۹)، والجنة ۱۷ (۵۷۳۲)، سنن النسائي/الجنائز ۱۱۷ (۲۰۷۶) مسند احمد (۲۶۷۱) (صحيح)

مِنْهُمْ عَنْ مَوْضِعٍ يَدْرَسُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَمَرَ بِمَرَسُورِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَجَدَ بِأَرْجُلِهِمْ فَسَجَبُوا فَالْتَفَوْا فِي قَلْبِهِمْ بَدْرٌ.

دانس بن مالك رضي الله عنه نه روایت دې چه نبی صلی الله علیه و آله خپل ملگري راوغوښتل ټول دبدر طرف ته لاړل یکدم ورته دقریشو داوبوراوړلو والا اوښ ملاو شو او یوتور غلام ورسره وو دبنی الحجاج قبیلې والا صحابه کرامو اونیو و او تپوس ئې تري اوکړو او ورته ئې اووئیل شابه اووايه ابوسفیان چرته دې؟ هغه اووئیل په الله مې دي قسم وي زه دابوسفیان په حال نه یم خبر لیکن د قریشو خلق راغلی دی چه په هغوی کښې ابوجهل، عتبه بن ربیع، شیبه بن ربیع، او امیه بن خلف شامل دي، کله چه ده دا اووئیل نوصحابه کرامو ده لره وهل ورکول شروع کړل ده اووئیل ماپرېردئ زه درته وایم کله چه ئې پریخودو نوده هم دا اووئیل چه په الله مې دي قسم وي ماته دابوسفیان حال نه دې معلوم البته قریشیان راغلی دی چه ابوجهل عتبه اوشیبه دربیعه ځامن او امیه بن خلف پکښې دی، په دې وخت کښې نبی صلی الله علیه و آله په مونخ ولاړ وو اودا واقعه ئې اوریدله کله چه دمونخ نه فارغ شو نووئې وئیل زمادي په هغه ذات قسم وي دچا په لاس کښې چه زما روح دې کله چه دې تاسوته رښتیا وائی نوتاسوتې وهئ اوچه کله درته دروغ وائی نویا ئې پرېردئ ابوسفیان خودشام دقافلي سره مال راوړي راروان دې اودقریشو خلق دهغه دبیچ گولو دپاره راغلی دی هسې نه چه داسې اوشی چه دمسلمانانو قافله په مال باندي قبضه اولگوي لیکن دمسلمانانو قافلي مقابله کول غوښتل د کافرانوسره اوهداسې اوشول، انس وائی نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل دادفلاني دراغورخیدو ځانې دې صبا اوهلته ئې خپل لاس کیخود و چه دادفلاني دراغورخیدو ځانې دې صبا اوهلته یسې هم لاس کیخودو انسه په قسم سره اووئیل چه بیایوکس هم دهغه ځانې نه تیر نه شو په کوم ځانې باندي چه نبی صلی الله علیه و آله لاس ایخودلې وو دنبی صلی الله علیه و آله په حکم سره دوی دخپونه اونیول شول او رابنکلی شول او په بدرکښې یوې جوړي کندې ته اوغورځولې شول

مضمون هدیث

دا دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله دعوت ورکړو خپلو اصحابو ته د بدر په طرف باندي د تلو هغوی بدر ته اورسیدل، پس د مسلم په روایت کښې دی (فانطلقوا حتی نزلوا بدرا) هلته تلو سره صحابه کرامو د قریشو اوبه اوړونکې اوبنان اولیدل (روایا جمع د راویه ده، راویه په اصل کښې خو د اوبو مشک ته وئیلې شی، بیا روستو د دې استعمال په هغه اوښ باندي شروع شو چه په هغې باندي د اوبو مسکونه راوړلې شی، په دې اوبانو کښې د قبيله بنو حجاج یو تور غلام یعنی د هغوی شپونکې وو، صحابه کرامو هغه راونیولو او د هغه نه ئې تپوس اوکړو: (این ابو سفیان) چه ابو سفیان د قافلي رئیس چرته دې. یعنی کومې قافلي چه د شام نه مال تجارت راوړلو هغه چرته ده، د صحابه کرامو په تپوس باندي به هغه جواب ورکولو: والله ما ته خو د هغه په باره کښې هېڅ علم نشته، خوزه تاسو ته د یوې بلې خبرې خبر درکوم چه دا د قریشو لښکر د مکې نه راغلي دې په هغې کښې ئې د ابوجهل وغیره

د پرو قريشي سردارانو نومونه واخستل يعنى عتبه بن ربيعه، شيبه بن ربيعه او اميه بن خلف، صحابه كرامو به د هغه په دې خبره باندې هغه غلام وهلو، او هم دا تپوس به ئې ترې كولو چه ابوسفیان چرته دې؟ هغه به وئيل ما پريږدئ و اتم درته! چه كله به ئې پريخودلو نو بيا به ئې اوئيل چه د ابو سفیان نه خوزه نه يم خبرخو د كفار قريش خبر ماته شته چه هغوی د مكې نه راغلي دي او دلته راجمع دي او په هغوی كښې فلانی فلانی مشركان هم دي، چه كله دا سوال او جواب كيدل هغه وخت رسول الله ﷺ په مانځه كښې مشغول وو خو رسول الله ﷺ په مانځه كښې دا ټولې خبرې اوريدلې، چه كله د مانځه نه فارغ شو نو هغه د صحابه كرامو طرف ته متوجه كيدو سره او فرمائيل: قسم دې په هغه ذات د چا په قبضه كښې زما روح دې واقعي خبره هغه ده چه كومه تاسو ته دا غلام كوی يعنى دا چه ماته د ابوسفیان خبر نشته، نو بيا خو تاسو هغوی وهئ، او چه كله درته هغه دروغ وائی نو تاسو هغه پريږدئ، د دروغو نه مراد د هغه دا وينا ده چه ښه زه ئې درته اوس و اتم خو د هغه دا دروغ وئيل صحابه كرامو ته د دھوكې وركولو دپاره نه وو، صحابه كرامو ته خو هغه صحيح خبره كوله بلكه دا د خپل ځان د بچ كولو دپاره ده. بيا رسول الله ﷺ د دې غلام والا خبرې تصديق كولو سره او فرمائيل چه او گورئ دا د قريشو كفار دي كوم چه د ابوسفیان د بچ كولو دپاره راغلي دي، بيا ئې د پيشن گوئې په طور او فرمائيل، چونكه هغه ته معلومه شوې وه چه جنگ ته به خبره رسپړي او په هغې كښې به مسلمانانو ته فتح ملاويږي. (ووضع يده على الارض وهذا مصرع فلان غدا) رسول الله ﷺ به په زمكه باندې لاس وهلو او دا به ئې فرمائيل چه صبا له به دا ځائې د فلانی كافر د غورځيدو وي او قتل كيدو وي، د هغه كافر نوم به ئې اخستلو، او دا ځائې به د فلانی كافر د راپريوتلو وي، درې كرتو رسول الله ﷺ هم دغه شان نوم اخستلو سره او فرمائيل، وړاندې راوي قسم خورلو سره وائی چه د كوم كافر د جدا كيدو ځائې رسول الله ﷺ متعين كړې وو، هغه خاص هم په هغه ځائې كښې راپريوتلو، او بيا هغه قتل كړې شوي د خپو نه او نيولي شو او قليب بدر ته گزار كړې شو، د حديث د ترجمه الباب سره مطابقت ښكاره دې يعنى د كافر قيدي د څه مصلحت په بنياد وهل، قليب هغه كوهي ته وئيلې شي چه په هغې باندې غاړه نه وي، دا كوهي په دې بدر مقام كښې وو كوم چه اوس پاتي نه شو. والحديث اخرجه مسلم اتم منه قال المنذري.

باب في الأسير يكره على الإسلام

د اسلام په قبولولو قيديان مه مجبوروي

دا باب د "باب الاسير يكره على الكفر" مقابل دې كوم چه مخكښي تير شوې دې، هلته هم مونږ دې راتلونكي باب ته اشاره كړې وه يعنى يو كافر قيدي په اسلام باندې مجبور كول څنگه دي؟ جواب دا دې چه داسې نه دي كول پكار،

(د كافر قيديانو سره څه معامله كول پكار دي؟)

بيا د كافر قيديانو سره څنگه معامله كول پكار دي؟ هغه په كتب فقه او حديث كښې مشهور دي د جمهورو په نزد د هغه سره څلور قسمه معامله كولې شي، قتل، استرقاق، من، فدا،

یعنی قتل کول، یا هغه لره غلام جوړول، یا په هغه باندې احسان کولو سره هغه پرېخودل، یا فدیہ اخستلو سره پرېخودل دا څلور واړه اختیارات د ائمه ثلاثه په نزد مشروع دی، د احنافو په نزد دا څلور اختیارات په شروع کښې دی روستو د هغوی په نزد په دې څلورو کښې دوه یعنی من او فداء، منسوخ شو، او قتل او استرقاق دا دوه باقی پاتې شو.

[۲۶۸۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُمَرَ بْنِ عَلِيٍّ الْمُقَدَّمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَشْعَثُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ يَعْنِي السَّجِسْتَانِيَّ. حَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ وَهَذَا الْفِطْرَةُ. وَحَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي بَشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَتْ الْمِرَاةُ تَكُونُ مَقْلَاتًا فَتَجْعَلُ عَلَى نَفْسِهَا إِنْ عَاشَ هَذَا وَلَدًا أَنْ تَهْوَدَ فَلَمَّا أَجْلَيْتُ بَنُو النَّضِيرِ كَانَ فِيهِمْ مِنْ أَبْنَاءِ الْأَنْصَارِ فَقَالُوا: لَأَنْدَعُ أَبْنَاءَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: لَا أَكْرَاهُ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ سُورَةُ الْبَقَرَةِ آيَةٌ ۲۰۵ قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْمَقْلَاتُ الَّتِي لَا يَعْيشُ هَذَا وَلَدًا.

د ابن عباس نه روایت دې فرمائی چه د جاهلیت په زمانه کښې چه به د کومې بڼې بچی ژوندې نه پاتې کیدل نو هغې به د انذر او منلو که چرې بچی مې ژوندې پاتې شو نو یهودي کوم به ئې، کله چه د بنو نضیر قبیلې یهودیانوته د ملک پرېښودو حکم او شو نو په هغوی کښې یو څو انصاري هلکان هم رواندا رو و وئیل چه مونږ خپل هلکان به پرېږدو نو الله پاک دا حکم نازل کړو چه د دین په قبلولو کښې زبردستی کول نشته. ابوداود وائی چه المقلات هغو بڼخوته وئیلی شي د چا چه بچی ژوندې نه پاتې کیږي

شرح حدیث

مدینه منوره کښې دوه قبیلې د مشرکانو اوس او خزرج اباد وو، دا خلق چه په اسلام کښې داخل شو او د مهاجرینو هغوی ایوا او نصرة او کړو نو هغوی ته انصار اوئیلی شو، نو د هغوی نه علاوه په مدینه کښې اهل کتاب یعنی یهود ډیر په کثرت سره اباد وو، مشرکین مدینه د اهل کتاب په خپل ځان باندې فوقیت او فضیلت منی، د هغوی د اهل علم کیدو د وجې نه ځکه چه مشرکان خو مطلق وو، د باب په دې روایت کښې دا دی چه د اسلام د راوړلو نه مخکښې کوم چه انصاری زنانه (مشرکه) مقلاة کیدو، یعنی د چا ماشوم چه ژوندې نه پاتې کیږي نو ډیر وخت دا قسم زنانه د خپل حمل په زمانه کښې دا نذر منی چه که زما ماشوم د پیدا کیدو نه پس ژوندې پاتې شو نو زه به هغه یهودی جوړ کړم، پس د دې قسم ډیر زیات ماشومان یهودی جوړیدو سره په یهود کښې شامل شو، په روایت کښې دی ﴿ فلما اجلیت بنو النضیر کان فیهم من ابناء الانصار الخ ﴾ یعنی چه کله د بنو نضیر یهود د رسول الله ﷺ په زمانه کښې د مدینې منورې نه جلا وطن کولې شو نو په دې کښې پورته ذکر شوي قسمونو کښې ابناء الانصار هم وو، نو دې ابناء الانصار پلارانو دا خبره کړې ده چه مونږ خپل ځامن نه پرېږدو، یعنی هغوی به منع کوو او زبردستی به ئې په اسلام کښې داخلوو نو په دې باندې دا آیت کریمه نازل شو ﴿ لا اکراه فی الدین قد تبین الرشد من الغی ﴾ گویا په دې آیت کریمه کښې انصار د دې خبرې نه منع کړې شوې دی چه هغوی به په زبردستی باندې خپل اولاد لره مسلمان جوړولو سره په مدینه کښې ساتی.

په ترجمه الباب کښې چه کومه مسئله ذکر شوې وه، د هغې حکم معلوم شو یعنی لا يجوز اکراه الاسير على الاسلام... قال ابوداود: المقالات التي لا يعيش لها ولد... امام ابوداود رحمته الله هم د امام ترمذی رحمته الله په شان د حديث د بعض الفاظ غريبه تفسير کوی په دې وجه وئيلې شی چه **«مقلاة»** چه کوم لفظ په روايت کښې راغلې دې د هې معنی دا ده، داسې زنانه ته په پښتو کښې ميراته وئيلې شی، والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى.

ايا په جهاد مع الكفار کښې اکراه فى الدين نشته؟

د دې آيت کریمه د وجې نه دا سوال پیدا کيږي چه ايا د کفارو سره چه کوم جهاد کولې شی په دې کښې اکراه نشته په ظاهره کښې خو د دې جواب دا دې چه دا خو صحيح ده چه د جهاد په ابتداء کښې د اسلام خبره کيخودلې شی خو بيا د هغې نه روستو د جزیه نمبر هم راځي، د اسلام نه قبلولو په صورت کښې په قبول جزیه باندي د هغوی سره قتال ختمولې شی، خو دا جواب د احنافو او مالکيانو په مسلک خو صحيح دې چه د هغوی په نزد د قبول جزیه صورت عام دې، د اهل کتاب او مشرکانو ټولو نه اخستلې کيدې شی، خو د شوافعو او حنابله په نزد چونکه د جزیه حکم د اهل کتاب سره خاص دې، د مشرکانو نه نه شی اخستلې، لهذا د دې دواړه امامانو په مسلک باندي اشکال باقی پاتې شو، دې حضراتو د دې جواب دا ورکړې دې چه د **«لا اکراه فى الدين»** نزول د اهل کتاب په واقعه کښې دې لکه چه په حديث الباب کښې ذکر شوې شان نزول نه معلوم کيږي، لهذا د دې آيت کریمه تعلق د مشرکانو سره نه شو، گویا د مشرکانو په باره کښې د اکراه ممانعت نشته، په دې وجه هغوی سره جهاد کولې شی او جزیه ترې نه شی اخستلې خو د احنافو د طرف نه دا وئيلې کيدې شی چه اگر چه د آيت شان نزول په اعتبار سره خاص دې خو د عموم الفاظ پيش نظر خو د هغې حکم دې **«العبرة لعموم اللفظ لا لخصوص السبب»** د پورته ذکر شوی اشکال نور هم ډير جوابونه ورکړې شوې دې، مثلا دا چه د اکراه تعريف دا دې **«الزام الغير بما ليس فيه خير»** چه يو سړی لره په داسې خبره باندي مجبور کول چه په هغې کښې څه خير نه وی، او اسلام خو صرف خير دې، لهذا اکراه په اسلام باندي دا بالکل خير دې نه، يو جواب دا هم ورکولې شی چه **«الا اکراه فى الدين»** دا د جهاد او قتال په آيتونو باندي منسوخ دې.

بَابُ قَتْلِ الْأَسِيرِ وَلَا يُعْرَضُ عَلَيْهِ الْإِسْلَامُ

د اسلام پيش کولو نه بغير د قيديانو د قتل کولو بيان

يعنى کافر قيدي باندي د اسلام د پيش کولو نه بغير د هغه قتل کول، او په هغه دعوت بادي اکتفاء کول کوم چه د قتال نه مخکښې ورکولې شی

[۲۶۸۳] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ بْنُ نَصْرٍ، قَالَ زَعَمَ السَّيِّدِيُّ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ سَعْدٍ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ أَمِنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسَ إِلَّا أَرْبَعَةَ نَفَرٍ وَأَمْرَاتَيْنِ وَسَمَاهُمْ، وَأَبْنُ أَبِي سَرِيحٍ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ قَالَ: وَأَمَّا ابْنُ أَبِي سَرِيحٍ فَإِنَّهُ اخْتَبَأَ عِنْدَ عُثْمَانَ بْنِ

۱: سنن النسائي/المحاربة ۱۱ (۴۰۷۲)، ويأتي عند المؤلف في الحدود ۱ (۴۳۵۹)، (تحفة الأشراف: ۳۹۳۷) (صحيح)

عَقَانُ فَلَمَّا دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسَ إِلَى الْبَيْعَةِ جَاءَ بِهِ حَتَّى أَوْقَفَهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ بَايَعُ عَبْدَ اللَّهِ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَنَظَرَ إِلَيْهِ ثَلَاثًا كُلَّ ذَلِكَ يَأْتِي فَبَايَعَهُ بَعْدَ ثَلَاثٍ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَمَا كَانَ فِيكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ يَقُومُ إِلَى هَذَا حَيْثُ رَأَى كَفَفْتُ يَدِي عَنْ بَيْعَتِهِ فَيَقْتُلُهُ؟ فَقَالُوا: مَا نَدْرِي يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا فِي نَفْسِكَ إِلَّا أَوْمَاتٌ إِلَيْنَا بَعِينِكَ قَالَ: إِنَّهُ لَا يَنْبَغِي لِنَبِيِّ أَنْ تَكُونَ لَهُ خَائِنَةٌ الْأَعْيُنُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: كَانَ عَبْدُ اللَّهِ أَخَا عُمَانَ مِنَ الرِّضَاعَةِ، وَكَانَ الْوَلِيدُ بْنُ عُقْبَةَ أَخَا عُمَانَ لِأُمِّهِ وَصَرِيهَ عُمَانَ الْحَدَّ إِذْ شَرِبَ الْخَمْرَ.

دسعد رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی هر کله چه دفتح مکې ورځ راغله نونبی عليه السلام ټولو خلقوته امن ورکړو مگر څلور کسانو او دوه بنځوته ئې ورنکړود کوموچه راوي نومونه اخستلي دي په کومو کښې چه ابن سرح هم وو، ځکه چه دې مرتد شوي وو ابن ابی سرح دعثمان نه سره ځان پټ کړو هر کله چه نبي عليه السلام خلق ددعوت دپاره را اوغوښتل نوعثمان هندی هم راوستو تردې چه دنبي عليه السلام په خوا کښې ئې ودروو او عرض ئې وکړو اي دالله رسوله دعبدالله نه بيعت واخلي نبي عليه السلام ورته وکتل اوبيعت ئې ورسره ونکړو، درې ځله داسې وشول اخر ددرې پيرونه پس ئې ورسره بيعت وکړو، بياددي نه پس نبي عليه السلام صحابه کراموته او فرمائيل: ايا په تاسو کښې څوک عقل مند نشته چه پاڅيدلی وي او کله چه مادده دبيعت نه انکار وکړو چه دده سر ئې وهلې وي؟ صحابه کرامتر عرض وکړو چه اي دالله رسوله مونږ ته ستادزړه حال معلوم نه وو کچرې تامونږه په اشاره پوه کړي وي نوبڼه به وه او مونږ به دحکم تعميل کړي وو اودده سر به مو وهلې وو، نبي عليه السلام او فرمائيل چه دنبي سره دانه بنائې چه په سترگو اشارې وکړي. ابوداود وائی چه ابن ابی سرح دعثمان رضاعي ورور وو او وليد بن عقبه ئې مورني ورور وو، دې دشراپوه څکلوگير شو او عثمان ورباندي حد جاري کړو.

سیدنا سعد بن ابی وقاص رضي الله عنه فرمائی چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د فتح مکه په ورځ باندي خلقو یعنی اهل مکه ته امن ورکړو (خو دا امن ورکول مطلقاً نه دی بلکه بعض شرطونو سره وو، لکه چه هغه او فرمائيل «من دخل الحرم فهو امن، ومن اغلق بابه فهو امن ومن القى السلاح فهو امن») سوا د څلورو سړو او زنانو نه، چه د چا نومونه راوی بيان کړې وو چه په هغې کښې ابن ابی السرح نوم وو، په دې روایت کښې خو هم دا دی یعنی د څلورو وارو سړو استثناء، حضرت په دې کښې د نورو روایاتو په بنياد اضافه کولو سره یولس سړی او شپږ زنانه تفصیلی بیان کړې دی، مطلب دا دي، مطلب دا دي چه بعض مشرکین هغه نه وو معاف کړې بلکه د هغه وینه ئې په هر حال کښې مباح کړې وه، وړاندي په روایت کښې د عبدالله بن ابی السرح په باره کښې تفصیل دي، دا په اصل کښې د سیدنا عثمان رضي الله عنه رضاعي رور وو، د هغه په باره کښې دا ليکلې شوې دی چه هغه د فتح مکه نه مخکښې اسلام قبول کړې وو، «ثم ارتد ثم اسلم» په حديث الباب کښې دی چه دې د سیدنا عثمان رضي الله عنه سره پټ شوې وو، بيا چه کله رسول الله صلى الله عليه وسلم اهل مکه د بيعت علی الاسلام دپاره طلب کړل نو سیدنا عثمان، ابن ابی السرح لره اخستلو سره د هغه خدمت ته حاضر شو، او هغه ئې د هغه مخې ته اودرولو، او عرض ئې اوکړو يا رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغه نه هم بيعت واخلي، رسول الله صلى الله عليه وسلم خپل سر مبارک اوچت کړو او هغه ته ئې اوکتل او درې کرته ئې هم

دغه شان او کړل، هر ځل رسول الله ﷺ د هغه د بیعت نه انکار فرمائیلو، یعنی د هغه طرف ته ئې د بیعت دپاره لاس نه ور اوږدولو، د دریم ځل نه پس رسول الله ﷺ هغه سره بیعت او کړو، او بیا ئې د صحابه کرامو طرف ته توجه کولو سره او فرمائیل چه ایا په تاسو کښې څوک پوهه سرې نه وو چه هر کله ما د هغه د بیعت نه لاس اخستلو نو هغه او دریدلې وې او هغه ئې قتل کړې وې، په دې باندې بعض صحابه کرامو عرض او کړو چه یا رسول الله ﷺ مونږ ته معلومه نه وه چه ستاسو په زړه کښې څه دی او دا ئې هم عرض او کړو چه ﴿الا اومات الينا بعینک﴾ چه تاسو په خپلو سترگو سره اشاره ولې اونکره نو وې فرمائیل ﴿لا یبغی لنبی ان ټکون له خائنة الاعین﴾ یعنی دا خبره د نبی د شان خلاف ده چه هغه په داسې موقع باندې په سترگو سره اشاره او کړې، یعنی د نبی یو کار هم کچا او سرسری نه وی، بلکه د هغه خو هر یو کار واضح او محکم وی هغه په سترگو سره اشارې نه کوی.

قال ابوداؤد : الخ.... مصنفه فرمائی چه عبدالله بن ابی السرح د سیدنا عثمان رضاعی رور وو، وړاندې یوه بله خبره استطرادا د علمی فائدي دپاره د مقام مناسبت سره بیان فرمائی : ﴿وكان الوليد بن عقبة الخ﴾ یعنی عبدالله بن ابی السرح خود هغه رضاعی رور و کوم چه گډوډ قسم سرې وو هم دغه شان حال د ولید بن عقبه هم وو، هغه د سیدنا عثمان رضاعی رور وو هغه هم ډیر گډوډ وو په شرابو باندې عادت وو هم په دې وجه باندې سیدنا عثمان رضاعی په هغه باندې د شرابو حد هم جاری کړې وو، حضرت په بذل کښې دلته یو سوال او جواب لیکلې وو.

په حدیث کښې اشکال او د هغې جواب

هغه دا چه عبدالله بن ابی السرح ته چه کله سیدنا عثمان رضاعی پناه ورکړه نو بیا د هغه قتل څنگه جائز وو؟ نو بیا رسول الله ﷺ صحابه کرامو ته د هغه د قتل په ترک باندې ولې تنبیه او فرمائیله؟ جواب د دې ظاهر دې چه هر کله رسول الله ﷺ هغه مهدر الدم (مباح الدم) کړې وو نو د سیدنا عثمان رضاعی په پناه ورکولو سره څه کیږي. (من البذل) زه وائم چه دلته د دې اشکال نه علاوه یو بل قوی اشکال دا دې چه ﴿انه کیف جاز قتله وقد اسلم؟﴾ یعنی د بیعت علی الاسلام دپاره راغلې وو او په اسلام کښې د داخلیدو ئې مضبوطه اراده کړې وه، د دې جواب علامه سندهی په حاشیه د نسائی کښې دا ورکړې دې چه د رسول الله ﷺ په زمانه کښې د انسان اسلام د رسول الله ﷺ په رضا او قبول باندې موقوف وو، چه د چا اسلام به هغه منظور کړو نو هم د هغه اسلام به معتبر وو والا فلا، د ابوداؤد په کتاب الجنائز کښې هم د دې قسم یوه بله واقعه حدیث کښې راغلې ده، هلته هم رسول الله ﷺ بیعت کولو سره خپل لاس منع کړو، د دې په شرح کښې حضرت سهارنپوری د اشکال مذکور هم دا جواب کړې دې، هم دغه شان د عبدالله بن ابی سرح دا واقعه په کتاب الحدود کښې هم راروانه ده، هلته حضرت د دې اشکال او جواب طرف ته تعرض کړې دې. والحديث اخرجه النسائی قاله المنذری.

[۲۶۸۴] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حَبَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ يَرْبُوعٍ الْمَخْزُومِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي جَدِّي، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ: "أَرْبَعَةٌ لَا أُؤْمِنُهُمْ فِي حِلٍّ وَلَا حَرَمٍ قَطْمَاهُمْ"، قَالَ: وَقَبْتَيْنِ كَانَتَا لِيَقْيَيسٍ فَقَتَلْتُ إِحْدَاهُمَا وَأَفْلَتَتِ الْأُخْرَى فَأَسْلَمْتُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: لَمْ أَفْهَمْ اسْتِادَةً مِنْ ابْنِ الْعَلَاءِ كَمَا أَحَبَّ.

د سعید بن یربوع مخزومی نه روایت دې چه نبی ﷺ دفتح مکې په ورځ فرمائیلي وو څلور کسان داسې چه نه ورته په حل کښې اونه حرم کښې امن ورکوم او دهغوی نومونه ئې واخستل راوي وائی او دمقیس دوه وینځي ئې هم ذکر کړي یوه په دوی کښې قتل کړي شوه او دویمه او تختیده او بیا مسلماننه شوه. امام ابوداود وائی زه ددې روایت اسناد دابی العلاء نه نه خوښوم.

دا هم د تیر شوی روایت په شان دې هلته څلور سړی او د « امراتین » ذکر راغلي دي، دلته په ځانې د « امراتین » « قینتین » دي، « قینه » امة مغنیه ته وئیلې شی، او په مطلق وینزه ئې هم اطلاق کیږي کوم چه د مقیس بن صبابه وو، او وئیلې شوې دی چه د ابن خطل وو چه په هغې کښې یو خو قتل کړې شو، او بله او تختیده او بیا ئې روستو اسلام هم قبول کړې وو.

[۲۶۸۵] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكِ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ مَكَّةَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْبَغْفَرُ فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ ابْنُ خَطَلٍ: مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ فَقَالَ: اقْتُلُوهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: ابْنُ خَطَلٍ اسْمُهُ عَبْدُ اللَّهِ وَكَانَ أَبُو بَرَزَةَ الْأَسْلَمِيُّ قَتَلَهُ.

دانس بن مالک ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ دفتح مکې په کال مې ته داخل شو او د نبی ﷺ په سر باندې ..خود، وو کله چه هغه دسرنه .خود، لرې کړو نو یوکس ورته راوستلي شو او وئې وئیل چه ای دالله رسوله ابن خطل یم او دکعبې په غلاف پورې انختلې وو نبی ﷺ او فرمائیل قتل ئې کړئ. ابوداود وائی دابن خطل نوم عبدالله وو، اوده لره ابو برزه اسلمي قتل کړو.

مضمون حدیث

رسول الله ﷺ د فتح مکه په موقع باندې په مکه کښې داخل شوې وو په داسې حال کښې د هغه په سر مبارک باندې خپله (د اوسپنې توپي) وه، چه کله ئې هغه کوزه کړه او کیخودله یعنی د ضرورت پوره کیدو نه پس نو بیا یو سړې راغلو او عرض ئې او کړو چه ابن خطل (کوم چه ئې مباح الدم کړې وو) د کعبې د غلاف پسې اینختلې ولاړ دې، یعنی د هغې په ذریعه د پناه غوښتلو دپاره (بیا هم) هغه او فرمائیل چه هغه قتل کړئ، مصنف فرمائی چه د ابن خطل نوم عبدالله دې او کوم سړی چه هغه قتل کړې وو د هغه نوم ابو برزه الاسلمي وو،

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۴۷۴) (ضعیف)

۲: صحیح البخاري/جزء الصيد ۱۸ (۱۸۴۶)، الجهاد ۱۶۹ (۳۰۴۴)، المغازي ۴۸ (۴۲۸۶)، اللباس ۱۷ (۵۸۰۸)، صحیح مسلم للحج ۸۴ (۱۳۵۷)، سنن الترمذي للحج ۱۸ (۱۶۹۳)، الشمائل ۱۶ (۱۰۶)، سنن النسائي للحج ۱۰۷ (۲۸۷۰)، سنن ابن ماجه للجهاد ۱۸ (۲۸۰۵)، (تحفة الأشراف: ۱۵۲۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للحج ۸۱ (۲۴۷)، مسند احمد (۱۰۹۳)، ۱۶۸، ۱۸۰، ۱۸۶، ۲۲۴، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۴۰، سنن الدارمي للمناسك ۸۸ (۱۹۸۱)، والسير ۲۰ (۲۵۰۰) (صحیح)

زه وائم چه وئیلې شوې دی چه هغه شریک بن عبده العجلانی قتل کړې وو، په بذل کښې د تاریخ خمیس نه نقل کړې دې چه په جاهلیت کښې د ابن خطل نوم اول عبد العزی وو، رسول الله ﷺ د اسلام قبلولو نه پس د هغه نوم بدلولو سره عبدالله کیخودلو او خطل دهغه د پلار لقب وو، نوم د هغه عبد مناف وو کما فی القسطلانی. د ابن خطل د قتل وجه امام خطابی دا لیکلې ده چه رسول الله ﷺ هغه د یو انصاری سره په څه کار پسې لیږلې ووو او هغه انصاری ئې د هغه امیر جوړ کړې وو په لاره کښې چه کله روان وو نو ابن خطل هغه انصاری قتل کړو، او د هغه سامان ئې لوټ کړو، په دې وجه رسول الله ﷺ سره د دې چه هغه د کعبې په غلاف پورې اینختلې وو هغه ته امان ورنکړو، او هغه ئې په قصاص کښې قتل کړو، او بعض شارحینو لیکلې دی کما فی القسطلانی (ص ۳۱۷ ج ۳) چه په ابن خطل کښې متعدد موجبات قتل جمع شو، اول جنایت قتل او کفر او ارتداد، رسول الله ﷺ ایذاء او هجو، پس هغه به هم په شعر کښې د رسول

الله ﷺ بدی بیانوله او په خپلو وینزو باندي به ئې هم په خوش او ازئی سره بدی بیانوله

په حدیث کښې دوه اختلافی فقهی مسائل

یو د قصاص فی الحرم نه متعلق او یو دخول حرم بغیر د احرام نه متعلق، احرام والا مسئله په کتاب الحج کښې تیره شوې ده، د شافعیه مسلک دا دې چه د کوم سړی اراده د دخول حرم د حج او عمره نه علاوه په بل یو حاجت سره که هغه حاجت متکرره یا غیر متکرره، په دې باندي احرام واجب نه دی، د احنافو په نزد مطلقا واجب دې، بعض شوافع په خپل تائید کښې دا حدیث هم پیش کوی، زمونږ د طرف نه دا جواب ورکړې شو چه په حدیث کښې تصریح دې چه هغه او فرمائیل: احلت لی ساعة من نهار... چه زما دپاره مکه د مختصر نه وخت دپاره حلال کړې شو، لهذا هم په دې وجه هغه رسول الله ﷺ بغیر د احرام نه داخل شو، زمونږ دا جواب حافظ وغیره هم تسلیم کړې دې، او بله مسئله ده یعنی د قصاص فی الحرم هغه دا ده چه که د جنایت وقوع خپله په حرم کښې شوې وی نو په دې صورت کښې قصاص فی الحرم بالاتفاق جائز دې او که یو سړی د حرم نه بهر جنایت کولو سره په حرم کښې داخل شی نو که د دې جنایت تعلق د نفس سره نه دې بلکه د اطرافو سره دې یعنی اندامونو سره نو بیا هم دا حکم دې، یعنی د دې بدله په حرم کښې جائز دې، او که هغه جنایت فی النفس دې یعنی که چاته خارج حرم قتل کولو سره قاتل حرم ته داخل شی، دا صورت اختلافی دې، په دې صورت کښې د احنافو او حنابله په نزد قصاص فی الحرم جائز نه دی، د شوافعو او مالکیانو په نزد په دې صورت کښې هم جائز دې، لهذا دا حدیث د احنافو او حنابله خلاف کیدې شی، د دې جواب هم دا دې کوم چه د دې نه په مخکښې مسئله کښې تیر شو چه د فتح مکه په ورځ باندي د هغه دپاره په مکه کښې قتال جائز کړې شوې وو، لهذا دا حدیث زمونږ خلاف نه شی کیدې او بل احتمال دلته دا هم دې چه د ابن خطل جنایت هم په حرم کښې واقع شوې وو، فجاز قتله بالاتفاق. والحديث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

باب فِي قَتْلِ الْأَسِيرِ صَبْرًا

د کفر فتار کړې شوی قیدی د وژلو بیان

د «صبر» معنی د حبس او قید دې، د کافر د قتل دوه صورتونه دي چې دهغه قتل په میدان جنگ او جنگ کښې وی او دویم قسم د کافر قیدی قتل دې، یعنی کوم کافر قیدیان چې مونږ سره او زموږ په قبضه کښې دی هغه لره قتل کول هم دې ته قتل صبرا وئیلې شی.

(قال السيوطي: كل من قتل في غير معركة ولا حرب ولا خطاء فانه مقتول صبرا)

او په بذل کښې داسې دی چې کوم سړې لاس خپې تر لوسره او نیولو سره قتل کړې شی، دا قتل صبرا دې، د دې نه روستو چې کوم باب راروان دې هغه دې «باب في قتل الاسير بالنبل» په دواړو بابونو کښې فرق دا دې چې په اول باب کښې قتل صبرا نه مراد هغه قتل صبرا دې کوم چې بغیر د غش ینه وی یعنی بالسيف او په دویم باب کښې د قتل صبرا نه مراد هغه قتل دې کوم چې بالنبل وی قتل صبرا بالسيف، بالاتفاق جائز دې کوم چې په اولنی باب کښې مذکور دې او د بالنبل ممانعت چې راغلې دې هغه ناجائز دې، لکه چې د دواړو بابونو د احادیثو نه معلومېږي.

[۲۶۸۶] (۱) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ الرَّقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ الرَّقِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِي أَنَسَةَ، عَنْ عَمْرٍو بْنِ مَرْثَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: أَرَادَ الضَّحَّاكُ بْنُ قَبِيصٍ أَنْ يَسْتَعْمِلَ مَسْرُوقًا، فَقَالَ لَهُ عُمَارَةُ بْنُ عَقْبَةَ: أَسْتَعْمِلَ رَجُلًا مِنْ بَعَايَا قَتْلَةَ عُمَانَ؟ فَقَالَ لَهُ مَسْرُوقٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ، وَكَانَ فِي أَنْفُسِنَا مَوْثُوقُ الْحَدِيثِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا أَرَادَ قَتْلَ أَبِيكَ قَالَ: مَنْ لِلصَّبِيَّةِ قَالَ: النَّارُ فَقَدْ رَضِيَتْ لَكَ مَا رَضِيَ لَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د ابراهيم نه روایت دې فرمائی چې قيس بن ضحاک او غوښتل چې مسروق دې عامل مقرر کړي شي نو عماره بن عقبه ورته وئیل چې ته داسې کس عامل مقرروي څوک چې د عثمان نه په قاتلانو کښې دې مسروق ورته وئیل ماته حدیث بیان کړې دې عبدالله بن مسعود ^{رضي الله عنه} او هغه په مونږ کښې ډیر معتبر شخص وو، هرکله چې ستاد پلار قتل کول او غوښتل نو نبی ^{صلى الله عليه وسلم} ته ئې وئیل چې زما د بچو خبر به څوک اخلي نبی ^{صلى الله عليه وسلم} او فرمائیل اور، نوده وئیل چې زه ستاد پاره هغه څه خوښوم کوم چې نبی ^{صلى الله عليه وسلم} ستاد پاره خوښ کړي وو (یعنی چې نه د دوزخ په اور کښې اوسوزی).

شرح حدیث

ضحاک بن قيس کوم چې په صفار صحابه کرام نه دې او د دمشق امير وو هغوی يو ځل اراده اوکړه مسروق لره په يو ځانې کښې د عامل جوړولو، نو په دې باندي عماره بن عقبه ضحاک ته اووې چې داسې سړې عامل جوړوي کوم چې د قاتلين عثمان نه يو باقی پاتې کيدونکې دې. (په دې دواړو کښې د څه وجې نه اختلاف او ناچاقی پيدا شوه) نو د دې په جواب کښې مسروق اووې (چې اودرېږه خپله باره کښې هم واوړه) ماته عبدالله بن

۱: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۹۵۶۰) (حسن صحيح)

مسعود رضي الله عنه بیان کړو کوم چه زمونږ په نزد انتهائی قابل اعتماد وو چه رسول الله صلى الله عليه وسلم چه کله د پلار د قتل اراده فرمائیلې وه یعنی عقبه بن ابی معیط (کوم چه د بدر په قیدیانو کښې وو) نو هغه ډیر د بې وسۍ په حالت کښې رسول الله صلى الله عليه وسلم ته عرض اوکړو (من للصية) چه هغه ما قتل کوی نو زما د ماشومانو به څه کیږي، د هغوی کفالت به څوک کوی، (قال: النار) رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائیل د هغوی کفالت به اور کوی بیا وړاندې مسروق اووې چه زه هم ستا دپاره هغه خوښوم کوم چه ستا دپاره رسول الله صلى الله عليه وسلم خوښ کړو.

د دې حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت داسې دې چه د عماره پلار عقبه بن ابی معیط قتل صبرا وو لکه چه حافظ ابن حجر د دې تصریح کړې ده. كما في العون.

باب فِي قَتْلِ الْأَسِيرِ بِالنَّبْلِ

د ترلو شوی قیدی په غشوباندي د وژلو بیان

په دې باندې کلام په اول باب کښې راغلي دي

[٢٦٨٧] (١) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَشَجِّ، عَنْ ابْنِ تَعْلَى، قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ فَاتَى بَارِبَعَةَ أَعْلَاجَ مِنَ الْعَدُوِّ فَأَمَرَهُمْ فَقَتَلُوا صَبْرًا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ لَنَا غَيْرُ سَعِيدٍ، عَنْ ابْنِ وَهَبٍ فِي هَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: بِالنَّبْلِ صَبْرًا قَبْلَهُ ذَلِكَ أَبُو أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيُّ، فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "يَنْهَى عَنِ قَتْلِ الصَّبْرِ قَوْلَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ كَانَتْ دَجَاجَةً مَا صَبَرْتُهَا"، قَبْلَهُ ذَلِكَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ فَأَعْتَقَ أَرْبَعَةَ رِقَابٍ.

د عبید بن تعلی نه روایت دې چه مونږه د عبد الرحمن بن خالد بن ولید په ملگریا کښې جهاد اوکړو او هغوی ته څلور قوی کافران دشمنانونه په قید کښې راوستې شو او د هغوی په حکم باندې نیولې شوي قتل کړې شول ابوداود وائی د سعیدنه علاوه نورو خلقو دا روایت داسې بیان کړې دې چ په غشوباندي او ویشتلې شول کله چه دا خبر ابویوب ته ورسیدو نو هغه او وئیل مادنبی صلى الله عليه وسلم نه اوریدلی دی چه د داسې قسم قتل کولونه ئې منع فرمائیلې ده زمادي په هغه ذات قسم وي دچا په لاس کښې چه زما روح دې چه جرگه به هم زه په داسې مرگ باندې مړه نکرم (یعنی د ترلو په حالت کښې) کله چه دا خبر عبد الرحمن بن خالد بن ولید ته اورسیدو نو هغه څلور غلامان ازاد کړل.

(فاتی باربعة اعلاج من العدو) ... (اعلاج) د (علاج) جمع ده، یعنی دروند سړې، خاص کړد کفار عجم نه: د حدیث مضمون دا دې چه په یوه غزوه کښې د خالد بن الولید ځونې عبد الرحمن سره څلور کافر دشمنان راوستلې وو، هغوی قتل صبرا کړل یعنی بالنبل، چه کله سیدنا ابو ایوب انصاری رضي الله عنه ته د دې خبر ملاؤ شو نو هغه او فرمائیل چه ما د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه خپله او وریدل چه هغه به د دغه شان قتل صبرا نه منع کوله، والله انسان خو انسان دي که یوه مرغی وغیره هم وی نو زه هغه لره داسې قتل نه کړم چه کله د ابو ایوب انصاری دا خبره عبد الرحمن ته اورسیده نو هغه د دې خپلې غلطې تلافی اوکړه او په تدارک کښې څلور غلامان ازاد کړل.

١. تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ٣٤٧٥)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٢٢/٥)، سنن الدرهمي للأضاحي ١٣ (٢٠١٧) (حسن)

د دې دویم باب د حدیث د تقابل نه معلومیری چه د اول باب په حدیث کښ، کوم چه قتل صبړا وو هغه بالسيف وو کوم چه جائز او ثابت دې، د کتاب الاطعمة په حدیث کښې به راشی، (نهی عن المصورة) او په یو روایت کښې دی (عن المجنمة) په دې حدیث کښې هم دغه شان قتل صبړا ذکر دې، یعنی مرغی وغیره ترلو سره خپل خان ته مخامخ کینولو سره د ذبح کولو په ځانې غشي ویشتل.

باب فی المین علی الأسیر بغیر فداء قیدیان د احسان په طور بغیر فدیې پریخودل

د دې نه مخکښې "باب فی الاسیر یکره علی الاسلام" کښې تیر شوې دی چه د کافر قیدی سره څه څه معاملې کولې شی او په دې کښې چه کوم اختلاف دې هغه هم تیر شوې دې، د (من) دوه صورتونه دی یو بغیر د فدیې نه او دویم بالفدیې، د احنافو په نزد دا دواړه منسوخ دی، د مالکیانو په یو روایت کښې دی چه (من) که بالفدیې وی نو جائز دې او بغیر د فدیې نه ناجائز. د دې نه پس پیژندل پکار دی چه د فدا دوه قسمونه دی، (فداء الاسیر بالمال) یعنی کافر قیدی په مال باندې پریخودل، او فداء الاسیر بالاسیر یعنی مسلمان قیدی په بدله کښې کفارو سره دلته اینختلې ده، کافر قیدی پریخودل، احناف په ظاهر الروایة کښې دواړه صورتونه ناجائز او منسوخ دی او د صاحبین په نزد فداء الاسیر بالاسیر جائز دې، په تیر باب کښې د ائمه اربعه مذاهب منجملا تیر شوې دی په دې کښې مزید تفصیل دې، د احنافو په نزد (فاما منا بعد واما فداء) چه د هغې جمهور قائل دی دا آیت کریمه منسوخ الحکم دې، او ناسخ د دې دپاره ایت السیف دې یعنی (اقتلوا المشرکین حیث وجدتموهم) د سورة براءت آیت، او د من او فداء والا آیت په سورة محمد کښې دې، په نزول کښې آیت السیف یعنی آیت براءة بالاتفاق موخر دې.

[٢٦٨٨] (١) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ ثَمَانِينَ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ هَبَطُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ مِنْ جِبَالِ التَّنْعِيمِ عِنْدَ صَلَاةِ الْفَجْرِ لِيَقْتُلُوهُمْ فَأَخَذَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَلْمًا فَأَعْتَقَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ سُوْرَةَ الْفَتْحِ آيَةَ ٢٣ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ.

دانس بن مالک ^{رضی اللہ عنہ} نه روایت دې فرمائی چه دمکې والا اتیا کسان نبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} اودهغه ملگروته دحدیبی په کال باندې دجبال التنعیم نه دسحر دمونخ په وخت کښې راکوز شول دنبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} دقتل گولودپاره، نونبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} ژوندی اونیول او ازاد ئې کړل نوالله تعالی دا ذکر شوې آیت نازل کړو.

مضمون حدیث

دا عام الحدیبیې واقعه ده چه کله هغه په حدیبیې کښې ایسار شوې دې نو یوه ورځ د سحر د

(١) صحیح مسلم/الجهاد ٤٦ (١٨٠٨)، سنن الترمذی/تفسیر الفتح ٣ (٣٢٦٤)، (تحفة الأشراف: ٣٠٩)، وقد أخرجہ: مسند احمد (١٢٢٣، ٢٩٠) (صحیح)

مونځ په وخت ناخاپه هم دا کفار مکه د صحابه کرامو د قتل کولو دپاره راکوز شی، د الله پاک په فضل سره رسول الله ﷺ او د هغه اصحابو هغه قید کړو، په روایت کښې دی (فاخذهم رسول الله صلی الله علیه وسلم سلما، سلما) په کسري د سین او فتح د سین دواړو سره دي، یعنی (قیل صلحا وانقيادا)، یعنی ډیر په سهولت سره هغه د مسلمانانو په قبضه کښې راغلو بغیر د مزاحمت نه، خو رسول الله ﷺ هغه د قتل کولو په ځانې پریخودلو، نو په دې باندې آیت کریمه نازل شو (وهو الذی کف ایدیهم عنکم الایة) گویا رسول الله ﷺ د دې طرز عمل کوم چه هغه اختیار کړې ده د دې تصویب او تحسین دي او دا حکمت او مصلحت تقاضا هم دا ده چه هغه پریخودلې شی، په بیان القرآن کښې دی یعنی گینې جنگ به اوږد شوي وي.

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت ظاهر دي، والحديث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

[٢٦٨٩] (حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ قَارِسٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَبْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِأَسَارَى بَدْرٍ: "لَوْ كَانَ مُطْعِمُ بْنُ عَدِي حَيًّا تَمَّ كَلِمَتِي فِي هَؤُلَاءِ النَّثْنِيِّ لَأَطْلَقْتَهُمْ لَهُ".

جبیر بن مطعم نه دخپل پلار نه روایت کوی چه نبی ﷺ دبدر قیدیانو په باره کښې او وئیل که چرې مطعم بن عدی ژوندې وي او ددې گنده قیدیانو په باره کښې ئې ماته سفارش کړې وي نومابه دهغه په خاطر دا پریخودلی وو.

شرح حدیث

یعنی رسول الله ﷺ جبیر بن مطعم ته او فرمائیل (چه کله هغه رسول الله ﷺ ته د بدر د قیدیانو په باره کښې سفارشی جوړیدو سره راغلي وو) نو هغه او فرمائیل چه که ستا پلار یعنی مطعم بن عدی نن ژوندې وي او بیا ئې د دې گنده خلقو باره کښې ماته سفارش کړې وي نو ما به د هغوی په سفارش باندې دوی پریخودلې وي.

(نتی) جمع د (نتن) ده لکه د زمین جمع (زمنی)، او یا جمع ده د (نتین) یعنی بدبویه او بدبودار څیز، د بدر قیدیانو نه رسول الله ﷺ د هغوی د کفر په وجه داسې تعبیر او کړو، (قال الله تعالى: انما المشركون نجس) وئیلې شوي دي چه د مطعم په رسول الله ﷺ باندې یو احسان وو هغه دا چه کله رسول الله ﷺ د طائف د سفر نه واپس راتلو، او اهل طائف هغه ته تکلیف ورکولو نو هغه وخت د رسول الله ﷺ مدد فرمائیلې وو، او وئیلې شوي دي چه هغه دا خبره د جبیر د تطیب قلب او تالیف دپاره کړې وه، ځکه چه هغه وخت هغه اسلام نه وو قبول کړې، والحديث اخرجه البخاری ومسلم، قاله المنذری.

١: صحيح البخاري/فرض الخمس ١٦ (٣١٣٩)، والمغازي ١٢ (٤٠٢٤)، (تحفة الأشراف: ٣١٩٤)، وقد أخرجه: مسند احمد (٨٠/٤) (صحيح)

باب فِي فِدَاءِ الْأَسِيرِ بِالْمَالِ

د مال په عوض کښې د قیدیانو پریخودلو بیان

په دې باب کښې د فداء دوه قسمونو کښې د یو قسم بیان دې، په دې باب کښې مصنف د بدر د قیدیانو واقعه ذکر کړې ده چا سره چه رسول الله ﷺ فداء الاسیر بالمال معامله فرمائیلې وه چه د بدر په قیدیانو کښې د هر هر قیدی نه فدیة اخستلو سره هغه ازاد کړې وو.

[۲۶۹۰] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ حَنْبَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو نُجَيْمٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عِكْرَمَةُ بْنُ عَمِيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سِمَاكُ الْحَنْفِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ بَدْرٍ فَأَخَذَ يَعْزِيهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْفِدَاءَ أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ مَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُبْعِنَ فِي الْأَرْضِ إِلَى قَوْلِهِ لِمَسْكُمْ فِيهَا أَخَذْتُمْ سُورَةَ الْأَنْفَالِ آيَةَ ۶۷-۶۸ مِنَ الْفِدَاءِ، ثُمَّ أَحَلَّ اللَّهُ الْعَنَابِيْرَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ يُسْأَلُ عَنِ اسْمِ أَبِي نُجَيْمٍ فَقَالَ: إِيشَ تَصْنَعُ بِاسْمِهِ اسْمُهُ اسْمُ شَيْعٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: اسْمُ أَبِي نُجَيْمٍ قُرَادٌ، وَالصَّحِيْحُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَزْوَانَ.

د عمر بن الخطاب رضي الله عنه نه روایت دې چه کله دبدر د قیدیانو نه نبی صلی الله علیه و آله فدیة واخستله اودوی ئې پریخودل الله تعالی دا ایت نازل کړو چه د نبی سره قیدیان نه بنسائی ترخو چه مشرکان مړه نه کړې (یعنی د مال په عوض کښې قیدیان پریخودل د الله تعالی خوښ نه شول چونکه په دې وخت کښې کافران غالب وو د عمر رضي الله عنه رای دا وه چه دا ټول دي مړه کړې شي بیا ددې نه پس الله تعالی ددوی دپاره قیدیان د مال په عوض کښې پریخودل جائز وگرځول ابوداود وائی دابونوح دنوم په باره کښې داحمدبن حنبل نه تپوس اوکړې شو نو هغه اووئیل چه دده په نوم باندي څه کوي؟ دهغه څه بڼه نوم خونه دې، ابودود وائی چه دده نوم قراد دې اوصحیح خبره داده چه دده نوم عبدالرحمن بن غزوان دې.

شرح هدیث

سیدنا ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه سیدنا عمر رضي الله عنه د دې آیت کریمه ﴿ ما كان لنبی ان يكون له اسرى ﴾ شان نزول دا بیان فرمائیلې دې چه د دې نزول هغه وخت اوشو چه کله اسیران بدر فدیة اخستلو پریخودلو، په دې آیت کښې په دې باندي خبره تنبیه کړې شوې ده چه هغه د بدر د قیدیانو سره د هر هر قیدی فدیة اخستلو سره هغه ازاد کړې وو.

سیدنا ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه سیدنا عمر رضي الله عنه په دې آیت کریمه ﴿ ما كان لنبی ان يكون له اسرى ﴾ شان نزول داسې اوفرمائیلو چه د دې نزول هغه وخت اوشو چه کله د بدر قیدیان فدیة اخستلو سره پریخودلې شوې وو، په دې آیت کریمه کښې په دې خبره باندي تنبیه کړې شوې ده چه رسول الله ﷺ د بدر د قیدیانو سره چه کومه معامله اوکړه هغه ئې فدیة اخستلو سره پریخودلو، د هغه دپاره خو اشخان فی الارض مناسب وو، یعنی د کفارو وینه تویول، د ابطال کفر دپاره په روایاتو کښې راځی چه هغه د بدر د قیدیانو په باره کښې د

(۱) صحیح مسلم للجهاد ۱۸ (۱۷۶۳)، سنن الترمذی للتفسیر ۹ (۳۰۸۱)، (تحفة الأشراف: ۱۰۴۹۶)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۲، ۳۰/۱) (حسن صحیح)

صحابه کرامو سره مشوره او کړه چه الله پاک تاسو ته په هغوی باندي قدرت ورکړې دي او هغوی اوس ستاسو قابو ته راغلي دي اوس او ايئ چه د هغوی سره چه معامله او کړې شي؟ سيدنا عمر رضي الله عنه عرض او کړو يا رسول الله صلى الله عليه وسلم مناسب دا ده چه د هغوی ټولو ست او وهلي شي، د رسول الله صلى الله عليه وسلم دا رائي خوبنه نه شوه په دي وجه هغه دوپاره بيا هم هغه سوال او کړو چه د هغوی سره چه معامله او کړې شي، سيدنا عمر رضي الله عنه بيا هم هغه عرض او کړو، دريم ځل هغه بيا هم هغه سوال او کړو، په دي باندي صديق اکبر رضي الله عنه دا عرض او کړو يا رسول الله! زما رائي دا ده چه دا خلق فديه اخستلو سره پريخودلي شي، او په يو روايت کښي دا دي چه سيدنا عمر رضي الله عنه عرض او کړو يا رسول الله صلى الله عليه وسلم هر سرې دي خپل عزيز قتل کړي، علي ته دي حکم ورکړي هغه د خپل رور عقيل ست او وهی، او ماته اجازت راکړي چه زه د خپل فلاني خپل ست او وهم ځکه چه دا خلق د کفر مقتدا او سردار دي، رسول الله صلى الله عليه وسلم د صديق اکبر رضي الله عنه رائي خوبنه کړه او قيديانو لره فديه اخستلو سره د پريخودلو فيصله او فرمائيله، په دي باندي ذکر شوې آيت کریمه نازل شو، چه په هغې باندي رسول الله صلى الله عليه وسلم او صديق اکبر په ژړا شو، سيدنا عمر رضي الله عنه د هغه نه د ژړا سبب او ټپوسلو نو هغه او فرمائيل چه زه د دي عذاب د وجې نه ژاړم، خو چه ستا په ملگرو باندي د فديه اخستلو د وجې د الله پاک د طرف نه پيش کړې شوې دي، او فرمائي چه په ما باندي د هغوی عذاب دي اونې ته نزدې پيش کړې شو د دي نه روستو هغه او فرمائيل چه که دي وخت کښي عذاب راغلي وي نو د عمر نه سوا به څوک هم نه وو بچ شوی، او په يو روايت کښي دي چه سوا د سعد بن معاذ ځکه چه سعد بن معاذ هم دغه شان رائي وه، کوم چه د عمر رضي الله عنه وو، دريم عبدالله بن رواحه دي هغه هم د فديه اخستلو مخالف وو. (ماخوذ از سيرت مصطفى ج ۲ ص ۱۲۰)

﴿ثم احل لهم الله الغنائم﴾ په آيت مذکوره کښي چونکه په اخذ فديه باندي نکير کړې شوې دي چه د هغې تقاضه دا ده چه مال غنيمت د مسلمانانو دپاره حلال نه وي، په دي وجه راوی وائي چه د دي واقعي نه روستو الله پاک مال غنيمت د مسلمانانو دپاره حلال کړې وو.

مشهور اشکال او د هغې جواب

د دي نه پس خان پوهه کړه چه په دي مقام باندي يو مشهور اشکال دي هغه دا چه د ترمذي وغيره د روايت نه معلوميري چه د هغې راوی سيدنا علي رضي الله عنه دي چه د بدر د قيديانو په قصه کښي رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل چه جبرائيل (ع) ماته راغلو او وي فرمائيل چه تاسو خپلو اصحابو ته د بدر د قيديانو په باره کښي اختيار ورکړي په دوه خبرو کښي د يوې چه يا خو هغه دا قيديان قتل کړي او يا د هغوی نه فديه واخلي او هغوی پريږدي په داسې طريقه چه په مسلمانانو کښي هم د هغه تعداد برابر په بل کال باندي قتل کړې شي، پس هغه د صحابه کرامو نه مشوره او فرمائيله نو هغوی د دي تخيير نه پس د فديه اخستلو مشوره ورکړه په داسې طريقه چه دومره مسلمانان په بل کال باندي شهيد کړې شو، په دي باندي اشکال ظاهر دي چه کله د فديه اخستلو اجازت ورکړې شونو بيا د دي په اختيارولو باندي په دي آيت کریمه کښي فديه اخستلو باندي عتاب ولي نازل شو، د دي اشکال يو

مشهور جواب دا ورکولې شی چه دا اختیار صرف ظاهري او صوري وو او فی الواقع په دې اختیار سره مقصود اختیار وو یعنی امتحان چه اوگوري چه صحابه کرام د الله پاک د دشمنانو قتل اختیاری یا د دنیا سامان، او حضرت په بذل کښې د دې جواب د نقل کولو نه پس فرمائی چه د دې نه غوره جواب دا دې چه بعض صحابه کرام په دې موقع باندي د مال طرف ته مائل شوې وو، نو په اصل کښې د دې عتاب مورد هم هغه اصحاب دی لکه چه په آیت کریمه کښې هم دې طرف ته اشاره موجود ده (تريدون عرض الدنيا والله يريد الآخرة) او بعض علماء کرامو حدیث تخییر کوم چه امام ترمذی په کتاب السیر کښې په باب ما جاء فی قتل الاسارى والقداء کښې ذکر کړې دې لره د راویانو وهم منلې دې، علامه تورپشتی د حدیث تخییر په باره کښې فرمائی چه دا حدیث په وجه د دې چه د قران کریم د ظاهر او د هغه احادیث صحیحه خلاف دې کوم چه د بدر د قیدیانو په باره کښې راغلې دې چه په هغې کښې دا دی چه د فدیة اخستل د صحابه کرامو په رائي او اجتهاد سره وه، پس په دې باندي عتاب نازل شو، که په دې سلسله کښې د خه وحی سماوی په ذریعه سره تخییر ثابتیدلو نو په دې باندي به عتاب نه متوجه کیدلو، فهذا الحدیث مشکل جدا، الی اخر ما ذکر من تضعیف الحدیث. هم دغه شان حافظ ابن کثیر رحمته الله په (ما کان لنبی ان یکون له اسرى حتى یشحن فی الارض) د لاندې ډیر صحیح روایات چه په هغې کښې د رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم د صحابه کرامو نه د بدر د قیدیانو په باره کښې مشوره ذکر شوې ده، او دا چه د فدیة اخستل خپل مینځ کښې مشورې سره وو چه په هغې باندي د آیت کریمه نزول اوشو، او بیا په اخر کښې د سیدنا علی رضی الله عنه د تخییر والا حدیث ذکر کولو نه پس لیکي، رواه الترمذی والنسائی وابن حبان فی صحیحہ من حدیث الثوری به، وهذا حدیث غریب جدا.

(قال ابوداود سمعت احمد بن حنبل) امام ابوداود رحمته الله فرمائی چه زما د استاد احمد بن حنبل رحمته الله نه چا د ابو نوح (کوم چه دلته په سند کښې مذکور دې) نوم اوتپوسلو، نو هغه او فرمائیل چه د هغه په نوم تپوسلو باندي به خه اوکړې، د هغه نوم ښه نه دې ډیر بد دې او نوم ئې بیان نه کړو، په دې باندي امام ابوداود رحمته الله فرمائی چه د هغه نوم قراد دې، او صحیح دا ده چه د هغه نوم عبدالرحمن بن غزوان دې، قراد واقعی چه ښه نوم نه دې، خکه چه قراد خو سپرو (کونی) ته وئیلې شی، والحدیث اخرجه مسلم نحوه فی اثناء حدیث طویل، قاله المنذری.

[۲۶۹۱] (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ الْعَيْشِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ حَبِيبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ عَنِ أَبِي الشَّعَثَاءِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ فِدَاءَ أَهْلِ الْجَاهِلِيَّةِ يَوْمَ بَدْرٍ أَرْبَعَةَ مِائَةٍ.

(١) دویبه تعیش علی الدواب والطيور وتمتص دمها: په څاروو کښې چه کومې سپرې کيږي چه پښتو کښې ورته کونی وائی، د څاروو نه وینه څکي. هغې ته قراد وائی. (مترجم)
 (٢) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۵۳۸۲) (صحیح)

د ابن عباس نه روایت دي چه نبي ﷺ د جاهليت درماني د خلقو د پاره د بدر په ورځ څلور سوه درهمه فديه مقرر کړې وه.

په دي حديث کښې چه د بدر د قيديانو نه کومه فديه اخستلې شوې وه د هغې بيان دي چه هغه څلور سوه درهمه وه، خو حضرت په بذل کښې د سيرت د کتابونو نه نقل کړې دي چه د فديه مقدار مختلف وو، د هر چا د حيثيت مطابق، د بعض نه څلور زره درهمه، د چا نه درې زره، او د بعض نه دوه زره، او چا سره چه د نقد ورکولو د پاره څه نه وو نو د هغه نه څه نه څه خدمت واخستلې شو، مثلا چا ته چه کتابت ورتلو نو د مدينې په هلکانو کښې لس هلکان هغه ته حواله کړې شو د دي د پاره چه هغوی ته کتابت اوبښائی، والحديث اخرجه النسائي قاله المنذري.

[۲۶۹۲] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ عَن أَبِيهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا بَعَثَ أَهْلُ مَكَّةَ فِي فِدَاءِ أَسْرَاهُمْ بَعَثَتْ زَيْنَبُ فِي فِدَاءِ أَبِي الْعَاصِ بِمَالٍ وَبَعَثَتْ فِيهِ بِقِلَادَةٍ لَهَا كَانَتْ عِنْدَ خَدِيجَةَ أَدْخَلَتْهَا بِهَا عَلَى أَبِي الْعَاصِ، قَالَتْ: فَلَمَّا رَأَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَقَّ لَهَا رِقَّةً شَدِيدَةً وَقَالَ: "إِنْ رَأَيْتُمْ أَنْ تُطْلِقُوا لَهَا أَسِيرَهَا وَتَرُدُّوا عَلَيْهَا الَّذِي لَهَا، فَقَالُوا: نَعَمْ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ عَلَيْهِ أَوْ وَعَدَهُ أَنْ يُخَلِّيَ سَبِيلَ زَيْنَبَ إِلَيْهِ، وَبَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ وَرَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: "كُونَا بِبَطْنِ يَاجِجٍ حَتَّى تَمُرَّ بِكُمْ زَيْنَبُ فَتَضْحَبَاَهَا حَتَّى تَأْتِيَا بِهَا".

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائی هر کله چه دمکي والا خلقو دخپلو قيديانو د آزادولو د پاره فدئې اوليرلې نو د نبي علي ه سلام لور زينب رضي الله عنها هم د ابو العاص د فدئې د پاره څه مال اوليرلو او په دي کښې هغې يوهار ليرلې وو کوم چه دخديجې وو هر کله چه نبي ﷺ د اهار اوليدو نو د زينب په يواځي والي اوبي کسئ باندي خفه شو او په هغې ئې زره اوسوزيدو نبي ﷺ صحابه کراموته او فرمائيل که تاسوته مناسب ښکاري نو د زينب قيدي پريردئ او دهغې مال واپس کړي هغوی او وئيل ښه ده نبي ﷺ د ابو العاص نه لوظ واخستو چه زينب به ماته دراتلونو نه منع کوي يعنى نبي ﷺ په مدينه کښې وو اوزينب په مکه کښې وه نونبې ﷺ په زينب پسې زيد بن حارثه رضي الله عنه او يو انصاري اوليرلو اودوی ته نبي ﷺ فرمائيلې وو ترڅو چه تاسوته زينب نه وي رارسيدلي نو دهغه وخته پورې به تاسو په بطن ياجج مقام کښې يئ او چه کله راشي نو دخان سره ئې راولئ.

د دي روایت مضمون په کتاب النکاح کښې د هغه حديث د لاندې چه په هغې کښې دا دي چه سيدنا علي رضي الله عنه د فاطمې رضي الله عنها په نکاح کښې د موجود کيدو سره د ابو جهل د لور سره د نکاح اراده او کړه، د دي حديث شرح د دي جلد په شروع کښې تيره شوې ده، د هغې نه روستو ئې هم يو ځل دوه حواله راغلي ده. بهر حال په دي واقعه کښې فداء الاسير بالاسير موندلې شی کومه چه د صاحبين په نزد هم جائز دي، کما تقدم

۱: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۱۷۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۷۱) (حسن)

[۲۶۹۳] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا عَمِي يَعْنِي سَعِيدَ بْنَ الْحَكَمِ قَالَ: أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عَقِيلٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، قَالَ: وَذَكَرَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ مَرْوَانَ، وَالْمَسُورَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ حِينَ جَاءَهُ وَقَدْ هَوَّازَنَ مُسْلِمِينَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَعِيَ مَنْ تَرَوْنَ وَأَحَبُّ الْحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ فَاخْتَارُوا وَإِنَّمَا السَّبِيُّ وَإِنَّمَا الْمَالُ، فَقَالُوا: نَخْتَارُ سَبِينًا، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَثْبَتِي عَلَى اللَّهِ ثُمَّ قَالَ: أَمَا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ هَؤُلَاءِ جَاءُوا تَائِبِينَ وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبِيَّهُمْ فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيَّبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى حَقِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ، فَقَالَ: النَّاسُ قَدْ طَيَّبْنَا ذَلِكَ لَهُمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّا لَا نَبْذِرِي مَنْ أِذِنَ مِنْكُمْ مَعَهُ لَمْ يَأْذَنْ فَأَرْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَهُ إِلَيْنَا عُرْفًا وَكَمْ أَمْرُكُمْ، فَرَجَعَ النَّاسُ فَكَلَّمَهُمْ عُرْفًا وَهُمْ فَأَخْبَرُوهُمْ أَنَّهُمْ قَدْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا.

دعروه بن زبیر رضی اللہ عنہ نه روایت دی چه دمروان او مسور بن مخرمه نه می اوریدلی دی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی وو کله چه ده ته دهوازن قبیلی وفددمسلمانیدونه پس راغلی وو اودنبی صلی اللہ علیہ وسلم نه ئی دا مطالبه کوله چه مونږ ته دی خپل مالونه راوایس کړې شي نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته اوفرمائیل زماسره هغه خلق دي کوم چه تاسو وینی اوزماهغه خبره خوبه وي کومه چه ډیره ریښتیاوي تاسو په دوه خبرو کښې یوه خوبه کړی یا قیدیان یا مال هوازن قبیلې والا او وئیل مونږه قیدیان واپس اخلو نبی صلی اللہ علیہ وسلم خطبه اوفرمائیله او دالله تعالی دهنده پس ئی اوفرمائیل یقیناستاسو رونږه دکفرنه په توبې کولوسره راغلی دی اوماددوی قیدیان ازادول مناسب نه اوگنډل په تاسوکښې چه خوک پخپله خوبه خپل قیدی وا پس کول غواړی نو واپس دی کړی او په تاسو کښې چه خوک دخپلې حصې په وصول کولو باندي قائم وي نوکله چه الله تعالی مونږ ته مال غنیمت را کړي نو مونږ به ده ته ددی بدل په هغې کښې ورکړو اودده دپاره هم داسې کول پکار دي صحابه کرامو عرض او کړواي دالله رسوله مونږ په دی خبره باندي په خوشحالی سره راضي یو یعنی د قیدیانو په واپس کولو نبی صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل مونږ نه پوهیږو چه په تاسو کښې دچا دا خبره خوبه ده اودچانه ده خوبه نوپه دی وجه باندي تاسو واپس لار شی تردې چه ستاسو سردار په دی معامله کښې زمونږ سره مخامخ شي نوپه دی شان سره ټول خلق واپس شول او ددوی سردارانو په دی سلسله کښې ددی خلقوسره خبرې او کړې بیا هغه خلق دوباره دنبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شول او نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ئی خبر ورکړو چه دوی د قیدیانوپه واپس کولوباندي راضي دي اودوی په خوشحالی سره اجازت ورکړې دي.

جعرانه ته د وفد هوازن راتلل

په غزوه حنین کښې مسلمانانو ته چه کله فتح حاصله شوه او هغوی غنائم لره اخستلو سره چه کله په مقام جعرانه کښې ایسار شو نو د هغه په خدمت کښې د قبيله هوازن یو وفد چه په هغې کښې د هغه قبیلې اته لس اشراف او سردران هم وو کوم چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په لاس

۱: صحیح البخاری/الوکالة ۷ (۲۳۰۷)، العتق ۱۳ (۲۵۴۰)، الهبة ۱۰ (۲۵۸۳)، المغازی ۵۴ (۴۳۱۸)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۵۱)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۲۷۴) (صحیح)

باندې بیعت کولو سره په اسلام کښې داخل شوې وو نو هغوی رسول الله ﷺ ته عرض اوکړو چه د هغه په قبضه کښې چه زمونږ کوم قیدیان دی په هغې کښې بعض زمونږ میاندي دی او بعض په مونږ کښې د بعض خویندي دی او بعض عمامت او خالات دی، لهذا تاسو مهربانی اوکړئ او دا مونږ ته واپس کړئ، نو رسول الله ﷺ ورته او فرمائیل « معی من ترون واحب الحدیث الی اصدقہ » چه ما سره هغه خلق دی کوم چه تاسو وینئ، یعنی د رسول الله ﷺ صحابه کوم چه د دې مال اصولا مستحق شوې دی، او گورئ زه صحیح خبره خوښوم (او هم هغه ستاسو مخې ته ږدم) هغه دا چه تاسو په دوه خیزونو کښې یوه اختیار کړئ، یا صرف قیدیان واخلي او یا مال واخلي، صرف سرونه واخلي یا صرف مال یعنی په دې کښې صرف د یو سفارش کولې شم (اخرزما د ملگرو هم څه حق دي، د هغوی رعایت هم ضروری دی) هغوی عرض اوکړو چه مونږ صرف خپل قیدیان غواړو (د مال هیڅ خبره نه ده).

د رسول الله ﷺ سفارش د صحابه کرامو نه د قبيله هوازن دپاره

په بعض روایاتو کښې دی چه رسول الله ﷺ د هغوی په دې خبره اوریدلو سره او فرمائیل : « اما الذی لینی هاشم فلکم » یعنی د بنو هاشم په حصه کښې چه کوم قیدیان راغلي دي د هغوی خوفی الحال زه فیصله کوم چه هغه ستاسو دی، او بیا د دې نه روستو رسول الله ﷺ اودریدو او د خطبې په طور ئې د الله پاک حمد او ثناء بیان کړه او د هغه وفد هوازن مطالبه ئې د صحابه کرامو په وړاندې کیخودله، او د خپل طرف نه ئې دا سفارش او فرمائیلو چه هغوی ته دي د هغوی قیدیان واپس کړې شی او وې فرمائیل چه کوم سرې ئې په تاسو کښې بغیر د عوض نه واپس کول غواړی هغه دي هم داسې واپس کړی، او څوک چه ئې په عوض سره واپس کوی نو هم داسې دي اوکړی، او د هغه عوض به زمونږ په ذمه وی، د دې واقعي نه پس چه د ټولو نه اول کوم مال غنیمت حاصلیرې د هغې نه به د هغه عوض ادا کولې شی، صحابه کرامو د هغه په خبره اوریدلو سره او فرمائیل : « قد طینا ذلک لهم یا رسول الله » چه مونږ په خوشحالی سره د هغوی قیدیان هغوی ته واپس کوو یعنی بغیر د عوض نه، په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه په دې اجتماعي خبره باندې مونږ یقیني نه شو پوهیدې چه څوک واقعي په خوشحالی سره ورکولو ته تیار دي او څوک نه، لهذا دي وخت کښې تاسو خپل خپل ځانې ته رسیدو سره خپل خپل ذمه دار ماته راولیرې، کوم چه ستاسو صحیح صحیح خبره ماته بیان کړی، پس ټول صحابه کرام پاسیدل او خپلو ځایونو ته لاړل او د هرې قبیلې مشر دي باره کښې خپلې قبیلې سره خبره اوکړه او بیا هغه ټول ذمه داران راغلل او د رسول الله ﷺ په خدمت کښې ئې عرض اوکړو « انهم قد طیبوا واذنوا »، چه واقعي ټول خلق په خوشحالی سره د قیدیانو د پریخودلو اجازت ورکوی، یعنی بغیر د عوض نه، په دې روایت کښې خو دومره دی خو په بعض نورو روایاتو کښې راځی چه « الا قلیلا من الناس » یعنی بغیر د څه خلقو نه کوم چه بغیر د عوض نه په ورکولو باندې تیار نه دی، یو په هغوی کښې اقرع بن حابس او عیینه بن حصن هم وو. کما فی البذل، والحديث اخرجہ البخاری والنسائی مختصرا، ومطولا قاله المنذری.

[۲۶۹۴] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، فِي هَذِهِ الْقِصَّةِ، قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "رُدُّوا عَلَيْهِمْ نِسَاءَهُمْ وَأَبْنَاءَهُمْ فَمَنْ مَسَكَ بِشَيْءٍ مِنْ هَذَا الْفَنَى فَإِنَّ لَهُ بِهِ عَلَيْنَا سِتٌّ فَرَأَيْتُمْ مِنْ أَوْلَى شَيْءٍ يُفِينُهُ اللَّهُ عَلَيْنَا، ثُمَّ دَنَا يَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَعِيرٍ فَأَخَذَ وَبِرَّةً مِنْ سَنَامِهِ ثُمَّ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَيْسَ لِي مِنْ هَذَا الْفَنَى شَيْءٌ وَلَا هَذَا، وَرَفَعَ أَصْبَعِيهِ إِلَّا الْخُمْسَ وَالْخُمْسُ مَرْدُودٌ عَلَيْكُمْ فَأَذَاوُ الْحَيَاطُ وَالْبَغِيضُ. فَقَامَ رَجُلٌ فِي يَدِهِ كَبَّةٌ مِنْ شَعْرِ فَقَالَ: أَخَذْتُ هَذِهِ لِأَصْلِحَ بِهَا بَرْدَعَةَ لِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَا مَا كَانَ لِي وَلِيِّنِي عَبْدُ الْمُطَّلِبِ فَبُولِكَ، فَقَالَ: أَمَا إِذْ بَلَغْتُ مَا أَرَى فَلَا أَرَبَ لِي فِيهَا وَنَبِّدْهَا".

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه اودهغه دده دنيکه نه روايت کوي ددې قصي متعلق فرمائي چه نبي ﷺ فرمايلى دى دوى ته ددوى بسخي او ماشومان و ابن کړى او په خلقو کښې چه خوک ددې غنيمت نه دخان سره څه ساتل غواړي نومونږ به هغه لره ددې په بدل کښې شپږ اوبښان ورکوو دهغه غنيمت نه چه الله تعالى ئې مونږ ته راکړي، اوبښانې ﷺ يو اوبښ ته ورنزدې شو اودهغه دگوپ نه ئې وړئ راوويستله اوونې فرمائيل اي خلقو ددې غنيمت په مال کښې زما هيڅ اختيار نشته دې اوهغه وړئ ئې اوبښودله چه دومره اختيار مې هم نشته مگر خمس او خمس يعنى خمس به ورکوي اوهغه به هم واپس په تاسو باندې خرچ کولې شى نوکه دچاسره دغنيمت دمال نه ستن اوتار هم وي نو واپس دي ئې کړي، نوپه دې وخت کښې يوکس اودريدو او په لاس کښې ئې وړى وه هغه اووئيل داوړئ مادخپلې سورلئ دگدئ دروغولو دپاره اخستلي وه نبي ﷺ اوفرمائيل کوم يوخيږ چه زما يادښو عبدالمطلب دخاندان وي هغه ستاشو، دي کس اووئيل هرکله چه ددې رسئ داخستلوگناه ددې حده پورې ده کومه چه زه وينم نوماته ددې هيڅ ضرورت نشته اوهغه ئې اوغورخوله.

شرح حديث

﴿ ردوا عليهم نساءهم وابنائهم ﴾ په حنين کښې چه کوم مال غنيمت مسلمانانو ته حاصل شوې وو هغه ډير په اوچت مقدار کښې وو چه د هغې تفصيل په قيديانو کښې شپږ زره زنانه او ماشومان، او په مال کښې څليرشت زره اوبښان، څلور زره اوقيه سپين زر، د څلوېښتوزرو نه زياتې گدې بيزې.

﴿ ست فرائض من اول شئ يفينه الله علينا ﴾ يعنى څوک چه عوض اخستل غواړي نو مونږ به هغه ته په اول مال غنيمت کښې شپږ اوبښان ورکوو، يعنى د هر سرې د غنيمت عوض شپږ اوبښان مقرر کړې شو څوک چه اخستل غواړي.

﴿ انه ليس من هذا الفنى شئ ولا هذا ورفع اصبعه الا الخمس ﴾ بيا هغه د يو اوبښ د قب ويښته په موتې کښې اونيول او وې فرمائيل چه اوگورئ! زما دپاره په دې مال غنيمت کښې هيڅ هم نشته او نه دا ويښته کوم چه زما په موتې کښې دى سوا د غنيمت د خمس نه، او د دې خمس هم څه وي هغه به هم ستا طرف ته واپس کولې شى، يعنى مصالح مسلمين او جهاد وغيره ضروريات کښې خرچ کولې شى.

(فادوا الخياط والمخيط) دا په ما قبل باندي متفرع دي، يعنى كله چه زما په دي كښي سوا د خمس نه هيڅ نشته نو هم دغه شان ستاسو هم په طريق اولي سوا د واجب حق نه په دي كښي هيڅ نشته، لهذا يو سرې دي د خپلي معين حصي نه زائد يو خيزاگر كه هغه تار يا ستن ولې نه وي نه اخلي، كه اخستلې ئې وي نو هغه دي واپس كړي، لږ ساعت پس يو سرې اودريدو چه د هغه په لاس كښي د وړئ يو غونډارې وو، هغه د هغې طرف ته اشاره كولو سره عرض او كړو چه ما دا وړئ د خپلي گدئ (زين) د اصلاح دپاره اخستلې ده، خو چونكه د دي وخته پورې مال غنيمت تقسيم شوې وو او دي سرې هغه وړئ د تقسيم نه روستو راوړې وه، هغه له پكار وو چه د تقسيم نه مخكښي ئې راوړي وې، په دي وجه رسول الله ﷺ د هغې د قبلولو نه په دي وجه عذر او كړو چه (اما ما كان لي ولبي عبدالمطلب فهو لك الخ) يعنى په دي وړئ كښي چه خومره حصه زما او زما د خاندان والو جوړيږي د هغې اجازت خو به زه تاته دركړم ځكه چه په دي ويښتو كښي د پوره لښكر حصه وه په دي وجه هغه او فرمائيل چه زه د خپلي حصي خو اجازت دركولي شم، او په دي كښي د نورو حصه ده نو د دي اجازت خپله د هغوي نه واخله، هغه د رسول الله ﷺ دي احتياط ته كتلو سره او اصولي خبره اوريدلو سره وې وئيل (اما اذا بلغت ما اري الخ) ښه دامعمولى خيزدي درجي ته اورسيدو، په دي ويناسره ئې هغه او غورځولو.

په مال غنيمت كښي د رسول الله ﷺ د حصي بيان

دلته په دي حديث كښي دا اشكال دي چه هغه او فرمائيل چه په مال غنيمت كښي زما هيڅ حصه نشته سوا د خمس نه، حال دا چه دا ثابته ده چه د رسول الله ﷺ دپاره به په مال غنيمت كښي درې حصي وې، (سهم كسهم احد الفانمين) يعنى د غازيانو په شان د هغه يوه حصه، وخمس الخمس، او سهم صفى، د دي دريم مستقل باب وړاندي راوان دي، د دي اشكال جواب دا وركړې شوې دي چه د رسول الله ﷺ د نفى نه مراد عام نفى ده بلكه د موجود او مخصوص مال غنيمت سره د دي تعلق دي، لهذا اوس هيڅ اشكال باقى پاتې نه شو، وبنظر باب فى الامام يستائر بشى من الفى نفسه، والحديث اخرجه النسائى، قاله المنذرى.

باب فى الامام يقيم عند الظهور على العدو ويعرضتهم

كله چه حاكم په دشمن غالب شى نو په ميدان جنگه كښي دي ايسار شى

[۲۶۹۵] (حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، ح وَحَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَوْحٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا غَلَبَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْعُرْصَةِ ثَلَاثًا، قَالَ ابْنُ الْمُثَنَّى: إِذَا غَلَبَ قَوْمًا أَحَبَّ أَنْ يُقِيمَ بَعْرَضَتِهِمْ ثَلَاثًا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: كَانَ يَحْتَجِي بِنِ سَعِيدٍ يَطْعَنُ فِي هَذَا الْحَدِيثِ لِأَنَّهُ لَيْسَ مِنْ قَدِيمِ حَدِيثِ سَعِيدٍ لِأَنَّهُ تَغْيِيرُ سَنَةِ ثَمِينٍ وَأَرْبَعِينَ وَلَمْ يُخْرِجْ هَذَا الْحَدِيثَ إِلَّا بِأَخْرَجَهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: يُقَالُ إِنَّ وَكَيْعًا حَمَلَ عَنْهُ فِي تَغْيِيرِهِ.

۱: صحيح البخاري/الجهاد ۱۸۴ (۳۰۶۴)، والمغازي ۸ (۳۹۷۶)، صحيح مسلم/صفة أهل النار ۱۷ (۲۸۷۵)، سنن الترمذي/السير ۳ (۱۵۵۱)، (تحفة الأشراف: ۳۷۷۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۵/۳، ۲۹/۴)، سنن الدارمي/السير ۲۲ (۲۵۰۲) (صحيح)

دا بوطلحه ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه کله به نبی ^{صلی الله علیه و آله} په کوم قوم باندې غالب شو نو په میدان جنگ کښې به ئې درې ورځې تیرولې، اودابن مثنی په روایت کي دي چه درې شپې تیروول به ئې ښه گنرل، ابوداود وائی چه یحي بن سعید په دې حدیث کښې طعن وئیلی دې ځکه چه دادسعید دمخکینو حدیثونونه نه دې ځکه چه دپنځه څلویښت کالوپه عمر کښې دهغه چه حافظه کښې تغیر راغلې وو اوداحدیث هم دهغه داخري عمر حدیث دې ابوداود وائی چه وکیع دسعید نه داروایت دهغه دتغیر په وخت کښې حاصل کړې وو.

شرح حدیث

په حدیث الباب کښې هم دا مضمون دې چه د رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} دا عادت مبارک وو چه کله به ئې په یو قوم باندې غلبه حاصلوله او یوه زمکه به ئې فتح کوله نو هلته به ئې په هغه میدان کښې د فتح نه روستو درې ورځو پورې قیام کولو، چه د هغې علماء گرامو مختلف مصلحتونه لیکلې دی مثلاً دهغه زمکې د حق ادا کول چه په هغې باندې تر اوسه پورې د غیر الله بندگی کړې شوې ده، اوس د دې فتحې نه پس خو ورځې په هغې باندې د معبود حقیقی عبادت او کړې شی، بل په دې وجه هم چه د فتح اثار ظاهر شی، اود سورلو او د ملگرو استراحت چه هغوی ته د آرام موقع ملاؤ شی، او د خپل طاقت او پې پرواهئ اظهار، چه که اوس هم د چا د مقابلې همت وی نورادیشی. **قال ابوداود: کان یحیی بن سعید یطعن فی هذا الحدیث** یحیی بن سعید به د دې حدیث په سند کښې طعن کولو، ځکه چه د دې په سند کښې سعید بن ابی عروبه دې کوم چه د مختلطین نه دې، یعنی په اخر عمر کښې په هغه باندې اختلاط راتلو، او په حافظه کښې ئې کمزوری راغلې وه او د مختلط حکم دا دې چه دهغه روایت قبل الاختلاط معتبر دې، او د هغې نه روستونه، او دا حدیث دهغه د اخری عمر دې یعنی د اختلاط نه روستو.

وراندې مصنف فرمائی چه د وکیع روایت د سعید نه د اختلاط نه روستو دې خو دلته د هغه نه روایت کولو والا وکیع نه دې بلکه روح بن عباده او معاذ بن معاذ دې، دهغه نه علاوه عبدالاعلی هم دې پس امام بخاری دا حدیث د روح بن عباده په طریق سره روایت کولو سره فرمائی چه: تابعه معاذ وعبدالاعلی، او د وکیع تحمل اگر چه دهغه نه بعد الاختلاط دې خو د دې درې وارو په باره کښې دا ثابت نه دی چه دهغه تحمل د اختلاط په حالت کښې وو، او بیا هسې هم دا حدیث متفق علیه دې، بخاری او مسلم د دې تخریج کړې دې، والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

بَابُ فِي التَّفْرِيقِ بَيْنَ السَّبْيِ

د قیدیانو د یوبل نه جدا کولو بیان

په مال غنیمت کښې چه کوم قیدیان حاصلیږي که د یو سړی په حصه کښې چه کوم قیدیان راغلې دی په هغې کښې خپل مینځ کښې خپلولی وی او په هغوی کښې د کبیره سره سره صغیره هم وی، مثلاً د یو سړی په حصه کښې دوه غلامان راغلل دوه روڼه، یو بالغ او یو ماشوم نو په هغوی کښې تفریق کولې کیدې شی یا نه، په داسې طریقه چه هغه سړی چه د

چا په حصه کښي هغه دواړه راشي او هغه په دې دواړو کښي يو خرڅ کړي يا ئې چاته هبه کړي، په حديث کښي د دې مناعت راغلي دي.

په مسئله مترجم بها کښي مذاهب ائمه

اوس دا خبره چه په دې کښي کوم کوم قرابتونه معتبر دي، او ترڅو پورې دا تفریق ممنوع دي؟ د دې په تفصيل کښي د ائمه کرامو اختلاف دي د احنافو په نزد د تفریق کراهت د هغه د بلوغ پورې دي، او د امام شافعي رحمته په نزد اووه يا اته کالو پورې دي، يعنی که هغه ماشوم د اووه يا اته کالو نه وړو کي وي نو بيا خو منع ده د هغې نه روستو منع نه دي **(وقال مالک اذا اتفر)** يعنی کله چه د هغه ماشوم غاښونه راوځي، او امام احمد فرمائي چه د مور او ځوئي ترمينځه تفریق کله هم جائز نه دي اگر چه بالغ شي.

اوس دا چه کومي رشتي په دې کښي معتبرې دي، بين الولد والوالدة په عدم جواز باندې خو اجماع ده، بيا د احنافو په نزد د هر ذي رحم هم دا حکم دي، او د امام شافعي رحمته په نزد لکه چه د هغوي د کتابونو نه معلومېږي دا تحريم قرابت د پلار سره خاص دي ولد او والده، او هم دغه شان والد او جد او جد او جده، که جده د مور د طرف نه وي او که د پلار د طرف نه وي. فقی المغنی المحتاج (ج ۲ ص ۳۸) ويحرم التفریق بين الام والولد حتى يميز وفي قول حتى يبلغ ولا يحرم التفریق بينه وبين سائر المحارم كالاخ والعلم، وان قوى السبکی التحريم منه بينه وبينهم اه وفي شرح السنة : وكذا حكم الجدة وحكم الاب والجد. اه (تحفه ص ۲۱۹ ج ۲)

[۲۶۹۶] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ الْحَكِيمِ، عَنْ مَيْمُونِ بْنِ أَبِي شَيْبٍ، عَنْ عَلِيٍّ أَنَّهُ: فَرَّقَ بَيْنَ جَارِيَةٍ وَوَلَدِهَا فَتَنَاهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ وَرَدَّ الْبَيْعَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَمَيْمُونٌ: لَمْ يَذْرُكْ عَلِيًّا قَتِيلًا بِالْجَمَاعِ جِمْرًا، وَالْجَمَاعُ سَنَةٌ ثَلَاثٌ وَتَمَانِينَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَالْحَرَّةُ سَنَةٌ ثَلَاثٌ وَسِتِّينَ، وَقَتِيلُ ابْنِ الزُّبَيْرِ سَنَةٌ ثَلَاثٌ وَسَبْعِينَ.

د ميمون بن ابی شيبب رضي الله عنه نه روايت دي چه علي رضي الله عنه په قيديانو کښي د يوې جينئ او دهغې په بچو کښي جدائي راوستلي وه نونبي عليه السلام دهغې نه منع او فرمائيله اوسودا ئې واپس کړه. ابوداود وائي چه داروايت ميمون بن ابی شيبب د علي رضي الله عنه نه نقل کړې دي حالانکه د ميمون د علي رضي الله عنه سره ملاقات نه دي شوې او ميمون په جنگ جماجم په کال درې اتيا حجري کښي قتل کړې شوې وو، ابوداود وائي چه د حره واقعه په کال درې شپيته حجري کښي پيښه شوي وه او د ابن زبير شهادت په کال درې اتيا حجري کښي شوې وو.

(عن علي انه فرق بين جارية لها وولدها) دا تفریق چونکه د مور او ځوئي ترمينځه وو، او هغه بالاتفاق ممنوع دي، وړاندې په روايت کښي دي چه **(ورد البيع)** د دې نه معلومه شوه چه د علي رضي الله عنه دا تفریق بالبيع وو چه هغه په دواړو کښي د يو بيع کړې وه، بله خبره د دې حديث نه دا معلومه شوه چه که دا قسم تفریق د بيع په ذريعه او کړې شي نو هغه بيع فاسد ده، د امام شافعي او ابويوسف هم دا مذهب دي، د دې حديث نه د دې تائيد

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۸۶) (حسن)

کیرې، د امام صاحب په نزد که څوک داسې بیع او کړې نو هغه مع الکراهت صحیح ده فاسد نه ده.

قوله: قال ابوداود: وميمون لم يدرک عليا... لهذا حديث منقطع دي، وړاندې فرمائی چه ميمون په جماجم جنگ کښې قتل شو، یعنی هغه جنگ کوم چه په "دير جماجم" کښې واقع شوې وو، او جنگ جماجم په ۸۳هـ کښې پيښ شوې وو، دا د ماقبل یعنی عدم ادراک علی دليل نه دي بلکه مستقل افاده ده، ځکه چه د علی عليه السلام د شهادت قصه په ۴۰ هجري کښې پيښه شوې وه او دا خبره ممکنه ده چه دي هغه وخت د څلورو پنځو کالو يا د هغې نه زيات وي، چه په کوم عمر کښې د صغير سماع صحیح وي. (بذل)

لهذا په دي صورت کښې ادراک کيدې شي، هم په دي وجه مونږ اووې چه دا د عدم ادراک دليل نه دي.

قال ابوداود: والحرّة... ۶۳هـ

د وقعة الحرّة ذکر

مصنف دلته د دوه مشهور تاريخي جنگونو تبعا په طور د افادي ذکر کړې دي، يوه واقعة الحرّة چه دا جنگ په ۶۳هـ کښې پيښ شوې وو، بله واقعه د قتل ابن الزبير عليه السلام، د دي په باره کښې فرمائی چه دا واقعه په ۷۳هـ کښې راپيښه شوې ده، وقعة الحرّة مشهور جنگ دي کوم چه د امارت يزيد په زمانه کښې راپيښ شوې وو چه په هغې کښې د يزيد لښکر د مسلم بن عقبه په امارت کښې په مدينه منوره باندي حمله کړې وه چه په هغې کښې په سوونو صحابه کرام او تابعين شهيدان شوې وو، او د ابن الزبير عليه السلام بيان په الدر المنصود جلد ثالث باب الاحصار کښې ذکر دي.

د وقعة الحرّة جوړ خو د ابن الزبير د فتني نه دي هغه دا چه عبدالله بن الزبير عليه السلام د يزيد د بيعت نه انکار کولو سره د مدينې منورې نه مکې مکرمې ته راغلو، او اهل مکه ورسره ملگرتيا او کړه نو په دي وجه باندي يزيد چونکه په مکه مکرمه باندي د حملې کوشش کولو اگر چه هغه په دي کښې ناکام شو خو د هغه دي حرکتونو ته کتلو سره اهل مدينه هم د يزيد خلاف شو او هغوی خپل بيعت فسخ کړو، او په مدينه کښې چه کوم بنو اميه وو د هغوی محاصره ئې او کړه... مروان د مدينې امير د دي خبر يزيد ته ورکړو اود هغه نه ئې مدد طلب کړو، په دي باندي يزيد يو مضبوط لښکر کوم چه په دولس زره کسانو باندي مشتمل وو، او وئيلې شوې دي چه شل زره کسان وو او مسلم بن عقبه ئې د هغې امير جوړ کړو او د مدينې طرف ته ئې اوليرلو او هغه ته ئې دا هدايت او کړو چه اهل مدينه درې ورځو پورې پوهه کړئ که هغوی رجوع او کړې نو صحیح ده گيڼې هغوی سره دي جنگ او کړې شي، الغرض هلته تلو سره قتال ته خبره اورسيده او اهل مدينه شکست او خورلو درې ورځې مسلسل په مدينه کښې قتال او شو، دا جنگ چونکه په حره مدينه کښې شوې وو په دي وجه دي ته وقعة الحرّة وئيلې شي چه په کوم ځانې کښې دا جنگ شوې وو هغه ځانې په حره راقم سره مشهور دي کوم چه د مسجد نبوي نه په يو ميل فاصله باندي دي، په دي جنگ کښې په باقی پاتې

مهاجرین و انصار او تابعینو نه یو نیم زر کسان قتل شو او د دې نه علاوه د عام مسلمانانو تعداد د ماشومانو او زنانو نه علاوه زر بیانولې شی. (الحل المفهم ص ۷۵ ج ۲)

بَابُ الرَّخْصَةِ فِي الْمُدْرِكِينَ يَفْرُقُ بَيْنَهُمْ

په خوانا نوقیدیا نوکښې د جدائی راوستود جواز بیان

یعنی تفریق بین السبایا هغه وخت ممنوع دې چه کله هغه وړوکې او نابالغ وی، او که بالغ وی نو د تفریق رخصت او اجازت دې.

[۲۶۹۷] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، قَالَ: حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ، قَالَ: حَدَّثَنِي إِيَّاسُ بْنُ سَلْمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ أَبِي بَكْرٍ وَأَمْرَةَ عَلَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَغَزَوْنَا فِزَارَةَ فَشَنْنَا الْغَارَةَ، ثُمَّ نَظَرْتُ إِلَى عُنُقِ مِنَ النَّاسِ فِيهِ الدَّرِيَّةُ وَالنِّسَاءُ فَرَمَيْتُ بِهِمْ فَوَقَعَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْجَبَلِ فَنَامُوا، فَجِئْتُ بِهِمْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فِيهِمْ امْرَأَةٌ مِنْ فِزَارَةَ وَعَلَيْهَا قَشْعٌ مِنْ أَدَمٍ مَعَهَا بِنْتُهَا مِنْ أَحْسَنِ الْعَرَبِ فَتَقَلَّبَنِي أَبُو بَكْرٍ ابْتِنَهَا، فَقَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فَلَقِينِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لِي: "يَا سَلْمَةُ هَبْ لِي الْمَرْأَةَ، فَقُلْتُ: وَاللَّهِ لَقَدْ أُعْجِبْتَنِي، وَمَا كَشَفْتُهَا تَوْبًا فَسَكَتَ حَتَّى إِذَا كَانَ مِنَ الْغَدِ لَقِينِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السُّوقِ فَقَالَ: يَا سَلْمَةُ هَبْ لِي الْمَرْأَةَ لِلَّهِ أَبُوكَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ مَا كَشَفْتُهَا تَوْبًا وَهِيَ لَكَ"، فَبَعَثَ بِهَا إِلَى أَهْلِ مَكَّةَ وَفِي أَيِّدِهِمْ أَسْرَى فَقَادَاهُمْ بَيْتُكَ الْمَرْأَةَ.

ایاس بن سلمه دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه مونږ د ابوبکر رضی الله عنه سره جهادته لارو او هغه لره نبی صلی الله علیه و آله په مونږ باندي امیر مقرر کړي وو، مونږ د بنی فزاره قبیلې سره جهاد وکړ او د څلورو طرفونو نه مو ورباندي حمله وکړله، بیای دخلقوشاته وکتل چه ماشومان اوبسڅې هم وي نو مایوغشي وويشتو چه ددوی اودغر په مینځ کښې اولگیدونودوی راپاخیدل او ټول مې ابوبکر رضی الله عنه ته راوستل په دوی کښې یوه بسڅه هم وه چه ډیر اعلی لباس ئې اغوستلي وو او یوه ښکلي لورهم ورسره وه نو ابوبکر رضی الله عنه هغه ماته را کړله، نوزه چه کله مدينې ته راغلم نو د نبی صلی الله علیه و آله سره مې ملاقات او شو نوماته ئې او فرمائیل ای سلمه دغه جینئ ماته را او بخښه ماورته ووتیل په الله مې دي قسم وي هغه خوزما ډیره خوښه شوي ده او مالتر اوسه دهغې پرده نده ماته کړي نونبې صلی الله علیه و آله خاموش شو، تردې چه سباله بیازماسره په بازار کښې ملاو شو نوماته ئې بیا او فرمائیل ای سلمه دغه جینئ ماته را او بخښه ستادي په خپل پلار قسم وي اود الله درضا دپاره ماورته ووتیل په الله مې دي قسم وي هغه خوزما ډیره خوښه شوي ده او مالتر اوسه دهغې پرده نده ماته کړي او هغه ستاشوه، نونبې صلی الله علیه و آله هغه مکې والاورته ولیرله اودهغوی سره دمسلمانانو قیدیان وو ددې په بدل کښې ئې ترې ازاد کړل.

د دې حدیث راوی سلمه بن الاکوع رضی الله عنه دې کوم چه د سریه فزاره واقعه بیانوی چه د هغې امیر صدیق اکبر رضی الله عنه وو، ابن الاکوع فرمائی چه مونږ د صدیق اکبر سره وتلو باندي د قبیله فزاره خلاف غزوه او کړه او په هغوی مو حمله او کړه، چه کله مونږ په هغوی باندي حمله

(۱) صحیح مسلم للجهاد ۱۴ (۱۷۵۵)، سنن ابن ماجه للجهاد ۲۲ (۲۸۴۶)، (تحفة الأشراف: ۴۵۱۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۷۴، ۴۷، ۵۱) (حسن)

او کړه (نو مسلمانانو ته فتح حاصله شوه، ډیر خلق قتل کړې شو، او ډیر خلق قید کړې شو او بعض د هغوی نه تختیدل، کوم چه هغه وړاندې بیانوی) بیا ما د خلقو د یو جماعت طرف ته او کتل چه په هغوی کښې زنانه او ماشومان هم وو کوم چه په غرباندي ختلو دپاره منډې وهلې د خان د بیج کولو دپاره، ما یو غشی او چلولو (د هغوی د وژلو دپاره نه بلکه د هغوی د منع کولو دپاره) پس هغه فرمائی چه زما غشی د غر او د هغوی ترمینځه راپریوتلو چه د هغې نه ویریدو سره هغوی هم هلته اودریدل او ما هغوی اونیول، او د صدیق اکبر په خدمت کښې مې پیش کړل په هغوی کښې د قبیله قزازه یوه داسې زنانه وه چه د هغې په بدن باندي تار کول وو، د هغې سره یوه ښکلې جینې وه، صدیق اکبر ئې هغه لور ماته د نفل او انعام په طور راکړه (هم د دې نه ترجمه الباب ثابت شو. ځکه چه دلته په مور او لور کښې تفریق اوشو، او ظاهره ده چه دواړه مدرکه او بالغانې وې) چه کله زه واپس کیدو سره مدینې منورې ته راغلم نو رسول الله ﷺ ماته اوفرمائیل ای سلمه دا جاریه ته ماته هبه کړه، ما عرض اوکړو واللّه زما خوښه شوې ده او زه تر اوسه پورې د دې خواته هم نه یم ورغلې، هغه فرمائی چه رسول الله ﷺ په دې باندي خاموشه شو، هغه فرمائی چه په بله ورځ باندي بیا د رسول الله ﷺ ما سره ملاقات اوشو او رسول الله ﷺ بیا ماته هم هغه خبره اوکړه او ما هم هغه خبره عرض کولو سره عرض اوکړو چه هغه ستاسو په خدمت کښې هدیه ده، هغه فرمائی چه رسول الله ﷺ هغه د اهل مکه طرف ته اولیرله چه د هغې د لاندې بعض مسلمانان گیر وو، د رسول الله ﷺ دا لیرل د هغه مسلمانانو قیدیانو په بدل کښې وه، (یعنی په هغې باندي هغه مسلمانان قیدیان بحمد الله ازاد شو) اخرجه مسلم قاله المنذری وابن ماجه. (محمد عوامه).

بَابُ فِي الْمَالِ يُصِيبُهُ الْعُدُوٌّ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ثُمَّ يُدْرِكُهُ صَاحِبُهُ فِي الْغَنِيمَةِ
بیان د مسلمانانو د هغه مال چه د کافرو په قبضه کښې راشی او دوباره ئې خپل مالک د غنیمت په مال

کښې بیامومی

د مسئله مترجم بهها تشریح سره د اختلاف ائمه نه:

په دې ترجمه الباب کښې یوه مشهوره اختلافی مسئله ذکر شوې ده، چه د هغې بناء په یوه مشهوره مسئله اصولیه اختلافیه باندي دي، هغه دا چه استیلاء الکافر علی مال المسلم سبب ملک دي یا نه؟ (دا مسئله تاسو د ټولو نه اول په اصول شاشی کښې لوستلې ده) د احنافو او مالکیانو په نزد سبب ملک دي، د مالکیانو په نزد خو مطلقا او د احنافو په نزد د استیلاء سبب ملک کیدل بعد الاحراز دی، د احراز نه مخکښې نه، د دې وضاحت دا دي چه که یو کافر د یو مسلمان څه مال په څه طریقه باندي د دار الاسلام نه اوچتولو سره خپل ملک ته یوسی نو د دې استیلاء د وجې نه به هغه کافر د دې مسلمان مالک وی یا نه، د مالکیانو په نزد خو به هغه په دې باندي قابض کیدو سره مالک شی، او د احنافو په نزد به صرف په قبضې سره ملک نه ثابتیږی، چه ترڅو پوې احراز بیا نه موندلې شی یعنی هغه

١ ځکه چه زنانه او ماشومان په جهاد کښې قتل کول ممنوع دي

دې د دې ځانې نه دار الحرب ته نه بوځي، د امام شافعي په نزد استيلاء سبب ملک نه دې لهذا د هغوی په نزد به هغه کافر د دې مسلم د مال مالک نه وي، وعن احمد روايتان، الاول كالشافعي والثاني كمدھبنا الحنفية وهو الراجح عندهم. (الابواب والتراجم ص ۱۲۵، ج ۴) د دې اصولی اختلاف د پیژندلو نه پس اوس حدیث الباب اوگوری.

[۲۶۹۸] (حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ سَهْمِيلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَىٰ يَعْنِي ابْنَ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ غُلَامًا لِابْنِ عُمَرَ أَتَى إِلَى الْعَدُوِّ فَظَهَرَ عَلَيْهِ الْمُسْلِمُونَ فَرَدَّهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى ابْنِ عُمَرَ وَلَمْ يَقْسِمْ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَقَالَ غَيْرُهُ: رَدَّهُ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ.

د نافع نه روایت دې چه د ابن عمر غلام دشمنانو طرف ته یعنی مشرکانو ته او تختیدو نو کله چه مسلمانان په دوی باندې غالب شول نونبی ﷺ هغه غلام ابن عمر ته واپس ورکړو اودائې تقسیم نکړو یعنی د غنیمت په مال کنبې ئې داخل نکړو.

د حدیث شرح من حیث الفقه

په ترجمه الباب کنبې مونږ کومه اصولی اختلاف مسئله بیان کړې ده د هغې نه پس اوس په دې باندې ځان پوهه کړئ چه که دا قسم مال، په مال غنیمت کنبې حاصل شی نو د هغې څه کیدل پکار دی؟ ایا هغه به د مسلمان طرف ته رد کولې شی د چا چه مخکنبې وو، یا که هغه به مال غنیمت منلې شی؟ د احنافو او مالکیانو د مسلک تقاضه دا ده چه هغه مال غنیمت اومنلې شی ځکه چه هغه مال د کفارو شوې وو، او د شوافعو د مسلک تقاضه دا ده چه دغه مال د هم دغه مسلمان طرف ته را واپس کړې شی، او هغه د مال غنیمت نه او نه منلې شی.

په مسئله مترجم بهما کنبې د ائمه اربعه مذاهب

بیا ځان پوهه کړئ چه په دې باندې خو د ټولو اتفاق دې چه دا قسم مال چه کله په مال غنیمت کنبې حاصل شی نو که د غنیمت د تقسیم نه مخکنبې دا معلومه شی چه په دې کنبې فلانې فلانې څیز د مسلمان دې نو په دې صورت کنبې به په دې باندې د ټولو اتفاق وی چه دغه مال به د هغه مسلمان طرف ته رد کولې شی، او که د دې خبرې علم د تقسیم غنیمت نه پس وی نو په دې صورت کنبې احناف او مالکیان دا وائی چه اوس به رد کولې نه شی او د شوافعو په نزد بعد القسمة هم د هغه طرف ته رد کولې شی د هغوی په نزد دې مال ته مال غنیمت وئیل هم صحیح نه دی.

ددې تفصیل نه پس په دې ځان پوهه کړئ چه که په یو حدیث کنبې د دې قسم مال په باره کنبې رد الی المالک راغلې وی نو هغه احناف او مالکیان په قبل تقسیم الغنیمه باندې محمول کوی (ځکه چه د هغوی د مسلک تقاضه هم دا ده، خو که په یو حدیث کنبې د تقسیم تصریح وی او بیا هم هغه مال رد کړې شوې وی نو دا خو به د شوافعو موافق وی خو احناف او مالکیان په دې صورت کنبې تاویل کوی او دا وائی چه هغه رد بالعوض وی، یعنی د هغه مسلمان نه به د هغې عوض اخستلې شی او بیا به هغه ته واپس کولې شی، هسې نه.

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۱۳۵)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الجهاد ۱۸۷ (۳۰۶۷)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۳۲ (۲۸۴۶) (صحيح)

د عبد ابق په باره کښې د امام صاحب او صاحبینو رائي

د دې نه پس په دې ځان پوهه کړې چې که د یو مسلمان غلام د کفارو طرف ته پخپله اوتختی او بیا د هغه کفارو سره په جنگ کښې په مال غنیمت کښې هغه عبد ابق حاصل شی نو د هغه په باره کښې خپله د امام صاحب او صاحبینو خپل مینځ کښې اختلاف دي، د صاحبینو په نزد کفار د دې قسم عبد ابق مالکان کیږي څنگه چې نور د بل قسم مالک مالکان کیږي، خو امام صاحب د عبد ابق په باره کښې دا فرمائی چې کفار د هغه مالکان کیږي نه په ظاهر کښې د دې وجې نه چې دلته استیلاء چرته موندلې شوې ده ځکه چې هغه عبد خو خپله تختیدلې وو لهدا د استیلاء ضابطه به په دې باندې نه نافذ کیږي، د امام صاحب خبره واقعی چې قیاس ته نزدې ده، لهدا په عبد ابق کښې به د امام صاحب او امام شافعی دواړو رائي متحد وی، څنگه چې به د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد هغه رد کلي شی هم دغه شان به د امام صاحب په نزد هم، د باب په دې اولنی حدیث کښې د عبد ابق قصه ذکر شوې ده... چې د ابن عمر یو غلام وو هغه د کفارو طرف ته اوتختیدلو بیا چې مسلمانانو ته په هغه کفارو باندې غلبه حاصله شوه او هغه غلام هم په مال غنیمت کښې راغلو نو هغه غلام رسول الله صلی الله علیه وسلم ابن عمر ته واپس کړو، په مال غنیمت کښې ئې شاملولو سره هغه تقسیم نه کړو، د باب د حدیث اول هم دا مضمون دي، خو دا حدیث د چا خلاف هم نه دي ځکه چې دا رد قبل القسمة وو، او دا پورته ذکر شو چې د غنیمت د تقسیم نه مخکښې که علم راشی نو په دې صورت کښې به د ټولو په نزد د هغه خیزرد د مالک طرف ته وی.

د دې نه روستو چې کوم دویم حدیث راوان دي د هغې مضمون دا دي چې یو ځل د ابن عمر یو آس د هغه د قبضې نه اووتلو کوم چې دشمنانو اونیولو او په هغې باندې یې قبضه اوکړه، بیا چې کله په هغه کفارو باندې مسلمانان غالب شو نو هغه فرس په ابن عمر باندې رد کړې شوې وو، د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد خو دا مطلقا ده، او د احنافو او مالکیانو په نزد په قبل القسمة تقسیم باندې محمول دي، او که دا رد بعد القسمة وو نو بیا به دا محمول کولې شی په رد بالعوض والقیمة باندې، یعنی د هغې عوض به ترې اخستلې شی او بیا به واپس کولې شی.

بیا وړاندې په دې دویم حدیث کښې د ابن عمر رضی الله عنهما د عبد ابق هم ذکر دي او د هغه په باره کښې هم دا دی چې هغه هغوی ته واپس کړې شو.

[٢٦٩٩] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلْمَانَ الْأَنْبَارِيُّ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، الْمَعْنَى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مُثَنَّى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: ذَهَبَ فَرَسٌ لَهُ فَأَخَذَهَا الْعَدُوُّ فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ الْمُسْلِمُونَ فَرَدَّ عَلَيْهِ فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَى عَبْدُ لَهُ فَلَجِقَ بِأَرْضِ الرُّومِ، فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ الْمُسْلِمُونَ فَرَدَّ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ. بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دنافع نه روایت دي چې د ابن عمر رضی الله عنهما اس لارو او دشمنانو اونیوو نوکله چې مسلمانان په مشرکانو غالب شول نو دغه اس ابن عمر څه ته واپس ورکړې شو او د نبی صلی الله علیه وسلم په دور کښې

(١) صحیح البخاري/الجهاد ١٨٧ (٣٠٦٧)، تعلیقاً، سنن ابن ماجه/الجهاد ٣٣ (٢٨٤٧)، (تحفة الأشراف: ٧٩٤٣) (صحیح)

دا په غنیمت کښې داخل اونه گنرلې شو دده یو غلام هم روم ته تختیدلې وو کله چه مسلمانان په رومیانو غالب شول نو خالد بن ولیده هغه غلام ابن عمر رضی الله عنہما ته واپس کړو دا خبره د نبی صلی الله علیه و آله د زمانې نه دوروسته وخت ده.

امام بخاری رحمته الله هم دا مسئله اخستلې ده، باب اذا غنم المشركون مال المسلم ثم وجده المسلم، او بیا په هغې کښې هم دا حدیث د ابن عمر په مختلف طرق سره ذکر کړې دې، حدیث الباب الثاني اخرجہ البخاری وابن ماجه، قاله المنذرى.

بَابُ فِي عِبِيدِ الْمُشْرِكِينَ يُلْحَقُونَ بِالْمُسْلِمِينَ فَيُسْلِمُونَ

بیان د غلامانو د مشرکینو چه د دوی نه او تختی او مسلمانانو ته راشی او اسلام قبول کړی

یعنی که د مشرکانو غلامان د هغوی نه خلاصیدو سره او تختی او دار الاسلام ته راشی، بیا دلته راتلو سره مسلمانان هم شی نو د هغوی څه حکم دې؟ جواب ظاهر دې چه هغوی به ازاد شی (۱)، د مشرکانو غلامان به غلامان هله وی چه کله د مسلمانانو لاس ته د مال غنیمت په شکل باندي راشی د جهاد او قتال په ذریعه.

[۲۷۰۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ يَحْيَى الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي بِنِ صَالِحٍ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ الْمُعْتَمِرِ، عَنْ رَبِيعِ بْنِ جَرَّاشٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: خَرَجَ عَبْدَانُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ قَبْلَ الصَّلْحِ فَكَتَبَ إِلَيْهِ مَوَالِيَهُمْ فَقَالُوا: يَا مُحَمَّدُ وَاللَّهِ مَا خَرَجُوا إِلَيْكَ رَغْبَةً فِي دِينِكَ وَإِنَّمَا خَرَجُوا هَرَبًا مِنَ الرِّقِّ، فَقَالَ نَاسٌ صَدَقُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ رُدُّهُمْ إِلَيْهِمْ، فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: "مَا أَرَأَيْكُمْ تَنْتَهُونَ يَوْمَ مَعَشَرَ قُرَيْشٍ حَتَّى يَبْعَثَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ مَنْ يَضْرِبُ رِقَابَكُمْ عَلَى هَذَا، وَأَبَى أَنْ يَرُدَّهُمْ وَقَالَ: هُمْ عَتَقَاءُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ".

د علی رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه د صلح حدیبیه په ورځ د صلح نه لر مخکښې یو خو غلامان نبی صلی الله علیه و آله ته په تیخته راغلل د غلامانو مالکانو نبی صلی الله علیه و آله ته اولیکل چه ای محمد فه په الله قسم دا غلامان په دې وجه نه دی درغلي چه ستادین ئې خوښ دې دوی د غلامی نه تختیدلې دي څه کسانو او وئیل دا خبره ئې ریښتیا ده ای د الله رسوله ورته ئې ورواپس کړه نو نبی صلی الله علیه و آله په غسه شو او وئې فرمائیل ای قریشیانو زما خیال دې چه تاسو دا خپل عادت نه پریردئ تردې چه مسلط به کړي الله تعالی په تاسو باندي هغه څوک چه ستاسو څټونه به وهی ددې خبرو په وجه باندي او انکار ئې او کړو دواپس کولونه او وئې فرمائیل دا غلامان د الله تعالی د طرف نه ازاد کړې شوي دی.

د حدیث مضمون دا دې چه سیدنا علی رضی الله عنہ فرمائی چه د غزوه حدیبیه په موقع باندي د صلح نه مخکښې د مشرکانو خو غلامان د هغوی د طرف نه د مسلمانانو طرف ته راغلل نو د هغوی مالکانو رسول الله صلی الله علیه و آله ته اولیکل چه زمونږ دا غلامان ستاسو طرف ته، ستاد دین د طلب او رغبت د وجې نه نه دی راغلی بلکه دا خو د غلامی نه بیج کیدلو دپاره زمونږ د

(۱) علي هذا القياس خپله مشرکان هم چه کله اسلام قبول کړی او د دار الحرب نه دار الاسلام ته راشی نو

هغوی به هم ازاد وی

(سنن الترمذی للمناقب ۲۰ (۳۷۱۵)، تحفة الأشراف: ۱۰۰۸۸)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱/۱۵۵) (صحیح)

خوانه ستاسو طرف ته درغلې دی، په روایت کښې دی ﴿فقال ناس : صدقوا یا رسول الله ردهم اليهم﴾ یعنی په دې باندې بعض مسلمانانو رسول الله ﷺ ته عرض او کړو چه د کومو مشرکانو پیغام تاسو ته راغلې دې د هغوی خبره صحیح ده، لهذا دا غلامان د هغوی طرف ته واپس کړئ، نو د هغوی په دې خبره باندې رسول الله ﷺ ډیر خفه شو، او ډیره سخته خبره ئې او فرمائيله چه اې د قریشو جماعته تاسو به د دې خپلو حرکتونو نه قلاړ نه شی، چه ترخو پورې الله پاک په تاسو داسې دشمن مسلط نه کړی کوم چه ستاسو ستونه اووهی، راوی وائی چه رسول الله ﷺ د هغه غلامانو د واپس کولو نه صفا انکار او کړو، او فرمائی: ﴿هم عتقاء الله عزوجل﴾.

په حدیث الباب کښې دوه کارونه قابل تحقیق دی

په دې حدیث کښې دوه خبرې قابل تحقیق دی، اول دا چه په دې روایت کښې دا واقعه د یوم الحدیبیه طرف ته منسوب کړې ده حضرت په بذل المجهود کښې روایات حدیثیه او کتب تاریخ نه دا ثابت کړې ده چه دا غزوه د طائف ده، لهذا د ابوداؤد په دې روایت کښې لفظ "یوم الحدیبیه" د یو راوی وهم دې، بله خبره حضرت دا فرمائیلي ده چه ﴿فقال ناس﴾ مصداق ملا علی قاری رحمته الله علیه بعض صحابه کرام منلې دی، خو دا بعیده ده، اول خود صحابه کرامو نه بعیده ده، دا خبره چه هغه د خپلو مسلمانانو رونیو په مقابله کښې د مشرکانو تصدیق او کړی، دویم د رسول الله ﷺ په دې باندې د رد دا طرز او سخت وعید په یا معشر قریش لفظ سره، دا د صحابه کرامو په حق کښې کیدل بعید دی بلکه د دې نه مراد بعض کفار قریش دی. (۱) او که دا اومنلې شی چه دا واقعه د حدیبیه ده، گینې اصل خودا ده چه دا واقعه غزوه طائف ده او دا ویونکی او تصدیق کونکی بعض طلقاء یا بعض مؤلفه القلوب وو، او صحابه طلقاء نه د دې څیز صدور څه زیات بعید نه دې، او علی هذا القیاس په دې باندې د رسول الله ﷺ وعید، او د طلقاء په غزوه طائف کښې کیدل قرین قیاس هم دی او ثابت هم دی، والله تعالی اعلم بالصواب. والحديث اخرجه الترمذی اتم منه قاله المنذری، وفي البذل : واخرجه الحاكم في المستدرک.

باب فی إِبَاحَةِ الطَّعَامِ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ

د دشمن په علاقه کښې د خوراکو څښاکو د څیزونو د خوړلو د اباحت بیان

د دې ځانې نه د ابوابو رخ بدلیری، پس دا خو بابونه د مال غنیمت د بابونو متعلق دی، په مال غنیمت کښې د تصرف متعلق مصنف خو بابونه مسلسل ترلې دی اصل په دې کښې دا ده چه په مال غنیمت کښې تصرف قبل القسمة جائز نه ده خو بعض څیزونه د دې نه مستثنی

(۱) خو په دې باندې به دا اشکال ضرور وی چه په روایت کښې دا دی چه ویونکو دا خبره د رسول الله ﷺ نه په "یا رسول الله" سره خطاب کولو سره اوکړه، د دې توجیه دا کیدې شی چه دا مقام مقام د تعلق وو د خوشامدی په طور به هغوی دا خطاب کړې وی او بعض طالبانو ماته د دې دا توجیه ذکر کړه چه کیدې شی ویونکی منافقان وی په دې وجه ئې په یا رسول الله سره خطاب اوکړو، خود منافقانو هلته کیدل فهم ته نه راځی،

دی چه په هغې کښې تصرف قبل القسمة اباحت وارد دې، دا خو ابواب هم د دې متعلق دی، دا اولنې باب د طعام متعلق دې د خوراک خکاګ د خیزونو په باره کښې خود علماء کرامو اتفاق دې چه په هغې کښې تصرف عند الضرورة بقدر الضرورت د مجاهدینو دپاره جائز دې، اگر چه بغیر د امام د اذن نه وی، د جمهورو په نزد کما قال عیاض، وعند الزهري الاباحة بشرط اذن الامام.

[٢٧٠١] (١) حَدَّثَنَا اِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمَزَةَ الزُّبَيْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا اُنْسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ اَبْنِ عُمَرَ، اَنْ جِيْشًا غَنَمُوْا فِيْ زَمَانِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا وَعَسَلًا فَلَمْ يُؤْخَذْ مِنْهُمْ اَلْخُمْسُ.

دا بن عمر رضي الله عنهما نه روایت دې فرمائی چه پولنګر د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کښې دودئ او شهد په غنیمت کښې حاصل کړل نوددوی نه خمس وانه خيستلي شو. طعام او عسل نه د خمس ويستلو وجه دا ده چه مجاهدینو هغه په دار الحرب کښې خوړلو خکلو سره خرچ کړې وو، د غنیمت په طور باندي دا ئې محفوظ ساتلي دې چه دا به تقسیم کولي شی او ددې نه خمس راويستلي شی، اخراج خمس خود تقسیم په وخت وی.

[٢٧٠٢] (٢) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ اِسْمَاعِيْلَ، وَالْقَعْنَبِيُّ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَعْنِي اِبْنِ هِلَالٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللّٰهِ بْنِ مَعْقِلٍ قَالَ: دَلِّيْ جِرَابٌ مِنْ شَحْمِ يَوْمِ خَيْبَرَ قَالَ: فَأَتَيْتُهُ فَالْتَزَمْتُهُ قَالَ: ثُمَّ قُلْتُ: لَا أُعْطِيْ مِنْ هَذَا اَحَدًا اَلْيَوْمَ شَيْئًا قَالَ: فَالْتَقْتُ فَاِذَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَبَسَّمُ اِلَيَّْ.

د عبید الله بن معقل نه روایت دې فرمائی سپنه د خیبر په ورځ دوازدی یوه تهیلی زورنده وه دې وائی چه زه ورته جوښت شوم او په ژبه یاپه زړه کښې مې ووتیل چه ددې نه به نن چاله هیڅ هم نه ورکوم نو کله چه زه د نبی صلی الله علیه و آله طرف ته ور وگرځیدم او اومي کتل نونبې صلی الله علیه و آله زما په دې کارپورې خندل ځکه چه داسې کار د انصارو د خوئی خصلت نه خلاف وو.

مضمون حدیث

سیدنا عبد الله بن مغفل رضي الله عنه فرمائی چه په جنگ خیبر کښ، یعنی چه کله هغه فتح کولې شی او مال غنیمت لوټ کولې شی نو د څرمنې یوه تهیلا زورنده ماته ښکاره شی، نو زه هغې ته اورسیدم او هغه ئې قبضه واخستله او وې وتیل (چه دا ټول به زه اخلم) او چاته به په هغې کښې نه ورکوم (دا ټول منظر رسول الله صلی الله علیه و آله شاته ولاړ لیدلو او اوریدلو چه د هغې خبر هغوی ته نه وو) هغه وائی: ما چه کله شاته اوکتل نو څه گورم چه رسول الله صلی الله علیه و آله زما، طرف ته کتلو سره مسکې شو، په دې روایت کښې خو دومره دی، د مسند ابوداؤد طیالسی په روایت کښې د دې نه روستو دا دې چه هغه او فرمائیل: «هو لك» چه ښه دا هم ته واخله. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذرى.

^١: تفرد به أبو داؤد، (تحفة الأشراف: ٧٨١١)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/المريض الخمس ٢٠ (٣١٥٤) (صحيح)

^٢: صحيح البخاري/الخمس ٢٠ (٣١٥٣)، والمغازي ٢٨ (٤٢١٤)، والصيد ٢٢ (٥٥٠٨)، صحيح مسلم/الجهاد ٢٥

(١٧٧٢)، سنن النسائي/الضحايا ٢٧ (٤٤٤٠)، (تحفة الأشراف: ٩٦٥٦)، وقد أخرجه: مسند احمد (٨٧٤، ٥٥٠/٥، ٥٦)، سنن

الدارمي/السير ٥٧ (٢٥٤٢) (صحيح)

بَاب فِي النَّهْيِ عَنِ النَّهْبِ، إِذَا كَانَ فِي الطَّعَامِ قَلَّةٌ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ

باب د تالان معانت، د دښمن په علاقه کښې کله چه خوراک کم وی

(نهی) په وزن د عمری مصدر دې، یعنی لوټ مار، او دلته مراد د دې نه هغه خیز دې کوم چه په مال غنیمت کښې قبل القسمه واخستلې شی د دې ترجمه الباب حاصل دا دې چه د خوراک خکاک خیز اخستل اگر چه مباح دی خو که په خوراک کښې قلت او تنگسیا وی نو بیا قبل القسمه چا له هم نه دی اخستل پکار.

[۲۷۰۳] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَرِيرٌ يَعْنِي ابْنَ حَازِمٍ، عَنْ يَعْلَى بْنِ حَكِيمٍ، عَنْ أَبِي لُبَيْدٍ، قَالَ: كُنَّا مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ بِكَابِلٍ، فَأَصَابَ النَّاسَ غَنِيمَةٌ فَأَنْتَبَهُوْهَا فَقَامَ خَطِيْبًا فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنِ النَّهْبِ فَرَدُّوْا مَا أَخَذُوا وَقَسَمُوْهُ بَيْنَهُمْ.

د ابولیب نه روایت دې فرمائی چه زه د عبد الرحمن بن سمره رضی الله عنه سره په کابل کښې ووم او مجاهدینو غنیمت حاصل کړو او تالان ئې او کړو نو دې پاسیدو او خطبه ئې ورکوله او وئې وئیل د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلې دی چه منع ئې کوله د تالان کولونه نوڅه چه مو اغستي وي هغه واپس کړئ نو چه کله واپس کړې شول نو په دوی باندي ئې تقسیم کړل.

شرح حدیث

په دې روایت کښې د خلقو د مال غنیمت د لوټ کولو ذکر دې چه قبل التقسیم خلقو هغه اخستل شروع کړل په دې باندي عبد الرحمن بن سمره په ولاړه باندي خلقو ته د رسول الله صلی الله علیه و آله حدیث نه دې اوریدلې، په دې باندي خلقو چه څه اخستلې وی ټول واپس کړل، بیا هغه دا باقاعده تقسیم کړلو، په دې روایت کښې چه د کوم مال غنیمت د خورولو ذکر دې که د دې نه مراد غیر طعام دې، مختلف اشیاء خو هله ظاهر دې چه د هغې اخستل جائز نه وو او که هغه د طعام د قبیل نه وو لکه چه د ترجمه الباب تقاضه هم ده، نو اگر چه د اخذ طعام اباحت دې خو د قلت په صورت کښې اباحت نشته لکه چه مصنف په ترجمه الباب کښې اشاره کړې ده.

[۲۷۰۴] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو اسْحَاقَ الشَّيْبَانِيُّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي هُرَيْرٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى، قَالَ: قُلْتُ: هَلْ كُنْتُمْ تُخَمِّسُونَ فِي الطَّعَامِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ: أَصَبْنَا طَعَامًا يَوْمَ خَيْبَرَ فَكَانَ الرَّجُلُ يَجِيءُ فَيَأْخُذُ مِنْهُ وَمِقْدَارَ مَا يَكْفِيهِ ثُمَّ يَنْصَرِفُ.

د عبد الله بن ابی اوفی رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ما او وئیل چه ایا تاسو به د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کښې د خوراک په خیزونو کښې د غنیمت د مال نه خمس ورکولو؟ نو وئې وئیل چه مونږ ته دغزوه خیبر په ورځ باندي په غنیمت کښې خوراک ملاو شو نو هریوکس به راتلو او دخپل ضرورت په مناسب به ئې دخان دپاره اوړل او بیا به لاړل.

عبد الله بن ابی اوفی د بعض صحابه کرامو نه د تخمیس طعام په باره کښې تپوس او کړو چه د رسول الله صلی الله علیه و آله په زمانه کښې به د طعام تخمیس کیدلو، هغوی جواب ورکړو چه جنگ

۱: تقرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۹۶۹۸)، وقد أخرج: مسند أحمد (۶۲/۵، ۶۳)، سنن اللارمي الأضاحي ۲۳ (۲۰۲۸) (صحیح)
۲: تقرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۵۱۷۲)، وقد أخرج: مسند أحمد (۳۵۵/۴) (صحیح)

خبیر کنبی مونږ ته طعام حاصل شوي وو نو هلته دا صورت وو چه هر سرې په دې کنبې په قدر د ضرورت واخستلو او لارو، په قدر د ضرورت خو اخستل جائز دی خو د دې نه پس هم که باقی پاتې نه شی نو ظاهره ده چه دا د مال غنیمت په شان تقسیم کړې شی بعد الخمیس، هم دغه شان د دې حدیث نه معلومه شوه چه په مال غنیمت کنبی د خوراک خکاک خیز که په کثیر مقدار کنبی وی نو بیا د هغې په اخستلو کنبی هیڅ باک نشته، د اخستلو نه منع د قلت په صورت کنبی ده.

[۲۷۰۵] حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ رَعِيٍّ ابْنِ كَلَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَأَصَابَ النَّاسَ حَاجَةٌ شَدِيدَةٌ وَجَهْدٌ وَأَصَابُوا غَنَمًا فَأَتَتْهُمُوهَا فَإِنَّ قُدُورَنَا لَتَعْلَى، إِذْ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَشِيًا عَلَى قَوْسِهِ فَأَكْفَأَ قُدُورَنَا بِقَوْسِهِ ثُمَّ جَعَلَ يُرْمِلُ اللَّحْمَ بِالتَّرَابِ ثُمَّ قَالَ: "إِنَّ النَّهْبَةَ لَيْسَتْ بِأَحَلَّ مِنَ الْمَيْتَةِ أَوْ إِنْ الْمَيْتَةَ لَيْسَتْ بِأَحَلَّ مِنَ النَّهْبَةِ"، الشُّكُّ مِنْ هَنَادٍ.

عاصم بن کلب د خپل پلار نه او هغه دیوانصاري نه روایت کوی فرمائی چه مونږ د نبی ﷺ سره په یو سفر کنبی لارو خلقو ته په دې سفر کنبی د خوراک متعلق ډیر مشکلات پښ شول بیادي خلقو ته یو خوچیلی ملاو شوي هریوکس چه به څه موندل نو هغه به ئې لوټ کول اوزمونږه کتوی خوټ کیدله اودنبی ﷺ سره خپله لینده ورسره وه اوراروان وو اوزمونږه کتوی ئې پخپله لینده باندي نسکوره کړه اودغوښي پوتې ئې په خاورو پورې مرل اوبیا ئې اوفرمائیل تالان خودمرداري نه څه ښه نه دې یاداچه تالان خو د مرداري نه حلال نه دې د هناد راوي په دې دوه جملو کنبی شک دې.

یوانصاری صحابی د رسول الله ﷺ د یوې غزوي ذکر فرمائی چه په دې جنگ کنبی خلقو ته ډیر مشقت اوچت کړې وو او لوږه ئې برداشت کړې وه، په دې حالت کنبی هغوی ته بعض بیزې حاصلې شوې، مجاهدینو د لوږې په سخته کنبی هغه ذبح وغیره کولو سره د غوښې د تیارولو دپاره په اور باندي کتوی په سر کړی، لږ ساعت پس رسول الله ﷺ تشریف راوړلو، د هغه په لاس مبارک کنبی یوه لینده وه، د هغې په ذریعه ئې هغه ټولې کتوی وارولې (ثم جعل یرمل اللحم بالتراب) یعنی د کتوی غوښه ئې په خاورو او شرو کنبی واروله او دا ئې اوفرمائیل: دا د لوټ مار مال د مردار نه څه کم نه دې یعنی په حرمت کنبی.

د حدیث توجیه او تشریح

خان پوهه کړی چه د اباحت طعام مسئله د مهیا للاکل سره خاص نه ده، یعنی د تیار شوی خوراک سره بلکه په دې کنبی خاړوی وغیره هم داخل دی هغه هم د طعام په حکم کنبی دې، هغې لره اخستلو سره او ذبح کولو سره خورلې شی (صرح به الفقهاء) خو په دې واقعہ کنبی چه رسول الله ﷺ کوم تشدد اختیار کړې وو او هغه ئې حرام کړې وو او ددې په دوه وجو کنبی یوه وجه کیدې شی یا خو داسې اوئیلې شی یا خوبه دا وئیلې شی چه په غنم کنبی قلت وو (کما فی ترجمه الباب) او یا دا چه د دې حضراتو اخستل په قدر د حاجت نه وو

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۶۲) (صحیح)

بلکه د دې نه ئې زیات اخستلې وو کوم چه جائز نه دې، والله تعالی اعلم.
 په دې واقعه کښې دا اشکال راځی چه اکفاء قدور او د هغې نه روستو کومه چه
 هغه د غوښو سره په خاورو ککر کړې دې په دې کښې اضاعت مال دې او مال هم هغه د کوم
 سره چه د خلقو حق متعلق دې، یعنی د مجاهدینو، د دې یو جواب حضرت هم په بذل کښې
 بعض شارحینو نقل کړې دی او بل جواب دې دا هم کیدې شی چه رسول الله ﷺ شارع دې
 هغه چه څه او کړل د سراسر دیني مصلحت په بنیاد ئې او کړل، یعنی یو حرام څیز چه د هغې
 د استعمال صحابه کرامو اراده کړې دې نو د دې فعل قباحت او شناعت ثابتولو دپاره دا
 عملی شکل هغه اختیار او فرمائیلو.

بَابُ فِي حَمْلِ الطَّعَامِ مِنْ أَرْضِ الْعَدُوِّ د دار حرب نه د ځان سره د خوراک څښاک د څیزو نو د راوړلو بیان د ترجمه الباب شرح :

په دې ترجمه کښې دوه احتمالات دی من ارض العدو غایت یا خو الی محل اقامتهم وی یا الی
 المدينة، که اول مراد دې نو بیا دا جائز ده یعنی په میدان جنگ کښې د بعض خوراک څیزونه
 اوچت کړل په خپلو خیمو کښې اخستلو سره د هغې خوراک او که ثانی مراد وی نو بیا دا
 جائز نه ده، ځکه چه د اخذ طعام اباحت صرف د دار الحرب پورې محدود دې، یعنی هغه لره
 اوچتولو سره هم هلته خورل لاجل الحاجة، او د هغه ځانې نه اوچتولو سره دار الاسلام منتقل
 کول د دې هیڅ گنجائش نشته، د جواز انتقال نه پس خو بعد القسمة کیدې شی

[۲۷۰۶] () حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، أَنَّ ابْنَ
 حَرْشَفٍ الْأَزْدِيَّ، حَدَّثَهُ عَنِ الْقَاسِمِ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كُنَّا
 نَأْكُلُ الْجَزْرَ فِي الْغَزْوِ وَلَا نَقْسِمُهُ حَتَّىٰ إِن كُنَّا لَنَرْجِعُ إِلَىٰ رِحَالِنَا وَأَخْرَجْتَنَا مِنْهُ مُمْلَأَةً.

قاسم د عبد الرحمن ازاد کړې شوی غلام د بعضې ملگرو دښې ﷺ نه روایت کوی چه
 فرمائی ئې مونږ به په جهاد کښې داوښانو غوښې خورلې اونه به مو تقسیمولې تردې چه
 مونږ به کله خپلو خیموته واپس کیدو نو زموږ به توشه دانونه به دغوښو نه ډک وو.

شرح حدیث

یو صحابی فرمائی چه په جنگونو کښې مونږ خلقو د اوښانو غوښه خورل او هغې لره
 باقاعده نه تقسیموله (او په مقدار کښې دومره زائد اخستلو) تردې چه مونږ به د خپلو
 استوگنو طرف ته واپس کیدلو په دې حال کښې زموږ تهیلې د غوښو نه ډک وو.
 په دې حدیث کښې د رحال نه مراد که محل اقامت فی الغزو دې نو بیا خو د څه خاص
 اشکال خبره نه ده ځکه چه په دې صورت کښې د دې غوښې نقل کول نه موندلې کیږی بلکه
 د دار الحرب قصه پاتې شوې ده، او که د رحال نه مراد الی منازلهم فی المدينة دې نو دا
 احتمال صحیح نه دې، ځکه چه مال غنیمت لره منتقل کول د دار الحرب نه قبل التقسیم

جائز نه دي، او دلته تصريح د (ولا نقسمه) ده گڼې احتمال ثاني لره اخستلو سره به مونږ دا وئيلې وي چه بعد القسمة مراد دي په دي حديث كښې لفظ (الجزر) راغلې دي، په بعض شروح كښې دي چه (الجزر) جمع ده (جزور) په معنی د اوبښ او د دي معنی (شاة) مذبوحه هم ليكلې ده، او حضرت په بذل كښې احتمالا د دي معنی د گاڅرې هم ليكلې دي، كومه چه مشهوره سبزی وه، (اخرجت) جمع د خرج ده یعنی تهیلا، په اصل كښې د دابه په شا باندي كومه چه د تات بورئ اچولې شی، چه د هغې دوه حصې وي ښی او گس طرف ته دي ته حرج وئيلې شی، د خرجي لفظ په دي معنی كښې اردو كښې هم مستعمل دي.

بَابُ فِي بَيْعِ الطَّعَامِ إِذَا فَضَّلَ عَنِ النَّاسِ فِي أَرْضِ الْعَدُوِّ

د دښمن په زمكه كښې د زياتي خوراكي خيزو نو د مال غنيمت د خرڅولو بيان

په ظاهره كښې د ترجمه الباب مطلب دا دي چه كه د مجاهدينو د خوراك خكاك خيز قبل التقسيم په دار الحرب كښې د مال غنيمت نه واخلي یعنی د ضابطې مطابق د هغې اخستل جائز دي، په دي كښې كه څه مقدار بچ شی نو هغه هم ځاني، یعنی دار الحرب كښې خرڅيدلې شی يا نه؟ مسئله دا ده چه په مال غنيمت كښې يو خيز لره قبل القسمة كه هغه طعام وي يا غير طعام وي جائز نه دي، او كه چا ببيع او كړه نو (رد الثمن في الغنيمه بالاتفاق) واجب دي، لهذا مبادلة الطعام بالطعام ضرورة جائز دي.

[٢٧٠٧] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ حَمَزَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الْعَزِيزِ شَيْخٌ مِنْ أَهْلِ الْأُرْدُنِّ، عَنْ عِبَادَةَ بْنِ نُسَيْبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنَمٍ قَالَ: رَابَطْنَا مَدِينَةَ قَيْسَرِينَ مَعَ شُرَحْبِيلَ بْنِ التَّمِيمِ فَلَمَّا فَتَحَهَا أَصَابَ فِيهَا غَنَمًا وَبَقَرًا فَقَسَمَ فِينَا طَائِفَةً مِنْهَا وَجَعَلَ بَقِيَّتَهَا فِي الْمَغْنَمِ، فَلَقِيْتُ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ فَحَدَّثَنِي فَقَالَ مُعَاذٌ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ فَأَصَبْنَا فِيهَا غَنَمًا فَقَسَمَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَائِفَةً وَجَعَلَ بَقِيَّتَهَا فِي الْمَغْنَمِ.

د عبد الرحمن بن غنم نه روایت دي چه مونږه د شرحبیل بن سمط سره د قیسرین ښار محاصره او کړه کله چه مجاهدینو د ښار فتح کړو نو غوا او چیلې ټې حاصلې کړې نو یو څه ټې په مونږ باندي تقسیم کړې او باقی ټې په مال غنیمت کښې شاملې کړې بیاماد معاذ بن جبل ^{رضی الله عنه} سره ملاقات او کړو اودا واقعه مې ورته بیان کړه معاذ ^{رضی الله عنه} او فرمائیل چه مونږ د نبی ^{صلی الله علیه و آله} په ملگرتیا کښې دخیبر جهاد کړې وو مونږ ته هم هلته چیلن ملاو شوي وي اونی ^{صلی الله علیه و آله} یو څه په مونږ تقسیم کړې او باقی ټې په مال غنیمت کښې شاملې کړې

د هديت د ترجمه الباب سره مطابقت

د حديث مضمون خو مخامخ راغلو خو سوال دا دي چه د دي د ترجمه الباب سره څه مطابقت دي، په ترجمه الباب كښې د ببيع الطعام ذكر دي، د طعام په باره كښې خو دا وئيلې كيدې شی چه د دي نه مراد غير مهيا للاكل دي، كوم چه په بقر او غنم باندي صادق راځي، خو په دي واقعه كښې ببيع چرته موندلې شوې ده، حضرت په بذل كښې عدم مطابقت

١. تقرده په أبو داود، (تحفة الأشراف: ١١٣٤) (حسن)

الحديث للترجمة اشكال ليكلو سره د حضرت گنگوهی د تقریر نه د دي د جواب وركولو كوشش فرمائيلې دي هغه دي په بذل كښې او كتلې شي، زما په ذهن كښې د دي جواب ډيره موده پس ذهن ته راغلو چه په دي حديث باندي مصنف چه كومه ترجمه د بيع قائم كړې ده هغه د فقه المصنف د قبيل نه دي لهذا حديث او ترجمه ترمينځه صريح مطابقت تلاش كول دي بي سوده دي، زما په خيال كښې د مصنف غرض دا دي چه دا خو ظاهر دي چه قبل القسمة د مال غنيمت بيع طعام وي يا غير طعام جائز نه دي، صرف د ضرورت مطابق طعام او په قدر د ضرورت اخستلې شي په دي كښې هم كه څه بچ شي نو هغه د مال غنيمت طرف ته واپس كيدل ضروري دي، خو مصنف دا وائي چه كه په دار الحرب كښې د خوراك خكاك خيزونه د تقسيم امام د طرف نه وي نو د دي نوعيت دويم دي د دي بيع جائز دي، ځكه چه د امام وركول په طور د تمليك دي نه په طريقه د اباحت، په خلاف د دي د لښكر د خوراك خكاك خيز قبل القسمة پخپله مال غنيمت كښې اوچت شي نو اگر چه د هغې اوچتول ناجائز دي، د قاعدې مطابق خو په دي صورت كښې د دي بيع جائز نه ده، پخپله د اخستلو جواز په طريق د اباحت دي، په طريق د تمليك نه دي، او دلته حديث الباب كښې د طعام تقسيم امير د طرف نه وي، په دي صورت كښې هغه خلق د دي مالک شو ځكه چه هغه لره چه څه غواړي كولې شي اگر چه هغه ئې هبه كړي يا بيع، هذا ما عندي، والله تعالى اعلم بالصواب.

باب فِي الرَّجُلِ يَنْتَفِعُ مِنَ الْغَنِيمَةِ بِالشَّيْءِ

د تقسيم نه مخكښې د غنيمت د خيزونو استعمال د ممانعت بيان

د مال غنيمت نه چه په كومه خيزونو كښې تصرف قبل القسمة جائز دي، د هغه خيزونو بيان روان دي د ټولو نه په شروع كښې مصنف طعام بيان كړې دي، او په دي ترجمه كښې د طعام نه علاوه نور بعض خيزونه يعنى مركوب او ملبوس بيانوي، او د دي نه وړاندي باب كښې استعمال سلاح بيانوي.

د ترجمة الباب والا مسئله كښې مذاهب ائمه

د دي استعمال عند الجمهور كه بغير د ضرورت دي يا د خپل ضرورت دپاره دي نو بيا خو ناجائز دي، او كه د حرب او د قتال ضرورت نه دا استعمالولې شي نو جائز دي، او د ملبوس په باره كښې دا دي چه كه د سخت ضرورت په وخت استعمالولې شي نو بيا جائز دي. كذا استفاد من البدل، ومغنى المحتاج للشافعية، والمغنى لابن قدامة، او كوم خيز چه دواى استعمال كړې شي په دي كښې اختلاف دي، د احنافو او د حنابله په نزد عند تحقق الحاجة والضرورة د دي استعمال جائز دي، د شوافعو په نزد استعمال دوايانې جائز نه دي الا بالقيمة. او د اكل فواكه جواز شافعيه، حنابله په نزد عند تحقق الحاجة والضرورة د دي استعمال جائز دي، د شوافعو په نزد دلته استعمال او دا جائز نه دي الا بالقيمة، او د اكل فواكه جواز د شوافعو او حنابلو په نزد عند تحقق الحاجة والضرورة د دي استعمال جائز دي، د شوافعو په

نزد د دوایانو استعمال جائز نه دې الا بالقیمه. او د اکل فواکه جواز شوافعو او حنابله په کتابونو کښې مصرح ده، هم دغه شان بذل کښې د احنافو مذهب لیکلې دې، او د امام مالک نه مرکوب او ملبوس وغیره استعمال چه کله هغه د قتال ضرورت وی دوه روایتونه دی، جواز او عدم جواز صرح به الباجی کما فی الاوجز، په پورته مذکوره مسائلو کښې مذاهب ائمه ډیر تتبع او مراجعت کتب نه پس لیکلې دې، په اوجز کښې دلته حافظ باندي د مذاهب په سلسله کښې تعقب کړې دې چه په هغې په ظاهره کښې تسامح دې.

[۲۷۰۸] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، وَعُمَرَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ الْمَعْنِي، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، وَأَنَا لِحَدِيثِهِ أَتَقَنُّ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَمْرُو بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي مَرْزُوقٍ مَوْلَى ثُمَيْبٍ، عَنْ حَنْشِ الصَّنَعَانِيِّ، عَنْ رُوَيْفِعِ بْنِ ثَابِتِ الْأَنْصَارِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يَرْكَبُ دَابَّةً مِنْ فِئَةِ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى إِذَا أُعْجِفَهَا رَدَّهَا فِيهِ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يَلْبَسُ ثَوْبًا مِنْ فِئَةِ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى إِذَا أَخْلَقَهُ رَدَّهُ فِيهِ".

د رويفع بن ثابت انصاري ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه نبی ^{صلى الله عليه وسلم} فرمائیلى دى: د چاچه په الله تعالى او په ورځ داخرت باندي ايمان وي نو په هغه سورلي دي نه سوريري کومه چه د مسلمانانو د غنيمت په مال کښې شامل وي اگرچه ده داخوږب خاوري خوار او مانده کړي هم وي نوبيا به ئې هم واپس کوي په غنيمت کښې او د چاچه په الله تعالى او په ورځ دلخرت باندي ايمان وي نو د مسلمانانو د غنيمت جامې دي نه اغوندى اگر چه ده په استعمال سره زري کړي هم وي خوبيا به ئې هم واپس کوي په غنيمت کښې،

(من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يركب دابة من فئ المسلمين) چه د کوم سړى په الله پاک او د قيامت په ورځ باندي ايمان وي (دا تعليق د ايمان بالله سره سره د تاكيد او اهتمام په طور دې، نو هغه له پکار دى چه د مال غنيمت په يوه سورلي باندي داسې سور نه شى چه کله د هغه نه سورلى واخستلې شى نو هغه کمزورې کړى نو بيا دې هغه په مال غنيمت کښې واپس کړى، هم دغه شان وړاندي د استعمال ثوب په باره کښې فرمائی چه هغه استعمال کړى او چه کله هغه خراب يا زور شى نو هغه دې په مال غنيمت کښې واپس کړى، ابن قدامه هم د هغه حديث نه د مرکوب او ملبوس په عدم جواز باندي استدلال کړې دې، د دې حديث سياق په دې خبره باندي مشعر دې چه د دې استعمال نه مراد هغه استعمال دې کوم چه بغير د ضرورت نه وي. کما هو مذهب الجمهور.

بَابُ فِي الرُّخْصَةِ فِي السَّلَاحِ يُقَاتَلُ بِهِ فِي الْمَعْرَكَةِ

که په جنگ کښې اسلحه ملاؤشى نو استعمال ئې په جنگ کښې جائز دى

د مصنف په دې ترجمه کښې اشاره ده چه د استعمال سلاح جواز هغه وخت دې چه کله د قتال د ضرورت دپاره وي يعنى خپل ذاتى ضرورت نه وي.

(۱) انظر حديث رقم: (۲۱۵۸)، (تحفة الأشراف: ۳۶۱۵) (حسن صحيح)

[۲۷۰۹] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ يَعْنِي ابْنَ يُوسُفَ بْنِ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي إِسْمَاعِيلَ السَّبْيِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْمَاعِيلَ السَّبْيِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: مَرَرْتُ قَادًا أَبُو جَهْلٍ صَرِيحٌ قَدْ ضُرِبَتْ رِجْلُهُ فَقُلْتُ: يَا عَدُوَّ اللَّهِ يَا أَبَا جَهْلٍ قَدْ أَخْزَى اللَّهُ الْأَخْرَجَ قَالَ: وَلَا أَهَابُهُ عِنْدَ ذَلِكَ فَقَالَ: أَبْعُدُ مِنْ رَجُلٍ قَتَلَهُ قَوْمُهُ فَضَرَبْتُهُ بِسَيْفٍ غَيْرِ طَائِلٍ فَلَمْ يُغْنِ شَيْئًا حَتَّى سَقَطَ سَيْفُهُ مِنْ يَدِي فَضَرَبْتُهُ بِهِ حَتَّى بَرَدَ.

ابوعبيده دخپل پلار عبدالله بن مسعود نه روایت کوی چه زه په غزوه بدر کنبې دشريک کيدو دپاره لارم نو ما ابوجهل اوليدو چه پروت دي اوپه خوباندي ئې دتورو دگزارونو نشانونه وو ما اووئيل اي دالله دشمنه اي ابوجهله اخرالله تعالی ذليل کړي اوته دالله درحمت نه لرې وي عبدالله والی په دي وخت کنبې زه دهغه نه نه ويريدم هغه اووئيل ډيره دتعجب خبره ده چه يوسرې دهغه خپل قوم مړ کړي بيا ما په ده باندي د توري وار اوکړو ليکن اونه لگيدو تردې چه دهغه توره دهغه دلاس نه پريوته ما هم دده په توره دي قتل کړو تردې چه يخ شو.

شرح حديث

عبدالله بن مسعود رضي الله عنه فرمائی، په جنگ بدر کنبې زه په رئيس المشركين ابو جهل باندي راتير شوم کوم چه په ميدان جنگ کنبې جدا پروت وو، چه د هغه خپه غوڅه شوې وه، ما د هغه طرف ته رخ کولو سره اووې (د هغه د رسوا او ذليل کولو دپاره) «يا عدو الله يا ابا جهل» او دا مې هم ورته اووې چه نن خو الله پاک ذليل سرې نور هم ذليله کړو، الاخر د همزه په فتحې سره بغير د مد نه، او د خاء په کسري سره دي په معنی د ذليل، عبدالله بن مسعود رضي الله عنه فرمائی، او دي وخت کنبې زه هغه ته په وينا باندي نه ويريدلم (ځکه چه دي وخت کنبې خو هغه مجبوره پروت وو گيڼې د دي نه مخکښې خو هغه ته داسې خطاب کول واقعي گران وو چه د کفارو او مشرکانو سردار وو) په دي باندي هغه اووې چه د دي نه زيات نور هيڅ نه دی شوی چه يو سرې وو او هغه خپل قوم قتل کړو، يعنی تاسو څه کمال اوکړو؟ په څه باندي فخر کوئ، دلته چونکه د هغه مخاطب سيدنا عبدالله بن مسعود هذلي رضي الله عنه وو، د اوچت خاندان او قبيلې وو په دي وجه هغه دا خبره اوکړه، او په دي کنبې ئې هم د خپلې تسلي خيال ساتلې دي، لکه چه وئيلې شي: مگر ټي شمور ميدان جنگ مې - خو په شروع کنبې چه کله دوه انصاری هلکانو په هغه باندي حمله کړې وه او هغه ئې راغورځولې وو نو هغه وختد هغه د ژبې نه د افسوس او غصې د وجې نه دا الفاظ وتلې وو «فلو غير اكار قتلي» (کما في مغازی البخاری فی باب بلا ترجمه بعد، باب شهود الملائكة بدرا) ارمان چه زه د زميندار هلک نه علاوه بل چا قتل کړې وي، يعنی څنگه چه زه لوئې سرې يم دغه شان زما قتل کونکې هم زما په شان وي، د دي دواړو ځايونو کنبې تاثر مختلف دي، د اختلاف مخاطب د وجې نه () وړاندي په روايت کنبې دي عبدالله بن مسعود رضي الله عنه فرمائی چه زما په

۱: تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۹۶۱۹)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الكبرى/السير (۸۷۰)، مسند احمد (۱/۴۰۳، ۴۰۶، ۴۲۲، ۴۴۴) (صحيح)

۲: او په قسطلانی کنبې دي چه د دي قول «اعمد من رجل الخ» د خپلې تسلي دپاره او د هغې د قتل نسبت د خپل قوم طرف ته کول. (حال دا چه قاتل د هغه قوم نه نه وو) دا مجازا دي په اعتبار د سببیت، يعنی د دي قوم سببیت، يعنی د هغه قوم سبب جوړ شو د هغه د قتل

لاس کښې چه کومه توره وه په هغې مې اووهلو، کومه چه د معمولی کیدو د وجې نه مفیده نه وه، او په هغې سره هغه ختم نه شو، تردې چه د هغه د لاس نه د هغه توره پریوتله (کومه چه ډیره غوره او تیزه وه) نوبیا ماهغه په هغه باندې استعمال کړه چه په هغې سره هغه بیخ شو. د دې اخری جملې د وجې نه حدیث د ترجمه الباب مطابق شو چه په دې کښې استعمال سلاح غنیمت بیا موندلې شو په دې کښې مذاهب ائمه په تیرو بابونو کښې په تفصیل سره تیر شوې دی، د ابوداؤد په روایت کښې لفظ « ابعده » واقع شوې دې چه د هغې شرح مونږ پورته اوکړه او د خطابی راثې دا ده چه دا لفظ داسې صحیح نه دی، صحیح « اعمد من رجل » دې، چه د هغې معنی د « اعجب » ده، د بخاری لفظ هم « اعمد » دې. والحديث اخرجه النسائي مختصرا، قاله المنذرى.

باب فِي تَعْظِيمِ الْغُلُولِ

د مال غنیمت پټول عظیم ترین جرم دې

یعنی د دې خبرې په بیان کښې چه غلول جرم عظیم دې، د غلول معنی د مطلق خیانت ده، او وئیلی شوې دی چه هغه خیانت کوم چه په مال غنیمت کښې وی،

[۲۷۱۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، أَنَّ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، وَيَشْرَبُ بْنُ الْمُفَضَّلِ. حَدَّثَاهُمْ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنْ أَبِي عَمْرَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدِ الْجُهَنِيِّ، أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَفَّى يَوْمَ خَيْبَرَ فَدَكَّرُوا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "صَلُّوا عَلَيَّ صَاحِبِكُمْ فَتَغَيَّرَتْ وُجُوهُ النَّاسِ لِذَلِكَ فَقَالَ: إِنَّ صَاحِبِكُمْ غَلٌّ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَفَّشْنَا مَتَاعَهُ فَوَجَدْنَا خَرَزًا مِنْ خَرَزِمٍ يَهُودٌ لَا يُسَآوِي دِرْهَمَيْنِ".

دزید بن خالد جهنی نه روایت دې چه دخیبر په ورځ د نبی ﷺ په ملگرو کښې یوکس وفات شو صحابه کرامو نبی ﷺ ته ددې ذکر اوکړو نبی ﷺ او فرمائیل په دې خپل ملگري مو جنازه اوکړئ یعنی زه په ده باندې جنازه نه کوم تاسو ئې اوکړئ په دې خبره باندې دخلقو مخونه بدل شول بیانیې ﷺ او فرمائیل ستاسو ملگري دالله په لار کښې خیانت کړې دې یعنی دغنیمت په مال کښې نومونږ دهغه دسامان تالاشي واغسته نومونږ دهغه په سامان کښې دیهودیانو دبنخو د جامونه یوه جامه پیدا کړه دکوي چه قیمت دوه درهمه هم نه وو. د حدیث مضمون واضح دې چه د غزوه خیبر په موقع باندې یو صحابی وفات شو چه د هغه ذکر رسول الله ﷺ ته اوکړې شو، رسول الله ﷺ او فرمائیل چه د خپل ملگری مونږ تاسو اوکړو، د هغه د دې ناخوښی او طرز نه خلق اویریدل، رسول الله ﷺ او فرمائیل چه هغه په مال غنیمت کښې خیانت کړې دې، راوی وائی چه مونږ د هغه د سامان تفتیش اوکړو نو د هغه په سامان کښې د ملغرو څو کانږی راوتل، دیهودو د جواهرو نه کوم چه په قیمت کښې د دوه درهمو برابر هم نه وو، د دې نه د روستو مضمون هم د دې قسم دې. والحديث اخرجه ابن ماجه. قاله المنذرى.

۱: سنن النسائي/الجنائز ۶۶ (۱۹۶۱)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۳۴ (۲۸۴۸)، موطا امام مالك/الجهاد ۱۳ (۲۳)، مسند احمد (۱۱۴/۴، ۱۹۲/۵)، (تحفة الأشراف: ۳۷۶۷) (ضعيف)

[۲۷۱۱] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدِ الدَّبَلِيِّ، عَنْ أَبِي الْقَيْثِ مَوْلَى ابْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ خَيْبَرَ فَلَمْ يَقْنَمْ ذَهَبًا وَلَا وِرْقًا إِلَّا الثِّيَابَ وَالْمَتَاعَ وَالْأَمْوَالَ قَالَ: فَوَجَّهَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَ وَادِي الْقُرَى، وَقَدْ أَهْدَى لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدًا أَسُودًا يُقَالُ لَهُ مِدْعَمٌ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِوَادِي الْقُرَى فَبَيْنَا مِدْعَمٌ يَحْطُ رَحْلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَهُ سَهْمٌ فَقَتَلَهُ فَقَالَ النَّاسُ: هِنَيْئًا لَهُ الْجَنَّةُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كَلَّا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ الشَّهْلَةَ الَّتِي أَخَذَهَا يَوْمَ خَيْبَرَ مِنَ الْمَغَانِمِ لَمْ تُصِبْهَا الْمَقَاسِمُ لَتَشْتَعَلَ عَلَيْهِ نَارًا. فَلَمَّا سَمِعُوا ذَلِكَ جَاءَ رَجُلٌ بِشِرَاكٍ أَوْ شِرَاكَيْنِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: شِرَاكٌ مِنْ نَارٍ أَوْ قَالَ: شِرَاكَانِ مِنْ نَارٍ.

دا ابوهريرة رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه مونږ د نبی صلی الله علیه و آله سره د خیبر په کال باندي جهادته لارو نوسپین اوسره زرموپه غنیمت حاصل نکړل بلکه مگر جامې اوسامانونه او مالونه مو حاصل کړل دي وائی چه نبی صلی الله علیه و آله د وادي القري علاقې طرف ته روان شو او یقینا نبی صلی الله علیه و آله ته یو تور غلام هدیه کړي شوي وو چه مدعم به ورته وئیلی شو هر کله چه وادي القري ته ورسیدل نو مدعم د نبی صلی الله علیه و آله دا وېش کته کوزوله په دې وخت گڼې دي په یوغشي ولگیدو او هلاک شو خلقو ووئیل جنت دي ده ته مبارک شي نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل هیخ کله نه په هغه ذات مې دي قسم وي دچاپه قبضه کښې چه زما روح دي کوم کمبل چه ده په غزوه خیبر کښې د تقسیم نه مخکښې اخستلي وو دهغه نه لمبي وهونکی اور جوړ شوي دي اودې سوزوي، هر کله چه خلقو دا واوریدل نویو کس یوه یادوه تسمې راخستي وي او نبی صلی الله علیه و آله ته ئې راوړلې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل داد اور یوه تسمه وه یاداور دوه تسمې وی

شرح حدیث

یعنی کله چه رسول الله صلی الله علیه و آله د غلول په پاره کښې سخت وعید او فرمائیلو نو د دې وعید د اوریدلو نه پس د یو سړی د خرمنې یوه تسمه یا دوه تسمې اخستلو سره د هغه په خدمت کښې راوړې (کومې چه هغه د مال غنیمت نه اوچتې کړې وې) نو په دې باندي رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه دا تسمه د اور ده، او که دوه تسمې ئې راوړې وی نو فرمائیلې به ئې وی چه دا دواړه تسمې د اور دی، د راوی شک دي

د دې فقري په مطلب کښې دوه احتمالونه دی، اول دا چه د هغه مراد د دې نه دا دي چه که تا دا تسمه واپس کړې نه وې نو دا به ستا دپاره اور د ته د تلو ذریعه وه، او گویا د دې وینا نه پس ئې هغه کیخودله، او بل احتمال دا دي چه چونکه هغه سړی دا تسمه د غنیمت د تقسیم نه روستو راوړې وه، راوړل پکار وو هغه لره ددې نه مخکښ، اوس دچاپه حصه کښې هغه اولگولې شی؟ په دې وجه رسول الله صلی الله علیه و آله هغه په دې وینا سره واپس کړو چه دا تسمه اوس ستا په حق کښې دا ورسبب دي. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذري.

۱: صحيح البخاري/المغازي ۳۸ (۴۲۳۴)، والأيمان ۳۳ (۶۷۰۷)، صحيح مسلم/الإيمان ۴۸ (۱۱۵)، سنن النسائي/الإيمان والنور ۲۷ (۳۸۵۸)، (تحفة الأشراف: ۱۲۹۱۶)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الجهاد ۱۳ (۲۵) (صحيح)

بَاب فِي الْغُلُولِ إِذَا كَانَ يَسِيرًا يَتْرُكُهُ الْإِمَامُ وَلَا يَجْرُقُ رَحْلَهُ

کله چه د غنیمت نه پټ شوی خیز معمولی وی نو امیر دی دا معاف کړی او د غلو ساما نو نه دې نه سوزوی

د ترجمه الباب تشریح :

په دې ترجمه الباب کښې دوه جزونه دی، اولنې جزء دا چه مال غلول که یو معمولی خیز وی لکه تسمه وغیره کومه چه په سابقه باب کښې تیر شو نو د هغې سره به هم دا معامله کولې شی کومه چه په حدیث کښې تیره شوه خو که هغه مال غلول کثیر او په لوڼې مقدار کښې وی نو بیا د اصولو تقاضه دا ده چه هغه دې رد نه کړې شی ځکه چه د غانمینو حق دې، بلکه هغه دې واخستلې شی او باقاعده دې تقسیم کړې شی، او دویم جزء د ترجمې د عقوبت غال سره متعلق دې چه په هغې باندي مستقل ترجمه وړاندې راروانه ده، لهذا دلته د هغې د ذکر کولو وجه فهم ته نه راځی، او هم دغه شان په حدیث الباب کښې هم د دې څه ذکر نشته، هسې مطلب د دې جزء دا دې چه وړاندې په حدیث کښې راځی چه کله ته یو سرې وینې چه هغه په مال غنیمت کښې خیانت کړې دې نو د هغه ټول سامان او متاع اوسیزه، نو دلته مصنف فرمائی چه د هغه غال سورلی به نه شی سیزلې باقی سامان به ئې سیزلې شی. اذ لا يجوز تعذيب الحيوان بالنار.

[۲۷۱۲] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ مَجْبُوبُ بْنُ مُوسَى، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَوْذَبٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَامِرٌ يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الْوَاحِدِ، عَنْ ابْنِ بَرِيْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَصَابَ غَنِيمَةً أَمَرَ بِلَالًا فَنَادَى فِي النَّاسِ فَيَجِئُونَ بِغَنَائِمِهِمْ فَيَحْمِسُهُ وَيَقْتَمُهُ، فَيَأْخُذُ رَجُلٌ بَعْدَ ذَلِكَ بِزِمَامٍ مِنْ شَعْرٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا فِيمَا كُنَّا أَصْنَأُ مِنَ الْغَنِيمَةِ فَقَالَ: أَسَمِعْتَ بِلَالًا يَنَادِي ثَلَاثًا؟ قَالَ: نَعَمْ قَالَ: فَمَا مَنَعَكَ أَنْ تَجِيَّ بِهِ، فَأَعْتَدَ رَأْيِي فَقَالَ: كُنْ أَنْتَ تَجِيَّ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَلَنْ أَقْبَلَهُ عَنْكَ."

د عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم به کله غنیمت حاصل کړو او تقسیمول به ئې او غوښتل نوبل ته به ئې دا اعلان کولو حکم وکړو نو خلقو به نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته خپل غنیموتونه راوړل او خمس به ئې ترې اخستلو او باقی به ئې په مجاهدینو تقسیمولو نویوکس د غنیمت د تقسیم نه پس د خمس ورکولو دپاره داوښ یاداس دواگودوړی یوگړي راوړو او عرض ئې وکړو چه ای دالله رسوله داهم مونږ په غنیمت کښې حاصل کړي وونبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل ایا بلال چه درې پیري آواز کړي وو تانه وواوریدیلې ده وونیل هونبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل تاوولی دانه راوړلو؟ نو ده معذرت وکړو چه ای دالله رسوله په ما باندي ناوخته شونبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل اوس ته پوهه شه اوستا کار ته به داد قیامت په ورځ راوړي اوزه درنه دا اوس نه شم اخستلې.

د حدیث مضمون

د حدیث الباب مضمون دا دې چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم معمول وو چه کله به په یوځای کښې مال غنیمت حاصل شو نو هغه به په حضرت بلال رضی اللہ عنہ باندي په خلقو کښې دا اعلان کولو چه چا سره چه کوم مال غنیمت دې هغه دې دلته راوړی او جمع دې کړی، پس په یو روایت کښې

(۱): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۸۳۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۱۳) (حسن)

داسې دی (ضموا اغنائکم) پس خلقو به مال غنیمت یوځانې ته راجمع کړو رسول الله ﷺ به هغه د قاعدې مطابق تخمیس کولو، یعنی د کل مال غنیمت نه به ئې یو خمس راویستلو او باقی څلور اخماس به ئې په غانمین کښې تقسیم کړل، یو ځل داسې اوشو چه یو سړی د تقسیم نه روستو د وړې جوړه یوه رسن راوړه او دا عرض ئې اوکړو چه دا ما د مال غنیمت نه اخستلې وه، رسول الله ﷺ ورته او فرمائیل چه تا د بلال اعلان اوریدلې وو؟ کوم چه هغه درې کرته کړې وو؟ هغه عرض اوکړو چه او جی ما اوریدلې وو، وې فرمائیل چه بیا څه خیز مانع شوې وو د دې د راوړلو نه؟ هغه سړی په دې باندې څه معذرت شان اوکړو نو رسول الله ﷺ دهغه خبره وانوریدله او وې فرمائیل چه اوس به ته دادقیامت په ورځ باندې راوړې.

باب فی عُقُوبَةِ الْغَالِ

د غنیمت مال د پټونکي د سزایان

[۲۷۱۳] حَدَّثَنَا النَّعْلِيُّ، وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ النَّعْلِيُّ الْهَرَاوَرْدِيُّ، عَنْ صَالِحِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ زَائِدَةَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، وَصَالِحٌ هَذَا أَبُو وَاوَدَ، قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ مَسْلَمَةَ أَرْضَ الرُّومِ فَأَتَيْتُ بِرَجُلٍ قَدْ غَلَّ فَسَأَلَ سَالِمًا عَنْهُ فَقَالَ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا وَجَدْتُمْ الرَّجُلَ قَدْ غَلَّ فَأَحْرِقُوا مَتَاعَهُ وَأَضْرِبُوهُ"، قَالَ: فَوَجَدْنَا فِي مَتَاعِهِ مُصْحَفًا فَسَأَلَ سَالِمًا عَنْهُ، فَقَالَ: بَعُهُ وَتَصَدَّقْ بِمَنْهٍ".

د صالح بن محمد بن زائد ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه زه د مسلمه سره روم ته لارم هلته یوکس راوستې شو چه د غنیمت د مال نه ئې غلا کړې وه نومسلمه ^{رضي الله عنه} دهغه د حکم په باره کښې د سالم نه تپوس اوکړو هغه او وئیل چه مادخپل پلار ابن عمر ^{رضي الله عنه} نه اوریدلې دي چه د عمر ^{رضي الله عنه} نه ئې نقل کول چه نبی ﷺ فرمائیلی دی چه کله تاسو څوک اووینئ چه د غنیمت د مال نه یو غلا کړي ده نودده سامان اوسوزوئ اوبیا ئې اووهئ، راوي وائی چه دده په سامان کښې د قران کریم یوه نسخه هم وه مسلمه د سالم نه تپوس اوکړو چه دا قران کریم خرڅ کړئ او قیمت ئې صدقه کړئ.

﴿ اِذَا وَجَدْتُمْ الرَّجُلَ قَدْ غَلَّ فَأَحْرِقُوا مَتَاعَهُ ﴾ د دې حدیث مضمون د پورته باب په حدیث کښې تیر شو.

ترجمة الباب والا مسئله کښې د ائمه گرامو اختلاف

بعض علماء د دې حدیث په بنیاد باندې د تحریق متاع غال قائل دی، لکه امام حسن بصری، اسحاق بن راهویه او امام اوزاعی، او هم دا یو روایت د امام احمد ^{رضي الله عنه} نه دې، خو د جمهورو عمل په دې حدیث باندې نه دې، د هغې وجه دا ده چه جمهور محدثینو په دې باندې کلام کړې دې پس امام ترمذی د امام بخاری نه د دې تضعیف بلکه عدم ثبوت نقل کړې دې، هم دغه شان امام دارقطنی هم د دې تضعیف کړې دې، هم دغه شان امام ابوداود

۱: سنن الترمذی للحدود ۲۸ (۱۶۶۱)، (تحفة الأشراف: ۶۷۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲/۱)، سنن الدارمی للسيوطي ۴۹ (۲۵۳۷) (ضعيف)

هم د دې حدیث په سند کښې اختلاف او اضطراب ثابت کړې دي، او امام طحاوی فرماني چې که حدیث صحیح او منلې شی نو بیا به جواب دا وی چه ممکنه ده دا د هغه وخت خبره وی چه کله په اسلام کښې عقوبت مالیه جائز وو، کوم چه روستو منسوخ شو، امام ابوداود د دې حدیث موقوف کیدو ته ترجیح ورکړې ده، دې حدیث شریف ته اشاره په درمنظود جلد ثانی کتاب الصلاة کښې په ترک جماعت باندي وعید والا حدیث کښې هم کړې شوې ده، او بعض شارحینو وئیلی دي چه که دا حدیث ثابت هم او منلې شی نو دا به په زجر او توبیخ باندي محمول وی، ځکه چه د رسول الله ﷺ نه دا بالکل هم ثابت نه دی چه هغه دې د متاع غال تحریق کړې وی.

د باب د اولنی حدیث د ظاهر نه معلومیږي چه مسلمه کوم چه د عبد الملک بن مروان خوښې دې هغه د دې حدیث په وجه باندي تحریق متاع غال کړې وو، او چونکه د هغه په متاع کښې یو مصحف هم وو نو د هغې په باره کښې هغه د حضرت سالم نه معلومه کړه چه څه او کړې شی؟ هغه او فرمائیل چه: «بعه و تصدق بئمنه» او د باب د حدیث ثانی مضمون دا دي، صالح بن محمد فرماني چه مونږ خلق په یوه غزوه کښې د ولید بن هشام سره وو او په سفر کښې مونږ سره سالم بن عبد الله بن عمر او عمر بن عبد العزيز هم وو نو ولید بن هشام د هغه سړی د سامان د سیزلو حکم ورکړو چا چه په مال غنیمت کښې غلول کړې وو او هغه په پوره لښکر کښې او گرځولي شو او هغه ته ئې په غنیمت کښې هم حصه ورنکړه.

[۲۷۱۴] حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ مَجْبُوبُ بْنُ مُوسَى الْأَنْطَاكِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو إِسْمَاعِيلَ، عَنْ صَالِحِ بْنِ مُحَمَّدٍ، قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ الْوَلِيدِ بْنِ هِشَامٍ، وَمَعَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَقَتَلَ رَجُلٌ مَتَاعًا فَأَمَرَ الْوَلِيدُ بِمَتَاعِهِ فَأَحْرَقَ وَطَيْفَ بِهِ وَلَمْ يُعْطِهِ سَهْمَهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا أَصَحُّ الْحَدِيثَيْنِ رِوَاةً غَيْرَ وَاحِدٍ، أَنَّ الْوَلِيدَ بْنَ هِشَامٍ أَحْرَقَ رَحْلَ زِيَادِ بْنِ سَعْدٍ وَكَانَ قَدْ دَخَلَ وَضَرِبَهُ.

د صالح بن محمد نه روایت دې فرماني چه مونږه د ولید بن هشام په ملگرتیا کښې جهاد او کړو اوزمونږ سره سالم بن عبد الله بن عمر رضي الله عنه او عمر بن عبد العزيز هم وو، نویو سړی د غنیمت د مال نه غلا او کړه نو ولید حکم او کړو اودده سامان او سوزول شو او بیا ئې په ټولو خلقو کښې او گرځوو او حصه ئې ورته هم ورنکړه. ابوداود وائی چه داروایت ډیر صحیح دي ډیرو کسانو داروایت نقل کړې دي چه ولید بن هشام بن عبد الملک بن مروان بن حکم د زیاد بن سعد سامان سوزولې وو ځکه چه هغه د غنیمت د مال نه غلا کړې وه او دې ئې وهلې هم وو.

د تحریق متاع الغال حدیث په باره کښې د مصنف را ئې

« قال ابو داود وهذا اصح الحديثين الخ » مصنف فرماني چه پورته ذکر شوې حدیث « اذا وجدتم الرجل قد غل فاحرقوا متاعه » ثابت نه دي بلکه موقوفا ثابت دي، د موقوف نه هم مقوف تابعی یعنی مقطوع مراد دي.

۱: تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۶۷۶۳) (ضعيف)

[۲۷۱۵] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَبِي أُبَيٍّ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبَا بَكْرٍ، وَعُمَرَ حَرَقُوا مَتَاعَ الْغَالِ وَضَرْبُوهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَزَادَ فِيهِ عَلِيُّ بْنُ بَحْرٍ، عَنْ الْوَلِيدِ وَلَمْ أَسْمَعْهُ مِنْهُ وَمَنْعُوهُ سَمِيحَهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَحَدَّثَنَا بِهِ الْوَلِيدُ بْنُ عَتَبَةَ، وَعَبْدُ الْوَهَّابُ بْنُ نَجْدَةَ، قَالَا: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ عَنْ زُهَيْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ قَوْلَهُ: وَلَمْ يَذْكُرْ عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ نَجْدَةَ الْحَوْطِيُّ مِنْهُ سَمِيحَهُ.

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه هغه دده دنيکه نه روایت کوي چه نبی ﷺ او ابوبکر او عمر ^{رضي الله عنهما} په غنيمت کښې دخيانت کونکي سامان سوزولي وو او وهلي ئې هم وو. ابوداود وائي چه علي بن بحر دا روایت دڅه اضافي سره دوليد نه نقل کړې دې اودا اضافه مدهغه نه نه وه اوريدلي او هغه داوه چه حصه ئې هم نه وه ورکړې او ابوداود په بل سند سره دا روایت نقل کړې دې د عمرو بن شعيب نه او په هغې کښې دا جمله نشته چه حصه ئې نه وه ورکړې.

بَابُ النَّهْيِ عَنِ السَّرِّ عَلَى مَنْ عَالَ

د غنيمت په مال کښې په خيانت کونکي باندې د پردې نه اچولوييان

[۲۷۱۶] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دَاوُدَ بْنِ سَفْيَانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ مُوسَى أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سَعْدِ بْنِ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ، حَدَّثَنِي خَبِيبُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ سُلَيْمَانَ بْنِ سَمُرَةَ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ، قَالَ: أَمَا بَعْدُ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ كَتَمَ عَالًا فَإِنَّهُ مِثْلُهُ".

د سمره بن جندب ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرماتي چه نبی ﷺ فرمائيلى دى چه څوك په غنيمت كښې خيانت او كړي اوبل كس ورباندې پرده واچوي يعنى اميرته ئې ښكاره نه كړي چه فلاني خيانت كړې دې تودې به هم دخيانت كونكى په شان وي يعنى دواړه په گناه كښې برابر دي.

﴿ عن سمره بن جندب قال : اما بعد ﴾ دا د ﴿ اما بعد ﴾ والا پنځم حديث دې چه د هغې تعارف مونږ سره د درمنضود په مقدمه كښې او د هغې نه علاوه هم په څو ځايونو كښې راغلي دي، دا ټول شپږ حديثونه دى چه په هغې كښې يو باقى پاتې شو كوم چه د كتاب الجهاد اخري حديث دې په بذل المجهود كښې دى چه دا سند ضعيف دې، قابل استدلال نه دې ﴿وبكل حال هذا اسناد مظلم لا ينهض بحكم﴾ اه په دې حديث كښې دا دى چه كوم سړې د غلول كونكى غلول لره پت كړى، يعنى د هغه پرده اوساتى نو هغه هم دغه شان غال دې، د دې حديث تقاضه دا ده چه كه د يو سړى غلول معلوم شى نو امير ته تلو سره د هغې اطلاع ضرورى ده، اوس به يا خودا وټيلې شى چه مسئله د غلول ﴿من ستر مسلما ستره الله﴾ د عموم نه مستثنى ده او يا به دا وټيلې شى چه حديث الباب ضعيف دې.

١: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۷۰۶، ۱۹۱۶۹) (ضعيف)

٢: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۶۲۰) (ضعيف)

بَاب فِي السَّلْبِ يُعْطَى الْقَاتِلُ

خوک چه خوک قتل کړی دهغه مال به قاتل ته ورکولې شی

د احکام سلب ابتداء

د دې ځانې نه خو بابونه د احکام سلب متعلق شروع کيږي، سلب وئيلې شی د کافر مقتول سره چه کوم سامان وی د هغه جامې، وسله، سورلئ وغیره، د سلب متعلق ډير زيات مسائل اختلافی دی، حضرت شیخ په اوجز المسالك کښې هغه ټول د کتب فقهیه او شروح حدیث نه راجمع کړې دی کوم چه اتلس مسائل دی، د هغه مسائلو نه یوه ډيره مشهوره اختلافی مسئله دا ده چه د مقتول سلب کوم چه قاتل ته ورکولې شی دا من حیث الاستحقاق دې یا من حیث التنفیل؟ او د شافعی او احمد په نزد من حیث الاستحقاق دې، یعنی د امام په رائي او د هغه په ورکړه باندي موقوف نه دی، هغه د هغه خپل حق دې او کوم چه په حدیث کښې راځي چه «من قتل قتيلا فله سلبه»، د دې دواړو امامانو په نزد دا څه وقتی فیصله او انعام نه دې بلکه د قاعده کلیه په طور دې، او د امام ابوحنيفه او مالک په نزد سلب د تنفیل د قبيلې نه دې، یعنی د امام د طرف نه یو غازی ته د هغه د کارنامې په طور په طور د زیاتې حصې او انعام ورکولې شی، چه هر کله دا خبره ده نو بیا د سلب د قاتل دپاره کیدل د امام په رائي او د هغه په فیصله باندي موقوف دې، که د هغه د طرف نه دا اعلان شوي دې چه «من قتل قتيلا فله سلبه» یا بغیر د اعلان نه چه هغه ئې چاته ورکول غواړي نو بیا به د هغه دپاره وی گيښي نه.

بله اختلافی مسئله دا ده چه سلب د کوم قاتل دپاره وی، د امام مالک په نزد د هغه قاتل دپاره کوم چه ذو سهم وی یعنی د چا چه باقاعده په غنیمت کښې حصه وی، فلا سلب للصبی والمرأة عنده بخلاف الجمهور، د هغوی په نزد دا قید نشته. یوه مشهوره اختلافی مسئله د سلب متعلق دا ده کومه چه به وړاندي په مستقبل باب کښې راشي چه څنگه د مال غنیمت تخمیس وی چه د هغې نه خمس ویستلې شی د بیت المال وغیره دپاره نو ایا داسې سلب تخمیس به هم وی یا نه، وغیره وغیره مسائل.

[۲۷۱۷] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ كَثِيرٍ بْنِ أَفْلَحٍ، عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي عَامِ حَنْدِ، فَلَمَّا التَقِينَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِينَ جَوْلَةٌ قَالَ: فَرَأَيْتُمْ رَجُلًا مِنَ الْبُشَيْرِيِّينَ قَدْ عَلَا رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ قَالَ: فَاسْتَدْرَتُ لَهُ حَتَّى أَتَيْتُهُ مِنْ وِرَائِهِ، فَضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ عَلَى حَبْلِ عَاتِقِهِ، فَأَقْبَلَ عَلَيَّ فَضَمَمَنِي ضَمًّا وَجَدْتُ مِنْهَا رِيحَ الْمَوْتِ ثُمَّ أَدْرَكَهُ الْمَوْتُ فَارْسَلَنِي فَلَحِقْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقُلْتُ لَهُ: مَا بَالَ النَّاسِ، قَالَ: أَمْرُ اللَّهِ، ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ رَجَعُوا وَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: "مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا لَهُ عَلَيْهِ يَبْنَةُ فَلَهُ سَلْبُهُ، قَالَ: فَقُمْتُ ثُمَّ قُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ

۱: صحیح البخاری/البیوع ۲۷ (۲۱۰۰)، فرض الخمس ۱۸ (۳۱۴۲)، المغازی ۵۴ (۴۳۲۱)، الأحکام ۲۱ (۷۱۷۰)، صحیح مسلم/الجهاد ۱۳ (۱۵۷۱)، سنن الترمذی/السير ۱۳ (۱۵۶۲)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۲۹ (۲۸۳۷)، تحفة الأشراف: ۱۲۱۳۲، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الجهاد ۱۰ (۱۸)، مسند احمد (۲۹۵/۵)، ۲۹۶، ۳۰۶، سنن الدارمی/السير ۴۴ (۲۵۲۸) (صحیح)

لې؟ تَمَّ جَلَسْتُ، تَمَّ قَالَ ذَلِكَ الثَّانِيَةَ: مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا لَهُ عَلَيْهِ يَتِيمَةٌ فَلَهُ سَلْبُهُ، قَالَ: فَقُمْتُ تَمَّ قُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ تَمَّ جَلَسْتُ، تَمَّ قَالَ ذَلِكَ الثَّلَاثَةَ: فَقُمْتُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا لَكَ يَا أَبَا قَتَادَةَ؟ قَالَ: فَأَقْتَصَصْتُ عَلَيْهِ الْقِصَّةَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: صَدَقَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَسَلَبُ ذَلِكَ الْقَتِيلِ عِنْدِي فَأَرْضِيهِ مِنْهُ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ: لَأَهَا اللَّهُ إِذَا يَعْبُدُ إِلَى أَسَدٍ مِنْ أَسَدِ اللَّهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللَّهِ، وَعَنْ رَسُولِهِ فَيُعْطِيكَ سَلْبَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: صَدَقَ فَأَعْطِيهِ إِيَّاهُ، فَقَالَ أَبُو قَتَادَةَ: فَأَعْطَانِيهِ فَبِعْتُ الدِّرْعَ فَأَبْتَعْتُ بِهِ مَخْرَفًا فِي بَنِي سَلْمَةَ فَإِنَّهُ لِأَوَّلِ مَالٍ تَأْتَيْتُهُ فِي الْإِسْلَامِ.

د ابوقتاده رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی الله علیه و آله سره د عزوه حنین په کال باندي جهاد ته لاړو هرکله چه مونږه د دشمن سره مخامخ شو نوپه مسلمانانو کښې انتشار پیدا شو دې وائی ما په مشرکانو کښې یوکس اولیدو چه په یو مسلمان باندي زورور شوې دې نوزه ورغلم دوروسته طرف نه او په خټ مې ورله توره کیخوده نوده ماته رامنډه کړل اوماله ئې داسې زور راکړو چه دمرگ خوندي ئې را اوخودو بیا پخپله مړشو اوزه ئې پریخودم بیا زما دمورها سره ملاقات اوشو اوما اووئیل نن صبا په خلقو باندي څه شوي دي هغه په جواب کښې اووئیل حکم خوهم داسې شوي وو خو مسلمانان واپس راغلل او کیناستل رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل څوک چه څوک قتل کړي نو دهغه سامان به هغه ته ملاویږي څو کله چه په دې باندي دوه گواهان وي، ابوقتاده وائی ما چه کله دا واوریدل نو کیناستم بیا نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل څوک چه څوک مړ کړي نو دهغه سامان به هم ده ته ملاویږي په دې شرط چه گواه ورسره وي نوزه پاخیدم او اودریدم اوزمادا خیال وو چه گواه به چرته وي بیا کیناستم او په دریم ځل نبی صلی الله علیه و آله داسې او فرمائیل په تاخه شوي دي اي ابوقتاده نوماورته ټوله قصه واوروله په دې وخت کښې یوکس اووئیل چه ریشتیانې اووئیل اي دالله رسوله، اوددغه کافر سامان زما سره دې دغه ماته راکړئ نوده ته ابوبکر رضي الله عنه اووئیل په الله قسم داسې به هیڅ کله اونه شي چه جنگ دې دالله یواز مړې کوی دالله درسول دطرف نه او غنیمت دې ته واخلي نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ابوبکر ریشتیا وائی اوسا ما ن ابوقتاده ته ورکړئ ابوقتاده وائی چه ماته ئې راکړل زغره مې خرڅه کړه او یوباغ مې واغستو د بنی سلمه په مال کښې اودا اولنې مال وو کوم چه ما په اسلام کښې حاصل کړو.

شرح حدیث

سیدنا ابوقتاده رضي الله عنه فرمائی چه مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله سره په حنین کښې وو، چه کله زمونږه د مشرکانو سره مقابله اوشوه نو د لښکر په بعض خلقو کښې غوبل جوړ شو، ابوقتاده فرمائی چه ما یو مشرک اولیدو چه یو مسلمان ئې راگیر کړې وو او په هغه باندي مسلط وو، هغه فرمائی چه کله ما دا منظر اولیدو نوزه په چل ول د هغه د شا طرف نه هغه له راغلم او هغه مې سټ ته نزدې په توره اووهلو، هغه دغه سرې پریخودلو او په ما ئې حمله اوکړه اوزه هغه داسې په شدت سره لاندې کړم چه د هغه نه ماته د خپل مرگ بوئی راغلو (خو اوشوه د دې برعکس) بیا هغه مړ شو اوزه ئې پریخودلم، او هم په دې وخت کښ، زه سیدنا عمر رضي الله عنه ته راغلم او ما د هغه نه تپوس اوکړو (ما بال الناس) چه په خلقو څه اوشو

ولې منډې وهی؟ نو هغه جواب راکړو چه **« امر الله »** د دې دوه مطلبونه کیدې شی یو دا چه داسې د الله پاک په تقدیر او د هغه په حکم سره اوشو چه د هغې ظاهری سبب او مقصد اعجاب دې. کما هو مذکور فی القرآن او یا د امر الله مطلب دا دې چه ویریرېئ مه د الله پاک د فیصلې او د هغه د مدد انتظار کوئ، **« ثم ان الناس رجعوا وجلس رسول الله صلى الله عليه وسلم دلته په روایت کښې اختصار دې د دې روایت باقی حصه حضرت په بذل کښې د مسلم د روایت نه نقل کړې ده هغه دې او کتلې شی، په روایت کښې دې چه کله خلق د رسول الله ﷺ د خوا نه منتشر شو نو سیدنا عباس رضی الله عنه ته ئې اوفرمائیل کوم چه جهوری الصوت وو (کان رجلا صیتا) **« نادیا معشر الانصار، یا اصحاب السمره »** چه دا اواز اولگوه ای د انصارو جماعت! ای اصحاب شجره! حضرت عباس رضی الله عنه چه دا اواز اولگولو نو صحابه کرام پوهه شو چه دا اواز د رسول الله ﷺ د طرف نه دې، پس عباس رضی الله عنه فرمائی چه زما په اواز باندي خلق داسې مائل شو او په منډه منډه راغلل لکه غوا چه د خپل ورک شوی بچی په اواز اوریدو باندي د هغه طرف ته منډه وهی، هغوی په دې وینا سره منډې وهلې چه **« یا لیک یا لیک »** او ټول رسول الله ﷺ ته نزدې راغلل، تردې چه کله د سلو کسانو برابر د هغه په خوا کښې مجاهدین راجمع شو نو اوس هغه د کفارو طرف ته متوجه شو د جنگ کولو دپاره او سخت جنگ شروع شو، هغه په دې وخت کښې جنگ کتلو سره اوفرمائیل: **« الان حمی الوطیس »** چه اوس جنگ گرم شو (یعنی د یخیدو او تیختې نه پس) بیا رسول الله ﷺ د زمکې نه د شرو یو موټې واخستلو او د هغه مشرکانو طرف ته ئې گزار کړو او وې فرمائیل **« شاهت الوجوه »** (دا مخونه دې اوسوخی) راوی وائی چه هغه یو موټې شگې د مشرکانو په سترگو کښې پریوتلې او هغوی شا راواړوله او په منډه شو، او مسلمانانو ته فتح حاصله شوه. دا ده هغه حصه د هغه روایت کومه چه دلته په ابوداؤد کښې مختصر کړې شوې ده.**

شرح حدیث

« وجلس رسول الله صلى الله عليه وسلم » یعنی د جنگ نه چه کله فارغ شو او په سکون سره کیناستلو نو هغه دا اعلان او کړو چه **« من قتل قتيلا له عليه بينة فله سلبه »** چه چا یو کافر قتل کړې وی او د هغه سره په دې باندي گواه وی نو د هغه مقتول سلب به د قاتل دپاره وی (ابو قتاده هم چونکه یو کافر قتل کړې وو چه د هغې ذکر د روایت په شروع کښې وو خو چونکه رسول الله ﷺ د بینه قید هم لگولې وو په دې وجه هغه فرمائی چه زه اودریدم او اودریدو سره د خلقو طرف ته متوجه کیدو سره مې اووې چه: من یشهد لی؟ چه زما په معامله کښې څوک گواهی ورکونکې شته؟ چه کله چا هیخ او نه ونیل نو زه کیناستلم، د رسول الله ﷺ د طرف نه بیا هغه اعلان اوشو، په دې باندي زه هم دوباره اودریدم او ما بیا اووې چه زما څوک گواه شته، درې کرته هم دغه شان اوشوه خو زما د گواهی دپاره څوک هم نه پاسیدو، رسول الله ﷺ ماته اوفرمائیل چه ابو قتاده څه خبره ده (ځکه چه بار بار پاسیرې هغه فرمائی چه ورته د هغه کافر د قتل ټوله قصه بیان کړه، اوس یو سړې اودریدو

او هغه اووې یا رسول الله ﷺ دې رشتیا وائی او د هغه کافر قتیل سلب ما سره دې (فارضه منه) پس ابو قتاده له د دې څه عوض ورکړئ او دې راضی کړئ، یعنی هغه سلب ما سره پرېږدئ، هغه وخت په مجلس کښې ابوبکر صدیق رضی الله عنه هم موجود وو هغه ته د دې سرې په خبره اوریدلو باندې ډیره غصه راغله او وې فرمائیل: ﴿لَا هَا اللَّهُ إِذَا يَعْمَدُ إِلَى اسَدٍ مِنْ اسَدِ اللَّهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللَّهِ وَعَنْ رَسُولِهِ فَيُعْطِيكَ سَلْبَهُ﴾ یعنی قسم په الله داسې به نه کیږي، ایا ته غواړې چه رسول الله ﷺ قصد او کړی د الله پاک زموږ کښې یو زمری ته، کوم چه د الله پاک او د هغه د رسول دپاره قتال کوی (اشاره ده د ابو قتاده طرف ته) او تاته د هغه سلب درکړی؟ (داسې به هرگز اونشی) رسول الله ﷺ د صدیق اکبر تائید او کړو چه د هغه خبره بالکل صحیح ده، پس رسول الله ﷺ هغه سرې ته چا سره چه د هغه کافر سلب وو حکم ورکړو چه ابو قتاده ته دا سلب ورکړه، ابو قتاده فرمائی (هغه سلب په دومره کثیر مقدار کښې وو چه) ما په هغې کښې یوه زغره خرخولو سره د هغې په عوض کښې د بنو سلمه یو باغ واخستلو (فانه لاول مال تائلته فی الاسلام) چه دا اولنې مال دې نکوم چه په اسلام کښې د داخلیدو نه روستو ماته حاصل شوې دې.

(تائل) د (ائل) نه دې (وائل کل شی اصله) (لاها الله) په دې کښې (الله) مجرور دې (ای لا والله) لفظ (ها) د واو قسم بدل دې، د دې حدیث په شرح کښې حضرت هم په بذل کښې ډیر مسائل د سلب متعلق د کتب فقهه نه نقل فرمائیلې دی. والحديث اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی وابن ماجه.

[۲۷۱۸] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ مَيْدٍ يُعْنِي يَوْمَ حُنَيْنٍ: "مَنْ قَتَلَ كَافِرًا فَلَهُ سَلْبُهُ فَقَتَلَ أَبُو طَلْحَةَ يَوْمَ مَيْدٍ عَشْرِينَ رَجُلًا وَأَخَذَ أَسْلَابَهُمْ، وَلَقِيَ أَبُو طَلْحَةَ أُمَّ سَلِيمٍ وَمَعَهَا خَنْجَرٌ فَقَالَ: يَا أُمَّ سَلِيمٍ مَا هَذَا مَعَكَ؟ قَالَتْ: أَرَدْتُ وَاللَّهِ إِنْ دَنَا مِنِّي بَعْضُهُمْ أَبْعَجُ بِهِ بَطْنَهُ"، فَأَخْبَرَ بِذَلِكَ أَبُو طَلْحَةَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَرَدْنَا بِهَذَا الْخَنْجَرِ وَكَانَ سِلَاحَ الْعَجَمِ يَوْمَ مَيْدٍ الْخَنْجَرِ.

دانس بن مالک رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی نن ورځ که چا یو کافر مړ کړو نو د هغه سامان به ده ته ورکولې شی نو ابو طلحه رضی الله عنه شل کسان مړه کړل او دهغوی مالونه ئې واخستل بیا ابو طلحه دام سلیم رضی الله عنها (دده بی بی) سره ملاو شو او دهغې سره یوه توره وه ده اووئیل ای ام سلیم داڅه دي تاسره ام سلیم اووئیل په الله مې دي قسم وي ما اراده کړې وه که چرې کوم کا فرماته نزدې راشي نوپه دې توره به دهغه خیته شلومه ابو طلحه دا خبره نبی صلی الله علیه و آله ته بیان کړه ابوداود وائی دا حدیث حسن دې ابوداود وائی ددې نه زمونږ مراد خنجر دې او په دغه زمانه کښې د عجمیانو اسلحه خنجر وو.

(فقتل ابو طلحة يومئذ عشرين رجلا واخذ اسلابهم) یعنی سیدنا ابو طلحه رضی الله عنه د غزوه

۱: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۰)، وقد أخرجہ: صحيح مسلم للجهاد ۴۷ (۱۸۰۹)، مسند احمد (۲۷۹/۳، ۱۹۰)، متن الدرر السیر ۴۴ (۲۵۲۷) (صحيح)

حنين په ورځ باندي شل کافر مړه کړې وو او د هغوی ټولو اسلاب ټي اخستلي وو.
 ﴿ قال ابوداود هذا حديث حسن ﴾ د حسن نه يا خو اصطلاحی معنی مراد ده لکه چه
 امام ترمذی رحمته الله به فرمائيل خو د مصنف خو دا عادت نه دې، زما په ذهن کښې دا خبره
 راځي چه د مصنف لغوی معنی مراد ده چه دا حديث ډير ښه دې، يعنی د امام ابوداود ډير
 خوښ شو، د ابو طلحه شل کافر قتل کول او د هغوی سامان اخستل، او د هغې دپاسه د ام
 سليم دا عجيبه شان واقعہ يو نوې شان خبره، والله تعالى اعلم.

د مصنف د کلام مطلب

﴿ قال ابوداود اردنا بهذا الخنجر ﴾ د دې جملې دوه مطلبونه کيدې شي يو دا چه په دې حديث
 کښې خنجر نه د دې معروف معنی مراد وی، بل څه څيز نه دې خنجر، بل مطلب دا کيدې
 شي چه زمونږ مراد په دې حديث ذکر کولو سره د استعمال خنجر جواز دې، او وړاندې دا
 دی چه په هغه زمانه کښې خنجر د عجميانو وسله وه هم هغوی به دا زيات تر استعمالولو،
 يعنی په عربو کښې د دې د استعمال رواج نه وو، گویا د دې دپاره د دې د بيان جواز
 ضرورت راپيښ شو. اخرج مسلم قصة ام سليم في الخنجر بنحوه، قاله المنذرى.

باب فِي الْإِمَامِ مِمَّنْ الْقَاتِلِ السَّلْبِ إِنْ رَأَى وَالْفَرَسِ وَالسِّلَاحُ مِنَ السَّلْبِ

که چرې امير او غواري نو د مقتول سامان دې قاتل ته ورنکړي او اس او اسلحه هم په سامان کښې داخل دی
 په ترجمه الباب کښې دوه اجزاء دی، اول دا چه که د امام رائي قاتل ته د سلب نه ورکولو
 وی نو هغه داسې کولې شي، دا خبره د احنافو او مالکيانو د مسلک مطابق خوده، خود
 شوافع او حنابله خلاف دې کما يظهر ذلك من المذاهب المذكورة قبل، او د ترجمې دويم جزء
 دا دې چه فرس او سلاح د دې دواړو شمار په سلب کښې دې، دا هم يوه اختلافی مسئله ده
 چه د سلب مصداق د مقتول کوم کوم سامان دی، د سلاح د سلب نه کيدل خو اجماعی دی،
 او فرس او دابه هم د ائمه ثلاثه په نزد په سلب کښې داخل دی، البته د امام احمد رحمته الله نه په
 دې کښې دوه روايتونه دی.

[۲۷۱۹] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ حَنْبَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي صَفْوَانُ بْنُ عَمْرٍو،
 عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ نَفِيرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكِ الْأَشْجَعِيِّ، قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ فِي
 غَزْوَةِ مُوتَةَ فَرَأَفَنِي مَدَدِي مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ لَيْسَ مَعَهُ غَيْرُ سَيْفِهِ، فَخَرَجَ جَلٌّ مِنَ الْمُسْلِمِينَ جُزُورًا فَسَأَلَهُ الْمَدَدِيُّ
 طَائِفَةً مِنْ جَلْدِيهِ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ فَأَخَذَهُ كَهَيْئَةِ الدَّرَقِ، وَمَضَيْنَا فَلَقِينَا جُمُوعَ الرُّومِ فِيهِمْ رَجُلٌ عَلَى فَرَسٍ لَهُ أَشْقَرٌ عَلَيْهِ
 سَرَجٌ مُدْهَبٌ، وَسِلَاحٌ مُدْهَبٌ فَجَعَلَ الرُّومِيُّ يُغْرِي بِالْمُسْلِمِينَ، فَقَعَدَ لَهُ الْمَدَدِيُّ خَلْفَ صَخْرَةٍ فَمَرَّ بِهِ الرُّومِيُّ
 فَعَرَّقَ فَرَسَهُ فَخَرَّ وَعَلَاةٌ، فَقَتَلَهُ وَحَازَ فَرَسَهُ وَسِلَاحَهُ، فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لِلْمُسْلِمِينَ بَعَثَ إِلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ
 فَأَخَذَ مِنَ السَّلْبِ، قَالَ عَوْفٌ: فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: يَا خَالِدُ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى بِالسَّلْبِ
 لِلْقَاتِلِ؟ قَالَ: بَلَى، وَلَكِنِّي اسْتَكْرَثْتُهُ قُلْتُ: لَتَرُدَّنِي عَلَيْهِ، أَوْ لَأَعْرِفَنَّكَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَبَى
 أَنْ يَرُدَّ عَلَيْهِ، قَالَ عَوْفٌ: فَاجْتَمَعْنَا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَصَصْتُ عَلَيْهِ قِصَّةَ الْمَدَدِيِّ، وَمَا فَعَلَ
 خَالِدٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا خَالِدُ مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اسْتَكْرَثْتُهُ،"

۱: صحيح مسلم/الجهاد ۱۳ (۱۷۵۳)، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۰۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷، ۲۷۶) (صحيح)

فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا خَالِدُ رُدَّ عَلَيْهِ مَا أَخَذْتَ مِنْهُ، قَالَ عَوْفٌ: فَقُلْتُ لَهُ دُونَكَ يَا خَالِدُ أَلَمْ أِفِ لَكَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَمَا ذَلِكَ فَأَخْبَرْتُهُ قَالَ: فَقَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا خَالِدُ لَا تَرُدَّ عَلَيْهِ هَلْ أَنْتُمْ تَارِكُونَ لِي أَمْرًا بِي لَكُمْ صَفْوَةٌ أَمْرُهُمْ وَعَلَيْهِمْ كَدْرَةٌ؟".

دعوف بن مالک اشجعي رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه په غزوه موته (په شام کښې د یوحانی نوم دي) کښې زه دزید بن حارثه سره لارم او په یمنیانو کښې مددی زما ملگری شو دهغه سره د یوې توري نه علاوه نور هیڅ نه وو په مسلمانانو کښې یوکس یواوښ ذبح کړو نومددي دهغې لږه خرمن او غوښتله هغوی ورکړه نومددي دهغې نه ډال جوړ کړو بیا مونږه روان شو تردې چه درومیانو دفوج سره مخامخ شو په دغه فوج کښې یوکس په سور اس باندي سور وو چه دسرو زرو زین ورباندي پروت وو او اسلحه ورسره هم سنهري وه په مسلمانانو به ئې سختې سختې حملې کولې نو مددی دده په فکر کښې د یوې گټې لاندې کیناستو نوکله چه دغه کس په اس سور تیریدو نو مددی دده داس خپي اووهلي او هغه راوغورخیدو نومددي ورباندي کیناستو او قتل ئې کړو اس او اسلحه ئې واخستل هرکله چه الله تعالی مسلمانانو ته فتح ورکړه نو خالد بن ولید ورپسې څوک اولیږل او یوڅه سامان ئې ترې واخستو عوف وائی زه خالد بن لید ته ورغلم او وې وئیل ای خالده ایا تاته معلومه نه ده چه دمقتول نه اخستلې شوې سامان دقاتل دي هغه او وئیل ولي راته معلومه نه ده لیکن داسامان ډیر وو ما او وئیل ته دا سامان ده ته ورکړه او که نه نوزه به درته دښې عليه السلام په مخامخ او وایم لیکن خالد به دسامان ورکولونه انکار او کړو عوف وائی بیامونږه ټول دښې عليه السلام په وړاندې جمع شو او ماد مددي واقعه بیان کړه او خالد چه ورسره څه کړي وو هغه ئې هم بیان کړل نبي عليه السلام او فرمائیل ای خالده تا داسې کار ولي کړي دي خالد او وئیل ای دالله رسوله داسامان ماته زیات ښکاره شو نبي عليه السلام او فرمائیل ای خالد تا چه ترې کوم اغستلي دي هغه ورکړه، عوف او وئیل ای خالده ما چه درسره دڅه وعده کړې وه هغه اوس پوره شوه نبي عليه السلام معلومول او غوښتل چه څه معامله وه؟ نو ما پوره واقعه بیان کړه نبي عليه السلام په غصه شو او وئې فرمائیل ای خالده هرگز ئې مه ورکوه ته دا غواړی چه زما میران او سرداران په داسې حال پریرېدي چه دهغوی دښه کارونونه فائده ته واخلي او بدنامي دهغوی شي.

شرح حدیث

سیدنا عوف بن مالک رضي الله عنه کوم چه په غزوه موته کښې شریک وو هغه د دي غزوي خپله یوه واقعه بیانوی فرمائی چه کله زه په غزوه موته کښې تلم نو په لاره کښې ورسره یو یمنی سړی د مدد په طور ملگری شو، د کوم سړی چه په جهاد کښې باقاعده نوم نه وی او هغه خپله د لښکر د مدد دپاره روان وی غالباً هم دي سړی ته مددی وئیلې شی، عوف رضي الله عنه فرمائی چه هغه یمنی سره سوا د توري نه نور هیڅ نه وو، تردې چه د هغه سره ډهال هم نه وو، چه د هغې ډیر لوئې ضرورت وی په جنگ کښې، نو الله پاک د هغه دپاره د ډهال انتظام په داسې طریقه او کړو چه په لاره کښې یو لښکری خپل اوښ ذبح کړو (د توبښې دپاره) نو هغه مددی د هغې نه د خرمنې یوه ټکره واخستله، او بیا ئې د هغې نه ډهال جوړ کړو،

(دهال د څرمنې وې، او د دشمن د حملې نه د بچ کولو دپاره وې) عوف رضي الله عنه فرمائي چې کله مونږ د جنگ مقام ته اورسيډو نو د روميانو د ډير لوڼې لښکر سره مو مقابله اوشوه، په دې روميانو کښې يو رومي په خپل سور اس باندې سور وو چې په هغې باندې داسې کتنه خوره وه چې سره زر پکښې گډ شوي وو، يعنې د سرو زرو کار پرې شوې وو، او د هغه وسله توره وغيره هم په سرو زرو رنگ او قيمتي وو هغه فرمائي چې دې رومي سړي په مسلمانانو کښې ډير په تيزي سره ويني تويولي (هغه مددې دا اراده اوکره چې زه به ان شاء الله دا رومي وژنم) پس هغه مددې په يو کمر کښې پټ د هغه نه شاته کيناستلو، چې کله دا رومي د هغه مخې ته تير شو نو دې مددې توره باندې گزار اوکړو چې هغې سره د هغه رومي د اس خپه غصه شوه، هغه رومي د خپل اس نه پريوتلو بل طرف ته پرې دا مددې دپاسه شو او هغه ئې قتل کړو، او د هغه اس او وسله هغه واخستل چې کله مسلمانانو ته فتح ملاؤ شوه (او خالد بن وليد د لښکر امير ته معلومه شوه چې دې مددې يمې سره د رومي ډير لوڼې او قيمتي سلب موجود دې) نو خالد هغه ته سړي اوليرلو او د هغه سلب بعض حصه ئې ترې واخستله (هغه يمې هيڅ او نه وئيل خو عوف رضي الله عنه په دې باندې خفه شو نو عوف فرمائي چې) زه خالد بن الوليد رضي الله عنه لارم، او هغه سره مې په دې سلسله کښې خبره اوکره او دا چې سلب خود قاتل دپاره وې، تاته معلومه نه ده د رسول الله صلى الله عليه وسلم فيصله، حضرت خالد بن الوليد رضي الله عنه او فرمائيل چې او معلومه ده خو ما د دې سلب مقدار ډير زيات اوگنړلو په دې وجه مې ترې څه واخستل، او ټول مې هغه ته ورکول مناسب او نه گنړل. (قلت: لتردنه عليه او لاعرفنکها عند رسول الله صلى الله عليه وسلم) عوف رضي الله عنه فرمائي چې ما هغه ته اووې چې يا خو به ته ضرور دا سلب هغه ته واپس کوي او يا به زه تا د دې په خوند پوهه کړم کله چې رسول الله صلى الله عليه وسلم ته لار شو، سيدنا خالد رضي الله عنه د عوف رضي الله عنه د دې وينا پرواه اونکره او د ورکولو نه ئې انکار اوکړو، عوف فرمائي: چې کله مونږ رسول الله صلى الله عليه وسلم ته لارو نو ما هغه ته د مددې پوره قصه بيان کړه، يعنې د هغه کارنامه، او څه چې خالد رضي الله عنه د هغه سره اوکړل هغه مې هم ورته بيان کړل، رسول الله صلى الله عليه وسلم تپوس اوکړو چې خالده تا داسې ولې اوکړل؟ هغه عرض اوکړو يا رسول الله صلى الله عليه وسلم ما هغه سلب ډير زيات اوگنړلو، رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل اي خالده تا چې د هغه نه څه اخستلې دي هغه ورته واپس کړه، خالد رضي الله عنه د رسول الله صلى الله عليه وسلم د حکم فورا تعميل اوکړو، ما په دې باندې خالد ته اووې (دونک يا خالد الم اف لك) چې اي خالد واخله! يعنې هغه خيز د کوم چې ما تا سره وعده کړې وه، او وړاندې ئې دا هم اووې چې اوگوره ما چې تا سره څه وئيلي وو هغه مې پوره نه کړل؟ سيدنا خالد رضي الله عنه خو هيڅ او نه وئيل خو رسول الله صلى الله عليه وسلم د عوف رضي الله عنه نه تپوس اوکړو چې دا ته څه خبره کوي، عوف فرمائي چې ما ډير په خوشحالي باندې رسول الله صلى الله عليه وسلم ته ټوله خبره اوکره (خيال ئې دا وو چې ما خو ډير بڼه کار کړې دې، يو حقدار ته مې دهغه د حق رسولو کوشش کړې دې او دا سوچ ئې نه کولو چې د امير اطاعت او د هغه احترام هم ډير ضروري دې) په دې باندې رسول الله صلى الله عليه وسلم ډير ناراضه شو په عوف رضي الله عنه باندې (يعنې په ما باندې ځکه چې راوی هم هغه دې) او اوس

رسول الله ﷺ دا او فرمائیل چه ای خالده! اوس ئې ورته مه واپس کوه، گویا هغه خپله فیصله واپس کړه او عوف ته ئې خطاب کولو سره او فرمائیل: ﴿هل انتم تارکون لی امرالی لکم صفوة امرهم وعلیهم کدره﴾ تاسو به زما امیران نه پریردئ؟ یعنی هغوی پریخودل پکار دی او په هغوی تنقید نه دې پکار، د هغوی صفا صفا خبره او د انصاف والا معامله ستاسو په حق کښې مفید ده، او د هغوی د مشتبه معاملې وبال به په هغوی باندې وی (تاسو د هغوی اصلاح ولې کوئ).

او گورئ! سیدنا عوف بن مالک اشجعی رضی الله عنه دا خپله واقعه چه په هغه باندې رسول الله ﷺ ناراضه هم شو او هغه ئې رتلې هم دې خو هغه دا واقعه ډیر په رغبت سره بیانوی، دا د دې صحابی کمال دیانت فی النقل دې چه کومه واقعه د رسول الله ﷺ په وړاندې راپیښه شوه که هغه ئې د خان خلاف وه نو هم هغه ئې ضرور خلقو ته بیان کړه، او عوف څه چه د ټولو صحابه کرامو دا حال وو، د حدیث په کتابونو کښې د دې نور هم ډیر مثالونه دی، د دې حدیث دې د ترجمه الباب سره مطابقت او کتلې شی، ظاهره ده چه د دې حدیث نه یوه مسئله معلومه شوه چه د سلب تخمیس به نه شی کولې ځکه چه رسول الله ﷺ د پوره سلب فیصله د قاتل دپاره فرمائیلې وه بغیر د تخمیس نه، پس دا مسئله مصنف په وړاندې باب کښې بیانوی او هم د دې حدیث نه ئې استدلال کړې دی، والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى.

[۲۷۲۰] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ حَنْبَلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، قَالَ: سَأَلْتُ ثَوْرًا عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ، فَحَدَّثَنِي عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ، عَنْ جَبْرِ بْنِ نَفِيرٍ، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكِ الْأَشْجَعِيِّ نَحْوَهُ.

ولید وائی د ثورنه مې د دې متعلق تپوس او کړو نو هغه راته د خالد بن معدان نه هغه د جبیر بن نفیرنه هغه دخپل پلارنه او هغه دعوف بن مالک اشجعی نه د تیرروایت په شان بیان کړو.

باب فِي السَّلْبِ لِأَيِّخَمَسٍ

د مقتول سامان به قاتل ته ورکولې شی او خمس به پکښې نه وی

[۲۷۲۱] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عِيَّاشٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جَبْرِ بْنِ نَفِيرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكِ الْأَشْجَعِيِّ، وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى بِالسَّلْبِ لِلْقَاتِلِ وَلَمْ يُخَمَسِ السَّلْبُ.

دعوف بن مالک اشجعی او خالد بن ولید رضی الله عنه نه روایت دې چه نبی ﷺ فیصله کړې وه دمقتول دمال دقاتل دپاره او په دې کښې خمس نه وو.

په دې مسئله کښې مذاهب ائمه

د تخمیس سلب مسئله هم اختلافی ده، مصنف خو په ترجمه الباب کښې د تخمیس نفی کړې ده، د امام شافعی او امام احمد رضی الله عنه هم دا مسلک دې، او د احنافو په نزد هم دغه شان ده چه د دې تخمیس به نه شی کولې، الا ان قید الامام... یعنی دا که امام د اعلان په وخت

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۰۲) (صحیح)

۲: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۵۰۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۲۷۶، ۹۰/۴) (صحیح)

قید اولگوي د تخمیس، مثلا داسې اعلان او کړی (من قتل قتیلا فله سلبه بعد التخمیس) نو بیا به په دې صورت کښې زموږ په نزد د دې تخمیس وی، حافظ د امام مالک رضی اللہ عنہ نه د تخمیس سلب په مسئله کښې تخییر نقل کړې دې، یعنی دا چه امام ته اختیار دې د تخمیس او عدم تخمیس، د دې باب د لاندې مصنف پورته والا حدیث ذکر کړې دې.

باب مَنْ أَجَازَ عَلَيَّ جَرِيحَ مُخْنٍ يُنْقَلُ مِنْ سَلْبِهِ

قريب الموت كافر زخمی كه څوك مړ كړی نوده ته به دهغه د سامان نه د انعام په طور وركولې شي

د ترجمه الباب شرح

د دې ترجمه الباب شرح او څه چه مصنف فرمائی هغه دا ده چه كه دا صورت راپېښ شي چه د يو كافر اولا يو مجاهد صرف زخمی كړی، او بل غازی راشی هغه قتل كړی نو په دې صورت كښې به سلب د چا دپاره وی، ایا د من اجاز دپاره یا د اولنی سړی دپاره؟ په دې كښې مذاهب د ائمه كرامو ان شاء الله داسې دی چه د امام شافعی او احمد په نزد به سلب د اول دپاره وی، او د احنافو په نزدې د دې مدار د جرح په نوعیت باندې دې كه اول حمله كونكي هغه كافر بالكل معذور او د كار نه ويستلو نو سلب به د اول دپاره وی گینې د اخري دپاره، وعند مالك على راي الامام. (من حاشية الشيخ على البذل).

[۲۷۲۲] (٢) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبَّادٍ الْأَزْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: نَقَلَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ يَدْرَسِيْفَ أَبِي جَهْلٍ كَانَتْ قَتْلَهُ.

عبدالله بن مسعود نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ماته دبدر په غزا کښې د ابو جهل تور په انعام کښې راکړه کوم چه ده وژلې وو.

د حدیث شرح من حیث الفقه ومذاهب الائمة

سیدنا عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ فرمائی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ماته د ابو جهل توره، په جنگ بدر کښې په طور د انعام او حصه زانده راکړو، راوی وائی ځکه چه عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ هغه قتل کړې وو، د سیدنا عبدالله رضی اللہ عنہ ابو جهل لره د قتل کولو ذکر څو بابونه وړاندې تیر شوې دې، چه په هغې کښې دا وو چه اول ما په هغه باندې توره او چلوله خو هغه تورې کار اونکړو نو بیا ما د ابو جهل په توره باندې هغه قتل کړو.

دا حدیث په ظاهره د امام شافعی او احمد خلاف دې لکه چه د مذاهب مذکوره په کتلو سره معلومېږی نو د دې جواب د شوافعو د طرف نه امام بیهقی رحمته اللہ علیہ دا کړې دې چه دا واقعه د بدر ده او د غنائم بدر مسئله جدا ده، د غنائم بدر کامل او مکمل اختیار د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره وو د نص قرانی د وجې نه (یسالونک عن الانفال قل الانفال لله والرسول) دا آیت کریمه د غنائم بدر په باره کښې نازل شوې دې لکه چه په ابوداؤد کښې به وړاندې د دې تصریح راشی. باب فی النفل کښ.

د دې نه پس ځان پوهه کړی چه دا حدیث د احنافو په یو حیثیت سره خلاف دې او یو

۱: تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۹۶۲۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۴۴۴) (ضعيف)

حيثيت سره د هغوی موافق دي، د ترجمه الباب والا مسئلې په لحاظ سره نو دا زمونږ خلاف دي، د دې جواب خو به دا شی کوم چه اوس امام بیهقي رحمته الله علیه ورکړو، او بله مسئله په دې کښې دا ده چه کومه مونږ بيانوو چه په دې کښې دا زمونږ موافق دي چه د احنافو او مالکيانو مسلک د سلب په باره کښې دا تير شوي دي چه د مقتول د سلب د قاتل دپاره کيدل په طريقه د استحقاق نه دی بلکه په طريقه د تنفيل دی، يعنی د امام په فيصله باندې موقوف دی، نو دا حديث په دې مسئله کښې زمونږ موافق په دې حيثيت سره دي چه اوگورئ د صحيح بخاری (۱) په روايت کښې دی چه سيدنا معاذ بن عفراء او سيدنا معاذ بن عمرو بن الجموح د دې دواړو تورو ته کتلو سره او فرمائيل چه «کلاکما قتله» چه بيشکه تاسو دواړو هغه قتل کړې دي خو د هغې باوجود ئې د سلب فيصله د معاذ بن عمرو بن الجموح رحمته الله علیه دپاره اوکړه، که د سلب بنياد د امام په ورکړه باندې نه وي نو بيا هغه سلب دواړو ته ملاويدل پکار وو. والله تعالى اعلم

بَابُ فِيمَنْ جَاءَ بَعْدَ الْغَنِيمَةِ لَا سَهْمَ لَهُ

د غنيمت د تقسيم نه پس چه څوک راشی نودهغه دپاره حصه نشته

د دې ځانې نه د غنيمت د حصو او د هغې د مستحقينو ابواب شروع کيږي، مصنف دا فرمائی چه کوم سرې د غنيمت د تقسيم نه روستو ميدان جهاد ته راشی نو د هغه دپاره په غنيمت کښې حصه نشته.

په دې مسئله کښې مذاهب ائمه

په دې مسئله کښې مذاهب ائمه داسې دی چه جمهور علماء کرام ومنهم الائمة الثلاث په نزد د غنيمت د حصې مدار په قتال او انقضاء قتال باندې دي لهذا کوم سرې چه د قتال دوران هلته اورسيږي نو د هغه دپاره به په غنيمت کښې حصه وي، او څوک چه د انقضاء قتال نه پس راشی نو د هغه دپاره به نه وي، او د احنافو په نزد د دې مدار په احراز او قسمت باندې دي، يعنی مال غنيمت لره راتولولو سره دار الاسلام ته منتقل کول، نو کوم سرې چه د احراز نه مخکښې اورسيږي او هم دغه شان د تقسيم نه وړاندې، يعنی لا تر اوسه پورې مال غنيمت په دار الحرب کښې دي او تقسيم شوي هم نه دي نو بيا خو به د غنيمت مستحق وي اگر چه انقضاء قتال شوي وي او که پس د احراز نه ئې راورسولو قبل الاحراز خو پس د غنيمت د تقسيم نه نو په دې دواړو صورتونو کښې به د غنيمت مستحق نه وي، د دې نه روستو حديث الباب واخلئ

[۲۷۲۳] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْوَلِيدِ الزُّبَيْدِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَنَّ عُبَيْدَةَ بْنَ سَعِيدٍ، أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ زَيْدَ بْنَ سَعِيدٍ، يُحَدِّثُ سَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بَعَثَ أَبَانَ بْنَ سَعِيدٍ، بِنِجْدٍ قَدِيمٍ، فَقَدِمَ أَبَانُ بْنُ سَعِيدٍ وَأَصْحَابُهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَخَبَّرَ بَعْدَ أَنْ فَتَحَهَا وَإِنَّ حِزْمَ خَيْلِ بْنِ لَيْفٍ فَقَالَ أَبَانُ: أَقْسَمُ لَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، فَقَالَ أَبُو

۱، باب من لم يخمس الاصلاح من كتاب فرض الخمس

۲: صحيح البخاري/الجهاد ۲۸ (۲۸۲۷)، والمغازي ۲۸ (۴۲۳۷)، (تحفة الأشراف: ۱۴۲۸۰) (صحيح)

هَرِيرَةٌ: فَقُلْتُ: لَا تَقْسِمُ لَهُمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ أَبَانُ: أَلَيْتَ بِهَا يَا وَيْرُ تَحَدَّرُ عَلَيْنَا مِنْ رَأْسِ ضَالٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اجْلِسْ يَا أَبَانُ وَلَمْ يَقْسِمْ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د سعید بن العاص رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه ابان بن سعید بن العاص لره نبی صلی اللہ علیہ وسلم په لښکر باندې امیر مقرر کړي وواو د مدینې نه ئې د نجد طرف ته لیږلي وونو ابان بن سعید او دده ملگري په خیبر کښې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شول وروسته د فتح کولونه او ددوی د اسونو تانگونه دکه جوړو د پوتگونه جوړ وو، ابان او وئیل ای د الله رسوله زمونږ دپاره په غنیمت کښې حصه را کړه ابوهریره وائی چه ما و وئیل ای د الله رسوله چه حصه ورله ورنکړي ابان و وئیل چه دو بر په شان خبرې کوې (وبر د پیشو په شان یو قسم ځناوردې) او دضال نومی غرد سرنه اوس را کوز شوي ئي (دا د ابوهریره دکلي نوم وو) نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل ای ابان کینه اونبی صلی اللہ علیہ وسلم ابان او دهغه ملگرو ته حصه ونکړه.

مضمون حدیث

د حدیث مضمون دا دې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ابان بن سعید رضی اللہ عنہ په یوه سریه باندې امیر جوړ کړو او د مدینې منورې نه ئې نجد طرف ته اولیږلو (هم دې دوران کښې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او صحابه کرام د خیبر د فتح کولو دپاره هلته رسیدلې وو) ابان بن سعید او دهغه ملگری چه واپس شو نو نیغ خیبر ته راغلل په داسې حال کښې چه خیبر فتح شوې وو دهغې نه وروستو په روایت کښې دی: **(وان حزم خيلهم ليف)** حزم جمع د حزام یعنی کتې ده، او ليف د کهجورې د اونې پوستکې، یعنی د هغوی د اسونو کتې د کهجورو د پوستکې وې، ممکن ده چه د راوی غرض د هغوی فقر بیانول وی، او کیدې شی چه صرف د واقع بیانول وی، اوس صورت حال دا راپښ شو چه ابان رضی اللہ عنہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته دا عرض او کړو چه یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د خیبر په غنیمت کښې زمونږ حصه هم مقرر کړئ، ابوهریره رضی اللہ عنہ کوم چه د حدیث راوی دې فرمائی چه زه هم هغه وخت دې مجلس کښې موجود اوم، نو ما رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته عرض او کړو چه یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د دې خلقو حصه مه مقرر کوئ (په دې باندې به ابان رضی اللہ عنہ ظاهره ده چه خفه شوې وی) پس ابان رضی اللہ عنہ او وې:

(انت يا وبر تحدر علينا من راس ضال) یعنی ابان رضی اللہ عنہ ابوهریره رضی اللہ عنہ ته په غصه او خفگان سره او وې چه ای مېرې ته دا خبره کوې؟ **(انت بها ای انت تقول بهذه الكلمة)** هغه ابوهریره رضی اللہ عنہ ته وبرد سپکاوی په طور وئیلې دی (وبر زمونږ د ژبې په اعتبار سره مونث دې په دې وجه وړاندې ترجمه هم د هغې مطابق ده) کوم چه راگوز شوې دې زمونږ خواته د یو ځنگل نه، د **(ضال)** تفسیر امام بخاری په **(السد البری)** سره کړې دې یعنی ځنگلی بیر، په دې باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ابان رضی اللہ عنہ ته او فرمائیل چه کینه ای ابان یعنی جنگ مه کوئ، وړاندې راوی فرمائی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د دې خلقو په مال غنیمت کښې حصه مقرر نه کړه.

د حدیث توجیه د احنافو د طرف نه

دا حدیث په ظاهره کښې د جمهورو موافق او د احناف خلاف دې، ځکه چه د مال غنیمت نه اوسه پورې احراز شوې وو او نه تقسیم شوې وو، خو انقضاء قتال شوې وو، د دې جواب د

احنافو د طرف نه بعض حضراتو دا کړې دې چه کله خیبر د مسلمانانو په قبضه کښې راغلو نو گویا هغه دار الاسلام جوړ شو، لهذا احراز غنیمت بیا موندلې شو.

[۲۷۲۴] (۱) حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ يَحْيَى الْبَلْخِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، وَسَأَلَهُ إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ، فَحَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، أَنَّهُ سَمِعَ عَنَسَةَ بِنَ سَعِيدِ الْقُرَشِيِّ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِخَيْبَرَ جِئْنَا فَتَسَلَّمْنَا فَسَأَلْتُهُ أَنْ يُسَهِّرَ لِي فَتَكَلَّمَ بَعْضُ وُلْدِ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ فَقَالَ: لَا تُسَهِّرْ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: فَقُلْتُ: هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلٍ، فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْعَاصِ: يَا عَجَبًا لَوْ بَرَّ قَدْ تَدَلَّى عَلَيْنَا مِنْ قَدْ وِرْضَالٍ يُعَذِّبُنِي بِقَتْلِ امْرِئٍ مُسْلِمٍ أَكْرَمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى يَدَيَّ، وَلَمْ يَهِنِ عَلَى يَدَيْهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هُوَ لَاءِ كَانُوا نَحْوَ عَشْرَةِ فُقُتِلَ مِنْهُمْ سِتَّةٌ، وَرَجَعَ مَنْ بَقِيَ.

د ابوهریره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه مدینې ته راغلم اونبې رضی اللہ عنہ په خیبر کښې وو دفتح کولو په وخت کښې مانبې رضی اللہ عنہ ته اووئیل چه زما دپاره هم حصه مقرر کړئ نو د سعید بن العاص په خامنو کښې یوکس ووئیل چه مونږ خودته هیڅ کله حصه نه ورکووما ووئیل همدا سرې دابن قوقل قاتل دي، سعید بن العاص وویل زه ددې وبرنه تعجب کوم چه دضال غرنه راکوزشوي دي او مادیو مسلمان په قتل باندي رتي چاته چه الله تعالی زما په لاسو عزت ورکړې دې اوزه تې دهغه په لاسونه یم ذلیل کړي چه دکفر په حالت کښې دهغه دلاس نسه مرشوي وي. ابوداود وائی چه دوی تقریبا لس کسان وو شپږ کسان قتل کړي شول اوباقی پاتې واپس راغلل.

د دې حدیث په دویم طریق کښې مضمون د دې برعکس دې، په هغې کښې داسې دی ﴿عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ وَرَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - بِخَيْبَرَ جِئْنَا فَتَسَلَّمْنَا فَسَأَلْتُهُ أَنْ يُسَهِّرَ لِي فَتَكَلَّمَ الخ﴾

شرح حدیث

سیدنا ابوهریره رضی اللہ عنہ فرمائی چه زه د اسلام د قبلولو دپاره مدینې منورې ته راغلم، هلته چه راغلم نو راته معلومه شوه چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د غزوه خیبر دپاره تشریف اورلې دې، زه هلته لارم په داسې حال کښې چه هغه خیبر فتح کړې وو، ما رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته درخواست اوکړو چه زما حصه هم مقرر کړئ نو په دې باندي ابان بن سعید رضی اللہ عنہ عرض اوکړو چه یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د ابوهریره حصه مه مقرر کوئ، ابوهریره رضی اللہ عنہ فرمائی چه د دې په جوابی کارروایی کښې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته عرض اوکړو ﴿هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلٍ﴾ چه یا رسول الله! ابان خود نعمان بن قوقل صحابی رضی اللہ عنہ قاتل دې، یعنی دا ډیر غلط سرې دې ﴿فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْعَاصِ﴾ دلته په روایت کښې سعید بن العاص دې خود سیاق تقاضه دا ده چه دلته ابان بن سعید کیدل پکار دی. چه کله ابوهریره رضی اللہ عنہ ابان ته د یو صحابی قاتل اووې او په هغه ئې د قتل الزام اولگولو نو د هغې په جواب کښې ورته ابان اووې چه تعجب دې په هغه مړه باندي کوم چه زمونږ خواته د ځنکلی بیرې نه راکوزه شوې ده چه ماته پیغورونه کوی د یو مسلمان په قتل باندي، حال دا چه الله پاک زما په لاس باندي هغه ته عزت ورکړو (چه زما د وجې نه ورته د

شهادت مرتبه ملاؤ شوه، او زه ئې د هغه په لاسونو باندې ذليل او رسوانه کړم. د دې دواړو روایتونو په مضامین کښې چه کوم فرق دې د سوال او جواب د ترتیب په اعتبار سره د هغې جواب بعض محدثین لکه امام ذهلی رحمته الله علیه خو داسې ورکړې دې چه اول روایت ئې راجح کړې او دویم ئې مرجوح کړې دې، او بعض جمع بین الروایتین داسې کړې ده چه کیدې شی دواړه خبرې موندلې شوې وی، د ابوهریره رضی الله عنه په طلب باندې ابان دا اووې، او د ابان په طلب باندې ابوهریره رضی الله عنه دا اووې... حدیث الباب الاول اخرجہ البخاری تعليقا، والثانی اخرجہ البخاری (مسند) قاله المنذری.

[۲۷۲۵] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ، حَدَّثَنَا بَرِيدٌ، عَنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: قَدِمْنَا فَوَافَقْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِئْنَا فَفَتَحَ خَيْبَرَ فَأَسْهَمَ لَنَا، أَوْ قَالَ فَأَعْطَانَا مِنْهَا وَمَا قَسَمَ لِأَحَدٍ غَابَ عَنْ فَتْحِ خَيْبَرَ مِنْهَا شَيْئًا إِلَّا لِمَنْ شَهِدَ مَعَهُ إِلَّا أَصْحَابَ سَفِينَتِنَا، جَعَفَرُ وَأَصْحَابُهُ فَأَسْهَمَهُمْ هُمْ مَعَهُمْ.

د ابو موسی رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د حبشي نه راغلو او مونږ نبي صلی الله علیه و آله ته په داسې وخت کښې راغلو چه خیبر فتح شوې وو نونبې صلی الله علیه و آله مونږ ته د خیبر د غنیمت په مال کښې حصه راکړه او که داسې ئې وئیلی دی چه مونږ ته ئې څه راکړل او ددې نه ئې د داسې کس دپاره حصه مقرر نکره کوم چه په دې وخت کښې حاضر نه وو علاوه دهغه کسانونه کوم چه دنبي صلی الله علیه و آله سره حاضر وو او په جهاد کښې شریک و البته دکشتی خلق یعنی جابر بن ابی طالب او دهغه ملگرو ته بسی حصه ورکړه.

شرح حدیث

سیدنا ابو موسی اشعری رضی الله عنه د اصحاب الهجرتین نه دې، د هغه هجرت ثانیه کوم چه د حبشه نه د مدینې منورې طرف ته شوې دې د هغې حال بیان فرمائی او چونکه د حبشه او مدینې تر مینځه سمندر دې او په کشتی باندې تلل راتلل وو په دې وجه هغه او د هغه ملگرو نه په اصحاب السفینه سره هم تعبیر کولې شی، نو هغه فرمائی چه کله مونږ د حبشي نه راغلو چه اول به مدینې منورې ته رارسیدلې وی، هلته رارسیدو سره معلومه شوه چه رسول الله صلی الله علیه و آله په فتح خیبر کښې مشغول دې نو دې هم د ابوهریره رضی الله عنه په شان هلته لاړو، ابو موسی رضی الله عنه فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله زمونږ د ټولو ملگرو د خیبر په غنیمت کښې حصه مقرر کړه، او زمونږ نه علاوه څوک هم داسې نه وو چه هغه دې د فتح خیبر په وخت موجود نه وی او د هغه حصه ئې مقرر کړې وی، په اصحاب سفینه کښې هغه د جعفر بن ابی طالب رضی الله عنه نوم هم اخلی.

دلته سوال دا دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله د ابان بن سعید رضی الله عنه او ابوهریره رضی الله عنه دپاره په خیبر کښې حصه مقرر نه کړه او د اصحاب سفینه دپاره ئې حصه مقرر کړه او حال دا چه د دواړو نوعیت یو دې، د دې په جواب باندې د پوهیدلو دپاره اول په دې ځان پوهه کړئ چه

۱: صحیح البخاری لفرض الخمس ۱۵ (۳۱۳۶)، والمناقب ۲۷ (۲۸۷۶)، والمغازي ۲۸ (۴۲۳۰)، سنن الترمذی للسیر ۱۰ (۱۵۵۹)، (تحفة الأشراف: ۹۰۴۹)، وقد أخرجہ: صحیح مسلم للفضائل الصحابة ۴۱ (۲۵۰۲)، مسند احمد (۴/۳۹۴)، ۴۰۵، (۴۱۲) (صحیح)

ابوہریرہ او ابان سرہ چه کومه معاملہ رسول اللہ ﷺ او کرہ ہغہ د جمہورو د مسلک موافق وہ او د احنافو د مسلک خلاف وہ، او د اصحاب سفینہ سرہ چه نپ کومه معاملہ او کرہ خو د احنافو د مسلک خو مطابق وہ خو د جمہورو د مسلک خلاف دہ، زمونږ موافق پہ دې وجہ دہ چه د مال غنیمت نہ خو لا تر اوسہ پورې احرار شوې وو او نہ ہغہ تقسیم شوې وو، او پہ دې صورت کبسی زمونږ پہ نزد دلته اسہام وی، لہذا د رسول اللہ ﷺ دا معاملہ د اصحاب سفینہ سرہ د احنافو د اصولو خو مطابق دہ خو د جمہورو خلاف دہ، خو چونکہ احنافو پہ اولنی حدیث یعنی د ابوہریرہ رضی اللہ عنہم پہ قصہ کبسی دا وئیلې دی د اشکال نہ د بیج کیدو دپارہ چه هلته احرار شوې وو پہ دې وجہ رسول اللہ ﷺ د ہغوی حصہ مقرر نہ کرہ کما تقدم منا انفا. اوس د دې جواب پہ رنږا کبسی د اصحاب سفینہ سرہ د رسول اللہ ﷺ معاملہ زمونږ د مسلک خلاف کیږی، د دې توضیح د پیژندلو نہ پس اوس د اصل اشکال جواب واورئ یعنی پہ دوارو قصو کبسی وجہ د فرق، او ہغہ فرق علماء کرامو احتمالا دا بیان کرې دې چه ممکنہ دہ چه د اصحاب سفینہ اسہام د غانمین پہ رضا باندي وی، یا د اصل غنیمت نہ نہ وی بلکه د خمس نہ وی کوم چه د بیت المال دپارہ وی، بلکه توجیہ دا کرې شوې دہ چه لعل اصحاب السفینة بلغوا قبل تمام الفتح. یعنی ہغہ وخته پورې کامل طریقې سرہ فتح نہ وہ شوې، پہ خلاف د ابوہریرہ رضی اللہ عنہم چه د ہغہ د رارسیدو پورې کاملہ فتح شوې وہ.

(وهذا التوجيه الاخير من قبل الجمهور دون الحنفية) والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي مختصرا ومطولا، قاله المنذرى).

[۲۷۲۶] (حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَوْسَى أَبُو صَالِحٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو اسْحَاقَ الْغَزَارِيُّ، عَنْ كَلْبِ بْنِ وَائِلٍ، عَنْ هَانِئِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ يَوْمَئِذٍ فَقَالَ: إِنْ عُمَانٌ انْطَلَقَ فِي حَاجَةِ اللَّهِ، وَحَاجَةِ رَسُولِ اللَّهِ، وَإِنِّي أَبَايَهُمْ لَهَقَّضَرَبَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَهْمٍ، وَلَمْ يَضْرِبْ لِأَحَدٍ غَيْرَهُ.

د ابن عمر رضی اللہ عنہم نہ روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ د بدر پہ ورخ اودریدو اووئې وئیل یقینا عثمان دالله اودالله درسول پہ کار پسې تلې دې اوزه دہغہ دپارہ بیعت کوم اونبی ﷺ دہغہ دپارہ حصہ مقرر کرہ اودہغہ نہ ئی علاوہ دہیخ چادپارہ حصہ مقرر نہ کرہ.

ابن عمر رضی اللہ عنہم فرمائی چه رسول اللہ ﷺ د بدر پہ ورخ باندي د تقسیم غنیمت نہ مخکبسی اودریدو او وې فرمائیل چه بیشک عثمان د الله او د ہغہ د رسول ﷺ پہ کار کبسی تلې دې، اوزه د ہغہ دپارہ بیعت کوم، یعنی رسول اللہ ﷺ خپل یو لاس د ہغہ لاس اومنلو او د خپل دویم لاس سرہ ئې یوخائې کرو، او بیائې د بدر غنیمتونه تقسیم کرل او باقاعدہ د عثمان رضی اللہ عنہم حصہ ئې ہم مقرر کرہ.

سیدنا عثمان رضی اللہ عنہم رسول اللہ ﷺ د خپلې زوجہ محترمہ سیدہ رقیہ رضی اللہ عنہم د خیال ساتلو دپارہ پہ مدینہ کبسی پریخودلې وو، ہم دا مراد دې د رسول اللہ ﷺ د دې قول نہ چه ہغہ د الله او د ہغہ د رسول ﷺ د کار دپارہ تلې دې، پس فقہاء کرامو ہم د دې واقعې نہ دا مسئلہ

مستنبط کړې ده چه که یو سړې په جهاد کښې د دې وجې نه شریک نه شی چه هغه د مسلمانانو امام د مسلمانانو په یو کار باندي مقرر کړې دې نو د هغه به په مال غنیمت کښې حصه وی.

وراندې په روایت کښې دی، راوی فرمائی چه رسول الله ﷺ د عثمان نه علاوه د بل یو سړی هم په غنیمت کښې حصه نه ده لگولې کوم چه په جنگ کښې شریک شوي نه وو، په دې باندي حضرت په بذل کښې لیکلې دی چه دا خبره راوی د خپل علم په اعتبار سره کوی گینې بعض خلق نور هم داسې شته چه د هغوی حصه مقرر کړې شوې ده. په دې روایت باندي اشکال دا دې چه په جنگ بدر کښې د بیعت قصه کوم ځانې کښې راغلې ده، هغه خو په غزوه حدیبیه کښې راپېښه شوې وه کوم ته چه بیعة الرضوان وئیلې شی، هم په دې وجه وئیلې شوې دی چه غالباً دا د کوم راوی وهم دې (کذا فی العون ولم يتعرض له فی البذل)

بَابُ فِي الْمَرْأَةِ وَالْعَبْدِ يُحْدِيَانِ مِنَ الْغَنِيمَةِ

غلامانو او بنحو ته په غنیمت کښې د حصې ورکولو بیان

د دې باب تعلق د مواضع تقیسم غنیمت سره دې، د دې کلی او جامع باب خو به وړاندې راشی، باب فی مواضع قسم الغنیمه، دا هم د دې جامع باب یوه کړی ده، هغه دا چه زنانه او عبد که په جهاد کښې شرکت کوی نو د هغوی دپاره به په غنیمت کښې حصه وی یا نه، د ائمه اربعه په نزد زکوره او حریت د غنیمت د حصې په شرطونو کښې دې، لهذا د دې دواړو به باقاعده حصه نه وی، خو حذوه یعنی د عطیه په طور به ورته څه معمولی څیز ورکولې شی، دې معمولی څیز ته حذوه او رضخ دواړو سره تعبیر کولې شی د زنانه او غلام دپاره د رضخ کیدل د ائمه ثلاثه په نزد دی، امام مالک د دې هم قائل دې، اصل مسئله کښې د امام اوزاعی او حسن بن صالح اختلاف دې، د اوزاعی صرف د زنانه په باره کښې او د حسن بن صالح صرف د غلام په باره کښې، دا دواړه د حصې قائل دی، خو د احنافو په نزد د عبد نه مراد عبد غیر ماذون دې د چا دپاره چه حصه نشته په خلاف د ماذون عبد... فانه فی حکم الحر فی هذه المسئلة، په ترجمه الباب کښې لفظ د «یحذیان» مضارع مجهول صیغه ده، احدی یحذی احداء نه، چه د هغې معنی د ورکړې ده خاص کر مال غنیمت سره.

[۲۷۲۷] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حَسْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ الْمُخْتَارِ بْنِ صَيْفِيٍّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ هُرْمَزٍ، قَالَ: كَتَبَ نَجْدَةَ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْأَلُهُ عَنْ كَذَا وَكَذَا وَذَكَرَ أَشْيَاءَ، وَعَنْ الْمَمْلُوكِ أَلَهُ فِي الْقَيْءِ شَيْءٌ، وَعَنْ النِّسَاءِ هَلْ كُنْ يَخْرُجْنَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَهَلْ هُنَّ نَصِيبٌ؟ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَوْلَا أَنْ يَأْتِيَ أَحْمَقَةٌ مَا كَتَبْتُ إِلَيْهِ، أَمَّا الْمَمْلُوكُ فَكَانَ يُحْدِي، وَأَمَّا النِّسَاءُ فَقَدْ كُنَّ يَدَاوِينَ الْحَرَمِيِّ وَيَسْقِينَ الْمَاءَ.

د یزید بن هرمنز نه روایت دې چه نجده ابن عباس ته اولیکل اودهغه نه شي ډیر معلوماتونه حاصلول غوښتل اودانې هم معلومول چه که غلام په جهاد کښې شریک شي نو هغه ته به

(١) صحیح مسلم للجهد ٤٨ (١٨١٢)، سنن الترمذی للسير ٨ (١٥٥٦)، سنن النسائی للفي (٤١٣٨)، مسند احمد (٦٥٥٧) (صحیح)

حصه ورکولې شی او که نه؟ او زنانه به هم د نبی ﷺ سره جهاد ته تلي ایا هغوی ته به حصه ورکولې شوه او که نه؟ نو ابن عباس او وئیل که چرې ماته دا ویره نه و چه دوی به بې وقوفی او کړي نومابه دوی ته جواب نه وو لیکلې بیا ابن عباس رضی الله عنه دوی ته جواب اولیکلو چه غلام ته په طور دانعام یوڅه ورکولې شی او زنانو و خو به دزخميانو علاج کرو او هغوی ته به ئې اوبه ورکولې (نجده دخوارجو دامیر نوم دي).

مضمون الحديث

نجده حروری رئیس الخوارج د ابن عباس رضی الله عنه نه خو مسائل او تپوسل چه په هغې کښې یو تپوس د مملوک په باره کښې وو چه د هغه په مال غنیمت کښې حصه شته یا نه، او بل تپوس ئې د زنانو متعلق وو چه ایا هغه به د رسول الله ﷺ په زمانه کښې د جهاد دپاره وتلې، او ایا د هغوی دپاره به باقاعده حصه وه؟ نو د دې په جواب کښې ورته ابن عباس رضی الله عنه او فرمائیل: (لولا ان یاتی احموقه ما کتبت الیه) که ماته د دې خبرې ویره نه وه چه معلومه نه ده هغه به په حماقت کښې څه او کړی نو ما به هغه ته جواب نه وو لیکلې، په ظاهره کښې ابن عباس د هغه نجده په فاسد العقیده کیدو باندي د نفرت اظهار کوی، خو چونکه د دینی مسئلې خبره ده په دې وجه ئې مجبوراً لیکي، بهر حال هغه په جواب کښې اولیکل چه او مملوک ته د عطیه په طور څه ورکولې شی، او زنانه به هم د مجروحین د خیال ساتلو او خدمت په نیت باندي جهاد ته تللي.

د دې نه روستو روایت کښې د ابن عباس په جواب کښې د زنانو متعلق دا دی (وقد کان یرضخ لهن) چه او هغوی ته به رضخ ورکولې شو، د رضخ ذکر په الدر المنصود جلد اول باب الغسل من الحيض کښې ضمناً د حدیث د لاندې راغلي دي، او هلته مونږ دا هم لیکلې وو چه ددې اصل محل کتاب الجهاد دي. فتذکر. والحديث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی مختصراً ومطولاً، قاله المنذری.

[۲۷۲۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ يَعْنِي الْوُهَيْبِيَّ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ، وَالزُّهْرِيِّ عَنْ يَزِيدَ بْنِ هُرْمَزٍ، قَالَ: كَتَبَ نَجْدَةُ الْحُرُورِيِّ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْأَلُهُ عَنِ النِّسَاءِ هَلْ كُنَّ يَشْهَدْنَ الْحَرْبَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَهَلْ كَانَ يُضْرَبُ لَهُنَّ بِسَهْمٍ؟ قَالَ: فَأَنَا كَتَبْتُ كِتَابَ ابْنِ عَبَّاسٍ إِلَى نَجْدَةَ قَدْ كُنَّ يَحْفَرْنَ الْحَرْبَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَمَّا أَنْ يُضْرَبَ لَهُنَّ بِسَهْمٍ فَلَا وَقَدْ كَانَ يُرَضَّخُ لَهُنَّ.

دیزید بن هرمز نه روایت دي چه نجده ابن عباس ته اولیکل اودهغه نه ئې دزنانو په باره کښې معلومات حاصلوو چه ایا زنانه به د نبی ﷺ سره جهاد ته حاضریدلي؟ او ایا ددوی دپاره به ئې حصه مقرروله؟ ما د ابن عباس رضی الله عنه د طرف نه دا جواب اولیکو چه په دور نبوی کښې زنانه به په جهاد کښې شریکیدلي او ددوی دپاره به څه مقرره حصه نه وه بلکه په طور دانعام به ورته یوڅه ملا ویدل.

[۲۷۲۹] حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعِيدٍ، وَغَيْرُهُ، أَخْبَرَنَا زَيْدُ بْنُ الْحَبَابِ، قَالَ: حَدَّثَنَا رَافِعُ بْنُ سَلَمَةَ بْنِ زِيَادٍ، حَدَّثَنِي حَشْرَجُ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ جَدِّهِ أَمْرِئِيهِ، أَنَّهَا خَرَجَتْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةِ خَيْبَرَ سَادِسَ سِتِّ نِسْوَةٍ، قَبْلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَعَثَ إِلَيْنَا فُجَيْنًا فَرَأَيْنَا فِيهِ الْقَضَبَ فَقَالَ: "مَعَ مَنْ خَرَجْتُمْ وَيَأْذِنُ مَنْ خَرَجْتُمْ؟ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ خَرَجْنَا نَغْزِلُ الشَّعْرَ وَلَعِينُ بِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَعَنَا دَوَاءُ الْجُرْحَى وَتَنَاوُلُ السِّهَامِ وَنَسْقِي السَّوِيقَ، فَقَالَ: قُمْنَ. حَتَّى إِذَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ خَيْبَرَ أَتَاهُمْ لَنَا كَمَا أَتَاهُمْ لِلرِّجَالِ قَالَ: قُلْتُ لَهَا: يَا جَدَّةُ وَمَا كَانَ ذَلِكَ قَالَتْ: تَمْرًا".

حشرج بن زیاد دخپلي نيا (دپلار دطرفه) نه روایت کوي چه دا دنبي ﷺ سره دخيبر جهاد ته تلي وه اودا په شپږو کښې شپږمه ښځه وه ام زیاد وائی کله چه نبی ﷺ خبر شو نومونږ ئې راوغوښتلو مونږ چه لارو نو نبی ﷺ په غصه کښې وو زمونږ نه ئې تپوس او کړو چه تاسو ه چاسره راوتلي ئې اودچاپه حکم باندي راوتلي یې؟ مونږ اووئیل ای دالله رسوله مونږ چه راوتلو مونږ ورئ ریشلي وي او مونږ دهغي په ذریعه دالله په لار کښې امداد کوو او زمونږ سره دزخمیانو دپاره دوائی ده او م ونږ مجاهدینو ته غشي ورسوو او ستوان تقسیموو، نبی ﷺ او فرمائیل لارې شی نوکله چه خیبر الله تعالی فتح کړو نو زمونږ دپاره ئې حصه هم مقرر کړه دنارینو دپاره ئې حصې مقررې کړې وي راوي وائی چه ما اووئیل ای نیا هغه څه شې وو (چه په غنیمت کښې درکړلي شو) هغې اووئیل کجوري.

﴿ حَدَّثَنِي حَشْرَجُ بْنُ زِيَادٍ عَنْ جَدِّهِ أَمْرِئِيهِ أَنَّهَا خَرَجَتْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - فِي غَزْوَةِ خَيْبَرَ الْخ ﴾ حشرج بن زیاد دخپلي نيا ام زیاد الاشجعيه نه روایت کوي، هغه وائی چه مونږ شپږ زنانه د رسول الله ﷺ سره غزوه خیبر ته لارو، هغه ته چه کله د دې خبر اوشو نو هغه مونږ پسې یو سرې راولیږلو، چه کله مونږ د هغه خواته لارو نو مونږ اوکتل چه هغه غصه دې، هغه زمونږ نه تپوس او کړو چه تاسو د چا سره راوتلي یئ او د چا په اجازت راوتلي یئ؟ هغه وائی چه مونږ عرض او کړو یا رسول الله ﷺ مونږ راوتلي یو د دې دپاره چه مالوچ تقسیم کړو (الغزل بالفارسية په معنی د رشتن، غښتل) د دې دپاره چه هغه په جهاد کښې په کار راشی، او مونږ سره دوائی ده د مجروحین دپاره، او د دې دپاره چه مونږ مجاهدینو ته غشي ورکړو، او په هغوی باندي ستوان وغیره اوځکوو، رسول الله ﷺ زمونږ جواب اوریدلو سره او فرمائیل ښه اودریږئ، تردې چه کله الله پاک په رسول الله ﷺ باندي خیبر فتح کړو ﴿ اسهم لنا كما اسهم للرجال ﴾ نو رسول الله ﷺ په غنیمت کښې زمونږ دپاره هم حصه مقرر کړه څنگه چه ئې د سرو دپاره مقرر کړې وه.

هم دا روایت د امام اوزاعی مستدل دې، جمهور فرمائی چه د دې نه مراد رضخ دې، حشرج وائی چه ما د هغې نه تپوس او کړو چه په حصه کښې درته څه ملاؤ شو نو هغې اووې چه کهجوري. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى.

۱: تفرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۱۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۱/۸، ۳۷۱) (ضعيف)

[۲۷۳۰] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَشْرُ يَعْنِي ابْنَ الْمُفَضَّلِ، عَنِ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَيْرُ مَوْلَى أَبِي اللَّحْمِ، قَالَ: شَهِدْتُ خَيْبَرَ مَعَ سَادَتِي فَكَلَّمُوا فِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَنِي فَقُلِدْتُ سَيْفًا فَإِذَا أَنَا أَجْرَةٌ فَأَخْبِرُنِي مَمْلُوكٌ فَأَمَرَنِي بِشَيْءٍ مِنْ خُرْتِي الْمَتَاعِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: مَعْنَاهُ أَنَّهُ لَمْ يُسْهِمَ لَهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَقَالَ أَبُو عُبَيْدٍ: كَانَ حَرَمَ اللَّحْمِ عَلَى نَفْسِهِ فَسَمِيَ أَبِي اللَّحْمِ.

دعمير «دابواللحم ازاد کړې شوي غلام» نه روایت دې فرمائی چه زه دخپلو مالکانوسره دخيبر غزاته لارم هغې زما په باره کښې نبي ﷺ ته او وئيل چه دې دخان سره بوخو او که نه نبي ﷺ اجازت ورکړو اوماته يسي حکم اوکړو نوماتوره غاري ته واچوله داسې توره چه په زمکه مې رانښکله نبي ﷺ ته خبر ورکړې شو چه دې خو غلام دې نونبې ﷺ ماته دانعام په طور باندي دکور دسامان نه يوخه راکړل.

شرح حديث

عمير صحابی رضي الله عنه کوم چه ازاد کړې شوي غلام دې، د يو بل صحابی ه د هغه لقب ابی اللحم مشهور دې او په نوم کښې ئې اختلاف دې، عبدالله يا خلف يا الحويرث الغفاري، د ابوداود په بعض نسخو کښې دې: قال ابو عبيد: كان حرم اللحم على نفسه فسمى ابو اللحم) ابو عبيد قاسم بن سلام فرمائی چه هغه ته ابو اللحم په دې وجه وئيلې شي چه هغه د اسلام قبلولو نه مخکښې چه کوم خاروی د بتانو په نوم باندي ذبح کولې شو د هغې غوښه په خپل خان باندي حرام کړې وه، يعنی د هغې نه به ئې پرهيز کولو، هغه

واښي چه زه دخپلو مالکانو سره دخيبر په غزوه کښې شريک شوم چه د هغې صورت دا شو چه زما مالکانو زما په باره کښې رسول الله ﷺ سره خبره کړې وه نو هغه زما په باره کښې اجازت ورکړو، هغه فرمائی چه ماته په غاړه کښې يوه توره واچولې شوه (لکه چه د مجاهدينو په غاړه کښې وي) نو ما هغه دخان سره رانښکله، يعنی هغه ما سره په زمکه لگيدلې تله «د هغه دکم عمرئ اود قد د وړوکوالی دوجې نه، وړاندي فرمائی چه د تقسيم غنيمت په وخت زما باره کښې عرض اوکړې شو چه دا غلام دې، پس رسول الله ﷺ زما دپاره دکور د استعمال د معمولی سامان د ورکولو حکم او فرمائيلو يعنی کتوئ او لوبښي وغيره، الاواني المنزلية... د دې نه معلومه شوه چه د مملوک دپاره باقاعده حصه نه وي، خو دلته به يو اشکال وي چه هغه اگر چه عبد وو خو عبد ماذون للقتال وو کوم چه د احنافو په نزد په حکم د ازاد کښې دې، د دې جواب به کيدې شي چه دا وي چه دې صرف عبد نه دې بلکه صغير هم دې لکه چه د ابوداود په بعض نسخو کښې دې. قال ابوداود: معناه انه لم يسهم له لصغره.... والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى.

[۲۷۳۱] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنِ أَبِي سَفْيَانَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: كُنْتُ أَمِيرَ أَصْحَابِي الْمَاءِ يَوْمَ يَدْرٍ.

۱: سنن الترمذی/السير ۹ (۱۵۵۷)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۳۷ (۲۸۵۵)، (تحفة الأشراف: ۱۰۸۹۸)، وقد أخرجه: مستند احمد (۲۲۳/۵)، سنن الدارمي/السير ۳۵ (۲۵۱۸) (صحیح)
 ۲: تهرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۲۳۲۸) (صحیح)

ترجمه: د جابر نه روایت دې فرمائي چه مابه دبدر په ورځ باندي د مسلمانانو د پاره داوبونه لوبښي راډکول.

شرح حديث

سیدنا جابر رضی اللہ عنہ فرمائي چه زه په په جنگ بدر کښې په بوقه کښې اوبه اورلو سره خپلو اصحابو ته ورکولې په بعض نسخو کښې دا زیادت دې (معناه لم یسهم له) د جابر د عدم اسهام وجه هم دا ده چه هغه دې وخت کښې ماشوم وو چه د هغې قرینه خپله په روایت کښې موجود ده چه مابه په بوقه کښې اوبه اچولې، د دې نه معلومه شوه چه هغه به اوبه ډکولې او اوبه رانښکلو والا بل څوک وو، د ماح یمیح میحا معنی هم دا ده چه اوبو ته کوزیدلو سره د هغې نه لوبښې ډکول، ظاهره ده چه دا کار ماشوم هم کولې شی، د بوقې د ډکیدو نه پس د هغې رانښکل دا د طاقت وړ سړی کار دې.

خان پوهه کړئ چه ډکونکی ته مائع او رانښکونکی ته ماتح وئیلې شی، فقد قال الخطابی المائع هو الذي ينزل الى اسفل البير فيملا الدلو ويرفعها الى المائع وهو الذي ينزع الدلو. اه

بَابُ فِي الْمُشْرِكِ يُسَهَّمُ لَهُ

کله چه مشرک د مسلمانانو سره په جهاد کښې شریکوی نو دده د پاره به حصه وی او که نه؟

[۲۷۳۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَبَحْبِيُّ بْنُ مَعِينٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ الْقُضَيْلِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نِيَارٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ: يَحْيَى إِنَّ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ لَحِقَ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُقَاتِلَ مَعَهُ فَقَالَ: ارْجِعْ، ثُمَّ اتَّفَقَا فَقَالَ: إِنَّا لَا نَسْتَعِينُ بِمُشْرِكٍ.

دام المومنين عائشه رضی اللہ عنہا نه روایت دې چه د مشرکانو نه يو کس نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته راغې او د نبی صلی اللہ علیہ وسلم سره یی جهاد شروع کړو نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل واپس شه مونږ ته د مشرک مدد نه دې پکار.

استعانة بالمشرك كسبي مذاهب ائمه

دلته دوه مسئلې دي، يو د استعانة بالمشرك كومه چه په حديث الباب كښې ذكر ده يعنى مسلمان د خپل خان سره جهاد ته يو مشرك بوتلې شی د دې د پاره چه هلته په كار راشی؟ او بله مسئله دا ده چه هغه خان سره بوتلې شو نو د هغه د پاره به په مال غنيمت كښې حصه وی يا نه؟ دواړه مسئلې اختلافی دي، اوله مسئله كومه چه په حديث الباب كښې هم ذكر ده (انا لا نستعين بمشرك) په دې كښې د امام احمد رضی اللہ عنہ نه دوه روايتونه دي د جواز او عدم جواز، او د احنافو په نزد مطلقا جواز دې، او د شوافعو په نزد جواز بشرطين دې يو دا چه هغه د مسلمانانو په باره كښې حسن الرائي وی، دويم حاجت الی

۱: صحيح مسلم/الجهاد ۵۱ (۱۸۱۷)، سنن الترمذي/السير ۱۰ (۱۵۵۸)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۲۷ (۲۸۳۲)، تحفة الأشراف: (۱۶۳۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۷/۱، ۱۴۸)، سنن الدارمي/السير ۵۴ (۲۵۳۸) (صحيح)

الاستعانة^(۱) یعنی یو خو دا چه په هغه مشرک کښې تعصب نه وی او هغه شری نه وی، بل دا چه واقعی د استعانت حاجت هم وی، که حاجت نه وی یا هغه متعصب وی نو بیا جائز نه ده، او د امام مالک رضی الله عنه په نزد د استعانت جواز په دې صورت کښې دې چه کله هغه د بوتلونکو په خادمانو کښې وی، دا مذاهب خو شو په مسئله اولی کښ، او پاتې شوه بله مسئله د حصو نو د داسې سړی دپاره حصی صرف د امام احمد په نزد دی فی الراجح عنده، په دې وجه د هغوی په نزد اسلام شرائط اسهام نه نه دې بلکه صرف دا خلور خیزونه دی بلوغ، عقل، حریه، ذکوره، کما فی الاوجز (ص ۳۹ ج ۴) او عند الجمهور ومنهم الائمة الثلاثة د هغه دپاره د غنیمت حصه نشته، او په مسئله اولی کښې د احنافو دلیل هغه دې کوم چه هم په دې کتاب کښې په باب تضمین العاریة کښې راروان دې (بذل ص ۳۰۲ ج ۴) چه رسول الله صلی الله علیه وسلم په جنگ حنین کښې استعانت فرمائیلي وو په صفوان بن امیه سره د وسلې په استعاره سره د هغه د اسلام د راوړلو نه مخکښ. وحديث الباب اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه بنحوه، قاله المنذری.

باب فِي سَهْمَانِ الْخَيْلِ

په غنیمت کښې داس دپاره د حصی بیان

سهم خیل باندي خو د ټولو اتفاق دې چه د اس باقاعده حصه په مال غنیمت کښې وی خو د دې مقدار کښې اختلاف دې ائمه خمسہ یعنی ائمه ثلاثه او صاحبین په نزد د فرس دپاره دوه حصی دی، لهذا فرس او فارس دواړه یوځائی کیدو سره درې حصی شوې او د امام صاحب په نزد د فرس دپاره یوه حصه ده، لهذا د فارس دپاره به دوه حصی وی یو د هغه او یو د هغه داس.

[۲۷۲۳] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَسْهَمَ لِرَجُلٍ وَلِفَرَسِهِ ثَلَاثَةَ أَسْهُمٍ سَهْمًا لَهُ، وَسَهْمَيْنِ لِفَرَسِهِ.

د ابن عمر نه روایت دې فرمائي چه نبی صلی الله علیه وسلم سورلي والاته درې حصی ورکړي یوه دده خپله حصه او دوه حصی داس.

﴿عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - أَسْهَمَ لِرَجُلٍ وَلِفَرَسِهِ ثَلَاثَةَ أَسْهُمٍ سَهْمًا لَهُ وَسَهْمَيْنِ لِفَرَسِهِ﴾ دا حدیث د ائمه ثلاث او د صاحبینو دلیل دې، او د امام صاحب دلیل په راروان باب کښې راځی، چه په هغې باندي مصنف مستقل ترجمه قائم کړې ده او د دې حدیث

^۱ فقد ترجم النووي بباب كراهة الاستعانة في الغزوبكافر الالحاجة او كونه حسن الرأي في المسلمين علي حدیث مسلم عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم - أنها قالت خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم - قبل بدر فلما كان ببحرة الوبرة أدركه رجل قد كان يذکر منه جرأة وتجدد ففرح أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم - حين رأوه فلما أدركه قال لرسول الله صلى الله عليه وسلم - جئت لأبغضك وأصيب معك قال له رسول الله صلى الله عليه وسلم - ؟ تؤمن بالله ورسوله ؟ قال لا قال ؟ فأرجع فلن أسمعین بمشرك ؟ الحدیث اخرجه مسلم ص ۱۸ ج ۲

^۲ : سنن ابن ماجه للجهد ۳۶ (۲۸۵۴)، (تحفة الأشراف: ۸۱۱۱)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للجهد ۵۱ (۲۸۶۳)، المغازي ۲۸ (۴۲۲۸)، صحيح مسلم للجهد ۱۷ (۱۷۶۲)، سنن الترمذی للسیر ۶ (۱۵۵۴)، مسند احمد (۲/۲، ۶۲، ۷۲، ۸۰، ۱۴۳، ۱۵۲)، سنن الدارمي للسیر ۳۳ (۲۵۱۵) (صحيح)

جواب دا کیدی شی چه دا حدیث مجمل دی، د دې نه دا نه معلومیږی چه دا کلنی واقعہ کیدی شی چه د خیبر نه مخکښی واقعہ وی، لهذا منسوخ ده، او د امام صاحب دلیل یعنی د مجمع بن جاریه انصاری حدیث هغه د خیبر د غنیمتونو دې، هم دغه شان په دې کښی احتمال دې چه په دې دریو کښی یو حصه په طور د تنفیل وی او کانت القسمة اذ ذاک مفوضه الی رای الامام، والله تعالی اعلم، والحديث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی وابن ماجه، قاله المنذری.

[۲۷۲۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنِي السَّعُودِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو عَمْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: أَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعَةَ نَفَرٍ وَمَعَنَا فَرَسٌ، فَأَعْطَى كُلَّ إِنْسَانٍ مِنْهُمْ مِائَةً وَأَعْطَى لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ.

د ابو عمره پلار عبد الرحمن بن ابی عمره انصاری رضي الله عنه وائی چه مونږ څلورسړی رسول الله صلی الله علیه و آله ته راغلو او مونږ سره یو اس وو، نو هغوی رضي الله عنهم مونږ ته هر سړی ته یوه یوه حصه ورکړه، او اس ته ئی دوه حصی ورکړی.

[۲۷۲۵] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أُمِيَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا السَّعُودِيُّ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ آلِ أَبِي عَمْرَةَ، عَنْ أَبِي عَمْرَةَ يَمَعْنَاهُ إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: ثَلَاثَةٌ نَفَرًا ذَكَرَ أَنَّ لِلْفَارِسِ ثَلَاثَةَ أَشْهُمٍ.

دې سند سره هم ابو عمره نه ددې حدیث پشان رانقل دې خو په دې کښی دادی چه مونږ درې سړی وو او په دې کښی دا اضافه ده چه سور (اس والاته) درې حصی ملاؤ شوي

بَابُ فِيْمَنْ أُسْهِمَ لَهُ سَهْمًا

باب: دکومو (علماف) په نزد چه اس ته یوه حصه ورکول پکار دی دهغوی دلالت

[۲۷۲۶] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، حَدَّثَنَا هُجَيْمُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ هُجَيْمِ بْنِ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَعْقُوبَ بْنَ هُجَيْمٍ، يَذْكُرُ عَنْ عَمِّهِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ عَمِّهِ هُجَيْمِ بْنِ جَارِيَةَ الْأَنْصَارِيِّ، وَكَانَ أَحَدَ الْقُرَاءِ الَّذِينَ قَرَعُوا الْقُرْآنَ قَالَ: شَهِدْنَا الْحَدِيثَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمَّا انْصَرَفْنَا عَنْهَا إِذَا النَّاسُ يَمْزُونَ الْأَبَاعِرَ، فَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ لِبَعْضٍ مَا لِلنَّاسِ قَالُوا: أَوْحَى إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجْنَا مَعَ النَّاسِ نُوجِفُ، فَوَجَدْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَفًا عَلَى رَأْسِ رَجُلٍ عِنْدَ كِرَاعِ الْغَيْمِ، فَلَمَّا اجْتَمَعَ عَلَيْهِ النَّاسُ قَرَأَ عَلَيْهِمْ إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مَبِينًا فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفْتَحَ هُوَ، قَالَ: نَعَمْ، وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنَّهُ لَفَتَحَ فَقَسَمَتْ خَيْبَرَ عَلَى أَهْلِ الْحَدِيثِ، فَقَسَمَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ثَمَانِيَةِ عَشَرَ سَهْمًا، وَكَانَ الْجَيْشُ أَلْفًا وَخَمْسَ مِائَةٍ فِيهِمْ ثَلَاثُ مِائَةٍ فَارِسٍ، فَأَعْطَى الْفَارِسَ سَهْمَيْنِ وَأَعْطَى الرَّاجِلَ سَهْمًا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَدِيثُ أَبِي مُعَاوِيَةَ أَصَحُّ وَالْعَمَلُ عَلَيْهِ وَأَرَى الْوَهْمَ فِي حَدِيثِ هُجَيْمِ أَنَّهُ قَالَ: ثَلَاثُ مِائَةٍ فَارِسٍ، وَكَانُوا مِائَتِي فَارِسٍ.

د مجمع بن جاریه الانصاری رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د صلح حدیبیه په ورځ د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښی حاضر شوی وو کله چه واپس کیدو نو خپل خپل اوسنان موزر زړ اوزغلول، په دې وخت کښی خلقو د یو بل نه تپوسونه شروع کړل چه د منډې وهلو څه سبب

۱: تفرد به ابوداود، مسند احمد (۱۳۸/۴)، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۷۲) (صحیح)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۷۲) (صحیح)

۳: تفرد به ابوداود، مسند احمد (۴۲۰/۳)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۱۴)، ویاتی هذا الحديث في الخراج (۳۰۱۵) (ضعيف)

دې، بیا معلومه شوه چه په نبی ﷺ وحی نازله شوې ده، او مونږ د خلقو سره په منډه ووتلو او نبی ﷺ مو په خپله اوبښه باندې سور اولیدلو د کراع الغیم (چه د مکې اومدینې په مینځ کښې یوځایې دي) سره کله چه ورته خلق راجمع شو نو دا آیت: **(إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا)** ټې ورته اولوستلو، یوکس او وئیل ای دالله رسوله آیا دا فتح ده؟ نبی ﷺ او فرمائیل هو، زما دې قسم وی په هغه ذات دچا په لاس کښې چه د محمد ﷺ روح دې چه دا فتح ده او دغه فتح یا خو صلح حدیبیه وه دکومې په انجام کښې چه مسلمانانو ته ډیره فائده حاصله شوه یاددي فتح نه مراد فتح مکه ده یافتح خیبر مراد دي کومه چه په دې پسي متصل واقع شوي وه بیاچه کله دخیبر په جنگ کښې مسلمانانو کوم مال حاصل کړونو هغه دصلح حدیبیه په خلقو باندې وویشل شو، نبی ﷺ دامال اتلس حصې کړو اولښکریان ټول پنځلس سوه کسان وو پدوي درې سوه دسورلو والا وو اودولس سوه پیدل تلو والا رو، نبی ﷺ دسورلو والاته دوه دوه حصې ورکړي او پیدل کسانوته ټي یوه یوه حصه ورکړه. ابوداؤد وائی حدیث د ابومعاویه اصح دې او عمل هم په دغې دې او دمجمع په حدیث کښې وهم دې هغه وائی چه درې سوه اسونو والا وو، حالانکه هغوی دوه سوه اسونو والا وو.

مضمون حدیث

د حدیث مضمون دا دې چه مجمع بن جاریه رضی الله عنه فرمائی چه کله مونږ د حدیبیه نه واپس کیدو نو بعض خلقو اوبښان زغلول، چه کله د هغې وجه اوتپوسلې شوه نو خلقو جواب ورکړو چه رسول الله ﷺ باندې وحی نازله شوې ده، هغه وائی چه مونږ خپلې سورلې اوزغلولې، چه کله مونږ هغوی ته نزدې شو نو وې کتل چه ته په خپله سورلې باندې هغه لره اودرولې ولاړ دې کراع الغیم ته نزدې، د خلقو د جمع کیدو نه پس هغه دا آیت کریمه تلاوت او فرمائیلو **(إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا)** نو په دې باندې یو سړی د هغه نه تپوس او کړو چه یا رسول الله دا څه چه پینښ شوې دی دا فتح ده؟ هغه قسم خورلو سره او فرمائیل چه او فتح ده، یعنی د انجام او نتیجې په اعتبار سره هغه په دې وجه چه په حدیبیه کښې د لسو کالو پورې په عدم قتال باندې د ډیرو شرطونو سره معاهده شوې وه خو کفارو د څه مودې تیریدو نه پس لوظ مات کړو چه د هغې په وجه باندې ډیر زر فتح مکه ته خپره اورسیده، د دې رجل نه مراد سیدنا عمر رضی الله عنه دې، کوم چه په حدیبیه کښې کیدونکې صلح باندې راضی نه وو بلکه اصل رائي ټې د هغوی د مقابلې وه، رسول الله ﷺ د هغه جذبات خاموش کړل، چه په هغې باندې هغه خاموشه شو، خو د دې باوجود هغه ډیر متاثر او خفه وو، هم په دې وجه کله چه رسول الله ﷺ هغه ته دا آیت کریمه واورولو **(إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا)** نو هغه د رسول الله ﷺ نه په طور د تعجب تپوس او کړو چه ایا هم دا فتح ده؟

د مجمع بن جاریه حدیث د احنافو دلیل دې

وراندې په روایت کښې د ترجمه الباب والا مسئله ذکر شوې ده، هغه دا چه چونکه د صلح حدیبیه نه فوراً پس د فتح خیبر قصه پینښ شوې وه نو راوی د خیبر د غنیمتونو تقسیم لره په دې روایت کښې بیانوی، هغه دا چه رسول الله ﷺ د خیبر غنیمتونو لره په اهل

حدیبیه باندې په اتلسو حصو کښې تقسیم کړې وو یا نې اهل حدیبیه په دې وجه اووې چه په فتح خیبر کښې شرکت کونکی صحابه کرام هم هغه وو کوم چه د دې نه مخکښې په صلح حدیبیه کښې شریک وو، په اتلسو حصو کښې د تقسیم کولو تفصیل راوی داسې بیانوی چه د لښکر تعداد پنځلس سوه وو چه په هغې کښې درې سوه فارس او دولس سوه راجل وو او په هغه اتلسو سهام کښې هر یو سهم په سلو حصو باندې مشتمل وو په دې صورت کښې د راجل په حصه کښې یو سهم او د فارس په حصه کښې دوه حصې راځی او که د فارس درې حصې وې کما قال الجمهور نو بیا به دا غنیمت د د اتلسو حصو په ځانې یویشتم حصو باندې تقسیم کیدلې. (تاسوپرې حساب اولگورې او اوگورې)

د خیبر د غنیمتونو په باره کښې دوه مختلف روایتونه

وراندې به په بعض روایتونو کښې داسې هم راشی چه رسول الله ﷺ د خیبر غنیمتونه شپږ دیرش حصې کړل خو په دې کښې هیڅ د تعارض والا خبره نشته، ځکه چه چرته اتلس حصې راغلې دی هلته د راوی مراد دا دې چه د خیبر نیم غنیمتونه رسول الله ﷺ په اتلسو حصو باندې تقسیم کړل، او د اتلسو دوچند شپږ دیرش وی، لهذا حساب برابر شو، په اصل کښې هغه د خیبر د غنیمتونو نه نصف د غانمین ترمینځه تقسیم کړې وو او نیم ئې د خپل ضرورت دپاره او نواب المسلمین دپاره پریخودلې وو.

چرته چه دا راځی چه رسول الله ﷺ په شپږ دیرشو حصو باندې تقسیم کړل چه د دې نه مراد په خلقو باندې تقسیم کول مراد نه دی بلکه د حساب په اعتبار سره دی او بیا په دې شپږ دیرشو کښې نصف یعنی اتلس په خلقو باندې تقسیم کړې شو لکه چه دلته په روایت کښې دی.

د جمهورو د طرف نه د دلیل حنفیه جواب

جمهور د دې جواب دا ورکوی چه دا خبره چه اصحاب حدیبیه پنځلس سوه وو او په هغوی کښې درې سوه شمسواران وو، دا د تحقیق خلاف ده بلکه صحیح دا ده چه اصحاب حدیبیه کل څوارلس سوه وو چه په هغوی کښې دولس سوه راجل او دوه سوه شمسواران وو او دوه سوه فارس قائم مقام د شپږ سوه راجل، دولس او شپږ اتلس وی، پس د ابوداؤد په بعض نسخو کښې دی چه حدیث د ابو معاویه اصح دې د مجمع د حدیث نه، د مجمع حدیث وهم دې، فارس درې سوه نه وو بلکه دوه سوه وو، د حدیث ابی معاویه نه مراد د تیر باب حدیث اول دې کوم چه د جمهورو موافق او د هغوی دلیل دې، زه وایم چه د اصحاب حدیبیه په تعداد کښې د روایاتو اختلاف دې، په بعض روایاتو کښې پنځلس سوه راغلې دې، په بعض کښې څوارلس سوه او په بعض کښې دیارلس سوه، وکل هذه الروایات فی صحیح البخاری، احنافو د مجمع بن جاریه د دې حدیث په وجه باندې په دې درې وارو روایاتو کښې د پنځلس سوه روایت ته ترجیح ورکړې ده، او وجه د ترجیح ئې د مجمع بن جاریه هم هغه روایت منلې دې، جمهور فرمائی چه د مجمع بن جاریه روایت ضعیف دې، کما تقدم فی کلام المصنف، هم دغه شان بعض نورو محدثینو هم د مجمع په حدیث باندې

کلام کړې دې، پس ابن القطان فرمائی چه په دې حدیث کښې یعقوب بن مجمع راوی مجهول دې، د هغه نه سوا د هغه د خوئی نه روایت کول معلوم نه دی (گویا هغه د من لم یرو عنه الا واحد د قبیل نه دې او مجهول العین دې خو هغه د هغه د خوئی په باره کښې اعتراف کړې دې چه هغه ثقه دې.

د جمهور د نقد جواب

په دې باندې حضرت په بذل کښې لیکي چه د ابن القطان دا خبره صحیح نه ده چه د یعقوب نه د هغه د خوئی نه علاوه بل څوک روایت نه کوی پس حافظ لیکي: روی عنه ابنه مجمع وابن اخیه ابراهیم بن اسماعیل بن مجمع، وعبدالعزيز عبيد بن صهيب، وذكره ابن حبان في الثقات، فارتفع الجهالة وثبت التوثيق. د دې نه پس حضرت په بذل کښې د دې سند په بل راوی یعقوب خوئی مجمع بن یعقوب باره کښې د امام شافعی کلام نقل فرمائی دې پس په خلاصه کښې دی ﴿ قال الشافعی شیخ لا يعرف ﴾ په دې باندې حضرت فرمائی: قال الحافظ روی عنه یونس بن محمد المؤدب، ويحيى بن حسان، واسماعيل بن ابي اويس والقعنبي وقتيبة ومحمد بن عيسى ابن الطباع وغيرهم" د دې نه پس حضرت فرمائی چه د چا نه روایت کونکي دومره وی هغه مجهول څنگه شو، بیا دا چه ابن معین او نسائی نه د هغه په باره کښې نقل دی چه ﴿ لیس به باس ﴾، هم دغه شان ابوحاتم هم وئیلې دی ﴿ لا باس به ﴾، ابن سعد فرمائی ﴿ کان ثقة ﴾، او د دې نه مخکښې د ابن القطان په کلام کښې تیر شوې دی چه هغه د هغه د پلار یعقوب په باره کښې خو او فرمائییل چه ﴿ لا يعرف ﴾ او خپله د مجمع په باره کښې فرمائی چه ﴿ ثقة ﴾، هم دغه شان ابن الترمذی په الجوهر النقی کښې فرمائی چه د امام شافعی نه منقول دی چه د مجمع په باره کښې هغه فرمائی ﴿ شیخ لا يعرف ﴾، بیا هغه فرمائی: هذا الحديث اخرجه الحاكم في المستدرک وقال حديث كبير صحيح الاسناد، ومجمع بن يعقوب معروف، روی له ابوداود والنسائی. اه مختصرا هم دغه شان علامه ذهبی د مستدرک په تلخیص کښې د دې حدیث د تخریج نه پس فرمائی: حدیث صحیح. اه

باب فی النفل

باب: د زیاتې (غنیمت، انعام) ورکولو په بیان کښې

په غنیمت کښې چه د امام دپاره کوم انعام مقرر کړې شی نفل وئیلې شی.

د ترجمه الباب شرح:

نفل خو په اصل کښې وئیلې شی حصه زانده او انعام ته او هم د دې نه تنفیل لفظ هم دې، خو دلته د نفل نه مراد غنیمت دې لکه چه د احادیث الباب نه معلومیری، مصنف په دې باب کښې د غنائم بدر روایات ذکر کړې دی چه د هغې پوره پوره اختیار رسول الله ﷺ ته وو لکه چه مخکښې تیر شو، او د غنائم بدر په باره کښې آیت کریمه نازل شو ﴿ یسئلونک عن الانفال ﴾ چه کله په دې آیت کریمه کښې د غنائم بدر نه په نفل سره تعبیر او کړې شو نو هم د دې په اتباع کښې مصنف د غنیمت نه په نفل سره تعبیر او کړو.

[۲۷۳۷] حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا خَالِدٌ، عَنْ دَاوُدَ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَوْمَ بَدْرٍ مَنْ فَعَلَ كَذَا وَكَذَا فَلَهُ مِنَ النَّفْلِ كَذَا وَكَذَا، قَالَ: فَتَقَدَّمَ الْفُتَيَّانُ وَكَزِمَ الْمَشِيخَةُ الرَّايَاتِ فَلَمْ يَبْرَحُوهَا، فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ قَالَ الْمَشِيخَةُ: كُنَّا رِذَاءَ الْكُفْرِ لَوْ أَنَّهُمْ مَاتُوا لَفَنَنْتُمْ لَيْنًا، فَلَا تَذْهَبُوا بِالْمَغْنَمِ وَنَبْقِي، فَأَبَى الْفُتَيَّانُ وَقَالُوا: جَعَلَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَنَا قَائِزَلٌ اللَّهُ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ إِلَى قَوْلِهِ كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَارِهُونَ سُورَةُ الْأَنْفَالِ آيَةٌ مَهْ يَقُولُ فَكَانَ ذَلِكَ خَيْرًا لَهُمْ فَكَذَلِكَ أَيْضًا فَاطِيعُونِي فَأَبَى أَعْلَمُ بِعَاقِبَةِ هَذَا مِنْكُمْ.

دا بن عباس هغه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ دغزوه بدر په ورځ فرمائیلى ووچه چا دا دا کارونه وکړل نو دهغه دپاره دا دا انعام دي ددې په اوریدوسره ځوانان مخکښي لارل او بوډاگان دجندوسره پاتې شول اوددغه ځاي نه ونه خوزیدل هرکله چه الله تعالی مسلمانانوته فتح نصیب کړه نو بوډاگانو ووثیل مونږ خو ستاسو دپاره مددگاران اودپناه ځاي وو، که چرې تاسو شکست خوړلی وي نومورته به راجوبت شوي وي داسې نشي کيډي چه دغنیمت مال تاسو واخلي او مونږ همداسې پاتې شو نوځوانانوته منله اووئي ووثیل چه نبی ﷺ دا مونږ ته راکړې دې نوپه دې وخت کښې الله تعالی دامذکوره آیت نازل کړو، یعنی تپوس کوي دوی ستانه اي محمد دانفال په باره کښې ته ورته اووايه چه انفال دالله تعالی اودهغه درسول په اختیار کښې دي تر لکارهون،، پورې.

د حدیث مضمون او دهغې شرح

یعنی رسول الله ﷺ په جنگ بدر کښې اعلان اوفرمائیلو چه څوک کوم کافر لره قتل کوی د هغه ټول سامان به قاتل ته ملاویږی (دا اعلان په بعض مغازی کښې شوې دې چرته چه مصلحت گنرلې شوې وو، په دې سره مقصود تشجیع وی او ترغیب، د دې دپاره چه هر سرې ښه په همت سره جنگ اوکړی، راوی وائی چه د رسول الله ﷺ د طرف نه د دې اعلان کیدو نه پس ځوانان طبقه خو وړاندې شو د قتل دپاره او بوډاگان او ضعیف قسم خلق د جهنډو په خوا کښې پاتې شو د هغوی د سنبهالولو دپاره، هغوی د هغې د خوا نه لرې نه شو، پس چه کله الله پاک مسلمانانوته فتح ورکړه نو هغه بوډاگانو دا خبره اوکړه ځوانانو ته چه مونږ ستاسو اسره او مدد کونکی وو (یعنی ستاسو شاته ولاړ وو) که تاسو ته شکست شوي وي نو تاسو به واپس زمونږ خواته راتلی، لهذا ټول غنیمت خپله مه اخلی، ځوانانو چه دا خبره واوریده نو د ورکولو نه ئې انکار اوکړو او وي ووثیل چه دا خو د رسول الله ﷺ د طرف نه زمونږ دپاره دي، نو د دې اختلاف په موقع باندې دا آیت کریمه نازل شو (يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ) الی قوله (كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ بِالْحَقِّ) د (کما اخرجک) تفسیر خپله دلته په روایت کښې موجود دي چه د هغې تشریح دا ده چه بعض صحابه کرام په شروع کښې د بدر طرف ته د جنگ دپاره تلو ته تیار نه وو او دا ئې نه خوښوله، د جنگ د تیاری نه کولو د وجې نه، بلکه دا ئې غوښتل چه د قریشو په قافلې پسې لار شی کومه چه د شام نه راروانه وه، کومې چه د ساحل لاره اختیاره کړه او بل طرف

۱. تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۶۰۸۱) (صحیح)

ته روانه شوه، خو روستو چه کله جنگ اوشو او مسلمانانو ته شانداره فتح اوشوه نو بیا هغوی ته احساس اوشو چه نه په جنگ کښې زمونږ خیر او خوبی وه کوم چه په شروع کښې هغوی ناخوبنه گنرلو، نو په دې آیت کریمه (کما اخرجک ربک) کښې هم د دې بدر د واقعي سره د مال غنیمت تقسیم او عدم تقسیم لره تشبیه ورکولې شی چه اوگورئ چه څنگه رسول الله ﷺ د غنیمت په باره کښې فیصله کوی هم هغه تاسو اختیار کړئ او په خپل حق کښې ئې غوره اوگورئ او په خپله رائي باندې اصرار مه کوی، د انجام په اعتبار هم په دې کښې خیر دې لکه چه په بدر کښې چه کوم خیز تاسو ناخوبنه گنرلو او روستو ثابته شوه چه هغه خیز ناخوبنه کیدل نه وو پکار بلکه هم په هغې کښې خیر وو. والحدیث اخرجہ النسائی قاله المنذری.

[۲۷۳۸] () حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ بَدْرٍ: "مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا فَلَهُ كَذَا وَكَذَا، وَمَنْ أَسْرَأَ سِيرًا فَلَهُ كَذَا وَكَذَا"، ثُمَّ سَأَى نَحْوَهُ وَحَدِيثُ خَالِدٍ أَتَمُّ.

د ابن عباس رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ دغزوه بدر په ورځ فرمائیلی وو چه چا کوم کافر مړ کړو نو دهغه دپاره دا دا انعام دې او چا چه قیدی راوستو نو دهغه دپاره دا دا انعام دې اوباقی حدیث ئې دتیرشوی روایت په شان بیان کړو. اودخالد حدیث زیات کامل دې. د دې نه په روستو روایت کښې دی (فَقَسَمَهَا رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم- بِالسَّوَاءِ) یعنی رسول الله ﷺ د بدر غنیمتونه د ټولو مجاهدینو ترمنځه برابر تقسیم او فرمائیل، یعنی د سلب نه علاوه، د سلب په باره کښې خو اعلان شوې وو چه هغه به صرف د قاتل دپاره وی، د هغه نه علاوه چه کوم باقی غنیمت وو هغه بیشکه برابر تقسیم کړې شو.

[۲۷۳۹] () حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ بَكَّارِ بْنِ بَلَّالٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ مَوْهَبِ الْهَمْدَانِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَابِدَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنِي دَاوُدُ بِهَذَا الْحَدِيثِ بِإِسْنَادِهِ، قَالَ: فَقَسَمَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالسَّوَاءِ، وَحَدِيثُ خَالِدٍ أَتَمُّ.

داود په خپل سند سره دا روایت بیان کړي فرمائی چه نبی ﷺ یو برابر تقسیم وکړو. اودخالد حدیث زیات کامل دې.

[۲۷۴۰] () حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: جِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدْرٍ بِسَيْفٍ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ قَدْ شَفَى صَدْرِي الْيَوْمَ مِنَ الْعَدُوِّ وَقَهَبَ لِي هَذَا السَّيْفَ، قَالَ: "إِنَّ هَذَا السَّيْفَ لَيْسَ لِي وَلَا لَكَ، فَذَهَبْتُ وَأَنَا أَقُولُ بَعْطَاةَ الْيَوْمِ مَنْ لَمْ يُبَلِّ بِلَايِي فَبَيْنَا أَنَا إِذْ جَاءَنِي الرَّسُولُ فَقَالَ: أَحِبُّ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ نَزَلَ فِي شَيْءٍ بَكَلَامِي فَجِئْتُ، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّكَ سَأَلْتَنِي هَذَا السَّيْفَ وَلَيْسَ هُوَ لِي وَلَا لَكَ وَإِنَّ اللَّهَ قَدْ جَعَلَهُ لِي فَهُوَ لَكَ، ثُمَّ قَرَأَ: يَا سَأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۶۰۸۱) (صحیح)

۲: انظر حديث رقم: (۲۷۳۷)، (تحفة الأشراف: ۶۰۸۱، ۱۵۶۵۸) (صحیح)

۳: صحیح مسلم للجهد ۱۲ (۱۷۴۸)، سنن الترمذی/تفسیر الأنفال ۹ (۳۰۷۹)، (تحفة الأشراف: ۳۹۳۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱۷۸/۱، ۱۸۱، ۱۸۵) (حسن صحیح)

لِلَّهِ وَالرَّسُولِ سُورَةُ الْأَنْفَالِ آيَةٌ، إِلَى آخِرِ الْآيَةِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قِرَاءَةُ ابْنِ مَسْعُودٍ يَسْأَلُونَكَ النَّفْلَ.

مصعب بن سعد دخپل پلارنه روایت کوی فرمائی چه دبدر په ورځ د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم او یوه توره مې هم راوړه، ماووئیل ای دالله رسوله الله تعالی نن ورځ زما سینې ته ددشمن نه شفا ورکړه داتوره ماته راکړه، نبی ﷺ او فرمائیل داتوره نه زما حق دي اونه ستا ما چه دا واوریدل نو روان شوم او په روانه مې داوئیل چه دابه نن هغه چاته ورکولې شی څوک چه به زما په شان تجربه کارنه وي ماچه وکتل نواچانک د نبی ﷺ دطرف نه په ما پسې یوکس راغې چه زه ی غوښتلم راته ئې وئیل چه راشه ما داگمان وکړو کیدشي چه زما په باره کښې به څه وحی نازل شوي وي، هرکله چه زه د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم نو وئې فرمائیل تا زمانه توره غوښتلي وه داتوره الله تعالی اوس ماته راکړه اوزه ئې تاته درکوم او بیاتي دا ایت اولوستو: «يسألونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول» تراخه پوري، ابوداود وائی چه قراء: درابن مسعودنه کښې «يسألونك عن النفل»، راغلی دی.

مضمون حدیث

﴿ عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ جِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - يَوْمَ بَدْرٍ بِسَيْفٍ ﴾
سیدنا سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه فرمائی چه په جنگ بدر کښې زه رسول الله ﷺ ته د یوې توري سره حاضر شوم او عرض مې اوکړو چه یا رسول الله ﷺ یقینا الله پاک نن زما سینه یخه کړه په دشمن باندې یعنی هغوی سره په قتال کولو باندې لهذا دا توره ماته راکړې د دې دپاره چه بیا ئې په جهاد کښې استعمال کړم، هغه او فرمائیل: دا توره نه زما ده او نه ستا ده (اصل کښې دې وخته پورې د مال غنیمت په باره کښې هیڅ قسم حکم نه وو نازل شوې او د بدر غنیمت د ټولو نه اول غنیمت دې، د غنیمت د تقسیم د آیت نزول د دې نه روستو شوې وو) نو هغه وائی چه زه د رسول الله ﷺ په جواب او ریډلو سره خالی لاس روان شوم او دا سوچ مې کولو چه ﴿يُغْطَاهُ الْيَوْمَ مَنْ لَمْ يُبَلِّ بِلَاغِي﴾ چه کیدې شی دا توره به یو داسې سړی ته ورکړې شی چاته چه زما په شان مشقت او محنت نه وی برداشت کړې، زه لا روان اوم په دې سوچ کښې چه هم په دې وخت د رسول الله ﷺ قاصد ماته راورسیدو چه د رسول الله ﷺ خواته لاړ شه، هغه غوښتلي ئې، نو ما سوچ اوکړو چه زما د دې وسوسې او خیال د وجې نه چه (نا مناسبه وه) زما په باره کښې به څه نازل شوې وی، خیرزه حاضر شوم، په حاضریدو باندې رسول الله ﷺ ماته او فرمائیل چه دا توره تا زما نه غوښتلي وه، هغه وخت خونه ستا دپاره وه او نه زما دپاره، خو اوس الله پاک زما دپاره کړه لهذا دا ته یوسه، او رسول الله ﷺ دا آیت کریمه تلاوت کړو ﴿يسألونك عن الأنفال﴾ الایة... امام ابوداود فرمائی چه د ابن مسعود رضی الله عنه قراءت ﴿يسألونك النفل﴾ دې والحديث اخرجه مسلم مطولا بنحوه، واخرجه الترمذی والنسائی، قاله المنذرى.

بَابُ فِي نَقْلِ السَّرِيَّةِ تَخْرُجُ مِنَ الْعَسْكَرِ

په لښکر کښې بعضوته د انعام په طور څه اضافی مال ورکولو بیان

دا خبره یو ځل مخکښې هم راغلي ده زمونږ په کلام کښې چه ډیر کرته داسې کیږي چه کوم

يو لوټي لښکر يو ځانې ته د جهاد دپاره ځي نو په لاره کښي د هغوی نه يو مختصر جماعت د يو کلی د فتح کولو دپاره ليرلې شي، هغه جماعت د هغه کلی او علاقې د فتح کولو نه پس بيا په لښکر کښي شريک شي، نو هغه وخت قانون دا وو چه کوم غنيمت به دې سرپه حاصلولو په هغه غنيمت کښي به څه حصه ثلث يا ربع اصحاب سرپه ته ورکولې شو، او باقی غنيمت به د هغه لښکر طرف ته منتقل کيدلو، او بيا به په ټول لښکر باندي تقسيم کيدلو. نو دلته دوه څيزونه شو، اول دا چه اصحاب سرپه ته د نفل په طور سره ورکړې شي، او بله خبره دا چه باقی غنيمت په عسکر باندي واپس کړې شي، په دې ترجمه کښي مصنف امر اول ذکر کړې دې، او د امر ثاني ذکر د څو ابوابو نه روستو مستقل په ترجمه کښي راروان دې "باب في السرية ترد على اهل العسکر" او گوري دا هغه جزء ثاني دې، کتاب باندي داسي پوهيدلې شي او هغه داسي حل کولې شي، بغير د محنت او مشقت نه د يو کتاب حل کول هم اسان نه دي، اوس حديث الباب ته گوري.

[۲۷۴۱] حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابُ بْنُ تَجْدَةَ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ. وَحَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَنْطَاقِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُبَشَّرٌ. وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ الطَّائِيُّ، أَنَّ الْحَكَمَ بْنَ نَافِعٍ حَدَّثَهُمُ الْمَعْنَى كُلَّهُمْ، عَنْ شُعَيْبِ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ، عَنَّا نَافِعٌ، عَنْ أَبِي عُمَرَ، قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَيْشٍ قَبْلَ تَجْدٍ وَأَنْبَعَثَتْ سَرِيَّةٌ مِنْ الْجَيْشِ، فَكَانَ سَهْمَانُ الْجَيْشِ اثْنَيْ عَشَرَ بَعِيرًا اثْنَيْ عَشَرَ بَعِيرًا، وَنَقَلَ أَهْلَ السَّرِيَّةِ بَعِيرًا بَعِيرًا فَكَانَتْ سَهْمَانُهُمْ ثَلَاثَةَ عَشَرَ ثَلَاثَةَ عَشَرَ.

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله مونږه په يو لښکر کښي د نجد طرف ته او ليرلو او دخپل لښکر نه ئي څه حصه د دشمن دمقابل دپاره اوليرله او بيا ئي دلښکر کسانو ته دولس دولس اوبنان ورکړل اودسري والا (وروکي لښکر ته ئي يو يواوښ اضافي ورکړو نو دهغوی په حصه کښي ديارلس ديارلس اوبنان شول.

شرح حديث

عبدالله بن عمر رضي الله عنه فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله مونږ په يو لوټي لښکر د نجد طرف ته، او د هغه لوټي لښکر نه ئي مختصر جماعت ويستلو سره بل طرف ته اوليرلو، په لښکر والو کښي د هر يو په حصه کښي دولس اوبنان راغلل، او اهل سرپه ته يو يو اوبن د نفل په طور ورکړې شو، په دې وجه په اهل سرپه کښي د هر يو په حصه کښي ديارلس اوبنان راغلل.

تفسيه: دا حديث په صحيح مسلم کښي هم دې دې په شرح کښي امام نووي رحمته الله عليه فرمائی چه بعض شارحينو دا خيال کړې دې چه د ټولو غانمينو په حصه کښي مجموعی طور دولس اوبنان راغلل او دا غلطه ده ځکه چه د ابوداود په بعض رواياتو کښي تصريح ده د دې خبرې چه د جيش دهر هر سړي په حصه کښي دولس دولس اوشان راغلل او اهل سرپه ته د دولسو نه علاوه مزید يو يو اوبن په طور د نفل هم ورکړې شو. اه کذا في البذل، حديث د ترجمة الباب مطابق دې کما هو ظاهر، خو دلته بعض څيزونه بيانول پکار دي.

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۷۷)، وقد أخرجه: صحيح البخاري لفرض الخمس ۱۵ (۳۱۳۴)، والمغازي ۵۷ (۴۳۳۸)، صحيح مسلم للجهد ۱۲ (۱۷۴۸)، موطا امام مالك للجهد ۶ (۱۴)، سنن الدارمي السير ۴۱ (۲۵۲۴) (صحيح)

د سریه ابو قتاده رضی اللہ عنہ ذکر

اول دا چه د دې سریه نوم سریه ابو قتاده رضی اللہ عنہ دې، او دا پنځلس یا شپاړس کسان وو، او دا واقعه د شعبان ۸ هجری د فتح مکه نه مخکښې ده، د سیرت په کتابونو کښې لیکلې شوې دی چه دا سریه قبيله غطفان سره د مقابلې دپاره لیرلې شوې وه، دا خلق په خضره کښې اباد وو، خضره علاقه نجد کښې ده، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د شپاړسو ملگرو سره اولیرلو، په مقابله کښې هغوی ته فتح اوشوه، غنیمت کښې ورته دوه سوه اوبښان او دوه زره بیزې حاصلې شوې.

یو قوی اشکال او د هغې جواب

دویم دا چه په دې هم خان پوهه کړې چه د سیرت په کتابونو کښې دا هم لیکلې شوې دی چه دا لوڼې لښکر په څلور زره کسانو باندې مشتمل وو، په دې باندې دا اشکال کړې شوې دې چه هر کله په حاصلیدونکی غنیمت کښې اوبښان صرف دوه سوه وو نو د پوره لښکر په حصه کښې چه څلور زره کسان وو، دولس دولس اوبښان څنگه راغلل، اشکال ظاهر دې، بیا د دې اشکال دوه جوابونه ورکړې شوې دی، یو دا چه دا مقدار د غنیمت خو هغه دې کوم چه اصحاب سریه ته حاصل شوې وو د هغوی په فتح کښې او لوڼې لښکر ته که کوم غنیمت حاصل شوې وی هغه د دې نه علاوه دې لهدا دواړه غنیمتونه یوځای کولو سره د هر یو په حصه کښې دولس دولس اوبښان راغلل، او بل جواب د دې اشکال دا دې چه کوم مصنف هم وړاندې ثابت کړې دې چه په دې حدیث کښې د جیش ذکر وهم دې، لهدا د اشکال بنیاد ختم شو، اوس وړاندې په کتاب کښې خپله راځی چه دا وهم کوم راوی ته پیدا شوې دې او څوک د دې نه محفوظ پاتې شوې دی.

[۲۷۴۲] (حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ عُثَيْبَةَ الدِّمَشْقِيُّ قَالَ: قَالَ الْوَلِيدُ يَعْنِي ابْنَ مُسْلِمٍ: حَدَّثْتُ ابْنَ الْمُبَارَكِ بِهَذَا الْحَدِيثِ قُلْتُ: وَكَذَلِكَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي قُرَّةٍ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَا تَعْدِلُ مَنْ سَمِعْتَ بِمَالِكٍ هَكَذَا أَوْ نَحْوَهُ يَعْنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ.

ابن مبارک وټیلی دی کوم روایت چه شعيب بيان کړې دې او کوم چه ابن ابی فروه بيان کړې دې دواړه د مالک بن انس دروایت درجي ته نه شی رسيدلې. دغسې یا ددې په شان خبره هغوی او کړه، ددې نه هغوی امام مالک بن انس مراد اخستلو.

شرح الحديث:

ښه په غور سره واورئ! د اولنی حدیث په سند کښې راغلې وو (حدثنا بن مسلم) د هغه نوم ولید دې او د هغې نه روستو دوه تحویلونه وو او بیا دا وو (کلهم عن شعيب بن ابی حمزة) د (کلهم) مصداق ولید بن مسلم، مبشر او حکم بن نافع دی، دا درې واړه روایت کوی د شعيب بن ابی حمزة نه او شعيب د نافع نه.

اوس په دې دویم سند کښې ولید بن مسلم وائی چه کوم حدیث به ما د شعيب نه روایت کولو هغه ما ابن المبارک ته هم بیان کړو، او هغه ته ما دا اووې چه څنگه دا حدیث

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۶۷۹) (صحیح)

ماته شعيب بيان كړو د نافع نه، هم دغه شان دا حديث ماته ابن ابی فروه هم بيان كړو. ﴿عن نافع﴾ او د "هم دغه شان" مطلب دې د "ذكر جيش" سره، يعنى څنگه چه د شعيب بن ابی حمزه په روايت كښې ذكر جيش دې هم دغه شان د ابن ابی فروه په روايت كښې هم ذكر جيش دې نو په دې باندې ابن المبارک او فرمايل چه د كومو دوه استاذانو ته نوم اخلي يعنى شعيب او ابن ابی فروه چه د هغوى په روايت كښې ذكر جيش دې هغه برابر نه شی كيدې د مالک بن انس، يعنى مالک بن انس د دې دواړو نه ډير اوچت دې او د هغوى دواړو په روايت كښې د جيش ذكر نشته، لهذا د ابن مبارک د كلام خلاصه دا شوه چه په دې حديث كښې ذكر "جيش" وهم دې.

اوس چه د دې نه پس مصنف د دې روايت څومره هم طرق ذكر كړې دى چه په هغې كښې يو طريق د مالک هم دې په دې ټولو كښې ذكر "جيش" نشته، پس د محمد بن اسحاق عن نافع په روايت كښې ذكر جيش نشته او د هغې نه روستو روايت راروان دې د امام مالک او بيا د حاء تحويل نه پس د ليث چه په هغې كښې هم ذكر جيش نشته او بيا د هغې نه روستو روايت راروان دې د عبيدالله عن نافع په هغې كښې هم ذكر جيش نشته، لهذا تحقيقى جواب د دې اشكال كوم چه په شروع كښې ذكر كړې شوې دې هم دا دې چه په دې روايت كښې ذكر جيش نشته.

[۲۷۴۳] (۱) حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدَةُ يَعْنِي ابْنَ سُلَيْمَانَ الْكِلَابِيَّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةً إِلَى تَجْدٍ، فَخَرَجْتُ مَعَهَا فَأَصْبِنَا نَعْمًا كَثِيرًا فَنَقَلْنَا أَمِيرًا نَابِعِيرًا بَعِيرًا الْكَلْبِيَّ الْإِنْسَانَ، ثُمَّ قَدِمْنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَسَمَ بَيْنَنَا غَنِيمَتَنَا، فَأَصَابَ كُلَّ رَجُلٍ مِنَّا اثْنَيْ عَشَرَ بَعِيرًا بَعْدَ الْخُمْسِ وَمَا حَاسَبْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالَّذِي أُعْطَانَا صَاحِبِنَا وَلَا عَابَ عَلَيْهِ بَعْدَ مَا صَنَعْنَا، فَكَانَ لِكُلِّ رَجُلٍ مِنَّا ثَلَاثَةٌ عَشَرَ بَعِيرًا بِنَقْلِهِ.

دا بن عمر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم دلښكر يوه دسته د نجد طرف ته اوليرپله اوزه هم په دغه دسته كښې شامل ووم مونږ په مال غنيمت كښې ډير مال حاصل كړو او زمونږ د دستي مشر په مونږ كښې هريوكس ته يو يو زياتى اوبښ په انعام كښې راكړو ددې نه پس چه كله مونږ نبی صلى الله عليه وسلم ته راغلو نو هغه مال غنيمت په مونږ تقسيم كړو په مونږ كښې هريوكس ته دولس دولس اوبښان اورسيدل د خمس نه علاوه او زمونږ مشر چه مونږ ته يو يو اوبښ راكړې وو نبی صلى الله عليه وسلم هغه په حساب كښې شامل نكړو اونه ئې زمونږ د مشر دا عمل بد او گنډولو نو په دې شان سره په مونږ كښې د هريوكس په شمول دانعام ديارلس ديارلس اوبښان اورسيدل...

[۲۷۴۴] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ مَرْثَدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْلَمَةَ، وَزَيْدِ بْنِ خَالِدِ بْنِ مَوْهَبٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ الْمَعْنِيُّ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ

۱: تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۸۴۱۵) (صحیح)

۲: صحیح البخاري / الخمس ۱۵ (۳۱۳۴)، صحیح مسلم / الجهاد ۱۲ (۱۷۴۹)، (تحفة الأشراف: ۸۲۹۳، ۸۳۵۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۲/۲، ۱۱۲، ۱۵۶)، موطا امام مالك / الجهاد ۶ (۱۵)، دي السير ۴ (۲۵۲۴) (صحیح)

سَرِيَّةٍ فِيهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ قَبْلَ نَجْدٍ، فَعَمُوا إِبِلًا كَثِيرَةً فَكَانَتْ سُهْمَانَهُمْ اثْنِي عَشَرَ بَعِيرًا وَنَقَلُوا بَعِيرًا بَعِيرًا، زَادَ ابْنُ مَوْهَبٍ: فَلَمْ يُغَيِّرْهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دعبدالله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دفوج یوه دسته دنجد طرف ته اولیرله اوپه هغوی کنبی زه هم وم اوډیر اوبنان مو په غنیمت کنبی حاصل کړل او په مجاهدینو کنبی دهریوکس په حصه کنبی دولس دولس اوبنان اورسیدل او یو یو اوبن ئی ورته په انعام کنبی ورکړو دابن مهب په روایت کنبی دا اضافه ده چه داتقسیم نبی صلی الله علیه و آله بدل نکړو.

[۲۷۴۵] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَرِيَّةٍ فَبَلَّغَتْ سُهْمَانَنَا اثْنِي عَشَرَ بَعِيرًا، وَنَقَلْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعِيرًا بَعِيرًا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ بُرْدُ بْنُ سِنَانٍ، عَنْ نَافِعٍ مِثْلَ حَدِيثِ عُبَيْدِ اللَّهِ، وَرَوَاهُ أَيُّوبُ، عَنْ نَافِعٍ مِثْلَهُ إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: وَنَقَلْنَا بَعِيرًا بَعِيرًا، لَمْ يَذْكُرِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دعبدالله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله مونږ دفوج په یوه دسته کنبی دجهاد دپاره اولیرلو او په مجاهدینو کنبی دهریوکس په حصه کنبی دولس دولس اوبنان راغلل اوبنی صلی الله علیه و آله مونږ ته یو یو اوبن په انعام کنبی راکړو، ابوداود وائی دا حدیث برد بن سنان دنافع نه دعبيدالله په شان نقل کړي دي او ایوب هم دنافع نه همداسې نقل کړي دي لیکن په روایت کنبی داسې دي چه مونږ ته یو یو اوبن مزید ملاو شو او په دي روایت کنبی دنبی صلی الله علیه و آله ذکر نشته.

[۲۷۴۶] حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ شُعَيْبٍ بْنُ اللَّيْثِ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ جَدِّي. وَحَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ، قَالَ: حَدَّثَنِي حُجَيْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عَقِيلٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدَّكَانَ يَنْقُلُ بَعْضُ مَنْ يَبْعَثُ مِنَ السَّرَايَا لِأَنْفُسِهِمْ خَاصَّةَ النَّقْلِ سِوَى قَسَمِ عَامَّةِ الْجَيْشِ، وَالْخُمْسُ فِي ذَلِكَ وَاجِبٌ كُلُّهُ.

دعبدالله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نجی صلی الله علیه و آله به دفوج دستوته زیاته حصه ورکوله اودابه صرف هغوی ته ورکولې شوه نه چه ټول لښکر ته خوالبتنه پنځمه حصه به ترې ویستل شوه.

[۲۷۴۷] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، حَدَّثَنَا حَمِيْدٌ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبَلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ يَوْمَ يَذْرُفِي ثَلَاثَ مِائَةٍ وَخَمْسَةَ عَشَرَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ حِفَاةٌ فَاحْمِلُهُمْ، اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ عِرَاةٌ فَانْقِمْهُمْ، اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ جِيَاعٌ فَاشْبِعْهُمْ"، فَقَتَحَ اللَّهُ لَهُ يَوْمَ يَذْرُفُ فَاثْقَلُوا حِينَ انْقَلَبُوا، وَمَا مِنْهُمْ رَجُلٌ إِلَّا وَقَدَّرَ جَمْعَ بَعِيْلٍ أَوْ جَمَلَيْنِ وَانْقَسَا وَشَبِعُوا.

دعبدالله بن عمر نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دعزوه بدر په ورځ باندي ددری سوه پنځلس کسانوسره راوونو اودادعائې اوغوښتله: «اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ حِفَاةٌ فَاحْمِلُهُمْ اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ عِرَاةٌ فَانْقِمْهُمْ اللَّهُمَّ إِنَّهُمْ جِيَاعٌ فَاشْبِعْهُمْ» اي الله دا خلق پياده دي دوی ته سورلی ورکړی دا خلق

۱: صحيح البخاري/فرض الخمس ۱۵ (۳۱۳۵)، صحيح مسلم للجهاد ۱۲ (۱۷۵۰)، (تحفة الأشراف: ۶۸۸)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۱۴۰/۲) (صحيح)
۲: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۸۵۹) (حسن)

بریند دي دوی ته لباس ورکړی ای الله داخلق وړي دي دوی ماره کړي، بیا الله تعالی مسلمانانو ته دغزوه بدریه وو باندې کامیابی نصیب کړه اودرې واپس راغلل اوپه دوی کښې هیڅ څوک داسې نه وو چه یو یا دوه اوبښان ئې نه وی راوستل او ددوی سره کپړې هم وي اودوی ماره شوي هم وو.

د اصحاب بدر تعداد

﴿ أَنْ رَسُولَ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - خَرَجَ يَوْمَ بَدْرٍ فِي ثَلَاثِمِائَةٍ وَخَمْسَةَ عَشَرَ ﴾

د حدیث مضمون خو واضح دې چه رسول الله ﷺ د جنگ بدر دپاره صرف د درې سوه او پنځلس کسانو سره وتلې وو (۱) او هغه وخت ئې د الله پاک نه دا دعاگانې اوکړې چه ای الله! دا ټول خلق کوم چه ما سره روان دی خپې ابله دی یعنی پیاده دی بغیر د سورلئ نه دی، پس ته هغوی ته سورلی ورکړه، او..... ای الله! دا ټول بریند دی یعنی په پوره بدن ئې کپړې نشته نو ته ورته جامې ورکړه، ای الله! دا اوبړې دی نو ته دوی ماره کړه (د نبی د دعا قبلیدل خو یو یقینی امر دې) پس وړاندې راوی وائی چه الله پاک د خپل رسول دپاره په دې جنگ کښې فتح ورکړه، پس کله چه دوی واپس کیدل نو داسې واپس کیدل چه چا سره یو اوبښ وو د سورلئ او چا سره دوه اوبښان وو، او هم دغه شان لباس او خوراک وغیره هرڅه، په دې روایت کښې د بدریانو صحابه کرامو تعداد خو موجود دې چه د هغوی په تعداد کښې اختلاف دې کوم چه په حاشیه کښې لیکلې شوې دې او د مشرکانو تعداد زر وو او وئیلې شوې دی چه اووه سوه او پنځوس وو چه د هغوی سره اووه سوه اوبښان وو او سل اسونه. (بذل)

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت

دلته سوال دا دې چه د دې حدیث د ترجمه الباب سره څه مطابقت دې او د کوم یو لښکر نه دا سریه راویستلې شوې وه، جواب دا دې چه د دې توجیه دا کیدې شی چه بدر خو مدینه ته نژدې دې زیات لرې نه دې چرته چه دا جنگ شوې وو نو په دې ځان پوهه کړئ چه مدینه منوره چرته چه ډیر صحابه کرام موجود وو هغه معسکر شو او دا درې سوه پنځلس بدریان صحابه په منزله د سریه شو، خو په دې مطابقت کښې یو کمې پاتې شو چه د ترجمه الباب نه خو دا فهمیږی چه اصحاب سریه چه کوم غنیمتونه حاصل کړی د هغې بعض حصه د نفل په طور هغوی ته ورکړې شی او باقی دې په عسکر باندې تقسیم کړې شی، دلته دا دویم څیز بیا نه موندلې شو، د دې جواب دا کیدې شی چه د بدر غنیمتونه د عام غنیمتونو د حکم نه خارج دی لکه چه د دې نه مخکښې هم تیر شوې دی.

۱، د اهل بدر په تعداد کښې روایات مختلف دی، د مسلم په یو روایت کښې درې سوه او نولس دی، او په مسند بزار کښې درې سوه او اولس او مسند احمد او بزار او طبرانی په یو حدیث کښې درې سوه او دیارلس دی، حافظ فرمائی وهو المشهور عند اهل المغازی (بذل)

بَابُ فِيْمَنْ قَالَ الْخُمْسُ قَبْلَ النَّقْلِ

دهغه چا د قول بیان چه خمس به د تقسیم نه مخکښې ویستلې شي

په محل تنفیل کښې د ائمه گرامو مذاهب

په دې ترجمه کښې چه کومه مسئله ذکر شوې ده هغه محل تنفیل دې، یعنی امام یو غازی ته په طور د نفل د حصې نه زیاتې څه ورکړې هغه به د کوم یو مال نه ورکولې شي؟ صورت حال دا دې چه اولاً به ټول مال غنیمت جمع کولې شي او د هغې نه یو خمس جدا کولې شي او اربعه اخماس جدا کولې شي، دا چه کوم اربعة اخماس دې دا په غانمین کښې تقسیمېږي، او چه کوم خمس غنیمت دې د هغې په باره کښې د قران کریم هدایت دا دې چه هغه پنځه ځایه تقسیم کړې شي: ﴿وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ﴾ چه هر کله خمس پنځه ځایه تقسیم کړې شي نو د هر یو په حصه کښې به د دې یوې حصې نه..... د دې پنځو نه خمس الخمس راځي، اوس پوهه شي چه دا نفل به د دې مالونو نه په کوم مال کښې ورکولې شي. د امام احمد مذهب دا دې چه اربعة اخماس دې او د امام مالک په نزد په خمس سره، او د امام شافعي په نزد په خمس الخمس سره، یعنی د امام چه کومه خپله حصه ده د هغې نه، او د احنافو مذهب دا دې چه که د امام د طرف نه تنفیل قبل الاحراز وی نو بیا خو په اربعة اخماس سره، او که بعد الاحراز دې نو بیا د خمس نه. (من الاوجز)

د دې ټول تفصیل پیژندلو نه پس اوس د ترجمه الباب په الفاظو کښې غور او کړئ چه په دې ترجمه کښې د چا مسلک ذکر شوې دې په ظاهره د ترجمې نه دا هم فهمیږي چه په مال غنیمت کښې د خمس د راویستلو نه پس به نفل ورکولې شي، خمس دې اول راویستلې شي، لهذا په ظاهره کښې مطلب دا شو چه د اربعة اخماس نه به ورکولې شي کوم چه د امام احمد مذهب دې او مصنف هم حنبلي المسلک دې، علی ما هو المشهور، د دې نه روستو حدیث الباب او گورئ:

[۲۷۴۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرِ الشَّامِيِّ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ زِيَادِ بْنِ جَارِيَةَ التَّمِيمِيِّ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ مَسْلَمَةَ الْفِهْرِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يُنْقَلُ الثَّلَاثُ، بَعْدَ الْخُمْسِ".

د حبيب بن مسلمة الفهري نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ به دخمس اخستلونه پس د غنیمت د مال دریمه حصه مجاهدینو ته په انعام کښې ورکوله.

[۲۷۴۹] (۲) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ الْجَشْمِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ الْعَلَاءِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ ابْنِ جَارِيَةَ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ مَسْلَمَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كَانَ يُنْقَلُ الرَّابِعُ، بَعْدَ الْخُمْسِ، وَالثَّلَاثُ بَعْدَ الْخُمْسِ إِذَا قُفِلَ".

د حبيب بن مسلمة الفهري نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ به دخمس اخستلونه پس

۱: سنن ابن ماجه/الجهاد ۳۵ (۲۸۵۱)، (تحفة الأشراف: ۳۲۹۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۹/۴، ۱۶۰)، سنن

الدارمي/السير ۴۳ (۲۵۲۶) (صحیح)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۳۲۹۳) (صحیح)

د غنیمت د مال څلورمه حصه او دریمه حصه، کله چه به واپس کیدل مجاهدینو ته په انعام کښې ورکوله.

شرح حدیث

د دې مضمون دا دې چه د غزوه په شروع کښې اصحاب سربیه ته رسول الله ﷺ د نفل په طور د مال غنیمت ربع ورکولو د خمس د راویستلو نه پس، او د غزوه په واپسې باندي به ئې د غنیمت ثلث ورکولو هم دغه شان یعنی بعد الخمس خلاصه دا شوه چه د تلو په وخت به ئې ربع ورکولو او په واپسې کښې ثلث، د دې وضاحت دا دې چه په جیش کښې به کومه سربیه جوړولو سره په لاره باندي لیرله نو دا د سربیه لیرل که به د تلو په وخت وی او هغه سربیه به مال غنیمت حاصل کړو نو بیا خوبه په هغه غنیمت کښې هغه سربیه ته د هغې ربع ورکولې شو، او که د غزوه نه په واپسې باندي دا سربیه لیرلې شوی نو په دې صورت کښې به هغه ته د غنیمت نه ثلث ورکولې شو، د نفل مقدار کښې د دې کمی زیاتی مقصد دا دې چه د تلو په وخت خوبه ټول لښکر تازه وی په دې کښې مشقت کم دې ځکه چه په دې صورت کښې ربع ورکولې شی، او په واپسې کښې چونکه ټول ستړی شوی وو نو په دې کښې محنت مشقت زیات وی چه هر سړې کور ته د رسیدو په فکر کښې وی په دې وجه په دې صورت کښې د ربع په ځای ثلث ورکولې شی. والحديث رواه ابن ماجه، قاله المنذرى.

[۲۷۵۰] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي حَسَنٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَزَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَهَبٍ، يَقُولُ: سَمِعْتُ مَكْحُولًا، يَقُولُ: كُنْتُ عَبْدًا بِمِصْرَ لِمْرَأَةٍ مِنْ بَنِي هَذَا، فَأَعْتَقْتَنِي فَمَا خَرَجْتُ مِنْ مِصْرَ وَبِهَا عِلْمٌ إِلَّا حَوَيْتُ عَلَيْهِ فِيمَا أَرَى، ثُمَّ أَتَيْتُ الْحِجَازَ فَمَا خَرَجْتُ مِنْهَا وَبِهَا عِلْمٌ إِلَّا حَوَيْتُ عَلَيْهِ فِيمَا أَرَى، ثُمَّ أَتَيْتُ الْعِرَاقَ فَمَا خَرَجْتُ مِنْهَا وَبِهَا عِلْمٌ إِلَّا حَوَيْتُ عَلَيْهِ فِيمَا أَرَى، ثُمَّ أَتَيْتُ الشَّامَ فَغَرَبْتُهَا كُلَّ ذَلِكَ أَسْأَلُ عَنِ النَّفْلِ، فَلَمْ أَجِدْ أَحَدًا يُخْبِرُنِي فِيهِ بِشَيْءٍ حَتَّى أَتَيْتُ الشَّيْخَ يُقَالُ لَهُ زِيَادُ بْنُ جَارِيَةَ التَّمِيمِيُّ، فَقُلْتُ لَهُ: هَلْ سَمِعْتَ فِي النَّفْلِ شَيْئًا؟ قَالَ: نَعَمْ، سَمِعْتُ حَبِيبَ بْنَ مَسْلَمَةَ الْفِهْرِيُّ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "نَفْلُ الرَّبِّ فِي الْبَدَأَةِ، وَالثَّلْثُ فِي الرَّجْعَةِ".

بووېب وئیلی دی چه دمکحول نه مې اوریدلی دی چه هغه وئیل زه په مصر کښې د بنی هذیل قبیلې د یوې ښځې غلام وم نو هغې زه ازاد کړم اوزه ترهغې د مصر نه ونه وتلم ترخوچه مې دهغه ځانې علمونه نه وو حاصل کړي اوبیا زه عراق ته راغلم اود عراق نه ترهغې پورې نه تلم ترخوچه زما د علم مطابق هلته څومره علم وو هغه مانه وو حاصل کړي بیا زه شام ته راغلم او ټول شام مې اولتولو اودهرکس نه به مې دنفل متعلق تپوس کولو، داسې مې هیڅ څوک پیدا نکړل چه دنفل متعلق راته یو حدیث بیان کړي بهر حال یوکس مې پیدا کړو چه نوم ئې زیاد بن جاریه تمیمی وو ماورته ووئیل ایانا دنفل په باره کښې څه اوریدلی دی؟ هغه ووئیل مادحیب بن مسلمه الفهري نه اوریدلی دی زه د بنی تمیمی په خدمت کښې حاضر شوم د غنیمت د مال څلورمه حصه ئې د جهاد په ابتداء کښې او اودریمه حصه ئې په رخصتید وکښې مجاهدینو ته ورکړه.

د مکحول شامی د تحصیل علم عجیب حال

مکحول شامی کوم چه ډیر مشهور فقیه او محدث دې، په سندونو کښې هم په کثرت سره د هغوی نوم راځی، هغه خپل څه حال بیانولو چه په شروع کښ، زه د قبيله بنو هذیل د یوې زنانه په مصر کښې غلام اوم هغې زه ازاد کړم (د الله پاک په مهربانۍ او کرم سره او کیدې شی چه د تحصیل علم په انتظار کښې وو لکه چه وړاندې فرمائی، چه د هغې نه معلومیږی چه دې د ازادیدو سره په تحصیل علم کښې اخته شو) فرمائی چه زه د مصر نه نه یم وتلې مگر په داسې حال کښې چه په هغې کښې څه علم وو د علماء کرامو سره مگر دا چه زه په هغې باندې حاوی شوم، یعنی د هغه ځانې د ټولو علماء کرامو نه مې علم حاصل کړو، د خپلو معلوماتو په اعتبار سره، بیا حجاز ته داخل شوم او هم دغه شان مې هلته هم اوکړل په خپل خیال او په خپل علم کښ، بیا عراق ته راغلم او هلته مې هم داسې اوکړل، بیا د هغې نه روستو ملک شام ته راغلم (هلته خو ما په خپل تحصیل کښې هیڅ کسر پریښودولو) پس په دې کښې ما چاڼر اوکړو (غرلبتها) د غربال نه اخستلې شوې دې یعنی چاڼر، د دې نه روستو وائی (کل ذلک اسال عن النفل) د هر یو عالم نه به مې دا سوال کولو (که وړوکي وو که لوڼي وو) د نفل په باره کښ، په ظاهره کښې به ئې د نفل په باره کښې دا تپوس کولو چه دا چه په بعض روایاتو کښې په نفل کښې ثلث ورکول راځی او په بعض کښې ربع ورکول راځی د دې اختلاف څه تشریح ده؟ یا کیدې شی چه د مطلق نفل په باره کښې سوال دا کوی چه په بعض روایاتو په نفل کښې ثلث ورکول راځی او په بعض کښې ربع ورکول راځی د دې اختلاف څه تشریح ده، یا کیدې شی چه د مطلق نفل په باره کښې سوال کول مراد وی چه رسول الله ﷺ به سربیه ته په نفل کښې څومره مقدار ورکولو. والله تعالی اعلم بمراده

وړاندې هغه فرمائی چه یو سړی هم زما د سوال پوره جواب رانکړو تردې چه زه د یو مشر سړی سره ملاؤ شوم چه د هغه نوم زیاد بن جاریه نو ما د هغه نه هم دا تپوس اوکړو چه تا د نفل په باره کښې څه حدیث اوریدلې دې؟ نو هغه او فرمائیل: (نَعَمْ سَمِعْتُ حَبِيبَ بْنِ مُسْلِمَةَ الْفَهْرِيِّ يَقُولُ شَهِدْتُ النَّبِيَّ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - نَفَلَ الرَّبْعَ فِي الْبَدَاةِ وَالثَّلْثَ فِي الرَّجْعَةِ) دلته راتلو سره د امام مکحول رحمته الله علیه مراد پوره شو چه هغه شیخ د نفل په باره کښې د رسول الله ﷺ د عمل تفصیل بیان کړو، تفصیل هم هغه دې کوم چه مونږ د باب په شروع کښې بیان کړې دې. والحديث اخرجہ ابن ماجه بمعناه، قاله المنذرى.

باب فِي السَّرِيَّةِ تَرَدُّدًا عَلَى أَهْلِ الْعَسْكَرِ

باب: دهغه فوجی دستې (دې) بیان چه هغه واپس راځی او لښکر کښې ملاؤشی

[۲۷۵۱] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ هُوَ مُحَمَّدٌ بَعْضُ هَذَا. ح وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمرِ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنِي هُشَيْمٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ جَمِيعًا، عَنْ عُمرِ بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ،

(۱) تفرد به أبو داود، وأعاد بعض المؤلف في اللديات (۱۵۳۱)، (تحفة الأشراف: ۸۷۸۶، ۸۸۱۵)، وقد أخرجہ: سنن ابن ماجه اللديات ۳۱ (۲۶۸۵) (حسن صحيح)

عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْمُسْلِمُونَ تَتَكَافَأُ دِمَاؤُهُمْ، يَسْمَى بِذِمَّتِهِمْ أَذْنَاؤُهُمْ وَيُجِيرُ عَلَيْهِمْ أَقْصَاهُمْ، وَهُمْ يَدُّ عَلَى مَنْ سِوَاهُمْ، يَرُدُّ مَشِدَّهُمْ عَلَى مُضْعِفِهِمْ وَمَنْسَرِعُهُمْ عَلَى قَاعِدِهِمْ، لَا يَقْتُلُ مُؤْمِنٌ بِكَافِرٍ وَلَا ذُو عَهْدٍ فِي عَهْدِهِ"، وَلَمْ يَذْكُرْ ابْنُ إِسْحَاقَ الْقَوْدَ وَالْتِكَافُؤَ.

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه اوهغه دده دنيکه نه روايت کوي فرمائي چه نبي ﷺ فرمائيلى دى دمسلمانانو ويني دسزا متعلق يوبرابردى معمولي مسلمان هم امن ورکولې شى اودهغه دپاره دامن معاهده پوره کول لازمي دي همدارنگي لري اوسيدونکى مسلمان هم امن ورکولې شى اگرکه دده نه قريب موجود وي او ددې دمخالفينو په مقابل کښې مسلمانان ټول يوشې دې اودچاسورلى چه قوى اوتيزرفتاري وي هغه دي يوځاني اوسي دهغو سره دچاچه سورلى کمزورى وي اوکله چه دلښکر يوه دسته دمال گټلودپاره اويستلى شي نوباقى خلق دي هم په هغې کښې شريک کړي، اونه به شى وژلي مسلمان دکافر په بدله کښې اونه زي دچانه چه لوظ اخستلې شوې وي يعنى هغه کافر دکوم نه چه جزئيه نه اخستل کيږي ياهغه کافر کوم ته چه امان ورکړې شوې وي په دارالاسلام کښې اوابن اسحاق په خپل روايت کښې قود اوتکافى لفظونه نه دي ذکر کړي.

شرح حديث

په حديث کښې شپږ اجزاء ذکر شو، د هر يو جزء په مطلب باندې ځان پوهه کړئ. ۱: د ټولو مسلمانانو وينه برابر ده، شريف او وضعيع، د پورته قوم او ښکته قوم هيڅ فرق نشته، د نفس بدله نفس ده که هر څوک وي. ۲: د مسلمانانو د طرف نه په پناه او امن ورکولو کښې د ادنى درجې مسلمان هم کوشش کولې شى، يعنى که د ادنى درجې مسلمان هم يو کافر ته پناه ورکړي نو بيا به دا امن هر يو مسلمان تسليموى، که ادنى د عدد په اعتبار سره وي لکه صرف يو سړې، يا د مرتبې په لحاظ سره لکه زنانه او غلام، پس د ائمه اربعه په نزد د عبد امان معتبر دې، خو د احنافو په نزد په دې شرط چه هغه ماذون فى القتال وي، يعنى د شيخين په نزد، د امام محمد په نزد دا شرط نشته، د هغه په نزد د عبد محجور عن القتال امان هم معتبر دې هم دغه شان د د زنانه امان هم د ائمه اربعه په نزد معتبر دې، په دې کښې د سخنون مالکى او ابن ماجشون اختلاف دې، عندهما يتوقف امان المراءة على اذن الامام. خو د صبي امان د جمهورو په نزد جائز نه دې البته د امام مالک په نزد جائز دې. ۳: په مسلمانانو باندې امان ورکولې شى د کمې درجې والا سړې هم، په بذر کښې ليکلې دى چه په ظاهره کښې دا جمله د جمله اولى تاکيد دې، د دې نه علاوه د دې جملې بل څه مطلب زما ذهن ته رانغلو. انتهى کلامه. زه وايم: په بعض حواشى کښې ئې د دې دويم مطلب دا ليکلې دې چه د «اقصاهم» نه مراد «ابعدهم دارا» يعنى کوم مسلمان چه د دار الحرب نه ډير لري اوسيرې هغه هم که يو کافر حربى ته امان ورکړي نو هغه امان به ټول منى يعنى کوم چه «اقر بهم دارا» دې هغه به ئې هم منى. ۴: مسلمانان د يو بل معاون دى هر يو لره د بل په حق امر کښې معاونت کول پکار دى او په دې اعانت کښې امان ورکول هم داخل دى، لهذا د دې رعايت هم کول پکار دى چه د هغې حکم په دريم نمبر کښې تير شوې دې. ۵: په دوى

کښې دې قوی په ضعیف باندې غنیمت راوایس کړې، قوی او ضعیف کیدل که د خپل ذات په اعتبار سره وی چه یو بوډا او یو ځوان دې، یا د سورلئ په اعتبار سره وی چه یوه سورلئ ډیره قوی او بله ضعیفه او کمزورې ده، د غنیمت په استحقاق کښې به ټول برابر وی. ۶: په سریه کښې تلونکې به حاصلیدونکې غنیمت هغه لښکر ته وایس کوی کوم چه په دار الحرب کښې ناست دې، هم په دې جمله کښې د ترجمه الباب مطابقت دې، په داسې موقع باندې بین السطور لیکلې شی "فیه الترجمة" دا خو اصل مسئله ده د دې د مزید تشریح ضرورت نشته، اول ذکر شوه.

مسلمان به د ذمی په بدل کښې قصاصاً قتل

کولې شی یا نه په دې کښې مذاهب ائمه

قوله: ﴿لَا يُقْتَلُ مُؤْمِنٌ بِنَافِرٍ وَلَا ذُو عَهْدٍ فِي عَهْدِهِ﴾ د دې جملې نه مخکښې اختلافی مسئله واورئ، دا د قصاص مسئله ده، په دې باندې د ټولو اتفاق دې چه د کافر حربی په بدله کښې به مومن نه شی قتل کولې هم دغه شان په دې باندې هم اتفاق دې چه د کافر حربی په مقابله کښې به ذمی نه شی قتل کولې، او په دې باندې هم اتفاق دې چه د ذمی په بدله کښې به ذمی قتل کولې شی خو اختلاف په دې کښې دې چه د کافر ذمی په بدل کښې به مسلمان هم قتل کولې شی یا نه؟ نو د جمهورو په نزد به نه شی قتل کولې او د احنافو په نزد به د ذمی په بدله کښې مسلمان قتل کولې شی، د احنافو په نزد د قصاص په مسئله کښې مسلمان او ذمی دواړه برابر دی.

دا حدیث د احنافو دلیل دې او څنگه؟

د دې نه پس اوس په دې ځان پوهه کړئ د دې حدیث شرح، جمهور وائی چه په دې حدیث کښې د کافر نه مراد مطلق دې که حربی وی یا ذمی وی، که یو مسلمان یو ذمی لره قتل کړی نو د جمهورو په نزد به د هغه مسلمان نه قصاص نه شی اخستلې، په دې مسئله کښې د جمهورو په نزد ټول کافر برابر دی که هغه حربی او که ذمی وی، په ظاهره کښې د جمهورو خبره صحیح معلومیږي ځکه چه په حدیث کښې (بکافر) مطلق ذکر شوې دې، احنافو چه د دې کوم جواب کړې دې هغه په غور سره واورئ، هغوی داسې وائی چه په حدیث کښې د (بکافر) نه مراد حربی کافر دې نه مطلق کافر، چه د هغې دلیل او قرینه دا ده چه وړاندې په دې حدیث کښې راځی "ولا ذو عهد فی عهده" د دې (ذو عهد) عطف په مومن باندې دې، د عبارت تقدیر په داسې وی "لا یقتل مومن بکافر، ولا ذو عهد فی عهده بکافر" اوس اوگورئ چه د کافر لفظ دوه ځایه راغلې دې په معطوف کښې او په معطوف علیه کښې، په معطوف کښې د کافر نه بالاتفاق کافر حربی مراد دې ځکه چه که مطلق کافر حربی مراد کړې شی نو د دې مطلب به دا وی چه ذمی به نه د کافر حربی په مقابله کښې قتل کولې شی نه خپله د ذمی په مقابله کښې، حال دا چه ذمی د ذمی په مقابله کښې بالاتفاق قتل کولې شی، نو هر کله چه دا ثابت شوه چه په معطوف کښې د کافر نه مراد حربی دې نو هم دغه شان به په معطوف علیه کښې هم د کافر نه مراد کافر حربی وی ځکه چه نحوی

قاعده مشهوره ده چه معطوف، د معطوف عليه په حکم کښې وی : ﴿ فثبت ما ادعیناه ان المراد فی الحدیث بالکافر، الکافر الحربی، لا مطلق الکافر فتدبر وتشکر ﴾ اوس دا خبره چه جمهور به زمونږ د دې تقریر څه جواب کوی، په ظاهره کښې هغوی د دې جواب کوی چه دا دویمه جمله په ﴿ ولا ذو عهد فی عهده ﴾ ماقبل باندي عطف نه ده بلکه دا استیناف دې او مستقل جمله ده چه د هغې مطلب دا دې چه کوم ذمی په خپل عهد باندي قائم وی هغه دې قتل نه کړې شی، بس خبره ختمه شوه. والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذری.

[۲۷۵۲] حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا عِكْرَمَةُ، حَدَّثَنِي إِيَّاسُ بْنُ سَلْمَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: أَغَارَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عُبَيْنَةَ، عَلَى إِبِلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَتَلَ رَاعِيَهَا فَخَرَجَ يَطْرُدُهَا هُوَ وَأَنْاسٌ مَعَهُ فِي خَيْلٍ، فَجَعَلَتْ وَجْهِي قِبَلَ الْمَدِينَةِ، ثُمَّ نَادَيْتُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: يَا صَبَاحَا، ثُمَّ اتَّبَعْتُ الْقَوْمَ فَجَعَلْتُ أَرْمِي وَأَعْقِرُهُمْ فَإِذَا رَجَعُ إِلَى فَارِسٍ، جَلَسْتُ فِي أَصْلِ شَجَرَةٍ حَتَّى مَا خَلَقَ اللَّهُ شَيْئًا مِنْ ظَهْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا جَعَلْتُهُ وَرَاءَ ظَهْرِي، وَحَتَّى الْقَوَا أَكْثَرِ مِنْ ثَلَاثِينَ رُمْحًا وَثَلَاثِينَ بَرْدَةً يَسْتَحْفُونَ مِنْهَا، ثُمَّ أَنَا هُمْ عِيْنَةٌ مَدَدًا فَقَالَ: لِيَقْمِ إِلَيْهِ نَفَرٌ مِنْكُمْ، فَقَامَ إِلَيَّ أَرْبَعَةٌ مِنْهُمْ فَصَعِدُوا الْجَبَلَ فَلَمَّا أَسْمَعْتُهُمْ قُلْتُ: أَعْرِفُونِي قَالُوا: وَمَنْ أَنْتَ قُلْتُ: أَنَا ابْنُ الْأَكْوَعِ وَالَّذِي كَرَّمَ وَجْهَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَا يَطْلُبُنِي رَجُلٌ مِنْكُمْ فَيَدْرِكُنِي وَلَا أَطْلُبُهُ فَيَقْتُلُنِي فَمَا بَرِحْتُ حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى فَوَارِسِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْتَلُونَ الشَّجَرَ أَوْ هُمْ الْأَخْرَمُ الْأَسَدِيُّ، فَيَلْحَقُ بِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عُبَيْنَةَ، وَيُعْطِفُ عَلَيْهِ عَبْدُ الرَّحْمَنِ فَاخْتَلَفَا طَعْنَتَيْنِ فَعَقَرَ الْأَخْرَمُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ، وَطَعَنَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ فَقَتَلَهُ فَتَحَوَّلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَلَى فَرَسِ الْأَخْرَمِ، فَيَلْحَقُ أَبُو قَتَادَةَ بِعَبْدِ الرَّحْمَنِ فَاخْتَلَفَا طَعْنَتَيْنِ فَعَقَرَ يَأْسِي قَتَادَةَ وَقَتَلَهُ أَبُو قَتَادَةَ فَتَحَوَّلَ أَبُو قَتَادَةَ عَلَى فَرَسِ الْأَخْرَمِ، ثُمَّ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى الْمَاءِ الَّذِي جَلِيَتْهُمْ عَنْهُ دُوقَرْدٌ فَإِذَا نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي خَمْسِ مِائَةٍ فَأَعْطَانِي سَهْمَ الْفَارِسِ وَالرَّاجِلِ.

ایاس بن سلمه دخپل پلار سلمه بن اکوع نه روایت کوی فرمائی چه چه عبد الرحمن بن عیینه فزاري دښمنی دښمنی په اوسانو باندي حمله او کړه او لوټ ئې کړل او دهغه شپونکې ئې قتل کړ او شروع شو چه شرل ئې ده پخپله هم او دده نورو ملگرو هم کوم چه په اسونو سواره وو نو ماخپل مخ مدينې طرف ته مخامخ کړو او بیا ئې درې آوازونه او کړل چه یاصباحاه (دا هغه کلمه ده کومه چه د فریاد په وخت کښې وئیلې شی) او زه په دوی پسې ور پسې شوم او په غشومي ویشتل او ور پسې روان ووم او زخمي کول به مې کله چه به کومې سورلئ والا په ما پني راوگر جیدو نوزه به د یوې ونفې شاته پټ شوم تردې پورې چه د نبی ﷺ څومره اوسان وو هغه مادخان نه شاته کړی. یعنی ټول مې ترې د تختولونه ازاد کړل تردې چه دیرش نیزي او دیرش خادرونه ئې او غورزول ددې دپاره چه سپک شو او په تیخته کښې اساني پیداشي په دې وخت کښې د عبد الرحمن پلار عیینه دچانه مدد واغستو اورا ورسیدو او وئې وئیل په تاسو کښې یو څوکسان خو په دغه سرې پسې ورشئ یعنی سلمه بن اکوع او قتل ئې کړئ، سلمه وائی په دوی کښې څلور کسان په ما پسې راغلل او غرته راوختل کله چه دومره نزدې شول چه زما آواز ئې اوریدو ما ورته او وئیل آیا تاسو

ماپيژنئ؟ هغوی اووئیل ته څوک یې؟ ما اووئیل ډاکووع ځوی یم زمادي قسم وي په هغه ذات باندي چاچه محمدته عزت ورکړې دې په تاسو کښې یوکس مانه شي نیولي اونه په تاسو کښې یوکس زمانه بچ کیدې شي او په مخه به مې دنبي ﷺ اس سوارانو ته گتله نوپه دې وخت کښې مادني ﷺ اسواران اولیدل چه په ونوکښې را روان وو او په ټولو کښې مخکښې اخرم اسدي وو هغه ډاکوانو دمشر عبدالرحمن سره ملاو شو عبدالرحمن چه دې اولیدو نود دوار ترمینځه وارونه اوشول اخرم د عبدالرحمن اس قتل کړو او عبدالرحمن اخرم قتل کړو بیا عبدالرحمن داخرم په اس باندي سور شو بیا ابوقتاده د عبدالرحمن سره مقابله شروع کړه او وارونه شروع شول د ابوقتاده اس قتل کړې شو او ابوقتاده عبدالرحمن قتل کړو بیا ابوقتاده داخرم په اس باندي سور شو او وني زغلوو اونبي ﷺ د پنځه سوه کسانو سره ناست وو نبي ﷺ ماته دیو سور او دیوه پیاده حصه راکړه.

د غزوة الغابة قصه

دا قصه په غزوة الغابة او غزوه ذی قرد سره مشهوره ده، غایبه د یو ځائي نوم دې د احد د طرف نه د مدینې نه یو برید یعنی یو منزل په فاصله باندي، دا په کوم کال باندي پېښه شوې وه، په دې کښې اختلاف دې، ټولو سیرت لیکونکو خو دا قبل الحدیثه لیکلې ده او د امام بخاری په روایت کښې قبل خیبر بثلاثة ایام دې، یعنی په ۷ هجری کښ، د دې غزوه مقصد خپله په دې روایت کښې مذکور دې، د رسول الله ﷺ شل اونبې د پیو والا هلته خریدلې، د سیدنا ابوذر غفاری رضی الله عنه څوئي د هغې نگران او شپونکي وو خپله ابوذر رضی الله عنه او د هغه بنځه هم هلته مقیم وو، عبدالرحمن بن عیینه کوم چه کافر وو (اگر چه نوم ئې اسلامي دې)، د څلویښتو شهسوارانو سره په هغه اونبو باندي حمله اوکړه، شپونکي ئې قتل کړو، او هغه ټولې اونبې ئې بوتلې نو رسول الله ﷺ د پنځه سوه صحابه کرامو سره د مدینې منورې نه روان شو د غابه طرف ته او سیدنا سلمه بن الاکوع رضی الله عنه د چا منډه چه ضرب المثل وو هغه چه دا واوریدل نو د رسول الله ﷺ نه مخکښې هغه طرف ته په منډه شو او د تلو په وخت ئې د مدینې طرف ته مخ کولو سره درې کرته اواز اوکړو (یا صباحه) دا جمله د مدد طلب کولو دپاره وی، خلقو لره د خبر کولو او متوجه کولو دپاره، هغه فرمائی چه زه ډیر په قوت سره هغوی پسې اوم د غشو په ذریعه مې د هغوی سورلئ زخمی کړې، چه کله به د هغوی نه زما طرف ته څوک متوجه شو نو زه په د اونې نه شاته شوم او په غشو به مې ویشتل او وړاندې به مې منډه کړه، تردې چه د رسول الله ﷺ چه څومره اونبې وې هغه ټولې شاته پاتې شوې او زه په هغوی پسې اوم، په دې منډه کښې هغه مشرکانو د ځانه روستو تقریبا دیرش څلویښت څادرې او هم په دې مقدار کښې نیزې په لاره کښې اوغورځولې د بوجه د سپکولو دپاره د دې دپاره چه منډه ورته اسانه شی، اوس یو ځائي ته رسیدو سره د عبدالرحمن پلار عیینه د دې ډاکوانو د حمایت دپاره راوتلو، دا ټول ډاکوان تر اوسه پورې بې حوصلې وو او سوچ ئې دا وو چه معلومه نه ده په مونږ پسې څومره خلق شاته راروان دی، خو د عیینه په رارسیدو باندي دا خلق برابر شو او ما هم خان برابر کړو

چه کیدې شی اوس مقابله اوشی په دې وجه یکدم یوې غونډې ته اوختلم، د غره د لاندي دا ټول مشرکان راجمع ولاړ وو او زه پورته رسیدلې اوم، نو عیننه خپلو ملگرو ته اووې چه تاسو خو کسان غونډې ته اوخیژئ، پس څلور کسانو زما طرف ته رخ اوکړو او په غونډې باندي راختل، چه کله هغوی په غونډې باندي ختلو سره ماته دومره رانزدې شو چه زما اواز ئې اوریدلې شو (هم دا ترجمه ده د فلما اسمعتهم) نو ما اوس د هغوی سره خبرې اترې شروع کړې، مقصود هغوی په خبرو کښې مشغول کول وو چه رسول الله ﷺ زما طرف ته څه مدد راولیږی څنگه چه هغوی ته مدد راورسیدو او هغوی ته ئې په تیزه اووې "اتعرفونی" ایا تاسو ما پیژنئ هم چه زه څوک یم؟ هغوی ترې تپوس اوکړو چه هم ته راته اوایه ته څوک ئې، ما اووې زه ابن الاکوع یم، قسم دې په هغه ذات چا چه محمد ﷺ ته عزت ورکړې دې په تاسو کښې یو سرې هم داسې نشته چه په منډه باندي ما راو نیسی، او په تاسو کښې یو سرې هم داسې نشته چه زه ئې راو نیول غواړم او هغه زما نه لار شی، سلمه فرمائی: ما هغوی سره هم دا قسم خبرې کولې (او هغوی هم په خبرو کښې مصروف کیدو سره د پورته ختلو نه منع شو) تردې چه ما د رسول الله ﷺ شهسواران اولیدل چه د اونو په مینځ کښې په منډه منډه راروان وو په راتلونکو کښې د ټولو نه وړاندي اخرج اسدی ﷺ وو، د دې نه پس چه د دې واقعي کومه حصه باقی پاتې شوه هغه مونږ سره په "باب الرجل یسمى دابته" د لاندي تیره شوه هغه دې هلته اوکتلې شی، د هغې نه روستو بیا په دې واقعه کښې دی (ثُمَّ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَهُوَ عَلَى الْمَاءِ الَّذِي جَلِثَتْهُمْ عَنْهُ ذُو قَرْدٍ) یعنی بیا زه روغ سلامت واپس کیدو سره د رسول الله ﷺ طرف ته راروان اوم نو ما اوکتل چه رسول الله ﷺ هغه چینی ته رارسیدلې وو د کوم ځانې نه چه زه په هغه ډاکوانو پسې شوې اوم یعنی ذو قرد، رسول الله ﷺ هغه وخت د پنځو سوو صحابه کرامو سره وو پس رسول الله ﷺ یوه حصه خو ماته د شهسوار راکړه او یوه ئې راته د پیاده راکړه، راجل خو په دې وجه چه راجل خودې وو او د فارس په طریقه د نفل

د دې حدیث د ترجمه الباب سره مناسبت داسې کیدې شی چه د کومو پنځه سوه صحابه کرامو سره رسول الله ﷺ ذو قرد ته رسیدلې وو په مدینه منوره کښې هغه خو جیش اوگنرلې شی او سلمه بن الاکوع او د هغه ملگری اصحاب سریه، او د غنیمت د عسکر طرف ته واپس کول هم دلته بیا موندلې شو چه سلمه هغه ټول سامان راوړلو او رسول الله ﷺ ته ئې پیش کړو، او سریه ته په طور د نفل ورکړې کیدل هم دلته بیا موندلې شو، لهذا د حدیث په ترجمه الباب باندي انطباق اوشو. دا قصه په صحیح مسلم کښې د دې نه په زیات تفصیل سره ذکر شوې ده. والحديث اخرجہ مسلم اتم من هذا.

بَابُ فِي النَّفْلِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَمِنْ أَوَّلِ مَغْنَمٍ

په غنیمت کښې د سرو زرو او سپینو زرو نه دا نعام ورکولویان

د ترجمه الباب تشریح

دا ترجمه الباب دقیق دې، په دې کښې دوه اجزاء دي اول دا چه ایا د امام دپاره دا جائز دی چه هغه سره زر او سپین زر په طور د نفل یو غازی ته ورکړی؟ د جمهورو په نزد جائز دی، په دې کښې د امام اوزاعی اختلاف منقول دې، د هغه په نزد په نفل کښې سره او سپین زر نه شی ورکړې کیدې، بلکه نور سامان وسله وغیره به ورکولې شی، او د ترجمه دویم جزء دې النفل من اول مغنم، د اول مغنم په مفهوم کښې اختلاف دې، صاحب د عون المعبود د دې مصداق لیکلې دې ما يحصل ابتداء بسبب الجهاد والقتال، یعنی دار الحرب ته د داخلیدو نه مخکښې په میدان جنگ کښې د جهاد او قتال په ذریعه کوم چه د مشرکینو مال حاصل وی یعنی هم هغه کوم ته چه مال غنیمت وئیلې شی هم دغه شان هغوی لیکلې دی چه دا مقابل دې د مباحات دار الحرب یعنی په دار الحرب کښې دننه څیزونه کوم چه مسلمانانو ته حاصل شوي دي د هغې د فتح کولو نه پس، او حضرت په بذل کښې د اول مغنم معنی احتمالا دا لیکلې ده: ما يحصل من الغنیمة قبل القتال اذا دخل عسكر الاسلام دار الحرب فحصلت لهم غنیمة من قبل ان یقاتلوا بقوة الجیش.

یعنی د کفارو هغه مال کوم چه دار الحرب ته د داخلیدو نه پس حاصل شی بغیر د قتال نه صرف د لښکر په طاقت سره، چه د هغې حاصل په ظاهره کښې مال فی شو، او بیا وړاندې حضرت لیکلې دی چه غالباً په دې سره د اوزاعی د قول طرف ته اشاره ده پس حافظ په فتح الباری کښې د امام اوزاعی نه نقل کړې دی چه د اول غنیمت نه دې نفل ورکړې شی او نه دې ذهب او فضه د نفل په طور ورکړې شی وخالفه الجمهور حضرت فرمائی ظاهره دا ده چه د مصنف میلان هم په دواړو مسئلو کښې هم دې طرف ته دې، یعنی په دواړو مسئلو کښې د عدم جواز نفل یعنی لا يجوز النفل من الذهب والفضة ولا من مال الفئ... او د صاحب عون رائي دا ده چه د اول مغنم نه مراد غنیمت دې، او د مصنف میلان د مسلک جمهور طرف ته دې په دواړو مسئلو کښې، یعنی جواز نفل، د سرو او سپینو زرو نه هم او د مال غنیمت نه هم، او زما رائي دا ده کومه چه د شارحینو رائي ده او په حدیث الباب کښې د غور کولو نه هم دا معلومیږي چه د اول مغنم نه مراد هم هغه دې چه حضرت فرمائی "ما يحصل بدون القتال" یعنی مال فی، خو د مصنف رائي دا فهمیږي چه په نفل من الذهب والفضة کښې خو د هغوی رائي د جمهورو په شان دې، یعنی جواز، او اول مغنم یعنی مال فی کښې عدم جواز نفل، ځکه چه دا د ټولو غانمینو حق دې، خو چه هلته هر کله قتال ته خبره رانغله نو بیا د نفل څه معنی، نفل توت شجیع علی القتال دپاره ورکولې شی، او ان شاء الله د حدیث الباب نه هم دا ثابتیږي لکه چه وړاندې به راشی.

[۲۷۵۳] حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ مَحْبُوبٌ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْفَزَارِيُّ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كَلَيْبٍ، عَنْ أَبِي الْجَوَيْرِيَةِ الْجَرْمِيِّ، قَالَ: أَصَبْتُ بِأَرْضِ الرُّومِ حِزَّةً حَمْرَاءَ فِيهَا دَنَائِدٌ، فِي إِمْرَةٍ مُعَاوِيَةَ وَعَلَيْنَا رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ يُقَالُ لَهُ مَعْنُ بْنُ يَزِيدَ، فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَسَمَهَا بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ وَأَعْطَانِي مِنْهَا مِثْلَ مَا أُعْطِيَ رَجُلًا مِنْهُمْ، ثُمَّ قَالَ: لَوْلَا أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَا نَقُلُ إِلَّا بَعْدَ الْخَمْسِ لِأَعْظَمِيَّتِكَ"، لَمْ أَخَذْ يَعْزُضٌ عَلَيَّ مِنْ نَصِيبِهِ فَأَبَيْتُ.

د ابو الجويرية الجرمني نه روايت دي فرمائي چه دمعاويه دخلافت په زمانه کښې ما په روم کښې يو سور منگي پيدا کړو چه د دینارونونه دک وو او په دغه وخت کښې د نبی ﷺ په صحابه کرامو کښې د بنو سلیم قبیلې يو کس چه معن بن یزید به ورته وئیلې شو زمونږ امیر وونو ما دامنگي دغه امیرته یوړونو هغه په ټولو مسلمانانو تقسیم کړو او د نورو کسانو د حصو په مقدار حصه ئې ماته هم راکړه، که چرې ما د نبی ﷺ دا قول نه وی اوریدلي کوم چه هغه فرمائي وو چه انعام ورکول نشته مگر پس د خمس نه، نومابه دا تاته درکړي وي او بیاني ماته خپله حصه پیش کوله خو ما ورته انکار وکړو داخستلونه.

مضمون حدیث

ابو الجويرية فرمائي چه ماته يو ځل د سيدنا معاويه رضي الله عنه په خلافت کښې د سور رنگ گوډي (نينزکه) په روم کښې ملاؤ شوه، چه په هغې کښې دنيارونه وو، او هغه وخت زمونږ امير يو صحابي وو د قبيله بنو سليم چه د هغه نوم معن بن يزید رضي الله عنه وو، ما هغه گوډي راوړه او هغه ته مې پیش کړه، هغه دغه دينارونه په مسلمانانو باندي تقسيم کړل او زما حصه ئې هم د هغوی برابر اولگوله يعنی ماته ئې په طريق د نفل هيڅ زياتی رانکړل او بيا ئې ماته د معذرت په طور اووې چه که ما د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه دا حديث نه وې اوریدلي، لا نفل الا بعد الخمس... نو ما به تاته ضرور څه زياتی درکړې وې، او بيا ئې د دې نه روستو ماته د خپلې حصې نه څه پیش کول چه دا واخله نو ما ئې د اخستلو نه انکار اوکړو، معن بن يزید په عدم جواز نفل باندي د دې حديث نه استدلال کړې دې «لا نفل الا بعد الخمس» ځکه چه د دې حديث نه خو دا فهميری چه نفل د هغه مال نه وی چه په هغې کښې خمس واجب وی، او دا چه کوم مال وو د گوډي والا په دې کښې خمس نشته ځکه چه دا خو مال فئ وو خمس خود مال غنيمت نه اخستلې شی نه د مال فئ نه، لهذا په دې کښې به نفل هم نه وی.

د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت

مونږ پورته ليکلې وو چه د مصنف ميلان (۱) په اول مغنم والا مسئله کښې د عدم جواز نفل طرف ته دي، دا خو په ظاهره ثابته شوه او ذهب او فضا والا مسئله کښې مونږ دا وئيلې وو چه په دې کښې مصنف جواز نفل قائل وو، دا بله مسئله هم په ظاهره کښې د حديث الباب

(۱): تفرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۸۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۷۰) (صحيح)

(۲): دا چه مونږ اوئيل چه د مصنف ميلان دې طرف ته دي دا په دې وجه چه د حديث الباب نه زمونږ په نزد هم دا ثابتيری خو مسئله چونکه اجتهادی ده په دې وجه ضروری نه ده چه د مصنف رائي دې هم دا وی، او په ترجمه الباب کښې مصنف د خپلې رائي اظهار نه دي فرمائي (۱۲).

نه ثابتیږي ځکه چه معن بن یزید په دې مال کښې د عدم نفل په سبب منحصر کړې دې په دې خبره کښې چه دا مال فئ دې مال غنیمت نه دې، معلومه شوه چه که هم دا مال د مال غنیمت نه وي نو د دې نه به ئې په طور د نفل ورکړې وي، او د دې ذهب کیدل به مانع نه وي د نفل نه، لهذا ثابت شوه چه د ذهب او فضه نه نفل ورکړې کیدې شي، زما په نزد دا د ترجمه الباب او بیا د مصنف د دې سره غرض او بیا د حدیث الباب د دې غرض سره مطابقت دا ښه ژور بحث دې، بعض تراجم په هر کتاب کښې مشکل وي، او د بخاری د تراجمو باریکی ژور والی او غموض خو مشهوره خبره ده.

دا حدیث د دې کتاب نه علاوه په صحاح سته کښې خو بل چرته هم نشته، شیخ محمد عوامه لیکلي دی په کتاب السیر للفراری کښې هم په دې متن او سند سره.

[۲۷۵۴] (۱) حَدَّثَنَا هَنَّادٌ، عَنْ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ أَبِي عَوَانَةَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كَلَيْبٍ بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ.

او عاصم بن کلب په خپل سند سره د تیر شوي روایت په شان روایت بیان کړې دې.

باب فِي الْإِمَامِ رِسْتَاثْرِ بْنِ أَبِي عَمْرٍو وَنَفْسِهِ

د مشرکینو نه حاصل شوي مال امیر ساتلې شي

د فئ اطلاق په غنیمت باندې هم وي، په دې ترجمه الباب کښې د فئ نه غنیمت مراد دې، یعنی په مال غنیمت کښې امام د خپل ځان دپاره د څه خاص خیز انتخاب کولې شي؟ د غنیمت د حصې نه علاوه؟ جواب دا دې چه "ليس لاحد بعده صلى الله عليه وسلم" رسول الله ﷺ ته خود دې خبرې حق وو چه هغه د مال غنیمت نه يو داسې خیز چه د هغه خوښ وي اخستلې شي چه د هغې نوم سهم صفي دې، او په دې باندې وړاندې مستقل باب هم راروان دې، خود هغه نه روستو د يو امام دپاره بالاتفاق داسې اخستل جائز نه دی.

[۲۷۵۵] (۱) حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ عَتَبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْعَلَاءِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَلَامٍ الْأَسَدِيَّ، قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرُو بْنَ عَبْسَةَ، قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى بَعِيرٍ مِنَ الْمُغَنِمِ فَلَمَّا سَلَّمَ أَخَذَ وَبِرَةً مِنْ جَنْبِ الْبَعِيرِ، ثُمَّ قَالَ: "وَلَا يَحِلُّ لِي مِنْ غَنَائِكُمْ مِثْلُ هَذَا إِلَّا الْخُمْسُ وَالْخُمْسُ مُرْدُودٌ فِيكُمْ".

د عمرو بن عبس ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرماني چه نبی ﷺ مونږ ته مونږ را کړو په داسې حال کښې چه د غنیمت يو اوښ ته ئې مخ کړې وو یعنی دسترې په شکل هرکله چه فارغ شو نو داوښ د شانه ئې يو ويښته راوويستو او بیا ئې او فرمائیل ستاسو د غنیمت نه زما دپاره د دې ويښته په برابر شي اخستل جائز نه دی مگر علاوه د خمس نه، او خمس به هم واپس په تاسو باندې خرچ کيږي.

شرح الحديث

یعنی رسول الله ﷺ يو ځل د غنیمت په اوبانو کښې يو اوښ ستره جوړ کړو او د هغه طرف ته ئې مونږ او کړو، د مونږ نه چه فارغ شو نو د اوښ د ملا نه ئې په خپل موټي کښې ويښته نيولو سره او فرمائیل چه د خمس نه علاوه زما دپاره په مال غنیمت کښې يو موټي (خیز)

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۸۴) (صحیح)

(۲): تغرد به أبوداود، (تحفة الأشراف: ۱۰۷۶۹) (صحیح)

اخستل هم جائز نه دی، او هغه خمس کوم چه زه اخلم نو هغه هم په تاسو باندي خراج کولې شی، په دې حدیث کښې د خمس نه مراد خمس الخمس دې، لکه چه مخکښې تیر شو چه په کل مال غنیمت کښې خمس ویستلو سره بیا خمس لره په پنځه حصو کښې تقسیم کولې شی چه په هغې کښې یوه حصه د رسول الله ﷺ ده، لهذا د هغه حصه خمس الخمس اوشو، خو مجازا د هغې نه په خمس سره تعبیر کولې شی.

د رسول الله ﷺ دپاره به په مال غنیمت کښې درې حصې وې

خو د دې نه پس تاسو په دې باندي ځان پوهه کړئ چه د رسول الله ﷺ دپاره به په مال غنیمت کښې درې حصې وې یوهم دا کومه چه پورته ذکر شوه، دویم سهم کسهم احد الغانمین، او دریم سهم صفی کوم چه په دې ترجمه الباب کښې مذکور دې نو چه کله د رسول الله ﷺ دپاره په مال غنیمت کښې درې قسم حصې وې نو بیا په دې حدیث کښې رسول الله ﷺ صرف په یو قسم حصه باندي ولې انحصار او فرمائیلو؟ د دې جواب حضرت په بذل کښې دا ورکړې دې چه په دې روایت کښې اختصار دې، د مسند احمد په روایت کښې په دې باندي زیادت دې (ولا نصیبی معکم) یعنی یوه هغه حصه کومه چه ستاسو ټولو دپاره وې. حضرت خو په بذل کښې هم دومره لیکلې دی، خو زما په خیال کښې لا اشکال باقی دې، هغه دا چه د رسول الله ﷺ دپاره دریمه حصه هم وه یعنی سهم صفی، د دې جواب دا کیدې شی چه د سهم صفی په باره کښې دا اختلاف دې چه هغه به د رسول الله ﷺ دپاره په هر یو غنیمت کښې وو یا صرف په دې صورت کښې چه کله رسول الله ﷺ په هغه غزوه کښې خپله شریک وې، په خلاف د غنیمت د حصې نه چه هغه ستا دپاره په هر صورت کښې وې، که رسول الله ﷺ په غزوه کښې شریک نه وې بیا هم

والحدیث اخرجہ النسائی وابن ماجه من حدیث عبادة بن الصامت بنحوه، وروی ایضا من حدیث جبير بن مطعم، والعرباض بن ساریة، قاله المنذرى.

بَابُ فِي الْوَفَاءِ بِالْعَهْدِ

معاهده پوره کول لازمی دی

[۲۷۵۶] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ الْغَادِرَ يَنْصَبُ لَهُ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ هَذِهِ غَدْرَةُ فُلَانٍ بْنِ فُلَانٍ."

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی دخیانت گردپاره به دقیامت په ورځ باندي یوه جنده اودرولې شي او اواز به اوشی چه دا د فلانی د فلانی دخوي خیانت دې. **تشریح: قوله:** "إِنَّ الْغَادِرَ يَنْصَبُ لَهُ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ هَذِهِ غَدْرَةُ فُلَانٍ بْنِ فُلَانٍ." (۱)

(۱) صحیح البخاري/الجزية ۲۲ (۳۱۸۸)، والأدب ۹۹ (۶۱۷۷)، والحیل ۹ (۶۹۶۶)، والفتن ۲۱ (۷۱۱۱)، تحفة الأشراف: (۷۲۳۲)، وقد أخرجہ: صحیح مسلم/الجهاد ۴ (۱۷۳۶)، سنن الترمذي/السير ۲۸ (۱۵۸۱)، مسند احمد (۱۴۲/۲) وأعادہ

المؤلف في السنة (۴۶۵۵) (صحیح)

(۲) أي هذه الهيئة الحاصلة له مجازاة غدوته (عون).

په جهاد کښې د مشرکانو سره چل ول او د هوکه کول خو جائز دی بلکه نافع دی، او دې ته ترغیب ورکړې شوې دي، خو که د یو مشرک سره څه معاهده اوشی نو د هغې خلاف ورزی قطعاً جائز نه ده، هغه عذر دي، او په عذر باندي په حدیث کښې سخت وعید راغلي دي، پس په حدیث الباب کښې دی چه د عذر کونکی سره به په قیامت کښې دا معامله کولې شی چه هغه په کوم ځانې کښې وی هلته به یوه جهنده قائمولې شی (جهنده به په دې وجه قائم کولې شی چه خلق د هغې طرف ته متوجه کیدو سره اوگوری چه دا سرې څوک دي) او هغه وخت به دا اعلان کولې شی چه اوگورئ دې سرې ته دا د فلانی څوئې دي، په فلانی وخت ئې په دنیا کښې فلانې عذر کړې وو، یعنی د هغه د عذر تشهیر کولو سره به هغه رسوا کولې شی، شارحینو په دې حدیث باندي زمونږ د خیال مطابق دومره لیکلي دي، خو د حضرت گنگوهی تقریر ترمذی، المعروف بالکوکب الدرې، په هغې کښې لیکلې دي چه دا غادر به په اوږد لرگی باندي کینولې شی کوم چه به د هغه په شرمگاه کښې دننه کیري. والله تعالی اعلم بمراد الحدیث، وپونده ما فی بعض الروایات عند استه والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی، قاله المنذری.

بَابُ فِي الْإِمَامِ يُسْتَجَنُّ بِهِ فِي الْعُمُودِ

باب په معاهدو کښې به د امام پناه حاصلولې شی

[۲۷۵۷] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَزَّازُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الْأَعْوَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِمَّا الْإِمَامُ جَنَّةٌ يُقَاتَلُ بِهِ".

د ابوهریره رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلى دي يقينا امام ډال دي او جنگ کیري په ده سره یعنی دده په مشوره باندي جنگ کیري نودده په مشوره باندي صلح کول هم پکار دي.

شرح الحدیث

د ترجمه الباب لفظ، د لفظ حدیث نه ماخوږ دي ځکه چه په حدیث الباب کښې دی (انما الامام جنة) جنة وئیلې شی ډهال ته، ډهال ذریعه او وسیله وی د دشمن د حملې نه د بچ کیدو دپاره، ځکه چه هغه په مینځ کښې حائل شی، نو د ترجمه الباب مطلب دا شو چه د امام په ذریعه باندي پناه حاصلولې شی په معاهدو او صلحو کښ، یعنی عمومی صلح بین المسلمین والمشرکین او د قتال تعلق د امام المسلمین سره دي، ظاهره خبره ده، په حکومتونو کښې چه کومې معاهدې کیري که هغه صلح وی یا قتال وی د دې تعلق د بادشاهانو سره وی نه د رعایا سره. (انما الامام جنة یقاتل به) رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی چه يقينا امام د ډهال په شان دي او د رعایا په حق کښې هغه د تحفظ ذریعه وی، د دشمنانو د حملې نه او د هغوی د تکلیفونو نه د بچ کیدو دپاره، وړاندي هغه فرمائی (یقاتل به ای بامرہ

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۳۷۸)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للجهاد ۱۰۹ (۲۹۵۷)، صحيح مسلم للإمارة (۱۸۴۱)، سنن النسائي للبيعة ۳۰ (۴۲۰۱) (صحيح)

ورایه، یعنی د مشرکانو سره په قتال کښې هم د هغه رائي چلیږي او خلقو لره د هغه په رائي باندې تلل هم پکار دی هغه چه هر څه فیصله کوي د قتال یا صلح، رعایا لره په هغې کښې موافقت کول پکار دی..... وړاندې امام ته خپله اختیار دې چه هغه ئې د چانه مناسب اوگنږي د هغه په باره کښې دې رائي او مشوره ورکړي. والحديث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائي، قاله المنذرى.

[۲۷۵۸] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الْأَشَجِّ، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي رَافِعٍ، أَنَّ أَبَا رَافِعٍ أَخْبَرَهُ، قَالَ: بَعَثَنِي قُرَيْشٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقَيِّ فِي قَلْبِي الْإِسْلَامُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي وَاللَّهِ لَا أُرْجِعُ إِلَيْهِمْ أَبَدًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنِّي لَا أَحِسُّ بِالْعَهْدِ وَلَا أَحِسُّ الْبُرْدَ، وَلَكِنْ أُرْجِعُ فَإِنْ كَانَ فِي نَفْسِكَ الَّذِي فِي نَفْسِكَ الْآنَ فَأَرْجِعْ"، قَالَ: فَذَهَبْتُ ثُمَّ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَمْتُ، قَالَ بُكَيْرٌ: وَأَخْبَرَنِي أَنَّ أَبَا رَافِعٍ كَانَ قَبْطِيًّا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا كَانَ فِي ذَلِكَ الزَّمَانِ فَأَمَّا الْيَوْمَ فَلَا يَصْلُحُ.

دحسن بن ابی رافع نه روایت دې چه ابورافع راته خبر را کړې دې فرمائیل ئې چه قريشو زه نبی ﷺ ته ولیږلم کله چه مې نبی ﷺ اولیدو نوپه زړه کښې مې داسلام سره محبت واچولې شو ماعرض اوکړو اي دالله رسوله زه دوی ته هيڅ کله واپس نه ورځم نبی ﷺ او فرمائیل چه زه لوظ نه ماتوم اونه سفیر لره قد کوم بلکه لاړشه که چرې په ريښتيا ستا په زړه کښې هغه څه وي کوم چه ته وائي نو بيا واپس راشه ابورافع وائي زه لاړمه او بيا نبی ﷺ ته واپس راغلم اواسلام مې قبول کړو، بکیر وائي چه حسن ماته وئیلی دی چه ابو رافع يو قبطي غلام وو. ابوداود وائي دا دهغه دور خبره ده په اوس وخت کښې داسې وئیل نه دی پکار ځکه چه دصحابي تعظيم کول ضروري دی.

مضمون حدیث

سیدنا ابو رافع رضی اللہ عنہ د خپل اسلام قبلولو واقعه بیانوی چه زه قريشو د رسول الله ﷺ په خدمت کښې لیږلې اوم، گویا هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې د وafd په حیثیت کښې راغلې وو، هغه فرمائی چه کله ما د هغه د مخ مبارک زیارت اوکړو نو زما په زړه کښې فوراً د اسلام حقانیت راغلو نو ما هغه ته عرض اوکړو یا رسول الله! واللّه زه به اوس د کفارو طرف ته نه واپس کیږم (هغوی چه د کوم کار دپاره راغلي وو هغه ترې ټول هیر شو او په هغه باندې مئین شو) رسول الله ﷺ او فرمائیل: گوره زه لوظ نه ماتوم (چه هر چا سره وی) او نه چه د هغوی کوم قاصد او ایلچی وی، منع کوم، هغه او فرمائیل چه دې وخت کښې ته واپس شه، پس که د تلو نه پس ستا په زړه کښې بيا هم هغه خبره اوشوه کومه چه اوس ده نو واپس شی هغه وائي چه زه هغه وخت خو لاړم او بيا موقع کتلو سره د هغه طرف ته لاړم او اسلام ئې قبول کړو، وړاندې په روایت کښې دا دی چه ابو رافع په شروع کښې قبطي غلام وو، قبطنی وئیلې شی قوم فرعون ته، په بذل کښې لیکلې شوې دی چه په شروع کښې دا د حضرت عباس غلام وو هغه ازاد کړې وو (په ظاهره کښې د اسلام نه مخکښې مراد دې)

۱: تفرده به ابوداود، (تحفة الأشراف: ۱۲۰۱۳)، وقد أخرجہ: سنن النسائي/الكبرى/السير (۸۶۷۴) (صحیح)

قال ابوداود : الخ : مصنف فرمائی چه داسې قاصد د مشرکانو طرف ته واپس کولو د هغه زماني خبره وه په دې زمانه کښې مناسب نه دی. یعنی د کفارو د طرف نه راتلونکې قاصد دار الاسلام ته د رارسیدو نه پس که اسلام قبول کړی نو بیا هغه واپس کول نه دی پکار اگر چه عام قاعده او ضابطه هم دا ده چه قاصد نه دی منع کول پکار خو دا صورت مستثنی دی، او په دې صورت کښې هغه لره واپس کول صرف د رسول الله ﷺ په زمانه کښې خو جائز وه چه د رسول الله ﷺ ذات د دې رجوع زبردست محرک وو، خو د هغه نه روستو به په دې قاعده باندې عمل نه وی.

په روایت کښې دی ﴿ لا اخیس بالعهد ﴾ دا په خاء معجمه او یاء تحتانیه سره دې، د خاس یخیس معنی د نقض ده، او د دې نه روستو چه کوم لفظ دې ﴿ لا احبس البرد ﴾ دا حبس دې په معنی د منع کولو او ﴿ البرد ﴾ جمع ده د برید، قاصد او استاذې والحديث اخرجه النسائی، قاله المنذری.

باب فی الإمام یرکون بینه و بین العدو عهد فی سیر الیه

کله چه د مشرکانو او امام تر مینځ معاهده وی نو په دې دوران کښې امام د مشرکانو علاقې ته تلې شي

[۲۷۵۹] () حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ النَّهْرِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي الْقَيْصِ، عَنْ سُلَيْمِ بْنِ عَامِرٍ رَجُلٍ مِنْ جَمِيْرٍ، قَالَ: كَانَ بَيْنَ مُعَاوِيَةَ وَبَيْنَ الرُّومِ عَهْدٌ، وَكَانَ يَسِيرُ نَحْوَ بِلَادِهِمْ حَتَّى إِذَا انْقَضَى الْعَهْدُ غَزَاهُمْ فَجَاءَ رَجُلٌ عَلَى فَرَسٍ أَوْ بِرَدْوْنٍ، وَهُوَ يَقُولُ: اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَفَاءٌ لَا غَدْرَ، فَتَنْظُرُ وَأَقَادًا عَمْرُوبِينَ عَبَسَةَ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ مُعَاوِيَةَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ كَانَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ قَوْمٍ عَهْدٌ فَلَا يَشُدُّ عَقْدَهُ وَلَا يَجْلِبُهَا حَتَّى يَنْقُضِيَ أَمْدَهَا أَوْ يُبَدِّلَ إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ"، فَرَجَعَهُ مُعَاوِيَةَ.

دسليم بن عامر حميرى نه روایت دې چه د معاويه رضي الله عنه او روميانو په مینځ کښې په دې خبره باندې معاهده شوي وه چه ديو مقرر وخت پورې به جنگ نه وی او معاويه به ددغه خلقو ښارونو ته سفر کولو کله چه د معاهدي موده پوره شوه نو بیا ئې ددغه خلقو سره جنگ شروع کړو، په دې دوران کښې په عربي یا ترکي اس باندې یوکس سور راروان وو او الله اکبر الله اکبر لوظ پوره کول پکار دي دوکه نه ده پکار دا کلمات به ئې وئیل خلقو چه ورته اوکتل نودا عمرو بن عبس وو نومعاويه ده ته یوکس ورولیرلو ددي تپوس دپاره چه مونږه کومه دوکه کړي ده، هغه او وئیل مادنبی صلی الله علیه و آله نه اوریدلی دی چه فرمائیل ئې دچاچه دیوقوم سره معاهده وي نو تر هغې پورې دي ورسره نه نوې لوظ کوي اونه دې زور لوظ ماتوي ترخو چه موجوده معاهده نه وی پوره شوي او یا معاهده ددواړه جانبونه فسخ کړې شي، معاويه چه دا واوریدل نو ددغه خاتې نه را واپس شو.

د حدیث مضمون

یعنی سیدنا معاويه رضي الله عنه او د روم د نصاری تر مینځه عهد وو، او هغه د هغوی د ښهر طرف ته روان وو، یعنی د لوظ د پوره کیدو نه مخکښې روان وو، په دې نیت سره چه هلته په

۱: سنن الترمذی/اللسیر ۲۷ (۱۵۸۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۷۵۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۱۱۱/۴، ۱۱۳، ۳۸۵) (صحيح)

رسیدو رسیدو به د لوظ موده پوره شی نو فوراً به حمله او کړی نو د شاته نه یو سرې راغلو په اس باندي سور (برزون وئیلې شی غیر عربی اس ته، یعنی ترکی) په دې وینا او تنبیه کولو سره، الله اکبر، معاهده پوره کړی، غداری مه کوئ، چه خلقو ورته په شا اوکتل نو معلومه شوه چه ویونکې عمرو بن عبسه دې، سیدنا معاویه رضی الله عنه هغه ته په سرې لیرلو سره معلومه کړه نو هغه د رسول الله صلی الله علیه و آله حدیث بیان کړو چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائیلې دی "چه د چا چه د یو قوم سره معاهده وی نو هغه د عهد غوټه او تړی نه دې پرانیزی" مراد دا دې چه په هغه معاهده کښې دې څه فرق نه راوولی، دا جمله هم په دې معنی کښې استعمالیږی، د هغې د لفظ ترجمې طرف ته دې التفات نه کوی "تردې چه د معاهدې موده پوره نه شی، یا دا چه معاهده بنسکاره ماته کړې شی" یعنی واضح طور اوئیلې شی چه مونږ دا معاهده ختموو. (علی سواء) مطلب دا دې چه د معاهدې د باقی نه پاتې کیدو په علم کښې دواړه برابر شی، یو ته د بل رائې په بنسټه طریقې سره معلومه شی چه اوس د بیا دپاره معاهده نه شی پریخودلې، گویا فسخ معاهده (فرج معاویة) سیدنا معاویه رضی الله عنه په دې اوریدو سره خپل ځانې ته واپس شی.

دا خو ظاهره ده چه د سیدنا معاویه رضی الله عنه مقصود عذر او د معاهده خلاف ورزی نه وه، په موده پوره کیدو باندي به ئې په هغوی باندي حمله کوله، خو دا فی الجمله احتیاط وو، د صریح عهد خلاف خو به نه وې خو وئیلې شی چه د لازم عهد خلاف به وې، ځکه د دویم فریق په ذهن کښې دا کیدې شی چه اگر چه د عهد موده پوره شوه خو زموږ خصم به د مودې د پوره کیدو نه پس د خپل مقام نه ځی. هکذا فی البذل عن القاری، خو زموږ حضرت شیخ به په سبق کښې فرمائیل چه زما په خیال کښې خو په دې کښې نقض عهد نه وو. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی وقال الترمذی، حسن صحيح، قاله المنذری.

بَابُ فِي الْوَفَاءِ لِلْمُعَاهِدِ وَحُرْمَةِ ذِمَّتِهِ

د ذمی وژل سخته ګناه ده

[۲۷۶۰] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا فِي غَيْرِ كُنْهٍ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ".

د ابوبکر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلې دی چاچه معاهدي والا بغير دڅه وجې نه قتل کړو نو الله تعالی به په ده باندي جنت حرام کړي.

د معاهدي نه مراد ذمی، یعنی د ذمی سره وفاداری کول، د هغه د ذمی او لوظ خلاف معامله نه کول، په حدیث الباب کښې دی: کوم سرې چه یو ذمی لره بغير د شرعی جواز نه قتل کړی نو الله پاک د هغه په قاتل باندي جنت حراموی، د دې قسم احادیث په خپل ظاهر باندي نه وی، بلکه د اهل سنت په نزد مؤول وی، مثلاً دا چه د دخول اولی نفی ده چه د هغه دپاره ئې ابتداء د جنت دخول حرام کړې دې یا به د سزا خوړلو نه پس ځی، یا دا چه په

(۱) سنن النسائی القسامة ۱۰ (۴۷۵۱)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۵، ۳۸، ۴۶، ۵۰، ۵۱)، سنن الدرهمي للسیر ۶۱ (۲۵۴۶) (صحيح)

مستحل باندې محمول دې، مقصود په دې سره مبالغه ده په زجر او توبيخ کښ. والله اعلم. والحديث أخرجه النسائي، قاله المنذرى.

باب في الرُّسُلِ

دقاصدانوبيان

د رسول نه مراد قاصد او استاذي دې، د كفارو د طرف نه راتلونکې وفد، او وئيل دا غواړي چه هغه به نه شي قتل کولي اگر چه هغه کافر دي.

[۲۷۶۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا سَلْمَةُ يَعْنِي ابْنَ الْفَضْلِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، قَالَ: كَانَ مُسَيْلِمَةَ كَتَبَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَقَدْ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ شَيْخٍ مِنْ أَشْجَعٍ يُقَالُ لَهُ: سَعْدُ بْنُ طَارِقٍ، عَنْ سَلْمَةَ بْنِ نَعِيمِ بْنِ مَسْعُودِ الْأَشْجَعِيِّ، عَنْ أَبِيهِ نَعِيمٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لَهَذَا جَيْنَ قَرَأَتْ أَبَ مُسَيْلِمَةَ: "مَا تَقُولَانِ أَنْتُمَا؟ قَالَا: نَقُولُ كَمَا قَالَ، قَالَ: أَمَا وَاللَّهِ لَوْلَا أَنَّ الرُّسُلَ لَا تَقْتُلُ لَهَرَبْتُ أَعْنَاقَكُمَا".

سلمه بن نعیم بن مسعود اشجعی رضی اللہ عنہ دخپل پلارنعیم نه روایت کوی فرمائی چه دنبی صلی اللہ علیہ وسلم نه می اوریدلی دی چه دمسیلمه کذاب قاصدانو ته ئې فرمائیل کله چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم دمسیلمه خط اولوستوچه تاسوپه دې باره کښې څه وائی؟ هغوی اووئیل مسیلمه چه څه وائی هغه مونږه هم وایو (یعنی دهغه نبوت منو) نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل په الله قسم که چرې قاصدان وژل بده خبره نه وې نو مابه ستاسو ددواړو څټونه وهلي وو.

دا حدیث د محمد بن اسحاق روایت کونکی د هغه شاگرد سلمه دی، سلمه داسې وئیلې شی چه ابن اسحاق زما نه دا روایت یو ځل نو تعلیقا بغیر د سند نه بیان کولې شی، او یو ځل سندا یعنی سند سره، پس هغه سند دلته په کتاب کښې مذکور دې.

مضمون حدیث

د حدیث مضمون دا دې چه مسیلمه کذاب چا چه د هغه په زمانه کښې د نبوت دعوی کولې شی، هغه د خپلو دواړو قاصدانو په ذریعه یو لیک د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې اولیرلو، د حدیث راوی نعیم بن مسعود وئیلې شی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه خط واوریدلو، چه په هغې کښې ظاهره ده هغه د خپل نبوت خبره لیکلې وه، نو په دې باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم خپله د هغه دواړو قاصدانو نه تپوس اوکړو چه تاسو د هغه په باره کښې څه وایئ نو هغوی جواب ورکړو چه هغوی څه وائی هغه خبره مونږه هم کوو، یعنی د هغه تصدیق کوو، نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه والله که دا خبره نه وه چه قاصدان نه شي قتل کولې نو ما به ستاسو نه ستیونه وهلي وې.

دا دوه قاصدان چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې راغلي وو د هغوی نوم په مسند احمد کښې ابن النواحه او ابن اثال راغلي دي، د هغې الفاظ دا دي ﴿عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: جَاءَ ابْنُ النَّوَاحَةِ وَابْنُ أَثَالٍ رَسُولًا مُسَيْلِمَةَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُمَا: أَتَشْهَدَانِ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟ قَالَا: نَشْهَدُ أَنَّ مُسَيْلِمَةَ رَسُولُ اللَّهِ﴾ پوره روایت په بدل کښې ذکر شوي دي.

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۵۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۸۷۷) (صحيح)

[۲۷۶۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي إِسْمَاعِيلَ، عَنْ حَارِثَةَ بْنِ مُضَرَّبٍ، أَنَّهُ أَمَى عَبْدَ اللَّهِ، فَقَالَ: مَا بَيْنِي وَبَيْنَ أَحَدٍ مِنَ الْعَرَبِ حِنَّةٌ، وَإِنِّي مَرَرْتُ بِمَسْجِدِ لَيْبِنَى حَنِيفَةً فَإِذَا هُمْ يُؤْمِنُونَ بِمُسْلِمَةٍ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِمْ عَبْدَ اللَّهِ هَفْجِيَّ بِرَبِّهِمْ فَاسْتَبَاهُمْ غَيْرَ ابْنِ النَّوَاحَةِ، قَالَ لَهُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَوْلَا أَنَّكَ رَسُولٌ لَضَرَبْتُ عُنُقَكَ فَأَنْتَ الْيَوْمَ لَسْتَ بِرَسُولٍ، فَأَمَرَ قَرْظَةَ بْنَ كَعْبٍ فَضَرَبَ عُنُقَهُ فِي السُّوقِ، ثُمَّ قَالَ: مَنْ أَرَادَ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى ابْنِ النَّوَاحَةِ فَيَبْلُغَ بِالسُّوقِ".

د حارثه بن مضرب نه روایت دی فرمائی چه زه عبد الله بن مسعود ته راغلم او اومې وئیل چه په عربو کښې مې دهیچا سره دشمنی نشته د بنی حنیفه د جومات سره تیریدم او هلته خلقو په مسلمیمه باندي ایمان راوړو نو عبد الله ابن مسعود هغوی راوغوښتل او ورته ئې اووئیل چه تاسو د ابن نواحه نه علاوه نور ټول توبه اوباسي او ابن مسعود ورته اووئیل د نبی ﷺ نه مې اوریدلی دی چه فرمائیلي یسی وو که چرې ته قاصد نه وې نو ما به ستا خټ و هلی وو، اوته دنن نه پس قاصد نه ئې اوبیا ابن مسعود قرضه بن کعب ته حکم او هغه ئې په بازار کښې قتل کړو او خلقوته ئې ووئیل څوک چه ابن نواحه لیدل غواړی نو بازار ته دې لاړ شي هلته مړ پروت دې.

شرح حدیث

یو سړې راغلو چه عبد الله بن مسعود رضی الله عنه په داسې حال کښې چه کله هغه د کوفې والی وو دا اوئیل چه اوگورئ زما او اهل عرب ترمینځه څه دشمنی نشته. (یعنی کومه خبره چه زه کوم د څه دشمنی د وجې نه بلکه صحیح خبره ده) او بیا هغه دا اوئیل چه د قبيله بنو حنیفه په مسجد کښې تیر شو نو ما اولیدل د دې مسجد والا چه د مسلمیمه تصدیق ئې کولو، سیدنا عبد الله رضی الله عنه هغه سړې لیرلو راوغوښتلو، د راتلو نه پس ئې په هغوی باندي توبه ویستله نو هغوی ټولو توبه اوکړه، سوا د ابن النواحه نه، نو په دې باندي عبد الله بن مسعود رضی الله عنه ابن النواحه او فرمائیل چه ما د رسول الله صلی الله علیه و آله نه واوریدل هغه او فرمائیل چه که ته قاصد نه وې نو ما به ستا ست و هلی وې، د دې نه روستو ورته عبد الله بن مسعود رضی الله عنه او فرمائیل چه ته اوس دې وخت کښې قاصد نه ئې، او د دې نه روستو ئې ښکاره قتل کړو، او دا اعلان ئې اوکړو چه که څوک ابن النواحه لره مقتول لیدل غواړی. والحديث اخرجہ النسائی.

بَابُ فِي أَمَانِ الْمَرْأَةِ

که چرې کومه ښځه مشرکه ته پناه ورکوی نو ورکولې شي

دا مسئله د دې نه مخکښې (یسعی بذمتهم ادناهم) د لاندې تیر شوې دی چه د زنانه امان معتبر دې. عند الائمة الاربعة... د سخنون او ابن ماجشون مالکیانو په نزد د زنانه امان د امام په اذن باندي موقوف دې.

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۱۹۶)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱/۳۸۴)، سنن الدارمي السیر ۶۰ (۲۵۴۵) (صحیح)

[۲۷۶۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عِيَّاضُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ مَحْرَمَةَ بِنْتِ سُلَيْمَانَ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أُمُّ هَانِيٍّ بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّهَا أَجَارَتْ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ الْفَتْحِ فَأَتَتْ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ: "قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتَ وَأَمَّا مَنْ أَمَّنْتَ".

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ام هانی بنت ابی طالب دفتح مکې په ورځ په مشرکانو کښې یوکس ته پناه ورکړې وه او نبی صلی الله علیه و آله ته راغله او قصه ئې ورته بیان کړه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل یقینا مونږه پناه ورکړه چاته چه تا پناه ورکړې ده او امن ورکړو مونږه هغه چاته چاته چه تا امن ورکړې دې- دام المومنین عائشې رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه که چرې کوي ښځې به یو مشرک ته دمسلمانانونه پناه ورکوله نو جائز به گنرلې شوه.

ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه ام هانی (د سیدنا علی رضي الله عنه خور) ماته بیان کړه چه ما د فتح مکه په ورځ باندي یو مشرک ته امن ورکړې وو، د دې نه روستو د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت کښې راغلو او د دې په ذکر کښې هغه سره اوکړو نو هغه وائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه او چاته چه تا امن ورکړې دې مونږ هم هغوی ته امن ورکړې دې. (دا خبره ئې مکرر کړه، والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي بنحوه، قاله المنذرى.

[۲۷۶۴] (۲) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ الْأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: إِنْ كَانَتِ الْمَرْأَةُ لِتُجِيرَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ فَاجْبُوزُ.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ام هانی بنت ابی طالب دفتح مکې په ورځ په مشرکانو کښې یوکس ته پناه ورکړې وه او نبی صلی الله علیه و آله ته راغله او قصه ئې ورته بیان کړه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل یقینا مونږه پناه ورکړه چاته چه تا پناه ورکړې ده او امن ورکړو مونږه هغه چاته چاته چه تا امن ورکړې دې- دام المومنین عائشې رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه که چرې کوي ښځې به یو مشرک ته دمسلمانانونه پناه ورکوله نو جائز به گنرلې شوه.

بَابُ فِي صَلَاحِ الْعَدُوِّ

دشمن سره د صلح کولو بیان

د ترجمه الباب شرح او د علماء گرامو مذاهب

د جهاد او قتال بابونه شروع دی، دا د باب صلح په باره کښې دی چه د دشمن سره صلح هم کیدې شی او اصل په دې کښې د الله پاک قول دې چه مشرکان د صلح طرف ته مائل کیږي نو هغوی سره صلح اوکړي، پس د جمهورو مسلک هم دا دې چه که امام د کفارو سره په صلح کښې مصلحت او گنډې نو صلح کولې شی، په دې کښې د بعض صحابه گرامو او تابعینو اختلاف دې لکه ابن عباس، عطاء او مجاهد وحسن بصری وغیره، دا حضرات وائی چه دا آیت منسوخ دې د سورة توبه د آیت نه ﴿ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۰۰۵)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للصلاة ۴ (۳۵۷)، والجزية ۹ (۳۱۷۱)، والأدب ۹۴ (۶۱۵۸)، صحيح مسلم للمسافرين ۱۶ (۳۳۶)، موطا امام مالك لقصص الصلاة ۸ (۲۸)، مسند احمد (۳۴۳/۶)، دي الصلاة ۱۵۱ (۱۴۹۴) (صحيح) ۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۹۹۸) (صحيح)

الآخر) الاية... دي ته آيت السيف هم وئيلي شي، او جمهور دا وائي چه په دي كښي نسخ وغيره هيڅ نشته، بلكه مطلب دا دي چه كه د مقابلي طاقت نه وي او مصالحت ممكن وي نو بيا مصالحت كيدي شي گڼي اصل حكم قتال او جهاد خو دي، كه د مصالحت ضرورت وي نو هغه هم كولي شي. (ابن كثير)

[۲۷۶۵] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ بْنِ عُبَيْدٍ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ ثَوْرٍ حَدَّثَهُمْ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنِ الْمُسَوَّبِيِّ، قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ الْحُدَيْبِيَّةِ فِي بَعْضِ عَشْرَةِ مِائَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِذِي الْحَلِيفَةِ قَلَدَ الْهَدْيِ وَأَشْعُرَةَ وَأَحْرَمَ بِالْعُمْرَةِ وَسَاقِ الْحَدِيثِ قَالَ: وَسَارَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِذَا كَانَ بِالثَّنِيَّةِ الَّتِي يُهْبَطُ عَلَيْهِمْ مِنْهَا بَرَكَتْ بِهَ رَأْسَهُ فَقَالَ النَّاسُ: حَلَّ حَلَّ خَلَاتِ الْقِصَافِ مَرَّتَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا خَلَاتٌ وَمَا ذَلِكَ لَهَا يَخْلُقُ وَلَكِنْ حَبَسَهَا حَاسِبُ الْفَيْلِ، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَسْأَلُونِي الْيَوْمَ خَطَةَ يُعْظَمُونَ بِهَا حُرْمَاتِ اللَّهِ إِلَّا أَعْطَيْتُهُمْ إِيَّاهَا، ثُمَّ زَجَرَهَا فَوَثِبَتْ فَعَدَلْ عَنْهُمْ حَتَّى نَزَلَ بِأَقْصَى الْحُدَيْبِيَّةِ عَلَى ثَمَدٍ قَلِيلِ الْمَاءِ، فَجَاءَهُ بَدِيلُ بْنُ وَرْقَاءَ الْخَزَاعِيُّ، ثُمَّ أَنَاةُ يَعْنِي عُرْوَةَ بْنَ مَسْعُودٍ، فَجَعَلَ يَكْلِمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَا كَلِمَةً أَخَذَ بِحَيْثِيهِ وَالْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ فَأَبَمَّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ السَّيْفُ، وَعَلَيْهِ الْبَغْفَرُ، فَضْرَبَ يَدَهُ بِتَعْلِ السَّيْفِ، وَقَالَ: أَخْرَيْدَكَ عَنْ لِحْيَتِي فَرَفَعَهُ عُرْوَةَ رَأْسَهُ فَقَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ، فَقَالَ: أَيْ غَدْرٌ أَوْ كَسْتُ أَسْعَى فِي غَدْرِكَ، وَكَانَ الْمُغِيرَةُ صَحِيبَ قَوْمٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَكَتَلَهُمْ وَأَخَذَ أَمْوَالَهُمْ، ثُمَّ جَاءَ فَأَسْلَمَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَمَّا الْإِسْلَامُ فَقَدْ قَبَلْنَا، وَأَمَّا الْمَالُ فَأَنَّهُ مَالُ غَدْرٍ لَا حَاجَةَ لَنَا فِيهِ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَكْتُبُ هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولَ اللَّهِ، وَقَصَّ الْخَبْرَ فَقَالَ سَهْمِيلٌ، وَعَلَى: أَنَّهُ لَا يَأْتِيكَ مِمَّنْ رَجُلٌ وَإِنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ إِلَّا رَدَدْتَهُ إِلَيْنَا، فَلَمَّا فَرَعُ مِنْ قَضِيَّةِ الْكِتَابِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَصْحَابِهِ: قَوْمُوا فَأَحْرُوا، ثُمَّ أَحْلِقُوا، ثُمَّ جَاءَ نِسْوَةٌ مُؤْمِنَاتٌ مَهَاجِرَاتُ الْآيَةِ، فَهَاهُمْ اللَّهُ أَنْ يَرُدُّوهُنَّ وَأَمْرُهُمْ أَنْ يَرُدُّوا الصَّدَاقَ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى الْمَدِينَةِ فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ يَعْنِي فَارَسْلُو فِي طَلْبِهِ فَدَفَعَهُ إِلَى الرَّجُلَيْنِ فَخَرَّجَاهُ حَتَّى إِذْ بَلَغَا ذَا الْحَلِيفَةِ نَزَلُوا يَأْكُلُونَ مِنْ ثَمَرِهِمْ، فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ لِأَحَدِ الرَّجُلَيْنِ: وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَى سَيْفَكَ هَذَا يَا فُلَانُ حَيْدًا، فَاسْتَلَّهُ الْآخَرَ فَقَالَ: أَجَلٌ قَدْ جَرَيْتَ بِهِ فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ: ارْنِي أَنْظُرَ إِلَيْهِ فَأَمَكْنَهُ مِنْهُ فَضْرَبَهُ حَتَّى بَرَدَ وَقَرَّ الْآخَرُ حَتَّى أَتَى الْمَدِينَةَ فَدَخَلَ السَّجْدَ يَعْدُو، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَقَدْ رَأَى هَذَا دُعْرًا فَقَالَ: قَدْ قَتَلَ وَاللَّهِ صَاحِبِي وَإِنِّي لَمَقْتُولٌ، فَجَاءَ أَبُو بَصِيرٍ فَقَالَ: قَدْ أَوْفَى اللَّهُ ذِمَّتَكَ فَقَدْ رَدَدْتَنِي إِلَيْهِمْ، ثُمَّ تَجَانَى اللَّهُ مِنْهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَيْلَ أُمِّهِ مَسْعَرُ حَرْبٍ لَوْ كَانَ لَهُ أَحَدٌ فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ عَرَفَ أَنَّهُ سَيَرُدُّهُ إِلَيْهِمْ، فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى سَيْفَ الْبَحْرِ وَنَقَلَتْ أَبُو جَنْدَلٍ، فَلَجَّحَ بِأَبِي بَصِيرٍ حَتَّى اجْتَمَعَتْ مِنْهُمْ عِصَابَةٌ."

دمسور بن مخرمه ^{رضي الله عنه} نه روایت دي فرمائی چه نبی ^{صلی الله علیه و آله} دصلح حدیبیه په کال ۶ خه دپاسه زروکسانوسره دده د ملگرونه راووتو، هرکله چه ذی الخلیفه ته راورسیدل نوخپلو قربانونه ئې امیلونه واچول اوزخمي ئې کړي اودعمرې احرامونه ئې اوتړل اوحديث ئې تراخړه بیان کړو، راوي وائی چه نبی ^{صلی الله علیه و آله} روان شوتردي چه هغه ډیر ته اورسیدو دکوي نه چه سرې کوزیرې اومي ته داخلیرې نو دنبي ^{صلی الله علیه و آله} سورلی کینیناسته خلقو ورته حل حل ازوئیل (دا هغه کلمه ده چه داوښ دپاخولو دپاره استعمالیرې) لیکن قصوي اونبه پانخیدله دوه پیري نبی ^{صلی الله علیه و آله} اوفرمائیل قصوي خوزد اوکړو اوداددي عادت نه دي لیکن دا هغه ذات

(۱) صحیح البخاری للحج ۱۰۶ (۱۶۹۴)، والشروط ۱۶ (۲۷۳۴)، والمغازي ۳۵ (۴۱۴۸)، ن الحج ۶۲ (۲۷۷۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۷۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۲۲/۴، ۳۲۷، ۳۲۸) (صحیح)

کینولی ده چاچه دابره هاتي (کوم چه دکعبی دورانلودپاره روان وو) ایسارکړې وو اوبیا نې اوفرمائیل زماډي قسم وي په هغه ذات باندې دچا په لاس کنبې چه زما روح دې که چرې دوی زمانه دکعبی دتعظیم په باره کنبې هرقسم مطالبه کوي نوزه به نې منم اوبیا نې اوبنه پاخوله او هغه پاخیده اونی علیه السلام دمکې والا دلاري نه یو طرف ته شو په بل طرف ته نې مخه کړه تردې چه دخدیبیه په اخر کنبې چرته چه په یوه کنده کنبې لرې اوبه وي هلته نې قیام اوکړو اودتولونه مخکنبې ورته بدیل بن ورقاء الخزاعي راغې اودهغه نه پس عروه بن مسعود سقفي راغی اودنبی علیه السلام سره نې خبرې شروع کړي دخبرو په دوران کنبې به عروه باربار دنبی علیه السلام ږیري له لاس وړل اومغیره بن شعبه به دنبی علیه السلام سره نزدې ولاړ وو او په لاس کنبې نې توره وه اوخود نې په سر وو دعروه لاس نې دتوري په موټي باندې دیکه کړو او وني وئیل چه دنبی علیه السلام ږیري نه دې لاس لرې کړه عروه سر پورته کړو اووئي وئیل داخوک دې خلقو ورته اووئیل مغیره بن شعبه دې عروه اووئیل ای مکاره ایا ماستاپه خیانت کنبې منډې نه دی وهلي؟ او ددې خیانت قصه داسې وه چه دجاهلیت په زمانه کنبې مغیره دخان سره څه کسان بوتلی وو اوبیا نې مړه کړل اودهغوی مال نې لوټ کړو اوبیادنبی علیه السلام په خدمت کنبې حاضر شو او اسلام نې قبول کړو نبی علیه السلام ورته اوفرمائیل اسلام خودي مونږ قبول کړو لیکن مونږ مال نه اخلو ځکه چه دا په خیانت گتلی شوې دې، ددې نه پس مسعر تراخه حدیث بیان کړو نبی علیه السلام اوفرمائیل دامصالحت نامه اولیکئ اوداهغه مصالحت نامه وه په کومه کنبې چه نبی علیه السلام دافیصله کړې وه چه هغه دالله رسول دې اوبیا نې ټوله واقعه بیان کړه سهیل ووئیل په قریشوکنبې چه څوک تاته داسلام قبلولودپاره راشي نوته به نې واپس کوي کله چه مصالحت نامه تکمیل شوه نو صحابه کراموته نې اوفرمائیل پاڅئ اوخپلې قربانیاني ذبح کړئ او سرونه اوخروئ، ددې نه پس دمکې مکرمي یوخوزنانه وو اسلام قبول کړو

او هجرت نې اوکړو او مسلمانانوته راغلي الله تعالی ددوی دواپسئ نه منع اوفرمائیل او ددوی مهرونه کوم چه ددوی د مشرکانو خاوندانو په ذمه باندې وو هغه نې واپس کړل بیانی علیه السلام مدینې ته راغی او په قریشوکنبې یوکس چه په ابوبصیر مشهور وو دنبی علیه السلام په خدمت کنبې حاضر شو قریشو دده دواپس راوستلو د پاره دوه کسان راولیږل نبی علیه السلام ابوبصیر هغوی ته حواله کړو هغوی دواړو دخان سره روان کړو چه ذوالخليفة ته اورسیدل نو هلته کیناستل اودکجورو په خوراک مشغول شول ابوبصیر په دوی دواړوکنبې یوکس ته اووئیل په الله مې دي قسم وي ستادا توره خوډیره ښکلي ده اوتوره نې دهغه د ملا نه راوویستله اووئي وئیل ما په دې توره باندې ازمینبت کړې دې ما ورته اووئیل ته راوړه چه زه نې اوگورم نوهغه راته راکړه نوپه هغه خپله توره نې اووهلو تردې چه یخ شو اودویم کس اوتختیدو او واپس مدینې ته راغې اوپه منډه جومات ته داخل شونې علیه السلام اوفرمائیل دې پریدلې دې اووئي وئیل زما ملگرې قتل کړې شو اوزه به هم قتل کړې شم نو په دې وخت کنبې ابوبصیر راورسیدو اووئي وئیل ای دالله رسوله تاخپل لوظ پوره کړو زه دي

مشرکانوته حواله کړم خوماته الله تعالی دهغه خلقونه نجات راکړو نبی ﷺ او فرمائیل ته خو جنگ غتو که چرې دده کوم ملگرې وې ابوبصیر چه دا واوریدل نو گمان ئې اوکړو چه شاید نبی ﷺ مې دوباره مشرکانوته حواله کوي نو دې اووتو اود سمندر غاړې ته لاړو، خه وخت پس ابوجندل دسهیل خوی چاچه وصلح کړې وه مسلمان شو اود صلح نه پس نبی ﷺ ته راغې، لیکن نبی ﷺ هغه واپس کړ دکافرانود صلح موافق نو هغه هم دابوبصیر سره یوځای شو تر دې چه هلته دسمندر سره دمسلمانانو یو جماعت (ډله) جمع شوه.

د صلح حدیبیه والا حدیث شرح

په دې باب کېښې مصنف د صلح حدیبیه د هغه اوږد روایت ټکړه ذکر کړې ده کومه چه په بخاری کېښې مفصلاً ذکر شوې ده په دې روایت کېښې د اصحاب حدیبیه تعداد د زرو نه لږ شان زیات بیان کړې دې د هغوی په تعداد کېښې اختلاف روایات دې کوم چه نزدې تیر شوې دې چه دیارلس سوه وو یا خوارلس پنځلس سوه، په دې روایت کېښې دا دی چه رسول الله ﷺ ذوالحلیفه ته رسیدلو سره د هدی تقلید اوکړو او د اشعار او عمرې احرام ئې اوتړلو..... وساق الحدیث مصنف فرمائی چه راوی پوره حدیث بیان کړو (او زه به د هغې اختصار کولو سره بعض ځایونو نه اقتباس کوم) پس په روایت کېښې دې چه روان وو تر دې چه کله په دې ټنیه باندي راورسیدو چه د هغې نه په اهل مکه باندي انسان را کوزیرې نو هلته رسیدلو سره د هغه اوښه... کیناستله، چه د هغې ظاهري سبب هیخ په نظر راغلو خلق هغه لره د اوچتولو دپاره اوئیل (حل، حل) او خلقو دا هم اووې (خلات القصواء) چه د رسول الله ﷺ دا اوښه نو نن جدا اوسیرې نو هغه او فرمائیل چه دا خبره نه ده، ډډه نه کوی او نه د هغې عادت دې (ولکن حبسها حابس القیل) بلکه خبره دا ده چه دا د تلو نه هغه ذات منع کړې ده چا چه هاتهی منع کړې دې، (د ابرهه د حملې په وخت) یعنی الله پاک (ثم قال: والذی نفسی بیده الخ) بیا هغه لږ په اوچت اواز سره دا خبره فرمائیلی ده قسم دې په هغه ذات چه د هغه په قبضه کېښې زما روح دې چه نن ورځ دا مشرکین چه د کوم څیز هم زما نه تپوس کوی، یعنی شرط لگوی په صلح کېښې دننه نو زه به دا شرط منظور کړم، یعنی داسې شرط چه هغې سره د هغه غرض مسجد حرام، بیت الله شریف او د الله پاک د احکاماتو تعظیم مقصود وی... او که څوک دا شرط لگوی چه هغې سره د مسجد حرام یا بیت الله یا د الله پاک د احکاماتو بې حرمتی کیرې نو هغه به نه شی منظور کولې (د بیت الله او مسجد حرام تعظیم خو به مشرکانو هم کولو او د هغې بې حرمتی به ئې نه کوله، خو د هغوی تعظیم بس د هغوی د مذهب مطابق وو) (ثم زجرها فوثبت) یعنی د رسول الله ﷺ د دې خبرې کولو نه پس چه کومه اوښې هم اوریدله) هغه ئې پاسوله نو په منډه روانه شوه، تر دې چه په تلو تلو کېښې د حدیبیه په لرې طرف کېښې کوز شو په یوه معمولی شان چینه باندي، په شروع کېښې ورته بدیل بن ورقاء خزاعی د اهل مکه نه راغلو، او بیا... عروه بن مسعود، عروه چه کوم وخت د رسول الله ﷺ سره خبرې کولې نو بار بار ئې د هغه گیره یعنی زه نیوله لکه چه د چاپلوسی په وخت کولې شی، دې وخت کېښې مغیره بن شعبه ﷺ د

رسول الله ﷺ په خوا کښې د محافظ (باډي گارډ) په طور مسلح ولاړ وو، په لاس کښې نې توره وه او په سر باندې نې د اوسپنې توپښ وه، نو کله چه به عروه د رسول الله ﷺ زني مبارکې ته لاس اوړلو نو مغیره به د هغه تورې چه کومه د هغه په لاس کښې وه په دسته باندې یعنی د قبضې په طرف د هغه لاس خپې وهل او په ژبې سره به نې هم وئیل چه د گيرې نه لاس لرې کړه، عروه ته معلومه هم نه وه چه هغه سره دا څوک ولاړ دې، د مغیره په نعل السيف وهلو سره عروه د هغه طرف ته سر اوچت کړو ﴿ فقال ای غدر او لست اسعی فی غدرتک ﴾ (چه په وهلو سره ورته معلومه شوه چه دا وهلو والا خو نې خپل وراره دې نو اوس نې لږ د خبرو همت پیدا شو) او وې وئیل ای فسادی او غداره ایا ماته ستا د غداري سزا نه ملاویري؟ وړاندې راوی د دې قصې وضاحت کوي چه يو ځل مغیره په زمانه جاهليت کښې د خپلو څو ملگرو سره روان وو، په لاره کښې مغیره خپلو ملگرو لره په دهوکې سره قتل کړل او د هغوی مال لوټ کولو سره د رسول الله ﷺ خدمت کښې حاضر شو او په اسلام کښې داخل شو نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه اسلام خو دې قبول دې خو دا مال د دهوکې دې د دې مونږ ته حاجت نشته ﴿ فذكر الحديث ﴾ مصنف چونکه اختصار کولو او د دې نه روستو چه کوم اصل په حديث کښې ذکر دې د هغې ذکر کول مقصود نه وو نو په دې وجه نې اووې چه ﴿ وذكر الحديث ﴾ چه راوی نور هم ډیر څه ذکر کړل، الغرض مشرکانو رسول الله ﷺ او صحابه کرام مکې ته د داخلیدو او د عمرې کولو نه منع کړل، او د صلح خبره نې د هغه مخې ته کیخودله چه راروان کال تاسو د درې ورځې د عمرې کولو دپاره تشریف راوړلې شی، او رسول الله ﷺ هم د صلح دپاره تیار شو، او علی رضی الله عنه ته نې د صلح نامه د لیکلو دپاره او فرمائیل، او وې فرمائیل چه په شروع کښې داسې اولیکئ ﴿ هذا ما قاضی علیه محمد رسول الله وقص الخبر ﴾ مصنف بیا د دې نه وړاندې ټکره حذف کړه، الغرض کله چه صلح نامه مرتب کیده او شرطونه لیکلې کیدل نو سهیل بن عمرو پکښې دا هم لیکل او غوښتل چه ﴿ انه لا یاتیک نا رجل وان کان علی دینک الا رددته الینا ﴾ چه د صلح په موده کښې که زمونږ یو سرې ستاسو طرف ته درشی نو اگر چه هغه ستاسو په دین باندې وی د هغه به زمونږ طرف ته واپس کول ضروری وی، په اوږد حديث کښې دی چه په دې شرط باندې صحابه کرامو ته ډیره غصه ورغله کومه چه د مسلمانانو په حق کښې ډیره سخته وه خو د رسول الله ﷺ په وینا باندې صحابه کرام خاموش شو، بیا د فقهاء کرامو تر مینځه د دې شرط په باره کښې اختلاف دی.

چه داسې شرط که د مشرکانو د طرف نه وی نو هغه وخت نې هم قبولول جائز دی یا نه، په ائمه کرامو کښې د امام احمد په نزد خو اوس هم جائز دی، او د امام شافعی او امام مالک په نزد د کفارو داسې شرط منظور کول په هغه صورت کښې جائز دی چه کله هغه مسلمان (چاته چه واپس کولې شی) هلته یعنی په دار الحرب کښې قبيله او خاندان وی کوم چه د هغه حفاظت کولې شی.... گینې جائز نه دی، او د احنافو په نزد د دې شرط منظور کول اوس جائز نه دی، منسوخ دی د رسول الله ﷺ د دې روایت په وجه باندې ﴿ انا برئ من مسلم

بين مشرکين).... فلما فرغ من قضية الكتاب... چه کله صلح نامه تياره شوه او د احصار عن العمرة تحقق او شو نو رسول الله ﷺ خپلو اصحابو ته او فرمائيل چه کوم هدايا تاسو سره دي هغه ذبح کړئ او حلق کولو سره حلال شی (ثم جاء نسوة مومنات مهاجرات) په دې صلح کښې چه کوم شرطونه مقرر شوي وو په هغې کښې چونکه يو شرط دا هم وو کوم چه اوس پورته تير شو چه که ددې ځانې نه يو سرې ستاسو طرف ته لار شی نو هغه به واپس کوي اگر چه اسلام کښې داخل شوي وي نو د دې شرط متعلق راوی وائی چه د صلح نامې د مرتب کيدو نه پس څه زنانه د مسلمانيدو نه پس د مکې نه هجرت کولو سره دې طرف ته راغلي نو اوس دلته دا مسئله وه چه دا زنانه دي واپس کړې شي يا دې نه کړې شي په دې موقع باندي د دې آيت کریمه نزول او شو (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مَهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ) راوی وائی چه الله پاک په دې آيت کریمه کښې مسلمانان د دې خبرې نه منع کړل چه هغه دا مهاجرات د کفارو طرف ته واپس کړي او دغه شان ورته د دې خبرې حکم او کړې شو چه په مهاجراتو کښې چه کومې د خاوندانو والا دي د هغوی مهرونه دي د هغوی اولنو خاوندانو ته واپس کړې شي اوس دا چه څوک به ئې واپس کوي که دې مهاجرې دلته د يو مسلمان سره واده او کړو نو بيا خو دې د هغه مهاجرې دا دويم خاوند هغه مهر واپس کړي، او که واده ته خبره نه وي رسيدلې نو بيا دې د هغې د مهر په اندازه مال د بيت المال نه د هغې اولنی خاوند ته ورکړي خو دا د مهر د رد کولو مسئله عام نه ده، هم د دې صلح حديبيه سره خاص ده. کما في بيان القرآن.

د دې آيت کریمه د نزول په سلسله کښې د علماء کرامو دوه اقوال دي، يو دا چه دا آيت کریمه ناسخ دې د صلح په شرطونو کښې د دې خاص جزء په حق کښې گویا په صلح کښې چه کوم شرط منظور کړې شو هغه د رد الی الکفار په باره کښې عام وو د رجال او نساء دواړو په حق کښې، خو دې آيت کریمه دا شرط د زنانو په حق کښې منسوخ کړو، او د سړو په حق کښې ئې باقی اوساتلو، پس مهاجر سړو لره کوم چه د صلح نه پس د مکې نه مدينې منورې ته راغلل هغوی ته رسول الله ﷺ د واپس تلو حکم او کړو لکه چه وړاندي خپله په روايت کښې راروان دي او د بعض علماء کرامو رائي دا ده چه دا آيت کریمه ناسخ نه دې بلکه دا مفسر دې او هغه د راتلو سره دا وضاحت کړې دې چه زنانه په دې شرط کښې داخلي نه دي لهذا هغوی دې واپس نه کړې شي.

دلته دوه څيزونه د تنبيه قابل دي، د يو تعلق زمونږ د کتاب د موجوده نسخې سره دې هغه دا چه زمونږ په دې نسخه کښې داسې دي چه (ثم جاء نسوة مومنات مهاجرات الایة) هغه دا چه دا جمله د (ثم) نه تر د مهاجرات پورې يا خو د راوی الفاظ دي او د هغه قول دې نو په دې باندي د الایة ليکلو مطلب څه دې؟ الایة خو هلته ليکلې شي چرته چه آيت کریمه شروع کولو سره د باقی اختصار او کړې شي دلته خو لا د آيت لفظ شروع شوي هم نه دي، لهذا داسې به وئيلې شي چه دلته د يو راوی نه يا کاتب نه په عبارت کښې سقوط

شوي دي، لهذا پوره عبارت داسې وو (ثُمَّ جَاءَ نِسْوَةٌ مُؤْمِنَاتٌ مُهَاجِرَاتٍ فَانزَلَ اللَّهُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ) الاية په اصل كښې د مهاجرات لفظ دلته په عبارت كښې دوه ځايه راغلې وو يو د راوي په كلام كښې او بل په آيت كښې نو د كاتب نظر د اول ځايي نه دويم ځايي ته منتقل شو او هغه په اول ځايي كښې الاية اوليكلو.

بل څيز قابل تنبيه دي چه په دي آيت كريمه كښې وړاندي دا دي (ثم رجع الى المدينة) لهذا د دي روايت د سياق تقاضه دا ده چه د دي مهاجرو زنانو راتلل د رسول الله ﷺ مديني منوري ته د رسيدو نه مخكښې په حديبيه كښې يا د مديني په لاره كښې شوي وو، حال دا چه په واقع كښې داسې نه ده، بلكه د دي نساء مهاجراتو آمد د رسول الله ﷺ مديني منوري ته د رسيدو نه څو ورځې پس شوي وو. كذا في البذل عن الحافظ، والله تعالى اعلم

(فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ - يَغْنِي فَأَرْسَلُوا فِي طَلْبِهِ - فَدَفَعَهُ إِلَى الرَّجُلَيْنِ) يعنى د صلح حديبيه نه څو ورځې پس ابو بصير رضي الله عنه هجرت كولو سره مديني منوري ته راغلو، د هغه د راتلو سره د كفارو د طرف نه دوه كسان د هغه د واپس بوتلو دپاره راغلل د هغه دوه كسانو نومونه په دي روايت كښې خو نه دي ذكر شوي، په بذل كښې دي چه د يو نوم خنيس بن جابر دي او بل سرې د هغه مولی يعنى ازاد كړې شوي غلام وو چه د هغه نوم كوثر وو، رسول الله ﷺ ابو بصير دي دواړو ته حواله كړو (هم دا شرط اصل كښې ډير سخت او په مسلمانانو باندي گران وو چه هغې سره هغوی ډير غصه وو، خو رسول الله ﷺ كوم چه د خپل امت په حق كښې د مور او پلار نه هم زيات كريم او مهربانه دي د اسلام او مسلمانانو د عمومي او اجتماعي مصلحتونو ته كتلو سره دا شرط منظور كړې وو، دي دواړو سر و لا ابو بصير رضي الله عنه د مديني منوري نه بهر ذو الحليفه ته رسولي وو، چه د څه خوراك ځكاك په نيت سره هلته كوز شو، ابو بصير رضي الله عنه د خنيس په لاس كښې چه كومه توره وه د هغې په ليدو باندي اووي چه والله ستا دا توره خو ډيره غوره ده (كم عقل خلق په خپل تعريف باندي خوشحاليري، پس هغه په دي اوريدلو باندي فورا هغه د تيكي نه راويستله او وي ونييل چه زما دا توره ازمينستلي شوي ده، ابو بصير ورته اووي چه ته ئې ماته د كتلو دپاره راكولي شي (فامكنه منه) پس خنيس ابو بصير ته په هغه توره باندي قدرت وركړو، ابو بصير دا موقع غنيمت او گنرله او هغه توره ئې هم په هغه باندي استعمال كړه تردې چه هغه مړ شو، په دي صورت حال كتلو سره د خنيس ملگري يعنى كوثر د مديني طرف ته اوتختيدو او په منډه منډه مسجد نبوي ته اورسيدو، رسول الله ﷺ هغه لره لرې په راتلو سره او فرمائيل (لَقَدْ رَأَى هَذَا دُعْرًا) چه دي سرې څه ويړه ليدلې ده، هغه راغلو او رسول الله ﷺ ته ئې بغير د تمهيد ترلو نه په ويړه ويړه اووي چه زما ملگري قتل كړې شو او زه هم قتل كيدونكې يم، په دي كښې ابو بصير هم هلته راغلو، هغه رسول الله ﷺ ته عرض او كړو چه الله پاك ستاسو لوڅ خو پوره كړو او اوس تاسو گويا بري الذمه شوي ما لره د هغوی طرف ته په واپس كولو باندي، بيا الله پاك ماته په خپل فضل سره د مشركانو نه خلاصې راكړو (د هغه مقصد دا وو چه رسول الله ﷺ ماته اوس په مدينه كښې د پاتي كيدو اجازت راكړي خو

چونکه رسول الله ﷺ دا د صلح خلاف گنرله او د هغه دا راښي نه وه هم په دې وجه نې د هغه په خبره اوریدو او فرمائیل **(وَبَلَغَ أُمَّهُ مِنْغَزَ حَزْبٍ لَوْ كَانَتْ لَهُ أَحَدٌ)** (مسعر بضم الميم اسم فاعل هم کیدې شی او بکسر الميم اسم الهم کیدې شی) رسول الله ﷺ د ابو بصیر رضی الله عنه په باره کښې فرمائی چه د هغه دا خبره اور گرمونکې ده، یعنی که ابو بصیر واپس نه کړې شو نو مشرکانو کښې به اشتعال پیدا شی، دا خبره خود هغه په صلح او مصلحت باندي بناء وه، او بله خبره د ابو بصیر سره د همدردی په طور ئي دا جمله ارشاد او فرمائیله: **(لو كان له احد ارمان چه د ابو بصیر رضی الله عنه دې وخت کښې خوگ ناصر او مددگار وې، راوی وائی چه کله ابو بصیر د رسول الله ﷺ دا جمله واوریده نو هغه پوهه شو چه رسول الله ﷺ به ما واپس کوی، پس ابو بصیر رضی الله عنه د مدینې نه راوتلو او د راوتلو نه پس د سمندر په ساحل باندي اوسیدلو (وینقلت ابو جندل) د ابو بصیر نه پس ابو جندل رضی الله عنه یو صحابی اسلام قبلولو سره د اويا شهسوارانو سره د مکې نه دې طرف ته راغلل او مدینې ته د راتلو په ځانې د ابو بصیر سره دیره شو، هم دغه شان وخت په وخت خلقو د مکې نه اسلام قبلولو او هجرت کولو سره دلته د سمندر په غاړه باندي دیره کیدل او راوی وائی چه د هغوی یو برابر جماعت جوړ شو، په بذل کښې د سهیلی نه نقل دی چه هغه لیکلي دی چه د دې خلقو تعداد درې سوو ته اورسیدو، او دا خلق مدینې ته په دې وجه نه راتلل چه که هلته لاړ شو نو د صلح مطابق به واپس کولې شو دا ساحلی علاقه چرته چه دا خلق پاتې کیدل د کفار قریش د قافلو د تیریدو لاره وه، چه کله هغوی د مکې نه شام او د شام نه مکې ته د تجارت دپاره تلل، دې خلقو سره خو ظاهره ده چه د خوراک ځکاک دپاره هیڅ هم نه وو، او د مسلمانانو دپاره د کافر حربی مال حلال دې په دې وجه به هغوی دا قافلې لوټ کولې، چه کله دا صورت حال پیدا شو نو قریش مکه رسول الله ﷺ ته د الله پاک او خپلولی واسطه ورکړه چه تاسو دا هلک خپل طرف ته راوبلئ او د بیا دپاره چه څوک هم د دې ځانې نه مدینې ته ځی هغه به به امن وامن سره هلته اوسیرې هغه دې واپس نه کړې شی، پس رسول الله ﷺ ابو بصیر رضی الله عنه پسې سرې اولیرلو چه تاسو ټول دلته راشئ، پس هغوی ټول مدینې منورې ته راغلل، په یو روایت کښې دی چه رسول الله ﷺ ابو بصیر رضی الله عنه ته خپل خط اولیرلو، قاصد چه کله هغه ته خپل خط یورلو نو هغه په خپل اخری وخت کښې وو، لیکي چه کله هغه وفات کیدو نو د رسول الله ﷺ خط د هغه په لاس کښې وو، ابو جندل رضی الله عنه ابو بصیر رضی الله عنه لره هم هلته دفن کړو او د هغه قبر سره نزدې ئي یو مسجد هم جوړ کړو. (بذل)**

دا حدیث طویل مفصلا په بخاری کښې په کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد کښې ذکر شوي دي. والحديث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی مختصراً ومطولاً، قاله المنذرى.

[۲۷۶۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ إِسْحَاقَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ ابْنِ الزُّبَيْرِ، عَنِ الْمُسَوِّبِ بْنِ مَخْرَمَةَ، وَمَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ، أَنَّهُمْ اصْطَلَحُوا عَلَى وَضْعِ الْحَرْبِ عَشْرَ سَنِينَ، يَأْمَنُ فِيهِنَّ النَّاسُ وَعَلَى أَنْ يَبْنِيَنَّا عَيْبَةً مَكْفُوفَةً وَأَنْهَ لَا إِسْلَالَ وَلَا إِغْلَالَ.

(۱) تفرد به أبو داود، وانظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۵۳) (حسن)

د مسور بن مخرمه ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه قريشو په دې خبره مصالحت کړي ووجه لس کاله به جنگ نه وی خلق به په دې موده کښې په امن وي او د ټولو زړونه به یوبل ته پاک وي اونه به پته غلاوي اونه ښکاره.

یعنی په حدیبیه کښې چه کومه صلح شوې وه هغه د لسو کالو دپاره وه چه په راتلونکو لسو کالو دپاره به ټول خلق مسلمانان او مشرکان په امن او سکون سره اوسېږي، او داسې شوې وه چه خلق به د دې صلح په زمانه کښې د کپړو د یو محفوظ پنډوکی په شان اوسېږي، شارحین وائی چه دا کنایه ده د قلوب صافیة نه، او د دویمې جملې په مطلب کښې یو قول دې «اسلال» نه مراد ښکاره حمله کول (الغارة الشهيرة) او د «اغلال» معنی السرقة الخفيفة، خفیه طور باندې غلا او یو تفسیر د اسلال سرقه ده، او د اغلال په خیانت سره کړې شوې دې او یو تفسیر د اسلال، سل السیوف او د اغلال لبس الدروع سره کړې شوې دې.

[۲۷۶۷] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا عَيْسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ حَسَانَ بْنِ عَطِيَّةَ، قَالَ: مَالَ مَكْحُولٍ، وَابْنُ أَبِي زَكْرِيَاءَ، إِلَى خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ وَمِلَّتْ مَعَهُمَا، فَحَدَّثَنَا عَنْ جَبْرِ بْنِ نَفِيرٍ، قَالَ: قَالَ جَبْرِ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى ذِي مَخْبَرٍ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَيْنَاهُ فَسَأَلَهُ جَبْرِ عَنْ الْهُدْنَةِ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "سَتَصَالِحُونَ الرُّومَ صَلَاحًا آمِنًا وَتَغْزُونَ أَنْتُمْ وَهُمْ عَدُوًّا مِنْ وِرَائِكُمْ".

د حسان بن عطیه نه روایت دې فرمائی چه مکحول او ابن ابی زکریا دخالد بن معدان طرف ته روان شول اوزه هم ورسره روان شوم نوموړته ئې دجبیر بن نفیر نه حدیث بیان کړو چه جبیر ووئیل: ذی مخبر صحابی ته مې بوځئ نوچه مونږ ورغلو، نو جبیر ترې تپوس وکړو دصلح متعلق هغه ووئیل چه دنبی ^{صلی الله علیه و آله} نه مې اوریدلی دی چه فرمائیلی ئې وو، زرده چه تاسوبه درومیانو سره داسې صلح وکړئ چه امن به وي او اندیښني به ختي شي اوبیابه تأسو او هغوی یوځانې شی او دبل دشمن سره به جنگ وکړئ.

شرح الحدیث

حسان بن عطیه روایت کوی چه یو ځل مکحول شامی او ابن ابی زکریا، د خالد بن معدان خواله روان وو نو زه هم د هغه سره شوم، چه کله هلته اورسیدو نو هغه مونږ ته د جبیر دا واقعه رانقل کړه چه یو ځل جبیر مونږ ته اووې (یعنی خالد) چه مونږ سره ذی مخبر صحابی ته لاړ شی، پس مونږ هغه ته لاړو، د رسیدو نه پس جبیر د هغه صحابی ذی مخبر نه تپوس او کړو د هدنة په باره کښې (په ظاهره کښې جبیر بن نفیر ته به د چا نه خبر ملاؤ شوې وی چه دا ذی مخبر صحابی د هدنة په باره کښې یو مرفوع حدیث بیانوی د دې دپاره د هغه خواته د براه راست اوریدلو دپاره لاړو، په دې باندې ذی مخبر ^{رضي الله عنه} او فرمائیل چه ما د رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} نه اوریدلی دی هغه او فرمائیل «سَتَصَالِحُونَ الرُّومَ صَلَاحًا آمِنًا وَتَغْزُونَ أَنْتُمْ وَهُمْ عَدُوًّا مِنْ وِرَائِكُمْ» رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} صحابه کرامو ته خطاب کولو سره او فرمائیل چه تاسو یعنی

۱. سنن ابن ماجه/الفتن ۳۵ (۴۰۸۹)، (تحفة الأشراف: ۳۵۴۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۹۱/۴، ۴۰۹/۵) ویاتی عند المؤلف في الملاحم برقم (۴۲۹۳) (صحیح)

مسلمانان به په اخر زمانه کښې د روميانو سره صلح کوي ډير د امن والا صلح، بيا به تاسو هغوی سره يوځانې کيدو باندې د دشمن سره جنگ کوي.

دا حديث بعينه هم په دې سند او متن سره په دې باندې زيادت سره په کتاب الملاحم کښې راوان دي، چه د هغې په اخر کښې دا هم دی چه کله مسلمانان او نصاری فتح کولو سره لوټ مار کوي نو په واپسې کښې به يو نصرانی صليب لره او چتولو سره وائی چه **« غلب الصليب »** په دې باندې به مسلمانانو ته غصه راشی او زبردست جنگ به شروع شی چه د هغې نوم **« الملحمة الكبرى »** دي.

مصنف دا حديث په باب في صلح العدو کښې جواز صلح مع العدو باندې د دليل په حيثيت سره راوړې دي، په دې باندې طالب علمانه نقد دا کيدې شی چه دا حديث د فتن د رواياتو نه دي، او د اخبار ما سيقع د قبيل نه دي، گویا د رسول الله ﷺ د طرف نه يوه پيشن گوئی شوې ده خو داسې واقعات کوم چه په احاديثو کښې ذکر شوې دی د کومو د وقوع چه رسول الله ﷺ خبر ورکړې دي، هغه د جواز يا عدم جواز دليل نه شی جوړولې کيدې، والله تعالى اعلم. د دې جواب دا کيدې شی چه دا خو صحيح ده چه اخبار د عما سيقع والا رواياتو نه په جواز باندې استدلال صحيح نه دی، خو دلته د دې روايت نه استدلال داسې صحيح دي چه رسول الله ﷺ د دې خبرې خبر ورکوي چه په اخر زمانه کښې څه وخت دا خبره راپيښه شی چه د هغه وخت ټول مسلمانان به د نصاری سره مصالحت کوي او په بل حديث کښې ارشاد دي چه د دې امت اتفاق په ناحقه خبره باندې نه کيږي، په دې حيثيت سره دا روايت په جواز باندې دال کيدې شی هسې د نفس مصالحت جواز خو په آيت کریمه او نورو احاديثو نه ثابت دي. والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

بَابُ فِي الْعَدُوِّ يُؤْتَى عَلَى غِرَّةٍ وَيَتَشَبَّهُ بِهِمْ د دشمن سره د چل کولو نه پس د جنگ کولو بيان

يعنى دشمن لره په شک کښې اچولو سره هغوی لره د غفلت په حالت کښې ليدلو سره ناخاپه حمله کول، مقصود د دې جواز بيانول دی، ځکه چه دا د عذر د قبيلې نه نه دي بلکه الحرب خدعة د قبيل نه دي.

[۲۷۶۸] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ لَكَعِبَ بِنِ الْأَشْرَفِ فَإِنَّهُ قَدْ آذَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ، فَقَامَ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمَةَ فَقَالَ: أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَتَجِبُ أَنْ أَقْتَلَهُ قَالَ: نَعَمْ قَالَ: فَأَذَنْ لِي أَنْ أَقُولَ شَيْئًا قَالَ: نَعَمْ قُلْ، فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنَّ هَذَا الرَّجُلَ قَدْ سَأَلَنَا الصَّدَقَةَ وَقَدْ عَنَانَا قَالَ: وَأَيْضًا لَمَلَّنَهُ قَالَ: اتَّبَعْنَاهُ فَخَمْنُ نَكْرَهُ أَنْ نَدْعَهُ حَتَّى نَنْظُرَ إِلَى أَبِي شَيْءٍ يَصِيرُ أَمْرَةً، وَقَدْ أَرَدْنَا أَنْ نُسَلِّفْنَا وَسَقًا أَوْ وَسَقِينَ قَالَ كَعْبٌ: أَيُّ شَيْءٍ تَرَهُنُونِي؟ قَالَ: وَمَا تُرِيدُ مِنَّا؟ قَالَ: نَسَاءَكُمْ، قَالُوا: سُبْحَانَ اللَّهِ أَنْتَ أَجْمَلُ الْعَرَبِ! تَرَهُنُكَ نَسَاءً نَأْفِكُونَ ذَلِكَ عَارًا عَلَيْنَا قَالَ: فَتَرَهُنُونِي أَوْلَادَكُمْ، قَالُوا: سُبْحَانَ اللَّهِ يُسَبُّ ابْنُ أَحَدِنَا فَيُقَالُ رُهْنَتِ بُوْسُقِي أَوْ وَسَقِينَ قَالُوا: تَرَهُنُكَ الْأَمَةَ يُرِيدُ السِّلَاحَ قَالَ: نَعَمْ فَلَمَّا أَتَاهُ تَادَاهُ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ وَهُوَ

۱: صحيح البخاري للرمح ۳ (۲۵۱۰)، والجهاد ۱۵۸ (۳۰۳۱)، والمغازي ۱۵ (۴۰۳۷)، صحيح مسلم للجهاد ۴۲ (۱۸۰۱)، (تحفة الأشراف: ۲۵۲۴)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الكبرى/ (۸۶۴۱) (صحيح)

مُتَطَلِّبٌ يَنْضَرُ رَأْسَهُ، فَلَمَّا أَنْ جَلَسَ إِلَيْهِ وَقَدْ كَانَ جَاءَ مَعَهُ بِنْفَرٍ ثَلَاثَةٍ أَوْ أَرْبَعَةٍ قَدَّكَرُوا لَهُ، قَالَ: عِنْدِي فَلَانَةٌ وَهِيَ أَعْظَمُ نِسَاءِ النَّاسِ قَالَ: تَأْذَنُ لِي فَأَشْمُ قَالَ: نَعَمْ فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي رَأْسِهِ فَشَمَّهُ قَالَ: أَعُوذُ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي رَأْسِهِ فَلَمَّا اسْتَمَكَّنَ مِنْهُ قَالَ: دُونَكُمْ فَضَرَبُوهُ حَتَّى قَتَلُوهُ".

د جابر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه خوک به کعب بن اشرف مړ کړي یقینا هغه الله او رسول ته تکلیف رسولې دي؟ نو محمد بن مسلمه پاخیدو او اوښي وئیل چه زه اي دالله رسوله، ایاته غواړی چه قتل ئې کړم؟ نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل هو هغه او وئیل چه اجازت راته وکړه چه څه چل جوړ کړم نو ورته ورغی او ورته ئې او وئیل چه دا سرې یعنی محمد زموږ نه صدقات غواړی او مونږ د مشکلاتو سره مخامخ کوي هغه و وئیل تاسو به نور هم پریشانه شي، محمد بن مسلمه و وئیل مونږ ئې تابع داري کړي ده اوس ي هومره نشو پرېښودلې ترڅو چه مونږ ته دده عاقبت نه وی معلوم شوي، مونږ دا اراده کړې وه چه ته مونږ ته یو وسق یادوه وسقه خوراک قرض را کړي، کعب و وئیل څه شي به راسره گانږه کړئ؟ محمد بن مسلمه ورته و وئیل ستا څه خوښ دي؟ کعب و وئیل خپلې ښځې راسره گانږه کړئ دوی ورته و وئیل سبحان الله ته خوپه عربو کښې ډیر ښکلي سرې ئې اوداسې کچه خبره کوي که چرې مونږ درسره ښځې گانږه کړونودا خوپه زموږ ډپاره پیغور وي او شرم وي کعب و وئیل نوبیا راسره خپل اولاد گانږه کړئ محمد بن مسلمه و وئیل چه اولاد موکله لوي شي نو خلق به ورته پیغور ورکوي چه ته خو هغه سرې ئې چه په یو وسق باندي گانږه شوي وي مسلمانانو ورته و وئیل چه خپله اسلحه به درسره گانږه کړو کعب و وئیل تیک ده، دوی ورغلل او آواز ئې ورته وکړو کعب چه راغې نو خوشبو ئې لگولي وه اودسر نه ئې اوبه خخیدلي نو محمد بن مسلمه ورسره کیناستو او درې یا څلور کسان ئې هم دخان سره بوتلی وو، دوی ورته دده د خوشبو او اوبو خخیدو خبره ذکر کړه نو هغه و وئیل چه زما سره فلانی ښځه ده او هغه په ټولو ښځو کښې ډیره خوشبوداره گرځي محمد بن مسلمه ورته و وئیل که اجازت وی نوسر به دي بوئی کړم؟ هغه و وئیل تیک ده نو محمد بن مسلمه دهغه په سر لاس کښنودو، بیاني دوباره داسې وکړل چه کله ئې قابو کړونو خپلو ملگرو ته ئې اشاره وکړه چه څه ته انتظار کوئ چنانچه دوی کعب بن اشرف و وهلو تردې چه مړ شو.

د کعب بن اشرف یهودی د قتل قصه

په دې باب کښې مصنف د کعب بن اشرف د قتل واقعه بیان کړې ده، کعب بن اشرف یو مشهور یهودی وو او شاعر قسم سرې وو، خو لوړ دنگ او د وجود نه برابر، ډیر ضرری قسم انسان وو، د رسول الله صلی الله علیه و آله بدی به ئې بیانوله، او د رسول الله صلی الله علیه و آله خلاف به ئې کفار قریش راپاسول، خپله په دې حدیث رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی: (فَإِنَّهُ قَدْ آذَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ) بهر حال د مضمون روایت داسې دي چه یوه ورځ رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه په تاسو کښې خوک سرې شته چه کعب بن اشرف قتل کړی؟ او داسې اراده او کړې؟ په دې باندي محمد بن مسلمه رضي الله عنه اودریدو او عرض ئې اوکړو یا رسول الله صلی الله علیه و آله زه دا کار کولې شم، ایا تاسو هم دا غواړئ چه هغه دي قتل کړې شی؟ رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل او هغه عرض اوکړو چه

که داسې وی نو بیا دې ماته د څه دروغو رشتیا وئیلو اجازت راکړې شی (یعنی هغه کافر لره په دهوکه کښې د اچولو دپاره) رسول الله ﷺ او فرمائیل او اجازت دې د دې اجازت ملاویدو نه پس هغه فوراً د دې کار د کولو دپاره اودریدو، او کعب بن اشرف ته لارو، (هغه سره د دې ځانې د خبرې کولو دپاره) پس هغه ته لارو او وې وئیل **﴿ إِنَّ هَذَا الرَّجُلَ قَدْ سَأَلَنَا الصَّدَقَةَ وَقَدْ عَنَّا ﴾** چه گوره روره دا سرې زمونږ نه (د رسول الله ﷺ طرف ته اشاره ده) نه زکاتونه غواړی او مونږ ئې په یو مشقت کښې اچولې یو، د **﴿ عَنَا ﴾** واحد مذکر غائب صیغه ده او نا ضمیر منصوب دې دا د عنا نه اخستلې شوې دې په معنی د مشقت، هغه ئې په اوریدلو سره اووې چه اوس خو به تاسو لا د دې نه زیات ستړی کیږئ (لا تاسو لیدلې څه دی؟) په دې باندې ورته هغه اووې چه روره داسې ده چه اوس خو مونږ په غلطی سره د هغه تابعداری شروع کړې ده او مونږ دا مناسب نه گنږو چه هغه یکدم پریږدو ترڅو پورې مو چه دا نه وی لیدلې چه د دې سرې انجام به څه وی (ترقی کوی یا زوال ته رسیږی) د دې نه روستو ورته محمد بن مسلمه اووې چه دې وخت کښې خوزه تاته د یو خاص غرض دپاره راغلې یم چه ته مونږ ته یو یا دوه وسقه غله د قرض په طور راکړه (د ضرورت په وخت خپل خلق په کار راځی او هم د هغوی طرف ته رجوع کولې شی) په دې باندې ورته هغه اووې چه څه به را سره گانږه کوی، هغه ورته اووې چه ته څه غواړی، هغه ورته اووې چه خپلې زنانه راسره گانږه کړئ، هغه ورته اووې سبحان الله! تا خو ډیر عجیبه خبره اوکړه گوره ته خو ډیر ښکلې او ځائسته سرې ئې، بیا مونږ خپلې زنانه تا سره څنگه گانږه کړو، دا څیز خو به زمونږ دپاره د شرم باعث شی، هغه ورته اووې ښه خپل اولاد راسره گانږه کړه، هغه ورته او فرمائیل چه زمونږ د اولاد په حق کښې به دا څیز عیب وی خلق به هغوی سره د جهگړې په وخت هغوی ته پیغور ورکوی چه ته هم هغه سرې ئې چه د یو وسق غلې په عوض کښې گانږې کړې شوې وې، بیا ورته محمد بن مسلمه او فرمائیل چه مونږ به تا سره خپله وسله گانږه کیدو، هغه ورته اووې صحیح ده، دلته په روایت کښې اختصار دې، په ظاهره کښې دلته داسې دی چه خپل مینځ کښې ئې دا خبره اوشوه چه مونږ به د دې وسلې سره تاته د شپې په وخت راځو، پس د شپې په معین وخت کښې محمد بن مسلمه د هغه کور ته راغلو او هغه ته ئې اواز اوکړو، هغه د پورته نه راکوز شو، په بعض روایتونو کښې دی چه د هغه ښځې هغه وخت هغه ته اووې چه ماته خو د دې سرې د اواز نه د مرگ بوئی راځی، خو هغه ئې تردید اوکړو، دې وخت کښې دا کعب بن اشرف په قسم قسم خوشبویانو سره معطرو او د خپلې ښځې د خوانه راغلې وو، چه کله لاندې راکوز شو او د هغې په خوا کښې کیناستلو نو چونکه محمد بن مسلمه د ځان سره درې څلور ملگری هم راوستلې وو نو هغوی ورته د دې خوشبویئ تذکره اوکړه نو هغه اووې

﴿عندی فلانة وهي اعطر نساء الناس﴾ (چه زمانه به خوشبویانی ولې نه ځی) او زما په کور کښې داسې زنانه ده چه د هغې د ټولو زنانو نه زیات عطر خوښ دی، نو محمد بن مسلمه ﷺ ورته او فرمائیل اجازت دې؟ ستاسو د سر وینسته بوئی کولې شم؟ هغه ورته

اووې او اجازت دې، هغه د هغه د سر په وینستو کښې لاس داخل کړل او د هغه سر ته ښه بوټی کړو، یو ځل د بوټی کولو نه پس ئې دوباره اووې چه د بوټی کولو اجازت دې؟ هغه اووې او ولې نه دې ځل بیا هغه د هغه د سر په وینستو کښې لاسونه داخل کړل او دې ځل ئې هغه وینسته مضبوط په خپلو لاسونو کښې اونیول او خپلو ملگرو ته ئې اشاره اوکړه چه **(دونکم)** واخلي اونیسئ دې! پس هغوی د هغه سټ پرې کړو.

دا واقعه د ربیع الاول ۳ هجری ده، د حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت بالکل واضح دې، دا روایت د څه زیادت سره په صحیح بخاری کښې په کتاب المغازی کښې په باب قتل کعب بن الاشرف کښې ذکر شوي دي، د بخاری په روایت کښې دا هم دی چه د محمد بن مسلمه سره د هغه خواته راتلونکو کښې د کعب بن اشرف رضاعی رور ابو نائله هم وو، چه کله کعب لاندې راكوزیدو نو د هغه ښځې اووې **(أَيْنَ تَخْرُجُ هَذِهِ السَّاعَةَ فَقَالَ إِنَّمَا هُوَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ وَأَخِي أَبُو نَائِلَةَ - وَقَالَ غَيْرُ عَمْرٍو قَالَتْ أَسْمَعُ صَوْتًا كَأَنَّهُ يَقَطِرُ مِنْهُ الدَّمُ)** په فتح الباری کښې د بعض روایاتو نه نقل کړې شوي دی چه کله هغه لاندې کوزیدلو: **(فتعلقت به امراته وقالت مكانك فوالله أني لأرى حمرة الدم مع الصوت)**

دا د کعب د قتل واقعه په کتاب الخراج کښې په باب کیف کان اخراج اليهود من المدينة کښې هم راروان دې، او د هغه طرف ته رجوع به هم کولې شی او په دې کښې داسې دی **(امر النبي صلى الله عليه وسلم سعد بن معاذ ان يبعث رهطاً يقتلونه فبعث محمد بن مسلمة)** په دې دواړو روایتونو کښې چه کوم اختلاف دې د هغې توجیه په روستو راتلونکی باب کښې حضرت سهارنپوری په بذل المجهود کښې ذکر فرمائیلې دې چه د هغې خلاصه دا ده چه په شروع کښې خو هم دغه شان شوي وه کومه چه دلته اولنی ځانې کښې مذکور دې بیا رسول الله ﷺ سعد بن معاذ رضی الله عنهما ته هم او فرمائیل چه ته هم خو کسان د دې کار دپاره تیار کړئ، او محمد بن مسلمه ته به ئې هم فرمائیلې وې چه په دې کښې زیاته تندي مه کوه او د سعد بن معاذ په مشورې سره کار کوه، پس سیدنا سعد رضی الله عنهما د محمد بن مسلمه سره خو کسان اولیرل. والحديث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی، قاله المنذرى.

[۲۷۶۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَزَابَةَ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ يَعْنِي ابْنَ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ الْهَمْدَانِيُّ، عَنِ السَّيِّدِيِّ، عَنِ أَبِيهِ، عَنِ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الْإِيمَانُ قَيْدُ الْفِتْكَ لَا يَفْتِكُ مُؤْمِنٌ".

ابوهريره رضی الله عنهما د نبی ﷺ نه روایت نقل کوي چه فرمائیل ئې وو، ایمان دفتک خاتمه کړي ده څوک چه مومن وي فتک نه کوي (فتک په غفلت کښې څوک وژلوته وئیلی شي. د **(فتک)** معنی **(القتل غدرا فی حال غفلة العدو)** یعنی ناڅاپه د یو دشمن په خلاف معاهده حمله کول، دا د مومن شان نه دې، او نه شرعا جائز دې، باب خوروان دې د قتل الکافر غرة او د هغې د ترغیب او دا حدیث په ظاهره کښې د ترجمه الباب سره مطابقت نه لری، خود مصنف دا په دې باب کښې راوړل د ترجمه الباب د ثابتولو دپاره نه دی، بلکه

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۳۶۱۵)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/المج ۷۶ (۳۲۷۸) (صحيح)

نښيها دي، د دې خبرې د پوهې دپاره چه قتل غره بيل خيز دې، او (فتك) يعنى قتل غدرا دا بل خيز دې، اول جائز بلكه مندوب دې، او ثانى ممنوع، په تراجم بخارى كښې هم يو خيز راځي، يعنى ذكر الاضداد، هم دغه شان دلته هم ده.

بَابُ فِي التَّكْبِيرِ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ فِي الْمَسِيرِ

په هر لور ځانې باندي د ختلو په وخت كښې د تكبير ونيولويان

[۲۷۷۰] () حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ أَوْ حَجٍّ أَوْ عُمْرَةٍ يَكْبُرُ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ مِنَ الْأَرْضِ ثَلَاثَ تَكْبِيرَاتٍ وَيَقُولُ: "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، أَيُّونَ تَأْبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ".

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله كله د جهاد نه یاد حج نه یاد عمرې نه واپس راتلو نو په هر لور ځانې باندي د ختلو په وخت به ئې درې ځله تكبير ونيولو او دا ذكر شوي دعابه ئې هم وئيله يعنى د الله نه علاوه بل څوك حقدار د بندگي نشته او دهغه څوك شريك نشته هم دهغه بادشاهي ده اود تعريف مستحق هم هغه د هغه په هر څه باندي قادر دې اومونږ دهغه طرف ته واپس تلونكى يو توبه كونكي، عبادت گذار، اوسجده كونكي يو، دخپل معبود تعريف بيانونكى يو الله تعالى خپله وعده رښتونكى اوبښودله اودخپل بنده مدد ئې او كړو او هغه فوجونو ته شكست وركړو چه يودې.

ترجمه او حديث الباب دواړه واضح دي چه انسان له پكار دى چه د تلو په وخت كه په يو لور ځانې باندي خيژى نو تكبير يعنى الله اكبر ونيولو سره دې خيژى، او د هغې بالمقابل چه كله د پستې طرف ته ځي نو تسبيح يعنى سبحان الله ونيولو سره دې كوزيږي. والحديث اخرجه البخارى ومسلم والنسائى، قاله المنذرى.

بَابُ فِي الْإِذْنِ فِي الْقُقُولِ بَعْدَ النَّهْيِ

د ممانعت نه پس د ميدان جهاد نه د واپس راتلو د اجازت بيان

د ترجمه الباب تشریح

د ترجمه الباب مضمون دا دې، د رسول الله صلی الله علیه و آله د مجلس نه د مجلس دوران (د هغه نه اجازت اخستلو نه پس) د قفول يعنى د واپس كيدو د جواز د ممانعت نه پس، يعنى په شروع كښې دا خبره ناجائز وه چه يو سرې د رسول الله صلی الله علیه و آله د مجلس نه د اجازت اخستلو نه پس لار شى، روستو د الله پاك د طرف نه د دې اجازت اوشو، يعنى د رسول الله صلی الله علیه و آله نه د اجازت اخستلو نه پس هيڅ باك نشته، جائز ده، د دې ترجمه الباب د وجي نه د سورة توبه آيت ﴿ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمُ بِالْمُتَّقِينَ، إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴾

۱: صحيح البخاري/الحج ۱۲ (۱۷۹۷)، والجهاد ۱۳۳ (۲۹۹۵)، والمغازي ۲۹ (۴۱۱۶)، صحيح مسلم/الحج ۱۵ (۱۳۴۴)، سنن الترمذي/الحج ۱۰۴ (۹۵۰)، (تحفة الأشراف: ۸۳۳۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۳/۲) (صحيح)

دا آیت کریمه منسوخ دې او ناسخ د دې دپاره دویم آیت کریمه دې کوم چه په سورة نور کښې مذکور دې یعنی ﴿ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ﴾ دا آیت د سورة نور دې، مصنف دې آیت کریمه ته ناسخ وائی د اولنی آیت کریمه دپاره په کوم کښې چه اجازت اخستلو سره واپس کیدو ته د منافقانو فعل وئیلې شوې دې، نو هر کله چه د منافقانو فعل دې نو یقینا ناجائز شو، لهذا په اولنی آیت کریمه کښې خو گویا اجازت اخستلو سره د واپس کیدو ممانعت راغلو، او دویم آیت کریمه کوم چه په سورة نور کښې دې د هغې مضمون دا دې چه د رسول الله ﷺ د مجلس نه چه کوم خلق مومنان دی بغیر د اجازت اخستلو نه نه پاسیری، اجازت اخستلو سره پاسیری یعنی په خلاف د منافقانو چه هغه د رسول الله ﷺ د مجلس نه په پته بغیر د اجازت نه اوځی، په دې آیت کریمه کښې د مجلس نه پاسیدلو ته د مومنانو فعل وئیلې شوې دې او بغیر د اجازت نه پاسیدلو ته د منافقانو فعل، لهذا د دې آیت کریمه نه اجازت اخستلو سره د پاسیدو جواز معلوم شو، حال دا چه د اولنی آیت کریمه نه د دې ممانعت معلومیری، او سورة نور چونکه په نزول کښې روستو دې د سورة توبه نه لهذا د سورة نور په آیت سره د سورة توبه د آیت حکم منسوخ کړی شو، کومه خبره چه په ترجمه الباب کښې مصنف ﷺ بیان کړې ده هم هغه خبره ابن عباس رضی الله عنهما په حدیث الباب کښې د دواړو آیتونو د تفسیر د لاندې بیان کړې ده، لهذا حدیث الباب د ترجمه الباب مطابق کیدو سره د مصنف مدعی ثابت شوه، دا چه څه مونږ لیکلې دی د مصنف د ترجمې تشریح او څه چه مصنف بیانول غواړی د هغې د لاندې لیکلې دی

[۲۷۷۱] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ ثَابِتِ الْمَرْوَزِيِّ، حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّخَوِيِّ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ سِوَةَ آيَةِ التَّوْبَةِ آيَةِ ٢٣ الَّتِي نَسَخْتَهَا الَّتِي فِي النُّورِ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَىٰ قَوْلِهِ غَفُورٌ رَحِيمٌ سِوَةَ آيَةِ ٢٣.

دا ابن عباس رضی الله عنهما نه روایت دې چه فرمائیلى ئې دی چه دا آیت کریمه «لا يستأذنك الذين يؤمنون بالله واليوم الآخر» الآية د سورة نور په دې آیت : «إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ» تر «غفور رحيم» سره منسوخ شوې دې.

تحقیق مقام

خو حقیقت دا دې چه کوم دوه آیتونو ته ناسخ او منسوخ وئیلې شوې وو د هغه دواړو آیتونو مضمون د یو بل نه بالکل مختلف دې لهذا د نسخ هیڅ سوال نه پیدا کیږی هر یو آیت په خپل ځانې قائم او مستحکم دې ځکه چه د اولنی آیت کریمه د مضمون خلاصه او حاصل دا دې چه کوم خلق منافقان وی هغوی بعض وخت داسې کوی چه رسول الله ﷺ سره په جهاد کښې د شرکت کولو دپاره خو په شروع کښې شریک شی او بیا په لاره کښې واره او غم غذرونه بیانولو سره او هغه نه اجازت اخستلو سره واپس شی، په خلاف د مومنانو

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۲۵۷) (حسن)

چه هغوی داسې هرگز نه کوی، او دویم آیت کریمه کوم چه د سورة نور آیت دي د هغې مضمون دا دي چه کوم خالص مومنان وی هغوی اول خو پاسیږی نه، او که څوک د څه ضرورت په وجه باندې پاسیږی نو د رسول الله ﷺ نه اجازت اخستلو سره پاسی، زمونږ د دي بیان نه معلومه شوه چه د دواړو آیتونو محمل جدا جدا دي د یو بل نه مختلف دي لهذا په دي دواړو آیتونو کښې نه خو ناسخ شته او نه منسوخ، خو د دي باوجود په دي کښې اختلاف دي، په بدل کښې هم حضرت د دواړو آیتونو په تفسیر کښې د مفسرینو اختلاف لیکلې دي او دا چه بعض علماء په دي کښې د نسخ قائل دي او بعض قائل نه دي.

بَابُ فِي بَعْثَةِ الْبُشْرَاءِ

د زیری د خبر ورکولو دپاره د چا د لیرلو بیان

یعنی که یو سړی ته امیر دا حکم ورکړی چه که تاسو فلانې کار او کړئ نو ډیره ښه ده او هغه سړی د دي کار دپاره لار شې او هغې لره انجام ته اورسوی او په خپل مقصد کښې کامیابی حاصله کړی، نو دي مامور لره پکار دي چه امام لره فوری طور د خبر کولو دپاره د یو قاصد په ذریعه هغه ته د فتح او کامیابی زیری اورسوی چه امام د تکلیف او انتظار نه بچ شې.

[۲۷۷۲] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو تَوْبَةَ الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا عِيسَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَا تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلْصَةِ فَأَتَاهَا فَحَرَّقَهَا، ثُمَّ بَعَثَ رَجُلًا مِنْ أُمَّسٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَشِّرُهُ بِكُنَى أَبِي أَرْطَاةَ.

د جریر رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم راته او فرمائیل چه ایا د ذی الخلصه نه می نه بیغمه کوي؟ نو دي هلته لارو او هغه ئې اوسوزولو اوداحمس قبیلې یوکس ئې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته د زیری دپاره اولیرلو چه کنیه ئې ابوارطاة وه.

شرح حدیث

سیدنا جریر رضی اللہ عنہ فرمائی چه رسول الله ﷺ ماته یو ځل او فرمائیل چه ای جریر اته ماته د ذی الخلصه نه ارام نه شی راکولې؟ یعنی که راکولې شې نو ضرور راکره، په دي باندې هغه فوراً پاسیدو او هلته ئې خان اورسولو او هغه ئې سیزلو سره ختم کړو، او بیا ئې لاس په لاس د قبیله احمس یو سړی چه د هغه کنیت ابو ارطاة وو د دي امر د زیری ورکولو دپاره د رسول الله ﷺ خدمت ته اولیرلو، یا ذی الخلصه په یمن کښې یو ځانې وو چه په هغې کښې د قبیله دوس او خثعم وغیره بتان پراته وو، یعنی بت خانه، په نورو الفاظو باندې مندر، دا روایت په صحیح بخاری کښې په کتاب المغازی کښې په باب غزوة ذی الخلصه کښې لږ په تفصیل سره ذکر شوې دي، په هغې کښې دا دی جریر فرمائی چه زه د رسول الله ﷺ د فرمان نه پس د یو نیم سل سوړو کسانو سره د دي کار دپاره وتلم، او هغه بت خانه می ماته کړه او کوم عبادت کونکی چه په هغې کښې ناست وو هغوی می قتل کړل، او هم دغه

۱: صحیح البخاری/الجهاد ۱۵۴ (۳۰۲۰)، صحیح مسلم/فضائل الصحابة ۲۹ (۲۴۷۶)، (تحفة الأشراف: ۳۲۲۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۶۰/۴، ۳۶۲، ۳۶۵) (صحیح) بآتم منه.

شان په هغې کښې دا هم دی چه ذو الخلصه ته الکعبة اليمانية او الکعبة الشامية هم وئيلي شي. والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي، وابو ارقطاة اسمه الحصين بن ربيعة، له صحبة، قاله المنذري

باب فِي اعْطَاءِ الْبَشِيرِ زيرى کونكى ته دانعام وركولوييان

دا باب داسې اوگنړئ چه د مخکښې ذکر شوى باب تکمله ده يعنى کوم سرې چه زيرې راوړي نو هغه ته د انعام په طور چه وركول پکار دى، په دې باب کښې مصنف د کعب بن مالک رضي الله عنه د قصې د روايت يو تکړه ذکر کړې ده، چه د هغې په اخر کښې دى چه کله زما په کور کښې د بنديدو پنځوس ورځې پوره شوې او ما هغه ورځ د سحر مونځ اوکړو د خپل کور په جهت باندي نو ما د يو اواز لگونكى اواز د لرې نه واوريدو... دا ئې وئيل چه يا کعب بن مالک ابشرا چه کله هغه ماته نزدې راغلو ماته زيرې راکونکې نو هغه وخت زما په بدن باندي کپړې وې ما هغه ويستلې او هغه ته مې هبه کړې او د مسجد په طرف روان شوم، چه کله مسجد ته داخل شوم نو ما اوکتل چه رسول الله ﷺ ناست دې، هغه فرمائي: په حاضرينو کښې سيدنا طلحه بن عبيدالله رضي الله عنه او دريدو او په منډه منډه ماته راغلو او ما سره ئې مصافحه اوکړه او مبارکې ئې راکړه.

[۲۷۷۳] حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ يَدُورُ بِالْمَسْجِدِ فَرَكَمَ فِيهِ رُكْعَتَيْنِ، ثُمَّ جَلَسَ لِلنَّاسِ وَقَصَّ ابْنُ السَّرْحِ الْحَدِيثَ، قَالَ: وَنَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُسْلِمِينَ عَنْ كَلَامِنَا أَيُّهَا الثَّلَاثَةُ حَتَّى إِذَا طَالَ عَلَى تَسْوَرَتِ جِدَارِ حَاطِطِ أَبِي قَتَادَةَ وَهُوَ ابْنُ عَمِيٍّ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَوَاللَّهِ مَا رَدَّ عَلَيَّ السَّلَامَ، ثُمَّ صَلَّيْتُ الصُّبْحَ صَبَاحَ خَمْسِينَ لَيْلَةً عَلَى ظَهْرِ بَيْتِ مِنْ بُيُوتِنَا، فَسَمِعْتُ صَارِخًا يَا كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ أَبْشِرْ، فَلَمَّا جَاءَنِي الَّذِي سَمِعْتُ صَوْتَهُ بَشَّرَنِي نَزَعْتُ لَهُ تَوْبِي فَكَسَوْتُهُمَا إِيَّاهُ فَأَنْطَلَقْتُ حَتَّى إِذَا دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ، فَقَامَ إِلَيَّ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّهِ يُهْرُولُ حَتَّى صَافَحَنِي وَهَتَانِي.

دکعب بن مالک رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه کله به نبی ﷺ د سفر نه راغې نواول به جومات ته لاړو دوه رکعتونه مونځ به ئې اوکړو بيا به دخلقوسره کيناستو او ابن السرح حديث تراخړه بيان کړې دې کعب وائي نبی ﷺ خلق منع کړي وو زمونږ درې کسانو سره د خبرو کولونه تردې چه ډير وخت تير شو نوزه دابوقتاده باغ ته داخل شوم هغه زمادتره ځوي وو ماورياندي سلام واچوو په الله قسم هغه دسلام جواب قدرې هم رانکړو (ځکه چه نبی ﷺ زمونږ سره د خبرو کولونه اودسلام د جواب وركولونه منع فرمائيلي وه) بيا ما دخپل کور په چت باندي په پنځوسمه ورځ دنسخر مونځ اوکړو نود چا اواز مې ترغورونوشو چه وئيل ئې اي کعب بن مالک حوشحاله شه کله چه هغه زما خواته راورسيدو نو ما هغه ته خپلې دواړه جامې وويستلې او وري کړي اوددغه ځانې نه روان شومه مسجد نبوي ته داخل شوم هلته

۱: صحيح البخاري / الجهاد ۱۹۸ (۳۰۸۸)، صحيح مسلم للمسافرين ۱۲ (۷۱۶)، سنن النسائي / المساجد ۲۸ (۷۳۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۳۲) (صحيح)

نبی ﷺ ناست وو طلحه بن عبیدالله ته چه زه اولیدلم نو او دریدو راغې زما سره سې مصافحه او کره او ماته ئې مبارکي راکړه.

د کعب بن مالک رضی اللہ عنہ د توبې مفصل او اوږد حدیث په صحیح بخاری کتاب المغازی باب حدیث کعب بن مالک د لاندې ذکر شوي دي، کوم چه د بخاری شریف په اتلسمه پاره کښې دي، او زمونږ د سنن ابی داؤد هم دا اتلسمه پاره روانه ده، د خطیب بغدادی د تجزیه په اعتبار سره. والحديث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی مختصر ومطولا، قاله المنذرى.

باب فِي سُجُودِ الشُّكْرِ

د شکر د سجدي بيان

[۲۷۷۴] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ بَكَّارِ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، أَخْبَرَنِي أَبِي عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ: إِذَا جَاءَهُ أَمْرٌ سُرُورًا، أَوْ بُشْرًا بِهِ خَرَّ سَاجِدًا شَاكِرًا لِلَّهِ.

ابوبکر رضی اللہ عنہ د نبی ﷺ نه روایت نقل کوي فرمائی چه کله به په نبی ﷺ خوشحالي راغله او يابه ورباندي زيروي او شونوپه سجده باندي به پريوتو دالله تعالی د شکر ادا کولو دپاره. دا باب د تيرو شوو بابونو سره مربوط دي په تيرو شوو بابونو کښې خوشخبري او په هغې باندي د انعام وغيره بيان راغلي دي هم د هغې مناسب دا باب هم دي، د حدیث الباب مضمون هم دا دي چه کله به رسول الله ﷺ ته يو زيروي راتلو نو هغه به د شکر سجده کوله. په الدر المنصود جلد ثاني ابواب صلاة الكسوف په اخر کښې يو باب، باب السجود عند الايات تير شوې دي، يعنی د حوادث په وخت الله پاک ته په سجده پريوتل، او دا موجوده باب کوم چه زمونږ په وړاندي دي دا د هغه اولنی باب مقابل دي او د سجدي حکم په دواړو ځايونو کښې دي، څنگه چه د حوادثو په وخت کښې هم دغه شان د مسرت او خوشحالي په موقع باندي، د سجده شکر مسئله هم اختلافی ده چه د شوافعو، حنابله او صاحبين په نزد مستحب ده، د امام ابوحنيفه او مالک په نزد غير مستحب ده، لکه چه هلته په اولنی ځاي کښې تفصيل تير شوې دي، د هغې طرف ته دي رجوع او کړې شي، د امام صاحب نه چه د سجده شکر کوم انکار منقول دي د هغې تشریح کښې درې اقوال دي، وئيلي شوې دي چه په دي سره مراد د هغه عدم وجوب دي، يعنی واجب نه ده، او وئيلي شوې دي چه د هغه مراد دا دي چه دا کار مشروع نه دي، او دريم قول دا دي چه د شکر د ادا کولو دپاره صرف سجده کافی نه ده، بلکه دوه رکعتي دي د شکر په نيت سره اولوستلي شي.

[۲۷۷۵] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي قُدَيْبٍ، حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ يَعْقُوبَ، عَنْ ابْنِ عُثْمَانَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَهُوَ يَخْبَرُنِي بِنِ الْحَسَنِ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ الْأَشْعَثِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَكَّةَ نُرِيدُ الْمَدِينَةَ فَلَمَّا كُنَّا قَرِيبًا مِنْ عَزْرَةَ أَنْزَلَ، ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ قَدَعَا اللَّهُ سَاعَةً، ثُمَّ خَرَّ سَاجِدًا طَوِيلًا، ثُمَّ قَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ قَدَعَا اللَّهُ سَاعَةً، ثُمَّ خَرَّ سَاجِدًا طَوِيلًا، ثُمَّ قَامَ فَرَفَعَ

١: سنن الترمذي للسیر ۲۵ (۱۵۷۸)، سنن ابن ماجه للإقامة ۱۹۲ (۱۳۹۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۹۸) (صحیح)

٢: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۸۷۰) (ضعیف)

يَدِيهِ سَاعَةً، ثُمَّ خَرَّ سَاجِدًا ذَكَرَهُ أَحْمَدُ ثَلَاثًا، قَالَ: إِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي وَشَفَعْتُ لِأُمَّتِي فَأَعْطَانِي ثَلَاثَ أُمَّتِي، فَخَرَّتُ سَاجِدًا شُكْرًا لِرَبِّي، ثُمَّ رَفَعْتُ رَأْسِي فَسَأَلْتُ رَبِّي لِأُمَّتِي فَأَعْطَانِي ثَلَاثَ أُمَّتِي فَخَرَّتُ سَاجِدًا لِرَبِّي شُكْرًا ثُمَّ رَفَعْتُ رَأْسِي، فَسَأَلْتُ رَبِّي لِأُمَّتِي الثَّلَاثَ الْآخِرَ فَخَرَّتُ سَاجِدًا لِرَبِّي، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَشَعَثُ بْنُ إِسْحَاقَ، أَسْقَطَهُ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ. حِينَ حَدَّثَنَا بِهِ، فَحَدَّثَنِي بِهِ عَنْهُ مُوسَى بْنُ سَهْلٍ الرَّمْلِيُّ.

د سعد بن ابی وقاص رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه مونږ د نبی صلي الله عليه وسلم سره اووتو چه دمکې نه مدينې ته راتلو کله چه عزورا مقام ته راورسيدو نو نبی صلي الله عليه وسلم د سورتی نه راکوز شو او دواړه لاسونه ئې پورته کړل او دعائې اوکړله ديو وخت پورې دالله تعالی نه اوبيا په سجده پريوتو او اوږده سجده ئې اوکړه بيا پاخيدو او دواړه لاسونه ئې پورته کړل او ديو ساعته پورې ئې دعا اوکړه بيا په سجده پريوتو او ددې نه پس ئې او فرمائيل مادخپل رب نه سوال اوکړو او دخپل امت دپاره مې سفارش اوکړو نوالله تعالی ماته زمادامت ددريمي حصې اجازت راکړو بيازه الله ته په سجده پريوتم دالله تعالی دشکر اداکولو دپاره چه کله مې سر پورته کړو نو دخپل امت دپاره مې دالله نه سوال اوکړو نوالله ماته زمادامت دريمه حصه راکړه بياالله ته دشکر دپاره په سجده پريوتم چه سري پورته کړو نو دامت دپاره مې دالله نه سوال اوکړو نو باقی پاتې دريمه حصه ئې هم راکړه اوبياالله ته په سجده پريوتم. ابوداود وائی اشعث بن اسحاق لره احمد بن صالح په سند کښې ساقط کړې دي کله چه ئې مونږ ته د احديث بيانولو نومونږ ته ئې دسهل بن موسی رملی نه بيان کړو.

مضمون حدیث

«عَنْ سَعْدِ بْنِ عَامِرٍ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -

سیدنا سعد بن ابی وقاص رضي الله عنه فرمائی چه یو ځل مونږ د مکې نه د مدينې دپاره روان شو چه کله مونږ مقام غوراء ته نزدې شو نو رسول الله صلي الله عليه وسلم د سورتی نه کوز شو بيا ئې لاس اوچت کړل او دعائې کوله بيا په سجده پريوتلو او د ډير ساعته پورې په سجده کښې وو، د هغې نه روستو بيا او دريدو او لاس مبارک ئې اوچت کړل بيا ئې لاس اوچتولو سره ډير ساعته پورې دعا اوکړه او بيا په سجده پريوتلو او د ډير ساعته پورې په سجده کښې وو، بيا ئې په دريم ځل په ولاړه باندي دعا اوکړه بيا هم دغه شان په سجده پريوتلو او روستو ئې او فرمائيل چه ما د خپل رب نه سوال اوکړو او دخپل امت دپاره مې سفارش کړې وو نو الله پاک ماته دخپل امت دريمه حصه راکړه، گویا د هغوی په حق کښې زما سفارش قبول شو، په دې باندي ما سجده اوکړه د خپل رب په شکريه کښ، بيا ما سر اوچت کړو او هم هغه دعا مې اوکړه نو نو زما رب ماته زما د امت يو ثلث نور ماته راکړو، په دې باندي ما بيا خپل رب ته د شکر سجده اوکړه (تردې چه د دوه ثلث معافی اوشوه) رسول الله صلي الله عليه وسلم فرمائی چه ما بيا دعا اوکړه نو الله پاک ماته د امت اخر ثلث هم راکړو، گویا د پوره امت دپاره د مغفرت سفارش قبول کړې شو، په دې باندي ما خپل رب ته سجده اوکړه.

حافظ ابن القيم رحمته الله عليه په دې حدیث باندي په خپل تعليق کښې د مسند احمد د روایاتو نه د رسول الله صلي الله عليه وسلم سجده شکر کول په مختلف بشارات باندي نقل کړې دي، او هم

دغه شان د سيدنا علي رضي الله عنه سجده كول، په خوارج باندي د فتح په وخت او په مقتولينو كښې چه كله د لټون په وخت ذو الثديه راوتلو، او د سنن سعيد بن منصور نه هغوی نقل كړې دی چه صديق اكبر ته چه لكه د مسليمه د هلاكيډو خبر راغلو نو هغه وخت هغه هم سجده او كړه.

شرح السند

﴿ قال ابوداود : اشعث بن اسحاق اسقطه احمد بن صالح الخ ﴾ د مصنف د دې كلام شرح دا ده چه د دې حديث په سند كښې ابن عثمان او عامر بن سعد ترمينخه اشعث بن اسحاق واسطه ذكر شوي ده، د هغې په باره كښې مصنف رضي الله عنه دا فرمائي چه دا حديث چه كله ماته زما استاد احمد بن صالح مخامخ بيان كړې وو، هغه وخت ترې هغه دا واسطه ساقط كړې وه، خو بيا چه كله د دې نه روستو دا حديث ماته زما بل استاد موسی بن سهل بيان كړو د احمد بن صالح نه نقل كولو سره نو بيا پكښې هغه د اشعث بن اسحاق واسطه ذكر كړه، پس حاصل دا شو چه مصنف ته دا حديث په دوه طريقو سره رارسيدلې دې، براه راست د احمد بن صالح نه او په واسطه د موسی بن سهل، د احمد بن صالح نه په اول طريق كښې واسطه ذكر نه ده، په دويم طريق كښې ذكر ده، خو مصنف د موسی په روايت باندي اعتماد كولو سره په دې دويم طريق كښې هم واسطه ذكر كړه، گوياد مصنف رائي دا ده چه دا واسطه كيدل پكار دی.

د دې حديث په سند كښې حافظ منذري رحمته الله عليه ليكي ﴿ وفي ا سنده موسى بن يعقوب الزمعي وفيه مقال، قلت : وقال الذهبي في الميزان في ترجمته : وثقه ابن معين، وقال النسائي ليس بالقوي، وقال ابوداود هو صالح وقال ابن المديني، ضعيف منكر الحديث. ﴾

بَابُ فِي الطَّرُوقِ

د شپې په وخت كښې د سفر نه كورته دراتلوييان

طرق او طروق دواړه لغتونه دي، د دې معنی د ضرب هم راځي او هم د دې نه ﴿ مطرقة ﴾ (سټك) دې، او بله معنی ئې اتیان بالليل د شپې راتلل دی، او په شپه كښې راتلونكي ته طارق وئيلې شی، چونكه د شپې راتلونكي عام طور سره طرق يعنی د دق الباب (دروازه ټكولو) محتاج وی.

[۲۷۷۶] () حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، وَمُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، قَالَا: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ دِقَارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكْرَهُ أَنْ يَأْتِيَ الرَّجُلُ أَهْلَهُ طَرُوقًا.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبي صلى الله عليه وسلم به د شپې كورته راتلل بد گنرل.

شرح الحديث

حافظ فرمائي هم د دې حديث په دويم طريق كښې دغه شان دی : ﴿ اذا اطال احدكم الغيبة فلا

١ : صحيح البخاري للعمرة (الحج) ١٦ (١٨٠١)، صحيح مسلم للإمارة ٥٦ (٧١٥)، (تحفة الأشراف: ٢٥٧٧)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للاستئذان ١٩ (٢٧١٣)، مسند احمد (٢٩٩٣، ٣٠٢) (صحيح)

بطرق اهله لילה) یعنی کله چه یو سرې د اوږد غائب والی نه پس د سفر نه راوایس شی نو هغه له پکار دی چه خپلې ښځې ته دې د شپې په وخت نه راځی، د دې وجه علماء کرامو لیکلې دې چه د خاوند د خپلې ښځې نه تزین او ښه هیبت مطلوب وی، پس هم د دې په موجودگي کښې د دې اهتمام کوی او که خاوند موجود نه وی، په سفر وغیره کښې تلې وی نو هغه د دې اهتمام نه کوی، اوس چه کله د اوږد غیبت نه پس بغیر د مخکښې اطلاع کولو نه د شپې په وخت راشی نو په دې صورت کښې ظاهره ده چه که خپله ښځه په کوم حالت کښې لیدل غواړی په هغې کښې به هغه بیا نه مومی، او په دې کښې خطر ده چه دا به د نفرت سبب جوړ شی هم دغه شان د هیئت حسنه نه علاوه کیدې شی او دا هم کیدې شی چه هغه په نور څه نا مناسب حال کښې وینی، په دې صورت کښې به ناڅاپه رارسیدو سره د هغې پرده پاتې نه شی. د رسول الله ﷺ په ارشاداتو کښې د مختلف مصالح کیدل قرین قیاس دی، کومو بعض خلقو چه د رسول الله ﷺ په دې هدایت باندې عمل نه دې کړې او ناڅاپه د شپې راغلل نو هغوی د ناخوښه حالاتو سره مخ شوي دی چه د هغې بعض قصې په شروح کښې لیکلې شوي دی. والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي بنحوه، قاله المنذري.

[۲۷۷۷] (۱) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَابِرٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنْ أَحْسَنَ مَا دَخَلَ الرَّجُلُ عَلَى أَهْلِهِ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ أَوَّلَ اللَّيْلِ".

د جابر بن عبدالله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی د سفر نه کورته دراتلوی په وختونو کښې ښه وخت ماښام دې.

شرح الحديث

دلته د دخول علی الاهل نه مراد صحبت دې، چه کله انسان د سفر نه وایس راغلي وی او د سفر کولونه پس د شپې خپل اهل ته راورسیږی نو دهغه په حق کښې بهتر هم دا فرمائی چه هغه سرې دې په شروع کښې خپل ضرورت پوره کړی، ځکه چه د سفر او اوږد غیبت د وجې نه شهوت قوی کیږی نو د هغه دپاره مناسب هم دا ده چه د خپل حاجت نه دې په شروع کښې فارغ شی او خپل طبیعت دې بحال کړی، خو دا ادب او طریقه د مسافر په حق کښې ده، په عام حالاتو کښې نه ده، په عام حالاتو کښې خود دې په خلاف د هغه دپاره د شپې اخری حصه اولی ده چه د شپې د اخری حصې پورې خوراک کول وغیره ټول د هضم کیدو نه پس او څه آرام نه پس په طبیعت کښې اعتدال پیدا کیږی.

دا چه د حدیث کومه شرح کړې شوې ده په دې صورت کښې په دې حدیث کښې او په حدیث سابق کښې هیڅ تضاد نشته، او که په دې حدیث ثانی کښې د دخول نه مراد داخلیدل مراد کړې شی نو بیا دا حدیث د اول حدیث خلاف راشی خو که په دې حدیث کښې هم اوله معنی مراد کړې شی نو بیا د دې تعارض به دا جواب وی چه دا حدیث په دې صورت باندې محمول دې چه کله د هغه کور والو ته د مخکښې نه اطلاع شوې وی، په

(۱) صحیح البخاري للنکاح ۱۲۱ (۵۲۴۴)، صحیح مسلم للجهاد ۵۶ (۷۱۵)، (تحفة الأشراف: ۲۳۴۳) (صحیح)

خلاف د حدیث اول چه هغه به محمول کړې شی په هغه صورت باندې چه کله د مخکښې نه اطلاع نه وی او یو توجیه دا هم کړې شوې ده چه دا د کراهت والا حدیث محمول دې په دخول فی اثناء اللیل باندې، او په عدم کراهت والا حدیث باندې محمول دې، دخول اول اللیل باندې، والله تعالی اعلم. والحديث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی بنحوه، قاله المنذرى.

[۲۷۷۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ، فَلَمَّا ذَهَبْنَا لِنَدْخُلَ قَالَ: "أَمْهَلُوا حَتَّى نَدْخُلَ لِيَلَا لَكُمْ تَمْتَشِطُ الشَّعْبَةُ، وَتَسْتَجِدُّ الْمَغِيْبَةَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: الطَّرُوقُ بَعْدَ الْعِشَاءِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَبَعْدَ الْمَغْرِبِ لِأَبَاسٍ بِهِ.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی الله علیه و آله سره په سفر کښې وو هر کله چه مونږ کورته د داخلید و اراده او کړه نونښې صلی الله علیه و آله او فرمائیل صبر و کړئ او خبرني وليرلو، چه ښځې خپل گډوډ ويخته گومنز کړي اوزیرناف صفائي وکړي. ابوداود وائی زهري وئیلی دی د الطروق نه دماخوستن نه بعد وخت مراد دي، ابوداود وائی د مابنم نه پس کورته په داخلید و کښې حرج نشته.

سیدنا جابر رضي الله عنه فرمائی چه مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله سره په یو سفر کښې وو، چه کله مونږ خلق واپس شو نو خپلو ازواجو ته واپس لاړو (په ظاهره باندې د سفر نه واپسې باندې د مابنم وخت کښې شوې وه) نو هغه او فرمائیل چه اوس ایسار شه د شپې به هغوی ته خو چه په دې موده کښې هلته بیر سرې خپل وینسته گومنځ کولو سره برابر کړی، د نامه نه لاندې وینسته وغیره صفا کړی، مغیبه هغه زنانه چه د هغې خاوند په سفر کښې تلې وی، د دې حدیث نه معلومه شوه چه خاوند له پکار دی چه د سفر نه په واپسې باندې د خپل اهل سره رسید و کښې دې تندي نه کوی بلکه هغه ته دې مهلت ورکړی د راتلو د اطلاع نه پس، دومره وخت چه په هغې کښې هغه خپل هیئت برابر کړې شی،

په دې حدیث کښې (فلما ذهبنا لندخل) کښې اختصار دې، پس د بخاری په روایت کښې دی (فلما قدمنا ذهبنا لندخل) او کیدل هم دغه شان پکار دی.

په دې باب کښې مصنف درې احادیث ذکر کړې دی، اتفاق ته گوره چه مسانید د جابر نه دی، د درې وارو راوی د جابر بن عبد الله نه دي، والحديث اخرجه النسائی، وفي البخاری ومسلم بنحوه، قاله المنذرى.

.....

۱: صحیح البخاری/النکاح ۱۲۲ (۵۲۴۷)، صحیح مسلم/الإمارة ۵۶ (۷۱۵)، تحفة الأشراف: ۱۹۴۱۸، ۲۳۲۴، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۹۸۳، ۳۵۵، ۳۹۶) (صحیح)

بَاب فِي التَّلَقِي

باب د مسافر د استقبال کولو بیان

یعنی د سفر نه د راتلونکو استقبال

[۲۷۷۹] (۱) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ، قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ تَلَقَّاهُ النَّاسُ فَلَقِبْتُهُ مَعَ الصَّبِيَّانِ عَلَى ثِنْيَةِ الْوُدَاعِ.

د سائب بن یزید رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه کله نبی صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ ته د غزوه تبوک نه واپس راغی نو خلقو دهغه استقبال اوکړو اوزه د ماشومانو سره دهغه دملاقات دپاره ثنیه الوداع ته لاړم او ملاقات مې ورسره اوکړو.

شرح الحديث

سائب بن یزید رضی اللہ عنہ فرمائی، چه کله رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د تبوک نه په واپسې باندي تشریف اورلو نو صحابه کرام د هغه د استقبال دپاره ثنیه الوداع ته اورسیدو، زه هم د نورو بچو سره استقبال دپاره لاړم.

سائب بن یزید صغار (کم عمره) صحابه کرامو نه دي هغه وخت د هغوی عمر تقریبا اووه کاله وو (لانه ولد فی ۲ هـ) ثنیه وئیلې شی، د دواړو غرونو ترمینځه چه کومه لاره او کنده وی چه په هغې کښې لوړه ژوره وی، او د وداع معنی د رخصت کولو ده، ثنیه الوداع ته ثنیه الوداع په دي وجه وئیلې شی چه مدینې منورې ته تلو والو او مدینې ته داخلیدونکو لره هم د دي ځانې نه استقبال او رخصت کولې شی، بیا ځان پوهه کړه چه په مدینه منوره کښې دا دواړه ثنیه جدا جدا دی یو هغه کومه چه د مکې مکرمې په لاره باندي دي او دویم د ملک شام په لاره کښ، په دي کښې اولنې د ثنیه مسجد قبا نه لږ وړاندي واقع دي، او دویم د مسجد نبوی په شمال کښې د جبل سلع سره متصل دي، او په حدیث الباب کښې چه کومه ثنیه ذکر شوې دي هغه د دي نه دویمه ثنیه ده ځکه چه د هغه واپسې د سفر تبوک نه کیدله، او کوم چه په سباق الخیل والا حدیث کښې د ثنیه ذکر راځی د دي نه مراد هم، هم دا دویمه ثنیه ده، هم په دي جانب کښې د خیل مسابقت وی. والحديث اخرجه البخاري والترمذي، قاله المنذري.

بَاب فِيمَا يُسْتَعَبُّ مِنْ أَنْفَازِ الزَّادِ فِي الْغَزْوِ إِذَا قَفَلَ

کله چه یو مجاهد سامان تیار کړی او پخپله نه شی تلې نوبل چاته دي سامان ورکړی

یعنی کوم سرې چه د غزوه په سفر کښې خپل ځان سره د لارې توبنه وغیره سامان د ځان سره اورې نو په دي کښې که د ضرورت پوره کیدو نه پس څه بچ شی نو هغه سره ئې واپس رانورې بلکه هغه دي هم هلته د الله پاک دپاره خرچ کړی

۱: صحیح البخاري/الجهاد ۱۹۶ (۳۰۸۳)، والمغازي ۸۲ (۴۴۲۶)، سنن الترمذي/الجهاد ۲۸ (۱۷۱۸)، تحفة الأشراف: ۲۸۰۰، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۴۹۳) (صحیح)

[۲۷۸۰] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا ثَابِتُ الْبُنَّانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ فَتًى مِنْ أَسْلَمَ، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُرِيدُ الْجِهَادَ وَلَيْسَ لِي مَالٌ أَجْهَزُ بِهِ قَالَ: اذْهَبْ إِلَى فُلَانِ الْأَنْصَارِيِّ فَإِنَّهُ كَانَ قَدْ جَهَّزَ قَمْرَضَ، فَقُلْ لَهُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُفْرُطُكَ السَّلَامَ، وَقُلْ لَهُ: اذْفَعِ إِلَيَّ مَا جَهَّزْتَ بِهِ فَأَتَاَهُ، فَقَالَ لَهُ: ذَلِكَ فَقَالَ: لِامْرَأَتِي يَا فُلَانَةُ اذْفَعِي لَهُ مَا جَهَّزْتِي بِهِ، وَلَا تُحْبِسِي مِنْهُ شَيْئًا، فَوَاللَّهِ لَا تُحْبِسِينَ مِنْهُ شَيْئًا فَيَبَارِكَ اللَّهُ فِيهِ.

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دي چه د اسلم قبیلې یو ځوان دنبي صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړو چه اي دالله رسوله زما جهاد ته دتلو اراده ده او مال راسره نشته چه ځان تيار کړم نبي صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائيل فلاني انصاري ته ورشه او ورته او وایه چه نبي صلی اللہ علیہ وسلم درباندي سلام وائی او ورته او وایه چه دخان دپاره دي کوم سامان تيار کړې وي هغه ماته راکړه چه زه پرې دخان دپاره تيارې او کړم نودې لار او ورته ئې او وئيل هغه خپلې ښځې ته او وئيل اي فلاني کوم سامان چه دي زما دپاره تيار کړې دي هغه په تبه ورکړه او دهغې نه څه شي مه پاتي کوه که چرې ته څه شي پاتي کړي نو په هغې کښې به هيڅ برکت نه وي.

د قبيله اسلم يو ځوان صحابي رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته عرض اوکړو چه زما اراده په جهاد کښې د تلو ده او ما سره دومره مال نشته چه هغې سره د جهاد سامان برابر کړې شم، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه ته او فرمائيل چه فلاني انصاري ته لار شه، هغه جهاد ته د تلو تيارې کړې وه خو بيا بيمار شو په دې وجه لانرو. (خو د جهاد سامان هغه سره محفوظ دي) او لار شه هغه ته او ايه چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تاته سلام کړې دي او دا ئې فرمائيلې دي چه څه سامان تا د جهاد دپاره برابر کړې وو هغه هر څه دي ماته راکړې دي هغه وائی چه زه هغه ته لارم او د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم خبره مې هغه ته اورسوله، نو هغه انصاري صحابي فوراً د خپلې ښځې ته او وې چه څه تا د جهاد سامان زما دپاره تيار کړې وو هغه ټول هغه سرې ته حواله کړه او د هغې نه يو څيز هم مه منع کوه، پس والله که تا د هغې نه يو څيز منع کړو نو بيا په هغې کښې ستا دپاره برکت نه شي کيدې چه ته دي يو څيز د هغې نه منع کړې او په هغې کښې برکت راشي، بلکه کله به هم برکت هم نه وي. ددې حديث نه مصنف د دې صورت استنباط اوکړو چه په ترجمه الباب کښې مذکور دي. والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى.

باب فِي الصَّلَاةِ عِنْدَ الْقُدُومِ مِنَ السَّفَرِ څوکه چه د سفر نه واپس راشي نو اول دې مونغ اوکړي

[۲۷۸۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُتَوَكِّلِ الْعَسْقَلَانِيُّ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ، وَعَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ أَبِيهِمَا كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كَانَ لَا يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ إِلَّا نَهَارًا"، قَالَ الْحَسَنُ: "فِي الضُّحَى فَإِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ إِلَى الْمَسْجِدِ فَرَكَمَ فِيهِ رُكْعَتَيْنِ ثُمَّ جَلَسَ فِيهِ".

۱: صحيح مسلم الإمارة ۳۸ (۱۸۹۴)، (تحفة الأشراف: ۳۲۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۰۷/۳) (صحيح)

۲: انظر حديث رقم: (۲۷۷۳)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۳۲) (صحيح)

دکعب بن مالک نه رضی اللہ عنہ روایت دې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم به دسفر نه نه راتلومگرد ورځې او حسن وئیلی دی چه دغري به راتلو کله چه به دکوم سفرنه راغې نواول به جومات ته راغې اودوه رکعتنه به ئې په کښې او کرل اوبیابه په کښې کیناستو.

یعنی د سفر نه په واپسې کښې انسان له پکار دی چه دوه رکعتنه مونځ اوکړی، هم دغه شان چه کله ئې په سفر کښې د تلو اراده وی نو بیا هم دوه رکعتنه نفل کول سنت دی، خودا مونځ سفر نه واپسې باندي خو په مسجد کښې اولوستلې شی، دا اولی دې، او د سفر دپاره د روانیدو په وخت د هغه مونځ په کور کښې کیدل مسنون دی، په حدیث الباب کښې صرف ترجمه الباب والا مونځ ذکر شوې دې، چه په هغې کښې دې چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دا عادت مبارک وو چه د سفر نه په واپسې کښې په مدینه کښې په ورځ کښې وو د چاشت په وخت باندي او بیا هغه مسجد ته تشریف راوړلو سره هلته دوه رکعتونه لوستل، دمونځ نه پس بیا هم هلته مسجد کښې څه ساعت پس تشریف کیخودلو.

او د دې نه روستو حدیث کښې دی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د خپل حج نه په واپسې باندي مدینه منوره کښې داخل شو نو اول هغه خپله سورلی د مسجد په دروازه باندي کینولو، بیا د سورلئ نه راکوزیدو سره مسجد کښې داخل شو د هغې نه پس بیا کور ته تشریف راوړلو، نافع فرمائی چه زما استاذ او سید ابن عمر رضی اللہ عنہما به هم داسې کول.

[۲۷۸۲] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَنْصُورٍ الطُّوسِيُّ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "حِينَ أَقْبَلَ مِنْ حَجَّتِهِ دَخَلَ الْمَدِينَةَ، فَأَتَا عَلَى بَابِ مَسْجِدِهِ، ثُمَّ دَخَلَهُ فَرَكَمَ فِيهِ رَكَعَتَيْنِ ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى بَيْتِهِ"، قَالَ نَافِعٌ: فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ كَذَلِكَ يَصْنَعُ.

د ابن عمر رضی اللہ عنہما نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم کله د حج نه مدینې ته راغې نواول جومات ته راغې اود جومات په دروازه کښې ئې خپله اوبښه کینوله او بیاورد داخل شو اودوه رکعتنه ئې په کښې او کرل او بیا خپل کور ته روان شو نافع وئیلی دی چه ابن عمر رضی اللہ عنہما به پخپله هم داسې کول.

باب فی کراء المقاسم

د تقسیم کونکي د معاوضي بیان

مقاسم بضم الميم یعنی قسام دې، د خلقو ترمینځه مشترک څیز جدا جدا حصو کښې تقسیم کول، او مقاسم، بفتح الميم، مقسم جمع ده چه د هغې معنی قسمت او تقسیم ده، بالفتح د لوستلو په صورت کښې مضاف محذوف وی، یعنی صاحب المقاسم په کتب لغت کښې لیکلې دی چه صاحب المقاسم نائب الامیر وی، قسام الغنائم یعنی مال غنیمت لره په مجاهدینو باندي تقسیم کولو والا، دا خود لفظ مقاسم تحقیق شو او کراء المقاسم کوم چه په ترجمه الباب کښې دې د هغې معنی شوه اجرة القسام، یعنی تقسیم کولو والا، د تقسیم کولو اگر چه اجرت واخلی نو دا جائز ده یا ناجائز، د دې فیصله به د حدیث الباب نه وی.

۱: نقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۴۱۷)، وقد أخرج: مسند احمد (۱۲۹/۲) (حسن صحيح)

[۲۷۸۳] حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مُسَافِرٍ التَّيْسِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، حَدَّثَنَا الزَّمْعِيُّ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عُمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سُرَّاقَةَ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ تَوْبَانَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِيَّاكُمْ وَالْقَسَامَةَ، قَالَ: فَقُلْنَا: وَمَا الْقَسَامَةُ؟ قَالَ: الشَّيْءُ يُكُونُ بَيْنَ النَّاسِ فَيَجِيءُ فَيُنْتَقَصُ مِنْهُ".

د ابوسعيد خدری رضي الله عنه نه روایت دې چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی خبردار د تقسیم د معاوضی نه خان وساتئ، خلقو عرض او کړو چه ددې چه مطلب دې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل یوشې چه د ډیرو کسانو په مینځ کښې مشترک وي او بیا هغه کم کړې شي.

شرح الحديث

رسول الله صلی الله علیه و آله ارشاد او فرمائیلو چه بچ کیدل خپل خان لره د تقسیم اجرت اخستلو سره، یو راوی د خپل استاذ نه تپوس او کړو چه د قسامه نه چه مراد دې؟ هغه جواب ورکړو چه یو خیز د خو کسانو تر مینځه مشترک دی، تقسیم کونکې چه کله هغه خیز د شریکانو تر مینځه تقسیم کیدلو نو په هغې کښې کمی او کړی، یعنی د هغې نه چه د خپل خان د پاره راوباسی، په ظاهره مطلب دا دې چه بغیر د هغې نه اجازت اخستلو د پاره، د خپل مخوریز توب او ملکئ د وجې نه لکه چه په روستو راتلونکې روایت کښې راخی.

[۲۷۸۴] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ يَعْنِي ابْنَ مُحَمَّدٍ عَنْ شَرِيكِ يَعْنِي ابْنَ أَبِي تَمِيمٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ، قَالَ الرَّجُلُ: يَكُونُ عَلَى الْفِتْنَاءِ مِنَ النَّاسِ فَيَأْخُذُ مِنْ حَظِّ هَذَا وَحَظِّ هَذَا.

عطاء بن یسار د نبی صلی الله علیه و آله نه د تیر روایت په شان روایت کړې دې مگر ددې اضافي سره چه یو کس دخلقو په ډله باندې مقرر شي او د هر چا د حصې نه لږ لږ اخلی. یعنی یو سړې کوم چه په جماعتونو باندې حاوی دی (لکه چه ملکان خانان وی) چه د هغې د حصې نه اخلی چه د فلانی د حصې نه، د دې نه په مختصر الفاظو باندې داسې هم تعبیر کیدلې شي هغه زبردسته کتوتی که د ملک د طرف نه وی دا ملکان خلق داسې وی، د هغوی په خپل قوم باندې ډیر زور وی او په تکبر کښې د خپل قوم په مال کښې بغیر د اجازت نه تصرف کوی، هم دا دې هغه خیز کوم چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائیلې دې (ایاکم والقسامه) د دې قسم کتوتی په عدم جواز او حرام کیدو کښې خو هیڅ شک نشته، او په حدیث کښې د دې ممانعت هم راغلې دې خو په ترجمه الباب کښې لفظ "کراء" مذکور دې، یعنی اجرت خو به بیا په صورت مسئوله کښې دا وی چه کوم سړې د یو مشترک خیز لره د شریکانو تر مینځه د حصو مطابق په دیانت سره تقسیم کړی لکه زمکو وغیره سره چه پتواریان کوی او بیا د هغه تقسیم معینه اجرت واخستلې شي په دې کښې خو هیڅ کراهت او د عدم جواز خبره نشته، پس د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه په نزد دا جائز ده، حضرت شیخ په دې مسئله کښې د امام مالک رضي الله عنه اختلاف لیکلې دې چه "انه کره اجر

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۲۹۶) (ضعیف)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۰۹۲) (ضعیف)

القسم" د صحیح بخاری په کتاب الاجارة کښې په ترجمه الباب کښې تعلیقا داسې دی: ولم یز ابن سیرین باجر القسم باسا... او په فتح الباری کښې دی: وکره مالک اجرة القسم وقیل انما کرهها لانه کان یرزق من بیت المال فکره له ان یاخذ اجرة اخرى، وایار سحنون الی الجواز عند فساد امور بیت المال. اه

باب فی التجارة فی الغزو په جهاد کښې د تجارت کولو بیان

[۲۷۸۵] (۱) حَدَّثَنَا الرَّيِّعُ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ يَعْنِي ابْنَ سَلَامٍ، عَنْ زَيْدِ يَعْنِي ابْنَ سَلَامٍ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَلَامٍ يَقُولُ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ سَلْمَانَ، أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَهُ، قَالَ: لَمَّا فَتَحْنَا خَيْبَرَ أَخْرَجُوا غَنَائِمَهُمْ مِنَ الْمَتَاعِ وَالسَّبْيِ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَتَّبِعُونَ غَنَائِمَهُمْ، فَجَاءَ رَجُلٌ حِينَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَدْ رَجِمْتُ رَجْمًا مَا رِيحَ الْيَوْمِ مِثْلَهُ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ هَذَا الْوَادِي قَالَ: وَيَحْكُ وَمَا رَجِمْتَ؟ قَالَ: مَا زِلْتُ أَبِيعُ وَأَبْتَاغُ حَتَّى رَجِمْتُ ثَلَاثَ مِائَةِ أَوْ قِيَّةً، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَنَا أَنْبِئُكَ بِخَيْرِ رَجُلٍ رِيحَ، قَالَ: مَا هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الصَّلَاةِ".

دعبیدالله بن سلام رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په صحابه کرامو کښې یوکس راته حدیث بیان کړې دې وئیل ئې چه کله مونږه خیبر فتح کړو نوهر چا خپل خپل غنیمت واخستو چه سامانونه اوقیدیان هم په کښې وو اوخلغو په خپل مینځ کښې اخستل اوخرخول شروع کړل په دې دوران کښې یوکس راغې او عرض پیسې اوکړو چه ای دالله رسوله مانن دومره گټه کړې ده چه ددې کلي په خلقو کښې به دننه پورې هیڅا دومره گټه نه وی کړې نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل په تا افسوس دې څه دي گټلي دي ده اووئیل اخستل خرخول مې کول تردې چه درې سوه اوقی مې اوگټلي نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته او فرمائیل زه به درته یوکس اوبنایم چه ددې نه به ئې ډیره گټه کړې وي دې وائی ما اووئیل ای دالله رسوله هغه څوک د نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل د فرض مونځ نه پس دوه رکعتونه کول.

یو صحابی فرمائی چه کله مونږه خیبر فتح کړو او په مال غنیمت کښې څه سامان یا قیدی وغیره هغوی دغه خیزونو لره په خپل مینځ کښې اخستل خرخول شروع کړل، یو سرې راغلو او رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته ئې عرض اوکړو چه نن په دې تجارت کښې ماته دومره نفع حاصله شوې ده چه دومره به چاته نه وی حاصل شوې. قال: ويحک (کلمة ترحم وتوجع) هغه او فرمائیل: هلاک شې تا څه اوگټل؟ هغه عرض اوکړو ما خپل مال خرخولو او دویم ئې خرخولو هم دغه شان په واپس کیدو کښې ما سره درې سوه اوقیه سپین زر په نفع کښې حاصل شو، یعنی دولس زره درهم نو هغه او فرمائیل چه زه تاته اوایم، د دې نه غوره نفع حاصلولو والا سرې هغه عرض اوکړو څوک دې هغه؟ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل هغه سرې کوم چه د فرض مونځ نه روستو دوه رکعتونه اوکړې

(۱): تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۳۲) (ضعیف)

باب فِي حَمْلِ السِّلَاحِ إِلَى أَرْضِ الْعَدُوِّ

د دشمن علاقې ته د اسلحې نقل كولو بيان

د دار الحرب طرف ته په څه طريقه وسله ليږل، يا په طريقه د بيع چه دار الحرب ته تلونكي باندې يو مسلمان وسله خرڅه كړي، «او بطريق الهبة والمبادلة» لكه چه په حديث الباب دي، د احنافو په نزد داسې كول جائز نه دي، عند الجمهور جائز دي.

[۲۷۸۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَيْسَى بْنُ يُونُسَ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ ذِي الْجَوْشَنِ رَجُلٍ مِنَ الضَّبَابِ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ أَنْ فَرَّغَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ بِأَبْنِ قَرَيْسٍ لِي، يُقَالُ هَذَا الْقَرْحَاءُ فَقُلْتُ: يَا مُحَمَّدُ إِنِّي قَدْ جِئْتُكَ بِأَبْنِ الْقَرْحَاءِ لِتَتَّخِذَهُ، قَالَ: لَا حَاجَةَ لِي فِيهِ، وَإِنْ شِئْتَ أَنْ أَقْبِضَكَ بِهِ الْمُخْتَارَةَ مِنْ ذُرُوعِ بَدْرٍ فَعَلْتُ، قُلْتُ: مَا كُنْتُ أَقْبِضُهُ الْيَوْمَ بِغُرَّةٍ قَالَ: فَلَا حَاجَةَ لِي فِيهِ.

ذي الجوشن دضباب قبيلې والا په صحابه كرامو كښې ديو كس نه روايت كوي چه فرمائيلې ئې وو كله چه دغزوه بدر په ورځ نبي ﷺ د مشركينو نه فارغ شونوماورته دخپل اس يوكلن بچې بوتلوچه قرحا ورته وئيلې شي ماورته او وئيل اي دالله رسوله قرحامي درته راوستې دې ددې دپاره چه ته ئې په استعمال كښې راولي نبي ﷺ او فرمائين زماورته ضرورت نشته، كه چرې ته دده په عوض كښې دغزوه بدر دغنيمت په زغرو كښې كومه زغره خوښه وي نوبيا به ئې قبول كړم ما او وئيل زه نن اس هم نه شم قبلولې نبي ﷺ او فرمائيل ماته هم ددې ضرورت نشته.

شرح الحديث

ذی الجوشن رضي الله عنه د خپل اسلام قبلولو نه مخکښې واقعہ بیانوی چه زه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم د هغه د جنگ بدر نه فارغ کیدو نه پس د خپلې اسپې د یو بچی سره چه د هغې اسپې نوم قرحاء وو (فرس اقرح فی جبهته بیاض بقدر درهم، المؤنث قرحاء) او ما رسول الله ﷺ ته د هغه نوم اخستلو سره عرض اوکړو چه ما تاسو ته ابن القرحاء راوستلې دې چه تاسو دا خان سره اوساتئ او قبول ئې کړئ، رسول الله ﷺ او فرمائیل ماته د دې ضرورت نشته (یعنی مفت بغیر د پیسو نه) پس که ته غواړې چه زه تاته د بدر د زغرو نه یوه غوره زغره درکړم او دا واخلم نو زه داسې کولې شم، په دې باندې ما اووې چه (که بدل والا خبره کوي) نو بیا زه دا (د دې اسپې بچې) د یو غلام په بدله کښې هم تاته نه شم درکولې، رسول الله ﷺ او فرمائیل بیا ماته د دې ضرورت نشته.

﴿وان شئت ان اقبضک به﴾ دا لفظ په نسخه هنديه کښې په الف سره ليکلې شوې ده، په ظاهره کښې دا لفظ د همزه په فتحې سره دې، فاض يفيض نه. د دې معنی د عوض ورکولو ده.

۱: تهرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۵۴۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۸۴/۳) (ضعيف)

باب فی الإقامة بأرض الشرك

د مشرکانو په علاقه کښې داوسیدو بیان

یعنی په دار الحرب کښې د اقامة حکم، مقصود منع بیانول دی.

[۲۷۸۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دَاوُدَ بْنِ سَفْيَانَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ مُوسَى أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سَعْدِ بْنِ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ، حَدَّثَنِي خَبِيبُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِيهِ سُلَيْمَانَ بْنِ سَمُرَةَ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ، أَمَّا بَعْدُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ جَامَعَ الْمُشْرِكَ، وَسَكَنَ مَعَهُ فَإِنَّهُ مِثْلُهُ".

د سمره بن جندب رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی څوک چې د کوم مشرک سره تعلق وساتي او دهغه په ملګرتیا کښې پاتې شي نو دا کس هم د مشرک په شان دي.
دا روایت د سمره بن جندب د احادیث سته نه دي، کوم چې په ابوداؤد کښې دي، سپږم یعنی اخري حدیث دي، رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی چې کوم مسلمان د مشرک سره یوځای او سپږی نو پوهه شی چې هم د هغه په شان دي.

شرح الحديث

د دي حدیث په شرح کښې درې احتمالات دي. ۱: من جامع المشرك ای فی دار واحدة، یعنی خاص په یو کور کښې دواړه اوسپږی مسلمان هم او مشرک هم. ۲: او بلد واحد، یعنی په یو ښهر کښې مسلمان هم اوسپږی او مشرک هم، په دي دویم مطلب کښې اولنې صورت او اولنې مطلب په طریق اولی داخل دي، خو د دي عکس نه. ۳: المراد الاشتراك معه فی الرسوم والعادات والزی والهیئة، یعنی کوم مسلمان چې د مشرکانو ملګرتیا کوی د هغوی په رسمونو او عادتونو کښې او هم دغه شان په شکل او صورت او هیئت کښې د هغوی وضع اختیار کړی نو بیا هم مشرک دي.

دا حدیث اول او ثانی د معنی په لحاظ سره خو د زجر او توبیخ د قبیل نه دي، او د دریمې معنی په اعتبار سره تقریبا په خپل ظاهر باندې دي، په دي حدیث کښې د دي د بعض معانی په اعتبار سره د هجرت طرف ته اشاره ده، د کتاب الجهاد ابتداء هم د باب الهجرة نه ده، فهذا من حسن الاختتام، والله ولی المرام، وبیده حسن الخاتمة علی الايمان.

اخر کتاب الجهاد

وهذا اخر الجزء الرابع من "الدر المنضود علی سنن ابی داؤد" وقد تم تسويد هذا الجزء فی المدينة المنورة علی صاحبها الف الف صلاة وتحية وقد اعانني فی تسويد هذا الجزء العزيز المحتوم المولوی حبيب الله الجمبارني ثم المدني المظاهري تحريرا واملاء وفي جمع المواد من شروح الحديث وكتب الفقه للائمة الاربعة وغيرهما من كتب الرجال والسير والتاريخ بجهد بليغ واستعداد تام، فجزاه الله تعالى خيرا ورزقني واياه لما يحبه ويرضاه.

۹ محرم الحرام ۱۴۲۲ هـ

محمد عاقل عفا الله عنه

۱: تفرد به أبو داؤد، (تحفة الأشراف: ۴۶۲۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للسير ۴۲ (۱۶۰۵) (حسن لغيره) (المستدرک

۱۴۱/۱-۱۴۲) (ملاحظة: الصحيحة: ۲۳۳۰)

مکتوب گرامی

مکرم و محترم مولانا برهان الدین صاحب سنبهلی زید مجدهم
صدر شعبه تفسیر، و استاذ الحدیث، و ناظم تحقیقات شرعیه دار العلوم ندوة العلماء لکهنؤ
مولانا محمد عاقل صاحب دامت برکاتکم و مدت فیوضکم

السلام علیکم ورحمة الله وبرکاته!

طبیعت مو څنگه دې؟ الله دې او کړې چه د هر طرف نه په خیر سره وی.
یو هفته او شوه چه د محترم قیمتی علمی تحفه. (الدر المنضود څلورم جلد) ملاؤ
شوه. تاسو چه کومه درجه په هغې کښې محنت او خوله بیولې ده د دې اندازه اصل کښې
هم هغه انسان لگولې شی چا چه دې د دې کوڅې سیل کړې وی، راقم هم چونکه د دې
کوڅې ورک شوې لاروې دې (یا پاتې شوې دې) په دې وجه د دې په قدر او قیمت پیژندلو
کښې ورته څه مشکلات نه وو. بعض ځایونو کښې خو د قابو نه بهر ﴿ سبحان الله، الحمد لله
او لله دره ﴾ په شان دعائیه او تعریفی کلماتو صحیح محل معلوم شو. د الله پاک نه سوال
دې چه دا فیض مسلسل جاری وی.

د ﴿ قال ابوداؤد ﴾ کلام په سنبالولو کښې چه تاسو کوم د ژور نظر او بیدار دماغو
ثبوت ورکړې دې هغه په حقیقت کښې د کتاب د قدر او قیمت په تعین کښې معین وی او
قاری ته د ذهن سکون ورکوی. گینې په نورو اړخونو باندې خو نورو خلقو هم د تعریف نه
ډک کار کړې دې. په رومبی جلد کښې د مستحاضه په بحث (د هغې اقسامو او احکامو)
کښې چه کوم وضاحت کړې شوې دې هغه ډیر زیات مفید دې. هم په دې بحث کښې د انواع
مستحاضه بیان نمبروار ډیر زیات آسان دې.

د الله پاک نه دعا ده چه هغه دا کار مکمل کړی چه اهل علم (خاص طور سره
مدرسینو) ته زیاته آسانی ملاؤ شی. دې وخت کښې خو د څلورم جلد د وصول کولو په
اطلاع او د هغې شکریه ادا کول مقصود دی، په کتاب باندې د رائي اظهار نه، د خیر په
دعاگانو کښې د یاد ساتلو خصوصی درخواست دې. والسلام

محمد برهان الدین ۱۷/۶/۲۳هـ

احقر

اول كتاب الضحایا

د قربانی د احکامو بیان

دلته نسخې مختلف دی، په یوه نسخه کښې د ضحایا په ځانې "الاضاحی" دې. امام
بخاری رحمه الله هم د "الاضاحی" لفظ اختیار کړې دې زمونږ په نسخه کښې هم د دې سرڅی نه
پس حدیث شروع کیږی، وفي بعض النسخ كما في حاشية البذل د "باب ما جاء في ايجاب
الاضاحی" زیادت دې.

مباحث سته مفیده:

دلته څو امور قابل ذکر دی:

۲. اضحیه لغة او شرعا

۱. د دې کتاب د ما قبل سره مناسبت

۳: اختلاف د هغوی په حکم د دې کښې
 ۴: په ایام اضحیه کښې اختلاف
 ۵: د ذبح د وخت ابتداء
 ۶: د مشروعیه اضحیه ابتداء.

بحث اول: (ما قبل سره مناسبت)

ددې کتاب مناسبت د کتاب الجهاد سره ښکاره دې چه په جهاد کښې د خپل نفس او مال دواړو انفاق او قربانی وی او په اضحیه کښې مال خرج کولو سره د حیوان قربانی وی. دلته د دې نه پس کتاب الصيد راځی. په بخاری کښې د دې برعکس کتاب الصيد والذبائح د کتاب الاضاحی نه مخکښې دې.

بحث ثانی: (د اضحیه لغوی تحقیق)

په بذل المجهود کښې په دې کښې څلور لغات لیکلې دي. (۱) اضحیه (بضم الهمزة) اضحیه (بکسر الهمزة) د دې جمع اضاحی ده لکه د امنیه جمع چه امانی ده، ضحیه (بالکسر) د دې جمع ضحایا راځی (کعطية وعطایا) اضحاة د دې جمع اضحی ده لکه د ارطاة جمع چه ارطی ده. اه

(وفي الدرر المختار: الاضحية لغة اسم لما يذبح ايام الاضحى، من تسمية الشيء باسم وقته آه وقال الكرمانى وهى ما يذبح يوم العيد تقربا الى الله تعالى، وسميت بذلك لانها تفعل بالضحى آه (الحل المفهم ص ۲)

د اضحیه مشروعیت د کتاب او سنت او اجماع درې واړو نه دې، اما کتاب فقوله تعالى (فصل لربک وانحر) قال بعض اهل التفسير: المراد به الاضحية بعد صلاة العيد، واما السنة فما روى عن انس رضي الله عنه انه صلى الله عليه وسلم ضحى بكبشين املحين الحديث متفق عليه. واجمع المسلمون على مشروعيتها (اوجز عن المغنى)

بحث ثالث: (د قربانی شرعی حکم)

د اضحیه په حکم د وجوب او د سنتیت په اعتبار سره اختلاف دې، د اکثر علماء کرامو په نزد چه په هغې کښې ائمه ثلاثه هم دی دا سنت موکده ده. د امام مالک رضي الله عنه مشهور قول هم دا دې (۲) او په یو روایت کښې د احنافو او امام مالک په نزد قربانی واجب ده، وحکی العینی عن الهدایة الاضحیه واجبة علی کل مسلم حر مقيم موسرا اما الوجوب فقول ابی حنیفة ومحمد واحدی الروایتین عن ابی یوسف، وعنه انها سنة، علامه عینی فرمائی چه امام طحاوی رحمته الله د دې وجوب د امام ابوحنیفه رحمته الله قول گرزولې دې. او د صاحبینو قول دې چه دا سنت

(۱) وفي الاوجز ۲۱۴/۴ عن ابن عابدين فيه ثمان لغات: الاضحية بضم الهمزة وكسرها مع تشديد الياء وتخفيفها وضحية بلا همز بفتح الضاد وكسرها واضحاة بفتح الهمزة وكسرها آه)

(۲) پاتې شوه ده چه موکده علي الكفاية ده يا علي العین نو د مالکیانو په نزد خو تصریح ده د سنت موکده لعینه ففي حاشية الشرح الصغير للدردير ۶۴۹/۱ قوله سن وتاكد عينا اي علي المشهور وقيل انها واجبة، وقله عينا اي علي كل واحد بعينه ممن استوفى الشروط الاتية آه او په کتابونو د شوافعو کښې ئې دا سنت علی الكفاية لیکلې ده ففي الشرح الاقناع.... والتضحية سنة موکدة في حقنا علي الكفاية ان تعدد اهل البيت فاذا فعلها واحد من اهل البيت كفي عن الجميع والافسنة عين آه وقال الحافظ في الفتح ۱۰/۵ وهي عند الشافعية والجمهور سنة موکدة علي الكفاية. آه)

موکده دې. دلیل د وجوب په ابن ماجه کښې روایت دې من حدیث ابی هریره رضی الله عنه مرفوعاً ﴿من كانت له سعة ولم يضح فلا يقربن مصلانا﴾
قال العینی واخرجه الحاكم وقال صحيح الاسناد آه وبسط الشيخ فی البذل..... فی مستدلات الحنفية فارجع اليه من الاوجز.

انواع اضحية:

په بذل کښې لیکلې دی چه د اضحية دوه قسمونه دی، واجب او تطوع، بیا د واجب خو قسمونه دی، یو هغه چه د هغې وجوب په غنی او فقیر دواړو باندې وی، لکه د نذر قربانی او د دې وجوب مطلقاً دې ځکه چه دا وجب د نذر د وجې نه دې چه په هغې کښې غنی او فقیر دواړه برابر دی، او یو قسم هغه دې چه واجب وی په فقیر باندې نه په غنی باندې لکه هغه څاروې کوم لره چه فقیر انسان د قربانی په نیت باندې واخلي ځکه چه هغه ځناور د اخستلو په وجه باندې متعین شو پخلاف د غنی چه که هغه یو څاروې د قربانی په نیت باندې واخلي نو په هغه باندې به د شراء د وجې د هغې قربانی واجب نه وی د هغې په پریخودلو سره دویمه کولې شی، دریم قسم هغه دې چه ما يجب علی الغنی دون الفقیر او دا په هغه صورت کښې ده چه نذریا موندلې شی نه شراء آه.

د اضحية دپاره غنی شرط ده ک نه؟:

د دې نه پس پوهه شی چه د احنافو په نزد لکه چه پورته د هدایه نه تیره شوه د اضحية د وجوب دپاره غنی شرط ده او د جمهورو په نزد اگر چه قربانی خو سنت موکده ده واجب نه ده اوس د دې تاکد د سنیت دپاره غنی شرط ده که نه؟ نو په کتابونو د مالکیانو کښې غنی شرط کړې شوې ده او د هغوی په نزد چه کوم سرې د قوت عام مالک نه وی د هغه په حق کښې سنت نه ده، او په کتب شافعیه کښې تصریح ده چه د دې دپاره غنی شرط نه ده بس مستطیع کیدل کافی دی. په مسافر باندې اضحية شته او که نه؟ په دې باندې مستقل کلام په باب فی المسافر یضحی د لاندې را روان دې.

فانده: د باب آخری حدیث: ﴿ولکن تاخذ من شعرک واطفارك الخ﴾ د لاندې په بذل المجهود کښې لیکلې دی: ثم ظاهر الحدیث وجوب الاضحية الا علی العاجز ولذا قال جمع من السلف تجب علی المعسر وبویده حدیث ﴿یا رسول الله ﷺ استدین واضحی قال نعم فانه دین﴾ مقضی الی آخر مافی البذل. یعنی د بعض علماء کرامو په نزد په غریب باندې هم قربانی واجب ده ځکه چه په حدیث کښې دی چه د یو سائل په سوال باندې رسول الله ﷺ اوفرمائیل او قرض اخستلو سره هم قربانی کوئ ځکه چه دا قرض به ادا شی. یا مطلب دا چه قربانی په انسان باندې یو قسم دین او واجب ده.

بحث رابع: د اضحیه د ورځو تعیین او تعداد:

د ایام اضحیه تعیین او تعداد کښې کافی اختلاف دې کوم لره چه شیخ رحمته الله علیه په اوجز المسالک ۳/۵۰۳ کښې لیکلې دې، د دې په آخر کښې شیخ صاحب لیکي: ﴿والجملة ان فی

تعيين ايام الاضحية سبعة مذاهب الاول يوم النحر فقط وهو مذهب داؤد وابن سيرين. الثاني ثلاثة ايام وهو مذهب الائمة الثلاثة وغيرهم. الثالث اربعة ايام وهو مذهب الشافى رحمه الله وغيره. الرابع يوم النحر وستة ايام بعد وهو قول قتادة. الخامس عشرة ايام حكاه ابن التين السادس الى آخر ذى الحجة وهو مذهب ابن حزم (لرواية ابى سلمة بن عبدالرحمن وسليمان بن يسار قالا بلغنا ان رسول الله ﷺ قال الاضحى الى هلال المحرم لمن استاذن بذلك (كذا فى المحلى) السابع يوم فى الامصار وثلاثة فى منى وهو قول سعيد بن جبير وجابر بن زيد، الى آخر ما فى الاوجز او په متن د (ابو شجاع ۲۴۳) كښې دى ووقت الذبح من وقت صلاة العيد الى غروب الشمس من آخر ايام التشريق او د هغې په حاشيه كښې دى يعنى يولسمه او دولسمه او ديارلسمه ذوالحجة روى ابن حبان عن جبير بن مطعم رضى الله عنه قال قال رسول الله ﷺ ﴿ وكل ايام التشريق ذبح ﴾ اى وقت للذبح اهـ. د دې تفصيل نه معلومه شوه چه د ائمه ثلاثه په نزد ايام اضحيه درې دى او د شوافعو په نزد څلور دى د لسمې ذوالحجې نه واخله تر د ديارلسمې د ماښام پورې.

بحث خامس: (د ذبح د وخت ابتداء)

د ذبح د وخت ابتداء د كله نه ده نو په دې باندي علماء كرامو متفق دى ان الذبح قبل صلاة العيد لا يجوز، او په دې كښې اختلاف دې چه د امام د قربانئ نه مخكښې د نورو خلقو قربانئ جائز ده يا نه؟ د جمهور علماء كرامو او ائمه ثلاثه په نزد جائز ده. د امام مالك په نزد د امام د ذبح نه مخكښې د چا دپاره ذبح كول جائز نه دى. او د هغوى د اختلاف سبب په دې باب كښې د راغلي مختلفو آثارو (روايتونو) دې. وذلك انه جاء فى بعضها انه صلى الله تعالى عليه وسلم امر لمن ذبح قبل الصلوة ان يعيد الذبح وفى بعضها انه امر لمن ذبح قبل ذبحه ان يعيد اخرجه مسلم الى آخر ما فى الاوجز، په دې كښې نور تفصيل باب ما يجوز فى الضحايا من السن په آخر كښې را روان دې.

بحث سادس: (قربانئ د كله نه مشروع شوه؟)

د قربانئ د مشروعيت ابتداء په قرآن كريم كښې ذكر شوې ده پس ارشاد دې ﴿ فلما بلغه السمعى قال يا بنى الى ارى فى المنام الى اذبحك فانظر ماذا ترى الاية ﴾ د ابراهيم عليه السلام چه ترڅو پورې اولاد نه وو شوې نو هغه الله پاک ته دعا او كړه چه ﴿ رب هب لى من لدنك من الصالحين فبشرناه بغلام حليم ﴾ د دې نه پس پورته آيت كريمه ذكر شوې دې چه كله ئې هغه خوئې (اسماعيل عليه السلام) داسې عمر ته اورسيده چه د خپل پلار سره په گرځيدو شو نو بعض مفسرينو ليكلې دى چه هغه وخت د هغوى عمر ديارلس كاله شوې وو نو ابراهيم عليه السلام دې خوئې ته او فرمائيل بچوريه زه په خوب كښې گورم چه زه تا ذبح كوم پس ته هم سوچ او كړه چه ستا څه راتې ده په دې باندي هغوى عرض او كړو چه ﴿ يا ابت افعل ما تومر ﴾ اى باباجانه د كومې خبرې چه تاسو ته حكم شوې دې هغه پوره كړئ الى آخر القصة چه په هغې كښې دا دى چه كله ابراهيم عليه السلام چاره راخكله نو د بار بار راخكلو باوجود مړئ نه پرې كيده ﴿ وناديتاه ان يا ابراهيم قد صدقت الرؤيا الاية ﴾ په روايت كښې دى چه ابراهيم عليه السلام دې آسمانئ آواز اوريدو سره پورته اوكتل نو

جبرائیل عليه السلام د یو کله سره ولاړ وو، دا جنتی کله ابراهیم عليه السلام ته ورکړې شو او هغه د الله پاک په حکم باندې د خپل خوی په ځانې هغه قربانی کړو. (معرف القرآن ملخصاً)

دا مضمون په سنن ابن ماجه او د مسند احمد په روایت کښې داسې ذکر شوي دي

عن زيد بن ارقم قال قال اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ما هذه الاضاحي يا رسول الله صلى الله عليه وسلم؟ قال سنة ابيكم ابراهيم عليه السلام قالوا فما لنا فيها يا رسول الله؟ قال بكل شعرة حسنة الحديث د رسول الله صلى الله عليه وسلم هم دا ارشاد دي چه دا اضحية د ابراهيم عليه السلام سنت دي د دي شروع د هغه ځانې نه شوي ده.

باب مَا جَاءَ فِي إِيجَابِ الْأَضَاحِي

د قربانی د وجوب بیان

[۲۷۸۸] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، حَدَّثَنَا يَشْرٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَوْنٍ، عَنْ عَامِرِ أَبِي رَمْلَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلِيمٍ، قَالَ: وَنَحْنُ وَقُوفٌ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَفَاتٍ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ عَلَى كُلِّ أَهْلِ بَيْتٍ فِي كُلِّ عَامٍ أَضْحِيَّةً وَعَتِيرَةً، أَتَدْرُونَ مَا الْعَتِيرَةُ هَذِهِ الَّتِي يَقُولُ النَّاسُ الرَّجْبِيَّةُ؟ قَالَ أَبُو دَاوُدَ: الْعَتِيرَةُ مَنْسُوخَةٌ هَذَا أَخْبَرَهُ مَنْسُوخٌ.

د مخنف بن سليم نه روایت دي دي وائی او مونږ د نبی صلى الله عليه وسلم سره په عرفات کښې ولاړ وو هغه او فرمائیل اي خلغو يقينا په هر کور والاباندې په هر کال کښې يو ځل قرباني کول واجب دي او عتيره هم اوتاسو ته پته شته چه عتيره څه شي دي دا هغه شي دي کوم ته چه خلق رجيته وائی ابوداود وائی عتيره منسوخ شوي ده اودا خبر هم منسوخ دي.

﴿ انبانا مخنف بن سليم قال ونحن وقوف مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بعرفات قال يا ايها الناس ان على اهل كل بيت في كل عام اضحية وعتيرة الخ ﴾

مخنف بن سليم صحابي رضي الله عنه فرمائی چه کوم وخت مونږ د رسول الله صلى الله عليه وسلم سره په عرفات کښې وقوف کونکی وو نو هغوی او فرمائیل اي خلغوا په هر کور والا باندې او د هغوی په ذمه اضحیه او عتيره ده، او بياني او فرمائي تاسو ته پته شته چه عتيره څه څيز دي؟ عتيره هم هغه ده چه هغې ته خلق رجيته وائی.

د قربانی د وجوب دليل:

احنافو د دي حديث نه د قربانی په وجوب باندې استدلال کړې دي ځکه چه لفظ 'على' د الزام او وجوب دپاره راځي، او دويم څيز کوم چه په دي حديث کښې ذکر شوي دي يعنی عتيره هغه د جمهورو په نزد د نورو احاديثو په وجه منسوخ ده لهذا د قربانی وجوب باقی پاتې شو، د عتيره تفسير لکه چه څنگه پخپله په دي حديث کښې ذکر شوي دي دا د هغه ذبيحي او قربانی نوم دي چه د اسلام په شروع کښې د رجب په عشره اولی کښې کيدله، په دي وجه دي ته رجيته هم وائی.

دلته يو دريم څيز بل دي کوم چه په احاديثو کښې راغلي دي يعنی فرع، د دي ذکر

۱: سنن الترمذي للأضاحي ۱۹ (۱۵۱۸)، سنن النسائي للفرع والعتيرة ۱ (۴۲۲۹)، سنن ابن ماجه للأضاحي ۲ (۳۱۲۵)، (نقطة الأشراف: ۱۱۲۴۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۵/۴، ۷۷۵) (حسن)

د کتاب الاضحیة په آخر کښې آخری باب باب فی العتیرة کښې را روان دې لهذا په دې دواړو باندې کلام انشاء الله هم په هغه ځانې کښې راشی. والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

[۲۷۸۹] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ عَبَّاسِ الْقَتَبَانِيُّ، عَنْ عَيْسَى بْنِ هَلَالِ الصَّدْفِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "أَمِرْتُ بِيَوْمِ الْأَضْحَى عِيدًا جَعَلَهُ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ، قَالَ الرَّجُلُ: أَرَأَيْتَ إِنْ لَمْ أَجِدْ إِلَّا الْأَضْحَى أَنْتَى، أَفَأَضْحَى بِهَا قَالَ: لَا، وَلَكِنْ تَأْخُذُ مِنْ شَعْرِكَ وَأَطْفَارِكَ وَتَقْصُ شَارِبِكَ، وَتَحْلِقُ عَائَتَكَ، فَتِلْكَ تَمَامُ أَضْحَيْتِكَ عِنْدَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ."

د عبداللہ بن عمرو بن العاص نه روایت دې چه نبی ﷺ فرمائیلی دی حکم شوې دې ماته داختر کولو په ورځ د قربانۍ باندې (۱۰ اذی الحجہ) کومه چه الله تعالی ددې امت دپاره اختر گرځولې ده، چا عرض او کړو چه ای دالله رسوله که چرې زما سره د سوالي (امانت) اوبښه یا چیلې وی اونور څه نه وی نوایا زه په دې قربانې او کړم؟ نبی ﷺ او فرمائیل نه بلکه ته خپل وینسته کم کړه اونوکان پرې کړه اوبریت برابر کړه داستادپاره قربانې ده دالله تعالی په نزد.

عن عبدالله بن عمرو بن العاص رضى الله عنهما ان النبي صلى الله عليه وسلم قال : امرت بيوم الاضحى عيدا جعله الله لهذه الامة الخ

شرح الحديث:

رسول الله ﷺ فرمائی چه ماته د دې خبرې حکم شوې دې چه زه يوم الاضحی لره د اختر ورځ جوړه کړم، ځکه چه الله پاک دې ورځې لره زما د امت دپاره د اختر ورځ مقرر کړې ده (او چونکه د دې ورځې په احکاماتو کښې یو حکم شرعی قربانئ هم ده په دې وجه سائل د رسول الله ﷺ نه هغه سوال او کړو کوم چه دلته په حدیث کښې ذکر شوې دې هغه دا دې، یو صحابی عرض او کړو چه که ماسره د منیحه نه علاوه بل څه نه وی نوایا زه هم د دې قربانې او کړم؟ نو رسول الله ﷺ او فرمائیل بلکه ته داسې او کړه چه په دې ورځ کښې خپل وینسته اونو کونه او خپل بریت واره کړه او د نامه نه لاندې وینسته او خرایه، ستا پوره قربانې د الله پاک په نزد هم دغه ده.

رسول الله ﷺ گویا دا ټول امور د هغه په حق کښې د قربانئ بدل او گزولو.

د منیحه اطلاق په هغه پئ ورکونکې اوبښه یا بیزې باندې کیږی چه هغې لره د هغې مالک یو ضرورت مند انسان ته د څه مودې دپاره ورکړی چه هغه د هغې پیو نه په دغه موده کښې فائده او چته کړی او بیا هغه څاروې خپل مالک ته واپس کړی، رسول الله ﷺ هغه صحابی لره د هغه منیحه د قربانئ نه منع کړو، یا خو په دې وجه چه دا د هغه د ضرورت څیز وو او هغه سره دهغې نه علاوه بل دپیو ورکولو څاروې نه وو (كذا فی البذل).

او یانې په دې وجه منع کړو لکه چه پورته ذکر شو چه د منیحه انسان پخپله مالک نه وی. هغه د بل څیز وی کوم چه به بیا واپس کولې شی. والحديث اخرجه النسائی قال المنذری.

۱. سنن النسائی الاضحایا ۱ (۴۳۷۰)، (تحفة الأشراف: ۸۹۰۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۶۹/۲) (حسن)

بَاب الْأُضْحِيَّةِ عَنِ الْمَيِّتِ

دمری دطرف نه قربانی کول

[۲۷۹۰] () حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ أَبِي الْحُسَيْنِ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ حَنْشٍ قَالَ: رَأَيْتُ عَلِيًّا يُضْحِي بِكَبْشَيْنِ، فَقُلْتُ لَهُ: مَا هَذَا؟ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْصَانِي أَنْ أُضْحِيَ عَنْهُ فَأَنَا أُضْحِي عَنْهُ.

دحنش نه روایت دې فرمائی چه ماعلي عليه السلام اولیدو چه په دوه گډانوتې قربانی کوله ماورته او وئیل داخه دي؟ هغه او وئیل ماته نبی صلى الله عليه وسلم وصیت کړې وو ددې خبرې چه زه دي دهغه دطرف نه قربانی او کرم، نو دایوه قربانی زه دهغه دطرف نه کوم

﴿ عن حنش قال رايت عليا يضحي بكبشين فقلت له ما هذا الخ ﴾

حنش وائی چه ما علی عليه السلام اولیدو چه هغوی همیشه دوه گډان قربانی کوی نو ما دې په باره کښې د هغوی نه تپوس او کړو چه تاسو دوه څاروی ولې قربانی کوی؟ هغوی او فرمائیل: ځکه چه ما ته رسول الله صلى الله عليه وسلم وصیت کړې دې چه زه د هغوی د طرف نه قربانی او کرم، لهذا یو قربانی زه د خپل طرف نه کوم او دویمه د رسول الله صلى الله عليه وسلم د طرف نه.

دا روایت په ترمذی کښې هم دې او د دې په اخیر کښې دا زیادت دې، ﴿ فلا ادعه ابدا ﴾ چه زه دا پریرېدم نه بلکه همیشه به داسې کوم.

مسئلة الباب کښې مذاهب ائمة:

امام ترمذی فرمائی د بعض اهل علم په نزد د مری د طرف نه قربانی کول جائز دی او بعض دې لره جائز نه گنړی او بیا ئې د عبد الله بن مبارک مسلک دا نقل کړې دې چه زما په نزد غوره دا ده چه د مری د طرف نه دې صدقه او کړې شی نه قربانی او که یو انسان د مری د طرف نه قربانی او کړی نو په هغې کښې دې خپله هیڅ نه خوری بلکه ټول دې صدقه کړی آه او جمهور وائی چه:

د رسول الله صلى الله عليه وسلم د خپل ټول امت د طرف نه قربانی کول ثابت دی چه په هغې کښې احياء او اموات ټول داخل دی، او دا هم ثابت نه ده چه رسول الله صلى الله عليه وسلم به چه کومه قربانی د امت د طرف نه کوله د هغې نه به ئې خپله څه نه خورل بلکه ټول به ئې صدقه کوله او د احنافو مسلک په دې کښې هغه دې کوم چه په الکوکب الدرې کښې ذکر دې فیه: قوله ولم ير بعضهم ان يضحي عنه، وهؤلاء حملوا هذا الحديث على الخصوصية، وعند ناله ان يضحي عن الميت غير انه ان كان بوصية من ليس له ان ياكل منه، وان لم يكن وصية منه حل له اكلها كما في اضحية نفسه من غير فضل آه..... والحديث اخرجه الترمذی، قال المنذری.

۱: سنن ترمذی للأضاحي ۳ (۱۴۹۵)، (تحفة الأشراف: ۱۰۰۷۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۷/۱، ۱۴۹، ۱۵۰) (ضعيف)

باب الرَّجُلُ يَأْخُذُ مِنْ شَعْرَةٍ فِي الْعَشْرِ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يُضَحِّيَ

بيان دهغه کس خوکه چه د قربانی اراده لري چه دذي الحجې په لسوړو کښې به ويښته نه کمه وي

[۲۷۹۱] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُسْلِمٍ اللَّيْثِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَمْرَسَلَمَةَ، تَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ كَانَ لَهُ ذَبْحٌ يَذْبَحُهُ فَإِذَا أَهْلَ هَلَالٍ ذِي الْحِجَّةِ فَلَا يَأْخُذَنَّ مِنْ شَعْرَةٍ وَلَا مِنْ أَطْفَارِهِ شَيْئًا حَتَّى يُضَحِّيَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: اِخْتَلَفُوا عَلَى مَالِكٍ، وَعَلَى مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو فِي عَمْرٍو فِي مُسْلِمٍ، قَالَ بَعْضُهُمْ: عَمْرُو أَكْثَرُهُمْ قَالَ: عَمْرُو، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ عَمْرُو بْنُ مُسْلِمِ بْنِ أَكِيْمَةَ اللَّيْثِيِّ الْجَنْدَعِيُّ.

دام المومنين ام سلمه رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائيلى دی چاچه قرباني نيولي وي دذبح کولو دپاره نوکله چه دذي الحجې مياشت راوخيزي نونه دې پرې کوي دخپلو ويښتو نه اونه دنوکانونه هيخ شی ترخوچه ئې قرباني نه وی کړي

(۱) قال رسول الله صلی الله علیه و آله من كان له ذبح يذبحه فاذا اهل هلال ذى الحجة فلا ياخذن من شعره الخ لفظ "ذبح" په کسري د ذال سره دې يعنى ذبيحه، هغه خاروي چه د هغه د ذبح کولو اراده ده لکه څنگه چه د الله پاک ارشاد دې (وفديناه بذبح عظيم) او کوم ذبح چه په فتحي سره دې هغه مصدر دې يعنى کوم انسان چه د قرباني اراده لري نو د هغه دپاره د يکم ذوالحجة نه تر د قرباني پورې ويخته خړول او نوکونه پرې کول نه دی پکار.

مسئلة الباب كښې مذاهب ائمة:

دا نهی ظاهر او د حنابله په نزد دا د تحريم دپاره ده، او د امام شافعي رضي الله عنه او مالک رضي الله عنه په نزد د کراهت دپاره ده. او د احناف په نزد خلاف اولی ده لکه په بذل المجهود کښې دی. امام ترمذی د دې حديث نه پس ليکی: والی هذا الحديث ذهب احمد واسحاق ورخص بعض اهل العلم كفى ذلك فقالوا لا باس ان ياخذ من شعره واطفاره وهو قول الشافعي واحتج بحديث عائشة رضی الله عنها (ان النبي صلی الله علیه و آله كان يبعث بالهدى من المدينة فلا يجتنب شيئا مما يجتنب من المحرم) آه... امام نووی رحمته الله په دې کښې د امام شافعي رضي الله عنه مسلک د کراهت تنزيهي ليکلي دي. غالباً د امام ترمذی مراد د لا باس نه هم دا دي يعنى جائز مع الكراهة د دې نه پس امام ترمذی رحمته الله د امام شافعي رضي الله عنه په دليل کښې د عائشي رضي الله عنها حديث پيش کړې دي، د هغې جواب په عرف الشذی کښې شاه صاحب رحمته الله دا ورکړې دي چه د رسول الله صلی الله علیه و آله بعث هدی غير ذی الحجة کښې کيدلو په دې وجه به هغوی د دې نه ځان نه ساتلو، او شاه صاحب دا هم فرمائي والعرض التشاكل بالحجاج يعنى په حديث الباب کښې چه د ويښتو لري کولو او د بريټو د وړولو چه کوم ممانعت دې په دې سره مقصود قرباني کونکې لره مشابهت اختيارول دی د حاجی محرم سره.

والحديث اخرجہ مسلم والترمذی والنسائي، وابن ماجه بمعناه قال المنذرى.

۱: صحيح مسلم للأصاحي ۲ (۱۹۷۷)، سنن الترمذی للأصاحي ۲۴ (۱۵۲۳)، سنن النسائي للضحايا ۱ (۴۳۶۶)، سنن ابن ماجه للأصاحي ۱۱ (۳۱۴۹)، تحفة الأشراف: (۱۸۱۵۲)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۸۹/۶، ۳۰۱، ۳۱۱)، سنن القرظي للأصاحي ۲ (۱۹۹۰) (حسن صحيح)

بَاب مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الضَّحَايَا

قربانی په کوم قسم څاروی باندي بهتره ده؟

[۲۷۹۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، أَخْبَرَنِي حَبِوَةُ، حَدَّثَنِي أَبُو صَخْرٍ، عَنْ ابْنِ قُسَيْبٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِكَبْشٍ أَقْرَنَ يَطَأُ فِي سَوَادٍ، وَيَنْظُرُ فِي سَوَادٍ، وَيَبْرُكُ فِي سَوَادٍ فَأَتَيْتَنِي بِهِ فَضَخِي بِهِ، فَقَالَ: يَا عَائِشَةُ هَلِي الْمُدِيَّةُ، ثُمَّ قَالَ: اسْحَبِي بِهَا بِحَجَرٍ فَفَعَلْتُ، فَأَخَذَهَا وَأَخَذَ الْكَبْشَ فَأَضْمَعَهُ وَذَبَحَهُ، وَقَالَ: بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنْ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَمِنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ، ثُمَّ فَضَخِي بِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دام المومنين عاشتته عليها نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دښکرونو والا گد اوغونښتو دکوم چه سترگي سينه او خيته او پښي توري وي وبې فرمائيل چاره په کانري تيره کړي او رائي وړي ماورته راوړو نبی صلی الله علیه و آله واخستو اوگي ئې په زمکه ځملولو او دذبح کولو قصد ئې اوکړو او دا دعائي او فرمائيله: «بسم الله اللهم تقبل من محمد وآل محمد ومن أمة محمد» دالله په نوم سره ذبح کوم، اي الله محمد دطرف نه اودهغه دال او اولاد او امة دطرف نه دا قبول کړي، او بياني صلی الله علیه و آله دغه کی قربانی کړو.

﴿ عن عائشة رضی الله عنها ان رسول الله صلی الله علیه و آله امر بکبش اقرن يطأ في سواد وينظر في سواد ﴾

شرح الحديث:

يعني رسول الله صلی الله علیه و آله د داسې ښکلی گد د قربانی حکم ورکړو چه په هغې کښې دا صفتونه موندلې کيږي چه د ښکرو والا وي، گرځيدونکي وي په تور والي کښې يعني د هغه خپې توري وي، او گوري په توروالي کښې يعني د هغه سترگي ښکلې توري وي، کيښي په تور والي کښې يعني د هغه خيته او ددې توري وي. بيا هغوی او فرمائيل اي عائشي! چاره راوړه او د هغې پلک په کانري باندي راځکلو سره تيره کړه، بيا هغوی هغه راځملولو او ذبح ئې کړو او د ذبح کولو په وخت ئې دا اوئيل ﴿ بسم الله اللهم تقبل من محمد وآل محمد ومن أمة محمد ﴾

د قربانی د څاروی د ذبح کولو په وخت دې هغه په گسه دده باندي ځملولې شي چه په هغې سره د هغه څاروی سر د ذبح کونکي طرف ته شي او هغه د هغه سر لره په گس طرف ته په زور سره په ښي لاس باندي په آسانئ سره ذبح کړي. قاله النووي وذكر اتفاق العلماء عليه او ددې شکل به دا وي چه د اضحية سر جنوب او خپلې شمال طرف ته کيځودلې شي او په گس طرف باندي ځملولې شي چه د څاروی استقبال قبلي طرف ته شي.

په دې حديث کښې دي چه رسول الله صلی الله علیه و آله د يو گد قربانی د خپل طرف نه او د خپل اهل بيت بلکه د ټول امت د طرف نه اوکړه، آيا د يو بيبي قربانی د ټولو خلقو د طرف نه کيدې شي، د دې مسئلې دپاره وړاندي په کتاب کښې يو مستقل باب را روان دې باب في الشاة يضحى بها عن جماعة

۱: صحيح مسلم للأضاحي ۳ (۱۹۶۷)، (تحفة الأشراف: ۱۷۳۱۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۸۶) (حسن)

د قربانی په څاروی کښې شرکت او په هغې کښې د مذاهب ائمه تفصیل او تحقیق په دې کښې بعض علماء کرام لکه د امام مالک، احمد او اوزاعی رضی اللہ عنہم مسلک هم دا دې چه یو بیزه د پوره کور د طرف نه جائز ده اگر چه هغوی د اووه کسانو نه هم ډیر وی. او د دوه کورونو والو د طرف نه جائز نه دي اگر چه د هغوی تعداد د اووه نه کم وی، (کذا فی البدائع وغيره وسیجی تفصیل المذاهب) د احنافو د طرف نه د دې جواب داسې ورکړې شوي دي چه دا حدیث منسوخ دې د هغه حدیث په وجه باندي کوم چه په راروان "باب البقر عن کم تجزی" د لاندې راروان دې او یا دې دا اوئیلې چه دا د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خصوصیاتو کښې دې، او دریم تاویل دا کړې شوي دي چه په دې سره مقصود مشارکه فی الثواب دې نه د ټولو د طرف نه قربانی، والله تعالی اعلم. دا آخری توجیه زیاته غوره معلومیږي.

په موطاء امام مالک کښې "الشركة فی الضحایا" د عنوان د لاندې په اوجز څلورم جلد کښې شیخ صاحب رحمته اللہ علیہ د امامانو مذاهب داسې لیکلې دي د امام مالک مسلک ئې د علامه باجی مالکی نه نقل کړی دی چه د هغوی په نزد هدی واجب دې او په اضحیه کښې دا خبره جائز نه ده چه یو څاروي د قربانی د څاروی په قیمت کښې شریکیدو سره واخلی او د هغې قربانی او کړی که هغه بقره وی یا که بدنه، او په هدی د تطوع کښې د هغوی دوه اقوال دي، قول مشهور هم هغه دې چه په دې کښې هم اشتراک جائز نه دې چه د یو انسان دپاره د قربانی څاروي وی او هغه د هغه قربانی او کړی د خپل طرف نه او د خپل اهل و عیال د طرف نه اگر چه هغه د اووه نه زیات وی آه گویا د دې کلام حاصل دا شو چه د امام مالک رحمته اللہ علیہ په نزد د قربانی څاروي که غوا وی که اوبس وی او که گډ وی د هغې قربانی صرف د یو انسان د طرف نه کیدی شي، خو که خاص د خپل اهل بیت په دې کښې نیت او کړی نو هغه صحیح دې اگر که هغه اهل بیت د اووه نه زیات ولې نه وی، او د احنافو مسلک باجی دا بیان کړې دې چه د هغوی په نزد هدی او اضحیه هر دواړو کښې د اووه کسانو شرکت کیدی شي (ای فی البدنة والبقره) په دې شرط چه د ټولو شریکانو مقصود په دې ذبح سره قربت وی اگر چه د قربت وجود مختلف وی، لکه جزاء صید او فدیة اذی وغیره او که په دې شریکانو کښې د یو شریک مقصد قربت نه وی نو هغه قربانی به صحیح نه وی هغه فرمائی چه د امام شافعی رحمته اللہ علیہ په نزد په هر صورت کښې جائز ده (که د ټولو مقصود قربت وی او که نه وی) او د دې دواړو (احنافو او شوافعو) په دې خبره اتفاق دې چه د اووه نه د زیاتو شرکت جائز نه دې، فالخلاف بیننا و بینهم فی فصلین احدهما انه لا يجوز الاشتراک فی الرقبة عندنا ويجوز عندهم والثانی انه يجوز عندنا (۱) ان تنحر البدنة الواحدة عن اکثر من سبعة وعندهم لا يجوز ذلك آه علامه باجی د حنابله مسلک نقل نه کړو، ابن قدامه د هغوی مسلک په دې کښې د احنافو او شوافعو مطابق لیکلې دې یعنی دا چه په بدنه او بقره کښې د اووه کسانو شرکت کیدی شي، د قربت نیت کیدل د شوافعو په شان د هغوی په نزد هم ضروری نه دی او د مالکیانو

(۱) ای عند المالکیة لان القائل هو العلامة الباجی

په نزد خو چونکه نفس شرکت جائز نه دې په دې وجه هلته د اتحاد نیت او اختلاف نیت سوال هم نه پیدا کیږي، ابن قدامه فرمائي چه په بدنه او بقرة کښې د اووه شرکت مطلقا جائز دې برابره خبره ده که هغوی مشترک وي د يو کور نه او يا نه وي. بيا وړاندې ابن قدامه کفايه عن اهل بيت واحد په مسئله کښې ليکلي دي ولا باس ان يذبح الرجل عن اهل بيته شاة واحدة او بقرة او بدنة نص عليه احمد وه قال مالك والليث والاوزاعي آه

د دې نه پس تاسو خان په دې پوهه کړئ چه د شاة په باره کښې د شوافعو او حنابله او مالکيانو د درې وارو په کتب فروع کښې دا ملاويږي «انها تجزى عن الرجل وعن اهل بيته وان كانوا سبعة او اكثر» خود جائز کيدو مفهوم د هغوی په نزد دې چه اضحيه خوبه د ذابح د طرف نه گنرلې شي او د ثواب استحقاق به هم خاص د هغه دپاره وي خو چونکه د هغه حضراتو په نزد قرباني سنت على الكفاية ده په دې وجه د يو سړي قرباني کول به د ټول اهل بيت د طرف نه کافي شي د څه نه چه د هغوی په کتابونو کښې په سقوط الطلب سره تعبير کړې شوي دي يعنى د دې قرباني نه پس د کور والو نه د اضحيه شرعا مطالبه پاتې نه شوه. () او حديث الباب چه په هغې کښې دا دی چه رسول الله ﷺ د کبش واحد قرباني د خپل ټول امت د طرف نه اوکره دا هغوی په خصوصيت باندې محمول کړې دي د حصول ثواب للامة په حق کښې. والحديث اخرجه مسلم قاله المنذرى.

[۲۷۹۳] () حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وَهَيْبٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قَلَابَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحَرَ سَبْعَ بَدَنَاتٍ بِيَدِهِ قِيَامًا، وَضَعَى بِالْمَدِينَةِ بَكْبَشِينَ أَقْرَنِينَ أَمْلَحِينَ.

دانس نه روايت دې چه نبی ﷺ اووه اوښان په ولاړه په خپل لاس حلال کړي وو او په مدينه کښې ئې په دوه څړيو ښکرورو گډانو قرباني کړې وه.

﴿ نحر سبع بدنات بيده قياما وضعى بالمدينة بكبشين اقرنين املحين ﴾

شرح الحديث:

دا حديث د بخارى په كتاب الحج کښې "باب من نحر هديه بيده" هم په دې طريق سره هم داسې روايت دې په ظاهر کښې د نحر بدن واقعه د مکې مکرمې ده، او د کبشين املحين د قرباني واقعه لکه چه په روايت کښې تصريح ده د مدينې منورې ده، اوس به سوال دا وي چه په حج کښې خو رسول الله ﷺ لکه چه په رواياتو کښې تصريح ده د سلو هدايا نحر فرمائيلې وو د دې جواب كتاب الحج ته د رجوع کولو نه معلوميږي چه په دې کښې

۱، ففي شرح الاقناع من فروع الشافعية ۲۴۰ وتجزئ البدنة عن سبعة وكذا البقرة وتجزئ الشاة عن واحد فقط، فان ذبحها عنه وعن اهله او عنه واشرك غيره في ثوابها جاز آه وفي هامشه: والشاة عن واحد فقط فان قلت هذا مناف لما بعده حيث قال فان ذبحها عنه وعن اهله الخ اجيب بانه لا منافاة لان قوله عن واحد اي من حيث حصول التصحية حقيقة وما بعده الحاصل للغير انما هو سقوط الطلب عنه واما الثواب التصحية حقيقة فخاصان بالفاعل علي كل حال آه وفي الروض المربع ونيل المأرب من فروع الحنابلة: تجزئ الشاة عن واحد واهل بيته وعياله والبدنة والبقرة عن سبعة

۲، صحيح البخاري للحج ۲۴، (۱۵۴۷)، ۲۵، (۱۵۴۸)، ۲۷، (۱۵۵۱)، ۱۱۹، (۱۷۱۵)، الجهاد ۱۰۴، (۲۹۵۱)، ۱۲۶، (۲۹۸۶)، صحيح مسلم صلاة المسافرين ۱ (۶۹۰)، سنن النسائي للضحايا ۱۳ (۴۳۹۲)، وقد مضى هذا الحديث برقم (۱۷۹۶)، (تحفة الأشراف: ۹۴۷) (صحيح)

روایات مختلف دی د اووه اوسانو یو روایت پکښې هم دي، او د سبع د تخصیص یو وجه په کتاب الحج کښې دا تیره شوې ده یعنی په هغوی کښې هر یو رسول الله ﷺ ته نزدې کیده چه اوگوری په مونږ کښې د کوم یو نه شروع فرمائی. (کلهن یزدلفن الیه بایتهن ییدا) (۱) (املح) هغه خاروې چه د هغه د وینستو سپین والې د هغه په تور والی باندي غالب وی (بذل) وفي المرقات : الاملح افعل من الملحۃ وهی بیاض یخالطه السواد وعلیه اکثر اهل اللغة وقیل بیاضه اکثر من سواده، وقیل هو نقی البیاض آه (عون) فیه: دا حدیث پوره په صحیح بخاری کښې موجود دي کما تقدم فالعجب من الحافظ المنذری حیث قال اخرج البخاری قصة الكبشین فقط بنحوه.

[۲۷۹۴] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى بِكَبْشَيْنِ أَقْرَبَيْنِ أَمْلَحَيْنِ يَذْبَحُهُمَا وَيَضَعُ رِجْلَهُ عَلَى صَفْحَتَيْهِمَا.

دانس ^{رضي الله عنه} نه روایت دي چه نبی ﷺ په دوه خبرو بنکرورو گدانو قربانی کړې وه دذبح په وخت به ئې تکبیر وئیلو او بسم الله به ئې وئيله او په خټ به ئې ورله خپه ایښودلی وه.

[۲۷۹۵] (۲) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا عِيسَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي عَيَّاشٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: ذَبَحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الذَّبْحِ كَبْشَيْنِ أَقْرَبَيْنِ أَمْلَحَيْنِ مُوجَّابَيْنِ، فَلَمَّا وَجَّهَهُمَا قَالَ: "إِلَى وَجْهَتِي وَجْهِي لِذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلَى مِثْلِ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَبِذَلِكَ أَمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ وَعَنْ مُحَمَّدٍ وَأُمَّتِهِ بِاسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ"، ثُمَّ ذَبَحَ.

د جابر بن عبد الله ^{رضي الله عنه} نه روایت دي چه نبی ﷺ د قربانی په ورځ باندي دوه بنکرور خاربه خسی گدان ذبح کړل، هرکله چه ئې قبیلې ته مخامخ کړل وئې فرمائیل یقینا زه خپل مخ دهغه ذات طرف ته متوجه کوم چاچه زمکه او اسمانونه پیدا کړی دی اوزه په دین ابراهیمی باندي قائم یم اود مشرکانونه نه یم یقینا زمامونځ زما قربانی زما ټول عبادتونه زما ټول ژوند اوزما مرگ خالص دالله تعالی دپاره دي دهغه څوک شریک نشته دي اوماته په دي خبره باندي حکم شوي دي اي الله داقربانی ستا ورکړه ده اوداصرف ستادرضادپاره ده، د محمد دطرف نه اودهغه دامت دطرف نه دالله په نوم سره اوالله دهرڅه نه ډیر لوئې دي ددي کلماتو وئیلونه پس ئې ذبح کړل.

(۳) عن جابر بن عبد الله رضي الله عنهما قال ذبح النبي صلى الله عليه وسلم يوم الذبح كبشين اقرنين املحين موجوبين (وفي بعض النسخ موجبين، وفي بعضها موجبين يعني خصي) امام خطابي ^{رضي الله عنه} فرمائی په دي کښې دليل دي په دي خبره باندي چه د خصی قربانی

(۱) خو په ابوداؤد کښې دا حدیث د عبد الله بن قرط ^{رضي الله عنه} په روایت سره دي ولفظه وقرب لرسول الله ﷺ بدئات خمس اوست لطفقن یزدلفن الیه بایتهن ییدا الحدیث)

(۲) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۳۶۴) (صحیح)
(۳) سنن ابن ماجه للأضاحي ۱ (۳۱۲۱)، (تحفة الأشراف: ۳۱۶۶)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للأضاحي ۲۲ (۱۵۲۱)،

مسند احمد (۳۵۶۳، ۳۶۲، ۳۷۵)، سنن الدارمي للأضاحي ۱ (۱۹۸۹) (حسن)

مکروه نه ده او بعض اهل علمو د دې قربانی مکروه کړې ده (لنقص العضو) خو دا نقص عیب نه دې ځکه چه د خصاء په وجه باندي غوښه مزیداره کیږي او د هغې بدبوئی ختمیږي. او د دې نه روستو حدیث کښې چه د هغې راوی ابوسعید خدری رضی الله عنه دې په هغې کښې دی (بکبش اقرن فحیل) یعنی داسې کبش چه په جفتی کښې ډیر غوره وی، او د فحل اطلاق په مطلق نر باندي هم کیږي، په دواړو روایتونو کښې په ظاهره تعارض دې لکه چه ابن العربی داسې گنرلې ده هغه وائی په دې حدیث د ابوسعید رضی الله عنه سره د هغه روایت تردید کیږي چه په هغې کښې موجودین وارد شوې دې، حافظ فرمائی دا خبره نه ده بلکه په دې کښې احتمال د تعدد د واقعاتو دې یو ځل رسول الله صلی الله علیه و آله قربانی دخصی او کړه او یو ځل د غیر خصی. (تحفة الاخوذی)

حدیث جابر رضی الله عنه اخرجہ ابن ماجه و حدیث ابی سعید اخرجہ الترمذی والنسائی وابن

ماجة قاله المنذری

[۲۷۹۶] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، عَنْ جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُضْحِي بِكَبْشٍ أَقْرَنَ فَحِيلٍ يَنْظُرُ فِي سَوَادٍ، وَيَأْكُلُ فِي سَوَادٍ، وَيَمْشِي فِي سَوَادٍ.

د ابوسعید خدری رضی الله عنه نه روایت دې چه نبی صلی الله علیه و آله به په ښکرو والاګه باندي قربانی کوله کوم چه به توربخن ښکاریدو او په تور والی کښې به ئې خوراک کولو او په توروالی کښې به گرځیدو یعنی سترګې او پښې ئې توري وي.

بَاب مَا يَجُوزُ مِنَ السِّنِّ فِي الضَّحَايَا

د قربانی د څاروی دپاره څومره عمر ضروری دی؟

یعنی د کوم عمر د څاروی قربانی جائز ده.

[۲۷۹۷] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي شُعَيْبٍ الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مَعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَذْبَحُوا إِلَّا مَسْنَةً، إِلَّا أَنْ يَعْسَرَ عَلَيْكُمْ، فَتَذْبَحُوا جَذْعَةً مِنَ الضَّانِ".

د جابر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی په قربانی کښې صرف مسنه ذبح کوي که چرې مسنه نه ملاویږي نوبیا جزعه ذبح کړي.

(عن جابر رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه و آله لا تذبحوا الا مسنة الا ان يعسر عليكم فتذبحوا جذعة من الضان)

د مسنة مصداق سره د اختلاف د ائمه:

رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی چه قربانی دې صرف په مسنه سره او کړې شی او د هغې نه په کم دې

(۱) سنن الترمذی الاضاحی ۴ (۱۴۹۶)، سنن النسائی للضحایا ۱۳ (۴۳۹۵)، سنن ابن ماجه الاضاحی ۴ (۳۱۲۸)، تحفة الأشراف: (۴۲۹۷) (صحیح)

(۲) صحیح مسلم الاضاحی ۲ (۱۹۶۲)، سنن النسائی للضحایا ۱۲ (۴۳۸۳)، سنن ابن ماجه الاضاحی ۷ (۳۱۴۱)، تحفة الأشراف: (۲۷۱۵)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۱۲/۳، ۳۲۷) (صحیح)

نه شی کولې. په معنی د عمر والا چه هغه ته ثنی هم وئیلې شی، بیا په دې باندي ځان پوهول پکار دی چه مسنة د هر څاروی ځانله ځانله وی، پس مسنة الابل هغه دې چه د پنځو کالو کیدو سره په شپږم کال کښې داخل شی او مسنة البقر هغه دې چه د پوره دوه کالو کیدو سره په دریم کال کښې داخل شی او په غنم کښې که هغه گډه وی که بیزه هغه ده چه د پوره یو کال کیدو سره په دویم کال کښې داخل شی.

په دې باندي ځان پوهول پکار دی چه غنم جنس دې چه د هغې دوه قسمونه دی معز (بیزه یا چیلې) او ضان (گله ان) د دې نه پس په حدیث کښې دا دی چه که یو انسان ته مسنة حاصله نه شی نو هغه جذع من الضان کولې شی. جذع په لغت کښې هغه ته وئیلې شی چه پوره د یو کال وی او شرعا چه کم از کم د شپږو میاشتو وی ما تمت له ستة اشهر کذا فی الهدایة، او بعض علماء کرامو د دې تفسیر داسې لیکلې دې «ما اتی علیه اکثر الحول» یعنی چه په هغه باندي د کال اکثره حصه تیره شوې وی، په دې حدیث کښې د جذع سره د ضان قید دې هم په دې وجه جذع من المعز (د بیزې د شپږو میاشتو بچې) په ائمه اربعه کښې د چا په نزد هم جائز نه دې. امام نووی فرمائی جذع من الضان مطلقا د ټولو علماء کرامو په نزد جائز دې سواء وجد غیره ام لا په بذل المجهود کښې لیکي چه فقهاء په جذعه کښې دا شرط لگولې دې چه داسې تندرست او څورب وی چه هغه د پوره کال په گله انو کښې پریخودلې شی نو د هغوی سره ټې فرق محسوس نه شی.

دا څه چه مونږ د مسنة د مصداق په باره کښې اولیکل په دې کښې د احنافو او حنابله مسلک خو بعینه هم دا دې خو د شوافعو او مالکیانو په دې کښې په بعض کښې اختلاف دې، پس د شوافعو په نزد مسنة الغنم که هغه معز وی او که ضان هغه دې چه پوره د دوه کالو وی، او جذع من المعز والضان هغه دې چه د یو کال وی، او د مالکیانو په نزد په مسنة البقر کښې اختلاف دې د هغوی په نزد مسنة البقر هغه دې چه د درې کالو وی، پس د شوافعو اختلاف په غنم کښې او د مالکیانو په بقر کښې شو، او د دې نه دا هم معلومه شوه چه د جذع من الضان د کوم چه په حدیث کښې اجازت ورکړې شوې دې هغه د ائمه ثلاثه په نزد خو هغه دې چه د شپږو میاشتو وی یا داسې او ایه چه د یو کال نه کم وی، او د شوافعو په نزد هغه دې چه پوره د یو کال وی، په دې هم ځان پوهول پکار دی چه جذع من الضان چه د جمهور او څلورو امامانو په نزد جائز دې او په دې کښې د سیدنا عبدالله بن عمر رضی الله عنهما او امام زهري رحمته الله اختلاف دې هغوی دا جائز نه گنږي لکه چه په شروحو کښې دی (من الاوجز والبذل)

والحدیث اخرجه مسلم والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

[۲۷۹۸] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ صُدْرَانَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى بْنُ عَبْدِ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنِي عَمْرَةَ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ طَعْمَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيْبِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدِ الْجَهَنِيِّ، قَالَ: قَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَصْحَابِهِ ضَحَايَا فَأَعْطَانِي عَتُودًا جَدْعًا، فَرَجَعْتُ بِهِ إِلَيْهِ، فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّهُ جَدْعٌ، قَالَ: ضَعِرَ بِهِ، فَضَحَّيْتُ بِهِ.

دزید بن خالد جهنی رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم په صحابه کرامو باندې د قربانی څاروی تقسیم کړل او ماته ئې چیلی یو بچې کوم چه یو کلن وو رانې کړو مادغه بچې نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته واپس بوتلو او ورته مې او وئیل چه دا خو جزعه دې نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل په دې قربانی او کړه نوماذبح کړو او قربانی مې پرې او کړه.

﴿ عن زيد بن خالد الجهني رضی اللہ عنہ قال قسم رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم في اصحابه ضحايا فاعطاني عتودا جدعا ﴾
شرح الحديث:

يعني رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خپلو اصحابو کښې د قربانی څاروی تقسیم کړل، هغوی ماته هم د بيزې يو بچې را کړو. هغوی وائی چه ما هغه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته راوستلو او عرض مې او کړو چه يا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دا خو جدع یعنی ناقص العمر دې، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل ته د دې قربانی او کړه.

دا جدع که من المعزوی نو بیا خو به د دې صحابی خصوصیت وی او د بل چا دپاره به جائز نه وی، او که ﴿جدع من الضان﴾ وه نو بیا په خصوصیت باندې د حمل کولو ضرورت نشته. والحديث اخرجه البخاري ومسلم من رواية عقبة بن عامر الجهني رضى الله عنه، قاله المنذرى.

[۲۷۹۹] حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا الثَّوْرِيُّ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ كَلَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يُقَالُ لَهُ مُجَاشِعٌ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ فَعَزَّتِ الْغَنَمُ فَأَمَرَ مُنَادِيًا، فَنَادَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: "إِنَّ الْجَدْعَ يُوْفَى مِمَّا يُوْفَى مِنْهُ الثَّيْبُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ مُجَاشِعُ بْنُ مَسْعُودٍ.

اصم بن کلب د خپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه مونږه په صحابه کرامو کښې د یوکس سره وو چه مجاشع به ورته وئیلې شو د بنی سلیم قبیلې والا یو ځل گدان چیلی گران شول نو هغه اعلان کونکی ته دا اعلان کولو حکم او کړو چه دا اعلان او کړې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلې وو چه په کوم څانې کښې مسنه کافی وي نو هلته جزعه هم کافی ده ابو داود وائی دغه مجاشع بن مسعود وو.

﴿ عن عاصم بن كليب عن ابيه قال كنا مع رجل فعزت الغنم فامر مناديا ان رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم كان يقول ان الجدع يوفى مما يوفى منه الثيب ﴾

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۷۵۱)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للوكالة ۱ (۲۳۰۰)، والشركة ۱۲ (۲۵۰۰)، والأضاحي ۲، (۵۵۴۷) ۷ (۵۵۵۵)، صحيح مسلم للأضاحي ۲ (۱۹۶۵)، سنن الترمذي للأضاحي ۷ (۱۵۰۰)، سنن النسائي للأضاحي ۱۲ (۴۳۸۴)، سنن ابن ماجه للأضاحي ۷ (۳۱۳۸)، مسند احمد (۱۴۹/۴، ۱۵۲، ۱۹۴/۵)، سنن الدارمي للأضاحي ۴ (۱۹۹۶)، كلهم عن عقبة بن عامر رضى الله عنه (حسن صحيح)

۲: سنن النسائي للأضاحي ۱۲ (۴۳۸۹)، سنن ابن ماجه للأضاحي ۷ (۳۱۴۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۱۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۸/۵) (صحيح)

کلیب فرمائی چه مونږ د یو صحابی رضی الله عنه سره وو چه د هغه نوم مجاشع دي. یو کال داسې او شو چه د بیزو (چیلو) کمې پیدا شو یعنی د پوره عمر والو، نو هغه صحابی په یو سرې باندي دا اعلان او کړو چه رسول الله ﷺ به فرمائیل چه د گډ د شپږو میاشتو بچې هم هغه کار ورکوی چه د پوره عمر والا ورکوی. والحديث اخرجه ابن ماجه قال المنذرى.

[۲۸۰۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ النَّحْرِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَقَالَ: "مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا وَنَسَكَ نُسُكَنَا فَقَدْ أَصَابَ النُّسُكَ، وَمَنْ نَسَكَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَتِلْكَ شَاةٌ لِحِمِّ، فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ لَقَدْ نَسَكْتُ قَبْلَ أَنْ أُخْرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ، وَعَرَفْتُ أَنَّ الْيَوْمَ يَوْمُ أَكْلِ وَشُرْبٍ، فَتَعَجَّلْتُ فَأَكَلْتُ وَأَطْعَمْتُ أَهْلِي وَجِيرَانِي، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تِلْكَ شَاةٌ لِحِمِّ، فَقَالَ: إِنَّ عِنْدِي عَنَاقًا جَدَعَةً وَهِيَ خَيْرٌ مِنْ شَاتِي لِحِمِّ قَبْلَ تَجْزِئِ عَنِي، قَالَ: نَعَمْ وَلَكِنْ تَجْزِئُ عَنِّي أَحَدًا بَعْدَكَ".

دبراء بن عازب نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ مونږ ته دلوی اختر په ورځ باندي پس دمانځه نه خطبه راکړه او وئې فرمائیل څوک چه زمونږ د مونځ په شان مونځ او کړي او څوک چه زمونږ د قربانئ په شان قربانئ او کړي نو ده قربانئ او کړه (یعنی اجر به ورته ملاو شي او څوک چه دلوی اختر مونځ نه مخکښې قربانئ او کړي نو داصرف غوښه ده قربانئ نه ده نو په دي وخت کښې ابوبرده بن نیار پاخیدوار عرض ئې او کړو اي دالله رسوله په الله قسم ماخودلوی اختر دمونځ نه مخکښې قربانئ او کړه او مادا گنډل چه دا ورځ دخوراک څښاک ده نومادتوندي نه کار واخستو ما پخپله هم اوخورله او پخپلې ښځې اوبچو اوگاونډیانوي هم اوخوره، نبی ﷺ او فرمائیل داخوصرف دغوښې چیلې شو بیا ابوبرده عرض او کړو اي دالله رسوله زما سره یوجزعه چیلې موجود دي کوم چه دغوښې والا دوه چیلونه بهتر دي نوایاد قربانئ دپاره به دا کافی وي؟ نبی ﷺ او فرمائیل لیکن دغه چیلې ستانه علاوه به دبل چادپاره کافی نه وي (دا حکم صرف ستادپاره دي).

﴿ عن البراء رضي الله عنه قال خطبنا رسول الله ﷺ يوم النحر بعد الصلوة فقال من صلى صلاتنا ونسك نسكنا الخ ﴾

شرح الحديث:

یعنی یو ځل په لسم د ذوالحجة باندي رسول الله ﷺ د اختر د مانځه خطبه ورکړه چه په هغې کښې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه څوک زمونږ په شان اول د اختر مونځ ادا کړي او بیا زمونږ په شان قربانئ او کړي نو د هغه قربانئ خو صحیح ده او کوم انسان چه د اختر د مانځه نه مخکښې قربانئ او کړي نو د هغه دا ذبح کول به د غوښې دپاره وی نه د قربانئ په طور په دي باندي یو صحابی ابوبرده رضی الله عنه پاسیدو او عرض ئې او کړو یا رسول الله ﷺ ما د اختر د مانځه نه مخکښې قربانئ او کړه په دي باندي رسول الله ﷺ او فرمائیل دا گډ ستاد

۱: صحيح البخاري للعديد ۳ (۹۵۱)، ۵ (۹۵۵)، ۸ (۹۷۵)، ۱۰ (۹۶۸)، ۱۷ (۹۷۶)، ۲۳ (۹۸۳)، الأضاحي ۱ (۵۵۴۵) (۵۵۵۶)، ۸ (۵۵۵۷)، ۱۱ (۵۵۵۷)، ۱۲ (۵۵۶۳)، الأيمان والنذور ۱۵ (۶۶۷۳)، صحيح مسلم للأضاحي ۱ (۱۹۶۱)، سنن الترمذي للأضاحي ۱۲ (۱۵۰۸)، سنن النسائي للعديد ۸ (۱۵۶۴)، الضحايا ۱۶ (۴۴۰۰)، تحفة الأشراف: ۱۷۶۹، وقد أخرجه: مستد احمد (۴/۲۸۰، ۲۹۷، ۳۰۲، ۳۰۳)، سنن الدارمي للأضاحي ۷ (۲۰۰۵) (صحيح)

غوښې گډه دې په دې باندې هغوی عرض او کړو چه ما سره د بيزې يو بچې دې جذع چه د دوه چيلو د غوښو نه هم غوره دې. شراحو ليکلې دي چه مراد دا دې چه د خوراک کونکو په حق کښې د هغه غوښه ډيره عمده ده يا داسې بيان کړه چونکه رسول الله ﷺ هغه صحابي ته د تيرې قربانۍ په باره کښې دا فرمايېلي وو چه هغه قربانۍ نه ده بلکه شاة لحم دې او هم دې طرف ته اشاره کولو سره هغه صحابي ﷺ عرض او کړو چه ما سره يو بيزه ده چه اگر که وره ده خو زما د رومبۍ قربانۍ په غوښه او خورب والی کښې دوچند ده، نو آيا د هغې قربانۍ به زما دپاره کافي وي؟ رسول الله ﷺ او فرمائيل ستا دپاره به کافي شی او ستا نه علاوه به د بل چا دپاره کافي نه وي، په ظاهر کښې به دا جذع من المعزوی هم په دې وجه رسول الله ﷺ جواز لره د هغه سره مقيد کړو، په دې وجه دا جواز به د هغه صحابي ﷺ سره خاص وي، دا روايت په سنن ترمذی شريف کښې هم دې ولفظه: ﴿ قال (ای البراء) فقام خالی فقال يا رسول الله هذا يوم اللحم فيه مکروه وانی عجلت نسیکني ﴾ وفي اخره ﴿ يا رسول الله ﷺ عندي عناق لبن هي خير من شاتي لحم ﴾ د عناق لبن معنی شراح دا ليکلې ده، چه د بيزې هغه د پيو خکلو والا بچې چه لا تراوسه پورې ئې پي نه دی پريخودلې شوې، او په کوکب الدرې کښې دا دی: وئيلې شوې دی چه د عناق لبن نه مراد دا دې چه هغه د ډير ښه نسل د بيزې بچې دې چه ډير زيات پي ورکونکې ده او وئيلې شوې دی چه مراد دا دې چه ﴿ انها مرابة بلبن كثير ﴾ چه د هغه ښه په ډيرو پيو باندې ساتنه شوې ده چه ښه غوره او خورب شی. آه

د دې نه پس په دې باندې خان پوهه کړې چه د ترمذی په دې روايت کښې دی چه ﴿ هذا يوم اللحم فيه مکروه ﴾ د دې مطلب دا بيان کړې شوې دې چه نن ورځ يعنی د قربانۍ په ورځ د سحر په وخت کښې خو غوښه خوښولې شی او مرغوب وی او د ناوخته کيدو نه پس ناخوښه او غير مرغوب شی. په دې وجه ما داسې او کړل چه سحر وختی مې قربانۍ او کړه چه خلق دې لره په شوق او رغبت سره اوخری، هسې خو فی نفسه په دې کښې روايات مختلف دی، پس د مسلم په روايت کښې خو هم داسې دی، او په دويم روايت کښې دی ﴿ هذا يوم اللحم فيه مقروم ﴾ چه د هغې معنی ده خوښه، يقال قرمت الى اللحم، وقرمته اذا اشتهته په دې صورت کښې معنی د حديث ظاهره ده چه چونکه نن ورځ د خلقو رغبت او اشتها غوښې طرف ته ډيره وی په دې وجه ما خپله قربانۍ زر او کړه. والله تعالى اعلم.

د قربانۍ وخت کله شروع کېږي:

د دې حديث نه معلومه شوه چه د اختر د مانځه نه مخکښې قربانۍ کول صحيح نه دی هم په دې وجه په دې حديث باندې امام ترمذی باب ترلې دې، "باب ما جاء في الذبح بعد الصلوة" امام ترمذی دې حديث نه پس فرمائی ﴿ والعمل على هذا عند اهل العلم ان لا يضحى بالمصر حتى يصلى الامام وقد رخص قوم من اهل العلم لاهل القرى في الذبح اذا طلع الفجر وهو قول ابن المبارك ﴾ د احناف مسلک د قربانۍ په وخت کښې دا دې چه د قربانۍ وخت د لسمې ذوالحجې د صبح صادق نه شروع کېږي که اهل مصر وی يا اهل قريه خو د اهل مصر په حق

کښې د جواز دپاره شرط زیاتې دې هغه دا چه د اختر د مانځه نه پس ځانې په دې باندي تقدیم جائز نه دې کذا فی البدل عن البدائع، او د شوافعو او د حنابله مسلک په دې کښې د اهل قریه او مصر د وارو په حق کښې، دا دې چه د نمر د راختلو نه پس دومره وخت تیر شي چه په هغې کښې د اختر مونځ او خطبه ادا کیدې شي، که لا تراوسه پورې د اختر مونځ ادا شوې یا نه، پس د دومره وخت تیریدل کافی دی..... کذا فی الاوجز عن کتب الفروع، دا مسئله په ابتدائی مباحثو کښې مختصراً تیره شوې ده هلته د دې ځانې حواله ورکړې شوې ده.

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

[۲۸۰۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: فَصَحِّي خَالَ لِي يُقَالُ لَهُ أَبُو بَرْدَةَ قَبْلَ الصَّلَاةِ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "شَأْنُكَ شَأْنُ لَحْمٍ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ عِنْدِي دَاجِنًا جَدَعَهُ مِنَ الْمَعْرِ، فَقَالَ: اذْبَحْهَا وَلَا تَصْلَحْ لِغَيْرِكَ."

دبراء بن عازب رضي الله عنه نه روایت فرمائی چه زما ماما چه ابو برده به ورته وئیلې شو داخر د مونځ نه مخکښې ئې قرباني او کره نبی صلی الله علیه و آله ورته او فرمائیل چه ستا چیلې خودغوبني دپاره ذبح شو (قرباني دي اونه شوه) هغه عرض او کړو اي دالله رسوله زما سره يوه جزعه قسم چیلې موجود دې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ذبح ئې کره اوستانه علاوه دبل چا دپاره صحیح نه دې.

باب مَا يَكْرَهُ مِنَ الضَّحَايَا

په کومو څارو ویا ندي قرباني کول مکروه دی؟

[۲۸۰۲] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ التَّمَرِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ: سَأَلْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ مَا لَا يَجُوزُ فِي الْأَضَاحِيِّ، فَقَالَ: قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَصَابِي أَقْصَرُ مِنْ أَصَابِعِهِ، وَأَنَا مِلِّي أَقْصَرُ مِنْ أَنَامِلِهِ، فَقَالَ: أَرْبَعٌ لَا تَجُوزُ فِي الْأَضَاحِيِّ الْعَوْرَاءُ بَيْنَ عَوْرَاهَا، وَالْمَرِيضَةُ بَيْنَ مَرَضِهَا، وَالْعَرَجَاءُ بَيْنَ ظَلْعَيْهَا، وَالْكَسِيرُ الَّتِي لَا تَنْقَى، قَالَ: قُلْتُ: فَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَكُونَ فِي السِّنِّ نَقْصٌ، قَالَ: مَا كَرِهْتَ فَدَعُهُ، وَلَا تَحْرِمُهُ عَلَى أَحَدٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: لَيْسَ هَذَا مَخْرَجًا.

دعبیدبن فیروز نه روایت دې فرمائی چه دبراء بن عازب رضي الله عنه نه پوښتنه وکړه چه دقرباني دپاره کوم قسم څاروی مناسب دي؟ نو براء رضي الله عنه او فرمائیل چه يوه ورځ نبی صلی الله علیه و آله په مونځ کښې پاڅیدو اوزما گوتي دهغه دگوتونه وړي او حقییري دي اوزما دگوتو بندونه دهغه د بندونو نه حقیر او واره دي (یعنی په څلورو گوتوسره ئې اشاره او کره او وئې فرمائیل چه څلور قسمه څاروی د قرباني لائق نه دی، یو خو هغه څاروی دي کوم چه بنکاره کانږي وي بل هغه چه مرض ئې بنکاره وي او بل هغه گوده څاروي چه گوده توب ئې بنکاره وي او بل کمزوري او څوار څاروی دی دکوم چه پوختی شمیرلي شي، ماعرض وکړو چه زما د قرباني دپاره هغه څاروی هم خوښ نه دی دکوم چه عمر کم وي، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل کوم چه درته

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۷۶۹) (صحيح)
 (۲) سنن الترمذی للأضاحي ۵ (۱۴۹۷)، سنن النسائی للضحایا ۴ (۴۳۷۴)، سنن ابن ماجه للأضاحي ۸ (۳۱۴۴)، تحفة الأشراف: ۱۷۹۰، وقد أخرجہ: موطا امام مالك للأضاحيا ۱۱ (۱)، مسند احمد (۲۸۴/۴، ۲۸۹، ۳۰۰، ۳۰۱)، سنن الدرر للأضاحي ۳ (۱۹۹۲) (صحيح)

بدبښکاري هغه پرېږده لیکن بل څوک تري مه منع کوه.
 (سالت البراء بن عازب ما لایجوز فی الاضاحی فقال قام فینا رسول الله ﷺ الخ)

شرح الحدیث:

عبید بن فیروز رضی الله عنه د براء رضی الله عنه نه سوال اوکړو چه کوم څاروی داسې دی چه د هغې قربانی جائز نه ده نو هغوی او فرمائیل چه یو ځل رسول الله ﷺ مونږ ته اودریدو سره خطبه اوکړه (او چونکه هغوی راتلونکې مضمون د خپل لاس د گوتو مبارکو په اشارې سره بیان کړې وو او بیا د هغوی په اتباع کښې براء رضی الله عنه هم هغه شان خپلو گوتو سره اشاره اوکړه په دې وجه هغوی وړاندې فرمائی، چه زما گوتې خو ډیرې وړې دی د رسول الله ﷺ د گوتو نه او زما بندونه ډیر او کمزوری دی د هغوی د بندونو نه، پس هغوی او فرمائیل چه څلور قسمه ځناور داسې دی چه د هغې قربانی جائز نه ده:

۱: یو عوراء چه د هغې عور بالکل ښکاره وی یعنی د کوم چه یو سترگه خرابه وی او په هغې ورته څه په نظر نه راځی د هغې قربانی جائز نه ده، او که هغه په دواړو سترگو باندي روند وی نو د هغه قربانی په طریق اولی جائز نه ده.

۲: هغه مریض ځناور چه د هغې مرض صفا ښکاره وی، د دې نه مراد هغه مریضه ده (التي لا تعلق) چه هغې د مرض د وجې نه گیا خوړل پریخودلې وی.

۳: عرجاء چه د هغې گوډوالې ښکاره وی، (ظلع بمعنى عرج ای بین عرجها) د دې نه مراد هغه ځناور (التي لا تمشی الی المنسک) چه د مذبجه پورې تلې نه شی (۱)

۴: الکبیر یعنی بوډا او ډیر عمر والا (التي لا تنقی یعنی التي لا تنقی لها) تنقی په معنی د سدر یعنی د هډوکی دننه نلې یعنی داسې بوډا چه د هغه په خپو کښې د نلی پورې نه وی، د دې نه پس په روایت کښې دادی چه ما براء رضی الله عنه ته عرض اوکړو چه زه د قربانی په څاروی کښې دا ښه نه گنږم چه هغه کم عمر وی، هغوی او فرمائیل چه څه ستا نه وی خوښ نو پخپله هغه پرېږده خو د نورو دپاره ئې مه نا جائز کوه. د نقص فی السن نه مراد نقص شرعی نه دې ځکه چه هغه خو د چا دپاره هم جائز نه دې بلکه د دې نه هغه نقص مراد دې چه په ظاهر کښې د کتلو په لحاظ سره او د عرف په لحاظ وی. مثلاً د یو کال بیزه دا اگر چه عرفاً د کم عمر والا ده خو شرعاً د قربانی لائق ده.

د دې نه پس ځان پوهه کړئ چه کوم څلور قسمونه په دې حدیث کښې ذکر شوې دی د هغوی قربانی د څلورو وارو امامانو په نزد نا جائز ده او په (اوجز ۴/۲۱۶) کښې دی: حکى الاجماع على ذلك ابن رشد المالکى فى البداية والموفق فى المغنى والشوكانى فى النيل وغيرهم، وكذلك اجمعوا على ان اليسير من هذه العيوب الاربعة لا يضر والكثير يمنع، ثم اختلفوا فى الحد الفاصل بين اليسير والكثير الى آخر ما فى الاوجز من التفصيل فى ذلك. والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه قال المنذرى.

۱: د عرجاء په مصداق کښې چه د دې نه کوم قسم عرج مراد دې ډیر د ائمه کرامو ډیر اختلاف ذکره فی الاوجز ۴/۲۱۵

[۲۸۰۳] حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ح حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ بَحْرٍ بْنِ بَرِّي، حَدَّثَنَا عَيْسَى، الْمَعْفَى عَنْ ثَوْرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو مُحَمَّدٍ الرَّعِينِيُّ، أَخْبَرَنِي يَزِيدُ ذُو مِصْرٍ، قَالَ: أَتَيْتُ عْتَبَةَ بْنَ عَبْدِ السَّلْمِيِّ، فَقُلْتُ: يَا أَبَا الْوَلِيدِ إِنِّي خَرَجْتُ الْتَمِسَ الضَّحَايَا، فَلَمْ أَجِدْ شَيْئًا يُعْجِبُنِي غَيْرَ ثَرْمَاءَ فَكَرِهْتُمَا، فَمَا تَقُولُ؟ قَالَ: أَفَلَا جِئْتَنِي بِمَا؟ قُلْتُ: سُبْحَانَ اللَّهِ تَجَمُّزُ عُنُكَ، وَلَا تَجُوزُ عَنِّي، قَالَ: نَعَمْ إِنَّكَ تَشْكُ وَلَا أَشْكُ، إِنَّمَا نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمِصْفَرَةِ وَالْمُسْتَأْصِلَةِ وَالْبُخْقَاءِ وَالْمُشِيعَةِ وَالْكَسْرَاءَ فَالْمِصْفَرَةُ الَّتِي تُسْتَأْصَلُ أَذْنُهَا حَتَّى يَبْدُو بِمِخَاهِهَا، وَالْمُسْتَأْصِلَةُ الَّتِي اسْتَوْصِلَ قَرْنُهَا مِنْ أَصْلِهَا، وَالْبُخْقَاءُ الَّتِي تُبْخَقُ عَيْنُهَا، وَالْمُشِيعَةُ الَّتِي لَا تَتْبَعُ الْغَنَمَ عَجْفًا وَضَعْفًا، وَالْكَسْرَاءُ الْكَسِيرَةُ.

يزيد ذومصر وائی چه زه عتبه بن عبد بن سلمی ته ورغلم او ورته می او وئیل ای ابو الولید دقربانی د خاروی په لتهولویسی راوتلی هم خوداسی خاروی می پیدانکړو چه زما خوښ شی علاوه دیوه چیلی نه اودهغه هم یوغاښ مات وو او هغه هم راته مناسب ښکاره نه شو نوستاخه رایه ده ابو الولید ورته او وئیل ماته دې ولي نه راوستو ماورته او وئیل سبحان الله هغه خوستادپاره درست دې لیکن زما دپاره نه دې هغه او وئیل هو، ستاشک دې اوزماشک نشته دې نبی ﷺ په کوم خاروی باندي د قربانی کولونه منع نه ده فرمائیلی علاوه دمصفره او - مستاصله او بخقاء او مشیعه، کسراء مصفره هغه خاروی دې دکوم نه چه غورونه پرې شوي وي تردې چه دغورونو سوري ئې ښکاره شوي وي او مستاصله هغه خاروی دې چه ښکرتې مات وي یاختلې وي او بخقاء هغه خاروی دې دکوم چه د یوې سترگی نظر ختم شوې وي اومشیعه هغه خاروی دې چه دخوار والی او کمزوري توب دوجې نه دنورو خاروو سره نه شی تللې بلکه وروسته پاتې کیږي او کسراء هغه خاروی دې دکوم چه لاس یا خپه ماته شوي وي ددې نه علاوه نور ټول قسمونه دخارور دقربانی دپاره درست دي نویاوالي شک کوي؟ ﴿ اخبرنی یزید ذو مصر قال اتیت عتبه بن عبدالسلمی الخ ﴾

شرح الحديث:

د یزید لقب ذومصر دې هغه وائی چه یو ځل عتبه بن عبد السلمی ته لارم او ما هغوی ته اووې چه زه د قربانی د خاروی په تلاش کښې راوتلې اوم نو ما ته په هغه خارو کښې چه ما اولیدې اول خو خوښ نه شو او کوم چه می خوښ شو هغه ثرماء یعنی ساقطه الاسنان دی، په دې وجه ما هغه هم ناخوښه کړو، په دې کښې ستاسو څه رانې ده؟ هغوی جواب ورکړو چه تا هغه ماته ولې رانه وستلو (ما به په هغې قربانی کړې وي) ما اووې سبحان الله! دا عجیبه خبره ده چه ستاسو دپاره خو دې جائز شی او زما دپاره دې ناجائز وی، هغوی او فرمائیل دا په دې وجه چه ته شک کوی د هغې په جواز کښې او زه شک نه کوم، د دې نه پس هغوی او فرمائیل چه ﴿ انما نهی رسول الله ﷺ عن المصفره والمستاصله والبخقاء والمشیعة والكسراء ﴾ د دې نه پس بیا وړاندې په روایت کښې د دې صفاتو تفصیل او تشریح ذکر شوې ده هغه دا چه مصفره نه مراد هغه خاروی دې چه د هغه غور بالکل د ویخ نه ویستلې شوې وی. تردې چه د غور سوري ئې په نظر راخی او مستاصله هغه خاروی دې چه د هغې

۱: تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۹۷۵۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۸/۴) (ضعيف)

ښکر د وېخ نه مات شوي وي او بخقاء هغه څاروي دې چه د هغه د سترگې رنړا تلې وي (او سترگه ئې په خپل ځانې باندي صحيح او سالم وي) او مشيعة هغه بيزه ده چه د نورو بيزو سره په رمه کښي نه شي تلې دضعف د وجي نه او کسراء هغه څاروي دې چه خپه ئې ماته وي.

[۲۸۰۴] () حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ شُرَيْحِ بْنِ النَّعْمَانَ، وَكَانَ رَجُلٌ صِدْقٍ عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَسْتَشْرِفَ الْعَيْنَ وَالْأَذْنَ، وَلَا نُضْحِي بَعُورَاءَ وَلَا مُقَابِلَةً وَلَا مَدَابِرَةً وَلَا خِرْقَاءَ وَلَا شِرْقَاءَ، قَالَ زُهَيْرٌ: فَقُلْتُ لِأَبِي إِسْحَاقَ: أَذْكَرُ عَضْبَاءً، قَالَ، لَا قُلْتُ: فَمَا الْمُقَابِلَةُ؟ قَالَ: يُقَطِّعُ طَرَفَ الْأَذْنِ، قُلْتُ: فَمَا الْمَدَابِرَةُ؟ قَالَ: يُقَطِّعُ مِنْ مُؤَخَّرِ الْأَذْنِ، قُلْتُ: فَمَا الشَّرْقَاءُ؟ قَالَ: تُشَقُّ الْأَذْنُ، قُلْتُ: فَمَا الخِرْقَاءُ؟ قَالَ: تُحْرَقُ أَذُنًا لِلْسِّمَةِ.

علی رضی الله عنه نه روایت دې چه نبی ﷺ مونږ ته حکم او کړو چه دقربانۍ دڅاروي غوږونه او سترگي ښه او گورئ چه په دې کښي داسې عیب نه وي کوم چه دقربانۍ دصحت سره منافي وي او په کانږي څاروي باندي قرباني مه کوئ او په هغه څاروي هم قرباني مه کوئ دکوم چه غوږ دښي طرف نه ياچپ طرف نه پرې کړې شوي وي يا هغه چه په غوږ کښي ئې گول سوري وي يا په اوږدو شليدلي وي زهير وائی مادابواسحق نه پوښتنه او کړه چه ایا عضباء ئې هم ذکرکړو هغه او وئيل نه.

عن علی رضی الله تعالی عنه قال امرنا رسول الله ﷺ ان نستشرف العين والاذن ولا نضحی بعوراء ولا مقابلة ولا مدابرة ولا خرقاء ولا شرقاء الخ

علی رضی الله عنه فرمائی چه رسول الله ﷺ مونږ ته حکم فرمائيلې دې چه مونږ به د قربانۍ د څاروي د سترگه او غوږ په غور گورو (چه هغه صحيح سالم هم دی) او بيا په دې حديث کښي د نورو څلورو ځناورو ذکر دې چه د هغې د قربانۍ نه رسول الله ﷺ منع فرمائيلې ده. د هغې څلورو وارو تعلق د عیب فی الاذن سره دې پس مقابله هغه څاروي دې چه د هغه د غوږ څه حصه د مقدم اذن یعنی د مخکښي طرف نه پرې کولو سره هغه هم هلته پريخودلې شوي وي (بيله کړې شوي نه وي) او مدابره هغه څاروي دې چه د هغه د غوږ څه حصه د شاته نه پرې کړې شوي وي او هم هغه شان پريخودلې شوي وي او شرقاء هغه څاروي دې چه د هغه غوږ په اوږد والي پرې کړې شوي وي (ماخوذ من الشرق ای الشق) او خرقاء هغه څاروي دې چه د هغه په غوږ کښي غونډې سوري کړې شوي وي للسمه یعنی د علامت په طور.

په حديث الباب کښي مذاهب ائمة:

د دې څلورو وارو قسمونو قرباني د شوافعو په نزد جائز نه ده دا نهی د هغوی په نزد د تحريم دپاره ده، او د احنافو په نزد د تنزيه دپاره. په دې وجه چه د احنافو په نزد د غوږ حکم دا دې چه که هغه نيم يا اکثر مقطوع وي نو د هغې قرباني ناجائز ده او که د نيم نه کم مقطوع وي نو جائز ده، او د مالکيانو په نزد که ثلث مقطوع وي نو جائز ده او مافوق الثلث

۱: سنن الترمذي للأضاحي ۶ (۱۴۹۸)، سنن النسائي للضحايا ۸ (۴۳۷۷)، ۸ (۴۳۷۸)، ۹ (۴۳۷۹)، سنن ابن ماجه للأضاحي ۸ (۳۱۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۰۱۲۵)، وقد أخرجها: مسند احمد (۱/۸۰۸، ۱۰۸، ۱۲۸، ۱۴۹)، سنن الدرر للأضاحي ۳ (۱۹۹۵) (ضعيف)

جائز نه ده کما يظهر من کلام الدردير او د شوافعو په نزد په دې کښې مطلقا گنجائش نشته، پس په شرح الاقناع کښې دې: ولا یجزی مقطوع بعض الاذن وان کان یسیرا وقال ابو حنیفة ان کان المقطوع دون الثلث اجزاء آه..... د مذهب حنفی په نقل کښې په دې کښې تسامح دې بلکه زمونږ په نزد مادون النصف معفو عنه دې لکه چه مخکښې تیر شو او د حنابله په نزد په اذن کښې دوه روایتونه دی یو د احنافو په شان چه مادون النصف معاف دې او دویم روایت د نصف دې، ففي الروض المربع ۲۲۲ ویجزی مع الکراهة ما باذنه او قرنه خرق اوشق او قطع اقل من النصف او النصف فقط علی ما نص علیه فی روایة حنبل وغیره آه.

والحدیث اخرجہ الترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذری.

[۲۸۰۵] () حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ الدَّسْتَوَائِيُّ وَيُقَالُ لَهُ هِشَامُ بْنُ سَنَبْرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ جُرَيْبِ بْنِ كَلَيْبٍ، عَنْ عَلِيٍّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ يُضْحَى بِعَضْبَاءِ الْأُذُنِ وَالْقَرْنِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: جُرَيْبٌ سَدُوسِيٌّ بَصْرِيٌّ لَمْ يُحَدِّثْ عَنْهُ إِلَّا قَتَادَةَ.

د علی رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه وسلم منع فرمائیلی ده ددې نه چه قربانی دې او کړې شي په داسې څاروی دکوم چه ښکر مات وي باني غوږ پرې کړې شوي وي ابوداود وائی چه جري سدوسي بصري دې دده نه صرف قتاده د حدیث روایات نقل کړي دي.

﴿ عن علی رضی الله تعالی عنه ان النبی صلی الله علیه وسلم نهی ان یضحی بعضباء الاذن والقرن ﴾

یعنی مقطوع الاذن او مکسور الاذن، وړاندې په روایت کښې دې ﴿ قلت لسعيد بن المسيب ما الاعضب قال النصف فما فوقه ﴾ په ظاهره د سعید بن المسيب رضی الله عنه د کلام حاصل د عضب القرن سره دې نه د اعضب الاذن سره ځکه چه په اذن کښې خو تفصیل دې او مذاهب مختلف دی لکه چه اوس مخکښې تیر شو او اعضب القرن یعنی مکسور القرن مطلقا جائز دې لهذا النصف فما فوقه به هم په دې کښې جاری کیږي.

حدیث علی رضی الله تعالی عنه اخرجہ الترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذری

[۲۸۰۶] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: قُلْتُ لِسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: مَا الْأَعْضَبُ؟ قَالَ: النِّصْفُ فَمَا فَوْقَهُ.

قتاده رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د سعید بن مسیب نه مې پوښتنه او کړه چه عضباء کم قسم څاروی ته وئیلې شي هغه او وئیل چه غوږ ئې دنیمې نه زیات پریکړې شوي وي.

۱: سنن الترمذی للأضاحی ۹ (۱۵۰۴)، سنن النسائی للضحایا ۱۱ (۴۳۸۲)، سنن ابن ماجه للأضاحی ۸ (۳۱۴۵)، تحفة الأشراف: ۱۰۰۳۱، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱/۸۳۱، ۱۰۱، ۱۰۹، ۱۲۷، ۱۲۹، ۱۵۰) (ضعیف)

۲: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۷۲۱) (صحیح)

باب فِي الْبَقَرِ وَالْجُزْرِ عَنْ كَمْ تُجْزَعُ؟ د غواګانو او د اوبو قربانی د څو کسانو دپاره کافي ده؟

[۲۸۰۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كُنَّا نَمْتَعُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَذْبَحُ الْبَقْرَةَ عَنْ سَبْعَةٍ، وَالْجُزْرَ عَنْ سَبْعَةٍ نَشْتَرِكُ فِيهَا.

جابر بن عبد الله نه روایت دې فرمائی چه مونږ به کله دنبي ﷺ په زمانه کښي حج تمتع کولو نو غوا به مو داره کسانو د طرف نه ذبح کړه او اوبښ به موهم داوه کسانو د طرف نه ذبح کړو، او مونږ به په دې کښي شريک وو.

(عن جابر بن عبد الله رضى الله تعالى عنهما قال كنا نتمتع فى عهد رسول الله ﷺ نذبح البقرة عن سبعة والجزور عن سبعة الخ)

د جمهور علماء کرامو مسلک هم دا دې چه که بقره وي يا اوبښ په دواړو کښي د اووه کسانو شرکت کيډي شي (۲) امام ترمذي رحمه الله د دې حديث د تخريج نه پس فرمائی (هذا حديث حسن صحيح والعمل على هذا عند اهل العلم ثم قال وقال اسحاق يعجزى ايضا البعير عن عشرة واحتج بحديث ابن عباس رضى الله عنهما آه.) د ابن عباس رضي الله عنهما حديث په ترمذي کښي د دې نه مخکښي تير شوې دې. ولفظه (كنا مع رسول الله ﷺ فى سفر فحضر الاضحى فاشترکنا فى البقرة سبعة وفى البعير عشرة) قال ابو عيسى حديث ابن عباس حديث حسن غريب لانعرفه الا من حديث فضل بن موسى آه..... دا حديث د ابن عباس رضي الله عنهما په ابوداؤد کښي نشته په باقى سنن ثلاثه کښي شته او حديث د جابر رضي الله عنهما د بخارى نه علاوه په باقى ټولو کتب صحاح کښي موجود دې د جمهورو په نزد هم دا راجح ده او علامه شوکاني رحمه الله حديث د ابن عباس رضي الله عنهما په اضحيه باندي محمول کړې دې او حديث د جابر رضي الله عنهما په هدى باندي يعنى د بدنه په قرباني کښي د لسو شرکت کيډي شي او که هغه هدى دې نو صرف د اووه کسانو شرکت کيډي شي. والحديث اخرجه مسلم والنسائي قاله المنذرى

[۲۸۰۸] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ قَبِيصٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الْبَقْرَةُ عَنْ سَبْعَةٍ وَالْجُزْرُ عَنْ سَبْعَةٍ".

جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائيلى دى غوا داوه کسانو دپاره کافي ده او اوبښ هم داره کسانو دپاره کافي دې.

[۲۸۰۹] (۳) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزَّيْتْرِ الْمَكِّيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّهُ قَالَ: نَحْرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَدِيثِ الْبَدَنَةِ عَنْ سَبْعَةٍ، وَالْبَقْرَةَ عَنْ سَبْعَةٍ.

(۱) صحيح مسلم الحج ۶۲ (۱۳۱۸)، سنن النسائي للضحايا ۱۵ (۴۳۹۸)، (تحفة الأشراف: ۲۴۳۵)، وقد أخرجه: سنن الترمذي الحج ۶۶ (۹۰۴)، موطا امام مالك للضحايا ۵ (۹) (صحيح)

(۲) او د مالکيانو د مسلک تحقيق مخکښي ذکر شوې دې چه د هغوى په نزد شرکت فى الاضحية جائز نه دى

(۳) نفر د به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۲۴۷۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۳۱۳) (صحيح)

جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی الله علیه و آله سره په حدیبیه کښې اوبښ داوه کسانو د طرف نه او غواهم داوه کسانو د طرف نه ذبح کړه.

بَابُ فِي الشَّائِئِ يُضْحَى بِهِ عَنْ جَمَاعَةٍ د څو کسانو د طرف نه که قربانی کول کافی دی؟

[۲۸۱۰] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ يَعْنِي الْإِسْكَندَرَانِيَّ، عَنْ عَمْرٍو، عَنِ الْمُطَّلِبِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْأَضْحَى بِالْمُصَلَّى، فَلَمَّا قَضَى خُطْبَتَهُ نَزَلَ مِنْ مِنْبَرِهِ وَأَتَى بِكَبْشٍ قَدْ بَجَحَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ، وَقَالَ: "بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ هَذَا عَنِّي وَعَمَّنْ لَمْ يُضَحِّ مِنْ أُمَّتِي".

جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه زه د نبی صلی الله علیه و آله سره دلوي اختر په ورځ په عیدگاه کښې موجود وم نوهر کله چه ئې خطبه پوره کړه نو راکوز شو د برخیل نه او یوگر ورته راوستلي شو نبی صلی الله علیه و آله په خپل لاس مبارک ذبح کړو او اوئي فرمائیل: "بسم الله والله أكبر هذا عني وعمن لم يضح من امتي" د ازماد طرف نه ده اوزما په امت کښې چه چا قربانی نه وی کړي دهغه د طرف نه ده.

په مسئله الباب او حدیث الباب باندي کلام نزدې د په (باب ما يستحب من الضحايا) د لاندې تیر شوې دې.

بَابُ الْإِمَامِ يَذْبَحُ بِالْمُصَلَّى

د امام دپاره په عیدگاه کښې د خپلې قربانی ذبح کولو بیان

وفي الاوجز ٤ / عن المسوي الذبح في المصلى احسن اظهارا لشعار الدين آه... د جمهور علماء کرامو په نزد خو دعام ده په دې وجه امام بخاری رحمته الله ترجمه قائم کړې ده (باب الاضحى والنحر بالمصلى) خو امام ابوداؤد په دې ترجمه کښې د امام سره دا مقید کړې دې کوم چه د امام مالک رحمته الله مسلک دې. فقی ((الابواب والتراجم ٦ / ٣٣) قال ابن بطال: (هو السنة للامام خاصة عند مالک، قال مالک انما يفعل ذلك لئلا يذبح احد قبله وليذبحوا بعده على يقين وليتعلموا منه صفة الذبح آه) زه وایم او دلته په ابتدائی مباحثو کښې هم تیره شوې ده چه د امام مالک مسلک دا دې چه د خلقو دپاره قربانی کول تر هغه وخته پورې جائز نه دی تر څو چه امام قربانی نه وی کړې.

[۲۸۱۱] (۱) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، أَنَّ أَبَا أُسَامَةَ حَدَّثَهُمْ عَنْ أُسَامَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يَذْبَحُ أَضْحِيَّتَهُ بِالْمُصَلَّى وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَفْعَلُهُ.

(۱) سنن الترمذي للأضاحي ٢٢ (١٥٢١)، سنن ابن ماجه للأضاحي ١ (٣١٢١)، (تحفة الأشراف: ٣٠٩٩)، وقد أخرجه: سنن الدارمي للأضاحي ١ (١٩٨٩)، مسند احمد (٣٦٢، ٣٣٥٦) (صحيح)
(۲) سنن ابن ماجه للأضاحي ١٧ (٣١٦١)، (تحفة الأشراف: ٧٤٧٣)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/العديد ٢٢ (٩٨٢)، والأضاحي ٦ (٥٥٥٢)، سنن الترمذي/الضحايا ٩ (١٥٠٨)، سنن النسائي/العديد ٢٩ (١٥٩٠)، والأضاحي ٢ (٤٣٧١)، مسند احمد (١٠٨٢، ١٥٢) (حسن صحيح)

نافع دابن عمر رضي الله عنه نه روایت کوی فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله به خپله قرباني په عیدگاه کښې ذبحه کوله، او ابن عمر به هم داسې کول.

وحدیث الباب اخرجه البخاری والنسائی وابن ماجه بنحوه قاله المنذری

باب فِي حَبْسِ لُحُومِ الْأَضَاحِي

د قرباني د غوښو د ساتلو بیان

[۲۸۱۲] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ تَقُولُ: دَفَّ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ حَضْرَةَ الْأَنْصَحِيِّ فِي زَمَانِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَذْخِرُوا الثَّلَاثَ، وَتَصَدَّقُوا بِمَا بَقِيَ" قَالَتْ: فَلَمَّا كَانَ بَعْدَ ذَلِكَ، قِيلَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَدْ كَانَ النَّاسُ يَنْتَفِعُونَ مِنْ ضَحَايَاهُمْ وَيَجْمَلُونَ مِنْهَا الْوَدَّكَ، وَيَتَّخِذُونَ مِنْهَا الْأَسْقِيَةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَمَا ذَاكَ، أَوْ كَمَا قَالَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ تَمَيَّتْ عَنْ إِمْسَاكِ لُحُومِ الضَّحَايَا بَعْدَ ثَلَاثٍ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِمَّا تَمَيَّتُمْ مِنْ أَجْلِ الدَّفَاقَةِ الَّتِي دَفَّتْ عَلَيْكُمْ فَكُلُوا وَتَصَدَّقُوا وَأَذْخِرُوا".

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائی چه دنبي صلی الله علیه و آله په زمانه کښې څه خلق دځنگل اوسيدونکي راغلل نبي صلی الله علیه و آله او فرمائيل د قرباني د غوښي دريمه حصه اوساتي او باقي پاتي صدقه کړي ام المومنين فرمائي ددي نه پس خلقو نبي صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو چه اي دالله رسوله مخکښي به خلقو دخپلو قربانونه فائدي اخستلي اوددي نه به ئي چربي اوبسکله اودڅرمنو نه به ئي مشکونه جوړول نبي صلی الله علیه و آله او فرمائيل ستاسو څه مطلب دي هغوی عرض او کړو اي دالله رسوله تاسو منع فرمائيلي ده د قرباني د غوښي د ساتلونه ددرې ورځونه زيات نبي صلی الله علیه و آله او فرمائيل ما ځکه منع کړي وه چه دځنگل نه څه غريبانان خلق راغلي وو دهغوی دپاره اوس د قرباني غوښه خوري اوصدقه هم ورکوي اوساتلي ئي هم شي.

د حديث مضمون :

قوله: (سمعت عائشة رضي الله تعالى عنها تقول : دف ناس من اهل البادية حضر ة الاضحى في زمان رسول الله صلی الله علیه و آله) مضمون د حديث دا دي چه عائشه رضي الله عنها فرمائي چه يو ځل د رسول الله صلی الله علیه و آله په زمانه کښې د قرباني په موقعه باندي د څه کلو نه خلق مديني منوري ته راغلل، په دي باندي رسول الله صلی الله علیه و آله خلقو ته او فرمائيل چه هغوی دي د خپلو خپلو قربانو غوښي د درې ورځو په اندازه اوساتي او باقي دي صدقه کړي چه کله په بل کال د قرباني زمانه راغله نو خلقو رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو يا رسول الله صلی الله علیه و آله خلق به د خپلو قربانو نه منتفع کيدل او دهغي وازگه به ئي ويلې کولو سره بدله او د قرباني د څرمنو نه به ئي مشکونه جوړول، په دي باندي هغوی تپوس او کړو (وما ذاك؟) نو بيا څه خبره ده (يعني تاسو ته په دي کښې څه اشکال دي؟)، خلقو عرض او کړو ځکه تاسو د لحوم الاضحى د امساک نه منع فرمائيلي

(۱) صحيح مسلم للأضاحي ۵ (۱۹۷۱)، سنن النسائي للأضاحيا ۳۶ (۴۴۳۶)، (تحفة الأشراف: ۱۶۱۶۵، ۱۷۹۰۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للأضاحي ۱۴ (۱۵۱۱)، سنن ابن ماجه للأضاحي ۱۶ (۳۱۶۰)، موطا امام مالك للأضاحيا ۴ (۷)، مسند احمد (۵۱/۸) (صحيح)

وه چه د درې ورځو نه زیاته اونه ساتلې شی، په دې باندې رسول الله ﷺ ارشاد او فرمائیلو ﴿انما نهیتکم من اجل الدافه التي دفت علیکم﴾ ما خو وړاندې کال د کلو نه د راتلونکو د وجې نه منع کړې وه (یعنی وقتی طور سره، نه د همیشه دپاره، لهذا د قربانۍ غوښه خورئ هم، صدقه کوئ ئې هم او ذخیره ئې هم ردئ).

په بخاری کښې دی ﴿باب ما یوکل من لحوم الاضاحی وما یتزود منها﴾ قال الحافظ ای من غیر تقييد بثلاث ولا نصف ثم قال والتقييد بثلاثة ایام منسوخ واما خاص بسبب آه

مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:

زمونږ فقهاء کرامو لیکلې دی چه افضله دا ده چه د دریمې حصې غوښې صدقه او کړې شی او دریمه حصه د خپلوانو او دوستانو د میلستیا دپاره کیخودلې شی او یو ثلث د خان دپاره ذخیره کړې، او داسې کول صرف مستحب دی، که ټوله د خپل ضرورت دپاره کیردې، نو هم جائزه او په "الدر المختار" کښې دی: وندب ترک التصدق لذي عیال غیر موسع الحال توسعه علیهم او د شوافعو د کتابونو نه معلومیرې چه د قربانۍ د غوښې څه حصه صدقه کول واجب دی بلکه افضل دا ده یوه دوه نمړې پریخودلو سره باقی ټوله صدقه کړې شی. (من الابواب والتراجم ج ۶...) والحديث اخرجه مسلم والنسائي قال المنذرى.

[۲۸۱۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا خَالِدُ الْحَدَّاءُ، عَنْ أَبِي الْمَلِيعِ عَنْ نُبَيْشَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّا كُنَّا نَهَيْتَاكُمْ عَنْ لُحُومِهَا أَنْ تَأْكُلُوهَا فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَلٍ لَكُمْ تَسَعُّكُمْ فَقَدْ جَاءَ اللَّهُ بِالسَّعَةِ فَكُلُوا وَادَّخِرُوا وَاتَّجَرُوا، أَلَا وَإِنَّ هَذِهِ الْأَيَّامَ أَيَّامَ أَكْلِ وَشُرْبٍ وَذَكَرَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ".

دنبیشه رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی عليه السلام فرمائیلی دی یقینا ماتاسو منع کړي وئ دخورلو دغوښې دقربانۍ نه ددرې ورځونه پس، په دې وجه چه داغوښه تاسو ټولوته اورسي اوس الله تعالی فراخي راوستلي ده نوخورئ ئې او ذخیره کوئ ئې او ثواب اوگتئ خبردار دا ورځې دخوراک او څښاک دي اودالله تعالی دذکر دې.

د باب په دویم حدیث کښې دی ﴿فکلوا وادخروا واتجروا﴾ دا لفظ د اجر نه اخستلې شوې دې چه هغه ئې باب افتعال ته بوتلې دې یعنی الاتتجار یعنی اجر او ثواب حاصلول څوک دې دا په تشدید د تاء سره نه لولی ﴿واتجروا﴾ ځکه چه دا د تجارت نه نه دې.

والحديث اخرجه النسائي بتمامه، وابن ماجه مختصرا على الاذن في الادخار فوق ثلاث واخرج مسلم الفصل الثاني في ذكر الاكل والشرب والذكر، قاله المنذرى

۱: سنن النسائي/الفرع والمعتبرة ۲ (۴۲۴۱)، سنن ابن ماجه/الأضاحي ۱۶ (۳۱۶۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۸۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۶، ۷۵/۵)، دي/الأضاحي ۶ (۲۰۰۱) (صحيح)

باب فِي الرَّفْقِ بِالذَّبِيحَةِ

د قربانی په څاروی باندې د شفقت کولو بیان

[۲۸۱۴] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خَالِدِ الْحَدَّادِ، عَنْ أَبِي قَلَابَةَ، عَنْ أَبِي الْأَشْعَثِ، عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ، قَالَ: خَصَلْتَانِ سَمِعْتُهُمَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ اللَّهَ كَتَبَ الْإِحْسَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ، فَإِذَا قَتَلْتُمْ فَأَحْسِنُوا قَاتِلًا: غَيْرُ مُسْلِمٍ، يَقُولُ: فَأَحْسِنُوا الْقِتْلَةَ وَإِذَا ذَبَحْتُمْ فَأَحْسِنُوا الذَّبْحَ وَلْيُجِدْ أَحَدُكُمْ شَفْرَتَهُ وَلْيُرْحِ ذَبِيحَتَهُ.

شداد بن اوس نه روایت دې فرمائی چې د نبی ﷺ نه مې دوه خصلتونه اوریدلي دي اوي خودا دې چې الله تعالی په بنده باندې احسان کول فرض کړي دي د هریوشی سره نوکله چې تاسو قتل کوئ په ښه طریقه ئې کوئ یعنی که چرې د خون په بدله کښې خون کوئ نوزر ئې فارغه وئ او بل داچه که چرې کوم څاروې حلالوئ نو په ښه طریقه ئې ذبه کوئ او پکار ده چې خپله چاره تیره کړئ او ضروري ده چې حلالیدونکي څاروی ته راحت اورسوي.

﴿ عن شداد بن اوس رضی الله تعالی عنه قال : خصلتان سمعتهما من رسول الله ﷺ ان الله

کتب الاحسان علی کل شی الخ ﴾

صحابی فرمائی چې دوه خبرې کومې چې ما د رسول الله ﷺ نه اوریدلي دي کومې چې د دې ضابطې د لاندې داخل دي چې الله پاک په انسان باندې دا خبره واجب کړې ده چې هغه دې په هر یو خیز کښې د احسان لحاظ ساتي چې هغه دې په حسن او خوبی او نرمی سره کوي وړاندې د دې دواړو خصلتونو بیان دې چې که تاسو یو کافر قتل کوئ هم نو په ښه طریقه سره یعنی مثله مه کوئ او هم دغه شان کله چې یو څاروې ذبح کوئ نو هغه هم په ښه طریقه باندې ذبح کوئ، یعنی چاره ښه طریقه سره تیره کړئ او ذبیحې ته آرام ورکړئ چې د ذبح نه پس فوراً د هغې څرمنه مه اوباسئ بلکه د هغې د یخیدو انتظار اوکړئ

والحدیث اخرجہ مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۲۸۱۵] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّلَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَنَسٍ عَلَى الْحَكَمِ بْنِ أَيُّوبَ فَرَأَى فِتْيَانًا أَوْ غُلَمَانًا قَدْ نَسَبُوا دَجَاجَةً يَرْمُونَهَا، فَقَالَ أَنَسٌ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُصَبَّرَ الْبَهَائِمُ.

دهشام بن زید نه روایت دې فرمائی چې زه د انس ها سره حکم بن ایوب ته ورغلم هلته مې یو څو هلکان اولیدول چې د یوې چرگي نه ئې ښه جوړه کړې وه او په غشوئې ویشته انس وه چې دا اولیدله نووئې وئیل چې نبی ﷺ د څاروو په دې شان سره د ترلونه پس دویشتلونه منع فرمائیلي ده.

۱) : صحیح مسلم للأضاحي ۵ (۱۹۷۵)، (تحفة الأشراف: ۲۰۷۶)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۵/۲۷۷، ۲۸۱)، سنن الدارمي للأضاحي ۶ (۲۰۰۳) (صحیح)

۲) : صحیح مسلم للصید ۱۱ (۱۹۵۵)، سنن الترمذی للذبیات ۱۴ (۱۴۰۹)، سنن النسائی للضحایا ۲۱ (۴۴۱۰)، ۲۶ (۴۴۱۹)، سنن ابن ماجه للذبیات ۳ (۳۱۷۰)، (تحفة الأشراف: ۴۸۱۷)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۴/۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵)، سنن الدارمي للأضاحي ۱۰ (۲۰۱۳) (صحیح)

شرح الحديث:

قوله: ﴿ نهی رسول الله ﷺ ان تصبر اليهائم ﴾

د صبر معنی د بندولو او د قید کولو ده، او مطلب دا دی چه څاروی دې د قاعدې لاندې ذبح کړې شی کومه چه د ذبح طریقه ده، او صبر بهائم دا دی چه مثلاً یو مرغی لره تړل او هغه مخې ته کینولو سره هغه په نخښه کړې شی، او د کوم څاروی سره داسې او کړې شی هغې ته مبصوره او مجثمه هم وئیلې شی، ځکه چه دا ذبح ذبح شرعی نه ده دغه شان هغه څاروی حلال هم نه وی حرامیږي. لکه چه په کتاب الاطعمة کښې به راشی

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه قاله المنذری.

باب فی المسافر یضحي

په سفر کښې د قربانی کولو بیان

د امام شافعی رحمته الله مسلک دی چه د قربانی سنت کیدل د ټولو په حق کښې دی که هغه مقيم وی او که مسافر وی، د امام مالک مسلک هم دا دی چه د ټولو په حق کښې سنت موکده دی خو د حاجیانو دپاره بمعنی فانهم لاضحية عليهم وسنتهم الهدى () (الكافي لابن عبد البر ۱/۴۱۸)

او د احنافو په نزد د مسافر په حق کښې قربانی واجب نه ده صرف د مقيم په حق کښې واجب ده.

[۲۸۱۶] () حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّقَلِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ خَالِدٍ الْحَيَّاطُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ أَبِي الزَّاهِرِيَّةِ، عَنْ جَبْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: "يَا ثَوْبَانُ أَصْلِحْ لَنَا لَحْمَ هَذِهِ الشَّاةِ"، قَالَ: فَمَا زِلْتُ أَطْعِمُهُ مِنْهَا حَتَّى قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ.

د ثوبان رضي الله عنه نه روایت دی چه نبی ﷺ د سفر په دوران کښې خپله قربانی ذبحه کړه اوبیاني او فرمائل ای ثوبان زمونږ دپاره ددې چیلی غوښه صفا کړه، ثوبان عرض اوکړو چه بیاماهغه غوښه په نبی ﷺ باندې اوخوره تردې چه زمونږ سفر پوره شو او مونږ مدینې ته داخل شو.

حدیث الباب کښې چه د رسول الله ﷺ د کومې قربانی ذکر دی په ظاهر کښې دا د حجة الوداع واقع ده. په بذل کښې دی ﴿ فاضحية صلى الله عليه وسلم محمولة عندنا على التطوع ﴾

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی قاله المنذری

باب فی ذبائح اهل الكتاب

د اهل کتابو د ذبح بیان

د اهل کتاب د ذبیحو په اباحت باندې ابن قدامة په معنی کښې د علماء کرامو اجماع نقل کړې ده، البته د اهل کتابو په ښکار کښې اختلاف دی، د اکثر علماء رائي نو په دې کښې

(۱) وفيه وقال مالك: الصدقة بثمن الضحية يعني احب الي آه
(۲) صحيح البخاري/الصيد ۲۵ (۵۵۱۳)، صحيح مسلم/الصيد ۱۲ (۱۹۵۶)، سنن النسائي/الضحايا ۴۰ (۴۴۴۴)، سنن ابن ماجه/اللذائح ۱۰ (۳۱۸۶)، (تحفة الأشراف: ۱۶۳۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱۱۷/۳، ۱۷۱، ۱۹۱) (صحيح)

اباحت دې خو د امام مالک رضی اللہ عنہ په دې کښې ابن قدامه اختلاف لیکلې دې ولفظه: ﴿الا ان مالکا اباح ذبائحهم وحرّم صيدهم، ولا یصح لان صيدهم من طعامهم فيدخل فی عموم الاية آه (تراجم ۲۵/۶) قلت: قال الدردير: لا کافر ولو کتابيا فلا یوکل صيده ولو سمی الله عليه لان الصيد رخصة والكافر ليس من اهلها آه..... خو په کتاب الکافی دابن عبدالبر کښې دا لیکلی دی چه د امام مالک رضی اللہ عنہ په نزد صید د اهل کتاب مکروه دې حرام نه دې، لقول الله عزوجل: تناله ايديکم ورماحکم یعنی اهل الايمان. ﴿وهو عند جمهور اهل العلم مثل ذبائحهم﴾ آه.

[۲۸۱۷] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنُ ثَابِتِ الْمُرَوَّزِيِّ، حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّخَوِيِّ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنَّا بْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: فَكَلِمًا مِمَّا ذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ، وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَنَسِخَ وَأَسْتَدْتَنِي مِنْ ذَلِكَ، فَقَالَ: وَطَعَامُ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ.

دابن عباس رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی دالله تعالی داقول: ﴿فکلوا مما ذکر اسم الله عليه﴾ یعنی په کومو خاروو چه دالله نوم واخستی شي هغه خورئ او په کومو چه دالله نوم نه وی اخستی شوي هغه مه خورئ دا ایت منسوخ شوې دې یعنی ددې نه داهل کتابو دذبح استثناء شوي ده او ددوی ذبح جائز ده لکه چه دالله تعالی قول دې: ﴿وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم وطعامكم حل لهم﴾.

[۲۸۱۸] (٢) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ، حَدَّثَنَا سِمَاكٌ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ: وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ سُورَةَ الْأَنْعَامِ آيَةَ ١٢١ يَقُولُونَ مَا ذَبَحَ اللَّهُ فَلَا تَأْكُلُوا وَمَا ذَبَحْتُمْ أَنْتُمْ فَكُلُوا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ سُورَةَ الْأَنْعَامِ آيَةَ ١٢١.

دابن عباس رضی اللہ عنہ نه دالله تعالی ددې قول: ﴿وان الشياطين ليوحون إلى أوليائهم﴾ په باره کښې منقول دي چه يهوديانوبه وئيل چه کوم خاروي الله تعالی ذبح کړو چه په قدرتي مرگ مرشي دغه تاسو نه خورئ او کوم چه پخپله ذبح کړئ هغه خورئ نوپه دې وخت کښې الله تعالی دا ایت نازل کړو: ﴿ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه﴾.

[۲۸۱۹] (٣) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عُمَرَانُ بْنُ عُبَيْنَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: جَاءَتْ الْيَهُودُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: نَأْكُلُ مِمَّا قَتَلْنَا وَلَا نَأْكُلُ مِمَّا قَتَلَ اللَّهُ، فَأَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ سُورَةَ الْأَنْعَامِ آيَةَ ١٢١ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ.

دابن عباس نه روایت دې فرمائی چه يهوديان نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته راغلل اوونې وئيل خورو مونږه دهغه نه کوم چه مونږ پخپله ذبح کړو اونه خورو مونږ دهغه نه کوم چه الله تعالی وژلې وي نوالله تعالی دا ایت نازل کړو: ﴿ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه﴾ ایت تر آخره پورې ﴿عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما في قوله تعالى وان الشياطين ليوحون الى اوليائهم الخ﴾ یعنی شياطين د کفارو په زړه کښې دا خبره اچوی چه تاسو د الله پاک ذبيحه خونه

١: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٦٢٥٩) (حسن)

٢: سنن النسائي للضحايا ٤٠ (٤٤٤٨)، سنن ابن ماجه لللبانج ٤ (٣١٧٣)، (تحفة الأشراف: ٦١١١) (صحيح)

٣: سنن الترمذي/تفسير الأنعام ٦ (٣٠٦٩)، (تحفة الأشراف: ٥٥٦٨) (صحيح)

خوری د الله پاک د ذبیحې نه مراد هغه څاروی دې کوم ته چه الله پاک مرگ ورکړې وی یعنی میتة او خپله ذبیحه تاسو حلاله گنړئ او خورئ ئې یعنی دا څنگه بې انصافی ده، نو په دې باندې دا آیت کریمه نازل شو ﴿ولا تاكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه﴾ یعنی د دې جواب حاصل دا دې چه د انسان ذبیحه صرف په دې وجه حلاله نه ده چه هغه د انسان ذبیحه ده بلکه په دې حیثیت سره چه په هغې باندې د الله پاک نوم اخستلې شوې دې په خلاف د ما ذبح الله چه په هغې باندې د الله پاک نوم نه شی اخستلې

والحدیث اخرجه ابن ماجه قاله المنذرى

باب مَا جَاءَ فِي أَكْلِ مُعَاقِرَةِ الْأَعْرَابِ

د اهل کتابو د فخر د پاره د ذبح کړې شوی څاروی د خوراکیان

معاقره په معنی د ذبح، خو دلته دا مصدر په معنی د مفعول دې ای ما عاقره الاعراب.

[۲۸۲۰] حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ مَسْعَدَةَ، عَنْ عَوْفٍ، عَنْ أَبِي رَجْحَانَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَكْلِ مُعَاقِرَةِ الْأَعْرَابِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: اسْمُ أَبِي رَجْحَانَةَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَطَرٍ، وَغُنْدَرٌ أَوْ قَفُّهُ عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ.

ابن عباس نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلی ده کوم چه اهل کتاب عرب د فخر کولو د پاره ذبح کړې. ابوداود وائی چه دا روایت غندر د ابن عباس رضی الله عنه نه موقوف نقل کړې دې، او د ابوریحانه نوم عبدالله بن مطرو و.

﴿ نهی رسول الله ﷺ عن معاقره الاعراب ﴾

شرح الحدیث:

یعنی رسول الله ﷺ د باندې چیانو او د جاهلانو د ذبیحې خورولو نه منع فرمائیلی ده چه د دې نه مراد هغه قربانی ده چه د فخر او ریاء په طور او د نورو د مقابلې د پاره او کړې شی، فقهاء کرامو لیکلی دی: وکذلک کل طعام صنع رياء ومفاخرة... یعنی کومه قربانی یا خوراک چه صرف د نوم او شهرت د پاره او کړې شی د هغې خوراک منع دې.

فانده: هم د دې قسم یو بل حدیث په کتاب الجنائز ﴿باب کراهية الذبح عند القبر﴾ کښې راغلې دې ﴿قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا عقر في الاسلام﴾ د دې حدیث معنی بله ده لکه چه د ترجمه الباب نه معلومېږي پس هلته په متن کښې راځی ﴿كانوا يعقرون عند القبر ببقرة او بشئ﴾ یعنی د جاهلیت په زمانه کښې به بعض خلقو د خپل یو سخی په قبر باندې اوبس وغیره ذبح کولو، بعضو خو په دې خیال چه دې انسان به په خپل ژوند کښې میل مستوب کولو مونږ د دې په بدله کښې د هغه په قبر باندې د هغه د طرف نه دا ذبح کوو چه دا ځناور او مارغان او څری او بعضو به په دې خیال کول چه کوم څاروی د هغه په قبر ذبح کړې شی هغه به د قبر نه د پاسیدو په وخت د هغه سورلئ جوړه شی، ځکه چه بعض کفار د بعث قائل وو.

۱: تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۵۸۱۱) (حسن صحیح)

باب فِي الدَّبِيحَةِ بِالْمَرَّةِ

په سپين کانري باندي د ذبح کولو بيان

د مروءه نه مراد الحجر المحدد (يعني تيره کانري چه د چري په شان کار کوي او غرض د مصنف رضي الله عنه دا دي چه په هر تيره خيز باندي ذبح کول چه په هغې سره رگونه پري کري شي جائز ده، خاص د چري کيدل دي دپاره ضروري نه دي لکه چه په حديث کسبي دي.

[۲۸۲۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ رِفَاعَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! إِنَّا نَلْقَى الْعَدُوَّ غَدًا وَلَيْسَ مَعَنَا مَدَى، أَفَنَذِبُ بِالْمَرَّةِ وَشِقَّةَ الْعَصَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَرِنُ أَوْ أَعْجَلُ مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ، فَكُلُوا مَا لَمْ يَكُنْ سِنًا أَوْ ظَفْرًا، وَسَاحِدُكُمْ عَنْ ذَلِكَ أَمَّا السِّنُّ فَعِظْمٌ، وَأَمَّا الظَّفَرُ فَمَدَى الْحَبَشَةِ، وَتَقَدَّمْ بِهِ سُرْعَانَ مِنَ النَّاسِ فَتَعَجَّلُوا فَأَصَابُوا مِنَ الْعَنَابِ، وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي آخِرِ النَّاسِ، فَتَصَبَّوْا قَدُورًا فَمَرَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْقُدُورِ، فَأَمَرَهُمْ بِهَا فَأَكْفَتَتْ وَقَسَمَ بَيْنَهُمْ فَعَدَلُ بِعَيْرٍ بِعَشْرِ شِيَاةٍ وَنَدَّ بِعَيْرٍ مِنْ إِبِلِ الْقَوْمِ وَلَمْ يَكُنْ مَعَهُمْ خَيْلٌ فَرَمَاهُ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَخَبَسَهُ اللَّهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ هَذِهِ الْبَهَائِمَ أَوْبِدُكَ وَأَوْبِدُكَ أَوْبِدُ الْوَحْشِ، فَمَا فَعَلَ مِنْهَا هَذَا فَا فَعَلُوا بِهِ مِثْلَ هَذَا".

رافع بن خديج نه روايت دي فرمائي چه دنبي عليه السلام په خدمت کسبي حاضر شوم او عرض مي او کړو چه اي دالله رسوله مونږ صباد دشمن سره دمقابلي دپاره مخامخ کيرو اوزمونږ سره چاره چاقو نشته ايا مونږ په کانري باندي ذبح اوکړو؟ نبي عليه السلام او فرمائيل په داسې خيز ذبح اوکړئ کوم چه وينه بهيوي اويائي داسې او فرمائيل چه په تيزي سره ذبح اوکړئ په کوم شي چه دالله نوم واخستې شي او علاوه دغابونو اونوکانونه اوزه تاسوته ددي وجه بيانوم چه غابن يوهل وکي دي اونوک دهبشيانو چاره ده خه خلقو تيزي نه کار واخستلو په مخکسبي کيدلو کسبي او غنيمتونه ئي حاصل کړل اونبي عليه السلام دخلقو په اخر کسبي وو دغه خلقو ديگونه نغرونه او خيزول نبي عليه السلام دديگونوسره تيري دو ددي داولته کولو حکم ئي اوکړو اود غنيمت مال ئي په مجاهدينو باندي تقسيم کړو اوبو اونئ ئي دلس چيلو په حساب مقرر کړو او په اوبانو کسبي يو اوبن تنبتي دو اود مجاهدينو سره په دغه وخت کسبي اسونه نه وو يوکس په غشي اوويشتو او الله تعالی اودرو نبي عليه السلام او فرمائيل چه په دي خارو کسبي خني تنبتي دونکي خاروي وي لکه خنگه چه وحشي خنور وي که چري کوم خاروي داسې حرکت اوکري نو دغه سره همداسې عمل اوکړئ

﴿ فقلت يا رسول الله! انا نلقى العدو غدا وليس معنا مدى، فقال رسول الله عليه السلام ارن او اعجل ﴾
شرح الحديث

د ارن په ضبط کسبي سخت اختلاف دي او مختلف الاقوال دي ۱: ارن په کسري د راء سره

۱: صحيح البخاري/الشركة ۳ (۲۴۸۸)، ۱۶ (۲۵۰۷)، الجهاد ۱۹۱ (۳۰۷۵)، اللبائع ۱۵ (۵۴۹۸)، ۱۸ (۵۵۰۳)، ۲۳ (۵۵۰۹)، ۳۶ (۵۵۴۳)، ۳۷ (۵۵۴۴)، صحيح مسلم/الأصاحي ۴ (۱۹۶۸)، سنن الترمذي/الصعيد ۱۹ (۱۴۹۲)، السير ۴۰ (۱۶۰۰)، سنن النسائي/الصعيد ۱۷ (۴۳۰۲)، الضحايا ۱۵ (۴۳۹۶)، ۲۶ (۴۴۱۴)، ۴۴۱۵، سنن ابن ماجه/اللبائع ۹ (۳۱۸۳)، (تحفة الأشراف: ۳۵۶۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۶۶، ۴/۱۴۰، ۱۴۲) (صحيح)

په وزن د اطع ای اهلکها ذبحا یعنی ذبح او کره او اوښې وژنه (یعنی په هر تیره څیز باندې) ۲
 وئیلې شوې دی چه صحیح دا ده چه دا لفظ د ائرن دې من ارن یارن من باب سمع چه د هغې
 معنی ده اعجل او مطلب ئې دا دې چه په هر تیره څیز سره هغه ذبح کړی او په ذبح کولو
 کښې تیزی او کړی ځکه چه د اوسپنې نه علاوه د بل تیره څیز نه دا خطر ه وی چه د ټولو
 رگونو د پرې کولو نه مخکښې هغه چرته مړ نه شی، په دې وجه ئې او فرمائیل چه په ذبح
 کولو کښې تیزی کوه، د دې نه علاوه نور هم اقوال دی، د حدیث مضمون دا دې چه رافع بن
 خدیج رضی الله عنہ رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو چه مونږ بل صبا له جهاد ته څو (او مونږ سره اگر
 چه تورې دی خو هغې لره خو په ذبح کښې استعمالول مناسب نه دی) او مونږ سره چرې
 نشته که د ذبح وخت راشی نو په کوم څیز باندې ذبح او کړو؟ نو رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل
 چه کومه یوه اله هم د څاروی وینه اوبهیوی په داسې حال کښې چه د وینې بیولو په وخت
 په هغې باندې د الله پاک نوم اخستلې شوې وی هغه تاسو خړی بیا وړاندې رسول الله صلی الله علیه و آله
 یوه استثنا او فرمائیله چه هغه وینه بیونکې څیز د غابښ او د نوک نه علاوه کیدل پکار دی
 او وړاندې رسول الله صلی الله علیه و آله د دې وجه دا بیان کړه چه په غوبښه د دې وجې نه نه چه هغه هډوکې
 دې او د نوک په باره کښې ئې او فرمائیل چه هغه د حبشیانو چاره ده. د غابښ په باره کښې
 ئې او فرمائیل چه هغه هډوکې دې د دې په شرح کښې امام نووی فرمائی چه په عظم سره
 ذبح مه کوئ ځکه چه هغه به په وینې سره نجس شی او حال دا چه تاسو د تنجیس عظم نه
 منع کړې شوی یئ لانه زاد اخوانکم من الجن او د نوک د منع کیدو وجه رسول الله صلی الله علیه و آله دا بیان
 او فرمائیله چه دا اهل حبشه چاره ده لهذا په دې سره ذبح کولو کښې تشبه بکفار الحبشه ده.

اله ذبح څنګه پکار ده؟ په دې کښې مذاهب د ائمه

آله د ذبح څه پکار ده؟ په دې باره کښې (اوجز المسالک ج ۴...) کښې د ائمه د
 مذاهبو تفصیل داسې لیکلې شوې دې: ابن رشد مالکی فرمائی چه د علماء کرامو په دې
 باندې اجماع ده چه کوم څیز د حیوان وینې اوبیوی او اوداج (د مرئ رگونه) قطع کړی که
 هغه اوسپنه وی یا کانرې یا بل څه او د هغې په ذریعه ذبح کول جائز دی، خو په درې
 څیزونو کښې د علماء کرامو اختلاف دې، غابښ او نوک او هډوکې (یعنی د غابښ نه علاوه
 بل هډوکې) بیا وړاندې لیکي چه د مالکیانو په مذهب کښې په دې کښې هیڅ اختلاف
 نشته چه ذبح بالعظم جائز ده اذا انهر الدم، خو په غابښ او هډوکې کښې د مالکیانو اختلاف
 دې چه په هغې کښې درې اقوال دی.

۱: المنع مطلقاً ۲: الفرق بين الانفصال والاتصال او دریم قول دا دې چه صرف کراهیت
 دې نه منع، او ابن قدامه د حنابله مذهب د سن او ظفر په باره کښې صرف عدم جواز لیکلې
 دې مطلقاً، که منزوع وی یا غیر منزوع، او مطلق عظم (غیر السن) په باره کښې د امام
 احمد دوه اقوال لیکلې شوی دی، اباحت او عدم اباحت او هغوی اباحت ته ترجیح ورکړې
 ده پس هغوی لیکي والاول اصح انشاء الله لان العظم دخل فی عموم لفظ المبیح ثم استثنى السن
 والظفر خاصة فیبقى سائر العظام داخلا فیما یباح الذبح به آه او د شوافعو مسلک په شرح اقناع

وغیره کښې د دې دريو (السن والظفر ومطلق العظم) په باره کښې مطلقاً عدم جواز ليکلي شوي دي د اتصال او انفصال د فرق نه بغير بيا وړاندي ليکي چه په دې کښې اختلاف دي چه د ذبح بالعظام نه نهی تعبدی ده لکه چه د ابن الصلاح وغیره رائي ده يا غير تعبدی یعنی معلل واليه مال النووی یعنی تنجيس عظم چه ممنوع دي، او د احنافو مذهب لکه چه مشهور دي الفرق بين الاتصال والانفصال یعنی نوک او غابن که د بدن سره متصل وي نو ذبح ناجائز ده او که منفصل وي نو جائز ده خو داسې کول مکروه دی، په ذبيحه کښې هيڅ کراهت نشته وفي الهداية وما رواه (الشافعي) محمول على غير المنزوع فان الحبشة كانوا يفعلون ذلك، ولانه الة جارحة فيحصل به ما هو المقصود وهو اخراج الدم، بخلاف غير المنزوع لانه يقتل بالثقل فيكون في معنى المنحقة (ملخصاً من الاوجز ۴/۱۷۰) وړاندي حديث کښې دی ﴿وتقدم سرعان من الناس فتعجلوا فاصابوا من الغنائم الخ﴾

شرح الحديث:

یعنی بعض جلد باز قسم خلقو په مال غنیمت کښې د تقسیم نه مخکښې بعض بیزي وغیره ذبح کولو سره د خوراک دپاره کتوي باندي کړي، رسول الله ﷺ روستو طرف ته وو چه کله د رسول الله ﷺ تیریدل په هغه کتوو باندي اوشو نو رسول الله ﷺ د هغې د اولته کولو حکم ورکړو چه څوک ئې او نه خورلي شي.

د مال غنیمت نه انتفاع قبل التقسیم په طعام کښې جائز دي چه د هغې تفصیل د کتاب الجهاد په ابوابو کښې تیر شوي دي هغې ته دي رجوع او کړي شي.

بيا وړاندي په حديث کښې دی ﴿وقسم بينهم فعدل بعيرا بعشر شياه﴾ یعنی د مال غنیمت د تقسیم په وخت هغوی یو اوبن لره د لسو بیزو برابر مقرر کړو، د دې نه بعض علماء کرامو لکه اسحاق بن راهویه وغیره په دې باندي استدلال کړي دي چه د یو اوبن قربانئ کښې د لسو کسانو شرکت کیدي شي، خو دا استدلال بس هم دومره دي، حافظ ابن حجر رحمه الله فرمائي ﴿ولعله كانت قيمة الغنم اذ ذاك كذلك﴾ یعنی کیدي شي په دغه زمانه کښې په بازار کښې لس بیزي د یو اوبن د قیمت برابر وي.

وړاندي په حديث کښې دی ﴿وند بعير من ابل القوم ولم يكن معهم خيل فرماه رجل بسهم الخ﴾ یعنی په دې سفر کښې دا واقعه پېښه شوه چه په اوبسانو کښې یو اوبن وران شو او متوحش کیدو سره په تیخته شو او د قابو نه بهر شو نو یو انسان د هغه سره هغه معامله او کړه کومه چه د ښکار سره کولې شي یعنی بسم الله لوستلو سره ئې هغه په غشی باندي ویشتلو چه په هغې باندي هغه او دریدو او په قبضه کښې راغلو، په دې موقع باندي هغوی ارشاد او فرماتیلو ﴿ان لهذه البهائم اوابد کاوابد الوحش﴾ چه بیشکه زمونږ په دې عادت څاروو کښې بعض د وحشی ځناورو په شان متوحش شي پس که یو څاروي داسې شي نو د هغه سره داسې معامله کول جائز دی، یعنی د دې قسم څاروي د ښکار په حکم کښې کیږي او څنگه چه د ښکار کولو په شریعت کښې طریقه ده هغې لره په داسې څاروو کښې اختیار ول جائز دی، والحديث اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۲۸۲۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، أَنَّ عَبْدَ الْوَاحِدِ بْنَ زِيَادٍ، وَحَمَّادًا حَدَّثَاهُمَا الْمَعْنَى وَاحِدًا، عَنْ عَاصِمٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ صَفْوَانَ، أَوْ صَفْوَانَ بْنِ مُحَمَّدٍ، قَالَ: أَصَدْتُ أَرْبَعِينَ قَدْ بَخَعْتُهُمَا بِمَرُوءَةَ فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَنْهُمَا فَأَمَرَنِي بِأَكْلِهَا.

محمد بن صفوان یا د صفوان بن محمدنه روایت دی فرمائی چه مادوه هوسی په بنکار کنبی راوړلي او په تیره کانړي مي حلالی کړي دنبي ﷺ نه مي تپوس او کړو ماته ئي ددوی دخوراک اجازت را کړو

[۲۸۲۳] (۲) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي حَارِثَةَ، أَنَّهُ كَانَ يَرْعَى لِقْحَةَ بَشْعَبٍ مِنْ شَعَابٍ أَحَدٍ، فَأَخَذَهَا الْبُوتَ فَلَمَّ يَجِدُ شَيْئًا يَخْرُهَا بِهِ فَأَخَذَ وَتَدَا فَوَجَّأَ فِي لَبَتَيْهَا حَتَّى أَهْرَبَ دَمَهَا، ثُمَّ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِذَلِكَ فَأَمَرَهُ بِأَكْلِهَا.

عطاء بن یسار د بنی حارثه دیوکس نه روایت کوی چه ما دا حد دغر په درو کنبی خپله اوښه خړوله هغه مړه شوه اوداسې هیڅ یوشې راته ملاو نه شو چه په هغه باندي ئي ذبح کړم نو یو مینس مي راواغست او د اوښې په مرئ کنبی مي او منډو تردي چه وله تري لاره بیاد نبي ﷺ په خدمت کن حاضر شوم او ددې خبرې خبر مي ورکړو نو هغه ددې د خورلو اجازت وکړو

﴿ عن رجل من بني حارثة انه يرعى لقحة بشعب من شعاب احد فاخذها الموت الخ ﴾

یعنی یو سړی خپله اوښه د احد د غر په یو څوکه باندي خړوله هم په دې وخت کنبی هغه اوښه قریب المرگ شوه هغه سړی د هغې نحر کول او غوښتل خو هیڅ یو څیز ورته ملاؤ نه شو د اوسپني یو میخ کوم چه هغه د هغې په سینه کنبی بنخ کړو چه په هغې سره د هغې وینه او بهیدله او بیا راتلو سره ئي رسول الله ﷺ ته د دې ذکر او کړو رسول الله ﷺ د هغې د خوراک اجازت ورکړو.

[۲۸۲۴] (۳) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ يَمَّاكِ بْنِ حَرْبٍ، عَنْ مُرَيْبِ بْنِ قَطْرِي، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ أَحَدُنَا أَصَابَ صَيْدًا، وَلَيْسَ مَعَهُ سِكِّينٌ أَيْدِيَهُ بِالْمَرُوءَةِ وَشِقَّةَ الْعَصَا، فَقَالَ: أَمْرٌ الدَّمُ بِمَا شِئْتَ وَادْكُرْ اسْمَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ.

د عدي بن حاتم رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چه ماعرض او کړو اي د الله رسوله که چرې په مونږ کنبی یوکس بنکار او کړي او چاره ورسره نه وی نو ایاه کانړي یا لرگي باندي ذبح کولې شی نبي ﷺ او فرمائیل د الله تعالی نوم واخله او وینه و بویوه اگر که په هر شي باندي وي

﴿ ايذبح بالمروءة وشققة العصاء ﴾ مروة تیره کانړې او شققة العصا د یو لرگی تیره والا

تیکړه او حصه.

وحديث عدي بن حاتم رضي الله تعالى عنه اخرجہ النسائي وابن ماجه قاله المنذرى.

۱: سنن النسائي/الصعيد، ۲۵ (۴۳۱۸)، والضحايا ۱۷ (۴۴۰۴)، سنن ابن ماجه/الصعيد ۱۷ (۳۲۴۴)، (تحفة الأشراف:

۱۱۲۲۴)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۴۷۱/۳) (صحيح)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۴۱)، وقد أخرجہ: موطا امام مالك للذبياتح ۲ (۳) مسند احمد (۳۷۴، ۵۳۰/۵) (صحيح)

۳: سنن النسائي/الصعيد ۲۰ (۴۳۰۹)، والضحايا ۱۸ (۴۴۰۶)، سنن ابن ماجه/الذبياتح ۵ (۳۱۷۷)، (تحفة الأشراف: ۹۸۷۵)،

وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۵۶۷۴، ۲۵۸، ۳۷۷) (صحيح)

باب مَا جَاءَ فِي ذَبِيحَةِ الْمُتَرَدِّيَةِ

د رارغریدلی څاروی د ذبح کولو بیان

[۲۸۲۵] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي الْعَشْرَاءِ، عَنِ أَبِيهِ، أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمَا تَكُونُ الذَّكَاةُ إِلَّا مِنَ اللَّبَةِ أَوْ الْحَلْقِ؟ قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَوْ طَعَنْتَ فِي فُحْدِهَا لِأَجْزَأُ عَنكَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا لَا يَصْلُحُ إِلَّا فِي الْمُتَرَدِّيَةِ وَالْمَتَوَحِّشِ.

بو العشاء دخپل پلار نه روایت کوی فرمائی چه ماعرض او کړو ای د الله رسوله ایازکاة (ذبح کول) د سینې او مرئ په مینځ کښې وی ای په بل ځای کښې هم وی؟ نبی ﷺ او فرمائیل که چرې ته د څاروی ورون په نیزه اووهی نوهم کافی ده. ابوداؤد وائی چه دادهغه څاروی د ذبح کولو طریقہ ده کوم چه دبره نه راورغري اودهغې د ذبح کولو موقع ملا ونه شي اویاهغه څاروی کوم چه او تنبتي.

(۲) عن ابی العشاء عن ابیه رضی الله تعالی عنه انه قال یا رسول الله اما تكون الذکاة الا من اللبة او الحلق الخ

شرح الحديث:

د ابو العشاء او دهغه د پلار په نوم کښې اختلاف دې چه دهغې تفصیل په بذل المجهود کښې دې، او د ابو العشاء د خپل پلار نه په سماع کښې هم اختلاف دې، امام ترمذی د دې په پاره کښې فرمائی هذا حدیث غریب لا نعرفه الا من حدیث حماد بن سلمة ولا نعرف لابی العشاء عن ابیه غیر هذا الحدیث واختلفوا فی اسم ابی العشاء فقال بعضهم اسمه اسامة بن قهطم ويقال يسار بن بزز ويقال ابن بلز، ويقال اسمه عطارد، نسب الى جده آه..... او په مسند احمد کښې دې (الا فی الحلق او اللبة) هغه صحابی د رسول الله ﷺ نه تپوس او کړو چه آیا شرعی زکوة د حلق او لبه سره خاص دې؟ (د حلق تعلق خو د ذبح سره دې او د لبه د نحر سره چه دهغې ذکر په کتاب الحج کښې تیر شوي دې، لبه د سینې پورته حصه (موضع القلادة من الصدر) او حلق خو معروف دې. نو رسول الله ﷺ ارشاد او فرمائیلو نه بلکه که د څاروی په پتون کښې هم زخم او کړې شی نو کافی ده.

ځان پوهول پکار دی چه د جرح شرعی دوه قسمونه دی (۲) یو اختیاری او دویم اضطراری، اختیاری خو هغه دې کوم چه په مانوس او مقبوض څاروو کښې وی. دا خو د حلق او لبه سره خاص دې او دویم قسم یعنی ذکاة اضطراری په متوحش او غیر مانوس (یعنی چه عادت نه وی) څاروو کښې وی یعنی په ښکار کښې د حلق او لبه سره خاص نه دې بلکه د بدن په هره حصه کښې جرح کول، دلته په حدیث کښې د سائل سوال د ذکاة اختیاری سره متعلق وو کوم چه د لبه او حلق سره خاص دې هم په دې وجه امام ابوداؤد ﷺ

(۱) سنن الترمذی/الصید ۱۳ (۱۴۸۱)، سنن النسائی/الضحایا ۲۴ (۴۴۱۳)، سنن ابن ماجه/الذبائح ۹ (۳۱۸۴)، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴/۴)، دي/الأضاحي ۱۲ (۲۰۱۵) (منکر)
(۲) د دې پوره تفصیل په کتاب الصید کښې راروان دې

د دې حدیث په تشریح او تاویل کښې فرمائی (قال ابوداؤد: لا يصلح هذا الا في المتردية والمتوحش) د متوحش نه مراد هغه څاروي دې چه د هغې ذکر په (وند بعير من ابل القوم) کښې تیر شو، او د متردیه نه مراد هغه عادت او مقبوض څاروي دې چه د پورته نه یو لاندي ځاني ته راوغورځیږي مثلا په کوهی کښ، او د دې قسم څاروو حکم چه کوهی ته اوغورځیږي ښکاره دې چه په هغې کښې د ذکاۀ اختیاری چه کومه طریقه ده هغه خو نه شی کیدی، نو مصنف فرمائی چه د حدیث الباب محمل هم دا د مجبورئ والا شکل دې، په دې وجه که هلته هم ذکاۀ اختیاری ضروری کړې شی نو کیدی شی چه هغه څاروي د دې خبرې د نه مخکښې مړ شی، زمونږ فقهاء کرامو هم د داسې مجبورئ په صورت کښې د دې حل هم دا لیکلې دې امام ترمذی رحمته الله علیه هم د دې حدیث د ذکر کولو نه پس هم دا تاویل ذکر کړې دې، هغه فرمائی چه قال يزيد بن هارون هذا في الضرورة... آه

فانده: (خليل احمد) سهارنپوری رحمته الله علیه په بذل المجهود کښې د مصنف په دې تاویل باندي یو اعتراض فرمائیلي دې کوم چه په ظاهره د اصولو او قواعدو مطابق دې خو مصنف چه کومه مسئله بیانوی د هغې تصریح په هدایه کښې موجود ده، لهذا د مصنف تاویل په خپل ځاني صحیح دې (۱) والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذری.

بَابُ فِي الْمَبَالِغَةِ فِي الذَّبْحِ

په ذبح کښې د کوشش کولو بیان

یعنی څاروي لره ښه طریقی سره ذبح کول ضروری دی هسې ئې په معمولی غشی ویشتلو چه په هغې سره هغه څاروي په مزه مزه وینه بهیدلو سره ختم شی دا معتبر نه دی.

حقیقة الذبح

په بذل کښې د ترجمۀ الباب د لاندي لیکلې شوې دی حتی یقطع الحلقوم والمری

(۱) زما یو یادداشت کښې داسې راووتلو چه د مصنف د توجیه حاصل دا دې چه دا حدیث په ذکاۀ اضطراری باندي محمول دې نه په اختیاریه باندي، او مصنف رحمته الله علیه د دې دوه افراد بیان کړې دی یو متوحش لکه چه مخکښې تیر شو ان لهذه البهائم اوابد کاوابد الوحش الخ. او یو متردیه، په اول کښې خو هیڅ اشکال نشته خپله په حدیث کښې د هغې وضاحت دې خو په متردیه باندي محمول کول مفید نه دی ځکه چه متردیه په قرآن کریم کښې په میته کښې شمار کړې شوې دې اگر چه د مصنف مراد دا دې چه د تردی نه پس مطلق جرح کافی ده یعنی ذکاۀ اضطراری خو په دې کښې اشکال دا دې چه که حدیث په ذکاۀ اضطرار باندي محمول کړې شی نو بیا هم صحیح نه ده ځکه چه په دې صورت کښې به د دې متردیه د مرگ دوه اسباب جمع شی یو تردی او یو جرح، جرح خو په ذکاۀ اضطراری کښې صحیح ده خو تردی هم چونکه سبب د مرگ دې او دلته هغه موجود دې او ذکاۀ اضطرار دا دې چه که دوه اسباب جمع شی چه په هغې کښې یو سبب داسې وی چه د هغې ښکار حلال نه وی نو بیا داسې کړې شوی ښکار جائز نه دې، هم دا اشکال سهارنپوری صاحب په بذل کښې فرمائیلي دې د حضرت دا اشکال او تحقیق د اصولو او قواعدو خو مطابق معلومیږي خو د متردیه کوم شکل چه مصنف لیکلې دې د هغې په باره کښې جزئیۀ په هدایه رابع کښې مصرح ده او دا ئې جائز لیکلې ده پس هیڅ اشکال نشته په توجیه د مصنف باندي پس تدبر او کړه او شکر او کړه، نبهني علي تلك الجزئية بعض الطلبة في اثناء الدرس جزاه الله تعالى خيرا)

والودجان یعنی کامله ذبح دا ده چه دا درې رگونه پرې کړې شي حلقوم وائی مجری النفس ته (یعنی د ساه نالی)، او مری وئیلې شي د خوراک خځاک نالی ته، او ودجان د وینې رگونه و فی الهدایة ۵۴/۴ والعروق التي تقطع فی الذکاة اربعة الحلقوم والمری والودجان لقوله علیه السلام افری الأوداج بما شئت وهی اسم جمع واقله الثلاث فیتناول المری والودجين، بیا وړاندې په هدایه کښې په دې مسئله کښې اختلاف لیکلې دې چه د دې قطع ضروری ده یا د اکثر قطع کول کافی دی؟ په دې باندې هغوی مدلل بالتفصیل کلام فرمائیلې دې او د نورو امامانو اختلاف ئې هم لیکلې دې فارجع الیه لو شئت.

[۲۸۲۶] (۱) حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، وَالْحَسَنُ بْنُ عَيْسَى مَوْلَى ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْبَرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، زَادَ ابْنُ عَيْسَى، وَأَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ شَرِيطَةِ الشَّيْطَانِ، زَادَ ابْنُ عَيْسَى فِي حَدِيثِهِ وَهِيَ الَّتِي تُذْبَحُ فَيُقَطَّعُ الْجِلْدُ وَلَا تُقْرَى الْأَوْدَاجُ، ثُمَّ تَتْرَكَ حَتَّى تَمُوتَ.

د ابن عباس (ابن عیسی په کښې ابوهریره هم ذکر کړې دې) دواړونه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ منع فرمائیلې ده د شریطي د شیطان نه د ابن عیسی په روایت کښې د شریطي داتفسیر دې چه کوم خاروې حال لیرې دهغه خرمن پرېکړې شي اورگونه ئې پرېخود شي تردې چه په ټوپونو توپونو وهلو مړ شي.

شرح الحديث:

قوله: ﴿ نهی رسول الله ﷺ عن شریطة الشیطان ﴾ یعنی رسول الله ﷺ د هغه ذبیحې د خوړولو نه منع فرمائیلې ده چه هغه ناقصې طریقې سره ذبح کړې شوې وی. دا لفظ اخستلې شوې دې د شرط الحجام نه حجام یعنی ښکر لگونکې چه په کوم ځانې باندې ښکر لگوی هغه مخکښې په غشی باندې زخمی کوی، لهذا مطلب دا شو چه معمولی شان قطع کول جائز نه دی، په دې سره هغه خاروې نه حال لیرې د جاهلیت په زمانه کښې بعض خلق هم داسې کوی چه د حلق بعض حصو لره قطع کولو نه پس هغه خاروی لره هم داسې پرېخوده تردې چه هغه به مړ شو. په حدیث کښې دې فعل لره د شیطان طرف ته منسوب په دې وجه کړې شوې چه داسې حرکت باندې انسان لره تیاروی. د دې حدیث شرح خپله په متن کښې هم موجود ده ﴿وهی التي تذبح فیقطع الجلد الخ﴾

بَاب مَا جَاءَ فِي ذِكَاةِ الْجَنِينِ

د خاروې په خپته کښې د بچي ذکاة بیان

[۲۸۲۷] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ. ح وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ مُجَالِدٍ، عَنْ أَبِي الْوَدَّاعِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْجَنِينِ، فَقَالَ: "كَلْوَةٌ إِنْ شَتَّمَتْ، وَقَالَ

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۱۷۳)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۲۸۹/۱) (ضعيف)

(۲) سنن الترمذي للأطعمة ۲ (۱۴۷۶)، سنن ابن ماجه للذبائح ۱۵ (۳۱۹۹)، (تحفة الأشراف: ۳۹۸۶)، وقد أخرجه: مسند

أحمد (۳۱/۳، ۳۹، ۵۳) (صحيح)

مُسَدَّدٌ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَحْرُ النَّاقَةِ، وَنَذْبَحُ الْبَقْرَةَ وَالشَّاةَ فَنَجِدُ فِي بَطْنِهَا الْجَنِينَ أَلْقِيَهُ أَمْ نَأْكُلُهُ؟ قَالَ: كَلْوَةٌ إِنْ شِئْتُمْ فَإِنَّ ذَكَاتَهُ ذَكَاتُ أُمِّهِ.

ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه ماد نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه دخاروي په خيته کښې دبي متعلق تپوس او کړو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل خورئ ئي که ستاسو خوبنه وي دمسدد به روایت کښې دي چه سعید او وئیل ماعرض او کړو اي دالله رسوله که چرې مونږ اوبښ نهر کړو اوغواوگره ذبح کړو اودهغې په گيډه کښې بچې بيامومو نوایا غورخوو به ئي او که خوروبه ئي؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل وبې خورئ که خوبنه مووي يقينا دده دمور ذبح کيدل دده ذبح کيدل دي.

﴿ عن ابی سعید قال سالت رسول الله ﷺ عن الجنين..... الخ فان ذكاته ذكاة امه ﴾

د حديث مضمون دا دې چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه سوال او کړې شو چه يا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مونږ ډير کرته چه کوم خاروي ذبح کوو نو د هغې د خيتي نه بچې راوخی د هغې مونږ څه او کړو هغه اوخرو يا او ئي غورخوو؟ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه خورلې ئي شئ ځکه چه د هغه د مور ذبح خپله د هغه ذبح ده، يعنی هغه بچې په ذبح کښې د مور تابع دې لهذا د هغې د مستقل ذبح کولو ضرورت نشته او دا کوم حکم چه په حديث کښې ذکر شوي دي دا په هغه صورت کښې دي چه کله هغه بچې مړ وي، او که هغه ژوندې راوخی په هغه صورت کښې دا حکم نه دې. په دې صورت کښې به د هغه د حلاليدو دپاره بالاتفاق د هغه ذبح کول ضروري وي.

په مسئله الباب کښې اختلاف د ائمه:

د دې نه پس خان پوهه کړئ چه په دې حديث باندې د ائمه ثلاثه او د صاحبينو عمل دې د امام ابوحنيفه رضی اللہ عنہ رائي دا نه ده ففی الهداية: ومن نحر ناقة او ذبح بقرة فوجد في بطنها جنينا ميتا لم يוכל اشعر اولم يشعر، وهذا عند ابی حنيفة رحمه الله تعالى وهو قول زفر والحسن بن زياد رحمه الله تعالى وقال ابو يوسف ومحمد رحمهما الله اذا تم خلقته اكل وهو قول الشافعي لقوله عليه السلام ذكاة الجنين ذكاة امه الى اخره وفي هامشه: وقال الامام محمد رحمه الله في موطاه: فاما ابوحنيفة فكان يكره اكله حتى يخرج حيا فيذكي وكان يروى عن حماد عن ابراهيم انه قال لا تكون زكاة نفس ذكاة نفسين.

الجواب عن الامام ابی حنيفة رحمه الله:

د احنافو د طرف نه د دې حديث يو جواب ورکولې شی چه په دې حديث کښې مقصود تشبيه ده اي ذكاة الجنين کذکاة امه، او تشبيه کله د حرف تشبيه په حذف سره هم وي لکه په قول د الله پاک کښې، ﴿وجنته عرضها السموات والارض، اي عرضها كعرض السموات والارض﴾ او د دې تائيد د دې نه هم کيږي کوم چه وئيلې شوې دي چه يو روایت په دې حديث کښې ذكاة په نصب سره هم دې ذكاة الجنين ذكاة امه، او دا منصوب بنزع الحافض کما في قوله تعالى وهي تمر مر السحاب.

او د امام صاحب رضی اللہ عنہ د طرف نه دا هم وئيلې شوې دي چه جنين ميتة چه په هغې کښې د علماء کرامو اختلاف دې د دوه حالو نه خالی نه دې، يا خوبه هغه د مخکښې نه د خپلې

مور په خپته کښې مېته وی نو د هغې حرمت خو ظاهر دي، او یا به د مور د ذبح نه پس په هغې باندي مرگ واقع شوي وی اختناق یعنی د ساه د اودريدو د وجې نه، لهذا په دي صورت کښې هغه منخنقه شوه، یعنی يو صورت کښې مېته او په يو صورت کښې منخنقه وکلاهما حرامان بنص القرآن، او دا هم وئيلي شوي دي چه که د حديث نه مقصود تشبيه نه وي بلکه بيان د حکم او نيابت وي نو بيا د دي دپاره تعبير داسې پکار وو ﴿ ذکاة ام الجنين ذکاته ﴾ والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه قاله المنذری.

[۲۸۲۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ رَاهُوَيْهِ، حَدَّثَنَا عَتَّابُ بْنُ يَشِيرٍ، حَدَّثَنَا عَبِيدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي زِيَادٍ الْقَدَّاحُ الْمَكِّيُّ، عَنْ أَبِي الزَّيْبَرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "ذَكَاةُ الْجَنِينِ ذَكَاةُ أُمِّهِ".

جابر بن عبد الله نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی دڅاروي په خپته کښې د موجود بچی د ذبح کولو په ځاني دده دمور ذبح کول کافی دي

بَاب مَا جَاءَ فِي أَكْلِ اللَّحْمِ لَا يُدْرَى أَذْكَرَ أَسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ أَمْ لَا

بيان د حکم د خوراک د هغې غوښې چه معلومه نه وي د ذبح کولو په وخت پرې بسم الله وئيلي شوي ده او که نه ده؟

[۲۸۲۹] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَيَّانَ، وَمُحَاضِرُ الْمَعْنِيِّ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ وَلَمْ يَذْكُرْ، عَنْ حَمَّادٍ وَمَالِكٍ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهُمْ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ قَوْمًا حَدِيثُوا عَهْدًا بِالْحَاجَةِ هَلِيَّةٍ يَأْتُونَنَا بِالْحَمَّانِ لِأَنَّهُمْ لَا يُدْرَى أَذْكَرُوا أَسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا أَمْ لَمْ يَذْكُرُوا أَفَنَأْكُلُ مِنْهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "سَمُّوهُ اللَّهُ وَكُلُّوا".

ام المومنين عائشې رضی اللہ عنہا نه روایت دي فرمائی چه صحابه کرامو نبی ﷺ ته عرض اوکړو چه اي دالله رسوله څه خلق اوس تازه مسلمانان شوي دي اود شرعي احکامو پوره علم ورسره نشته مونږ ته غوښه وري راوړي مونږ ته معلومه نه ده چه هغوی د ذبحي په وخت باندي بسم الله وائی او که نه وائی ایا مونږ دغه غوښه خوړلې شو؟ نبی علیه السلام اوفرماييل تاسودالله نوم واخلي اوخوړئ ئې.

﴿ ولم يذكر ۱ عن حماد ومالك عن عائشة رضي الله تعالى عنها ﴾

شرح السند:

لفظ "عن عائشة" په تركيب کښې "لم يذكر" مفعول به دي د مصنف په دي حديث کښې درې استاذان دي، موسی او القعنبي دريم يوسف، لهذا مطلب دا شو مصنف فرمائی زما استاد

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۸۸۲)، وقد أخرجه: سنن الدارمي للأضاحي ۱۷ (۲۰۲۲) (صحيح)
(۱) صحيح البخاري/اليوبع ۵ (۲۰۵۷)، الصيد ۲۱ (۵۵۰۷)، التوحيد ۱۳ (۷۳۹۸)، (تحفة الأشراف: ۱۶۹۵، ۱۷۱۸۱، ۱۹۰۲۹)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الضحايا ۳۸ (۴۴۴۱)، سنن ابن ماجه/الذبايح ۴ (۳۱۷۴)، موطا امام مالك للأضاحي ۱ (۷)، والذبايح ۱ (۱)، سنن الدارمي للأضاحي ۱۴ (۲۰۱۹) (صحيح)

موسی د حماد او قعنبی د خپل استاد مالک نه د دې په سند کښې لفظ 'عن عائشة' نه دې ذکر کړې، بلکه صرف دریم اسناد یعنی یوسف بن موسی دا ذکر کړې دې، لهذا د دواړو روایت مرسل شو او دا دویم موصول.

مضمون د حدیث دا دې عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی بعض صحابه کرامو د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه تپوس او کړو چه بعض نوی مسلمانان مونږ ته د قربانی غوښه راوړی چه د هغې په باره کښې مونږ په دې باندې نه پوهیږو چه هغوی به په دې باندې د ذبح په وخت (بسم الله) وئیلې وه یا نه نو آیا مونږ دا خوړلې شو؟ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیل چه (بسم الله) لولئ او خوړئ یعنی کومه چه د خوراک مسنون طریقہ ده چه د (بسم الله) وئیلو سره دې خوراک او کړې شی هغه کوه، یعنی ددې نوې مسلمانانو سره د حسن ظن معامله کولو سره هغه خوراک پکار دې، او دا مطلب ئې نه دې چه (تسمية عند الاكل) د (تسمية عند الذبائح) قائم مقام جوړیږی. والحديث اخرجه البخاری والنسائی وابن ماجه قاله المنذرى.

باب فی العتيرة

د عتیرې (په رجب کښې د قربانی) بیان

فروع وعتیره کښې بحث مع مذاهب ائمة

د عتیره ذکر په کتاب الضحایا کښې د ټولو نه اول حدیث کښې تیره شوې ده، او د دې زاړوان باب حواله هم، عتیره د هغه قربانی نوم دې چه په ابتداء د اسلام کښې چه کله په رومبئ عشره کښې خوړلې شوه کما تقدم فی اول الكتاب، امام ابوداؤد خو دلته صرف یو باب (عتیره باندې) باندې قائم کړې دې او امام بخاری رضی اللہ عنہ په عتیره او فرع دواړو باندې ځانله ځانله ابواب قائم کړې دی او په دواړو کښې د ابوهریره رضی اللہ عنہ دا مرفوع روایت (لا فرع ولا عتيرة) ذکر فرمائیلې دې په روایاتو کښې د دواړو په باره کښې اختلاف دې نفیاً واثباتاً، پس د کتاب په شروع کښې کومه چه په حدیث کښې تیره شوې ده په دې کښې چه د عتیره کوم جواز ذکر شوې دې او دلته حدیث الباب کښې د دې نفی مذکور دې، په صحیحینو کښې خود دواړو نفی او عدم جواز ذکر شوې دې، خو د سنن روایات په دې کښې مختلف دی، پس د عتیره په باره کښې خو اوس اختلاف تیر شوې دې او د فرع دپاره د دې باب رومبئ حدیث کښې خود دې اثبات مذکور دې (فی کل سالمة فرع) او د باب په دویم حدیث کښې د دې نفی ده (لا فرع ولا عتيرة) هم دغه شان وړاندې په باب العقیقة کښې یو حدیث راړوان دې (والفرع حق) جمهور علما، او د ائمة ثلاثة په نزد خو دا دواړه منسوخ دی خو امام شافعی رضی اللہ عنہ او د بعض نورو علما، کرامو په نزد دا دواړه هم مستحب دی لکه چه امام نووی رضی اللہ عنہ د امام شافعی رضی اللہ عنہ نه د دې د استحباب تصریح نقل کړې ده (۱).

دا مخکښې تیره شوه چه د جمهورو عمل خو حدیث د صحیحین (لا فرع ولا عتيرة) باندې دې او هغوی دا دواړه منسوخ منی او امام شافعی رضی اللہ عنہ د اثبات او د نفی په روایتونو کښې

(۱) وفي هامش البذل: وعند الحنابلة لا یسن ولا یکره والمراد بالنفي عندهم نفي السنية كما جزم في التروض المربع

دفع د تعارض داسې کړې ده چه نفی ئې محمول کړې ده په نفی د وجوب باندې او د اثبات روایت په استحباب باندې.

د فرع په تفسیر کښې اقوال:

د دې نه پس خان داسې پوهه کړې چه د عتیره تفسیر خو پورته ذکر شو او د فرع په تفسیر کښې اقوال مختلف دی.

۱: د یو ځناور رومبې بچې (جوتهه) کومو لره به چه مشرکین د بتانو په نوم باندې ذبح کولو د خیر او برکت دپاره. او په شروع د اسلام کښې به دا د الله پاک په نوم باندې ذبح کولې شو. دویم فرق دا وو چه مشرکانو به د هغې د پیدائش نه پس په شروع کښې ذبح کولو او په شروع د اسلام کښې د لوئیدو نه پس لکه چه وړاندې د ابوداؤد په یو روایت مرفوعه کښې د دې ذکر راروان دې.

۲: په پوره رمه کښې چه کوم څاروې رومبې بچې راوړی، اگر که هغه فی نفسه د هغې رومبې نه وی. ۳: د انسان په ملک کښې بیزه وی یا اوبښ، د سلو عدد (۱) پوره کیدو نه پس چه کوم بچې پیدا شی. پ ۴: په هر پنځوس بیزو کښې یوه بیزه لکه چه په راروان حدیث **«من کل خمسين شاة شاة»**

[۲۸۳۰] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَحَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ بَشْرِ بْنِ الْمُفَضَّلِ الْبَغْعِيِّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ الْحَدَّادُ، عَنْ أَبِي قَلَابَةَ، عَنْ أَبِي الْمَلِيحِ، قَالَ: قَالَ نُبَيْشَةُ نَأْدَى رَجُلٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّا كُنَّا نَعْتَرُ عَتِيرَةَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فِي رَجَبٍ، فَمَا تَأْمُرُنَا، قَالَ: "ادْبَحُوا لِلَّهِ فِي أَيِّ شَهْرٍ كَانَ وَيُرْوَى اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ وَأَطِعُوا، قَالَ: إِنَّا كُنَّا نَقْرَعُ قَرَعًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: فِي كُلِّ سَابِئَةٍ قَرَعٌ تَعْدُوهُ مَا شِئْتِكَ حَتَّى إِذَا اسْتَحْمَلْ، قَالَ نَصْرٌ: اسْتَحْمَلٌ لِلْحَجِيجِ ذَبْحَتُهُ فَتَصَدَّقَتْ بِحَبِيهِ، قَالَ خَالِدٌ: أَحْسِبُهُ، قَالَ عَلِيُّ بْنُ السَّبِيلِ: فَإِنَّ ذَلِكَ خَيْرٌ، قَالَ خَالِدٌ: قُلْتُ لِأَبِي قَلَابَةَ كَمْ السَّابِئَةُ قَالَ: مِائَةٌ.

د ابوالمليح نه روایت دې فرمائی چه نشيبه او وئیل یوکس نبی ﷺ ته اواز اوکړو چه مونږ به دجهالیت په زمانه کښې عطبره کوله نو اوس زمونږ دپاره څه حکم دې؟ نبی ﷺ او فرمائیله دالله په نوم باندې ذبح کوئ اگرچه هره یوه میاشت وي او دالله تعالی فرمانبرداری کوی او غریبانوته خوراک ورکوی، ددې نه پس دغه کس عرض اوکړو چه مونږ به د جاهلیت په زمانه کښې فرع کوله اوس زمونږ دپاره ددې متعلق څه حکم دې؟ نبی ﷺ او فرمائیله په هریو خریدونکي څاروی کښې یوه فرع وي کوم چه ستاسو څاروې په خلقو باندې خوروي کله چه هغه څاروې دوزن داوچتولوقابل شي یا تري اوبښ جوړ شي نو هغه ذبح کړئ اودهغه غوښه مسافروته په صدقه کښې ورکړئ خالد او وئیل دابهتره طریقه ده ما

۱: لکه چه وړاندې د راوی په کلام کښې راروان دی وکم السائمة ۲ قال متة او هم دغه شان په کتاب الطهارة کښې باب في الاستتار کښې چه کوم اوږد حدیث تیر شوې دې د هغې نه هم معلومیږي وډيه قوله صلي الله عليه وسلم لا تحسبن انا من اجلك ذبحناها، لنا غنم مئة لا يزيد ان تزيد فاذا ولد الراعي بهمة ذبحنا مكانها شاة الحديث (۲) سنن النسائي للفرع والعتيرة ۱ (۴۲۳۳)، سنن ابن ماجه للذبايح ۲ (۳۱۳۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۸۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۷۶، ۷۵/۵) (صحيح)

ابوقلابه ته اووئیل چه په خومره څاروو کښې داسې کول پکار دي؟ هغه اووئیل چه په سلو کښې. (فرع دڅاروي اولني بچی وي کوم چه مشرکانو بتانوته دتقرب دپاره دهغوی په نوم ذبح کرو، اوعتیره، دبتانودتقرب دپاره دهغوی په نوم باندي درجب په اولنی عشره کښې دڅاروي ذبح کولوته وئیلې شي، په ابتداء اسلام کښې به مسلمانانوداعمل کولولیکن بیا منسوخ شو).

﴿ فی کل سائمة فرع تغذوه ما شیتک حتی إذا استحمل للحجیح ذبحته فتصدقت بلحمه ﴾

د فرع په باره کښې لکه چه مخکښې تیر شو چه د جاهلیت په زمانه کښې به په رومبئ ورځ هغه بچی ذبح کولې شو. رسول الله ﷺ په دې حدیث کښې فرمائی چه فرع خو برحق ده خو په رومبئ ورځ باندي د ذبح کولو خبره غلطه ده بلکه تاسو له دا پکار دی چه کله هغه ستاسو خپل څاروي دې نو هغه اوپالئ او ساتنه ئې اوکړئ، چه کله هغه لوئې شي او د سورلئ قابل شي نو بیا هغې لره د ذبح کولو نه پس د هغه غوښه صدقه کړئ، او هم د دې په شان هدایت د رسول الله ﷺ نه وړاندي په یو روایت کښې راروان دې (چه د هغې حواله پورته تیره شوه) ﴿ والفرع حق وان ترکوه حتی یكون بکرا شغزبا ابن محاض او ابن لبون الخ ﴾ د دې ترجمه دا ده: او دا خبره چه تاسو دا بچی پریرېدئ تردې چه هغه ځوان شي او بیا هغه یوې غریبې ښځې ته ورکړئ یا ئې په جهاد کښې استعمال کړئ نو دا غوره ده د دې خبرې نه چه ته هغې لره د پیدا کیدو نه پس فوراً ذبح کړې او د هغې غوښه د هغې په څرمن او وینستو پاتې شي او ته د خپلو پیو لوښې نسکور کړې، او ته د هغې بچی مور ته تکلیف ورکړې. د پیو د لوښې د نسکور کولو مطلب دا دې چه کله د اوښې بچی په وړوکوالی کښې ذبح کړې شي نو بیا اوښه بغیر د خپل بچی نه پئ څنگه ورکولې شي.

حدیث نبیة اخرجہ النسائی وابن ماجه و حدیث ابی هريرة اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی

والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

[۲۸۳۱] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَنَا سَعِيدٌ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا فَرْعَ وَلَا عَتِيرَةَ".

دابوهریره ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی په اسلام کښې نه فرع شته اونه عتیره. د فرع اوعتیره وضاحت په تیرشوي حدیث کښې مذکور دي.

[۲۸۳۲] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، قَالَ: الْفَرْعُ أَوَّلُ النَّتَاجِ كَانَ يُنْتَجَبُ هُمْ قَيْدًا بِحَوْنِهِ.

دسعید بن المسیب نه روایت دې فرمائی چه فرع هغه بچی ته وئیلې شي کوم چه اول پیدا شي او خلقوبه دبتانو په نوم ذبح کولو.

(۱): صحيح البخاري للعقيدة ٤ (٥٤٧٣)، صحيح مسلم للأضاحي ٦ (١٩٧٦)، سنن الترمذي للأضاحي ١٥ (١٥١٢)، سنن النسائي للفرع والعتيرة (٤٢٢٧)، سنن ابن ماجه للذبايح ٢ (٣١٦٨)، (تحفة الأشراف: ١٣١٢٧)، وقد أخرجته: مسند احمد (٢٣٩٧٢، ٢٥٤، ٢٨٥)، سنن الدارمي للأضاحي ٨ (٢٠٠٧) (صحيح)
(۲): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ١٧٨٣٣) (صحيح)

[۲۸۳۳] () حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ مَاهَكَ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ كُلِّ خَمْسِينَ شَاةً شَاةً، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ بَعْضُهُمُ الْفَرَعُ أَوَّلَ مَا تُنْتَجَبُ الْإِبِلُ كَأَنْوَإِدُ بَحُونَهُ لِيَطْوَأَ غَيْبَتَهُمْ ثُمَّ يَأْكُلُونَهُ، وَيُلْقَى جِلْدُهُ عَلَى الشَّجَرِ وَالْعَتِيرَةُ فِي الْعَشْرِ الْأَوَّلِ مِنْ رَجَبٍ.

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله مونږ ته حکم کړي ووجه په هرو پنځوسو گډو کښي به يوه گډه اداکوو. امام ابوداود وائی چه فرع داوښ اولني بچی ته وئيلي شي کوم چه به مشرکانود خپلو بتانو په نوم ذبحه کولو او بيا به ئي خوړلو، او خرمن به ئي ورله په يوه ونه باندي وغوروله او عتيره درج د مياشتي په اولني عشره کښي وي.

باب فِي الْعَقِيْقَةِ

د عقيقي د احکامو بيان

د صحيح بخاري عنوان « کتاب العقيقة » دي کوم چه هغوی د کتاب الاطعمة نه پس مستقلا ذکر کړي دي، د باب الفرع والعتيرة نه مخکښ، او په هغې کښي امام بخاري صرف دوه ابواب قائم کړي دي. « باب تسمية المولود غداة يولد لمن لم يعق عنه وتحنيكه » او دويم باب « اطامة الاذى عن الصبي في العقيقة » چه په هغې کښي ئي دا حديث ذکر کړي دي « مع العلام عقيقة فاهريقوا عنه دما واميطوا عنه الاذى »

د عقيقي متعلق ضروري مباحث:

عقيقة د عق نه اخستلي شوي دي چه د هغې معنی د شق او د قطع ده، د عقيقي اطلاق د مولود د سر په ويښتو باندي کيږي چه هغې لره قطع کولې شي، او په هغه ذبيحه باندي هم عقيقه په هغه امورو کښي ده کوم چه په زمانه د جاهليت کښي هم رائج وو خو هغه خلقو به دا کول چه د ذبيحې وينې به ئي د مولود په سر باندي مړلي، په اسلام کښي اصل عقيقه خو باقي پريخودلې شوه خو دويم خصلت يعنی « اللطخ بالدم » نه منع او کړي شوه او د هغې په ځاني زعفران استعمال کړي شو، دا مضمون د باب په آخري حديث کښي را روان دي.

په اوجز کښي د کتاب العقيقة په شروع کښي لس بحثونه ذکر کړي شوي دي چه د هغې ذکر مجملا په حاشية د لامع او « الابواب والتراجم » کښي راغلي دي. بحث اول خو په لغوي تحقيق کښي دي او دويم بحث د دي په حکم کښي چه د هغې خلاصه دا ده چه عقيقه د ظاهريه په نزد واجب ده وهو رواية عن احمد والحسن، او د شوافعو او حنابلة په نزد سنت موکده ده، او د امام مالک په نزد مستحب ده كما في الموطاء وكلام الدردير، او د احنافو په دي باره کښي درې روايات دي، اول دا چه مستحب ده وهو المعروف في فروعهم، دويم دا چه مباح ده، او دريم دا چه انها بدعة ونسب الي الامام، وانكر الانتساب العلامة العيني، د احنافو په نزد صحيح دا ده چه عقيقة مستحب ده خو د صاحب بدائع رائي د دي خلاف ده هغوی دي ته منسوخ او مکروه وئيلي ده، په موطاء کښي امام محمد رضي الله عنه هم نسخ ليکلې ده خو د هغه

۱: تقرده په ابوداود، (تحفة الأشراف: ۱۷۸۳۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۸۶، ۲۵۱) (صحيح)

محشی په دې باندې تعقب کولو سره په هغې تفصیلی کلام کړې دې او په کتابونو د شوافعو کښې دا هم دی چه عقیقه د امت په حق کښې خو مستحب ده او د رسول الله ﷺ په حق کښې واجب.

په عقیقه کښې په غلام او وینځه کښې فرق

یو بحث په دې مباحثو کښې دا دې چه په عقیقه کښې د هلک او جینی حکم یوشان دې او که فرق دې؟ د جمهور او ائمه ثلاث رانې دا ده. لکه چه په حدیث الباب کښې وضاحت دې چه د هلک د طرف نه شاتین او د جینی د طرف نه شاة واحدة، او د امام مالک رانې دا ده چه د دواړو دپاره یوه یوه بیزه ده پس هغوی په موطاء کښې د ابن عمر رضی الله عنهما دا عمل نقل کړې دې **«انه كان يعق عن ولد بشاة بشاة للذكور والاناث»** او په التعلیق الممجد کښې دا دی چه د جمهور مسلک یعنی عن الغلام شاتان وعن الجارية شاة د رسول الله ﷺ نه په ډیرو طرقو سره ثابت دې، خو د رسول الله ﷺ په فعل کښې روایات مختلف دی یعنی د حسنین رضی الله عنهما په باره کښې دواړه قسم روایتونه دی په بعض روایاتو کښې **«کبشا کبشا»** دې او په بعض کښې **«کبشین کبشین»** پس په ترمذی کښې دی چه **«عن علی بن ابی طالب رضی الله عنهما قال عقی رسول الله ﷺ بشاة الحدیث»** قال ابو عیسی هذا حدیث حسن غریب، وفي البذل عن الحافظ، واحتج مالک بما جاء ان النبی ﷺ عقی عن الحسن والحسین کبشا کبشا ولا حجة فيه فقد اخرج ابو الشیخ عن ابن عباس رضی الله عنهما بلفظ کبشین کبشین آه... زه وایم هم دغه شان د کبشینو والا روایت د ابن عباس رضی الله عنهما په نسائی کښې هم دې او په بعض کتابونو د مالکیانو کښې لکه ارشاد السالک کښې داسې دی **«العقیقة ذبح شاة»** او بیا وړاندې دی **«والافضل عن الذکر بشاتین»** یعنی اولی د هغوی په نزد هم دا ده چه د هلک د طرف نه شاتین او کړې شی او د ابن رشد مالکی میلان هم دې طرف ته دې لکه چه په اوجز کښې دی **«عن ام کرز الکعبیة رضی الله تعالی عنها قالت سمعت رسول الله ﷺ یقول عن الغلام شاتان مکافتان وعن الجارية شاة»**

مکافتان وعن الجارية شاة

[۲۸۳۴] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سَفِيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ حَبِيبَةَ بِنْتِ مَيْسَرَةَ، عَنْ أَمْرِ كُرْزِ الْكَعْبِيِّ، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "عَنِ الْغُلَامِ شَاتَانِ مُكَافَتَانِ وَعَنِ الْجَارِيَةِ شَاةٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ، قَالَ: مُكَافَتَانِ أَوْ مُقَارِبَتَانِ.

دام کرز الکعبیة نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل فیند هلک د طرف نه به دوه گدان یوشان عمروالا ذبحه کولی شی او د جینی د طرف نه به یوگد. ابوداود وائی چه د احمد نه مې اوریدلی دی چه وئیل ئې چه دمکافتان نه مراد دادې چه یو دبل سره مساوي وي یا ورته نزدې وي. امام ترمذی رضی الله عنه د دې حدیث نه پس فرمائی **«هذا حدیث حسن صحیح والعمل علیه... وروی عن النبی ﷺ ایضا انه عقی عن الحسن بن علی رضی الله عنهما بشاة»** آه

۱: سنن الترمذی للأصاحی ۱۷ (۱۵۱۶)، سنن النسائی للعقیقة ۲ (۴۲۲۱)، سنن ابن ماجه للذباتح ۱ (۳۱۶۲)، تحفة الأشراف: ۱۸۳۵۲، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۱/۶، ۴۲۲)، سنن الدارمی للأصاحی ۹ (۲۰۰۹) (صحیح)

شرح الحديث:

یعنی د هلك د طرف نه عقیقه دوه بیزي دي او د جینی د طرف نه یوه بیزه ده د (مکافتان) په شرح کښې مختلف اقوال دي، تقریبا درې اقوال دي ۱: داسې دوه بیزي چه خپل مینځ کښې په عمر کښې برابر وی په عمر کښې (وارة لوئی نه وې) حکاه المصنف عن الامام احمد ۲: داسې دوه بیزي چه برابر وی د هغه بیزو سره کومې چه په قربانی کښې کولې شی یعنی د عمر په اعتبار سره د هغې نه کم نه وی، قال الزمخشري ۳: داسې دوه بیزي چه برابر وی په اعتبار د ذبح یعنی چه دواره یو ځائی ذبح کړې شی، دا نه چه یو مثلا سحر ذبح کړی او دویم د ماښام په وخت روی ذک زید بن اسلم هذا ما فهمت من الشروح. والحديث أخرجه النسائي قال الشيخ محمد عوامه.

[۲۸۳۵] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُقْيَانٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَرِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَبَاعِ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَمْرِ كُرْزٍ، قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "أَقْرُوا الطَّيْرَ عَلَى مَكَانَتِهَا، قَالَتْ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: عَنِ الْعَلَامِ شَاتَانٍ وَعَنِ الْجَارِيَةِ شَاةٌ لَا يَضُرُّكُمْ أَذْكَرَانَا كُنْ أَمْرَانَا."

دام کرز الکعبیه نه روایت دي فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې مرغی دخپلو جالونه مه شړئ ام کرز وائی چه ما ترې داهم واوریدل چه دهلك دطرف نه به دوه گانو اورجینی دطرف نه په یوگر عقیقه کولې شی، او په دې کښې باک نشته چه دواره نران وي او که بنځي.

عن ام کرز رضی الله تعالی عنها قالت سمعت رسول الله ﷺ يقول اقروا الطير على مكاناتها (مکانات لره خو طریقو سره ضبط کړې شوې دې په فتحې د میم او کسري د کاف سره، او د دواړو فتح، په دې صورت کښې د دې معنی لیکلې دی..... بیضه، په فتح د میم او په ضم د کاف سره د دې تفسیر کړې شوې دې په اماکن سره، لهذا په رومبی صورت کښې به د حدیث معنی وی چه مارغان د هغوی په هگو باندي ناستې ته پریږدئ او برقرار ئې اوساتئ او په دویم صورت کښې مارغانو لره ناست پریږدئ د هغوی په جالو کښ، اوس دا چه په دې سره غرض د رسول الله ﷺ څه دې..... فقيل الغرض المنع عن زجر الطير وتنفيها من اماكنها اذ فيه ايداء الحيوان، یعنی هسي بغیر د څه وجې نه مارغانو لره مه پریشانه کوی د هغوی په چیرلو باندي، وقيل الغرض المنع عن الصيد ليلا لان الليل وقت راحتها، یعنی په شپه کښې دې د مارغانو ښکار اونکړې شی، شپه دهغوی د آرام وخت دې که ښکار کول وی نو په ورځ کښې کوی، وقيل الغرض المنع عن الطيرة یعنی د ښه او بد فال ویستلو دپاره هغوی لره د هغوی د ځائی نه مه پاسوی، (اذ لا طيرة في الاسلام)

(لا يضرکم اذکراناکن ام اناثا) یعنی په دې کښې هیڅ باک نشته که هغه نران وی او که بنځي والحديث عزاه المزی فی التحفة الی النسائی وابن ماجه قاله الشيخ محمد عوامه.

۱: سنن النسائي/العقیقه ۳ (۲۲۳، ۲۲۲)، سنن ابن ماجه/اللبائح ۱ (۳۱۶۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۴۷)، وقد أخرجه: دي/الأصلي ۹ (۲۰۱۱) (ضعيف)

[۲۸۳۶] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَزِيدٍ، عَنْ سَيَّاحِ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَمْرِ كُرْزٍ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "عَنِ الْغُلَامِ شَاتَانِ مِثْلَانِ وَعَنِ الْجَارِيَةِ شَاةٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا هُوَ الْحَدِيثُ وَحَدِيثُ سُفْيَانَ وَهُمْ.

دام کرز الکعبیة نه روایت دی فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی: دهلك دطرف نه به دوه گدان پوشان عمروالا ذبحه کولي شي اودجینی دطرف نه به یوگد. ابوداود وائی چه حدیث هم دا معتمد دي اودسفیان حدیث وهم دي.

قال ابوداؤد: هذا هو الحديث وحديث سفیان وهم.... د سفیان په روایت کنسې د عبیدالله نه پس د عن ابیه زیادت دي کوم چه د حماد په روایت کنسې نشته، مصنف هم د دي په باره کنسې فرمائی چه دا زیادت وهم دي. والحديث اخرجه الترمذی مختصرا واخرجه النسائی بتمامه ومختصرا، واخرجه ابن ماجه مختصرا، قاله المنذرى.

[۲۸۳۷] حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ النَّيْمِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ سَمْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "كُلْ غُلَامًا رَهِينَةً بِعَقِيْقَتِهِ تَذْبِیحُ عَنْهُ يَوْمَ السَّابِعِ وَيُحْلَقُ رَأْسُهُ وَيُدْمَى"، فَكَانَ قَتَادَةُ إِذَا سَأَلَ عَنِ الذَّمِّ كَيْفَ يُصْنَعُ بِهِ قَالَ: إِذَا ذُبِحَتِ الْعَقِيْقَةُ أَخَذْتَ مِنْهَا صُوفَةً وَاسْتَقْبَلْتَ بِهَا أَوْذَانَهَا، ثُمَّ تَوَضَّعَ عَلَى يَأْفُوخِ الصَّبِيِّ حَتَّى يَسِيْلَ عَلَى رَأْسِهِ مِثْلَ الْخَيْطِ، ثُمَّ يُغْسَلُ رَأْسُهُ بَعْدَ وَيُحْلَقُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا وَهُمْ مِنْ هَمَامٍ وَيُدْمَى، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: خُولِفَ هَمَامٌ فِي هَذَا الْكَلَامِ وَهُوَ وَهُمْ مِنْ هَمَامٍ، وَإِنَّمَا قَالُوا: يُسْمَى، فَقَالَ هَمَامٌ: يُدْمَى، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَلَيْسَ يُؤْخَذُ بِهَذَا.

دسمره ^{ذات} نه روایت دي چه رسول پاک فرمائیلی دی هر یوهلك خپلې عقیقي پورې کانړه کړي شوي دي دپیدائش په نومه ورځ به دهغه دطرف نه ذبحه وکړي شي اوسرېه ئې وخریلي شي اودماشوم سرېه دخاروي په وینه گنده کړي شي، اودقتاده نه چه به کله تپوس وکړي شوددم په باره کنسې چه څنگه کول پکاردي نوهغه به ورته وئیل: دخاروي دذبح کولو په وخت کنسې دخاروي دورئ نه لږه راواخلي اودرگونوپه وینه به خوشته کړي اودماشوم په سرباندي به ئې کيږدي تردي چه دتارپه شان وینه بهیدل دماشوم په سرباندي شروع شي نوبیابه ئې سرووینخل شي اوددي نه پس به اوخریل شي. ابوداود وائی چه د يدي لفظ دهمام وهم دي په اصل کنسې دا لفظ ویسمی دي همام تري یدمی جور کړې دي ابوداود وائی چه په دي باندي دهیچا عمل نشته.

﴿ كل غلام رهينة بعقيقة تذبح عنه يوم السابع ويحلق راسه ويدمى ﴾

شرح الحدیث:

اود ترمذی په روایت کنسې داسې دی، الغلام مرتهن بعقیقته، مرتهن د اسم مفعول صیغه ده په معنی د گانړه.

(۱) انظر حدیث رقم: (۲۸۳۴)، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۴۷) (صحیح)
(۲) سنن الترمذی للأضاحی ۲۳ (۱۵۲۲)، سنن النسائی للعقیقة ۴ (۴۲۲۵)، سنن ابن ماجه للذبائح ۱ (۳۱۶۵)، (تحفة الأشراف: ۴۵۸۱)، وقد أخرجه: صحیح البخاری للعقیقة ۲ (۵۴۷۲)، مسند احمد (۷/۵، ۸، ۱۲، ۱۷، ۱۸، ۲۲)، سنن الدارمی للأضاحی ۹ (۲۰۱۲) (صحیح)

د دې حدیث په شرح کښې خو اقول دی:

۱: عقیقه د هر نومولود دپاره لازم او ضروری ده څنگه چه د مرهون خیز د مرتهن په لاس کښې پاتې کیدل ضروری دی، تشبیه په اعتبار د لزوم ده گویا مقصود تاکید د عقیقې دې او په ظاهره د دې نه تائید کیری د قول وجوب کما ذهب الیه بعضهم.

۲: ماشوم د خپلو وینستو په تکلیف کښې گانړه یعنی مقید او بند دې ترڅو چه هغه زائل نه کړې شی (لهذا دا گنده وینسته د هغه نه زر زائله کول پکار دی بعض خلق په دې کښې ډیره سستی او تاخیر کوی مونږ د خپلو بعض استاذانو نه د دې حدیث په شرح کښې اووریدل چه د ماشوم عقیقه کولو سره بغیر د تاخیر د هغه مصیبتونه لري کول پکار دی.

۳: د امام احمد رحمته الله علیه نه نقل دی چه دا حدیث د شفاعت په باره کښې دې چه که د ماشوم د طرف نه عقیقه اونکړې شی او بیا هغه په وړوکوالی کښې مړ شی نو د خپل مور پلار په باره کښې شفاعت نه کوی (۱)

دا مخکښې تیره شوه چه د عقیقې اطلاق د ماشوم د سر په وینستو او په قربانی دواړو باندې کیری، په دې معانی کښې هم د بعض تعلق د وینستو سره دې اود بعضو دذبیحې سره.

عقیقه کښې د یوم السابع قید:

وراندې په حدیث کښې دی چه دا عقیقه دې په اوومه ورځ باندې ذبح کړې شی او هم دغه شان د سر وینسته هم په دې باندې امام ترمذی رحمته الله علیه فرمائی چه غوره خو هم دا ده چه عقیقه دې په اوومه ورځ باندې اوکړې شی او که په اوومه ورځ باندې نه شی کولې نو بیا دې په خوارلسمه ورځ باندې اوکړې شی.

او که په دې کښې هم نه شی کولې نو بیا دې په یویشتمه ورځ اوکړې شی، د وخت په دې تعیین کښې د فقهاء کرامو اختلاف دې د یوم السابع قید د مالکیانو په نزد خو معتبر او ضروری دې د هغوی په نزد عقیقه د یوم السابع نه مخکښې معتبر نه ده او نه د هغې نه روستو معتبر ده او د هغوی نه دا هم نقل دی چه کوم ماشوم د اوومې ورځ نه مخکښې مړ شی د هغه عقیقه ساقط ده او د ابن وهب رحمته الله علیه روایت د امام مالک نه دا دې چه که په سبع اول کښې عقیقه اونکړې شوه نو بیا دې په سبع ثانی کښې اوکړې شی او په

(۱) زما په یو یادداشت کښې د دې حدیث معانی داسې ملاؤ شوي: (کل غلام مرتهن بعقیقه).

۱: د عقیقه نه مراد ذبیحه بیزه وغیره چه ذبح کولې شی دا کنایه ده د لزوم او وجوب نه د هر ماشوم دپاره عقیقه لازم ده څنگه چه د مرهون خیز د مرتهن په لاس کښې کیدل ضروری دی ترڅو پورې چه قرض نه وی ادا شوي.

۲: هر ماشوم د شیطان د تصرفاتو سره مقید او ترلې شوي وی ترڅو چه د هغه عقیقه اونکړې شی نو گویا عقیقه په منزله د فدیې ده د هغې د وجې نه هغه ماشوم د شیطان د تصرفاتو نه خلاصی بیا مومی ۳: هر یو ماشوم د خپل مور پلار د سفارش نه بند وی ترڅو پورې چه د هغه مور پلار د هغه د طرف نه عقیقه کولو سره د هغه حق ادا نه کړی. دا تفسیر امام احمد بن حنبل رحمته الله علیه ته منسوب دې.

۴: د عقیقې نه مراد د ماشوم د سر وینسته دی، یعنی هر ماشوم د خپل سر د گنده وینستو سره مقید او ترلې شوي دې ترڅو پورې چه هغه وینسته د هغه نه زائل نه کړې شی لهذا عقیقه په خپل وخت کښې کول پکار دی په دې کښې روستو والي نه دې پکار.

دریم کښې هم څه باک نشته، کذا فی الفتح وکذا فی الدررقي.

د جنابله په نزد دا قید ضروری نه دې، د هغوی په نزد قبل السابع هم جائز دس (کما فی نیل السّارِب) و فی الروض المربع : ولا يعتبر الاسبوع بعد ذلك فيعق فی ای یوم اراد او د شوافعو مذهب په شرح اقناع کښې لیکلې شوې دې ویدخل وقته من الولادة ویسن یوم السابع، ویسقط بعد اکثر مدة النفاس و فیما بینهما تردد، او د احنافو مسلک لکه چه په جنتی کالی کښې دی چه د اوومې ورځ رعایت مستحب دې، اگر چه هر څومره ورځې تیرې شی، او د هغې صورت ئې داسې لیکلې دې چه کله د ماشوم عقیقه او کړې شی د ولادة د ورځې نه یو ورځ مخکښې او کړې شی مثلاً که د ماشوم د پیدائش د جمعې په ورځ وی نو چه کله هم عقیقه کوی نو د جمعې نه یو ورځ مخکښې د زیارت په ورځ دې او کړې شی (من هاشم البذل)

(وبدمی فکان فتادة اذا سئل عن الدم کیف یصنع به قال اذا ذبحت العقیقة الخ)

حدیث العقیقة کښې د لفظ یدمی تحقیق

په دې روایت کښې لفظ د (یدمی) راغلي دي د تدمیه نه، چه اخستلې شوې دې د (دم) نه یعنی وینه او مړلې شی، د فتادة رضی الله عنه نه سوال او کړې شو چه د دې څه صورت کیدل پکار دی نو هغوی اووې چه کومه بیزه ته ذبح کړی نو د هغې لږه شان وړئ دې واخلي او هغه وړئ دې د عقیقې د مړئ په رگونو باندي اولگوی او بیا دې دغه (مالوج) وړئ د ماشوم په تالو باندي او مړې تردې چه د هغې د سر نه د وینې څاڅکی او بهیرې او بیا دې د سر د وینځلو نه وروستو د هغې حلق او کړې شی

[۲۸۳۸] (۱) حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنِ سَعِيدٍ، عَنِ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ سَمُرَةَ بِنْتِ جَنْدَبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "كُلُّ غُلَامٍ مِدْهِنَةٌ بِعَقِيْقَتِهِ تُذَبِّحُ عَنْهُ يَوْمَ سَابِعِهِ وَيُحْلَقُ وَيُسَمَّى"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَيُسَمَّى أَصَحُّ كَذَا، قَالَ سَلَامُ بْنُ أَبِي مُطِيعٍ، عَنِ قَتَادَةَ، وَإِيَّاسَ ابْنَ دَعْفَلٍ، وَأَشْعَثَ، عَنِ الْحَسَنِ قَالَ: وَيُسَمَّى، وَرَوَاهُ أَشْعَثُ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَيُسَمَّى.

دسمرة بن جندب رضی الله عنه نه روایت دې دي چه رسول پاكا فرمائیلی دی هریو هلك خپلې عقیقې پورې گانړه کړې شوي دي دپیدائش په اومه ورځ به دهغه دطرف نه ذبحه کړي شي اوسر به ئې وخریلي شي اونوم به ورباندي کیخودلې شي ابوداود وائی چه یسمی لفظ زیات درست دې او همدارنگي سلام بن ابی مطیع دفتاده په واسطه او ایاس بن دغفل او اشعث دحسن نه نقل کړی دی چه وئیلی ئې دي ویسی او اشعث هم دحسن نه او هغه دنبی صلی الله علیه و آله نه ویسمی لفظ نقل کړي دي

وراندې په کتاب کښې دی مصنف فرمائی (وبدمی) لفظ د دې په روایت کښې د همام راوی وهم دې، پس د دې نه وروستو والا روایت کښې چه هغې لږه روایت کونکي سعید دې په ځانې د همام په دې کښې د (یدمی) په ځانې (یسمی) دې امام ابوداؤد رضی الله عنه فرمائی چه (یسمی) لفظ اصح دې

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۴۵۸۱) (صحیح)

(یدمی) لره د همام په وهم وئیلو باندي حافظ دا اشکال کړي دي چه دي ته وهم وئیل څنگه صحیح کيږي شی ځکه چه وړاندي په روایت کښي خو دا موجود دی، همام وائی چه کله به زمونږ د استاذ نه د دم په باره کښي سوال کولې شو چه د اڅنگه اوکړي شی، نو په دي باندي به هغوی په دغه طریقه بیان فرمائیله، دا ټول خو په ضبط د همام باندي دلالت کوي نه د هغه په وهم باندي، مگر دا چه اوئیلې شی چه په اصل حدیث کښي خو (یسمی) وو خو د هغې نه روستو قتاده د اهل جاهلیت د دم ذکر او کړلو نو بیا د همام په سوال باندي هغوی د هغې طریقه اوبنودله، خو همام باندي وهم راغلو چه هغوی د (یسمی) په ځانې د (یدمی) لفظ نقل کول شروع کړل، او بعض دا توجیه کړي چه دا منسوخ دي او یو توجیه د دي دا کړي شوي ده چه د دي نه مراد (یختن) دي چه ماشوم سنت کړي شی، خو د دي ټولو خبرو باوجود شراح لیکلي دي چه بعض علماء لکه ابن عمر، عطاء او قتاده رضی الله عنہم د استحباب تدمیه قائل وو. (والحدیث رواه الترمذی والنسائی وابن ماجه)

[۲۸۳۹] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سَبْرِينَ، عَنِ الرَّبَّابِ، عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ الضَّبِّيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَعَ الْغُلَامِ عَقِيْقَتُهُ فَأَهْرَبُوا عَنْهُ دَمًا وَأَمِيطُوا عَنْهُ الْأَذَى".

سلمان بن عامر رضی الله عنہ نه روایت دي چه رسول پاكا فرمائیلی دی دهلك په پیدا کیدوسره عقیقه کول مسنون دي تا سودهلك د طرف نه وینه توي کړي او گندگی لري کړي.

[۲۸۴۰] (۲) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا هِشَامُ، عَنِ الْحَسَنِ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: إِمَاطَةُ الْأَذَى حَلْقُ الرَّأْسِ.

دحسن رضی الله عنہ نه روایت دي فرمائی چه داماطة الاذي نه مراد سرخربل دي.

[۲۸۴۱] (۳) حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَقَّ عَنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ كَبْشًا كَبْشًا.

ابن عباس رضی الله عنہ نه روایت دي چه نبی صلی الله علیہ وسلم دحسن او حسین د طرف نه په یویو گو باندي عقیقه کړي وه.

(۴) عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما ان رسول الله صلی الله علیہ وسلم عَقَّ عَنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ كَبْشًا كَبْشًا د دي حدیث په بعض طرفو کښي (کبشین کبشین) دي لکه چه مخکښي ذکر شو. والحدیث اخرجہ النسائی، قاله المنذری.

۱: صحیح البخاري/العقیقه ۲ (۵۴۷۱)، سنن الترمذی/الأضاحی ۱۷ (۱۵۱۵)، سنن النسائی/العقیقه ۱ (۴۲۱۹)، سنن ابن ماجه/الذبائح ۱ (۳۱۶۴)، (تحفة الأشراف: ۴۴۸۵)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۴/۱۷، ۱۸، ۲۱۴)، سنن الدارمی/الأضاحی ۹ (۲۰۱۰) (صحیح)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۵۵۶) (صحیح)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۰۱۱)، وقد أخرجہ: سنن النسائی/العقیقه ۳ (۴۲۲۴) (صحیح) لکن فی رواية النسائی: «كَبْشَيْنِ كَبْشَيْنِ»، وهو الأصح

[۲۸۴۲] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلِيمَانَ الْأَنْبَارِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ يَعْنِي ابْنَ عَمْرٍو، عَنْ دَاوُدَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ أَرَاهُ، عَنْ جَدِّهِ هِقَالٍ: سَبَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْعَقِيْقَةِ فَقَالَ: "لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْعُقُوقَ"، كَأَنَّهُ كَرِهَ الْإِسْمَ وَقَالَ: مَنْ وُلِدَ لَهُ وَلَدٌ فَأَحَبَّ أَنْ يَنْسُكَ عَنْهُ فَلْيَنْسُكَ عَنِ الْغُلَامِ شَاتَانِ مُكَافِئَتَانِ، وَعَنِ الْجَارِيَةِ شَاةً، وَسَبَلَ عَنِ الْفَرَعِ قَالَ: وَالْفَرَعُ حَقٌّ وَأَنْ تَتْرُكُوهُ حَتَّى يَكُونَ بَكْرًا شَفْرَبًا ابْنُ فَخَاظٍ، أَوْ ابْنُ لَبُونٍ فَتَغْطِيَهُ أَرْمَلَةٌ أَوْ تَحْمِلَ عَلَيْهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَدْبَحَهُ فَيَلْزَقَ لَحْمَهُ بِوَبْرَةٍ، وَتَكْفِي إِيَّاءَكَ وَتَوَلِّهُ نَاقَتَكَ.

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه او هغه غالباً دده دنيکه نه روایت کوي فرمائي چه دني عليه السلام نه د عقيقي په باره کښې تپوس وکړي شونو او نبي فرمائيل: دالله تعالی عقوق خوښ نه وي، زما خيال دې چه دانوم ئې خوښ نه شو اوبيا ئې اوفرمائيل دچاچه بچې پيدا شي او هغه دخپل بچي دطرف نه قرباني کول غواړي نودهلك دطرف نه دې دوه چيلی ذبح کړي اودجينئ دطرف نه دې يوه چيلئ ذبح کړي بيا ترې دفرع متعلق تپوس اوکړې شو نووئې فرمائيل فرع حق ده که چرې تاسو داپريږدئ تر دې چه هغه اوښ ديوکال شي ياد دوو کالوشي اوبيا دغه اوښ غريبانانو او کوندو ته ورکړئ پائې دجهاد دپاره صدقه کړئ نو هغه ددې نه بهترده چه تاسو دده دپيدائش نه پس دې ذبح کړئ اودده غوښه دده په وړئ پورې انختلي وي (يعنی کمه وي او خپل لوبښي اولته کړئ اودده مور ليوئې کړئ.

﴿ عن عمرو بن شعيب عن أبيه عن جده قال سئل النبي ﷺ عن العقيقة فقال لا يحب الله العقوق ﴾

شرح الحديث:

يعنی د رسول الله ﷺ نه د عقيقي په باره کښې تپوس اوکړې شو نو هغوی اوفرمائيل الله پاک عقوق لره نه خوښوي، عقيقه او عقوق دواړه د يو اصل طرف ته راجع دي يعنی عق چه د هغې معنی د عق او د شق دي او هم د دې نه اخستلې شوې دې عقوق الوالدين، وړاندې په روايت کښې دي د راوی کلام چه کيدې شي ستاسو دا نوم خوښ نه وي، د راوی دا خيال صحيح دې ځکه چه هم په هغه حديث کښې د دې نه پس رسول الله ﷺ د عقيقي حکم فرمائي خو د عقيقي په لفظ سره نه بلکه په لفظ د نسک سره، لهذا په دې کښې اشاره شوه دې طرف ته چه د عقيقي په ځانې دې نسيکه يا يو بل لفظ سره تعبير اوکړې شي. کوم خلق چه د عقيقي د استحباب قائل نه دي بلکه دا مکروه گنړي هغوی د دې روايت نه هم استدلال کړې دې خو دا استدلال ضعيف دې، بيا وړاندې په حديث کښې د فرع په باره کښې سوال او جواب دې چه د هغې شرح په ﴿باب العتيرة﴾ کښې تيره شوې ده، په هغې کښې يو لفظ ﴿شغريا﴾ دې د دې په باره کښې د شارحانو تحقيق دا دې چه دا لفظ مصحف دې او صحيح زخزبا دې اي غليظا قويا، هم دغه شان په دې کښې يو لفظ دا دې ﴿وتوله ناقتك﴾ دا توله د وله نه ماخوډ دې وهو ذهاب العقل لاجل فقدان الولد... يعنی د بچي د مړ

کيدود وجې نه د هغه د مور ليوئې کيدل.
والحديث اخرجه النسائي قاله المنذرى.

۱: سنن النسائي للعقيقة ۱ (۴۲۱۷)، (تحفة الأشراف: ۱۹۱۶۹، ۸۷۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۸۲/۲، ۱۸۳، ۱۹۴) (حسن)

[۲۸۴۳] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ ثَابِتٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي بُرَيْدَةَ يَقُولُ: كُنَّا فِي الْجَاهِلِيَّةِ إِذَا وُلِدَ لِأَحَدِنَا غُلَامٌ ذَبَحَ شَاةً وَلَطَخَ رَأْسَهُ بِدَمِهَا، فَلَمَّا جَاءَ اللَّهُ بِالْإِسْلَامِ كُنَّا نَذْبَحُ شَاةً وَنَحْلِقُ رَأْسَهُ وَنَلَطُّهُ بِرُغْفَرَانِ.

د عبد الله بن بریده رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه د ابو بریده نه مې اوریدلی دی چه وئیل ئی کله چه به د جاهلیت په زمانه کښې په مونږ کښې د یوکس خوئی او شو نوچیلی به ئی ذبح کړله او د ماشوم سر به ئی د دې په وینه باندي گنده کړو خوهر کله چه الله تعالی اسلام راوستلو نو مونږ به چیلی حلال کړو او د ماشوم سر به مو وخرلو او زعفران به مو پرې ولگول

(سمعت ابی بریده یقول کنا فی الجاهلیة اذا ولد لاحدنا غلام الخ)

بریده رضی اللہ عنہ په ترکیب کښې بدل واقع شوې دې د (ابی) نه یعنی عبد الله بن بریده فرمائی چه ما د خپل والد صاحب بریده نه واوریدل د دې روایت مضمون په شروع کښې تیر شو.

کِتَابُ الصَّيْدِ

د ښکار د احکامو بیان

کذا فی بعض النسخ او مونږ سره چه کومه نسخه هنډیه ده په هغې کښې دی (آخر الاضاحی، اول الصيد)

بَابُ فِي اخْتِذَا الْكَلْبِ لِلصَّيْدِ وَغَيْرِهِ

د ښکار وغیره د پاره د سپی ساتلو بیان

(من اتخذ کلبا الا کلب ماشیة او صید او زرع انتقص من اجره کل یوم قیراط)

[۲۸۴۴] (٢) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنِ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ اخْتَذَ كَلْبًا إِلَّا كَلْبَ مَا شِئْتَهُ أَوْ صَيْدًا أَوْ زَرْعًا انْتَقَصَ مِنْ أَجْرِهِ كُلِّ يَوْمٍ قِيرَاطٌ".

د ابو هریره رضی اللہ عنہ نه روایت دې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائی دی خو ک چه سپی وساتي علاوه دهغه سپی نه چه د خارو و دنگهبانی دپاره وي یاد ښکار دپاره یادز میداري دپاره وي، نوده د اجر نه به هره ورځ د یو قیراط په مقدار باندي اجر کمولې شي

د حدیث نه معلومه شوه چه د ښکار دپاره سپی پالل او بیا د هغې په ذریعه ښکار کول جائز دی. د ترجمه الباب نه د مصنف غرض هم دا دې، مسئله اجماعی ده خپله په قرآن کریم کښې موجود ده، (یسنلونک ماذا احل لهم قل احل لكم الطیبات وما علمتم من الجوارح مکلین آلیة) په دې حدیث کښې دا دی چه خو ک د امور ثلاثه مذکوره فی الحدیث نه علاوه په بل غرض سره سپی اوساتي نو هره ورځ به د هغه د ثواب نه یو قیراط کمولې شي

١: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۶۶) (حسن صحیح)

٢: صحیح مسلم المساقاة ۱۰ (۱۵۷۵)، سنن الترمذی للصید ۴ (۱۴۹۰)، سنن النسائی للصید ۱۴ (۴۲۹۴)، (تحفة الأشراف: ۱۵۲۷۱، ۱۵۲۹۰)، وقد أخرجه: صحیح البخاری للحرث ۳ (۲۳۲۳)، وبدء الخلق ۱۷ (۳۳۲۴)، سنن ابن ماجه للصید ۲ (۳۲۰۴)، مسند احمد (۲/۲۶۷، ۳۴۵) (صحیح) ولس عند (خ) «أوصید» إلا معلقاً

د قیراط او قیراطان د اختلاف توجیه:

په دې روایت کښې قیراط په صیغه د مفرد دې، او د دې حدیث په دویم طریق کښې یعنی (من طریق الزهري عن سعيد بن المسيب) چه د مسلم په روایت کښې دې په هغې کښې د قیراط په ځانې قیراطان دې، په دې باره کښې په بذل کښې داسې دی. واختلفوا فی اختلاف الروایتین فی القیراطین والقیراط فقیل الحکم للزائد لکونه حفظ مالم يحفظه الآخر.... یعنی د زیادت والا روایت راجح دې، یا دې داسې او نیلی شی چه په شروع کښې رسول الله ﷺ د یو قیراط په باره کښې او فرمائیل وعید لره د سپکولو دپاره بیانی د نفرت د موکد کولو دپاره دوه قیراط او فرمائیل خو یو روای صرف د یو قیراط والا روایت واوریدلو او دویم راوی د قیراطین والا لفظ واوریدو، فکل روی بما سمع (۳) کلاب مختلف وی قلیل الضرر او کثیر الضرر، په اول کښې د یو قیراط نقصان او په دویم کښې د دوه قیراطو نقصان ۴: د قیراطان والا روایت په مدینه طیبه باندي محمول دې او د قیراط والا روایت په غیر مدینه باندي وغیر ذلک من التوجیحات.

والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی قاله المنذری.

[۲۸۴۵] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغْفَلٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَوْلَا أَنَّ الْكِلَابَ أُمَّةٌ مِنَ الْأُمَمِ لَأَمَرْتُ بِقَتْلِهَا فَأَقْتُلُوا مِنْهَا الْأَسْوَدَ الْبَيْهَمَ".

د عبدالله بن مغفل رضي عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی که چرې داسې نه و چه سپی هم یو مخلوق دې یعنی دوی هم دالله په عالم کښې یو عالم دې نو مابه خامخا ددوی دقتل کولو حکم کړې وو اوس تاسوپه سپوکښې خالص تور رنگ والاسپی وژنئ
 ﴿عن عبدالله بن مغفل رضي عنه.... لولا ان الكلاب امة من الامم لامرت بقتلها الخ﴾

شرح الحدیث:

په شروع کښې رسول الله ﷺ د سپو په باره کښې شدت اختیار او فرمائیلو او د ټولو د قتل کولو حکم ئې ورکړو پس د دې نه روستو روایاتو کښې راځی جابر رضي عنه فرمائی تر دې چه که د بانډو نه راتلونکو زنانو سره به هم سپی وو نو مونږ به هغه هم قتل کولې بیا روستو د رسول الله ﷺ په حکم کښې بدلون راغلو او د مخکښې حکم نه ئې منع او فرمائیله او دا ئې او فرمائیل چه سپی هم د مخلوقاتو یو نوع ده نو اول خود مخلوق پوره نوع قتلول د انسان د وس خبره نه ده، او دویم دا چه د الله پاک د هر مخلوق په پیدا کولو کښې مصلحت وی په دې وجه هم ټولو لره قتل کولو مناسب نه دی خو په دې کښې چه کوم یو ډیر زیات شریر او څبیث وی یعنی کلب اسود هغه قتل کوی امام نووی رحمته الله علیه فرمائی چه د کلب عقور په قتل باندي د

۱، خو دا جواب به هله صحیح وي چه د حدیث راوی بیل بیل وي نو چه کله صحابی یو دې بیا به دا جواب صحیح نه وی او دا هم ده چه د سپی په سلسله کښې رومی خو تشدید زیات کړې شوي وو روستو آسان کړې شوي وو

۲: سنن الترمذی/الصید ۳ (۱۴۸۶)، سنن النسائی/الصید ۱۰ (۴۳۸۵)، سنن ابن ماجه/الصید ۲ (۳۲۰۵)، تحفة الأشراف: سنن الترمذی/الصید ۳ (۱۴۸۶)، سنن النسائی/الصید ۱۰ (۴۳۸۵)، سنن ابن ماجه/الصید ۲ (۳۲۰۵)، تحفة الأشراف: ۹۶۶۹، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۶، ۸۵/۴، ۵۶، ۵۷)، دي/الصید ۲ (۲۰۴۹) (صحیح)

ټولو علماء کرامو اتفاق دې خو چه کوم سپې بې ضرره وی د هغې په قتل کښې اختلاف دې
د امام الحرمین رائي دا ده چه د شریعت استقرار د قتل په منسوخ کیدو باندي شوي دې
اوس د هیخ یو سپی قتل جائز نه دې تر دې چه د اسود بهیم قتل هم جائز نه دې خو په دې
رائي باندي ملا علی قاری ته انشراح نشته هغوی فرمائی چه دا دلیل ته محتاج دې (بذل)
والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذری.

[۲۸۴۶] () حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: أَمَرَنِي اللَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَتْلِ الْكِلَابِ حَتَّىٰ إِنْ كَانَتِ الْمَرْأَةُ تَقْدَمُ مِنَ الْبَادِيَةِ يَعْنِي بِالْكَلْبِ فَنَقْتُلُهُ، ثُمَّ نَهَانَا عَنْ قَتْلِهَا، وَقَالَ: "عَلَيْكُمْ بِالْأَسْوَدِ".

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله حکم کړې وو د وژلو د سپو باندي تردې پورې
چه پوښځې به د ځنگل نه ځان سره سپې راوستو نومونږ به سپې وژلو بیانې صلی الله علیه و آله د سپو
د وژلو نه منع او فرمائیله او وئې فرمائیل چه صرف تک تور سپې وژئې.

بَابُ فِي الصَّيْدِ

د بنکار کولو بیان

صید کله د مصید په معنی استعمالیږي او کله په معنی مصدری کښې، دلته هم دا
مراد دې، یعنی کلب معلم او د غشي لینده وغیره په ذریعه د بنکار کولو په بیان کښې.
د ذکاة دوه قسمونه اختیاری او اضطراری:

په دې ځان پوهول پکار دی چه د ذکاة شرعا دوه قسمونه دی اختیاری او اضطراری.
اختیاری د حیوان مقبوض او مانوس دپاره وی، او اضطراری د غیر مقبوض او غیر
مانوس څاروی دپاره لکه بنکار، او لکه چه د دې نه مخکښې هم تیره شوه چه ذکاة
اختیاری خو خاص دې د لبه او حلق سره او ذکاة اضطراری نوم دې د مطلق جرح دپاره که
هغه په هر ځانې کښې وی د بدن نه او د جرح نه مراد د وینې بهیدل دی.

د دې تمهید نه پس اوس په دې باندي ځان پوهه کړئ چه ذکاة اضطراری چه په
کومو آلاتو باندي کیږي هغه درې دی حیوان الجارح، المحدد یعنی هر تیره څیز لکه
غشي، المثقل کالحجر والخشب، په دې کښې چه کوم رومی دوه څیزونه دی په هغې
باندي د څلور وارو امامانو په نزد بنکار کول جائز دی او دریم څیز..... یعنی مثقل د دې
په ذریعه بنکار کول د ائمه اربعه او جمهورو په نزد جائز نه دی، خو د بعض علماء شام لکه
مکحول او اوزاعی رضي الله عنه په نزد جائز دی، هم په دې وجه د هغوی په نزد صید معراض او هم
دغه شان صید بندقه (یعنی د ټوپک بنکار) جائز دي. (سبل السلام)

بیا د دې نه پس ځان پوهول غواړي چه که ذکاة اضطراری د حیوان جارح په ذریعه
وی نو په هغې کښې شرط دا دې چه هغه جارح معلم وی، او دا امر متفق علیه دې الله پاک
فرمائی: ﴿وما علمتم من الجوارح مكلین﴾ او علامت د تعلیم په سپی کښې د دوه خبرو بیا

موندل دی اول (امساک علی صاحبه) یعنی عدم الاکل چه هغه سپې د ښکار نه هیڅ او نه خوری او دویم خیز دا دې چه کله د ښکار طرف ته هغه پریخودلې شی نو فورا هغه طرف ته لار شی، او کله چه راوغوښتلې شی او منع کړې شی نو منع شی دا د درې امامانو مسلک دې او د امام مالک په نزد د تعلیم کلب دپاره امساک علی صاحبه ضروری نه دې، صرف د امر ثانی بیا موندل کافی دی، او علامت د تعلیم د طیر په شان د بازی وغیره کښې دا دې چه کله هم هغه راوبللې شی نو فورا راشی، او دلته امساک بالاتفاق ضروری نه دې. (بذل)
 د ذکاة اضطراری شرطونه بالتفصیل په (بذل) کښې ذکر دی هلته دې او کتلې شی
 په تسمية عند الذبح وعند الارسال کښې اختلاف دائمة:

او په دې هم ځان پوهه کول پکار دی چه دا ارسال کلب د ښکار په وخت او هم داسې غښې چلول په منزله د چرې چلولو دی د ذبح په وخت کښې په دې وجه ارسال او رمی سهم په وخت تسمية ضروری ده لکه چه په احادیث الباب کښې مصرح ده، (رفی الهدایة ۴ / ۱۶۸) واذ ارسل کلبه المعلم او بازیه و ذکر اسم الله تعالی عند ارساله فاخذ الصيد وجره فما حل اكله لما روينا من حديث عدی بن مسعود ولان الکلب او البازی آله والذبح لا يحصل بمجرد الآلة الا بالاستعمال، وذلك فيهما بالارسال فنزل (الارسال) منزلة الرمي وامرار السكين فلا بد من التسمية عنده ولو تركه ناسيا حل ايضا آه د نورو امامانو په دې کښې اختلاف هم دې او هغه دا دې لکه چه د (بذل) په حاشیه باندي دی و اختلاف نقلة المذاهب فيه، والصحيح من مذاهبهم ان ترك التسمية عمدا لا يجوز عندنا وعند مالك ويجوز ان كان الترك سهوا فالتسمية شرط عند الذكر وعند الشافعي يجوز مطلقا في السهو والعمد فهي سنة عنده واما احمد فانه فرق بين الصيد والذبيحة ففي الذبيحة هو معنا و في الصيد لا يجوز مطلقا (من الاوجز)

[۲۸۴۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَيْسَى، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قُلْتُ: إِنِّي أُرْسِلُ الْكَلْبَ الْمُعَلَّمَةَ فَتُمْسِكُ عَلَيَّ أَفَأَكُلُ، قَالَ: "إِذَا أُرْسِلْتَ الْكَلْبَ الْمُعَلَّمَةَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَكُلْ مِمَّا أَمْسَكَنَ عَلَيْكَ، قُلْتُ: وَإِنْ قَتَلَنَ، قَالَ: وَإِنْ قَتَلَنَ مَا لَمْ يَشْرِكْهَا كَلْبٌ لَيْسَ مِنْهَا، قُلْتُ: أُرْمِي بِالْبِعْرَاضِ فَاصِيبُ أَفَأَكُلُ، قَالَ: إِذَا رَمَيْتَ بِالْبِعْرَاضِ، وَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَاصَابَ فَخَرَّقَ فَكُلْ وَإِنْ أَصَابَ بَعْرَضَهُ فَلَا تَأْكُلْ."

د عدی بن حاتم ^{رضی اللہ عنہ} نه روایت دې فرمائی چه د نبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} نه مې تپوس او کرو ماووئیل زه په ښکار پسې داسې سپې لیرم چه تعلیم ورته ورکړې شوې وي هغه په خوله کښې نیولې وي اوماته ئې راوړي ایازه داخورلې شم نبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} ورته او فرمائیل کله چه ته تعلیم یافته سپې اولیبري اود الله نوم یاد کړي نوخوره هر هغه شی چه هغه ئې تاته راوړي ماووئیل که هغه ئې

۱: صحيح البخاري للوضوء ۲۳ (۱۷۵)، والبيوع ۳ (۲۰۵۴)، والصيد ۱ (۵۴۷۵)، ۲ (۵۴۷۶)، ۳ (۵۴۷۷)، ۷ (۵۴۸۳)، ۹ (۵۴۸۴)، ۱۰ (۵۴۸۵)، صحيح مسلم للصيد ۱ (۱۹۲۹)، سنن الترمذي للصيد ۱ (۱۶۶۵)، ۳ (۱۶۶۷)، ۴ (۱۶۶۸)، ۵ (۱۶۷۹)، ۶ (۱۶۸۰)، ۷ (۱۶۸۱)، سنن النسائي للصيد ۱ (۴۲۷۴)، ۲ (۴۲۷۵)، ۳ (۴۲۷۶)، ۸ (۴۲۷۷)، ۲۱ (۴۲۱۷)، سنن ابن ماجه للصيد ۳ (۳۲۰۸)، ۵ (۳۲۱۲)، ۶ (۳۲۱۳)، ۷ (۳۲۱۵)، (تحفة الأشراف: ۲۰۴۵، ۹۸۵۵، ۹۸۷۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۵۷۴، ۲۵۷۵، ۲۵۸، ۲۵۹، ۳۷۷، ۳۷۹، ۳۸۰)، سنن الدارمي للصيد ۱ (۲۰۴۵) (صحيح)

مړ کړې وي نووې فرمائیل اگر که مړ کړې وي ترخوچه غیر بنسکاري سپې ورسره شریک شوي نه وي، عدي وائی چه ماییاتپوس او کروزه په غشي باندې بنسکارولم نو ایادا حلال دې نبی ﷺ او فرمائیل کله چه ته په غشي بنسکار اولي او دالله نوم دي پرې یاد کړې وي او په هغې اولرې اوشلیدلی وي او په تیرو لگیدلې وي نو هغه خوره او که په تیرونه وي لگیدلې نومه ئې خوره.

«عن عدی بن حاتم رضی الله تعالی عنه قال سالت النبی ﷺ فکل مما امسکن علیک»

د تعلیم کلب په باره کښې د جمهورو او امام مالک ﷺ د دلیل:

دا حدیث د ائمه ثلاثه دلیل دې چه د کلب معلم په ذریعه بنسکار کولو کښې عدم اکل ضروری دې، او دا روایت د مالکیانو خلاف دې د امام مالک ﷺ استدلال د راروان حدیث نه دې چه د ابو ثعلبة الخشني ﷺ دې چه په هغې کښې داسې دی «اذا ارسلت کلبک و ذکرک اسم الله تعالی فکل وان اکل منه» امام نووی ﷺ په شرح د مسلم کښې فرمائی چه جمهور علماء کرامو د عدی بن حاتم ﷺ حدیث مقدم ساتلې دې د ابو ثعلبة ﷺ په حدیث باندې، ځکه چه د عدی ﷺ د دې نه اصح دې (متفق علیه) او بعض علماء کرامو د ابو ثعلبة ﷺ د حدیث داسې تاویل کړې دې چه دلته د خوراک نه مراد عین د بنسکار په وخت د هغه سپې خوراک مراد نه دې بلکه مراد دا دې چه په شروع کښې هغه سپې هغه بنسکار لره د وژلو نه فارغ شو او بیایې چه روستو هغه بنسکار هلته بیاموندو نو هغه وخت ئې د هغې نه خوراک شروع کړو، پس د هغه دا خوراک بد نه دې.

«قلت ارمی بالمعراض فاصیب افاکل» الخ... د معراض په تفسیر کښې اختلاف دې،

ابن التین فرمائی یعنی هغه عصا چه د هغې په سوکه کښې تیره خیز لگیدلې وی اوسپنه وغیره، او امام نووی ﷺ فرمائی هغه یو دروند لرگې وی، یا همساء چه د هغې په سوکه باندې تیره خیز لگیدلې وی، او کله ساده وی بغیر د تیره سوکې نه، زه وائم چه د دې مثال په نیزه (سوکې والا همساء) سره هم ورکولې شی هغه هم یو همساء وی چه د هغې په سوکه باندې تیره اوسپنه لگیدلې وی، بهر حال په حدیث کښې دا دی چه که په معراض سره بنسکار او کړې شی نو که بنسکاره لره د هغې تیره ځانې لگیدو سره زخمی شی او په هغې کښې نفوذ او کړی نو بیاهغه بنسکار حلال دې هغه خورلې کیدې شی، او که هغه معراض په پلن والی په هغه بنسکار باندې لگیدلې دې نو حرام دې، د هغې خوراک جائز نه دې، ځکه چه په دې صورت کښې به هغه وقید وی، الله پاک فرمائی «والمحنقة والموقوذة والمتردية» او موقوذة هغه بنسکار ته وئیلې شی چه په منقل او بغیر سوکه (پس خیز) باندې اووژلې شی.

د ټوپک بنسکار او په هغې کښې اختلاف:

جمهور د صید بالندقه په حرمت باندې د دې حدیث نه استدلال کړې دې او په دې کښې د اوزاعی او مکحول وغیره اختلاف دې لکه چه مخکښې تیر شو. لهذا دا حدیث د هغوی خلاف دې.

ﷺ: دا عدی بن حاتم ﷺ د حدیث راوی د مشهور سخی حاتم طائی خوئی دې، دا په

معمرينو کښي دي، د هغوی په باره کښي ليکلي شوي دي چه هغوی د يو سل او اتيا کالو عمر بيا موندلې دي، هغوی د خپل خان په باره کښي فرمائي چه د کله نه زه په اسلام کښي داخل شوي يم د هغه وخت نه اوسه پورې د يو مونخ اقامت هم نه دي شوي مگر دا چه زه به هغه وخت په اودس کښي اوم (تهذيب التهذيب)

والحدیث اخرجہ البخاری والترمذی والنسائی وابن ماجه وقاله المنذری

[۲۸۴۸] (۱) حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا ابْنُ فَضِيلٍ، عَنْ يَبَّانٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قُلْتُ: إِنَّا نَصِيدُ بِهَذِهِ الْكِلَابِ، فَقَالَ لِي: "إِذَا أُرْسِلَتْ كِلَابُكَ الْمَعْلَمَةَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا فَكُلْ مِمَّا أَمْسَكَنَ عَلَيْكَ، وَإِنْ قَتَلَ إِلَّا أَنْ يَأْكُلَ الْكَلْبُ فَإِنْ أَكَلَ الْكَلْبُ فَلَا تَأْكُلْ فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَكُونَ إِثْمًا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ."

دعدي بن حاتم نه روایت دي فرمائي چه دنبي ﷺ نه مي تپوس او کړوچه مونږ په دي سپوباندي ښکار کوو ماته ئې او فرمائيل کله چه خپل پوهه کړې شوي سپي اوليري او دالله نوم ورباندي واخلي نوخه چه درته هغه ساتلي راوړي نوخوره ئې اگرکه مړ وي مگر ترخوچه سپي پخپله نه وي خوړلې او که چرې سپي ترې خوړلې وي نوبيا ئې مه خوره خکه چه په دي کښي دا احتمال دي چه دانښکار به دي سپي دخپل خان دپاره کړې وي

(عن عامر عن عدی بن حاتم رضی الله تعالی عنه قال : سألت رسول الله ﷺ الخ)

د صحیح مسلم د یو حدیث د جملې تشریح:

د عدی بن حاتم رضی الله عنه دا حدیث کوم لره چه د هغه نه روایت کونکي عامر شعبي دي په ډيرو طرقو سره په صحیح مسلم او نسائی کښي هم دي او په دي روایاتو کښي صحیح مسلم او نسائی کښي يو روایت داسې دي: (حدثنا الشعبي قال سمعت عدی بن حاتم وكان لنا جارا و دخيلا و ربيطا بالنهرين..... انه سال النبي ﷺ الحديث) په دي کښي د جار او د دخيل معنی خو ښکاره دي جار گاونډی او دخيل هغه انسان چه د چا سره خصوص تعلق ساتی او د هغه په امورو کښي د دي معاون او مشير وی، خو د ربيط په باره کښي امام نووی داسې ليکلي دي: (والربيط ههنا بمعنى المرابط وهو الملازم والرباط الملازمة، قالوا والمراد هنا ربط نفسه على العبادة وعن الدنيا) آه او قاضي عياض رحمته الله په خپله شرح کښي د ربيط صرف رومي معنی ليکلي ده او هم په هغې ئې اکتفاء کړې ده. پس په هغې کښي دي (والربيط هنا المرابط الملازم من الرباط) آه په ظاهر کښي امام نووی رحمته الله هم دا معنی اختيار کړې ده پس هغوی رومي دي معنی لره ليکلو سره نورې معنی چه ليکلي دي هغه ئې (قالوا) سره ليکلي دي يعنی د بعضو شارحانورائي دا ده، مرابط وائی په سرحد باندي څو کڼ کونکي ته لکه چه په کتابونو د احاديثو کښي دي او مشهوره ده، او نورې معنی کوم چه امام نووی رحمته الله ليکلي دي د هغې حاصل يعنی هغه انسان چه زاهد او منقطع عن الدنيا وی، او هر وخت په عبادت کښي

۱: صحیح البخاري/الصعيد ۷ (۵۴۸۳)، ۱۰ (۵۴۸۷)، صحیح مسلم/الصعيد ۱ (۱۹۲۹)، سنن ابن ماجه/الصعيد ۳ (۳۲۰۸)، (تحفة الأشراف: ۹۸۵۵)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۵۸۷۴، ۳۷۷) (صحیح)

مشغول اوسیرې، خو د دې معنی د دخیل سره هیڅ جوړ نه پاتې کیږي. او د دې زیبطا بالنهرین تعلق، والله اعلم... په ظاهره د سمعت نه دې یعنی شعبی رضی الله عنه فرمائی چې ما دا حدیث د عدی بن اتم نه چې زمونږ گاونډی او دخیل وو هغه وخت واوریدو چې کله هغه په مقام د نهرین باندي مرابط وو. (۱) یعنی څوکئ ئې کوله او کیدې شی چې مطلق د هغوی صفت بیانول مقصود وی د جار او دخیل په شان، او نهرین ظاهره هم دا ده چې دا د یو ځانې نوم دې چې د هغې وضاحت خو تر اوسه پورې یو ځانې کښې هم نه دې ملاؤ شوې خو په معجم البلدان کښې د تهران نوم راغلې دې چې د هغې په باره کښې هغوی لیکي (من قرى اليمن من ناحية ذمار) آه کیدې شی چې په روایت کښې د نهرین نه مراد هم دا وی والله اعلم

[۲۸۴۹] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَاصِمِ الْأَحْوَلِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا رَمَيْتَ بِسَهْمِكَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَوَجَدْتَهُ مِنَ الْغَدَى، وَلَمْ تَجِدْهُ فِي مَاءٍ وَلَا فِيهِ أَثَرٌ غَيْرَ سَهْمِكَ فَكُلْ، وَإِذَا اخْتَلَطَ بِكَلَابِكِ كَلْبٌ مِنْ غَيْرِهَا فَلَا تَأْكُلْ لَا تَدْرِي لَعَلَّهُ قَتَلَهُ الَّذِي لَيْسَ مِنْهَا".

د عدی بن حاتم رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی کله چې خپل غشی اولی اودالله نوم واخلي او بنکار صبا پیدا کړي او په اوبو کښې نه وی پریوتلې اودغشی نه علاوه دبل زخم نښه هم په کښې نه وی نو هغه خوره خو کله چې ستادسپي سره بل سپي په کښې شریک شوې وي نو ته هغه مه خوره ځکه چې تاته پته نشته کیدې شي چې دابنکار دغه بل سپي وژلی وي

(۱) إذا رميت سهمك وذكرت اسم الله فوجدته من الغدو لم تجده في ماء ولا فيه اثر غير سهمك فكل

بنکار که دغشی د لکیدو نه پس غائب شی نو څه حکم دې:

یعنی که یو انسان په بنکار باندي غشی اوچلوی او بنکار په هغې باندي او هم لگی خو هغه وخت بنکار د نظر نه غائب شی، بیا په بله ورځ هغه یو ځانې کښې مړ ملاؤ شی په دې شرط چې په اوبو کښې نه وی، او دویم شرط دا چې په هغه کښې ستا د غشی نه علاوه د بل غشی اثر نه وی نو هغه خورلې شي

په دې حدیث کښې دوه شرطونه ذکر کړې شوې دی یو دا چې هغه بنکار اوبو ته او نه غورځیږي دا اوبو ته غورځیدل کله مضر دی؟ په دې کښې د امامانو اختلاف دي، د احنافو او حنابلو په نزد هر صورت کښې مضر دې برابره خبره ده که هغه جراحت چې کوم بنکار ته رسیدلې دې د هلاکت سبب وی او که نه وی په دې شرط چې هغه اوبو په دومره مقدار کښې وی چې د بنکار دپاره قاتلې وی، د امام احمد رضی الله عنه مشهور روایت هم دا دي او

(۱) لکه چې د امام ابوداؤد په روایت کښې دی عن ابی سالم الجیشاني عن عبدالله بن عمرو رضی الله عنه یذكر ذلك وهو مع مرابط الحصن باب الیون. دلته هم دا دی چې ابوسالم جیشانی دا حدیث د عبدالله بن عمرو بن العاص رضی الله عنه نه هغه وخت واوریدو چې کله هغه د هغوی سره په حصن باب الیون کښې څوکئ کوله (کتاب الطهارة باب ما ینهی عنه ان یستنجی به)

(۱) انظر حدیث رقم: (۲۸۴۷)، (تحفة الأشراف: ۹۸۶۲) (صحیح)

دویم روایت د امام احمد نه دا دې چه که جراحت سبب د هلاکت وی نو بیا وقوع فی الماء مضر نه دې، هم دا قول دې د امام شافعی او د امام مالک رضی اللہ عنہما (اوجز) او دویم شرط کوم چه په دې حدیث کښې ذکر شوی دې چه په هغې کښې ستا د غشی نه علاوه د بل د غشی اثر نه وی دا شرط متفق علیه بین الأئمة الاربعة دې لکه دا خبره بنکاره ده د شارحینو د کلام او د کتب الفروع نه، د بنکار د غیبت والا مسئله کښې یو دا هم اختلاف دې چه خومره غیبت مغتفر دې ددې وجې نه امام بخاری رضی اللہ عنہ باب ترلې دې «باب الصيد اذا غاب عنه یومین او ثلاثة» په دې کښې د امام مالک رضی اللہ عنہ مسلک لکه چه په موطا او مدونه کښې دی هغوی فرمائی چه کله د بنکاری نه د هغه بنکار غائب شی د مجروح کیدو نه پس، د هغې نه پس هغه بیا ملاؤ شی او په هغې کښې د هغه د بنکاری سپی یا د غشی اثر موجود وی نو هغه خورلې شی ما لم یت یعنی ترخو چه شپه نه وی تیره شوې، او که شپه تیره شو نو د هغې خوراک جائز نه دې او دویم روایت د هغوی نه دا دې چه که هغه بنکار د غشی دې نو خورلې کیدې شی او که د سپی خورلې شوې بنکار دې نو د هغې خوراک جائز نه دې. آه او امام نووی په شرح د مسلم کښې فرمائی چه دا حدیث دلیل دې چه کله بنکاری د زخمی کیدو نه پس غائب شی او بیا د هغې نه روستو ملاؤ شی په دې شرط چه په هغې کښې د هغه د غشی نه علاوه بل څه اثر نه وی نو حلال دې د امام شافعی رضی اللہ عنہ په یو قول کښ، او د امام مالک رضی اللہ عنہ په نزد هم، او د امام شافعی رضی اللہ عنہ قول ثانی دا دې چه حرام دې «وهو الاصح عند اصحابنا» او دریم قول دا دې چه د سپی په بنکار کښې ناجائز دې او د غشی په بنکار کښې جائز دی. بیا هغوی فرمائی یعنی مطلقا حل اقوی او اقرب الی الاحادیث الصحیحة دې، او د امام احمد رضی اللہ عنہ قول مشهور دې د بنکار د غائب کیدو په صورت کښې صرف حلت دې او دویم روایت د هغوی نه دا دې «ان غاب نهارا فلا باس به وان غاب لیلا لم یاکله»، او دریم د هغوی نه دا دې «ان غاب مدة طويلة لم ییح وان کانت یسیرة ایح، قیل له ان غاب یوما؟ قال یوم کثیر» او د موفق د کلام نه معلومیږی چه غیبت د صید په مسئله کښې د امام احمد رضی اللہ عنہ په نزد اقتفاء او طلب شرط نه دې، او د مالکیانو په نزد په دې کښې دواړه روایتونه معلومیږی (فی الاوجز ۱۸۲/۴) نقلا عن الباجی: قال القاضی ابوالحسن اذا کان مجدا فی الطلب حتی وجده علی هذه الحالة فانه یجوز اكله وان تشاغل عنه ثم وجده ميتا فانه لا یجوز اكله، وفيه بعد اسطر: وحكى القاضی ابومحمد عن مالک فی الصيد بالکلب انه یوکل وان بات عنه سواء کان صاحبه یطلبه او لا یطلبه اه (اوجز تراجم البخاری) او د احنافو او شوافعو په نزد هم اقتفاء شرط ده لکه چه حافظ ابن حجر رضی اللہ عنہ په فتح الباری کښې وئیلې دی او هم دغه شان په فروعو د احنافو کښې هم دی، دا اقتفاء او طلب گویا دریم شرط شو چه د هغې ذکر په راروان حدیث کښې راځی «احدنا یرمی فی الصيد فیقتفی اثره الیومین والثلاثة الخ» یعنی د بنکار د غائب کیدو نه پس د هغې د حلال والی دپاره د دې اقتفاء هم ضروری ده، یعنی بنکاری د هغه بنکار په لټون او طلب کښې اولگی، د هغې نه دې فارغه نه کینی، او دا د اقتفاء او طلب شرط د احنافو او شوافعو د دواړو په نزد دې، د حنابله په نزد نه دې «وعن المالکیة روایتان کما تقدم قریبا»

[۲۸۵۰] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا بْنُ أَبِي زَاهِدَةَ، أَخْبَرَنِي عَاصِمُ الْأَحْوَلُ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا وَقَعَتْ رَمِيَّتُكَ فِي مَاءٍ فَغَرِقْ فَبَاتَ فَلَا تَأْكُلْ."

دعدي بن حاتم رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی عليه السلام فرمائيلي دی کله چه تاسو يو خاروې په غشي اولی او هغه خاروې په اوبو کښي ډوب شي او مړ شي نو دغه ښکار مه خورئ.

[۲۸۵۱] (۲) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُمَيَّرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَبَالٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا عَلِمْتُ مِنْ كَلْبٍ أَوْ بَازٍ ثُمَّ أُرْسِلَتْهُ وَذَكَرْتُ اسْمَ اللَّهِ فَكُلَّ مِمَّا أَمْسَكَ عَلَيْكَ، قُلْتُ: وَإِنْ قَتَلَ قَالَ: "إِذَا قَتَلَهُ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنْهُ شَيْئًا فَأَمَّا أَمْسَكَ عَلَيْكَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ الْبَازُ: إِذَا أَكَلَ فَلَا بَأْسَ بِهِ وَالْكَلْبُ إِذَا أَكَلَ كُرَّةً، وَإِنْ شَرِبَ الدَّمَ فَلَا بَأْسَ بِهِ.

دعدي بن حاتم رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی عليه السلام فرمائيلي دی کله چه تاسو کوم سپي يا باز ته د ښکار کولو طريقه او ښايي اوبيادالله نوم واخلي او په ښکار پسې ئې او شري نو تاسو دغه ښکار خورلې شي کوم چه ئې ستاسو دپاره نيولی وي اوساتلي ئې وي، عدي عرض او کړو که چرې دغه ښکار ئې مړ کړې وي؟ نبی عليه السلام او فرمائيل اگر که مړ کړې وي ليکن چه ددغه ښکار نه ئې خورلې نه وي گویا کښي د ښکار ئې ستاسو دپاره نيولی دې.

[۲۸۵۲] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ عَمْرٍو، عَنْ يُسْرَيْنَ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْحَوْلَانِيِّ، عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُسَنِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي صَيْدِ الْكَلْبِ: "إِذَا أُرْسِلَتْ كَلْبُكَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَكُلْ وَإِنْ أَكَلَ مِنْهُ وَكُلَّ مَا رَدَّتْ عَلَيْكَ يَدَاكَ."

د ابو ثعلبة الخسني رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی عليه السلام فرمائيلي دی په باره د ښکار د سپي کښي چه کله تاسو دالله نوم واخلي او په ښکار پسې خپل سپي او شري نو تاسو دغه ښکار خورلې شي اگر که دغه سپي ددغه ښکار نه پخپله هم خورلې وي او همدارنگي دغه خاروې هم خورلې شي کوم چه ستاسو په غشي باندي لږيدلې وي خو په دې شرط چه دغشي دويشتلوسره مو بسم الله وئيلي وي.

﴿ عن ابي ثعلبة الخسني رضي الله تعالى عنه قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الخ ﴾

اوسه پورې د عدی بن حاتم رضي الله عنه د روایاتو سلسله روانه وه او دا روایت د ابو ثعلبه الخسني رضي الله عنه دې کوم چه د مالکیانو دلیل دې د تعلیم کلب په مسئله کښي لکه چه په اول د کتاب کښي وو او د جمهورو استدلال د عدی بن حاتم رضي الله عنه حدیث نه دې کوم چه د دې نه زیات صحیح دې ځکه چه هغه په بخاری او مسلم کښي دې.

﴿ وكل ما ردت اليك يدك ﴾ اوخړه ته هغه خیز کوم چه واپس کړی تاته ستا لاس، د دې نه مراد د ښکار غشي دې کوم انسان په خپل لاس سره چلوی.

۱: صحيح البخاري/الذبائح ۸ (۵۴۸۴)، صحيح مسلم/الصياد ۱ (۱۹۲۹)، سنن الترمذي/الصياد ۳ (۱۴۶۹)، سنن ابن ماجه/الصياد ۶ (۳۲۱۳)، (تحفة الأشراف: ۹۸۶۲) (صحيح)

۲: سنن الترمذي/الصياد ۳ (۱۴۶۷)، (تحفة الأشراف: ۹۸۶۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۲۵۷، ۳۷۹) (صحيح)

۳: تفرد به أبو داود، وانظر ما يأتي برقم: (۲۸۵۵)، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۷۸) (منكر)

[۲۸۵۳] (۱) حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ مُعَاذِ بْنِ خُلَيْفٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا دَاوُدُ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحَدُنَا يَرْمِي الصَّيْدَ فَيَقْتَفِي أَثَرَهُ الْيَوْمِينَ وَالثَّلَاثَةَ، ثُمَّ يَجِدُهُ مَيْتًا وَفِيهِ سَهْمُهُ أَيَاكُلُ، قَالَ: "نَعْمَ إِنْ شَاءَ، أَوْ قَالَ: يَأْكُلُ إِنْ شَاءَ".

دعدی بن حاتم و نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ په خدمت کښې مې عرض او کړو چه ای د الله رسوله په کوم کښې چه یو کس ښکار او وې او دوه یا درې ورځې پسې گرځي او بیا ئې مې پیدا کړي او غشي په کښې پروت وي ایا خوړلې ئې شي نبی ﷺ او فرمائیل هو که چرې دده خوښه وي.

﴿ عن عدی بن حاتم رضی الله تعالی عنه انه قال یا رسول الله ﷺ احدنا یرمی الصید فیقتفی اثر الیومین والثلاثة الخ ﴾ داقتفاء مسئله پورته ذکرشوه والحديث اخرجه البخاری معلقا.

[۲۸۵۴] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ: قَالَ عَدِيُّ بْنُ حَاتِمٍ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْبِعْرَاضِ فَقَالَ: "إِذَا أَصَابَ بِحَدِّهِ فَكُلْ وَإِذَا أَصَابَ بِعَرْضِهِ فَلَا تَأْكُلْ فَإِنَّهُ وَقِيدٌ، قُلْتُ: أُرْسِلُ كَلْبِي، قَالَ: إِذَا سَمَيْتَ فَكُلْ وَلَا فَلَا تَأْكُلْ، وَإِنْ أَكَلَ مِنْهُ فَلَا تَأْكُلْ فَإِنَّمَا أَمْسَكَ لِنَفْسِهِ، فَقَالَ: أُرْسِلُ كَلْبِي فَأَجِدُ عَلَيْهِ كَلْبًا آخَرَ، فَقَالَ: لَا تَأْكُلْ لِأَنَّكَ إِثْمًا سَمَيْتَ عَلَى كَلْبِكَ".

دعدی بن حاتم ^{رضی الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مې تپوس او کړو په باره دهغه غشي کښې کوم چه دېر والا نه وی نووئې فرمائیل کله چه ښکارته په تیره طرف سره رسیدلې وي نوخوره ئې او که چرې په پلنو رسیدلې وي نومه ئې خوره ځکه چه داموقوضه ده ماورته او وئیل زه خپل سپې په ښکار پسې شرم راته ئې او فرمائیل که بسم الله دي وئیلی وي نوخوره ئې او که نه دې وي وئیلی نه مه ئې خوره او که چرې سپې ترې خوړلې وي نوته ئې مه خوره ځکه چه دا دخپل ځان دپاره نیولې دې ده ورته او وئیل زه په ښکار پسې خپل سپې او شرم اوبل سپې ورسره هم بیامومم نوراته ئې او فرمائیل مه ئې خوره ځکه چه تابسم الله په خپل سپې باندي وئیلی ده.

[۲۸۵۵] (۳) حَدَّثَنَا هَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ حَبِيبَةَ بِنِ شَرِيحٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَبِيعَةَ بِنَ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيَّ، يَقُولُ: أَخْبَرَنِي أَبُو آدْرِيسَ الْخَوْلَانِيُّ عَابِدُ اللَّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَانَ عَلْبَةَ الْخَشْنِيَّ يَقُولُ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصِيدُ بِكَلْبِي الْمُعْلَمِ وَبِكَلْبِي الَّذِي لَيْسَ بِمُعْلَمٍ، قَالَ: "مَا صَدَّتْ بِكَلْبِكَ الْمُعْلَمِ فَأَذْكُرْ اسْمَ اللَّهِ، وَكُلْ وَمَا أَصَدَّتْ بِكَلْبِكَ الَّذِي لَيْسَ بِمُعْلَمٍ فَأَذْرُكْتَ ذَكَاتَهُ فَكُلْ".

دابوثلعبه الخشنی ^{رضی الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه ماعرض او کړو ای د الله رسوله زه په خپل پوهه شوي سپې باندي ښکار کوم او په هغه سپې باندي چه نه وی پوهه شوې راته ئې

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۸۵۹)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الصيد ۸ (۵۴۸۵ تعليقاً) (صحيح)
 ۲: صحيح البخاري/الوضوء ۳۳ (۱۷۵)، البيوع ۳ (۲۰۵۴)، الصيد ۲ (۵۴۷۶)، صحيح مسلم/الصيد ۱۹ (۱۹۲۹)، سنن النسائي/الصيد ۷ (۴۲۷۷)، (تحفة الأشراف: ۹۸۶۳)، وقد أخرجه: مستند احمد (۳۸۰/۴)، دي/الصيد ۱ (۲۰۴۵) (صحيح)
 ۳: صحيح البخاري/الصيد ۴ (۵۴۷۸)، ۱۰ (۵۴۸۸)، ۱۴ (۵۴۹۶)، صحيح مسلم/الصيد ۱ (۱۹۳۰)، سنن الترمذي/السير ۱۱ (۱۵۶۰)، سنن النسائي/الصيد ۴ (۴۲۷۱) سنن ابن ماجه/الصيد ۳ (۳۲۰۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۷۵)، وقد أخرجه: مستند احمد (۱۹۳/۴، ۱۹۴، ۱۹۵)، سنن الدارمي/السير ۵۶ (۲۵۴۱) (صحيح)

او فرمائیل کله چه ته بنکار کوي په پوهه شوي سپي باندي نو د الله نوم واخله او خوره ئې او کله چه ته بنکار کوي په هغه سپي باندي چه پوهه شوې نه وی او بنکار دي ژوندي پیدا کړو نو ذبح ئې کړه او خوره ئې او که مور وي تو مه ئې خوره.

﴿ سمعت ابا ثعلبة الخشني رضي الله عنه يقول وما اصدت بكلبك الذي ليس بمعلم فادركت ذكاته فكل ﴾

يعنی د کلب معلم بنکار خو جائز دي، او کله چه بنکار د کلب غیر معلم په ذریعه کولې شی نو په دې کبسي دوه صورتونه دی که دا هغه سپي او ژلو نو بیا خو حرام دي او که او ئې نه وژلو تردې چه بنکاری هغه نیولو سره ذبح کړو نو بیا هغه جائز دي.

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی قاله المنذری، وقال الشيخ محمد عوامه: عزاه المزی الی الجماعة وهو عند ابن ماجه بزیادة، واما الترمذی فرواه بمثل اسناد المصنف اه

د دې نه په روستو روایت کبسي را روان دی ﴿ فكل ذکيا وغير ذکی ﴾ یعنی په مذبوح او غیر مذبوح دواړو صورتونو کبسي جائز دي، کوم بنکار چه د غشي یا د معلم سپي په وجه باندي مړ شی او د هغه د ذبح وخت رانشی هغه خوشو غیر ذکی، او کوم چه د غشي وغیره په ذریعه مړ نه وی بلکه هغه ژوندي دي تردې چه بنکاری هغه ته اورسیدو نو بیا د هغه دپاره ذبح کول ضروری دی هم دا مراد دي د ذکی نه.

[۲۸۵۶] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ. م وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفَّى، حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ، عَنِ الزَّيْدِيِّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ سَيْفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلَانِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو ثَعْلَبَةَ الْخَشَنِيُّ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا أَبَا ثَعْلَبَةَ كُلْ مَا رَدَّتْ عَلَيْكَ قَوْسُكَ وَكَلْبُكَ زَادَ عَنِ ابْنِ حَرْبٍ الْمُعْلَمُ وَيَدُكَ فَكُلْ ذَكِيًّا وَغَيْرَ ذَكِيٍّ."

د ابو ثعلبه خشي نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله راته او فرمائیل اي ابو ثعلبه کوم خناور چه ته په خپل غشي اولي هغه خوره او يائي پوهه شوې سپي بنکار کړي، د ابن حرب په روایت کبسي دا اضافه ده چه هغه سپي پوهه کړې شوې وي او هغه خناور خورلې شي کوم چه ستاپه لاس باندي او ويشتلی شي برابره خبره ده چه ته دغه ذبح کړي او که ذبح ئې نه کړي اود ذبح کولونه مخکبسي مړشي

[۲۸۵۷] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْهَالِ الضَّرِيرُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا حَبِيبُ الْمُعْلَمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا يُقَالُ لَهُ أَبُو ثَعْلَبَةَ، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي كِلَابًا مُكَلَّبَةً فَأُفْتِنِي فِي صَيْدِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنْ كَانَ لَكَ كِلَابٌ مُكَلَّبَةٌ فَكُلْ مِمَّا أَمْسَكَنَ عَلَيْكَ، قَالَ: ذَكِيًّا أَوْ غَيْرَ ذَكِيٍّ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَإِنْ أَكَلَتْ مِنْهُ، قَالَ: وَإِنْ أَكَلَتْ مِنْهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُفْتِنِي فِي قَوْسِي، قَالَ: كُلْ مَا رَدَّتْ عَلَيْكَ قَوْسُكَ، قَالَ: ذَكِيًّا أَوْ غَيْرَ ذَكِيٍّ، قَالَ: وَإِنْ تَغَيَّبَ عَنِّي، قَالَ: وَإِنْ تَغَيَّبَ عَنْكَ مَا لَمْ يَصِلْ أَوْ تَجَدَّ فِيهِ أَثَرًا غَيْرَ سَهْمِيكَ، قَالَ: أُفْتِنِي فِي آيَةِ الْمَجُوسِ إِنْ اضْطَرَرْنَا إِلَيْهَا، قَالَ: اغْسِلْهَا وَكُلْ فِيهَا."

۱. تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۷۷)، وقد أخرجہ: صحيح مسلم / الصيد ۱ (۱۹۳۱)، سنن الترمذی / الصيد ۱۶ (۱۴۴۶) (صحيح)

۲. تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۱۷۱)، وقد أخرجہ: سنن النسائي / الصيد ۱۶ (۴۳۰۱)، مسند احمد (۱۸۴/۲) (حسن)

عمرو بن شعیب د خپل پلار نه او هغه دده د نیکه نه روایت کوی چه دا بو ثعلبه په نوم باندي یو بانديچی ووئیل ای دالله رسوله زما سره سپی دي پوهه کړې شوي فتوي راکړه مالره په ښکار ددي کښې نبی ﷺ او فرمائیل که چرې ستاسره پوهه کړې شوي سپی وي نو خوره هغه څه کوم چه دوی ستادپاره ساتلي وي ابو ثعلبه وویل چه ذبح شوي وي او که نه وی ذبح شوي دواړه نبی ﷺ او فرمائیل هو ابو ثعلبه او وئیل که چرې خورلې ئې ترینه وي نبی ﷺ او فرمائیل اگر که ترینه ئې خورلې وي بیا ئې عرض او کړو ای دالله رسوله فتوي راکړه ماته په باره دښکار دلیندی زما کښې نبی ﷺ او فرمائیل کوم چه ستادپاره ستا دغشولینده او گتې هغه خوره برابره خبره ده چه ته ئې ذبح کړي او که ذبح ئې نه کړی هغه او وئیل که چرې دښکار په غشي اولگی او دنظر نه غائب شي نبی ﷺ او فرمائیل اگر که دنظر نه غائب هم وي ترخوچه ورك شوې نه وی او ترخوچه ستادغشي نه علاوه بل زخم په کښې بیانه وموي ثعلبه او وئیل فتوي راکړه مانه په باره دلونسو د مجوسیانو کښې که چرې زه ورته مجبوره کړې شم نبی ﷺ او فرمائیل ویسې وینزه او خوراک په کښې کوه.

(وان تغيب عنك ما لم يصل او تجد فيه اثر غير سهمك)

شرح الحديث او د لحم منتن حکم:

یعنی د ښکار د غائب کیدو په صورت کښې هغې لره تر هغه وخته پورې خورل جائز دی چه کله په هغې کښې دوه شرطونه بیا موندلې شی. یو دا چه هغه ځناور خراب شوې نه وی او دویم دا چه د هغه غشي نه علاوه د بل غشي اثر پکښې نه وی. (ما لم یصل) په فتح د یاء او کسري د صاد سره دې او تشدید لام وئیلې شی (صل اللحم صلولا اذا اتن) یعنی چه کله په هغه غوښه کښې بدبوئی راتلل شروع شی، او د مسلم په حدیث کښې (ما لم یتن) دې (.....) د احنافو او شوافعو په نزد دا قید دپاره د استحباب دې، د هغوی په نزد د لحم منتن خوراک مکروه تنزیهی ده، او د مالکیانو په نزد حرام ده، د شوافعو استدلال د حدیث العنبر نه دې کوم چه صحابه کرامو رضی الله عندهم د نیمې میاشت نه زیات خورلې وو، او په دومره موده کښې په غوښه کښې بدبوئی پیدا نه شی دا ډیره گرانه ده، خو حافظ فرمائی (یحتمل انهم ملحوه وقد دوه) چه ممکنه ده صحابه کرامو هغه تکرې تکرې کولو سره په هغې باندي مالکه مرلې وی (هامش البذل)

وفي الشمانل الترمذی فی باب تواضع رسول الله ﷺ من حدیث انس بن مالک رضی الله عندهم کان رسول الله ﷺ یدعی الی خبز الشعیر والاهالة السخنة وكذا اخرجه البخاری فی البیوع والرهن، ولفظه فی البیوع فی باب شراء النبی ﷺ بالنسینة عن انس رضی الله عندهم انه منی الی النبی بخبز شعیر واهالة نسخة الحدیث..... په دې حدیث کښې د رسول الله ﷺ د زرې بوئی والا وازگې خورلو ذکر دې. حدیث الباب د ابو ثعلبه رضی الله عندهم دا حدیث وړاندې هم را روان دې هلته په بذل کښې لیکلې شوې دی. قال القاری قال علماؤنا: وهذا علی طریق الاستحباب والا فالنتن لا اثر له فی الحرمة.

۱، بلکه خپله په ابوداؤد کښې هم په کتاب الصيد کښې بالکل په آخری حدیث کښې هم دغه شان دی (مالم یتن)

قال ابن الملك وقد روى انه عليه الصلوة والسلام اكل متغير الريح الى آخره.

د مشرکانو د لوښو استعمال کله جائز دي؟

قوله: قال: افتنى فى آنية المجوس اذا اضطررنا اليها قال اعسلها وكل فيها:

د رسول الله ﷺ نه د مجوسيانو د لوښو په باره کښې تپوس او کړې شو چه آيا د مجبورې په وخت هغه استعمالولې شو؟ هغوی او فرمائيل چه د غسل نه پس هغه استعمالولې شو، د دې نه معلومه شوه چه د مشرکانو د لوښو استعمال پس د وينځلو نه د اضطرار په وخت جائز دي، او دا هم چه بغير د مجبورې نه پس د غسل نه هم د دې استعمال مکروه دي حال دا چه د فقهاء کرامو د کلام نه معلومېږي چه د مشرکانو د لوښو استعمال پس د وينځلو ه مطلقا بغير د کراهت نه جائز دي، جواب د دې دا دي چه دلته په حديث کښې د مجوسو لوښو نه هغه لوښي مراد دي چه په هغې کښې د خنزير غوښه پخوی يا کوم چه د شرابو په څکلو کښې استعمالوي لکه چه د هغې تصريح د ابوداؤد په بعض روايتونو کښې ده او د فقهاء کرامو کلام د مطلق لوښو سره متعلق دي يعنى د هغه لوښو سره کوم چه هغوی په نجاستونو کښې نه شي استعمالولې (بذل) په دې سلسله کښې روايات په ابوداؤد او ترمذی وغيره کښې دوه قسمه دي بعض مطلق دي لکه حديث الباب، او بعض مقيد دي لکه چه حضرت په بذل کښې ليکلي دي. د حضرات مراد دا دي چه په روايت مطلقه کښې اختصار دي هغه هم په مقیده باندې محمول دي.

بَابُ فِي صَيْدٍ قُطِعَ مِنْهُ قِطْعَةٌ

د ژوندی څاروی دیواندام پریکولو بیان

[۲۸۵۸] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَّارٍ، عَنْ أَبِي وَقِيدٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا قُطِعَ مِنَ الْبَهِيمَةِ وَهِيَ حَيَّةٌ فَهِيَ مَيْتَةٌ".

د ابو واقد الليثي نه روايت دي فرمائي چه نبي عليه السلام فرمائيلي دي هغه اندام چه پریکړې شي. د څاروي نه او هغه ژوندي وي دا مرداره ده.
(ما قطع من البهيمه وهي حية فهي ميتة)

يعنى چه د ژوندي ماکول ځناور يو اندام پرې کړې شي نو هغه حکم دي په حرام د ميتة کښې دي، دا روايت په ترمذی کښې هم دي د ابوداؤد د روايت نه اوږد، په هغې کښې دا دي چه کله رسول الله ﷺ هجرت کولو سره مدينې طبيې ته تشریف يورو نو هلته هغوی او کتل چه څه خلق د اوښانو قوبوبه، او هم دغه شان د گدانو لمونه پرې کوی نو په دې باندې رسول الله ﷺ هغه او فرمائيل کوم چه دلته په دې حديث کښې ذکر شوي دي.
پانده: فقهاء کرامو د نافجة المسک په باره کښې تصريح کړې ده چه هغه هم طاهر دي د

(۱) سنن الترمذی للصيد ۴ (۱۴۸۰) اتم منه، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۱۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۸/۵)، سنن الدرعي للصيد ۹ (۲۰۶۱) (صحيح)

مشک په شان او ماکول دې لهذا د مسئله الباب نه به د هغې استثنا کولې شی (۱)
والحدیث اخرجہ الترمذی اتم منه، واخرجه ابن ماجه من حدیث عبدالله بن عمرو رضی اللہ عنہما قاله المنذری.

باب فی اتباع الصید

د بنکار کولو نه کسب جوړول

[۲۸۵۹] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو مُوسَى، عَنْ وَهَبِ بْنِ مُنْبِهٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ،
عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ مَرَّةً سُفْيَانُ، وَلَا أَعْلِمُهُ إِلَّا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ سَكَنَ
الْبَادِيَةَ جَفَاءً، وَمَنِ اتَّبَعَ الصَّيْدَ عَقْلًا، وَمَنْ أَتَى السُّلْطَانَ افْتِنًا".

ابن عباس نه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه روایت کوی خوګ چه په ځنگلو کښې اوسیرې دهغه زړه به سخت
وي او خوګ چه په بنکار پسې هروخت ور پسې وي نو دې به په غفلت کښې پریوخی او خوګ
چه بادشاهانو ته تګ راتګ کوي نو هغه به په کوم مصیبت کښې اخته کیرې.

قوله: (من السكن البادية جفاءً ومن اتبع الصيد عقل الخ) یعنی په ځنگل کښې اوسیدونکی
سخت مزاج کیرې، د خلقو سره د اوسیدو دکمی د وجې نه، ځکه چه خوګ د خلقو سره
یوځای اوسیرې نو هغه د نورو تکلیفونه او د مشقونو برداشت کولو عادی شی، او په دې
وجه هم چه داسې خلق د حکومت او د هغې انتظام نه لرې وي.

او خوګ چه په بنکار پسې لگیدلې وي، مراد توغل دې چه هم دې لره خپله مشغله جوړه
کړې نو د هغه ژوند به په غفلت کښې تیر شی او د مانځه او اذان ورته هیڅ خبر نه وي.
او کوم خلق چه امراء او بادشاهانو له ځی هغوی د دین او دنیا د دواړو په اعتبار
سره په فتنه کښې مبتلا کیرې. (بذل) والحدیث اخرجہ الترمذی والنسائی مرفوعاً قاله المنذری.

[۲۸۶۰] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الْحَكِيمِ الْأَنْصَارِيُّ، عَنْ عَبْدِ بْنِ
ثَابِتٍ، عَنْ شَيْخٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَعْنَى مُسَدَّدٍ، قَالَ: "وَمَنْ لَزِمَ
السُّلْطَانَ افْتِنَ زَادًا، وَمَا زَادَ عَبْدٌ مِنَ السُّلْطَانِ دُونَ الْإِزْدَادِ مِنَ اللَّهِ بَعْدًا".

د ابوهریره من نه د تیر شوی روایت په شان روایت منقول دې مگرددي اضافي سره خوګ چه
د بادشاه سره ډیر تګ راتګ ساتي نو په فتنه کښې به پریوخی او هیڅ یو بنده داسې نشته
چه بادشاه ته ئې ځان نزدې کړې وي مگر د الله نه به ئې ځان جدا کړې وي.

[۲۸۶۱] (۳) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ خَالِدِ الْحَيَّاطِ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ
جَبْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُسَيْنِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا رَمَيْتَ الصَّيْدَ فَأَذْرِكْتَهُ
بَعْدَ ثَلَاثِ لَيَالٍ وَسَمَّيْتَهُ فِيهِ فَكَلَّمَهُ مَا لَمْ يُنْتِنِ".

۱، ففي نور الايضاح في بيان الدباغة رنداجة المسك طاهرة كالمسك واكله حلال آه،

۱: سنن الترمذی للفتن ۶۹ (۲۲۵۶)، سنن النسائی للصید ۲۴ (۴۳۱۴)، (تحفة الأشراف: ۶۵۳۹)، وقد أخرجه: مسند احمد

(۳۵۷/۱) (صحیح)

۲: نورد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۴۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۱/۲، ۴۴۰) (ضعیف)

۳: صحیح مسلم للصید ۲ (۱۹۳۱)، سنن النسائی للصید ۲۰ (۴۳۰۸)، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۶۳)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۱۹۴/۴) (صحیح)

ابوتعلبه خشنی رضی الله عنہ د نبی صلی الله علیہ وسلم نه روایت کوی چه فرمائیلی ئې دي کله چه ښکار په غشي اوولې او درې ورځې پس ئې بیاموي اوستاغشي په کښې موجودرې نوخوره ئې ترخوچه بدبویه شوې نه وي.

« عن ابی ثعلبة الخشنی رضی الله عنہ عن النبی صلی الله علیہ وسلم اذا رمیت الصيد فادرکته بعد ثلاث لیل وسهمک فيه فکل مالم ینتن »:

دا حدیث په مصری نسخو کښې نشته او کیدل هم نه دی پکار، د مضمون په لحاظ سره دا حدیث مکرر دې، رومبی ځانې په دې کښې د « ما لم ینتن » په ځانې « مالم یصل » لفظ راغلي دي.

کتاب الوصایا

د وصیت د احکامو بیان

وصایا جمع ده د وصیة لکه هدايا جمع ده د هدیه، د وصیة استعمال په معنی مصدری یعنی ایصاء او مایوصی به یعنی د هغه څیز د وصیت په ځانې په دواړو کښې وی، د وصیة تعریف شرعا داسې کړې شوې دي هو عهد خاص مضاف الی ما بعد الموت..... یعنی هغه معامله چه د هغې تعلق د مابعد الموت سره وی، او د وصیت استعمال په معنی د نصیحت یعنی امر بالمعروف او نهی عن المنکر باندې هم کیږي. (من البذل)

باب ماجاء فیما یؤمر به من الوصیة

د وصیت د تاکید کولو بیان

زمونږ په دې نسخه کښې « یامر » په صیغه د معروف دې، او په بعضو کښې « یومر » دې وهو الاصح ځکه چه د معروف صورت کښې د هغه دپاره فاعل مقدر مثل راځی مثلا الشرع یا السلام

[۲۸۶۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدُ بْنُ مُسْرَهْدٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ يُعْنِي ابْنَ عُمَرَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا حَقَّ أَمْرٌ مُسْلِمٌ لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ بَيْتَ لَيْلَتَيْنِ إِلَّا وَصِيَّتَهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ.

دا بن عمر رضی الله عنہما نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیہ وسلم فرمائیلی دی دمسلمان دشان سره دانه ښائي چه دده سره دي داسې یوش وي کوم چه دوصیت قابل وي اودکوم دپاره چه وصیت کول ضروري وي اودې دوه شپې داسې تیري کړي چه ددغه شي متعلق وصیت دده سره لیکلې موجود نه وی

« عن عبیدالله بن عمر رضی الله عنہما عن رسول الله صلی الله علیہ وسلم قال ما حق امری مسلم له شی یوصی فیہ بیت لیلتین الاوصیة مکتوبه عنده »

۱: صحیح مسلم للوصایا ۱ (۱۶۲۷)، (تحفة الأشراف: ۷۹۴۴، ۸۱۷۶)، وقد أخرجه: صحیح البخاری للوصایا ۱ (۲۷۳۸)، سنن الترمذی للجنائز ۵ (۹۷۴)، والوصایا ۳ (۲۱۱۹)، سنن النسائی للوصایا ۱ (۳۱۴۵)، سنن ابن ماجه للوصایا ۲ (۲۶۹۹)، موطاهام مالك للوصایا ۱ (۱)، مسند احمد (۴/۲، ۱۰، ۳۴، ۵۰، ۵۷، ۸۰، ۱۱۳)، سنن الدارمی للوصایا ۱ (۳۲۱۹) (صحیح)

شرح الحديث وحکم الوصية :

(يوصى فيه) په تركيب كښي د (شي) صفت دې، او دا (بيت ليلتين) د ((حق)) خبر دې، يعنى چه د كوم مسلمان يو داسې خيز وي چه قابل وصيت وي نو د هغه دپاره لائقه نه ده دا خبره چه دوه شپي تيري كړي خو په دې حال كښي چه د هغه وصيت د هغه سره ليكلي وي، او په يو روايت كښي ليله او ليلتين دې او د مسلم او د نسائي په روايت كښي بيت ثلاث ليال دې، وهذا يدل على انه للتقريب لا للتحديد اى ولو زمانا قليلا (بذل).

وصيت ظاهرية او بعض علماء كرامو لكه زهري او عطاء او ابن جرير او د امام شافعي رحمته الله په قول قديم كښي مطلقا اى فى كل حال واجب دې او د جمهور په نزد كه ذمه ديون (قرضونه) يا حقوق العباد وي په هغې باندي وصيت واجب دې خو د هغې ليكل او په هغې كښي تعجيل كول دا مستحب دى، علامه شامى رحمته الله ليكلي دى چه د وصيت خلور قسمونه دى، واجب كالوصية برد الودائع الديون المجهولة، ومستحبة كالوصية للكفارات وفدية الصلوة ونحوها، ومباحة كالوصية للاغنياء من الاجانب والاقارب، ومكروهة كالوصية لاهل الفسوق والمعاصى وفى الهداية القياس يابى جواز الوصية لانه تملك مضاف الى حال زوال ملكية الا انا استحسانه لحاجة الناس اليها الى اخره آه من التراجم.

والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى وابن ماجه قاله المنذرى.

[۲۸۶۳] (١) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَحَمَدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مَعَاوِيَةَ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا وَلَا بَعِيرًا وَلَا شَاةً وَلَا أَوْصَى بِشَيْءٍ.

ام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه نبى صلى الله عليه وسلم نه دينار پريښودلي دي اونه درهم اونه اوبس اونه گله (په ميراث كښي) اونه ئي په څه شي باندي وصيت كړې دې.

(عن عائشة رضی الله تعالی عنها قالت ما ترك رسول الله صلى الله عليه وسلم دينارا ولا درهما ولا بعيرا ولا شاة ولا اوصى بشي)

شرح الحديث

اور رسول الله صلى الله عليه وسلم د هيڅ خيز وصيت نه دې كړې، يعنى د مال يا د خلافت په باره كښي، خو د كتاب الله په باره كښي او د خپل اهل بيت په باره كښي او د اخراج اليهود من جزيرة العرب وغيره ددې امورو رسول الله صلى الله عليه وسلم يقينا وصيت فرمائيلې دې (كفاى الاحاديث الصحيحة) د دراهم او دنانير په باره كښي په بذر كښي د سيرت حليبه نه نقل كړى دى چه رسول الله

(يعنى چونكه د وصيت تعلق د مابعد الموت سره دي او د مرگ نه پس انسان كښي د هيڅ فعل هم كه هغه تملك وي او يا بل څه صلاحيت باقى نه پاتې كيرى لهذا د وصيت جواز خلاف قياس دې خو استحسانا او ضرورة هغه جائز كيرى، او هغه ضرورت دا دې چه انسان به خپل ژوند باندي مفرور وي او كارونه روستو كوي د ژوند په غرور كښي چه د هغې نه ډير واجب الاداء خيزونه په ذمه پاتې شي پناڅاپه د مرگ د راتلو د وجي نه خو د هغې د مخ نيوى دپاره شريعت دا صورت راويستلي دې)

(صحیح مسلم للوصايا ۶ (۱۶۳۵)، سنن النسائي للوصايا ۲ (۳۶۵۱)، سنن ابن ماجه للوصايا ۱ (۲۶۹۵)، تحفة الأشراف: ۱۷۱۱۰، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۴/۸) (صحیح)

سره د وفات نه مخکښې شپږ یا اووه دیناره وو هغوی هغه په خپل لاس باندې عائشي رضی اللہ تعالیٰ عنہا ته ورکړل چه صدقه کړې شی، او په روایت کښې دی چه رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم هغوی ته اوفرمائیل دا علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ ته اولیره چه هغه صدقه کړی، په دې حدیث کښې د بعیره او شاة هم نفی ده، د دې په باره کښې ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه بعض اهل سیر چه لیکلې دی چه د هغوی په ملک کښې ډیر اوسنان وو او شل اوسناني پئ ورکونکې وې د مدینې طیبې په طرفونو کښ، او اووه بیزی وې وغیره وغیره د اهل سیر دا روایت د دې صحیح حدیث معارض نه شی کیدې فلا تعتبر او وړاندې فرمائی که صحیح هم اومنلې شی نو هغه به په دې باندې محمول کولې شی چه هغه اوسنان د صدقې وو کوم چه رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم د اهل صفه او غریبو صحابه کرامو رضی اللہ عنہم دپاره پریخودلې وو، او د دې نه علاوه چه د هغوی کومې بعض زمکې وې په خیبر او فدک کښې پس هغه خو رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم په خپل ژوند کښې د مسلمانانو د ضروریاتو دپاره صدقه او وقف کړې وو لکه چه د صحیحینو کښې حدیث دې (ان رسول الله ﷺ قال لا یقتسم ورثتی دینارا ما ترکت بعد نفقة نسائی ومؤنة عاملی فهو صدقة) و فی روایة..... (لا نورث ما ترکنا صدقة) آه (من البذل) یعنی د هغه زمکو په باره کښې خو چونکه هغوی په خپل ژوند کښې فیصله فرمائیلې وه، لهذا دې ته به وصیت نه شی وئیلې کیدې (۱) والحديث اخرجہ مسلم والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

باب ماجاء فیما لا یجوز للموصی فی مالیه

باب د ناجانز وصیت بیان

یعنی مړ کیدونکې په خپل مال کښې خومره وصیت کولې شی.

[۲۸۶۴] (۱) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَابْنُ أَبِي خَلْفٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: مَرَّضَ مَرَضًا، قَالَ ابْنُ أَبِي خَلْفٍ بِمَكَّةَ، ثُمَّ اتَّفَقَا أَشْفَى فِيهِ فَعَادَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي مَالًا كَثِيرًا وَأَلَيْسَ بِي رِئِيسٌ إِلَّا ابْنَتِي أَفَأَتَصَدَّقُ بِالْمِثْلَيْنِ؟" قَالَ: لَا، قَالَ: فَبِالشَّطْرِ قَالَ: لَا، قَالَ: فَبِالثُّلُثِ قَالَ: الثُّلُثُ، وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ إِنَّكَ أَنْ تَتْرَكَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَدْعُهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ، وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً إِلَّا أُجِرْتَ بِهَا حَتَّى اللَّقْمَةُ تَرْفَعُهَا إِلَى فِي امْرَأَتِكَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُخَلِّفُ عَنْ هِجْرَتِي؟ قَالَ: إِنَّكَ إِنْ تُخَلِّفَ بَعْدِي فَتَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا تَرِيدُ بِهِ وَجْهَ اللَّهِ لَا تَزِدْ أَدْبَهُ إِلَّا رَفَعَهُ وَدَرَجَةَ لَعَلَّكَ أَنْ تُخَلِّفَ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ وَيَضْرِبَكَ آخَرُونَ، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ أَمْضِ لِأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ وَلَا تَرُدَّهُمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ، لَكِنَّ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ يَرْتِي لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ مَاتَ بِمَكَّةَ.

(۱) لهذا اوس به دا اشکال نه واقع کیری چه رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم د زمکو په باره خو وصیت فرمائیلې دې، بیا په دې حدیث کښې د وصیت نفی کړې شوي ده.

(۲) صحیح البخاري/الجانز ۳۶ (۱۲۹۵)، الوصایا ۲ (۲۷۴۲)، ۳ (۲۷۴۴)، مناقب الأنصار ۴۹ (۳۹۳۶)، المغازي ۷۷ (۴۳۹۵)، النفقات ۱ (۵۳۵۴)، المرضي ۱۳ (۵۶۵۹)، ۱۶ (۵۶۶۸)، الدعوات ۴۳ (۶۲۷۳)، الفرائض ۶ (۶۷۳۳)، صحیح مسلم/الوصایا ۲ (۱۶۲۸)، سنن الترمذي/الجانز ۶ (۹۷۵)، الوصایا ۱ (۲۱۱۷)، سنن النسائي/الوصایا ۳ (۳۶۲۸)، سنن ابن ماجه/الوصایا ۵ (۲۷۰۸)، (تحفة الأشراف: ۳۸۹۰)، وقد أخرجہ: موطا امام مالك/الوصایا ۳ (۴)، مسند احمد (۱۶۷۱)، ۱۷۲، ۱۷۶، ۱۷۹، دي/الوصایا ۷ (۳۲۳۸) (صحیح)

عامر بن سعد نه دخپل پلار سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ نه روایت کوي فرمائی چه هغه یوخل ډیر سخت بیمار وو او نبی صلی اللہ علیہ وسلم ئې دعیادت دپاره راغې عرض ئې اوکړو چه ای دالله رسوله زه یو دولت مند سرې یم اود یوې لورنه علاوه بل وارث مې نشته ایازه دخپل مال په درې حصو کښې دوه حصې صدقه کړم؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل نه بیا ئې عرض اوکړو ایانیم صدقه کړم؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم اه فرمائیل نه، په دریم خل ئې عرض اوکړو چه دریمه حصه صدقه کړم؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه دریمه حصه صدقه کړه او په صدقه ورکولو کښې دمال دریمه حصه کافی ده، که چرې ته خپل وارثان دولت مند پریږدي داددې نه غوره دي چه ته ئې فقیران پریږدي اوبیاد خلقونه سوالونه کوي، اوهر هغه شي چه ته دالله درضا دپاره خرچ کوي تاته خامخا دهغې اجر ملاویږي تردې پورې چه ته دخپلې ښخې په خوله کښې نورې ورکوي نوددی به هم درته اجر ملاویږي سعد رضی اللہ عنہ عرض اوکړو چه زه به دهجرت نه روسته پاتې شم نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل که چرې دهجرت نه روسته پاتې شي (نوخه خبره ده) الله درضا دپاره نیک عمل به وکړي اوستا مرتبه به نوره هم لوړه شي او کیدې شي چه ژوندی پاتې شي تردې پورې ستاپه وجه به خلقو ته فائده ورسیري اوخه نور خلق به ستاپه وجه باندي نقصاني شي ددې نه پس نبی صلی اللہ علیہ وسلم دا دعاوغوښتله ای الله زما دملگرو هجرت مکمل کړي اودوی ددې هجرت نه واپس نکړي، لیکن بې وسه او مجبوره سعد بن خوله دې اورسول الله ورباندي ماتم کوي، ځکه چه هغه په مکه کښې وفات شوې وو.

(عن عامر بن سعد عن ابيه رضی اللہ عنہ قال مرض مرضا اشفى فيه الخ)

شرح الحديث:

عامر دخپل پلار سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ په باره کښې فرمائی چه یوخل هغه سخت بیمار شو داسې چه مرگ ته نزدې شو، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته د بیمار پرسئ نه پس تشریف راوړو نو زما پلار عرض اوکړو یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ما سره مال ډیر زیات دې او زما ددې مال وارث هیڅ څوک نشته سوا زما د لور نه، نو آیا زه په دې صورت کښې دخپل مال دوه ثلثه صدقه کولې شم؟ هغوی او فرمائیل نه بیا هغوی د نیم په باره کښې تپوس اوکړو نور رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ددې نه منع او فرمائیله، او بیا ئې د یو ثلث په باره کښې اجازت او فرمائیلو. او وې فرمائیل چه ته خپل وارثان مالدار پریږدي دا ډیره غوره ده ددې نه چه ته هغوی غریبانان پریږدي چه (بیا) خلقو ته د سوال دپاره لاسونه نیسی، په دې حدیث کښې دی چه زما هیڅوک وارث نشته سوا د یوې لور نه، شراح فرمائی چه مراد دا دې چه د لور نه علاوه په ذوی الفروضو کښې زما هیڅوک وارث نشته، او مطلق نفی مراد نه ده ځکه چه د ذوی الفروض نه علاوه نور ورثاء عصبه د هغوی سره وو لکه چه خپله په دې حدیث کښې دی (ان ترک ورثک اغنیاء.... قلت یا رسول الله! اتخلف عن هجرتی قال انک ان تخلف بعدی فتعمل عملا ترید به وجه الله الخ)

د وصیت د مسئلې نه پس هغوی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته عرض اوکړو چه زه دخپل هجرت نه روستو پاتې کولې شمن، ددې مطلب دا دې چه چونکه دې په مهاجرینو کښې دې او په

مکه مکرمه کښې سخت بیمار شوي وو د حجة الوداع (۱) په موقع باندي هغوی ته د خپل مرگ خطر پيدا شوه په مکه مکرمه کښې یعنی غیر مهاجر کښې (۲) او د خپل هجرت د باطل کیدو ویره ورسره پيدا شوه په دې باندي رسول الله ﷺ هغوی ته تسلی ورکړه هغه دا چه انشاء الله داسې به نه کیږي بلکه ته به زما نه روستو ډیره موده ژوندي ئې او د اعمالو په ذریعه به ستا درجات اوچت شي، او بعض اقوام یعنی مسلمین به ستا نه فائده اخلي، او بعض نور یعنی مشرکان به ستا نه ضرر بیا مومي، او رسول الله ﷺ دا دعا هم او فرمائيله (اللهم امض لاصحابي هجرتهم ولا تردهم علی اعقابهم) شرح لیکلی دی چه د رسول الله ﷺ دا پیشنگوئی الله پاک پوره او فرمائيله، او دا صحابی د دې مرض نه روغ شو او تر ډیرې مودې ژوندي پاتې شو الله پاک د هغوی په لاسونو باندي عراق وغیره فتح کړو او د عراق گورنر جوړ شو او د رسول الله ﷺ نه پس تقریبا څلویښت کاله ژوندي وو حتی مات خمسين علی المشهور وقيل غير ذلك.

تنبیه: د سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه دا واقعه کومه چه مونږ مخکښې لیکلې ده د حجة الوداع ده لکه چه د صحیحینو په بعض روایتونو کښې د دې تصریح ده او د ترمذی په روایت کښې دې ته د عام الفتح واقعه وئیلې شوې ده، زمونږ د عربی په حاشیه کښې دا تیر شوې دی چه د حدیث حفاظو دې ته وهم وئیلې دې او د حافظ رائي د جمع بین الروایتین ده یعنی د تعدد واقعه، خو امام طحاوی رحمته الله علیه د دې دوه روایتونو اختلاف لره په مشکل الاثار کښې باقاعده د دې دپاره مستقل باب ترلو سره بیان کړې دې او بیایې د یو روایت مفصله په ذریعه چه ډیر زیات واضح دې د عام الفتح واقعه کیدو ته ترجیح ورکړې ده گویا د هغوی تحقیق د اکثر محدثینو د رائي خلاف دې روستو حافظ هم د دې روایت مفصله د وجې نه خپله رائي بدله کړې ده خو هغوی په خائي د ترجیح ورکولو تعدد د واقعي لره اختیار کړې دې نو اوس گویا په دې کښې درې رائي شوې د اکثر محدثینو کوم چه حافظ رحمته الله علیه په اتفاق حفاظ سره تعبیر فرمائی، او دویم د امام طحاوی او دریم د حافظ ابن حجر، والله تعالی اعلم بالصواب.

﴿ لكن البانس سعد بن خولة يرثي له رسول الله ﷺ ان مات بمكة ﴾

شرح الحديث:

رسول الله ﷺ فرمائی چه د افسوس لائق حال خو د سعد بن خوله دې یا قابل رحم خو سعد بن خوله دې وړاندي روای د دې وضاحت کولو سره وائی چه رسول الله ﷺ رحم کوی په سعد بن خوله باندي دې ځکه چه د هغه مرگ په مکه مکرمه کښې شوې وو. د سعد بن خوله رضی الله عنه په باره کښې اختلاف دې د بعضو رائي دا ده چه هغوی د مکې مکرمې نه هجرت

(۱) او د ترمذی په روایت کښې عام الفتح دې کوم چه د ابن عیینه راوی وهم دې قال الحافظ وانفقوا علی انه وهم فيه ابن عیینة من اصحاب الزهري ثم قال ويمكن الجمع بين الروایتین بان يكون ذلك وقع له مرتين مرة عام الفتح ومرة عام حجة الوداع ففي الاولى لم يكن له وارث من الاولاد اصلا وفي الثانية كانت ابنته فقط د دې په باره کښې نور وضاحت په شرح کښې را روان دې.

(۲) مهاجر هغه خائي او مقام چرته چه انسان هجرت کولو سره لار شي لکه چه د مهاجرین مکه مهاجر مدينه طيبه وه.

هم نه وو کړې تر دې چه هغوی هم هلته وفات شو، او د اکثر وراثي دا ده چه هغوی هجرت خو کړې وو خو وفات د هغوی د حجة الوداع په موقع په مکه مکرمه کښې اوشو. یعنی بغیر د مهاجر نه بل ځانې کښې «بائس من اصابه بؤس ای ضرر» یعنی نقصان او چتونکې، شرح لیکلی دی چه په دې کښې صلاحیت د مذمت هم دې او د ترحم هم، لهذا رومیې صورت په عدم الهجرة کښې د رسول الله ﷺ دا فرمان په طریقه د مذمت دې، او په دویم صورت کښې په طریقه د ترحم، دا بیرثی د ورث نه ماخوډ دې

چه د هغی استعمال په میت کښې کیږی، یعنی د مړی د محاسنو ذکر. (تحفة)
د علماء گرامو په دې کښې اختلاف دې که د مهاجر مرگ په مکه کښې واقع شی نو بعض وائی چه که داسې د هغه په اختیار باندې شوې وی نو د هغه د هجرت اجر حبط کیږی گینې نه (وقیل یحبط مطلقاً) د وصیت متعلق بعض ضروری مسائل مونږ په حاشیه کښې لیکلی دی هغه دې او کتلی شی (۱) والحديث اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

(۱) د وصیت متعلق بعض ضروری مسائل او د ائمة اختلاف : د حدیث الباب نه معلومیږی چه د انسان دپاره زیات نه زیات د یو ثلث د غیر وارث دپاره جائز دې، د امام بخاری ترجمه ده «باب الوصية بالثلث» په دې باندې حافظ لیکلی دی په دې باندې د علماء گرامو اجماع ده چه د ثلث نه په زیات باندې وصیت ممنوع دې (بیبا مړی د دوه حالو نه خالی نه دې یا به د هغه وارثان وی یا به نه وی، په شق ثانی کښې خو هیڅ اختلاف نشته چه د داسې انسان دپاره د ثلث نه زیات وصیت جائز نه دې) او که شق اول دې یعنی د مړی ورثاء دی نو هغه وخت هم د ثلث نه زیات کښې وصیت لره جمهور علماء کرام ناجائز وائی خو احناف او اسحاق او احمد رضی الله عنہم په یو روایت کښې دې ته جائز و نیلې دې آه یعنی په دې شرط چه د وارثانو د طرف نه د دې خبرې اجازت وی پس په هدایة کښې دی: ثم تصح للاجنبي في الثلث من غير اجازة الورثة ولا تجوز بما زاد علي الثلث الا ان تجيزها الورثة بعد موته وهم كبار لان الامتناع لحقهم وهم اسقطوه، ولا معتبر باجازتهم في حال حياته آه او په دې باندې هم خان پوهول پکار دی د وصیت للوارث مسئله هم مختلف فیه ده د ظواهر و په نزد دا حکم مطلقاً دې لحدیث لاوصية لوارث اخرجہ ابو داؤد والترمذی وغیرهما او د جمهور و په نزد وصية لبعض الورثة جواز موقوف دې د باقی وارثانو په اجازت باندې که باقی وارثان د موصی د مرگ نه روستو هغه ته اجازت ورکړی نو بیبا وصية معتبر او جائز دې لروایة الدارقطني لاوصية لوارث الا ان يشأ الورثة، قال الحافظ ورجاله ثقات الا انه معلول (ترجم بخاری) او په عینی کښې دی قال المنذرى انما يبطل الوصية للوارث في قول اكثر اهل العلم من اجل حقوق سائر الورثة فاذا اجازوها جازت كما اذا اجازوا الزيادة علي الثلث، وذهب بعضهم الي انها لا تجوز وان اجازوها، لان المنع لحق الشرع وهذا قول اهل الظاهر (عمدة القاري ۲۷۱/۱۱) وفي الهداية: ولا تجوز لوارثه الا ان يجيزها الورثة لان الامتناع لحقهم فتجوزها باجازتهم ولو اجاز بعض ورد بعض تجوز علي المجيز بقدر حصته لولا يته عليه (آه ملخصاً ملقطاً) او په دې باندې هم خان پوهول پکار دی چه که یو انسان په مرض الوفات کښې خپل یو وارث ته یو څیز فی الحال هبه کړی نو هغه د وصیت په حکم کښې دې وفي الهداية والهبة من المريض (مرض الموت) للوارث في هذا نظير الوصية لانها وصية حكماً. او په حدیث کښې دی «والثلث كثير» هم د دې وجې نه علماء گرامو فرمائیلې دی چه وصیت که د ثلث نه کم وی نو دا غوره ده ففی الهداية ويستحب ان يوصي الانسان بدون الثلث سواء كانت الورثة اغنياء او فقراء لان في النقيض صلة القريب بترك ماله عليهم بخلاف استكمال الثلث لانه استيفاء تمام حقه فلا صلة ولا مئة، بیبا دا چه د مادون الثلث وصیت کول اولی دی یا که د هغې ترک اولی دې؟ په دې کښې دوه قوله دی یو دا چه که وارثان فقراء وی په دې صورت کښې د وصیت ترک اولی دې او که هغوی اغنياء وی نو وصیت کول اولی دی، او دویم قول دا دې چه موصی ته اختیار دې چه گوم شق غواړی اختیار دې کړی ځکه چه په هر شق کښې من وجه فضيلت دې آه مختصراً من الهداية

باب مَا جَاءَ فِي كَرَاهِيَةِ الْإِضْرَارِ فِي الْوَصِيَّةِ
 په وصیت سره نورو خلقوته د نقصان ورکولو د کراهت بیان

د اضرار نه مراد وارثان دي، یعنی خلاف قاعده وصیت کولو سره وارثانو ته ضرر او تکلیف ورکول.

[۲۸۶۵] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرٍو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: "أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيحٌ حَرِيصٌ تَأْمَلُ الْبَقَاءَ وَتُخْشَى الْفَقْرَ وَلَا تَمْهَلُ حَتَّى إِذَا بَلَغْتَ الْحُلُقُومَ" قُلْتَ لِفُلَانٍ كَذَا وَلِفُلَانٍ كَذَا وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دي - فرمائی چه يو سړی د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې عرض او کړو ای د الله رسول له کومه صدقه غوره وي؟ نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل کومه صدقه چه ته دروغ والی په حالت کښې او کړي او په دغه وخت کښې ستاد ژوند نه امید وي او د غریب کیدلو د سره انديخنه وي داسې نه چه ته منتظر ئی د داسې وخت چه کله روح ستامری ته راشي او بیا ووائی چه فلانی ته دومره ورکړی او فلانی ته دومره ورکړی ځکه چه دغه مال په دغه وخت کښې ئې د دې نه هم، د بل چا حق جوړ شوي دي.

(يا رسول الله! ای الصدقة افضل؟ قال ان تصدق وانت صحيح الخ)

د رسول الله صلی الله علیه و آله نه تپوس او کړې شو د افضل الصدقة په باره کښې نو رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه د ټول نه غوره صدقه هغه ده کومه چه په دې حال کښې او کړې شی چه انسان صحت مند وی، او هغه کښې د مال حرص او مینه هم وی د صحت او طاقت د وجې نه کافی مودې پورې ئې د خپل ژوندی پاتې کیدو توقع وی، او د فقر نه ویرېږي نو کومه صدقه چه په داسې حال کښې او کړې شی هغه به د ټولو نه افضل وی (۱) لهذا هم په دې حالت کښې انسان لره صدقه کول پکار دی، او بیا وړاندې د دې د ضد نه رسول الله صلی الله علیه و آله منع فرمائی چه تاخیر مه کوه او مهلت مه ورکوه خپل نفس لره د صدقه کولو نه تر دې چه روح حلق ته راورسی نو ته وائې (د وصیت په طور)، چه فلانی ته دې دومره ورکړې شی او فلانی ته دې دومره ورکړې شی حال دا چه هغه د بل فلانی شوي دي یعنی وارث.

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم قاله المنذری

[۲۸۶۶] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي قُدَيْكٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي ذُنَيْبٍ، عَنْ شُرَحْبِيلَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخَدْرِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَأَنْ يَتَصَدَّقَ الْمَرْءُ فِي حَيَاتِهِ بِدِرْهَمٍ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَتَصَدَّقَ بِمِائَةِ دِرْهَمٍ عِنْدَ مَوْتِهِ".

۱: صحیح البخاری للزکاة ۱۱ (۱۴۱۹)، والوصایا ۷ (۲۷۴۸)، صحیح مسلم للزکاة ۳۱ (۱۰۳۲)، سنن النسائي للزکاة ۶۰ (۲۵۴۳)، الوصایا ۱ (۳۶۴۱)، (تحفة الأشراف: ۱۴۹۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۳۱، ۲۵۰، ۴۱۵، ۴۴۷) (صحیح)
 ۲: ځکه چه د دي حالاتو تقاضه دا ده چه صدقه اونکړې شی خو هغه انسان د خپل نفس د مخالفت کولو سره صدقه کوي
 ۳: تهرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۴۰۷۱) (ضعیف)

د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی که چرې څوک په خپل ژوند کښي یو درهم صدقه کړي نو هغه ددې نه بهتر دي چه دژوند نه پس سل درهمه صدقه کړي.

[۲۸۶۷] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا نَعْرَبْنُ عَلَى الْحَدَّانِي، حَدَّثَنَا الْأَشْعَثُ بْنُ جَابِرٍ، حَدَّثَنَا يَشْرَبْنُ حَوْشِبٌ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ وَالْمَرْأَةُ بِطَاعَةِ اللَّهِ سِتِينَ سَنَةً، ثُمَّ يَحْضُرُهَا الْمَوْتُ فَيُضَارَانِ فِي الْوَصِيَّةِ فَتَجِبُ هُمَا النَّارُ"، قَالَ: وَقَرَأَ عَلَيَّ أَبُو هُرَيْرَةَ مِنْهَا هُنَا مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوحَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرِ مُضَارٍ حَتَّى بَلَغَ ذَلِكَ الْقَوْزُ الْعَظِيمُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا يَعْنِي الْأَشْعَثُ بْنُ جَابِرٍ، حَدَّثَنَا نَعْرَبْنُ عَلَى.

د ابوهريره و نه روایت دي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی چه یو انسان سرې وي او که ښځه د شپيته کالو پورې د الله عبادت او کړي او بیا دهغه د مرگ وخت راشي او ددې نه پس داسې وصیت او کړي چه خلقو ته نقصان رسيږي دهغې په وجه نو د داسې کس دپاره دوزخ واجب دي شهر بن اوشب وائی ابوهريره رضی اللہ عنہ زما په وړاندې دا ایت کریمه : تلاوت کړو (من بعد وصية يوصي بها أو دين غير مضار) ابو داود وائی یعنی اشعث بن جابر دنضر بن علي نيکه.

﴿ ان الرجل ليعمل والمرأة بطاعة الله ستين سنة ثم يحضرهما الموت فيضاران في الوصية فتجب لهما النار ﴾ : رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائی : بيشكه بعض سرې او بعض ښځې داسې دي چه تر شپيتو کالو پورې د الله پاک په اطاعت او بندگي ژوند تيروي، بيا چه کله د مرگ وخت راشي نو د وصیت په باره کښي وارثانو ته نقصان رسوي او د جهنم مستحق شي.

مصنف په دي باب کښي بعض احاديث د تصدق ذکر کړي دي ځکه چه تصدق د مرگ په وخت د وصیت په حکم کښي وي او څنگه وصیت د ثلث نه د زيات دپاره جائز نه دي هم دغه شان تصدق هم جائز نه دي او که تصدق وارثانو ته د نقصان رسولو دپاره وي نو مطلقاً جائز نه دي که هغه ثلث وي او که د ثلث نه کم وي. (بذل)

والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه قاله المنذرى.

باب مَا جَاءَ فِي الدَّخُولِ فِي الْوَصَايَا

د وصی جوړیدو او ذمه داری قبلولو بیان

یعنی د چا وصی جوړیدو سره د وصیتونو په مسائلو کښي داخلیدل او په ذمه داریانو کښي پریوتل.

[۲۸۶۸] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمُقَرَّبِيُّ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي سَالِمٍ الْجَيْشَانِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا أَبَا ذَرٍّ إِيَّاكَ ضَعِيفًا وَإِيَّيَّ أَحَبُّ لَكَ مَا أَحَبُّ لِنَفْسِي، فَلَا تَأْمُرَنَّ عَلَى الَّذِينَ وَلَا تَوَلِّينَ مَالَ يَتِيمٍ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: تَقَرَّرَ بِهِ أَهْلُ مِصْرَ.

۱: سنن الترمذی للوصایا ۲ (۲۱۱۷)، سنن ابن ماجه للوصایا ۳ (۲۷۰۴)، (تحفة الأشراف: ۱۳۴۹۵)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۲۷۸/۲) (ضعيف)

۲: صحيح مسلم للإمارة ۴ (۱۸۲۵)، سنن النسائي للوصایا ۹ (۳۶۹۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۹۱۹)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۱۸۰/۵) (صحيح)

د ابوذر نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ راته او فرمائیل ای ابوذره کمزورې راته ښکاري اوزه ستا دپاره خوښه وم هغه څه کوم چه دخان دپاره خوښوم یودا چه په دوه کسانو باندي مشر کیره مه اودیتیم دمال ذمه وارمه جوړیره. ابوداود وائی صرف مصریانو دا روایت نقل کړې دې.

شرح الحدیث:

قوله: «یا اباذر انی اراک ضعیفا وانی احب لک ما احب لنفسی فلا تاملن علی اثین ولا تولین مال یتیم» ابوذر غفاری رضی الله عنه فرمائی چه یو ځل رسول الله ﷺ ماته دا نصیحت او فرمائیلو چه ای ابوذر ازه تا کمزورې وینم یعنی د امارت مصالح او د هغې د ذمه داریانو په پوره کولو کښ، لهذا چرته په دوه کسانو باندي هم امیر جوړ نه شې. (پاتې له په ډیرو باندي) او چرته هم د یو یتیم د مال متولی جوړ نه شې.

په دې باندي یو اشکال راځی چه تاسو خو او فرمائیل چه «ما احب لک ما احب لنفسی» حال دا چه رسول الله ﷺ خو امیر الامراء او ولی الاولیاء وو، د دې ظاهر جواب دا دې چه د رسول الله ﷺ ابوذر رضی الله عنه لره د امارت او تولیة د قبول والی نه منع فرمائیل یو علت سره معلل دې یعنی د هغه ضعف او هغه علت په هغوی کښې مفقود دې، او بیا د رسول الله ﷺ امارت او تولیة وغیره د هغوی خپله اختیار کړې شوې لږ دې هغه خو د الله پاک د طرف نه ورکړه ده.

والحدیث اخرجه مسلم والنسائی، قاله المنذری

بَاب مَا جَاءَ فِي نَسْخِ الْوَصِيَّةِ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ

دموراوپلار اود نورو خپلوانو دپاره دوصیت دمنسوخ کیدو بیان

[۲۸۶۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَرْوَزِيُّ، حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّخَعِيِّ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنَّا بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةَ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ آيَةٌ ۸۰، فَكَانَتْ الْوَصِيَّةُ كَذَلِكَ حَتَّى نَسَخْتَهَا آيَةُ الْمِيرَاثِ.

د ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ددې ایت کریمه: «ان ترک خیرا الوصیة للوالدین والأقربین» حکم په ابتداء اسلام کښې وو چه دموراوپلار اودنورو وارثانو دپاره به وصیت کیدې شی ددې نه پس دا ایت دمیراث په ایت سره منسوخ شو.

د ایت په شروع کښې د میراث د نزول نه مخکښې د وصیت للوالدین والأقربین حکم وو قیل وجوبا وقیل استحبابا... قال الله تعالی «یاایها الذین امنوا اذا جاء احدکم الموت ان ترک خیرا الوصیة للوالدین والأقربین بالمعروف الایة» بیا د ایت میراث د نزول سره دا حکم منسوخ شو. هم دا مضمون د ابن عباس رضی الله عنه مذکورہ فی الباب کښې دې.

۱: تفرد به ابوداود، (تحفة الأشراف: ۶۱۶۰)، وقد أخرجه: سنن الدارمي للوصايا ۲۸ (۳۳۰۶) (حسن صحيح)

باب مَا جَاءَ فِي الْوَصِيَّةِ لِلْوَارِثِ

د وارث دپاره د وصیت کولو بیان

[۲۸۷۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ نَجْدَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ، عَنْ شُرْحِبِيلِ بْنِ مُسْلِمٍ، سَمِعْتُ أَبَا أَمَامَةَ، سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَعْطَى كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ فَلَا وَصِيَّةَ لِلْوَارِثِ".

د ابوامامه رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې د الله تعالی هریو حقدارته دهغه حق ورکړې دې اود وارث دپاره وصیت نشته

(سمعت ابا امامة رضى الله تعالى عنه يقول سمعت رسول الله صلی الله علیه و آله يقول الخ)

د وصیت متعلق بعض ضروری مسائل سره د اختلاف ائمه د وړاندې باب نه مخکښې باب کښې تیر شوې دی چه په هغې کښې مسئله الباب هم ده. والحديث اخرجہ الترمذی وابن ماجه قاله المنذرى

باب مُخَالَطَةِ الْيَتِيمِ فِي الطَّعَامِ

د یتیم د خوراک سره د خپل خوراک د شریکولو بیان

[۲۸۷۱] (۲) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ سُوْرَةَ الْأَنْعَامِ آيَةَ ٥٢ وَإِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى ظُلْمًا سُوْرَةَ النَّسَاءِ آيَةَ ١٠، الْآيَةَ، أَنْطَلِقُ مَنْ كَانَ عِنْدَهُ يَتِيمٌ فَعَزَلَ طَعَامَهُ مِنْ طَعَامِهِ وَشَرَّابَهُ مِنْ شَرَّابِهِ، فَجَعَلَ يَفْضُلُ مِنْ طَعَامِهِ فَيُحْبِسُ لَهُ حَتَّى يَأْكُلَهُ أَوْ يَفْسُدَ فَاشْتَدَّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ آيَةَ ٢٢٠ فَخَلَطُوا طَعَامَهُمْ بِطَعَامِهِ وَشَرَّابَهُمْ بِشَرَّابِهِ.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه كله الله تعالى دا ایت : «ولا تقربوا مال الیتیم الا بالتی هی احسن» نازل کړو اودویم دا ایت چه خوک دیتیمانو مال په ظلم سره خوري نو پخپلو خیتو کښې اور اچوي اونزدې ده چه داخلق دوزخ ته لار شي، نود کومو خلقو سره چه یتیمانان اوسیدل هغوی ددوی خوراک دخپل خوراک نه جدا کړو نوچه كله به دیتیم مال دخور لونه پاتې شو نو هغه به ساتلې شو تردې پورې چه پخپله به ئې اوخورو یا دا چه بوئی به ئې اوکړو دا کار خلقوته گران شو هغوی د نبی صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شول او عرض ئې اوکړو: «ويسألونك عن الیتامی قل إصلاح لهم خیر وان تخالطوهم فإخوانکم» نازل شو، ددې نه پس خلقو ددوی سره شریک خوراک خښاک شروع کړو.

(عن ابن عباس رضى الله تعالى عنهما قال لما انزل الله عزوجل ولا تقربوا مال الیتیم الا بالتی هی احسن وان الذين ياكلون اموال الیتامی ظلما الاية الخ)

د حدیث مضمون واضح دې چه په شروع کښې داسې وه چه د کومو خلقو په ذمه

۱: سنن الترمذی/الوصایا ۵ (۲۱۲۰)، سنن ابن ماجه/الوصایا ۶ (۲۷۱۳)، (تحفة الأشراف: ۴۸۸۲)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۶۷/۵)، ویاتی هذا الحدیث برقم: ۳۵۶۵ (حسن صحیح)

۲: سنن النسائی/الوصایا ۱۰ (۳۶۹۹)، (تحفة الأشراف: ۵۵۶۹) (حسن)

داری کښې به یتیمانو ماشومانو پرورش موندلو او د هغوی د مالونو متولی وو نو هغوی به د هغه یتیمو ماشومانو خوراک د خپل خوراک سره شرکت کښې تیارولو چه په هغې کښې د یتامی فائده وه نو هر کله چه دا دواړه آیتونه کوم چه په روایت کښې دی نازل شونو هغه اولیاء احتیاطا داسې او کړل چه د هغه یتیمانو د خوراک خکاګ انتظام ئې مستقل بیل شروع کړو، د خلط بین الطعامین نه د بچ کیدو دپاره، ئې چه کله خانله خوراک شروع کړو نو اوس به اکثر په هغه خوراک کښې بچ کیدله نو یا خو به هغه بچ کیدونکې خوراک هغه یتیمانو خوړلو او یا به خرابیدو، دا صورت حال په هغوی باندې گران شو او رسول الله ﷺ ته ئې د دې ذکر او کړو په دې باندې دویم آیت کریمه نازل شو کوم چه په حدیث کښې ذکر کړې شوې دې، په دې باندې حسب سابق هغه صحابه کرامو ﷺ د خوراک په باره کښې عمل شروع کړو. (والحدیث اخرجہ النسائی، قاله المنذری)

بَابُ مَا جَاءَ فِي مَوْلَى الْيَتِيمِ أَنْ يَنَالَ مِنْ مَالِ الْيَتِيمِ

د یتیم د پرورش کونکي دپاره د یتیم د مال نه څومره خوړل جائز دی؟

ولی الیتیم یعنی وصی او متولی، حاصل ترجمه ئې دا ده چه آیا د یتیم متولی د مال یتیم د نگرانئ او د خدمت اجرت او وظیفه اخستلې شی که نه؟

[۲۸۷۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، أَنَّ خَالِدَ بْنَ الْحَارِثِ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ يَعْنِي الْمُعَلِّمَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رَجُلًا أَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنِّي فَقِيرٌ لَيْسَ لِي شَيْءٌ عِوَى يَتِيمٍ، قَالَ: فَقَالَ: "كُلْ مِنْ مَالِ يَتِيمِكَ غَيْرَ مُسْرِفٍ وَلَا مُبَادِرٍ وَلَا مُتَأْتِلٍ."

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روایت کوی چه یوسرې نبی ﷺ ته راغې او عرض ئې او کړو چه زه فقیریم زما سره هیڅ نشته لیکن زما سره یو یتیم دې راوی وائی نبی ﷺ او فرمائیل ددې یتیم دمال نه خوره خوفصول خرچي مه کوه او د ضرورت مطابق او بغیر ددې ویرې نه چه دې به لوی شي او بغیر ددې ارادې نه چه مال دهغه نه وتروړلې شي

﴿ قال : فکل من مال یتیمک غیر مسرف ولا مبادر ولا متأتل ﴾

شرح الحدیث:

په ترجمه الباب والا مسئله کښې رسول الله ﷺ یو سرې او فرمائیل چه او په دې صورت کښې د یتیم د مال نه حق الخدمت اخستلې شی په دې حال کښې چه اسراف کونکې نه وی او نه تیزی کونکې وی او نه سرمایه جمع کونکې وی

دا اشاره ده د دې آیت کریمه د مضمون طرف ته، ﴿ ولا تاكلوها اسرافا وبدارا ان يكبروا ﴾ د 'بدارا' مطلب چه د هغې نه منع کولې شي دا دې چه هغه د یتیم متولی زر زر د یتیم مال خرچ کړی د یتیم د بالغ کیدو نه مخکښ، ځکه چه د هغه د بالغ کیدو نه پس خو تولیة ختمیږی، 'متائل' ای غیر متخذ منه اصل مال، دا د ائله نه دې، ائله الشئ اصله یعنی داسې نه دی کیدل پکار چه د یتیم مال لره د خپل ځان دپاره ذخیره او راس المال جوړ کړې شي

(۱) سنن النسائی/الوصایا ۱۰ (۳۶۹۸)، سنن ابن ماجه/الوصایا ۹ (۲۷۱۸)، (تحفة الأشراف: ۸۶۸۱)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱۸۷۲، ۲۱۶) (حسن صحیح)

چه صرف حق الخدمت واخستلې شی او په شرح کښې د دې تفسیر داسې کړې شوې دې چه هغه متولی د یتیم په مال کښې تجارت اوکړی او د هغه د راس المال نه ئې اوگتې او د یتیم د بالغ کیدو نه پس ربح خپله ساتلو سره صرف راس المال ورکړی. (والحدیث اخرجہ النسائی وابن ماجه، قاله المنذری)

بَاب مَا جَاءَ مَتَى يَنْقَطِعُ الْيَتِيمُ

د یتیم توب د عمر د حد بیان

[۲۸۷۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَدِينِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ خَالِدِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ رُقَيْشٍ، أَنَّهُ سَمِعَ شَيْوَخًا مِنْ بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، وَهِيَ خَالَةُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَحْمَدَ، قَالَ: قَالَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ: حَفِظْتُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَتِمُّ بَعْدَ احْتِلَامٍ وَلَا صَمَاتٍ يَوْمَ إِلَى اللَّيْلِ.

علي عليه السلام د نبی عليه السلام نه روایت کوی چه د نبی عليه السلام نه مې یاد کړي ووجه فرمائیلی ئې وو نشته یتیم توب پس د احتلام نه او نه خاموشی شته پوره ورځ ترشپې پورې.
(لا يتم بعد احتلام، ولا صمات يوم الى الليل)

علي عليه السلام فرمائی چه ماته د رسول الله صلى الله عليه وسلم دا حدیث ښه یاد دې چه د هغې ترجمه دا ده چه د احتلام نه پس یتیم، یتیم نه پاتې کیږی بلکه په هغه باندې د بالغین احکام جاری کیږی، او گویا د ولی تولیت د هغه نه لرې شی، هغه خپله د خان او د خپل مال ذمه دار وی. او دویم خبره کومه چه ماته د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه محفوظ ده؟ دا ده چه د سحر نه ماښام پورې خاموش پاتې کیدل یعنی صوم سکوت دا په سلام کښې نشته (لانه من عبادة الجاهلية) بلکه د اسلام تعلیم خودا دې چه ذکر الله او کلمه الخیر په ژبې سره اوئیلی شی.

بَاب مَا جَاءَ فِي التَّشْدِيدِ فِي أَكْلِ مَالِ الْيَتِيمِ

د یتیم د مال په خوړلو باندې د وعید بیان

په حدیث الباب کښې ناحق د یتیم مال خوراک لره په اووه کبائر چه هلاکونکی دی شمار کړې شوې دی.

[۲۸۷۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ هَمْدَانَ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلَالٍ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْقَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُؤْبَقَاتِ، قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا هُنَّ؟ قَالَ: الشُّرْكُ بِاللَّهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبَا، وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ، وَالتَّوَلَّى يَوْمَ الزُّحْفِ، وَقَدْ فَتِنَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَبُو الْقَيْثِ سَأَلَ مَوْلَى ابْنِ مُطْعِمٍ.

د ابوهریره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم فرمائیلی دی خان بچ وساتئ دا وه هلاکونکو گناهونونه عرض اوکړې شو چه هغه کوم گناهونه دی وئې فرمائیل شريك

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۱۶۰) (صحیح)

(۲): صحیح البخاری/الوصايا ۲۳ (۲۷۶۶)، والطب ۴۸ (۵۷۶۴)، والحدود ۴۴ (۶۸۵۷)، صحیح مسلم/الإيمان ۳۸ (۸۹)،

سنن النسائي/الوصايا ۱۱ (۳۷۰۱)، (تحفة الأشراف: ۱۲۹۱۵) (صحیح)

جوړول د الله تعالى سره، او سحر کول، او وژل دهغه نفس دي کوم چه الله تعالى حرام کړي دي مگر په حق، او خوړل د سود دي، او خوړل د مال دیتیم، او په جهاد کښي د کافرو د مقابلي نه تښتیدل او تهمت وئیل په پاکو او نیکو بڼو باندي چه ناخبره وي او مومناني وي.

شرح الحديث:

﴿ اجتنبوا السبع الموبقات الخ ﴾ تولى يوم الزحف، د زحف نه مراد قتال او جنگ، یعنی د جنگ نه تیخته کول. ﴿ وقذف المحصنات الغافلات ﴾ یعنی په پاکدامنو او ناخبره (ساده) زنانو باندي د زنا تهمت لگول، او په روستو روایت کښي داسي دي يا رسول الله ﷺ ما الكبائر؟ قال هن تسع فذكر معناه ﴿ وعقوق الوالدين المسلمين، واستحلال البيت الحرام قبلتكم احياء وامواتا ﴾ په دي حديث کښي د کبائرو تعداد رسول الله ﷺ نهه خودلي دي، د تیرو اووه نه علاوه د دوه نورو اضافه ده، عقوق الوالدين، او د کعبه الله استحلال یعنی د حرمت سپکاوي، کوم څیزونه چه په هغې کښي حرام کړي شوي دي د هغې نه نه بنديدل، وړاندي په روایت کښي دي چه هغه کعبه کومه چه ستاسو قبله ده د ژوندو دپاره هم او د مرو دپاره هم، پس په ژوند کښي انسان هغې طرف ته مخ کولو سره موندل کوي، او د مرگ نه پس د مړي مخ لره هغې طرف ته متوجه کوي.

په گناهونو کښي د صغائرو او کبائرو بحث:

په دي حديث کښي يو خو دا خبره معلومه شوه د گناهونو تقسيم، یعنی بعض گناهونه د شارع په نزد صغیره دي او بعض کبیره دي، دويم څيز د هغې تعداد، د جمهورو علماء کرامو رائي خو دا ده چه گناه په دوه قسمه ده صغائر او کبائر، او بعض علماء کرام د دي تقسيم قائل نه دي، هغوی وائي چه د الله رب العالمين احکم الحاکمين هره يوه نافرمانی کبیره گناه ده، خو د قرآن کریم او احاديثو د ظاهر نه د جمهورو د مسلک تائيد کيږي، او په حد د کبیره یعنی د دي په تعريف کښي د علماء کرامو اقوال مختلف دي، فقيل الکبيرة هي الموجبة للحد، وقيل ما يلحق الوعيد بصاحبه بنص الكتاب او سنة، یعنی د کومې گناه په باره کښي چه په قرآن او حديث کښي څه وعيد راغلي وي، وقيل كل ذنب ادخل صاحبه النار وغير ذلك الى آخر ما في البذل.

دويم څيز په حديث کښي تعداد د کبائرو دي، په رومي حديث کښي اووه او په دويم حديث کښي نهه بيان کړي شوي دي د دي نه علاوه هم په احاديثو کښي نور کبائر ذکر کړي شوي دي پس ابن عباس رضي الله عنهما فرمائي ﴿ كل ما نهى الله تعالى عنه فهو كبيرة ﴾ او د هغوی نه تپوس او کړي شوي وو چه آيا کبائر نهه دي نو هغوی او فرمائيل هي الى سبعين یعنی د هغې تعداد اويا ته رسيږي او په يو روایت کښي د هغوی نهه د اووه سوه لفظ دي.

علماء کرامو د کبائرو په نوم باندي مستقل تصنيفات هم کړي دي لکه الکبائر د امام ذهبي رحمته الله عليه، الصغائر والكبائر لابن نجيم، الزواجر لابن حجر الهيتمي، الكبائر لابن عبد الوهاب (حديث ابوهريره رضى الله تعالى عنه اخرجه البخارى ومسلم والنسائي وحديث عمير رضى الله تعالى عنه اخرجه النسائي قاله المنذرى)

[۲۸۷۵] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يَعْقُوبَ الْجَوْزَجَانِيُّ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِئٍ، حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ سِنَانٍ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عَمِيرٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ وَكَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ، أَنَّ رَجُلًا سَأَلَهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الْكَبَابُ؟ فَقَالَ: "هُنَّ تِسْعٌ"، فَذَكَرَ مَعْنَاهُ زَادَ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ الْمُسْلِمِينَ، وَاسْتِحْلَالُ الْبَيْتِ الْحَرَامِ قَبْلَتِكُمْ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا.

عبيد بن عمير دخپل پلار عميرنه کوم چه صحابي دي روایت کوي يو کس دنبي ﷺ نه پوښتنه او کړه چه اي دالله رسوله لوښي گناهونه کوم کوم دي؟ نبي ﷺ او فرمائيل هغه نښه دي او دتيرشوي حديث په شان روایت ئې بيان کړو مگر ددې اضافي سره چه نافرمانی کول د مور او پلار چه مسلمانان وي او دکعبي دعزت خيال نه ساتل کوم چه دعزت والا کور دي او په مرگ او ژوند کښي ستاسو قبله ده.

بَاب مَا جَاءَ فِي الدَّلِيلِ عَلَى أَنَّ الْكُفْنَ مِنْ جَمِيعِ الْمَالِ

د کفن کپړه د مړي په مال کښي داخل ده

او په بعض نسخو کښي «من راس المال» يعنی د مړي د کفن تعلق د پوره مال سره دي، که پوره ترکه په دې کښي خرچ شي نو خرچ دي شي، لهذا کفن به مقدم وي په وصيت او ميراث په ټولو باندي، هم په دې سره د دې باب مناسبت هم د کتاب الوصية سره ظاهر شو.

[۲۸۷۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَايِلٍ، عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ: مُصْعَبُ بْنُ عَمِيرٍ قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ، وَلَمْ تَكُنْ لَهُ إِلَّا مَرَّةٌ كُنَّا إِذَا غَطَيْنَا بِهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلَاهُ، وَإِذَا غَطَيْنَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "عَظُوبُهَا رَأْسُهُ وَاجْعَلُوا عَلَى رِجْلَيْهِ مِنَ الرَّذْخِ".

د خباب نه روایت دي فرمائي چه مصعب بن عميره واحد په ورځ باندي شهيد شوي وو او ديوڅادرنه علاوه ورسره هيڅ نه وو کله چه به مونږ دده سر پټولو نو خپي به ئې ښکاره شوي او چه خپي به موپټي کړي نوسر به ئې ښکاره شونښي ﷺ چه دا اوليدل نووښي فرمائيل چه سر ئې پټ کړئ او په خپو باندي ئې سرگړي واچوي.

«عن خباب رضي الله تعالى عنه قال: مصعب بن عمير قتل يوم احد ولم يكن له الا مرة الخ»

د «قال» فاعل ضمير مرفوع دي کوم چه خباب ته راجع دي، او مصعب په تركيب کښي مبتداء او قتل د دي خبر دي، خباب ﷺ فرمائي چه مصعب بن عمير ﷺ په احد کښي په دې حال کښي شهيد کړي شو چه هغوی سره سواد يو وړئ د څادر نه علاوه هيڅ هم نه وو، او هغه هم داسي وو چه که مونږ د هغوی سر پټولو نو د هغوی خپي ښکاره کيدي، او که خپي مو ورله پټولې نو سر ئې ښکاره کيدو، رسول الله ﷺ او فرمائيل چه دا د سر طرف ته کړئ، او په خپو ورته د سرگړي پانږې واچوي.

(والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذري)

(۱) سنن النسائي/المحاربة ۳ (۴۰۱۷) (وعنده: «تسع»)، (تحفة الأشراف: ۱۰۸۹۵) (حسن)
 (۲) صحيح البخاري/الجنائز ۲۷ (۱۲۷۶)، مناقب الأنصار ۴۵ (۳۸۹۷)، المغازي ۱۷ (۴۰۴۵)، ۲۶ (۴۰۸۲)، الرقاق ۷ (۶۴۳۲)، ۱۶ (۶۴۴۸)، صحيح مسلم/الجنائز ۱۳ (۹۴۰)، سنن الترمذي/المناقب ۵۴ (۳۸۵۳)، سنن النسائي/الجنائز ۴۰ (۱۹۰۴)، (تحفة الأشراف: ۳۵۱۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۹/۵، ۱۱۲، ۳۹۵/۶) (صحيح)

بَاب مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يَهَبُ ثُمَّ يُوصِي لَهُ بِهَا أَوْ يَرِيهَا

که چرې یو څیز هبه کړی او بیا ورته د میراث یاد وصیت په ذریعه باندې ملاوښی

[۲۸۷۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَطَاءٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَرِيدَةَ، عَنْ أَبِيهِ بَرِيدَةَ، أَنَّ امْرَأَةً أَنْتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: "كُنْتُ تَصَدَّقْتُ عَلَى أُمِّي بَوْلِيدَةٍ وَإِنَّهَا مَاتَتْ وَتَرَكْتُ تِلْكَ الْوَلِيدَةَ، قَالَ: قَدْ وَجِبَ أَجْرُكَ وَرَجَعَتْ إِلَيْكَ فِي الْمِيرَاثِ، قَالَتْ: وَإِنَّهَا مَاتَتْ وَعَلَيْهَا صَوْمٌ شَهْرٍ أَفِيْجُزًا أَوْ يَقْضِي عَنْهَا أَنْ أَصُومَ عَنْهَا قَالَ: نَعَمْ قَالَتْ: وَإِنَّهَا لَمْ تَحْجْ أَفِيْجُزًا أَوْ يَقْضِي عَنْهَا أَنْ أَحْجَّ عَنْهَا قَالَ: نَعَمْ."

د بريدۀ ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه یوه ښځه د نبی ^{صلی الله علیه و آله} په خدمت کښې حاضره شوه او وښې وئیل ما خپلې مور ته یوه وینځه هبه کړې وه او هغه وفات شوه او دغه وینځه تري پاتې شوه نبی ^{صلی الله علیه و آله} او فرمائیل ستا دپاره اجر واجب شو او وینځه درته هم واپس شوه په میراث کښې هغې او وئیل مور چه مې مړه کیده نود یوې میاشتي د روژو قضائې په ذمه باندې وه نو ایازه دهغې د طرف نه قضائې روژې او نیسم نووښې فرمائیل ضرور ئې ونیسه، عرض ئې او کړو زما مور حج هم نه وو کړې نو ایازه دهغې د طرف نه حج کولې شم؟ نبی ^{صلی الله علیه و آله} او فرمائیل هو (دهغې د طرف نه حج وکړه).

شرح الحديث:

قوله: (عن عبدالله بن بريدة عن ابيه ^{رضي الله عنه} ان امرأة اتت رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} وقالت كنت تصدقت على امي بوليدة الخ): یعنی یو زنانه د رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} په خدمت کښې حاضره شوه او هغه عرض او کړو چه زما د مور انتقال شوې دې او ما هغې ته په ژوند باندې یو وینځه هبه کړې وه او اوس هغې هغه وینځه په میراث کښې پریخودله، یعنی آیا هغه زه اخستلې شم؟ نو رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} اجازت ورکړو او وې فرمائیل ستا اجر په خپل ځانې قائم دې او هغه تا ته په میراث کښې واپس شوه. د جمهورو مسلک دا دې چه صدقه کړې شوې مال که د میراث په طور راشی نو هغې لره اخستل جائز دی، د بعض علماء کرامو په دې کښې اختلاف دې هغوی وائی چه د هغې د اخستلو نه پس صدقه کول ضروری دی. (بذل)

بیا هم هغه زنانه دا سوال هم او کړو چه زما د مور په ذمه د یوې میاشتي روژې هم دې نو آیا دا کافی ده چه د هغوی د طرف نه روژه او نیسم؟ هغوی او فرمائیل: او..... او بیا هم دا سوال د حج په باره کښې وړاندې ذکر دې.

دا مسئله چه په عباداتو کښې نیابت جاری کیدې شی یا نه بالتفصیل کتاب الصوم او حج کښې تیره شوې ده. (والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذری)

بَاب مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يُوقِفُ الْوَقْفَ

د کوم څیز د وقف کولو بیان

ذکر د وقف کښې د مصنفینو طرز عمل:

دا باب د وقف سره متعلق دې کوم چه مصنف د کتاب الوصیة په ضمن کښې راوړې دې.

امام بخاری رحمہ اللہ ہم داسې کړې دي، او امام ترمذی رحمہ اللہ د وقف باب د ابواب الاحکام په ضمن کښې اخستلې دي، او امام نسائی مستقل کتاب « کتاب الاحباس » په عنوان قائمولو باندې د هغې د لاندې ډیر ابواب ذکر کړې دي او د هغې نه روستو ئې متصلا کتاب الوصایا ذکر کړې دي.

د وقف په حقیقت کښې د امام صاحب رحمہ اللہ او د جمهورو اختلاف:

د دې نه پس په دې باندې خان پوهول پکار دی چه د وقف حقیقت کښې د امام صاحب رحمہ اللہ او د صاحبینو رحمہم اللہ اختلاف دې، او کوم مسلک چه د صاحبینو دې هم هغه د ائمه ثلاثه دې. د وقف لغوی معنی د حبس ده او شرعا د دې تعریف داسې دې. « حبس العین علی ملک الواقف والتصدق بالمنفعة » یعنی اصل خیز لره په خپل ملکیت باندې باقی ساتلو سره د هغې منافع صدقه کول، په یو کس باندې یا په یو جماعت باندې، که هغه فقراء وی یا اغنیاء، دا تعریف د امام ابوحنیفه رحمہ اللہ په نزد دې او د صاحبینو په نزد د دې تعریف دا دې: حبس العین علی ملک الله تعالی والتصدق بمنفعتها..... یعنی د یو انسان خپل یو خیز لره د الله پاک ملکیت منلو سره د هغې د منفعت صدقه کول، د امام صاحب رحمہ اللہ په نزد د واقف ملکیت وقف کړې شوې خیز باقی پاتې کیږي او د صاحبینو په نزد هغه خیز د مالک د ملکیت نه خارج شی، او بله دا چه وقف د امام صاحب په نزد جائز دې لازم نه دې په مثل د عاریه دې. د واقف په حیات کښې هغه خیز د هغه په ملک کښې وی او د هغه د وفات نه پس ملک د ورثه شی بحيث بیع وپوهب، وکذا جاز رجوع الواقف عن الوقف فی حیاته مع الکراهة.... او د صاحبینو په نزد د واقف دپاره ابطال د وقف جائز نه دې بلکه هغه لازمیری، هم دغه شان په دې کښې میراث هم نه جاری کیږي وعلیه الفتوی (الدر المختار) د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاث مسلک هم دا دې.

[۲۸۷۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، وَحَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ ابْنِ عَرَبَانَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: أَصَابَ عُمَرُ أَرْضًا بِخَيْبَرَ قَاتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَصَبْتُ أَرْضًا لَمْ أَصِبْ مَالًا قَطُّ أَنْفَسَ عِنْدِي مِنْهُ فَكَيْفَ تَأْمُرُنِي بِهِ قَالَ: "إِنْ شِئْتَ حَبَسْتَ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا، فَتَصَدَّقْ بِهَا عُمَرُ أَنَّهُ لَا يَبِاعُ أَصْلُهَا وَلَا يُوهَبُ وَلَا يُورَثُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْقُرْبَى وَالرِّقَابِ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ، وَزَادَ عَنْ بَشِيرٍ، وَالضَّيْفِ لَمْ اتَّفَقُوا إِلَّا جَنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهَا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ وَيُطْعِمَ صَدِيقًا غَيْرَ مَمْمُولٍ فِيهِ" زَادَ عَنْ بَشِيرٍ قَالَ: وَقَالَ مُحَمَّدٌ: غَيْرُ مَمْتَأِيلٍ مَالًا.

د عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه عمر رضي الله عنه ته په خیبر کښې زمکه ملاوشوي وه هغه دنبي صلی الله علیه و آله په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې او کړوای د الله رسوله ماته یوه زمکه ملاوشوي ده چه دهغې نه بڼه مال چري ماته نه دې ملاوشوي په دې باره کښې ستاسو څه رای ده؟ نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل که چري خوښه دي وي نو ددي اصل پریرده او ددې نفع صدقه

(۱): صحیح البخاری للشروط ۱۹ (۲۷۳۷)، والوصایا ۲۲ (۲۷۱۴)، ۲۸ (۲۷۷۲)، ۳۲ (۲۷۷۷)، صحیح مسلم الوصایا ۴ (۱۶۳۲)، سنن الترمذی بالأحكام ۳۶ (۱۳۷۵)، سنن النسائی بالإحباس ۱ (۳۶۲۹)، سنن ابن ماجه بالأصنقات ۴ (۲۳۹۶)، (تحفة الأشراف: ۷۷۴۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۵/۲، ۱۲۵) (صحیح)

کړه عمر رضي الله عنه په دې باندې عمل او کړو چه اصل زمکه به نه خرخولې شي اونه به هبه کولې شي اونه به په وراثت کښې تقسيمولې شي اوددې نه به فقيران اومسکينان فائده حاصله وي اوهمدارنگي غلامان او مجاهدين مسافر اوميلمانه به ددې نه فائدي اخلي اوڅوک چه دوقف خيز اختيارمندوي نوهغه دي دي لره په مناسب طريقي سره استعمالوي اوپه خپلو غريبانانو ملگرودي اوخوړوي داسي چه ددې نه مال جمع کونکي نه وي.

(عن ابن عمر رضي الله عنهما قال اصاب عمر رضي الله عنه ارضا بخير فاتي النبي صلى الله عليه وسلم الخ)

مضمون د حديث (وقف د عمر) :

مصنف په دې باب کښې دوه احاديث ذکر کړې دي د دواړو تعلق د عمر رضي الله عنه د وقف سره دې چا چه په خپلو دواړو زمکو ثمنغ او صرمة ابن الاكوع د رسول الله صلى الله عليه وسلم د مشورې نه پس وقف کړې وي. په دې دواړو کښې رومي حديث خولې مختصر دې او په دويم مفصل چه په هغې کښې پوره وقف نامه يعنی کتاب الوقف ذکر دې، په رومي حديث کښې مضمون دا دې عمر رضي الله عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته عرض اوکړو چه ما يو داسې زمکه حاصله کړې ده چه د هغې نه زيات نفيس مال ماته کله هم نه دې حاصل شوي، نو زه په دې څه اوکړم او څنگه ئې صدقه کړم په دې کښې ستاسو څه حکم دې؟ رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل چه که ته غواړې نو اصل زمکه اوساته او د هغې منافع صدقه کړه، پس عمر رضي الله عنه د رسول الله صلى الله عليه وسلم د فرمان مطابق د هغې تصدق اوکړو په دې شرط سره (لا يباع اصلها ولا يوهب ولا يورث) چه اصل زمکه به نه خرخولې شي او نه به په ميراث کښې ورکولې شي، وړاندې د موقوف عليهم بيان دې (للفقراء والقريبى والرقاب فى سبيل الله) د قريبي نه مراد يا خود واقف خپلوان دي، او کيدې شي چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم خپلوان مراد وي او د رقاب نه مراد فک رقاب يعنی د غلامانو آزادول وي او د مکاتيبينو قرض ادا کول دي. (لا جناح على من وليها ان ياكل منها بالمعروف) يعنی دمتولی د وقف دپاره دا جائز دې چه د دې نه په معتاد او معروفې طريقي نه منتفع شي او پخپل دوست باندې هم اوخړوي، خو دا دې نه وي چه په هغې کښې د خپل ځان دپاره کيخودلو سره جمع کړي، گويا صرف د عادت مطابق د اتفاق اجازت دې دجمع نه. (غير متائل مالا) متائل د ائله ه اخستلې شوې دې ائله اصلې خيز ته وئيلې شي قال امرئ القيس (وقد يدرك المجد المثل امثالي) يعنی د وقف مال لره دې راس المال نه جوړوي.

د دې روايت نه په ظاهره دا نه معلومېږي چه په دې وقف کښې دا معلومېږي چه په دې وقف کښې دا شرطونه (لا يباع ولا يوهب) وغيره د عمر رضي الله عنه د طرف نه وو، او د بخاری د بعض روايتونو نه معلومېږي چه د دې شرطونو هدايت خپله رسول الله صلى الله عليه وسلم عمر رضي الله عنه ته کړې وو، د حافظ د کلام نه معلومېږي چه د دې شرطونو مرفوعا ثابت کيدل زيات صحيح دي ځکه چه د رفع والا روايت اتم او زيات واضح دې او صاحب تخفة الاخوذى ۵۲۲/۴ د روايتينو تعارض ليکلو نه پس دا توجيه کړې ده چه په دې دواړو کښې جمع په دې طريقه باندې ممکنه ده چه په کوم روايت کښې دا شرطونه د عمر طرف ته منسوب دي هغه روايتونه روستو دي اول خپله رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغه شرطونو هدايت فرمائيلې وو بيا عمر رضي الله عنه د رسول

الله ﷻ د حکم په تعميل کښې هغه شرطونه اولیکل
دا دي او نه وئیلې شی چه دا حدیث د وقف په سلسله کښې د جمهورو او د صاحبینو
موافق دي ځکه چه په دي کښې د « لا بیع ولا یوهب ولا یورث » وضاحت دي جمهور علماء
کرام هم د وقف په باره کښې هم دا وائی او دا په دي وجه چه دا حدیث په دي خبره باندي
دال نه دي چه دا امور د وقف په حقیقت کښې داخل دی هدا ما یخطر بیالی فلیستل... والله
تعالی اعلم. (والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه قاله المنذری)

[۲۸۷۹] (۰) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ صَدَقَةَ
عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: نَسَخَهَا لِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ: بِسْمِ اللَّهِ
الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، هَذَا مَا كَتَبَ عَبْدُ اللَّهِ عُمَرُ فِي تَمْعٍ قَقْصٍ مِنْ خَبْرَةِ نَحْوِ حَدِيثِ نَافِعٍ قَالَ: غَيْرُ مَتَأْتِلٍ مَالًا فَمَا عَقَا عَنْهُ
مِنْ ثَمَرَةٍ فَهُوَ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ، قَالَ: وَسَأَقُ الْقِصَّةَ قَالَ: وَإِنْ شَاءَ وَلِيُّ تَمْعٍ اشْتَرَى مِنْ ثَمَرَةٍ رَقِيقًا لِعَمَلِهِ وَكَتَبَ
مُعَيَّقِبٌ وَشَهِدَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْأَرْقَمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، هَذَا مَا أَوْصَى بِهِ عَبْدُ اللَّهِ عُمَرُ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنْ حَدَّثَ
بِهِ حَدَّثٌ، أَنْ تَمْعًا، وَصِرْمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ، وَالْعَبْدَ الَّذِي فِيهِ، وَالْبَيَّاتَةَ سَهْمِ التِّي بِخَيْبَرَ، وَرَقِيقَهُ الَّذِي فِيهِ، وَالْبَيَّاتَةَ الَّتِي
أَطْعَمَهُ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْوَادِي تَلِيهِ حَفْصَةُ مَا عَاشَتْ، ثُمَّ لِيَبِهِ ذُو الرَّأْيِ مِنْ أَهْلِهَا أَنْ لَا يَبَاعَ وَلَا يَشْتَرَى
بِنَفْقِهِ حَيْثُ رَأَى مِنَ السَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ وَذَوِي الْقُرْبَى وَلَا حَرَجَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ إِنْ أَكَلَ أَوْ أَكَلَتْ أَوْ اشْتَرَى رَقِيقًا مِنْهُ.

ديحي بن سعیدنه روایت دي وائی چه عبد الحمید بن عبد الله بن عمر بن الخطاب زما دپاره
لیکلې وو «بسم الله الرحمن الرحيم» دا هغه کتاب دي کوم چه عبد الله بن عمر رضی الله عنہ لیکلې وو
دسمع په باره کښې سمع دهغه مال یاباغ نوم دي کوم چه عمر رضی الله عنہ په مدینه کښې یابه
خیبر کښې وقف کړې دي اوبیا ئې حدیث بیان کړو دپورتني روایت په شان یعنی مال جمع
کولو والا به نه وی او کومه میوه چه ددي نه راپریوځي نو هغه دفقیرانو دپاره ده اود سوال
کونکو دپاره اودنه سوال کونکو دپاره، اوددي نه پس ئې قصه بیان کړه که چرې دسمع
متولي او غواری نو هغه ددي دمپوو دقیمت په بدل کښې غلام اغستلی شي (دباغ دخدمت
دپاره) معیقیب لیکل او کړل عبد الله بن ارقم شهادت او کړو، چه دا دهغه وصیت تحریر دي
کوم چه دالله دبنده عمر وو که چرې ماته څه حادثه
پېښه شي نو تمع او صرمه بن اکوع او هلته چه کوم غلامان دي اوسل حصې دي په دغه
علاقه کښې کوم چه خیبرته نزد پروت دي دغه ټول ماته نبی صلی الله علیه و آله راکړي وو ددي ټولو
متولي بن حفصه پاتې شي ترڅو چه ژوندې وي ددي نه پس چه څوک په دوی کښې صاحب
الرای وي هغه به متولي وي په دي شرط چه دامال به نه شی خرڅولې اونه اخستلې او چرته
چه مناسب ښکاره شي نوسوال کونکو او محرومو او ریښته داروباندي دي ئې خرڅ کړي
او څوک چه دوقف مال متولي وي نوددي دپاره هیڅ قسم خرج نشته چه ددي نه خورال
او کړي یا تري چاله ورکړي یاددي دامدن نه ددي وقف مال حفاظت او کړي اود خدمت دپاره
غلام وغیره واخلي.

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۸۹) (صحیح)

« عن يحيى بن سعيد عن صدقة عمر بن الخطاب رضي الله عنه قال نسخها عبدالحميد ابن عبدالله بن عبدالله بن عمر بن الخطاب بسم الله الرحمن الرحيم هذا ما كتب عبدالله عمر في ثمغ، فقصر من خبره نحو حديث نافع قال غير متائل ما لافما عفا عنه من ثمره فهو للسائل والمحروم »

د کتاب الوقف شرح:

يحيى بن سعيد روايت كوي د عمر رضي الله عنه د وقف په باره كښې چه هغه وقف نامه ئې ماته ليكلې راكړه يعنې د هغې نقل د عبدالله بن عمر رضي الله عنه نمسې عبدالحميد، وړاندي د هغه كتاب الوقف (وقف نامې) عبارت دې په دې عبارت كښې عمر، عبدالله نه بدل واقع شوې دې. ترجمه به دا وي دا هغه خيز دې كوم لله چه د الله بنده عمر ليكي د ثمغ په باره كښ، وړاندي مصنف د حوالي په طور وائي چه بيا يحيى بن سعيد رضي الله عنه وړاندي د وقف په سلسله كښې هم دغه شان ذكر كړل لكه چه د دې نه مخكښې د نافع په روايت كښې راغلي وو او د يحيى په روايت كښې غير متائل مالا دې، بيا په دې روايت كښې كوم چه د تير شوي روايت نه زيات دې لره روايت كوي او هغه دا دې چه هغه هم په دې ذكر كړې شوې مصارفو كښې د خرج كولو نه پس بچ شي نو د هغې په ميوو كښې خود سائل او محروم ټولو دپاره دې. (قال وساق القصة) يعنې راوي نور هم څه بيان كړل، دغه شان هلته وائي چرته چه اختصار كول مقصود وي لكه چه الی اخره وئيلي شي وړاندي دا دې چه كه د ثمغ متولى غواړي نو د هغه زمكې په امدنئ كښې د زمكې د خدمت او كار دپاره غلام اخستلې شي. (وكتب معيقب وشهد عبدالله بن الارقم) يعنې دې وقف نامې لره ليكونكې معيقب دې رضي الله عنه گواه عبدالله بن الارقم دې، د ليك په آخر كښې لكه چه څنگه كاتب خپل نوم ليكي دا هم هغه دې، معيقب د عمر رضي الله عنه خزانچي او منشي وو.

« بسم الله الرحمن الرحيم هذا ما اوصى به عبدالله عمر امير المؤمنين ان حدث به حدث ان ثمغا وصرمة بن الاكوع الخ »: په ظاهره () دا د وقف نامې اصل او مسلسل عبارت دې، پورته چونكه مصنف د وقف نامې عبارت شروع كولو سره اختلاف د رواياتو بيانولو هلته پوره عبارت نه شور اتلي په دې وجه دلته هغه پوره عبارت نقل دې (هذا ما فهمت والله تعالى اعلم) صرمة ابن الاكوع هم د ثمغ په شان د زمكې نوم دې. ()

« والمائة التي اطعمه محمد صلى الله عليه وسلم بالوادى » يعنې او هغه سل حصې (هغه هم په وقف كښې شاملوو) كومي چه ماته يعنې عمر رضي الله عنه ته رسول الله صلى الله عليه وسلم راكړې وې په وادئ كښ، د وادئ نه مراد وادئ القراي ده كومه چه د مدينې او د تبوك ترمينځه ده. (تليه حفصة ما عاشت) يعنې د هغه وقف توليت به زما د لور حفصة رضي الله عنها دپاره وي ترڅو چه هغه ژوندئ وي بيا د هغې په خاندان كښې چه څوك د رائي خاوند وي.

(۱) د دې د ليكلو ضرورت په دې وجه راپېښ شو چه دلته په عبارت كښې په ظاهره تكرر محسوسېږي.

(۲) او صرمة بن قيس د يو انصاري صحابي رضي الله عنه نوم دې كوم چه د كتاب الصوم په شروع كښې تير شوي دې، او د دې نه مخكښې ابواب الاذان (احييت الصلاة ثلاثة احوال) د لاندې فتذكر.

باب مَا جَاءَ فِي الصَّدَقَةِ عَنِ الْمَيْتِ

د مړي د طرف نه د ایصال ثواب د پاره د صدقې ورکولو بیان

[۲۸۸۰] حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ سَلْمَانَ الْمُؤَدَّبُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ يَعْنِي ابْنَ بِلَالٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ رَأَاهُ، عَنِ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثَةٍ أَشْيَاءٍ مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ، أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ، أَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوهُ".

ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی کله چه یوانسان مړ شي نودده عمل منقطع کيږي ليکن درې عملونه داسي دي دکومو چه اجر نه منقطع کيږي يو صدقه جاريه ده اودويم هغه علم دي دکوم نه چه خلق فائده واخلي اوبل نيك اولاد کوم چه دمور او پلار دپاره دعاغواړي

شرح الحديث:

قوله: « إذا مات الانسان انقطع عنه عمله الا من ثلاثة اشياء من صدقة جارية او علم ينتفع به او ولد صالح يدعو له »: يعنى د انسان په مرگ باندي د هغه ټول عملونه منقطع شي هم دغه شان د ثواب سلسله ئي هم منقطع شي په انقطاع د عمل سره، خو په هغې کښې رسول الله صلی الله علیه و آله د درې عملونو استثنا او فرمائيله چه هتله به سلسله د ثواب په انقطاع د عمل سره نه منقطع کيږي. ۱: صدقه جاريه يعنى داسې صدقه چه د هغې نفع په خلقو کښې جاري وي لکه اوقاف. ۲: داسې علم چه د هغې نه خلق فائده اخلي لکه تعليم او تصنيف، قال التاج السبكي التصنيف اقوى من التعليم لطول بقائه. ۳: نيك ولد کوم چه د خپل پلار دپاره دعا کوي، د صالح نه مراد مومن دي کما قال ابن حجر مكي، زمونږ يو استاد به فرمائيل مولانا امير احمد کاندهلوي رحمته الله عليه چه د « يدعو له » قيد احترازي نه دي اتفاقي دي ځکه چه د انسان مومن اولاد د هغه دپاره هسي هم صدقه وي که دعا کوي او که نه کوي.

مصنف رحمته الله عليه ترجمه قائم کړه صدقه عن الميت، په دې کښې د ایصال ثواب برائې موتي مسئله ده (۱) په دې باندي کلام په کتاب الزکوة باب في فضل سقى الماء کښې تير شوي دي، په دې مسئله باندي دلته په بذل کښې هم تفصیلي کلام کړې شوي دي که څوک کتل غواړي او دې گوري. (والحديث اخرجه مسلم والترمذی والنسائي قاله المنذرى)

باب مَا جَاءَ فِيمَنْ مَاتَ عَنْ غَيْرِ، وَصِيَّةٍ، يُتَصَدَّقُ عَنْهُ

بیان دهغه کس چه بغیر د وصیت نه وفات شي دهغه د طرف نه صدقه کول څنګه دي؟

[۲۸۸۱] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ: "يَا

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۰۲۶)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للوصايا ۳ (۱۶۳۱)، سنن الترمذي للأحكام ۳۶ (۱۳۷۶)، سنن النسائي للوصايا ۸ (۳۸۱)، مسند احمد (۳۱۷۲، ۳۵۰، ۳۷۲) (صحيح)

۲: دردير ۱۰/۲ الشرح الكبير ج ۱ (۴۲۳/۱)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۸۸۳)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للوصايا ۱۴ (۲۹۶۰)، صحيح مسلم للزكاة ۱۵ (۱۰۰۴)، الوصية ۲ (۱۶۳۰)، سنن النسائي للوصايا ۷ (۳۱۷۹)، سنن ابن ماجه للوصايا ۸ (۲۷۱۷)، موطا امام

رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أُمَّيْ افْتَلَتَتْ نَفْسَهَا وَكَوْلَا ذَلِكَ لَتَصَدَّقَتْ وَأَعْطَتْ أَفِيْجِزًا أَنْ أَتَصَدَّقَ عَنْهَا؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَعَمْ فَتَصَدَّقْ عَنْهَا."

دام المومنين عائشي رضي الله عنها نه روايت دي چه يوې زبانه دنبي عليه السلام په خدمت كښې عرض او كړو زما مور په ناخاپي مرگ باندې مړه شوه كه چرې ناخاپه نه وې مړه شوي نو دالله په لار كښې به په څه ور كړي وو ايازه دهغې دطرف نه صدقه او كړم او هغې ته به اجر ملا و شي؟ نبي عليه السلام او فرمائيل هو، ته دهغې دطرف نه صدقه كوه.

[۲۸۸۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا زَكْرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ، أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أُمَّيْ تُوَفِّيْتُ أَفِيَنْفَعُنِي إِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا؟ فَقَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَإِنْ لِي مَخْرَفًا وَإِلَى أَشْهَدَكَ أَنِّي قَدْ تَصَدَّقْتُ بِهِ عَنْهَا.

د ابن عباس رضي الله عنهما نه مروي دي چه يو كس دنبي عليه السلام په خدمت كښې حاضر شو او عرض ئې او كړو چه اې دالله رسوله زما مور وفات شوي ده كه چرې زه دهغې دطرف نه صدقه او كړم نو اياهنې ته به ثواب اورسيږي؟ نبي عليه السلام او فرمائيل ضرور يعنى دصدقې ثواب ورته رسيږي دي بس عرض او كړو چه زما سره يوباغ دې اوزه تاگواه كوم چه دغه باغ ما دخپلې مور دطرف نه صدقه كړو.

ترجمه او حديث الباب ظاهر دي چه تشریح ته نه دي محتاج
(حديث عائشة رضي الله عنها اخرجه النسائي وابن ماجه، وحديث ابن عباس رضي الله عنهما اخرجه البخاري والترمذي والنسائي، قاله المنذرى)

باب مَا جَاءَ فِي وَصِيَّةِ الْحَرْبِيِّ يُسَلِّمُ وَلِيِّهٖ أَيْلِزْمُهُ أَنْ يُنْفِذَهَا

مسلمان دې د مرگ کافر وصیت نه پوره کوي

يعنى كه يو كافر يو وصيت كولو سره مړ شى او حال دا چه د هغه وارث مسلمان شى نو آيا په دې صورت كښې په دې مسلمان وارث باندې دا لازم دى چه د دې كافر پلار وصيت پوره كړي

د دې سوال جواب دا دي چه په هغه باندې د وصيت پوره كول لازم نه دى لكه چه د حديث الباب نه په فهم كښې راځي حديث الباب دا دي

[۲۸۸۳] (۱) حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنِ مَزِيدٍ، أَخْبَرَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنِي حَسَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ، عَنْ عَمْرُو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ الْعَاصِمَ بْنَ أَبِي وَابِلٍ أَوْصَى أَنْ يُعْتَقَ عَنْهُ مِائَةٌ رَقَبَةٍ، فَأَعْتَقَ ابْنَهُ هِشَامَ خَمْسِينَ رَقَبَةً، فَأَرَادَ ابْنُهُ عَمْرُو أَنْ يُعْتَقَ عَنْهُ الْخَمْسِينَ الْبَاقِيَةَ، فَقَالَ: حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبِي أَوْصَى بِعِتْقِ مِائَةِ رَقَبَةٍ، وَإِنْ هِشَامًا أَعْتَقَ عَنْهُ خَمْسِينَ وَبَقِيَتْ عَلَيْهِ خَمْسُونَ رَقَبَةً، فَأَعْتَقْتُ عَنْهُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّهُ لَوْ كَانَ مُسْلِمًا فَأَعْتَقْتَهُ عَنْهُ، أَوْ"

مالك للأقضية ٤١ (٥٣)، مسند احمد (٥١/٦) (صحيح)

(١): صحيح البخاري للوصايا ٢٠ (٢٧٧٠)، سنن الترمذي للزكاة ٣٣ (٦٦٩)، سنن النسائي للوصايا ٨ (٣٨٥)، تحفة الأشراف: ٦١٦٣، وقد أخرجه: مسند احمد (٣٧٠/١) (صحيح)

(٢): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٨٦٧٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٨١/٢) (حسن)

تَصَدَّقْتُمْ عَنْهُ، أَوْ حَجَّتُمْ عَنْهُ، بَلَّغَهُ ذَلِكَ.

عمرو بن شعیب دخپل پلار نه او هغه دده دنیکه نه روایت کوی فرمائی چه عاص بن وائل وصیت کړې وو چه زما د طرف نه به سل غلامان ازاد کړې نودده خوی هشام پنخوس غلامان ازاد کړل دده بل خوی عمرو غوښتل چه د اباقی پاتې پنخوس دې ازاد کړي. نوونې وئیل یوځل به د نبی ﷺ نه تپوس کوم د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړو اې دالله رسوله زما پلار دسلو غلامانو په ازادولو باندې وصیت کړې وو هشام دهغه د طرف نه پنخوس ازاد کړل او پنخوس پرې باقی دي ایاد اباقی پاتې پنخوس زه ازاد کړم؟ نبی ﷺ او فرمائیل که چرې ستاسو پلار مسلمان وې نو تاسو به دهغه د طرف نه غلامان ازاد کړې وې یا خیرات به موکړې وې او یا به مو دهغه د طرف نه حج کړې وې نو بیا ورته اجر ملاویدو.

﴿ان العاص بن وائل اوصی ان یعتق عنه مئة رقبة فاعتق ابنه هشام خمسين رقبة الخ﴾

یعنی عاص بن وائل چه کافر وو هغه اسلام قبول نه کړو اگر چه هغه د اسلام زمانه موندلې ده، هغه دا وصیت اوکړو چه د هغه د طرف نه سل غلامان ازاد کړې شی، نو د هغه یو خوی هشام بن العاص رضی الله عنه خو پنخوس غلامان ازاد کړل او د هغه دویم خوی عمرو بن العاص هم اراده اوکړه د باقی پنخوسو د آزادولو، نو هغه سوچ اوکړو چه اول دې د رسول الله ﷺ نه تپوس اوکړې شی، پس د رسول الله ﷺ په خدمت کښې راتلو سره هغوی تپوس اوکړو او د هغوی په خدمت کښې ئې د خپل پلار د وصیت ذکر اوکړو او دا چه زما رور خو پنخوس د هغه د طرف نه ازاد کړل نو آیا باقی پنخوس زه د هغه د طرف نه ازاد کړم، رسول الله ﷺ او فرمائیل که ستا پلار مسلمان وې او بیا تاسو د هغه د طرف نه غلام ازاد کړې وې یا صدقه کړې وې یا مو د هغه د طرف نه حج کړې وې نو بیا خو به د هغې ثواب هغه ته ملاویدو (خو په موجوده صورت کښې ازادول بیکاره دی) (۱) او گورئ اسلام خومره لوڼې نعمت دې چه دهغې د وجې نه د مرگ نه پس هم مړی ته فواید رسولې کیدې شی. ﴿فالحمد لله الذی هدانا لاسلام﴾

بَاب مَا جَاءَ فِي الرَّجُلِ يَمُوتُ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ وَلَهُ وَفَاءٌ يُسْتَنْظَرُ غَرْمًا وَهُوَ وَيُرْفَقُ بِالْوَارِثِ

څوک چه د قرض د بوج سره مړ شی او مال ترې پاتې شوې وی

نو د قرض دارو نه به د وارث دپاره مهلت اخستلې شی

یعنی که یو انسان په داسې حال کښې مړ شی چه د هغه په ذمه باندې قرض وی او هغه دومره مال پریخودلو سره هم مړی شی چه په هغې سره قرض ادا کیدې شو نو د هغه د قرض غوښتونکو نه دې مهلت طلب کړې شی او د وارث سره دې د نرمې معامله اوکړې شی. دا ترجمه خو یا په طریقه د استفهام ده، په تقدیر د همزه استفهام او احتمال په دې کښې د

(۱) مشکوة شریف د نصف اول دا آخری حدیث دې چه د هغې نسبت په هغې کښې صرف ابوداؤد ته دې

خبر هم دي (بذل)

[۲۸۸۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، أَنَّ شُعَيْبَ بْنَ إِسْحَاقَ حَدَّثَهُمْ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ: أَنَّ أَبَاهُ تُوْفِيَ وَتَرَكَ عَلَيْهِ ثَلَاثِينَ وَسَقَّ لِرَجُلٍ مِنْ يَهُودٍ فَاسْتَنْظَرَهُ جَابِرٌ، فَأَتَى فَاكْتَمَ جَابِرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَشْفَعَ لَهُ إِلَيْهِ، فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَلَّمَ الْيَهُودِيَّ لِيَأْخُذَ مِمَّا تَحْتَهُ بِالَّذِي لَهُ عَلَيْهِ فَأَبَى عَلَيْهِ، وَكَلَّمَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنْظُرَهُ فَأَبَى، وَسَاقَ الْحَدِيثَ.

جابر بن عبدالله نه روایت دي فرمائی چه زما پلار وفات شو او دیرش وسقه قرض ئې پریخودلی وو چه دیویهودی وو جابر ددغه یهودی نه مهلت او غوښتو نو هغه انکار او کړو جابرني علي السلام ته او وئیل چه دي يهودي ته زما دپاره سفارش او کړه نونبی ﷺ راغي او دیویهودی سره ئې خبره کوله په دي باغ کښې چه خومره کجوري دي دادخپل قرض په بدل کښې واخله ده بياهم انکار او کړو بيانې ﷺ يهودي ته او وئیل چه جابر ته مهلت ورکړه ده بياهم انکار او کړو راوي ددي نه پس پوره حديث بيان کړو.

«عن جابر بن عبد الله انه اخبره ان اباة توفى وترك عليه ثلاثين وسقا لرجل من يهود الخ»

د حديث دين جابر ﷺ شرح:

دي حديث ته دين جابر ﷺ وائی، د هغوی د قرض قصه په روايتونو کښې مشهوره ده په بخاری کښې دا حديث په ډيرو ځايونو کښې دي، په كتاب البيوع، كتاب الصلح، كتاب الاستقراض، كتاب الهبة، كتاب الوصايا، علامات النبوة او الضيافة وغيره، کښې هم دغه شان په نسائي کښې هم بالتفصيل په ډيرو طرقو سره راغلي دي، چه د هغې خلاصه دا ده چه د جابر ﷺ پلار عبدالله بن عمرو بن حرام ﷺ د احد په جنگ کښې شهيد شوي وو او د هغوی په ذمه لکه چه د ابوداؤد په دي روايت کښې دي د يو يهودی دیرش وسقه کهجوري وې. حضرت په بذل کښې ليکلي دي چه د بخاری وغيره د روايت نه معلوميري چه د هغوی قرض غوښتونکی ډير وو لهذا د ابوداؤد د روايت مطلب به دا اخستلي شي چه په هغه غرماء کښې دیرش وسقه کهجوري صرف د يو قرض غوښتونکی وې او د نورو قرض غوښتونکو چه کوم په ده باندي قرضونه وو هغه ددي نه علاوه وو غرض دا چه جابر ﷺ اول خو د خپل پلار د قرض غوښتونکو سره د قرض د معاف کولو خبره او کړه چه دا قرض پریخودلي شي، چه کله هغوی دا او نه منله نو بيا هغوی استنظار يعني مهلت طلب کړو، چه کله هغوی د دي نه هم انکار او کړو نو بيا د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او هغوی ته ئې عرض او کړو چه تاسو لې سفارش او کړئ رسول الله ﷺ هغه قرض غوښتونکو ته د هغوی دپاره سفارش او کړو، هغوی بيا هم او نه منله، جابر ﷺ فرمائی چه رسول الله ﷺ ماته او فرمائیل لار شه باغ ته او کهجوري راوشوکوه او هر قسم کهجوري ځانله ځانله جمع کړه. يعني هغه دي گډې ودي نه کړې شي او کله چه ته دا ټول کار او کړې نو بيا

(۱) صحيح البخاري للبيوع ۵۱ (۲۱۲۷)، الاستقراض ۸ (۲۳۹۵)، ۹ (۲۳۹۶)، ۱۸ (۲۴۰۵)، الهبة ۲۱ (۲۶۰۱)، الصلح ۱۳ (۲۷۰۹)، الوصايا ۳۶ (۲۷۸۱)، المناقب ۲۵ (۳۵۸۰)، المغازي ۱۸ (۴۰۵۳)، سنن النسائي للوصايا ۴ (۳۶۷۰)، سنن ابن ماجه للصلقات ۲۰ (۲۴۳۴)، (تحفة الأشراف: ۳۱۲۶) (صحيح)

ماته خبر راکړه، جابر رضي الله عنه فرمائی چه ما هم داسې او کړل او د کهجورو ډیری لگولو نه پس مې رسول الله صلى الله عليه وسلم ته خبر ورکړو، رسول الله صلى الله عليه وسلم تشریف راوړو او په هغې ډیرو کښې په یو ډیری باندې کیناستلو او وې فرمائیل چه دې خلقو ته په ناپ ناپ سره کهجورې ورکول شروع کړه. هغه فرمائی ما هم هغه شان او کړل او رسول الله صلى الله عليه وسلم د برکت دعاء فرمائیله تردې چه د ټولو حق پورا ادا شو او زما د کهجورو حال دا وو چه گویا د هغې نه بالکل څه هم نه دی اخستلې شوې، په یو روایت کښې دی چه مونږ دا گنډله چه زمونږ د باغ په څو کاله فصلونو باندې به دا قرض ادا شی، خو هغه د یو کال په فصل باندې ادا شو، او په روایت کښې دی چه زمونږ دوه باغونه وو یو وړوکې او یو لوڼې، او دا ټول قرض په یو وړوکې باغ باندې ادا شو. (حتی وینا جمیع حقہ من اصغر الحدیثین) او په یو روایت کښې دا هم دی چه کله د ټولو حقوق ادا شو نو رسول الله صلى الله عليه وسلم جابر رضي الله عنه ته او فرمائیل چه لاړ شی ابوبکر او عمر رضي الله عنهما ته هم د دې خبر ورکړه، هغوی فرمائی چه ما هغوی ته هم د دې خبر ورکړو هغوی دواړو او فرمائیل چه مونږ د مخکښې نه پوهه وو چه هرکله رسول الله صلى الله عليه وسلم پخپله باغ ته تشریف اوړي نو بیا به هم داسې کیږي، دا د رسول الله صلى الله عليه وسلم ښکاره معجزه وه هم په دې وجه امام بخاری رحمته الله علیه دا په علامات النبوة کښې هم ذکر کړې ده. صلی الله تعالی علی سیدنا محمد واله وصحبه وسلم تسلیما کثیرا.

(والحدیث اخرجه البخاری والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری. وفي البذل والحدیث بتامه مذکور فی

البخاری ومسلم وغيرهما آه قلت لم اجده فی صحیح مسلم ولعله سبق قلم، والصواب بدله والنسائی فلیحذر)

کتاب الفرائض

د الله تعالی د مقرر کړې شوو حصو (میراث) بیان

باب مَا جَاءَ فِي تَعْلِيمِ الْفَرَائِضِ

د علم میراث د زده کولو د فضیلت بیان

[۲۸۸۵] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرْحِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ زِيَادٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ رَافِعِ التَّنُوخِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الْعِلْمُ ثَلَاثَةٌ وَمَا سِوَى ذَلِكَ فَهُوَ فَضْلٌ آيَةٌ مُحْكَمَةٌ، أَوْ سُنَّةٌ قَائِمَةٌ، أَوْ فَرِيضَةٌ عَادِلَةٌ".

عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم فرمائیلې دي: د دین ضروري علم ددرې څیزونو دي او ددې نه علاوه ضروري نه دی یو آیات محکمات دي کوم چه منسوخ نه وي، او بل صحیح حدیث او بل د علم فرائض مسائل دکوم په ذریعه چه دترکي صحیح تقسیم کیدې شي.

(العلم ثلاثة وما سوى ذلك فهو فضل آية محكمة او سنة قائمة او فريضة عادلة)

شرح الحدیث:

یعنی علوم شرعيه معتبره درې دي. او د هغې نه علاوه چه کوم دی هغه د ضرورت نه زیاتي

(۱) سنن ابن ماجه للمقدمة ۸ (۵۴)، (تحفة الأشراف: ۸۷۶) (ضعيف)

او غیر ضروری دی وړاندې د هغه دريو بيان دې. ۱: آیات محکمه: یعنی غیر منسوخه یا صریحه چه د تاویل احتمال نه لری. ۲: احادیث صحیحه ثابته ۳: فریضه عادلہ د فریضه نه مراد خو هغه احکام او اصول دی چه د هغې نه تقسیم بین الورثة په عدل سره یعنی پوره پوره کیدی شي او دا خبره د علم الفرائض نه حاصلیږی او دویم احتمال دا دې چه د دې نه مراد مطلق هغه فرائض او احکام دی چه په هغې باندې عمل واجب دې، او د عادلہ نه مراد مساویه، یعنی هغه احکام مستنبطه چه مساوی او موافق وی «ما یوخذ من الکتاب والسنة» والله تعالی اعلم. ففیه اشاره الی الاجماع والقیاس، لهذا په دې حدیث کښې د څلورو وارو ادله شرعیه کتاب وسنة واجماع وقیاس ذکر راغلو () د دې حدیث په شرح کښې دا دواړه احتمالات د بذل او فتح الودود په حوالې سره لیکلې شوي دي، امام ترمذی د کتاب الفرائض په شروع کښې د «باب فی تعلیم الفرائض» د لاندې دا حدیث ذکر کړې دې «عن ابی هريرة رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله ﷺ تعلموا الفرائض والقرآن وعلّموا الناس فانی مقبوض وفي هامشه عن مجمع البحار قيل ای علم الميراث ولا دليل عليه والظاهر ما فرض الله تعالی ويمكن ان يراد سننا صادرة منه مشتملة على الاوامر والنواهي، ای تعلموا الکتاب والسنة»

باب فی الْكَلَالَةِ

د کلاله بیان

کلاله د جمهورو په نزد هغه مړې دې چه هغه پلار او بچي پریخودلو سره مړ نه شي یعنی د هغه نه پلار وی او نه خوښي، او په دې کښې دا هم وئیلې شوې دی هغه وارثان چه په هغوی کښې د مړی پلار او خوښي نه وی، دا دواړه خو تقریبا یو دي، وقیل من لا والد له فقط وهو قول عمر رضی الله عنه او من له ا ولد ل فقط.

[۲۸۸۶] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ: مَرَّضْتُ فَأَتَانِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي، هُوَ أَبُو بَكْرٍ مَا شَيْئِينَ وَقَدْ أَعْمِيَ عَلَيَّ فَلَمْ أَكَلِمَهُ، فَتَوَضَّأَ وَصَبَّهُ عَلَيَّ فَأَقْبَتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي وَلِي أَخَوَاتٌ؟ قَالَ: "فَزَلْزَلْتُ آيَةَ الْمَوَارِيثِ يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يَفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ سُورَةُ النِّسَاءِ آيَةٌ ۷۶."

۱) زما تقرير د ابوداؤد په يو کاپي کښې داسي ملاؤ شو: علوم شرعيه معتبره درې دي: ۱: آیات صریحه محکمه. ۲: احادیث صحیحه ثابته ۳: هغه احکام او فرائض کوم چه د قسمین اولین نه ماخوذ او مستنبط وی. (اشاره الی القیاس والاجماع) العادلۃ یعنی برابر یعنی دا احکام او فرائض مستنبط په معتبر کیدو او واجب العمل کیدو کښې برابر دی د قسمین اولین، خو د مصنف مراد دا معنی نه ده بلکه دویمه معنی ئې مراد ده هغه دا چه د فریضه عادلہ نه مراد هغه احکام او اصول دی چه د هغې نه عدل بین الورثة فی الحصص المعینه حاصل شي، او دا خبره د علم الفرائض نه حاصلیږی. وهذا المعنی هم المطابق لفرض المصنف لمعنی والعادلۃ علی الاول العادلۃ ای المستویۃ فی الحجیۃ وعلی الثاني بمعنی العادلۃ فی القسمة)

۲) صحیح البخاري/تفسیر النساء ۲۷ (۴۶۰۵)، المرضي ۵ (۵۶۵۱)، الفرائض ۱۳ (۶۷۴۳)، صحیح مسلم للفرائض ۲ (۱۶۱۶)، سنن الترمذی للفرائض ۷ (۲۰۹۷)، سنن ابن ماجه للفرائض ۵ (۲۷۲۸)، تحفة الأشراف: ۳۰۲۸، وقد أخرجه: سنن الدررني للطهارة ۵۶ (۷۶۰) (صحیح)

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه زه یوخل سخت بیمار شوم نونبی عليه السلام په خپله او ابوبکرهم ورسره اوزمادعیادت دپاره پیدل راغلل ماورسره دبی هوشی په وجه خبرې ونکړي نبي عليه السلام اودس وکړو او په مائی اوبه وارولي نوزه په هوش کښې شوم اوعرض مې وکړوچه ای دالله رسوله زه دخپل مال سره څه وکړم اوزماخویندې هم شته؟ نوپه دې وخت کښې د میراث آیت نازل شو: «یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلاله».

﴿ انه سمع جابرا رضی الله تعالی عنه یقول مرضت فأتانی رسول الله ﷺ یارسول

الله ﷺ کیف اصنع فی مالی ولی اخوات قال فنزلت ایه المیراث ﴾

په وصیت کښې د حدیث جابر رضي الله عنه مضمون:

په دې باب کښې مصنف رضي الله عنه د جابر رضي الله عنه حدیث ذکر کړو چه په هغې کښې هغوی دا فرمائی چه یوخل زه بیمار شوم نو رسول الله ﷺ زما تپوس ته راغلو نوزه هغه وخت بیهوشه اوم د رسول الله ﷺ سره مې خبرې اونکړې شوې، رسول الله ﷺ اودس اوفرمائیلو او د اودس نه پچ شوې اوبه یا غساله، (وبالاخیر جزم الحافظ فی الفتح کما فی هامش البذل) نې په ما باندي چرکاؤ کړې چه هغې سره زه په هوش کښې راغلم. هغه وخت ما هغوی ته عرض اوکړو چه یا رسول الله ﷺ زه په خپل مال کښې څه اوکړم؟ (یعنی که وصیت کول غواړم نو کولې شم) او زما په وارثانو کښې صرف زما خویندې دی، هغوی فرمائی چه په دې باندي آیت میراث نازل شو (د آیت دمیراث مصداق وړاندي مذکور دي) «یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلاله» او په بعض روایاتو کښې داسې دی: «فنزلت یوصیکم الله فی اولادکم» او امام بخاری رحمته الله هم دې طرف ته اشاره فرمائیلې ده چه د آیت المیراث نه مراد «یوصیکم الله» دي.

د جابر رضي الله عنه په باره کښې د کوم ایت نزول اوشو؟

بیا په دې باندي ځان پوهول پکار دی چه په دې باره کښې روایات مختلف دي چه د جابر رضي الله عنه په قصه کښې په دې دوه آیتونو کښې د کوم ایت کریمه نزول شوې دي آیا هغه «یوصیکم الله فی اولادکم» دي کوم چه د سورة النساء په شروع کښې ذکر شوې دي او ډیر مفصل دي د تول وارثانو حصې په هغې کښې بیان کړې شوې دي او د هغې په آخر کښې مجملا د کلاله ذکر هم دي، «وان کان رجل یورث کلاله او امرأة» او یا د دې مصداق «یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلاله» دي کوم چه د سورة النساء په آخر کښې ذکر شوې دي چه په هغې کښې د کلاله د حکم بیان واضحه ذکر کړې شوې دي چه هغې ته آیه الصیف هم وئیلې شی پس د بعض روایتونو نه معلومیږي چه د دې مصداق اول سورة والا آیت دي او د بعض نه معلومیږي چه د دې مصداق د سورة آخری آیت دي، خو د جابر رضي الله عنه د حال مناسب چونکه هغه کلاله وو قول ثانی دي، حافظ رحمته الله فرمائی چه ابن العربی په دې سلسله کښې خپل شک ښکاره کولو سره آیت میراث ته ترجیح ورکړې ده یعنی «یوصیکم الله» بیا وړاندي حافظ خپله رائي لیکلې ده چه اولی دا ده چه داسې اوئیلې شی چه د جابر رضي الله عنه په قصه کښې د آیه الصیف نزول اوشو «یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلاله» او هم دغه شان

آیه المیراث د (یوصیکم الله) آخری تکره چه په هغې کښې د کلاله ذکر مجملا دې دا دواړه خو د جابر رضی الله عنه په قصه کښې نازل شو او د آیت میراث د شروع حصه دا د سعد بن الربیع د دوه ځامنو په قصه کښې نازل شوه (من البذل) زه وایم د سعد بن الربیع متعلق آیت په را روان باب کښې راځی چه په هغې کښې داسې دی «عن جابر رضی الله عنه قال خرجنا مع رسول الله صلی الله علیه و آله جنا امرأة من الانصار فجاءت المرأة بابنتین فقالت یا رسول الله صلی الله علیه و آله هاتان بنتا ثابت بن قیس (قال ابو داود : اخطاء بشر فيه انما هما ابنتا سعد بن الربیع) وافی اخره وقال نزلت سورة النساء یوصیکم الله فی اولادکم الایة (الحديث) (والحديث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری)

باب مَنْ كَانَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَا أُخْوَاتٌ (۱)

بیان دهغه چا چه صرف خونندې نې وي او ځامن نې نه وي

په دې باب کښې مصنف رضی الله عنه د جابر رضی الله عنه حدیث ذکر کړو، ځکه چه په جابر رضی الله عنه باندې دا روایت صادق راځی «لیس له ولد وله اخوات» او «من لیس له ولد» هم دا کلاله دې په یو قول باندې لهذا رومې باب او دا باب دواړه د کلاله سره متعلق دی، فالفرق بین الترجمتین بقوله ههنا وله اخوات، وهذا لیس بملحوظ فی الترجمة السابقة.

[۲۸۸۷] (۲) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ هِشَامٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الدَّسْتُوَيْبِ، عَنْ أَبِي الزَّيْبَرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: اشْتَكَيْتُ وَعِنْدِي سَبْعُ أُخْوَاتٍ فَدَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَفَقَّحَ فِي وَجْهِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا أُوصِي لِأَخْوَاتِي بِالثُلُثِ، قَالَ: أَحْسِنُ، قُلْتُ الشُّطْرَ، قَالَ: أَحْسِنُ، ثُمَّ خَرَجَ وَتَرَكَنِي فَقَالَ: يَا جَابِرُ لَا أَرَاكَ مَيْتًا مِنْ وَجْعِكَ هَذَا، وَإِنَّ اللَّهَ قَدْ أَنْزَلَ قَبْلَ الَّذِي لِأَخْوَاتِكَ فَجَعَلَ لهنَّ الثَّلَاثِينَ، قَالَ: فَكَانَ جَابِرٌ يَقُولُ: أَنْزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ فِي يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ سُورَةُ النِّسَاءِ آيَةٌ ۱۷۶.

د جابر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه زه مریض شوم اوزماسره اوه خویندې وي نونبې رضی الله عنه زما خواته راغې اوزما مخ ته نې پوکې اوکړو نو زه په هوش کښې شوم ما او وئیل ای دالله رسوله ایادخپلوخویندو دپاره دخپل مال په دریمه حصه باندې وصیت اونکرم؟ راته نې اوفرمائیل نیکی کوه ماو وئیل ایا په نیم مال باندې وصیت اونکرم نبی صلی الله علیه و آله اوفرمائیل نیکی کوه بیانبی رضی الله عنه روان شو اوزه نې پریخودم اوونې فرمائیل ای جابره زما دخیال نې

(۱) تفسیر: مونږ د دې او د تیر شوی باب ترمینځه د تکرار نه د بچ کیدو دپاره فرق اگر چه ښکاره کړو خو دا باب په بعض نسخو کښې بالکل شته دې نه، بلکه د تیر شوی باب د لاتدې څلور احادیث ذکر کړې شوي دی. ۱: حدثنا احمد بن حنبل ۲: حدثنا عثمان بن ابی شیبه ۳: مسلم بن ابراهیم ۴: حدثنا منصور بن ابی مزاحم... کومې زمونږ د دې ترجمه ثانیه د لاتدې راروان دی، او څلور واړه روایات د ترجمه الباب مطابق دی دویم اختلاف د نسخو دلته دا دې چه زمونږ په نسخه کښې د ترجمه ثانیه د لاتدې چه کوم دریم حدیث دې حدثنا موسی بن اسمعیل او څلورم حدثنا مسدد او پنځم حدثنا ابن السرح، په بعض نسخو کښې دا حدیث په راتلونکې باب یعنی «باب ما جاء فی میراث الصلب» د لاتدې ذکر کړې شوي دې او کیدل هم داسې پکار دی چه ددې درې واړه روایتونو زمونږ د ترجمه الباب «من کان لیس له ولد وله اخوات» سره هیڅ مناسبت نشته بلکه د هغې منافی دی»

(۲) تفرده له ابو دلود، (تحفة الأشراف: ۲۹۷۷)، وقد أخرجه: سنن النسائی / الکبری (۶۳۲۵)، مسند احمد (۳/۳۷۲) (صحیح)

چه ته ددی بیماری نه نه مری او الله تعالی خپل کلام نازل کړې دې او ستاد خویندو حصه ئې بنودلې ده ددې دپاره ئې په درې حصو کښې دوه مقرر کړې دی راوي وائی چه جابره به وئیل دا ایت کریمه: «یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلاله» زما په باره کښې نازل شوې دې.

(عن جابر رضی الله عنہ قالت اشکتک وعند سبع اخوات..... الا اوصی لاختواتی بالثلثین؟ قال احسن قلت الشطر؟ قال احسن)

شرح الحدیث:

د حدیث د ظاهری الفاظو نه معلومیږي چه جابر رضی الله عنہ د رسول الله صلی الله علیه و آله نه تپوس او کړو چه آیا زه د خپلو خویندو دپاره د دوو ثلثو وصیت او کړم؟ په دې رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه نه بلکه د خپلو خویندو سره احسان او کړه. هغوی عرض او کړو چه د نصف وصیت او کړم؟ رسول الله صلی الله علیه و آله بیا هم هغه شان او فرمائیل..... احسن..... په دې حدیث باندي په بادی الرائی کښې دوه اعتراضات کیږي اول دا چه د اخواتو دپاره وصیت چرته جائز دې هغوی خو وارثانې دی او د وارث دپاره وصیت نشته، دویم دا چه هغوی خو د ثلثینو د وصیت اجازت غوښتلو. رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل (احسن الی الاخوات) په دې باندي هغوی د نصف د وصیت اجازت طلب کړو، په دې کښې احسان الی الاخوات کوم څانې دې په دې کښې خو نور هم نقصان موندلې کیږي، د دې اشکال جواب دا دې چه اگر چه په باب د وصیت کښې لام په موصی له باندي داخلېږي خو دلته په (لاخوانی) کښې لام د صلی نه دې او په موصی له باندي نه دې داخل بلکه دا لام اجلیه دې یعنی (لاجل اخواتی)، او مطلب دا دې چه زه چه تاسو نه د وصیت اجازت طلب کوم هغه د اخوات د موجود کیدو د وجې نه دې چونکه زما په وارثانو کښې زما خویندې موجود دی نو آیا د دوی په موجودگي کښې د ثلثین وصیت کولې شم، (فزال الاشکال بحذافیره کذا سمعنا من الاساتده) بیا په وړاندي روایت کښې دی: چه رسول الله صلی الله علیه و آله جابر رضی الله عنہ ته او فرمائیل زما دا خیال دې چه ته به په دې مرض کښې نه وفات کیږي.

نښه: د جابر رضی الله عنہ کلاله کیدل او بیا د محدثینو د هغوی روایت لره په باب الکلاله کښې ذکر کول د هغوی د هغه موجوده حالت په اعتبار سره دې کوم چه د سوال په وخت وو گینې چه روستو کله هغوی د دې مرض نه روغ شو نو واده ئې او کړو او اولاد ئې اوشو او تر ډیرې زمانې پورې ژوندې وو تردې چه په ۷۳ هجری کښې وفات شو هغه وخت د هغوی عمر څلور نوی (۹۴) کلونه وو وهو آخر من مات بالمدينة من الصحابة (کذا فی التهذیب) والحديث أخرجه النسائي، قاله المنذرى.

[۲۸۸۸] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: أَخْرَأْتِي نَزَلَتْ فِي الْكَلَالَةِ يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يَفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ سُورَةُ النِّسَاءِ آيَةٌ ۱۷.

دبراء بن عازب نه روایت دې د کلاله په باره کښې چه کوم اخري ایت نازل شوې دې هغه

(۱) صحیح البخاري/المغازي ۶۶ (۴۳۶۴)، والتفسير ۲۷ (۴۶۰۵)، ۳ (۴۶۵۶)، والفراتض ۱۴ (۶۷۴۴)، صحیح مسلم/الفراتض ۳ (۱۶۱۸)، (تحفة الأشراف: ۱۸۷۰)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/تفسير سورة النساء ۲۷ (۴۳۴۶) (صحیح)

دادې: «يستفتونك قل الله يفتيكم في الكلاله»

«عن البراء بن عازب رضى الله تعالى عنه قال: اخبر آيت نزلت في الكلاله الخ»
 نزلت..... د آيت صفت دې، يعنى آخرى آيت كريمه كوم چه د كلاله په باره كښې
 نازل شو هغه «يستفتونك الخ» دې، هم دې آيت كريمه ته آية الصيف وئيلې شى او كوم چه
 د سورة النساء په شروع كښې دې هغې ته آيت الشتاء وئيلې شى.
 والحديث أخرجه البخارى ومسلم والنسائى قاله المنذرى

[۲۸۹۳] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنِي أَبُو حَسَانَ، عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، أَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ، وَرَثَ أَخْتًا وَابْنَةً فَجَعَلَ لِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا النِّصْفَ، وَهُوَ بِالْيَمَنِ وَنَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ يَذْحِي.

داسودبن يزيد رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه معاذبن - جبلة خور اولورته میراث په دې
 طریقه تقسیم کړو چه نیم مال ئې لور ته ملاؤ شو او نیم ئې خور ته، ځکه چه خور د لور سره
 عصبه جوړیږی، او هغه په یمن کښې وو، او د الله نبی صلی الله علیه و آله دغه وخت ژوندې وو.

[۲۸۹۱] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُقْضِلِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَقِيلٍ، عَنِ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى جِئْنَا امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ فِي الْأَسْوَاقِ فَجَاءَتْ الْمَرْأَةَ بَابَتَيْنِ هَاتِي، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَاتَانِ بِنْتَا ثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ، قُتِلَ مَعَكَ يَوْمَ أُحُدٍ وَقَدْ اسْتَفَاءَ عَمَّهُمَا مَا لَهُمَا وَمِيرَاثَهُمَا كُلَّهُ فَلَمْ يَدَعْهُمَا مَالًا إِلَّا أَخَذَهُ، فَمَا تَرَى يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَوَاللَّهِ لَا تُنْكِحَانِ أَبَدًا إِلَّا وَهُمَا مَالٌ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَقْضِي اللَّهُ فِي ذَلِكَ قَالَ: وَنَزَلَتْ سُورَةُ النِّسَاءِ يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ سُورَةُ النِّسَاءِ آيَةَ الْآيَةِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ادْعُوا إِلَى الْمَرْأَةِ وَصَاحِبِهَا، فَقَالَ: لِعَمَّتَيْهِمَا أَعْطَيْتُهُمَا الثَّلَاثِينَ، وَأَعْطَيْتُهُمَا الثَّمَنَ، وَمَا بَقِيَ فَلَكَ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَخْطَأَ بِشْرُ فِيهِ إِمَامُهُمَا ابْنَتَا سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ، وَثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ قُتِلَ يَوْمَ الْيَمَامَةِ.

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه یو ځل مونږد نبی صلی الله علیه و آله په ملگرتیا کښې روان
 وو تردې چه په اسواق مقام کښې د یوې ښځې سره ملا وشوهغې خپلې دوه لونږه راوستې
 او عرض ئې وکړو چه ای دالله رسوله داد ثابت بن قیس لونږه دي کوم چه ستاسره په غزوه
 احد کښې شهید شوي وو ددوی تره ددوی نه ټول مال اور اسباب اوتروړل او دوی ته ئې
 هیڅ پرې نخودل اوس ستاسویدی باره کښې څه رای ده؟ په الله قسم ددوی ودونه هم نه
 شی. کیدی ترخوچه ددوی سره مال نه وی نبی علیه - السلام او فرمائیل چه الله تعالی به
 ددې فیصله او کړي ددې نه پس دا آیت کریمه: «یوصیکم الله فی اولادکم» نازل شو، نبی
صلی الله علیه و آله دابنسخه او ددې لیور راوغوښتونې صلی الله علیه و آله ددغه جینکوتره ته اور فرمائیل چه دوی ته په
 ترکه کښې دوه ثلثه ورکړه او مورته ئې اتمه حصه ورکړه او کوم چه پاتې شي هغه ته واخله،
 ابوداود وائی چه دبشرنه په روایت کښې غلطې شوي ده په اصل کښې دغه جینکئ دسعد
 بن ربیع لونږه وي او ثابت بن قیس په غرزوه یمامه کښې شهید شوي وو.

۱: صحیح البخاری للفرائض ۶، ۱۲ (۶۷۳۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۰۷)، وقد أخرجه: سنن اللدومي للفرائض ۴ (۲۹۲۱) (صحیح)

۲: سنن الترمذی للفرائض ۳ (۲۰۹۲)، سنن ابن ماجه للفرائض ۲ (۲۷۲۰)، (تحفة الأشراف: ۲۳۶۵)، وقد أخرجه: مسند

(فجات المرآة بابنتین لها فقالت یا رسول الله ﷺ)

د دې روایت ذکر مونږ سره په شروع کښې راغلي دي، مضمون د حدیث دا دي چې د رسول الله ﷺ په خدمت کښې د سعد بن الربیع بی بی خپلې دوه لورېه پیش کړې او عرض ئې اوکړو چې دا دواړه د سعد بن الربیع لورېه دي چې هغه تاسو ﷺ سره په جنگ احد کښې وو او شهید شوي وو، ددوی دواړو تره ددوی ټول مال او میراث په قبضه کښې واخستلو، اوس څه اوکړې شی، بغیر د مال نه به د دوی نکاح څنگه کولې شی رسول الله ﷺ د هغه زنانه خبره اوریدو سره او فرمائیل چې الله پاک به د دې په باره کښې څه فیصله او فرمائی په دې باندې بیا د میراث آیت (یوصیکم الله فی اولادکم) نازل شو، د دې آیت کریمه د نزول نه پس رسول الله ﷺ هغه زنانه لره او د هغې صاحب معامله راوغوښتل، او د هغوی د راتلونو نه پس هغوی د هغه جینکو تره ته او فرمائیل چې دوه ثلث د میراث دې دواړو ته ورکړه او ثمن د هغوی مور ته، چې څه پاتې شی هغه ستا دی. والحديث اخرجه الترمذی. قاله المنذری.

[۲۸۹۲] () حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي دَاوُدُ بْنُ قَيْسٍ وَعَبْرَةُ بْنُ أَهْلِ الْعِلْمِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُحَمَّدٍ بْنِ عَقِيلٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ امْرَأَةً سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ، قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ سَعْدًا هَلَكَ وَتَرَكَ ابْنَتَيْنِ وَسَاقِ مَحْوَةً، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا هُوَ أَصَحُّ.

د جابر بن عبد الله نه روایت دې فرمائی چې د سعد بن ربیع بنحې د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه او عرض ئې وکړو ای د الله رسوله سعد وفات شوي دي او دوه لورېه ئې پاتې شوي دي، اوباقی حدیث ئې د تیر حدیث په شان بیان کړو. ابوداود وائی دا روایت کامل اودرست دي.

[۲۸۸۹] () حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مَزَاحِمٍ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَسْتَفْتُونَكَ فِي الْكَلَالَةِ، فَمَا الْكَلَالَةُ؟ قَالَ: "تَجْرِيكَ آيَةُ الصَّيْفِ"، فَقُلْتُ لِأَبِي إِسْحَاقَ: هُوَ مَنْ مَاتَ وَلَمْ يَدَعْ وَلَدًا وَلَا وَالِدًا، قَالَ: كَذَلِكَ ظَنُّوا أَنَّهُ كَذَلِكَ.

د براء بن عازب نه روایت دې فرمائی تونک یوکس د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړو ای د الله رسوله په «يستفتونك في الكلاله» کښې د کلاله نه څه مراد دي؟ نبی ﷺ او فرمائیل ستا د پاره هغه ایت کافی دي کوم چې گرمئ کښې نازل شوي دي یعنی دسوره نساء ابتدائی ایت، راوي وائی ما ابواسحق ته او وئیل ایا کلاله هغه دي د چا د مرگ نه پس چې نه پلار وي اونه خوي نوونې فرمائیل هو، د خلقو هم داسې گمان دي چې هغه دغسې وه.

قوله: () حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ أَبِي مَزَاحِمٍ... عَنْ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ... قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ... خطابی فرمائی چې الله پاک د کلاله په باره کښې دوه آیتونه نازل کړل یو د یخنی په زمانه کښې او دا هغه آیت کریمه دي کوم چې دسوره النساء په شروع کښې دي چې په هغې کښې

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۲۳۶۵) (حسن)

۲: صحيح مسلم للفرائض ۲ عن عمر (۱۶۱۷)، سنن الترمذی/تفسير سورة النساء ۲۷ (۳۰۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۹۰۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۲۹۳، ۲۹۵، ۳۰۱) (صحيح)

اجمال او ابهام دې بیا ئې دویم ایت کریمه نازل او فرمائیلو د گرمی په زمانه کښې او دا هغه دې چه د سورة النساء په آخر کښې دې چه په هغې کښې تفصیل او وضاحت دې په دې وجه رسول الله ﷺ دې سائل ته هم د دې آیه الصیف حواله ورکړه چه هغه اولوله ستا دپاره به کافی شی.

بَاب مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الصُّلْبِ

باب: د صلبی (حقیقی) اولاد د میراث بیان

[۲۸۹۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَامِرٍ بْنُ زُرَّارَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنِ أَبِي قَبَيْسٍ الْأَوْدِيِّ، عَنْ هُزَيْلِ بْنِ شُرْحَبِيلِ الْأَوْدِيِّ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ، وَسَلَّمَ أَنْ رُبَيْعَةَ فَسَأَلَهَا، عَنِ ابْنَةِ وَأَبْنَةِ ابْنِ، وَأَخْتِ لِأَبٍ وَأُمِّ، فَقَالَتْ لَابْنَتَهُ النِّصْفَ، وَلِلْأَخْتِ مِنَ الْأَبِ، وَالْأُمُّ النِّصْفَ، وَلِمَنْ يُوْرَثُ ابْنَةَ الْإِبْنِ شِبْهًا، وَأَتِ ابْنَ مَسْعُودٍ فَإِنَّهُ سَيَتَابِعُنَا فَأَتَاهُ الرَّجُلُ فَسَأَلَهُ وَأَخْبَرَهُ بِقَوْلِهَا، فَقَالَ لَقَدْ ضَلَلْتَ إِذَا وَمَا أَنَا وَلَكِنِّي سَأَفْضِي فِيهَا بِقَضَاءِ مَنْ الْمُهْتَدِينَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِابْنَتِهِ النِّصْفَ، وَلِلْأَبْنَةِ الْإِبْنِ سَهْمٌ تَكْمِلُهُ الثَّلَاثِينَ، وَمَا يَقِي قَلِيلًا لِأَخْتِ مِنَ الْأَبِ وَالْأُمِّ.

دهزیل بن شرحبیل اودی نه روایت دې فرمائی چه یوکس ابوموسی اشعری او سلمان بن ربیعته ته راغې اوتپوس ئې اوکړو په باره د یوې لور ابوی نوسی اودخورزی نو دوی دواړو ورته اووئیل چه دلوردپاره نیم مال دې اودخور دپاره نیم دې اودنوسی هیخ میراث نشته او ورته ئې اووئیل ابن مسعود ته هم ورشه هغه به درته هم داسې فتوی درکوي نوهغه سرې ابن مسعودیه ته ورغې هغه ورته اووئیل که چرې زه درته هم داسې جواب درکرم نوگمراه به شم اوپه هدایت به قائم پاتې نه شم لیکن ددې مسئلې متعلق به زه تاته هغه فتوی درکوم کوم چه نبی ﷺ فرمائیلی دی اوهغه داده چه دلور دپاره نیم اودنوسی دپاره شپږمه حصه دثلاثینوپه مقدارباندي اوکوم چه پاتې شی هغه دحقیقی حورحصه ده ابوموسی وه چه دا واوریدل نووئې فرمائیل ترخوچه دغه عالم په تاسو کښې موجود وي نو زمونږ نه دمستلوتپوس مه کوئ بلکه ددوی په فتوی باندي عمل کوئ.

مضمون الحديث:

یو سرې ابو موسی اشعری ﷺ ته کوم چه هغه وخت د عثمان ﷺ د طرف نه د کوفې امیر وو او د سلمان ربیعته سره (چه د کوفې قاضی وو) راغلو او هغه د دې دواړو ه د فرائضو دا مسئله اوتپوسله چه یو سرې وفات شو او هغه یوه لور او یو نمسئ او یو حقیقی خور پریخودله دې دواړو دا فیصله اوفرمائیله چه نیم میراث د لور دپاره دې « لقوله تعالی ان كانت واحدة فلها النصف » او نیمه د خور دپاره او نمسئ ته ئې هیخ هم ورنکړل او هغه دواړو هغه سائل ته دا هم اوفرمائیل چه ابن مسعود ﷺ ته هم لار شه هغه به هم د دې مسئلې موافقت فرمائی، دا سائل د هغوی خدمت ته راغلو او د هغوی دواړو فیصله ئې ورته واوروله، هغوی اوفرمائیل « لقد ضللت اذا وما انا من المهتدين » چه که زه فیصله

(۱) صحیح البخاری للفرائض ۸ (۶۷۳۶)، سنن الترمذی للفرائض ۴ (۲۰۹۳)، سنن ابن ماجه للفرائض ۲ (۲۷۲۱)، (تحفة الأشراف ۹۵۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۳۸۹، ۴۲۸، ۴۴۰، ۴۶۳)، سنن الدارمی للفرائض ۷ (۲۹۳۲) (صحیح)

او کړم نو زه به د نیغې لارې نه گمراه شم، او بیا هغوی فیصله دا او کړه چه نیمه د لور دپاره ده او شپږمه حصه د نمسئ دپاره (تکملة للثلثین) اوباقی یعنی ثلث د خور دپاره.

د (تکملة للثلثین) مطلب باندې سراجی لوستونکی (طالبان) پوهیږی چه د هغې حاصل دا دې چه په قرآن کریم کښې تصریح ده د دې خبرې چه که لور یوه وی نو د هغې دپاره نیم دې او که د یوې نه زیاتې وی نو بیا د هغوی حصه دوه ثلثه ده (لقوله تعالی فان کن نساء فوق اثنتین فلهن ثلثا ما ترک) دلته چونکه بنت یوه وه د کتاب الله د تصریح مطابق نصف خود هغې شو او چونکه بنت الابن هم بنت ده خو لږه بعیده په دې وجه بنت ته د نصف ورکولو نه پس په ثلثین کښې چه کوم سدس باقی پاتې شوې وو هغه د دویمې درجې بنت ته ورکړې شو چه د مجموعه بنات حصه پوره دوه ثلثه شی او د دواړو آیتونوپه مضمون باندې عمل راشی هم دامطلب دې د (تکملة للثلثین) والحديث اخرجه البخاری والترمذی والنسائی وابن ماجه بنحوه، قاله المنذری.

باب فی الجدة

باب د نیا (دمور مور، یا دپلار مور) دمیراث بیان

د جده نه مراد دلته د پلار مور او د مور مور دواړه مراد دی ځکه چه دواړه ذوی الفروض دی او د دواړو حصه هم یوه ده یعنی سدس، یعنی که په دواړو کښې یوه وی نو ځانله به شپږمه حصه اخلی او که دواړه وی نو په شپږمه حصه کښې به دواړه شریکې وی لکه چه په حدیث الباب کښې دی.

[۲۸۹۴] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُمَانَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ عَرَشَةَ، عَنْ قَبِيصَةَ بِنِ ذُوَيْبٍ، أَنَّهُ قَالَ: جَاءَتِ الْجَدَّةُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا، فَقَالَ: مَا لَكَ فِي كِتَابِ اللَّهِ تَعَالَى شَيْءٌ، وَمَا عَلِمْتُ لَكَ فِي سُنَّةِ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا، فَأَرَجَعَنِي حَتَّى أَسْأَلَ النَّاسَ، فَسَأَلَ النَّاسَ، فَقَالَ الْمُبَغِيرَةُ بِنُ شُعْبَةَ: حَضَرَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَاهَا السُّدُسَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: هَلْ مَعَكَ عَيْرُكَ؟ فَقَامَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ: مِثْلَ مَا قَالَ الْمُبَغِيرَةُ بِنُ شُعْبَةَ فَأَنْقَذَهُ لَهَا أَبُو بَكْرٍ، ثُمَّ جَاءَتِ الْجَدَّةُ الْأُخْرَى إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا، فَقَالَ: مَا لَكَ فِي كِتَابِ اللَّهِ تَعَالَى شَيْءٌ، وَمَا كَانَ الْقَضَاءُ الَّذِي قَضَيْتَ بِهِ إِلَّا لِعَيْرِكَ وَمَا أَنَا بِزَائِدٍ فِي الْفَرَاخِ، وَلَكِنْ هُوَ ذَلِكَ السُّدُسُ فَإِنْ اجْتَمَعْنَا فِيهِ فَهُوَ بَيْنَكُمَا وَأَيْتَكُمَا عَدَلْتُ بِهِ فَبُهِرْنَا.

قبيصه بن ذويب وائی چه د مری نیا (دمور مور) ابوبکر صدیق رضي الله عنه ته په میراث کښې دخپلې حصې معلومات دپاره راغله، نو هغوی او وئیل د الله تعالی په کتاب (قرآن پاک) کښې ستا هیخ حصه نشته، او ماته د نبی کریم صلى الله عليه وسلم په سنت کښې هم ستا دپاره راته څه معلوم نه دی، ته لاره شه زه به دخلغو نه تپوس کولو سره معلومه کړم تاته به او وائم، بیا هغوی دخلغو نه تپوس او کړو نو مغیره بن شعبه رضي الله عنه او وئیل چه زه د رسول الله صلى الله عليه وسلم سره ووم، هغوی رضي الله عنه هغې ته شپږمه حصه ورکړې وه، په دې باندې ابوبکر رضي الله عنه او وئیل: آیا تاسره بل هم څوک شته (چه هغه ددې معاملې نه خبروی)؟ نو محمد بن سلمه رضي الله عنه پاسیدو او

۱: سنن الترمذی/الفرائض ۱۰ (۲۱۰۱)، سنن ابن ماجه/الفرائض ۴ (۲۷۷۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۳۲، ۱۱۵۲۲)، وقد اخرجه: موطا امام مالك/الفرائض ۸ (۴)، مسند احمد (۲۲۵/۴) (ضعيف)

هغوی هم دغه خبره او کړه کومه چه مغیره رضی الله عنه کړې وه، نو ابوبکر رضی الله عنه دهغې دپاره دا خبره نافذ کړه، بیا د عمر رضی الله عنه په خلافت کښې نیا (د پلار مور) عمر رضی الله عنه ته راغله خپل میراث ئې غوښتلو، عمر رضی الله عنه او وئیل: د الله په کتاب (قرآن) کښې ستا د حصې ذکر نشته او مخکښې (د رسول الله صلی الله علیه و آله) او ابوبکر رضی الله عنه په زمانه کښې چه کوم حکم شوې دې هغه د نیا (د مور مور) په معامله کښې شوې دې، زه دخپل طرفه په فرائضو (دمیراث په حصو) کښې څه نه شم زیاتولی، لیکن هم هغه شپږمه حصه ته هم واخله، که نیا (د مور مور) ئې هم وی نو تاسو دواړه (شپږمه حصه) تقسیم کړئ، او کومه یوه چه په تاسو کښې یواځې وی (یعنی صرف د مور مور وی یا صرف د پلار مور وی) نو هغې دپاره هم دغه شپږمه حصه ده.

توضیح الحدیث

په دې ځان پوهول پکار دی چه ذوی الفروض یعنی هغه وارثان چه د هغوی حصې متعین دی هغوی دوه قسمونه دی اکثر خو هغه دی چه د هغوی د حصې وضاحت په کتاب الله کښې دې او بعض داسې دی چه د هغوی فرض او حصه د کتاب الله نه ده ثابت بلکه په حدیث کښې ده پس جده که ام الاب وی او که ام الام هم په دې دویم قسم کښې دی، پس په حدیث الباب کښې دی چه د یو مړی نیا د صدیق اکبر رضی الله عنه په خدمت کښې حاضره شوه د خپل میراث د طلب کولو دپاره، نو هغوی او فرمائیل (ما لک فی کتاب الله شی) یعنی په کتاب الله کښې ستا دپاره هیڅ حصه نه ده ذکر شوې او د یو حدیث نه هم ستا حصه ثابت ده که نه، دا زما په علم کښې نشته، خو زه به د دې په باره کښې د خلقو نه معلومات او کړم، د هغوی په سوال کولو باندي مغیره بن شعبه رضی الله عنه عرض او کړو چه زما مخکښې رسول الله صلی الله علیه و آله نیا ته شپږمه حصه ورکړې ده، او محمد بن مسلمه رضی الله عنه هم د هغوی تائید او فرمائیلو د دې دواړو صحابه کرامو په روایت باندي ابوبکر صدیق رضی الله عنه د دې حصې نفاذ او فرمائیلو بیا وړاندي په روایت کښې دی چه بیا د عمر رضی الله عنه په زمانه کښې هم د دې مړی آخری جده راغله او خپل میراث ئې طلب کړو نو هغوی او فرمائیل چه د جده صرف یو سدس دې که هغه ځانله وی نو ځانله دې واخلي، او که دوه وی (ام الاب او ام الام) نو هغه به پکښې مشترک وی.

د جده اطلاق چونکه په دواړو نیاگانو باندي کیږی او دواړو حکم هم یو دې په دې وجه دا به وئیلې شی چه که صدیق اکبر رضی الله عنه ته راتلونکې د دې مړی ام الاب وه نو فاروق اعظم رضی الله عنه ته راتلونکې به د هغه ام الام وی، او کیدې شی چه د دې عکس وی. والله تعالی اعلم. والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۲۸۹۵] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ أَبِي رِزْمَةَ، أَخْبَرَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ أَبُو الْمُنِيبِ الْعَتَكِيُّ، عَنْ ابْنِ بَرِيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "جَعَلَ لِلْجَدَّةِ السُّدُسَ إِذَا الْمَرْكُوزُ دُوْنَهَا أُمَّ".

دبریده ځوي دخپل پلار نه روایت کوی چه نبی صلی الله علیه و آله دنیا دپاره شپږمه حصه مقرر کړې ده

خو کله چه ددې دپاسه مور نه وي

باب مَا جَاءَ فِي مِيرَاثِ الْحَدِّ

د نیکه د میراث بیان

د جد نه مراد ابوالاب چه په ذوی الفروض کښې دې خو بالسنة نه بالکتاب، او د جد نه مراد ابوالام نه شی کیدې چه هغه ته جد فاسد وئیلې شی ځکه چه هغه په ذوی الارحام کښې دې چه د هغه په وارث جوړیدو کښې اختلاف دې او د هغه باب وړاندې را روان دې، د نیکه میراث د نیا په شان سدس دې.

[۲۸۹۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا هَبَاءُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ حُصَيْنٍ، أَنَّ رَجُلًا أَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "إِنَّ ابْنَ ابْنِي مَاتَ فَمَا لِي مِنْ مِيرَاثِهِ، فَقَالَ: لَكَ السُّدُسُ فَلَمَّا أَدْبَرَ دَعَاَهُ، فَقَالَ: لَكَ سُدُسٌ آخَرَ فَلَمَّا أَدْبَرَ دَعَاَهُ، فَقَالَ: إِنَّ السُّدُسَ الْآخَرَ طَعْمَةٌ، قَالَ قَتَادَةُ: فَلَا يَدْرُونَ مَعَ أَيِّ شَيْءٍ وَرَّثَهُ قَالَ قَتَادَةُ: أَقَلَّ شَيْءٍ وَوَرِثَ الْحَدَّ السُّدُسُ".

د عمران بن حصین رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه یو سرې د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړو چه زما نمسې وفات شوې دې ایاز مادپاره دهغه په مال کښې څه حصه شته نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل ستاد پاره شپږمه حصه ده، هرکله چه روان شو نو واپس ئې راوغوښتو ورته ئې او فرمائیل ستاد پاره بل ثلث هم دې، هرکله چه دې بیاروان شو نو واپس ئې راوغوښتو ورته ئې او فرمائیل ستاد پاره بل ثلث تحفه ده قتاده وائی پته نه لگي چه په څه وجه ئې نیکه ته شپږمه حصه ورکړې ده قتاده وائی چه دنیکه په میراث کښې کم از کم شپږمه حصه ده.

﴿ عن عمران بن حصين رضی اللہ عنہ ان رجلا اتى النبي صلی اللہ علیہ وسلم الخ ﴾

مضمون الحديث:

یو سرې د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شو، یعنی د مړ کیدونکي نیکه، هغه عرض اوکړو چه زما نمسې مړ شوې دې ما ته به د هغه څومره میراث ملاویږې، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل سدس، چه کله هغه روان شو نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه راطلب کړو او وې فرمائیل ستا دپاره یو سدس بل دې، بیا چه کله هغه روان شو نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته آواز اوکړو او وې فرمائیل چه دا دویم سدس ستا د معین حصې نه زیات دې.

د نیکه اصل حصه یعنی فرض خو سدس دې، او دلته سدس آخر چه کوم هغه ته ملاؤ شو هغه د تعصیب په طور باندي دې چه د هغې به په ظاهره شکل داسې وی چه مړ کیدونکي خپل نیکه پریخودلو او لوړو لره، د بنتین فرض دوه ثلثه دې نو باقی په یو ثلث کښې نصف یعنی سدس دا د نیکه حصه وه هغه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه ته ورکړه، او بیا چه کوم سدس بیچ شو هغه هم رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه ته ورکړه، او په شروع کښې ورته پوره ثلث ځکه ورکړه چه هغه ته معلومه وی چه زما اصل فرض یو سدس دې.

(۱) سنن الترمذی للفرانض ۹ (۲۰۹۹)، (تحفة الأشراف: ۱۰۸۰۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۲۸/۴، ۴۳۶) (ضعيف)

والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی، قاله المنذری.

[۲۸۹۷] (۱) حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، عَنْ خَالِدِ بْنِ يُونُسَ، عَنِ الْحَسَنِ، أَنَّ عُمَرَ قَالَ: "أَيْكُمْ يَعْلَمُ مَا وَرَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجَدَّ، فَقَالَ مَعْقِلُ بْنُ يَسَارٍ: أَنَا وَرَثَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السُّدُسُ قَالَ: مَنْ؟ قَالَ: لَا أَذْرِي، قَالَ: لَا ذَرَيْتَ فَمَا تُغْنِي إِذَا؟"

د عمر رضي الله عنه نه روایت دې چه وني فرمائيل په تاسو كښې چاته معلومه ده چه نبی صلی الله علیه و آله نيكه ته خومره ميراث ورکړې دې نو معقل بن يسار رضي الله عنه او وئيل ماته، نبی صلی الله علیه و آله ورته شپږمه حصه ورکړې وه عمر رضي الله عنه ورته او وئيل دکوم وارث سره؟ معقل او وئيل پته نشته، عمر رضي الله عنه او وئيل چه ته په خه پوهيږي او ددې پوهيدلو خه فائده ده؟

(عن الحسن ان عمر رضي الله عنه قال ايكم يعلم ما ورث رسول الله صلی الله علیه و آله الجد الخ)

مضمون الحديث:

عمر رضي الله عنه يو ځل د حاضرین مجلس نه تپوس او کړو چه په تاسو كښې چاته دا معلومه ده چه رسول الله صلی الله علیه و آله د نيکه په ميراث كښې خومره حصه مقرر كړه، په دې باندي معقل بن يسار رضي الله عنه عرض او کړو چه ماته معلومه ده چه رسول الله صلی الله علیه و آله د نيکه حصه سدس لگولي ده، عمر رضي الله عنه تپوس او کړو چه رسول الله صلی الله علیه و آله نيکه ته سدس د کومو وارثانو په موجودگي كښې ورکړو؟ په دې باندي معقل رضي الله عنه او وې چه دا خو ماته نه ده معلومه، عمر رضي الله عنه او فرمائيل بيا تاته د دې هيڅ علم نشته، صرف دومره معلومول چه شپږمه ئې ورکړه دا مفيده نه ده، او دا په دې وجه چه په ميراث كښې ذوی الفروض ته د اصل حصې نه علاوه په بعض صورتونو كښې د عصبه كيدو په حيثيت سره خه زياتي هم ملاويږي لكه چه اوس پورته حديث كښې تير شو، نو ترخو چه د ټولو وارثانو علم نه وي تر هغه وخته پورې خبره نه شي منقح كيدې. په دې ځان پوهول پكار دي چه په ميراث الجد كښې يعنى د هغې په مقدار كښې د صحابه كرامو رضي الله عنهم اختلاف پاتي شوې دې، خپله د عمر رضي الله عنه نه هم په دې كښې مختلفي فيصلې نقل كړې شوې دي، په ابوداؤد كښې د كتاب الاشربة په شروع كښې د عمر رضي الله عنه دا حديث را روان دې، (ثلاث وددت ان النبي صلی الله علیه و آله لم يفارقنا حتى يعهد الينا فيهن عهدا انتهى اليه الجد والكلالة وابواب من ابواب الربا) (ينظر البذل ۴/۳۳۹)

والحدیث اخرجه النسائی، وابن ماجه بنحوه، قاله المنذری.

باب فِي مِيرَاثِ الْعَصْبَةِ

د عصباتو د ميراث بيان

ځان پوهول پكار دي چه د وراثت په اعتبار سره د وارثانو ترمينځه ترتيب داسې دې، اول ذوی الفروض، بيا العصبات النسبية، بيا العصبات السببية، يعنى مولى العتاقة ځكه چه د وى عصبيت دنسب دوجې نه نه دې بلکه ديوبل سبب د وجې نه دې يعنى عتاق ثم ذوی الارحام.

(۱) سنن النسائي / الكبرى (۱۲۳۵)، سنن ابن ماجه / الفرائض ۳ (۲۷۲۳)، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۶۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷/۵) (صحيح)

عصبه هغه رشته دارو ته وائی چه د هغوی حصه ترلې شوې او متعین نه وی. (که وی نو هغوی ته ذوی الفروض وائی بلکه ذوی الفرض ته د ورکړې نه پس چه څه بیج شی هغه دې هغوی ته ورکړې شی.

[۲۸۹۸] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، وَهَذَا حَدِيثٌ مُخَلَّفٌ، وَهُوَ الْأَشْبَعُ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْبُورٌ، عَنْ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَقْسِمُ الْمَالَ بَيْنَ أَهْلِ الْفَرَائِضِ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ، فَمَا تَرَكَتِ الْفَرَائِضُ فَلِأَوْلَى ذَكَرْ".

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی مال په ذوی الفروض باندې تقسیم کړی د الله د کتاب مطابق، بیا چه د دې نه څه پاتې شي نو هغه چاته ئې ورکړی څوک چه مړي ته په رشته کښې ډیر نزدې وي

﴿ عن ابن عباس رضي الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه و آله اقسام المال بين اهل الفرائض على كتاب الله،

فما تركت الفرائض فلا ولي ذكر ﴾ (۲)

یعنی میراث دې اول په ذوی الفروض کښې تقسیم کړې شی د کتاب الله مطابق، پس ذوی الفروض ته د هغوی د حصو ورکولو نه پس چه څه پاتې شي هغه د مړي د نزدې رشته دارو دپاره دی، د دې نه مراد عصبه بنفسه دی کوم چه مروی وی، او د اولی معنی د اقرب ده چه اخستلې شوې دې د ﴿ ولی ﴾ نه په معنی د قرب لکه چه د الله پاک قول دې ﴿ ان اولی الناس بابرهیم للذین اتبعوه ﴾ وقوله علیه السلام ان اولی الناس بی یوم القیامة اکثرهم علی صلوة..... یعنی د اولی نه مراد احق او ارجح نه دې، ځکه چه مونږ ته څه معلومه ده چه احق او ارجح څوک دې، او اقرب د نسب په لحاظ څوک دې دا هر څوک پیژنی. والحديث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه بنحوه، قاله المنذری

باب فی میراث ذوی الارحام

د ذوی الارحامو د میراث بیان

د ذوی الارحام تعریف دا لیکلې شوې دې چه د سرې هغه خپلوان چه د ذوی الفروض او عصبات نه علاوه دی.

ترجمه الباب والا مسئله کښې د ائمه اختلاف او دلیل:

خان پوهول پکار دی چه د ذوی الارحام په توریث کښې اختلاف دې د صحابه کرامو رضي الله عنهم او تابعینو هم دغه شان د فقهاء کرامو تر مینځه هم، په امامانو کښې احناف او حنابله قائل دی، او شوافع او مالکیان قائل نه دی، وفي البذل ﴿ اما من نفی توریهم استدلال بايات الموارث

(۱) صحیح البخاری/الفرائض ۵ (۶۷۳۲)، صحیح مسلم/الفرائض ۱ (۱۶۱۵)، سنن الترمذی/الفرائض ۸ (۲۰۹۸)، سنن ابن ماجه/الفرائض ۱۰ (۲۷۴۰)، (تحفة الأشراف: ۵۷۰۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۲۹۲، ۳۱۳، ۳۲۵)، سنن الدارمی/الفرائض ۲۸ (۳۰۳۰) (صحیح)

(۲) اي الاقرب في النسب الي المورث دون الابد فان استورا اشترکوا واقرب العصبات البنون ثم بنوهم وان سفلوا، ثم الاب ثم الجد ابوالاب وان علوا، قال الخطابي اقرب العصبه الي الميت كالاخ والعم فان الاخ اقرب من العم، وكالعم وابن العم، فالاول اقرب من الثاني اهـ (عون المعبود)

بان الله سبحانه لم يذكر لذوى الارحام شيئا وما كان ربك نسيا وايضا توريتهم زيادة على كتاب الله وذلك لا يثبت بحبر الواحد والقياس، الى آخر ما قال ﴿ يعنى په آيتونو د ميراث كښې د ذوى الارحام هيڅ ذكر نشته، لهذا په خبر واحد يا قياس سره په كتاب الله باندې زيادت جائز نه دې، ومن قال بتوريتهم استدلال بقوله تعالى واولوا الارحام بعضهم اولى ببعض فى كتاب الله، وهذا اثبات الاستحقاق بالوصف العام، وقال النبي ﷺ الخال وارث من لا وارث له، وفى روايته الخال وارث من لا وارث له، يرثه ويعقل عنه الى آخر ما بسط فى البذل.

[۲۸۹۹] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ بُدَيْلٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ رَاشِدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي عَامِرٍ الْهُوزَنِيِّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ لُحْيٍ، عَنِ الْقَدَامِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ تَرَكَ كَلًّا فَآلِيٌّ، وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ وَأَنَا وَارِثٌ مَنْ لَا وَارِثَ لَهُ أَعْقِلَ لَهُ وَارِثُهُ وَالْخَالُ وَارِثٌ، مَنْ لَا وَارِثَ لَهُ يَعْقِلَ عَنْهُ وَيَرِثُهُ".

دمقدم نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلى دى: څوك چه قرض يابچي يابښخه پريږدي نوزه دهغې ذمه واريې او يائي داسې ووييل چه ددې ذمه وار الله اودهغه رسول دي، او څوك چه مال په ميراث كښې پريږدي نوهغه دده دوار ثانودي او وارث دهغه چايم چاچه مال نه وي پريښي، زه دهغه نه ديت ادا كوم او تركه ئې وصول كوم، او ماما دهغه چا وارث دي دچاچه بل وارث نه وي ديت به هم دهغه دطرفه وركوي او ميراث به ئې هم وري.

﴿ قال رسول الله ﷺ من ترك كلاً فآلي، ومن ترك مالا فلورثته وانا وارث من لا وارث له اعقل له وارثه والخال وارث من لا وارث له يعقل عنه ويرثه ﴾

شرح الحديث:

كلّ وئيلى شى ثقل او بوجهه ته او دلته مراد د دې نه عيال او قرض دې، يعنى كوم انسان چه نابالغ ماشوم پريخودلو سره مې شى يا قرض نو د هغه ذمه دارى په ما باندې ده، او څوك چه مال پريخودلو سره مې شى نو هغه د وارثانو دپاره دې، او د كوم انسان چه څوك وارث نه وي د هغه وارث به زه يم پس د هغه د طرفه نه به زه ديت ادا كوم او د هغه د مال وارث به زه يم، يعنى كه هغه څه مال پريخودلو سره مې شى او د هغه څوك وارثان نه وي نو زه به د هغه د مال وارث يم. يعنى د بيت المال دپاره، دا وراثت د رسول الله ﷺ د انتظام او د بيت المال په اعتبار سره دې. او دا چه كوم حديث دې چه ماما وارث دې د هغه چاچه د چا څوك وارث نه وي ديت به ادا كوي هغه ماما د خپل خورنى د طرفه نه او د هغه وارث به وي، د دې جملې نه د احنافو او حنابله تائيد كيږي، خال (ماما)، او خاله او عمه دا ټول ذوى الارحام دي او دا چه فرمائي چه ماما به ديت ادا كوي د خورنى د طرفه نه، يعنى كه د يو سړي خورنى باندې جنايت وي او د هغه څوك عصبه نه وي نو د هغه د طرفه نه به ديت د هغه ماما ادا كوي، څنگه چه عصبه ديت ادا كوي، زه وايم: او دغه شان په حديث كښې راځي ﴿ابن اخط القوم منهم﴾ لهذا ماما گان خورئينه به د يو بل وارثان وي، خو هغه حضرات چه د

۱: سنن ابن ماجه للفرائض ۹ (۲۷۳۸)، والديات ۷ (۲۶۳۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۶۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۳۳، ۱۳۱/۴) (حسن صحيح)

توریت ذوی الارحام قائل نه دی هغوی دا حدیث په وراثت باندې نه محمول کوی بلکه دا هغوی په حمایت او اعانت باندې محمول کوی، یعنی که د یو سړی خورنې په حق باندې وی نو د هغه ماما له پکار دی چه د هغه امداد او کړی، یعنی اعانت او نصرت د ذوی الفروض او عصابات سره خاص نه دي بلکه د ذوی الارحام هم کول پکار دی. (والله تعالی اعلم) والحديث اخرجہ النسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۲۹۰۰] (حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، فِي آخِرِينَ قَالُوا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ بُدَيْلٍ يَعْنِي ابْنَ مَيْسَرَةَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنِ رَاشِدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي عَامِرٍ الْهُوزَنِيِّ، عَنِ الْبِقْدَامِ الْكِنْدِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ، فَمَنْ تَرَكَ دِينًا أَوْ ضَيْعَةً فَأَلَى، وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ وَأَنَا مَوْلَى مَنْ لَمْ يَمُوتْ لَهُ أَيْتُ مَالَهُ وَأَقْرَبُ عَائَتِهِ، وَالْحَالُ مَوْلَى مَنْ لَمْ يَمُوتْ لَهُ يَرِثُ مَالَهُ وَيَقْرَبُ عَائَتَهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، رَوَاهُ الزُّبَيْدِيُّ، عَنْ رَاشِدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ ابْنِ عَائِدٍ، عَنِ الْبِقْدَامِ، وَرَوَاهُ مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ، عَنْ رَاشِدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبِقْدَامَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: يَقُولُ الضَّيْعَةُ مَعْنَاهُ عِيَالٌ.

دمقدام بن ابی کرب الکندی نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی زه په هر یو مسلمان باندې دهغه دذات نه زیات مهربان یم نوخوک چه قرضه پریرېدی یا بنسخه ماشومان پریرېدی او مرشي نودهغه د بچو اوبسخې پرورش اودقرض زه ذمه واریم او خوک چه مال اودولت پریرېدی هغه دهغه دوار ثانودپاره دي اودچاپه بل سرفرست نه وی نوزه دهغه کفیل او محافظ یم اودده دمال وارث یم اوماما دهغه چاوارث دي دچاچه بل وارث نه وی هغه به دده میراث حاصله وي اودده دیت به اداکوي ابوداود وائی چه دضیعه معنی اهل وعیال ده او وائی داروایت زبیدی هم نقل کړې دي دراشد بن سعد نه او هغه دابن عائذنه او هغه دمقدام نه.

د رسول الله ﷺ د امت سره ډیر زیات محبت:

قوله: ﴿أنا أولى بكل مؤمن من نفسه﴾ رسول الله ﷺ فرمائی چه زه هر مسلمان ته د هغه د ذات نه هم زیات نزدې یم، یعنی د انسان د مرگ نه پس د هغه د امورو داسې ذمه داری اخلم او د هغه داسې نصرت کونکې یم چه که هغه مرې ژوندې کیدی نو هغه به خپله هم د خپل خان دومره انتظام او انصرام نه کولې خومره چه د هغه د طرف نه کونکې یم، ډیره عجیبه خبره ده د رسول الله ﷺ د خپل امت د هر فرد سره دومره قوی او ژور تعلق دي چه انسان خپله د خپلو امورو خیال دومره نه شی ساتلې خومره چه هغوی ساتلې شی، د رسول الله ﷺ د امت سره د محبت احادیث خو ډیر زیات دی لکه چه په کتاب الحج کښې تیر شوی دی چه رسول الله ﷺ د حجة الوداع په خطباتو کښې بار بار اوفرمائیل ﴿خذوا عني مناسككم لعلي لا اراكم بعد عامي هذا﴾ او په یو حدیث کښې دی ﴿وددت اني رايت اخواني﴾ چه زما زړه غواړی چه خپل رونړه وینم، صحابه کرامو ﷺ عرض اوکړو چه آیا مونږ ستاسو رونړه نه یو، په دي باندې هغوی اوفرمائیل چه تاسو خو زما ملگری یئ او هر وخت ما سره پاتې کیدونکی یئ، زما مراد خو د اخوان نه هغه امتیان دی کوم چه به زما نه روستو راځی او پیدا کیرې

۱: نظر ماقبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۶۹) (حسن صحیح)

به، ﴿صلى الله عليه وآله وسلم وجزاه الله عنا ما هو اهله﴾

وراندې په حديث كښې د ﴿ضيعة﴾ لفظ دې هم د دې نه مراد عيال يعنى واره ماشومان او زنانه دى ځكه كه د هغوى خبر وانخستلې شى نو هغه زر ضائع كيږي هم په دې وجه دې ته ضيعة وئيلې شى.

﴿وانا مولى من لا مولى له ارث ماله وافك عانه﴾

د مولى نه مراد وارث دې لكه چه په مخكښې حديث كښې تير شو ﴿ارث ماله﴾ اى لاجل بيت المال ﴿وافك عانه﴾ هغه د قيد نه خلاصوم د ﴿عان﴾ معنى قيد، په دې وجه قيدي ته عانى وئيلې شى لكه چه د كتاب الجنائز په يو حديث كښې راځي، ﴿اطعموا الجائع وعودوا المريض وفكوا العانى، قال سفيان والعانى الاسير﴾ او دلته د قيد نه مراد ﴿ما يلزمه من الحقوق مثل الدين والدية﴾ ځكه چه دا څيزونه داسې دى چه انسان په هغې كښې مقيد او اينختلى وي، او په يو روايت كښې چه مخكښې راوان دې په هغې كښې د ﴿عنى﴾ لفظ دې ﴿افك غنيه﴾. والحديث اخرجه النسائي وابن ماجه كما فى التحفة، قاله الشيخ محمد عوامه.

[۲۹۰۱] (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ عَتِيْقِ الدَّمَشَقِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عِيَّاشٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ مَجْرٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ يَحْيَى بْنِ الْقَدَامِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "أَنَا وَارِثٌ مَنْ لَأَوَارِثَ لَهُ أَفْكَ عَانِيَهُ وَارِثٌ مَالَهُ وَأَخِيٌّ لَأَوَارِثَ لَهُ يَفْكَ عَانِيَهُ وَوَرِثٌ مَالَهُ".

يحي بن مقدام دخپل پلار نه روايت كوي او هغه دده دنيكه نه فرمائي چه دنبي ﷺ نه مي اوريدلى دى چه فرمائيل ئې زه وارث يم دهغه چا دچاچه څوك وارث نه وي اوزه به دهغه دطرف نه ديت ادا كوم اوزه دهغه دمال وارث يم اوما ماد هغه چا وارث دې دچاچه بل وارث نه وي او هغه به دده نه ديت ادا كوي او ميراث به ئې وږي.

[۲۹۰۲] (٢) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، وَحَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكَيْعُ بْنُ الْجَرَّاحِ، عَنْ سُفْيَانَ ثَمِيمًا، عَنْ ابْنِ الْأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ مُجَاهِدِ بْنِ وَرْدَانَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، أَنَّ مَوْلَى لِنَبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَاتَ وَتَرَكَ شَيْئًا وَلَمْ يَدْعُ وَلَدًا وَلَا حَمِيمًا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَعْطُوا مِيرَاثَهُ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ قَرَبَاتِهِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَحَدِيثُ سُفْيَانَ أَثَرٌ، وَقَالَ مُسَدَّدٌ: قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "هَاهُنَا أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ أَرْضِهِ، قَالُوا: نَعَمْ قَالَ: فَأَعْطُوهُ مِيرَاثَهُ".

دام المومنين عائشې رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه دنبي ﷺ يو ازاد كړې شوې غلام مړ شو او څه شې ئې په ميراث كښې پريځې وو اونه ئې ځوى وو اونه ئې څوك دوست روښى ﷺ او فرمائيل دده ميراث دده دكلي يو سړى ته ور كړئ. ابوداود وائى حديث دسفيان ډير كامل دې اودمسدد په روايت كښې دا اضافه ده چه نبى ﷺ او فرمائيل ايا دلته دده دعلاقي څوك شته دې؟ خلقو او وئيل هو، نووئې فرمائيل دده ميراث ورته ور كړئ.

(١): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۷۶) (حسن صحيح)

(٢): سنن الترمذي للفرائض ۱۳ (۲۱۰۵)، سنن ابن ماجه للفرائض ۷ (۲۷۳۳)، (تحفة الأشراف: ۱۶۳۸۱)، وقد أخرجه مسند احمد (۱۳۷/۶، ۱۷۴، ۱۸۱) (صحيح)

(عن عائشة رضي الله عنها ان مولی للنبي ﷺ مات وترك شيئا ولم يدع ولدا ولا حميما)

يعني د رسول الله ﷺ د يو آزاد كړې شوې غلام انتقال اوشو او هغه څه ميراث هم پريخودلو خو هغه خپل څوك اولاد او رسته دار نه وو پريخودلې، نو رسول الله ﷺ اوفرمائيل چه دهغه ميراث دي د هغه په كلي والو كښي چاته وركړې شي.

الكلام على الحديث من حيث الفقه :

د رسول الله ﷺ د دي مړي ميراث لره يو كلي والا ته وركول دا من حيث الاستحقاق نه وو بلكه من حيث المصروف وو، ځكه چه دا قسم ميراث (چه د هغه هيڅوك وارث نه وي) په بيت المال كښي داخلېږي، او د بيت المال مال په عامو خلقو باندي او په ضرورت مندو باندي خرج كيږي د دي وجې رسول الله ﷺ درومي نه داسي انسان ته وركړو.

ايا رسول الله ﷺ د چا وارث كيدو؟

د دي نه پس په دي باندي ځان پوهول پكار دي چه دا توجيه په هغه صورت كښي ده چه كله دا اومنلې شي چه هر كله د رسول الله ﷺ څوك وارث نه كيږي، رسول الله ﷺ خپله هم د چا وارث نه كيږي لكه چه د بعض علماء كرامو رائي ده، خو كه دويم قول واخستلې شي كوم چه بعض نورو علماء كرامو اختيار كړې دي او زمونږ حضرت گنگوهي هم چه اكر كه د رسول الله ﷺ څوك وارث نه كيږي خو خپله به رسول الله ﷺ د نورو وارث كيدو نو په دي صورت كښي به دا وئيلې شي دا د رسول الله ﷺ وركول (من حيث التبرع) او تصدق وو د خپل طرف نه ځكه چه دا د هغوي خپل حق وو، كه رسول الله ﷺ غوښتله نو خپله ئې هم اخستلې شو، حضرت گنگوهي فرمائي هغه چه په بعض رواياتو كښي (لا نورث) سره (لا نورث) هم دي دا زيادت غلط دي، ثابت نه دي، كما في البذل والحديث اخرجه الترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذري.

[۲۹۰۳] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ الْكِنْدِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُحَارِبِيُّ، عَنْ جَبْرِيلَ بْنِ أَحْمَرَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ: أَمَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا، فَقَالَ: "إِنْ عِنْدِي مِيرَاثٌ رَجُلٍ مِنَ الْأَزْدِ وَلَسْتُ أَحَدًا أَزْدِيًّا أَدْفَعُهُ إِلَيْهِ قَالَ: أَذْهَبُ فَالْتَمِسُ أَزْدِيًّا حَوْلًا، قَالَ: فَأَتَاهُ بَعْدَ الْحَوْلِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ أَحَدًا أَزْدِيًّا أَدْفَعُهُ إِلَيْهِ، قَالَ: فَأَنْطَلِقُ فَأَنْظُرُ أَوَّلَ خَزَاعِي تَلْقَاهُ فَأَدْفَعُهُ إِلَيْهِ، فَلَمَّا وُلِيَ قَالَ: عَلَى الرَّجُلِ، فَلَمَّا جَاءَهُ قَالَ: أَنْظُرْ كَبْرَ خَزَاعَةٍ فَأَدْفَعُهُ إِلَيْهِ."

عبدالله بن بريده دخپل پلارته روايت كوي فرمائي چه نبی ﷺ ته يو كس راغي او عرض ئې او كړو چه زما سره ديو كس ميراث دي داز قبيلې والا، او ماته داز قبيلې والا څوك نه ملاويږي چه دده ميراث ورته وركړم نبی ﷺ ورته اوفرمائيل لار شه څوك ازبي ولته وه اكر كه يو كال وي دي وائي كال چه تير شونې نبی ﷺ ته ورغلم او اوي وئيل اي دالله رسوله څوك ازدي مې پيدانكړو چه دده ميراث ورته وركړم نبی ﷺ اوفرمائيل لار شه او اوگوره كله چه اولني خزاعي درسره ملاو شي نوهغه ته ئې وركړه هر كه چه دي روان شو نبی ﷺ اوفرمائيل داسرې راوگرځوي دي چه كله راواپس شونې نبی ﷺ ورته اوفرمائيل دبنی خزاعه كوم مشر ته ئې وركړه.

۱: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۵۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۴۷/۵) (ضعيف)

شرح الحديث:

قوله: (عن عبدالله بن بريدة عن ابيه قال اتى رسول الله ﷺ رجل فقال ان عندى ميراث رجل من الازدولست اجد ازديا ادفعه اليه الخ) : يو سرې د رسول الله ﷺ په خدمت كښې د قبيله ازديو سرې حاضر شو چه ماسره د يو سرې ميراث دې خو ماته هېڅ ازدي سرې نه ملاويږي چاته چه زه دا مال وركړم، رسول الله ﷺ او فرمائيل او يو ازدي () لره تر يو كاله پورې اولتوه، د يو كال نه پس هغه سرې راغلو چه هېڅوك ازدي ملاؤ نه شو، رسول الله ﷺ او فرمائيل (فانطلق فانظر اول خزاعي تلقاه فادفعه اليه، فلما ولي قال على الرجل فلما جاءه قال انظر كبر خزاعة فادفعه اليه) يعنى چه كله هغه ته هېڅوك ازدي ملاؤ نه شو نو هغوى او فرمائيل چه ښه لار شه

يو خزاعى اولتوه چه تاته ملاؤ شى پس هغه ته دا وركړه، اول په معنى د اقرب، يعنى كوم انسان چه د قبيله خزاعه د مورث اعلى سره زيات نژدې وى هغه ته دا مال وركړه، بيا چه كله هغه روان شو نو رسول الله ﷺ او فرمائيل هغه سرې راوغواړئ چه كله هغه راغلو نو رسول الله ﷺ او فرمائيل (انظر كبر خزاعة) د رسول الله ﷺ داسې فرمائيل د تفسير په طور دى، يعنى اول د خزاعى تفسير او د هغې مراد رسول الله ﷺ په دې لفظ سره بيان كړو، كبر يعنى اكبر () د اكبر نه مراد هم هغه اقرب دې، دلته سوال دا دې چه ازدي چه د يمن په قبائلو كښې يوه قبيله ده د هغه ميراث يو خزاعى سرې ته ولې وركولې شى د دې جواب شراح دا وركړې دې چه قبيله خزاعه هم په اصل كښې د ازدي نه ده يعنى د شروع په اعتبار سره چه كله دا ټول خلق په يمن كښې وو. بيا چه كله دا خلق د يمن نه وتلو سره مكې مكرمه ته راغلل نو هلته راتلو سره هغوى د بنو هاشم سره مخالفت او كړو نو د هغوى نوم خزاعه شو، ففى القاموس الخزع القطع والخزاعة القطعة تقطع من الشئ حى من الازد سموا بذلك لانهم تخزعوا عن قومهم واقاموا بمكة.... الحمد لله د حديث مطلب واضح شو. والحديث اخرجه النسائي مسندا ومرسلا، قال المنذرى.

[۲۹۰۴] () حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ أَسْوَدَ الْعَجَلِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا شَرِيكٌ، عَنْ جَبْرِيلَ بْنِ أَحْمَرَ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ ابْنِ بَرِيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: مَاتَ رَجُلٌ مِنْ خَزَاعَةَ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِيرَاثِهِ، فَقَالَ: أَلَمْ سَوَّالَهُ وَارْتَأَى، أَوْ ذَارَ حِمْرًا فَلَمْ يَجِدْ وَالَهُ وَارْتَأَى وَلَا ذَارَ حِمْرًا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَعْطَوهُ الْكَبْرَ مِنْ خَزَاعَةَ"، وَقَالَ يَحْيَى: قَدْ سَمِعْتُهُ مَرَّةً يَقُولُ فِي هَذَا الْحَدِيثِ: انْظُرُوا الْكَبْرَ رَجُلٍ مِنْ خَزَاعَةَ.

عبدالله بن بريدة ^{رضي الله عنه} دخپل پلار نه روایت گوی فرمائی چه یو خزاعی مر شو او میراث ئې نبی ^{صلی الله علیه و آله} ته راوړې شونښې او فرمائیل دده وارث یا څوک رشته دارئې اولتوئې نو دوی

۱) زما په یو کاپې کښې داسې ملاؤ شوه (ينظر البذل فيه كلام الشيخ الجنجومي..... او حاصل د دې دا دې چه د کومې ترکي څوک وارث نه وى هغه په حکم د لقطې کښې وى او د لقطې حکم چونکه د تصدق دى نو دا هم په طور د تصدق وه، او د اکبر خزاعه تخصیص په دې وجه دې چه هغه په نسبت د بل زيات اقرب دې

۲) كما في حديث القسامة كبر الكبر

۳) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۹۵۵) (ضعيف)

نې نه وارث پیدا کړو او نه رسته دار، نبی ﷺ او فرمائیل دخزاعه کوم مشرته ئې ورکړې.

[۲۹۰۵] حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنْ عَوْسَجَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَجُلًا مَاتَ وَلَمْ يَدَعْ وَارِثًا إِلَّا غُلَامًا لَهُ كَانَ أَعْتَقَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "هَلْ لَهُ أَحَدٌ؟" قَالُوا: لَا إِلَّا غُلَامًا لَهُ كَانَ أَعْتَقَهُ"، فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِيرَاثَهُ لَهُ.

دا بن عباس نه روایت دې فرمائی چه یوکس مرشو او دیو غلام نه ئې علاوه خوک وارث نه ورکوم چه ئې ازاد کړې وو، نبی ﷺ او فرمائیل ایا خوک ئې شته؟ نو دوی وویل نه مگر یو ازاد کړې شوي غلام ئې شته، نو نبی ﷺ دهغه مالک دي غلام نه حواله کړو.

«عن ابن عباس رضی الله تعالی عنهما ان رجلا مات ولم يدع وارثا الا غلاما له كان اعتقه الخ»

یعنی یو سرې وفات شو او هغه خپل خوک وارث پرینخودلو خو خپل ازاد کړې شوې غلام پرینخودلو، رسول الله ﷺ ته د دې خبر ملاؤ شو نو رسول الله ﷺ د هغه سرې میراث هم هغه ازاد کړې شوې غلام ته ورکړو.

که د یو سرې ازاد کړې شوې غلام مرشی او د هغه خوک وارث نه وی سوا د هغه د آقا او سید نه نو د هغه د میراث به د هغه آقا مالک وی چه هغې ته ولاء وائی او دا مسئله اجماعی ده، لحدیث الولاء لمن اعتق او دلته په دې حدیث کښې دا صورت نه دې بلکه د دې برعکس دې یعنی د آقا میراث د هغه ازاد کړې شوی غلام ته ورکړې شو، دا په څلورو امامانو کښې د چا مذهب هم نه دې سوا د شریح او طاؤس نه ﷺ، او دې دواړو هم د دې حدیث نه استدلال کړې دې او جمهور چه د دې قائل نه دی بلکه دا وائی چه ولاء منحصر ده د معتق په حق کښې د صحیح حدیث په بنیاد باندې هغوی د حدیث الباب تاویل کوی چه د رسول الله ﷺ دا د میراث ورکول من حیث الاستحقاق نه وو بلکه من حیث التصدق والمصرف وو، لکه چه په حدیث کښې تیر شو یعنی د ازدی په حدیث کښې، والله تعالی اعلم

(والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری)

باب میراث ابن الملائنة

دلغان کړې شوې ښځې د ځوی د میراث بیان

په باب اللعان کښې دا مسئله تیره شوې ده چه د لغان نه پس چه د ملاعنه نه کوم ماشوم پیدا شی د هغه نسب د هغه د مور یعنی ملاعنة نه خو ثابتیږي او د پلار نه نه ثابتیږي هم په دې وجه د مور او ځوی ترمنځه خو میراث جاری کیږي خو د هغه هلک او د هغه د پلار یعنی ملاعن ترمنځه نه جاری کیږي، او دا مسئله اجماعی ده.

۱: سنن الترمذی للفرائض ۱۴ (۲۱۰۶)، سنن ابن ماجه للفرائض ۱۱ (۲۷۴۱)، (تحفة الأشراف: ۶۱۳۲۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۱/۱، ۳۵۸) (ضعیف)

[۲۹۰۶] (۱) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ رُوَيْبَةَ التَّغْلِبِيُّ، عَنْ عَبْدِ الْوَّاحِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ النَّصْرِيِّ، عَنْ وَائِلَةَ بْنِ الْأَسْقَمِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الْمَرْأَةُ تُحْرَزُ ثَلَاثَةَ مَوَارِيثَ عَتِيقَهَا وَلَقِيبَتَهَا وَوَلَدَهَا الَّذِي لَا عُنْتُ عَنْهُ".

وايله بن اسقع د نبی ﷺ نه روایت کوی چه فرمائیلي ئې و وېنځه ددرې کسانو وراثت حاصلولي شي يو دخپل ازاد کړي شوي غلام اودموندلې شوي هلك اودخپل هغه ماشوم د کوم په وجه چه لعان شوي وي.

(المراة تحرز ثلاث موارث عتيقها ولقيبتها وولدها الذي لا عنت عليه)

الكلام على الحديث من حيث الفقه:

يعنى زنانه درې قسمه ميراث حاصلوی يو د خپل آزاد کړې شوې غلام دويم د خپل لقيط يعنى که يو زنانه يو ورک شوې ماشوم بيا مومی او هغه لوئې کړی او د هغه پالنه او کړی او هغه لوئې شی نو د هغه د مال به هغه زنانه مالکه وی، او دريم ميراث په حديث کښې هم هغه دې چه په ترجمه الباب کښې ذکر دې.

د دې حديث رومي جزء او آخری جزء دا خو متفق عليه دی او مينځ والا جزء يعنى د ميراث د لقيط والا مسئله دا صرف د اسحاق بن راهويه مذهب دې. د جمهور علماء کرامو په نزد چه په هغوی کښې څلور امامان هم دی د لقيط ميراث د بيت المال دپاره دې، مگر دا چه ملتقط فقير وی نو بيا په حيثيت د مصرف دا هغه ته هم ملاويدې شی. د دې حديث جواب د جمهورو په نزد يو خو دا دې چه د دې نه مراد استحقاق نه دې بلکه مقصود بيان د مصرف او تصدق دې او دويم جواب دا دې چه ﴿ان هذا الحديث غير ثابت كما في شرح السنة﴾^(۱) والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذرى.

[۲۹۰۷] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، وَمُوسَى بْنُ عَامِرٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جَابِرٍ، حَدَّثَنَا مَكْحُولٌ، قَالَ: جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مِيرَاثَ ابْنِ الْمَلَاعِنَةِ لِأُمِّهِ وَلِوَرَثَتِهَا مِنْ بَعْدِهَا".

دمکحول نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ دملاعني دخوی ميراث دده مور ته ورکړې وو اوددې نه پس ئې ددې وارثانوته ورکړې دې.

[۲۹۰۸] (۳) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَامِرٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، أَخْبَرَنِي عَيْسَى أَبُو مُحَمَّدٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ.

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه ددې روایت په شان روایت بيان کړې دې.

^(۱): سنن الترمذی للفرائض ۲۳ (۲۱۱۵)، سنن ابن ماجه للفرائض ۱۲ (۲۷۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۴۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۹۰، ۱۰۶۷۴) (ضعيف)

^(۲): قال الخطاب في المعالم هذا الحديث غير ثابت عند اهل النقل واذا لم يثبت الحديث لم يلزم القول به، وكان ما ذهب اليه عامة العلماء اولي اهدوزاد عليه المنذري قال البيهقي لم يثبت البخاري ولا مسلم هذا الحديث لجهالة بعض رواة آه

^(۳): تفرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۷۷۱)، وقد أخرجه: سنن الدارمي للفرائض ۲۴ (۳۰۱۰) (صحيح)

^(۴): تفرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۷۷۱) (صحيح)

بَابُ هَلْ يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ

باب: آیا یو مسلمان د کوم مشرک وارث جوړیدی شی؟

[۲۹۰۹] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْبَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنِ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، عَنِ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ وَلَا الْكَافِرُ الْمُسْلِمَ".

اسامه بن زید در رسول پاک قا نه روایت کوی چه فرمائیلی ئې وو میراث نه شی ورلې مسلمان د کافر نه اونه کافر د مسلمان نه.

په حدیث الباب کښې د دې نفی ده پس د جمهور علماء کرامو او ائمه اربعه په دې باندې اتفاق دی او اتفاق د جانبینو نه دې چه د یو بل نه وارث کیږی، بعض صحابه کرام او تابعین رضی الله عنہم لکه معاذ بن جبل رضی الله عنہ او سعید بن المسیب رضی الله عنہ وغیره فرمائی چه کافر خو د مسلمان وارث نه وی خو د دې عکس یعنی مسلمان د کافر وارث وی ﴿لحدیث الاسلام یزید ولا ینقص، ولحدیث الاسلام یعلو ولا یغلی کما سیاتی فی آخر الباب﴾

د مرتد د وراثت مسئله:

دلته یو مسئله بله ده هغه دا چه د مرتد حکم څه دې هغه به د خپلو مسلمانانو رشته دارو وارث وی او که نه؟ نو په دې باندې خو اجماع ده چه مرتد نه وارث کیږی خو د دې عکس یعنی د مرتد د مړ کیدو نه پس د هغه مسلمان رشته دار به د هغه وارث وی یا نه؟ د امام مالک رضی الله عنہ او شافعی رضی الله عنہ په نزد نه وارث کیږی، او د احنافو مذهب دا دې چه مرتد کوم مال حاصل کړې وی د خپل ردت په حالت کښې هغه خو د بیت المال دپاره دې او کوم مال چه هغه حاصل کړې وی د ارتداد نه مخکښ، د اسلام په حالت کښې په هغې کښې به وراثت جاری کیږی، امام ترمذی رضی الله عنہ هم دا مسئله هم د دې حدیث په ضمن کښې بیان کړې ده.

(والحدیث أخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری)

[۲۹۱۰] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنِ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، عَنِ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ: قَالَ: "يَأْرَسُولُ اللَّهِ أَيْنَ تَنْزُلُ غَدَا فِي حَيْثُ؟ قَالَ: وَهَلْ تَرَكَ لَنَا عَقِيلَ مَنزَلًا؟ ثُمَّ قَالَ: مَنْ نَزَلُونَ بِحَيْثُ بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمْتَ قُرَيْشٌ عَلَى الْكُفْرِ يَعْنِي الْمَحْصَبَ، وَذَلِكَ أَنَّ بَنِي كِنَانَةَ حَالَمَتْ قُرَيْشًا عَلَى بَنِي هَاشِمٍ أَنْ لَا يَأْكُوهُمْ وَلَا يَأْبُوهُمْ وَلَا يَتَوَدَّوهُمْ" قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَالْحَيْفُ الْوَادِي.

داسامه بن زید نه روایت دې فرمائی چه ماعرض او کړو ای دالله رسوله صبابه ته چرته تشریف فرمایې؟ وبې فرمائیل ایاعقیل زمونږ دپاره په مکه کښې کور پریخې دې اوبیا ئې اوفرمائیل مونږ به دبنو کنانه په خیف کښې یو چرته چه قریشو په کفراوشرک باندې قسم خوړلې وو یعنی په محصب کښې به قیام کوو ځکه چه دبنو کنانه قبیلې خلقو د قریسونه اقراراغستی وو چه هغوی به دقریشوسره نه نکاح کوي اونه به ورسره اخستل

۱: صحیح البخاری/المغازي ۴۸ (۴۲۸۳)، الفرائض ۲۶ (۶۷۶۴)، صحیح مسلم للفرائض (۱۶۱۴)، سنن الترمذی للفرائض ۱۵ (۲۱۰۷)، سنن ابن ماجه للفرائض ۶ (۲۷۳۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۰۰/۵، ۲۰۱، ۲۰۸، ۲۰۹) (صحیح)
۲: نظر حدیث رقم: (۲۰۱۰) (تحفة الأشراف: ۱۱۴) (صحیح)

خرخول کوي اونه به ورته دخان سره پناه ورکوي، زهري وئیلی دی خیف کلي ته وئیلی شي
شرح الحديث:

قوله: «عن اسامة بن زيد رضى الله تعالى عنهما قال قلت يا رسول الله ﷺ اين تنزل غدا في حجته قال وهل ترك لنا عقيل منزلا الخ» د دې حديث پوره شرح په كتاب الحج كښې تيره شوې ده او هلته دا هم تير شوى دى چه دا حديث په كتاب الفرائض كښې هم را روان دې او د دې وجه هم تيره شوې ده، د خلاصې په طور خان پوهه كړې چه د كوم منزل چه رسول الله ﷺ ذكر فرمائى د دې نه مراد د رسول الله ﷺ جدى مكان دې كوم لره چه عبدالمطلب كله چه هغه بوډا شو په خپل ژوند كښې د خپلو خامنو ترمينځه تقسيم كړې وو چه په هغې كښې د رسول الله ﷺ پلار عبدالله هم وو بيا په آخير كښې هغه كور د ابوطالب په قبضه كښې وو، رسول الله ﷺ او على ﷺ دا دواړه خو هجرت كولو سره رومې مدينې طيبې ته راغلي وو، او د ابوطالب د وفات په وخت على او جعفر ﷺ دواړو اسلام راوړې وو. هغه دواړه خو د هغه كور څكه وراثان نه شو، او د ابوطالب يو دريم څونې په جنگ بدر كښې ورك شوې وو، او عقيل ﷺ د ابوطالب د مرگه پورې اسلام نه وو راوړې په دې وجه هغه ځانله د دې وارث شو(۱) خو هغوى دا كور وئیلی شوى دى چه خرڅ كړې وو هم د دې وجې نه رسول الله ﷺ فرمائى چه عقيل زمونږ دپاره كور چرته پريخودلې دې. يعنى كه هغه خرڅ كړې نه وې نو بيا د منى نه روانيدو باندې مكې مكرمې ته رسيدو سره به مونږ په هغې كښې قيام كړې وې، په دې وجه د رسول الله ﷺ راټې دا شوه چه د منى نه وتلو سره په محصب كښې شپه تيره كړې شي، بيا سحر د هغه ځانې نه مكې ته روانيدو سره د سحر مونځ او طواف وداع كولو نه پس مدينې ته لاړ شي، په دې صورت كښې به د قيام مکه ضرورت نه راځي او نه به قيام گاه ته ضرورت راځي. (والحديث اخرجه البخارى ومسلم والنسائى وابن ماجه، قاله المنذرى)

[۲۹۱۱] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ حَبِيبِ الْمُعَلِّمِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَتَوَارَثُ أَهْلُ مِلَّتَيْنِ شَتَّى".

عمرو بن شعيب د خپل پلار نه او هغه دده دنيکه عمرو بن العاص رضی الله عنه نه روايت کوي فرمائي چه نبی ﷺ فرمائیلی وو چه ددوه جدا جدا دينونو والا ديوبل نه ميراث نه شي وړلې.
(قال رسول الله ﷺ لا يتوارث اهل ملتین شتی)

حديث الباب كښې مذاهب دائمة:

د توارث دپاره د وارث او مورث ترمينځه اتحاد دملت بالاتفاق شرط دې، په دې حديث كښې هم دا مسئله ذكر شوې ده خو د دې باوجود د دې مسئله په تفصيل كښې اختلاف دې د احنافو او شوافعو مسلك خو دا دې چه «الكفر ملة واحدة» كه هغه كتابي وي يا مشرك يهودي وي او كه نصراني د دې دواړو په نزد دا تول يو دى، لهذا د يو بل وارثان به وي،

(۱) هم د دې نه د ترجمة الباب سره مناسبت ښكاره كيږي.

(۲) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۸۶۶۹)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للفرائض ۱۶ (۲۱۰۹)، سنن ابن ماجه للفرائض ۶ (۲۷۳۲)، مسند احمد (۱۷۸/۲، ۱۹۵) (حسن صحيح)

اصل تقابل د اسلام او د کفر ترمینځه دې، هلته اختلاف د ملت دې او د مالکیانو او حنابلې په نزد ادیان سماویه لکه یهودیت او نصرانیت دا په خپل مینځ کښې مختلف دی لهذا په هغوی کښې به یو د بل وارث نه وی، او د ادیان غیر سماویه په باره کښې امام مالک رضی الله عنه خو دا فرمائی چې د شرک انواع ټول ملت واحده دی، او امام احمد رضی الله عنه فرمائی مختلف انواع شرک مختلف ملل دی مثلاً بت پرست او آتش پرست دا ځانله ځانله دی لهذا توارث به نه وی او د امام مالک په نزد به توارث وی. (من هاشم الکوکب ۲/۴۰) والحدیث اخرجه النسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۲۹۱۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي حَكِيمٍ الْوَاسِطِيِّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرِيدَةَ، أَنَّ أَحْوَيْنَ اخْتَصَمَا إِلَى يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ يَهُودِيٍّ، وَمُسْلِمٌ قَوْرَثُ الْمُسْلِمِ مِنْهُمَا، وَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الْأَسْوَدِ، أَنَّ رَجُلًا حَدَّثَهُ، أَمْعَاذًا حَدَّثَهُ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "الْإِسْلَامُ يُزِيدُ وَلَا يَنْقُصُ قَوْرَثُ الْمُسْلِمِ".

دبریده رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چې یحیی بن یعمرتو دوه روڼو جگړه راوړله په دې دواړو کښې یو مسلمان وو او بل یهودي وو هغه مسلمان ته د یهودي میراث ورکړو او وني فرمائیل ماته ابوالاسود حدیث بیان کړې دې او هغه دیوکس نه اوریدلی دی او هغه دمعاذ بن جبل رضی الله عنه نه اوریدلی دی او هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه اوریدلي دي چې فرمائیل ئې په مسلمانانو کښې زیاتوالی راځي او کموالی نه راځي اوبیا ئې مسلمان ته د یهودي میراث ورکړو.

(ان معاذًا قال سمعت رسول الله يقول الاسلام يزيد ولا ينقص)

د معاذ رضی الله عنه مسلک او دا حدیث او په دې باندې کلام اوس نزدې تیر شوې دې، جمهور علماء وائی چې دا حدیث او هم دغه شان، (الاسلام يعلو ولا يعلى عليه) د دې تعلق د اسلام د عزت او غلبې سره دې، میراث سره د دې هیڅ تعلق نشته.

[۲۹۱۳] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي حَكِيمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَرِيدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، عَنْ أَبِي الْأَسْوَدِ الدِّبَلِيِّ، أَنَّ مُعَاذًا أَتَى بِمِيرَاثِ يَهُودِيٍّ وَأَرْتُهُ مُسْلِمٌ بِمَعْنَاةٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د ابوالاسود نه روایت دې چې معاذ رضی الله عنه ته د یو یهودي میراث راوړلې شو او دورانت مطعي مسلمان وو او د دې نه پس ئې هغه حدیث بیان کړو کوم چې بره ذکر شو.

بَابُ فِي مَنْ أَسْلَمَ عَلَى مِيرَاثِ

که چرې د میراث د تقسیم نه مخکښې کوم وارث اسلام قبول کړی

شرح الترجمة:

یعنی کوم انسان چې د میراث د تقسیم په موقع باندې اسلام راوړی، یعنی د مورث د مرګ نه پس.

۱: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۱۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵/۲۳۰، ۲۳۶) (ضعيف)

۲: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۱۸) (ضعيف)

خان پوهول پکار دی چه دا مسئله اوس تیره شوه چه د تورات دپاره اتحاد د ملت شرط دې د اختلاف ملت په وخت میراث نه جاری کیږی په دې سلسله کښې خان پوهول پکار دی چه اتحاد ملت هغه مفید او معتبر دې کوم چه د مورث د مرگ په وخت وی، که روستو اتحاد بیا موندلې شی نو هغه مفید او معتبر نه دې. هم دغه شان اختلاف ملت هغه مضر دې چه د مورث د مرگ په وخت وی او که د اختلاف تحقق د مورث د مرگ نه پس وی نو هغه مضر نه دې، اوس په هر یو باندي په مثال سره خان پوهه کړی د اول صورت مثال به دا وی چه د یو مسلمان وفات اوشو او حال دا چه د هغه یو خوښی مسلمان وو او یو کافر، د پلار د وفات نه پس د میراث د تقسیم نه مخکښې هغه کافر خوی هم اسلام قبول کړو نو دلته دا اسلام راوړونکې خوښې به وارث نه وی، چه د مخکښې نه مسلمان دې صرف هم هغه به وارث وی، او د دویم صورت مثال دا دې د یو کافر انتقال اوشو او حال دا چه د هغه یو خوښی مسلمان وو او یو کافر، د میراث د تقسیم نه مخکښې هغه کافر خوښی هم اسلام راوړې دې، اوس به دا اسلام قبلونکې وارث وی، او څوک چه د مخکښې نه مسلمان وو د هغه د وراثت خو بالکل سوال نه پیدا کیږی.

[۲۹۱۴] () حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي الشَّعَثَاءِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كُلُّ قَسْمٍ قَسِمَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَهُوَ عَلَى مَا قَسِمَ لَهُ، وَكُلُّ قَسْمٍ أَدْرَكَهُ الْإِسْلَامُ فَهُوَ عَلَى قَسْمِ الْإِسْلَامِ".

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې چه نبی کریم صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی د جاهلیت په زمانه کښې چه به کوم تقسیم کیدو نو په اسلام کښې به هم ترکه په هم دغه حالت باندي قائم وي او د اسلام نه پس به هم ترکه د اسلام د ضابطې مطابق تقسیم کیږی.

﴿ عن ابن عباس رضي الله عنه قال قال النبي صلی الله علیه و آله كل قسم قسم في الجاهلية فهو على ما قسم، وكل قسم ادركه الاسلام فانه على قسم الاسلام ﴾

یعنی د کوم میراث تقسیم چه د اسلام نه مخکښې د جاهلیت په زمانه کښې شوې دې هغه به هم هغه شان باقی ساتلې شی، په هغې کښې به مداخلت نه شی کولې او کوم تقسیم چه د یو میراث وغیره په اسلام کښې د داخلیدو نه پس اوشی هغه به د اسلامی قانون مطابق کولې شی او هغه اسلامی قانون هم هغه دې چه کوم پورته ذکر شو چه د اتحاد د ملت په صورت کښې توارث وی د اختلاف د ملت په صورت کښې نه.
والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى.

بَابُ فِي الْوَلَاءِ

د آزاد کړې شوی غلام د ترکې بیان

د ولاء قسمونه سره د اختلاف د علماء گرامو:

دلته مصنف رضي الله عنه د ولاء په سلسله کښې دوه بابونه ذکر کړې دی یو دا او دویم د دې نه پس ﴿باب في الرجل يسلم على يدي الرجل﴾ د دې نه پس یو دریم باب د دوه بابونو د فصل سره را

روان دې (باب نسخ میراث العقد بمیراث الرحم) د دې درې وارو بابونو تعلق د ولاء سره دې ځکه چه د ولاء درې قسمونه دی، ولاء العتاقه، ولاء الاسلام، ولاء الموالاة، په رومیې باب کښې رومیې قسم ذکر کړې شوی دې او په دویم باب کښې قسم ثانی او په دریم باب کښې قسم ثالث، قسم اول یعنی ولاء العتق دا خو بالاتفاق معتبر او ثابت دې، او قسم ثانی یعنی ولاء الاسلام دا د جمهور علماء کرامو چه په هغوی کښې څلور امامان هم دی په نزد معتبر نه دې، د بعض نور علماء کرامو لکه ابراهیم نخعی رضی اللہ عنہ، سعید بن المسیب په نزد معتبر دې، او دریم قسم ولاء الموالاة دا د احناف په نزد معتبر دې، د جمهور په نزد د ولاء دا قسم منسوخ دې.

[۲۹۱۵] حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى مَالِكٍ وَأَنَا حَاضِرٌ، قَالَ مَالِكٌ: عَرَضَ عَلَيَّ نَافِعٌ عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ جَارِيَةً تَعْتَقُهَا، فَقَالَ أَهْلُهَا: نَبِّعُكَهَا عَلَيَّ أَنْ وَلَاءَهَا لَنَا، فَذَكَرْتُ عَائِشَةَ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ "لَا يَمْنَعُكَ ذَلِكَ فَإِنَّ الْوَلَاءَ لِمَنْ أَعْتَقَ".

دا بن عمر نه روایت دې فرمائی چه ام المومنین عائشې رضی اللہ عنہا غوښتل چه یوه وینځه واخلي او ازاده ئې کړي نو د وینځي مالکانو او وئیل مونږ به درباندي وینځه په دې شرط خرڅه کړو چه ددې د ولاحق به مونږ ته حاصل وي ام المومنین نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ددې ذکر او کړو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل د وینځي داخستلو اراده مه بدلوه ځکه چه د وینځي د ولاحق هغه چاته حاصل وي چه څوک ئې ازاده کړي.

د بريرة رضی اللہ عنہا د شراء والا حديث باندي کلام :

قوله: (عن ابن عمر رضی اللہ عنہما ان عائشة رضی اللہ عنہا ارادت ان تشتري جارية تعتقها فقال اهلها نبيعها علي ان ولاءها لنا الخ): د عائشې رضی اللہ عنہا دا حديث د شراء بريرة په سلسله کښې وړاندې په کتاب العتق کښې (باب بيع المكاتب اذا فسخت المكاتبه) د لاندي تفصيل سره راروان دې په دې باندي به کلام هم هلته راشی انشاء الله تعالى..... په دې حديث کښې دی (الولاء لمن اعتق) چه مسئله اجماعی ده او مطلب ئې دا دې چه که د یو سړی آزاد کړې شوي غلام مړ شی او هغه خپل څوک وارث پرې نږدی نو بیا په دې صورت کښې د هغه د میراث مستحق به د هغه آزاد کړې وي غلام وي په دې واقعه کښې یو مشهور اشکال دا کولې شی چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم عائشې رضی اللہ عنہا ته اجازت ولې ورکړو په شراء د بريرة رضی اللہ عنہا کښې د ولاء شرط چه هغه به د بائع دپاره وي لگول ځکه چه دا شرط بالا جماع جائز دې؟ جواب دا دې چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم داسې زجرا او فرمائیل یعنی د دې شرط اجازت د دې د باقی پریخودلو دپاره رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه وو ورکړې بلکه د دې ابطال مقصود وو دې وجې نه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د دې نه پس خطبه ورکړې وه چه په خلقو باندي څه چل شوي دې چه په بیع کښې د ولاء شرط لگوي، د خلقو شرط لگول باطل دی (وان كان مائة شرط، شرط الله احق) دا زیادت په روایت مفصله

۱: صحيح البخاري للبيوع ۷۳ (۲۱۶۹)، والمكاتب ۲ (۲۵۶۲)، والفرائض ۱۹ (۶۷۵۲)، صحيح مسلم للعتق ۲ (۱۵۰۴)، سنن النسائي للبيوع ۷۶ (۴۶۴۸)، (تحفة الأشراف: ۸۳۳۴)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للعتق ۱۰ (۱۸)، مسند احمد (۲۸۲، ۱۱۳، ۱۵۳، ۱۵۶) (صحيح)

کښي دي، دلته روايت مختصر دي.

[۲۹۱۶] (۱) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكَيْعُ بْنُ الْحَزَّاحِ، عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الْأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْطَى الثَّمَنَ وَوَلِيَ النِّعْمَةَ".

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دي فرماني چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائيلى دي دولا حق به هغه چاته وركولې شى خوك چه قيمت خريد اداكړي او په غلام باندي احسان او كړي يعنى ازاد ئي كړي.

[۲۹۱۷] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو بْنِ أَبِي الْحَجَّاجِ أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ حُسَيْنِ الْمُهَلَّبِيِّ، عَنْ عَمْرٍو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ رِثَابَ بْنَ حُدَيْفَةَ تَزَوَّجَ امْرَأَةً فَوَلَدَتْ لَهُ ثَلَاثَةَ غِلْمَةٍ، فَمَاتَتْ أُمُّهُمُ فَوَرَّثُوهَا رِبَاعِيًّا، وَوَلَاءٌ مَوْلَاهَا، وَكَانَ عَمْرٍو بْنُ الْعَاصِ عَصْبَةَ بَنِيهَا فَأَخْرَجَهُمْ إِلَى الشَّامِ فَمَاتُوا، فَقَدَّمَ عَمْرٍو بْنُ الْعَاصِ وَمَاتَ مَوْلَى هَذَا وَتَرَكَ مَالًا لَهُ فَخَاصَمَهُ إِخْوَتُهَا إِلَى عَمْرٍو بْنِ الْخَطَّابِ، فَقَالَ عَمْرٍو قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا أَحْرَزَ الْوَلَدُ أَوْ الْوَالِدُ فَهُوَ لِعَصْبَتِهِ مَنْ كَانَ"، قَالَ: فَكَتَبَ لَهُ كِتَابًا فِيهِ شَهَادَةٌ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، وَرَجُلٌ آخَرَ، فَلَمَّا اسْتَخْلَفَ عَبْدُ الْمَلِكِ اخْتَصَمُوا إِلَى هِشَامِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ، أَوْ إِلَى إِسْمَاعِيلَ بْنِ هِشَامٍ فَرَفَعَهُمْ إِلَى عَبْدِ الْمَلِكِ، فَقَالَ: هَذَا مِنَ الْقَضَاءِ الَّذِي مَا كُنْتُ أَرَاهُ، قَالَ: فَقَضَى لَنَا بِكِتَابِ عَمْرٍو بْنِ الْخَطَّابِ فَخُنَّ فِيهِ إِلَى السَّاعَةِ.

عمرو بن شعيب دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روايت کوي چه رثاب بن خديفه د يوې ښځې سره نکاح او کړه او درې هلکان ئې پيدا شو او مور ئې مړه شوه نو ددي ځامن دخپلې مور د کورونو او ددي د آزادو کړو غلامانو د ولاء وارثان شول او عمرو بن العاص نه ددي د ځامنو عصبه وو يعنى وارث وو ددي نه پس عمرو بن العاص نه ددي ځامن شام ته اوليرل او هغوى هلته مړه شول عمرو بن العاص راغې او په دې دوران کښي دهغې ښځې يو ازاد کړي شوې غلام مړ شو او مال ئې پاتي شو نو ددي ښځې ورور ددي د ځامنو دپاره عمر فاروق رضي الله عنه ته جگړه يوړله عمر فاروق رضي الله عنه او وئيل نبی صلی الله علیه و آله فرمائيلى دي کله چه اولاد يا پلار ميراث پريريدي نو هغه به دهغه وارثانوته وركولې شى او بيا عمر فاروق په دې سلسله کښي يوه فيصله اوليکله او په دې باندي ئې عبدالرحمن بن عوف رضي الله عنه اوزيد بن ثابت رضي الله عنه اود يوبل سرې گواهي ئې پرې اوليکله، کله چه عبدالملک بن مروان خليفه شو نو بيا دغه خلقو جگړه اوکړه، دې خلقو خپله مقدمه هشام بن اسماعيل يا اسماعيل بن هشام ته يوړله، هغوى دا مقدمه عبدالملک ته اوليرله، عبدالملک او وئيل: دا فيصله خو داسې معلوميري لکه چه دا ما ليدلې وي، راوى وائى بيا عبدالملک د عمر بن خطاب رضي الله عنه د فيصلې مطابق فيصله وركړه او ولاء تر اوسه پورې مونږ سره دي.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذرى واخرجه الترمذى ايضا فى آخر كتاب

الوصايا مفصلا وفى بيع الولاء وهبة مختصرا.

(۱) صحيح البخاري/الفرائض ۲۰ (۶۷۶۰)، سنن النسائي/الطلاق ۳۰ (۳۴۷۹)، (تحفة الأشراف: ۱۷۴۳۲، ۱۵۹۹۱)، وقد أخرج: صحيح مسلم/العتق ۲۰ (۱۵۰۴)، سنن الترمذي/اليبوع ۳۳ (۲۱۲۶)، مسند احمد (۱/۱۷۰، ۱۸۶، ۱۸۹) (صحيح)
(۲) سنن ابن ماجه/الفرائض ۷ (۲۷۳۲)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۸۱، ۱۸۵۹۸)، وقد أخرج: مسند احمد (۱/۲۷) (حسن)

شرح الحديث والكلام عليه باليسط:

قوله: (عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده ان رباب بن حذيفة تزوج امرأة فولدت له ثلاثة غلمة فماتت امهم فورثوها رباعها وولاء مواليتها) دا حديث د توريث الولاء په سلسله كښې دې، د دې مضمون دا دې چه يو سړی چه د هغه نوم رباب بن حذيفة دې هغه يوې زنانه سره واده او كړو چه د هغې نوم ام وائل بنت معمر دې، د هغه د هغې زنانه نه درې ځامن پيدا شو څو ورځې پس د هغوی د مور انتقال او شو او هغه هلکان د خپلې مور د رباع یعنی كورونو او جائداد وغيره او د هغې د موالی د ولاء وارثان شو (دې ځانې پورې خو په دې روایت باندې هيڅ اشكال نشته، مسئله صفا ده اوس وړاندې واورئ) وړاندې په روایت كښې دا دی چه عمرو بن العاص رضي الله عنه د دې هلکانو عصبه وو (په روایت كښې د رشتې هيڅ تعين نشته ممكنه ده چه عم يا ابن العم وي) نو دې عمرو بن العاص رضي الله عنه دا هلکان خپل ځان سره په سفر باندې شام ته بوتلل، هلته په دغه زمانه كښې طاعون خور شوې وو یعنی طاعون عمواس، كوم چه په تاريخ كښې مشهور دې او د عمر رضي الله عنه په زمانه كښې وو، دا درې واړه هلکان هم په دې طاعون كښې ختم شو، عمرو بن العاص رضي الله عنه چه كله د سفر نه را واپس شو نو په واپسې باندې هغوی ته معلومه شوه چه د هغه زنانه یعنی ام وائل يو مولى یعنی آزاد كړې شوې غلام بل مړ دې او هغه مال هم پريخودلې دې، اوس په هغه ولاء كښې د ام وائل د روڼو او د عمرو بن العاص رضي الله عنه اختلاف پيدا شو، یعنی عمرو بن العاص رضي الله عنه مدعى وو چه دا ولاء ماته ملاويدل پكار دى او د ام وائل روڼو وئيل چه د دې مستحقين مونږ يو څكه چه مونږ د دې زنانه عصبه يو چه د چا د غلام دا ولاء ده، او د عمرو بن العاص رضي الله عنه وينا دا وه چه زه د دې زنانه د ځامنو عصبه يم كه هغه ځامن ژوندی وي نو د دې به هغوی وارثان وي نو اوس چونكه هغوی نشته نو د هغه ځامنو د عصبه كيدو په حيثيت سره زما وارث كيدل پكار دى، چونكه دا واقعه د عمر رضي الله عنه د خلاف د زمانې ده په دې وجه دا مقدمه هلته پيش شوه، عمر رضي الله عنه د مسئلې په صورت باندې د پوهيدو نه پس دا او فرمائيل (قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما احرز الولد او الوالد فهو لعصبته من كان) یعنی د مړې څوئي يا پلار چه څه هم په تركه كښې حاصل كړى هغه به د هغه نه پس د هغه د عصبه دپاره وي كه هغه عصبه هر څوك وي، دلته د دې حديث په رنرا كښې د عصبه الولد مصداق عمرو بن العاص رضي الله عنه جوړيدو پس عمر رضي الله عنه د عمرو بن العاص رضي الله عنه په حق كښې فيصله او فرمائيله او خپله فيصله ئې اوليكله چه په هغې كښې د دوه كسانو یعنی عبدالرحمن بن عوف او زيد بن ثابت رضي الله عنه او د يو دريم كس شهادت هم وو.

(فلما استخلف عبدالملك اختصموا الى هشام بن اسماعيل فرفعه الى عبدالملك)

چونكه اخوة المرأة ته د عمر رضي الله عنه په فيصله باندې تسلى نه وه شوې اگر چه خاموش شوې وو په دې وجه كله چه د عبدالملك بن مروان زمانه راغله نو هغه وخت د مدينې طبيبي امير هشام بن اسماعيل وو لهذا دې اخوة المرأة دا خپله معامله هغه ته يوره، هشام بن اسماعيل دا قضيه د عبدالملك مخې ته پيش كړه، عبدالملك په دې فيصله باندې د

خان پوهولو نه پس دا اووي: (هذا من القضاء الذي ما كنت اراه) په بذل کښې دا ليکلي دي چه په دې لفظ ما کښې دوه احتمالات دي يو دا چه زانده وي او يا نافيه، د زانده کيدو په صورت کښې خو به ئې مطلب دا وي چه زما رائي هم د عمر رضي الله عنه د هم دهغه فيصلې مطابق ده او د نافيه کيدو په صورت کښې به ئې مطلب دا وي چه عبدالملک دا وائي چه په دې فيصله کښې اگر چه زما رائي دا نه ده خو چونکه د عمر فاورق رضي الله عنه کړې شوې فيصله ده په دې وجه زه هم دا برقرار ساتم.

(فنحن فيه الى الساعة) د نحن مصداق د عمرو بن العاص رضي الله عنه اولاد چه مونږ تر نن ورځې پورې په دې فيصله باندې يو، دا روايت په تفصيل سره په سنن ابن ماجه کښې دې لکه چه په بذل کښې دا نقل کړې شوې د هغې په کتلو باندې هم دا معلومېږي چه عبدالملک د عمر رضي الله عنه د فيصلې موافقت او فرمائيلو، لهذا په (ما كنت اراه) کښې ما نافيه نه ده بلکه موصوله يا زانده ده.

د دې نه پس خان پوهه کړې چه دلته په روايت کښې دي (فقدم عمرو بن العاص رضي الله عنه ومات مولى لها) دا جمله (ومات مولى لها) تاويل ته محتاج ده (اي وقد مات مولى لها) (او دا جمله حالیه ده، يعنى عمرو بن العاص رضي الله عنه چه کله د ملک شام نه واپس راغلو نو دلته راتلو سره ورته معلومه شوه چه د هغې زنانه يو غلام مړ شوې دې يعنى د هغه هلکانو په ژوند کښ، او دا مطلب ئې نه دې چه د عمرو بن العاص رضي الله عنه د راتلو نه پس د هغه زنانه د يو ازاد کړې شوى غلام وفات او شو، او دا تاويل په دې وجه ضرورى دې چه د عمر رضي الله عنه کوم استدلال چه په دې مقام باندې د (ما احرز الولد) نه دې هغه صحيح شى او په دې واقعي باندې منطبق شى ځکه چه ظاهره ده احراز ولد به هم د هغه په حيات کښې وي نه پس د وفات نه، دا اشکال او جواب د ابوداؤد په دې روايت باندې په (تذكرة الرشيد) کښې ذکر شوې دې، حضرت گنگوهى رضي الله عنه نه دا سوال يو عالم کړې وو حضرت د دې جواب دا ارشاد او فرمائيلو کوم چه پورته ذکر شو.

د دې نه پس خان پوهه کړې چه د عمر رضي الله عنه د دې فيصلې حاصل توريث الولاء دې يعنى دا چه که په ولاء کښې هم ميراث جارى کيږي څنگه چه په نورو امورو کښې جارى کيږي خو جمهور علماء کرام چه په کښې څلور امامان هم دي د دې قائل نه دي نعم فى رواية عن احمد وكذا روى عن علي دون الخلفاء الثلاثة، لکه چه د ابوداؤد په يو نسخه کښې دي کومه چه د بذل المجهود په حاشية باندې دي د هغه نسخې عبارت دا دې: الناس يتهمون عمرو بن شعيب فى هذا الحديث، قال ابوداؤد: وروى عن ابى بكر وعمر وعثمان خلاف هذا الحديث الا انه روى عن علي بن ابى طالب بمثل هذا، د جمهور علماء کرامو استدلال د دې حديث نه دې، (الولاء لحمه كلحمه النسب لا يباع ولا يورث) يعنى ولاء خو يو قسم نسب دې او د نسب بيع يا توريث لږ وي بلکه د جمهورو مسلک دا دې چه ولاء د مولى دپاره وي او

که هغه نه وی نو بیا اقرب العصبه الی المولی پشان دې، د نورو مالونو دپاره په دې کښې باقاعده میراث نه جاری کیږي چه په ټولو وارثانو کښې تقسیم شی، د امام ابو داؤد رضی الله عنه د جواب حاصل کوم چه مونږ د حاشیې نه نقل کړې دې. دا دې چه دا حدیث ضعیف دې بلکه ثابت نه دې ځکه چه دا د عمرو بن شعیب عن ابیه عن جدّه په سند سره دې چه په هغې باندي کلام مشهور دې، او دویم په دې وجه هم چه دا د یو بل مشهور او صحیح حدیث خلاف دې یعنی **(الولاء لمن اعتق)** خود حضرت گنگوهی رضی الله عنه په بعض تقاریرو کښې دا دی چه د عمر رضی الله عنه په حدیث کښې چه دا ذکر کړې شوې دی **(ما احرز الولد)** نو د احراز تعلق خود ترکی سره وی د ولاء سره د هغې تعلق نه شی کیدې **(اذا هو لحمه کلحمة النسب فلا يمكن احرازه مثل النسب)** او وراثت جاری کیږي په مال کښې نه په نسب کښې، لهذا دا به وئیلې شی چه د عمر رضی الله عنه د فیصلې تعلق د رباع وغیره مالونو سره دې د ولاء سره نه دې آه..... قلت لکن فیہ ما فیہ.... دا حدیث ماته په سبق کښې ډیر گران معلوم شو الحمد لله چه حل شو. والحدیث اخرجه النسائی وابن ماجه، واخرجه النسائی ایضا مرسلا، قال المنذرى.

باب فِي الرَّجُلِ يُسَلِّمُ عَلَى يَدَيْ الرَّجُلِ

بابه څوک چه د بل مسلمان په لاس مسلمان شی نو هغه به دده وارث وی

[۲۹۱۸] (۱) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ مَوْهَبِ الرَّمْلِيِّ، وَهَشَامُ بْنُ عَمَّارٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا يَحْيَى، قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَهُوَ ابْنُ حَمَزَةَ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَوْهَبٍ، يُحَدِّثُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ قَبِيصَةَ بِنْتُ دُؤَيْبٍ، قَالَتْ هَشَامٌ، عَنْ تَمِيمِ الدَّارِمِيِّ، أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَقَالَ يَزِيدُ: إِنَّ تَمِيمًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا السُّنَّةُ فِي الرَّجُلِ يُسَلِّمُ عَلَى يَدَيْ الرَّجُلِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ؟ قَالَ: "هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِمَحْيَاةٍ وَمَمَاتِهِ".

تمیم داری رضی الله عنه وائی چه ما عرض او کړو، ای دالله رسوله صلی الله علیه و آله دهغه سرې باره کښې د شریعت څه حکم دې چا چه د یو مسلمان سرې په لاس باندي ایمان راوړلې وی؟ نبی کریم صلی الله علیه و آله او فرمائیل: دغه سرې د نورو په نسبت دهغه مرگ او ژوند ته زیات نزدې دې (که دهغه بل څوک وارث نه وی نو هم دې به ئې وارث وی).

(ان تمیما رضی الله تعالی عنه قال یا رسول الله صلی الله علیه و آله ما السنة فی الرجل یسلم علی یدی

الرجل؟ قال هو اولی الناس بمحیاه ومماتیه)

شرح الحدیث والكلام علیه من حیث الفقه:

یعنی د رسول الله صلی الله علیه و آله نه تپوس او کړې شو چه د شریعت فیصله د هغه انسان په باره کښې څه ده چه د یو مسلمان په لاس باندي اسلام قبول کړی؟ (بنکاره خبره ده چه د هغه لوئې احسان دې په دې نوي مسلمان شوی باندي پس وړاندي فرمائی چه) هغه یعنی د کوم سرې په لاس باندي چه اسلام راوړې شو په ټولو خلقو کښې زیات مستحق دې د دې نوي مسلمان شوی په ژوند کښې هم او د هغه د مر کیدو نه پس هم، چه هر کله په ټولو انسانانو

(۱) سنن الترمذی/الفرائض ۲۰ (۲۱۱۲)، سنن ابن ماجه/الفرائض ۱۸ (۲۷۵۲)، (تحفة الأشراف: ۲۰۵۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۲/۴، ۱۰۳)، سنن الدارمی/الفرائض ۳۴ (۳۰۷۶) (حسن صحیح)

کښې د ټولو نه زیات هم هغه اولی او احق دی د هغه نوی مسلمان شوی نو د هغه ولاء به هم د هغه دپاره وی لکه د آزاد کړې شوی غلام ولاء چه د معتق دپاره وی.

دا حدیث چه کوم علماء کرام د ولاء الاسلام قائل دی د هغوی دلیل دی لکه عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه او سعید بن المسیب رضی الله عنه وغیره کما تقدم فی مبداء الباب او د جمهورو استدلال د مشهور حدیث «الولاء لمن اعتق» نه دی چه متفق علیه دی ځکه چه په هغه حدیث کښې په حصر سره بیان کړې شوی ده د ولاء د معتق دپاره کیدل، معلومه شوه د ولاء سبب صرف عتق دی اسلام یا بل څه نه دی، او د حدیث الباب جواب دا دی چه هغه ضعیف دی، امام ترمذی رضی الله عنه هم په دې باندې کلام کړې دی او نورو محدثینو هم، په دې کښې یو روای عبدالعزیز بن عمر دی هغه ضعیف دی دغه شان ابن وهب راوی غیر معروف دی، په خلاف د جمهور علماء کرامو د دلیل چه هغه متفق علیه حدیث دی، او دویم جواب د دی حدیث دا ورکړې شوی دی چه دا منسوخ دی، کیدې شی چه په شروع د اسلام کښې رسول الله صلی الله علیه و آله فرماتیلې وی، ځکه چه په ابتداء د اسلام کښې د اسلام او نصرت په بنیاد باندې توارث کیدلو کوم چه روستو منسوخ شو، بعض شارحانو د احنافو مذهب هم د دی حدیث موافق لیکلې دی چه احناف هم د ولاء الاسلام قائل دی، خو دا نقل مطلقاً صحیح نه دی خو که د اسلام سره موالاته او محالفه هم مقترن شی نو امر اخر دی په دې صورت کښې به زمونږ په نزد معتبر دا وی او په دې صورت کښې د هغه دپاره ولاء وی، ځکه چه احناف د ولاء الموالاته قائل دی چه د هغې جمهور قائل نه دی کما تقدم من قبل ذلك..... بنه ځان پوهه کړئ کذا قال الشيخ فی البذل. والحديث أخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

باب فی بیع الولاء

باب: د ولاء (میراث) خرڅولو بیان

[۲۹۱۹] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: "نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْوَلَاءِ وَعَنْ هَبْتِهِ".

عبدالله بن عمر رضی الله عنه وائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله د ولاء خرڅولو او د دې د هبه کولو نه منع فرماتیلې ده.

قوله: نهی رسول الله صلی الله علیه و آله عن بیع الولاء وعن هبته :

شرح الحدیث:

په زمانه د جاهلیت کښې به عربو د ولاء بیع کوله او د هغې به ئې اجرت اخستلو، اسلام چه راغلو نو د دې نه ئې منع او کره ځکه چه ولاء څه مال نه دی چه د هغې بیع او کړې شی بلکه دا د حقوقو نه یو حق دی فلا یرد علیه البیع (بذل) یعنی ولاء د استحقاق ارث نوم دی یعنی د

۱: صحیح البخاری/العتق ۱۰ (۲۵۳۵)، الفرائض ۲۱ (۶۷۵۶)، صحیح مسلم/العتق ۳ (۱۵۰۶)، سنن الترمذی/البیوع ۲۰ (۱۳۳۶)، الولاء ۱ (۲۱۲۶)، سنن النسائی/البیوع ۸۵ (۴۶۶۳)، (تحفة الأشراف: ۷۱۸۹)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للعتق والولاء ۱۰ (۲۰)، سنن ابن ماجه للفرائض ۱۵ (۲۷۴۷) مسند احمد (۱۰۷، ۷۹، ۹۷۲)، سنن الدارمی/البیوع ۳۶ (۲۶۱۴) (صحیح)

معتق (آزاد کړې شوې غلام) د میراث استحقاق کوم چه معتق ته حاصل وی د عتق په وجه، عتق یو احسان عظیم دې د مولی د طرف نه په خپل غلام باندې نو د دې په صله کښې شریعت معتق لره د معتق د میراث حق ورکړو چه د هغه د مرگ نه پس هغه د هغه مالک ته ملاؤ شی، لکه چه نسب سبب د استحقاق وی پس څنگه چه د نسب نه حق د میراث حاصلیږی هم دغه شان د عتق نه د میراث حق حاصلیږی چه د هغې نه په ولاء سره تعبیر کولې شی او ښکاره خبره ده بیع او هبه وغیره کیږی د جواهر و نه د معانی او اعراضو، اصل معنی خو د ولاء هم دا ده، هسې د دې اطلاق او استعمال په میراث المعتق باندې کیږی. والله تعالی اعلم وهذا غاية تسهيل لهذا المقام والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى.

باب فی المولود یتهل ثم موت

که چرې یو ماشوم ژوندي پیدا شی او د چغې نه پس مړ شی؟

[۲۹۲۰] () حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ يَعْنِي ابْنَ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُسَيْطٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا اسْتَهَلَ الْمَوْلُودُ وَرِثٌ".

د ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی ماشوم چه کله د پيدا کيدونه پس آواز او کړي نو ده لره وارث گرځولې شي.

(عن ابی هريرة رضي الله عنه عن النبي صلی الله علیه و آله قال اذا استهل المولود ورث)

د استهللال اصل معنی خو د میاشت لیدو ده (رویه هلال) د دې نه پس د دې استعمال او شو په رفع الصوت یعنی چغه وهلو کښ، په دې مناسبت سره چه په رومیئ شپه باندې د میاشت په لیدو باندې خلق شور کوی چه میاشت اولیدې شوه، بیا د دې نه پس د دې استعمال د ژوند آثار او د ماشوم په ژرا کښې شروع شو هم دا دلته په حدیث کښې مراد دې.

حدیث الباب کښې اختلاف دائمة:

او د حدیث مطلب دا دې چه د ماشوم د پيدا کيدو نه پس که په هغه کښې د ژوند آثار بیا موندلې شو او په دې دوران کښې څوک نزدې خپلوان مړ شو نو مولود به د هغه وارث وی او که بیا نه موندلې شی نو نه به وی، د احنافو او شوافعو په نزد خو هم دغه شان ده چه صرف د ژوند د آثارو موجود کيدل کافی دی، وقال مالک رضي الله عنه واحمد رضي الله عنه بشرط الرضاع كذا في هامش البدل عن الشعراني.

دلته یوه بله مسئله ده او هغه ده د (صلوة علی الطفل) کومه چه په کتاب الجنائز کښې را روانه ده هغه دا چه په ماشوم باندې د مونخ کولو دپاره هم د ژوند آثار بیا موندل ضروری دی یا نه؟ دا مسئله مختلف فیه ده، د ائمه ثلاثه او جمهور په نزد خو هلته هم استهللال شرط دې، د امام احمد رضي الله عنه په دې کښې اختلاف دې د هغوی په نزد شرط نه دې، دلیل به د مسئلې په خپل مقام کښې راشی، دلته تبعاً راغلو.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۸۴۰) (صحیح)

بَابُ نَسَخِ مِيرَاثِ الْعَقْدِ بِمِيرَاثِ الرَّحِمِ

په رسته داری د وارث کیدو په بنا د اقرار په ذریعه وارث کیدل منسوخ شول

[۲۹۲۱] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ ثَابِتٍ، حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّحْوِيِّ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانَكُمْ فَأَتَوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ، كَانَ الرَّجُلُ يُحَالِفُ الرَّجُلَ لَيْسَ بَيْنَهُمَا نَسَبٌ فَبِرْثُ أَحَدِهِمَا الْآخَرُ، فَنَسَخَ ذَلِكَ الْأَنْفَالُ فَقَالَ تَعَالَى: وَأَوْلُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَى بِبَعْضٍ سُوْرَةُ الْأَنْفَالِ آيَةٌ ۵۰.

د ابن عباس رضي الله عنهما نه روایت دې فرمائی چه د الله تعالی دا قول: «والذين عاقدت أيمانكم فاتوهم نصيبهم» په تیره زمانه کښي به خلقو یو بل ته قسم وکړو او ددوی په مینځ کښي به رسته داري نه وه او یو به د بل وارث جوړ شو نو دا حکم د سورة انفال په دې ایت: «وأولو الأرحام بعضهم أولى ببعض» باندې منسوخ شو.

[۲۹۲۲] (۲) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا أَبُو سَامَةَ، حَدَّثَنِي إِدْرِيسُ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ مَصْرَفٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانَكُمْ فَأَتَوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ، قَالَ: كَانَ الْمُهَاجِرُونَ حِينَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ تَوَرَّثُوا الْأَنْصَارَ دُونَ ذَوِي رَحِمِهِمْ لِلْأَخُوَّةِ الَّتِي آخَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمْ، فَلَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِي مِمَّا تَرَكَ، قَالَ نَسَخْتَهَا وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانَكُمْ فَأَتَوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ سُوْرَةُ النِّسَاءِ آيَةٌ ۳۳، مِنَ النَّصْرِ وَالنَّصِيْحَةِ وَالرِّقَادَةِ وَيُوصِي لَهُ وَقَدْ ذَهَبَ الْبِيرَاثُ.

د ابن عباس نه د الله پاک ددې قول: قوله «والذين عاقدت أيمانكم فاتوهم نصيبهم» متعلق منقول دي چه كله مهاجرين مديني ته راغلل نو انصار به ددوی وارثان کيدل او دوی به دانصارو وارثان کيدل علاوه درسته داری په وجه دهغه اخوت کوم چه نبي صلی الله علیه و آله په دوی کښي قائم کړي وو هر کله چه دا ای ۳۳ نازل شو «ولكل جعلنا موالی مما ترك» نازل نو پورتنی ایت منسوخ شو.

شرح الحديث وايضاح المسئلة :

دا د ولاء د سلسلې دريم باب دې چه د هغې ذکر په شروع کښي راغلي دي، د عقد نه مراد عقد بالموالاة چه هغې ته ولاء الموالاة هم وئيلې شي، د مصنف رحمته الله عليه دا ترجمه د ائمه ثلاثه د مسلک مطابق ده کوم چه دا وائی چه د عقد موالاة په ذریعه استحقات د ارث اوس پاتي نه شو بلکه منسوخ شوې دي د ميراث د رحم په ذریعه، د رحم نه مراد رسته دار او خپلوان دي، يعنی د خپلوانو ميراث د عقد موالاة ميراث منسوخ کړو د ناسخ او منسوخ دواړو بيان په حديث الباب کښي ذکر شوې دي، پس رومبي آیت کریمه «والذين عاقدت ايمانكم» کښي د ميراث موالاة ثبوت دې لکه چه ابن عباس رضي الله عنهما فرمائی چه په شروع کښي به داسې کيدل چه يو سړی د يو پردتي سره مخالفت يعنی د دوستی عهد او کړو بغير د نسبي تعلق نه او بيا به د هغه عقد د وجې به هغوی د يو بل وارثان وو لکه چه د مهاجرينو او انصارو

۱: تقرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۲۶۱) (حسن صحيح)

۲: صحيح البخاري للكفالة ۲ (۲۲۹۲)، تفسير سورة النساء ۷ (۲۲۹۲)، الفرائض ۱۶ (۲۷۴۷)، (تحفة الأشراف: ۵۵۲۳) (صحيح)

ترمينځه داسې شوې وو، ابن عباس رضي الله عنهما فرمائي چه دې آيت لره د سورة الانفال د آيت كريمه **(والوا الارحام بعضهم اولى ببعض)** سره منسوخ كړې شو او د ابن عباس رضي الله عنهما د دې نه روستو راتلونكي روايت كښې بعينه هم دا مضمون دې چه كله مهاجرين مدينه طيبي ته اورسيدل نو هغوی به د انصارو وارثان جوړيدل نه د هغوی خپلوان يعنی د انصارو وارثان به مهاجرين وو د خپلوانو په ځانې د خپلوانو د وارث كيدو، **(فلما نزلت هذه الاية... ولكل جعلنا موالى مما ترك... قال نسختها)** يعنی چه كله دا دويم آيت كريمه **(ولكل جعلنا موالى مما ترك)** نازل شو نو هغه رومبې آيت كريمه منسوخ شو، په دې عبارت كښې د نسخه فاعل دا آيت ثانيه يعنی **(ولكل جعلنا موالى)** دې او ضمير منصوب راجع دې آيت اولی ته، **(والذين عاقدت ايمانكم)** طرف ته، او دا جمله هم دلته پوره شوه د ناسخ او منسوخ دواړو بيان راغلو، بيا د دې نه روستو په دويم ځل چه كوم آيت او عبارت راځي، **(والذين عاقدت ايمانكم فاتوهم نصيبهم)** من النصر والنصيحة الخ... د دې نه مقصود د ابن عباس رضي الله عنهما دا بيان كول دی چه د دې آيت منسوخ كيدو نه پس اوس د دې آيت كريمه مفهوم چه په هغې باندي عمل كيدل پكار دی هغه صرف نصر ا دنصيحت باقى پاتې شو **(وقد ذهب الميراث)** يعنی د ميراث په باره كښې دا آيت كريمه نه دې منسوخ شوې صرف د ميراث په اعتبار سره منسوخ شوې دې د دې آيت د داسې وضاحت كولو ضرورت مونږ ته ځكه راغلو چه په بادى الرأى كښې عبارت داسې دې **(نسختها والذين عقدت ايمانكم)** يعنی په ظاهره دا معلوميری چه د نسخه فاعل **(والذين عاقدت ايمانكم)** دې او **(ها)** ضمير **(ولكل جعلنا)** طرف ته واپس كيږي، په دې صورت كښې مطلب بالكل برعكس كيږي، ښه ځان پوهه كړئ، د محنت او د غور كولو ضرورت دې بغير د هغې نه هيڅ نه حاصل كيږي، دا د ابن عباس رضي الله عنهما روايت او څه چه هغوی د نسخ په باره كښې فرمائيلې دی د ائمه ثلاثه موافق دی او د هغوی رائي هم دا ده. د دې خلاف احناف چه د ميراث العقد قائل دی هغوی وائي **(والذين عقدت ايمانكم)** د دې آيت كريمه دپاره دويم آيت **(والوا الارحام بعضهم اولى ببعض)** ناسخ نه دې بلکه دواړه آيتونه معمول بها دی فرق دا دې چه په شروع كښې به په عقد موالاته باندي ميراث جارى كيده او خپلوانو لره به وارث نه شو جوړولې، بيا روستو چه كله دا آيت نازل شو نو د هغې مطلب هغوی دا اخلى چه اقارب په توريث كښې مقدم وى په عقد موالاته باندي يعنی د هغوی په موجودگي كښې به مولى الموالاته وارث نه وى، او كه په ذوى الارحام كښې څوك نه وى نو هغه وخت به مولى الموالاته وارث وى، د ذوى الارحام نه مراد اقارب او رسته داردی.

هكذا ينبغي ان يفهم هذا المقام فانه من مزال الاقدام.....

والحديث اخرجه البخاري والنسائي، قاله المنذرى

[۲۹۲۳] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَعَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ يَحْيَى الْمَعْنَى، قَالَ أَحْمَدُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ دَاوُدَ بْنِ الْحَصِينِ، قَالَ: كُنْتُ أَقْرَأُ عَلَى أُمِّ سَعْدِ بِنْتِ الرَّبِيعِ، وَكَانَتْ يَتِيمَةً فِي حِجْرِ أَبِي بَكْرٍ، فَقَرَأْتُ وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانَكُمْ، فَقَالَتْ: لَا تَقْرَأُ. وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانَكُمْ. وَلَكِنْ وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانَكُمْ سُورَةَ النِّسَاءِ آيَةَ ۳۳، أَيْمَانُ نَزَلَتْ فِي أَبِي بَكْرٍ، وَابْنُهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ حِينَ أُنِيَ الْإِسْلَامَ، فَحَلَفَ أَبُو بَكْرٍ الْأَبُورَثَةَ، فَلَمَّا أَسْلَمَ أَمَرَ اللَّهُ تَعَالَى نَبِيَّهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ أَنْ يُؤْتِيَهُ نَصِيبَهُ، زَادَ عَبْدُ الْعَزِيزِ فَمَا أَسْلَمَ حَتَّى حُمِلَ عَلَى الْإِسْلَامِ بِالسَّيْفِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: مَنْ قَالَ عَاقَدَتْ جَعَلَهُ جِلْفًا، وَمَنْ قَالَ عَاقَدَتْ جَعَلَهُ خَالِفًا، وَالصَّوَابُ حَدِيثُ طَلْحَةَ عَاقَدَتْ.

دابوداود بن حصین نه روایت دې وائی چه مابه ام سعد بنت ربیع ته قران کریم لوستلو او هغه یتیمه وه دابوبکر په نگرانی کښې وه نومادا ایت کریمه «والذین عقدت ایمانکم» ولوستلو نوهغې او وئیل دا آیت کریمه مه لوله ځکه چه دادحکم په اعتبار سره منسوخ شوې دې دا ایت کریمه دابوبکر دځوی عبدالرحمن په باره کښې نازل شوې وو کله چه هغه داسلام قبلولونه انکار کړې وو نو ابوبکر رضی الله عنه قسم کړې وو چه زه به عبدالرحمن خپل وارث نه جوړوم کله چه هغه اسلام قبول کړو نوهغه ورته دحصې ورکولو حکم اوکړو، دعبدالعزيز په روایت کښې دا اضافه ده چه عبدالرحمن دتوري په زور مسلمان شوې وو.

مضمون الحديث:

قوله: «عن داود بن الحصين قال كنت اقرأ على ام سعد بنت الربيع وكانت يتيمة في حجر ابى بكر رضی الله عنه الخ»: داود بن الحصين وائی چه مابه د ام سعد رضی الله عنها سره قرآن لوستلو او دهغې نه به مې زده کولو او دا ام سعد رضی الله عنها د ابوبکر صدیق رضی الله عنه کره لویه شوې وه، چونکه دا یتیمه شوې وه په دې وجه ئې هم هلته پالنه بیا موندله، نو یوه ورځ چه کله ما د هغوی خوا کښې قراءت کولو نو ما دا ایت کریمه داسې اولوستلو «والذین عقدت ایمانکم» (د باب مفاعله نه) نوهغې زه اوتوکلم چه داسې مه لوله بلکه «والذین عقدت ایمانکم» اولوله یعنی د مجرد نه، او د دې وجه ئې دا بیان کړه چه ماته معلومه ده چه دا آیت کریمه د ابوبکر صدیق رضی الله عنه او د هغوی د ځوی عبدالرحمن رضی الله عنه په باره کښې نازل شوې دې چه کله په شروع کښې عبدالرحمن د اسلام راوړلو نه انکار اوکړو نو ابوبکر صدیق رضی الله عنه د هغوی نه ناراضه کیدو سره قسم خوړلې وو چه زه به تا نه وارث کوم، یعنی ته به په مونږ کښې د چا وارث هم نه ئې چه هر کله ته اسلام نه قبلوئ. هغه وائی چه کله عبدالرحمن رضی الله عنه اسلام قبول کړو نو رسول الله صلی الله علیه و آله ابوبکر صدیق رضی الله عنه ته حکم ورکړو چه هغه ته د هغه حصه ورکړه او وراثت ئې جوړ کړه. ام سعد رضی الله عنها دا وئیل غواړې چه په دې آیت کریمه کښې د عقد نه مراد حلف دې او قسم کونکې ځانله ابوبکر صدیق رضی الله عنه وو نو د هغه دپاره لفظ عقدت مناسب دې نه «عقدت» ځکه چه باب مفاعله خو شرکت او تعدد لره غواړې.

دا د ام سعد رضی الله عنها خبره په یو لحاظ سره خو په خپل ځانې باندي صحیح ده خو «عقدت» خو مستقل یو قراءت دې کیدې شی چه هغوی ته د دې علم نه وی وړاندي په روایت کښې دې

راوی وائی «فما اسلم حتى حمل على الاسلام بالسيف» راوی د عبد الرحمن رضی اللہ عنہ د اسلام حال بیانوی چه هغوی په شروع کښې خو اسلام نه وو قبول کړې په شروع کښې خو د مسلمانانو دشمن وو، د مسلمانانو خلاف ئې توره اوچته کړې وه (ځکه چه دې په جنگ بدر کښې د مشرکانو سره راغلې وو) «ثم هداه الله تعالى فاسلم قبيل الفتح» بیا الله پاک هغه ته د اسلام هدایت او کړو د فتح مکه نه مخکښ.

[۲۹۲۴] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ يَزِيدَ النَّخَعِيِّ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا سُورَةَ الْأَنْفَالِ آيَةٌ ۲۳، فَكَانَ الْأَعْرَابِيُّ لَا يَرِثُ الْمُهَاجِرَ، وَلَا يَرِثُهُ الْمُهَاجِرُ فَسَخَتْهَا فَقَالَ: وَأَوْلُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَى بِبَعْضٍ سُورَةَ الْأَنْفَالِ آيَةٌ ۷۵.

د ابن عباس رضی اللہ عنہ نه روایت دې چه دالله تعالی مخکښ حکم داوو: «والذين آمنوا وهاجروا»، «والذين آمنوا ولم يهاجروا» کله چه ددې نه پس دا ایت نازل شو: «وأولو الأرحام بعضهم أولى ببعض» نواولنی آیت منسوخ شو.

«عن ابن عباس رضی اللہ عنہما..... فكانت الاعرابی لا يرث المهاجر ولا يرثه المهاجر الخ»

اعرابی وائی غیر مهاجر ته یعنی کوم سرې چه اسلام قبلولو سره په خپل کلی کښې پاتې شی او هجرت اونکړی یعنی په شروع کښې د وراثت مدار په نسب باندې نه وو بلکه په هجرت او نصرت باندې وو په دې وجه مهاجر د انصاری او انصاری به د مهاجر بغیر د نسب نه وارث وو، او مهاجر به د غیر مهاجر سره د نسب نه وارث نه وو.

بَابُ فِي الْحَلْفِ

په څه خبره د قسم کولو بیان

دا حلف په کسرې دحاء او سکون دلام سره دې په معنی د مخالفت، پس په قاموس کښې دی، «والحلف بالكسر العهد بين القوم ام» او کوم حلف چه د قسم په معنی کښې دې هغه په قاموس کښې په درې طریقو سره لیکلې شوې دې حلف، حلف او حلف.

[۲۹۲۵] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشِيرٍ، وَابْنُ مُنْذِرٍ، وَأَبُو أُسَامَةَ، عَنْ زَكْرِيَّا، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا حِلْفَ فِي الْإِسْلَامِ وَأَيُّمَا حِلْفٍ كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ لَمْ يَزِدْهُ الْإِسْلَامُ إِلَّا شِدَّةً".

دزبیر بن مطعم رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی چه په اسلام کښې د کفر دزمانې قول لره اعتبار نشته او هریو قسم چه د جاهلیت په زمانه کښې شوې وي اسلام هغې لره نه زیاتوي مگر سختوالي.

شرح الحديث

قوله: «قال رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم لا حلف في الاسلام» د جاهلیت په زمانه کښې قتال او ظلمونو

(۱): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۶۲۶۲) (حسن صحيح)
 (۲): صحيح مسلم لمصائيل الصحابة ۵۰ (۲۵۳۰)، (تحفة الأشراف: ۳۱۸۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۳/۴) (صحيح)

باندې به خپل مینځ کښې قومونو معاهده کوله نو ښکاره خبره ده چه په اسلام کښې د دې گنجائش چرته دې، رسول الله ﷺ هم دا خبره فرمائی: ﴿ لا حلف فی الاسلام وایما حلف کان فی الجاهلیة لم یزده الاسلام الاشدة ﴾ په زمانه د جاهلیت کښې به کله په خیر او امور حقه باندې هم کیدو. په دې جمله کښې رسول الله ﷺ هم د هغې په باره کښې فرمائی چه داسې حلف اسلام نه دې مات کړې بلکه نور ئې هم مضبوط کړې دې کوم معنی چه د حلف مونږ په دویمه جمله کښې اخستلې ده که دا معنی په رومبې جمله کښې هم واخستلې شی نو دا هم کیدې شی او په دې صورت کښې به مطلب دا وی چه په اسلام کښې په امور حقه او خیر باندې مخالفت ته حاجت نشته بلکه اخوت اسلامی بذات خود کافی دې په امور خیر باندې د تعاون دپاره کذا قالوا... والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى

[۲۹۲۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَاصِمِ الْأَحْوَلِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: حَالَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ فِي دَارِنَا، فَقِيلَ لَهُ: أَلَيْسَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا حِلْفَ فِي الْإِسْلَامِ"، فَقَالَ: حَالَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ فِي دَارِنَا مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا.

دانس بن مالك بنه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ زمونږ په کور کښې دانصارو اود مهاجرینو په مینځ کښې ورور ولي قائم کړه په دې وخت کښې اووئیلې شول ایانې ﷺ نه دی فرمائیلې چه داسلام په زمانه کښې دجاهلیت قول لره اعتبار نشته هغه اووئیل نبی ﷺ زمونږ په کور کښې دمهاجرینو اودانصارو په مینځ کښې ورورولي قائم کړې وه دوه ځله یا درې ځله.

بَابُ فِي الْمَرْأَةِ تَرِثُ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا

بنځه د خاوند په دیت کښې حصه اخستلې شی

[۲۹۲۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، قَالَ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَقُولُ: الدِّيَةُ لِلْعَاقِلَةِ وَلَا تَرِثُ الْمَرْأَةُ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا شَيْئًا حَتَّى قَالَ لَهُ الضَّحَّاكُ بْنُ سُفْيَانَ كَتَبَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَوْرَثَ امْرَأَةً أَشِيمَ الضَّبَابِيِّ مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا فَرَجَعَ عُمَرُ، قَالَ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ بِهَذَا الْحَدِيثِ، عَنْ عُمَرَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، وَقَالَ فِيهِ، وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَعْمَلَهُ عَلَى الْأَعْرَابِ.

دسعید نه روایت دې چه عمر ^{رضی اللہ عنہ} به فرمائیل دیت دخاندان دخلقو دپاره وي او بنځه د خپل خاوند په دیت کښې وارثه نه شی جوریدن تردې چه ضحاک بن سفیان دده نه نقل کړی دی چه نبی ﷺ ماته لیکلې وو چه زه داشیم ضبابي بنځې لره دهغې. دخاوند په دیت کښې وارثه مقرر کړم کله چه عمر ^{رضی اللہ عنہ} دا خبره واوریده نو خپله را ئې بدل کړه. احمد بن صالح

۱: صحیح البخاري/الكفالة ۲ (۲۲۹۴)، والأدب ۶۷ (۶۰۸۳)، والاعتصام ۱۶ (۷۳۴۰)، صحیح مسلم للمصنفات الصحابة ۵۰ (۲۵۲۹)، (تحفة الأشراف: ۹۳۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۱۱/۳، ۱۴۵، ۲۸۱) (صحیح)

۲: سنن الترمذي/الديات ۱۹ (۱۴۱۵)، سنن ابن ماجه/الديات ۱۲ (۲۶۴۲)، (تحفة الأشراف: ۴۹۷۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۵۲/۳) (صحیح)

وئیلی دی چه دا حدیث عبد الرزاق دمعمر نه نقل کړې دې او هغه دزهري نه او هغه د سعید نه.
 (عن سعید قال کان عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ یقول : الدية للعاقلة ولا توث المرأة من دية زوجها شينا)
 یعنی په شروع کښې د عمر رضی اللہ عنہ دا رائي وه چه د مقتول دیت به د عصبه المقتول دپاره وی،
 او ښځه به د خپل خاوند د دیت وارثه نه وی، تردې چه د عمر رضی اللہ عنہ ته ضحاک بن سفیان رضی اللہ عنہ
 دا بیان نقل کړو چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم لیکل ماته راغلې وو «ورث امرأة اشیم الضبابی من دية
 زوجها» یعنی اشیم ضبابی چه کله قتل شوې وو نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ضحاک ته اولیکل چه د
 هغه په دیت کښې د هغه ښځه وارثه کړه، نو په دې باندې عمر رضی اللہ عنہ د خپلې مخکښې رائي نه
 رجوع اوکړه.

دا ضحاک بن سفیان رضی اللہ عنہ هغه صحابی دې کوم چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د خپل قوم په
 صدقاتو وصول کولو باندې عامل مقرر کړې وو. په دې مسئله کښې چه کومه رائي د
 عمر رضی اللہ عنہ وه وئیلې شوې دی چه هغه د علی رضی اللہ عنہ هم وه، خو د عمر رضی اللہ عنہ رجوع ثابته شوه د
 جمهورو مسلک طرف ته د ضحاک بن سفیان رضی اللہ عنہ د روایت د وجې نه.

د دية په باره کښې په شروع کښې د عمر رضی اللہ عنہ رائي او بیا د هغې نه رجوع:

خان پوهول پکار دی چه د دیت مسئله او قاعده د جمهورو په نزد دا ده چه هغه واجب خو
 وی په عاقله یعنی عصبه القاتل باندې او ملاویږي د مقتول وارثانو ته، په دې کښې د
 عمر رضی اللہ عنہ رائي د جمهور خلاف وه هغه دا چه دیت واجب هم په عاقله باندې وی او ملاویږي
 هم عاقله ته، خو چونکه د هغوی مسلک دا وو هم د دې په وجه هغوی د خاوند په دیت
 کښې د ښځې د حصې قائل نه وو ځکه چه زوجه په عاقله کښې نه دې، خو چه کله هغه ته د
 ضحاک بن سفیان روایت اورسیدو نو هغوی د خپلې رائي نه رجوع اوکړه. دلته دا سوال
 واردیږي چه د عمر رضی اللہ عنہ رائي دا ولې وه چه په دیت کښې وراثت نه جاری کیږي او هغه
 وارثانو ته نه ملاویږي بلکه صرف عاقله ته ملاویدل پکار دی؟

د دې وجه لکه چه شارحانو لیکلی دی علی ظاهر القیاس دا ده چه وراثت جاری
 کیږي په هغه مال کښې چه د مړي ملکیت وی (لکه چه عام مالونه وی د دیت نه علاوه) او د
 دیت وجوب او ثبوت چونکه وی د مقتول نه پس او په میت کښې د مالک کیدو صلاحیت
 نشته په دې وجه د دې تقاضه دا ده چه په دیت کښې وراثت هم نه دی کیدل پکار، پس دا
 صرف عاقله ته ملاویدل پکار دی د تحمل دیت د وجې نه، یعنی چونکه صرف عاقله د
 قاتل د طرف نه د مقتول د دیت متحمل وی د دې تحمل د وجې نه ملاویدل هم صرف عاقله
 ته پکار دی، لهذا نه ښځې ته ملاویدل پکار دی نه د هغې نه علاوه نورو وارثانو ته، خو
 بیا چه کله عمر رضی اللہ عنہ ته د ضحاک بن سفیان رضی اللہ عنہ په واسطې سره د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د فیصلې علم
 اوشو چه هغوی په دیت کښې د ښځې حصه مقرر کړې ده نو په دې باندې هغوی خپله رائي
 او قیاس ترک کولو سره رجوع اوکړه.

والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

تنبیه: د ضحاک بن سفیان رضی اللہ عنہ دا روایت د عمر رضی اللہ عنہ د رائي دیت زوج په سلسله کښې

زمونږ د سنن په روایاتو کښې په ابوداؤد او ترمذی کښې صرف دومره دې چه د هغې نه په بادئ الرئی سره دا فهمیری چه د عمر رضی الله عنه راثې صرف د زوجې سره متعلق دې حال دا چه داسې نه ده بلکه د عمر رضی الله عنه راثې د دیت په باره کښې مطلقاً دا وو چه هغه للعاقلة دې للورثة نه دې په خلاف د جمهور علماء کرامو چه د هغوی راثې دا ده چه دیت واجب خو وی په عاقله باندې او په وراثت کښې مستحق وی د هغه وارثان نو گویا د عمر رضی الله عنه اختلاف د جمهورو سره په اصل مسئله کښې دې پس په نصب الرایه ۲۵۲/۴ کښې دی هم د دې سلسلې دروایاتو د لاندې علامه زیلعی رحمته الله علیه د سنن والا روایاتو د تخریج نه پس د مصنف عبدالرزاق نه دا روایت نقل کړې دې «ورواه عبدالرزاق فی مصنفه اخبرنا معمر عن الزهري عن ابيه عن ابن المسيب ان عمر بن الخطاب قال : ما اری الدية الا للعصبة لانهم يعقلون عنه، فهل سمع احد منكم من رسول الله صلى الله عليه وسلم فی ذلك شيئاً؟ فقال الضحاک بن سفيان الکلابی وكان عليه السلام استعمله على الاعراب... کتب الی رسول الله صلى الله عليه وسلم ان اورث امرأة اشيم الضبابی من دية زوجها، فاخذ به عمر اه» او همدغه شان په موطاء د امام محمد کښې «باب الرجل يرث من دية امرأة والمرأة يرث من دية زوجها» کښې روایت داسې دې «ان عمر بن الخطاب رضی الله عنه نشد الناس بمنی : من كان عنده علم فی الدية ان يخبرنی به فقام الضحاک بن سفيان فقال کتب الخ» او دا چه په دې روایاتو کښې د زوجې تخصیص دې د هغې منشاء هم د بعض روایتونو نه معلومیری، هغه چه یوې زنانه د عمر رضی الله عنه نه په منی کښې د خپل خان دپاره په دیت زوج کښې د حصې مطالبه کړې وه، پس په التعلیق الممجد کښې دی «عن سعید قال جاءت امرأة الی عمر تساله ان یورثها من دية زوجها فقال ما اعلم لك شيئاً فنشد الناس الحديث» بیا د دې نه پس هم په دې حاشیه کښې هغه روایت ذکر شوې دې کوم چه په شروع کښې مونږ د نصب الرایه نه نقل کړو. «نهی علی هذا التفصیل وان اختلاف عمر لیس فی هذه الجزیة فقط فی اصل المسئلة عزیزى المولوی حبيب الله المظاهری الجمارنی ثم المدنی جزاه الله تعالی خیرا.

اخر کتاب الفرائض

د مسائل میراث تفصیل یو مستقل فن دې کوم چه د دې فن په کتابونو کښې مسطور او مذکور دې، خو د دې فن چه کوم بنیاد دې یعنی د قرآن کریم آیتونه د میراث زړه مې او غوښتل چه کم از کم په دغه آیتونو کښې د ذکر کړې شوې وارثانو حصې خو مونږ په دې خپل کتاب کښې ذکر کړو چه په بنیادی علم کښې د راتلونو نه پس لوستونکو ته د نور تفصیلاتو د معلومولو شوق پیدا شی، او دغه شان په حدیث شریف «تعلموا الفرائض وعلموها الناس فانها نصف العلم» باندې د عمل توفیق هم آسان شی. بنده دا خدمت د خپلې مدرسې بعض فاضلانو ته اوسپارلو ماشاء الله هغوی دا په ډیر ښکلې انداز سره لیکلې راوړو کوم چه په حاشیه کښې لیکلې شوې دې (۱)

۱، د وراثت په سلسله کښې د زرې زمانې نه په معاشره کښې موجود ظلمونو په وجه باندې الله پاک په قرآن کریم کښې دا مسئله ډیر په اهمیت او تفصیل سره بیان او فرمائیله..... به

۶۱... پس دسورة النساء په آيت ۱۱، ۱۲ او ۱۳ كښې ددې مسئلې بنيادى تفصيلات ډير په وضاحت سره موجود دي، مناسب معلوميرى چه د كتب تفسير او فقه په رنړا كښې د مختصر تشریحاتو سره په دغه آيتونو كښې ذكر كړې شوي حصو لره او د هغې مستحقينو لره دلته په ترتيب سره ذكر كړې شي. ذكر كړې شوي آيتونو كښې د ټولو نه مخكښې حكم دا دې چه د ټول مال نه اول د هغوى قرض ادا كړې شي او د هغې نه بچ شوى مال نه د مال د دريمې حصې د وصيت تنفيذ او كړې شي.

پس په آيت كريمه ۱۱ او ۱۲ دواړو كښې څه حصې او د هغې د مستحقينو د ذكر كولو نه پس ارشاد دې (من بعد وصية يوصي بها او دين) چه دا ټول تقسيم د ميراث به د دين د ادا كولو او د تنفيذ د وصيت نه پس وي. بيا په دې آيتونو كښې ټولې شپږ حصې بيان كړې شوي دي: نصف (د پوره حصې نيمه) ربع (څلورمه حصه) ثمن (اتمه حصه) ثلثان (دوه دريمې حصې) ثلث (دريمه حصه) سدس (شپږمه حصه) او د هغې مستحقين اووه دي: ۱: اولاد (چه په هغې كښې مذكر او مونث ټول فروع داخل دي يعنى خامن، لوزره، نمسى، نسمنى دغه شان لاندې نسل، خو واضحه دې وي چه د پورته فرع په موجودگي كښې به لاندې فرع محروم وي، لكه د خامنو او لوزرو په موجودگي كښې به نمسى او نمسى محروم وي..... ۲: پلار: (او د هغه د نه كيدو په وخت نيکه، دغه شان پورته نيكونه)..... ۳: مور: او د دې د نه كيدو په وخت دواړه نياگانې چه په يو درجه كښې دي هم دغه شان پورته نياگانې خو په هغې كښې چه كومه اقرب الى المیت وي هغه به د ابعدا الى المیت دپاره حاجب وي) ۴: خاوند، ۵: ښځه، ۶: اخیافى (په مور كښې شريك) روزه خویندې ۷: حقیقى (په مور پلار كښې شريك) او ۷ علایى (صرف په پلار كښې شريك روزه خویندې).

ذكر كړې شوي حصې او د هغې د مستحقينو تفصيل د قرآن تصريح مطابق داسې دي.
اولاد: د دوى د وراثت څلور صورتونه دي:

- ۱: چه مذكر او مونث دواړه وي نو د دې صورت دپاره حكم دې: (يوصيكم الله في اولادكم للذكر مثل حظ الانثيين) چه مذكر ته به دوه حصې او مونث ته يوه حصه ملاوېږي.
- ۲: چه صرف يو مونث وي نو (وان كانت واحدة فلها النصف) په بناء باندي به د نصف ترکه مستحق وي،
- ۳: كه مونث اولاد د دوه يا د دوه نه زائد وي نو (فان كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك) د وجې نه به د دويمې حصې مال مستحق وي، (واضحه دې وي چه دلته عبارة النص اگر چه د دوه نه زياتو دپاره وي خو اقتضاء النص او د احاديثو په رنړا كښې هم دا حصه ثابتېږي، تفسير ابن كثير وغيره كښې د دې تفصيل موجود دې) ۴: څلورم صورت دا دې چه وارث صرف مذكر اولاد وي (يو يا زيات) هغه د عصبه كيدو په وجه د ذوى الفروض نه د بچ شوى ټول مال مستحق وي (كتب تفسير وسراجي)
- ۴: پلار: د هغه د وارث كيدو درې صورتونه كيدې شي.

۱: كه د هغه سره د مړي څوك اولاد مذكر هم وي (كه مونث وي او كه نه وي) نو په دې صورت كښې (ولابويه لكل واحد منهما السدس مما ترك ان كان له ولد) په وجه باندي هغه د ټول مال د شپږمې حصې مالک وي.

- ۲: اول د مذكر نه كيدو په صورت كښې چه كله اولاد مونث وي (يو يا ډير) پلار به د فرض په طور د سدس او په طور د عصبه د ټول مال مستحق وي.
- ۳: چه د مړي هيڅ قسم اولاد نه وي نو د ذوى الفروض نه بچ شوي مال به ټول پلار ته ملاوېږي د تعصيب په وجه باندي د دې دواړو صورتونو حكم په كتب تفسير او كتب فقه كښې اوگورئ.
- ۴: مور: ۱: د مړي اولاد (مذكر او مونث) د هر يو كيدو سره به د سدس مستحق وي ارشاد دې (ولابويه لكل واحد منهما السدس)

۲: مړي په خویندو رونزو كښې د دوه يا د دوه نه زياتو سره وي نو بيا به هم هغې ته سدس ملاوېږي (فان كان له اخوة فلامه السدس)

۳: چه نه د مړي څوك اولاد وي نه په رونزو خویندو كښې د دوو نصاب وي نو (فان يكن له ولد ورثة ابواه فلامه الثلث) د حكم مطابق به ورته ثلث ورکولې شي. (بيا په دې ثلث كښې لږ اختلاف دې چه په كو

صورت کښې به د کل مال دریمه حصه ورکولې شی او کله به د ثلث ما بقی مستحق وی
 ۴: **خاوند** : ۱: که د بنځې نه هر قسمه اولاد پاتې شوې دې که د دې خاوند نه وی او که د بل نه وی نو
 ﴿فان کان لهن ولد فلکم الربع مما ترکن﴾ په وجه باندې به خاوند ته د مال څلورمه حصه ورکولې شی. ۲: او
 د اولاد نه کیدو په صورت کښې به خاوند ته نیم مال ملاویرې ل قوله تعالی ﴿ولکم نصف ما ترک ازواجکم ان
 لم یکن لهن ولد﴾

۵: **بنه** : ۱: که د بنځې سره د مړ شوی خاوند څوک اولاد هم وی نو ﴿فان کان له ولد فلهن الثمن﴾ مطابق به
 بنځې ته د ټول مال اتمه حصه ملاویرې.
 ۲: او که اولاد نه وی نو د هغې په حصه کښې به څلورمه حصه راځي، ﴿ولهن الربع مما ترکن ان لم یکن
 لکم ولد﴾

تنبیه: که د مړې څوک اولاد نه وی (او د هغه په حقیقی او علایي او اخیافي روڼو خویندو کښې څوک
 وی) نو داسې مړې ته کلاله وائی د ﴿ان امر و هلك لیس له ولد﴾ نه هم دا مراد دې.
حقیقی و علایي روڼه خویندې: ۱: که مړې (کلاله) مذکر وی او د هغه حقیقی او علایي صرف یوه خور
 وی نو هغې ته به د ټول مال نیمه حصه ملاویرې. ﴿وله اخت فلها النصف ما ترک﴾ ۲: که دوه یا د دوو نه
 زیاتې خویندې وی نو په دريو کښې د دوه حصو د مال مستحق کیدو سره به په هغې کښې برابر
 شریکې وی. ﴿فان کانت اثنتین فلهن ثلثا ما ترک﴾.

واضح دې وی چه دلته عبارت النص اگر چه د دوو دپاره دې خو د اقتضاء النص په رنړا کښې قیاسا
 علی الاولاد الاثناث او په طریق اولویت د دوو نه زیاتو دپاره هم دا حکم دې. (اوگوره کتب تفسیر او
 فقه) ۳: که مړې مونث دې او وارثان هم صرف روڼه دې (که یو وی یا زیات) هغوی به د عصبه په طور
 د کل مال مستحق وی. ﴿وهو یرثها ان لم یکن لها ولد﴾ ۴: او که رور خور دواړه دې نو ټول به عصبه
 جوړیږي. او روڼه به د دوو دوو او خویندې د یو یو حصې مستحق وی. ارشاد دې ﴿وان کانتوا ائمه
 رجالا ونساء فللذکر مثل حظ الانثیین﴾

تنبیه: د علایي او حقیقی روڼو خویندو حکم په تقسیم د میراث کښې یو دې، خو حقیقی روڼه د
 علایي روڼو خویندو دپاره حاجب دی هم دغه شان حقیقی خور هم چه هغه د مړې د زبانه اولاد د
 وجې نه عصبه وی او د یوې حقیقی خور په موجودگي کښې به علایي خویندو ته سدس ملاویرې
 ﴿تکملة للثلثین﴾

۷: **اخیافي رور خور**: ۱: په مور کښې شریک رور خور کښې که څوک یواځې وی نو هغه ته به سدس
 ملاویرې ﴿وله اخ او اخت فلکل واحد منهما السدس﴾ ۲: او که د یو نه زیات وی که صرف روڼه وی یا
 صرف خویندې یا گډوډ نو د هغه دپاره به ثلث مال وی چه په هغې کښې به هغوی برابر شریک وی.
 ﴿فان کانوا اکثر من ذلک فهم شرکاء فی الثلث﴾

تنبیه: ۱: دلته په آیت کریمه کښې ﴿وله اخ او اخت﴾ نه اخیافي روڼه خویندې مراد دی لکه چه د بعض
 صحابه کرامو رضی الله عنہم په قراءت کښې د ﴿من ام﴾ زیادت راغلې دې، او د دې هم دا تفسیر د
 ابوبکر صدیق رضی الله عنہ نه روایت کړې شوې دې. (ابن کثیر)

۲: اخیافي روڼه خویندې په حصو کښې برابر شریک وی د ﴿لهم شرکاء فی الثلث﴾ د اطلاق د وجې نه
 لهذا د ﴿للذکر مثل حظ الانثیین﴾ کلیه به په دوی باندې نه جاری کیږي. (اوگوره کتب تفسیر او سراجي وغیره)

۳: حقیقی او علایي روڼه خویندې هم دغه شان د مړې اصول مذکر او فروع مطلق دا ټول د اخیافي
 روڼو خویندو دپاره حاجب دی. **حافظه**: د میراث حصې او د هغې د مستحقینو دا یو اجمالی بیان دی، کوم چه د
 قرآن کریم عبارة النص لره مخکې ښی کیخودلو سره پیش کېدې شو. ظاهره ده چه کله د شریعت اصولو څلور دې (چه د
 هغې نه د ثابت شوي احکامو د مجموعې نوم فقه دې) نو د هغې یوې مسئلې پوره وضاحت د دې څلورو اصولو د
 مراجعت نه بغیر نه شي کیدي. لهذا د میراث د مسئلې د نور وضاحت او تفصیل دپاره د دې فن مستقل کتابونو (مثلا
 سراجي وغیره) ته مراجعت ضروري دې.

بسم الله الرحمن الرحيم

کتاب الخراج والفی و الامارة

د محصول، غنیمت او حکومت کولو بیان

د دې کتاب مناسبت په ماقبل کښې د کتاب الجهاد^۱ نه ظاهر دې ځکه چه د جهاد په ذریعه چه کومې زمکې فتح کولې شی بعض خو په هغې کښې خراجی وی او بعض عشری وی په دې وجه ضرورت راغلو د خراج او د عشر وغیره د احکاماتو بیانولو، او چونکه د دې ټولو څیزونو د انتظام او انصرام د پاره د امیر ضرورت وی، په دې وجه مصنف رحمته الله علیه امارت هم په ترجمه الباب کښې واخستلو، او د فئ نه مراد د مصنف صرف د فئ (مسائل) نه دی بلکه غنیمت هم په دې کښې شامل دې ځکه چه مصنف په دې کتاب کښې غنیمت او د خمس د غنیمت مصارف بیان کړی او هم دغه شان ئې د خراج سره جزیه هم بیان کړې ده.

د کتاب الخراج موضوع او حاصل:

خان پوهول پکار دی چه خراج کوم چه د زمکې د ټیکس نوم دې او په جزیه باندي خان داسې پوهه کړئ د نفس د ټیکس نوم دې کوم چه د هغه کفارو (ذمیانو) نه اخستلې شی چه زمونږ په ملک دارالاسلام کښې اوسېږي، دا ټول څیزونه د ملک دننه گټې دی نو په کتاب الخراج کښې هم دا احکام بیانولې شی، مثلا جزیه به د چا چا نه اخستلې شی او په څومره مقدار کښې به اخستلې شی او د کومې زمکې نه به خراج اخستلې شی، او د کومې نه به عشر اخستلې شی او بیا د دې ټولو څیزونو د وصول کولو نه پس به د دې ټولو گټو مصارف څه وی کوم مال به چرته او په کوم ضرورت کښې خرچ کولې شی، گویا د کتاب الخراج د موضوع حاصل دا دې چه هغه د اسلام د نظام اقتصادی یو حصه او شعبه ده او په دې موضوع باندي علماء کرامو مستقل تصنیفات لیکلی دی، مثلا کتاب الخراج للامام ابویوسف رحمته الله علیه، الخراج لیحیی بن ادم، الاموال لابی عبید القاسم بن سلام، کتاب الاموال لزنجویه وغیرها، او زمونږ د زمانې مولانا حفظ الرحمن صاحب سیوهاروی ناظم جمیعة العلماء هند چه یو جید عالم او د ډیرو تصانیفو مصنف دې هغوی هم په دې موضوع باندي یو کتاب لیکلې دې چه د هغې نوم د اسلام اقتصادی نظام دې پس مولانا صاحب په دې خپل تصنیف کښې د پورته ذکر کړې شوي قدیم تصنیفاتو نه خپل کتاب ته ترتیب ورکړې دې پس په هغې کښې ځانې په ځانې د دې کتابونو حواله ده او د هغې اقتباسات لیکلې شوي دی، هم دغه شان د مولانا سید مناظر احسن گیلانی کتاب اسلامی معاشیات هم په دې موضوع باندي دې، لهذا د ابوداؤد په دې کتاب الخراج باندي په ښه طریقه د پوهیدو دپاره د حدیث طالبانو لره د اردو د هغه تصانیفو مطالعه کول پکار دی چه سبب د بصیرت دې والله تعالی الموفق

^۱ او د کتاب الجهاد نه پس متصلا چه کوم ابواب او کتابونه تیر شو اضحیه، صید، وصیه، فرائض دا ټول هم د جهاد سره مربوط دی په لږ شان سوچ کولو سره ربط فهمیږي

بَاب مَا يَلْزَمُ الْإِمَامَ مِنْ حَقِّ الرَّعِيَّةِ

د عوام کوم حقوق د حکومت په ذمه لازم دی؟

[۲۹۲۸] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "أَلَا كَلِّكُمْ رَاعٍ وَكَلِّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، فَالْأَمِيرُ الَّذِي عَلَى النَّاسِ رَاعٍ عَلَيْهِمْ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى بَيْتِ بَعْلِهَا وَوَلَدِهَا وَهِيَ مَسْئُولَةٌ عَنْهُمْ، وَالْعَبْدُ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُ فَكَلِّكُمْ رَاعٍ وَكَلِّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ."

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي خبردار په تاسو کښې هریو دخپل رعیت محافظ دي او د هریونه به د قیامت په ورځ دخپل رعیت په باره کښې تپوس کيږي، نو څوک چه په خلقوباندي امیر وي هغه ددوی محافظ دي او ددوی په باره کښې به په قیامت کښې دده نه تپوس کيږي او هر سرې دخپل کور په کسانوباندي مشر دي او ددوی په باره کښې به ترې تپوس کيږي او ښځه د خاوند داوولاد محافظه ده او ددوی په برد کښې به ددې نه تپوس کيږي او نوکر دخپل مالک محافظ دي په قیامت کښې به ددنه تپوس کيږي او په تاسو کښې هریونگاح بان دي او د قیامت په ورځ به دهرکس نه دهغه درعیت په باره کښې تپوس کولې شی.

په دې باب کښې مصنف رضي الله عنه دا مشهور حدیث «الا کلکم راع وکلکم مسؤل عن رعیتة» ذکر فرمائیلي دي، دا حدیث ډیر زیات اهم دي هر مشر لره د خپلو ماتحتو سره په معامله کښې دې خبرې ته خیال پکار دي، که هغه د پوره ملک ذمه دار وی یا د یوې ادارې یا د یوې محکمې یا دخپل کور د ټولو دپاره. والله تعالی الموفق

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری.

بَاب مَا جَاءَ فِي طَلَبِ الْإِمَارَةِ

د امارت د طلب کولو د ممانعت بیان

[۲۹۲۹] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبُرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، وَمَنْصُورٌ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ، قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَمُرَةَ لَا تَسْأَلِ الْإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِذَا أُعْطِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وَكَلِّتَ فِيهَا إِلَى نَفْسِكَ وَإِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعْطِيتَ عَلَيْهَا."

د عبد الرحمن بن سمره رضي الله عنه نه روایت دې چې نبی صلی الله علیه و آله راته او فرمائیلي اي عبد الرحمن بن سمره حکومت او امارت مه غواړه که چرې تاته حکومت او امارت په طلب کولو سره درکړې

۱: صحيح البخاري الجمعة ۱۱ (۸۹۳)، والاستقراض ۲۰ (۲۴۰۹)، والعنق ۱۷ (۲۵۵۴)، والوصايا ۹ (۲۷۵۱)، والنكاح ۸۱ (۵۲۰۰)، والأحكام ۱ (۷۱۳۸)، (تحفة الأشراف: ۷۲۳۱)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للإمارة ۵ (۱۸۲۹)، سنن الترمذي للجهد ۲۷ (۱۵۰۷)، مسند احمد (۵/۲، ۵۴، ۱۱۱، ۱۲۱) (صحيح)

۲: صحيح البخاري للأيمان والتذور ۱ (۶۶۲۲)، وكفارات الأيمان ۱۰ (۶۷۲۲)، والأحكام ۵ (۷۱۴۶)، صحيح مسلم للأيمان ۳ (۱۶۵۲)، سنن الترمذي للتذور ۵ (۱۵۲۹)، سنن النسائي لأداب القضاة ۵ (۵۳۸۶)، (تحفة الأشراف: ۹۶۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۱/۵، ۶۲، ۶۳)، سنن الدارمي للتذور والأيمان ۹ (۲۳۹۱)، ويأتي هذا الحديث برقم (۳۳۷۷، ۳۳۷۸) (صحيح)

شي نوته به خپل نفس ته حواله كړې شي (يعنی مدد الفی به درسره شامل نه وي) او كه چري تاته بغير د طلب كولو نه حكومت او سپارلې شي نو په دې باره كښې به ستامدد كيږي (د الله د طرف نه).

دا امارت په كسري د همزه سره دې، او كوم امارت چه په فتحې سره دې د هغې معنی د علامت ده، په حديث الباب كښې د طلب امارت نه منع كړې شوې ده، او رسول الله ﷺ او فرمائيل چه كومه عهده او امارت په طلب كولو سره حاصله شي په هغې كښې د انسان د الله پاك د طرف نه امداد نه وي. ځكه چه طلب كول مقتضى دى د هغه د خپل نفس په اعتماد باندي، د الله پاك نصرت وي په اظهار د احتياج او افتقار باندي.

والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى مختصرا و مطولا بنحوه. قاله المنذرى

[۲۹۳۰] (۱) حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ أُخِيهِ، عَنْ يَشْرِبِينَ قُرَّةَ الْكَلْبِيِّ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: انْطَلَقْتُ مَعَ رَجُلَيْنِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَشَهَّدَ أَحَدُهُمَا، ثُمَّ قَالَ: جُنَّا لِنَسْتَعِينَ بِنَا عَلَى عَمَلِكَ، وَقَالَ الْآخَرُ مِثْلَ قَوْلِ صَاحِبِهِ، فَقَالَ: إِنْ أَخُونَكُمْ عِنْدَنَا مَنْ طَلَبَهُ، فَأَعْتَدْ أَبُو مُوسَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: لَمْ أَعْلَمْ لِمَا جَاءَ إِلَهُ فَلَمْ يَسْتَعِينَ بِمَا عَلَى شَيْءٍ حَتَّى مَاتَ.

د ابو موسى اشعري رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه زه ددوه كسانو سره دن نبی ﷺ په خدمت كښې حاضر شوم نو پوكس په دوى كښې تشهد اولوستلو دې. وائی چه مونږ نبی ﷺ ته ددې دپاره ورغلي وو چه مونږ ته دحكومت عهدي حواله كړي اوددې نه پس دويم كس هم دابى او وئيل نبی ﷺ او فرمائيل په تاسو ټولو كښې زمونږ په نزد باندي لوئې خيانت گر هغه څوك دې څوك چه د حكومت كو لو حواش لرى ابو موسى نبی ﷺ ته معزرت او كړو چه ماته پته نه وه چه دوى دواړه دڅه دپاره راځي او كه نه نوزه به ددوى سره يوځائي نه وم راغلي ددې نه پس به نبی ﷺ ددوى نه په څه كار كښې امداد نه غوښتو تردې چه نبی ﷺ وفات شو.

قوله: (عن ابى موسى رضى الله تعالى عنه قال انطلقت مع رجلين الى النبي ﷺ): د دې روایت مضمون او حواله مونږ سره په كتاب الطهارت (باب كيف يستاك) په ضمن كښې تيره شوې ده هغه دې اوكتلې شي په دې حديث كښې يو لفظ دې (فقال ان اخونكم عندنا من طلبه) اخون د خيانت نه اسم تفضيل دې يعنى عهده دعمل لره طلب كونكي په تاسو كښې د ټولو نه لوئې خائن دې. والحديث اخرجه البخارى ومسلم. قاله المنذرى زاد الشيخ محمد عوامه النسائى ايضا.

باب فِي الضَّرِيرِ يَوْمِي

دړوند مشرئ (امارت) كولو بيان

يعنى روند انسان لره دمسلمانانو په امورو كښې به يو كار باندي والى يا ذمه دار جوړول.

[۲۹۳۱] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْبُخْرَمِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا عِمْرَانُ الْقَطَّانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَخْلَفَ ابْنَ أُمِّ مَكْتُومٍ عَلَى الْمَدِينَةِ مَرَّتَيْنِ.

۱: سنن النسائي لأداب القضاة ۴ (۵۳۸۴)، (تحفة الأشراف: ۹۰۷۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۳۹۳، ۴۱۱) (منكر)
 ۲: انظر حديث رقم: (۵۹۵)، (تحفة الأشراف: ۱۳۲۱) (صحيح)

دانس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دوه پیري ابن ام مکتون په مدینه کښې خلیفه مقرر کړې وو.

« عن انس رضي الله عنه ان النبي صلی الله علیه و آله استخلف ابن ام مكتوم رضي الله عنه على المدينة مرتين »

ابن ام مکتوم رضي الله عنه لره رسول الله صلی الله علیه و آله په مدینه طیبه باندې خپل خلیفه جوړ کړو دوه کرته، خطابي فرمائی چه دا ولایت ولایت عامه نه وو، په احکاماتو او قضایا باندې، بلکه صرف دمانځه په باره کښې وو (۱) اودا درسول الله صلی الله علیه و آله د جانب نه دهغوی اکرام وو د دې خاص واقعي په بناء باندې چه په هغې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله ته د هغوی په باره کښې خبردارې ورکړې شوي وو (عبس وتولی ان جاءه الاعمی) حافظ رحمته الله علیه فرمائی چه د رسول الله صلی الله علیه و آله معمول په غزواتو کښې دتشریف اورلوپه وخت هغوی لره دخپل نائب جوړولو وود مانځه په امامت کښې او دا استخلاف د هغوی په حق کښې دیارلس کرته راغلي، د هغه ټولو غزواتو نومونه په بذل کښې ذکر شوي دي، د دې نه پس حافظ لیکي چه په دې روایت کښې چه استخلاف مرتین ذکر شوي دي هغه راوی د خپل علم په اعتبار سره وئيلي دي.

باب فِي اخْتِاخِذِ الْوَزِيرِ

د وزیرانو د مقرر کولو بیان

یعنی د خلیفه دپاره یو وزیر هم پکار دی او هغه څنگه پکار دی هغه وړاندې په حدیث کښې را روان دی. وزیر... د وزر نه اخستلې شوي دي چه د هغې معنی د ثقل او بوجه ده وزیر هغه انسان ته وئيلي شي چه د امیر بوجه او چتوی او کومې ذمه داری چه امیر او چتې کړې دي هغه سره په بوجه او چتولو کښې هغه هم شریک وی، ففي المجمع «الوزير من يوازر الامير فيحمل عنه ما حملة من الاثقال، الى اخر ما في البذل»

[۲۹۳۲] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَامِرٍ الْمَرْيِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِالْأَمِيرِ خَيْرًا جَعَلَ لَهُ وَزِيرًا صِدْقِي إِنْ نَسِيَ ذِكْرَهُ، وَإِنْ ذَكَرَ أَعَانَهُ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهِ غَيْرَ ذَلِكَ جَعَلَ لَهُ وَزِيرًا سَوْءًا إِنْ نَسِيَ لَمْ يَذْكُرْهُ وَإِنْ ذَكَرَ لَمْ يُعْنَهُ".

دام المومنين عائشي رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي كله چه الله تعالی په یو امیر (حکمران) باندې دخیر اراده او کړي نورینستوني وزیر ورله ورکړي که چرې دده نه هیریري نوهغه ئې ورته رایادوی او که چرې د یوه خبره یاده کړي نوهغه ئې امداد کوي او کله چه الله تعالی په کوم امیر باندې ددې برعکس اراده او کړي نویوبد وزیر ورله ورکړي کله چه ددنه هیرشي نوهغه ئې ورته نه رایادوی او کله چه دې دخه خبرې ذکر او کړي نوهغه ئې مدد ته کوي.

په دې باب کښې مصنف رحمته الله علیه دعائشي رضي الله عنها حدیث ذکر کړې دي چه دهغې مضمون واضح دي.

(۱) او هغه ځکه چه امارت عامه او امامت کبری دپاره کمال خلقت شرط دي، ففي هامش البذل: قال المؤلف (في شرائط الامارة) يشترط كمال الخلقة فيكون متكلمًا بصيرا وقال بعض اصحاب الشافعي يجوز ان يكون اعمى لان شعبة عليه السلام كان اعمى الخ..... وفي الهداية يشترط فيه شرائط الشهادة وقال في باب الشهادة لا تقبل شهادة الاعمي (أه) ۲: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۴۷۸)، وقد أخرجه: سنن النسائي للبيعة ۲۳ (۴۲۰۹)، مسند احمد (۷۰/۸) (صحيح)

باب فِي الْعِرَاقَةِ

د عرافت بیان

عرافه وائی عمل العریف ته، عریف یعنی ملک وغیره د قوم ذمه دار، عرافت ملکی

[۲۹۳۳] (۱) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عُمَانَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سُلَيْمَانَ بْنِ سُلَيْمٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ جَابِرٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ يَحْيَى بْنِ الْبِقْدَامِ، عَنْ جَدِّهِ الْبِقْدَامِ بْنِ مَعْدِيكَرِبَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَرَبَ عَلَى مَنْكِبِهِ، ثُمَّ قَالَ: "لَهُ أَفْلَحَتْ يَا قَدِيمُ إِنْ مِتَّ وَلَمْ تَكُنْ أَمِيرًا وَلَا كَاتِبًا وَلَا عَرِيفًا".

دمقدام بن معديکرب نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ دده په ولي وار اوکرو اوبيا ئې ورته اوفرماييل اي قديمه تا نجات حاصل کړو خوچه ته مړ شي په داسې حال کښې چه نه امير ئې اونه کاتب ئې اونه عريف ئې (عريف هغه چاته وئيلې شي چه درعيت په احوالوباندي بادشاه خبروي).

﴿ افلحت يا قديم ان مت ولم تكن اميرا ولا كاتباً ولا عريفا ﴾

قديم مصغر دي د مقدم په حذف د زوائدو سره، مطلب ئې ظاهر دي.

[۲۹۳۴] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بَشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا غَالِبُ الْقَطَّانُ، عَنْ رَجُلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّهُمْ كَانُوا عَلَى مَنْهَلٍ مِنَ الْمَنَاهِلِ، فَلَمَّا بَلَغَهُمُ الْإِسْلَامُ جَعَلَ صَاحِبُ الْمَاءِ لِقَوْمِهِ مِائَةَ مِنَ الْإِبِلِ عَلَى أَنْ يُسَلِّمُوا، فَاسْتَلَمُوا وَقَسَمَ الْإِبِلَ بَيْنَهُمْ، وَبَدَأَ لَهُ أَنْ يَرْتَجِعَهَا مِنْهُمْ، فَأَرْسَلَ ابْنَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ: أَتَيْتَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتَ لَهُ: إِنَّ أَبِي يُقْرُئُكَ السَّلَامَ، وَإِنَّهُ جَعَلَ لِقَوْمِهِ مِائَةَ مِنَ الْإِبِلِ عَلَى أَنْ يُسَلِّمُوا، فَاسْتَلَمُوا وَقَسَمَ الْإِبِلَ بَيْنَهُمْ وَبَدَأَ لَهُ أَنْ يَرْتَجِعَهَا مِنْهُمْ، أَفَبِأَحَقِّ بِهَا أَمْ هُمْ؟ فَإِنْ قَالَ لَكَ: نَعَمْ أَوْلَا، فَقُلْ لَهُ: إِنَّ أَبِي شَيْخٌ كَبِيرٌ وَهُوَ عَرِيفُ الْمَاءِ وَإِنَّهُ يَسْأَلُكَ أَنْ تَجْعَلَ لِي الْعِرَاقَةَ بَعْدَهُ، فَأَتَاَهُ فَقَالَ: إِنَّ أَبِي يُقْرُئُكَ السَّلَامَ، فَقَالَ: "وَعَلَيْكَ وَعَلَى أَيْتِكَ السَّلَامُ، فَقَالَ: إِنَّ أَبِي جَعَلَ لِقَوْمِهِ مِائَةَ مِنَ الْإِبِلِ عَلَى أَنْ يُسَلِّمُوا فَاسْتَلَمُوا وَحَسِنَ إِسْلَامُهُمْ، ثُمَّ بَدَأَ لَهُ أَنْ يَرْتَجِعَهَا مِنْهُمْ أَفَبِأَحَقِّ بِهَا أَمْ هُمْ؟ فَقَالَ: إِنَّ بَدَأَ لَهُ أَنْ يُسَلِّمَهَا، وَإِنْ بَدَأَ لَهُ أَنْ يَرْتَجِعَهَا فَبِأَحَقِّ بِهَا مِنْهُمْ، فَإِنْ هُمْ اسْتَلَمُوا فَلَهُمْ إِسْلَامُهُمْ وَإِنْ لَمْ يُسَلِّمُوا قَتَلُوا عَلَى الْإِسْلَامِ، فَقَالَ: إِنَّ أَبِي شَيْخٌ كَبِيرٌ وَهُوَ عَرِيفُ الْمَاءِ وَإِنَّهُ يَسْأَلُكَ أَنْ تَجْعَلَ لِي الْعِرَاقَةَ بَعْدَهُ، فَقَالَ: إِنَّ الْعِرَاقَةَ حَقٌّ وَلَا بَدَلَ لِلنَّاسِ مِنْ الْعِرَاقَةِ، وَلَكِنَّ الْعِرَاقَةَ فِي النَّارِ".

غالب القطان ديوکس نه او هغه دده دپلار نه او هغه دده دنيکه نه روایت کوي چه په عربو کښې څه خلق د يوې چيني په غاړه اوسيدل کله چه دوی ته د مذهب اسلام اطلاع ملا وشوه نو د چيني مالک خپل قوم ته په دې شرط باندي سل اوبسان ورکړل چه دوی به اسلام قلموي چنانچه هغوی مسلمانان شول اودې کس هغه اوبسان په دې خلقو باندي تقسيم کړل بيا ددې نه پس ده اوبسان واپس کول او غوښتل نو ددې دپاره پر خپل خوي دنبي ﷺ دربار ته اوليرو ده ورته او وئيل چه لار شه اونبي ﷺ ته زما سلام اورسوه او ورته اووايه چه ماخپل قوم ته سل اوبسان په دې وجه ورکړی دی چه دوی اسلام قبول کړي، چنانچه هغوی اسلام قبول کړې دي اوزما پلار ورباندي اوبسان تقسيم کړل اوس زما پلار غواړی چه د قوم نه اوبسان واپس واخلي نو ايا ددې اوبسانو حقدار اوس زما پلار دې اوکه داخل دی؟ نوکه

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۶۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۳۳/۴) (ضعيف)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۱۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۷۵) (ضعيف)

چرې هودرته او وائی او که نه ته ورته او وایه زما پلار بودا او ضعیف دې او هغه ددې چینی مشردې زما دا خواهش دې چه دهغه نه پس ماد هغه په خائې باندي عریف مقرر کړئ بهر حال هغه هلك د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې او کړو ای دالله رسوله زما پلار په تاباندي سلام وئیلې دې نبی ﷺ او فرمائیل په تا اوستا په پلاردي سلام وي اوبیا ئې عرض او کړو ای دالله رسوله زما پلار خپل قوم ته په دې شرط باندي سل اوبنان ورکول مقرر کړي وو چه هغوی به اسلام قبلوي هغوی په صحیح طریقي سره اسلام قبول کړو اوس زما پلار غواړی چه اوبنان ددوی نه واپس واخلي نودا راته اوایه چه داوبنانو حقدار زما پلاردي او که دوی دي؟ نبی ﷺ او فرمائیل که چرې ستا پلار او غواړی چه اوبنان دوی ته ورکړی نو ورکولې شی او که چرې واپس کول غواړی نو حقداردي او کومو خلقو چه اسلام قبول کړې دې هغوی به پخپله داسلام نه نفع حاصله وي او که چرې دوی اسلام نه قبلوي نودا اسلام دپاره به ددوی سره جنگ کولې شی، بیادي هلك عرض او کړو چه ای دالله رسوله زما پلار یو کمزورې اوبودا سرې دې او هغه ددې چینی عریف دې دهغه دا خواهش دې چه دهغه دوفات نه پس دعرافت منسب تاسوماته حواله کړئ نبی ﷺ او فرمائیل چه عرافت یوضروري شی دې خلقولره ددې نه بغیر چه چاره نشته لیکن عریفان به دوزخ ته داخلیري.

﴿ عن رجل عن ابيه عن جده انهم كانوا على منهل من المناهل فلما بلغهم الاسلام جعل صاحب الماء لقومه مئة من الابل على ان يسلموا فاسلموا الخ ﴾

د دې حدیث راوی صحابی او د دې نه لاندي راوی دواړه درې واړه مجهول دی.

مضمون د حدیث:

د حدیث مضمون دا دې چه یو نامعلوم الاسم صحابی وائی چه مونږ او زمونږ قوم په یو چینه باندي آباد وو د هغه خائې ملک د خپل قوم سره یو وعده او کړه چه که تاسو اسلام راوړو نو تاسو ته به سل اوبنان درکړم. په دې باندي هغه ټولو اسلام راوړو او هغه ملک سل اوبنان هم په هغوی باندي تقسیم کړل، خو بیا روستو د هغه رائې په خپله هبه کښې د رجوع کولو شوه، نو د رجوع کولو نه مخکښې ئې د رسول الله ﷺ په خدمت کښې خپل خوئې اولیرلو، او هغه خوی ته ئې دا خبره او کړه چه د رسول الله ﷺ خدمت کښې حاضریدو سره اوائی چه زما پلار تاسوته سلام عرض کړې دې او بیا ورته د دې واقعي ذکر او کړه د قوم د اسلام راوړلو او په هغوی باندي د اوبنانو د تقسیمولو، او دا تپوس ترې او کړه چه اوس مې د پلار رائې په هغې کښې د رجوع ده نو آیا د هغه دپاره د رجوع کولو حق دې؟ او وې وئیل چه د دې جواب هغوی هر چه درکړی او یا نه. د هغې د اوریدو نه پس ترې نه دا تپوس او کړه چه زما پلار اوس بودا شوې دې او هغه د هغه چینی والو عریف دې، نو هغه تاسو ته درخواست کوی چه تاسو ما د خپل پلار په خائې باندي عریف کړئ، پس د هغه خوئې د دې ټولو خبرو سره د رسول الله ﷺ خدمت ته راورسیدلو، او اول ئې د خپل پلار سلام اورسولو رسول الله ﷺ او فرمائیل ﴿وعلیک وعلى اییک السلام﴾

د رجوع فی الهبة د جواز دلیل :

د دې نه پس د قوم د اسلام راوړلو او هغوی ته د سلو اوښانو ورکولو او بیا ئې په هبه کښې د رجوع کولو ټوله خبره رسول الله ﷺ ته عرض کړه، رسول الله ﷺ او فرمائیل چه که هغه اوښان هغوی ته ورکول غواړی نو وردې کړی، او که رجوع کول غواړی نو اوډې کړی بیا که هغوی په اسلام باندې باقی پاتې کیږی نو صحیح ده د هغوی اسلام دې هغوی ته مبارک وی او که د اسلام نه واپس شی نو د هغوی سره دې قتال او کړې شی، د دې نه پس هغه د عرافت په باره کښې تپوس او کړو، په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل عرافت حق دې، څه ناجائز کار نه دې بلکه د خلقو دپاره د عرفاء کیدل ضروری هم دی، ﴿لکن العرفاء فی النار﴾ خو دا عریف خلق به اور ته ځی.

د رسول الله ﷺ د فرمان مقصد دا دې چه دا ملکان خلق چه وی هغوی په خپله ملکې کښې په عامو خلقو باندې ظلم کوی.

والحدیث سکت علیه المنذری، وعزاه المزی الی النسائی وفیه طرف یسیر منه وهو عند المصنف ایضا (۵۱۸۹) قاله الشیخ محمد عوامه.

باب فی اتخاذاکاتب

د منشی یا سیکرټری یا کاتب ساتلو بیان

د کتاب الخراج سرځنی کښې چونکه د فئ او د امارت ذکر هم دې په دې وجه ډیر څیزونه د امارت متعلق بیانېږی، په دې باب کښې دا بیانوی چه د امیر دپاره د یو کاتب او منشی ضرورت هم دې دا هم ساتل پکار دی.

[۲۹۳۵] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا نُومٌ بْنُ قَيْسٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الْجَوْزَاءِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: السَّجَلُ كَاتِبٌ كَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د ابن عباس رضی اللہ عنہ روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ د کاتب نوم سَجَل وو.

﴿عن ابن عباس رضی اللہ عنہما قال : السجل كاتب كان للنبي ﷺ﴾

په قرآن کریم کښې چه راځی ﴿یوم نظوی السماء کطی السجل للکتب﴾ په دې باره کښې ابن عباس رضی اللہ عنہما فرمائی چه په دې آیت کریمه کښې د سَجَل نه مراد هغه سرې دې چه د رسول الله ﷺ کاتب وو، په دې صورت کښې به د آیت کریمه مطلب دا وی چه مونږ به د قیامت په ورځ آسمانونه داسې راټول کړو لکه څنگه چه سَجَل یعنی کاتب د لیکلو د فارغ کیدو نه پس ټولو منتشر اوراقو لره په یو ځای باندې راټولولو نه پس کیږی، د سَجَل په تفسیر کښې دوه اقوال دی، وئیلې شی دا د یو ملانک نوم دې وقیل اسم الصحیفة او په دې صورت کښې به مطلب دا وی چه څنگه په لوئی رجسټر کښې اوراق راټولولې شی هم دغه شان به مونږ آسمانونه هم راټول کړو، په دې اقوالو کښې آخری قول ته اصح وئیلې شوې دې.

(۱) : تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۵۳۶۵) (ضعیف)

د رسول الله ﷺ د کاتبین اسماء :

دلته په (بذل المجهود) کښې د رسول الله ﷺ د کاتبین تعین او د هغوی نومونه لیکلې شوي دي، شل نومونه په هغې کښې ذکر دي.

بَابُ فِي السَّعَايَةِ عَلَى الصَّدَقَةِ

د زکات د وصول کولو د فضیلت بیان

یعنی صدقات او هم دغه شان خراج وغیره وصول کولو دپاره د مستقل سړي ضرورت دي لهذا د امیر په فرائضو کښې د عاملینو مقرر کول هم دي، په حدیث الباب کښې د دیانت دار عامل فضیلت او د هغې ثواب ذکر شوي دي.

[۲۹۳۶] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْأَسْبَاطِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ لَبِيدٍ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "الْعَامِلُ عَلَى الصَّدَقَةِ بِالْحَقِّ كَالغَازِي فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى بَيْتِهِ".

د رافع بن خديج رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مي اوریدلی دي چه فرمائي ئې د حق سره د زکات وصول کونکې داسې دي لکه خوک چه دالله په لار کښې جهاد کوي او ترخوچه هغه خپل کور ته نه وي واپس شوي.

﴿ العامل على الصدقة بالحق كالغازي في سبيل الله حتى يرجع الى بيته ﴾ يعنى هغه عاملينو ته هم هغه شان ثواب ملاويږي څنگه چه مجاهدينو ته په سفر د جهاد کښې ملاويږي، کور ته د واپس کيدو پورې، قلت ومثله سفراء المدارس فى هذا الزمان، په دې شرط چه په پوره ديانت دارئ او محنت سره کار او کړي ﴿والاعمال بالنيات﴾

والحدیث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذرى

[۲۹۳۷] () حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّقِيلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شِمَاسَةَ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ صَاحِبُ مَكْسٍ".

د عقبه بن عامر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مي اوریدلی دي چه فرمائي ئې ئې وو چه صاحب مکس (چونگي تیکس وصول کونکې) به جنت ته داخل نکړې شي ځکه چه دوی اکثر ظلم کوي.

شرح الحديث:

قوله: ﴿ لا يدخل الجنة صاحب مكس ﴾: (مکس) يعنى تیکس او صاحب مکس ته ماکس وائی وهو العشار يعنى په چنگي باندي کیناستلو والا کوم چه مال اخستلو سره د تیریدونکو نه

۱: سنن الترمذی للزکاة ۱۸ (۶۴۵)، سنن ابن ماجه للزکاة ۱۴ (۱۸۰۹)، (تحفة الأشراف: ۳۵۸۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۶۵/۳، ۱۴۳/۴) (صحیح)
 ۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۹۳۵، ۱۹۲۸۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۳/۴، ۱۵۰)، سنن الدارمی للزکاة ۲۸ (۱۷۰۸) (ضعیف)

ټيکس وصولوی، په ظاهره د دې حديث نه د هغه ټيکسونو ذکر دې چه خلاف شرع طبقه باندې حکومتونه د رعایا نه وصولوی، او کوم خلق چه په دې باندې مقرر کولې شي هم هغوی صاحب مکس دی نو هرکله چه صاحب مکس گناهگار دې نو هغه امير د چا په حکم باندې چه هغه ټيکس وصولوی په طريق اولی گناهگار دې، او عشر وغيره چه د شرعی قاعدې مطابق وصولوی هغه د دې نه مراد نه دې، د هغې فضيلت خو پورته حديث کښې تير شوي دې چه هغه په منزله د غازي دې (بذل).

[۲۹۳۸] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْقَطَّانُ، عَنْ ابْنِ مَعْرَاءَ، عَنْ ابْنِ اسْحَاقَ، قَالَ: الَّذِي يُعْشَرُ النَّاسَ يَعْنِي صَاحِبَ الْمَكْسِ.

دا بن اسحق نه روایت دې فرمائی چه د صاحب مکس - نه مراد هغه کس دې خو ک چه عشر وصول کوي.

بَابُ فِي الْخَلِيفَةِ يَسْتَخْلِفُ

آيا خليفه دخان په خاني بل خو ک مقرر کولې شي؟

[۲۹۳۹] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دَاوُدَ بْنِ سَفْيَانَ، وَسَلَمَةُ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ: إِنِّي لَأَسْتَخْلِفُ فَإِن رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَسْتَخْلِفْ وَإِن أَسْتَخْلِفُ فَإِن أَبَا بَكْرٍ قَدْ اسْتَخْلَفَ، قَالَ: قَوْلَ اللَّهِ مَا هُوَ إِلَّا أَنْ ذَكَرَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَا بَكْرٍ، فَعَلِمْتُ أَنَّهُ لَا يَعْدِلُ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدًا وَأَنَّهُ غَيْرُ مُسْتَخْلِفٍ.

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه کله عمر رضي الله عنه زخمي کړي شونو خلقو ورته ووتل چه دخان په خاني خو ک خليفه مقرر کړي، عمر او فرمائيل: که چرې زه خو ک خليفه مقرر نکړم نوڅه باک نشته ځکه چه نبی صلي الله عليه وسلم هم خو ک خليفه نه وومقرر کړي او که خو ک خليفه مقرر کړم نوهم څه باک نشته ځکه چه ابوبکر خليفه مقرر کړي وو، ابن عمر ووتل په الله قسم عمرهم دنبي صلي الله عليه وسلم اود ابوبکر نه علاوه دبل چاذکر ونکړونوماته معلومه شوه چه د د نبي صلي الله عليه وسلم سره هيڅوک نه برابر وي او چاله خليفه هم نه مقرر وي.

شرح الحديث:

قوله: () عن ابن عمر رضي الله عنهما قال قال عمر رضي الله عنه اني ان لا استخلف فان رسول الله صلي الله عليه وسلم لم يستخلف وان استخلف فان ابابكر قد استخلف () ابن عمر رضي الله عنهما فرمائی چه زما والد صاحب عمر رضي الله عنه او فرمائيل په خپل مرض الوفات کښ. که زه خو ک خليفه جوړ نه کړم (نو بيا هم صحيح ده)، ځکه چه رسول الله صلي الله عليه وسلم خو ک هم خپل خليفه نه وو جوړ کړې او که زه خو ک خليفه جوړ کړم (نو بيا هم صحيح ده)، ځکه چه ابوبکر صدیق رضي الله عنه خليفه جوړ کړې وو، وړاندې دا دی، ابن عمر رضي الله عنهما فرمائی چه د هغوی په دې يوه جمله باندې زه پوهه شوم چه هغوی به د رسول الله صلي الله عليه وسلم طرز عمل د ابوبکر صدیق رضي الله عنه د عمل برابر نه ږدي بلکه هغوی به يقينا د رسول

۱: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۹۹۳۵، ۱۹۲۸۶) (حسن)
 ۲: صحيح مسلم للإمامة ۲ (۱۸۲۳)، سنن الترمذي للفتن ۴۸ (۲۲۲۵)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۲۱)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للأحكام ۵۱ (۷۲۱۸)، مسند احمد (۴۳/۱) (صحيح)

الله ﷺ عمل ته ترجیح ورکوي. دا روایت دلته مختصر دې په صحیح مسلم کښې مفصل دې هغې ته دې رجوع او کړې شی، هلته دا هم دی چه خلقو هغوی ته عرض او کړو چه څوک خلیفه کړئ نو هغوی او فرمائیل «أتحمل امرکم حیا ومیتا» چه ستاسو بوجه به په ژوند هم اوچتوم او د مرگ نه پس هم، «لوددت ان حظی منها الکفاف لا علی ولالی» زه خودا غواړم چه زما حصه په دې خلافت کښې برابر سرابری شی، چه نه ماته په دې څه ملاؤ شی یعنی اجر او ثواب او نه پرې زما مواخذه او کړې شی یعنی که د الله پاک په نزد معامله برابر ختم شی نوزه دا غنیمت گنړم، الله اکبر آخه حال دې د دې ویرې او د دې اخلاص، ورسره امید او رجاء د بخښنې هم ده «الایمان بین الخوف والرجاء». د دې حدیث په شرح کښې امام نووی رحمته الله علیه لیکلې دی چه د مسلمانانو په دې باندي اجماع ده چه په خلیفه باندي نه په خپل ژوند کښې استخلاف واجب دی او نه ترک د استخلاف دواړه صورتونه د هغه دپاره جائز دی او بیا وړاندي لیکي چه د علماء کرامو هم په دې باندي اجماع ده چه د خلافت انعقاد د خلیفه اول په استخلاف باندي هم کیږي او که هغه استخلاف نه کوي نو بیا د حل او عقد د خاوندانو په اختیار سره د هغه استخلاف هم کیږي، او د دې په جواز باندي هم اجماع ده چه خلیفه اول د خلافت امر لره یو جماعت ته حواله کړي، کما فعل عمر بالسته (۱) او هغوی دا هم لیکي چه دا حدیث دلیل دې په دې خبره باندي چه رسول الله ﷺ د یو خلیفه په خلافت باندي تصریح نه ده فرمائیلې او دا د ټول اهل سنت اجماعی مسئله ده، قاضی عیاض رحمته الله علیه فرمائی چه هم د دې اجماع بعض خلقو مخالفت کړې دي، پس بکر بن اخت عبدالواحد دعوی کړې ده د ابوبکر رضی الله عنه په تنصیص باندي، او ابن الراوندي د عباس رضی الله عنه په تنصیص باندي، او شیعه گان او روافض وائی د علی رضی الله عنه په باره، (وهذه دعاوی باطله جسارۃ علی الافتراء الی آخر ما ذکر مسلم ۱۲۰/۲) والحديث اخرجہ مسلم والترمذی، قاله المنذری.

باب مَا جَاءَ فِي الْبَيْعَةِ

د بیعت بیان

[۲۹۴۰] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: كُنَّا نَبَايِعُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَيَلْقِنُنَا فِيهَا اسْتَطَعْتُ.

۱. عمر فاروق رضی الله عنه د خپل شهادت په موقع باندي د ابولؤلؤ مجوسی د حملې نه پس د وفات نه مخکښې د خلافت مسئله په شپږو صحابه کرامو رضی الله عنهم باندي پریخودلې وه. عثمان او علی، عبدالرحمن بن عوف، طلحه بن عبیدالله، زبیر بن العوام، سعد بن ابی وقاص رضی الله عنهم چه دوی خپل مینځه کښې په مشوره سره چه څوک مناسب گنړي هغه دی خلیفه کړي، پس د مشورې په وخت دا اوشوه چه په هغوی کښې پنځو کسانو عبدالرحمن بن عوف رضی الله عنه فیصله کونکې مقرر کړو چه هغه به خپله رائي سره چاله غواړي خلیفه کړي هغوی د عثمان رضی الله عنه انتخاب او فرمائیلو، د صحابه کرامو رضی الله عنهم په موجودگي کښې او د عمر رضی الله عنه د وفات نه درې ورځې پس د خلقو بیعت اوشو. (نبراس شرح عقائد)

۲. تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۷۱۹۳)، وقد أخرجہ: صحیح البخاري بالأحكام ۴۳ (۷۲۰۲)، صحیح مسلم للإمامة ۲۲ (۱۸۶۷)، سنن الترمذی للسير ۳۴ (۱۵۹۳)، سنن النسائي للبيعة ۲۴ (۴۱۹۲)، موطا امام مالك للبيعة ۱ (۱)، مسند احمد (۶۲/۲، ۱، ۱۰۱، ۱۳۹) (صحیح)

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ به د نبی صلی الله علیه وسلم سره بیعت کولو په غور ایخودلو اوتابعداری کولوباندې اونبی صلی الله علیه وسلم به مونږ ته تعلیم را کولو چه دا جمله هم ورسره وایئ ترڅومره چه زمونږ طاقت وي.

[۲۹۴۱] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهَبٍ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَتْهُ عَنْ بَيْعَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النِّسَاءَ، قَالَتْ: مَا مَسَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَدَ امْرَأَةٍ قَطُّ إِلَّا أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهَا فَإِذَا أَخَذَ عَلَيْهَا فَأَعْطَتْهُ، قَالَ: "أُذْهِبِي فَقَدْ بَايَعْتِكِ".

دعروة ابن الزبير رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه ام المومنین عائشة رضي الله عنها راته دزنانوسره دنبی صلی الله علیه وسلم دبیعت کولو خبر را کړې دې فرمائیل ئې چه هیڅکله نبی صلی الله علیه وسلم دکوي زنانه د لاس سره دبیعت په وخت کښې خپل لاس نه دې لگولي، البته دزنانوونه به ئې اقرار اخستو، کله چه به ئې اقرار وکړونو ورته به ئې اوفرمائیل چه زه اوس لاره شه مادر سره بیعت وکړو. قوله: (قالت ما مس النبي بيده امرأة قط الا ان ياخذ عليها فاذا اعطته قال اذهبي فباعتك) عائشه رضي الله عنها فرمائی د بیعة النساء په باره کښې چه رسول الله صلی الله علیه وسلم د بیعت په وخت په خپل لاس مبارک سره یو زنانه هم ده نه مسح کړې. پس هغوی به په ژبې سره عهد اخستلو، د ژبې عهد لره به چه کله هغې قبول کړو نو رسول الله صلی الله علیه وسلم به هغې ته اوفرمائیل اوس لاره شه ما تا سره بیعت اوکړو.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي، قاله المنذري

[۲۹۴۲] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، حَدَّثَنِي أَبُو عَقِيلٍ زُهْرَةُ بْنُ مَعْبُدٍ، عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ هِشَامٍ قَالَ: وَكَانَ قَدْ أَدْرَكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَذَهَبَتْ بِهِ أُمُّهُ زَيْنَبُ بِنْتُ حُمَيْدٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ بَايِعْهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "هُوَ صَغِيرٌ فَمَسَحَ رَأْسَهُ".

زهیر بن معبد دخپل نیکه عبدالله بن هشام (دچا چه دنبی صلی الله علیه وسلم سره ملاقات شوي نه روایت کوي فرمائی چه ده لره خپلې مور زینب بنت حمید نبی صلی الله علیه وسلم ته وړي وو، هغې عرض وکړو چه ای دالله رسوله دده سره بیعت وکړه نبی صلی الله علیه وسلم اوفرمائیل داخوماشوم دې اوپه سر ئې ورله لاس رانیکل.

قوله: (حدثنا ابو عقيل زهرة بن معبد عن جده عبدالله بن هشام الخ) مضمون د حدیث دا دې چه عبدالله بن هشام چا چه د رسول الله صلی الله علیه وسلم زمانه موندلې وه هغوی په خپل وړو کوالی کښې د هغوی مور د رسول الله صلی الله علیه وسلم په خدمت کښې راوستلو، او وې وئیل یا رسول الله صلی الله علیه وسلم دې بیعت کړئ، رسول الله صلی الله علیه وسلم اوفرمائیل (هو صغیر فمسح راسه) یعنی رسول الله صلی الله علیه وسلم د هغه د

۱: صحیح مسلم للإمامة ۲۱ (۱۸۶۶)، سنن الترمذی/تفسیر القرآن ۶۰ (۳۳۰۶) (تحفة الأشراف: ۱۶۶۰)، وقد أخرجه: صحیح البخاری/تفسیر سورة الممتحنة ۲ (۴۸۹۱)، والطلاق ۲۰ (۵۲۸۸)، والأحكام ۴۹ (۷۲۱۴)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۴۲ (۲۸۷۵)، مسند احمد (۱۱۴/۶) (صحیح) ۲: صحیح البخاری/الشركة ۱۳ (۲۵۰۱)، والأحكام ۴۶ (۷۲۱۰)، (تحفة الأشراف: ۹۶۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۳/۴) (صحیح)

بیعت نه عذر او فرمائیلو چه دا لا ماشوم دې، خو خپل لاس مبارک نې د هغه په سر باندي رابښکلو.

بیعت چونکه یو قسم معاهده ده چه د باب د تکلیف نه دې او نابالغ غیر مکلف وی په دې وجه رسول الله ﷺ ورسره بیعت اونکړو، والحديث اخرجه البخاری، قاله المنذری

باب فی أرزاق العُمَّال

د عامر نو د اخراجاتو بیان

ارزاق یعنی وظائف چه عمالو ته د بیت المال نه ورکولې شی.

[۲۹۴۳] (١) حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَحْزَمَ أَبُو طَالِبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ حُسَيْنِ الْمُعَلِّمِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَرِيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ اسْتَعْمَلَنَا عَلَى عَمَلٍ فَرَزَقْنَاهُ رِزْقًا فَمَا أَخَذَ بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ غُلُولٌ".

عبد الله بن بریده دخپل پلار نه روایت کوی او هغه د نبی ﷺ نه روایت کوی چه فرمائیلي نې وو: خو ک چه مونږ په څه کار باندي عامل مقرر کړو مونږ نو هغه ته وظيفه هم ورکوونو که چرې عامل د دې نه څه اوساتي نو داغلا او خیانت دې.

(من استعملناه على عمل فرزقناه رزقا فما اخذ بعد ذلك فهو غلول)

رسول الله ﷺ فرمائی چه کوم انسان مونږ عامل جوړ کړو نو د هغه چه کومه تنخواه او وظيفه سونږ مقرر کړو نو د هغه دپاره حلال ده (خو) که د هغې نه زیاته هغه اخلی نو هغه به غلول او خیانت شمیرلې کیږي.

[۲۹۴۴] (٢) حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَشَجِّ، عَنْ بُرَيْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ ابْنِ السَّاعِدِيِّ، قَالَ: اسْتَعْمَلَنِي عُمَرُ عَلَى الصَّدَقَةِ فَلَمَّا فَرَعْتُ أَمْرِي بِعُمَالَةٍ، فَقُلْتُ: إِنَّمَا عَمِلْتُ لِلَّهِ، قَالَ: خُدْمًا أُعْطِيَتْ فَإِنِّي قَدْ عَمِلْتُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَمَلَنِي.

د ابن ساعدي نه روایت دې فرمائی چه عمر رضي الله عنه زه په زکات باندي عامل مقرر کړم یعنی د زکات د وصول کولو دپاره کله چه زه د دې کار نه فارغ شوم نو هغه ماته د اجرت را کولو دپاره حکم او کړو ماورته او وئیل دا کار ماصرف د الله درضادپاره کړې دې عمر رضي الله عنه راته او وئیل څه چه درته درکولې شی هغه واخله زه هم د نبی ﷺ په زمانه کښې په زکات عامل مقرر شوي وم اونبې رضي الله عنه ماته د دې مزدوري - را کړه.

[۲۹۴۵] (٣) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مَرْوَانَ الرَّقِيُّ، حَدَّثَنَا الْمُعَاوِيُّ، حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ، عَنْ الْحَارِثِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ، عَنِ الْمُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ كَانَ لَنَا عَامِلًا فَلْيَكْتَسِبْ زَوْجَةً، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ خَادِمٌ فَلْيَكْتَسِبْ خَادِمًا، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَسْكَنٌ فَلْيَكْتَسِبْ مَسْكَنًا، قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَخْبَرْتُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَخَذَ غَيْرَ ذَلِكَ فَهُوَ غَالٍ أَوْ سَارِقٌ".

١: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۵۷) (صحیح)

٢: صحیح البخاری لازکاة ۵۱ (۱۴۷۳)، والأحكام ۱۷ (۷۱۶۳)، صحیح مسلم لازکاة ۲۷ (۱۰۴۵)، سنن النسائي لازکاة ۹۴ (۳۱۰۵)، (تحفة الأشراف: ۱۰۴۸۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۷/۱، ۵۲، ۴۰)، سنن الدارمي لازکاة ۱۹ (۱۶۸۹) (صحیح)

٣: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۶۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۹/۴) (صحیح)

د مستورد بن شداد نه روایت دې فرمائی چه د نبی کریم انه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې څوک چه زمونږه عامل وي نو د یوې بنځې دپاره دي زمونږه نه خرچه اخلي که چرې دده سره خدمت گارنه وي نو یو خدمت گار دي وساتي او که چرې دده داوسیدلو دپاره کورنه وی نو یو کور دي داوسیدو دپاره واخلي مستورد وائی ابوبکر رضی الله عنه او وئیل ماته خبر راکړې شوې دې چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی څوک چه ددې څیزونونه علاوه دبل څیز دپاره خرچه واخلي نو هغه خیانت گر او غل دې (یعنی دمسلمانانو مال عبث خرچ کوي).

(من كان لنا عاملا فليكتسب زوجة)

کوم انسان چه مونږ عامل جوړ کړه نو هغه له پکار دی چه واده او کړی یعنی د بیت المال په خرچه باندي او هم دغه شان که هغه سره خادم نه وی نو یو خادم دي د بیت المال نه حاصل کړی، او که د اوسیدو دپاره ئې کورنه وی نو د یو کور انتظام دي او کړی.

باب فِي هَدَايَا الْعَمَالِ

د عاملا نو د هدني اخستلو بيان

یعنی عمال چه کله صدقات وصولولو دپاره لارشی او د صدقاتو نه علاوه هغوی ته د چرته نه څه هدیه کښي څه ملاؤشی نو د هغې څه حکم دي، د ابن عبدالبر په التمهيد کښي دی چه هدايا د عمالو د جمهورو په نزد په حکم د فئ کښي دی. پس هغې لره په بیت المال کښي داخلول پکار دی، په خلاف د رسول الله صلی الله علیه و آله چه د هغوی په خدمت کښي یوه هدیه پیش کړې شی نو هغه به د هغوی دپاره وی. (هامش البذل) وهكذا فی السير الكبير

تبییه: بعینه هم دا ترجمه الباب (باب فی هدايا العمال) وړاندې په کتاب القضاء کښي هم را روان دي هلته مصنف یو بل حدیث ذکر کړې دي.

[۲۹۴۶] (۱) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، وَابْنُ أَبِي خَلْفٍ، لَفْظُهُ قَالَا: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَعْمَلَ رَجُلًا مِنْ الْأَزْدِ يُقَالُ لَهُ ابْنُ اللَّتْبِيَّةِ، قَالَ ابْنُ السَّرْحِ، ابْنُ الْأَتْبِيَّةِ عَلَى الصَّدَقَةِ، فَجَاءَ فَقَالَ: هَذَا الْكُمُّ وَهَذَا أَهْدِي لِي، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، وَقَالَ: مَا بَالُ الْعَامِلِ نَبَعْتُهُ فَيَجِيءُ فَيَقُولُ: هَذَا الْكُمُّ وَهَذَا أَهْدِي لِي، أَلَا جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ أَوْ أَبِيهِ فَيَنْظُرُ أَيُّهُدَى لَهُ أَمْ لَا؟ لَا يَأْتِي أَحَدٌ مِنْكُمْ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ إِلَّا جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، إِنْ كَانَ بَعِيرًا فَلَهُ رُغَاءٌ، أَوْ بَقْرَةً فَلَهَا خَوَارٌ، أَوْ شَاةً تَبَعْرٌ، ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْنَا عَفْرَةَ أَبِي طَيْبٍ، ثُمَّ قَالَ: "اللَّهُمَّ هَلْ بَلَغْتُ اللَّهُمَّ هَلْ بَلَغْتُ".

د ابو حميد ساعدي رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله یو ایزدي عامل مقرر کړو چه ابن اللتبية ورته وئیلې شول او ابن صرح وئیلی دی ابن الاتبييه دزکات دوصول کولو دپاره نو کله چه د خپل کارنه راغې وي رئیل داستاسو مال دي اوداماته هدیه شوې دي نو نبی صلی الله علیه و آله پاخيدو او په ممبراودريدو دالله حمد او ثنائې او وئيله او وئې فرمائيل چه د عامل دپاره دامناسب نه دی چه دي مونږ اوليږو اوزکات راوړي اوداسې وائی چه دا مال ستاسو دپاره

(۱) صحیح البخاري/الزكاة ۶۷ (۱۵۰۰)، الهبة ۱۷ (۲۵۹۷)، الأيمان والنذور ۳ (۶۶۳۶)، الحيل ۱۵ (۶۹۷۹)، الأحكام ۲۴ (۷۱۷۲)، صحیح مسلم للإمامة ۷ (۱۸۳۲)، تحفة الأشراف: ۱۱۸۹۵، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۲۳/۵)، سنن الدارمي/الزكاة ۳۱ (۱۷۱۱) (صحیح)

دې اودانور ماته هديه شوي دې كه چېرې دې دخپل مور او پلار په كور كښې ناست وي نوآياده ته هديه ملاويږي او كه نه، په تاسو كښې چه څوك ددې نه څه شي واخلي نوهغه به دقيامت په ورځ باندي راوړي كه چېرې اوښ وي نواوازونه به كوي او كه غواوي نوهم آوازونه به كوي او كه گد وي نوهم آوازونه به كوي بيانيې عليه السلام خپل لاسونه ډير اوچت كړل اووښې فرمائيل اي الله ايا ما دين ورسوو يعنى لكه څنگه چه تاوئيلي دى يقينا مادين ورسوو اي الله يقينا مادين اورسوو.

شرح الحديث:

قوله: **«عن ابى حميد الساعدي رضي الله عنه ان النبي صلى الله عليه وسلم استعمل رجلا من الازد يقال له ابن اللثبية قال ابن السرح ابن الاتبية على الصدقة الخ**»: د دې رجل ازدي عامل نوم عبدالله دې، دلته ئې نسبت د مور طرف ته دې، بنو لتب يوه قبيله ده د هغه د مور نوم نه دې معلوم كړې، رسول الله صلى الله عليه وسلم هغه لره د هغوى په صدقاتو باندي عامل مقرر كړو، يو ځل هغه صدقات راوړل، او وي وئيل چه دا مال خو د صدقې دې او دا مال ماته په هديه كښې ملاؤ شوې دې، د رسول الله صلى الله عليه وسلم چونكه عادت شريفه په دې موقع باندي د عام نصيحت فرمائيلو وو بغير د تخصيص نه په دې وجه هغوى منبر ته تشریف يوړو او د الله پاك د حمد او ثناء نه پس ئې دا خبرداري او فرمائيلو چه بعض عاملان داسې دى چه مونږ هغوى ليرو او هغوى واپس راځي او وائى چه دا مال خو د صدقې دې او دا مال زما دپاره هديه دې، وړاندي رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل چه دا سړي د خپلې مور يا پلار په كور كښې ولې نه كيناستلو چه هغه ته هديه وركولې كيده او كه نه؟ بيا چه وړاندي رسول الله صلى الله عليه وسلم څه او فرمائيل د هغې حاصل دا دې چه داسې مال مال د غلول دې او د غلول په باره كښې چه كوم وعيد راغلې دې هغه رسول الله صلى الله عليه وسلم بيان او فرمائيلو، هغه دا چه كه په مال د غلول كښې اوښ وي نو په ميدان حشر كښې به هغه اوښ د هغه په شا باندي سور او آواز كونكى راځي، او كه هغه مال غلول غوا وي نو بيا به هم دغه شان راځي هم دغه شان بيزه... الى اخر الحديث.

د عمالو د هدايا په باره كښې شراح ليكلې دى چه هغه حرام دى او رشوت دې، او د نورو هدايا په شان نه دى، ځكه چه عاملينو ته چه كوم خلق هدايا پيش كوي د هغوى غرض فاسدوى چه هغوى په زكوة وصولو كښې تخفيف او كړي او پوره واجب حق دهغه نه وانخلي.

كوم خيز چه د امر محظور ذريعه جوړه شي هغه هم محظور دې:

او شارحينو دا هم ليكلې دى چه د دې حديث نه دا هم معلوميږي چه كوم خيز ذريعه جوړه شي د يو امر محظور و ممنوع دپاره نو هغه ذريعه به هم ممنوع او محظور وي، ځكه چه رسول الله صلى الله عليه وسلم فرمائى چه د دې قسم عامل ته پكار دى چه هغه دې خپل كور كښې كښي او اودې گوري هغه ته هديه ملاويږي يا نه، ښكاره خبره ده چه نه به ملاويږي، نو د دې نه معلومه شوه چه هغه ته كومه هديه ملاويږي هغه هم هغه ده يعنى عدم استيفاء حق واجب يعنى پوره زكوة نه وصول كول، نو دا هديه ذريعه جوړيږي د عدم استيفاء د زكوة دپاره چه هغه يو امر محظور دې، والحديث اخرجه البخارى ومسلم، قاله المنذرى

باب فِي غُلُولِ الصَّدَقَةِ

د زکات د مال نه د غلا کولو بیان

[۲۹۴۷] () حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ أَبِي الْجَهْمِ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ، قَالَ: بَعَثَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاعِيًا، ثُمَّ قَالَ: "انْطَلِقْ أَبَا مَسْعُودٍ وَلَا الْفَيْئَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَجِيءُ عَلَيَّ عَلَى ظَهْرِكَ بَعِيرَيْنِ إِبِلِ الصَّدَقَةِ لَهُ رُغَاءٌ قَدْ غَلَّتَهُ، قَالَ: إِذَا الْأَنْطَلِقُ، قَالَ: إِذَا الْأَكْرَهُكَ".

د ابو مسعود انصاري رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله زه عامل مقرر کړم او بیا ئې او فرمائیل ای ابو مسعوده لار شه خوداسې نه چه د قیامت په ورځ دي اووینم چه په خپته کښې دي د زکات او بنس راوړې وي او آوازونه کوي ابو مسعود او وئیل که چرې داسې وی نوزه نه خم نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل په تاباندې زور نه کوو چه خامخالار شه مگر که ستا په خپل نفس باندې یقین وي ټولار شه او که نه وی نو نه تلل ستا د پاره بهتر دي.

﴿ عن ابی مسعود الانصاری رضي الله عنه قال بعث النبي صلی الله علیه و آله ساعيا الخ ﴾

هم د غلول فی الصدقة په باره کښې دا حدیث دي او په دي باندې وعید دي، چه د هغې مضمون پورته تیر شو.

باب فِي مَا يَلْزَمُ الْإِمَامَ مِنْ أَمْرِ الرَّعِيَّةِ وَالْحُجْبَةِ عَنْهُ

په امام باندې د قوم څه څه حقونه دي او د دي د تکميل بیان

یعنی په امام باندې چه د رعایا کوم حق واجب دي د هغوی خبر اخستل او ضروریات پوره کول وغیره.

[۲۹۴۸] () حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَزَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا مَرْيَمَ الْأَزْدِيَّ أَخْبَرَهُ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى مَعَاوِيَةَ، فَقَالَ: مَا أُنْعَمْنَا بِكَ أَبَا قَلَانٍ، وَهِيَ كَلِمَةٌ تَقُولُهَا الْعَرَبُ، فَقُلْتُ حَدِيثًا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ وَلَاهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ شَيْئًا مِنْ أَمْرِ الْمُسْلِمِينَ فَأَحْتَجَبَ دُونَ حَاجَتِهِمْ وَخَلَّتْهُمْ وَقَفَّرَهُمْ أَحْتَجَبَ اللَّهُ عَنْهُ دُونَ حَاجَتِهِ وَخَلَّتْهُ وَقَفَّرَهُ، قَالَ: فَجَعَلَ رَجُلًا عَلَى حَوَائِجِ النَّاسِ.

د ابو مریم ازدي نه روایت دي فرمائی چه زه معاويه بن ابی سفیان رضي الله عنه ته لارم هغه او وئیل دیربڼه کار دي او کړو چه دلته راغلي ما او وئیل يو حدیث مې اوریدلي دي کوم چه تاته بیانوم ماد نبی صلی الله علیه و آله نه اوریدلي وو چه فرمائیل ئې چاته چه د مسلمانانو کوم کار اوسپارلې شي او بیا هغه سرې د خلقو ضرورتونه نه پوره کوي ترڅو چه دغه خلق ضرورت مند با فقیران وي نو الله تعالی تر دغه وخته پورې د دغه کس ضرورتونه نه پوره کوي معاويه چه دا او وریدل نو معاويه يو کس نره د خلقو د ضرورتونو د پوره کولو د پاره مقرر کړو.

مضمون حدیث

قوله: ﴿ ان ابا مریم الازدی اخبره قال دخلت على معاوية رضي الله عنه قال انعمنا بك الخ ﴾

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۹۸۹) (حسن)

۲: سنن الترمذي للأحكام ۶ (۱۳۳۳)، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۷۳) (صحيح)

ابومریم ازدی رضی اللہ عنہا فرمائی چه زه يو خل سيدنا معاوية رضی اللہ عنہ ته لارم نو هغوی زما په لیدو سره د خوشحالی اظهار اوکړو او د عرب خلقو د عادت مطابق ئې « ما انعمنا بک » دا جمله استعمال کړه، دا صیغه د تعجب ده یعنی ستا زمونږ طرف ته راتلل د الله پاک خومره لونی انعام دې. هغوی او فرمائیل چه ما د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه يو حدیث اوریدلې وو هغه تاسو ته اوروم، هغه دا چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه کوم انسان الله پاک د مسلمانانو په کارونو کښې د يو کار ذمه دار مقرر کړی او بیا هغه د خلقو د ضرورت په وخت د خلقو مخې ته نه راځی په پرده کښې ناست وی نو د داسې انسان سره الله پاک هم داسې معامله فرمائی چه د هغه د حاجت او د ضرورت په وخت کښې په پرده کښې شی. وړاندې په روایت کښې دی چه « فجعل رجلا علی حوائج الناس » معاویه رضی اللہ عنہ د دې حدیث په اوریدو باندې يو سرې مقرر کړو د خلقو په حاجت باندې، یعنی چه د هغوی حاجتونه او مطالبات هغوی ته اورسوی. دا د معاویه رضی اللہ عنہ کمال اتباع او انقیاد دې چه په رعایا کښې يو سرې د هغوی د تنبیه دپاره يو حدیث واورولو نو د هغې په اوریدو سره ئې فورا د هغې مطابق عمل شروع کړو بغیر د څه قسم ناخوښې او تندی تریو کولو نه، آخر خلیفه وو امیر وو، د معاویه رضی اللہ عنہ داسې نور هم واقعات په کتب حدیث کښې کوم چه د هغوی په کمال حلم باندې دلالت کوی او د هغوی حلم مشهور هم دې. والحديث أخرجه الترمذی، قاله المنذری

[۲۹۴۹] (۱) حَدَّثَنَا سَلْمَةُ بْنُ شَيْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ: هَذَا مَا حَدَّثَنَا بِهِ أَبُو هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا أَوْتِيَكُمْ مِنْ شَيْءٍ يَوْمًا أَمْنَكُمْ مَوْءَةً إِلَّا أَخَارِنُ أَضْمُ حَيْثُ أَمِرْتُ".

د ابوهریره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی چه تاسو ته دخپل طرف نه نه څه درکوم اونه څه منع کوم زه دالله تعالی خزانچې یم چرته چه ماته حکم کیري هلته خراج کوم.

[۲۹۵۰] (۲) حَدَّثَنَا النَّقِيلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلْمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ عَطَاءٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانَ، قَالَ: ذَكَرَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَوْمًا الْقَيْءَ، فَقَالَ: مَا أَنَا بِأَحَقَّ بِهَذَا الْقَيْءِ مِنْكُمْ، وَمَا أَحَدٌ مِنَّا بِأَحَقَّ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا أَنَا عَلَى مَنَازِلِنَا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَقَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالرَّجُلِ وَقَدَمَهُ وَالرَّجُلِ وَبِلَاؤُهُ وَالرَّجُلِ وَعِيَالُهُ وَالرَّجُلِ وَحَاجَتُهُ.

د مالک بن اوس بن الحدثان نه روایت دې چه عمر فاروق رضی اللہ عنہ یوه ورځ د مال ئې ذکر اوکړو اووئې فرمائیل چه زه ستاسونه زیات ددې مال ئې حقدار نه یم اونه په مونږ کښې یوکس دبل کس نه ددې مال ئې زیات حقدار دې مگر دالله تعالی کتاب اود نبی صلی اللہ علیہ وسلم دتقسیم په طریقي سره ئې مونږ په خپلو خپلو درجو باندې قائم یو څوک چه داسلام په اعتبار سره قدیم ئې یا بهادر وي یا بال بچه داروي یا ضرورت مند وي نو هغه به ددې حقداروي.

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري لفرض الخمس ۷ (۳۱۱۷)، مسند احمد (۲) (۴۸۲، ۳۱۴) (صحيح)

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۳۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۲/۱) (حسن)

عن مالك بن اوس بن الحدثان قال ذكر عمر بن الخطاب رضى الله تعالى عنه يوما الفئ فقال ما انا باحق بهذا الفئ منكم وما احد منا احق به من احد الا انا على منازلنا من كتاب الله عزوجل وقسم رسوله فالرجل وقدمه والرجل وبلاؤه وعياله والرجل وحاجته

د مال فئ په باره كښي د عمر رضي الله عنه د اثر تشریح :

يعنى يو ورځ عمر رضي الله عنه د خلقو مخكښي د مال فئ ذكر او كړو او دا ئي او فرمائيل چه د دې مال فئ زه ستاسو نه زيات مستحق نه يم، بلكه څوك هم زمونږ نه زيات د دې مستحق نه دي. (۱) بلكه دا مال مشترك دې ټول په دې كښي برابر شريك دي، بيا ئي وړاندي او فرمائيل چه اگر كه په نفس استحقاق كښي ټول شريك دي خو د مرتبو د فرق لحاظ ساتلو سره د كتاب الله مطابق او د رسول الله صلى الله عليه وسلم د تقسيم عمل په رڼا كښي، بيا وړاندي د دې وضاحت دې فرمائي چه يو سړي دې او د هغه عيال او اولاد يعنى يو سړي د عيال خاوند دي او دويم د عيال خاوند نه دي او يو سړي دې او د هغه حاجت، يعنى يو سړي واقعي حاجت مند دي او د دويم سړي داسې څه حاجت نشته الحاصل د دې ټولو څيزونو رعايت كول هم ضروري دي.

مال فئ او غنيمت كښي فرق او د هر يو حكم او مصرف :

د عمر رضي الله عنه په دې حديث كښي د مال فئ حكم ذكر شوې دې مال فئ هغه مال دي چه بغير د قتال نه حاصل شي لكه هغه اراضي كوم چه مسلمانانو د مشركانو نه د هغوى په شړلو باندي خالي كړي وي بغير د قتال نه، لكه د بنو نضير زمكه او فدك هم دغه شان هم دغه شان د هر يو مقام او ښهر د فتح كولو نه پس چه د هغه ښهر نه كوم څيزونه حاصليري لكه جزيه وغيره او معاون دا ټول مال فئ دي، د مال غنيمت حكم خو په قرآن كريم كښي منصوص دي چه د هغې دې تخميس او كړې شي، يعنى يو خمس خو دې ځانله كړې شي او باقى اربعة اخماس دي په غانمينو كښي تقسيم كړې شي بيا د دې خمس په باره كښي دا دي چه دا دې پنځه ځايه تقسيم كړې شي لكه چه په دې آيت كريمه كښي ذكر شوې دي **﴿واعلموا انما غنمتم من شئ فان لله خمسهُ وللرسول ولذو القربى واليتامى والمساكين وابن السبيل﴾** د دې په شروع كښي د الله پاك نوم خو د بركت دپاره دي وړاندي باقى پنځه پاتې شو نو گويا دا خمس په پنځه ځايونو كښي تقسيمولې شي، په دې صورت كښي د هر يو په حصه كښي خمس الخمس راځي وړاندي يو مستقل باب را روان دي، **﴿باب بيان مواضع قسم الخمس﴾** وړاندي به د دې نور تفصيل انشاء الله راشي، دلته خو تبعاً د فئ د تقابل د وجې نه بيان كړې شوې ده د فئ په باره كښي چه كومه رائي د عمر رضي الله عنه ذكر شوې ده هم هغه د جمهور علماء كرامو او

۱) د ارض مفتوحه په باره كښي د عمر رضي الله عنه رائي: هم دغه شان د ارض مفتوحه په باره كښي د عمر رضي الله عنه رائي دا وه چه دا دې تقسيم نه كړې شي چه د ټولو مسلمانانو د ضرورتونو دپاره دا محفوظ اوساتلې شي چه ټول خلق ترې نه منتفع شي كښي د تقسيم په صورت كښي خو به په دې كښي د اشخاصو ملكيت شي. پس د هغوى دا حديث وړاندي را روان دي باب **﴿ما جاء في حكم ارض خيبر﴾** په آخرى حديث كښي هم دا دي، **﴿لولا اخر المسلمين ما فتحت قريه الا قسمتها كما قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم خيبر﴾**

ائمه ثلاثه رائي ده په دې کښې د امام شافعي رحمته الله عليه اختلاف دې، د هغوی په نزد چه کوم حکم د غنیمت دې هم هغه د فئ دې یعنی د مال فئ دې تخمیس او کړې شی بیا دې هغه خمس په مصارف خمس کښې صرف کړې شی، او باقی اربعة اخماس دې په مقاتلینو باندې تقسیم کړې شی، پس په شرح اقناع کښې دې (ینحس الفئ فیصرف الخمس مصارف الخمس، ویصرف اربعة اخماسه علی المقاتلة ای المرتزة للقتال خلافا للائمة الثلاثة اذ قالوا لا ینحس الفئ بل جمیعه لمصالح المسلمین) (۱)

دا اختلافی مسئله په کتاب الجهاد کښې باب دعاء المشرکین کښې د حدیث د لاندې داسې تیره شوي ده چه د شوافعو په نزد په بیت المال کښې مال په دوه قسمه وی، د هر قسم مصرف خائله خائله دې:

۱: د زکوة او صدقاتو مال، دا د عامة المسلمین چه غازیان نه وی دپاره دې.

(۱) د فئ د حکم په باره کښې نور تحقیق: وفي الجوهر النقي ۲۹۴/۶ ذکر النووي ان جماعة العلماء سوي الشافعي قالوا لا خمس في الفئ وقال ابن المنذر لا نعلم احدا قبل الشافعي قال بالخمس في الفئ، وقال ابو عمر في التمهيد وهو قول ضعيف لا وجه له من جهة النظر الصحيح ولا الاثر، وفي العالم للخطابي كان رأي عمر في الفئ ان لا ینحس لكن يكون لجماعة المسلمین لمصالحهم، واليه ذهب عامة اهل الفتوي غير الشافعي فان كان يري ان ینحس الخ وفي قواعد ابن رشد. قال قوم الفئ یصرف الجمیع المسلمین الفقیر والغني ويعطي الامام منه المقاتلة والولاة والحکام وينفق منه في النواصب التي تنوب المسلمین کبناء القناطر واصلاح المساجد، ولا خمس في شئ منه وبه قال الجمهور، وهو الثابت عن ابی بکر وعمر رضي الله عنهما ولم يقل احد بتخمیس الفئ قبل الشافعي وانما حملة علي ذلك انه رأي الفئ قسم في الاية علي عدد الاصناف الذي قسم عليهم (الخمس) فاعتقد ان فيه (الفئ) الخمس لانه ظن ان هذه القسمة مختصة بالخمس وليس ذلك باظهار بل الظاهر ان هذه القسمة تخص جمیع الفئ لا جزء منه، وفي التجريد للقدوري ما ملخصه قال اصحابنا الفئ كل مال وصل الينا من المشرکین بلا قتال كالاراضي التي اجلوا عنها وهو الخراج والعشر والجزية تصرف الي مصالح المسلمین وقال الشافعي اربعة اخماسه للنبي صلى الله عليه وسلم وخمسه يقسم كما يقسم خمس الغنیمة، الي آخر ما ذکر من الدلیل للحنفية، او په بیان القرآن کښې دې چه کوم مال د اهل حرب نه بغير د قتال نه حاصل شوي وی هغه فئ دې کذا في الهداية اموال بنو نضیر هم د دې قبیلې نه دی او فدک او نصف خیبر هم، په مال فئ کښې د امام صاحب په نزد خمس نشته، او د دې مالونو حکم دا دې چه رسول الله صلى الله عليه وسلم لکه د روایاتو د الفاظو نه معلومیری د دې مالک وو او په دې کښې چه کوم مصارف رسول الله صلى الله عليه وسلم ته بیان کړې شو وجوبا او ندبا هغه داسې دی لکه چه د مالونو په مالکانو باندې صدقه وی، خو دا اموال مملوکه د هغوی نه پس د میراث محل نه و بلکه وقف وو او دا خصوصیت وو د رسول الله صلى الله عليه وسلم رواه الشيخان، پس رسول الله صلى الله عليه وسلم د بنو نضیر د مالونو اکثر حصه مهاجرینو او انصارو کښې بعضو ته تقسیم کړه، رواه البيهقي، او په باقی کښې به خپل اهل و عیال ته د ټول کال د خرچې ورکولو نه پس چه خه بچ شو هغه به ئې په جهادی سامان او د اسلحې په اخستلو باندې خرچ کوله اخرجه الشيخان وغيرهما، او د خیبر د کتبي نه به ئې د فقراء مهاجرینو او د فدک د مسافرو امداد کولو اخرجه ابوداؤد وابن مردويه، او د رسول الله صلى الله عليه وسلم د ژوند نه روستو د دې مصارف صرف مصالح عامه دی مثل سد سفور و بناء قناطر وجسور او قضاة و عمال و علماء المسلمین و رزاق مقاتلین و ذراري مقاتلین کذا في الهداية او په دې مصالحو کښې مصارف خمس د غنیمت یتامی و مساکین، او ابن السبیل هم په کښې داخل دې وفيه بعد ذلك: او دا ذکر کړې شوي تقریر (کوم چه مونږ مختصر کړو) د احنافو په مسلک باندې دې او د امام شافعي رحمته الله عليه په نزد په فئ کښې هم خمس دې او خلور به اخماس په مصارف مذکوره کښې صرف کیری آه... مختصرا خو د هغې پوره عبارت چه پوره په یو صفحه کښې دې د د طالبانو او مدرسینو دپاره قابل مطالعه او په دې مقام باندې د پوهیدو دپاره ډیر زیات مفید دې.

۲: مال فی دا صرف د غازیانو او مجاهدینو دپاره وی، صرح به النووی وقال ایضا: ولم یفرق بینهما ابوحنيفة ومالك.

مصنف له پکار وو چه د عمر رضی اللہ عنہ حدیث ئې په را روان باب کښې ذکر کړې وې چه په هغې کښې هم دا مسئله ذکر ده د تقسیم فی، خو زما په ذهن کښې دا خبره ده چه مصنف ډیره کرته داسې کوی چه د مخکښې باب په آخر کښې داسې حدیث راوړی چه د راتلونکې باب سره مناسب وی په منزله د تمهید واللہ اعلم.

باب فی قسَمِ الْفِيءِ د مال فی د تقسیم بیان

[۲۹۵۱] () حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ زَيْدِ بْنِ أَبِي الزَّرْقَاءِ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ، دَخَلَ عَلَى مُعَاوِيَةَ، فَقَالَ: حَاجَتِكَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ: عَطَاءُ الْمُحَرَّرِينَ فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْلَّ مَا جَاءَهُ شَيْءٌ عَبْدًا بِالْمُحَرَّرِينَ.

دزید بن اسلم به روایت دې فرمائی چه عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہ معاویه رضی اللہ عنہ ته ورغې معاویه ورته ووتیل که څه ضرورت دي وي نو اووايه ابن عمر ورته ووتیل چه دازاد کړې شور غلامانو حصه ادا کړه یقینا ما نبی صلی اللہ علیہ وسلم لیدلي وو چه کله به ورته مال ئې راغې نو اول به ئې دهغې نه دازادو غلامانو حصه اوښکله.

مضمون الحديث:

قوله: ﴿ان عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہ دخل على معاوية رضی اللہ عنہ فقال حاجتك يا ابا عبد الرحمن؟ فقال عطاء المحررين الخ﴾: ابن عمر رضی اللہ عنہ معاویه رضی اللہ عنہ ته لاړو هغوی ترې نه تپوس اوکړو چه څه حاجت دي، څنگه راغلي ئې؟ هغوی او فرمائیل د محررينو دپاره مي حصه راوړې ده، ځکه چه ما رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم لیدلي دي چه کله به هغوی ته دچرته نه مال راغلو نو دهغې د تقسیم شروع به ئې د محررينو نه کوله، د محررين په مصداق کښې درې قول، په بذل کښې لیکلې شوي دي: ۱: معتقین یعنی آزاد کړې شوي غلام (ځکه چه د دي ضرورت ښکاره دي اوس خو آزاد شوي دي د ژوند تیرولو دپاره د روزگار بندوبست سمدستی څنگه کیدي شي. ۲: مکاتبین: چه هغه خپل بدل د کتابت ادا کړې شي ۳: عبادت گزار د الله پاک بندگان چه د دي ته شوي وي.

د حدیث مناسبت د ترجمه الباب نه ښکاره دي ځکه چه اول ﴿ما جاء شی﴾ د دي نه صرف مال فی مراد دي.

[۲۹۵۲] () حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا عَيْسَى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذُنْبٍ، عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نِيَّارٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أتَى بِغُلَبِيَّةٍ فِيهَا خَرَزٌ فَقسَمَهَا لِلْحُرَّةِ وَالْأَمَةِ، قَالَتْ عَائِشَةُ: كَانَ أَبِي رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقْسِمُ لِلْحُرِّ وَالْعَبْدِ.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۲۹) (حسن)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۳۵۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۶۷، ۱۵۹، ۲۲۸) (صحيح)

دام المومنین عائشة رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله ته دغمو یوه بوجی راوړل شوه نو هغه په اصیلو او وینخو باندي تقسیم کړی ام المومنین وائی چه زما والد صاحب به هم غلام او ازادته حصه ورکوله.

﴿ عن عائشة رضي الله عنها ان النبي صلی الله علیه و آله اتى بظية فيها خرز فقسهما للحرة والامة ﴾ یعنی هغوی ته یو تیلئ راغله چه په هغی کښې هیری او ملغلرې وې نو رسول الله صلی الله علیه و آله هغه په زنانو کښې په آزادو او وینزو ټولو کښې تقسیم کړه، وړاندي عائشة رضي الله عنها فرمائی چه هم دغه شان به زما پلار هم په آزاد او غلام ټولو کښې تقسیمولو، یعنی مال فء لره، او د عائشې رضي الله عنها په روایت مرفوعه کښې حرة او امة د تخصیص خرز په لحاظ سره دې چه هغه هم د هغوی د کار خیزونه وی.

[۲۹۵۳] () حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ. ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الدُّحَفَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْمَغِيرَةِ جَمِيعًا، عَنَّصَفْوَانَ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ نَفِيرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَفِّ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كَانَ إِذَا آتَاهُ الْفَيْءُ قَسَمَهُ فِي يَوْمِهِ، فَأَعْطَى الْأَهْلَ حَظَّيْنِ وَأَعْطَى الْعَزَبَ حَقًّا"، زَادَ ابْنُ الْمُصَفَّى: قَدْ عِينَا وَكُنْتُ أَدْعِي قَبْلَ عَمَّارٍ قَدْ عَيْتُ فَأَعْطَانِي حَظَّيْنِ وَكَانَ لِي أَهْلٌ، ثُمَّ دَعَى بَعْدِي عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ فَأَعْطَى لَهُ حَقًّا وَاحِدًا.

دعوف بن مالک رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه کله به نبی صلی الله علیه و آله ته مال ئی راغې نو په همدغه ورځ به ئی تقسیم کړو، او متاهل ربال بچه دار ته به ئی دوه حصې ورکولې او مجرد ته به ئی یوه حصه ورکوله. دابن المصفي په روایت کښې ورسره دا اضافه ده چه دوی راوبلل شول اوزه دعمارنه مخکښې را اوبللي شوم اوماته دوه حصې را کړې شوې اوزه شادي شده وم، بيازمانه پس عمار بن یاسر را اوبللي شو او یوه حصه ورته ورکړې شوه.

﴿ عن عوف بن مالك رضى الله تعالى عنه ان رسول الله صلی الله علیه و آله كان اذا اتاه الفئ قسمه في يومه فاعطى الاهل حظين واعطى العزب حظا ﴾

یعنی چه کله به رسول الله صلی الله علیه و آله ته مال فئ راتلو نو هغه ورځ به رسول الله صلی الله علیه و آله د هغې تقسیم کولو، د بې واده کړی دپاره یو حصه، او واده کړی ته به ئی دوچند ورکولو.

باب فِي أَرْزَاقِ الدَّرِيَّةِ

د مسلمانانو اولاد ته د حصې ورکولوبیان

[۲۹۵۴] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ مَنْ تَرَكَ مَالًا فَلَا هِلَةَ وَمَنْ تَرَكَ دَيْنًا أَوْ ضِيَاعًا فَأَلَى وَعَلَى".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله به فرمائیل چه زه په مومنانو باندي

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۰۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۹، ۲۵/۶) (صحیح)

۲: سنن ابن ماجه / المقدمة ۷ (۴۵)، والصدقات ۱۳ (۲۴۱۶)، (تحفة الأشراف: ۲۶۰۵)، وقد أخرجه: صحیح مسلم الجمعة

۱۳ (۸۱۷)، سنن النسائي / العيدین ۲۱ (۱۵۷۹)، والجائز ۶۷ (۱۹۶۴)، مسند احمد (۳۷۱/۳) (صحیح)

دهغوی نه زیات مهربان یم که چرې دچانه مال پاتې شي نو هغه دده داهل اوبال بیج حق دې او که چرې څوک په خپله ذمه قرض یا بال بیج پریرېدي نو دهغې زه ذمه واریم. د ذریت نه مراد یتیم او نابالغ ماشومان، مطلب دا دې که هغه فقیر وی نو د هغه نفقه به د بیت المال نه وی، د حدیث الباب مضمون رومبی تیر شوې دې، د خطابي ﷺ په شرح کښې دې چه زنانه هم په دې حکم کښې دی یعنی کونډې او ضرورت مند. والحديث اخرج ابن ماجه، قاله المنذرى

[۲۹۵۵] (١) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ وَمَنْ تَرَكَ كَلًّا فَلَيْنَا".

د ابو هريره رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی که چرې دچانه مال پاتې شي نو هغه دده دوارثانو حق دې او که چرې څوک تاوان پریرېدي نو دهغې زه ذمه واریم.

[۲۹۵۶] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يَقُولُ: "أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ فَأَيُّمَا رَجُلٍ مَاتَ وَتَرَكَ دِينًا فَأَلَيْ وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ".

د جابر بن عبد الله نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ به فرمائیلي: چه زه په هر مومن باندې دهغه نه زیات مهربان یم که چرې هر یو مومن مړ شي او قرض پزیرېدي نو دهغې زه ذمه واریم او که چرې څوک مال پریرېدي نو هغه دده دوارثانو حق دې، احادیث الباب کتاب الفرائض کښې تیر شوې دې، نو وضاحت ته ئې حاجت نشته.

بَاب مَتَى يُقْرَضُ لِلرَّجُلِ فِي الْمُقَاتِلَةِ

د کوم عمر والا سرې دپاره به حصه مقررولې شي؟

شرح الحديث :

(المقاتلة) په کسري د تاء سره او صیغه د مونث په اعتبار د جماعت سره، د دې نه مراد مقاتلین او غازیان دی، او دا د ذریت مقابل دی کوم چه په باب سابق کښې تیر شوې دې، فرض وائی هغه مقررره حصې ته کوم چه د بیت المال نه مجاهدینو ته ملاویرې او په جهاد کښې هغه انسان تلی شي چه بالغ وی، نو د ترجمه الباب حاصل دا شو چه انسان لره په مقاتلین کښې شمیرلو سره کله یعنی په کوم عمر کښې به د هغه حصه مقرر کولې شي؟ او جواب ئې دا دې چه کله هغه بالغ شي، او د بلوغ نه مخکښې نه خو هغه د مقاتلینو په فهرست کښې راتلې شي او نه به هغه ته د مقاتلینو حصه ملاویرې.

(١): صحيح البخاري/الاستقراض ١١ (٢٣٩٨)، الفرائض ٢٥ (٦٧٦٣)، صحيح مسلم للفرائض ٤ (١٦١٩)، (تحفة الأشراف: ١٣٤١٠)، وقد أخرج ابن ماجه للصدقات ١٣ (٢٤١٦) مسند احمد (٢/٢٩٠، ٤٥٣، ٤٥٥) (صحيح)
(٢): تقدمه أبو داود، (تحفة الأشراف: ٣١٥٩) (صحيح)

[۲۹۵۷] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرَضَهُ يَوْمَ أُحُدٍ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعٍ عَشْرَةَ، فَلَمْ يُجْزَأْ وَعَرَضَهُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ وَهُوَ ابْنُ خَمْسٍ عَشْرَةَ سَنَةً، فَأُجِزَأَ.

دا بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه دا حد په ورځ زه نبی صلی الله علیه و آله ته پیش کړې شوم اوزه دخوارلسو کالووم نوزه ئې دجهاد دپاره قبول نکرم کله چه دخندق په ورځ باندي ورته پیش کړې شوم نو دپنځلسو کالو ووم نویانی دجهاد دپاره قبول کرم.

په دي باب کښې مصنف د ابن عمر رضي الله عنهما واقعه ذکر کړې دي چه دهغه کور والو د جنگ احد په موقع باندي د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت کښې پیش کړو یعنی په جهاد کښې د شرکت دپاره په داسې حال کښې چه هغه د پوره خوارلس کالو و و نو رسول الله صلی الله علیه و آله اجازت ورنکړو، او بیا په بل کال چه کله د غزوه خندق په موقع باندي چه کله په هغوی باندي پیش کړو نو هغه وخت رسول الله صلی الله علیه و آله هغه ته اجازت ورکړو چه هغه د پنځلسو کالو شوې و و. د ائمه ثلاثه او صاحبینو مسلک هم دا دي چه حد د بلوغ پنځلس کاله دي.

وعند الامام ابی حنیفة خمس عشرة سنة للأنثى، وثمانية عشر للذكر، وفي (البذل) هذا اذا لم يحتلم واما اذا احتلم قبل ذلك حکم ببلوغه من الاحتلام آه.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

باب في كراهية الافتراض في آخر الزمان

په آخری دور کښې د حصې د وصول کولو د کراهیت بیان

افتراض یعنی اخذ الفرض والحصته، یعنی د بیت المال نه د غازی خپله حصه او وظیفه اخستل، د فرض معنی حصه ورکول او د افتراض معنی حصه اخستل، مثل الکیل والاکتیل.

[۲۹۵۸] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي الْخَوَّارِيِّ، حَدَّثَنَا سَلِيمُ بْنُ مَطِيرٍ شَيْخٌ مِنْ أَهْلِ وَاْدِي الْقُرَى، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي مَطِيرٌ، أَنَّهُ خَرَجَ حَاجًّا حَتَّى إِذَا كَانَ بِالسُّوَيْدَاءِ إِذَا بَرَجِلَ، قَدْ جَاءَ كَأَنَّهُ يَطْلُبُ دَوَاءً وَحَضًّا، فَقَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حُجَّةِ الْوُدَاعِ وَهُوَ يَعْطُ النَّاسَ وَيَأْمُرُهُمْ بِنَهَائِهِمْ؟ فَقَالَ: "يَا أَيُّهَا النَّاسُ خُذُوا الْعَطَاءَ، مَا كَانَ عَطَاءً فَإِذَا تَجَافَقَتْ قُرَيْشٌ عَلَى الْمَلِكِ وَكَانَ عَنْ دِينِ أَحَدِكُمْ فَدَعُوهُ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، وَرَوَاهُ ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَسَّارٍ، عَنْ سَلِيمِ بْنِ مَطِيرٍ.

سليم بن ابی مطير دخپل پلار ابو مطير نه روایت کوي فرمائی چه ابو مطير حج ته روان شو کله چه سویداء مقام ته ورسیدو نو یوکس دسترگو ددوائی دغوښتلو دپاره راغې او وئې وئیل مادهغه کس نه اوریدلي دي چاچه دنبي صلی الله علیه و آله نه په حجة الوداع کښې اوریدلي وو چه خلقو ته ئې دښه کارونو حکم کولو اودبدو کارونونه ئې منع کول اودائې ورته هم اوفرمائیل اي خلقو دوخت دحاکم تحفه قبلوی ترخوچه دشریعت مطابق وي خو کله چه د

(۱): صحيح البخاري/الشهادات ۱۸ (۲۶۶۴)، والمغازي ۲۹ (۴۰۹۷)، سنن النسائي/الطلاق ۲۰ (۳۴۶۱)، (تحفة الأشراف: ۷۸۳۳، ۸۱۱۵، ۸۱۵۳)، وقد أخرجه: صحيح مسلم/الإمارة ۲۳ (۱۸۶۴)، سنن الترمذي/الأحكام ۲۴ (۱۳۱۶)، والجهاد ۳۱ (۱۷۱۱)، سنن ابن ماجه/الحدود ۴ (۲۵۴۳)، مسند احمد (۱۷/۲) ويأتي هذا الحديث في الحدود (۴۴۰۶) (صحيح) (۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۵۴۶) (ضعيف)

قریشو په مینځ کښې دیوبل سره په حکومت باندې جنگ کول شروع شي او تحفي دقرض بدل جوړ شي نو ددي داخستونه انکار او کړئ. ابوداؤد وائی چه داروایت محمد بن یسار بن سلیم بن مطیر په واسطه دابن مبارک سره هم نقل کړې دي.

شرح الحدیث:

قوله: ﴿ حدیثی ابی مطیرانه خرج حاجا حتی اذا کان بالسويداء ء اذا انا برجل قد جاء کانه یطلب دواء لو حضضا ﴾: سلیم بن مطیر وائی چه ماته بیان کړې دي زما پلار مطیر چه هغوی حج دپاره روان وو، چه کله مقام سویداء ته اورسیدل نو مطیر وائی چه ما سره یو سرې ملاؤ شو چه هغه یو دوائی لیتوله، یا ئې دا اوئیل حضض ئې لیتولو، دا هم د یوئ دوائی نوم دي چه هغې ته رسوت (ترخه دواء) وائی، عطاریان ئې پیژنی، مطیر وائی چه هغه سرې ماته یو حدیث واورولو کوم چه هغوی ته د رسول الله ﷺ نه بالواسطه رسیدلې وو، هغه دا چه رسول الله ﷺ خلقو ته وعظ او نصیحت فرمائیلو په حجة الوداع کښ، په دي کښې رسول الله ﷺ دا هم او فرمائیل ﴿ یاایها الناس خذوا العطاء ماکان عطاء فاذا تجا حفت قریش علی الملک وکان عن دین احدکم، فدعوه ﴾ یعنی رسول الله ﷺ او فرمائیل چه عطاء اخلئ ترخو چه هغه عطاء عطاء ده، د دي نه مراد هغه وظیفه ده چه د بیت المال نه غازیانو او مجاهدینو ته ملاویری، پس هر کله چه قریش په حکومت او بادشاهت باندې جهگړې شروع کړې او هغه ورکړه د قرض په مقابل او بدله کښې شی نو بیا هغه پریرده، او د دي نه په وړاندې روایت کښې دي ﴿ وعاد العطاء رشا فدعوه ﴾ (۱) یعنی چه کله وظیفه پاتې نه شی بلکه رشوت جوړ شی نو بیا هغه پریردئ، یعنی چه کله حکومت فوج لره په باطل او د ظلم په حمایت کښې استعمال کړی حق او ناحق ته او نه کتلې شی نو د هغه وخت د وظیفې نوعیت به د رشوت شی او رشوت اخستل جائز نه دی.

[۲۹۵۹] (۱) حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمُ بْنُ مَطْيَرٍ مِنْ أَهْلِ وَاْدِي الْقُرَى، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلًا يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوُدَاعِ فَأَمَرَ النَّاسَ وَتَمَاهُمُ، ثُمَّ قَالَ: "اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ قَالُوا: اللَّهُمَّ نَعَمْ، ثُمَّ قَالَ: إِذَا تَجَا حَفَّتْ قُرَيْشٌ عَلَى الْمُلْكِ فِيمَا بَيْنَهَا وَعَادَ الْعَطَاءُ أَوْ كَانَ رِشَاءً فَدَعُوهُ"، فَقِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: هَذَا ذُو الْوَأْبِدِ صَاحِبُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

سلیم بن ابی مطیر دخپل پلار ابو مطیر نه روایت کوی فرمائی چه هغه دیوکس نه اوریدلی دی او هغه دښې ﷺ نه په حجة الوداع کښې اوریدلی وو چه خلقوته ئې دښه کارونو حکم کوو اودبدو کارونونه ئې منع کول اوددي نه پس ئې او فرمائیل ای الله ایاماستا پیغام اورسوو؟ خلقو عرض او کړوهو ضرور، بیانی ﷺ او فرمائیل کله چه په قریشو کښې په حکومت باندې جنگ شروع شي اودهدي نه رشوت جوړ شي اود مستحق په ځانې باندې غیر مستحق ته ملاویری نو تاسو هدی اخستل پریردئ خلقو او وئیل داسې به څوک وي؟ نو او وئیلې شول چه ذو الوائد له صاحب رسول صلی الله علیه وسلم.

(۱) رشا جمع رشوة والرشوة ما يعطي لاحقاق باطل او ابطال حق

(۲) تقرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۳۵۴۶) (ضعیف)

باب فِي تَدْوِينِ الْعَطَاءِ

په شاهي دفتر كښي د مستحقينو د نومونو ليكلو بيان

يعني د مجاهدينو د نومونو د ليكلو دپاره ديوان مرتب كول يعني رجستير
 قيل اول من دون الديوان عمر، يعني د ټولو نه اول دا كار عمر رضي الله عنه او كړو، ديوان په
 معني د رجستير چه د هغې جمع دواوین راځي. د مجاهدين (فوج) نومونه باقاعده په رجستير
 ليكلي شي بيا هم د هغې مطابق هغوی ته وظيفه وركولې شي، او بله دا چه د هغوی بدلي
 هم كيږي كال په كال لکه چه په حديث كښي دي.

[۲۹۶۰] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ يَعْنِي ابْنَ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ
 كَعْبِ بْنِ مَالِكِ الْأَنْصَارِيِّ، أَنَّ جَيْشًا مِنَ الْأَنْصَارِ كَانُوا بِأَرْضِ فَارِسٍ مَعَ أَمِيرِهِمْ، وَكَانَ عُمَرُ يَعْقُبُ الْجِيُوشَ فِي كُلِّ
 عَامٍ فَشَغِلَ عَنْهُمْ عُمَرُ، فَلَمَّا مَرَّ الْأَجَلَ قَفَلَ أَهْلُ ذَلِكَ الثَّغْرِ فَأَشْتَدَّ عَلَيْهِمْ وَتَوَاعَدَهُمْ وَهُمْ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ
 صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا عُمَرُ إِنَّكَ غَفَلْتَ عَنَّا وَتَرَكْتَ فِينَا الَّذِي أَمَرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ
 إِعْقَابِ بَعْضِ الْغَزَايَةِ بَعْضًا.

د عبدالله بن كعب بن مالك انصاري نه روايت دي فرمائي چه دانصارو يولښكر دخپل
 امير سره په فارس علاقه كښي وو، او عمر به هر كال لښكرونه بدلول نويو ځل ددوي نه عمر
 مشغول كړي شو په نورو امورو كښي كله چه نيته تيره شوه نو دغه لښكروالا واپس
 راغلل نو عمر رضي الله عنه ورسره سختې وكړله اردوي ئې او يروال او حال دادې چه دوي دنبي صلى الله عليه وسلم
 صحابه كرام وو، دوي عرض وكړو چه اي عمر ته خوزمونږ نه غافله شوي ئې او هغه طريقه
 دي پريخودلې ده كومه چه به نبي صلى الله عليه وسلم كوله چه په يو لښكر پسې به ئې بل لښكر ليرلو ددي
 دپاره مخكښي كسان راشي اودمه وكړي.

﴿ عن عبدالله بن كعب بن مالك الانصاري رضي الله عنه ان جيشا من الانصار كانوا يارض فارس مع اميرهم
 وكان عمر يعقب الجيوش في كل عام فشغل عنهم عمر فلما مر الاجل قفل اهل ذلك الثغراخ ﴾

مضمون هديت:

يعني د انصارو يو لښكر دخپل امير سره د فارس زمكې ته د جهاد دپاره تلې وو. د جنگ
 سلسله چونكه مسلسل وه په دې وجه به عمر رضي الله عنه هر كال لښكري بدلولې، يعني د كال په
 پورا كيدو باندي دويم لښكر او نه ليرلې شو. چه كله د هغه لښكر موده پوره شوه نو د هغه
 د هغه ځانې راغلل، چه كله عمر رضي الله عنه هغوی اوليدل نو هغوی ته غصه شو او سخت الفاظ ئې
 ورته استعمال كړل، راوي وائي ﴿ وهم اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ﴾ يعني هغوی آخر د اوچتې
 درجې صحابه كرام رضي الله عنهم وو. چه كله هغوی ډير زيات اورتلو نو هغه حضراتو اووې (په همت
 كولو سره) ﴿ يا عمر انك غفلت عنا ﴾ اي عمر اوگورئ اغفلت او هيره ستاسو د طرف نه
 شوې ده. تاسو هغه څيز چه د هغې رسول الله صلى الله عليه وسلم حكم كړې دي يعني متبادل فوج روانول
 تاسو داسې ولې اونكړل.

دلته ټوكلو والا رټلو والا او رټلو اوریدو والا ټول داخلص والا وو. د هر یو په بل باندې اطمینان او اعتماد وو، دې جماعت ته معلومه وه چه د عمر رضی اللہ عنہ شان ^(۱) انه كان وقافا عند كتاب الله تعالى ^(۲) چه هغوی به د حق خبرې مخکښې فورا سر ښکته کولو هم دغه شان د هغه حضراتو د جواب همت پیدا شو، پس هم داسې اوشوه چه په عمر رضی اللہ عنہ باندې د هغوی خبره بالکل بده او نه لگیده، رضی الله تعالی عنهم ورزقنا شیئا من الباعهم.

مناسبة الحديث للترجمة :

دلته دا سوال واردیږي چه د دې حدیث د ترجمه الباب سره څه تعلق دي، په ظاهر کښې خو هیڅ نه دي، باقی دا وئیلې کیدې شی چه ممکنه ده چه د عمر رضی اللہ عنہ په اعقاب جیش کښې چه کوم روستو والې او کړو هغه کیدې شی هم په دې وجه اوشو چه هغوی د دیوان په تیارولو کښې مشغول وو. کذا فی البذل عن فتح الودود للعلامة السندی یا داسې او ایئ چه په وخت چه کوم اعقاب جیش او نه شو په دې کښې هم د دې دخل وو چه تر اوسه پورې داسې دیوان نه وو تیار شوي چه په هغې کښې به د لښکرو نومونه وې په دې وجه د متبادل جماعت په لیرلو کښې هیره اوشوه او بیا د دې واقعي په پیښیدو باندې هغه مرتب کړي شو.

[۲۹۶۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَائِدٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا عَيْسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنِي فِيمَا حَدَّثَهُ ابْنُ لَعْدِي بْنِ عَبْدِ الْكِنْدِيِّ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ، كَتَبَ إِذَا مَنْ سَأَلَ عَنْ مَوَاضِعِ الْفِيءِ فَرَمَا حَكْمَ فِيهِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَرَأَهُ الْمُؤْمِنُونَ عَدْلًا مُوَافِقًا لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ اللَّهُ الْحَقَّ عَلَى لِسَانِ عَمْرٍو وَقَلْبِهِ فَرَضَ الْأَعْطِيَةَ، وَعَقَدَ لِأَهْلِ الْأَدْيَانِ ذِمَّةً بِمَا فَرَضَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْحِزْبَةِ لَمْ يَضْرِبْ فِيهَا بِخَمْسٍ وَلَا مَغْنَمٍ.

دعدي بن حاتم هدیوځوي نه روایت دي فرمائی چه عمر بن عبد العزيز یو خط اولیکلو چه څوک دامعلومول غواړی چه مال ئې دي چرته خرج کړې شي نو ددې جواب دادې لکه څنگه عمر فاروق رضی اللہ عنہ د مال ئې دخرج کولو حکم کړې وو او مومنانودا عدل او گنډلو په وجه ددې دقول دښی عليه السلام چه الله تعالی حق لره د عمر په ژبه اوزره کښې اچولې دي، عمر رضی اللہ عنہ بخششونه مقرر کړل اودجزیه په بدل کښې ئې د ټولو مذاهבוד خلقو ذمه واري واخستله اونه ئې ددي نه خمس واخستواونه ئې دغنیمت په شان اوگنرلو.

(۲) ان عمر بن عبدالعزيز كتب ان من سال عن مواضع الفيء فهو ما حكم فيه عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ فراه المؤمنون عدلا موافقا لقول النبي صلى الله عليه وسلم جعل الله الحق على لسان عمر وقلبه فرض الاعطية وعقد لاهل الاديان ذمة بما فرض عليهم من الحزبة لم يضرب فيها بخمس ولا مغنم ^(۱).

شرح الحديث :

يعنى عمر بن عبد العزيز عمر ثانی رضی اللہ عنہ د خپلو عمال په نوم باندې دا مضمون اولیږو چه کوم انسان ستا نه تپوس او کړی دتقسیم فئ په باره کښې (چه هغه چا چا ته ورکولې شی) نو تاسو هغوی ته جواب ورکوی چه مواضع فئ هم هغه دي د کومو چه عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ فیصله فرمائیلې ده او ټولو مسلمانانو هغه تسلیم کړه او هغه ئې د رسول الله صلى الله عليه وسلم ددې قول

^(۱) : تفرد به ابو داود (ضعيف الإسناد)
(د مغنم نه مراد مال فئ دي)

مطابق بیا موندله ﴿ جعل الله الحق على لسان عمر وقلبه ﴾ (د دې نه پس د عمر رضي الله عنه طرز عمل ذکر شوي دي، هغوی د لښکرو وظيفې مقرر کړې او د اهل اديان يعنی اهل کتاب دپاره ئې د عهد او امان معامله او کره د جزئې په بدل کښې، هغوی په دې جزیه کښې (او هم دغه شان په نور اموال فئ کښې) خمس نه دې مقرر کړې، د عدم تخميس مطلب هم دا دې چه هغوی مال فئ په بيت المال کښې پريخودلو د عام مسلمانانو د مصالحو دپاره، او هم دا عمر ثاني عمر بن عبدالعزیز رضي الله عنه اختيار کړه. په دې کښې د امام شافعی رحمته الله عليه اختلاف پورته تیر شوي دي چه هغوی په مال فئ کښې د تخميس او په غازيانو کښې د تقسيم قائل دي.

[۲۹۶۲] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ مَكْحُولٍ، عَنْ غُضَيْفِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ اللَّهَ وَضَعَ الْحَقَّ عَلَى لِسَانِ عُمَرَ يَقُولُ بِهِ".

د ابو ذر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه د نبی کریم صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل ئې الله تعالی د عمر فاروق په ژبه باندې حق جاری کړې دي نو دې چه څه وائی حق وائی.

باب فِي صَفَايَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْأَمْوَالِ

دهغو مالونو بيان کوم چه به نبی علیه السلام

د غنيمت د مال نه د ځان دپاره منتخب کول

دا باب ډیر زیات اوږد دي او وضاحت ته هم محتاج دي زما په نزد ډیر گران دي.

د ترجمه الباب تشریح او غرض د مصنف رحمته الله عليه:

صفایا د صفی جمع ده، د خو بابونو نه روستو یو باب را روان دي، ﴿ ما جاء في سهم الصفي ﴾ خو هغه دي تکرار اونه گنرلې شی دواړه صفی ځانله ځانله دی، دلته خو د صفایا نه مراد مطلق اموال مراد دی ځکه چه د رسول الله صلی الله علیه و آله په زمانه کښې چه به کوم مال فئ حاصلیدو هغه د قرآن کریم د تصریح مطابق خپله د رسول الله صلی الله علیه و آله دپاره وو. ﴿ وما افاء الله على رسوله منهم فما اوجفتم عليه من خيل ولا ركاب ولكن الله يسلط رسله على من يشاء ﴾ په دې وجه دلته صفایا د جمع صیغه استعمال کړې شوه او دهغې اضافت رسول الله صلی الله علیه و آله ته او کړې شو.

په تیر باب کښې د مال فئ چه کوم حکم بیان شوي دي هغه د رسول الله صلی الله علیه و آله د زمانې نه پس دپاره دي، اوس چه هر کله دا خبره ده چه د رسول الله صلی الله علیه و آله د زمانې مال فئ خالص د هغوی ملک وه په هغې کښې د رسول الله صلی الله علیه و آله اختیار وو چه چرته ئې غواړی خرچ کولې ئې شی، نو اوس دا سوال پیدا کیدو چه دا قسم صفایا یعنی خالص مالونه د رسول الله صلی الله علیه و آله دپاره کړې شوي دي، او بله دا چه رسول الله صلی الله علیه و آله به په خپل ژوند کښې په هغه مالونو کښې چه څنگه تصرف کولو چرته او څنگه به ئې چه غوښتل خرچ کولې ئې شو او دا چه په دې کښې د بعد الوفات دپاره رسول الله صلی الله علیه و آله فیصله او فرمائیله دا حاصل دي د ترجمه الباب چه دهغې تفصل وړاندې را روان دي.

(۱) سنن ابن ماجه للمقدمة ۱۱ (۱۰۸)، (تحفة الأشراف: ۱۱۹۷۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۵/۵، ۱۶۵، ۱۷۷) (صحیح)

(۲) د دې تشریح او تفصیل وړاندې په کتاب کښې را روان دي.

د رسول الله ﷺ د پاره به په غنیمت کښې درې حصې وې :

او هغه سهم صفی چه د هغې ذکر په وړاندې باب کښې را روان دې هغه بیل خیز دې ځکه چه مشهوره ده چه د رسول الله ﷺ د پاره درې حصې وې. ۱: سهم کسهم احد الفانین ۲: خمس الخمس یعنی خمس مال غنیمت لره چونکه په پنځو ځایونو کښې تقسیمولې شی په دې کښې یوه حصه د رسول الله ﷺ ده چه خمس الخمس ده. ۳: سهم صفی... صفی په معنی د منتخب او غوره یعنی رسول الله ﷺ ته د دې خبرې حق وو چه هغه په مال غنیمت کښې یو خیز کوم چه هغوی خوښ گنړی که سورلئ وی، که وینزه وی یا که وسله وی اخستلې شی په دې درې حصو کښې خو د رومی دوو په باره کښې په روایتونو کښې تصریح او د علماء کرامو اتفاق دې چه هغه د هغوی د پاره په هر حال کښې وې که هغوی په هغه غزوه کښې شریک شوې وو او که نه وو (شهد القتال او لم یشهد) او په دریم قسم کښې روایات مختلف دی، په دې راتلونکې باب په یو روایت کښې خو تصریح ده چه سهم صفی شرکت فی الغزوة په صورت کښې دهغوی د پاره وو هم داسې نه، او هم د هغه باب د آخری روایت نه معلومیرې چه مطلقا وو. د گنگوهی رضی الله عنه راثې هم دا ده چه هغه هم د رسول الله ﷺ د پاره مطلقا وه، خو سهارنپوری په بذل کښې فرمائیلي دي چه (لم اجد التصريح فی کتب الفقه بذلك)

د رسول الله ﷺ د صفایا مصداق او تعیین :

اوس د موجوده باب په باره کښې یعنی صفایا په سلسله کښې واورئ، دا صفایا څه وه، د دې تفصیل په دې پوره باب کښې چه ښه کافی اوږد دې د مختلفو روایاتو په ضمن کښې خور دې، پس وړاندې په یو روایت کښې داسې راځی چه (کانت لرسول الله ﷺ ثلاث صفایا بنو النضیر وخیبر وفدک الی اخر الحدیث) خو صرف په دې دريو کښې انحصار نه دې بلکه د دې نه علاوه هم دی، د دې باب د ټولو روایتونو او د شارحینو د کلام نه چه د رسول الله ﷺ د صفایا کوم تفصیل په فهم کښې راځی هغه لاندې لیکلې شی.

۱: هبه کړې شوې باغونه یعنی هغه څو باغونه کوم چه بعض یهودو د اسلام قبلولو نه پس رسول الله ﷺ ته هبه کړې وو په طریقه د وصیت، او هم دغه شان بعض زمکې کومې چه بعض انصارو رسول الله ﷺ ته هبه کړې وې

۲: نیمه زمکه د فدک چه کله د خیبر د یهودو سره جنگ شروع وو او مسلمانانو هغه فتح کولو نو هغه وخت د فدک یهودو د رسول الله ﷺ سره د فدک د زمکې په نیم امدن باندې صلح کړې وه رسول الله ﷺ دا صلح قبول کړې وه او هلته د قتال وغیره ضرورت نه ووراعلې په دې وجه دا د فدک نیمه زمکه مال فنی شوه او مال فنی به وو هم د رسول الله ﷺ ملک لکه چه مخکښې تیر شو، زمونږ د اردو په کتابونو کښې دا د فدک د باغ په نوم مشهور دې.

۳: د خیبر نیمه زمکه، رسول الله ﷺ د خیبر زمکه فتح کولو سره نیمه زمکه خو د غانمینو تر مینځه تقسیم فرمائیلي وه او نیمه ئې باقی پریخودلې وه ()

(۱) دا مسئله چه د ارض مفتوحه تقسیم ضروری دې یا غیر ضروری مختلف فیه ده د امامانو تر مینځه چه وړاندې به راشی

۴: د بنو نضیر زمکه بنو نضیر د یهودو یوه مشهوره قبیله وه چه مدینې ته نزدې متصلا د دوه میلو په فاصله باندي یوه باندې کښې آباډه وه، رسول الله ﷺ د صحابه کرامو ﷺ سره هلته د قتال دپاره تشریف یووړو، د معمولی جنگ نه پس هغوی د خپلو خانونو بیج کولو دپاره په قلعه کښې بند شو هلته د مسلمانانو محاصره وه، (ثم نزلوا علی الجلاء) یعنی په دې شرط باندي هغوی لاندې راکوز شو چه مونږ به دا کلې پریږدو او لار به شو او د هغوی سره دا فیصله شوې وه چه هغوی په خپل منقوله مالونو کښې چه خومره اوږې شی اوږلې شی سوا د وسلې نه نو چونکه د بنو نضیر د زمکې په فتح کولو کښې هم باقاعده د آسونو زغلولو حاجت نه وو راغلي مدینې ته بالکل د نزدې کیدو د وجې نه دا هم مال فئ شو نو دا د بنو نضیر زمکه د رسول الله ﷺ ملک شو، او بعض نور اموال منقوله هغوی د خپل خان سره یونړلې شو هغه رسول الله ﷺ په مسلمانانو باندي تقسیم کړل.

۵: ثلث ارض وادی القری، چونکه د وادی القری یهودو سره په ثلث ارض باندي رسول الله ﷺ مصالحت او کړو، لهذا د فدک د زمکې په شان دا هم مال فئ شو.

۶: خمس غنائم خیبر: یعنی نصف خیبر کوم چه رسول الله ﷺ تقسیم کړلو د هغې خمس (بذل المجهود عیاض) دا دی د رسول الله ﷺ هغه صفایا او املاک چه په هغې باندي مصنف ترجمه قائم کړې ده.

د هغه صفایا د مصارفو بیان په ژوند د رسول الله ﷺ او پس د وفات نه:

د مصنف ﷺ غرض د ترجمې نه یو خو دا دې چه د هغه صفایا تعین اوشی، دویم دا چه رسول الله ﷺ به د هغه صفایا سره په ژوند کښې څه معامله کوله، او د وفات نه روستوئې څه فیصله فرمائیلې وه، نو د احادیث الباب نه معلومیږي چه (کان رسول الله ﷺ یصرفها علی ازواجه وعلی المسلمین عامة ای فی حیاته، وجعلها صدقة بعد وفاته حیث قال ما ترکت بعد نفقة نسائی ومؤنة عاملی فهو صدقة) وفي رواية كما فی الصحيحین (ان رسول الله ﷺ قال لا یقتسم ورثتی دینارا، وفي رواية لا نورث ما ترکنا صدقة) یعنی رسول الله ﷺ هغه ټول مالونه او هغه زمکې او د هغې آمدنې خو په خپل حیات مبارک کښې د مسلمانانو په مصالحو او په آسونو جهاد وغیره کښې او د ازواج مطهرات په نفقاتو کښې خرچ کولې، او د خپل وفات نه پس ئې هم د دې مصرفونو دپاره وقف کړې او د دې زمکو نه رسول الله ﷺ خپل جاگیر او داسې ذاتی مال چه په هغې کښې د رسول الله ﷺ په طور د میراث تقسیم جاری شی داسې اونه کرزولېوقف فیصله ئې افرمائيله.

د رسول الله ﷺ د بعض وارثانو میراث طلب کول:

خو د دې باوجود د رسول الله ﷺ بعض وارثانو د خلیفه اول نه د میراث مطالبه اوکړه، په هغې کښې بعض علی او عباس (رضی الله عنهما) دی. د عباس (رضی الله عنهما) مطالبه په حیثیت د عصبه کیدو او د علی (رضی الله عنهما) مطالبه د خپلې زوجې د رسول الله ﷺ د لور فاطمه (رضی الله عنها) د طرف نه وه. د دې دواړو د میراث د طلب کولو روایات هم دې باب کښې را روان دی بلکه د باب په رومبې حدیث کښې دی چه ښه کافی او تفصیلی دې.

وراندې یو روایت دا هم را روان دي چه ازواج مطهرات هم په میراث کښې د خپلې حصې د مطالبې اراده کړې وه او عثمان رضی الله عنه ئې د صدیق اکبر رضی الله عنه په خدمت کښې لیرول غوښتل خو چه کله عائشې رضی الله عنها ته ددې خبرې معلومات او شونو هغوی د رسول الله صلی الله علیه و آله حدیث وریادولو سره هغوی ددې مطالبې نه منع کړل او هغوی دا خبره تسلیم کړله. رضی الله تعالی عنهن

[۲۹۶۳] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، الْمَعْنَى قَالَ: حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ الزُّهْرَانِيُّ، حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أُوَيْسِ بْنِ الْحَدَّثَانِ، قَالَ: أُرْسِلَ إِلَيَّ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ النَّهَارِ فُجِئْتُهُ فَوَجَدْتُهُ جَالِسًا عَلَى سَرِيرٍ مُفَضِيًّا إِلَى رِمَالِهِ، فَقَالَ جِينٌ دَخَلْتُ عَلَيْهِ: يَا مَالِ إِنَّهُ قَدْ دَفَّ أَهْلَ آيَاتٍ مِنْ قَوْمِكَ وَإِنِّي قَدْ أَمَرْتُ فِيهِمْ بِشَيْءٍ فَأَقْسِمُ فِيهِمْ، قُلْتُ: لَوْ أَمَرْتَ غَيْرِي بِذَلِكَ فَقَالَ: خُذْهُ فِجَاءَةً يَرْفَأُ فَقَالَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ: هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ، وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ؟ قَالَ: نَعَمْ فَأَذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوا، ثُمَّ جَاءَهُ يَرْفَأُ فَقَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ هَلْ لَكَ فِي الْعَبَّاسِ، وَعَلِيٍّ؟ قَالَ: نَعَمْ فَأَذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوا، فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَقْضِ بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا يَعْنِي عَلِيًّا فَقَالَ بَعْضُهُمْ: أَجَلُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَقْضِ بَيْنَهُمَا وَأَرْحَمَهُمَا، قَالَ مَالِكُ بْنُ أُوَيْسٍ: خَيْلٌ إِلَيَّ أَنَّهُمَا قَدْ مَا أَوْلَيْكَ النَّفَرُ لَذَلِكَ فَقَالَ عُمَرُ رَحِمَهُ اللَّهُ: أَتَيْدَا ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى أَوْلِيكَ الرَّهْطِ، فَقَالَ: أَنْشَدُكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي يَأْذِنُهُ تَقْوَمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ، هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً"، قَالُوا: نَعَمْ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ، وَالْعَبَّاسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: أَنْشَدُكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي يَأْذِنُهُ تَقْوَمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ، هَلْ تَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً"، فَقَالَا: نَعَمْ قَالَ: فَإِنَّ اللَّهَ خَصَّ رَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِخَاصَّةٍ لَمْ يُخَصَّ بِهَا أَحَدًا مِنَ النَّاسِ، فَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: وَمَا أَقَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْحَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ سُورَةُ الْحَشْرِ آيَةٌ ٢٦، وَكَانَ اللَّهُ أَقَاءَ عَلَى رَسُولِهِ بِنِي النَّضِيرِ قَوْلَ اللَّهِ مَا اسْتَأْتَرْتُمْ بِهَا عَلَيْكُمْ وَلَا أَحَدَهَا دُونَكُمْ، فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْخُذُ مِنْهَا بِنَفَقَةٍ سَنَةً أَوْ نَفَقَتَهُ وَنَفَقَةَ أَهْلِهِ سَنَةً وَيَجْعَلُ مَا بَقِيَ أَسْوَةَ الْمَالِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى أَوْلِيكَ الرَّهْطِ فَقَالَ: "أَنْشَدُكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي يَأْذِنُهُ تَقْوَمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ هَلْ تَعْلَمُونَ ذَلِكَ؟" قَالُوا: نَعَمْ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى الْعَبَّاسِ، وَعَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَقَالَ: أَنْشَدُكُمْ بِاللَّهِ الَّذِي يَأْذِنُهُ تَقْوَمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ هَلْ تَعْلَمَانِ ذَلِكَ؟ قَالَا: نَعَمْ، فَلَمَّا تَوَفَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجِئْتُ أَنْتَ وَهَذَا الْيَأْسِيُّ بَكَرٌ تَطْلُبُ أَنْتَ مِيرَاثَكَ مِنْ ابْنِ أُخِيكَ وَيَطْلُبُ هَذَا مِيرَاثَ امْرَأَتِهِ مِنْ أَبِيهَا، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَحِمَهُ اللَّهُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً" وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُ لَصَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ. فَوَلِيَّتَهَا أَبُو بَكْرٍ، فَلَمَّا تَوَفَّى أَبُو بَكْرٍ قُلْتُ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَوَلِيُّ أَبِي بَكْرٍ فَوَلِيَّتُهَا مَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ إِلَيْهَا فَجِئْتُ أَنْتَ وَهَذَا وَأَنْتُمْ جَمِيعٌ وَأَمْرُكُمْ وَاحِدٌ فَسَأَلْتُمْنِيهَا، فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتُمْ أَنْ أَذْفَعَهَا إِلَيْكُمْ عَلَى أَنْ عَلَيْكُمْ عَهْدُ اللَّهِ أَنْ تَلِيَّاهَا بِالَّذِي كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلِيَّهَا فَأَخَذْتُمَاهَا مِنِّي عَلَى ذَلِكَ، ثُمَّ جِئْتُمْنِي لِأَقْضِيَ بَيْنَكُمْ بِغَيْرِ ذَلِكَ وَاللَّهُ لَا أَقْضِي بَيْنَكُمْ بِغَيْرِ ذَلِكَ حَتَّى تَقْوَمَ السَّاعَةُ فَإِنْ عَجَزْتُمْ عَنْهَا فَرُدَّاهَا إِلَيَّ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: إِذَا سَأَلَهُ أَنْ يَكُونَ بَصِيرَةً بَيْنَهُمَا يَصْفِيْنِ لَا أَنْتُمْ جَاهِلُونَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا صَدَقَةً" فَإِنَّهُمَا كَانَا لَا يَطْلُبَانِ إِلَّا الصَّوَابَ، فَقَالَ عُمَرُ: لَا أَوْقِعْ عَلَيْهِ اسْمَ الْقَسْرِ أَدْعُهُ عَلَى مَا هُوَ عَلَيْهِ.

١: صحيح البخاري/الجهاد ٨٠ (٢٩٠٤)، فرض الخمس ١ (٣٠٩٤)، المغازي ١٤ (٤٠٣٣)، تفسير القرآن ٣ (٤٨٨٠)،
التفقات ٣ (٥٣٥٨)، الفرائض ٣ (٦٧٢٨)، الاعتصام ٥ (٧٣٠٥)، صحيح مسلم/الجهاد ٥ (١٧٥٧)، سنن الترمذي للسيرة ٤٤
(١٦١٠)، الجهاد ٣٩ (١٧١٩)، (تحفة الأشراف: ١٠٦٣٢، ١٠٦٣٣)، وقد أخرجته: مسند أحمد (٢٥/١) (صحيح)

د مالک بن اوس بن حدثان رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه عمر رضی اللہ عنہ د ورځې په مینځ کښې په ما پسې څوک راو لیرلو نوزه دهغه په خدمت کښې حاضر شوم او ما اولیدو چه دبستري نه بغير په یوتخت باندي ناست وو زه چه کله نزدې ورورسیدم اوزه ئې اولیدلم نوماته ئې او فرمائیل ستاد قوم چه کسان ماته راغلی وو او مادهغوی دپاره دخه ورکړې حکم کړې دي ته دا په هغوی باندي تقسیم کړه ماعرض او کړو څومره ښه خبره به و چه دا کا ردي بل چاته حواله کړې وي عمر رضی اللہ عنہ او فرمائیل کوم مال چه مایه دغه خلقو باندي د تقسیمولو دپاره مقرر کړې دي هغه واخله، په دي وخت کښې پرفاء (څوک چه دعمر رضی اللہ عنہ څو کیدار او ازاد کړې شوې غلام وو) راغې او وئې وئیل چه عثمان بن عفان، عبدالرحمن بن عوف، زبیر بن العوام، اوسعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہم، په دروازه کښې ناست دي که اجازت وي نو دوی به دننه راشي عمر رضی اللہ عنہ او وئیل دننه ئې راپریږده چه راشي کله چه راغلل نو پرفاء ورسره هم راغې او عرض ئې او کړو اي امیرالمومنین عباس او علي رضی اللہ عنہما هم راغلي دي او راتلل غواړي هغه او فرمائیل هغوی هم راپریږده چه راشي کله چه راغلل نو عباس رضی اللہ عنہ او وئیل اي امیرالمومنین زما او دده (علي) په مینځ کښې فیصله او کړه، په دي وخت کښې نورو خلقو هم آوازونه او کړل اي امیرالمومنین ددوی په مینځ کښې فیصله او کړه او ارام ورته اورسوه، مالک بن اوسه وائی ماته داسې یاد دي چه علي او عباس دغه نور کسان عمر رضی اللہ عنہ ته ددي فیصلي دپاره رالیزلي وو عمر رضی اللہ عنہ او فرمائیل صبر او کړئ او بیادي نورو صحابه کراموته متوجه شو او وئې وئیل: تاسوته په هغه الله باندي قسم درکوم دچاپه حکم چه زمکه او اسمان قائم دي ایا تاسو ته معلومه ده چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی وو چه مونږ (انبياء) میراث نه پریږدو مونږ چه څه پریږدو هغه صدقه وي هلته چه کوم صحابه کرام موجود وو هغوی او وئیل یقینا نبی صلی اللہ علیہ وسلم داسې فرمائیلی وو، بیاعمر د علی او عباس طرف ته متوجه شو او وئې فرمائیل: تاسوته په هغه الله باندي قسم درکوم دچاپه حکم چه زمکه او اسمان قائم دي، ایا تاسو ته معلومه ده چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی وو چه مونږ (انبياء) میراث نه پریږدو مونږ چه څه پریږدو هغه صدقه وي هغوی او وئیل هو، عمر رضی اللہ عنہ او وئیل الله تعالی نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته داسې خصوصیت ورکړې وو کوم چه ئې بل چاته نه وو ورکړې الله تعالی فرمائیلی دي: «وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب ولكن الله يسلط رسوله على من يشاء والله على كل شيء قدير» یعنی الله تعالی چه خپل رسول ته ددي خلقونه څه مال ورکړې وو تاسوپه هغې پسې خپل اسونه او اوښان نه وو زغلولي لیکن الله تعالی چه خپل رسولان په چا باندي غالب کوي نو غالب ئې کړي او الله تعالی په هرڅه باندي قادر دي او الله تعالی خپل رسول ته د بنو نظیر مال ورکړو په الله مې دي قسم وي نبی صلی اللہ علیہ وسلم هغه مال دخپل ځان دپاره نه وو ساتلي مگر ددینه ئې دخپل ځان دپاره دیو کال خرچه اخستلي وه او کوم چه راته پاتي شوې وو په هغې کښې ئې ټول خلق برابر شريك گرځولي وو ددي نه پس عمر صحابه کراموته متوجه شو او وئې فرمائیل: تاسوته په هغه الله باندي قسم درکوم دچاپه

حکم چه زمکه او اسمان قائم دي، ايا تاسوپه دې باندې خبر ئې اوکه نه؟ صحابه کرامو او وئیل مونږ خبریو بیا عمر علي او عباس ته متوجه شو او وئې وئیل تاسوته په هغه الله باندې قسم درکوم دچاپه حکم چه زمکه او اسمان قائم دي، ايا تاسو په دې باندې خبری؟ هغوی او وئیل هو یقینا مونږ خبریو کله چه نبی ﷺ وفات شو نو صدیق اکبره او فرمائیل چه زه د نبی ﷺ د مالونو متولي یم نو تاسو (علي او عباس) ابوبکر صدیق ته ورغلی او دخپل وراره او دخپل صحر دمیراث غوښتو دپاره ابوبکر او فرمائیل چه نبی ﷺ فرمائیلی وو زمونږ څوک وارث نه وی او مونږ چه څه پریرېدو هغه صدقه وي او الله تعالی ته ددې علم دې چه ابوبکر رضی اللہ عنہ ریښتونې او هدایت او دحق دلاري تابع وو او بیا ابوبکر ددې مال متولي پاتې شو کله چه ابوبکر وفات شو نو ما او وئیل چه زه د نبی ﷺ او د ابوبکر متولي یم بیا زه ددې مالونو تردې وخته پورې متولي پاتې شوم ترڅو چه الله تعالی ته منظور وه، نویاته اې عباس اودا صاحب یعنی علي راغلی او تاسو متحد وي او ستاسو مقصد هم یورو تاسو د واروماته او وئیل چه دغه مال مونږ ته حواله کړه ما او وئیل که چرې ستاسو زړه غواړی نوزه به ئې درته حواله کړم مگر په دې شرط سره چه تاسوته په الله تعالی قسم درکوم چه تاسوبه په دې مال کښې داسې تصرف کوئ لکه څنگه چه نبی ﷺ کولونو تاسو دغه مال زمانه به دی شرط باندې. واخستو نو اوس تاسو ماته راغلی چه زه ستاسوپه مینځ کښې ددې طریقې نه علاوه په بله طریقې فیصله او کړم، په الله مې دې قسم وي چه زه به هیڅ کله ددې طریقې نه علاوه په بله طریقې فیصله او نکرم البته که چرې ستاسونه ددې مالونو اهتمام او انتظام اونه شي نو درنه به ئې واپس کړم. ابوداود وائی چه دوی وارو ددې خبرې متعلق درخواست کړې وو چه ددې مالونو انتظام دي په مونږ باندې تقسیم کړې شي دا غرض ئې نه وو چه دادي مونږ ته را کړې شي نو په دې خبره باندې عمر رضی اللہ عنہ او فرمائیل چه زه په دې باندې د تقسیم نوم نه ېدم بلکه په مخکني حالت باندې به وي.

(عن مالک بن اوس بن الحدثان قال ارسل الی عمرو حین تعالی النهار فجنته فوجدته جالسا علی

سریر مفضیا الی رماله) فقیل حسن دخلت علیه یا مال انه قد دف اهل ایات من قومک)

د عمر رضی اللہ عنہ اوږد حدیث د تصام د علی او عباس رضی اللہ عنہما په باره کښې او د هغې تفصیلی وضاحت

مالک بن اوس رضی اللہ عنہ فرمائی چه عمر رضی اللہ عنہ زما د رابللو دپاره یو قاصد راو لیرلو د نمر

د راختلو په وخت، زه د هغوی په خدمت کښې حاضر شوم نو ما هغوی په داسې حال کښې

بیا مو حین چه یو تخت چه په هغې باندې تات خور شوې وو په هغې باندې ناست وو، رمال

الحصیر وائی د کهجوري د تات پتو ته، د دې حاصل دا دې چه هغوی په خالص تات باندې

ناست وو او په هغې باندې بل څه څادر وغیره خور نه وو، عمر رضی اللہ عنہ ما ته کتلو سره

او فرمائیل چه ما ته د دې دپاره راغلو بښتلې ئې چه ستاسو د قوم څه کورنئ راغلي دی وزه

(د عمر رضی اللہ عنہ بدن رسیدونکی وو رمال حصیر ته یعنی بدن ئې لگیدلې وو، رمال سره، د رمال

اضافت دتله په ظاهر د کتې طرف ته دې چه د ادنی ملابست د وجې نه دې ځکه رمال د سریر نه وی

بلکه د حصیر وی خو چونکه حصیر په تخت باندې خور شوې وو په دې وجه د دې اضافه د سریر

طرف ته کړې شوې دې، هذا ما خطر بیالی والله تعالی اعلم)

هغوی باندې ستا په ذریعه څه تقسیمول غواړم، ما هغوی ته عذر او کړو خو هغوی قبول نه کړو بلکه ما ته ئې د تقسیم دپاره راکړل، د مصنف د ترجمې په لحاظ سره دا دومره مضمون ضمني او غیر مقصود دې، د مصنف اصل خبره اوس شروع کیږي.

(لجااه یرفاه فقال یا امیر المومنین هل لک فی عثمان بن عفان وعبدالرحمن بن عوف والزبیر بن العوام؟ قال نعم)

یرفاه د عمر رضی الله عنه د حاجب نوم دې، مالک بن اوس د حدیث راوی دا فرمائی چه زما په موجودگي کښې د عمر رضی الله عنه دربان راغلو او عرض ئې اوکړو او د دې ذکر کړې شوې څلورو وارو صحابه کرامو رضی الله عنهم نومونه اخستلو سره ئې دا او فرمائیل چه دا حضرات ولاړ دی د راتلو اجازت غواړي عمر رضی الله عنه اجازت ورکړو او هغوی دننه داخل شو، لږ وخت پس یرفاه دوباره راغلو او وې وئیل یا امیر المومنین (هل لک فی العباس وعلی) یعنی عباس او علی رضی الله عنهما ولاړ دی او اجازت غواړي پس هغوی ته هم اجازت ورکړې شو. او دننه داخل شو عباس رضی الله عنه عرض اوکړو چه زما او دده تر مینځه فیصله اوکړي.

د عباس رضی الله عنه د علی رضی الله عنه په باره کښې سخت الفاظ او د هغې توجیه :

د ابوداؤد په روایت کښې صرف (بین هذا) دې () او د مسلم په روایت کښې دې (بیني و بین هذا الاثم الکاذب الغاد) مراد علی رضی الله عنه دې لکه چه په حدیث کښې تصریح ده هم دغه شان هم په دې حدیث کښې وړاندې تلو سره د عمر رضی الله عنه په کلام کښې راځي (فقال ابوبکر قال رسول الله ﷺ لا نورث ما ترکنا صدقة) د دې نه پس په ابوداؤد کښې خو دا دې (والله يعلم انه صادق بار راشد تابع للحق) او په مسلم کښې د دې نه مخکښې دا جمله ده کومه چه مصنف حذف کړې ده (فرایتماه کاذبا آثما خائنا) په دې باره کښې زما په یو کاپي کښې په دې باندې داسې اشکال او جواب لیکلې شوې دې، چه عباس رضی الله عنه د علی رضی الله عنه په باره کښې دا او فرمائیل چه دې کاذب دې خائن دې غادر دې، هم دغه شان د عمر رضی الله عنه په

() د مصنف یو عادت شریفه د کمال ادب : د مصنف عادت دا دې چه کله په یو حدیث کښې د یو سړي دپاره څه سخت وعید یا سخت لفظ راشي نو مصنف رضی الله عنه هغه د ادب د وجې نه حذف کوي، او کله هغې طرف ته اجمالی اشاره هم کوي لکه چه په کتاب الجنائز کښې مصنف داسې اوکړل لکه چه په باب التعزیه کښې یو حدیث دې چه په هغې کښې دې یو صحابي فرمائی چه مونږ د رسول الله ﷺ سره د مړي د دفن کولو نه پس د قبرستان نه واپس کیدو رسول الله (ص) چه کله خپلی دروازي ته اورسیدلو نو اودریده، او وې کتل چه د وړاندې نه یو زبانه راروانه ده. راوی وائی چه زمونږ خیال دې رسول الله (ص) دا پیژندلې وه چه کله هغه نزدې راغله نو معلومه شوه چه هغه د رسول الله ﷺ لور فاطمه رضی الله عنها ده، رسول الله ﷺ د هغې نه معلومات اوکړو چه ته د کوم خانې نه راغلي؟ نو هغې عرض اوکړو چه دلته په گاوند کښې چه کوم مړي شوې وو هلته تلې اوم د تعزیت دپاره، رسول الله ﷺ تپوس اوکړو چه ته هغوی سره قبرستان ته خو نه وې تلې، هغې عرض اوکړو نه! معاذالله نو رسول الله ﷺ او فرمائیل (لو بلغت معهم الکدی فذکر تشدیداً فی ذلك) دلته هم مصنف رضی الله عنه داسې کار کړې دې حال دا چه د نسائی په روایت کښې داسې دې (فقال لها لو بلغتهم معهم ما رایت الجنة حتی یراما جديک) یعنی که ته د هغوی سره قبرستان ته تلې وې نو ته هغه وخته پورې به جنت ته نه شوې تلې تر څو چه ستا د پلار نیکه جنت نه وې لیدلې.

کلام کښې دې چه تاسو دواړو ابوبکر خائن غادر او کاذب او گنړلو اوس په دې روایت کښې اشکال ښکاره دې چه یو صحابی دې د بل صحابی په باره کښې داسې سخت الفاظ او بدگمانی او کړی. امام نووی رحمته الله علیه ۹۰/۲ باندې د مازری نه نقل کوی چه بعض علماء کرامو خودا د راویانو وهم طرف ته منسوب کړې دې او دا ئې د خپل کتاب نه حذف کړې هم دې. خو که تسلیم کړې شی نو د اول جواب دا دې چه عباس رضی الله عنه د علی رضی الله عنه مشر وو په منزله د پلار او ډیر کرته چه یو مشر خپل کشر ته خبردارې ورکوی نو هغه ته بعض داسې خبرې هم اوکړې چه د هغې په باره کښې هغه پخپله هم پوهیږی چه هغه په هغه کښې نشته. **﴿ وذلک علی جهة الادلال ﴾** او یا دا اوئیلی شی چه مطلب دا دې چه ای علی خه چه تاسو کوئ که دا ټول هر خه تاسو په هغه صورت کښې کړې وی چه ستاسو په ذهن کښې هم هغه هر خه وې خه چه زما په ذهن کښې دی او ستاسو را ئې د هغې مال په باره کښې هم هغه وې کومه چه زما ده او بیا تاسو هغه خه کړې وې کوم چه اوس کوئ نو یقینا خائن او کاذب او غادر به وې، او وړاندې د عمر رضی الله عنه په کلام کښې چه راغلی دی د هغې توجیه دا ده چه د عمر رضی الله عنه مقصد دا دې چه ستاسو د دواړو د ابوبکر صدیق رضی الله عنه نه داسې سوال کول او د خپل حق داسې مطالبه کول او ستاسو د هغه نه خفه کیدل د دې ټولو مقتضی خو داده چه هغه ستاسو په نزد داسې او داسې دې والله تعالی اعلم **﴿ هکذا فی البذل والحل المفهم ﴾** فقال بعضهم اجل یا امیر المومنین **﴿** په دې باندې بعض خلقو د چا ذکر چه مخکښې تیر شوې دې اوئیل جی ای امیر المومنین ضرور فیصله اوکړئ. **﴿** قال مالک بن اوس الخ **﴿** چه کله هغه حاضرینو د هغوی دواړو تائید او کړو نو په دې باندې مالک بن اوس رضی الله عنه وائی چه زما په ذهن کښې دا خبره راغله چه دا جماعت هم دې دواړو د خپل راتلو نه مخکښې دربار عمری ته رالیږلې وو **﴿** د سفارش په طور **﴿** فقال عمر ائندا ثم اقبل علی اولئک الیهط فقال انشدکم بالله الذی باذنه تقوم السماء والارض **﴿** اوس عمر رضی الله عنه د فیصلې کولو دپاره تیاریدو سره د حاضرینو طرف ته متوجه شو او هغه دواړو ته ئې خطاب کولو سره او فرمائیل چه گورئ تندی مه کوئ اطمینان ساتئ. او هغه جماعت ته ئې خطاب کولو سره او فرمائیل چه زه تاسو ته په الله پاک باندې قسم درکوم د چا په حکم چه زمکه او آسمان قائم دی، آیا تاسو ته د دې خبرې علم دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله په خپل ژوند کښې دا فرمائیلې وو **﴿** لا نورث، ما ترکنا صدقة **﴿** چه زمونږ **﴿** د انبیاء کرامو صلی الله علیه و آله هیخ څوک وارث نه وی مونږ چه خه هم پریردو هغه صدقه وی، په دې باندې هغوی ټولو د دې خبرې تصدیق اوکړو، بیا امیر المومنین رضی الله عنه علی او عباس رضی الله عنه ته متوجه شو او هغوی ته ئې هم دغه شان د الله پاک قسم ورکړلو او د رسول الله صلی الله علیه و آله د حدیث په باره کښې ئې هم دا سوال اوکړو **﴿** فقلا نعم **﴿** هغوی هم د دې حدیث د پیژندگلو اعتراف اوکړو.

﴿ قال فان الله خص رسوله صلی الله علیه و آله **﴿** د عمر رضی الله عنه د طرف نه دا بیان دې د هغه خیز په باره کښې کوم چه رسول الله صلی الله علیه و آله صدقه کولو سره پریخودلو او په دې موقع باندې هغوی د

بنو نضیر د مالونو ذکر او فرمائیلو (۱)

﴿ فوالله ما استأثر بها عليكم ولا أخذها دونكم ﴾ یعنی رسول الله ﷺ د بنو نضیر په دې زمکه نه خو ستاسو نه علاوه بل چا ته ترجیح ورکړه او نه ئې تاسو پریخودلئ او پخپله ئې واخستله، کوم چه وړاندې په روایت کښې ذکر شوې دی، ﴿ وکان رسول الله ﷺ یاخذ منها نفقة سنة الخ ﴾ یعنی رسول الله ﷺ به د دې مال نه د خپل خان او د ازواج مطهرات د یو کال نفقه اخستله ﴿ ويجعل ما بقى اسوة المال ﴾ او د دې نفقې نه علاوه به ئې ټول د مال غنیمت برابر کړو یعنی د خمس غنیمت برابر، په اعتبار د صرف چه څنگه خمس غنیمت لره په کراع او مصالحو د مسلمانانو او وسله کښې خرچ کولو، هم دغه شان به ئې دا مال فی هم خرچ کولو.

﴿ ثم اقبل على اولئك الرهط..... ثم اقبل على العباس وعلى ﴾ یعنی عمر رضی الله عنه د رسول الله ﷺ د طرز عمل د بیانولو نه پس اول د صحابه کرامو رضی الله عنهم د جماعت نه او په دویم ځل هغوی دواړو نه د دې خپل بیان تصدیق طلب کړو هغوی ټولو د عمر رضی الله عنه تصدیق او تائید او کړو چه هلته واقعی د رسول الله ﷺ طرز عمل د دې مال فی سره وو. ﴿ فلما توفي رسول الله ﷺ قال ابوبکر انا ولي رسول الله ﷺ ﴾ اوس د دې ځای نه عمر رضی الله عنه په هغه دواړو حضراتو باندې حجت قائموی چه گورئ تاسو هر څه پیژندلو باوجود هم خلیفه اول ته د میراث طلب کولو دپاره راغلئ، عباس رضی الله عنه خپل میراث (د عصبه کیدو د وجې نه) او علی رضی الله عنه د فاطمې رضی الله عنها په میراث پسې، په دې باندې هغوی تاسو ته د رسول الله ﷺ پورته ذکر کړې شوې ﴿ لانورث ما ترکنا صدقة ﴾ تاسو ته دریا د کړو ﴿ والله يعلم انه صادق بار راشد تابع للحق ﴾ دلته د دې مقابل محذوف دې چه د هغې ذکر مخکښې شوې دې ﴿ فولیها ابوبکر ﴾ پس د بنو نضیر د دې زمکې ابوبکر رضی الله عنه متولی پاتې شوې وو یعنی هغوی نه هغه زمکه تاسو ته د میراث په طور درکړه او نه په طریقه د تولیت. ﴿ فلما توفي ابوبکر ﴾ بیا چه کله د ابوبکر صدیق رضی الله عنه وفات اوشو او زه د هغه په ځای راغلم او څه زمانه زما د خلافت تیره شوه پس هغه وخت تاسو او دا دواړه ما ته راغلئ وئ، هغه وخت تاسو دواړه خپل مینځ کښې متفق وئ او راغلئ او زما نه مو د دې زمکې غوښتنه او کړه. دلته د دې تصریح نشته چه دا سوال او مطالبه په کوم لحاظ سره وه، ایا په طور د میراث یا په طریقه د تولیت؟ خو وړاندې د عمر رضی الله عنه په کلام کښې په طریقه د تولیت تصریح راروانه ده، ﴿ فقلت ان شئتما ان ادفعها اليكما على ان عليكما عهد الله ان تليها بالذی کان رسول الله ﷺ يليها ﴾ یعنی ما تاسو ته هغه وخت وئیلې وو چه که تاسو غواړئ چه تاسو ته هغه زمکه په دې عهد سره درکړم چه تاسو به د هغې ولایت او انتظام هم هغه شان کوئ څنگه به چه رسول الله ﷺ کولو نو درکولې

۱، د عمر رضی الله عنه د دې کلام نه دا خبره مستفاد کیږي چه آیت کریمه ﴿ وما افاء الله علي رسول الله ﷺ فاما او جفتم عليه من خيل الخ ﴾ کښې د بنو نضیر د زمکې چه مال فی وو ذکر دې، په دې باندې یو اشکال هم دې چه وړاندې راځي

﴿ اي له رسول الله ﷺ لم يجعل هذا الفی وهو مال بني النضير ملكا لنفسه خاصة بل بعد اخذه حسب الحاجة يصرفه في مصالح المسلمين ﴾

شم، پس تاسو زما نه هغه زمکه په هغه عهد باندې اخستلې وه یعنی په مشترک تولیت باندې بغیر د تقسیم نه. (ثم جتمانی لاقضی بینکما بغیر ذلک،) اوس په دویم ځل ماته راغلی یی چه د رومبئ فیصلې خلاف فیصله او کرم، یعنی چه د مشترک تولیت په ځانې د هر یو تولیت ځانله ځانله شی، (والله لا اقضی بینکما بغیر ذلک) یعنی قسم په الله چه زه به اوس د خپلې رومبئ فیصلې خلاف هیڅ فیصله نه کوم ترقیامتته پورې، خو که تاسو د دې قسم تولیت نه عاجزی نو بیا دا زمکه ما ته راواپس کړی

وړاندې په روایت کښې دې (قال ابو داؤد ان لا یوقع علیه اسم قسم) مصنف رضی الله عنه فرمائی چه د عمر رضی الله عنه دا منشاء وه چه دلته د تقسیم نوم هم رانسی، یعنی هغه په طریقه د تولیت ولې نه وې چه د تطاول زمان نه پس او د خبرې د زړیدو نه پس به خلق دا اوگنړی چه دا د میراث مال دې خصوصاً چه کله د میراث په تقسیم کښې هم د لور او د تره ترمینځه هم نیم نیم دې.

د طلب میراث په سلسله کښې بعض اشکال او جواب :

ځان پوهول پکار دی چه په توضیح او تنقیح کښې دوه سوالونه دی، اول دا چه د دې دواړو رسول الله صلی الله علیه و آله د حدیث کیدو باوجود د صدیق اکبر رضی الله عنه نه د میراث مطالبه ولې اوکړه؟ جواب د دې دا ورکړې شوې دې چه ممکنه ده د دې دواړو په علم کښې دا حدیث نه وی راغلی، او دا هم ممکنه ده چه د اوریدو باوجود ذهول شوې وی () خو کله چه صدیق اکبر رضی الله عنه هغوی دواړو ته دا حدیث واورولو نو هغوی خبر شو او بیا خاموش شو، اوس به دویم اشکال دا وی چه کله ورته حدیث مستحضر شو نو د عمر فاورق رضی الله عنه نه ئې د هغوی په خلافت کښې دوباره مطالبه ولې اوکړه؟ د دې جواب اول خو دا دې چه د عمر رضی الله عنه نه د دې دواړو حضراتو مطالبه د میراث نه وه بلکه د تولیت وه او قرینه په دې باندې دا ده چه که مطالبه د میراث وې نو علی رضی الله عنه کم از کم د خپل خلاف په زمانه کښې خو په دې باندې قادر وو چه هغې ته ئې میراث وئیلې وې او تقسیم کړې ئې وې، خو هغوی داسې اونکرل حال دا چه په نور بعض مسائلو کښې چه په هغې کښې د رانې اختلاف وو په هغې کښې علی رضی الله عنه په خپله رانې باندې قائم وو لکه د متعة الحج په مسئله کښې چه عمر او عثمان رضی الله عنهما وغیره به د دې نه منع فرمائیله خو د علی رضی الله عنه رانې د جواز وه هغوی په دې مسئله کښې په خپله رانې باندې قائم وو او د عمر رضی الله عنه وغیره ئې په دې باب کښې هیڅ پرواه اونکره لهذا هیڅ د اشکال خبره نه ده او که دا اومنلې شی چه عمر رضی الله عنه ته د میراث د طلب دپاره راغلی وو نو د هغې منشاء د گنگوهی رضی الله عنه په تقریر (الکوکب الدرۍ ۴۲۳) کښې دا لیکلې شوې دې چه اصل کښې خبره دا ده چه د دې حضراتو په ذهن کښې د دې حدیث (لا نورث، ما ترکنا صدقة) محمل عام نه وو بلکه هغوی دا حدیث صرف په منقولاتو باندې محمول کولو د هغوی په نزد غیر منقولات یعنی اراضی د دې حدیث په مفهوم کښې داخل نه وو، هم په دې وجه دا

۱) کذا قال الشراح، خو په حدیث الباب کښې تصریح ده چه حضرت عمر (رض) په سوال باندې دې دواړو حضراتو بلکه ټولو حاضرینو د دې حدیث په علم کښې د کیدو اقرار کړې دې: فالاولی فی الجواب ما سألني من تقریر الشيخ الکنکوهي رحمه الله تعالی.

حضرات په دې توقع باندې چه ممکنه ده چه د عمر فاروق رضی الله عنه به زمونږ د رائي سره اتفاق راشی چه دا حدیث عام نه دې بلکه خاص دې هغوی ته د میراث د طلب دپاره راغلل خود عمر رضی الله عنه د هغوی د دې رائي سره هم اتفاق راغلو.

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والترمذی والنسائی مطولا ومختصرا، قاله المنذری

[۲۹۶۴] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ ثَوْرٍ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أُوَيْسٍ بِهَذِهِ الْقِصَّةِ، قَالَ: وَهَمَّا يَغْنَى عَلِيًّا، وَالْعَبَّاسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَخْتَصِمَانِ فِيمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَمْوَالِ بَنِي النَّضِيرِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَرَادَ أَنْ لَا يُوقَعَ عَلَيْهِ اسْمُ قَسِيمٍ.

د مالک بن اوس رضی الله عنه نه ددې واقعي په سلسله کښې روایت منقول دي فرمائی چه دوی دواړو یعنی عباس او علي رضی الله عنهما فیصله طلب کوله په باره دهغه مال کښې کوم چه الله تعالی د مال ئې په حیثیت سره د بنونضیر د مالونونه خپل رسول ته ورکړی وو. ابوداود وائی چه عمر رضی الله عنه داغونبتل چه د تقسیم نوم په دې باندې کینه خودلی شي.

[۲۹۶۵] () حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، وَأَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، الْمَعْنَى أَنَّ سُفْيَانَ بْنَ عَيْنَةَ أَخْبَرَهُمْ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أُوَيْسِ بْنِ الْحَدَّادِ، عَنْ عُمَرَ، قَالَ: كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النَّضِيرِ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِمَّا لَمْ يَوْجَفِ الْمُسْلِمُونَ عَلَيْهِ بِخَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ، كَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَالِصًا يَنْفِقُ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ، قَالَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ: يَنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ قُوتَ سَنَةٍ فَمَا بَقِيَ جَعَلَ فِي الْكِرَاعِ وَعَدَّةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ، قَالَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ: فِي الْكِرَاعِ وَالسَّلَاحِ.

مالک بن اوسه د عمر رضی الله عنه نه روایت کوی فرمائی چه د بنونظیر مال داسې دې کوم چه الله تعالی خپل نبی ته ورکړې وو او ددې د حاصلو دپاره مسلمانانو خپل اسونه او خپل ځانونه، نه وو زغلولي نودغه مال د نبی صلی الله علیه و آله دپاره مخصوص شو دابه نبی صلی الله علیه و آله په خپله کورنئ باندې صرف کولو او ابن عبده وئیلی دی چه نبی صلی الله علیه و آله به دخپل کور و الاو دپاره ددې نه دیو کال خرچه اخستله اوباقی پاتې به ئې دخاروو په خریداری باندې اود جهاد په تیاري باندې خرچ کول ابن عبده وائی چه باقی پاتې به ئې په خاروو او اصلحوباندې خرچ کول.

﴿ عن مالک بن اوس الحدیثان عن عمر رضی الله عنه قال کانت اموال بنی النضیر مما افاء الله علی رسوله مما لم یوجف المسلمون لیه بخیل ولا رکاب ﴾

سیدنا عمر رضی الله عنه فرمائی چه د بنو نضیر زمکه او د هغوی مالونه د دې آیت کریمه مصداق دی ﴿ وما افاء الله علی رسوله منهم فما اوجفتم علیه من خیل ولا رکاب ﴾ یعنی د بنو نضیر زمکه داسې ده چه د هغې په حصول او فتح کولو کښې مسلمانانو ته د آسونو زغلولو ضرورت نه دې راغلي لهذا دا مال فئ شو کوم چه د رسول الله صلی الله علیه و آله دپاره خالص وو چه د هغې نه به رسول الله صلی الله علیه و آله په خپلو بیبیانو باندې خرچه کوله د ټول کال، او څه چه به باقی بچ کیدل هغه به ئې په کراع یعنی د جهادی سامانونو په تیاری باندې خرچ کوله.

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۳۲، ۱۰۶۳۳) (صحیح)

۲: انظر حدیث رقم: (۲۹۶۳)، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۳۱) (صحیح)

د بنو النضير د زمکې په مال فئ کېدو کېښي اختلاف :

خان پوهه کړې چې په اموالو د بنو نضير په فئ کېښي کېدو په کتب تفسير وغيره کېښي اعتراض کړې شوي دي هغه دا چې د بنو نضير د زمکې د فتح کولو دپاره د قتل او قتال او محاصرې وغيره ټولو خيزونو ضرورت راغلي دي په دې باندې هغوی د هغه ځانې نه په تلو باندې صلح او کره لهذا دا مالونه خو د غنيمت د قبيلې نه شو نه د مال فئ، په دې وجه د بعض مفسرينو رائي خو دا ده چې د پورته ذکر کړې شوي آيت کریمه نزول د بنو النضير د زمکې په باره کېښي نه دې ځکه چې هلته خو اسونه زغلولې شوي دي، بلکه د دې مصداق د فدک زمکه ده () هلته د دې خيزونو واقعي څه ضرورت نه دې راغلي، او د بعضو رائي دا دي چې د دې مصداق د بنو النضير زمکه ده، ځکه چې هلته د ډيرې منډې تررې او قتل و قتال حاجت نه وو راغلي او نه ورپسې د زيات مزل ضرورت راغلو ځکه چې دا خلق د مدينې طبيې نه دوه ميله لرې آباد وو صحابه کرام رضي الله عنهم هلته پيدل رسيدلي وو بغير د سورلو نه، او د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه علاوه هيڅوک سور نه وو. په دې وجه دا د هغه مالونو شمېر کړې شو کوم چې بغير د قتال نه حاصل کړې شوي وي (من البذل ۱۴۳)

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، قاله المنذرى

[۲۹۶۶] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ: وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ سِوَةَ الْحِشْرِ آيَةً، قَالَ الزُّهْرِيُّ، قَالَ عُمَرُ: هَذِهِ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاصَّةٌ قَرَى عُرَيْنَةَ فَذَكَ وَكَذَا وَكَذَا مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى فَبَلِيٍّ لِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ سِوَةَ الْحِشْرِ آيَةً، وَلِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ وَالَّذِينَ تَبَوَّعُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ فَاسْتَوْعَبَتْ هَذِهِ آيَةَ النَّاسِ، فَلَمْ يَبْقَ أَحَدٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَّا لَهُ فِيهَا حَقٌّ، قَالَ أَيُّوبُ، أَوْ قَالَ حَطُّ: إِلَّا بَعْضٌ مَنْ تَمْلِكُونَ مِنْ أَرْقَابِكُمْ.

د زهري نه روايت دي چې عمر رضي الله عنه فرمايلي دي الله تعالى فرمايلي دي، الله تعالى چې کوم مال نبي صلى الله عليه وسلم ته ورکړې وو په دې پسې تاسو خپل اوښان او اسونه نه دي زغلولي، په دې آيت کریمه سره د نبي صلى الله عليه وسلم دپاره د عرينه څه کي د نبي صلى الله عليه وسلم دپاره خاص شوي دي لکه د فدک باغونه وغيره، او په نورو اياتونو کېښي لکه: «ما افاء الله على رسوله من اهل القرى فله وللرسول ولذي القربى واليتامى والمساکين وابن السبيل»، او همدارنگي «اللفقراء الذين اخرجوا من ديارهم واموالهم»، او همدارنگي «والذين تبوءوا الدار والایمان من قبلهم»، او همدارنگي «والذين جاءوا من بعدهم»، دا آيت ټولو مسلمانانو ته شامل دي کومو چې ددې نه مخکېښي ايمان راوړې او کوم چې ددې نه پس ايمان راوړي اوس هيڅ يو مسلمان داسې باقی پاتې نه شو دچا چې په مال کې کېښي حق نه وي علاوه دغلامانو او وينځونه.

۱. پس دهغې موافق يو حديث وړاندې راوان دي

۲. تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۶۳۸) (صحیح)

« عن الزهري قال قال عمر رضي الله عنه وما افاء الله على رسوله منهم فما اوجفتم عليه من خيل ولا ركاب قال الزهري قال عمر رضي الله عنه هذه لرسول الله صلى الله عليه وسلم خاصة قري عرينة (۱) وفدك وكذا وكذا... ما افاء الله من اهل القري فله وللرسول »

شرح الحديث :

عمر رضي الله عنه دلته دوه آيتونه ذکر فرمايلي دي د رومبي آيت كريمه شروع د « وما افاء الله » نه ده د حرف عطف سره او د دويم آيت كريمه ابتداء « وما افاء الله على رسوله » نه ده بغير د حرف عطف نه، او په دې دويم آيت كښې په خائي د « منهم » « من اهل القري » دې عمر رضي الله عنه د رومبي آيت كريمه په باره كښې فرمائي چه په دې آيت كريمه كښې د هغه مال فئ ذكر دې كوم چه خالص د رسول الله صلى الله عليه وسلم په باره كښې وو، او د هغې مصداق هغوی هغه مقاماتو لره بيان كړو قري عرينه او فدك، او د هغې نه علاوه ئې اموالو ته هم اشاره او كړه، په كذا وكذا سره اشاره د بنو النضير مالونو ته ده لكه چه د دې نه پورته حديث كښې ذكر شوي دي او د عمر رضي الله عنه نه روايت دي او د دويم كذا نه نيم خير ته هم اشاره كيدي شي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم نه وو تقسيم فرمايلي حكه چه هغه په صلح باندي فتح شوي وو لكه چه وئيلي شوي دي؟ (د دې نه پس عمر رضي الله عنه د دويم آيت كريمه په باره كښې فرمائي چه په هغې كښې د رسول ذكر دې او ذوی القربي، يتامي او مساكين او ابن السبيل او فقراء مهاجرين او انصار او د هغې نه روستو د راتلونكو) چه دې آيت كريمه د ټولو مسلمانانو استيعاب او احاطه او كړه، او اوس په مسلمانانو كښې هيڅ يو فرد بشر باقي پاتي نه شو چه د هغه په دې مال فئ كښې حق نه وي سوا د غلامانو نه (حكه چه په غلام كښې د مالك جوړيدو صلاحيت نه وي هغه خو خپله د نورو مملوك وي په ابوداؤد كښې خو دا اثر د عمر هم دومره دي او په سنن نسائي كښې د دې نه پس دا زيادت دي، « ولئن عشت ان شاء الله لياتين علي كل مسلم حقه او قال حظه » عمر رضي الله عنه فرمائي چه كه زه ژوندي پاتي شوم نو هر مسلمان ته به د هغه حق ضرور رسيږي.

په بادي الرائي (په ظاهر) كښې د دې حديث نه دا معلوميري چه په رومبي آيت كريمه كښې صرف د دې مال فئ ذكر دي چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم سره خاص وو او د هغوی ملك وو، او په نورو آيتونو كښې د هغه اموال فئ ذكر دي د رسول الله صلى الله عليه وسلم او باقي مصارف

(۱) دا لفظ زمونږ په هندي نسخه كښې داسې دي عرينه بالنون بعد اليا التحتانية تصغير عرينه، او په نسخه د عون المعبود كښې هم داسې دي او سارح دي لره هم داسې ضبط كړي هم دي او بيا ئې وړاندي ليكلي دي موضع به قري كانه بنواحي الشام يعني څه علاقه ده چه په هغې كښې ډير كلي دي كيدي شي چه د شام په طرفونو كښې وي اه او د ابوداؤد په اكثر مصري نسخو كښې دي قري عرينه او صرف په يوه نسخه كښې هلته عرينه دي، شيخ محمد عوامه دا اختلاف بنه په تفصيل سره ليكلي دي او وائي چه په نسائي سنن كيري او صغري دي دواړو كښې هم عرينه دي. د نورو ډيرو تفسيرې كتابونو حواله ئې هم وركړې ده چه په هغې كښې په بعضو كښې عرينه دي او بعضو كښې عرينه او د دې كلو نومونه ئې دا نقل كړي دي الصفرَاء والينبوع ووادي القري آه ملخصا مونږ سره چه كومه د نسائي نسخه ده په هغې كښې څنگه چه شيخ محمد عوامه ليكلي دي قري عرينه دي او د هغې په حاشيې باندي د نسخه علامت لگولو سره عرينه ليكلي شوي دي.

سبعه مذکوره فی الایة ترمینحه مشترک دی، حال دا چه داسی نه ده ځکه چه کوم مال فی د رسول الله ﷺ په حیات کښی حاصلیری هغه به هم د هغوی ملک وی او د هغی تقسیم به د رسول الله ﷺ رانی ته سپارلی شوی وی چه د مالک په طور هغه چرته غواړی او خصوصاً په هغه مصارفو کښی کوم چه په آیت کریمه کښی ذکر شوی دی تقسیم او فرمائی، د هر هغه مال فی هم دا حکم دی کوم چه د رسول الله ﷺ په حیات کښی حاصل شی، او د هیخ مال فی په باره کښی به دا وئیل صحیح نه وی چه فلانی د هغوی ملک خاص دی او فلانی ستاسو او ستاسو په غیر کښی مشترک دی، بیا آیتونو کښی دوه قسمونه کولو سره ولې بیان کړی شوی دی د دې جواب ذهن ته دا راځی چه په رومی آیت کریمه کښی د هغه اموال فی ذکر دی کوم چه د نزول آیت په وخت حاصل شوی وو، او په دویم آیت کریمه کښی دا بیان کړی شوی ده چه د دې اموال فی نه علاوه هم د هغی نه پس چه حاصلیری د هغی هم دا حکم دی هغه د رسول الله ﷺ په ملک کښی دی هغوی چه په خپله خوښه څنگه غواړی په دغه مصارف مذکوره کښی مالکانه تصرف او اختیار سره تقسیمولی شی. (مستفاد من بیان القرآن للشیخ التهانوی)

فانده: په دې حدیث عمر رضی الله عنہ کښی، د قری عربینه ذکر راغلو او په بعض نسخو کښی قری عربیه دې په دې باره کښی دې تفصیل په حاشیه کښی او کتلې شی، دلته یو لفظ بل دې (وادی القری) هغه هم په ابوداؤد کښی په خو مقاماتو کښی راغلی دې مثلاً کتاب الجهاد باب فی تعظیم الغلول وفيه (قال فوجه رسول الله ﷺ نحو وادی القری الخ) هم دغه شان وړاندې په کتاب الخراج کښی په باب (اخراج اليهود من جزيرة العرب) کښی دی (قال مالک: عمر اجلی اهل نجران ولم یجلوا من تيماء لانها لیست من بلاد العرب، فاما الوادی فانی اری انما لم یجل من فیها من اليهود انهم لم یروها من ارض العرب) په بذل کښی د دې وادی شرح په وادی القری سره کړی ده، هم دغه شان د باب احیاء الموات د یو اوږد حدیث په آخر کښی (فلما اتینا وادی القری قال للمرأة کم کان فی حدیقتک الحدیث) او مونږ سره چه دلته په حاشیه کښی چه کوم تحقیق ذکر شوی دې په هغی کښی د قری عربینه په مصادیقو کښی وادی القری هم ذکر شوی ده، وقد ذكرت هذا المزيد فائدة الطلاب.

[۲۹۶۷] () حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، وَحَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، وَحَدَّثَنَا نَهْرَبْنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ عَيْسَى، وَهَذَا لَفْظُ حَدِيثِهِ كُلِّهِمْ، عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانَ، قَالَ: كَانَ فِيمَا احْتَجَّ بِهِ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّهُ قَالَ: كَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثُ صَفَاتٍ ابْنُو النَّضِيرِ وَخَيْبَرُ وَقَدَّكَ، فَأَمَّا ابْنُو النَّضِيرِ فَكَانَتْ حُبْسًا لِنَوَائِبِهِ، وَأَمَّا قَدَّكَ فَكَانَتْ حُبْسًا لِأَبْنَاءِ السَّبِيلِ، وَأَمَّا خَيْبَرُ فَجَزَاءُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةَ أَجْزَاءٍ: جُزْأَيْنِ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ وَجُزْأَيْنِ نَفَقَةٍ لِأَهْلِهِ فَمَا فَضَلَ عَنْ نَفَقَةِ أَهْلِهِ جَعَلَهُ بَيْنَ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ.

د مالک بن اوس بن حدثان رضی الله عنہ نه روایت دی فرمائی عمر رضی الله عنہ چه د کومی خبرې استدلال

کړې وو هغه داده چه د نبی ﷺ دپاره درې صفایا وې بنونضیر، فدک، خبیر، یعنی کوم مال چه به ددې خلقو دزمکونه حاصلیدو هغه د نبی ﷺ د ضرورتونو دپاره مقرر کړې شوې وو مثلاً دمیلمنو د میزبانی دپاره او د مجاهدینو داصلحي دپاره او ددې دسورلی دپاره وغیره او کوم مال چه دفدک نه حاصلیدو هغه د ضرورت مندو او مسافرو خلقو دپاره وو اگرچه ددې مسافرینو په وطن کښې مالونه وو او نبی ﷺ دخبیر مالونه درې حصې کړې وو دوه حصې ئې دمسلمانانو دپاره مقرر کړې وې او یوه حصه ئې دخان او دخپلو بچو اودبښخو داخراجاتو دپاره او کوم چه به دهغوی دخرج نه زیاتي شو هغه به ئې په غریبانانو او هجرت کړنکو باندې خرج کولو.

﴿ عن مالک بن اوس بن الحدثان قال کان فیما احتج به عمر انه قال کانت لرسول ﷺ ثلاث صفایا بنو النضیر وخبیر وفدک، فاما بنو النضیر الخ ﴾

دا هم د مالک بن اوس روایت دې اصل کښې د باب په شروع کښې د عباس او علی رضی الله عنهما د منازعت والا اوږد روایت تیر شوې دې د هغې راوی هم مالک بن اوس دې، د دې نه پس هم د مالک بن اوس خو روایتونه تیر شوې دې، اوس دا هم د هغوی روایت دې دې نه معلومېږي چه مصنف رضی الله عنه ته دا حدیث په ډیر سندونو او طرقو سره را رسېدلی دې، او په دې روایاتو کښې کمې زیاتي دې هم په دې وجه امام ابوداؤد رضی الله عنه دا روایت په مختلفو طرقو سره راوړی دې دپاره چه کوم زیادات دی هغه مخې ته راشی.

شرح الحدیث:

د دې روایت مضمون دا دې چه د عباس او علی رضی الله عنهما خپل مینخ کښې د اختلاف په سلسله کښې عمر رضی الله عنه چه تقریر او استدلال د هغوی مخکښې فرماتیلې وو، په هغې کښې دا هم وه چه د رسول الله ﷺ دپاره درې صفایا وو فلانې او فلانې، او بیا د هر یو باره کښې د رسول الله ﷺ طرز عمل چه هغه به ئې چرته خرج کولو، د هر یو تعیین بالتفصیل هغوی بیان کړو، او په ظاهر کښې غرض د عمر رضی الله عنه د دې ټولو نه دا دې چه رسول الله ﷺ به د دې خپلو صفایا او اموال خالصه نه صرف په اندازه د ضرورت اخستلو، د خپل ضرورت او د بییانو د ضرورت، باقی به ئې په کراع او وسلې او د مسلمانانو په مصلحتونو کښې خرج کولو، او رسول الله ﷺ د هغه خیزونو نه خپل ملک او جاگیر نه وو جوړ کړې، یعنی داسې ملک او جاگیر چه په هغې کښې میراث جاری شی، دا خو شو د رسول الله ﷺ طرز عمل، او قولا رسول الله ﷺ داسې تصریح او کړه ﴿ ما ترکت بعد نفقة نسائی ومؤنة عاملی فهو صدقة ﴾ والله تعالی اعلم بالصواب

[۲۹۶۸] (۱) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبِ الْهَمْدَانِيِّ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ عُقَيْلِ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ، أَنَّ قَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أُرْسِلَتْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ

(۱) صحیح البخاری/الخمیس ۱ (۳۰۹۲)، فضائل الصحابة ۱۲ (۳۷۱۱)، والمغازي ۱۴ (۴۰۳۵)، (۲۴۴۱)، والفرانض ۳ (۶۷۲۵)، صحیح مسلم/الجهاد ۱۶ (۱۷۵۹)، سنن النسائي/القيء (۴۱۴۶)، (تحفة الأشراف: ۶۶۳۰)، وقد أخرجها: مستد احمد (۱/۴۸، ۶/۹، ۱۰، ۱۴۵/۱، ۲۶۲) (صحیح)

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ بِالْمَدِينَةِ وَقَدَّكَ وَمَا بَقِيَ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا نُورُثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةً"، إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ مِنْ هَذَا الْمَالِ وَإِلَى اللَّهِ لَا أُغْتَرِبُ شَيْئًا مِنْ صَدَقَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنْ حَالِهَا الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَا تُعْمَلَنَّ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَبَى أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنْ يَدْفَعَ إِلَى فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامَ مِنْهَا شَيْئًا.

دام المومنين عائشي رضي الله عنها نه روايت دي فرمائي چه فاطمة بنت رسول الله ابوبكرته يو كس اوليرلو ددي دپاره چه دخپل ميراث حصه تري او غواړي كومه چه ددي دنبي عليه السلام په تركه كښي كيدله كوم چه ورته الله تعالى په مدينه اوفدك كښي وركړي وواو كوم چه دخيبرد خمس نه باقى پاتي شوي وو په هغې كښي، ابوبكر رضي الله عنه او فرمائيل يقينا نبى عليه السلام فرمائيلي وو زمونږ څوك وارث نه وي كوم چه مونږني پريردو هغه صدقه وي او يقيناد محمد خاندان به ددي مال نه بقدر ضرورت خوري، او په الله قسم زه دنبي عليه السلام دصدقي حالت بدليدوته نه پريردم په هم هغه حال به وي په كوم حال چه دنبي عليه السلام په زمانه كښي وه. اوزه به هغه كار كوم، كوم چه نبى عليه السلام كړي وو، بهرحال ابوبكر رضي الله عنه انكار وكړو چه فاطمة رضي الله عنها ته ددي نه څه وركړي

(عن عائشة رضي الله عنها زوج النبي صلى الله عليه وسلم انها اخبرته ان فاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم ارسلت الى ابى

بكر الصديق رضي الله عنه تساله ميراثها الخ)

شرح الحديث.

په دې روايت كښي دا دي چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم لور فاطمه رضي الله عنها صديق اكبر رضي الله عنه ته د خپل ميراث د طلب كولو دپاره څوك قاصد اوليرلو. په ظاهر كښي به دا قاصد د هغې خاوند على رضي الله عنه وي، لكه چه د مخكښي روايت نه معلوميرې د هغه مال فئ په باره كښي كوم چه د هغوى په مدينه طيبه ك شدي يعنى د بنو نضير زمكه او د فدك زمكه او د خيبر د غنيمتونو د خمس نه، يعنى كومه نيمه حصه د خيبر چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د مسلمانانو تر مينځه تقسيم كړې وه په هغه مال غنيمت كښي د رسول الله صلى الله عليه وسلم حصه خمس المخس وه، د هغې ميراث، بيا وړاندې په حديث كښي د صديق اكبر جواب ذكر كړې شوې دي چه د هغې خلاصه دا ده چه هغوى فاطمي رضي الله عنها ته د ميراث وركولو نه انكار او فرمائيلو.

[۲۹۶۹] (۱) حَدَّثَنَا عُمَرُو بْنُ عُمَانَ الْحَمِصِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخْبَرَتْهُ بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: وَقَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامُ جِيئِيذٍ تَطْلُبُ صَدَقَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّتِي بِالْمَدِينَةِ وَقَدَّكَ وَمَا بَقِيَ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ، قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا نُورُثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةً"، وَإِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ فِي هَذَا الْمَالِ يَعْنِي مَالِ اللَّهِ لَيْسَ لَهُمْ أَنْ يَزِيدُوا عَلَى الْمَأْكُلِ.

دام المومنين عائشي رضي الله عنها نه همدا روايت منقول دي مگر يدي كښي دا اضافه ده فرمائي چه فاطمة بنت رسول الله و دنبي عليه السلام دصدقي هغه مال غوښتلو كوم چه په مدينه اوفدك كښي

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۶۶۳۰) (صحيح)

وو او کوم چه دخيبرد خمس نه باقی پاتي شوي وو: ام المومنين فرمائي ابوبکر رضي الله عنه او فرمائيل يقينا نبی صلي الله عليه وسلم فرمائيلي وو زمونږ څوک وارث نه وي کوم چه مونږي پريږدو هغه صدقه وي او يقيناً د محمد خاندان به ددي مال نه (يعنی د الله د مال نه) بقدر ضرورت خوري.

[۲۹۷۰] (۱) حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنْ أَبِي شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، أَخْبَرَتْهُ بِهَذَا الْحَدِيثِ قَالَ فِيهِ: فَأَبَى أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَيْهَا ذَلِكَ، وَقَالَ: لَسْتُ تَارِكًا شَيْئًا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْمَلُ بِهِ إِلَّا عَمِلْتُ بِهِ، إِنِّي أَخَشَى أَنْ تَرَكْتُ شَيْئًا مِنْ أَمْرِهِ أَنْ أُرِيعَ فَأَمَّا صَدَقَتُهُ بِالْمَدِينَةِ فَدَفَعَهَا عُمَرُ إِلَى عَلِيٍّ، وَعَبَّاسٌ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَعَلَبَهُ عَلَىٰ عَلَيْهَا وَأَمَّا خَيْرٌ وَقَدْ كَفَمَسَكُهُمَا عُمَرُ وَقَالَ: هُمَا صَدَقَةٌ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ لِحُقُوقِهِ الَّتِي تَعْرُوهُ وَنَوَاطِيهِ وَأَمْرُهُمَا إِلَى مَنْ وَلى الْأَمْرَ، قَالَ: فَهَمَّا عَلَىٰ ذَلِكَ إِلَى الْيَوْمِ.

د عروة بن الزبير رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه ام المومنين عائشي رضي الله عنها راته خبر راکړې دي په دي حديث چه فرمائيل ئي او په دي کښې دا اضافه ده ابوبکر رضي الله عنه انکار وکړو چه فاطمة رضي الله عنها ته ددي نه څه ورکړي او وي وئيل چه ددي صدقې متعلق د نبی کریم صلي الله عليه وسلم څه معمول روزه دهغي پريخودونکی نه يم يقيناًزه ويريرم که چرې دهغه دعمل نه څه شي پريږدم هسي نه چه گمراه نشم، او هر چه د نبی صلي الله عليه وسلم مال وو په مدينه کښې نو هغه خو عمر ورکړي دی علي - او عباس رضي الله عنهما ته او علي پرې غالب شوي وو، او هر چه دخيبر اوفدک مال دي هغه عمر بند کړې دي او وئيلي ئي دي چه دا د نبی صلي الله عليه وسلم صدقې دي دهغه په امورو باندې به خرچ کيږي ددي اختيار به دهغه چاسره وي څوک د نبی صلي الله عليه وسلم د امورو متولي وي يعنی خليفه وي راوي وائي بيا دغه مالونه په همدغه حال باندې پاتي شول.

د عائشي رضي الله عنها حديث په طريق عروه رضي الله عنه دي، دا مصنف رضي الله عنه وړاندې هم په دوه طريقو سره ذکر کړې دي د دي په يو طريق کښې وړاندې دا راځي ﴿فاما صدقته بالمدينة فدفعها عمر الى علي وعباس فغلبه علي عليها﴾

د علي او عباس رضي الله عنهما تر مينځه په توليت کښې د اختلاف منشاء:

يعنی په مدينه طيبه کښې چه د رسول الله صلي الله عليه وسلم کومه وقف کړې شوې زمکه وه يعنی د بنو نضير زمکه هغه عمر رضي الله عنه په طريقه د توليت علي او عباس رضي الله عنهما دواړو ته حواله کړه خو د علي رضي الله عنه د هغه زمکې په توليت باندې غلبه پاتي شوه يعنی د هغې په انتظام او انصرام کښې ئي ښه حصه واخستله، گويا علي رضي الله عنه په وړاندې روان وو د هغې په انتظاماتو کښې، ما د حضرت شيخ زکريا صاحب رضي الله عنه نه په سبق کښې دلته اوريدلې وو چه اصل کښې د علي رضي الله عنه په مزاج کښې ډير زيات سخاوت وو، هغوی به د دي گټه ښه خيرات کوله، واخله روره او واخله روره، هر ځانې، او د عباس رضي الله عنه په طبيعت کښې دا خبره نه وه هغوی ډير په احتياط خرچ کول غوښتل، خو په دي معامله کښې د هغوی خبره او نه منلې شوه، هم په دي وجه په دواړو کښې اختلاف ته خبره اورسيدله چه هغې لره اخستلو سره هغوی د فاروق اعظم رضي الله عنه په خدمت کښې حاضر شو د توليت د تقسيم دپاره لکه چه تفصيلاً مخکښې تير

(۱) انظر حديث رقم: (۲۹۶۸)، (تحفة الأشراف: ۶۶۳۰) (صحيح)

شود باب په رومبی حدیث کنب، وړاندې په روایت کنبې دی (واما خیبر وفدک فامسکها عمر الخ) یعنی د هغوی دواړو په تولیت کنبې صرف د بنو نضیر زمکه راغلي وه او د خیبر او فدک زمکه عمر رضی الله عنه د خپل انتظام د لاندې اوساتله د هغوی په تولیت کنبې ئې ورنکړه.

[۲۹۷۱] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ ثَوْرٍ، عَنْ مَعْبَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، فِي قَوْلِهِ: فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ سِوَرَةَ الْحِشْرَةِ، قَالَ: صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهْلَ فَدَكٍ وَقُرَى قَدْ سَمَّاها لَا أَحْفَظُها وَهُوَ مُحَاصِرٌ قَوْمًا آخِرِينَ، فَأَرْسَلُوا إِلَيْهِ بِالصَّلْحِ قَالَ: فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ سِوَرَةَ الْحِشْرَةِ، يَقُولُ: بَغَيْرِ قِتَالٍ، قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَكَانَتْ بَنُو النَّضِيرِ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَالِصًا لَمْ يَفْتَحُوهَا عِنْدَ افْتِتَاحِها عَلَى صُلْحٍ، فَكَسَمَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ الْمُهَاجِرِينَ لَمْ يُعْطِ الْأَنْصَارَ مِنْهَا شَيْئًا إِلَّا الرَّجُلَيْنِ كَانَتْ بِهِمَا حَاجَةٌ.

دزهري نه روایت دې فرمائی چه د الله تعالى دا قول: «فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب» نبي صلی الله علیه و آله صلحه كړې وه داهل فدك اودنورو كلووالاسره دكومونومونه چه ئې اخستلي وو اوماته ياد نه دی، اونورخلق ئې محاصره كړې وو او هغوی ورته مال راوليرلو د صلح دپاره بغير جنگ نه، راوي وائی چه د بنو نضير مال هم د نبي صلی الله علیه و آله په اختيار كنبې وو خكه چه هغه بغير جنگ نه حاصل شوي وو او نبي صلی الله علیه و آله په مهاجرينو باندې تقسيم كړو او انصارو ته ئې ترې هيڅ ورنكړل علاوه ددوه كسانونه چه حاجت مند وو.

(قال صالح النبي صلی الله علیه و آله اهل فدك وقرى.... قد سماها لا احفظها، وهو محاصر قوما اخرين فارسوا اليه بالصلح)

د قری نه مراد هم هغه قری عربینه ده، راوی وائی چه د دې قری نوم ماته ياد نه دې. د روایت مضمون دا دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله د اهل فدک سره مصالحت په داسې وخت کنبې او فرمائیلو چه کله هغوی د یو بل قوم یعنی اهل خیبر محاصره كړې وه نو هم په دې دوران کنبې اهل فدک هغوی ته د صلح پیغام راوليرو، پس هغوی دا صلح قبوله كړه، یعنی کوم وخت چه هغوی د خیبر په جنگ کنبې مشغول وو او لا تر دغه وخته پورې فدک طرف ته رسول الله صلی الله علیه و آله رخ نه وو فرمائیلې خو الله پاک په هغوی باندې داسې هیبت او رعب راوستلو چه هغوی په خپله د مصالحت پیشکش او کړو او ویره سره ئې هم هلته د دې کار دپاره یو سرې اوليرلو. په دې وجه د فدک زمکې ته مال فئ وئیلې شی. (قال فما اوجفتم عليه من خيل ولا ركاب يقول بغير قتال)

د سورة حشر د ایت نزول د ارض فدک په باره کنبې :

د زهري رضی الله عنه د دې اثر د سیاق نه دا فهمیږي چه دا آیت کریمه د فدک په باره کنبې دې نه د بنو نضیر د زمکې په باره کنب، پس د بعض مفسرینو رائي هم دا ده خكه چه هغوی وائی چه د بنو نضیر په فتح کولو کنبې خو جنگ ته خبره رسیدلې وه او په دې باندې مخکنبې خبره تیره شوه، خو د دې نه پس امام زهري رضی الله عنه د بنو نضیر د زمکې په باره کنبې هم دا فرمائی چه دا هم صلحا فتح كړې شوې وه اوس د دې دواړو خبرو د یو ځانې کولو نه دا نتیجه راووتله چه د دې آیتونو نزول خود فدک په باره کنبې شوې وو خو حال د بنو نضیر هم دا دې.

۱: تقرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۳۷۹) (صحیح الإسناد)

وراندې د بنو نضیر د مالونو په باره کښې دا دی چه هغه رسول الله ﷺ په مهاجرینو باندې تقسیم او فرمائیلو. انصارو ته رسول الله ﷺ د هغې نه هیڅ هم ورنکړل سوا د دوه کسانو نه چه حاجت مند وو، د دې په باره کښې دلته په بذل کښې لیکلې شوې دی (لم افق علی تسميتها) خو وړاندې (باب فی خبر بنی نضیر) کښې د هغه انصارو تسمیه په بذل کښې حضرت د تفسیر کبیر نه نقل فرمائیلې ده او هلته درې نومونه ذکر کړې شوې دی ابودجانه رضی الله عنه، سهل بن حنیف، الحارث بن الصمة.

[۲۹۷۲] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْجَرَّاحِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْمُغْبِرَةِ، قَالَ: جَمَعَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بَنِي مَرْوَانَ حِينَ اسْتُخْلِفَ، فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ لَهُ فِدَاكَ فَكَانَ يَنْفِقُ مِنْهَا وَيَعُودُ مِنْهَا عَلَى صَغِيرِ بَنِي هَاشِمٍ وَيُزَوِّجُ مِنْهَا أَتِمَّهُمْ، وَإِنَّ فَاطِمَةَ سَأَلَتْهُ أَنْ يَجْعَلَهَا لَهَا فَأَبَى فَكَانَتْ كَذَلِكَ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ، فَلَمَّا أَنْ وَلِيَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَمِلَ فِيهَا بِمَا عَمِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَيَاتِهِ حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ، فَلَمَّا أَنْ وَلِيَ عُمَرُ عَمِلَ فِيهَا بِمِثْلِ مَا عَمِلَ حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ، ثُمَّ أَقْطَعَهَا مَرْوَانَ، ثُمَّ صَارَتْ لِعُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ، قَالَ عُمَرُ: يَعْنِي ابْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَرَأَيْتُ أَمْرًا مَنَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ لَيْسَ لِي بِحَقِّ وَأَنَا أَشْهَدُ كَمَا أَنِّي قَدَرَدَدْتُمَا عَلَى مَا كَانَتْ يَعْنِي عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَلِيَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ الْخِلَافَةَ وَعَلَتْهُ أَرْبَعُونَ أَلْفَ دِينَارٍ، وَتَوَفَّى وَغَلَّتْهُ أَرْبَعُ مِائَةِ دِينَارٍ وَوَبَقِيَ لَكَانَ أَقَلَّ.

د مغیره نه روایت دې فرمائی چه کله عمر بن عبد العزیز رحمة الله عليه خلیفه شو نو د مروان خامن ئې را جمع کړل او وئې وئیل چه فدک مال د نبی صلی الله علیه و آله په اختیار او تصرف کښې وود هغې نه به ئې په اهل و عیال او غریبانو مسکینانو خرج کولو او د دې نه به ئې د بنو هاشم په ماشومانو احسان کولو او د غیرشادي شده بنحو په نکاح گانوباندې به ئې ترې خرج کولو، فاطمه رضی الله عنها د نبی صلی الله علیه و آله نه فدک مال دخان دپاره غوښتلي وولیکن ورئې نکرو او بیاد نبی صلی الله علیه و آله به ټول ژوند مبارک کښې په همدې حال باندې ووتردې چه نبی صلی الله علیه و آله وفات شو او ابوبکر خلیفه شونودده هم فدک متعلق هغه طریقه کار وو کوم چه د نبی صلی الله علیه و آله ووتردې چه ابوبکر رضی الله عنه هم وفات شو او عمر رضی الله عنه خلیفه شو، کله چه عمر خلیفه شو نودده هم دا طرز عمل ووتردې چه عمر هم وفات شو، بیا چه کله مروان حکمران شو نو دا مال ئې دخپل خان اودخپل جماعت جاگیر جوړ کړو بیاد فدک مال د عمر بن عبد العزیز په تصرف کښې راغې او اوئې وئیل چه د دې مال متعلق ماداسلافو داعمل لیدلي دي چه دا نبی صلی الله علیه و آله فاطمې ته هم نه وو ورکړې نو دا زما دپاره هم مناسب نه دی زه تاسو په دې باندې گواه کوم چه دامال مایه هغه حال پریخودو په کوم حال کښې چه د نبی صلی الله علیه و آله په زمانه کښې وویعنی وقف ئې کړو.

(عن المغيرة رضی الله عنه قال جمع عمر بن عبد العزيز بنی مروان حين استخلف فقال ان رسول الله ﷺ

د عمر بن عبد العزيز رضی الله عنه کمال انصاف :

د روایت مضمون دا دې چه عمر بن عبد العزیز بن مروان بن الحکم چه کله خلیفه کړې شو نو هغوی د خپل خاندان خلق را جمع کړل او یو تقریر ئې او فرمائیلو چه په هغې کښې ئې دا

بیان کړه چه د فدک زمکه د رسول الله ﷺ دپاره وه چه د هغې گټه به رسول الله ﷺ د بنو هاشم په ماشومانو باندې خرچ کوله او د کونډو په ودونو کښ..... او د رسول الله ﷺ لور فاطمې رضی الله عنها دا فدک د رسول الله ﷺ نه غوښتلې وو هغوی انکار کړې وو، تردې چه رسول الله ﷺ په خپل ژوند کښې د دې نه هم دغه شان خرچه کوله بیا د هغوی نه روستو چه کله ابوبکر صدیق رضی الله عنه خلیفه شو نو هغوی هم په دې کښې هم هغه طرز عمل اوساتلو کوم چه د رسول الله ﷺ وو او د هغوی نه روستو بیا هم هغه شان عمر رضی الله عنه هم، بیا چه کله زمونږ نیکه یعنی مروان خلیفه جوړ شو نو هغوی په دې باندې مالکانه قبضه او کړله (۱) بیا اوس منتقل کیدو کیدو سره دا د عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه دپاره شوه. په دې باندې هغوی فرمائی چه ما دا سوچ او کړو چه کوم خیز رسول الله ﷺ خپلې لور ته ورنکړو نو زه د هغې حقدار څنگه کیدې شم، گورئ ازه تاسو ټول گواهان جوړوم چه زه دا د فدک باغ په خپل زور حالت باندې واپس کوم چه د رسول الله ﷺ په زمانه کښې وو. د عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه عدل او انصاف زهد او تورع خشیت او انابت الله پاک ته کول ضرب المثل دې، چه د هغې واقعات د تاریخ په کتابونو کښې معروف دی. خاص د هغوی په سیرت باندې هم کتابونه لیکلې شوي دی ابن عبدالحکم کوم چه د امام مالک بغیر د واسطې نه شاگرد دې هغوی هم د هغوی په ژوند باندې کتاب لیکلې دې کوم چه د اردو ترجمې سره شائع کیرې (۲) هم دغه شان امام ابن الجوزي رضی الله عنه هم په مناقب د عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه کښې لیکلی دی، امام احمد بن حنبل رضی الله عنه فرمائی چه:

چه کله ته او گورئ چه یو انسان د عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه سره مینه کوی د هغه د محاسنو ذکر او د هغې د اشاعت اهتمام کوی نو د هغه نتیجه انشاء الله تعالی صرف خیر دې. د ابوداؤد په بعضو نسخو کښې دی چه دلته یو عبارت دې چه د بذل المجهود په حاشیه باندې د نسخې علامت جوړولو سره لیکلې شوي دې.

(قال ابوداؤد ولی عمر بن عبدالعزیز الخلافة وغلته اربعون الف دينار، وتوفی وغلته اربع مائة دينار ولو بقی لکان اقل) یعنی د عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه د کال ټوله آمدنی څلویښت زره

(۱) د خطابی په شرح معالم السنن کښې دی (انما اقطعها مروان فی ایام حیاة عثمان بن عفان رضی الله عنه) یعنی مروان د فدک اقطاع د خپل خان دپاره د عثمان رضی الله عنه په زمانه کښې کړې وه او دا هم د هغه ټولو اعتراضاتو نه دی کوم چه په هغوی باندې کړې شوي دی. بیا وړاندې هغوی د دې د عثمان رضی الله عنه د طرف نه تاویل او توجیه کړې ده هغه دا چه د دې مقصد کیدې شی د رسول الله ﷺ دا حدیث وی کوم چه هغوی ته رسیدلې وی (اذا اطعم الله نبیا طعمة لمی للذي یقوم من بعده) یعنی کله چه الله پاک یو نبی ته څه خاص مال ورکړی نو هغه د هغه نبی نه پس د هغه چا دې کوم چه د هغه قائم مقام جوړ شی. او چونکه رسول الله ﷺ به د فدک د زمکې نه په خپل خان باندې هم خرچه کوله اوس چه کله د رسول الله ﷺ نه پس د قائم مقام کیدو حد عثمان رضی الله عنه ته راوړسیدلو نو د فدک په دې زمکه کښې د هغوی هم استحقاق اوشو هغوی د دې نه په خپل خان باندې هم خرچ کولې شو خو چونکه هغوی د خپلې ذاتی مالداري د وجې نه مستغنی وو په دې وجه هغوی دا گټه د خپلو خپلوانو دپاره روا او گټلې (۲) مکتبه خلیفه سهارنپور شائع کړې دې

دیناره وو (۱) او د خلیفه کیدو نه پس هغه آمدنی په کمیدو کمیدو خلور سوو دینارو ته راغلي وه، او که لږ نور ژوندې وې نو د دې نه به هم کمه پاتې شوې وې.

[۲۹۷۳] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ، عَنْ الْوَلِيدِ بْنِ جُمَيْعٍ، عَنِ أَبِي الطَّفِيلِ، قَالَ: جَاءَتْ فَاطِمَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا إِلَيَّ بِكُرِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَطْلُبُ مِيرَاثَهَا مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ إِذَا أَطْعَمَ نَبِيًّا طَعْمَةً فِيهِ لِلَّذِي يَقُومُ مِنْ بَعْدِهِ".

د ابو الطفيل نه روایت دې فرمائی چه فاطمة رضی اللہ عنہا ابوبکر ته راغله او د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په مال کښې ئې دخپل میراث حق غوښتو ابوبکر رضی اللہ عنہ ورته او وئیل چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه مې اوریدلی دی چه فرمائیل في: کله چه الله تعالی کوم نبی ته څه قسم دمعاش ذریعه ورکړی نو هغه به دهغه دوفات نه پس دهغه چا په اختیار کښې وي څوک چه دهغه قائم مقام جوړشي.

﴿جاءت فاطمة الى ابى بكر رضی اللہ عنہ تطلب ميراثها من النبي صلی اللہ علیہ وسلم قال فقال ابوبكر الخ﴾

يعنى سيده فاطمة رضی اللہ عنہا صديق اكبر رضی اللہ عنہ ته راغله د ميراث اخستلو دپاره نو هغوى او فرمائيل چه ما د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه واوريدل هغوى فرمائی چه الله پاک کله يو نبی لره د يو څيز مالک جوړ کړی نو بيا هغه د هغه دپاره شی کوم چه د هغه نبی پس د هغه قائم مقام وى، يعنى په اعتبار د انتظام او توليت (بذل) په دې روایت کښې د فاطمې رضی اللہ عنہا د صديق اکبر رضی اللہ عنہ نه د ميراث د طلب کولو ذکر دې.

د فاطمې رضی اللہ عنہا د صديق اکبر رضی اللہ عنہ نه خفه کيدل او خبرې پريخودل او د هغې توجیه

دلته د ابوداؤد په روایت کښې خو صرف د صديق اکبر رضی اللہ عنہ جواب ذکر کړې شوې دې چه هغوى ورته حديث واورولو او د ورکړې نه ئې انکار او کړو او د دې نه پس هيڅ هم نشته، او په صحيح بخارى کتاب الجهاد ﴿باب فرض الخمس ۴۳۵﴾ کښې د دې خبرې زيادت دې چه ﴿ففضبت فاطمة بنت رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فهجرت ابابكر فلم تزل مهاجرة حتى توفيت الحديث﴾ يعنى فاطمې رضی اللہ عنہا د صديق اکبر رضی اللہ عنہ په دې جواب باندي ناراضه شوه او د صديق اکبر رضی اللہ عنہ سره ئې ترک کلام او کړو د ژوند د آخرى لمحاتو پورې، د فاطمې رضی اللہ عنہا په دې طرز باندي د مسلمان سره هجران کول مشهور اشکال دې چه د مسلمان هجران حرام دې. په دې باندي لامع کښې او د لامع حاشيه کښې حضرت شيخ رحمته الله تفصيلی کلام کړې دې او بيا په آخر کښې حضرت شيخ رحمته الله خپله رائي هم ليکلې ده: د حديث شراح د دې اشکال مختلف جوابونه ورکړې دى، بعض شراح بنيادى طور د هجران مسلم جواب دا ورکړې دې چه هجران مسلم کوم چه حرام دې هغه خو دا دې چه ﴿ان يلتقيا فلا يسلم احدهما على صاحبه﴾ چه اتفاقا چرته دا دواړه په يو لار باندي تيريرى نو يو بل ته کتلو سره مخونه واپروى او د سلام او کلام نه اعراض او کړى او صرف د ملاقات پريخودل، يعنى قصدا د ملاقات دپاره

(۱) عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ عنہ د مدينې منورې گورنر پاتې شوې دې او د هغوى پلار د مصر گورنر وو او نور جانداوونه به ئې هم وو. په دې وجه دا څه بعيده نه ده.
(۲) تهرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۶۵۹۹)، وقد أخرج: مسند احمد (۱/۶، ۷، ۹) (حسن)

نه تلل او هغه پریخودل دا ممنوع نه دی، او دلته د دې دواړو ترمینځه دا ثابت نه دی چه په
 څه موقع باندې دوی دواړه جمع شوي وی او بیا فاطمی رضی اللہ عنہا د صدیق اکبر رضی اللہ عنہ ترک د سلام
 و کلام او اعراض کړې وی، او پاتې شوه مسئله د ملاقات پریخودلو نو د هغې منشاء
 غضب او ناراضتیا نه ده بلکه د دې منشاء انقباض طبعی دې دا جواب علامه عینی د
 بخاری د مشهور شارح مهلب نه نقل کړې دې، دا جواب خوشو د ترک کلام او د هجران،
 پاتې شوه خبره د هغې د غصې کومه چه د بخاری په روایت کښې مصرح ده د هغې منشاء
 دا ده چه د هغوی په نزد د ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ استدلال صحیح نه وو ځکه چه د فاطمی رضی اللہ عنہا په
 نزد حدیث موؤل وو او هغه په دې باره کښې د تخصیص قائل وه او ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ قائل
 بالعموم وو، د عموم او خصوص نه مراد هم فرق او عدم فرق د منقولاتو او غیر منقولاتو
 دې کوم چه وړاندې عمر رضی اللہ عنہ د حدیث په شرح کښې تیر شو. او دویم جواب د دې دا
 ورکړې شوي دې چه د فاطمی رضی اللہ عنہا د هجران نه مراد کوم چه د بخاری روایت دې —
 ترک کلام فی المال والمیراث دې لکه چه د عمر بن شبه په روایت کښې دی په طریق د
 معمر رضی اللہ عنہ « فلم تکلمه فی ذلک المال » حافظ فرمائی چه هم دغه شان امام ترمذی رحمته اللہ علیہ د خپلو
 بعضو مشائخو نه نقل کړی دی، په دې جواب باندې د بعضو شراحو اشکال دې چه په
 روایت کښې د غضبت تصریح ده چه د هغې نه معلومیږي چه ترک کلام مطلقا وو خو دا
 اشکال قوی نه دې ځکه چه مونږ دا وایو چه د غصې د وجې نه ئې خو دوباره د میراث سوال
 نه دې کړې چه ښه مه راکوه مونږ به هم بیا وړاندې چرته سوال نه کوو. او یو جواب دا
 ورکړې شوي دې چه دا غضب او ترک کلام وختی طور وو روستو صلح شوي وه، لکه چه
 بیهقی روایت کړې دې په طریق د شعبي رضی اللہ عنہ چه صدیق اکبر رضی اللہ عنہ د فاطمی رضی اللہ عنہا د پوښتنې
 دپاره د هغوی دروازي ته اورسیدو په دې باندې علی رضی اللہ عنہ فاطمی رضی اللہ عنہا ته اووې چه « هذا
 ابوبکر یستاذن علیک » چه دا ابوبکر رضی اللہ عنہ د دننه راتلو اجازت غواړی، په دې باندې هغې
 اووې چه ستاسو په نزد دا مناسب ده چه زه هغوی ته د دننه راتلو اجازت ورکړم، علی رضی اللہ عنہ د
 دې جواب په اثبات کښې ورکړو پس فاطمی رضی اللہ عنہا اجازت ورکړو « فدخل علیها فترضاها حتی
 رضیت » چه ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ هغې ته ورغلو او هغه ئې رضا کړه او پوخلا ئې کړه. « قال
 الحافظ وهو وان کان مرسلًا فاسناده الی الشعبي صحیح وبه یزول الاشکال فی تمادی فاطمة رضی اللہ عنہا
 علی هجر ابی بکر رضی اللہ عنہ » د دې ټولو نه پس په حاشیه د لامع باندې شیخ خپله رائې دا بیان
 کړې ده چه که دا پورته ذکر کړې شوي توجیحات نظر انداز هم کړې شی او دا اومنلې شی
 چه د فاطمی رضی اللہ عنہا خفگان او ترک د سلام کلام د میراث د وجې نه وو نو بیا هم څه اشکال
 نشته بلکه دا د فاطمی رضی اللہ عنہا تصلب فی الدین دې او د هغې حق شرعی چه د هغې په نزد
 شرعا واجب او ثابت دې د هغې مطالبه وه او دا خبره د صحابه کرامو رضی اللہ عنہم د احوالو نه معلوم
 او معروف ده چه هغوی د دین په معامله کښې ډیر مضبوط او کلک وو، او هغوی به په دې
 کښې د لومة لائم هیڅ پرواه نه کوله، چونکه د فاطمی رضی اللہ عنہا په ذهن کښې دا خبره وه چه
 حدیث ارث عام نه دې لهذا په میراث کښې حق شرعی ثابت دې په دې وجه هغوی د خپل

شرعی حق په طلب کښې اصرار کونکې شوه او د صدیق اکبر رضی الله عنه په نه ورکولو باندې ناراضه شوه، پس د هغې دا ناراضگی الله مه کړه د څه حرص او طلب دنیا په لحاظ نه وه، د هغې زهد او قناعت او اعراض عن الدنيا خو اظهر من الشمس دې بلکه د هغې دا ناراضگی د صدیق اکبر رضی الله عنه د حق شرعی په انکار باندې وه. والله تعالی اعلم بالصواب

[۲۹۷۴] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الْأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تَقْتَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا مَا تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي وَمُؤْنَةِ عَامِلِي فَهُوَ صَدَقَةٌ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: مُؤْنَةُ عَامِلِي يُعْنَى أَكْرَةَ الْأَرْضِ.

ابو هريره د نبی صلی الله علیه و آله نه روایت نقل کوي چه فرمائي لي ئې وو زما د تري نه به يو دينار هم نه شی تقسيمولي زما ترکه کومه چه زما دببيانو داخراجاتو او دعاملانو دمزد وړی نه زیاته شي هغه صدقه ده.

«عن ابی هريرة رضی الله عنه عن رسول الله صلی الله علیه و آله قال لا یقتسم ورثتی دینارا، ما ترکت بعد نفقة نسائی ومؤنة عاملی فهو صدقة» رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائی چه زما وارثان دې زما مال دمیراث په طور نه اخلي، ځکه چه زه څه پریږدم هغه پس د ازواجو د نفقې نه او پس د مؤنة د عامل نه ټول صدقه دې د عامل په تفسیر کښې اختلاف دې، فقيل المراد به الخليفة، وقيل العامل على الصدقة، او خادمه رضی الله عنه والحديث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی، قاله المنذری

[۲۹۷۵] (۱) حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مَرْزُوقٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرُو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي الْبَخْتَرِيِّ، قَالَ: سَمِعْتُ حَدِيثًا مِنْ رَجُلٍ عَجَبَنِي، فَقُلْتُ: أَكْتَبُهُ لِي فَأَتِي بِهِ مَكْتُوبًا مَذْبُورًا، دَخَلَ الْعَبَّاسُ، وَعَلَى عَلِيٍّ عُمَرُ، وَعِنْدَهُ طَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ، وَسَعْدٌ، وَهُمَا يَخْتَصِمَانِ فَقَالَ عُمَرُ: لَطَلْحَةَ وَالزُّبَيْرُ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ، وَسَعْدٌ: أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "كُلُّ مَالِ النَّبِيِّ صَدَقَةٌ إِلَّا مَا أَطْعَمَهُ أَهْلُهُ وَكَسَاهُمْ أَنَا لَا نُورَثُ؟" قَالُوا: بَلَى قَالَ: فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْفِقُ مِنْ مَالِهِ عَلَى أَهْلِهِ وَيَتَصَدَّقُ بِفَضْلِهِ ثُمَّ تَوَفَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَوَلِيَهَا أَبُو بَكْرٍ سَنَتَيْنِ فَكَانَ يَصْنَعُ الَّذِي كَانَ يَصْنَعُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ ذَكَرَ شَيْئًا مِنْ حَدِيثِ مَالِكِ بْنِ أُوَيْسٍ.

د ابو البختري نه روایت دې فرمائی چه ديو سړی نه مې يو عجيب حديث واوريډو ورته مې ووييل چه ليكلي ئې راته راكړه نو هغه راته په خوشخطی سره ليكلي راوړو چه عباس او علي رضی الله عنه عمر ته راغلل او دهغه سره طلحه، زبير، و عبد الرحمن، او سعد رضی الله عنه موجود وو او ددوی دواړو په مينځ كښې اختلاف وونوعمر رضی الله عنه طلحه، زبير، او عبد الرحمن، و سعد رضی الله عنه ته ووييل ايا تاسو ته معلومه نده چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائي لي و و زما ټول مال صدقه ده؟ علاوه دهغه نه كوم چه زما په اهل عيال باندې خرچ كيږي هغوی ووييل ولي نه اې امير المومنين مونږ ته معلومه ده چه فرمائي لي ئې وو عمر رضی الله عنه ووييل چه نبی صلی الله علیه و آله به ددې مال نه په خپل اهل عيال

۱: صحيح البخاري/الوصايا ۲۲ (۳۰۹۶)، فرض الخمس ۳ (۲۷۷۶)، الفرائض ۳ (۶۷۲۹)، صحيح مسلم/الجهاد ۱۶ (۱۷۶۰)، (تحفة الأشراف: ۱۳۸۰۵)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الكلام ۱۲ (۲۸)، مسند احمد (۳۷۷۲) (صحيح)
 ۲: تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۶۴۹، ۳۹۵۲) (صحيح)

خرج کولو اوچه کوم به زیاتي شو هغه به ئې صدقه کولو، بیا ددې نه پس نبی ﷺ وفات اود دوه کالو دپاره ابوبکر رضی اللہ عنہ ددې مال مثولي جوړ شو هغه به هم داسې کول څنگه چه نبی ﷺ کړي وواوبیائي دمالک بن اوسه دحدیث څه حصه ذکر کړله

(عن البختری قال سمعت حدیثا من رجل فاعجبني فقلت اکتبه لی، فاتی به مکتوبا مذبرا)

ابوالبختری وائی چه ما دیو سړی یو حدیث واوریدو نو زما هغه ډیر زیات خوښ شو په دې وجه ما هغه ته اووې چه دا حدیث ما اولیکه، پس هغه حدیث لیکلې راوړو ډیر غوره، وړاندې په روایت کښې د هغه حدیث بیان دې دا هم هغه د علی او د عباس رضی اللہ عنہما د اختلاف حدیث دې --- کوم چه دلته د باب په شروع کښې تفصیلی تیر شوې دې او بیا روستو په مختلفو روایاتو کښې د هغې قطعات تیر شوې دې، چه د هغې راوی مالک بن اوس بن الحدثان دې، په دې روایت کښې د رجل مبهم نه هم دا مراد دې.

[۲۹۷۶] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا قَالَتْ: إِنَّ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ تُوْفِيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْدُنَ أَنْ يَبْعَثَنَّ عُمَانَ بْنَ عَفَّانَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ فَيَسْأَلَنَّهُ مُنْهِنًا مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ هُنَّ عَائِشَةُ: أَلَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا فِيهِ وَصَدَقَةٌ".

د ام المومنین عائشة رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه کله نبی ﷺ وفات شونود نبی ﷺ ازواج مطهراتو اوغوښتل چه عثمان رضی اللہ عنہ ابوبکر الصديق ته اولیبري چه ددوی دپاره ترې دښې رضی اللہ عنہا په مال کښې اتمه حصه راوړي نويه دې وخت کښې ورته ام المومنین عائشې رضی اللہ عنہا او فرمائیل ایا تاسوته نده معلومه چه نبی ﷺ فرمائیلی وو: زمونږ څوک وارث نشته او څه چه مونږ پریږدو هغه صدقه ده.

(عن عائشة رضی اللہ عنہا قالت ان ازواج النبی ﷺ حين توفي الخ)

د دې روایت مضمون دلته بالکل د باب په شروع کښې تیر شوې دې چه د رسول الله ﷺ ازواج مطهرات هم د صديق اکبر رضی اللہ عنہ د خپل میراث د طلب کولو اراده کړې وه د عائشې رضی اللہ عنہا په حدیث وریادولو باندي هغوی خپله اراده ملتوی کړې وه. والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری

[۲۹۷۷] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمَزَةَ، حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، بِإِسْنَادِهِ نَحْوَهُ قُلْتُ: أَلَا تَتَّقِينَ اللَّهَ أَلَمْ تَسْمَعَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَا تُورَثُ مَا تَرَكَنَا فِيهِ وَصَدَقَةٌ"، وَإِنَّمَا هَذَا الْمَالُ لِأَلِ مُحَمَّدٍ لِنَابِتِهِمْ وَلِصَفِيهِمْ فَأَدَامَتْ فِهْرًا لِي مَنْ وَلِيَ الْأُمْرَ مِنْ بَعْدِي.

اوهمدارنگي داروایت ابن شهاب زهري نه په بل سند سره هم دتیرروایت په شان منقول دې مگرددي اضافي سره چه عائشه رضی اللہ عنہا وائی ما امهات المومنین ته ووثیل ایا تاسودالله تعالی نه نه ویریږئ، او ایا تاسوته نده معلومه چه نبی ﷺ فرمائیلی وو: زمونږ څوک وارث

۱: صحيح البخاري للمغازي ۱۴ (۴۰۳۴)، الفرائض ۳ (۶۷۳۰)، صحيح مسلم للجهداد ۱۶ (۱۷۵۸)، موطا امام مالك / الكلام ۱۲ (۲۷)، (تحفة الأشراف: ۱۶۵۹۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵/۱، ۲۶۲) (صحيح) ۲: تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۴۰۷)، وقد أخرجه: سنن ترمذي للشمال ۱ (۴۰۲)، مسند احمد (۱۴۵/۱) (حسن)

نشته او څه چه مونږ پرېږدو هغه صدقه ده الحمد لله تعالی چه **(باب فی صفایا رسول ﷺ)** چه دا یو اوږد او اهم باب وو. د هغې د احادیثو شرح او بحث پوره شو.

باب فی بیان مواضع قسم الخمس و سهم ذی القربى

نبی علیه السلام به خمس چرته او په کومورشته دارانو تقسیمولو؟

د تیر شوی باب او د هغې د احادیثو تعلق خو د مال فئ سره وو. په دې باب کښې د خمس غنیمت حکم او دا چه هغه به اوس په کومو کومو مصارفو کښې تقسیمولې شی.

د تقسیم غنیمت په باره کښې ایه کریمه :

د مال غنیمت د تقسیم طریقه خپله په قرآن کریم کښې منصوص او مصرح ده. **(واعلموا انما غنمتم من شی فان لله خمسہ وللرسول ولذی القربى والیتامی والمساکین وابن السبیل)** یعنی اول د دې ټول مال غنیمت تخمیس او کړې شی یعنی د هغې دې برابر پنځه حصې کړې شی او بیا دې یوه حصه په هغه واقعو کښې کوم چه په دې آیت کریمه کښې ذکر کړې شوې دی په هغوی کښې دې تقسیم کړې شی. او باقی اربعة اخماس دې ښکاره ده چه په مجاهدینو تقسیم کړې شی، په دې آیت کریمه کښې د تقسیم خمس شپږ ځایونو ذکر شوې دی. چه هغې کښې د ټولو نه اول د الله پاک نوم دې، په دې باره کښې د جمهورو رائي دا ده چه هر څه خو د الله پاک دی، د الله پاک نوم دلته د برکت دپاره ذکر شوې دې. امام نسائی رحمته په خپل سنن صغری کښې د دې پوره آیت کریمه د ذکر کولو نه پس چه خپله د دې آیت کومه تشریح په خپل کلام سره کړې ده، کافی مفصل کلام دې هغوی د الله پاک د نوم د ذکر کولو هم دا وجه بیان کړې ده او یوه خبره ئې بله لیکلې ده **(ولعله انما استفتح الکلام فی الفی والخمس بذکر نفسه لانها اشرف الکسب ولم ینسب الصدقة الی نفسه عزوجل لانها اوساخ الناس)** یعنی الله پاک د صدقې مصارف چه چرته بیان کړې دی هلته ئې په شروع کښې خپل نوم نه دې ذکر کړې بلکه داسې ئې فرمائیلې دی **(انما الصدقات للفقراء والمساکین والعاملین علیها الخ)** په خلاف د غنیمت کښې چه هغه د اشرف المکاسب نه دې. ^(۱)

^(۱) د اشرف المکاسب بحث : په دې سلسله کښې امام بخاری رحمته هم په کتاب البیوع کښې یو باب قائم فرمائیلې دې **(باب کسب الرجل وعمله بیده)** **(واخرج فیه عن المقدم عن النبی ﷺ قال ما اکل احد طعما قط خیرا من ان یاکل من عمل یده وان نبی الله داؤد کان یاکل من عمل یدیه، وایضا اخرج حدیث عائشة رضی الله عنها قالت لما استخلف ابوبکر الصدیق رضی الله عنه قال لقد علم قومي ان حرفة لم تکن تعجز عن مؤنة اهلي وشقلت بامر المسلمین فسیاکل آل ابی بکر من هذا المال ویحترف للمسلمین فیه (البخاری ۲۷۸/۱) وفي (الابواب والتراجم ۲/۲۳۴) عن الحافظ قد اختلف العلماء فی افضل المکاسب، قال الماوردي: اصول المکاسب الزراعة والتجارة والصنعة، والاشبه بمذهب الشافعي ان اطيها التجارة قال والارجح عندي ان اطيها الزراعة لانها اقرب الی التوکل، وتعقبه النووي بحديث المقدم، وان الصواب ان اطييب الکسب ما کان بعمل الید، قال فان کان زراعا فهو اطييب المکاسب لما یشتمل علیه من کونه عمل الید ولما فیه من التوکل الی آخر ما قال. قال الحافظ: وفوق ذلك من عمل الید ما ینسب من اموال الکفار بالجهاد وهو مکسب النبی ﷺ واصحابه وهو اشرف المکاسب لما فیه من اعلاء کلمة الله تعالی، خذلان کلمة اعدائه، والنفع الاخروي، قال ومن لم يعمل بیده فالزراعة فی حقه افضل. الی آخر ما فی الابواب والتراجم من اقوال الشراح فی ذلك وفیه قلت وظاهر الترجمة الاشارة الی ترجیح الحرفة وفه صرح العيني والقسطلابي. الی آخر ما فیه فارجع الیه لو شئت التفصیل **(****

په دې وجه ئې د دې شروع د خپل نوم نه اوکړه، او صدقات چونکه اوساخ الناس دی هلته الله پاک خپل نوم نه دې ذکر کړې او بیا وړاندې هغوی د بعض علماء کرامو دا مذهب نقل کړې دې چه د هغوی رائي دا ده چه د غنیمت په مال کښې دې د الله پاک په نوم هم ویستلې شی او بیا دې هغه په خانه کعبه باندې خرچ کړې شی، الی آخر ما ذکر او د دې بعض نه مراد ابو العالیه دې.

د ترجمه الباب والا مسئله کښې مذاهب د امامانو :

د دې نه پس تاسو د ترجمه الباب سره متعلق د خلاصې په طور خان په دې باندې پوهه کړئ هغه دا چه د غنیمت د خمس په باره کښې په امامانو کښې د امام مالک رضی الله عنه رائي دا ده چه د دې تقسیم د امام په رائي باندې دې ټول مصارف ذکر کړې شوي په آیت کښې خرچ کول ضروری نه دی خو د ذوی القربی هغه حصه به ضرور لگولې شی، او د شوافعو او د حنابله مسلک دا دې چه خمس د غنیمت به د رسول الله صلی الله علیه و آله د وفات نه پس هم پنځه ځایه تقسیم کولې شی، پس د رسول الله صلی الله علیه و آله حصه به هم ویستلې شی کومه چه به امام المسلمین هلته خرچ کوی کوم ځائي چه به خپله رسول الله صلی الله علیه و آله خرچ کوله، په مصالح مسلمین کښ، او باقی څلور حصې به هغوی ته ورکولې شی کوم چه په آیت کریمه کښې ذکر کړې شوي دی، او د احنافو مسلک په دې کښې دا دې چه د رسول الله صلی الله علیه و آله حصه د هغوی د وفات نه پس ساقط شوه، هم دغه شان د سهم ذوی القربی په باره کښې هم د دې رائي دا دې چه هغوی ته به د فقر د وجې نه ورکولې شو، لهذا فقراء او ذوی القربی ته به ورکولې شی اغنیاء ته نه، لهذا باقی درې چه کومې پاتې شوي (یتامی، مساکین، ابن السبل) هم په دوی کښې به دا تقسیم کولې شی، او هغوی درې واړو ته هم د هغوی په نزد د مستحق کیدو په حیثیت سره نه بلکه د مصرف کیدو په حیثیت سره ورکولې شی، حتی لو صرف الی صنف واحد منهم جاز، امام نسائي رضی الله عنه هم د سهم ذوی القربی په باره کښې خپله رائي هم د الیکلې ده کومه چه د احنافو ده، پس هغوی فرمائی ﴿وقد قيل انه للفقير منهم دون الفتي كالتامی وابن السبل وهو اشبه القولین بالصواب عندی، والله اعلم آه

او په دې باندې هم خان پوهول پکار دی چه د خمس په تقسیم کښې د ذوی القربی په مصداق کښې د بنو هاشم سره بنو المطلب هم داخل دی لکه چه حدیث الباب کښې د دې ذکر را روان دې خو د زکوة په مسئله کښې د بنو هاشم سره د بنو المطلب داخلیدل مختلف فیه دی وقد مر فی کتاب الزکوة.

[۲۹۷۸] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ بْنِ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيْبِ، أَخْبَرَنِي جَبْرِ بْنُ مُطْعِمٍ، أَنَّهُ جَاءَهُ وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ يَكْلِمَانِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا قَسَمَ مِنَ الْخَمْسِ بَيْنَ بَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي الْمُطَّلِبِ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَسَمْتَ لِإِخْوَانِنَا بَنِي الْمُطَّلِبِ، وَلَمْ تُعْطِنَا شَيْئًا وَقَرَابَتُنَا وَقَرَابَتَهُمْ مِنْكَ وَاحِدَةٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ

(۱) صحیح البخاری/الخمس ۱۷ (۳۱۴۰)، المناقب ۲ (۳۵۰۲)، المغازی ۳۹ (۴۲۲۹)، سنن النسائي/الفیء (۴۱۴۱)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۴۶ (۲۸۸۱)، تحفة الأشراف: (۳۱۸۵)، وقد أخرجه: مسند محمد (۸۱/۴، ۸۳، ۸۵) (صحیح)

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو الْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَوَاحِدٌ»، قَالَ جَبْرِ: «وَلَمْ يَقْسِمْ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَلَا لِبَنِي تَوْفَلٍ مِنْ ذَلِكَ الْخُمْسِ كَمَا قَسَمَ لِبَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي الْمُطَّلِبِ»، قَالَ: «وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَقْسِمُ الْخُمْسَ نَحْوَ قَسْمِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ يُعْطِي قُرْبَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِيهِمْ»، قَالَ: «وَكَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُعْطِيهِمْ مِنْهُ وَعُثْمَانُ بَعْدَهُ».

د جبير بن مطعم نه روایت دي فرماني چه زه او عثمان بن عفانه د نبی ﷺ په خدمت كښې د دې خمس متعلق دگفتگو دپاره حاضر شو كوم چه نبی ﷺ په بنو هاشم او بنو عبد المطلب باندي تقسيم كړي ووما عرض وكړو چه اي دالله رسوله زمونږ ورونږو بنو عبد المطلب ته دي حصه وركړه او مونږ ته دي هيڅ رانكړل او زمونږ او دهغوی درسره يو برابر رشته ده نبی ﷺ او فرمائيل بنو عبد المطلب او بنو هاشم يوشې دي جبير وائی چه نبی ﷺ بنو عبد شمس او بنی نوفل ته د دې خمس نه څه نه وو وركړی لكه څنگه چه ئې بنو عبد المطلب او بنو هاشم ته وركړی وو، د دې نه بعد ابو بكر الصديق نه به هم په دي طريقه باندي د نبی ﷺ د تقسيم په شان تقسيم كولو، ليكن هغه به د نبی ﷺ رشته دارونه دومره څه نه وركول لكه څنگه چه څومره به ورته نبی ﷺ وركول، جبيره وائی چه عمر رضي الله عنه به ورته د دې خمس نه وركول او دهغه نه پس عثمانه به ورته هم وركول.

﴿ اخبرني جبير بن مطعم انه جاء هو وعثمان بن عفان رضي الله عنهما يكلمان رسول الله ﷺ في ما قسم من الخمس بين بني هاشم وبني المطلب الخ ﴾

مضمون الحديث:

د حديث په مضمون باندي د پوهيدو نه مخكښې تاسو ځان پوهه كړئ چه رسول الله ﷺ خمس د ذوی القربى لره د بنو هاشم او بنو المطلب تر مينځه تقسيم فرمائيلي وو، په دي باندي جبير بن مطعم رضي الله عنه چه نوفلی وو د نوفل بن عبد مناف په اولاد كښې دي، او عثمان رضي الله عنه چه عبشمی دي چه د عبد شمس بن عبد مناف په اولاد كښې دي، دا دواړه د رسول الله ﷺ په خدمت كښې حاضر شواو دا عرض ئې او كړو چه تاسو زمونږ د رور بنو المطلب دپاره په خمس كښې حصه لگولې ده او مونږ دواړو ته مو هيڅ رانه كړل حال دا چه خپلولی د بنو المطلب چه تاسو سره ده هم هغه بنو نوفل او بنو عبد شمس هم ده (۱) رسول الله ﷺ او فرمائيل ﴿ انما بنو هاشم وبنو المطلب شی واحد ﴾ په دي روایت كښې خو صرف هم دا دی او وړاندي دا راځی چه رسول الله ﷺ او فرمائيل چه بنو هاشم او بنو المطلب همیشه په جاهليت كښې هم او په اسلام كښې هم يو ځانې پاتې شوې دي ﴿ وانما نحن وهم شی واحد وشبك بين اصابعه ﴾ يعنی هغوی په خپلو گوتو كښې گوتې داخلولو سره او فرمائيل چه دا دواړه قبيلې همیشه داسې پاتې شوې دي، د رسول الله ﷺ د دي جواب حاصل دا شو چه دا خو صحيح ده

۱، د رسول الله ﷺ د څلورم نيکه عبد مناف څلور ځامن وو، هاشم، مطلب، نوفل، عبد شمس، لهذا دا څلور خاندانونه شو، بنو هاشم چه په هغې كښې رسول الله ﷺ دي، بنو المطلب، بنو نوفل، بنو عبد شمس. د جبير سلسله نسب دا دي جبير بن مطعم بن عدی بن نوفل بن عبد مناف، د عثمان رضي الله عنه دا دي، عثمان بن عفان بن ابی العاص بن أمية بن عبد شمس بن عبد مناف.

چه د خپلولی په اعتبار سره څلور واړه خاندانونه برابر دی، خو بنو المطلب ته چه ورکړې شوي دي هغه صرف د خپلولی په وجه باندې نه دي بلکه د قرابت مع النصر والاعانة په وجه باندې، کوم چه په بنو المطلب کښې موندلې شي، باقی دواو کښې مفقود دي.

وراندې په روایت کښې دي ﴿وكان ابوبکر يقسم الخمس نحو قسم رسول الله ﷺ غير انه لم يكن يعطى قربي رسول الله ﷺ ما كان النبي ﷺ يعطيهم قال فكان عمر بن الخطاب يعطيهم منه وعثمان بعده﴾ يعني ابوبکر رضی اللہ عنہم د خمس هم داسې تقسیم فرمائیلو څنگه چه رسول الله ﷺ تقسیمولو، بس فرق دا وو چه رسول الله ﷺ خو به ذوی القربی ته د هغوی حصه ورکوله، خو ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ به نه ورکوله، هم دغه شان به عمر او عثمان رضی اللہ عنہم د رسول الله ﷺ په شان ورکړه کوله.

د صدیق اکبر رضی اللہ عنہ د دې عمل نه د احنافو د ذوی القربی د مسئلې تائید کيږي چه د هغوی مستقل حصه نه وه بلکه د حاجت او فقر په وخت کښې (بذل) کښې ليکلې دي چه غالباً د صدیق اکبر رضی اللہ عنہ هغوی ته نه ورکول هم په دې وجه وو چه هغوی د ابوبکر رضی اللہ عنہ په زمانه کښې مالدار وو، او هغوی غیر ذوی القربی لره احوج او کنړل د هغوی نه په دې وجه ئې هغوی له ورکړه والحديث اخرجه البخاري والنسائي وابن ماجه مختصرا، قاله المنذري

[۲۹۷۹] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ عُمَرَ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيْبِ، حَدَّثَنَا جَبْرِ بْنُ مُطْعِمٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا قَسَمَ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَلَا لِبَنِي تَوْفَلٍ مِنَ الْخُمْسِ شَيْئًا كَمَا قَسَمَ لِبَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي الْمُطَّلِبِ، قَالَ: وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَقْسِمُ الْخُمْسَ نَحْوَ قِسْمِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ يُعْطِي قُرْبَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَمَا كَانَ يُعْطِيهِمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ عُمَرُ يُعْطِيهِمْ وَمَنْ كَانَ بَعْدَهُ مِنْهُمْ.

د جبير بن مطعم رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائي چه نبی ﷺ بنو عبد شمس او بنی نوفل ته ددې خمس نه هيڅ نه وو ورکړي لکه څنگه چه ئې بنو عبد المطلب او بنو هاشم ته ورکړي وو، جبيره وائي چه ابوبکر الصدیق رضی اللہ عنہ به هم په دې طريقه باندې د نبی ﷺ د تقسیم په شان تقسیم کولو، ليکن هغه به د نبی ﷺ رشتنه داروته پداسې شان څه نه ورکول لکه څنگه چه به ورته نبی ﷺ ورکول، او عمر رضی اللہ عنہ به ورته ددې خمس نه ورکول او چاچه دده نه پس خلافت کړې دي هغوی به ورته هم ورکول.

[۲۹۸۰] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيْبِ، أَخْبَرَنِي جَبْرِ بْنُ مُطْعِمٍ، قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ خَيْبَرَ وَضَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَهْمَ ذِي الْقُرْبَى فِي بَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي الْمُطَّلِبِ وَتَرَكَ بَنِي تَوْفَلٍ وَبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ، فَأَنْطَلَقْتُ أَنَا وَعُمَانُ بْنُ عَفَّانَ حَتَّى أَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَؤُلَاءِ بَنُو هَاشِمٍ لَا تُنْكَرُ فَضْلَهُمْ لِلْمَوْضِعِ الَّذِي وَضَعْتَ اللَّهُ بِهِ مِنْهُمْ، فَمَا بَأْسَ إِخْوَانِنَا بَنِي الْمُطَّلِبِ أُعْطِيَتْهُمْ وَتَرَكْنَا وَقَرَابَتُنَا وَاحِدَةً، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّا وَبَنُو الْمُطَّلِبِ لَا نَفْتَرِقُ فِي جَاهِلِيَّةٍ وَلَا إِسْلَامٍ وَمَا مَنَعُنْ وَهَمْ شَيْءٌ عَوَّاجِدُ وَشَبَكُ بَيْنَ أَصَابِعِهِ".

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۳۱۸۵) (صحيح)

د جبير بن مطعم رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه كله دغزوه خيبر نه فراغت حاصل شونونبي صلى الله عليه وسلم دذوي القربي حصه په بنی هاشم او بنو عبد المطلب باندي تقسيم كړه او بنی نوفل او بنی عبد شمس ئي پريخودل نوزه او عثمان خه د بنی عليه السلام په خدمت كښي حاضر شو او عرض مو وكړو چه اي د الله رسوله دا هغه بنو هاشم دي د چا د فضيلت نه چه مونږ انكار نه كوويه وجه ددي چه الله تعالى ته ددوي نه پيدا كړي ئي ليكن د بنو عبد المطلب په باره كښي ستاخه راي ده؟ چه هغوي ته دي حصه ور كړه او مونږ ته دي رانكړه حالانكه زمونږ اود هغوي درسره يوشان رشته ده؟ بنی عليه السلام او فرمائيل: مونږ او بنو عبد المطلب هيڅ كله نه يو جد اشوي نه په جاهليت كښي اونه په اسلام كښي او مونږ او هغوي يو شي يواو ديولاس گوتي ئي د بل لاس په گوتو كښي ننويستلي.

[۲۹۸۱] (۱) حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الْعَجَلِيُّ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ صَالِحٍ، عَنِ السَّيِّدِي ذِي الْقُرْنِيِّ، قَالَ: هُمُ بَنُو عَبْدِ الْمُطَّلِبِ.

د سدي نه روایت دي چه فرمائيل ئي په قران كريم كښي دذوي القربي نه مراد بنی عبد المطلب دي.

﴿ عن السدي في ذوى القربى قال هم بنو عبدالمطلب ﴾: حضرت په بذل كښي ليكلي دي چه ټولو مطبوعه او قلمي نسخو كښي داسي دي، خو نسخه مصريه كښي د دي په ځا ئي بنو مطلب دي، كه بنو المطلب وي (۱) په دي صورت كښي به مطلب دا وي چه د بنو هاشم سره په دي كښي صرف بنو المطلب شامل دي يعنى بنو نوفل او بنو عبد الشمس د ذوى القربى په مصداق كښي داخل نه دي، او كه دلته په روایت كښي بنو عبد المطلب دي نو چونكه هغه خو په بنو هاشم كښي هم اخص دي پاتي لا دا چه بنو المطلب ته شامل وي، په دي وجه داسي به وئيلي شي چه د دي تفسير نه مقصود حصر نه دي.

[۲۹۸۲] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنبَسَةُ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، أَخْبَرَنِي يَزِيدُ بْنُ هُرْمَزٍ، أَنَّ نَجْدَةَ الْحُرَوْرِيَّ. حِينَ حَجَّ فِي فِتْنَةِ ابْنِ الزُّبَيْرِ أَرْسَلَ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْأَلُهُ عَنِ تَكْوِينِ ذِي الْقُرْنِيِّ، وَيَقُولُ: لِمَنْ تَرَاهُ؟ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لِقُرْنِيِّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَمِعَهُ هُمُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ كَانَ عَمْرُ عَرَضَ عَلَيْنَا مِنْ ذَلِكَ عَرَضًا رَأَيْنَاهُ دُونَ حَقِيقًا فَرَدَدْنَاهُ عَلَيْهِ وَأَبَيْنَا أَنْ نَقْبَلَهُ.

د يزيد بن هرمز نه روایت دي فرمائی كله چه د ابن الزبير د شهادت په وخت كښي نجدة الحروري دخوارجو مشر حج كولو نو د ذوى القربى د معلومولو دپاره ئي ابن عباس ته يو كس ورو ليرلو او وئې وئيل چه ستا په خيال ددي به څوك مراد دي كوم چه په دي آيت كريمه واعلموا انما غنمتم كښي ذكر دي؟ ابن عباس رضي الله عنه او فرمائيل ددي نه د بنی عليه السلام رشته دار مراد

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۴۳۸) (ضعيف)

(۲): بنو المطلب او بنو عبدالمطلب ترمنيخه فرق ښكاره ده چه عبدالمطلب د هاشم خونې دي او المطلب د هاشم رور دي

(۳): صحيح مسلم/الجهاد ۴۸ (۱۸۱۲)، سنن الترمذي/السير ۸ (۱۰۰۶)، سنن النسائي/الفيء (۴۱۳۸)، (تحفة الأشراف: ۶۵۵۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۴۸/۱، ۲۹۴، ۳۰۸، ۳۲۰، ۳۴۴، ۳۴۹، ۳۵۲) (صحيح)

دي، او عمر هډوی ته ددرې حصه پيش کړې وه او دهغې نه ئې څه حصه مونږ ته هم پيش کړې وه لیکن مونږ هغه کمه وگنډله او ورته مو ورواپس کړه او دهغې د بلولو نه مو انکار وکړو.

﴿ اخبرنا يزيد بن هرمز ان نجدة الحروري حين حج في فتنة ابن الزبير ارسل الى ابن عباس رضي الله عنه يساله عن سهم ذي القربى ويقول لمن تراه؟ ﴾

مضمون د هديت :

حروري يعنى خارجى او دا نجدة رئيس الخوارج وو. د عبدالله بن زبير رضي الله عنه د قتال په كال كښي چه كله هغه حج او كړو نو ابن عباس رضي الله عنه ته ئې يو قاصد اوليرلو او د سهم ذوى القربى په باره كښي ترې نه تپوس او كړو چه چاته ملاويدل پكار دى ستاسو رائي څه ده؟ ابن عباس رضي الله عنه فرمائي چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم د خپلوانو دپاره لكه څنگه چه به خپله رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغوى حصه لگوله. وړاندي ابن عباس رضي الله عنه فرمائي چه يو ځل عمر رضي الله عنه هم په دې حصه كښي مونږ ته هم پيش كړې وه خو مونږ هغې لره د خپل حق نه كم گنړلو سره رد كړې وه.

په دې روايت سره يو حيثيت سره د احنافو تائيد كيږي د سهم ذوى القربى په سلسله كښي هغه دا چه د هغه حق او حصه د حاجت په وخت او په اندازه د حاجت ده نو عمر رضي الله عنه په اندازه د حاجت پيش فرمائي وې. او د ابن عباس رضي الله عنه د طرز عمل نه د شوافعو او حنابله د مسلك تائيد كيږي چه د هغوى په نزد د هغوى حصه مطلقا په هر صورت كښي واجب ده. دا د قتال ابن الزبير واقعه او د دې بيان په كتاب الحج كښي تير شوې دې.

والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى

[۲۹۸۳] () حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو جَعْفَرٍ الرَّازِيُّ، عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ: وَلَإِنِّي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُمُسَ الْخُمْسِ فَوَضَعْتُهُ مَوَاضِعَهُ حَيَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَحَيَاةَ أَبِي بَكْرٍ، وَحَيَاةَ عُمَرَ فَأَتَيْتُ بِمَالٍ قَدَعَانِي، فَقَالَ: خُذْهُ فَقُلْتُ: لَا أُرِيدُهُ قَالَ: خُذْهُ فَأَنْتُمْ أَحَقُّ بِهِ، قُلْتُ قَدْ اسْتَفْنَيْتَا عَنْهُ فَجَعَلَهُ فِي بَيْتِ الْمَالِ..

د علي رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه نبی صلى الله عليه وسلم ماته د خمس پنځمه حصه راكړه نومابه هغه په خپلو امورو او ضرورياتو كښي خرچ كوله ترڅو چه نبی صلى الله عليه وسلم او ابوبكر او عمر رضي الله عنه ژوندي وو، بيا چه كله يوځل عمر رضي الله عنه ته ډير مال راغې نوزه ي را اوغوښتل او راته ئې اووئيل چه دا مال ته واخله ماورته ووئيل چه زه دا نه اخلم هغه راته اووئيل چه واخله ئه ددې حقدار ئې ماعرض وكړو چه ماته ددې ضرورت نشته بيا هغه عمر رضي الله عنه په بيت المال كښي جمع كړو.

د علي رضي الله عنه توليه په خمس الخمس كښي :

﴿ عن عبدالرحمن بن ابى ليلى قال سمعت عليا رضي الله عنه يقول ولانى رسول الله صلى الله عليه وسلم خمس الخمس فوضعتة مواضعه حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم وحياة ابى بكر وحياة عمر الخ ﴾ : په دې حديث كښي چه په خمس غنيمت كښي چه كومه حصه د ذوى القربى ده خمس الخمس، رسول الله صلى الله عليه وسلم هغه د علي رضي الله عنه په توليه كښي وركړې وو يعنى ذوى القربى كښي د تقسيمولو دپاره، ستاسو په

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۲۴) (ضعيف الإستاد)

ژوند کښې هم داسې وه، او د ابوبکر او عمر رضی اللہ عنہما په ژوند کښې هم، یعنی هغوی دواړو هم په خپله زمانه د خلافت کښې د علی په تولیة کښې هغه ته ورکړې وو. پس علی رضی اللہ عنہ فرمائی چه ما دا تقسیموله. د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په حیات کښې هم او د شیخینو په حیات کښې هم، وړاندې هغه فرمائی چه یو ځل عمر رضی اللہ عنہ زه راوغوښتلم او ماته ئې او فرمائیل واخله خپله حصه، ما اووې چه زما اراده نه ده د اخستلو، هغوی دوباره اووې په دې ما باندې ما عرض اوکړو چه دې کال مونږ ته د دې نه استغناء حاصله ده، پس هغوی هغه بیا په بیت المال کښې داخل کړو د دې نه هم د احنافو د مسلک تائید کيږي چه اوگورئ علی رضی اللہ عنہ د عدم حاجت په وخت دا نه وو اخستلې

تنبیه : د علی رضی اللہ عنہ د دې روایت نه هم معلومیږي چه علی رضی اللہ عنہ ته د دې ذوی القربی د حصې تولیت د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او د شیخینو رضی اللہ عنہما د طرف نه ملاؤ شوې وو. او د دې نه مخکښې د جبیر بن مطعم رضی اللہ عنہ په دواړو روایتونو کښې دا تیر شوی دی چه صدیق اکبر رضی اللہ عنہ د خپل خلافت په زمانه کښې ذوی القربی ته د هغوی حصه په خمس کښې ورنکړه، فالحدیثان متعارضان _____ شیخ ابن الهمام رحمته اللہ علیہ د دې تعارض جواب د حافظ منذری رحمته اللہ علیہ نه دا نقل کړې دې (الصحيح حديث جبیر وحديث علی لا یصح) پس صحیح دا ده چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او عمر فاروق او عثمان رضی اللہ عنہما د طرف خو علی رضی اللہ عنہ متولی جوړ کړې شوې وو د صدیق اکبر رضی اللہ عنہ د طرف نه وو جوړ کړې شوې. (بذل)

د دې نه روستو روایت کښې هم داسې راروان دی دې ته به هم داسې وئیلې شی، او په دې کښې به دا هم راځي چه (حتى اذا کانت اخر سنة من سنی عمر فانه اتاه مال کثیر فعزل حقتا ثم ارسل الی فقلت : بنا عنه العام غنی، وبالمسلمین الیه حاجة) دا مضمون د دې نه په مخکښې روایت کښې تیر شوې دي.

[۲۹۸۴] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ مُعْمَرٍ، حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْبَرِيدِ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا عَلَيْهِ السَّلَامُ يَقُولُ: اجْتَمَعْتُ أَنَا، وَالْعَبَّاسُ، وَفَاطِمَةُ، وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ رَأَيْتَ أَنْ تُؤْتِيَنِي حَقَّنَا مِنْ هَذَا الْخُمُسِ فِي كِتَابِ اللَّهِ، فَأَقِيمَهُ حَيَاتِكَ كَمَا لَا يُنَازِعُنِي أَحَدٌ بَعْدَكَ فافعل، قَالَ: فَفَعَلَ ذَلِكَ قَالَ: فَقَسَمْتُهُ حَيَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ لِأَبِيهِ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَتَّى إِذَا كَانَتْ آخِرُ سَنَةٍ مِنْ سِنِي عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَأَتَهُ أَتَاهُ مَالٌ كَثِيرٌ فَعَزَلَ حَقَّنَا، ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَيَّ فَقُلْتُ: بِنَا عَنْهُ الْعَامَ غَنَى، وَبِالْمُسْلِمِينَ إِلَيْهِ حَاجَةٌ فَارْزُدْهُمْ عَلَيْهِمْ فَرَزُدْهُ عَلَيْهِمْ، ثُمَّ لَمْ يَدْعُنِي إِلَيْهِ أَحَدٌ بَعْدَ عُمَرَ، فَلَقِيتُ الْعَبَّاسَ بَعْدَ مَا خَرَجْتُ مِنْ عِنْدِ عُمَرَ، فَقَالَ: يَا عَلِيُّ حَرَمْتَنَا الْعِدَاةَ شَيْئًا لَا يَرُدُّ عَلَيْنَا أَبَدًا وَكَانَ رَجُلًا دَاهِيًا.

د علی رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه زه او عباس او فاطمه او زید بن حارثه رضی اللہ عنہم یو ځل د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې جمع شو ما عرض وکړو چه ای د الله رسوله د قران کریم مطابق چه زمونږ په خمس کښې کوم حق دي هغه مونږ ته په خپل ژوند کښې راکړه ددې دپاره چه ستانه پس

(۱) تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۱۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۴/۱) (ضعيف الإسناد)

خوک پرې راسره جگره ونکړې چنانچه نبی ﷺ همدا سې وکړل نو ترخوچه نبی ﷺ ژوندي وو مابه دانقسيموو، دهغه نه پس بيا ابوبکرهم زه ددې اختيارمند کړي وم تردي چه د عمر ددورخلافت آخری کال راغې نو ډير مال ورته راغې په هغې کښې ئې زمونږ حصه مقررکړه اوزه ئې طلب کم ماعرض وکړو سرکال مونږته دمال ضرورت نشته نورو مسلمانانو ته ددې ضرورت دي نو عمر دغنيمت په نور مال کښې شامل کړو بيا د عمر نه پس زه هيچا ددي مال دپاره نه يم راغوبستلي نوکله چه زه د عمر نه راووتلم نو عباس رضي الله عنه نه سره مې ملاقات اوشوهغه ووييل اي عليه دنن نه پس تا مر نر لره ديوشی نه محروم کړوددي نه پس به هيڅکله دا حصه مونږته ملاونه شی، او عباس ډير ذکي او دانشمند سړې وو

په وړاندي روايت کښې دا دی ﴿ ثم لم يدعني اليه احد بعد عمر، فلقيت العباس بعد ما خرجت من عند عمر : فقال يا علي : حرمتنا الغداة شيئا لا يرد علينا ابدا، وكان رجلا داهيا ﴾

سيدنا علي رضي الله عنه فرمائی چه زما د يو ځل رد کولو نه پس چا هم زه د هغې طرف ته نه يم بللي، د عمر رضي الله عنه نه پس، وړاندي دا هم دی چه کله زه د عمر رضي الله عنه د مجلس نه راووتلم نو زما ملاقات د عباس رضي الله عنه سره اوشو نو هغوی ماته او فرمائيل اي علي! نن تا مونږ د خپلي حصې نه محروم کړو، اوس به کله هم مونږ ته نه ملاويږي، علي رضي الله عنه فرمائی چه حقيقت دا وو چه عباس رضي الله عنه ډير فهيم او تجربه کار انسان وو.

[۲۹۸۵] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنَبَسَةُ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْحَارِثِ بْنِ تَوْفَلٍ الْهَاشِمِيُّ، أَنَّ عَبْدَ الْمُطَّلِبِ بْنَ رَبِيعَةَ بْنَ الْحَارِثِ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ أَخْبَرَهُ، أَنَّ أَبَاةَ رَبِيعَةَ بْنَ الْحَارِثِ، وَعَبَّاسَ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، قَالَا: لِعَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ رَبِيعَةَ، وَلِلْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ اثْنَيْارَسُورَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَوْلًا لَهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ بَلَّغْنَا مِنَ السِّنِّ مَا تَرَى وَأَحْبَبْنَا أَنْ نَتَزَوَّجَ، وَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَبُو النَّاسِ وَأَوْصَلَهُمْ وَلَيْسَ عِنْدَ آبَائِنَا مَا يُصَدِّقَانِ عِنَّا فَاسْتَعْمِلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ عَلَى الصَّدَقَاتِ فَلَنؤَدِّيَنَّ إِلَيْكَ مَا يُؤَدِّي الْعَمَّالُ وَلَنُصِيبَ مَا كَانَ فِيهَا مِنْ مَرْفِقٍ، قَالَ: فَأَتَى عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ وَنَحْنُ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ، فَقَالَ لَنَا: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا وَاللَّهِ لَا نَسْتَعْمِلُ مِنْكُمْ أَحَدًا عَلَى الصَّدَقَةِ"، فَقَالَ لَهُ رَبِيعَةُ: هَذَا مِنْ أَمْرِكَ قَدْ نِلْتَ صِهْرَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ تَحْضُرْكَ عَلَيْهِ، فَأَلْفَى عَلِيُّ رِذَاءَهُ، ثُمَّ اضْطَجَعَ عَلَيْهِ فَقَالَ: أَنَا أَبُو حَسَنِ الْقَرْمُو اللَّهِ لَا أَرِيهِ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْكُمَا ابْنَا كَمَا يَجُوبُ مَا بَعَثْتُمَا بِهِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ عَبْدُ الْمُطَّلِبِ: فَأَنْطَلَقْتُ أَنَا وَالْفَضْلُ إِلَى بَابِ حُجْرَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى نُوَافِقَ صَلَاةَ الظُّهْرِ قَدْ قَامَتْ فَصَلَّيْنَا مَعَ النَّاسِ ثُمَّ أَسْرَعْتُ أَنَا وَالْفَضْلُ إِلَى بَابِ حُجْرَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَوْمِيذٍ عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ فَقَمْنَا بِالْبَابِ حَتَّى أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخَذَ بِأُذُنِي وَأُذُنَ الْفَضْلِ، ثُمَّ قَالَ: "أَخْرَجَا مَا تُعْرِيَانِ"، ثُمَّ دَخَلَ فَأُذِنَ لِي وَلِلْفَضْلِ قَدْ خَلْنَا فَنَوَاكَلْنَا الْكَلَامَ قَلِيلًا، ثُمَّ كَلِمَتُهُ أَوْ كَلِمَةُ الْفَضْلِ قَدْ شَكَتَ فِي ذَلِكَ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: كَلِمَةُ بِالْأَمْرِ الَّذِي أَمَرْتَاهُ أَبُوَانَا، فَسَكَتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَاعَةً وَرَفَعَ بَصَرَهُ قَبْلَ سَقْفِ الْبَيْتِ حَتَّى طَالَ عَلَيْنَا أَنَّهُ لَا يَرْجِعُ إِلَيْنَا شَيْئًا حَتَّى رَأَيْنَا زَيْنَبَ تَلْمَعُ مِنْ وَرَاءِ الْحِجَابِ بِيَدَيْهَا تُرِيدُ أَنْ لَا تَعْجَلَا وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَمْرِنَا ثُمَّ خَفَضَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأْسَهُ، فَقَالَ لَنَا: "إِنَّ هَذِهِ الصَّدَقَةُ إِنَّمَا هِيَ أَوْسَاخُ النَّاسِ وَإِنَّهَا لَا تَحْمِلُ مُحَمَّدًا وَلَا لِإِلِ مُحَمَّدٍ ادْعُوا لِي تَوْفَلُ بْنُ الْحَارِثِ، قَدْ عَيَّرَ لِي تَوْفَلُ بْنُ الْحَارِثِ فَقَالَ: يَا تَوْفَلُ أَنْكِرْ عَبْدَ الْمُطَّلِبِ

۱: صحيح مسلم للزكاة ۵۱ (۱۰۷۲)، سنن النسائي للزكاة ۹۵ (۲۶۱۰)، (تحفة الأشراف: ۹۷۳۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۶۷۴) (صحيح)

فَأَنْكَحَنِي نَوْقًا، ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ادْعُوا لِي فَحِيمَةَ بِنَ جَزْءٍ وَهُوَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُبَيْدٍ، كَأَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَعْمَلَهُ عَلَى الْأَحْمَاسِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَحِيمَةَ: أَنْتِ كَرِيمَةُ الْفَضْلِ فَأَنْكَحَهُ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَمُرْ فَأَصِدِّقْ عَنْهُمَا مِنَ الْخُمُسِ كَذَا وَكَذَا"، لَمُرْتَابِهِ لِي عَبْدُ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ.

عبد المطلب بن ربیعہ بن حارث دخیل پلار ربیعہ بن عباس بن عبد المطلب دخیل پلار عبد المطلب بن ربیعہ او فضل بن عباس نه روایت کوی فرمائی چه دوی دواړو مونږ ته او وئیل چه دنبی عليه السلام په خدمت کښې حاضر شئ او عرض وکړئ چه ای دالله رسوله دا وخت زمونږه دواډه گولودې او ته ددې نه واقف ئی چه مونږ دواډه لائق یو او مونږ غواړو چه نکاح وکړو او ای دالله رسوله ته په ټولو خلقو کښې زیات نیکی کونکې ئې او صلح رحمی پالونکې ئې زمونږ د مور او پلار سره د مهراډاکولو طاقت نشته ته مونږ لره په صدقه باندې عاملین مقرر کړه خومره مال چه تاته نور عاملان راوړي دومره به مونږ هم راوړو او مونږ ته به هم منافع حاصلیږي، عبد المطلب وائی مونږ په دې گفتگو کښې مصروف وو کتل مو چه علي کرم الله وجهه راغې او وئې وئیل په الله مې دي قسم وي په تاسو کښې هیڅوک نبی عليه السلام د صدقې عامل نه جوړوي ربیعہ چه دا واوریدل نو وئې وئیل چه ته خود حسد دوجې نه داسې وائی ته دنی عليه السلام زوم ئې مونږ خو په تاباندې حسد نه دې کړې علی عليه السلام دا خبره واوریده نو خادر ئې وغوړوو او ځملاستو او وئې فرمائیل زه ابو الحسن یم په پوهه کښې دهرچانه زیات یم په الله مې دي قسم وي تر هغه وخته به ددې ځانې نه ونه خوزم ترخوچه ستاسو ځامن ددې کار نه نا امیده رانشی د کوم کار دپاره ئې چه تاسو نبی عليه السلام ته لیږئ عبد المطلب وائی زه او فضل بن عباس عليه السلام دواړه لارو کله چه مونږ ورسیدو نو د ماسپڅین د مونځ دپاره تکبیر اوشو مونږ دنبی عليه السلام سره یو ځانې مونځ ادا کړو، زه او فضل په جلتئ سره دنبی عليه السلام دکور طرف ته روان شو هغه ورځ نبی عليه السلام د زینب بنت جحش په کور کښې تیروله مونږه دکمري د دروازي سره اودریدو تردې چه نبی عليه السلام راغې د شفقت دوجې نه ئې زما اود فضل غوږونه اونیول او وئې فرمائیل ستاسو په زړه کښې چه څه دي هغه او وائی او ددې نه پس کور ته داخل شو او مونږ ته ئې هم داخل کیدو اجازت را کړو مونږ هم ورداخل شو مونږ په خپل مینځ کښې یوبل ته وئیل خوما دخبرې شروع او کړه (معاوي شک دې چه دا خبره عبد المطلب وکړه او که فضل، او هم هغه خبره مې وکړه کومه چه مونږ ته زمونږ مور او پلار کړې وه نبی عليه السلام چه دا واوریدل نویوشیبه خاموش پاتې شو او نظر ئې پورته کړو دچت طرف ته ئې کتل تردې چه مونږ گمان او کړو چه گني مونږ ته جواب نه را کوي نو مونږ د زینب طرف ته وکتل چه دپردي د شاته طرف نه ئې مونږ ته اشارې کولې چه تیزی مه کوئ نبی عليه السلام ستاسو د مطلب په فکر کښې دې ددې نه پس نبی عليه السلام خپل سر مبارک ښکته کړو او وئې فرمائیل صدقه خو یوخیرې دې اود محمد اودده دخاندان دپازه جائز نه ده تاسو نوقل بن حارث راوغواړئ چنانچه هغه راوغوښتلی شو نبی عليه السلام ورته او فرمائیل ته خپله لور عبد المطلب ته په نکاح ورکړه نو نوقل ماته په نکاح را کړه، اوبیا ئې

محمته بن جزء راوغوښتو او دې دزبید قبیلې والاوو څوک چه نبی ﷺ د خمس دوصول کولو دپاره عامل مقرر کړې وو نبی ﷺ ورته او فرمائیل خپله لور فضل ته په نکاح ورکړه چناچه هغه زمونږ نکاحونه او کرل ددې نه پس نبی ﷺ او فرمائیل پاڅي او ددوی دواړو دطرف نه د خمس په مال کښې دومره دمیره مهرورکړئ، ابن شهاب وائی چه عبدالله بن حارث ماته دمهر مقدار نه دې بیان کړي چه څومره وو.

«اخبرنی عبدالله بن الحارث بن نوفل الهاشمی ان عبدالمطلب بن ربيعة بن الحارث بن عبدالمطلب اخبره ان اباه ربيعة بن الحارث وعباس بن عبدالمطلب قالا لعبدالمطلب بن ربيعة وللفضل بن عباس اتيا رسول الله ﷺ فقولا يا رسول الله ﷺ قد بلغنا من السن ما ترى واحببنا ان نتزوج الخ»

په هديت کښې د ودونو د مسائلو متعلق يو ښکلي واقعه :

دا حديث اوږد دې چه د هغې مضمون دا دې چه د ربيعة بن الحارث ځوڼی عبدالمطلب وائی چه ماته زما پلار ربيعه، او فضل بن عباس رضی الله عنهما ته د هغه پلار عباس رضی الله عنهما او وې چه لار شی رسول الله ﷺ ته او هغوی ته عرض او کړئ چه يا رسول الله ﷺ مونږ دواړه چه کوم عمر ته رسيدلی يو هغه تاسو وینئ (يعنی د واده قابل شوی يو) اوس مونږ واده کول غواړو، او تاسو په خلقو کښې د ټولو نه زیات احسان او صله رحمی کونکی یئ، او زمونږ د دواړو پلارانو سره دومره مال نشته چه هغوی زمونږ د طرف نه د مهر انتظام او کړې شی لهذا تاسو مونږ دواړه د صدقاتو په وصول کولو باندي عامل مقرر کړئ څنگه چه د زکوة د مال عاملان مالونه راوړلو سره تاسو ته رارسوی مونږ به ئې هم رارسوو او څه چه زمونږ حق وی هغه به مونږ ته ملاويږی. یعنی د عامل تنخواه او وظیفه، دا ربيعه چه د هغه ځوڼی عبدالمطلب دې د رسول الله ﷺ د تره ځوڼی دې او د عباس رضی الله عنهما د رسول الله ﷺ تره کيدل خو مشهور دی، نو گویا دا عبدالمطلب د رسول الله ﷺ د تره د ځوڼی ځوڼی شو او فضل رضی الله عنهما ئې د تره ځوڼی. دا قصه هم د دې دواړو سره متعلق ده، وړاندي په روايت کښې دی عبدالمطلب وائی چه په کوم مجلس کښې زمونږ دا خبرې او مشوره کيده هلته علی بن ابی طالب رضی الله عنهما اتفاقاً راورسیدو (چه کله د هغوی په علم کښې هغه خبره راغله کومه چه په مجلس کښې شروع وه)، نو په دې باندي هغوی او فرمائیل چه قسم په الله چه رسول الله ﷺ به په تاسو کښې يو هم په صدقه باندي عامل نه کړی په دې باندي د عبدالمطلب پلار ربيعه او وې چه تاته چه د رسول الله ﷺ څوم توب ملاؤ شوې دې نو مونږ خو تاسره کله هم په دې کښې حسد نه دې کړې (مطلب دا چه بیا ته ولې زمونږ په دې مشوره باندي پریشانه کيږې او سوزې) «فالقی علی رداءه ثم اضطجع علیه فقال انا ابو حسن القرم» یعنی علی رضی الله عنهما ته ربيعه په جمله اوریدو باندي غصه ورغله او خپل کوم څادر ئې چه پسر کړې هغه ئې خور کړو او په هغې باندي سملاستو او د سملاستو په وخت ئې او فرمائیل (څه زه هم چرته نه ځم).

زه هم د خپل نوم ابو حسن بهادر یم، والله زه به د دې ځانې نه نه څوزم چه ترڅو پورې ستاسو د دواړو ځامنو د رسول الله ﷺ جواب نه وی راوړې (حور په معنی د جواب) عبدالمطلب وائی چه زه او فضل رضی الله عنهما دواړه د مشورې مطابق د رسول الله ﷺ خدمت ته

لاړو، چه کله مونږ هلته اورسیدو نو د ماسپڅین جماعت ولاړ وو، مونږ د خلقو سره مونځ اوکړو، د مونځ نه چه فارغ شو نو زه او فضل دواړه د حجرې دروازې طرف ته لاړو، هغه ورځ د زینب رضی اللہ تعالیٰ عنہا نمبر وو په دې وجه هغوی هلته وو غرض دا چه مونږ د رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم نه مخکښی د دروازې سره اودریدلی وو، لږ ساعت پس رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم تشریف راوړو، او په مونږ دواړو کښې ئې د هر یو غوږ اونیولو او وې فرمائیل چه د خپل زړه خبره اوکړئ چه څه ده؟ (مونږ خاموش وو) بیا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم دننه تشریف یوړو او دننه رسیدو سره ئې مونږ ته هم د دننه راتلو اجازت راکړو، مونږ دننه لاړو، مونږ دواړو کښې هر یو بل ته وې چه رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم ته خبره عرض کړه، غرض دا چه په مونږ دواړو کښې یو کس د روای په تعیین کښې شک راځی. د رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم مخې ته هم هغه خبره کیخودله د کومې چه زمونږ پلارانو حکم کړې وو، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم زمونږ خبره اوریدو سره خاموش شو او خپلې سترگې مبارکې ئې جهت طرف ته اوچتې کړې وې (لکه چه بعض وخت انسان په سوچ کښې کوی) چه په هغې کښې ډیر وخت تیر شو، مونږ دا اوگنډله چه کیدې شی هیڅ جواب رانشی (مونږ لږ ناامیده شو) تردې چه سیده زینب رضی اللہ تعالیٰ عنہا مونږ اولیده چه مونږ ته مخامخ د پردې نه شاته وه هغوی په خپل لاس سره اشاره اوکړه چه د هغې مفهوم دا وو چه تندی مه کوی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم ستاسو د مسئلې د حل په باره کښې سوچ کوی، بیا ډیر ساعت پس رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم خپل سر مبارک د پورته نه ښکته کړو او وې فرمائیل گورئ دا د صدقې مال د خلقو خیری دی دا د محمد صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم او آل محمد صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم دپاره حلال نه دي (بیا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم چه د هغوی د مسئلې کوم حل راویستلې وو هغه ئې هغوی ته بیان او فرمائیلو) او وې فرمائیل چه ته نوفل بن الحارث راوبله، پس نوفل ته رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم او فرمائیل چه د عبدالمطلب نکاح اوکړه. نوفل زما نکاح اوکړه. او وې فرمائیل راوغواری ماته محمیه بن جزء لره، راوی وائی چه دا محمیه د رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم د طرف نه د آخماس منتظم وو. نو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم او فرمائیل محمیه د فضل نکاح اوکړه او بیا ئې عامل ته او فرمائیل چه د دې دواړو د طرف نه د خمس نه مهر آدا کړه.

دا چه د دې حدیث آخری جمله ده (اصدق عنهما من الخمس) هم د دې نه ترجمه الباب ثابتیری، په داسې موقع باندې شراح لیکي فيه الترجمة، د مصنف رحمته اللہ علیہ غرض دلته د دې قصې د بیانولو نه دادې چه رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم به د خمس نه د خپلو ذوی القربی حصه راویستله، ځکه چه عبدالمطلب بن ربیع او فضل بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما دواړه په ذوی القربی کښې دی، د دې قصې نه دا هم په فهم کښې راځی چه په واده کولو کښې زیات د فکر خیز بس مهر دې (او د خرچ مسئله) ده او دویم خیز ولیمه ده چه د هغې ذکر به وړاندې د علی رضی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم په قصه کښې راشی، نور لوازمات فضول دی والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى

[۲۹۸۶] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنبَسَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ أَخْبَرَهُ، أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: كَانَتْ لِي شَارِفٌ مِنْ نَجِيبِي مِنَ الْمُقَنَّرِ يَوْمَ بَدْرٍ

۱: صحيح البخاري للبيوع ۲۸ (۲۰۸۹)، المساقاة ۱۳ (۲۳۷۵)، فرض الخمس ۱ (۳۰۹۱)، المغازي ۱۲ (۴۰۰۳)، اللباس ۹ (۵۷۹۳)، صحيح مسلم للأشربة ۱ (۱۹۷۹)، تحفة الأشراف: ۱۰۰۶۹، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۱۴۲) (صحيح)

وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَانِي شَارِقًا مِنَ الْخُمَيْسِ يَوْمَئِذٍ، فَلَمَّا أَرَدْتُ أَنْ أُبْنِيَ بِفَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَعَدْتُ رَجُلًا صَوَاغًا مِنْ بَنِي قَيْنَقَاعٍ أَنْ يَرْجُلَ مَعِيَ فَتَأْتِي بِأَذْخِرٍ أَرَدْتُ أَنْ أُبَيْعَهُ مِنَ الصَّوَاغِينَ فَاسْتَعِينَ بِهِ فِي وَلِيْمَةِ عُرَيْسٍ، فَبَيْنَا أَنَا أَجْمَعُ لِشَارِقٍ مَتَاعًا مِنَ الْأَقْتَابِ وَالغَرَابِ وَالْحَبَالِ وَشَارِقًا مَنَاحَانَ إِلَى جَنْبِ حُجْرَةِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ أَقْبَلْتُ حِينَ جَمَعْتُ مَا جَمَعْتُ فَأَذَابَشَارِقِي قَدْ اجْتَبَتْ أُسْمَتَهُمَا وَيَقْرَتُ خَوَاصِرُهُمَا وَأَخَذَ مِنْ أَكْبَادِهِمَا، فَلَمَّ أَمْلِكُ عَيْنِي حِينَ رَأَيْتُ ذَلِكَ الْمَنْظَرَ، فَقُلْتُ: مَنْ فَعَلَ هَذَا قَالُوا: فَعَلَهُ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ وَهُوَ فِي هَذَا الْبَيْتِ فِي شَرْبٍ مِنَ الْأَنْصَارِ عُنْتَهُ قَيْنَةُ وَأَصْحَابُهُ، فَقَالَتْ فِي غِنَائِهَا: أَلَا يَا حَمْزُ لِيَشْرُفَ النَّوَاءُ؟ فَوُتِبَ إِلَى السَّيْفِ فَاجْتَبَتْ أُسْمَتَهُمَا وَيَقْرُ خَوَاصِرَهُمَا، وَأَخَذَ مِنْ أَكْبَادِهِمَا قَالَ عَلِيٌّ: فَأَنْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَعِنْدَهُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ، قَالَ: فَعَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي لَقِيتُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا لَكَ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ عَدَا حَمْزَةَ عَلَى نَاقَتِي فَاجْتَبَتْ أُسْمَتَهُمَا وَيَقْرُ خَوَاصِرَهُمَا وَهُوَ ذَا فِي بَيْتٍ مَعَهُ شَرِبَ قَدْ عَارَسُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرِدَائِهِ فَارْتَدَّاهُ، ثُمَّ انْطَلَقَ يَمْشِي وَاتَّبَعْتُهُ أَنَا وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ. حَتَّى جَاءَ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ حَمْزَةُ فَاسْتَأْذَنَ فَأَذِنَ لَهُ فَأَذَاهُمْ شَرِبَ فَطَفِقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلُومُ حَمْزَةَ فِيمَا فَعَلَ، فَأَذَا حَمْزَةَ تَمِيلُ حَمْزَةَ عَيْنَاهُ، فَنَظَرَ حَمْزَةَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى سُرْتِهِ ثُمَّ صَعَدَ النَّظَرَ فَنَظَرَ إِلَى وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ: حَمْزَةُ وَهَلْ أَنْتُمْ إِلَّا عِبِيدٌ لِأَيْبِي، فَعَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ تَمِيلُ فَانْكَصَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى عَقْبَيْهِ الْقَهْقَرَى فَخَرَجَ وَخَرَجْنَا مَعَهُ.

د علی کرم الله وجهه نه روایت دی فرمائی چه زما سره یوه خبره او خوانه او بنه وه کومه چه ماته په غزوه بدر کنبې دغنیمت په طور ملا وشوي وه او یوه بله خبره او خوانه او بنه راته هم نبی ﷺ په خمس کنبې راکړې وه کله چه دفاطمې ^{رضی الله عنها} ولیمه کول او غوښتل او دبنی قینقاع قبیلې یوکس مې دخان سره بوتلوته تیار کړي ووزما دا اراده وه چه سرگړي به راوړم او خرڅ به ئې کړم دولیمې د مصارفو د پوره کولو دپاره نوپه دې وخت کنبې دسامان په جمع کولو پسې لارم او اوښې دیوانصاري دکورمخي ته ولاړې وي چه کله مې سامان راجمع کړو او راغلم نو وي کتل چه ددواړو اوښوکوبونه پریکړي شوي دي او شاگانې ئې غوڅي کړي شوي دي او جگرونه ئې چا راویستلي دي ماچه کله دا حالت اولیدو نومانشو برداشت کولي ماو وئیل داد چا حرکت دي راته ووئیلی شول چه حمزه بن عبد المطلب او هغه داچه هغه د یوڅو انصاریانوسره په یوکورکنبې شراب څکي وو او بوي سندرغاړې ښځې ورته په سندره کنبې داسې وئیل: الا یا حمزة للشرف النواء، یعنی ای حمزه پاڅه په دې اوښانو پسې کوم چه په دې میدان کنبې ترلي دي او په مرئې ئې چاره کیږده او په وینوکنبې ئې اولمبوه او ددوی پاکي غوښي دشرایبیانودپاره سري کړه حمزه چه دا واوریدل نوپه جلتی اوښانونه وریاڅیدو او ددوی شاگانې ئې څیري کړي او ددوی جگرونه ئې را وویستل، علي ^{رضی الله عنه} فرمائی چه زه نبی ﷺ ته روان شوم کله چه ورته حاضر شوم نوزید بن حارثه هم هلته ناست وو کله چه نبی ﷺ زما طبیعت ناساز اولیدو نو او ئې فرمائیل څه درباندي شوي دي؟ ما عرض وکړ وای دالله رسوله دننی ورڅې په شان ورڅ مې کله نده لیدلي، حمزه زماپه اوښانو ظلم کړې دې زما د اوښانو کوبونه ئې زخمي کړی دی او خیتي ئې ورله شلولي دي او په یوکورکنبې دشرایبیانوسره ناست دي، نبی ﷺ خپل خادر راوغوښتو بیا ئې

واغوستو اوروان شو اوزه هم ور پسي شاته شاته روان شوم تردې چه هغه كورته ورسيدو چرته چه حمزه ناست وو، نبی ﷺ ته دنتوتو دپاره اجازت ور كړې شو اوداخل شونواوئي ليدل چه ټولو شراب خكلي دي اونشه دي، نبی ﷺ په دې كارباندي حمزه ملامت كړوليكن هغه په نشه كښي اوسترگي ئې سري وي حمزه نبی ﷺ ته اوكتل اوبيائي دنبي ﷺ مخ مبارك ته اوكتل او اوئي وئيل ته خوزمادپلارغلام ئې، په دې خبره نبی ﷺ ته معلومه شوه چه حمزه په نشه كښي دي نونبي ﷺ په الته خپودهغه خائي نه واپس راروان شو اوراوتو او مونږ هم ورسره راروان شو.

د حضرت علي رضی اللہ عنہ د ولیمې سره متعلق یوه واقعه

قوله: (ان الحسين بن علي رضي الله عنه قال كان لي شارب من نصيب من المغنم يوم بدر وكان رسول الله ﷺ اعطاني شارفا من الخمس يومئذ الخ) دا هم يوه اورده قصه ده هم د دې قسم هغه دا چه حسين بن علي رضی اللہ عنہ فرمائي چه ماته زما والد صاحب علي رضی اللہ عنہ بيان او كړو چه زما په ملك كښي يوه خوانه اوبڼه وه كومه چه د جنگ بدر د مال غنيمت نه ماته ملاؤ شوې وه او هم دغه شان يوه اوبڼه بله وه چه رسول الله ﷺ ما ته د خمس په حصه كښي راكړې وه (ترجمة الباب خو هم د دې نه ثابت شو وړاندي مصنف ﷺ د قصي تكميل كوي) چه كله زما اراده اوشوه فاطمي رضی اللہ عنہا لره د نكاح نه پس دواوه كولو (چه هغې ته رخصتي وائي) نو د ولیمې په تياري كښي ما دا منصوبه جوړه كړه كومه چه وړاندي بيانوي، هغه دا چه ما د يو صواغ يعنى زرگر نه دا وعده واخستله چه هغه ماسره ځنگل ته لاړ شي چه مونږ د هغه خائي نه اذخر جمع كولو سره راوړو او د صواغينو په لاس هغه خرڅ كړو چه د هغې په گټې باندي د ولیمې بندوبست اوشي پس ما هم داسې او كړل چه دواړه اوبڼې مې د يو انصاري د كور مخې ته كينولې او خپله زه په هغه اوبڼانو باندي د تړلو دپاره د كيجاوې، بوريا او رسو وغيره د جمع كولو دپاره لاړم، چه كله ما هغه ټول څيزونه جمع كړل او راغلم نو گورم چه زما د هغه دواړو اوبڼانو قوبونه پرې كړې شوې دي او د هغوی د اړخونو نه غوښه هم پرې كړې شوې ده، او د هغوی اينې راويستلې شوې دي، ما چه دا منظر اوليدو نو بې اختياره ژړا راغله، بيا ما د خلقو نه تپوس او كړو چه داسې چا او كړل؟ هغوی اووې چه حمزه بن عبدالمطلب رضی اللہ عنہ كړې دي، او مخامخ ئې يو كور طرف ته اشاره او كړه چه هغه په دې كښي دې د ډيرو شراب څكونكو سره، په دې مجلس كښي يو سندي ويونكي هغوی ته او د هغوی ملگرو ته په خپل آواز كښي دا شعر اولوستلو

الا يا حمز للشرف النواء
و هن معقات بالفناء
ضع المسكين في اللبات منها
وضرجهن حمزة بالدماء

چه د هغې ترجمه دا ده چه دا مخامخ خوانې او څرېبې اوبڼې دي كومي چه د كور مخې ته تړلې شوې دي د هغوی په مرو باندي چاره اوچلوه او هغه په وينو كښي لت پت كړه، شرف جمع د شرف ده په معنی د خوانې اوبڼې، او نواء جمع د ناوې ده په معنی د څرېبې، يعنى حمزه د سندي ويونكي په دې شعر اوريدو سره توره راوخستله او دا ټول كارونه ئې

او کړل، علی عليه السلام فرمائی چه دا هر څه اوریدو سره زه د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت کښې حاضر شوم، هغه وخت د هغوی سره زید بن حارثه رضي الله عنه وو هغوی زما د مخ نه زما د پریشانی اندازه اولگوله او تپوس ئې اوکړو څه اوشو؟ ما عرض اوکړو یا رسول الله صلى الله عليه وسلم د نن په شان د خفگان منظر ما مخکښې نه وو لیدلې او ټوله واقعه ئې بیان کړه، او ما دا هم بیان کړه چه هغه په یو کور کښې مجلس کیږی د شرابو څکلو په هغې کښې دی (د شرابو د حرامیدو نه مخکښې واقعه ده) په دې باندې رسول الله صلى الله عليه وسلم خپل څادر راوغوښتلو هغه ئې واغوستلو او روان شو، زه او زید په هغوی پسې، تردې چه رسول الله صلى الله عليه وسلم هغه کور ته اورسیدو چه په کوم کښې حمزه وو رسول الله صلى الله عليه وسلم د اجازت طلب کولو نه پس دننه داخل شو چه هلته ټول خلق موجود وو، رسول الله صلى الله عليه وسلم حمزه رضي الله عنه په دې حرکت باندې ملامته کړو، د حمزه رضي الله عنه دا حال وو چه هغوی د شرابو په نشه کښې مست وو او سترگې ئې سرې وې، اوس حمزه رضي الله عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته په تیزو سترگو سره کتل شروع کړل، او د نشې په یو خاص انداز کښې ئې رومبې خو د رسول الله صلى الله عليه وسلم خپو ته کتل لږ ساعت پس ئې نظر لږ پورته اوچت کړو او د هغوی کونډو ته ئې کتل، بیا ئې نه نظر نور هم اوچت کړو د رسول الله صلى الله عليه وسلم نوم ته نزدې، هلته ئې کتل، دغه شان ئې بیا مخ ته کتل، دا کتل خو ئې بالکل د خاموشی سره وو، او بیا ئې په آخره په تیزه لهجه کښې اوئیل (وهل انتم الا عبید لابی) تاسو ټول زما د پلار غلامان ئې (چونکه د حمزه رضي الله عنه پلار د رسول الله صلى الله عليه وسلم هم او د علی رضي الله عنه هم نیکه او مشروو، او گویا سردار وو، او حمزه رضي الله عنه د دوی نه په نسبت کښې هغه ته زیات نزدې وو په دې وجه ئې د فخر په طور دا جمله اوئیله، علی رضي الله عنه فرمائی چه رسول الله صلى الله عليه وسلم پوهه شو چه دې خو مست دې (او معامله گډه وده ده) په دې وجه رسول الله صلى الله عليه وسلم راواپس شو (چه چرته لاس ئې خطا نه شی) او غرض دا چه رسول الله صلى الله عليه وسلم د هغه ځانې نه راوتلو او مونږ هم د رسول الله صلى الله عليه وسلم سره.

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم، قاله المنذری

دا قصه زمونږ دپاره ډیره د عبرت ده چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم د لور رخصتی کیږی چه د هغې د ولیمې دپاره د رسول الله صلى الله عليه وسلم زوم محترم د څنگل نه گیا راجمع کوی او په هغې کښې هم د مقصود مطابق کامیابی حاصله نه شی

[۲۹۸۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ وَهَبٍ، حَدَّثَنِي عِيَّاشُ بْنُ عُقْبَةَ الْخَضْرَمِيُّ، عَنِ الْفَضْلِ بْنِ الْحَسَنِ الضَّمْرِيِّ، أَنَّ أُمَّ الْحَكَمِ أَوْ ضِبَاعَةَ ابْنَتِي الزُّبَيْرِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ حَدَّثَتْهُ، عَنْ إِحْدَاهُمَا، أَنَّهَا قَالَتْ: أَصَابَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبِيًّا قَدْ هَبَّتْ أَنَا وَأَخْتِي وَقَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَكُونَا إِلَيْهِ مَا نَحْنُ فِيهِ وَسَأَلْنَاهُ أَنْ يَأْمُرَنَا بِشَيْءٍ مِنْ السَّبِيِّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "سَبَقَكُنَّ يَتَامَى بَدْرٍ لَكِنَّ سَادَ لَكُنَّ عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكُنَّ مِنْ ذَلِكَ تَكْتَبِرُنَّ اللَّهُ عَلَى إِيْرِكُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ تَكْبِيرًا وَثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ تَسْبِيحًا وَثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ تَحْمِيدَةً وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ"، قَالَ عِيَّاشُ: وَهَمَّا ابْتَدَأَ عَمْرَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دفضل بن حسن ضمري نه روایت دې فرمائی چه ام الحکم یا ضباعه کوی چه دزبیر بن

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۹۱۲، ۱۵۳۱۴)، وباني هذا الحديث في الأدب (۵۰۶۶) (ضعيف)

عبدالمطلب لورڼه دې راته روایت بیان کړې دې چه نبی ﷺ ته قیدیان راغلل زه اوزماخور اودنبی ﷺ فاطمه لور مونږ درې واړه دنبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو مونږ ورته دخپل حالت شکایت وکړو او مونږ ورته اووئیل چه مونږ ته په دې قیدیانو کښې یوتن راکړه (دخدمت دپاره) نبی ﷺ اوفرمائیل ستاسو نه مخکښې هغه جینکئ زیاتې خقداری دې دچاچه پلرونه په غزوه بدرکښې شهیدان شوي دي البته زه تاسوته یوه مفیده خبره بنایم کومه چه ستاسو دپاره بهترده تاسو دهرمونځ نه پس درې دیرش ځله الله اکبر اودرې دیرش ځله سبحان الله اودرې دیرش ځله الحمد لله اویوځل: «لا إله إلا الله وحده لا شریک له له الملك وله الحمد وهو على کل شیء قدير» وائی ایساش وئیلی دی ضباعه او حکم دواړه دنبی ﷺ دتره لورڼه وي.

(حدثني عياش بن عقبة الحضرمي عن الفضل بن الحسن الضمري ان ام الحكم او ضباعه ابنتي الزبير بن عبدالمطلب حدثته عن احدهما)

د سند تحقیق :

دا سند تحقیق او تفتیش ته محتاج دې دلته نسخې مختلف دی پس دوه اختلافات په لیدو کښې راغلل زموږ په دې نسخه کښې (ان ام الحكم او ضباعه) دې او د ابن داسه په نسخه کښې (کما فی تعلیق الشیخ محمد عوامه) د دې په ځانې (ان ابن ام الحكم او ضباعه) دې او د دې نه پس دویم اختلاف په لفظ د (حدثته) کښې دې زموږ په دې نسخه کښې په صیغه د مونث دې او په یو بله نسخه کښې کما علی الهامش (حدثته) په صیغه د مذکر دې، دا روایت په ابوداؤد کښې مکرر دې دوباره مصنف ﷺ دا روایت په کتاب الادب (باب فی التسبیح عند النوم) هم ذکر کړې دې بعینه هم په دې سند سره خو هلته د ابن داسه د نسخې په شان دې. (ان ابن ام الحكم او ضباعه ابنتي الزبير حدثته عن احدهما) او په تهذیب الکمال کښې چه حافظ مزعوم ﷺ دا حدیث په خپل سند سره ذکر کړو نو په هغې کښې هم داسې دی، لهذا ترجیح به د ابن داسه والا نسخې روایت لره وی، او په دې صورت کښې به د سند مطلب داوی، فضل بن الحسن وائی چه ما ته د ام الحكم ځونئ یا د ضباعه ځونئ بیان اوکړو، په دې دواړو (ام الحكم او ضباعه) کښې د یو نه روایت کوی () او زموږ د موجوده نسخې په موجودگي کښې به مفهوم دا وی چه فضل بن الحسن وائی چه ما ته ام الحكم یا ضباعه کښې یوې روایت اوکړو د بلې نه، یعنی د فضل شک دې چه زما استاد په دې حدیث کښې یا ام الحكم ده یا ضباعه او په هر صورت په دوی کښې یوه د بلې نه روایت کوی، چونکه د صاحب عون المعبود نسخه هم دا ده په دې وجه هغوی د سند شرح هم داسې کړې ده، خو که دا نسخه اختیار کړې شی نو په دې کښې د معنی په لحاظ سره دا اشکال دې چه کله د رسول الله ﷺ په خدمت کښې تلونکې دا دواړه زنانه وې لکه چه په روایت کښې تصریح ده (فذهبت انا واختی) نو بیا د یو بل نه د روایت کولو څه وجه؟ دواړه صاحب واقعه دی او بله دا چه په کتب رجال کښې هم د دې دواړو د یوې بلې نه

لهذا راوی خونې شو او مروی عنه د هغه مور یا ترور

روایت کول ثابت نه دی. (کما فی البذل) په خلاف د نسخې ثانيې چه هغه د اشکال نه محفوظ ده، خو شیخ الهند په خپله حاشیه کښې زمونږ د موجوده نسخې داسې توجیه او تاویل فرمائیلې دې چه په هغې باندې دا اشکال نه واردیږي، د شیخ الهند د تاویل حاصل دا دې چه «عن احدهما» په طور د لب لباب بدل واقع کیږي د خپل سابق نه چه فضل بن الحسن روایت کوی په دې دواړو زنانو کښې د یوې نه، د بدل مقرر کیدو په صورت کښې دا پورته اشکال نه پیدا کیږي، زمونږ حضرت سهارنپوری رحمته الله علیه د سند مفهوم خو هم دا متعین کړې دې کوم چه د ابن داسه و الا نسخې د سند دې خو په هغې کښې دا توضیح او تشریح نشته چه زمونږ دا سند تاویل ته محتاج دې یا نه دې، بلکه د هغې نه فهمیږي چه زمونږ د نسخې د عبارت مفهوم هم هغه دې کوم چه د دویمې نسخې د عبارت دې، والا مر کما فی حاشیه شیخ الهند رحمه الله تعالی، وهذا جهد المقل فی شرح هذا السند والله تعالی اعلم بالصواب. د حدیث مضمون واضح دې چه دا دواړه او دریمه فاطمه رضی الله عنهما په خمس د غنیمت کښې د خادم د طلب کولو دپاره تلې وې نو رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم عذر او فرمائیلو «سبکن یتامی بدر» چه د بدر یتیمان چونکه ستاسو نه مخکښې طلب کولو له راغلي وو په دې وجه ټول غلامان هغوی ته ورکړې شو او یا مطلب دا دې چه د بدر یتیمان د استحقاق په اعتبار سره په تاسو باندې مقدم او راجح وو په دې وجه هغوی ته ورکړې شو یا به ورکړې شی، په دې صورت کښې حدیث د احنافو مؤید کیدې شی، چه هغوی په دې مسئله کښې د ذوی القربی د حق بنیاد د هغوی په فقر او حاجت باندې ږدی. بیا رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم د هغه درې واړو د زړه ساتلو او نقصان پوره کولو دپاره د خادم بدل، یعنی بدل معنوی تجویز او فرمائیلو کوم چه د تسیحات فاطمه رضی الله عنهما په نوم سره معروف دی.

[۲۹۸۸] (۱) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَلْفٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَعْنَى الْجَرِيرِيِّ، عَنْ أَبِي الْوَرْدِ، عَنْ ابْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، قَالَ: قَالَ لِبُعْلَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَلَا أَحَدَيْتُكَ عَنِّي وَعَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَأَنْتَ مِنْ أَحَبِّ أَهْلِهِ إِلَيْهِ؟ قُلْتُ: بَلَى قَالَ: إِنَّهَا جَرَّتْ بِالرَّحَى حَتَّى أَتَرَفِي بِيَدَيْهَا، وَأَسْتَدَّتْ بِالْقُرْبِيَةِ حَتَّى أَتَرَفِي نَحْوَهَا وَكُنَسَتْ الْبَيْتَ حَتَّى اغْبَرَّتْ ثِيَابَهَا، فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَدَمًا، فَقُلْتُ: لَوْ أَتَيْتُ أَبَاكَ فَسَأَلْتِيهِ خَادِمًا، فَأَتَتْهُ فَوَجَدَتْ عِنْدَهُ خَدَانًا فَرَجَعَتْ فَأَتَاهَا مِنَ الْقَدِ فَقَالَ: مَا كَانَ حَاجَتِكَ؟ فَسَكَتَتْ، فَقُلْتُ أَنَا أَحَدَيْتُكَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ جَرَّتْ بِالرَّحَى حَتَّى أَتَرَفْتِ فِي يَدَيْهَا وَحَمَلْتِ بِالْقُرْبِيَةِ حَتَّى أَتَرَفْتِ فِي نَحْوِهَا فَلَمَّا أَنْ جَاءَكَ الْخَدَمُ أَمَرْتَهُمَا أَنْ تَأْتِيَا فَتَسْتَعْدِمَكَ خَادِمًا يَقِيمَا حَرَمًا هِيَ فِيهِ، قَالَ: "اتَّقِي اللَّهَ يَا فَاطِمَةُ وَأَدِي فَرِيضَةَ رَبِّكَ وَأَعْمَلِي عَمَلِ أَهْلِكَ، فَإِذَا أَخَذْتَ مَضْجَعَكَ، فَسَبِّحِي ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَأَحْمَدِي ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَكَبِّرِي أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ فَتِلْكَ مِائَةٌ فَهِيَ خَيْرٌ لَكَ مِنْ خَادِمٍ"، قَالَتْ: رَضِيْتُ عَنِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَعَنْ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

(۱) تفرد به أبو داود بهذا السياق: (اتقي الله يا فاطمة، وأدي فريضة ربك، واعلمي عمل أهلك)، وأما البقية من الحديث فقد رواه كل من: صحيح البخاري لمريض الخمس ۶ (۳۱۱۳)، فضائل الصحابة ۹ (۳۷۰۵)، النفقات ۶ (۵۳۶۱)، الدعوات ۱۱ (۶۳۱۸)، صحيح مسلم للذكر والدعاء ۱۹ (۲۷۲۷)، سنن الترمذي للدعوات ۲۴ (۳۴۰۸)، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۴۵)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۹۶۱)، ويأتي هذا الحديث في الأدب (۵۰۶۲) (ضعيف)

د ابن اعبد نه روایت دې چه عليه راته او فرمائیل چه خپله او د فاطمي یوه واقعه درته بیان نکړم کومه چه نبی ﷺ ته په خپل ټول خاندان کښې ډیره محبوب وه ماعرض او کړو ولي نه هغه او وئیل فاطمي به په لاس میچن گرځوله تردې پورې چه دهغې په لاسونو کښې نشانونه جوړ شوي وو او په شابه ئې داوبو مشکونه راوړل تردې چه په ملا کښې ئې د زخم نشان جوړ شوي وو او په کور کښې به ئې جارو وهله تردې چه د جامورنگ ئې بدل شوي وو نو یوځل نبی ﷺ ته غلامان او وینځي راغلي ما ورته او وئیل که چرې خپل پلار ته ورشي او یوه وینځه ترې او غواړی نو په تابه اساني راشي نو چه کله فاطمه ورغله نو دهغه سره ئې خلق ناست اولیدل چه خبرې ئې کولې تو واپس راغله بله ورځ بیا ورغله نبی ﷺ تپوس او کړو چه څه خبره ده هغه خاموش شو ماعرض او کړو ای د الله رسوله زه به درته او وایم میچن ئې په لاس کښې نشانونه جوړ کړی دی او داوبو مشکونو ئې په شاه کښې زخمونه جوړ کړی دی اوس تاته وینځي او غلامان راغلی دی مادي ته او وئیل چه دنبی ﷺ نه یو خادم او غواړه چه دي ته دکور په خدمت کښې اساني ملاو شي، نبی ﷺ او فرمائیل ای فاطمي د الله نه او بیربیره او دخپل رب حکم اومنه او دخپل کور کارونه سر ته رسوه او کله چه اوده کیږی نو څلور دیرش ځله الله اکبر اودرې دیرش ځله سبحان الله اودرې دیرش ځله الحمد لله او اوبه کله چه داتعداد سل پوره شي نو داستاد پاره دیو خادم نه بهتر دې فاطمي او وئیل زه د الله اودرسول نه راضي یم.

(عن ابن اعبد قال قال علی بن ابی طالب لا احدثک عنی وعن فاطمة الخ)

د دې حدیث او د وړاندې حدیث مضمون تقریبا یو دې، او په هغې کښې دی چه علی فاطمي ﷺ ته او فرمائیل چه خپل پلار ته لاره شه او د هغوی نه یو خادم او غواړه، په دې باندې هغه رسول الله ﷺ ته لاره، (الی آخر القصة وقد اخرج البخاری ومسلم وابوداؤد والنسائی من حدیث عبدالرحمن بن ابی لیلی عن علی بن ابی طالب هذا الحدیث بنحوه) وسیجی ان شاء الله تعالی فی کتاب الادب من کتابنا هذا، قاله المنذرج

[۲۹۸۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمُرَوِّزِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ بِهَذِهِ الْقِصَّةِ، قَالَ: وَلَمْ يُجِدْ مَهَا.

دا حدیث دتیر حدیث په شان دې لیکن په دې کښې دا اضافه ده چه نبی ﷺ ورته خادم ورنکړو.

[۲۹۹۰] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ الْقُرَشِيُّ، قَالَ أَبُو جَعْفَرٍ يَعْنِي ابْنَ عِيسَى: كُنَّا نَقُولُ إِنَّهُ مِنَ الْأَبْدَالِ قَبْلَ أَنْ نَسْمَعَ أَنَّ الْأَبْدَالَ مِنَ الْمَوَالِي، قَالَ: حَدَّثَنِي الدَّخِيلُ بْنُ إِيَّاسِ بْنِ نُوحِ بْنِ مَجَاعَةَ، عَنْ هِلَالِ بْنِ سِرَاجِ بْنِ مَجَاعَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ مَجَاعَةَ أَنَّهُ أَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَطْلُبُ دِيَةَ أَخِيهِ قَتَلْتُهُ بَنُو سَدُوسٍ مِنْ بَنِي ذُهَلٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَوْ كُنْتُ جَاعِلًا لِبَشْرِكٍ دِيَةَ جَعَلْتُ لِأَخِيكَ، وَلَكِنْ سَأَعْطِيكَ مِنْهُ عَقْبِي"، فَكُتِبَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِائَةِ مِنَ الْإِبِلِ مِنْ أَوَّلِ تَمْسِ بْنِ يَحْرُجٍ مِنْ مُشْرِكِي

(۱): انظر ما قبله (ضعيف)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۱۲) (ضعيف الإسناد)

بَنِي ذُهَلٍ فَأَخَذَ طَائِفَةٌ مِنْهَا وَأَسْلَمَتْ بَنُو ذُهَلٍ فَطَلَبَهَا بَعْدَ مَجَاعَةٍ إِلَى أَبِي بَكْرٍ، وَأَتَاهُ بِكِتَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَتَبَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ بِأَتْنَيْ عَشَرَ أَلْفَ صَاعٍ مِنْ صَدَقَةِ الْيَمَامَةِ أَرْبَعَةَ أَلْفٍ بَرًّا وَأَرْبَعَةَ أَلْفٍ شَعِيرًا وَأَرْبَعَةَ أَلْفٍ تَمْرًا، وَكَانَ فِي كِتَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَجَاعَةِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ هَذَا كِتَابٌ مِنْ مُحَمَّدِ النَّبِيِّ لِمَجَاعَةِ بْنِ مَرَارَةَ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى أُعْطِيَتْهُ مِائَةٌ مِنَ الْإِبِلِ مِنْ أَوَّلِ تَمْسِ بْنِ يَخْرُجُ مِنْ مُشْرِكِي بَنِي ذُهَلٍ عَقِبَةً مِنْ أُخِيهِ.

روایت دې چه مجاعه دخپل قتل شوي ورور ددیت غوښتلو دپاره دنبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو څوک چه سدوسیانو قتل کړې وو او دده تعلق دبنی ذهیل قبیلې سره وو نبی ﷺ او فرمائیل که چرې ما د کوم مشرک دیت ورکولې نوستاد ورور دیت به مې ورکړې وو لیکن دهغه بدله به تاته درکړم، بیانیې ﷺ دده دپاره دا ولني خمس نه دسلو اوښانو ورکولو خط اولیکلو دهغه مال نه کوم چه نبی ﷺ ته دبنی ذهیل دمشرکانونه حاصل شوي وو مجاعه ته په دې اوښانو کښې یوڅو ملاو شول، ددې نه پس قبیله بن ذهیل اسلام قبول کړو او مجاعه خپل باقی اوښان دابوبکر نه اوغوښتل دهغه دخلافت په زمانه کښې اوابوبکر ته ئې دنبی ﷺ خط راوړو، ابوبکر ورته داوښانو په بدل کښې دیمامې په صدقه کښې دولس زره صاع ورکړل په دې کښې څلور زره صاع غنم او څلور صاع وربشي او څلور زره صاع کجوري وي او د نبی ﷺ دخط مضمون داسې وو: شروع کوم په نوم دالله باندي چه بې حده رحم کونکې او مهربان دې داخط دمحمد رسول الله و دطرف نه دمجاعه بن مراره دپاره د څوک چه دبنی سلمه قبیلې والا دې مادده دپاره سل اوښان مقرر کړی دی په اولني هغه خمس کښې کوم چه به دبنی ذهیل دمشرکینونه حاصل شي دا معوضه ده دده دورور څوک چه قتل کړې شوي دي.

﴿ حدیثنا محمد بن عیسیٰ نا عنبسة بن عبدالواحد القرشي، قال ابوجعفر یعنی ابن عیسیٰ

_____ کنا نقول انه من الابدال قبل ان نسمع ان الابدال من الموالی ﴾

محمد بن عیسیٰ د مصنف رضی الله عنه استاد چه د هغه کنیت ابوجعفر دې هغوی د خپلې استاد عنبسه په باره کښې وائی چه مونږه به دا کنړله د عنبسه په باره کښې چه هغه د ابدال د جماعت نه دې مخکښې د دې نه چه مونږه دا واورو چه ابدال د موالی نه وی یعنی د آزاد کړې شوي غلامانو نه.

مطلب دا دې چه عنبسه خو د موالی نه نه دې لهذا هغه د ابدال نه هم نه دې، لهذا زمونږه رومي خیال غلط راوتلو اختار هذا شيخنا في البذل، او صاحب د عون المعبود موالی لره د مماليک په معنی کښې نه دې اخستلي بلکه د سادات په معنی ئې اخستلي دې یعنی موالی اعلیٰ، او عنبسه قرشی دې په ساداتو کښې دې، په دې صورت کښې به مطلب دا وی چه په شروع کښې خو زمونږه دا صرف گمان وو روستو بیا هغه گمان په یقین سره بدل شو او مونږ ته د هغه د ابدالو نه د کیدو یقین پیدا شو، هذا المعنى عكس المعنى السابق.

د ابدالو او اوتاد ثبوت د اهادیثو نه :

دلته د دې روایت په سند کښې د ابدال ذکر راغلې دې، د ابدال ذکر په ابوداؤد کښې د کتاب الفتن نه پس په باب ذکر المهدی کښې هم راغلې دې چه د هغې لفظ دا دې ﴿ فاذا رأى الناس

ذک اتاه ابدال الشام وعصائب اهل العراق فيبايعونه) چه د هغې مضمون دا دې چه په آخر زمانه کښې به چه کله د امام مهدي په لاس باندي مکه مکرمه کښې د حجر اسود او مقام ابراهيم عليه السلام ترمينځه خلق د هغوی سره بيعت او کړې نو د هغې نه پس به د هغوی د مخالفينو يو لښکر اوچت شی د ملک شام نه کوم چه به هغوی سره د د جنگ کولو دپاره شی نو هغوی به الله پاک په لاره کښې د مکې مکرمې او مدينې طيبې ترمينځه په زمکه کښې ښخ کړي، چه کله خلقو ته دا معلومه شی نو په دې سره به د خلقو په زړونو کښې د هغوی ډير عظمت پيدا شی، پس د عراق عابدان او زاهدان او د ملک شام ابدال به راشی او د هغوی په لاس باندي به بيعت شی. حضرت شيخ په حاشيه د بذل کښې د علامه سيوطي رحمه الله نه نقل کړي دی چه په صحاح سته کښې د ابدال ذکر نشته سوا د ابوداؤد د دې روايت نه، (واخرج الحاكم وصححه) و ورد في غير الصحاح ذكرهم في عدة احاديث جمعتها في مولف، حضرت شيخ په دې خپله حاشيه کښې ډير روايات د کتب حديث او تصوف او رجال تاريخ په حواله سره ليکلي دي. (۱) په دغه حاشيه کښې دی چه د علامه شامی هم يوه رساله ده چه د هغې نوم دې (اجابة الغوث ببيان حال النجباء والنجباء والابدال والاوتاد والغوث) هم دغه شان د علامه سيوطي رحمه الله په الحاوی للفتاوی کښې يورساله ده (الخبرالبدال على وجود القطب والاوتاد والنجباء والابدال) او سيوطي رحمه الله په (التعقبات على الموضوعات) کښې د حديث الابدال په باره کښې ليکلي دي: (صحيح وان شئت قلت متواتر) آه

﴿ حدثنی الدخيل بن اياس بن نوح بن مجاعة بن هلال بن سراح بن مجاعة عن ابيه عن جده مجاعة انه اتى النبي ﷺ يطلب دية اخيه قتلته بنو سدوس من بني ذهل ﴾

مضمون د حديث:

د دې حديث راوی مجاعة بن مراره دې چه په يمامه کښې د اوسيدونکي قبيلي بنو حذيفه نه وو، دا په صحابه کرامو ﷺ کښې دی د خپلو قوم سردار وو. د هغوی کافر رور لره بنو سدوس قتل کړې وو نو د هغې ديت ئې د رسول الله ﷺ نه غوښتلو، کيدې شی چه د بيت المال نه اخستل مراد وي، رسول الله ﷺ او فرمائيل چه که د مشرک ديت وي نو ما به ستا د رور ديت هم درکړې وي، خو زه به د ديت په عوض کښې خه درکوم يعنی د هغوی د زړه ساتلو دپاره، ځکه چه دې د خپل قوم سردار وو، چه د هغوی قوم هم اسلام ته مائل شی، او ښکاره خبره ده چه مجاعة د دې طلب ديت په وخت اسلام کښې داخل شوې وو (بذل) د دې وجې نه رسول الله ﷺ د هغوی دپاره يو خط اوليکلو چه مشرکان د بنو ذهل د قبيلي د غنيمت نه چه رومي کوم خمس اويستلې شی نو په هغې کښې دې سل اوښان دوی ته ورکړې شی، په هغه سلو کښې خو خه حصه هغوی ته ورکړې شوه او خه ئې باقي پاتې شوه، او دلته دا اوشوه چه بنو ذهل اسلام قبول کړو، بيا د صديق اکبر ﷺ په زمانه کښې دا

(۱) ماته محب مکرم مولانا حکيم سعود صاحب المعروف به حکيم اجميري ذکر کړل چه ما هم د ابدالو متعلق تقريبا اوبيا روايات جمع کړي دي

مجاغه هغوی ته راغلو د رسول الله ﷺ خط سره، نو هغوی د باقی دیت په باره کښې اولیکل دولس زره صاع د هغه صدقې نه چه د یمامه نه وصول شی، خلور زره صاع غنم، خلور زره صاع جوار، او خلور زره صواع کهجورې، او د رسول الله ﷺ خط کوم چه هغوی ته ورکړې وو داسې وو ﴿بسم الله الرحمن الرحيم هذا کتاب من محمد ﷺ لمجاغة بن مرارة من بنی سلمی انی اعطيته مئة من الابل من اول خمس یخرج من مشرکی بنی ذهل عقبه من اخیه﴾

باب مَا جَاءَ فِي سَهْمِ الصَّفِيِّ

د صفی په نوم د حصې بیان

[۲۹۹۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَطْرِفٍ، عَنْ عَامِرِ الشَّعْبِيِّ، قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَهْمٌ يُدْعَى الصَّفِيَّ إِنْ شَاءَ عَبْدًا وَإِنْ شَاءَ أُمَّةً وَإِنْ شَاءَ فَرَسًا يَخْتَارُهُ قَبْلَ الْخُمُسِ.

د شعبی نه روایت دی فرمائی چه د نبی ﷺ د پاره یوه خاص حصه مقرر وه کوي ته چه به صفی وئیلې کیدل کله چه به نبی ﷺ مناسب او گنرل د مال غنیمت نه د خمس ویستلونه مخکښې به ئې د خان د پاره غلام یا وینځه یا اس خوښ کړو.

[۲۹۹۲] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، وَأَزْهَرُ، قَالَا: حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، قَالَ: سَأَلْتُ مُحَمَّدًا عَنْ سَهْمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالصَّفِيِّ، قَالَ: "كَانَ يُضْرَبُ لَهُ بِسَهْمٍ مَعَ الْمُسْلِمِينَ وَإِنْ لَمْ يَشْهَدْ وَالصَّفِيُّ يُؤْخَذُ لَهُ رَأْسٌ مِنَ الْخُمُسِ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ".

د ابن عون نه روایت دی فرمائی چه د محمد بن سیرین نه مې تپوس او کړو په باره دبرخي د نبی ﷺ کښې او په باره د صفی کښې راوي وائی د نبی ﷺ د پاره به دنورو مسلمانانو سره حصه مقررولي شوه اگر چه په جنگ کښې به نه وو شريك شوي او دهغه د پاره به دهرڅه نه مخکښې په پنځمه حصه کښې صفی بیلولې شو.

په دې باب باندې کلام په ﴿باب فی الصفايا﴾ کښې تیر شوې دې، او د صفی سره متعلق مسائل هم، د دې باب په رومې حدیث کښې، ﴿یختاره قبل الخمس﴾ چه رسول الله ﷺ به سهم صفی اخستلو، د خمس راویستلو نه مخکښ، یعنی د اصل غنیمت نه مخکښ، په بدل کښې لیکلې شوې دی چه زمونږ مذهب هم دا دې خو د دې نه په روستو روایت کښې را روان دی ﴿والصفی یوخذ له رأس من الخمیس قبل کل شیء﴾ دا رومې حدیث خلاف دې، او دفع تعارض داسې کیدې شی چه په رومې روایت کښې قبل الخمس نه مراد قبل تقسیم الخمس مراد واخستلې شی، یعنی په خمس کښې سهم صفی مراد اخستلو نه پس د هغې تقسیم کولې شی، پس تعارض دفع شو.

[۲۹۹۳] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ السَّلْمِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ يَحْيَى ابْنِ عَبْدِ الْوَاحِدِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَحْيَى ابْنِ بَشِيرٍ، عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا عَزَاكَانَ لَهُ سَهْمٌ صَافٍ يَأْخُذُهُ مِنْ حَيْثُ شَاءَ فَكَانَتْ صَفِيَّةٌ مِنْ ذَلِكَ السَّهْمِ، وَكَانَ إِذَا لَمْ يَغْزُ بِنَفْسِهِ ضَرِبَ لَهُ بِسَهْمِهِ وَلَمْ يُغَيَّرْ.

۱: سنن النسائي الثاني ۱ (۴۱۵۰)، (تحفة الأشراف: ۱۸۶۸) (ضعيف الإسناد)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۲۹۵) (ضعيف الإسناد)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۲۱۴) (ضعيف الإسناد)

د قتاده نه روایت دي فرمائی چه کله به نبی ﷺ پخپله په جنگ کښې شرکت او کړو نوچه دکوم ځانې نه به ئې خوښه وه دخان دپاره به ئې یوه حصه منتخب کړه او صفیه رضی الله عنہا د نبی ﷺ په حصه کښې په غزوه خیبر کښې راغلي وه، اوسنی ﷺ چه به کله پخپله په جنگ کښې نه وو شریک شوي، نودهغه دپاره به یوه حصه تعیین کړې شوه او پخپله به ئې انتخاب نه کولو.
د باب دریم حدیث دا دي ﴿ عن قتادة قال قال رسول الله ﷺ اذا غزا كان له سهم صاف الخ ﴾
په دي روایت کښې د سهم صافی په باره کښې دا دی چه دا به د هغوی دپاره هغه وخت وو چه کله رسول الله ﷺ په هغه غزا کښې شریک وو او د هغوی چه کومه دویمه حصه په غنیمت کښې هغه مطلقا وه. که د په غزوه کښې به د رسول الله ﷺ شرکت وو او که به نه وو خود دي باب چه کوم آخري حدیث را روان دي د هغې نه معلومیږي چه سهم صافی اوسهم غنیمت دواړه عام وو دا ټول بحث په باب الصفايا کښې تیر شوي دي.

[۲۹۹۴] (۱) حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ، أَخْبَرَنَا سَفِيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: كَانَتْ صَفِيَّةً مِنَ الصَّفِيِّ.

دام المومنين عائشة رضی الله عنہا نه روایت دي چه ام المومنين صفیه رضی الله عنہا په صفي کښې وه.
﴿ عن عائشة رضی الله عنہا قال كانت صافية من الصفي ﴾

يعنى د رسول الله ﷺ زوجه محترمه صفية رضی الله عنہا رسول الله ﷺ ته په سهم صافی کښې ورکړې شوي وه، دا روایت د راتلونکي مفصل روایت خلاف دي، او صحيح خبره هم هغه ده لهذا د دي روایت دي دا تاويل اوکړې شي چه مراد من حيث المال دي او کوم چه را روان روایت دي په هغې کښې داسې دي

[۲۹۹۵] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الزُّهْرِيُّ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَدِمْنَا خَيْبَرَ فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ تَعَالَى الْحِصْنَ ذَكَرَ لَهُ جَمَالُ صَفِيَّةَ بِنْتِ حَبِيبٍ وَقَدْ قُتِلَ زَوْجُهَا وَكَانَتْ عَرُوسًا قَاصِطًا هَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنَفْسِهِ فُخِّرَ بِهَا حَتَّى بَلَغْنَا سُدَّ الصَّهْبَاءِ حَلَّتْ قَبَاتِي بِهَا.

دانس ابن مالک نه روایت دي فرمائی چه مونږه خیبر ته راغلو کله چه الله تعالی فتح کړو نوخلقو نبی ﷺ ته دصفية بنت حبيبي دښانست ذکر اوکړو دچاچه خاوند قتل کړې شوي وو اونايي وه نونبی ﷺ دخپل خان دپاره منتخب کړه اوبیانې ﷺ دخپل خان سره بوتله تردې چه نبی ﷺ سدالصهبا مقام ته اورسیدو هلته هغه حلاله (دحيض نه پاکه شوه او صحبت ئې ورسره وکړو.

[۲۹۹۶] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: صَارَتْ صَفِيَّةٌ لِدَحِيَّةِ الْكَلْبِيِّ، ثُمَّ صَارَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

(۱) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۹۱۸) (صحيح)

(۲) صحيح البخاري البيوع ۱۱۱ (۲۲۳۵)، الجهاد ۷۴ (۲۸۹۳)، المغازي ۳۹ (۴۲۱۱)، الأطمعة ۲۸ (۵۴۲۵)، الدعوات ۳۶ (۶۳۶۳)، وانظر حديث رقم (۲۰۵۴)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۷) (صحيح)

(۳) سنن ابن ماجه/ النكاح ۴۲ (۱۹۵۷)، (تحفة الأشراف: ۱۰۱۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۸۰/۳) وانظر حديث رقم (۲۰۵۴) (صحيح)

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه صفیه رضی اللہ عنہا اول د دحیه کلبی په حصه کنبی راغلی وه بیا هغه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په حصه کنبی راغله.

[۲۹۹۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَلَادٍ الْبَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا بِهِزْبُنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: وَقَعَ فِي سَهْمٍ دَحِيَّةٌ جَارِيَةٌ جَمِيلَةٌ، فَاشْتَرَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعَةِ أَرْؤُسٍ ثُمَّ دَفَعَهَا إِلَى أُمِّ سَلِيمٍ تَصْنَعُهَا وَتَمْلِكُهَا، قَالَ حَمَّادٌ: وَأَحْسَبُهُ قَالَ: وَتَعْتَدُ فِي بَيْتِهَا صَفِيَّةَ بِنْتُ حَبِيبٍ.

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه د دحیه الکلبی په حصه کنبی یوه بهترینه خاښته جنین راغله نبی صلی اللہ علیہ وسلم داوه غلامانو په بدل کنبی دحیه الکلبی نه واخستله او بیانی ام سلیم رضی اللہ عنہا ته حواله کړه چه سنگارني کړي اوتیاره ئي کړي حماد وائی چه زما خیال دي چه داسي ئي ووئیل چه دام سلیم په کور کنبی عدت تیر کړه.

[۲۹۹۸] (۲) حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، وَوَحَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْمَعْفِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عَلِيَّةَ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: جُمِعَ السَّبِيُّ يُعْنَى بِخَيْبَرٍ فَجَاءَ دَحِيَّةً، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُعْطِنِي جَارِيَةً مِنَ السَّبِيِّ، قَالَ: "أَذْهَبُ فَخُذْ جَارِيَةً فَأَخِذْ صَفِيَّةَ بِنْتُ حَبِيبٍ، فَجَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أُعْطِيتُ دَحِيَّةً، قَالَ يَعْقُوبُ: صَفِيَّةَ بِنْتُ حَبِيبٍ سَيِّدَةَ قَرِيظَةَ وَالنَّضِيرِ، ثُمَّ اتَّفَقَا مَا تَصْلَحُ إِلَّا لَكَ، قَالَ: أَدْعُوهُ بِهَا، فَلَمَّا نَظَرَ إِلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: خُذْ جَارِيَةً مِنَ السَّبِيِّ غَيْرَهَا"، وَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا.

دانس رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه د خیبر ټول قیدیان یو ځای ته را جمع کړي شول او هلته دحیه الکلبی راغی او وئیل ای دالله رسوله په دي قیدیانو کنبی یوه وینځه ماته را کړه نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل ورشه اویوه وینځه واخله نو ورغی اوصفیه بنت حبی ئي واخستله په دي وخت کنبی یوکس نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته راغی او وئیل یا رسول الله تادبنونضیر اوبنوقریظه دیهودیانو د سردار لور دحیه کلبی ته ورکړه داخوستانه علاوه دبل چاسره نه بنایي نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل را او ئي غواړئ کله چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم صفیه اولیدله نو دحیه ته ئي او فرمائیل دځان دپاره کومه بله وینځه واخله بیانی صلی اللہ علیہ وسلم دي لره ازاده کړه اونکاح ئي ورسره وکړه.

«عن انس رضی اللہ عنہ قال جمع السبي بخيبر ف جاء دحية فقال يا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم اعطني جارية من السبي، قال اذهب فخذ جارية فاخذ صفية ابنة حبي الخ»

صفیه رضی اللہ عنہا د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په حصه کنبی څنګه راغله؟

یعنی د خیبر قیدیان چه کله جمع کړي شو نو دحیه کلبی رضی اللہ عنہ د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کنبی حاضر شو او د هغوی نه ئي په هغه قیدیانو کنبی د یوي وینځي فرمائش اوکړه، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه ته اختیار ورکړه چه یو وینځه واخله، هغوی صفیه رضی اللہ عنہا واخستله، نو سړي د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کنبی حاضر شو او عرض ئي اوکړه یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تاسو دحیه ته صفیه ورکړه هغه خو د بنوقریظه اوبنونضیر سرداره ده او د دحیه دپاره مناسب نه

۱: تفرد به أبو داود، وانظر حديث رقم (۲۰۵۴) (تحفة الأشراف: ۳۷۷، ۳۹۰) (صحیح)

۲: صحیح البخاري / الصلاة ۱۲ (۳۷۱)، صحیح مسلم / النکاح ۱۴ (۱۳۶۵)، سنن النسائي / النکاح ۶۴ (۳۳۴۲)، تحفة

الأشراف: ۹۹۰، ۱۰۵۹، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۱۳، ۱۸۶) (صحیح)

ده ستاسو دپاره مناسب ده. په دې باندې رسول الله ﷺ دحیه رضی اللہ عنہا د صفیې رضی اللہ عنہا سره راوغوښتلو، او هغوی په هغې باندې نظر اچولو سره او فرمائیل چه بله وینځه واخله، او بیا ئې صفیه رضی اللہ عنہا آزاده کړه او د هغې سره ئې نکاح اوکړه.

په دې روایاتو کښې یو روایت کښې دا هم دی د صفیې رضی اللہ عنہا په باره کښې چه **«وقد قتل زوجها وکانت عروسا»** او دا هم دی چه **«تخرج بها حتى بلغنا سد الصهباء حلت فبني بها»** یعنی د خیبر نه په واپسې باندې چه کله رسول الله ﷺ مقام د سد الصهباء ته راورسیدلو نو هغه د رسول الله ﷺ دپاره حلاله شوه، د دې نه مراد طهارت دې د حیض نه، یعنی استبراء حاصله شوه. د دې نه پس رسول الله ﷺ د هغې سره بناء اوکړه (تخلیه).

او په روایات الباب کښې په یو کښې دا هم دی د حیه په حصه کښې یو جاریه جمیله راغلي وه **«فاشترها رسول الله ﷺ بسبعة رؤس»** یعنی رسول الله ﷺ یوه وینځه د اووه وینځو په عوض کښې واخستله. د دې نه مراد دا دی چه رسول الله ﷺ د حیه رضی اللہ عنہا صفیه اخستلو سره هغه ته د دې په بدل کښې اووه وینځې ورکړې، او دا چه په روایت کښې راغلي دی چه یو صحابی رضی اللہ عنہ راغلو او رسول الله ﷺ ته ئې عرض اوکړو چه هغه ستاسو دپاره ډیره مناسبه ده او د حیه رضی اللہ عنہا مناسب نه ده مطلب دا دی چه د دې د حیه ته تلل د مصلحت خلاف دی، ځکه چه په صحابه کرامو رضی اللہ عنہم کښې د حیه رضی اللہ عنہا په شان بلکه د هغوی نه افضل ډیر زیات وو او دا یو اوچت شان والا جاریه وه نو حیه رضی اللہ عنہا سره د کیدو د وجې نه به نور ته احساس کیدو او د بشریت د تقاضې مطابق دا د تنافس مقام وو، او د رسول الله ﷺ سره د کیدو په صورت کښې به د چاهم دا اشکال نه وو.

وئیلې شوې دی چه د صفیه نوم د رسول الله ﷺ د اصطفاء نه مخکښې زینب وو بیا چه کله په سهم صفیې کښې راغله نو د هغې نوښې صفیه کیخودلو، **(کذا فی البذل)** خو په عون المعبود کښې د امام نووی رحمته الله علیه نه نقل کړې شوې دی چه صحیح خبره دا ده چه د هغې نوم د مخکښې نه صفیه وو.

[۲۹۹۹] (۱) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا قُرَّةٌ، قَالَ: سَمِعْتُ يَزِيدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: كُنَّا بِالْبُرَيْدِ فَجَاءَ رَجُلٌ أَشَعَثُ الرَّأْسِ بِيَدِهِ قِطْعَةً أَدِيمٍ أَحْمَرَ، فَقُلْنَا: كَأَنَّكَ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ، فَقَالَ: أَجَلٌ قُلْنَا: نَأْوِلْنَا هَذِهِ الْقِطْعَةَ الْأَدِيمَ الَّتِي فِي يَدِكَ، فَنَأْوِلْنَاهَا فَقَرَأْنَاهَا قَائِدًا فِيهَا مِنْ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ إِلَى بَنِي زُهَيْرِ بْنِ أَقْبِيشٍ: "إِن كُفِرَ مِنْ شَيْءٍ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَأَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ، وَأَدَيْتُمُ الزَّكَاةَ، وَأَدَيْتُمُ الْخُمْسَ مِنَ الْمَغْنَمِ وَسَمَّيْتُمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّفِيَّ أَنْتُمْ آمِنُونَ بِأَمَانِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ"، فَقُلْنَا مَنْ كَتَبَ لَكَ هَذَا الْكِتَابَ؟ قَالَ: رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

د یزید بن عبد الله نه روایت دې فرمائی چه مونږه په مرید مقام کښې وو په دې وخت کښې یوکس راغې اودسر ویخته ئې گډه وه وو او په لاس کښې ئې سره خرمن نیولې وه مونږ ورته اووئیل ته خوداسې ښکاري لکه زنگل نه چه راغلي یې هغه اووئیل هو مونږ ورته اووئیل داخرمن مونږ ته راکړه کومه چه ستا په لاس کښې ده نومونږ ته ئې راکړه نومونږ

ولوستله او په هغې کښې د الیکلې شوي وو د الله د رسول محمد د طرف نه بنی زهیر بن اقیس قبیلې ته که چرې تاسو د دې کلمې گواهي ورکړئ لا اله الا الله واین محمدا رسول الله او مونږه قاتم کړئ او زکاتونه ادا کړئ او غنیمت کښې خمس ورکړئ او د نبی ﷺ حصه او د صفی حصه ورکړئ نو تاسو ته د الله او د رسول د طرف نه امن دې مونږ ورته او وئیل دا درله چالیکلې دې هغه او وئیل رسول الله ﷺ

مضمون الحديث:

«سعت یزید بن عبدالله قال کنا بالمرید فجاء رجل اشعث الراس بیده قطعة اذیم احمر فقلنا کانک من اهل البادية» دا دې باب آخری حدیث دې چه د هغې ذکر مونږ سره اوس نزدې راغلي وو، د دې مضمون دا دې یزید بن عبدالله وائی چه مونږ په مقام مرید کښې وو (په بصره کښې یو ځای دې) نو یو سرې د خورو ورو وینستو والا راغلو چه د هغه په لاس کښې د سرې څرمنې یو ټکره وه (چه په هغې باندي څه لیکلې شوې دی) مونږ هغه ته اووې چه ته کلی وال معلومیرې هغه اووې او، مونږ اووې ستا په لاس کښې چه دا کومه ټکره ده دا لږه مونږ ته راکړه هغه مونږ ته راکړې نو مونږ اوکتل چه په هغې کښې لیکلې شوې وو «من محمد ﷺ الی بنی زهیر بن اقیس انکم ان شهدتم ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله واقتمت الصلوة واتیمت الزکوة وادیتم الخمس من المغنم وسهم النبی ﷺ وسهم الصفی انتم امنون بامان الله ورسوله»

په دې لیک کښې د رسول الله ﷺ د دوه حصو ذکر دې چه حصه د غنیمت او دویم سهم صفی، او د دې دواړو په باره کښې دا دی چه که تاسو دواړه دا ادا کوئ (سره د هغه باقی امورو نه کوم چه په خط کښې ذکر دی) نو تاسو زمونږ د طرف نه په امن یئ د دې نه معلومیرې چه د رسول الله ﷺ دپاره دواړه حصې مطلقا وې، په غزا کښې د شرکت کولو قید نه وو، د سهم غنیمت په باره کښې نو په روایت کښې هم اتفاق دې او د علماء کرامو ترمینځه هم خو د سهم صفی په باره کښې د باب په شروع کښې چه کوم حدیث کښې تیر شوی دی هغه د دې خلاف دی، د حضرت گنگوهی رضی الله عنه رائي د دې حدیث د وجې نه د عدم تقيید ده او په تیر شوی باب کښې دا تیر شوی دی چه حضرت په بذل کښې لیکلې دی چه په کتب فقه کښې ماته د دې تصریح نه ده ملاؤ شوې

حدیث یزید بن عبدالله سکت علیه المنذری وکتب الشیخ محمد عوامه ان المزی رضی الله عنه

عزاه الی النسائی.

باب کيف كان إخراج اليهود من المدينة

د مدینې نه د یهودیا نوویستل په څه وجه دی؟

مختصر تاریخ د یهودو د غزواتو متعلق

ترجمة الباب یعنی کیفیت اخراج یهود من المدينة په باره کښې تاسو په دې ځان پوهه کړئ چه یهود د چا سره چه د رسول الله ﷺ د جنگ ضرورت راغلو دوه قسمونه وو، بعض خو هغه وو کوم چه د مدینې نه بهر په خیبر کښې آباد وو، دا خیبر چه یو لوئی کلې دې د

مدینې نه په شمال مغرب کښې تقریباً د یونیم سل کلومیټر په فاصله باندې واقع دې، او بعض قبائل د یهودو وې کوم چه د مدینې او د هغې خوا په خوا علاقه کښې خورې شوې وې. په دې وجه اول خو د غزوې ضرورت راغلو د مدینې د یهودو سره چه هغوی د مدینې نه خارج کړې شو یا قتل کړې شو چه د هغې تفصیل وړاندې را روان دې، او د خیبر د یهودو سره د قتال حاجت روستو راغلو خو د فتح نه روستو هغوی د هغه ځای نه او نه ویستلې شو بلکه د رسول الله ﷺ د هغوی سره معاهده اوشوه چه کله مسلمانان او غواری تاسو به اوباسی.

د دې نه پس خان پوهه کړې چه کله رسول الله ﷺ هجرت کولو سره مدینې طیبې ته اورسیدلو نو هغه وخت د هغه ځای آبادی لکه چه په حدیث الباب کښې را روانه ده مخلوط وه د مسلمانانو مشرکانو او یهودیانو، د مشرکانو دوه مشهور قبیلې وې اوس او خزرج چه د هغوی لقب د هغوی د مشرف باسلام کیدو نه پس انصار شو. او د یهودو درې لوڼې قبیلې هلته آبادې وې بنو نضیر (چه د کومو شمیر په اشرافو کښې وو) او بنو قریظه (چه د کمې درجې گنرلې کیدل) او بنو قینقاع (د عبدالله بن سلام رضی الله عنه قوم) رسول الله ﷺ مدینې طیبې ته د رسیدلو نه پس د هجرت په رومبو وختونو کښې د مدینې د یهودو سره معاهده کړې وه د امن وامان د قائمولو. خو دې خلقو عهدونه ماتول چه په هغې باندې هغوی سره قتال کیدو، پس د ټولو نه اول بې لوظی قینقاع او کره دا د شوال ۲ هجری واقع ده چه رسول الله ﷺ هغوی سره د قتال اراده اوفرمائیله نو خلق د مقابله نه بچ کیدو دپاره په قلعه گانو کښې بند شو. رسول الله ﷺ د هغوی محاصره او کره، چه کله هغه د محاصرې نه تنگ شو نو جلا وطنی ئې منظور کړه او د قلعه نه راکوز شو او شام ته لاړل، د دې نه پس په ۴ هجری کښې د بنو نضیر یهودو د مسلمانانو سره بد عهدی او کره د هغوی د بد عهدی واقع په را روان باب (باب فی خبر النضیر) په متن کښې راروانه ده، پس هغوی سره مقابلې ته ضرورت راغلو نو هغه هم په قلعه گانو کښې بند شو تردې چه عاجز کیدو سره ئې جلا وطنی قبول کړه او دا خلق د مدینې طیبې نه وتلو سره په خیبر کښې آباد شو او خیبر گویا د یهودو مرکز او د هغوی د سازشونو آده جوړه شوه، د بنو قریظه سره په دې موقع باندې مصالحت شوې وو، پس وړاندې په روایت کښې راځی (عن ابن عمر رضی الله عنهما ان یهود النضیر وقریظه حاربوا رسول الله ﷺ فاجلی رسول الله ﷺ بنی النضیر وافر قریظه) الحدیث یعنی په دې موقع باندې رسول الله ﷺ بنو قریظه په مدینه طیبه کښې برقرار اوساتل، خو دې خلقو د غزوه احزاب په موقع باندې د مشرکانو ملگرتیا او کره پس رسول الله ﷺ د غزوه احزاب د فراغت نه پس په ۵ هجری کښې په هغوی باندې حمله او کره هغوی قلعه بند شو او هغوی مجبور کیدو سره قبیله اوس لره په مینخ کښې اچولو سره سیدنا سعد بن معاذ رضی الله عنه لره حکم جوړ کړو، هغوی د دوی د قتل فیصله ورکړه چه په هغې باندې د بنو قریظه سړی چه د هغوی تعداد په روایتونو کښې څلور سوه راځی ټول په مدینه طیبه کښې قتل کړې شو، او دې پورته معلومه شوه چه بنو نضیر د مدینې نه جدا کیدو سره په خیبر کښې

اباد شوي وو او هر وخت به ئې د مسلمانانو خلاف سازشونه كول تر دې چه په ۷ هجري كښې رسول الله ﷺ په هغوی پسي ور اوتلو مسلمانانو ته فتح حاصله شوه، په غنیمت كښې مسلمانانو ته ډیر زیات مال او دولت حاصل شو، علی رضی الله عنه فاتح خیبر باندي مشهور دې، باقی په دې فتح كښې هغوی د هغه ځانې نه او نه ویستلې شو بلکه معاهده اوشوه چه هغوی به هم هلته د ذمیانو په شکل اوسیری، او د دې سره هغوی رسول الله ﷺ ته درخواست او کړو چه تاسو خود خپل دین د کار نه اوزگار نه یئ ستاسو کار کرونده كول نه دی، دا باغونه او زمکې مونږ ته حواله کړئ مونږ به په دې زمکو كښې کرونده کوو او تاسو ته به تیاره غله ملاویږی. رسول الله ﷺ هغوی سره په دې باندي د مزارعت معامله اوکړه چه هغې ته مخابره وائی، او د باغونو معامله ئې ورسره هم اوکړه چه هغې ته مساقات وائی دا ډیر زیاتو کهجورو باغونه وو (۱) او هغوی سره هغه وخت فیصله دا اوشوه چه تاسو دلته اوسیدو سره کرونده وغیره کوئ چه کله مسلمانان غواری تاسو به د دې ځانې نه اوباسی، د ابوبکر صدیق رضی الله عنه د خلافت پورې خو هلته اوسیدل، چه کله د عمر رضی الله عنه د خلافت زمانه راغله نو هغوی دوی د اریحاء او تیماء طرف ته جلا وطن کړل لکه چه وړاندي په روایت كښې دی.

په شروع كښې دا مختصر تاریخ د یهودو د غزواتو او د هغوی سره جهاد اجمالی طور اولیکلې شو د دې دپاره چه په راروانو بابونو كښې او د هغې د احادیثو په فهم كښې سهولت پیدا شی. والله تعالی الموفق والمیسر

[۳۰۰۰] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، أَنَّ الْحَكَمَ بْنَ تَافِعٍ حَدَّثَهُمْ، قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِيهِ، وَكَانَ أَحَدَ الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ تَبِعَ عَلَيْهِمْ، وَكَانَ كَعْبُ بْنُ الْأَشْرَفِ يَهْجُو النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيَحْرُصُ عَلَيْهِ كَقَارِ قَرْنِيشٍ، وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَدِمَ الْمَدِينَةَ وَأَهْلِهَا أَخْلَاطٌ مِنْهُمْ الْمُسْلِمُونَ وَالْمَشْرِكُونَ يَعْبُدُونَ الْأَوْثَانَ وَالْيَهُودَ، وَكَانُوا يُؤَدُّونَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابَهُ فَأَمَرَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ نَبِيَّهُ بِالصَّبْرِ وَالْعَفْوِ ففِيهِمْ أَنْزَلَ اللَّهُ: وَلِتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ آتَوْا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ سُورَةَ آلِ عِمْرَانَ آيَةَ ۸۲، فَلَمَّا آتَى كَعْبُ بْنُ الْأَشْرَفِ أَنْ يُنَزَّعَ عَنِ أَدَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَمَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَعْدَ بْنَ مُعَاذٍ أَنْ يَبْعَثَ رَهْطًا يَقْتُلُونَهُ، فَبَعَثَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ وَذَكَرَ قِصَّةَ قَتْلِهِ، فَلَمَّا قَتَلُوهُ فَزَعَتِ الْيَهُودَ وَالْمَشْرِكُونَ فَعَدَّوْا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: طَرِقَ صَاحِبِنَا فَقَتِلَ، فَذَكَرَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي كَانَ يَقُولُ: وَدَعَاهُمْ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَنْ يَكْتُبَ بَيْنَهُ كِتَابًا يَنْتَهُونَ إِلَى مَا فِيهِ، فَكُتِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْمُسْلِمِينَ عَامَةً صَعِيفَةً.

كعب بن مالك نه د خپل پلار نه روایت کوی اودې په هغه درې کسانو كښې وو چه توبه ئې قبوله شوي وه (په غزوه تبوك كښې دنه شريك كيدو په وجه، او كعب بن اشرف يهودي به دنبي ﷺ بد بيانول اود قريشو مشركان به ئې جنگ ته رافارول نبي ﷺ چه کله مدينې ته

۱) پس په دې باغونو كښې د يو باغ نوم كتیبه وو چه د هغې ذکر په (باب ماجاء في حكم ارض خيبر) په يوروايت كښې داسې دې چه د امام مالك رحمه الله نه د هغه شاگرد تپوس اوکړو چه كتیبه څه څيز دې؟ نو هغوی جواب ورکړو چه د خيبر يو باغ دې چه په هغې كښې د څلويښت زره د کهجورو اونې وې (تقرده ابو داود، تحفة الأشراف: ۱۱۱۵۲) (صحیح الإسناد)

راغې نودهغه په وخت کښې په مدینه کښې هر مذهب والا خلق موجود وو په هغې کښې مسلمانان هم وو او مشرکین هم وو چاچه به دبتانو عبادت کړو اوبعضې یهودیان چه نبی ﷺ اوصحابه کراموته به ئې تکلیفونه رسول الله تعالی خپل پیغمبرته د صبر حکم او کړو په دې سلسله کښې دا ایت: «ولتسمعن من الذین اوتوا الکتاب من قبلکم» نازل شو کله چه کعب بن اشرف نبی ﷺ ته د تکلیف رسولونه منع نه شو نونبې ﷺ سعد بن معاذ به ته حکم او کړو چه دکعب بن اشرف دوژلو دپاره یوڅوکسان اولیبرې نوهغه محمد بن مسلمه اولیبرو، اودقتل واقعه ئې داسې بیان کړه کله چه دوی کعب بن اشرف قتل کړو نومشرکین او یهودیان اویریدل اوسحر د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شول اووئې وئیل چه زمونږ مشر کعب بن اشرف دشپې قتل کړې شوې دې نبی ﷺ دوی ته هغه خبرې بیان کړې کوم چه به ده حجره کوله ددې نه پس نبی ﷺ دې خلقوته اوفرمائیل چه اوس زمونږه اوستاسوپه مینخ کښې یوه معاهده لیکل پکار دي په کومې باندې چه به دواړه ډلې قائم وي، نونبې ﷺ ددې خلقو اودخپل خان اودنورو مسلمانانو دپاره یوعام قرار داد تحریر کړو.

«عن عبدالرحمن بن عبدالله بن کعب بن مالک عن ابيه... وكان احد الثلاثة الذین تیب علیهم»
عبدالرحمن د خپل پلار عبدالله بن کعب نه روایت کوی، وړاندې په روایت کښې دی «وکان احد الثلاثة» ضمیر په ظاهر کښې د عبدالله طرف ته واپس کیږی، خو هغه مراد نه دې بلکه د هغه پلار کعب بن مالک مراد دې (دا امر قابل تنبیه دې گڼې د عبارت د ظاهر نه د د حقیقت د خلاف شبه پیدا کیږی)

د کعب بن اشرف یهودی د قتل قصه:

دا کعب بن اشرف یهودی د بنوقینقاع نه وو ډیر د لوئې شان والا او شاعر قسم سرې وو او ډیر زیات ضرری وو، د رسول الله ﷺ به ئې په شعرونو کښې بدی بیانوله (والعیاذ بالله)، او د قریشو کفار به ئې د مسلمانانو خلاف راپاسول، وړاندې راوی وائی چه کله رسول الله ﷺ مدینې طیبې ته تشریف راوړو نو د هغه ځانې آبادی مخلوط (یعنی خلق پکښې گډ وو اوسیدل، مسلمانان او مشرکان او یهودیان ټول پکښې اوسیدل او دې یهودی به رسول الله ﷺ او صحابه کرامو ﷺ ته تکلیف ورکولو، الله اک خپل نبی ﷺ ته د عفو او صبر حکم کولو، پس رسول الله ﷺ هم هغوی معاف کول) فلما ابی کعب بن اشرف ان ینزع عن اذی النبى ﷺ امر النبى ﷺ سعد بن معاذ ان یبعث رهطا یقتلونه فبعث محمد بن مسلمة

یعنی هر کله کعب بن اشرف رسول الله ﷺ ته د تکلیف ورکولو نه قلاز نه شو نو رسول الله ﷺ سعد بن معاذ ﷺ ته حکم او کړو چه یو جماعت د هغه په قتل پسې اولیبری، پس هغوی محمد بن مسلمة ﷺ وغیره اولیبرلو، وړاندې په روایت کښې دی چه کله کعب بن اشرف قتل کړې شو کوم چه د هغوی د یو اهم سرې قتل وو نو په دې باندې یهود او مشرکین ټول اویریدل او چونکه دا قصه د هغه د قتل د شپې راغلې وه په دې وجه دا خلق سحر وختی د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او هغوی ته ئې شکایت او کړو چه د شپې زمونږ فلانې سرې قتل کړې شوې دې. نو رسول الله ﷺ هغوی ته د هغه د شرارتونو او

د هغه د تکلیف ورکولو تذکره او کره، بیا رسول الله ﷺ د هغوی مخې ته د معاهدې خبره او کره، پس عهد نامه اولیکلې شوه، په روایت کښې هم دومره دی خو صرف په دې سره ترجمه الباب ښکاره نه شو په دې وجه دا به وئیلې شی چه په دې حدیث کښې د معاهدې ذکر دې نو سبب جوړ شو د هغوی د اخراج ځکه چه هغوی په خپله معاهده باندي قائم پاتې نه شو او عهد ئې مات کړو هم په دې باندي هغوی سره قتال او شو او هغوی ویستلې شو.

په دې روایت کښې دی چه رسول الله ﷺ د کعب د قتل حکم سعد بن معاذ رضی الله عنه ته ورکړو، حال دا چه د دې نه مخکښې په کتاب الجهاد کښې (باب العدو یوتی علی غرة) کښې دا تیر شوی دی چه رسول الله ﷺ او فرمائیل (من الکعب بن الاشرف؟ فقام محمد بن مسلمة بطوله) چه په هغې کښې د هغه د قتل تفصیل ذکر کړې شوې دې، د دې اشکال جواب به په ظاهر کښې هلته تیر شوې وی هغه دا چه اصل خو هم روایت دې کوم چه مخکښې تیر شو خو چه کله محمد بن مسلمة د قتل دپاره تیار شو نو رسول الله ﷺ او غوښتل چه د هغوی سره خو کسان نور کړې پس سعد بن معاذ رضی الله عنه وغیره ئې د هغوی سره اولیرل دا قتل د کعب په ربیع الاول ۳ هجری کښې راپیښ شو، او په دې روایت کښې دی چه د یهودو سره معاهده د هغه واقعي نه پس اوشوه، د دې نه دا نتیجه راووتله چه د یهودو سره د معاهدې شروع د ۳ هجری نه ده.

وقد اخرج البخاری ومسلم وابوداؤد والنسائی قتل کعب بن الاشرف اتم من هذا، وقد تقدم

فی کتاب الجهاد، قاله المنذری

[۳۰۰۱] حَدَّثَنَا مُصَرِّفُ بْنُ عَمْرٍو الْأَيْمِيُّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ يَعْنِي ابْنَ بَكْرِ، قَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جَبْرِ، وَعِكْرَمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا أَصَابَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُرَيْشًا يَوْمَ بَدْرٍ وَقَدِمَ الْمَدِينَةَ جَمَعَ الْيَهُودَ فِي سُوْقٍ بَيْنِي قَيْنِقَاعَ، فَقَالَ: "يَا مَعْشَرَ يَهُودَ اسْلِمُوا قَبْلَ أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قُرَيْشًا"، قَالُوا: يَا مُحَمَّدُ لَا يُغْرَتُكَ مِنْ نَفْسِكَ أَنْكَ قَتَلْتَ نَفَرًا مِنْ قُرَيْشٍ كَانُوا أَعْمَارًا لَا يَعْرِفُونَ الْقِتَالَ إِنَّكَ لَوْ قَاتَلْتَنَا لَعَرَفْتُمْ أَنَّا نَحْنُ النَّاسُ وَأَنْكَ لَمْ تَلَقِ مِثْلَنَا، فَأَنْزَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِي ذَلِكَ: قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ سُوْرَةُ آلِ عِمْرَانَ آيَةٌ ١٣، قَرَأَ مُصَرِّفٌ إِلَى قَوْلِهِ فَبِتَّةٍ تَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ سُوْرَةَ آلِ عِمْرَانَ آيَةٌ ١٣ وَأُخْرَى كَأَيَّةِ سُوْرَةِ آلِ عِمْرَانَ آيَةٌ ١٣.

دا بن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه کله نبی ﷺ په غزوه بدر کښې په مشرکینو غالب شو او مدینې ته واپس راغې نو د بنی قینقاع په بازار کښې ئې یهودیان جمع کړل او وي فرمائیل ای یهودیانو د دې نه مخکښې چه ستاسو هم هغه حالت شی کوم چه د قریشو شو اسلام قبول کړئ هغوی وئیل ای محمد ﷺ ته په دې خبره باندي مه غره کیږه چه تا د قریشو یو څو کسان قتل کړل څوک چه د جنگ نه ناواقفه وو او تجربه ئې نه وه که چرې تا زمونږ په شان خلقو سره جنگ کړي وي نو تاته به معلومه شوي وه چه مونږ څومره بهادر او تجربه کاریو او تربیت یافته یو ستاز مونږ په شان خلقو سره واسطه نده راغلي نو په دې وخت

۱: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۵۶۰۶) (ضعیف الإسناد)

کښې الله تعالی دا ایت: «قل للذین کفروا ستغلبون» نازل کړو
 (عن ابن عباس رضی الله عنهما قال لما اصاب رسول الله ﷺ قريشا يوم بدر وقدم المدينة جمع اليهود في سوق
 بني قينقاع فقال: يا معشر يهود اسلموا قبل ان يصيبكم مثل ما اصاب الخ)

مضمون الحديث :

یعنی رسول الله ﷺ چه کله په جنگ بدر کښې په قريشو باندې برې بیا موندلو او د بدر نه
 مدینې طیبې ته واپس شو نو رسول الله ﷺ یهود جمع کړل او وې فرمائیل چه تاسو اسلام
 راوړئ مخکښې د دې نه چه په تاسو هم هغه مصیبت راشی کوم چه په قريشو باندې
 راغلو، په دې باندې هغوی جواب ورکړو چه گوره تاسو دې دا خیز په دهوکه کښې نه
 اچوی چه تاسو د قريشو خو افرادو لره قتل کړل، (کانوا اغمارا) (دا د غمر جمع ده په معنی
 د ناتجربه کار او ناپوهه) چه ناپوهه وو، په جنگ باندې نه پوهیدل، د جنگ د طریقو نه
 خبر نه دی، تاسو مونږ سره جنگ او کړئ نو تاسو ته به پته اولگی چه صرف مونږ یعنی
 یهود انسانان یو، او ستاسو هم لا زمونږ په شان خلقو سره مقابله نه ده راغلې په دې باندې
 دا آیت کریمه نازل شو (قل للذین کفروا ستغلبون وتحشرون الی جهنم)

[۳۰۰۲] (حَدَّثَنَا مُصَرِّفُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا يُونُسُ، قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي مَوْلَى لِيَزِيدِ بْنِ ثَابِتٍ،
 حَدَّثَنِي ابْنَةُ مُحْيِصَةَ، عَنْ أَبِيهَا مُحْيِصَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ ظَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ رِجَالِ يَهُودٍ
 فَاقْتُلُوهُ"، فَوُتِبَ مُحْيِصَةَ عَلَى شَيْبَةَ رَجُلٍ مِنْ تِجَارِ يَهُودٍ كَانُوا يَلَابِسُهُمْ قَتْلَهُ وَكَانَ حَوِيصَةَ إِذْ ذَاكَ لَمْ يُسَلِّمْ وَكَانَ
 أَسَنَ مِنْ مُحْيِصَةَ، فَلَمَّا قَتَلَهُ جَعَلَ حَوِيصَةَ بَضْرِيَّةً، وَيَقُولُ: يَا عَدُوَّ اللَّهِ أَمَا وَاللَّهِ لَرُبِّ شَحْمٍ فِي بَطْنِكَ مِنْ مَالِهِ.

د محیصه رضی الله عنہا نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی په یهودیانو کښې چه څوک
 تاسوته ملاوشی نو قتل ئې کړئ نو محیصه د یهودیانو په تاجرانو کښې په یو تاجر حمله وکړه
 او قتل ئې کړو، په دې وخت کښې د محیصه د یهودیانو سره تعلق وو او تردې وخته پورې
 د محیصه ورور اسلام هم نه وو قبول کړي او هغه د محیصه نه مشروو کله چه محیصه دا
 سرې قتل کړو نو دې به ئې وهلو تکولو او ورته به ئې وئیل چه ای د الله دشمنه ستا په خپته
 کښې دهغه د مال ډیره چرې ده.

(حَدَّثَنِي بِنْتُ مُحْيِصَةَ عَنْ أَبِيهَا مُحْيِصَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مِنْ ظَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ رِجَالِ يَهُودٍ فَاقْتُلُوهُ)
 یعنی یوه ورځ رسول الله ﷺ او فرمائیل چه د یهودو په سرې کښې چه څوک هم ملاوشی
 هغه قتل کړئ، نو د حدیث راوی محیصه خپله د خان په باره کښې وائی چه یو یهودی
 شیبیه نومی چه په سوداگرو یهودیانو کښې وو او د هغه د محیصه سره استوگنه او لین
 دین وو (خو چونکه د رسول الله ﷺ ارشاد وو په دې وجه محیصه) هغه قتل کړو او د
 محیصه مشر رور حویصه چه هغه وخت ئې اسلام نه وو راوړې هغه ته په دې باندې ډیره
 غصه ورغله، هغه راو لگیدو د محیصه په وهلو باندې او وئیل به ئې (ای عدو الله اما والله
 لرب شحم فی بطنک من ماله) چه ای د الله پاک دشمنه ستا په خپته کښې ډیره وازگه د هغه

۱. تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۴۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۷۵، ۴۳۵) (ضعيف)

د مال نه پیدا شوي ده خوګ چه تا قتل کړو.

[۳۰۰۳] حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ إِذْ خَرَجَ إِلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "أُتِلِقُوا إِلَى يَهُودٍ، فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى جُنَّاهُمْ، فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَادَاهُمْ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ يَهُودٍ أَسْلِمُوا أَسْلِمُوا، فَقَالُوا: قَدْ بَلَغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَسْلِمُوا أَسْلِمُوا فَقَالُوا: قَدْ بَلَغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ذَلِكَ أَرِيدُ، ثُمَّ قَالَهَا الثَّلَاثَةَ: ااعْلِمُوا أَنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنِّي أَرِيدُ أَنْ أُجْلِبَكُمْ مِنْ هَذِهِ الْأَرْضِ فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ وَالْأَفَاعِلُ مِمَّا الْأَرْضُ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ."

د ابو هريره نه روايت دي فرمائي چه مونږ په جومات كښي ناست وو او يكدم نبي ﷺ مونږ ته راغي او مونږ ته ئي او فرمائيل چه ديهوديانو طرف ته لاړ شئ مونږ دنبي ﷺ سره روان شو تردې چه ديهوديانو رهانش گاهونو ته اورسيدهو چه نبي ﷺ پاخيدو او هغه خلق - ئي راوغوښتل او ئي فرمائيل اي يهوديانو اسلام قبول كړئ ددې دپاره چه محفوظ پاتې شئ مونږ جواب ورکړو چه اي ابو القاسم تا خلقوته خپل پيغام اورسوو نبي ﷺ خپله خبره دغه خلقوته دوباره او فرمائيله مونږ هم هغسي جواب ورکړو ددې نه پس بياني نبي ﷺ او فرمائيل همداز ما مقصد وو او په دريم ځل ئي بيا هم هغسي او فرمائيل، يقينا زمکه دالله ده او دهغه درسول ده اوزماستاسو دشړلو اراده ده نو په تاسو كښي چه دچا دخپل مال سره محبت وي هغه دي خپل مال خرڅ كړي گني داسې وگنږئ چه زمکه دالله او درسول ده.

﴿ عن أبي هريرة رضي الله عنه انه قال بينا نحن في المسجد إذ خرج إلينا رسول الله ﷺ فقال انطلقوا إلى يهود فخرجنا معه حتى جنناهم ﴾

مضمون د حديث:

ابو هريره رضي الله عنه فرمائي چه مونږ ډير خلق په مسجد كښي ناست وو، ناڅاپه رسول الله ﷺ تشریف راوړو زمونږ طرف ته، پس وي فرمائيل چه ځانې د يهودو طرف ته، مونږ د هغوی سره روان شو تردې چه رسول الله ﷺ هغوی ته اورسيدلو، رسول الله ﷺ هلته اودريدلو او هغوی ته ئي آواز ورکولو سره او فرمائيل ﴿ يا معشر يهود اسلموا تسلموا ﴾ چه اي يهوديانو اسلام راوړئ چه صحيح و سالم پاتې شئ (گيني ستاسو خير نشته، هغوی اووي چه ﴿ قد بلغت ابا القاسم ﷺ ﴾) چه تا خپله خبره مونږ ته رارسولې ده، رسول الله ﷺ بيا هم دا او فرمائيل هغوی بيا هم دا د رسول الله ﷺ په جواب كښي اووي، په دې باندي رسول الله ﷺ او فرمائيل ﴿ ذلك اريد ﴾ چه او ما هو دا غوښتله (چه تاسو زما د تبليغ اقرار او كړئ) او د دې نه پس بيا رسول الله ﷺ او فرمائيل: پوهه شئ چه دا زمکه د الله او د هغه د رسول ﷺ ده، اوزه ستاسو د دې نه د ويستلو اراده لرم، پس كوم سرې چه په تاسو كښي د خپل مال په بدله كښي څه حاصلول غواړي، نو هغه دي خرڅ كړي، يعنى كوم مال چه ستاسو داسې دي چه تاسو ئي په اوړولو سره اوړي شئ هغه ځان سره يوسئ، او كوم چه نه

١: صحيح البخاري الجزية ٦ (٣١٦٧)، والإكراه ٢ (٦٩٤٤)، والاعتصام ١٨ (٧٣٤٨)، صحيح مسلم للجهاد ٢٠ (١٧٦٥)، (تحفة الأشراف: ١٤٣١٠)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٥١/٢) (صحيح)

شی اوړې او د هغې عوض تاسو ته دلته ملاویدی شی یعنی د یو اخستونکی نه نو هغه خرڅ کړئ، او که نه ئې خرڅوې نو نقصان به هم ستاسو وی او په دې خو ځان ښه پوهه کړئ چه زمکه خو زموږ ده.

بنو نضیر چه د مسلمانانو په محاصره باندې قلعه بند شوې وو نو هغوی د جلاوطنی شرط منلو سره لاندې راکوز شو په دې طریقہ چه کوم سامان د نقل قابل دې چه هغه تاسو هرڅنگه چه اوړئ یوسئ، زمکه چه ده هغه خو د الله پاک د رسول ﷺ شوه، پس هغوی د هغه منقولاتو په منتقل کولو کښې هیڅ کمې پرې نخودلو، دروازی او چوکاتونو پورې ئې ځان سره یوړل په دې آیت کریمه کښې دې طرف ته هم اشاره ده (بخربون بیوتهم بایدبهم وایدی المومنین)

یو اشکال او جواب :

په دې حدیث کښې په ظاهره دا دی چه د بنو نضیر د یهودو ذکر دې، د روایت د سیاق نه هم دا معلومیږی. ځکه چه هغوی نه خو خالص په مدینه طیبه کښې وو او نه په زیاته فاصله باندې چه د هغې دپاره اوږد مزل او کړې شی یا د سورلی ضرورت راشی، مختصر شان مزل وو چه پیدل تلو سره هلته اورسیدل لکه چه د روایت نه معلومیږی، خو په دې باندې اشکال دا راځی چه د هغوی اجلاء په څلورمه هجری کښې شوې وه او دلته د دې قصې راوی ابوهریره رضی الله عنہ دې چه د هغه اسلام په اوومه هجری کښې دې نو بیا د ابوهریره رضی الله عنہ خروج د رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم څنگه کیدې شی. د دې توجیه دا کړې شوې ده چه د دې نه ټول بنو نضیر نه دی مراد بلکه په هغوی کښې بعض او بقایا چه کوم هلته پاتې شوې وی او یا دې بیا دا اوئیلې شی چه حدیث مرسل صحابی دې، (کما تقدم هذا التوجيه في حديث ذي الیدین) والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی، قاله المنذری

باب فی خبر النضیر

د بنو نضیر د جلاوطن کولو بیان

(ای فی بیان ما فعلوا بالنبی ﷺ واصحابه وما آل الیه امرهم من اخراجهم واجلاتهم من المدینه) په دې باب کښې مصنف رضی الله عنہ هغه حدیث ذکر کوی چه په هغې کښې د بنو نضیر د عهد ماتولو او د غدارئ ذکر دې چه د هغې په نتیجه کښې رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم او صحابه کرام رضی الله عنہم په هغوی باندې حمله او کړه، چه په هغې باندې هغوی عاجز کیدو سره هغوی د جلاوطنی په شرط باندې لاندې راکوز شو او مدینه طیبه ئې پریخودله او لارل، مسلمانانو سره هغوی څنگه دهوکه کول غوښتل هغه به وړاندې راشی.

[۳۰۰۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ دَاوُدَ بْنِ سَفْيَانَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ كِفَّارَ قُرَيْشٍ كَتَبُوا إِلَى ابْنِ أَبِي وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ مَعَهُ الْأَوْثَانَ مِنَ الْأَوْسِ وَالْخَزْرَجِ، وَرَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَئِذٍ بِالْمَدِينَةِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ إِنَّكُمْ وَأَنَا نَقِيسُ بِاللَّهِ لَتَقَاتِلَنَّهُ أَوْ لَتُخْرِجَنَّهُ أَوْ لَنَسِيرَنَّ إِلَيْكُمْ بِأَجْمَعِنَا حَتَّى نَقْتُلَ مَقَاتِلَتَكُمْ وَنَسْتَبِيحَ

نساءكم، فلما بلغ ذلك عبد الله بن أبي ومن كان معه من عبدة الأوثان اجتمعوا القتال النبي صلى الله عليه وسلم، فلما بلغ ذلك النبي صلى الله عليه وسلم لقيهم فقال: "لقد بلغ وعيد قريش منكم البياض ما كانت تكيدكم بأكثر مما تريدون أن تكيدوا به أنفسكم تريدون أن تقاتلوا أبناءكم وإخوانكم، فلما سمعوا ذلك من النبي صلى الله عليه وسلم تفرقوا، فبلغ ذلك كفار قريش فكتب كفار قريش بعد وقعة بدر إلى اليهود إنكم أهل الحلقة والحصون وأنكم لتقاتلن صاحبننا أو لنفعلن كذا وكذا ولا يجوز بيننا وبين خدام نسايبكم شيء وهي الخلاخيل، فلما بلغ كتابهم النبي صلى الله عليه وسلم أجمعت بنو النضير بالعداء فأرسلوا إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم أخرجه إلىنا في ثلاثين رجلاً من أصحابك وليخرج منا ثلاثون حبلاً حتى نلتقي بمكان المنصف فيسمعوا منك فإن صدقوك وأمنوا بك آمننا بك فقص خبرهم، فلما كان الغد غدا عليهم رسول الله صلى الله عليه وسلم بالكتاب فحصرهم فقال: هم أنكم والله لا تأمنون عندي إلا بعهد تعاهدوني عليه"، فأبوا أن يعطوه عهداً فقاتلهم يومهم ذلك، ثم غدا الغد على بني قريظة بالكتاب وترك بنو النضير ودعاهم إلى أن يعاهدوه فعاهدوه فأنصرف عنهم وغدا على بنو النضير بالكتاب فقاتلهم حتى نزلوا على الجلاء فجلت بنو النضير وأختموا ما أقلت الإبل من أمتعتهم وأبواب بيوتهم وخشبها، فكان نخل بنو النضير لرسول الله صلى الله عليه وسلم خاصة أعطاه الله إياها وخصه بها فقال: وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب سورة الحشر آية، يقول: بغير قتال، فأعطى النبي صلى الله عليه وسلم أكثرها للهبا جرين، وقسمها بينهم وقسم منها لرجلين من الأنصار، وكانا ذوى حاجة لم يقسم لأحد من الأنصار غيرهما، وبقي منها صدقة رسول الله صلى الله عليه وسلم التي في أيدي بني قاطمة رضي الله عنها.

عبدالرحمن بن كعب بن مالك په صحابه كرامو كنبې ديوكس نه روايت كوي چه د قريشو كافرانو ابن ابى او هغه چاته اوليكل چه دده سره ئې د بونانو عبادت كوو داوس اودخزج قبيلې نه اونبى عليه السلام په دغه وخت كنبې په مدينه كنبې وو دغزوه بدر و واقعي نه مخكنبې چه خلقو زمونږ ملگري ته خائي وركړې دې او مونږ په الله باندي قسم كوو چه مونږ به ورسره جنگ كوو او يادا چه تاسو به ئې اوباسئ او يادا چه مونږ به په شريكه په تاسو باندي حمله كوو تردي چه په تاسو كنبې چه خوك جنك كولې شي هغه به مړه كړو او ستاسي بنخي به مونږ ته پاتي شي هر كله چه داخبر عبدالله بن ابى او هغه كسانوته اورسيديو چه دهغه سره ئې دبانو عبادت كوو دنبى عليه السلام سره دجنگ دپاره راجمع شول هر كله چه نبى عليه السلام ته داخبر ورسيدو نبى عليه السلام دوى ته ورغې اودوى ته ئې اووئيل دقريشو خلقو چه تاسوته كومه دهمكې دركړي ده هغه ستاسو په خيال كنبې لويه دهمكې ده اوحال دادې چه قريشيان تاسوته دومره نقصان نه شي درسولې خومره نقصان چه تاسو پخپله خان ته رسوي خكه چه تاسو به په خپل مينخ كنبې دخپلو ورنرو او خامنوسره اوجنگيږئ، كله چه دي خلقو دنبى عليه السلام داخطاب واوريديو نوجداجدا شول بيا د قريش كافرانوته داخبر اورسيديو نو هغوى دغزوه بدر نه پس يهوديانوته خطونه اوليرل چه تاسو دمضبوطو قلاگانو او كورونو والا ئې (يعنى مال واسباب درسره موجود دي) تاسو زمونږ ددې ملگري سره جنگ وكړئ گنى مونږ به داسې داسې او كړو يعنى مونږ به مومره كړو او هيخوك به ستاسو دبنخوپانزيب زمونږ نه بچ نكړي، كله چه دبنونضير قبيلې يهوديانوته داتحريرو ورسيدو نو دوى دمكر وقریب جوړولو دپاره ئې په دوكه كولو باندي اتفاق او كړو اونبى عليه السلام ته ئې جواب راووليرلو

چه دخپلو دیرشو ملگرو سره راشه اوزمونږ به هم دیرش کسان علماء درشي اود دریمگرو په
 خائ کښي به دیوبل سره مخامخ شو هغوی به ستا خبره واورې که چرې ستا خبره ئې
 ریښتیا وگنډله او په تائې ایمان راوړو نومونږ به هم په تا ایمان راوړو نبی ﷺ دا خبر ټولو
 صحابه کراموته ورسوو هرکله چه بله ورځ سحر شو نو نبی ﷺ دخان سره لښکر بوتلو او
 بیرته ئې اوفرمائیل په الله تعالی مې دې قسم وي ترخوچه تاسوماته اقرار اونکرې زما په
 تاسو اعتبار نشته دوی داقرار اولوظ کولونه انکار اوکړو ځکه چه ددوی نیت خراب
 وو، نبی ﷺ ددوی سره ټوله ورځ جنگ اوکړو اوبله ورځ نبی ﷺ دبنی قریضه یهودیاتوته
 دیولري لښکر سره لاړو اوبنی نضیرئې پرېښودو اودوی ته ئې اووئیل تاسو لوظ اوکړې
 چنانچه دوی معاهده اوکړه بله ورځ سحر بیانیې ﷺ دخپلو فوجونو سره بنی نضیرته واپس
 راغلل او ددوی سره ئې جنگ اوکړو تردې چه هغوی په وطن پرېښودوباندې راضي شو،
 بیا هغوی وطن پرېښودو او ددوی اوبسانوچه څومره سامان اوړې شو هغه سامان
 اودکورونودروازي اوکړکیانی ماتي کړي اودخان سره ئې یوړل او ددوی دکجورو باغونه
 دبنی ﷺ لاس ته راغلل کوم چه الله تعالی په خاص طور سره دوی ته ورکړل او وئې
 فرمائیل : «وما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه من خيل ولا ركاب» یعنی دغه مال
 تاسوته بغیردجنگ نه حاصل کړو، بیانیې ﷺ ددې مال زیاته حصه مهاجرینوته ورکړه او
 په دوی ئې تقسیم کړو اودوه انصاریانوته ئې هم ورکړو کوم چه ضرورت مند وو اونورو
 انصاریانوته ئې ورکړو اوڅومره چه باقی پاتې شو هغه دبنی ﷺ صدقه وگرځولې شوه،
 کومه چه دفاطمې رضی الله عنها په استعمال کښې راغلي وه هغه صدقه وه.

﴿ عن رجل من اصحاب النبي ﷺ ان كفار قريش كتبوا الى ابن ابي ومن كان يعبد معه من
 الاوثان من الاوس والخزرج ﴾

مضمون د حدیث :

دا د جنگ بدر نه مخکښې واقعه ده چه کفار قريش رئیس المنافقين عبدالله بن ابی چه د
 مشرکانو نه وو او کوم چه د هغه سره نور مشرکان وو په اوس او خزرج کښ، هغوی ته ئې
 دا اولیکل چه تاسو زمونږ سړی ته پناه ورکړې ده او هغه ځان مو سره ساتلې دې (یعنی
 رسول الله ﷺ) مونږ تاسو ته خبرداری درکوو چه یا خو تاسو د هغه سره قتال اوکړې او یا
 هغه د دغه خائې نه اوباسئ، گینې مونږ ټول قسم خورو چه مونږ د مکې خلق به په تاسو
 باندې حمله اوکړو، ستاسو مقاتلین یعنی سړی به قتل کړو او ستاسو زنانه به د خپل ځان
 دپاره مباح کړو، چه کله عبدالله بن ابی ته د هغوی دا خط او دهمکې راورسیدله نو هغوی
 د رسول الله ﷺ سره د جنگ دپاره جمع شو، چه کله رسول الله ﷺ ته د دې خبرې خبر او شو
 نو رسول الله ﷺ هغوی ته تشریف یووړو د ملاقات دپاره، چه کله هغوی هلته اورسیدل نو
 رسول الله ﷺ د خلقو مخې ته دا خبره کیخودله چه ماته معلومه شوې ده چه تاسو ته د
 قريشو د طرف نه حد درجه وعید رارسیدلې دې، گورئ دا قريش تاسو ته دومره نقصان نه
 شی در رسولې څومره چه تاسو خپل ځان ته د نقصان رسولو اراده لرئ، بیا په وړاندې

جملې سره رسول الله ﷺ د دې وضاحت او کړو (تریدون ان تقاتلوا ابناءکم و اخوانکم) یعنی تاسو په خپل لاس باندې خپل اولاد او رونه قتلولو غواړئ، مطلب دا وو چه په تاسو کښې د بعضو رونه او د بعضو اولاد او نور خپلوان اسلام راوړلو سره زمونږ ملگری شوی دی نو په دې صورت کښې په مسلمانانو باندې حمله کول خپله په خپلو خلقو باندې حمله کول دی وړاندې په روایت کښې دی چه کله هغه خلقو د رسول الله ﷺ تقریر واوریدو نو هغه ټول خلق چه د قتال دپاره جمع شوي وو منتشر شو د دې ټولې خبرې خبر کفار قریش ته هم اوشو، نو اوس کفار قریش دوباره لیکل او کړل او دا د جنگ بدر نه روستو خبره ده، او دې ځل په ځانې د مشرکینو یهودو طرف ته ئې هغه خط اولیکلو چه د هغې مضمون دا دې چه بیشکه تاسو د وسلې والا او قلعه گانو والا یئ (داسې یئ او داسې یئ) یا خو تاسو زمونږ سرې قتل کړئ کښې مونږ به ستاسو سره داسې او داسې او کړو او زمونږ ترمینځه او ستاسو د بنځو د پازیبونو ترمینځه به هیڅ یو څیز حائل نه شی، یعنی د هغوی عزت به لوټ کړو، (خدم جمع د خدمه ده یعنی پازیب کوم چه راوی بیانوی) وهی الخلاخیل.....

(فلما بلغ کتابهم النبی ﷺ) یعنی کله چه د هغوی دا خط رسول الله ﷺ ته راغلو، دلته دا اشکال دې چه هغه خط خو د یهودو په نوم وو نو رسول الله ﷺ ته څنگه راورسیدو پس د درمنثور په روایت کښې دی چه (فلما بلغ کتابهم اليهود) جواب دا دې چه دلته تقدیر د عبارت دا دې (فلما بلغ خبر کتابهم) اصل خط مراد نه دې بلکه د هغې خبر وړاندې روایت کښې دې (اجتمعت بنو نضیر بالغدر فارسلوا الی النبی ﷺ اخرج الینا فی ثلاثین رجلا من اصحابک)

د بنو نضیر د رسول الله ﷺ سره د دھوکې اراده :

یعنی د بنو نضیر یهودو د کفار قریش په وینا باندې رسول الله ﷺ سره د دھوکې کولو اراده او کړه، یعنی د رسول الله ﷺ د قتل ئې پټ سازش جوړ کړو، پس د رسول الله ﷺ مخې ته دا خبره کیخودلی شوه د اسلام د مذهب قبلولو او نه قبلولو، هغه دا چه هغوی رسول الله ﷺ ته دا پیغام اولیږلو چه د دیرشو کسانو سره تاسو روان شئ او دیرش کسان به زمونږ اخبار یعنی یهود عالمان راوځی، او په یو معین ځانې کښې دې ملاقات او کړی او زمونږ علماء دې ستاسو خبرې واورې، پس که هغوی ستاسو تصدیق او کړو او په تاسو باندې ئې ایمان راوړو نو مونږ ټول به هم په تاسو باندې ایمان راوړو، مصنف رحمته دا واقعه هم دومره ذکر کړې ده، وړاندې څه اوشو هغه ئې په دې وینا باندې پریخودله (فقص خبرهم) (۱) یعنی راوی پوره قصه بیان کړه، دا قصه حضرت په بذل کښې د سیوطی رحمته نه نقل کړې ده چه د قرارداد مطابق د دواړو طرفو نه دیرش دیرش کسان روان شو، په دې منظر لیدو باندې بعض یهود متردد شو چه هر کله د رسول الله ﷺ دیرش داسې کسان وی نو بیا به تاسو هغوی ته څنگه ځان رسوئ په هغوی کښې د هر یو دا حال دې او غواړی چه د رسول الله ﷺ نه مخکښې د هغه مرگ راشی، نو هغوی رسول الله ﷺ ته پیغام اولیږلو چه مونږ ټول خو

(۱) د قص ضمیر راوی ته راجع دې او صاحب د عون المعبود نه دلته خطا شوې ده چه هغوی د دې ضمیر رسول الله ﷺ ته راجع کړې دې (کذا فی البذل)

شپيته کسان شو، د شپيتو کسانو ترمينځه به فيصله څنگه حل کيږي، يعنې دا خو ډير لوڼې جماعت شو په دوی کښې د ټولو په يو رائي باندي اتفاق مشکل معلوميږي، لهذا د سرو په تعداد کښې دې کمې او کړې شي، د ډير شو په ځانې درې تاسو واخلي، درې مونږ، پس بيا هم دغه شان اوشوه صرف درې درې شو، خو دې خبيثانو ځان سره خنجري پتي اونيولي ځکه چه فی الواقع مناظره کول مقصود نه وو بلکه په دهوکې سره ئې رسول الله ﷺ قتل کول غوښتل، الله پاک د غيب نه د رسول الله ﷺ د حمايت دا صورت پيدا کړو چه د يوې يهودي زنانه رور مسلمان شوې وو هغې سره د خپل رور فکر پيدا شو نو هغې په پته باندي خپل رور ته د يهودو د دې پت سازش خبر ورکړو، د هغې رور فورا په منډه د رسول الله ﷺ خدمت ته اورسيډو او هغوی سره ئې په دې باره کښې پته خبره اوکړه، رسول الله ﷺ لا تراوسه پورې يهودو ته رسيدلي نه وو په دې وجه راوايس شو، او بيا ئې په بله ورځ په هغوی باندي سحر وختي حمله اوکړه لکه چه دلته په روايت کښې دي.

﴿ فلما كان الغد غذا عليهم رسول الله ﷺ بالكتائب وحصرهم ﴾ ټوله ورځ د هغوی سره قتال اوشو او بيا په بله ورځ سحر په بنو قريظه باندي رسول الله ﷺ حمله اوکړه، او بنو نضير چه قلعه بند شوې وو هغوی ئې هم په دې حال باندي پريخودل، او د بنو قريظه مخې ته ئې د معاهدي خبره کيخودله هغوی د معاهدي دپاره تيار شو، لهذا رسول الله ﷺ د هغه ځانې نه راوايس شو او په بله ورځ د بنو نضير طرف ته متوجه شو د قتال دپاره ﴿ حتى نزلوا على الجلاء فجلت بنو النضير اى الى الشام وبعضهم الى خيبر ﴾ او خپلو سامانو نه ئې په اوبسانو باندي يوډول، د دوازو د لرگو پورې، وړاندي راوی وائي چه ﴿ فكان نخل بنى نضير لرسول الله ﷺ خاصة ﴾ وړاندي چه کوم د روايت مضمون دې هغه ل ه، آژ تير شوي دي.

[۳۰۰۵] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عَقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عَمْرٍو، أَنَّ يَهُودَ بَنِي النَّضِيرِ وَقُرَيْظَةَ حَارَبُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَجَلَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَنِي النَّضِيرِ وَأَقْرَ قُرَيْظَةَ وَمَنْ عَلَيْهِمْ حَتَّى حَارَبَتْ قُرَيْظَةَ بَعْدَ ذَلِكَ، فَقَتَلَ رِجَالُهُمْ وَقَسَمَ نِسَاءَهُمْ وَأَوْلَادَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَّا بَعْضَهُمْ لِحِقْوَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَنَهُمْ وَأَسْلَمُوا وَأَجَلَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَهُودَ الْمَدِينَةِ كُلَّهُمْ بَنِي قَيْنِقَاءَ وَهُمْ قَوْمُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ وَيَهُودَ بَنِي حَارِثَةَ وَكُلَّ يَهُودِيٍّ كَانَ بِالْمَدِينَةِ.

د عبد الله بن عمر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه د قبيله بنو نضير او بنو قريظه يهوديان دنبي عليه السلام سره او جنگيدل نبي عليه السلام بنو نضير او شرل او بنو قريظه ئې پريښودل ددوی سره ئې دا حسان معامله او فرمائيله تر دې چه دوي بې لوظي اوکړه اود نبي عليه السلام سره ئې جنگ اوکړو نبي عليه السلام ددوی سړی قتل کړل او ددوی ښځې او بچي ئې په مسلمانانو تقسيم کړل ليکن په دوی کښې ئې هغه سړی قتل نکړه څوک چه مسلمانانوته راغلي وو او ددوی سره يوځانې شوي وو نبي عليه السلام دوی ته امان ورکړو او اسلام ئې قبول کړو او نبي عليه السلام ټول

١: صحيح البخاري للمغازي ١٤ (٤٠٢٨)، صحيح مسلم للجهد ٢٠ (١٧٦٦)، (تحفة الأشراف: ٨٤٥٥)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٤٩/٢) (صحيح)

یهودیان د مدینې نه وشرل قبیلہ بنی قینقاع کوم چه د عبداللہ بن سلام قوم وو، او قبیلہ بنی حارثہ اونور یهودیان کوم چه په مدینہ کښې اوسیدل ټول ئې وشرل

(عن ابن عمر رضی اللہ عنہما ان یهودا النضیر وقریظة حاربوا رسول اللہ ﷺ) په دې روایت کښې مضمون مخکښې تیر شوې دې، د دې روایت په اخیر کښې دې دی چه په مدینې کښې څومره یهودیان وو بنو قینقاع (قوم د عبداللہ بن سلام ﷺ) او یهود بنو حارثہ او هر هغه یهودی چه په مدینہ کښې وو رسول اللہ ﷺ ټول بهر کړل.

(والحدیث اخرجه البخاری ومسلم، قاله المنذری)

بَاب مَا جَاءَ فِي حُكْمِ أَرْضِ خَيْبَرَ

د خیبر د زمکې بیان

د باب سره متعلق مباحث اربعه مفیده:

د ترجمه الباب او دهغې د احادیثو د پوهې دپاره د څو څیزونو په طور د تمهید پیژندل ضروری دی ۱: رسول اللہ ﷺ د خیبر یهود سره څه معامله او فرمائیله، او خیبر ئې څنگه فتح کړو صلحا یا عنوة

۲: د فتح نه پس ئې د خیبر زمکه څنگه تقسیم او فرمائیله

۳: د ارض مفتوحه حکم، آیا دهغې تقسیم ضروری دې یا نه؟

۴: د خیبر زمکه عشری ده او که خراجی، کومه زمکه عشری وی او کومه خراجی، دا ټول علمی مباحث دی اوس مونږ دا امور په ترتیب سره د الله پاک امداد لیکو، وهو الموفق والمیسر.

بحث اول:

د تیرو روایاتو په ضمن کښې دا راغلي ده چه رسول اللہ ﷺ کله د یهودو د مدینې طبیې د اخراج نه فارغ شو نو بیا په ۷ هجری کښې خیبر ته متوجه شو هغوی سره د قتال او محاصرې وغیره ټولو څیزونو حاجت راغلو او آخر د الله پاک په فضل باندي مسلمانانو یهودو ته شکست ورکړو او خیبر ئې فتح کړو، په دې کښې د علماء کرامو اختلاف دې چه پوره خیبر عنوة فتح شو یا صلحا، د بحث د دې باب په رومبې حدیث کښې را روان دې

دویم بحث:

رسول اللہ ﷺ د خیبر نیمه زمکه په مجاهدینو کښې تقسیم کړه، په کتاب الجهاد کښې د مجمع بن جاریه الانصاری رضی اللہ عنہ روایت تیر شوې دې، او وړاندي دلته هم را روان دې په دې کښې د تقسیم تفصیل داسې لیکلې شوې دې چه د مجاهدینو ټول تعداد پنځلس سوه وو چه په هغې کښې دولس سوه راجل او درې سوه فارس وو، او چونکه د فارس (یعنی په اس باندي سور جهاد کونکې) حصه د احنافو په نزد دوچند په دې وجه درې سوه فارس د شپږو سوو راجل (پیاده تلونکو) برابر شو (۱) دولس او شپږ ټول اتلس شو نو دا نیمه زمکه رسول

۱: او که د فارس دپاره درې حصې وې کما قال الائمة الثلاثة والعصاجان، نو بیا د دې مقتضی دا وه چه د خیبر زمکه په یوشتو حصو باندي تقسیم کړې شوې وې دا بحث په کتاب الجهاد کښې تیر شوې دې

الله ﷺ په اتلسو حصو کښې تقسیم او فرمائيله، او هره یوه حصه په سلو حصو باندي مشتمل وه، او په کوم روایت کښې چه دا راځي چه رسول الله ﷺ د خیبر زمکه په شپږ دیرشو حصو کښې تقسیم کړې وه هغه هم په خپل ځانې صحیح دې یعنی د ټولو زمکې په اعتبار سره، او نیمه زمکه رسول الله ﷺ د خپل ځان او خپلو بیبیانو او د مسلمانو د مصالحو دپاره باقی پریخودله.

بحث ثالث :

د ارض مفتوحه تقسیم د امام شافعی رحمته الله علیه په نزد ضروری دې او د امام مالک رائي دا ده چه دا به نه شی تقسیمولې، بلکه وقف کول ئې ضروری دی یعنی د دې آمدن به په بیت المال کښې وی او د مسلمانانو په مصالحو کښې به دا خرج کولې شی، او د احنافو او حنابله په نزد د دې تقسیم او عدم تقسیم د امام رائي ته سپارلې شوي دې هغه ته د دواړو اختیار دې په دې کښې د عمر رضی الله عنه عمل د ایقاف او عدم تقسیم وو او د رسول الله ﷺ نه د تقسیم او عدم تقسیم دواړو ثبوت شته، لهذا د احنافو او حنابله په مسلک باندي خو هیڅ اشکال نه واردیږي، هم دغه شان د امام شافعی رحمته الله علیه په مسلک باندي هم څه خاص اشکال نه واردیږي ځکه چه د رسول الله ﷺ نه دواړه طریقې ثابتې دي، خو د امام مالک رحمته الله علیه په مسلک باندي به اشکال وی د عمر رضی الله عنه د عمل نه د دې جواب دا ورکولې شی چه « لم يقسم عمر برضا الغانمين » یعنی عمر رضی الله عنه به هغه زمکه نه تقسیموله د غانمینو په اجازت او رضا سره، خو په دې باندي اشکال دې (۱) پس ابن القیم رحمته الله علیه فرمائی « ولا يصح ان يقال انه استطاب نفوسهم ووقفها برضاهم فانهم قد نازعوه في ذلك وهو يابى عليهم ودعا على بلال واصحابه، یعنی بلال رضی الله عنه او د هغه بعضو ملگرو ته چه کله هغوی د عمر رضی الله عنه په فعل باندي راضی نه شو نو هغوی ورته بد دعا هم اوکړه.

۱، د ارض مفتوحه د تقسیم او عدم تقسیم بحث: ابن القیم رحمته الله علیه فرمائی چه د جمهور صحابه کرامو رضی الله عنهم او د هغوی نه پس د ائمه رائي دا ده چه ارض مفتوحه په غنائمو کښې داخله نه ده، پس د خلفاء راشدینو هم دا طرز وو په دې وجه بلال رضی الله عنه او د هغه اصحابو چه کله د عمر رضی الله عنه نه مطالبه اوکړه د دې خبرې چه هغه زمکه کومه چه هغوی عنوة فتح کړې وه او هغه د شام زمکه او د هغې ماحول چه د هغې خمس ویستلو سره باقی لره تقسیم کړی، نو په دې باندي عمر رضی الله عنه او فرمائیل چه خمس لره ویستلو سره باقی تقسیمول زمکه په دې کښې داخله نه ده په دې وجه دا خو به څه بنده ساتم ستاسو او د ټولو مسلمانانو د ضرورتونو دپاره، خو د دې نه پس هم بلال رضی الله عنه او د هغه اصحابو په تقسیم باندي اصرار اوکړو نو په دې باندي عمر رضی الله عنه او فرمائیل « اللهم اكفني بلالا وذويه » د باقی صحابه کرامو رضی الله عنهم د عمر رضی الله عنه د دې رائي سره اتفاق اوشو، بیا وړاندي ابن قسیم رحمته الله علیه د عمر رضی الله عنه د رائي ډیر زیات تعریف کړې دي او د دې ډیر فوائد ئې لیکلي دي، د عمر رضی الله عنه په دې طرز باندي د بلال وغیره، بعض صحابه کرامو رضی الله عنهم د خفگان طرف ته اشاره د عمر رضی الله عنه په کلام کښې د صحیح بخاری په روایت کښې هم موجود ده د هغه په یو اوږد حدیث کښې دی « ايم الله انهم ليرون اني قد ظلمتهم » الحدیث (بخاری کتاب الجهاد ۴۳۰) « باب اذا اسلم قوم في دار الحرب » وفي الهداية اذا فتح الامام بلادا عنوة فهو بالخيار ان شاء قسم بين المسلمين كما فعل عليه الصلوة والسلام بخيبر وان شاء اقر اهله ووضع الجزية عليهم وعلي اراضيهم الخراج كما فعل عمر رضی الله عنه بسواد العراق بموافقة من الصحابة اوفي المقار خلاف للشافعي رحمته الله علیه الي اخره اهد من هامش البذل مختصرا (۱)

بحث رابع

د زمکې د عشری او خراجی کیدو په اعتبار سره چه کوم تفصیل دې هغه داسې دې د نور تفصیل دپاره دې د موالاته طرف ته رجوع او کړې شی، د شیخ په حاشیه کښې دې باره کښې په بذل کښې دې باره د ډیرو کتابونو حوالې او څه عبارتونه لیکلې شوي دی صاحب د بدائع هم په دې باندې تفصیل سره کلام کړې دې

خان پوهول پکار دی چه د ارض رومی دوه قسمونه دی، مفتوحه او غیر مفتوحه، غیر مفتوحه نه مراد هغه زمکه چه د هغې د فتح کولو حاجت نه وی راغلي بلکه د هغې اوسیدونکی په خپله اسلام کښې داخل شوي وی لکه اهل یمن او مدینه او طائف او بحرین، دا دویم قسم د زمکې عشری دې، او قسم اول یعنی ارض مفتوحه د دې بیا دوه قسمونه دی، ارض عنوة او ارض صلح عنوة: چه د قتال په ذریعه فتح کړې شوي وی، لکه د عراق زمکه او مصر او شام او خیبر، او دویمه هغه ده چه په خراج معین باندې صلح کولو سره فتح کړې شوي وی لکه د نجران زمکه (۱) د دې قسم ثاني حکم دا دې چه په کوم خیز باندې د هغوی سره صلح شوي وی بس هم هغه به د هغوی نه اخستلې شی، هم هغه د هغه خراج دې او قسم اول یعنی ارض عنوة د دې دوه قسمونه دی یو هغه کوم چه د غانمینو ترمینځه تقسیم کړې شوي وی لکه نیمه زمکه د خیبر، او دویمه هغه چه د فتح نه پس د کفارو نه نه وی اخستلې شوي بلکه هم په هغوی ته پریخودلې شوي وی لکه باقی نیمه زمکه د خیبر هم دغه شان د عراق زمکه وغیره (۲) په دې دواړو کښې اول عشری وه او نوري خراجی (ملخصا من البدائع)

او په بدائع کښې دا هم لیکلې شوي دی چه د ټول عرب زمکې عشری دې چه د هغې نه مراد د حجاز، تهامه، یمن، مکه مکرمه او د طائف زمکې دی، او دا زمکې عشری په دې وجه دی چه رسول الله ﷺ او د هغوی خلفاء راشدین د عربو د زمکې نه خراج نه دې وصول کړې، د دې نه ثابتیږي چه هغه عشری ده ځکه چه زمکه د احدی المؤمنین نه خالی نه وی یا به د هغې نه عشر وصولولې شی یا خراج

د هندوستان زمکې عشری دی که خراجی

دلته دا سوال پیدا کیږي چه د هند زمکې څنگه دی عشری که خراجی؟ د دې په باره کښې په فتاوی رشیدییه کښې داسې دی،

(۱) د نجران نصارو سره مصالحت د کپرو په دوه زره جوړو باندې شوي وو لکه چه وړاندې (باب فی اخذ الجزية) کښې را روان دی (صالح رسول الله ﷺ اهل نجران علی الفی حلة) النصف فی صفر والنصف فی رجب يؤدونها الي المسلمین الحدیث.

(۲) هم دغه شان د مکې مکرمې زمکه هم، ځکه چه مکه مکرمه عنوة فتح کړې شوه او د هغې زمکه د هغې په مالکانو باندې پریخودلې شوه، په غانمینو کښې تقسیم نه کړې شوه، لهذا د قیاس تقاضه خو هم دا ده چه هغه دې خراجی وی خو چونکه په خراج کښې د صغار یعنی د ذلت معنی موندلې کیږي کومه چه د مکې مکرمې د شان خلاف ده په دې وجه هغه خراجی نه کړې شوه، د مکې د زمکې په باره کښې وړاندې مستقل باب را روان دې

مسئله: زمونږ د دې ځانې زمکې یا عشری دی یا خراجی او عملداری جائز ده یا نه ده؟
الجواب: د هند بعض زمکې عشری دی او بعض خراجی، فقط والله تعالی اعلم. رشید احمد عفی عنه او په دې کښې دا سوال او جواب هم ذکر شوی دی
مسئله: دلته په زمکو کښې سرکاری جمع ده او معافی هم دی، لهدا په داسې زمکو کښې عشر شته یا نه؟

الجواب: که زمکه معافی وی یا په دې کښې مالگذاری سرکاری وی، محصول په ځانې د خراج خو کافی دې خو په ځانې د عشر کافی نه دې، پس که زمکه عشری ده نو عشر جدا ادا کول پکار دی، او که خراجی وی نو خراج د هغې مالگذاری سرکاری کښې محسوب کیدې شی، فقط والله اعلم.

د گنگوهی رحمۃ اللہ علیہ رائی:

د گنگوهی رحمۃ اللہ علیہ په جواب کښې خو اجمال دې چه د هندوستان بعض زمکې عشری دی او بعض خراجی، اوس دا چه کومې عشری دی او کومې خراجی، د دې د پیژندگلو دپاره نورو کتب فتاوی ته رجوع کول پکار دی، خپله په فتاوی رشیدیہ کښې چه د عشر او خراج کوم مسائل لیکلې شوي دي د هغې نه هم په دې کښې استفاده کیدې شی وړاندې د العرف الشدی نه د گنگوهی رحمۃ اللہ علیہ نوره رائی راځی، فتاوی محمودیه جلد ۳ کښې دا سوال او جواب په مختلف انداز کښې مفصل او مجمل په مختلفو زمانو کښې لیکلې شوي موجود دي، دې پوره مجموعې کتلو سره په دې کښې بصیرت حاصلیدې شی، بهر حال یو ځانې (صفحه ۸۳) کښې هم د دې سوال په جواب کښې چه د هندوستان زمکې عشری دی که خراجی داسې لیکلې دی، کومې زمکې چه د بادشاه اسلام د وخت نه د مسلم په ملک او قبضه کښې دی په هغې کښې عشر دې، او کومې زمکې چه دې وخت کښې د مسلمان په ملک او قبضه کښې دی او د یو غیر مسلم نه منتقل کیدو سره په ملک مسلم کښې راتلل معلوم نه دی نو د استصحاب حال په بناء په هغې باندې د مسلمان قبضه مستمر منلو سره هغه هم عشری منلې شی حکومت چه کوم محصول اخلی هغه په خراج کښې محسوب کیدې شی خو د عشر په حق کښې نه شی محسوب کیدې، په فتاوی رشیدیہ حصه سوم صفحه ۵۵ کښې د دې تصریح موجود ده.

بعض علماء کرامو د هندوستان زمکې لره د دارالحرب کیدو په جه باندې د دې ځانې زمکو لره د دواړو قسمه مؤنتونو عشر او خراج نه مستثنی کړې ده..... حکومت که د ارض عشریه نه خراج وصول کړی نو دا ناجائز دې او په دې سره عشر نه ادا کیرې ځکه چه حکومت د زکوة مصرف نه دې، (فقط والله سبحانه وتعالی اعلم حرره العبد محمود جنجوهی عفا الله عنه) معین مفتی مظاهر العلوم سهارنپور ۱۸/۴/سنه ۷۰ هجری الجواب صحیح سعید احمد غفرله مفتی مدسه مظاهر العلوم سهارنپور (فتاوی محمودیه ۳/۸۴)

د مولانا انور شاه صاحب رائي :

او د مولانا انور شاه صاحب رحمته الله عليه رائي په العرف الشذی صفحه ۲۷۲ کښې دا ليکلې شوې ده چه د هندوستان په زمکو کښې عشر واجب نه دې ځکه چه هغه د دارالحرب زمکې دې (هکذا حصل من کتب الفقه) او وړاندې ئې د دارالحرب تعريف دا فرمائيلې دې چه دار الحرب هغه مقام دې چه په هغې کښې فصل الامور يعني د خصوماتو او مقدمو فيصله د کفارو په لاس کښې وي (يعنی د کفارو د قانون مطابق اگر که فيصله کونکي مسلمانان وي) او هغه چه بعض خلقو د دار الحرب تعريف دا کړې دې چه دار الحرب هغه ملک دې چه په هغې کښې مسلمانانو ته د فرض يعني مונح او روژې وغيره نه منع کولې شي، دا صحيح نه ده او د دې تعريف هيڅ اصل نه نشته او مولانا محمد اعلي تهانوي رحمته الله عليه په خپل تصنيف کښې ذکر کړې دې چه د هندوستان زمکې نه عشری دې او نه خراجی، بلکه حوزه زمکې دې يعني د بيت المال والمملکه زمکې، او ما اوريدلې دې چه مولانا گنگوهری رحمته الله عليه مرحوم دا فتوی ورکړې ده چه د کوم انسان په ملک کښې چه هغه وخت کومه زمکه ده او د هغه انسان په علم کښې دا خبره نشته چه د هغه دا زمکه د کفارو د طرف نه منتقل کيدو سره راغلې ده، نو په هغې باندې عشر واجب دې، آه په دې موضوع باندې يو مستقل تصنيف د شيخ جلال الدين تهانيسری رحمته الله عليه هم دې پس په فتاوی محموديه (صفحه ۴۵) کښې د يو سائل سوال دې : د هندوستان د زمکو د عشری کيدو او غير عشری کيدو تحقيق او کړئ، علماء کرامو دا مسئله داسې گرانه کړې ده چه د مسئلې يو اړخ هم واضحه نه ښکاري.

الجواب : حامدا ومصليا : علماء کرامو خو ډيره اسانه کړې ده . نن نه سل سوه کاله مخکښې شيخ جلال الدين تهانيسری رحمته الله عليه چه خليفه خاص وو د شيخ عبدالقدوس رحمته الله عليه په دې مسئله باندې ئې په خپل وخت کښې يو مستقل رساله تصنيف او فرمائيله چه د هغې نوم رساله اراضی هند دې، په هغې کښې د زمکو اقسام او د هغې احکامات تفصيلا ذکر شوې دې، په موجوده دور کښې هم مختلفې رسالې ليکلې شوې دې (۱) مولانا محمد حفظ الرحمن صاحب رحمته الله عليه هم په خپل تصنيف د اسلام اقتصادي نظام په اخير کښې په دې مسئله باندې په تفصيل سره ليکل کړې دې. د ډيرو علماء کرامو او د فتاوی عبارتونه په هغې کښې ليکلې شوې دې.

اوس د دې تمهيدی (۲) امورو د پيژندگلو نه پس حديث الباب ته گورئ.

(۱) د دې نه پس مختصرا عرض دې چه کومه زمکه د مسلمان ملک نه وي لکه چه د زمينداري د ختميدونه پس د دې ځانې د زمکو حال دې په هغې کښې عشر واجب نه دې فقط والله سبحانه وتعالى اعلم)
 (۲) د دې نه معلومه شوه چه دا باب ډير زيات اهم دې په دې وجه د دې دپاره د دومره اوږد تمهيد ضرورت راغلو. په اصل کښې دا کتاب الخراج والفقير تول ډير گران او اهم دې په دې باندې د پوهې دپاره بنده ډير زيات محنت او کړو، د احقر څه علم دې، اشرف على تهانوي رحمته الله عليه د سورة حشر د هغه آيتونو په تفسير کښې چه په هغې کښې د اموال فقير حکم ذکر کړې شوې دې هم دا ليکلې دې پس حضرت ليکي : دا مقام د سورة براءت په شان احقر ته ډير زيات گران معلوم شوې وو.....
 لته

[۳۰۰۶] حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ زَيْدِ بْنِ أَبِي الزَّرْقَاءِ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ: أَحْسَبُهُ عَنَّافِي، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاتَلَ أَهْلَ خَيْبَرَ فَعَلَبَ عَلَى النَّخْلِ وَالْأَرْضِ وَالْجَاهِ إِلَى قَصْرِهِمْ فَصَالِحُوا عَلَى أَنْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّفْرَاءَ وَالْبَيْضَاءَ وَالْحَلَقَةَ وَهُمْ مَا حَمَلَتْ رِكَابُهُمْ عَلَى أَنْ لَا يَكْتُمُوا وَلَا يُغَيِّبُوا شَيْئًا، فَإِنْ فَعَلُوا فَلَا ذِمَّةَ لَهُمْ وَلَا عَهْدَ فَعَيَّبُوا مَسْكَ حَيْبِيِّ بْنِ أَخْطَبٍ وَقَدْ كَانَ قُتِلَ قَبْلَ خَيْبَرَ كَانَ أَحْتَمَلَهُ مَعَهُ يَوْمَ بَنِي النَّضِيرِ حِينَ أُجْلِبَتْ النَّضِيرُ فِيهِ حُلِيِّهِمْ، قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "السَّعِيَّةُ أَيْنَ مَسْكَ حَيْبِيِّ بْنِ أَخْطَبٍ؟ قَالَ: أَذْهَبَتْهُ الْحُرُوبُ وَالنَّفَقَاتُ؟"، فَوَجَدُوا الْمَسْكَ فَقَتَلَ ابْنَ أَبِي الْحَقِيقِ وَسَبَى نِسَاءَهُمْ وَذَرَارِيَهُمْ وَأَرَادَ أَنْ يُجْلِبَهُمْ، فَقَالُوا: يَا مُحَمَّدُ دَعْنَا نَعْمَلُ فِي هَذِهِ الْأَرْضِ وَلَنَا الشَّطْرُ مَا بَدَأَ لَكَ وَلَكُمْ الشَّطْرُ، وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِي كُلَّ امْرَأَةٍ مِنْ نِسَائِهِ ثَمَانِينَ وَسَقًّا مِنْ ثَمَرٍ وَعَشِيرِينَ وَسَقًّا مِنْ شَعِيرٍ.

دعبدالله بن عمر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دخیبر اوسیدونکوسره جنگ اوکړو ددغه خلقو زمکه او ونې ئې قبضه کړي او دوی ئې په خپلو کورونو کښې قید کړل، بیادوی دنبی صلی الله علیه و آله سره په شرطونو صلح اوکړه چه نبی صلی الله علیه و آله ته به یومقدار سره اوسپین زر اوصلح ورکوي اوباقی پاتې ددوی اوبنان چه خو مره سامان اوچتولې شي هغه به دخان سره وړي خوپه دې شرط چه دوی به ددې نه خه خیز نه پتوي اوکه چرې داسې اوکړي نوداهل اسلام دمه به ددوینه پورته شي اومعاهده به باقی پاتې نه شی، بیادي خلقو دچمري یوه بوجئ کومه چه دحیی بن احطب په لاس کښې وه غائبه کړه اودې دخیبر دوتلونه مخکښې قتل کړې شو حبی و دغه بروجئ دبنونضیر دزیوراتونه ډکه کړې وه اودخان سره ئې وړله کله چه بنی نضیر شرلې کیدل، ۰ راوي وائی چه نبی صلی الله علیه و آله سعیه نومي یهودي ته اووئیل چه دحیی بن احطب هغه بوجئ چرته ده؟ هغه اووئیل په جنگ کښې ضائع شوي ده او په خرچونو کښې مصرف شوي ده، بیاصحابه کراموته هغه بوجئ ملا وشوه نبی صلی الله علیه و آله ابن حقیق قتل کړو کوم چه ددوی دیهودیانونه وو او ددوی زنانه ئې گرفتاري کړي او ددوی بچی ئې غلامان کړل اودملک نه ئې ددوی دشرلو اراده اوکړه دوی اووئیل ای محمد مونږ هم دلته اوسیدوته پریرده مونږ به په زمکه کښې محنت کوو اوخومره پیداوار چه حاصلیري ددې نیم به تاته درکوو اونیم به مونږ اخلو، نبی صلی الله علیه و آله دخیبر په آمدن کښې پخپلوب بیانوکښې هري پوي ته اتیا اتیا وسقه کجوري او شل وسقه وربشي دیو کال دخرچي دپاره ورکړي

« عن ابن عمر رضي الله عنهما ان النبي صلی الله علیه و آله قاتل اهل خيبر فغلب على الارض والنخل والجاهم الى قصرهم فصالحوه على ان لرسول الله صلی الله علیه و آله الصفراء والبيضاء والحلقة، ولهم ما حملت ركايبهم»

۶۶ د سیرت او احادیث او د فقه د کتابونو د مراجعت نه پس د استهائې کوشش نه پس چه څه په فهم کښې راغلل هغه دلته او لیکلې شو دلته هم عرض دي چه که د دې نه احسن او اتقن تفسیر ممکن وی نو هغې ته دي ترجیح ورکړې شی آه صفحه ۱۲۳ جلد ۱۱،
۱. نقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۷۸۷) (حسن الإستاذ)

د غزوه خیبر بیان :

په دې حدیث کښې د غزوه خیبر او فتح خیبر بیان دی. ابن عمر رضی اللہ عنہما فرمائی چې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د اهل خیبر سره قتال اوکړو، او د هغوی په زمکو او باغونو باندې ئې غلبه بیا مونده او هغوی ئې مجبور کړل په قلعه بند کیدو باندې، په قلعه کښې د محصور کیدو نه پس هغوی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره په دې شرطونو باندې صلح اوکړه چې څه مونږ سره سره زر او سپین زر او وسله ده هغه د مسلمانانو دپاره ده او د هغوی دپاره به هغه سامان وی کوم چې هغوی اورلې شی په دې طریقه دا صلح اوشوه چې یو خیز (سره زر او سپین زر) به نه پتوی او هغه به نه غائبوی، او که هغوی داسې اوکړل نو بیا به د هغوی دپاره هیڅ عهد او ذمه نه وی. **﴿ فغیوا مسکا لحیی بن اخطب قد کان قتل قبل خیبر کان احتمله معه یوم بنی النضیر حین اجلیت النضیر فیه حلیم ﴾** یعنی د معاهدې خلاف د حی بن اخطب د خرمنې مشک چې په هغې کښې د هغوی کالی سره زر او سپین زر وو غائبه کړه، لیکلې ئې دی چې په هغې کښې د لسو زرو دینارو په اندازه سره زر وو، دا حی بن اخطب د صفیه رضی اللہ عنہا پلار دی د بنو قریظه سردار، نو چونکه د خپل قوم ملک وو هم په دې وجه به غالباً د ټول قوم کالی د هغه سره محفوظ وی، راوی وائی چې دا بن اخطب د خیبر نه مخکښې وژلې شوې وو، چونکه په بنو قریظه کښې وو په دې وجه به د هغوی سره په ۵ هجری کښې قتل شوې وی. د بنو نضیر جنگ کوم چې د هغوی نه یو کال مخکښې شوې وو چې کله هغوی جلا وطن کیدل هغه وخت هغوی هغه مشک اوچت کړې وو. په روایت کښې دی چې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سعیه داد یهودی نوم دې نه تپوس اوکړو چې د حی بن اخطب مشک چرته دې؟ نو هغه اووې **﴿ اذهب الحروب والنفقات ﴾** یعنی په جنگونو او نورو ضروریاتو کښې خرچ شو خوروستو هغه ملاؤ شوې وو لکه چې په روایت کښې ذکر دی. **﴿ فقتل ابن ابی الحقیق ﴾** یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ابن ابی الحقیق (چې د قبیله بنو نضیر په سردارانو کښې وو او د صفیه رضی اللہ عنہا رومبې خاوند هم وو) هغه خو قتل کړو او د هغوی زبانه او ماشومان ئې قید کړل، چې کله د خیبر د یهودو د اخراج اراده رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم اوکړه نو هغوی اووې **﴿ یا محمد دعنا نعمل فی هذه الارض ﴾** دا مضمون وړاندې تیر شوې دی یعنی د خیبر یهودو ډیر په منت سره عرض اوکړو چې بیشکه اوس د دې ټولو زمکو ته مالک یئ خو کرونده ستاسو د وس خبره نه ده تاسو مونږ ته دلته د پاتې کیدو اجازت راکړئ چې په دې زمکه کښې کرونده کوو او د دې باغونو خدمت کوو او د دې په پیداوار کښې به نیم زمونږ وی او نیم ستاسو، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په دې شرط سره د هغوی دا رائي منظور کړه چې کله مونږ او غوارو نو تاسو به د دې ځانې نه اوباسو، **﴿ وکان رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم یعطی کل امراة من نسانه ثمانین وسقا من تمر، وعشرین وسقا من شعیر ﴾** یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم به د خیبر د خمس نه خپلې هرې بی بی ته د کال خرچه اتیا وسقه کهجورې او شل وسقه اوربشې ورکولې، او په وړاندې روایت کښې د سلو وسقو کهجورو ذکر دی، نو کیدې شی چې په شروع کښې اتیا وسقه وی او روستو ئې سل کړې وی، او یا داسې اوایه چې د أحد العدیدین ذکر بالتخمین (تقریبی) او د بل بالتحقیق دی، یا دا چې یو مقدار

او بل کال بل مقدار، د پیداوار د کمی زیاتۍ په لحاظ سره.

د خیبر فتح عنوة ده یا صلحا :

د دې روایت په شروع کښې تصریح ده چه د اهل خیبر سره قتال او کړو او دا چه هغوی مجبور کیدو سره د رسول الله ﷺ سره مصالحت او کړو. حضرت په بذل کښې لیکلې دی چه دې ته به فتح صلحا نه شی وئیلې کیدې اگر چه صورة صلح لیکلې شوې ده، په حقیقت کښې دا هم فتح عنوة ده، زه وایم چه هسې خو مسئله مختلف فیه ده وړاندې روایت کښې د دې تصریح راروانه ده (عن ابن شهاب ان خیبر کان بعضها عنوة وبعضها صلحا والکتیبة اکثرها عنوة وفيها صلح) او په یو روایت کښې وړاندې صرف عنوة هم راځی هم په دې وجه یو جماعت امام طحاوی، امام شافعی او د امام بیهقی رحمهم الله رانې هم دا ده، یعنی بعض صلحا او بعض عنوة او بیا په دې باندې یو اختلافی مسئله متفرع ده چه د امام شافعی رحمهم الله په نزد د ارض مفتوحه عنوة تقسیم ضروری دې حال دا چه رسول الله ﷺ صرف د خیبر زمکه تقسیم کړې ده. نو د دې جواب امام شافعی رحمهم الله هم دا ورکوی چه کوم نیم خیبر عنوة فتح شوې وو هغه رسول الله ﷺ تقسیم او فرمائیلو او نیم باقی کوم چه صلحا فتح شوې وو هغه مال فی شو هغه رسول الله ﷺ تقسیم نه کړو، او د احنافو او حنابله په نزد د ارض مفتوحه تقسیم ضروری نه دې هغوی د رسول الله ﷺ د دې فعل نه استدلال کوی. وقد تقدم هذا الاختلاف فی اول الباب وهو البحث الثالث..... حضرت په (بعضها صلحا) باندې لیکلې دی چه (لعل المراد بالصلح على ان يخرجهم) (متی شاء لا فی الحال) ویحقن دمانهم ولس هذا بالصلح الاصطلاحی (۱) بل هو ایضا فتح عنوة، په دې باندې په حاشیه د بذل کښې لیکي: وبه جزم ابن قیم فی الهدی وتبعه ابن الهمام فی الفتح ۴/۴۰۳.

[۳۰۰۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي نَافِعُ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، أَنَّ عُمَرَ قَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَامِلًا يَهُودَ خَيْبَرَ عَلَى أَنَا تُخْرِجَهُمْ إِذَا شِئْنَا فَمَنْ كَانَ لَهُ مَالٌ فَلْيَلْحَقْ بِهِ فَإِنِّي مُخْرِجٌ يَهُودَ فَأَخْرِجَهُمْ.

د عبداللہ بن عمر رحمهم الله نه روایت دې فرمائی چه عمر رحمهم الله او فرمائیل ای خلقو یقینا رسول پاک و دخیبر دیهودیانوسره په دې خبره معاهده کړې وه کله چه مونږ او غواړو نو تاسو به اوباسو نود چاچه دهغوی سره څه مال وي هغه دي وصول کړي زه دیهودیانو ویستونگې یم (دجزیره العرب نه) او بیا ئې اوویستل

(عن عبدالله بن عمر رحمهم الله ان عمر قال یاایها الناس ان رسول الله ﷺ کان عامل یهود خیبر علی ان نخرجهم اذا شئنا، ومن کان له مال فلیلحق به فانی مخرج یهود فأخرجهم)

(یعنی فتح صلحا خو دا ده چه د قتال ضرورت رانشی او که د قتال د پښیدو نه پس عاجز راتلو سره صلح او کړې شی نو دا فتح صلحا نه ده بلکه عنوة ده)
 ۲. صحیح البخاری/الشروط ۱۴ (۲۷۳۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۵۴) (حسن صحیح)

مضمون د حدیث :

یعنی عمر رضی اللہ عنہ په خپل دور خلافت کښې یوه ورځ دا اعلان اوکړو چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د خیبر یهودو سره دا معامله کړې وه چه کله مونږ غواړو نو تاسو به اوباسو عمر رضی اللہ عنہ فرمائی : اوس زه یهود اوباسم لهذا چه د چا باغ یا زمکه د چا یهودی سره وی هغه دې لار شی او د هغه نه دې واخلي او خپل خیز دې سنبهال کړې، پس د دې اعلان نه پس عمر رضی اللہ عنہ د هغوی اخراج او فرمائیلو او د دې نه وړاندې روایت کښې دا هم راروان دی چه عمر رضی اللہ عنہ ازواج مطهرات ته یو مستقل سړې وراولیرلو چه که دوی غواړی چه په خومره مقدار کښې غله او کهجورې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته ورکولې هغه غله او کهجورې هغوی ته ورلیرم او که دا غواړی چه د هغې په اندازه د کروندې زمکه او د کهجورو اونې هغوی ته ورکړم نو داسې به اوکړم، په دې باندې بعضو خو اوساق غله او کهجورې اختیار کړې او بعضو زمکه، (وکانت عائشة منها ای ممن اخذ الارض والنخل)

په وړاندې روایت کښې راروان دی (وکان التمر يقسم على السهمان من نصف خيبر ويأخذ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم الخمس) یعنی د خیبر د نیمو کهجورو تقسیم د حصو مطابق کیدلو، او رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم به هم خپله حصه یو خمس اخستله د دې نصف خیبر نه مراد هغه نصف دې کوم چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د غانمینو ترمینځه نه وو تقسیم کړې بلکه د خپلو ضرورتونو دپاره ئې پریخودلې وه او کوم نیم تقسیم چه ئې کړې وو نو هغه خو ښکاره دی چه دغانمینو ملک شو، او ددې تقسیم نه مراد تقسیم فی مصارف الفئ هم دی نه تقسیم علی الغانمین ځکه چه دا نصف مال فئ وو (علی قول) والحديث اخرجہ مسلم، قاله المنذرى

[۳۰۰۸] () حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدِ اللَّيْثِيِّ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ: لَمَّا افْتَتَحَتْ خَيْبَرُ، سَأَلْتُ يَهُودَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُقْرَهُمْ عَلَى أَنْ يَعْمَلُوا عَلَى التَّصْفِ بِمَا خَرَجَ مِنْهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَقْرَكُمُ فِيهَا عَلَى ذَلِكَ مَا شِئْنَا فَكَانُوا عَلَى ذَلِكَ"، وَكَانَ التَّمْرُ يُقَسَّمُ عَلَى السَّهْمَانِ مِنْ نِصْفِ خَيْبَرَ وَيَأْخُذُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْخُمْسَ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَطْعَمَ كُلَّ امْرَأَةٍ مِنْ أَزْوَاجِهِ مِنْ الْخُمْسِ مِائَةَ وَسُقِيَ تَمْرًا وَعِشْرِينَ وَسُقِيَ شَعِيرًا، فَلَمَّا أَرَادَ عُمَرُ إِخْرَاجَ الْيَهُودِ أَرْسَلَ إِلَى أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُنَّ: مَنْ أَحَبَّ مِنْكُنَّ أَنْ أَقْسِمَ لَهَا تَخْلًا بِمَخْرَجِهَا مِائَةَ وَسُقِيَ فَيَكُونَ لَهَا أَصْلُهَا وَأَرْضُهَا وَمَا وَهَا وَمِنَ الزَّرْعِ مَزْرَعَةٌ خَرْصِ عِشْرِينَ وَسُقِيَ، فَعَلْنَا وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ نَعْزِلَ الَّذِي لَهَا فِي الْخُمْسِ كَمَا هُوَ فَعَلْنَا.

د عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی چه کله چه خیبر فتح شو یهودیانود نبی صلی اللہ علیہ وسلم نه مطالبه اوکړه چه مونږ په دې شرط باندې دلته اوسیدو ته پریږده چه مونږ به محنت کوو او کوم پیداوار چه حاصلیري ددې نیم به دخان سره ساتو اوباقی نیم به تاته درکوو نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل سمه ده په دې شرط باندې به زه تاسو دلته پریږدم دیو وخته پورې خو چه کله مونږ او غواړو بیا دغه خلق په هم دغه شرط باندې اوسیدل اود خیبر نه حاصلیدونکی نیمي

۱: صحیح مسلم للمساقاة ۱ (۱۰۵۱)، (تحفة الأشراف: ۷۴۷۲)، وقد أخرجہ: صحیح البخاري/الحرث ۸ (۲۳۲۸)، سنن الترمذي/الأحكام ۴۱ (۱۳۸۳)، سنن ابن ماجه/الرهون ۱۴ (۲۴۶۷)، مسند احمد (۱۷/۲، ۲۲، ۳۷) (صحیح)

کجورې به په خو حصو باندي تقسیمیدي اودهغې نه به پنځمه حصه نبی ﷺ وصول کوله او په خپلو بیانو کښې به ئې هري یوې ته ددې پنځمې حصې نه سل وسقه کجورې او شل وسقه وربشي ورکولې، کله چه عمر رضی الله عنه دجزیره العرب نه د یهودیانو دوستانو اراده اوکره نو امهات المومنین ته ئې اووئیل چه په تاسو کښې دچاچه زړه غواړی زه به ورته دومره ونفي ورکړم سره دجررو او اوبو اوزمکې په څومره ونو کښې چه سل وسقه کجورې کیرې او دومره زمکه به هم ورکړم چه شل وسقه وربشي پکښې کیرې اوکه چرې څوک د خمس نه اخستل غواړی نوزه به ئې ورته د خمس نه ورکړم.

[۳۰۰۹] () حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، وَزِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ، أَنَّ إِسْمَاعِيلَ بْنَ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَهُمْ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزَا خَيْبَرَ فَأَصْبَنَاهَا عَنُودَةً فَجَمِعَ السَّبْيُ.

دانس بن مالک رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ دخیبرجهد وکړو اوخیبر مونږپه جنگ حاصل کړو او قیدیان موراجمع کړل.

قوله: ﴿ عن انس بن مالك رضي الله عنه فاصبناها عنوة ﴾

په دې روایت کښې د صلح ذکر نشته، بلکه مطلقا دا دی چه خیبر عنوة فتح کړې شو. والحديث اخرجه البخاري ومسلم والنسائي، باتم منه، قاله المنذرى

[۳۰۱۰] () حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْمُؤَدَّبِيُّ، حَدَّثَنَا أُسْدُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ زَكَرِيَّا، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَّارٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَتْمَةَ، قَالَ: "قَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ نِصْفَيْنِ، نِصْفًا لِنَوَائِبِهِ وَحَاجَتِهِ، وَنِصْفًا بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ قَسَمَهَا بَيْنَهُمْ عَلَى ثَمَانِيَةِ عَشْرَ سَهْمًا".

دسهل بن حتمه رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ دخیبرغنیمت په دوه حصو تقسیم کړې وویوه حصه ئې دخپلو حادثو اوضرورتونودپاره منتخب فرمائیلې وه اوبله حصه به ئې په مسلمانانو تقسیموله اودغه حصه ئې اتلس حصې کړې وه.

﴿ قسمها بينهم على ثمانية عشر سهما ﴾ او دهغې نه په روستو روایت کښې دی ﴿قسمها على ستة وثلاثين سهما﴾: په رومی روایت کوم کښې چه د اتلسو حصو ذکر دي هلته د نصف ارض تقسیم مراد دي او په بل روایت کښې د ټولې زمکې تقسیم مراد دي، او د دې ټولو تفصیل په ابتدائی مباحثو کښې تیر شوي دي.

[۳۰۱۳] () حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ الْكِنْدِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ يَعْنِي سُلَيْمَانَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَّارٍ، قَالَ: لَمَّا أَقَاءَ اللَّهُ عَلَى نَبِيِّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ قَسَمَهَا عَلَى سِتَّةٍ وَثَلَاثِينَ سَهْمًا جَمَعَ كُلَّ سَهْمٍ مِائَةَ سَهْمٍ فَعَزَلَ نِصْفَهَا لِنَوَائِبِهِ، وَمَا يَنْزِلُ بِهِ الْوَطِيئَةَ وَالْكَتِيئَةَ وَمَا أُحِيزَ مَعَهُمَا، وَعَزَلَ النِّصْفَ الْآخَرَ قَسَمَهُ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ الشَّقِ وَالنَّطَاطَةَ وَمَا أُحِيزَ مَعَهُمَا، وَكَانَ سَهْمُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهَا أُحِيزَ مَعَهُمَا.

۱: صحيح البخاري/الصلاة ۱۲ (۳۷۱)، صحيح مسلم/الجهاد ۴۳ (۱۳۶۵)، سنن النسائي/النكاح ۶۴ (۳۳۴۰)، تحفة الأشراف: (۱۰۵۹) (صحيح)
 ۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۶۴۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۴) (حسن صحيح)
 ۳: انظر حديث رقم: (۳۰۱۱)، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۳۵، ۱۸۴۵۶) (صحيح)

د بشير بن يسار نه روایت دې فرمائی کله چه الله تعالی نبی ﷺ ته خیبر په طور د غنیمت ورکړو نونبی ﷺ په شپږ دیرش حصو باندي تقسیم کړو او هره یوه حصه به په سلو حصو باندي مشتمله وه، نیم په دې کښې نبی ﷺ دخپلو ضروریاتو دپاره محفوظ کړو په کومو کښې چه وطیحه او کتیبه او ددې خواه اوشاه مقامات هم شامل وو او باقی پاتې نیم به ئې به مسلمانانو باندي تقسیمولو او په دې جائداد کښې شق او نظاة مقامات شامل وو او کومه زمکه چه ددې گیر چا پیره وه او د نبی ﷺ حصه ددې مقاماتونه وه.

(فَعَزَلَ نَصْفَهَا لِنَوَائِبِهِ وَمَا يَنْزِلُ بِهِ الْوَطِيحَةُ وَالْكَتِيبَةُ) (وَالسَّلَامُ) (كَمَا فِي الرَّوَايَةِ الْاٰتِيَةِ) وَمَا اٰحِزَ مَعَهُمَا

شرح الحديث :

یعنی نصف ارض خیبر لره د خپلو ضروریاتو دپاره او هغه وفدونه او میلمانه چه به رسول الله ﷺ ته راتلل د هغوی دپاره اوساتله او دا وطیحه او کتیبه چه د زمکو وغیره نومونه دی دا د هم دې نصف مصداق دی کوم چه رسول الله ﷺ تقسیم نه کړل، (وما احیز معهما) مطلب دا دې چه کومې زمکې وطیحه او د کتیبي سره ملحق وی (الشق والنظاة وما اجیز معهما) دا هم هغه زمکې دی کومې چه هغوی د غانمینو ترمینحه تقسیم کړې وی، وړاندې راوی وائی چه د رسول الله ﷺ حصه په هغه زمکو کښې وه چه ملحق بالشق والنظاة وی، وړاندې هغه د مجمع بن جاریه انصاری رضی الله عنہ روایت دې کوم چه په کتاب الجهاد کښې تیر شوي دي په دې وجه هغه مونږ دلته نه ذکر کوو.

[۳۰۱۱] () حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ بْنِ الْأَسْوَدِ، أَنَّ يَحْيَى بْنَ آدَمَ حَدَّثَهُمْ، عَنْ أَبِي شَهَابٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّهُ سَمِعَ نَقْرًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالُوا: فَذَكَرَ هَذَا الْحَدِيثَ، قَالَ: فَكَانَ النَّصْفُ بِهَؤُلَاءِ الْمُسْلِمِينَ وَسَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَزَلَ النَّصْفَ لِلْمُسْلِمِينَ لِمَا يَنْبُؤُهُ مِنَ الْأُمُورِ وَالنَّوَائِبِ.

بشير بن يسار په صحابه كرامو كښې ديوخو كسانونه روایت كوي فرمائی چه هغوی دا حدیث بیان كړو چه په نیم امدن كښې ئې ټول مسلمانان شريك كړل او نبی ﷺ پخپله هم په دې حصه كښې شامل وو او باقی چه كومه نیمه حصه پاتې كیده هغه ئې د مسلمانانو دا اجتماعي امورو دپاره محفوظ كړه چه كله به دوی ته مسائل پېښیدل لكه جهاد وغیره نودغه اخراجات به ئې ترې پوره كول

[۳۰۱۲] () حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فَضِيلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ مَوْلَى الْأَنْصَارِ، عَنْ رَجَالَيْنِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا ظَهَرَ عَلَى خَيْبَرَ قَسَمَهَا عَلَى سِتَّةٍ وَثَلَاثِينَ سَهْمًا جَمَعَ كُلُّ سَهْمٍ مِائَةَ سَهْمٍ، فَكَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلِلْمُسْلِمِينَ النَّصْفُ مِنْ ذَلِكَ، وَعَزَلَ النَّصْفَ الْبَاقِي لِمَنْ نَزَلَ بِهِ مِنَ الْوُقُودِ وَالْأُمُورِ وَنَوَائِبِ النَّاسِ."

بشير بن يسار (د انصارو ازاد كړې شوي غلام) په صحابه كرامو كښې ديوخو كسانونه روایت

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۳۵، ۱۸۴۵۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۴) (صحيح الإسناد)

۲: انظر حديث رقم: (۳۰۱۱)، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۳۵، ۱۸۴۵۶) (صحيح الإسناد)

کوی هر کله چه نبی ﷺ په خیبر و الا باندي غالب شو نو خیبر ئی په شپږ دیر شو حصو تقسیم کړو او هره یوه حصه په سلو حصو مشتمله وه نیم په دې کنبې د نبی ﷺ او د عامو مسلمانانو وو او باقی پاتې نیم دوندونو د خدمت دپاره او دنورو اجتماعي خدمتونو دپاره استعمالیدو.

[۳۰۱۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَسْكِينٍ الْهَمَاسِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ يَعْنِي ابْنَ بِلَالٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا أَقَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ خَيْبَرَ قَسَمَهَا سِتَّةً وَثَلَاثِينَ سَهْمًا جَمْعًا، فَعَزَلَ لِلْمُسْلِمِينَ الشُّطْرَ ثَمَانِيَةَ عَشْرَ سَهْمًا يَجْمَعُ كُلُّ سَهْمٍ مِائَةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُمْ لَهُ سَهْمٌ كَسَهْمِ أَحَدِهِمْ، وَعَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَمَانِيَةَ عَشْرَ سَهْمًا وَهُوَ الشُّطْرُ لِنَوَائِبِهِ وَمَا يُنْزَلُ بِهِ مِنْ أَمْرِ الْمُسْلِمِينَ، فَكَانَ ذَلِكَ الْوَطِيحِ وَالْكَتَيْبَةِ وَالسَّلَامِ وَتَوَابِعِهَا، فَلَمَّا صَارَتِ الْأَمْوَالُ بِيَدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْمُسْلِمِينَ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ عُمَالٌ يَكْفُونَهُمْ عَمَلَهَا، فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْيَهُودَ فَعَامَلَهُمْ.

بشیر بن یسار په صحابه کرامو کنبې د یو خو کسانو نه روایت کوی فرمائی کله چه الله تعالی نبی ﷺ ته خیبر په طور د غنیمت ورکړو نو نبی ﷺ په شپږ دیر شو حصو باندي تقسیم کړو، یوه حصه ئی د مسلمانانو د اجتماعي خدماتو دپاره مختص کړه چه هغه اتلس حصې وي او هره یوه حصه به په سلو حصو باندي مشتمله وه، او بعضې په دې کنبې نبی ﷺ دخپلو ضروریاتو دپاره محفوظ کړه په کومو کنبې چه وطیح او کتیبه او سلالم او ددې خواه او شاه مقامات هم شامل وو، هر کله چه د نبی ﷺ په تصرف کنبې دامالونه راغلل او مسلمانانو ته داسې کار کونکي نه ملاویدل خو ک چه ددوی د طرف نه محنت او مشقت ته دوام ورکړی نو نبی ﷺ یهودیان محنت او مشقت کولو ته تیار کړل نو نبی ﷺ ددوی نه کا واخستو.

[۳۰۱۵] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ مُجَيْعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو يَزِيدَ الْأَنْصَارِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَعْقُوبَ بْنَ مُجَيْعٍ كُرِّي، عَنْ عَمِّهِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ عَمِّهِ مُجَيْعِ بْنِ جَارِيَةَ الْأَنْصَارِيِّ، وَكَانَ أَحَدَ الْقُرَاءِ الَّذِينَ قَرَعُوا الْقُرْآنَ، قَالَ: "سَمِعْتُ خَيْبَرَ عَلَى أَهْلِ الْحُدَيْبِيَّةِ، فَقَسَمَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ثَمَانِيَةَ عَشْرَ سَهْمًا، وَكَانَ الْجَيْشُ أَلْفًا وَخَمْسَ مِائَةٍ فِيهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ فَارِسٍ، فَأَعْطَى الْفَارِسَ سَهْمَيْنِ وَأَعْطَى الرَّاجِلَ سَهْمًا".

دمجمع بن جاريه انصاري نه روایت دې کوم چه د قران قاري وو فرمائی چه نبی ﷺ خیبر په هغه کسانو په اتلسو حصو تقسیم کړو خو ک چه په صلح حدیبیه کنبې شزیک وو او د ټول لښکر تعداد ۱۵۰۰ وو په دې کنبې ۳۰۰ سواره وو ۱۲۰۰ پیدل و ونبی ﷺ سورو ته دوه دوه حصې ورکړې او پیدل ته یوه یوه.

[۳۰۱۶] (۳) حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ الْعَجَلِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى يَعْنِي ابْنَ آدَمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنَّا زُهْرِيُّ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، وَبَعْضُ وَلَدِ مُحَمَّدِ بْنِ مَسْلَمَةَ، قَالُوا: بَقِيَتْ بَقِيَّةٌ مِنْ أَهْلِ خَيْبَرَ تَحْصَنُوا، فَسَأَلُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَخْفَنَ دِمَاءَهُمْ وَيُسَبِّرَهُمْ فَفَعَلَ، فَسَمِعَ بِذَلِكَ أَهْلُ قَدِكُ فَنَزَلُوا عَلَيَّ مِثْلَ ذَلِكَ فَكَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاصَّةٌ لِأَنَّهُ لَمْ يُوجَفْ عَلَيْهَا بِخَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ.

۱: انظر حديث رقم: (۳۰۱۱)، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۳۵، ۱۸۴۵۶) (صحيح)

۲: انظر حديث رقم: (۲۷۳۶)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۱۴) (حسن)

۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۸۸۶) (ضعيف الإسناد)

د عبد الله بن ابی بکر اود محمد بن مسلمه په ځامنو کښې د یو کس روایت دې دوی وائی کله چه مسلمانانو خیبر فتح کړو نود خیبر یو څو قلاگانې دفتح کیدونه باقی پاتې شوي او هغوی په خپلو قلاگانو کښې محاصره شول، هغې د نبی ﷺ نه مطالبه او کړه چه مونږ ته امن راکړه او مونږ ته دې لاره راکړې شي نبی ﷺ دهغوی مطالبه منظور کړه نو فذک والاو ته هم دا خبر ورسید و نو هغوی هم په دې شرط باندي روان شول بیا به فذک په خصوصی طور سره د نبی ﷺ دپاره شمیرلې شو ځکه چه په دې پسي آسونه او اوبان نه وو زغلولې شوي (مطلب دادې چه فذک د خیبر په قلاگانو کښې یوه قلاوه مسلمانانو ته بغیرد جنگ نه حاصله شوه که چرې په جنگ حاصله شوې وې نو بیا به په دې کښې ټول مسلمانان یو برابر حقدار وې).

(بقیت بقیة من اهل خیبر فتحصنوا) یعنی بعض قلعه گانې دخیبر خورسول الله ﷺ فتح کړل او بعض د فتح نه باقی پاتې شو د دې نه مراد وطیح او سلالم دی، نو دا باقی یهودیان په دې قلعه گانو کښې د ځان د بچ کولو دپاره داخل شو (تحصن العدو ای دخل فی الحصن) او قلعه کښې د داخلیدو نه پس هغوی د رسول الله ﷺ نه تپوس او کړو چه تاسو زموږ نفسونه محفوظ کولو سره مونږ د دې ځانې نه اوباسئ، رسول الله ﷺ دا منظوره کړه، چه کله اهل فذک ته د دې خبر ملاؤ شو نو هغوی هم د رسول الله ﷺ سره هم دغه شان د صلح معامله او کړه، (فکانت لرسول الله ﷺ خاصة) د دې تعلق په ظاهر د سیاق د وجې د فذک او باقی اهل خیبر دواړو سره دې او د دې تائید کیری د هغه حضراتو چه د فتح خیبر په باره کښې د بعضها عنوة او بعضها صلحا قائل دی، په هغوی کښې یو امام طحاوی دې، خو حضرت د دې کانت تعلق صرف د فذک سره وئیلی دې او د دې دپاره هم یوه وجه ده ځکه چه اقرب هم داده، او دویمه خبره دا هم ده چه په خیبر کښې خو د جنگ سلسله قائمه وه او په فذک کښې نه وه، والله تعالی اعلم

[۳۰۱۷] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنُ قَارِسٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيْبِ أَخْبَرَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، افْتَتَحَ بَعْضَ خَيْبَرَ عَنُوةً، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، وَقَرَأَ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مِسْكِينٍ وَأَنَا شَاهِدٌ، أَخْبَرَكُمُ ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، أَنَّ خَيْبَرَ كَانَ بَعْضُهَا عَنُوةً وَبَعْضُهَا صَلْحًا وَالْكَتِيبَةُ أَكْثَرُهَا عَنُوةً وَفِيهَا صَلْحٌ، قُلْتُ لِمَالِكٍ: وَمَا الْكَتِيبَةُ؟ قَالَ: أَرْضٌ خَيْبَرٌ وَهِيَ أَرْبَعُونَ أَلْفَ عَدْقٍ.

د سعید بن مسیب نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ دخیبر څه حصه په زور حاصله کړه ابوداود وائی چه د حارث بن مسکین په وړاندې دا روایت بیان شو او زه موجود ووم چه ابن وهب په واسطه مالک د ابن شهاب نه نقل کړې وو چه دخیبر څه حصه خوپه جنگ حاصله شوي وه او څه حصه په صلح حاصله شوي وه کتیبه چه په خیبر کښې یو کلی دې په زور فتح شو ابن وهب وئیلی دی چه ماد مالک نه او هغه د ابن شهاب نه تپوس او کړو چه کتیبه څه شي دې هغه او وئیل چه کتیبه یوه علاقه ده دخیبر په زمکو کښې په کومه کښې چه دکجورو څلویښت زره ونې وي

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۷۳۲، ۱۹۳۶۷) (ضعیف)

﴿ قال ابوداؤد: وقرئ على الحارث بن مسكين وانا شاهد ﴾

د مصنف رضي الله عنه د حارث بن مسكين نه د روایت کولو طرز:

دا د حارث بن مسكين والا سند په نسائی کښې ډیر زیات راځي، هلته هم دغه شان راځي ﴿قراءة عليه وانا اسمع﴾ او دلته په ابوداؤد کښې هم تقریبا هم دغه شان دی، په نسائی کښې چونکه په کثرت سره راځي په دې وجه د دې په باره کښې مشهوره ده چه د حارث بن مسکین د امام نسائی رضي الله عنه نه څه خفگان وو چه د هغې په وجه باندي به امام نسائی رضي الله عنه په مجلس کښې د هغوی مخې ته نه کیناستلو بلکه په پټه باندي به ئې په گوټ کښې اوریدل، هم په دې وجه چه کله امام نسائی د هغه نه روایت کوی نو د هغه په باره کښې فرمائی، زما په دې باندي دا اشکال راځي چه که د امام نسائی رضي الله عنه د تعبیر هم دا وجه وی نو آیا حارث بن مسکین د امام ابوداؤد رضي الله عنه نه هم خفه وو؟ په دې باندي نور کلام د (الفيض السمانی علی سنن النسائی) په مقدمه کښې کړې شوې دې.

﴿ قلت لمالك: وما الكتيبة؟ الخ ﴾ د امام مالک رضي الله عنه شاگرد وائی چه ما د امام مالک رضي الله عنه نه تیوس او کړو چه کتیبه دکوم ذکر چه په روایت کښې دې څه خیزدې؟ نو هغوی او فرمائیل چه د خیبر د یو باغ نوم دې چه په هغې کښې څلویښت زره د کهجورو اونې دی.

[۳۰۱۸] (١) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ عِنْدَ الْقِتَالِ، وَنَزَلَ مِنْ أَهْلِهَا عَلَى الْجَلَاءِ بَعْدَ الْقِتَالِ.

د ابن شهاب نه روایت دې فرمائی چه ماته دا خبره معلومه شوه چه نبی صلی الله علیه و آله خیبر په طاقت او په زور فتح کړې وو او دهغه ځانې اوسیدونکی به د جلا وطنی په شرط باندي دخپلو قلاگانو نه لاندي راکوزیدل.

[۳۰۱۹] (٢) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، قَالَ: خَمَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ، ثُمَّ قَسَمَ سَائِرَهَا عَلَى مَنْ شَهِدَهَا وَمَنْ غَابَ عَنْهَا مِنْ أَهْلِ الْحَدَيْبِيَّةِ.

د ابن شهاب نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دخیبر د مال نه خمس او ویستلو او کوم چه باقی پاتې شو هغه ئې په هغه خلقو تقسیم کړو څوک چه په جنگ کښې موجود وو او څوک چه په دې وخت کښې موجود نه وو مگر په صلح حدیبیه کښې موجود روز په صلح حدیبیه او غزوه خیبر په مینځ کښې یو کال تیر شوې دې.

﴿ عن ابن شهاب قال خمس رسول الله صلی الله علیه و آله خیبر ثم قسم سايرها على من شهدها ومن غاب عنها من اهل الحديبية ﴾

یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله د خیبر په غنیمتونو کښې خمس ویستلو نه پس باقی اربعه اخماس لره چه په جنگ خیبر کښې شریک وو او کوم چه غائب وو د اهل حدیبیه نه د ټولو تر مینځه تقسیم او فرمائیلو.

١: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۴۰۲) (ضعيف)

٢: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۴۰۱) (حسن)

﴿ من اهل الحديبية ﴾ په دې وجه راوی اوئیل چه جنگ خیبر کښې شرکت کونکی ټول په ټول هم هغه اهل حديبيه وو هغه داسې چه کله رسول الله ﷺ د غزوه حديبيه نه مدینې طیبې ته راوایس شو نو مدینې طیبې ته د رسیدو سره د جبرائیل علیه السلام په اشاره باندي د خیبر د فتح دپاره سره د خپلو ټولو ملگرو روان شو، بیا په دې روایت کښې دی چه په هغوی کښې چه کوم صحابه کرام رضی الله عندهم د رسول الله ﷺ سره په فتح خیبر کښې شریک وو رسول الله ﷺ د هغوی حصه هم اولگوله، او کوم چه غائب وو د هغوی هم، په بذل المجهود کښې د تاریخ خمیس نه نقل کړې شوي دی چه جابر بن عبد الله رضی الله عنهما په هغه غائبینو کښې دي چه د هغه رسول الله ﷺ حصه مقرر کړه، هم دغه شان بعض هغه صحابه کرام رضی الله عندهم کوم چه د حبشي نه وایس مدینې طیبې ته راغلل اوبیا خیبر ته اورسیدل پس د قتال د فراغت نه یعنی جعفر رضی الله عنهما او دهغوی ملگری د اهل سفینه نه، (کما تقدم فی کتاب الجهاد) دهغوی هم رسول الله ﷺ حصه مقرر کړه د صحابه کرام رضی الله عندهم په رضامندی سره. (البذل)

[۳۰۲۰] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ، قَالَ: لَوْلَا آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا فَتَحَتْ قَرْيَةَ الْأَقْسَمَتَا كَمَا قَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ.

د عمر رضی الله عنهما نه روایت دي فرمائی که چرې زما سره دهغه مسلمانانو فکرنه وې کوم چه زمونږ نه وروسته پیدا کیدونکی دي یعنی ددوی د ضرورتونو نوهریو کلي اوبنار چه فتح کیرې مابه داسې تقسیمولې لکه څنگه چه نبی ﷺ خیبر تقسیم کړې وو.

﴿ عن عمر رضی الله عنهما قال لولا اخر المسلمين ما فتحت قرية الا قسمتها كما قسم رسول الله ﷺ خيبر ﴾

د ارض مفتوحه په باره کښې د عمر رضی الله عنهما اثر او دهغې شرح :

عمر رضی الله عنهما فرمائی چه که د روستو راتلونکو مسلمانانو ما سره غم نه وې او د هغوی رعایت کول مې مقصود نه وې نو د هرې قریې د فتح کولو نه پس به مې هغه د هغه قریې په غانمینو کښې تقسیموله، څنگه چه رسول الله ﷺ خیبر تقسیم کړې وو (خو چونگه د روستو راتلونکو رعایت مقصود وو په دې وجه ئې نه تقسیموم) په دې وجه چه د زمکې د تقسیم نه پس خو د اشخاصو ملکیت شی او وړاندي په دې کښې میراث وغیره جاری کیرې، د حاجت او عدم حاجت وغیره هلته هیڅ لحاظ نه وی، په خلاف د دي چه په دې صورت کښې د زمکو آمدنی په بیت المال کښې محفوظ وی او بیا همیشه د حاجت مطابق حاجتمندو ته ملاویږی هم دا مطلب دي د عمر رضی الله عنهما د دې ارشاد... جزاه الله تعالى عن الاسلام والمسلمين خيرا الجزاء.

اصل کښې بعض خلقو د عمر رضی الله عنهما نه د تقسیم مطالبه کړې وه نو هم په دې موقعه باندي عمر رضی الله عنهما د عدم تقسیم په معذرت کښې داسې خبره اوکړه، دا مضمون هم نزدې تیر شوي دي. والحديث سكت عليه المنذرى وقال الشيخ محمد عوامه، اخرجہ البخاری

۱: صحيح البخاري/الحرث ۱۴ (۲۳۳۴)، فرض الخمس ۱۴ (۳۱۲۵)، المغازي ۳۸ (۴۲۳۵)، (تحفة الأشراف: ۱۰۳۸۹)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۱/۱) (۳۲) (صحيح)

الحمد لله په دې باب او احاديثو باندې کلام پوره شو، چه په هغې باندې بنده ډير محنت او کړو. والله الموفق وهو الميسر

باب مَا جَاءَ فِي خَبْرِ مَكَّةَ د فتح مکې بيان

فتح مکه نه پس د مکې د زمکې سره رسول الله ﷺ څه معامله او فرمائيله :

يعنى د فتح مکه قصه او بيان، د مکې فتح د جمهورو په نزد عنوة شوي ده، او د امام شافعي رحمته الله په رائي کښې صلحا شوي ده، د مکې زمکه رسول الله ﷺ د غانمينو تر مينځه تقسيم نه کړه بلکه هغه ئې د هم هغه ځائي دخلقو په لاسونو کښې پريخودله، د هغې د اوچت شان او دارالنسک کيدو د وجې نه، او دويمه خبره دا هم ده چه د ارض مفتوحه تقسيم د جمهور په نزد لازم هم نه دي، خو د امام شافعي رحمته الله په نزد د ارض مفتوحه تقسيم ضروري دي. خو د هغوی په مسلک باندې به هم اشکال د دي وجې نه وي چه د هغوی په نزد د مکې مکرمې فتح صلحا ده، د هغوی په نزد تقسيم خو د هغه زمکې واجب دي چه مفتوحه عنوة وي، اوس پاتې شوه دا خبره چه ارض مکه خراجي ده يا که عشري؟ دي په باره کښې مخکښي تير شوي دي چه د قياس تقاضا خو هم دا ده چه هغه خراجي وي خودمکې داوچت شان په بناء باندې خلاف قياس هغه خراجي نه کړې شوه.

دلته يو بحث بل دي چه په کتاب الحج کښې «الانبي لک بمنى بيتا» الحديث د لاندي تير شوي دي هغه دا چه د حرم زمکه موقوف ده يا مملوک؟ او په دي کښې د علماء کرامو اختلاف بالتفصيل تير شوي دي، فتح مکه په رمضان ۸ هجري کښې او شوه.

[۳۰۲۱] (۱) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْتَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ الْفَتْحِ جَاءَهُ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ حَرْبٍ، فَأَسْلَمَ بِمَرِّ الظُّهْرَانِ، فَقَالَ لَهُ الْعَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ يُحِبُّ هَذَا الْفَخْرَ فَلَوْ جَعَلْتَ لَهُ شَيْئًا، قَالَ: "نَعَمْ مَنْ دَخَلَ دَارَ أَبِي سُفْيَانَ فَهُوَ آمِنٌ، وَمَنْ أَغْلَقَ عَلَيْهِ بَابَهُ فَهُوَ آمِنٌ" ..

د ابن عباس نه روايت دي چه د فتح مکې په کال باندې عباس به ابوسفيان بن حريف نبي عليه السلام ته راوستو او په مر الظهران مقام کښې ئې اسلام قبول کړو په دي وخت کښې عباس رضي الله عنه عرض او کړو اي د الله رسوله ابوسفيان يوداسې سرې دي چه نوم (شهرت) او مشري خوښوي د ابوسفيان دپاره که چرې څه امتياز مقرر کړئ نوښه به وي ددي دپاره چه دي په هغې باندې فخر وکړې شي نبي عليه السلام او فرمائيل څوک چه د ابوسفيان کور ته داخل شي هغه ته پناه حاصل ده او څوک چه دخپل کور دروازه بنده کړي هغه ته هم پناه حاصل ده يعنى مونږ به ئې نه وژنو.

«عن ابن عباس رضي الله عنهما ان رسول الله ﷺ عام الفتح جاءه العباس بن عبدالمطلب بابي سفیان

فاسلم بم الظهران»

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۸۵۴) (حسن)

د باب دا رومبې روایت خو مختصر دې، هم دا حدیث په دویمې طریقې سره د دې نه پس را روان دې، په هغې کښې تفصیل دې.

[۳۰۲۲] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو الرّازي، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ يَعْنِي ابْنَ الْفَضْلِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَعْبُدٍ، عَنِ بَعْضِ أَهْلِهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ الظُّهْرَانِ، قَالَ الْعَبَّاسُ: قُلْتُ: وَاللَّهِ لَبِنٌ دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَّةَ عَنُودَةً قَبْلَ أَنْ يَأْتُوهُ فَيَسْتَأْمِنُوهُ إِنَّهُ لَهَلَاكٌ قَرْنِيشٍ، فَجَلَسْتُ عَلَى بَعْلَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: لَعَلِّي أَجِدُ ذَا حَاجَةٍ يَأْتِي أَهْلَ مَكَّةَ فَيُخْبِرُهُمْ بِمَكَانِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُخْرِجُوا إِلَيْهِ فَيَسْتَأْمِنُوهُ فَأَتَيْتُ لِأَسِيرًا إِذْ سَمِعْتُ كَلَامَ أَبِي سَفْيَانَ وَبَدِيلِ بْنِ وَرْقَاءَ، فَقُلْتُ: يَا أَبَا حَنْظَلَةَ، فَعَرَفَ صَوْتِي، فَقَالَ أَبُو الْفَضْلِ: قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: مَا لَكَ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي، قُلْتُ: هَذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنَّاسُ، قَالَ: فَمَا الْحَيْلَةُ؟ قَالَ: فَرَكِبَ خَلْفِي وَرَجَعُ صَاحِبُهُ فَلَمَّا أَصْبَحَ عَدَوْتُ بِهِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْلَمَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا سَفْيَانَ رَجُلٌ يُحِبُّ هَذَا الْفَخْرَ فَاجْعَلْ لَهُ شَيْئًا، قَالَ: "نَعَمْ مَنْ دَخَلَ دَارَ أَبِي سَفْيَانَ فَهُوَ آمِنٌ وَمَنْ أَغْلَقَ عَلَيْهِ دَارَهُ فَهُوَ آمِنٌ وَمَنْ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَهُوَ آمِنٌ" قَالَ: فَتَفَرَّقَ النَّاسُ إِلَى دُورِهِمْ وَإِلَى الْمَسْجِدِ.

دا بن عباس نه روایت دې چه کله نبی ﷺ مرظهران ته راغی عباس ته وائی چه ما په زړه کښې سوچ او کړو که چرې نبی ﷺ د البکر د خان سره بوخي اومکې ته داخل شي مخکښې ددې نه چه دوی ورته راشي او امن تري وغواړی نو دوی به هلاک شي بیاعباس ﷺ او وئیل چه زه د نبی ﷺ په قچر باندي په دې اراده سور شوم او روان شول چه کیدې شي چه خوک د ضرورت دپاره وتلی وي اومکې ته روان وي او ماته ملاوشی چه دمکې خلقوته خبر ورکړی ددې دپاره چه هغوی دمکې نه بهر راوخي اونبی ﷺ ته حاضر شي اوپناه واخلي زه په دې خیال کښې روان ووم چه مادابوسفیان اودبديل بن ورقاء آواز واوریدو ما په تیز آواز سره اووئیل ای ابوحنظله هغه زما آواز او پیژندو نو وئیل

ابوالفضل ئې؟ ما ووئیل هو، ما ورته اووئیل په تاسوڅه شوي دي ستاسونه دې زمامور او پلارقربان شي مالووئیل دانبی ﷺ دې اودادهغه لښکردي ابوسفیان اووئیل ما ورته اووئیل نوبیازه دبیچ کیدو دپاره څه تدبیر اختیارکړم؟ عباس نه ده لره په خان پسې شاته سور کړو اودده ملگرې بديل بن ورقاء واپس شو عباس ﷺ وائی چه کله سحر شو ما ابوسفیان د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضرکړو اوده اسلام قبول کړو عباس اووئیل ای دالله رسوله ابوسفیان غواړی چه دده دپاره دي څه امتیاز وي تاسودده دپاره دڅه امتیاز حکم ورکړئ نبی ﷺ او فرمائیل خوک چه دابوسفیان کور ته داخل شي هغه ته پناه حاصل ده او خوک چه دخپل کور دروازه بنده کړي دوی ته هم پناه حاصل ده خوک چه مسجد ته داخل شي هغه ته پناه حاصل ده (یعنی مونږ به ئې نه وژنو) خلقو چه دا واوریدل نوپه خپلو خپلو کورونو او مسجد کښې پټ شول

مضمون د حدیث او فتح مکه مکره :

مضمون د حدیث دا دې، ابن عباس ﷺ فرمائی چه رسول الله ﷺ د غزوة الفتح په سفر

۱: تقرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۵۱۳۲) (حسن)

کښي مر الظهران ته اورسيډو چه مکي ته نزدي دي نو زما والد عباس رضي الله عنه فرمائي چه ما په زړه کښي سوچ او کړو چه که رسول الله صلى الله عليه وسلم د دي لښکر سره په دي حال کښي عنوة داخل شو او اهل مکه د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه د امن د طلب کولو دپاره رانغلل نو بيا په دي کښي د قريشو يقينا هلاکت دي هغوی فرمائي چه زه په دي فکر کښي اوم چه رسول الله صلى الله عليه وسلم په خپله سورلي باندې سوريډو سره يو خوا بل خوا داسي يو کس لتولو چه د خپل څه ضرورت دپاره مکي ته روان وي پس هغه تلو سره اهل مکه ته د رسول الله صلى الله عليه وسلم هلته د رسيدو خبر ورکړي چه اهل مکه دلته د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت کښي راتلو سره د هغوی نه امن طلب کړي، زه هم په دي تلاش کښي اوم چه ناخاپه ما د ابوسفیان رضي الله عنه او د بديل بن ورقاء د خبرو کولو آواز واوريدو. (دا دواړه د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت کښي مديني طيبي ته د بيا دپاره د صلح يا د جنگ د خبرې برابرولو دپاره را روان وو.) (کما فی الطبرانی) چه کله ما د هغه آواز واوريدو نو ما اووي **(يا ابا حنظلة!)** هغه زما آواز اوپيژندلو، فوراً ئي اووي ابو الفضل يعني ته ابو الفضل ئي؟ (لا يو بل ته مخامخ شوې نه وو) ما اووي او هغه اووي څه خبره ده زما مور پلار دي په تا باندې قربان وي؟ عباس رضي الله عنه وائي ما اووي **(هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم والناس)** ما اووي نزدي طرف ته اشاره کولو سره چه دلته رسول الله صلى الله عليه وسلم او د هغه مجمع موجود ده، هغه هم په اوريدو سره اوپريدو **(فما الحيلة؟)** وړاندې په روايت کښي دي عباس رضي الله عنه فرمائي چه ما هغه په ځان پسي شاته سورلي باندې کينولو او بديل مکي ته واپس شو. چه کله سحر شو نو ما ابوسفیان رضي الله عنه د رسول الله صلى الله عليه وسلم په خدمت کښي حاضر کړو او هغه اسلام قبول کړو. ما عرض اوکړو يا رسول الله صلى الله عليه وسلم ابوسفیان داسي انسان دي چه فخر خوښوي (شيخي کوي) لهذا تاسو هغه سره لږ کرام او فرمايي، يعني هغه ته داسي خيز ورکړئ چه د هغه دپاره د فخر سبب وي، نو رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل ښه، او بيا ئي او فرمائيل **(من دخل دار ابی سفیان فهو آمن ومن اغلق عليه دارة فهو آمن)** چه په اهل مکه کښي چه څوک د ابوسفیان کور ته ننوتل هغوی زمونږ د طرف نه په امن دي، او هم دغه شان په اهل مکه کښي چه کوم انسان د خپل کور دروازه بنده کړي، يعني مسلمانانو سره د جنگ کولو دپاره بهر نه راوځي، هغه هم په امن دي، په دي باندې خلق خپلو خپلو کورونو ته لاړل او بعض مسجد حرام ته.

د دي نه روستو روايت کښي دا هم دي چه **(ومن القى السلاح فهو آمن وعمد صناديد قريش فدخلوا الكعبة ففص بهم)** چه په دي اعلان باندې د قريشو سرداران کعبې ته داخل شو، کعبه د هغوی نه ډکه شوه، او رسول الله صلى الله عليه وسلم د بيت الله طواف اوکړو، مقام ابراهيم سره ئي د

۱، او په خپله د حضرت عباس رضي الله عنه (رض) باره کښي منقول دي چه هغه سره د خپل اهل و عيال د حضور اکرم صلى الله عليه وسلم (ص) مديني ته د روانيدو نه مخکښي دهجرت په نيت سره دمکي نه وتلي وو ځکه ددوی ملاقات د حضور پاک صلى الله عليه وسلم (ص) سره په لاره کښي په جحفة يا ذوالحليفة کښي اوشو کله چه حضور صلى الله عليه وسلم (ص) د فتح مکي دپاره تلو، نو بيا حضرت عباس رضي الله عنه (رض) د حضور صلى الله عليه وسلم (ص) سره مکي ته واپس راغې او خپل اهل و عيال ئي مديني ته اوليرل. (بذل القوة في حوادث سني النبوة ص ۲۲۱).

طواف دوه رکعته مونځ اوکړو، د دې نه پس رسول الله ﷺ د بیت الله د دروازي دواړو طرفونو لره نیولو سره اودریدو، په دې باندې هغه خلق د دننه نه راوتل او د رسول الله ﷺ په لاس ئې بیعت اوکړو په اسلام باندې.

[۳۰۲۳] (۱) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الْكَرِيمِ، حَدَّثَنِي إِبرَاهِيمُ بْنُ عَقِيلِ بْنِ مَعْقِلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ وَهْبِ بْنِ مُنْبِيَةَ، قَالَ: سَأَلْتُ جَابِرًا هَلْ غَنِمُوا يَوْمَ الْفَتْحِ شَيْئًا؟ قَالَ: لَا.

وهب بن منبه وائی د جابر نه مې تپوس اوکړو ایاصحابه کرامو دفتح مکې په ورځ څه غنیمت حاصل کړې وو؟ هغه او فرمائیل نه.

﴿سالت جابرا هل غنموا يوم الفتح شيئا قال لا﴾ یعنی په دې فتح مکه کښې رسول الله ﷺ ته څه مال غنیمت حاصل نه شو ځکه چه د دې دپاره باقاعده د جنگ کولو حاجت رانغلو، اگر چه د رسول الله ﷺ د طرف نه د جنگ تیاری او انتظامات داسې اوشو څنگه چه په جنگ کښې وی خو هغوی ښکاره مقابلي ته رانغلل او اگر چه د هغوی د طرف نه د امن مطالبه هم نه وه چه داسې اوئیلې شی چه مکه صلحا فتح شوه د مسلمانانو د بعضو دستو سره څه اندازه د مقابلو ضرورت راغلو او په احترام مکه کښې د هغوی سره ډیر رعایت اوکړې شو بیا به مال غنیمت څنگه حاصل شوي وي.

[۳۰۲۴] (۲) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا سَلَامُ بْنُ مِسْكِينٍ، حَدَّثَنَا ثَابِتُ الْبُنَاتِي، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَبَاحِ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا دَخَلَ مَكَّةَ سَرَّحَ الزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ، وَأَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ، وَخَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ عَلَى الْخَيْلِ، وَقَالَ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ اهْتَفِ بِالْأَنْصَارِ قَالَ: اسْلُكُوا هَذَا الطَّرِيقَ فَلَا يَشْرَفَنَّ لَكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْتَمُوهُ فَنَادَى مُنَادٍ لَأَقْرَبُ بَعْدَ الْيَوْمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ دَخَلَ دَارًا فَهُوَ آمِنٌ وَمَنْ أَلْقَى السِّلَاحَ فَهُوَ آمِنٌ". وَعَمَدٌ صَنَادِيدٌ قَرِيشٍ فَدَخَلُوا الْكَعْبَةَ فَغَضِبَ بِهِمْ وَطَافَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلَّى خَلْفَ الْبَقَاعِ، ثُمَّ أَخَذَ بِمِجْنَبَتِي الْبَابِ فَخَرَجُوا قَبَائِعُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْإِسْلَامِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ سَأَلَهُ رَجُلٌ قَالَ: مَكَّةُ عَنُودٌ هِيَ، قَالَ: إِيَّشَ يَضُرُّكَ مَا كَانَتْ؟ قَالَ: فَصَلِّمْ قَالَ: لَا.

دابوهريره نه روایت دې فرمائی کله چه نبی ﷺ مکې ته داخل شو نوزبیر بن عوام او ابو عبیده بن الجراح او خالد بن ولید ئې په اسونوباندې پریخودل او ابوهریره څوک چه دابوسفیان کور ته داخل شي هغه ته پناه حاصل ده، ماته ئې حکم اوکړو و چه ته په انصارو کښې آواز اوکړه چه ددې لاري نه لار شي او څوک چه د مخامخ طرف نه راځي هغه دي قتل کړي په دې وخت کښې یو آواز کونکی آواز اوکړو دنن نه پس به قریش نه وی نبی ﷺ او فرمائیل څوک چه په خپل کور کښې کښېني هغه ته امن دې او څوک چه اصلحه او غورځوي هغه ته امن دې اودقریشو سرداران بیت الله ته داخل شول- اوبیت الله ددوی نه ډک شو نبی ﷺ دبیت د الله طواف اوکړو او دمقام ابراهیم نه ئې شاته مونځ اوکړو اوبیا ئې دبیت الله د دروازي دوه چوکاتونه اونیول په دې وخت کښې چه په بیت الله کښې کوم خلق دننه وو بهر راځ، بل اود نبی ﷺ سره ئې په اسلام باندې بیعت اوکړو.

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۱۳۵) (صحیح الإسناد)

(۲) صحیح مسلم للجهد ۳۱ (۱۷۸۰)، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۶۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۲۹۲، ۵۳۸) (صحیح)

« عن ابی هريرة رضي الله عنه ان النبي صلى الله عليه وسلم لما دخل مكة سرح الزبير ابن العوام رضي الله عنه واباعبيدة بن الجراح رضي الله عنه وخاله بن الوليد رضي الله عنه على الخيل »

د رسول الله صلى الله عليه وسلم د طرف نه د لښکر په مکه مکرمه کښې د دخول ترتیب :

د ابوداؤد په دې روایت کښې اختصار دي، د مسلم په روایت کښې تفصیل دي، مضمون ددې حدیث دا دي چې کله رسول الله صلى الله عليه وسلم مکې مکرمې ته د داخلیدو اراده او فرمائیله (۱) په کفارو باندې د حملې دپاره خو چونکه مکې مکرمې ته د داخلیدو لارې ډیرې وې او د ټولو لارو ناکه بندې کول وو په دې وجه رسول الله صلى الله عليه وسلم د لښکر ډیرې دستې جوړې کړې په دې دستو کښې بعض سواره وو او بعض پیاده، او د هرې دستې دپاره رسول الله صلى الله عليه وسلم یو نگران تجویز کړو او هر امیر ته یې د هغه د داخلیدو دپاره د لارې تعیین او فرمائیلو، یعنی فلانې امیر دي د خپلې دستې سره په فلانې لاره باندې داخل شی مثلا د مکې د اعلی حصې نه دي فلانې او د ښکته حصې نه دي فلانې داخل شی، د ابوداؤد په دې روایت کښې خودی چې رسول الله صلى الله عليه وسلم زبیر، ابو عبیده او خالد بن الولید رضي الله عنه درې واړه په کسانو امیران کړل چې په آسونو باندې سواره وو او اوښ لیرل، خو د مسلم په روایت کښې دی چې (وبعث اباعبيدة على الحسر) چې ابو عبیده رضي الله عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم په هغه دستې باندې امیر کړو چې پیاده وو او په هغوی باندې زغري وغيره نه وې (وقال يا ابهريرة رضي الله عنه اهتف بالانصار قال اسلكوا هذا الطريق فلا يشرقن لكم احدالا انتموه) یعنی رسول الله صلى الله عليه وسلم ابو هریره رضي الله عنه ته او فرمائیل چې انصارو ته آواز او کړه او راوښ غواړه پس هغوی ټول حاضر شو نو رسول الله صلى الله عليه وسلم هغوی ته یوې دستې طرف ته اشاره او کړه او وې فرمائیل چې تاسو به په دې لاره باندې ځئ او دویمه خبره یې ورته دا او فرمائیله چې په دې مشرکینو کښې چې کوم ستاسو طرف ته ست او چت کړی تاسو هغوی هم هلته اوده کړئ، یعنی څوک چې د قتال دپاره مخکښې راشی هم هغه قتل کړئ او څوک چې ستاسو په لیدو باندې سره ښکته کړی یا روستو شی هغه ته هیڅ هم

(۱) په سیرت المصطفی صلى الله عليه وسلم کښې دی چې رسول الله صلى الله عليه وسلم په کداء مقام باندې تیریدو سره په پورته طرف باندې مکې ته داخل شو او خالد بن الولید ته یې د اسفل مکه مقام کدی نه د داخلیدو او زبیر رضي الله عنه ته یې د پورته طرف یعنی مقام کداء نه د داخلیدو حکم ورکړو او دا تاکید یې ورته او فرمائیلو چې تاسو پخپله په قتال شروع مه کوئ کوم سرې چې تاسو سره تعرض کوئ د هغه سره جنگ کوئ، په صحیح مسلم کښې د ابو هریره رضي الله عنه نه نقل دی چې رسول الله صلى الله عليه وسلم انصار راوغوښتل او دا یې ورته او فرمائیل چې قریشو څه بدمعاشان ستاسو د مقابلې دپاره جمع کړی دی که هغوی د مقابلې دپاره راغلل نو د فصل په شان یې پرې کړئ، صفوان بن امیه او عکرمه بن ابی جهل او سهیل بن عمرو په مقام خندمه کښې د مقابلې په قصد څه بدمعاشان جمع کړل، د خالد بن الولید رضي الله عنه سره یې مقابله اوشوه، په مسلمانانو کښې دوه کسان شهیدان شو، خنیس بن خالد او کرز بن جابر فهري رضي الله عنه، او په مشرکانو کښې دولس یا ديارلس کسان اووژلي شو، باقی ټول اوختیدل، دا د ابن اسحاق روایت دي، او په مغازی د موسی بن عقبه کښې دی چې خالد بن الولید رضي الله عنه چې کله د اسفل مکه نه داخل شو نو بنو بکر او بنو حارث او څه خلق د قبیلې هذیل او څه بدمعاشان د قبیلې قریش نه راجمع وو، د خالد رضي الله عنه د رارسیدو سره هغه خلقو حمله اوکړه، خالد بن ولید رضي الله عنه چې کله د هغوی مقابله اوکړه نو هغوی یې طاقت اونرلي شو، شکست خوړلو سره اوختیدل، د بنو بکر تقریبا شل کسان او د هذیل درې یا څلور کسان قتل شو او باقی اوختیدل څوک په کور کښې پټ شو، او څوک غرته اوختلو آه

مه وایښ (فنادی منادی : لا قریش بعد الیوم) او یو اعلان کونکی اعلان او کړو چه د نن پس د قریشو خاتمه ده، یعنی که هغوی مقابلې ته راغلل، گینې رسول الله ﷺ خو هغوی ته د امان پروانه ورکړې وه د عدم قتال په صورت کښ.

حدیث ابی هریره رضی الله عنه اخراجه مسلم بنحوه مطلقا، قاله المنذری

بَاب مَا جَاءَ فِي خَبَرِ الطَّائِفِ

دفتح طائف بیان

غزوه طائف :

د غزوه طائف مختصر قصه داسې لیکلې شوې ده : رسول الله ﷺ د حنین د مال غنیمت او د قیدیانو متعلق دا حکم ورکړو چه په جعرانه کښې دې جمع کړې شی او خپله ئې د طائف قصد او کړو، او طائف ته د تلو نه مخکښې ئې طفیل بن عمرو الدوسی رضی الله عنه د خو موحدینو سره د یو بت (چه د هغه نوم ذوالکفین وو) د سیزلو دپاره اولیرل، د رسول الله ﷺ طائف ته د رسیدونه څلور ورځې پس طفیل بن عمرو هم راوړسیدو او یو دبابه (تینک) او منجنیق ئې راوړل. مالک بن عوف نصری د هوازن سپه سالار سره د خپل فوج نه د رسول الله ﷺ د رسیدونه مخکښې د طائف په قلعه کښې داخلیدو سره دروازه بنده کړې وه او د څو کالو غله او د خوراک څکاګ سامان ئې په قلعه کښې کیخودلې وو، رسول الله ﷺ طائف ته د رسیدو سره د هغوی محاصره او کړه او د منجنیق په ذریعه ئې په هغوی باندې کانړی او وړول، هغه خلقو د قلعه په دیوال باندې غشی ویشتونکی کینول هغوی داسې سخت غشی او وړول چه ډیر مسلمانان زخمی شو، او دولس صحابه کرام شهیدان شول، خالد بن الولید رضی الله عنه لاس په لاس مقابلې دپاره راوبلل خو جواب ورته دا ملاؤ شو چه مونږ ته د قلعه نه د کوزیدو ضرورت نشته، د کلونو غله مونږ سره موجود ده چه کله دا ختمه شی نو بیا به مونږ تورې اخستلو سره درکوزیږو. مسلمانانو په دبابونو کښې کیناستلو سره د قلعه د دیوال د ماتولو کوشش او کړو، هغوی د بره نه د اوسپنې گرم سیخونه راویشتل چه په هغې باندې مسلمانان شاته شو، په دې لیدو باندې رسول الله ﷺ د باغونو د پرې کولو حکم ورکړو، د قلعه والا خلقو رسول الله ﷺ ته د الله او د خپلولئ واسطه ورکړه نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه زه دا د الله پاک او د خپلولئ دپاره پریږدم، د دې نه روستو ئې د دیوال د قلعه سره دا اعلان او کړو چه کوم غلام د قلعه نه کوزیدو سره مونږ ته راشی هغه آزاد دې. پس دولس دیارلس غلامان بهر ته راغلل، هم هغه وخت رسول الله ﷺ یو خوب اولیدو چه د پیو یو پیاله رسول الله ﷺ ته پیش کړې شوه یو چرګ راغلو او په هغې کښې ئې مخوکه او وهله چه په هغې باندې هغه پیئ پریوتل رسول الله ﷺ دا خوب صدیق اکبر رضی الله عنه ته بیان کړو، هغوی او فرمائیل غالباً دا قلعه به اوس نه فتح کیږی هغوی نوفل بن معاویه دیلمی راوبلو او دهغوی نه ئې تپوس او کړو چه ستاسو څه راثې ده؟ نوفل او وې یا رسول الله ﷺ! لومبره په خپله سوره کښې ده که ایسار شو نو او به ئې نیسو او که پرې ئې ږدو نو ستاسو هیڅ نقصان نشته. د ابن سعد په روایت کښې دی چه عمر رضی الله عنه راغلو او عرض ئې او کړو یا

نبي الله ﷺ د دوی په حق کښې بد دعا او کړې، رسول الله ﷺ او فرمائیل الله پاک ماته اجازت نه دې راکړې، بیا عمر رضی الله عنهما او فرمائیل چه مونږ ته دوی سره د جنگ کولو څه ضرورت دې، رسول الله ﷺ د روانیدو حکم ورکړو او د تلو په وخت ئې دا دعا او کړه ﴿اللهم اهد ثقیفا وات بهم﴾ پس روستو هغه قلعه پخپله فتح شوه ټول خلق مسلمانان شول او د مالک بن عوف نصری د هغوی سردار د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضریدو سره په اسلام باندي مشرف شو.

تنبیه: مونږ سره په ابوداؤد کښې په باب الاقطاع کښې هم د دې غزوه طائف متعلق په یو روای کښې هم دغه شان دی چه یو صحابی صخر بن عیله الاحمسی رضی الله عنهما فرمائی چه کله ما واوریدل چه رسول الله ﷺ د ثقیف سره غزوه کوی نو زه هم د یو جماعت سره د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم هلته مې اوکتل چه رسول الله ﷺ واپس تشریف اوړې دې او رسول الله ﷺ هغه فتح نه کړو نو ما عهد او کړو د الله پاک سره چه دا قلعه به ضرور فتح کوم، پس بیا هم دغه شان اوشوه، الحدیث. خو کوم کتابونه چه مونږ د غزوه طائف متعلق اوکتل په هغې کښې د صخر بن عیله رضی الله عنهما قصه چرته هم ملاؤ نه شوه، فلیفتش... د دې نه پس په البداية والنهاية ۳۵۱/۴ کښې دا ملاؤ شو چه هغوی د غزوه طائف د پوره قصې لیکلو نه پس په آخر کښې د ابوداؤد دا روایت (د صخر بن عیله رضی الله عنهما والا) نقل کولو نه پس فرمائیلی دی: تفرد به ابوداؤد، وفي اسناده اختلاف آه.

[۳۰۲۵] (حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، حَدَّثَنَا أَبُو هَيْمٍ يُعْنَى ابْنَ عَقِيلِ بْنِ مُنْبِهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ وَهْبٍ، قَالَ: سَأَلْتُ جَابِرًا عَنْ شَأْنِ ثَقِيفٍ إِذَا بَايَعَتْ، قَالَ: اشْتَرَطْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لَا صَدَقَةَ عَلَيْهَا وَلَا جِهَادًا، وَأَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ ذَلِكَ يَقُولُ: "سَيَتَصَدَّقُونَ وَيَجَاهِدُونَ إِذَا أَسْلَمُوا".

دوهب نه روایت دې فرمائی چه د جابر رضی الله عنهما نه مې تپوس او کړو کله چه ثقیف قبیلې بیعت کولو نو هغوی څه شرطونه پیش کړي وو؟ هغه او وئیل چه هغوی په نبی ﷺ باندي دا شرط لگولو چه په دوی باندي به زکات نه وی اونه جهاد ددې نه پس بیا ما دنبی ﷺ نه واوریدل چه فرمائیل ئې کله چه دا خلق مسلمانان شي نو امید دې چه زکات به هم ورکوي او جهاد به هم کوي ﴿سالت جابرا عن شان ثقیف اذا بايعت﴾ مضمون د حدیث دا دې چه قبيله ثقف چه کله د رسول الله ﷺ په خدمت کښې مدينې طیبې ته حاضر شو او د رسول الله ﷺ په لاس مبارک هغوی بیعت علی الاسلام او کړو نو هغوی هغه وخت دا شرط اولگولو چه په مونږ باندي به زکوة او جهاد هیڅ نه وی، رسول الله ﷺ د هغوی دا شرط هغه وخت منظور کړو، په روایت کښې دی چه رسول الله ﷺ روستو او فرمائیل چه دا خلق به د اسلام د راوړلو نه پس صدقه او جهاد هر څه کوی، په بل حدیث کښې دی ﴿فاشترطوا علیه ان لا يحشروا ولا يعشروا ولا يجبوا﴾ هغوی دا شرط اولگولو چه هغوی دې نه په جهاد کښې بوتللي شي، نه دې رانه نه

عشر او زکوة واخستلې شی، او نه به مونځ کوی، لا یجبوا مثلاً لا یصلوا لفظاً و معنی والتجیبه ان یكون کهیئة الركوع، یعنی داسې ښکته کیدل څنگه چه په رکوع کښې ښکته کیږی.

[۳۰۲۶] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَلِيٍّ بْنِ سُوَيْدٍ يَعْنِي ابْنَ مَجْجُوفٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَسَنِ، عَنْ عُرَيْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ، أَنَّ وَفِدَ ثَقِيفٍ لَمَّا قَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْزَلَهُمُ الْمَسْجِدَ لِيَكُونَ أَرْقَى لِقُلُوبِهِمْ فَأَشْرَطُوا عَلَيْهِ أَنْ لَا يُحْشَرُوا وَلَا يُعْشَرُوا وَلَا يُجْبَوُا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَكُمْ أَنْ لَا تُحْشَرُوا وَلَا تُعْشَرُوا وَلَا تُخَيَّرُوا فِي دِينِ لَيْسَ فِيهِ رُكُوعٌ".

دعثمان بن ابی العاص نه روایت دې فرمائی چه کله نبی ﷺ ته دثقیف وفد راغی نوجومات ته ئې بوتلل ددې دپاره چه ددوی زړونه نرم شي اودوی په نبی ﷺ باندې دشرط لگول غوښتل چه په زبردستي سره دي مونږ جهادتلوته تیارنه یو، اونه مونږ بالفعل زکوة ورکولو ته نیاریو، اونه مونږ مونځ کولوته تیار یو، نبی ﷺ اوفرمائیل جهاد ته تلل خوڅه خبره نده ځکه چه نور خلق موجود دي اود زکوة ورکولو دپاره کال تیریدل ضروري دي اوس خولا کال نه دې تیرشوي لیکن هغه دین څه ښه دین نه وی په کوم کښې چه رکوع (مونځ نه وي

په اسلام کښې د ټولو نه زیات اهمیت د مانځه دي

رسول الله ﷺ د هغوی مخکښې دواړه شرطونه منظور کړل او د دریم شرط په باره کښې ئې اوفرمائیل (لا خیر فی دین لیس فی رکوع) چه په داسې دین کښې څه خیر کیدې شی چه په هغې کښې رکوع او سجدي (مونځ) نه وی.

د دې حدیث نه په اسلام کښې د مانځه چه کوم اهمیت معلومیږی هغه ښکاره دي، دا حدیث مونږ د کتاب الصلوة د شروع په بحثونو کښې ذکر کړې دي.

دا باب د خبر طائف سره متعلق وو، اهل طائف چونکه پخپله په اسلام کښې داخل شوي وو په دې وجه دا زمکه عشری شوه (کما مر قبل ذلك فی بیان الانواع الاراضی المفتوحة)

بَاب مَا جَاءَ فِي حُكْمِ أَرْضِ الْيَمَنِ

د یمنیا نو او د یمن د زمکې بیان

اهل یمن هم چونکه په خپله خوښه اسلام کښې داخل شو په دې وجه ارض یمن هم عشری ده.

[۳۰۲۷] (۱) حَدَّثَنَا هَنَّادُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ أَبِي أَسَامَةَ، عَنْ جُبَايِلٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَامِرِ بْنِ شَمْرِ، قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ لِي هَمْدَانُ: هَلْ آتَيْتَ هَذَا الرَّجُلَ وَمُرْتَادًا لَنَا فَإِنْ رَضِيتَ لَنَا شَيْئًا قَبِلْنَاهُ وَإِنْ كَرِهْتَ شَيْئًا كَرِهْنَاهُ؟ قُلْتُ: بَعْدَ، فَجِئْتُ حَاتِي قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَضِيتُ أَمْرًا وَأَسْلَمَ قَوْمِي وَكَتَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَا الْكِتَابَ إِلَى عُثْمَانَ بْنِ مَرْثَدَانَ، قَالَ: وَبَعَثَ مَالِكُ بْنُ مِرَارَةَ الرَّهَاطِيَّ إِلَى الْيَمَنِ جَمِيعًا، فَأَسْلَمَ عَكَ ذُو خِيَوَانَ، قَالَ: فَقَبِلَ لِعَبِكَ: أَنْ تَطْلُقَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخُذْ مِنْهُ الْأَمَانَ عَلَى قَرِينِكَ وَمَالِكَ فَقَدِمَ وَكَتَبَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مِنْ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ لِعَبِكَ ذِي خِيَوَانَ إِنْ كَانَ صَادِقًا فِي أَرْضِهِ وَمَالِهِ وَرَقِيقِهِ فَلَهُ الْأَمَانُ وَذِمَّةُ اللَّهِ وَذِمَّةُ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ، وَكَتَبَ خَالِدُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۷۶۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱۸/۴) (ضعيف)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۰۴۳) (ضعيف الإسناد)

د عامر بن شهرنه روایت دې فرمائی هرکله چه نبی ﷺ لارونو ماته د همدان قبیلې خلقو ووئیل ایانه به دومره وکړي شي چه دغه سړی (محمد) ته ورشي اوزمونږ متعلق ورسره خبرې اتري وکړي؟ که چرې تا زمونږ دپاره څه خبره خوښه کړه نومونږ به ئې قبول کړواوکه چرې تا کومه خبره خوښه نکړه نو مونږ به ئې هم نه خوښوو ماووئیل ولي نه ددې نه زه نبی ﷺ ته روان شوم تردې مسجدنبوی ته ورسیدم اودنبی ﷺ کار (دین اسلام) مي خوښ شو اوزماد قوم خلقو اسلام قبول کړو، اونی ﷺ عمیر ذی مران ته یو خط ولیکلو، راوي وائی چه نبی ﷺ ددین اسلام دتبلیغ دپاره مالک بن مراره رهاوي ټول اهل یمن والا ته ولیرلو او د عک ذوخیوان په نوم یوکس وو چه اسلام ئې قبول کړو، خلقو ورته ووئیل چه ته نبی ﷺ ته ورشه اودهغه نه دخپل مال اوکلي دپاره امان واخله نودغه کس دنبی ﷺ په خدمت کښې حاضرشو، نبی ﷺ دده دپاره خط اولیکلو: بسم الله الرحمن الرحيم د محمد رسول الله دطرف نه دپاره دعک ذوخیوان، که چرې دې رښتوني وي نوده ته امان دې دده دزمکو اوغلامانو اومالونوپه باره کښې اودغه هرڅه دالله اودهغه درسول په ذمه کښې دي اوداتحریر خالد بن سعیدبن العاص لیکلي وو.

﴿ عن عامر بن شهر قال خرج رسول الله ﷺ فقالت لي همدان : هل انت ات هذا الرجل ومرتاد لنا فان رضيت لنا شينا قبلناه ﴾

شرح الحديث :

عامر بن شهر یمنی همدانی وائی چه د رسول الله ﷺ د نبوت او بعثت ظهور اوشو نو ماته زما قوم همدان اووې چه آیا ته هغه سړی ته تلې شي او زمونږ دپاره ترې نه څه څیز طلب کولې شي یعنی د خیر خبره او حق، پس که تاسو یو څیز خوښ کړو (دین اسلام طرف ته اشاره ده) نو مونږ به هم هغه قبول کړو. او که تا ناخوښه کړو نو مونږ به ئې هم ناخوښه کړو، ما جواب ورکړو چه او زه دا کار کولې شم، پس زه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم او د رسول الله ﷺ خبره زما ډیره زیاته خوښه شوه چه په هغې باندي زما قوم (همدان) اسلام قبول کړو. او رسول الله ﷺ یو خط اولیکلو او د عمیر ذی مران طرف ته ئې اولیرلو، دا هم همدانی دې چا چه د رسول الله ﷺ په زمانه کښې اسلام راوړې وو چه په ظاهره د همدان قوم رئیس وو. او مالک بن مراره ئې هم اولیرلو د ټولو اهل یمن طرف ته یعنی د دعوت اسلام دپاره، پس په دې باندي عک ذوخیوان اسلام راوړو دا سړې هم همدانی او یمنی وو، ذوخیوان د هغه لقب دې، دا هم د قوم لوټې سړې وو، پس هغه ته اوئیلی شو چه ته هم لار شه او د رسول الله ﷺ نه کتاب الامان حاصل کړه د خپل ټول کلی او مال په باره کښې، پس هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او رسول الله ﷺ هغه ته دا خط اولیکلو ﴿ بسم الله الرحمن الرحيم من محمد رسول الله ﷺ لعک ذی خیوان ان کان صادقاً فی ارضه وماله ورقیقه فله الامان وذمة الله وذمة محمد رسول الله ﷺ، وکتب خالد بن سعید بن العاص ﴾ یعنی د دې لیک په آخره کښې کاتب خپل نوم اولیکلو، دا خالد بن سعید د رسول الله ﷺ په کاتبینو کښې دې.

د دې روایت نه معلومه شوه چه چونکه عک ذو حیوان، هم دغه شان عمیر ذو مران په خپله اسلام کښې داخل شو، د مسلمانانو هغوی سره د غزوې او فتح ضرورت رانغلو لهذا دا خلق د خپلو زمکو او د خپلو املاکو خپله مالکان پاتې شو او هغوی ته په دې خبره باندې د رسول الله ﷺ د طرف نه عهدنامه او کتاب الامان (سرتیفکیټ) حاصل شو، او دا هم ثابته شوه چه دا زمکه عشری ده،

[۳۰۲۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ الْقُرَشِيُّ، وَهَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عَبْدِ اللَّهِ بْنَ الزُّبَيْرِ حَدَّثَهُمْ، قَالَ: حَدَّثَنَا فَرْجُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي عَمِّي ثَابِتُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ سَعِيدٍ يَعْنِي ابْنَ أَبِيضٍ، عَنْ جَدِّهِ أَبِيضِ بْنِ حَمَّالٍ، أَنَّهُ كَلَّمَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الصَّدَقَةِ حِينَ وَقَدَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: يَا أَخَاسِيَا لَا بُدَّ مِنْ صَدَقَةٍ، فَقَالَ: إِنَّمَا زَرَعْنَا الْقَطْنَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَقَدْ تَبَدَّدَتْ سَبَا وَلَمْ يَبْقَ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ بِمَارِبَ، فَصَالَحَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيَّ سَبْعِينَ حَلَّةً بَرٍّ مِنْ قِيمَةٍ وَقَاءِ بَرِّ الْمَعَاوِرِ كُلِّ سَنَةٍ عَمَّنْ يَبْقَى مِنْ سَبَا بِمَارِبَ فَلَمْ يَزَلْ الْوَابِئُ دُونَهَا حَتَّى قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَإِنَّ الْعَمَالَ انْتَقَضُوا عَلَيْهِمْ بَعْدَ قُبُضِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا صَالَحَ أَبِيضُ بْنُ حَمَّالٍ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَرَدَّ ذَلِكَ أَبُو بَكْرٍ عَلَيَّ مَا وَضَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى مَاتَ أَبُو بَكْرٍ، فَلَمَّا مَاتَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ انْتَقَضَ ذَلِكَ وَصَارَتْ عَلَيَّ الصَّدَقَةُ.

د ابيض بن حمال ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه زه په وفد کښې راغلي وم او د نبی ﷺ سره مې د صدقې متعلق خبرې وکړي، نبی ﷺ او فرمائیل ای سبا والارو (سبا په يمن کښې د یونبارنوم دې) زکوة ادا کول لازمی دي ابيض بن حمال ووثیل ای دالله رسوله زمونږ فصل خو صرف فنبه (مالوچ) وي اود سبا خلق یوخائې بل خائې ته تلي دي البته دقوم سبا یوخه افراد په مارب مقام کښې پاتې شوي دي نبی ﷺ دهغوی سره په اویاجوړو معافري کپړوباندې مصالحت وکړواودغه خلقوبه همیشه ددې جوړو ادانگی کوله تردې چه نبی ﷺ وفات شو او د نبی ﷺ دوفات نه پس عاملینو داویاجوړو مصالحت نامه ماته کړه کومه چه ابيض بن حمال د نبی ﷺ سره کړې وه بیاچه کله ابوبکر داخبره واوریدله نوهغه دوباره د نبی ﷺ فرمان بحال کړو کله چه ابوبکر ^{رضي الله عنه} وفات شونو معاهده فسخ شوه اودنورو خلقو په شان به ددوی نه هم صدقه وصول کیدله.

﴿ عن ابيض بن حمال انه كلم رسول الله ﷺ في الصدقة حين وفد عليه فقال يا اخا سبا لا بد من صدقة فقال انما زرعنا القطن يا رسول الله ﷺ وقد تبدت سبا ولم يبق منهم الا قليل بمارب ﴾

شرح الحديث :

مارب د بلاد يمن نه دې او سبا د یو قوم نوم دې کوم چه هلته آباد وو، دا ابيض بن حمال ماری سبائی وو هغه د رسول الله ﷺ سره چه کله د هغوی په خدمت کښې حاضر شو (په ظاهره د اسلام راوړلو دپاره) خو هغوی رسول الله ﷺ سره د صدقې په باره کښې خبرې اوکړې یعنی دا چه هغه معاف کړې شی یا دې په هغې کښې تخفیف اوکړې شی نور رسول الله ﷺ او فرمائیل ای سبا والا صدقه خو په اسلام کښې ضروری ده هغوی خپل اقتصادی حالت او کمزوری بیان کړې، هغه دا چه زمونږ پیدا وار خو مالوچ دې یا رسول الله ﷺ

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲) (ضعيف الإسناد)

(یعنی معمولی شان) او زمونږ قوم سبا منتشر شو او په هغوی کښې لږ شان باقی پاتې شو په مارب کښ. د دې نه پس په حدیث کښې رسول الله ﷺ چه د هغوی سره په کوم خیز باندي صلح او کره د هغې ذکر دې (فصالح النبي ﷺ على سبعين حلة من قيمة وفاء بز المعافر كل سنة عن بقى من سبا بمارب) یعنی رسول الله ﷺ چه په دوی باندي کومه صدقه واجب کیدله د هغې په باره کښې په اويا جوړو باندي مصالحت او فرمائیلو، یعنی هر کال به د کپړو اويا جوړې تاسو ورکوئ، د قبیلې سبا د هغه ټولو خلقو د طرف نه چه په موضع مارب کښې باقی پاتې شوې دی، حله چونکه د قیمت په اعتبار سره کمیږی او زیاتیرې نو په دې وجه رسول الله ﷺ د هغه جوړې قیمت متعین کړو چه مصالحت په مجهول خیز باندي لازم نه شی (بزمعافر) یعنی د کپړې یو مشهور قسم دې چه معلوم القیمت دې نو مطلب دا شو د دې عبارت چه داسې اويا جوړې چه په قیمت کښې د بزمعافر برابر وی هغه به ادا کوئ وړاندي په روایت کښې دی چه دې خلقو به دا مقدار ادا کولو د رسول الله ﷺ په ژوند کښ، اود رسول الله ﷺ دوفات نه پس عمالودامعاهده ختمه کړه یعنی ددې لحاظ ئې اونکړو، صدیق اکبر رضی الله عنده ته چه کله معلومه شوه نو هغوی دادر رسول الله ﷺ د قرارداد مطابق برقرار اوساتله، د صدیق اکبر رضی الله عنده د وفات نه پس بیا هغه معاهده ګډه وډه شوه (وصارت الی الصدقة) یعنی د اصل قاعدې مطابق چه به خومره صدقه وه هم په هغې اودریده.

ما استفيد من الحديث :

په دې حدیث کښې دی چه رسول الله ﷺ هغه خلقو سره د صدقې په باره کښې په یو مقدار معین باندي صلح او کره، د گنگوهی رضی الله عنده په تقریر کښې دی چه که د صدقې نه مراد دلته زکوة دې او گویا د زکوة په مقابله کښې رسول الله ﷺ په یو مقدار معین باندي مصالحت او فرمائیلو. نو دا به د رسول الله ﷺ خصوصیت وی، د رسول الله ﷺ نه علاوه د بل امام دپاره د زکوة مفروضه په باره کښې په یو مقدار معینه باندي صلح کول جائز نه دی، او که د صدقې نه مراد دلته د زمکې د پیداوار عشر دې، نو بیا په دې صورت کښې هیڅ اشکال نشته، په عشر کښې گنجائش شته د بل چا دپاره هم. (بذل)

بَابُ فِي إِخْرَاجِ الْيَهُودِ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ

د جزیره العرب نه د یهودیا نود شرلو بیان

د جزیره العرب تحدید او د دې مصداق :

جزیره د هغه آبادی نوم دې چه دهغې څلور وارو طرفونو ته اوبه وی، د عربو د زمکې درې طرفونو ته اوبو دی مشرق مغرب او جنوب او په شمال کښې آبادی ده هم په دې وجه د عرب نه په جزیره نما سره تعبیر کولې شی، د جزیره عرب تهدید او د هغې مصداق وړاندي په متن کښې داسې راروان دې.

(جزیره العرب ما بين الوادى الى اقصى اليمن الى تخوم العراق الى البحر) یعنی جنوب کښې د

یمن د انتها نه واخله تر د عراق د حدودو پورې (۱) او د وادی القری نه سمندر پورې د مینح علاقې ته جزیره العرب وائی یعنی په شمال کنبې حدود د عراق په جنوب کنبې اقصائی یمن، په مغرب کنبې جده و ما حولها د ینبع نه واخله تر وادی القری پورې، او په مشرق کنبې خلیج فارس پورې چه خومره علاقه ده دې ته جزیره العرب وائی او په بذل کنبې حضرت د علامه شامی نه دا نقل کړی دی چه جزیره العرب په پنځو مناطقو باندي تقسیم ده، تهامه، نجد، حجاز، عروض، یمن، تهامه خود حجاز جنوبی حصه ده، او نجد د هغه حصې نوم دې کوم چه د عراق او د حجاز ترمینځه ده، او حجاز د هغه غرمخامخ حصې ته وائی کوم چه د یمن نه واخله شام پورې مسلسل تلی دي او عروض دیمامه علاقه ده کومه چه د بحرین پورې ده او په صحیح بخاری کتاب الجهاد باب جوائز الوفد کنبې دی چه مغیره بن عبدالرحمن نه سوال اوکړې شو د جزیره العرب په باره کنبې ﴿ فقال مكة والمدینة والیمامة والیمن ﴾

[۳۰۲۹] () حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ الْأَحْوَلِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْصَى بِثَلَاثَةٍ، فَقَالَ: أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَأَجِزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِزُهُمْ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَسَكَتَ عَنِ الثَّالِثَةِ أَوْ قَالَ: فَانْسَيْتُهَا، وَقَالَ: الْحَمِيدِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ سُلَيْمَانُ: لَا أَذْرِي أَذْكَرَ سَعِيدِ الثَّالِثَةَ فَانْسَيْتُهَا، أَوْ سَكَتَ عَنْهَا.

دا بن عباس رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله په درې خبرو باندي وصیت فرمائیلی وو یودا چه مشرکان به د جزیره العرب نه اوباسی اوبل دا چه دسفير او قاصد سره ښه سلوک کوئی لکه څنگه چه ئې زه کوم، سعید وائی چه ابن عباس ددریم وصیت دبیانولونه سکوت او فرمائیلو او که داسې ئې ووئیل چه دریم وصیت رانه هیرشوي دي.

شرح الحديث :

قوله: ﴿ عن ابن عباس رضي الله عنهما ان النبي صلى الله عليه وسلم اوصى بثلاثة فقال اخرجوا المشركين من جزيرة العرب واجيزوا الوفد بنحوها ما كنت اجيزهم ﴾: یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله د وفات په وخت د درې څیزونو وصیت او فرمائیلو یو د جزیره العرب نه (۲) د مشرکینو د اخراج په مشرکانو کنبې یهود او نصاری

(۱) په دې طریقه چه یمن داخل او عراق خارج وی،
(۲) صحیح البخاری/الجهاد ۱۷۵ (۳۰۵۳)، الجزیه ۶ (۳۱۶۸)، المغازی ۸۳ (۴۴۳۱)، صحیح مسلم/الوصیه ۵ (۱۶۳۷)، تحفة الأشراف: ۵۵۱۷، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۲۲/۱) (صحیح)

(۳) اوس دا چه د جزیره العرب نه ټول جزیره العرب مراد دي یا که په دې کنبې څه تخصیص شته، دي باره کنبې په بذل کنبې دي ﴿ قيل المراد بها مكة والمدینة ونقل الطیبي ان الشافعي خص هذا الحكم بالحجاز وهو عنده مكة والمدینة والیمامة وحوالیها دون الیمن وغيره اهـ وفي. العون. وقال مالك بن انس اراد بجزیره العرب المدینة نفسها اهـ وفي. العرف الشذي: الكافر لا یقیم فی جزیره العرب، نعم یجوز له المرور واختلف فی ان الحكم لجمیع جزیره العرب او لبعضها، وأشار الي الاول الطحاوي فی مشکل الآثار، واخصره محمد فی موطاء، اهـ او په موطاء د امام محمد رضي الله عنه کنبې دي قال محمد ان مكة والمدینة وما حولهما من جزیره العرب (۳۷۳) خو د دې نه دا نه معلومیږي چه په دې حدیث کنبې جزیره العرب په خپل عموم باندي دي یا که د دې نه بعض مراد دي، ﴿ فلیفتش ینب الحنفیة فی ذلك ﴾

هم داخل دی، دا دوه ډلې د مشرکین اهل کتاب دی ﴿ لانهم يقولون عزيز ابن الله والمسيح ابن الله ﴾ د رومي خبرې قائل يهود دی او د دويمې خبرې قائل نصاری دی، او مجوس خو مشترک دی حکم مذکور فی الحدیث یعنی د دې اخراج په باره کښې په بدائع کښې ليکلې شوې دی چه د عربو په زمکه باندي دې هيڅ کښسه يا بيعه باقی پرې نخودلې شی او نه دې هلته د شرابو بيع او د خنزير اجازت ورکړې شی، که ښهر وی او که بانډه وی او یا ماء من مياه العرب وی، ويمنع المشركون ان يتخذوا ارض العرب سكنا ووطنا، کذا ذکره محمد تفضيلا لارض العرب على غيرها وتطهيرا لها عن الدين الباطل، للحدیث المذكور (البذل) او دويم وصیت دا دې چه راتلونکو وفدونو ته جائزه ورکړې شی یعنی ډالۍ، یعنی د هغوی په راتلو باندي دې د هغوی اهتمام او کړې شی، هر قسم خیال دې اوساتلې شی او هغوی ته دې هدیه هم پيش کړې شی، د دې امر تعلق د هغوی نه روستو راتلونکو امامانو سره دې چه وفود خود امام المسلمین میلمانه وی او هسې خود هر میلمه په میلستیا او اعزاز او اکرام باندي هر مسلمان مامور دې. ﴿ قال ابن عباس رضي الله عنه وسكت عن الثالثة او قال فانسيها ﴾ د دريم وصیت په باره کښې ابن عباس رضي الله عنه تردد ښکاره کوی چه یا خو رسول الله صلى الله عليه وسلم خاموش شو او یا مانه هیر دی () شرح ليکلې دی چه د دې امر ثالث په مصداق کښې چه په نورو روایتونو کښې

۱، د دې جملې ظاهري معنی هم دا ده چه ابن عباس رضي الله عنه فرماني: او رسول الله صلى الله عليه وسلم د امر ثالث نه سکوت او فرمائيلو، وړاندي د راوی شک دې چه یا ابن عباس رضي الله عنه دا او فرمائيل چه امر ثالث رسول الله صلى الله عليه وسلم خو ذکر کړې وو خو مانه هیر شو، پس صاحب د عون المعبود هم دا مطلب ليکلې دې، او حضرت په بذل کښې د دې عبارت تاويل کړې دې او د دې نې دا شرح کړې ده چه سعيد راوی وائی چه ابن عباس رضي الله عنه صرف دوه امور ذکر کړل او په دريم باندي خاموش شو، او بيا وړاندي سعيد وائی: یا ابن عباس رضي الله عنه خو ذکر کړې وو خو مانه هیر شو، په دې صورت کښې به د قال فاعل ابن عباس رضي الله عنه نه وی بلکه د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت کونکې شاگرد، چه دلته سعيد بن جبیر رضي الله عنه دې او تقدیر د عبارت داسې دې: ابن عباس ذکر امرين وسكت عن الثالثة الخ... په دې صورت کښې سکوت کونکې ابن عباس رضي الله عنه شو نه رسول الله صلى الله عليه وسلم او حضرت چه کوم تاويل فرمائيلې دې د دې منشاء دا ده چه د دې جملې په نقل کښې روایات مختلف دی، پس په صحيح بخاری کښې دا حدیث په ډيرو ځایونو کښې ذکر کړې شوې دې ﴿ ففي الجهاد في باب جوائز الوفاء: واجيزوا الوفد بنحو ما كنت اجيزهم، ونيسث الثالثة الخ ﴾ یعنی دلته قال ابن عباس رضي الله عنه ناسته، ﴿ وفي الجزية في باب اخراج اليهود من جزيرة العرب: بنحو ما كنت اجيزهم، والثالثة خير، اما ان سكت عنها، واما ان قالها فنسيها، قال سفیان: هذا من قول سليمان ﴾ یعنی سفیان بن عيينه وائی چه دا قول ﴿ وسكت عن الثالثة الخ ﴾ زما د استاد سليمان احوال دې. یعنی سليمان رضي الله عنه وائی چه دريمه خبره هم غوره ده یا خو زما استاد سعيد سکوت کړې دې، یا هغوی ذکر کړې وو خو زما نه هیره شوه، او د ابوداؤد په يو نسخه کښې کومه چه د بذل په حاشيه باندي ده په هغې کښې داسې دی ﴿ قال سليمان لا ادري اذكر سعيد الثالثة فنسيها او سكت عنها ﴾ د دې نسخې والا د عبارت حاصل او د بخاری والا روایت حاصل يو دې چه سکوت کونکې سعيد بن جبیر رضي الله عنه دې، او حضرت چه کومه شرح کړې ده په هغې کښې سکوت کونکې ابن عباس رضي الله عنه دې. او حافظ رضي الله عنه په فتح الباری ۷۴۱۷ کښې احتمالا هم دا اختيار کولو سره روستو دې ته ترجیح ورکړې ده چه دا قول د سليمان احوال دې او سکوت کونکې سعيد بن جبیر رضي الله عنه دې خو په دې قول کښې حافظ حواله ورکړې ده د مسند حميدي او مستخرج ابونعيم، کوم چه پخپله په بخاری کښې موجود دی لکه چه پورته ذکر شو، د دې ټولو حاصل دا څنگه چه په ابوداؤد کښې دی ﴿ قال ابن عباس الخ ﴾ چه د هغې نه معلومېږي.....

کوم څیزونه ذکر کړې شوي دي هغه دا کيدې شي، مثلاً ﴿ الوصية بالقرآن، تجهيز جيش اسامة، لاتخذوا اقبري وثنا بعد، الصلوة وما ملكت ايمانكم ﴾

والحديث اخرجه البخارى ومسلم مطولا، قاله المنذرى

[۳۰۳۰] (١) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، وَعَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَا أُخْرِجَنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ فَلَا أَتْرُكُ فِيهَا إِلَّا مُسْلِمًا".

دعمر بن الخطاب رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله نه مې اوریدلی دی چه فرمائیله: في: ضروره يهوديان اونصرانيان دجزيرة العرب نه اوباسم اودمسلمان نه علاوه به پکښې دبل دين والا څوک نه پريږدم.

﴿ يقول (جابر) اخبرني عمر بن الخطاب رضي الله تعالى عنهما انه سمع رسول الله صلی الله علیه و آله يقول

: لاخرجن اليهود والنصارى من جزيرة العرب فلا اترك فيها الا مسلما ﴾

دا حديث دلته مطلق دې او د مسلم په روایت کښې ﴿ لئن عشت الى قابل ﴾ سره

مقيد دې. والحديث اخرجه البخارى ومسلم مطولا، قاله المنذرى

[۳۰۳۱] (٢) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، عَنْ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعْنَاهُ، وَالْأَوَّلُ أَتَمُّ.

دعمر رضي الله عنه نه دتيرروایت په شان روایت منقول دي ليکن اولنی روایت زیات کامل دې.

[۳۰۳۲] (٣) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْعَتَكِيُّ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ قَابُوسِ بْنِ أَبِي ظَلْيَانَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَكُونُ قِبْلَتَانِ فِي بَلَدٍ وَاحِدٍ".

دابن عباس رضي الله عنهما نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیله دی په یونبار کښې دوه قبلي نه شی کيدې (يعنى اهل اسلام او يهوديان اونصرانيان به يوځای په حجاز مقدس کښې نه اوسيدې)،

﴿ عن ابن عباس رضي الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه و آله لا تكون قبلتان في بلد واحد ﴾

٤٦..... چه د سکت فاعل رسول الله صلی الله علیه و آله دې: دا په هيڅ کتاب کښې نشته، اوس به يا خو دي ته مرجوح او وهم ونيلې شي او يا دي بيا د دې تاويل اوکړې شي، په دې وجه صحيح دا ده چه د سکت فاعل سعيد بن جبیر رضي الله عنه دې او تاويل هم هغه دي کوم چه مونږ پورته د بذل نه ذکر کړې خو په دې کښې هم دا اشکال باقی پاتې کيږي چه په دې تاويل کښې د سکت فاعل ابن عباس رضي الله عنهما جوړيږي حالانکه راجح داده چه دده چه د هغه نه هم لاتدي راوی شته يعنى سعيد، اگر چه حافظ احتمالا هغه هم ليکلې دي کوم چه بذل کښې دي.

١: صحيح مسلم للجهد ٢١ (١٧٦٧)، سنن الترمذي للسير ٤٣ (١٦٠٧)، (تحفة الأشراف: ١٠٤١٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٩١، ٣٢، ٣٤٥٣) (صحيح)

٢: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ١٠٤١٩) (صحيح)

٣: سنن الترمذي للزكاة ١١ (٦٣٣)، (تحفة الأشراف: ٥٣٩٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٢٣/١، ٢٨٥) (ضعيف)

شرح الحديث:

د دې حديث په شرح كښې درې اقوال دي، اول دا چه د دې نه مراد اقامت دې په دار الحرب كښې يعنى يو سرې په دار الحرب كښې اسلام راوړو نو اوس هغه ته پكار دى چه د هغه خائې نه منتقل شى، ۲: اظهار شعائر الكفر، يعنى ذميان خلق كوم چه په دارالاسلام كښې مقيم دى، په دارالاسلام كښې اوسيدو سره د كفر د شعائرو د اظهار هغوى ته اجازت نشته، ۳: اخراج المشركين من جزيرة العرب، فعلى الاول المراد من البلد دار الحرب وعلى الثانى دارالاسلام وعلى الثالث جزيرة العرب. والحديث اخرجه الترمذى وذكر انه روى مرسلًا، قاله المنذرى

[۳۰۳۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْوَّاحِدِ، قَالَ: قَالَ سَعِيدٌ يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ: جَزِيرَةُ الْعَرَبِ مَا بَيْنَ الْوَادِي إِلَى أَقْصَى الْيَمَنِ إِلَى نَحْوِ الْعِرَاقِ إِلَى الْبَحْرِ. قَالَ أَبُو دَاوُدَ قَرَأْتُ عَلَى الْحَارِثِ بْنِ مَسْكِينٍ، وَأَنَا شَاهِدٌ، أَخْبَرَنِي أَشْهُبُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، قَالَ: قَالَ مَالِكٌ: عُمَرُ أَجَلِي أَهْلَ نَجْرَانَ وَلَمْ يُجْلَوْا مِنْ تِيْمَاءَ لِأَنَّهُمْ لَيْسَتْ مِنْ بِلَادِ الْعَرَبِ، فَأَمَّا الْوَادِي فَأَيُّ أَرَى أَنَّهُ لَمْ يُجْلَ مِنْ فِيهِمْ مِنَ الْيَهُودِ أَنَّهُمْ لَمْ يَرَوْهَا مِنْ أَرْضِ الْعَرَبِ.

د سعيد بن عبدالعزيز نه روايت دې فرمائی چه برطرف ته د وادي القري نه واخله ديمن پورې جزيرة العرب دې اوبل طرف ته دعراق نه واخله دسمندر په پورې جزيرة العرب دې ابوداؤد وائی چه داروايت زما په موجودگي دحارث بن مسكين په وړاندې داسې بيان شوچه دمالك نه روايت دې چه عمر ^{رضي الله عنه} اهل نجران جلاوطن كړل اود مقام تيما والاڼي جلاوطن نه كړل كوم چه دسمندر سره نژدې دشام په مضافاتو كښې واقع ده، تيما دعربو په ښارونو كښې نه شميرل كيږي اوزما راي داده چه دوادي القري يهوديان په دې وجه جلاوطن نه كړي شول دوى وادي القري په جزيرة العرب كښې داخل نه گنرله.

(قال ابوداؤد: قرئ على الحارث بن مسكين وانا شاهد الخ)

دلته هم مصنف ^{رضي الله عنه} د حارث بن مسكين نه د روايت طريق هم هغه اختيار كړو كوم چه اوس نژدې تير شو فتذكر.

[۳۰۳۴] (۲) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: قَالَ مَالِكٌ: وَقَدْ أَجَلِي عُمَرُ رَحِمَهُ اللَّهُ يَهُودَ نَجْرَانَ وَفَدَكَ.

د مالك نه روايت دې فرمائی چه عمر ^{رضي الله عنه} د نجران اود فدك يهوديان جلاوطن كړل
(حدثنا ابن السرح ابن وهب قال قال مالك وقد اجلى عمر يهود نجران وفدك)

د نصارى نجران سره څنگه مصالحت شوې وو د دې بيان په راروان حديث كښې راځي
د راتلونكي باب نه د كتاب الخراج شروع ده:

د دې نه پس په بعض نخسو كښې داسې ليكلې شوې دي: (آخر كتاب الفئ، بسم الله الرحمن الرحيم اول كتاب الخراج) د دې سرخى نه دا په فهم كښې راځي چه د كتاب الخراج والفئ نه اوسه پورې چه كوم احاديث ذكر شو د هغې تعلق د فئ سره وو او د راتلونكي باب نه د خراج شروع كيږي.

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۲۵۱) (منقطع)

(۲): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۹۲۵۲) (ضعيف)

بَاب فِي إِيقَافِ أَرْضِ السَّوَادِ وَأَرْضِ الْعَنُوةِ

کومه زمکه چه مسلمانان د کافرو په ملک کښې

په جنگ سره حاصله کړې هغه به څنگه تقسیمیری؟

په دې باب کښې صرف د خراج او د خراجی زمکې بیان دي، د ایقاف نه مراد لکه چه مخکښې تیر شوې دي، (ترک القسمة بين الفانمين) دي (بل ابقاؤها على حالها و ضرب الخراج عليها لمصالح المقاتلين والمسلمين عامة) یعنی زمکې لره د فتح کولو نه پس په طور د من او احسان د هغې په مالکانو (مشرکانو) باندې پریخودل او په هغه زمکه باندې خراج مریعی تیکس مقرر کول.

په عشر او خراج کښې فرق :

په عشر او خراج کښې فرق دا دي چه خراج خود د مشرکانو نه اخستلې شی او د هغې وجوب فی الذمة وی او عشر د مسلمانانو نه اخستلې شی او د هغې وجوب په ذمه کښې نه وی بلکه خارج یعنی په پیداوار کښې وی. د وجوب خراج سبب ذات ارض دي یعنی الارض النامية، او د عشر سبب وجوب خارج یعنی پیداوار دي، پس خراج په هر حال کښې واجب وی، که پیداوار وی او که نه وی، په خلاف د عشر کښې چه هغه بغیر د کروندې او پیداوار نه نه شی اخستلې او بله دا چه په عشر کښې د عبادت معنی موندلې شی او په خراج کښې د صغار او د ذلت (من البدائع)

په ترجمه الباب کښې (ارض السواد) نه پس (ارض العنوة) دا د عطف العام علی الخاص د قبیلې نه دي، ځکه چه ارض السواد هم ارض العنوة دي، د سواد نه مراد سواد العراق دي، د عراق زمکه چونکه ډیره زیاته شنه او کثیر الاشجار والمزارع ده په دې وجه د هغې نه په سواد سره تعبیر او کړې شو ځکه چه شین والې د لرې نه تور والی ته مائل وی، د عراق زمکه مسلمانانو په خلافت فاروقی رضی الله عنه کښې فتح کړه، عمر رضی الله عنه د هغې زمکې وقف کړې لکه چه د عمر رضی الله عنه دا مسلک وړاندې په تفصیل سره د ائمه د اختلاف نه تیر شوې دي.

[۳۰۳۵] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْعَتُ الْعِرَاقِ قَفِيرَهَا وَدِرْهَمَهَا وَمَنْعَتُ الشَّامِ مَدْيَنَهَا وَدِينَارَهَا وَمَنْعَتُ مِصْرَ رُدْبَهَا وَدِينَارَهَا، ثُمَّ عَدْتُمْ مِنْ حَيْثُ بَدَأْتُمْ"، قَالَهَا زُهَيْرٌ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، شَهِدَ عَلَى ذَلِكَ لَحْمُ أَبِي هُرَيْرَةَ وَدَمُهُ.

د ابوهریره رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائیلى دی یوداسې وخت به راشي چه عراقیان به خپلې پیماني اوسکي منع کړي او شامیان به خپلې اشرفی منع کړي او مصریان به خپلې سکي او اشرفی منع کړي او تاسو چه په شروع کښې څنگه وئ هم داسې به شی، زهیر وائی چه درې پیري به دي باندې گواهي او کړه د ابوهریره نه غوښي او وینې.

۱: صحیح مسلم للفتن وأشرط الساعة ۸ (۲۸۹۶)، (تحفة الأشراف: ۱۲۶۵۲)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲/۲۶۲)، (صحیح)

« عن ابی هريرة رضي الله عنه قال قال رسول الله ﷺ منعت العراق قفيها ودرهمها ومنعت الشام مديها ودينارها ومنعت مصر اردبها ودينارها ثم عدتم من حيث بداتم »

شرح الحديث :

په دې باب كښې مصنف رحمته الله عليه دوه احاديث ذكر فرمائيلې دي په دې رومي حديث كښې ارض عنوة او د مال غنيمت ذكر دې او په دويم حديث كښې د مال فئ او د غنيمت دواړو حكم ذكر كړې شوې دې د دې رومي حديث مفهوم دا دې چه رسول الله ﷺ پيشن گوئى فرمائى چه يو زمانه به راشي چه مسلمانان به ملكونه يعنى عراق شام او مصر فتح كولو نه پس د هغه ځائى په خلقو باندې يعنى مشركانو باندې كوم چه به په هغه ملكونو كښې آباد وي خراج مقرر كړى او په خراج كښې رسول الله ﷺ غلې او دراهم او دنانير دواړه ذكر كړې دي كومه سكه چه په كوم ملك كښې رائج وي په دې حديث كښې رسول الله ﷺ هم هغه ذكر فرمائيلې ده، پس د عراق دپاره دراهم، او د شام او مصر دپاره رسول الله ﷺ دنانير ذكر او فرمائيل، او په غلو كښې چه كومه پيمانه به چرته رائج وه هم هغه رسول الله ﷺ په حديث كښې ذكر او فرمائيله، پس د عراق دپاره نې قفيز او د شام دپاره نې مدي او د مصر دپاره نې اردب ذكر او فرمائيلو، دا ټول د مكيال او پيمانو نومونه دي كومي چه په دې ښهرونو كښې رائج وې، قفيز د اتو مكوك برابر وي او مدي د پنځلسو مكوك وي او اردب څلريشت صاع وي.

دا حديث د اعلام نبوة نه دې په دې كښې رسول الله ﷺ دوه پيشن گوئى او فرمائيلې اول دا چه يو زمانه به داسې راشي چه اسلام به عراق شام او مصر ټولو ځايونو ته اورسيږي او مسلمانان به د هغې د فتح كولو نه پس د هغه ځائى په اوسيدونكو باندې خراج مقرر كړى، دويم پيشن گوئى دا چه بيا به يو وخت داسې راشي چه دا خلق به د دې خراج د وركولو نه انكار او كړى، دوباره به هم دوى ته غلبه حاصله شي، وقيل او لاجل اسلامهم والاول هو الاصح.

« ثم عدتم من حيث بداتم » بيا چه تاسو د كوم ځائى نه تلى يئ هم هلته به راواپس شئ يعنى انحطاط او تنزل طرف ته، شارحانو ليكلې دي لكه چه په مجمع البحار كښې دي چه دا اشاره د هغه حديث مضمون طرف ته ده، « بداء الاسلام غربيا وسيعود كما بداء »
« قالها زهير ثلاث مرات » دا ضمير د آخرى جملې طرف ته راجع دې، « ثم عدتم من حيث بداتم » دا جمله زهير راوى درې كرتو اوټيله.

« شهد على ذلك لحم ابى هريرة ودمه » د دې راوى چه ابو هريرة رضي الله عنه دې هغه د دې حديث د روايت كولو نه پس تاكيدا فرمائى چه گواهي وركوي په دې باندې د ابو هريرة غوښه او وينه، يعنى زما دې حديث لره د رسول الله ﷺ نه په اوريدو باندې كامل يقين دې، دا هم داسې ده لكه چه مونږ په محاوره كښې وايو چه په دې باندې زما رڼى رڼى گواهي وركوي. والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى

[۳۰۳۶] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنْبِهٍ، قَالَ: هَذَا مَا حَدَّثَنَا بِهِ أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَيُّمَا قَرْيَةٍ أَتَيْتُمُوهَا وَأَقَمْتُمْ فِيهَا فَسَهَّمْكُمْ فِيهَا وَأَيُّمَا قَرْيَةٍ عَصَيْتُمْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ خُمْسَهَا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ، ثُمَّ هِيَ لَكُمْ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی تاسو چه هریوکی ته راشی او هلته او سیرئ نو تاسو ته به یوه معینه حصه ملاویري او دکوم کلي اوسیدونکی چه دالله در سول نافرمانی او کره نوددغه کلي نه دالله اورسول خمس اوباسی اوباقی حصه دي تاسو ته درکړې شي

(عن همام بن منبه قال هذا ما حدثنا ابوهريرة رضي الله عنه عن رسول الله ﷺ : وقال رسول الله ﷺ)

د صحيفه همام بن منبه تعارف :

په اصل کښې دا حديث د صحيفه همام بن منبه د احاديثو نه دي، د دې صحيفې روايات متفق السند دی، په يو سند سره روايت کړې شوي دي چه د هغې سند داسې دي (عن عبدالرزاق عن معمر عن همام بن منبه) هم په دې وجه په دې صحيفه کښې دا سند صرف په رومي حديث کښې ذکر کړې شوي دي، او چونکه باقی احاديث چه يو سل او يو کم خلويښت دي (۱۳۹) هم په دې سند سره روايت کړې شوي دي په دې وجه روستو احاديثو کښې سند نه دي ذکر کړې شوي صرف د متونو په ذکر باندې اکتفاء کړې شوي ده، د دې صحيفې ټول روايات امام احمد بن حنبل رضي الله عنه براه راست د عبدالرزاق نه روايت کوي، هم دغه شان شيخين امام بخاری او مسلم هم په خپل صحيح کښې د دې صحيفې نه بعض روايات اخستلي دي، په مسلم کښې د بخاری په نسبت زيات دي، امام ابوداؤد رضي الله عنه دا روايت د خپل استاد احمد بن حنبل رضي الله عنه په واسطې سره اخستلي دي او امام مسلم په واسطه د محمد بن رافع او په واسطه د احمد بن حنبل روايت کوي (هذا ما حدثنا ابوهريرة عن رسول الله ﷺ) د دې صحيفې بالکل په شروع کښې هم دا عبارت دي، د دي نه پس بيا د متون احاديث سلسله شروع کيږي، د دې نظير هغه روايات دي کوم چه امام ابوداؤد رضي الله عنه د مکتوب سمره نه اخستلي دي چه د هغې ذکر د الدر المنزود په مقدمه کښې او په اصل کتاب کښې ډير کرته تير شوي دي، او دلته چه مصنف رضي الله عنه کوم حديث د دې صحيفې نه اخستلي دي هغه د دې صحيفې آخري حديث دي

شرح الحديث ومطابقته للترجمة :

قوله: (أيما قرية أتيتوها وأقمتم فيها فسهمكم فيها وأيما قرية عصت الله ورسوله فإن خمسها لله ورسوله ثم هي لكم) : یعنی کلی یا آبادی ته چه کله تاسو اورسیرئ یعنی بغیر د قتال نه او هلته قیام اختیار کړئ نو په دې قسم مال غنیمت کښې ستاسو د ټولو حصه ده، او د کوم کلی والا چه داسې وی چه د الله او رسول ﷺ نافرمان وی یعنی په هغې کښې تاسو ته د قتال ضرورت پېښ راشی او بیا د قتال په ذریعه تاسو هغه فتح کړو نو د دې قسم مال حکم

(۱) : صحیح مسلم/الجهاد ۵ (۱۷۵۶)، (تحفة الأشراف: ۱۴۷۲۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۱۷/۲) (صحیح)

دا دې چه په دې کښې یو خمس خو د رسول الله ﷺ دپاره دې باقی ستاسو دپاره یعنی د مقاتلینو دپاره، ځکه چه دلته د جنگ حاجت راغلي دې په خلاف د رومی صورت چه هغه مال بغیر د قتال نه حاصل شوې دې په دې وجه په هغې کښې د ټولو مسلمانانو حصه ده ځکه چه هغه مال فئ دې او دویم مال مال غنیمت دې په دې وجه په هغې کښې تخمیس او کړې شو او باقی اربعة اخماس د مقاتلینو دپاره شو، گویا په دې حدیث کښې د مال فئ او غنیمت دواړو حکم ذکر کړې شوې دې، او دویمه خبره دا ده چه په دې حدیث کښې د مال غنیمت د تقسیم ذکر دې او د دې باب په رومی حدیث کښې د خراج ذکر وو، خراج خو وی د ایقاف او عدم تقسیم په صورت کښ، لهذا د دواړو احادیثو د یو ځای کولو نه دا معلوم شو. د ارض مفتوحه تقسیم او ترک تقسیم (ایقاف) دواړه جائز دی، فله در المصنف چه په دې باب کښې ئې دواړه قسم احادیث راوړی دی، مصنف حنبلی دې او د حنابله په نزد امام په ارض مفتوحه عنوة کښې مختار دې د تقسیم او عدم تقسیم دواړو. فتدبر و تشکر هر حدیث باندي ډیر غور سره د پوهې کوشش پکار دې. والحديث اخرجه مسلم، قاله المنذرى

باب فی أخذ الجزية

د جزیه د وصولو لوییان

جزیه د هغه مشرکانو د نفسونو ټیکس ته وئیلې شی کومو ته چه په دارالاسلام کښې امن ورکولو سره د اوسیدو اجازت ورکړې شوې دې او خراج وائی د زمکې ټیکس ته، او عشر وائی د زمکې د پیداوار زکوة ته.

دلته په جزیه کښې دوه اختلافات دی، اول دا چه جزیه د کومو کافرانو نه اخستلې شی، صرف د اهل کتابو نه، که د اهل کتاب او مشرکینو دواړو نه؟ د شوافعو او حنابله په نزد صرف د اهل کتابو نه، او د احنافو او مالکیانو په نزد د دواړو نه، خود احنافو په نزد مشرکین عرب مستثنی دی، او دویم مسئله دا چه د جزیه مقدار واجب څه دې؟ دا دواړه مسئلې په کتاب الزکاة کښې سره د اختلاف ائمه نه د معاذ رضی الله عنه د حدیث «ومن کل حالمة دینارا» د لاندې تیر شوې دی، بیا پیژندل پکار دی چه د وجوب جزیه دپاره درې اوصاف شرط دی.

د جزئی د وجوب شرائط

قال ابن رشد: اتفقوا على انها انما تجب بثلاثة اوصاف الذكورية والبلوغ والحرية وانها لا تجب على النساء ولا على الصبيان، بيا وړاندې هغوی د دې وجه ليکلي ده هغه دا چه جزیه خو د قتل په عوض کښې ده او د قتل حکم صرف د رجال بالغین په حق کښې دې، پس په جهاد کښې د نساء او صبيان د قتل ممانعت دې. «وكذا اجمعوا على انها لا تجب على العبيد آه» ابن قدامة هم په دې باندي د جمهورو علماء کرامو او ائمه اربعة اتفاق نقل کړې دې، «فان عمر كتب الى امرأ الاجناد ان اضربوا الجزية ولا تضربوها على النساء والصبيان ولا تضربوها الا على من جرت عليه المواسي» رواه سعيد وابوعبيد والاثرم الخ..... مواسی، د موسى جمع په معنی د استر، د انبات طرف ته اشاره ده.

[۳۰۳۷] (۱) حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ، حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، وَعَنْ عَثْمَانَ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى أَكِيدِرِ دَوْمَةَ فَأَخَذَ فَاتَوْهُ بِهِ، فَحَقَنَ لَهُ دَمَهُ وَصَالِحَهُ عَلَى الْجَزِيَّةِ.

د انس بن مالک او عثمان بن ابی سلیمان رضی اللہ عنہم نه روایت دی فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم خالد بن ولید اکیدر نوم سری (د دومه بادشاه) ته ولیره نو خالد بن ولید اودهغه ملگرو اونبو و او نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ئی راوستو نبی صلی اللہ علیہ وسلم دهغه خون معاف کرو او په جزئیه باندې ئې ورسره صلحه او کره.
 ﴿ وعن عثمان بن ابی سلیمان ﴾ دا په عن عاصم باندې عطف دی یعنی محمد بن اسحاق دی حدیث لره د عاصم نه هم روایت کوی او د عثمان نه هم، خود عاصم طریق مسند دی او د عثمان مرسل خکه چه دلته صحابی نه دی ذکر کړې شوې.
 قوله: ﴿ ان النبي صلی اللہ علیہ وسلم بعث خالد بن الوليد الى اكيدر درمة فاخذوه فاتوا به فحقن له دمه وصالحه على الجزية ﴾: دومه الجندل دیو کلی نوم دی د شام د کلونه او کیدر د هغې د حکمران نوم دی، د دومه الجندل د فتح واقعه د غزوة تبوک په سفر کنسې پینسه شوې ده چه د هغې ذکر په کتاب الجهاد کنسې راغلی دی، ﴿ فلا حاجة الى اعادتها ﴾

[۳۰۳۸] (۲) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّقِيلِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَايِلٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَمَّا وَجَّهَهُ إِلَى الْيَمَنِ أَمْرًا أَنْ يَأْخُذَ مِنْ كُلِّ حَالِيٍّ يَعْنِي مُحْتَلِمًا دِينَارًا أَوْ عِدْلَهُ مِنَ الْمُعَافِرِي ثِيَابًا تَكُونُ بِالْيَمَنِ".

دمعاذ بن جبل رضی اللہ عنہ نه روایت دی فرمائی هرکله چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم زه یمن ته اولیرام نوراته ئی حکم او کرو چه دهر بالغ نه یو دینار اخلم یادی برابر دمعا فري جامو نه کومی چه په یمن کنسې ملا وبری.

[۳۰۳۹] (۳) حَدَّثَنَا النَّقِيلِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ.

دمعاذ بن جبل رضی اللہ عنہ نه د تیر روایت په شان روایت منقول دی.

[۳۰۴۰] (۴) حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْعَظِيمِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ هَانِيٍّ أَبُو نُعَيْمٍ النَّخَعِيُّ، أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَهَاجِرٍ، عَنْ زِيَادِ بْنِ حُدَيْرٍ، قَالَ: قَالَ عَلِيُّ بْنُ يَحْيَى بْنِ بَقِيَّةٍ لِنَصَارَى بَنِي تَغْلِبَ لَأَقْتُلَنَّ الْمُقَاتِلَةَ وَلَا سَبِيْنَ الدِّيْنِيَّةِ فَإِنِّي كَتَبْتُ الْكِتَابَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَنْ لَا يُنْصَرُوا أَبْنَاءَهُمْ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا حَدِيثٌ مُنْكَرٌ، بَلَّغَنِي عَنْ أَحْمَدَ أَنَّهُ كَانَ يَنْكُرُ هَذَا الْحَدِيثَ انْكَارًا شَدِيدًا، وَهُوَ عِنْدَ بَعْضِ النَّاسِ شِبْهُ الْمَتْرُوكِ وَأَنْكَرُوا هَذَا الْحَدِيثَ عَلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هَانِيٍّ، قَالَ أَبُو عَلِيٍّ: وَلَمْ يَرَأَهُ أَبُو دَاوُدَ فِي الْعَرْضَةِ الثَّانِيَةِ.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۳۷، ۱۹۰۰۲) (حسن)

(۲): سنن النسائي للزكاة ۸ (۲۴۵۵)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۱۲)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للزكاة ۵ (۶۲۳)، سنن ابن ماجه للزكاة ۱۲ (۱۸۰۳)، مسند احمد (۲۳۰/۵، ۲۳۳، ۲۴۷) (صحيح)

(۳): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۶۳) (صحيح)

(۴): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۰۹۷) (ضعيف الإسناد)

دزياد بن حدیر نه روایت دې فرمائی چه علی کرم الله وجهه به فرمائیل که چرې ژوندې پاتې شوم نو دینو تغلب قبیلې دنصرانیانو جنگ گونکی به قتل کړم او ددوی بچی به گرفتار کړم ځکه چه ددغه خلقو دنبی ﷺ په مینځ کښې کومه معاهده تحریر شوي وه دهغې کتابت ماکرې وو، په هغه معاهده کښې دا وو چه دوی به مدد نه کوي د خپلو ځامنو ابوداؤد وائی داروایت منکر دې اوماته خبر رارسیدلې چه امام احمد هم ددې حدیث ډیر سختی سره انکار کولو، ابو علی وائی، ابوداؤد دویم ځل چه کله دا کتاب واؤرولو نو په دې کښې ئې دا حدیث اونه وئیلو.

﴿ عن ابی وائل بن معاذ رضی الله عنه ان النبی ﷺ لما وجهه الی الیمن الخ ﴾

په دې حدیث باندې اوددې په تخریج باندې هم کلام په کتاب الزکاة کښې تیر شوې دې
﴿ عن زیاد بن حدیر قال علی رضی الله عنه لئن بقیت لنصاری بنی تغلب لاقتلن المقاتلة ولاسین الذریة الخ ﴾

شرح الحدیث المتعلق بمصالحة نصاری بنی تغلب :

علی رضی الله عنه فرمائی چه که زه څه ورځې نور باقی پاتې شوم نو ضرور به د نصاری بنو تغلب سپرو لره قتل کوم او د هغوی بښځې او ماشومان به قید کوم ځکه چه په ما باندې رسول الله ﷺ زمونږ او د هغوی تر مینځه معاهده لیکلې وه چه په هغې کښې دا هم وه چه هغوی به د خپل پیدا کیدونکی اولاد نه نصرانیان نه جوړوي.

گویا دوی وئیل غواړې چه هغوی عهد مات کړو او خپل اولاد ئې نصرانی کړل.

﴿ قال ابوداؤد : هذا حدیث منکر الخ ﴾

امام ابوداؤد رضی الله عنه د دې حدیث د روایت کولو نه پس په دې باندې سخت کلام کوی لکه چه ستاسو مخکښې دې، او وړاندې په دې کښې دی چه د مصنف رضی الله عنه شاگرد لؤلوی وائی چه دا حدیث امام ابوداؤد په خپل سنن کښې د قراءت او روایت په وخت په رومبی ځل خو لوستلې وو خو دوباره ئې نه دې لوستلې، یعنی د سنن نه ئې خارج کړو.

اوس سوال دا دې چه د بنو تغلب د نصاراؤ سره څه معامله شوې وه که نه او آیا د دې واقعي څه اصل شته که نه؟ جواب دا دې چه او اصل شته خو د رسول الله ﷺ سره نه. د رسول الله ﷺ د هغوی سره هیڅ معاهده نه وه شوې خو د عمر رضی الله عنه د هغوی سره یو معاهده شوې وه
﴿ فانه صالحهم علی تضعیف الصدقة بدل الجزية ﴾ یعنی عمر رضی الله عنه چه کله په هغوی باندې جزیه

مقرر کوله نو هغوی اووې چه جزیه زمونږ په حق کښې د شرم سبب دې ځکه چه مونږ عرب یو، او جزیه ورکول د عجمیانو کار دې لهذا زمونږ نه چه څه غواړئ واخلي خو د جزیه په نوم نه او په معاهده کښې دا خبره راغلي وه ﴿ ان لا یبصروا اولادهم ﴾ صاحب د عون المعبود ددې واقعي دا اصل د حدیث د ډیرو کتابونو مصنف ابن ابی شیبه، بیهقی وغیره په حوالې

سره لیکلې ده، پس د عمر رضی الله عنه د دې عمل او فیصلې د وجې نه د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه مذهب دا دې چه د هغوی نه به د خیز دو چند اخستلې شی څومره چه د مسلم نه اخستلې شی. ﴿ ففی الركاز الخمسان وما فیہ العشر عشرا وما فیہ ربع العشر نصف العشر، وكذلك من نسانهم ﴾ خو د امام مالک رضی الله عنه رائي په دې کښې د جمهورو خلاف ده د هغوی په

نزد چه کوم حکم د اهل کتاب او نورو ذمیانو دې هم هغه حکم د بنو تغلب دی هغوی فرمائی چه د کتاب الله د اهل کتاب نه د جزیه اخستلو حکم دې چه په هغې کښې ټول برابر دی، او نور علماء کرام لکه ابن قدامة او ملا علی قاری رحمتهما الله وغیره لیکلی دی چه د عمر رضی الله عنه په فیصله باندې یو صحابی رضی الله عنه هم د هغه مخالفت نه دې کړې فصار اجماعاً. (اوجز ۲۶۸/۳)

[۳۰۴۱] (۱) حَدَّثَنَا مُصَرِّفُ بْنُ عَمْرِو بْنِ يَامِيٍّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَعْنَى ابْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا أُسْبَاطُ بْنُ نَصْرِ الْهَمْدَانِيُّ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقُرَشِيِّ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهْلَ نَجْرَانَ عَلَى الْفِي حُلَّةِ النِّصْفِ فِي صَفَرٍ وَالْبَيْقِيَّةَ فِي رَجَبٍ يُؤَدُّونَهَا إِلَى الْمُسْلِمِينَ وَعَارِيَّةَ ثَلَاثِينَ دِرْعًا وَثَلَاثِينَ فَرَسًا وَثَلَاثِينَ بَعِيرًا وَثَلَاثِينَ مِنْ كُلِّ صِنْفٍ مِنْ أَصْنَافِ السِّلَاحِ يُغْزُونَ بِهَا، وَالْمُسْلِمُونَ ضَامِنُونَ لَهَا حَتَّى يَرُدُّوَهَا عَلَيْهِمْ إِنْ كَانَ بِالْيَمَنِ كَيْدًا أَوْ عُدْرَةً عَلَى أَنْ لَا تَهْدَمَ لَهُمْ بَيْعَةٌ، وَلَا يُخْرَجَ لَهُمْ قَسٌّ، وَلَا يَفْتَنُوا عَنْ دِينِهِمْ مَا لَمْ يُحْدِثُوا أَحَدًا أَوْ يَأْكُلُوا الرِّبَا، قَالَ إِسْمَاعِيلُ: فَقَدْ أَكَلُوا الرِّبَا، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: إِذَا نَقَضُوا بَعْضَ مَا اشْتَرَطَ عَلَيْهِمْ فَقَدْ أَحْدَثُوا.

عبدالله بن عباس رضی الله عنهما وائی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د اهل نجران سره په دې شرط صلح او کړه چه هغوی به د کپرو دوه زره جوړې مسلمانانو ته ورکوی، نیمې به د صفر په میاشت کښې ورکوی او باقی به د رجب په میاشت کښې، او دیرش زغری، دیرش اسونه، او دیرش اوبسان او د هر قسمه وسلې (جنگی سامان) نه دیرش دیرش وسلې چه هغې سره به مسلمانان جهاد کوی د عاریت په طور به ئې ورکوی، او مسلمانان به دهغوی ضامن وی، او په ضرورت پوره کیدو باندې به، هغوی ته واپس کوی او دا عاریت وړکول به هغه وخت وی کله چه په یمن کښې څوک د هوکه او کړی، (یعنی سازش کولو سره څوک نقصان رسول غواری) یا مسلمانانو سره غداری او کړی او لوظ مات کړی (او هلته جنگ پېښ شی) په دې شرط باندې چه دهغوی به هیڅ گرجا (عبادتخانه) نه وړانوی، او هیڅوک پادری به نه اوباسی، او دهغوی په دین کښې به مداخلت نه کوی چه ترڅو پورې هغوی بل څه نوې خبره پیدا نه کړی یا سودخوری اونه کړی، اسماعیل سدی وائی چه هغوی بیا سودخوری او کړه، ابوداؤد وائی: کله چه هغوی په خپل ځان باندې ترلی بعضې شرطونه مات کړل نو نوې خبره ئې پیدا کړه (او هغوی د عرب ملک نه او ویستلې شو).

﴿ عن ابن عباس رضی الله عنهما قال قال صالح رسول الله صلی الله علیه و آله اهل نجران على الفی حلة..... وعاریة

ثلاثین درعا..... ان كان باليمن كيد ذات غدر ﴾

د رسول الله صلی الله علیه و آله د نجران د نصاری سره مصالحت:

پورته دا راغلی وو چه رسول الله صلی الله علیه و آله نصاری د بنو تغلب سره مصالحت او کړو، هغه روایت خو د حقیقت خلاف وو خو دا د حقیقت مطابق دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله د نجران د نصاری سره مصالحت او فرمائیلو، نجران په یمن کښې دې، رسول الله صلی الله علیه و آله د هغوی سره په دوه زره حلو باندې مصالحت فرمائیلې دی په دو قسطونو کښ، نیمه په میاشت د صفر کښې او نیمه په میاشت د رجب کښې او په دې خبره باندې هم چه که یمن کښې جهگړه او عذر شروع شو نو دا څیزونه به په عاریت باندې ورکوی کوم چه په حدیث کښې لیکلې شوې دی یعنی

۱: تقرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۵۳۱) (ضعیف الإسناد)

دیرش زغرې، دیرش آسونه، دیرش اوبسان او په هر قسم وسله کښې دیرش دیرش، که مسلمانانو د هغې په ذریعه قتال او کړو نو هغوی به د ټولو څیزونو ضامن وی، یعنی د هغه سامان واپسی به ضروری وی، (ان کان باليمن) تعلق عاریه سره دې.

(علی ان لا تهدم لهم بیعة ولا یخرج لهم قس) د دې جملې تعلق (صالح) سره دې یعنی مصالحت په دې خبره باندې اوشو چه مسلمانان به تلو سره د هغوی کورونه نه غورځوی او نه به د یو عالم پادری اخراج کوی. او نه به هغوی د هغوی د دین نه لرې کولې شی.

(ما لم یحدثوا حدثا او یاکلوا الربا) د احداث د حدث نه مراد د عهد په شرطونو کښې د یو شرط ماتول دی، په دې مصالحت باندې چه د کومې جزېې ذکر دې چونکه دا جزیه په طریقه د صلح وه پس دې قسم جزیه ته جزیه الصلح والتراضی وائی، نو گویا د جزیه دوه قسمونه شو، جزیه صلحیه، د جزیه صلحیه هیڅ ضابطه نشته چه په کوم څیز باندې هم صلح او کړې شی او دویم قسم کوم چه د جزېې دې د هغې یو ضابطه ده، یعنی د مقدار په لحاظ سره چه د هغې تفصیل په کتاب الزکوة کښې تیر شوې دې.

رسول الله ﷺ چه کومه صلح نامه د نجران د په باره کښې لیکلې وه هغه کافی اوږده او تفصیلی ده، حضرت په بذل کښې دا نقل کړې ده که څوک کتل غواړی هغه دې او گوری.

بَابُ فِي اخذِ الْجُزْيَةِ مِنَ الْمَجُوسِ

باب د مجوسو نه د جزیه اخستلو بیان

مجوس آتش پرست وی دا خلق د عقیدې په اعتبار سره د اصلین قائل دی، یعنی دوه څیزونو لره اصل منی یو نور او بل ظلمت (تیاره) او دا دعوی کوی چه څومره هم په دنیا کښې خیر دې هغه فعل دنور دې او څومره چه شرونه دی هغه د ظلمت نه صادرېږی، د هغوی په باره کښې داسې مشهوره ده چه دا خلق دوه خالقان منی یزدان او اهرمن یزدان خالق الخیر، او اهرمن خالق الشر منی (په دې دواړو کښې صرف د تعبیر فرق دې) او بهر حال دا مشرکان دی، د دوی نه خو جزیه بالا جماع اخستلې شی، خو د شوافع او حنابله په مسلک باندې به دا اشکال وی چه هغوی خو د جزېې په باره کښې د اهل کتابو تخصیص کوی، د مشرکانو نه د جزېې د اخذ قائل نه دی، هغوی د دې جواب ورکوی چه دا د موجوده حالت په اعتبار سره خو مشرکان دی خو په ابتداء کښې او د اصل په اعتبار سره دا اهل کتاب وو لکه چه په حدیث الباب کښې راځی:

[٣٠٤٢] (١) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سِنَانَ الْوَاسِعِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِلَالٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْقَطَّانِ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: إِنَّ أَهْلَ فَارِسَ لَمَّا مَاتَ نَبِيُّهُمْ كَتَبَ لَهُمُ ابْلِيسُ الْمَجُوسِيَّةَ.

د ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه کله د فارس والا پیغمبر وفات شو نو شیطان هغې په مجوسیت یعنی داور په عبادت کولو کښې مبتلا کړل او په دې طریقی سره گمراه شول.

(عن ابن عباس رضی الله عنه قال ان اهل فارس لما مات نبيهم كتب لهم ابليس المجوسية) خود هغوی په

جواب باندې دا اشکال دې چه د اهل کتاب ذبائح او د هغوی د زنانو سره نکاح کول جائز دی په خلاف د مجوسو چه د دوی هغه جائز نه ده. (۱) « قال كنت كاتباً لجزء بن معاوية... عم الاحنف بن قيس..... اذ جاءنا كتاب عمر رضي الله عنه من قبل موته بسنة »

[۳۰۴۳] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدُّ بْنُ مُسْرَهْدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، سَمِعَ بَجَالََةَ، يُحَدِّثُ عَمْرَو بْنَ أَوْسٍ، وَأَبَا الشَّعْثَاءِ، قَالَ: كُنْتُ كَاتِبًا لِجَزَاءِ بْنِ مُعَاوِيَةَ عَمَّ الْأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ إِذْ جَاءَنَا كِتَابُ عُمَرَ قَبْلَ مَوْتِهِ بِسَنَةِ اقْتُلُوا كُلَّ سَاحِرٍ وَقَرِّبُوا بَيْنَ كُلِّ ذِي مَحْرَمٍ مِنَ الْمُجُوسِ وَأَنْهَوْهُمْ عَنِ الزَّمَمَةِ، فَقَتَلْنَا فِي يَوْمٍ ثَلَاثَةَ سَوَاحِرٍ، وَقَرَّبْنَا بَيْنَ كُلِّ رَجُلٍ مِنَ الْمُجُوسِ وَحَرَمِهِ فِي كِتَابِ اللَّهِ وَصَنَعَ طَعَامًا كَثِيرًا قَدَّعَاهُمْ، فَعَرَضَ السَّيْفَ عَلَى فُحْدِهِ فَأَكَلُوا وَلَمْ يُزْمَمُوا وَالْقَوْمُ وَقَرَّبُوا أَوْ بَعَلُّوا مِنَ الْوَرِقِ، وَلَمْ يَكُنْ عُمَرُ أَخَذَ الْحِزْبَةَ مِنَ الْمُجُوسِ حَتَّى شَهِدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَهَا مِنْ مُجُوسٍ هَجَرَ.

د عمرو بن اوس او ابو الشعثاء نه روایت دې چه بجاله وئیلی دی چه زه دا حنف بن قیس دتره جزء بن معاویه کاتب وم یوخل مونږ ته د عمر فاروق رضي الله عنه خط دهغه دوفات نه یو کال مخکښی راورسیدو په هغې کښې. د الیکلې شوي وو چه هر یو جادوگر هر کړی اود مجوسیانو دمحارمویه مینځ کښې جدائی راولی او منع کړی دوی لره دخوراک په وخت کښې دبنگیدلونه، نومونږ په دغه ورځ درې ساحران مړه کړل او کومو مجوسیانو چه دخپلو محارموسره نکاح کړې وه په هغوی کښې مو جدائی راوسته او احمد بن قیس ډیر خوراک تیار کړی وو او مجوسیان ټی راغوبستلي وو او په خپل ورون ټی توره ایخودلي وه اودوی خوراک او کړو لیکن نه بنگیدل او هغه د یوې قجری یاددوه قچرو د وزن برابر سپین زر پیش کړل او عمر رضي الله عنه ددغه وخته پورې دمجوسیانو نه جزئیه نه اخستله تردې چه عبد الرحمن بن عوف گواهی ورکړه چه نبی صلی الله علیه و آله دهجرد مجوسیانو نه جزئیه اخستلي وه. د زمزی?? تشریح د حدیث دشارحینو په لاندینی اقوالو کښې موجود ده.

شرح الحدیث :

بجاله بن عبده وائی چه زه جزء بن معاویه چه د احنف بن قیس تره دی د هغه کاتب اوم، دا جزء بن معاویه تابعی دی، د عمر رضي الله عنه د طرف نه د اهواز گورنر وو بجاله وائی چه مونږ ته د عمر رضي الله عنه یو خط د هغوی د وفات نه یو کال مخکښی راغلو چه په هغې کښې دا وو چه هلته څومره جادوگران دی هغوی ټول قتل کړی او په مجوسو کښې د هر دوه ذی رحم ترمینځه جدائی راولی (ځکه چه هغوی دمحارم دنکاح قائل وو) « وانهم عن الزممة » او دا چه هغوی د زمزمه نه بند کړی، پس وړاندې په روایت کښې دی چه هغوی په یوه ورځ کښې درې جادوگران قتل کړل او هم دغه شان ټی د دې قسم مجوسیانو او حریم ترمینځه هم تفریق راوستلو او د دریم حکم تعمیل ټی داسې او کړو چه هلته څومره مجوسیان وو د

۱، دا اشکال د هغه وخت د نصاری او یهودو په اعتبار سره خو صحیح دی خو اوس خو د هغوی سره

هم نکاح نه کیږی
۲: صحیح البخاری/الجزية ۱ (۳۱۵۶)، سنن الترمذی/اللسیر ۳۱ (۱۵۸۶)، (تحفة الأشراف: ۹۷۱۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للزکاة ۲۴ (۴۱)، مستند احمد (۱۹۰/۱، ۱۹۴) (صحیح)

هغوی د خوراک دعوت ئی او کړو، چه کله ټول خلق خوراک ته کیناستل نو په مینځ کښې دا جزء بن معاویه هم کیناستلو، په خپل زنگون باندې توره کیخودلو سره او دې حاضرینو ته ئې اووې چه خوراک شروع کړئ او هغوی ئې د زمزمه نه منع کړل، توره د هغوی مخې ته وه.

﴿ والقوا وقر بقل ا وبلغتین من الورق ﴾ یعنی هغوی د زمزمه د اجازت دپاره او د هغوی په خوشامد کښې د دوه خچرو د بوجه په قدر سپین زر مخې ته کیخودل خو هغوی او نه منله او هغوی ئې زمزمې ته پرې نخودل، د مجوسو عادت د خوراک نه پس د زمزمه وو. چه د هغې مطلب دا وو چه دې خلقو به د خوراک کولو نه پس په خله کښې دننه دننه په پوزه باندې څه وئیل چه هغې باندې به هغوی خپل مینځ کښې پوهیدل، خو بل څوک به پرې نه پوهیدو چه څه وائی، پته نشته د دې څه وجه وه.

د مجوس نه د جزیه اخستلو په باره کښې د عمر فاروق رضی الله عنه تردد :

قوله: ﴿ ولم یکن عمر اخذ الجزية من المجوس حتی شهد عبدالرحمن بن عوف ان رسول الله ﷺ اخذها من مجوس هجر ﴾: یعنی د عمر رضی الله عنه د مجوسو نه په جزیه اخستلو کښې تردد وو، بیا چه کله عبدالرحمن بن عوف رضی الله عنه هغوی ته عرض او کړو چه رسول الله ﷺ د مجوس د هجر نه جزیه اخستلې ده نو بیا هغوی هم اخستل شروع کړل، او په موطاء کښې دی ﴿ لما تردد عمر فی امر المجوس قال له عبدالرحمن بن عوف سمعت رسول الله ﷺ یقول : سنوا بهم سنة اهل الكتاب ﴾ یعنی رسول الله ﷺ او فرمائیل چه د مجوسیانو سره د اهل کتاب والا معامله کوئ. لکن هذا فی امر الجزية لا فی جواز النکاح بنسائهم واکل ذبائهم.

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی مختصراً، قاله المنذری

یو اصولی مسئله د تحدیث د صیغې متعلق :

د دې حدیث په سند کښې هم دغه شان دی : عمرو بن دینار وائی چه ما د بجاله نه هغه حدیث واوریدو کوم چه هغوی د عمرو بن اوس او د ابوالشعشاء نه بیانولو، بیا وړاندې د هغه حدیث ذکر دې، دلته سوال کیدی شی چه عمرو بن دینار داسې ولې او نه وئیل چه ﴿ حدثنی بجاله ﴾ د دې اوږدلو څه ضرورت وو، د دې جواب دا دې چه د بعض محدثینو رائي دا ده چه راوی لفظ حدثنا نه روایت هغه وخت کولې شی چه کله د هغه استاد هغه ته هغه حدیث بالقصد بیان کړې وی. او که داسې نه وی بلکه مقصود بالاسماع دویم کس وی نو هغه سرې به مقصود بالاسماع نه وی خو هغه حدیث ئې د هغه نه واوریدو نو بیا په دې صورت کښې د دې سامع دپاره دې حدیث لره په صیغه د حدثنا سره استعمال صحیح نه دی. الحاصل کوم راوی چه مقصود بالاسماع وی نو د هغه دپاره د حدیث د روایت کولو په وخت حدثنا لفظ استعمالول جائز دی د بل چا دپاره نه، خو د جمهورو په نزد جائز دې، ومنعه بعضهم منهم الامام النسائی وطائفة قليلة قاله الحافظ فی الفتح (عون) د الدرر المنصود په مقدمه کښې هم دانواع تحمل په بیان کښې مونږ دا قول هم لیکلې دې چه ﴿ عن ابن عباس رضی الله عنه قال جاء رجل من الاسديين من اهل البحرين وهم مجوس اهل هجر الى رسول الله ﷺ الخ ﴾

[۳۰۴۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَسْكِينٍ الْيَمَامِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ قُشَيْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ بَجَالَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْأَسْبَدِيِّينَ مِنْ أَهْلِ الْبَحْرَيْنِ وَهُمْ مَجُوسٌ أَهْلُ هَجْرٍ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَكَثَ عِنْدَهُ، ثُمَّ خَرَجَ فَسَأَلْتُهُ مَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ فِيكُمْ؟ قَالَ: شَرُّ قَلْتٍ: مَهْ قَالَ: الْإِسْلَامُ أَوْ الْقَتْلُ، قَالَ: وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ قَبْلَ مِنْهُمْ الْحِزْبَةَ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأَخَذَ النَّاسُ بِقَوْلِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، وَتَرَكُوا مَا سَمِعْتُ أَنَا مِنَ الْأَسْبَدِيِّينَ.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه دبهرین اوسیدونکی یوکس داسیزین والا خوک چه دهجی مقام دمجوسیانونه وو دنی عليه السلام په خدمت کښې حاضر شو اودهغه سره یوشیبه ناست وو کله چه روان شو نو ما ترې تپوس اوکړو چه الله اودالله رسول ستاسو په حق کښې څه فیصله اوکړه؟ هغه اووئیل زما دپاره ډیره بده فیصله وشوه ماورته اووئیل خاموش اوسه هغه اووئیل فیصله ئې دا اوکړه چه اسلام قبول کړه گنی قتل ته تیار شه ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه عبدالرحمن بن عوف رضي الله عنه داسې اووئیل چه نبی عليه السلام ددې خلقو نه جزیه اخستل قبول کړل نو خلقو د عبدالرحمن بن عوف په قول عمل وکړو اوڅه چه ئې داسې نه اوریدلي وو هغه ئې پریخودل.

شرح الحديث :

اسبديون په مجوس کښې يو قوم دې چه داس عبادت به ئې کولو، د دې مفرد الاسبدي دې معرب دې د الاسب بمعنی الفرس.

ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه يو اسبدي مجوس په اهل هجر کښې د رسول الله صلى الله عليه وسلم خدمت ته حاضر شو، لږ ساعت دپاره د رسول الله صلى الله عليه وسلم سره اودريدو او بيا بهر لاړو، ما د هغه نه تپوس اوکړو چه ستا په باره کښې رسول الله صلى الله عليه وسلم څه فیصله اوکړه نو هغه اووې بده فیصله، ما ترې تپوس اوکړو چه څه فیصله نو هغه اووې چه «الاسلام او القتل» د دې تقاضا دا ده چه د مجوسو نه به جزیه نه شی اخستلې، حال دا چه دا د عبدالرحمن بن عوف رضي الله عنه د حديث خلاف دې هم په دې وجه وړاندې ابن عباس رضي الله عنه فرمائی «وقال عبدالرحمن بن عوف قبل منهم الجزية» وړاندې ابن عباس رضي الله عنه فرمائی چه علماء کرامو د عبدالرحمن رضي الله عنه حديث اختيار کړې دې او کوم چه ما د اسبدي نه اوریدلي وو هغې مې ترک کړو ځکه چه د اسبدي قول معتبر نه دې په روایت کښ.

دا د حديث الغاز نه دې یعنی دونره (عجيبه سوال)، یعنی دا اوشايي چه هغه کوم حديث دې کوم چه يو صحابي د مجوسی نه روایت کوی او هغه مجوسی ئې د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه روایت کوی.

(۱): تقرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۳۷۱، ۹۷۲۳، ۱۵۶۱۳) (ضعيف الإسناد)

بَاب فِي التَّشْدِيدِ فِي جَبَايَةِ الْجَزِيَّةِ

د جزیه په وصولولو کښې د سختی کولو بیان

جبايت يعنى تحصيل او استخراج، يعنى په جزیه وصول کولو کښې تشدد کول.

[۳۰، ۴۵] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ هِشَامَ بْنَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ وَجَدَ رَجُلًا وَهُوَ عَلَى حِمَصٍ يَشْتَمِسُ نَاسًا مِنَ الْقِبْطِ فِي آدَاءِ الْجَزِيَّةِ، فَقَالَ: مَا هَذَا؟ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ اللَّهَ يُعَذِّبُ الَّذِينَ يُعَذِّبُونَ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا".

د عروه بن زبير نه روایت دې فرمائی چه هشام بن حکیم بن حزام یو سړی لره څوک چه د خمس عامل وو اولیدو چه د جزئی دوصول کولو دپاره ئې یو څو قبطي کسان په غرمو اودرولو هشام او وئیل داخه دی؟ ما ذنبی علیه السلام نه اوریدلي دي چه فرمائیل ئې یقینا الله تعالی په هغه خلقو عذاب نازله وي څوک چه بې وجې خلق په دنیا کښې په عذاب کښې مبتلا کوي.

قوله: «عن عروة بن الزبير ان هشام بن حكيم وجد رجلا وهو على حمص يشمس ناسا من القبط في اداء الجزية»: عروه وائی: د حکیم بن حزام ځوی، هشام یو سړی لره چه د حمص امیر وو په داسې حال کښې بیا موندلو چه هغه څه خلق په گرمی کښې اودرول د جزیه د ادا کولو په باره گڼ، نو په دې باندې هشام بن حکیم نکیر او کړو چه دا څه کیږي، او بیا ئې حدیث واورولو د رسول الله ﷺ چه هغوی به فرمائیل الله پاک به عذاب ورکړي هغه خلقو ته کوم چه په دنیا کښې نورو ته عذاب ورکوي.

په دې روایت کښې «ناسا من القبط» دې او دا واقعه ده د ملک شام، قبطیان هلته چرته وو هغوی خو به مصریان وو، لهذا په روایت کښې تحریف دې ځکه چه په مسلم کښې د دې په ځانې «اناس من الانباط» دې نو د نبط په ځانې قبط شو، او نبطی عجمی کاشتکار ته وائی. والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى

بَاب فِي تَعْشِيرِ أَهْلِ الدِّمَةِ إِذَا اخْتَلَفُوا^(۱) بِالتَّجَارَاتِ

کله چه ذمی کافر د تجارت مال وړی دهغه نه دې لسمه حصه په محصول کښې واخستلې شي

د مسئله مذکوره الباب تشریح او تنقیح:

يعنى ذميان خلق چه کله مال تجارت اخستلو سره په عاشر باندې تیریري د هغوی نه د عشر اخستلو په بیان کښې (۲) خان پوهول پکار دی چه د ذمیانو په حق کښې نه په سرو او سپینو زرو کښې زکوة شته نه د زمکې په پیداوار کښې عشر، بلکه د دوی نه به صرف جزیه

(۱) صحیح مسلم لالبر والصله ۲۳ (۲۶۱۳)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۳۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۰۴، ۴۶۸) (صحیح)

(۲) اختلاف په معنی د تلور اتلو، قال تعالی ان في اختلاف الليل والنهار لايات لاولي الالباب

(۳) ففي الموطاء قال مالك: وليس علي اهل الذمة ولا علي المجوس في نخلهم ولا كرد مهم ولا زروعهم ولا مواشيهم صلقة لان الصدقة اتما وضعت علي المسلمين تطهيرا لهم، ما كانوا يبلد هم الذي صالحوا عليه الا ان يتجروا في بلاد المسلمين ويختلفوا فيه فيؤخذهم مهم العشر فيما يريدون من التجارات أهم ملخصا (اوجز ۲۶۸۳)

اخستلې شی چه په هغې کښې د ذلت او عاجزۍ معنی موندلې شی. ﴿وقال الله تعالى حتى يعطوا الجزية عن يد وهم صاغرون﴾ او زکوة او عشر صرف د مسلمانانو نه اخستلې شی ځکه چه دا دواړه عبادتونه دي. او د دې نه مقصود تطهير دې ﴿قال الله تعالى خذ من اموالهم صدقة تطهرهم، وقال ﷺ ان الله لم يفرض الزکوة الا ليطيب ما بقى من اموالکم﴾ رواه ابوداؤد، او کفار د تطهير قابل نه دي، ﴿قال الله تعالى انما المشركون نجس﴾ خو دا ټول په هغه صورت کښې دي چه تر څو هغه ذمی په هغه مقام کښې او کلی کښې او سیرې کوم ځانې کښې چه هغوی ته د اوسیدو اجازت ورکړې شوي دي او په کوم باندې چه صلح شوي ده، او که دا خلق د هغه ښهر نه یا د هغه مقام نه بل ملک یا ښهر ته د مال تجارت دپاره سفر کوي او تلل راتلل کوي نو په دې صورت کښې به د هغوی نه په مال تجارت کښې عشر اخستلې شی، په دې باب کښې هم د دې بیان دي چه کله دا خلق مال تجارت اخستلو سره د یو ملک نه بل ملک ته لاړ شی نو د هغوی نه به په دې صورت کښې څه اخستلې شی عشر یا نصف عشر وغيره ذلک من الشرائط.

په هدایة کښې دي: ﴿باب فیمن یمر علی العاشر، والعاشر من نصبه الامام علی الطريق لیاخذ الصدقات من التجار﴾ او په هدایة کښې دا هم دي چه کله سوداگر په عاشر باندې مال تجارت ورتیر کړي او هغه دا او اټی چه لا تر اوسه پورې حولان حول نه دي شوي یا دا چه په ما باندې دین دي او په هغې باندې هغه قسم او خوری نو د هغه تصدیق به کولې شی او هم دغه شان که هغه داسې او اټی چه ما د دې زکوة په ښار کښې فقیرانو ته خپله ورکړې دي، بیا لیکي چه د مسلم نه به عاشر ربع واخلی، او د ذمی نه به نصف العشر او د حربی نه عشر، او دغه شان دا هم پکښې دي چه د ذمی او مسلمان نه دي نصف العشر او ربع العشر هغه وخت واخلستلې شی، چه په اندازه د نصاب مال تجارت یوسی، او د حربی په باره کښې دا دي چه هلته هم د نصاب اعتبار دي مگر دا چه هغه خلق د مسلمانانو نه د نصاب نه د کم نه عشر اخلی نو بیا به مونږ د هغوی سره هم دغه شان معامله کوو، هم دغه شان که هغوی مونږ نه د عشر نه کم اخلی نصف العشر یا ربع العشر نو بیا به مونږ هغوی سره هم دغه شان کوو، که هغوی د مسلمان نه ټول مال اخلی نو بیا به مونږ داسې نه کوو ځکه چه دا عذر دي او که هغوی ټي زمونږ نه بالکل نه اخلی نو بیا به مونږ هم نه اخلو ﴿لانا احق بمکارم الاخلاق﴾ (هدایة ۱/۱۸۹)

د توجمة الباب والامسئله کښې مذاهب ائمه:

او د مذاهب اربعة خلاصه په دې کښې دا ده چه د احنافو او حنابله په نزد به نصف العشر اخستلې شی په شرط د نصاب یو ځل په کال کښ، او د امام مالک رضی الله عنه په نزد به عشر اخستلې شی کله چه په عاشر باندې تیریري او نه به د کال تیریدو شرط وی او نه د نصاب، او د امام مالک رضی الله عنه په نزد به په عام مالونو کښې هم صرف عشر اخستلې شی په ټولو ځایونو کښ، خو صرف په مکه مکرمه او مدینه طیبه کښې په بعض خوراگونو په باره کښې (غنم او تیل) د هغوی یو روایت دي چه په دې کښې به نصف عشر اخستلې شی، پس په موطاء کښې دي امام مالک رضی الله عنه په خپل سند سره نقل کوي د عمر بن الخطاب رضی الله عنه نه

﴿كان ياخذ من النبط من الحنطة والزيت نصف العشر يريد بذلك ان يكثر الحمل الى المدينة وياخذ من القطنية (١) يعني عمر رضي الله عنه د حنطة او زيت په باره كښې د عشر په خائي نصف عشر اخستلو چه سوداگر خلق هغې لره په كشرت سره مدينې طبيې ته راوړي او بيا هلته ارزاني شي، او د باقى د غلونه يعنى هغه غلې كومي چه پخولې شي لكه مسور او چنره او لوييا د دې نه به ئې عشر اخستلو او د زيت او د حنطة تخصيص ئې په دې وجه كړې وو ﴾ لانهما معظم طعامهم ﴾ يعنى چونكه دا خيزونه عام طور سره خوړلې شي او د خلقو دې طرف ته حاجت زيات دې، او د امام شافعي رضي الله عنه مسلك هم د دې په باره كښې دا دې چه د اهل ذمه نه به سوا د جزيه او سوا د هغې نه چه په هغې باندي مصالحت شوې وي صدقه زكوة او عشر وغيره هيڅ نه شي اخستلې يعنى په مال تجارت كښ، مگر دا چه هغوى د غير حجاز نه هغه مال تجارت حجاز ته راوړي، نو اول خو دې هغوى ته حجاز ته د داخليدو اجازت ورنكړې شي، او كه وركړې شي نو بغير د معاوضې نه نه، عشر يا نصف العشر چه څه هم د امام رائې وي، او اجازت دې هم په حجاز كښې صرف د درې ورځو وركړې شي د هغې نه زائد نه. (اوجز ۳/ ۲۷۰)

[۳۰ ۴۶] (١) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ حَرْبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي أُبَيٍّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّمَا الْعَشُورُ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى وَلَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ عَشُورٌ".

ابو امه دخپل پلارنه روايت كوي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائيلى دى چه د تجارت په مال كښې ديهوديانو اونصرانيانو نه به لسمه حصه اخستلى شي اود مسلمانانو نه به نه شي اخستلې.
﴿قال رسول الله صلی الله علیه و آله انما العشور على اليهود والنصارى وليس على المسلمين عشور﴾

شرح الحديث :

عشور جمع ده د عشر او په دې باره كښې رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائي چه په مسلمانانو باندي عشر نشته بلكه په يهودو او نصارى باندي دې په دې باندي دا اشكال واردېږي چه په كتاب الزكوة كښې دا تير شوې دى چه د صدقې دوه قسمونه دى، يو هغه چه په نقدو (يعنى سرو او سپينو زرو) او مال تجارت كښې واجب كيږي چه هغې ته زكوة وائي چه د هغې مقدار اربع العشر دې، او قسم ثانی هغه چه د زمكې په پيداوار كښې واجب كيږي چه د هغې مقدار عشر او نصف العشر دې، نو بيا دلته د عشر د مسلمانانو نه څنگه نفى كولې شي، د دې جواب دا دې چه د مسلمانانو په ذمه چه كوم عشر واجب دې د هغې نه مراد د زمكې د غلونه عشر دې يعنى د زمكې د پيداوار، او دلته په حديث كښې د مال تجارت عشر مراد دې كوم چه د اهل ذمه نه اخستلې شي يا دې دلته داسې اوئيلى شي چه د عشر نه مراد خراج دې لكه چه په روستو حديث كښې راځي، بيا د يو توجيه حاجت نشته.

١، بكسر القاف وضمها لغة كالعَدَس والحَمَص واللوييا ولارزد والسَّمْسَم وغير ذلك العشر (اوجز ۳/ ۲۷۱)
٢: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۴۶، ۱۸۴۸۹)، وقد أخرجه: مسند أحمد (۳/ ۴۷۴، ۳۲۲/۴) (ضعيف)

د دې حديث په سند كښې ډير اختلاف او اضطراب دې، كوم چه خپله د ابوداؤد په روايتونو كښې هم دې چه د هغې تفصيل حضرت په بدل كښې ليكلې دې، چه د هغې نه دا خبره معلوميزې چه د دې حديث راوي صحابي مجهول دې.

[۳۰۴۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمُحَارِبِ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ حَرْبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَعْنَاهُ، قَالَ: خَرَجَ مَكَانَ الْعُشُورِ.

حرب بن عبیدالله د نبی ﷺ نه د تیر روایت. په شان روایت بیان کړې دې مگر په دې روایت کښې د عشور په ځای باندې خراج ذکر شوي دې.

[۳۰۴۸] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَطَاءِ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَكْرَيْنَ وَأَيْلٍ، عَنْ خَالِهِ، قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغْشِرُ قَوْمِي، قَالَ: "إِنَّمَا الْعُشُورُ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى".

بکر بن وائل د خپل مامانه روایت کوی فرمائی چه ماعرض او کړو ای دالله رسوله ایادخپل قوم نه لسمه حصه واخلم؟ نبی ﷺ او فرمایل نه لسمه حصه خو په یهودیانو او نصرانیانو باندې وي.

[۳۰۴۹] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْبَرَّازُ، حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنِ حَرْبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمِيرِ الثَّقَفِيِّ، عَنْ جَدِّهِ رَجُلٍ مِنْ بَنِي تَغْلِبَ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْلَمْتُ وَعَلَّمَنِي الْإِسْلَامَ وَعَلَّمَنِي كَيْفَ أَخَذَ الصَّدَقَةَ مِنْ قَوْمِي مِمَّنْ أَسْلَمَ، ثُمَّ رَجَعْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كُلُّ مَا عَلَّمْتَنِي قَدْ حَفِظْتُهُ إِلَّا الصَّدَقَةَ أَفَأَغْشِرُهُمْ؟ قَالَ: "لَا إِنَّمَا الْعُشُورُ عَلَى النَّصَارَى وَالْيَهُودِ".

د عمير ثقفی (بنو تغلب والا) نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم او اسلام مي قبول کړو او هغه راته د اسلام د احکامو تعليم را کړو او زما په قوم کښې چه څوک مسلمانان شوي وو دهغوی نه ئې د صدقې اخستلو تعليم ئې هم را کړو، کله چه ورته بيادوباره راغلم نوماعرض او کړو ای دالله رسوله څه چه راته تانبودلي وو هغه ټول مي باد دې مگر صدقه مي ياده نه ده ايازه دخپل قوم نه لسمه حصه واخلم نبی ﷺ او فرمایل نه لسمه حصه خو په يهودو اونصاري باندې ده.

[۳۰۵۰] (۴) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَيْسَى، حَدَّثَنَا أَشْعَثُ بْنُ شُعْبَةَ، حَدَّثَنَا أَرْطَاةُ بْنُ الْمُنْذِرِ، قَالَ: سَمِعْتُ حَكِيمَ بْنَ عَمِيرِ أَبِي الْأَخْوِصِ، يُحَدِّثُ عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ السُّلَمِيِّ، قَالَ: نَزَلْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ وَمَعَهُ مِنْ مَعَهُ مِنْ أَضْحَايِهِ، وَكَانَ صَاحِبُ خَيْبَرَ رَجُلًا مَارِدًا مُنْكَرًا فَأَقْبَلَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ أَلَا تَذُبُّنَا وَتَأْمُرُنَا وَتَأْمُرُنَا بِأَنْ نَأْكُلَ أَمْرَانَا وَتَهْرَبُوا نِسَاءَنَا، فَغَضِبَ يَعْزِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: "يَا ابْنَ عَوْفٍ ارْكَبْ فَرَسَكَ ثُمَّ نَادِ الْإِنَّ الْجَنَّةَ لَا تَحْمِلُ إِلَّا الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْ اجْتَمِعُوا لِلصَّلَاةِ، قَالَ: فَاجْتَمَعُوا، ثُمَّ صَلَّى بِهِمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَامَ فَقَالَ: أَيَحْسَبُ أَحَدُكُمْ مَتَّكِنًا عَلَى أَرْكَبِهِ قَدْ بَطَّنَ أَنْ اللَّهُ لَمْ يُخْرِمْ شَيْئًا إِلَّا مَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ إِلَّا

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۴۶، ۱۸۴۸۹) (ضعيف)

(۲): انظر حديث رقم: (۳۰۴۶)، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۴۶، ۱۸۴۸۹) (ضعيف)

(۳): انظر حديث رقم: (۳۰۴۶)، (تحفة الأشراف: ۱۵۵۴۶، ۱۸۴۸۹) (ضعيف)

(۴): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۸۸۶) (ضعيف)

وَأَنَّى وَاللَّهِ قَدْ وَعَظْتُ وَأَمَرْتُ وَنَهَيْتُ عَنْ أَشْيَاءَ إِنَّمَا لِيَهْلُ الْقُرْآنُ أَوْ أَكْثَرُ، وَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ لَمْ يُجِلْ لَكُمْ أَنْ تَدْخُلُوا بَيْتَ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا بِأَذْنٍ وَلَا تَضْرِبَ نِسَائِهِمْ وَلَا أَكُلْ ثِمَارَهُمْ إِذَا أَعْطَاكُمْ الَّذِي عَلَيْهِمْ".

دعرباض بن ساریه سلمی رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه دنبی صلی اللہ علیہ وسلم سره خیبر ته راغلو اودهغه سره په صحابه کرامو کښې هغه څوک وو څوک چه ورسره وو او دخیبر والا مشریو سرکش اورشیریر سرې وو هغه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته راغې اوونې وئیل ای محمد آیا ستاسودپاره جائز دي چه زمونږه خره ذبح کړئ اوزمونږه میوي اوخوری او زمونږه ښځې قتل کړئ نبی صلی اللہ علیہ وسلم چه دا واوریدل نوغصه شو اوونې فرمائیل ای عبدالرحمن بن عوف په خپل اس باندي سور لار شه او ددې خبرې اعلان اوکړه چه جنت حلال نه دي مگرد مسلمانانو دپاره او تاسو ټول مونځ ته راجمع شی هرکله چه هغوی راجمع شول نونبی صلی اللہ علیہ وسلم مونځ ورکړو اودمونځ نه پس اودریدو اوونې فرمائیل ایاهگمان کوي یوکس ستاسو په هغه وخت کښې چه ډډه ئې وهلي وي تکبه خپلې ته اوداهگمان کوي چه الله تعالی څه شی نه دي حرام کړې مگرهغه څیزونه دی چه په دې قران کښې دي خبردار واورئ ماتاسوته نصیحت اوکړو اودیوڅوڅوڅو حکم مې درته اوکړو اودیوڅوڅوکارونونه ئې منع کړئ اوهغه هغه خبرې دي کومې چه په دې قران کښې دي یاددې نه زیاتي دي، یقینا الله تعالی ستاسو دپاره داهل کتابوکورونوته دهغوی داجازت نه بغیرتلل نه دی حرام کړي اونه ئې دهغوی دښځو وژل حلال کړی دی اونه ئې دهغود میوو خوړل حلال کړی دی مگرهغه کوم چه هغوی تاسوته درکوي اوهغه دهغوی په ذمه وی (یعنی جزئیه).

﴿ عن العریاض بن ساریة السلمی رضی اللہ عنہ قال نزلنا مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم خیبر ومعه من اصحابه وكان صاحب خیبر رجلا ماردا منکرا فاقبل الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال یا محمد صلی اللہ علیہ وسلم الخ ﴾

مضمون د حدیث :

مضمون د حدیث دا دي چه عرباض بن ساریة فرمائی چه مونږ د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره وو او د هغوی سره صحابه کرام رضی اللہ عنہم هم وو نو یوه ورځ مو د خیبر سردار سره ملاقات اوشو چه ډیر سخت طبیعت والا وو هغه زمونږ په لیدو باندي رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته متوجه شو او وې وئیل ای محمد صلی اللہ علیہ وسلم آیا ستاسو دپاره دا جائز دی چه زمونږ څاروی ذبح کړئ، او زمونږ د باغونو میوې څنگه چه غواری اوخوری، اوزمونږ زنانه اوونې؟ (بعض مسلمانانو به

د دې قسم حرکت او د هغوی په مالونو کښې بې احتیاطی کړې وی) رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د هغه په خبره اوریدو سره خاموش پاتې شو او گویا د هغه اعتراض ئې برحق اوگنرلو او په داسې کونکو باندي رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته ډیر غصه ورغله، او رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم یو صحابی (غالباً عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ) ته وفرمائیل چه لار شه او په آس باندي سور دا اعلان اوکړه ﴿ ان الجنة لا تحل الا لمومن ﴾ چه جنت حلال نه دي مگرد هم هغه مسلمان دپاره چه امانت دار وی، او دا اعلان ئې هم پرې اوکړو چه د مانځه وخت نزدې دي ټول جمع شی، پس ټول جمع شو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ټولو ته مونځ ورکړو او د مانځه نه پس اودریدو او دا خطبه ئې

او فرمائیله « ایحسب احدکم متکنا علی اریکته » (۱) آیا په تاسو کښي بعض خلق داسې دی چه په خپل تخت باندي ناست دی او تکیه ئې وهلي ده او وائی یا دا گنډی چه الله پاک هیڅ خیزنه دې حرام کړې سوا دهغه حرامو خیزونو نه کوم چه په قرآن کریم کښي ذکر دی پوهه شی قسم په الله ما تاسو ته د ډیرو خیزونو حکم درکړې دې او د ډیرو خیزونو نه مې منع کړې یئ او د دې قسم خیزونه هم په قرآن کښي د مذکور برابر دی او د دې نه زیات هم دی او په یو روایت کښي دی « وان ما حرم رسول الله ﷺ کما حرم الله » یعنی د کوم خیز حرام والې چه د رسول الله ﷺ د ژبې مبارکې نه وی هغه په حرمت کښي په مثل دهغې دې کوم چه په قرآن کښي حرام دې، او بیا رسول الله ﷺ د مثال په طور هغه خیزونه بیان کړل چه په هغې کښي بعض خلقو بې احتیاطی کړې وه کوم چه پورته په حدیث الباب کښي ذکر شوې دی، په تخت باندي تکیه لگول کنایه ده د عیش پرستی او د آخرت د غفلت نه.

[۳۰۵۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَسَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ هِلَالٍ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ ثَقِيفٍ، عَنْ رَجُلَيْنِ جُهَيْنَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَعَلَّكُمْ تَقَاتِلُونَ قَوْمًا قَتَطْهَرُونَ عَلَيْهِمْ فَيَتَّقُونَكُمْ بِأَمْوَالِهِمْ دُونَ أَنْفُسِهِمْ وَأَبْنَائِهِمْ"، قَالَ سَعِيدٌ فِي حَدِيثِهِ: فَيَصَاحُؤُكُمْ عَلَى صَلَاحٍ، ثُمَّ اتَّفَقَا فَلَا تُعَيَّبُوا مِنْهُمْ شَيْئًا فَوْقَ ذَلِكَ فَإِنَّهُ لَا يَصْلُحُ لَكُمْ.

د جهینه قبیلې دیوکس نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی : تاسوبه دیوقوم سره جنگ وکړئ او تاسوبه ورباندي غالب شی او هغوی به ستاسونه خپل خانونه او خپل اولاد په خپل مال باندي بچ کوي، سعیدپه خپل روایت کښي وئیلی دی چه بیابه دوی ستاسو سره په مال صلح وکړي خوتاسوبه دهغوی نه زیات نه وصول کوی ځکه چه ستاسو دپاره ز-ي وصول کول جانزنه دي.

[۳۰۵۲] (۲) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي أَبُو هَنْظَلَةَ الْمَدِينِيُّ، أَنَّ صَفْوَانَ بْنَ سَلِيمٍ، أَخْبَرَنَا عَنْ عِدَّةٍ مِنْ أَهْلِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، عَنْ أَبِيهِمْ دُنْيَةَ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الْأَمَنْ ظَلَمَ مَعَاهِدًا أَوْ انْتَقَصَهُ أَوْ كَلَّفَهُ فَوْقَ طَاقَتِهِ أَوْ أَخَذَ مِنْهُ شَيْئًا بِغَيْرِ طَلِبٍ نَفْسٍ فَأَنَا حَيِّبُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ".

صفوان بن سلیم دصحابه گرامو دیوتعداد ځامنونه روایت نقل کوي چه هغوی د خپلو پلرونونه اوریدلي چه کوم چه دیوبل رشته داران وو هغوی دنبی ﷺ نه روایت نقل کړې دې چه فرمائیلي ئې وو څوک چه په کوم ذي باندي ظلم کوي یادهغه په حق کښي کمی کوي یادهغه د طاقت نه ورته زیات تکلیف ورکوي یادهغه د مرضی نه بغیر دهغه څه شي حاصلوي نوزه به دقیامت په ورځ دهغه دطرف نه جگړه کوم په ورځ دقیامت.

(۱) وفي رواية كما في المشكوة: لا الفين احدكم متكنا علي اريكته ياتيه الامر من امري مما امرت به او نهيت عنه فيقول لا ادري ما وجدنا في كتاب الله اتبعناه وفي رواية: الا يوشك رجل شعبان علي اريكته يقول عليكم بهذا القرآن

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۰۷) (ضعيف)

(۳) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۰۵) (صحيح)

قوله: (ان صفوان بن سليم اخبره عن عدة من ابناء اصحاب رسول الله ﷺ عن ابائهم دنية عن رسول الله ﷺ): دا لفظ دنية مصدر دي په معنی د دنو او منصوب دي بناء بر حاليت، او مطلب دا دي چه د خو صحابه کرامو ﷺ خامن روايت کوي د خپلو پلارانو نه چه د هغوی سره هغه خامن متصل النسب دي، یعنی د هغوی صلیبی اولاد دي.

د حديث مضمون د ذمی په باره کښی دي چه خوک په هغه باندي ظلم او زیاتی کوي یا د هغه د طاقت نه زیات د هغه نه کار اخلی او د هغه یو خیز بغیر د هغه د رضا نه اخلی (فانا حججه يوم القيامة) نو د هغه ذمی د طرف نه به هغه انسان سره مقدمه کونکي د قیامت په ورځ زه پخپله یم.

باب فِي الدِّمِيِّ يُسَلِّمُ فِي بَعْضِ السَّنَةِ هَلْ عَلَيْهِ جِزْيَةٌ

خوک چه د کال په مینځ کښی اسلام قبول کړي د تیر شوي نیم کال جزیه به تری نه شی اخستلی

[۳۰۵۳] (حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْجَرَّاحِ، عَنْ جَرِيرٍ، عَنْ قَابُوسَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ جِزْيَةٌ".

د ابن عباس رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دي: نشته په مسلمان باندي بدله.

شرح الحديث ومذاهب ائمة:

د حديث لفظ (ليس على المسلم جزية) دي په دي باندي دا شبه کيدې شی چه دا خبره خو بديهي ده چه په مسلمان باندي جزیه نه وی بیا د دي د ذکر کولو نه څه فائده؟ غالباً هم په دي وجه وړاندي په روايت کښی راځی چه د سفیان ثوري رضی الله عنه سوال او کړي شو د دي حديث د معنی په باره کښی نو هغوی او فرمائیيل مراد دا دي چه که ذمی د کال په مینځ کښی اسلام راوړی نو اوس به د هغه نه جزیه نه شی اخستلې بلکه ساقط به شی د تیرو میاشتو، په دي کښی د جمهور علماء کرامو او د ائمه ثلاثه مذهب هم دا دي او د امام شافعی رضی الله عنه هم یو روايت هم دغه شان دي، خو معتمد قول د هغوی دا دي چه نه ساقطیږی بلکه اخستلې به شی (کما فی الاوجز عن شرح الاقناع) بعض شوافعو شراح (الخطابی فی المعالم) په دي حديث کښی د جزیه نه مراد خراج اخستلې دي، یعنی که ذمی اسلام قبول کړی او د هغه په لاس کښی خراجی زمکه وه نو د هغه نه به خراج ساقط شی، خو دویمه مسئله دا ده، دا خپله مختلف فیه ده، د احناف په نزد اسلام راوړلو سره د زمکې خراج نه ساقط کیږی، د امام شافعی رضی الله عنه په نزد ساقط کیږی، او په دي کښی د هغوی په نزد تفصیل دي یاتی فی باب الدخول فی ارض الخراج... والحديث اخرجه الترمذی، قاله المنذری.

[۳۰۵۴] (حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، قَالَ: سُئِلَ سُفْيَانُ، عَنْ تَفْسِيرِهِ هَذَا فَقَالَ: إِذَا أَسْلَمَ فَلَا جِزْيَةَ عَلَيْهِ.

محمد بن کثیر وائی د سفیان نه د دي روايت د تفسیر پوس و کړي شونو وئې وئیل د دي مطلب دا دي چه کله خوک اسلام قبول کړي نو جزیه ورباندي نشته.

(۱) سنن الترمذی للزکاة ۱۱ (۶۳۴)، (تحفة الأشراف: ۵۴۰۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۸۵/۱) (ضعيف)
(۲) (صحيح)

باب فِي الإِمَامِ يَقْبَلُ هَذَا يَا الْمُشْرِكِينَ

بیان دهغه امام چه د مشرکانو تحفی قبولی

[۳۰۵] حَدَّثَنَا أَبُو تَوْبَةَ الرَّبِيعُ بْنُ نَافِعٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةَ يَعْنِي ابْنَ سَلَامٍ، عَنْ زَيْنٍ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَلَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ الْهُوزَنِيُّ، قَالَ: لَقِيتُ بِلَالًا مُؤَدِّنَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِحَلَبٍ، فَقُلْتُ: يَا بِلَالُ حَدِّثْنِي كَيْفَ كَانَتْ نَفَقَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: مَا كَانَ لَهُ شَيْءٌ كُنْتُ أَنَا الَّذِي أَلِي ذَلِكَ مِنْهُ مُنْذُ بَعَثَهُ اللَّهُ إِلَى أَنْ تُوْفِيَ وَكَانَ إِذَا آتَاهُ الْإِنْسَانُ مُسْلِمًا فَرَأَاهُ عَارِيًا يَا مَرْنِي فَأَنْطَلِقُ فَأَسْتَقْرِضُ فَأَشْتَرِي لَهُ الْبُرْدَةَ فَأَكْسُوهُ وَأَطْعِمُهُ حَتَّى اعْتَرَضَنِي رَجُلٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، فَقَالَ: يَا بِلَالُ إِنَّ عِنْدِي سَعَةً فَلَا تَسْتَقْرِضُ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا مَنِي فَقَعَلْتُ، فَلَمَّا أَنْ كَانَ ذَاتَ يَوْمٍ تَوَضَّأْتُ ثُمَّ قُمْتُ لِأَوْدِنَ بِالصَّلَاةِ، فَإِذَا الْمُشْرِكُ قَدْ أَقْبَلَ فِي عِصَابَةٍ مِنَ الثَّجَارِ، فَلَمَّا أَنْ رَأَيْتُ قَالَ: يَا حَبِيشُ قُلْتُ يَا لِبَاءَهُ فَجَهَمَنِي، وَقَالَ لِي قَوْلًا غَلِيظًا، وَقَالَ لِي: أَتَدْرِي كَمْ بَيْنَكَ وَبَيْنَ الشَّهِرِ؟ قَالَ: قُلْتُ قَرِيبٌ قَالَ: إِنَّمَا بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ أَرْبَعٌ فَأَخَذَكَ بِالَّذِي عَلَيْكَ فَأَرَدْتُكَ تَرَعِي الْعَنَمَ كَمَا كُنْتُ قَبْلَ ذَلِكَ، فَأَخَذَ فِي نَفْسِي مَا يَأْخُذُ فِي أَنْفُسِ النَّاسِ حَتَّى إِذَا صَلَّيْتُ الْعَمَّةَ رَجَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَهْلِهِ فَاسْتَأْذَنْتُ عَلَيْهِ فَأَذِنَ لِي، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَا بِي أَنْتَ وَأُمِّي إِنَّ الْمُشْرِكَ الَّذِي كُنْتُ أَتَدِينُ مِنْهُ قَالَ لِي: كَذَا وَكَذَا وَلَيْسَ عِنْدَكَ مَا تَقْضِي عَنِّي وَلَا عِنْدِي وَهُوَ فَاضِحِي فَأَذِنَ لِي أَنْ أَبْقِيَ إِلَى بَعْضِ هَوْلَاءِ الْأَحْيَاءِ الَّذِينَ قَدْ أَسْلَمُوا حَتَّى يَرِزُقَ اللَّهُ رَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يَقْضِي عَنِّي، فَخَرَجْتُ حَتَّى إِذَا أَتَيْتُ مَنْزِلِي فَجَعَلْتُ سِنْفِي وَجِرَابِي وَنَعْلِي وَهَجَنِي عِنْدَ رَأْسِي حَتَّى إِذَا انْشَقَّ عَمُودُ الصُّبْحِ الْأَوَّلِ أَرَدْتُ أَنْ أَنْطَلِقَ، فَإِذَا الْإِنْسَانُ يَسْعَى يَدْعُو: يَا بِلَالُ أَجِبْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَنْطَلَقْتُ حَتَّى أَتَيْتُهُ فَإِذَا أَرْبَعٌ رُكَّابٌ مُنَاخَاتٌ عَلَيْهِنَّ أَمْخَاهُنَّ فَاسْتَأْذَنْتُ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَبْشِرْ فَقَدْ جَاءَكَ اللَّهُ بِقَضَائِكَ، ثُمَّ قَالَ: أَلَمْ تَرَ الرُّكَّابَ الْمُنَاخَاتِ الْأَرْبَعِ، فَقُلْتُ: بَلَى فَقَالَ: إِنَّ لَكَ رِقَابَهُنَّ وَمَا عَلَيْهِنَّ فَإِنَّ عَلَيْهِنَّ كِسُوفَةً وَطَعَامًا أَهْدَاهُنَّ إِلَيَّ عَظِيمٌ فَذَكَ فَاقْبِضِيهِنَّ وَأَقْبِضِي دِينَكَ، فَقَعَلْتُ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ ثُمَّ انْطَلَقْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ فِي الْمَسْجِدِ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: مَا فَعَلْتَ مَا قَبْلَكَ؟ قُلْتُ: قَدْ قَضَيْتُ اللَّهُ كُلَّ شَيْءٍ كَانَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَبْقَ شَيْءٌ، قَالَ: أَفْضَلَ شَيْءٍ قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: انْظُرْ أَنْ تُرِيحَنِي مِنْهُ فَإِنِّي لَسْتُ بِدَاخِلٍ عَلَى أَحَدٍ مِنْ أَهْلِي حَتَّى تُرِيحَنِي مِنْهُ، فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعَمَّةَ دَعَانِي فَقَالَ: مَا فَعَلْتَ الَّذِي قَبْلَكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: هُوَ مَعِيَ لَمْ يَأْتِنَا أَحَدٌ، فَبَاتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ وَقَصَّ الْحَدِيثَ حَتَّى إِذَا صَلَّى الْعَمَّةَ يَعْنِي مِنَ الْعَمَةِ دَعَانِي، قَالَ: مَا فَعَلْتَ الَّذِي قَبْلَكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: قَدْ أَرَاكَ اللَّهُ مِنْهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَكَبَّرَ وَحَمِدَ اللَّهُ شَفَقًا مِنْ أَنْ يُدْرِكَهُ الْمَوْتُ وَعِنْدَهُ ذَلِكَ"، ثُمَّ اتَّبَعْتُهُ حَتَّى إِذَا جَاءَ أَزْوَاجُهُ، فَسَلَّمَ عَلَى امْرَأَةٍ امْرَأَةٍ حَتَّى أَتَى مَبِيتَهُ فَبَدَّ الَّذِي سَأَلْتَنِي عَنْهُ.

دعبدالله هوزني نه روايت دې فرمائي چه زما په حلب كښې دښې عليه السلام دمودن بلاله سره ملاقات اوشو ما ورته اووئيل اي بلال دا راته بيان كړه چه نبي عليه السلام به خه رنگي خرچ كولو؟ بلال اووئيل دښې عليه السلام سره چه كوم مال وو دهغه وخت نه چه الله ده ته نبوت وركړې وو تروفات كيدو پورې كله چه به ورته كوم مسلمان راغې اونبي عليه السلام به بربند اوليدو نوماته به ئې حكم او كړو اوزه به لارم په قرضو به مې ورله خادر واخستو او ورپه مې كړو هغه به هغه كپړي واغوستلي او هغه خوراك به ئې وخورلو تردې چه يوه ورځ په مشر كينو كښې

۱: تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۲۰۴۰) (صحیح الإستاذ)

یوکس زما سره ملا و شو او وښي وئیل ای بلال زما سره کافی ډیر مال موجود دې زمانه علاوه دبل چانه قرض مه اخله چنانچه ما به همداسې کول مایوه ورځ اودس او کړو اوداذان دپاره پاڅیدم اوی لیدل چه دغه مشرک دتاجرانو د یوې ډلې سره راغې کله چه ئې زه اولیدلم نو اوښي وئیل ای حبشي ماورته او وئیل جناب هغه سختې کول شروع کړل اوماته ئې بدرد او وئیل اودائې هم راته او وئیل ایا تاته پته ده چه دمیاشتي پوره کیدوته خو ورځې پاتې دي ما او وئیل هو، نیزدي ده یعنی یوڅو ورځې پاتې دي بیا ئې او وئیل اوگوره په میاشت کېني صرف څلور ورځې پاتې دي زه به ستانه اخیل قرض اخلم زه به تاداسې کړم لکه څرنگ چه به تامخکېني گډې څرولې بلال وائی په دې خبره باندي زما په زړه کېني دومره افسوس راغې څومره چه خلق افسوس کوي تردې چه کله زه دما سخوتن دمونځ نه فارغ شوم او نبی ﷺ خپل کور ته لاړو نوماهم ترې دورتلو اجازت وغوښتو ماته ئې اجازت را کړو ماعرض او کړو ای دالله رسوله ستانه دې زما مور او پلار قربان شي دکوم مشرک نه چه به ماقرض اخستو هغه راسره جنگ او کړو اوماته ئې بدرد او وئیل اوستاسره خودومره مال نشته چه زما قرضه پر اداسي اونه زما سره دومره مال موجود دې چه دقرض ادا کولو دپاره پوره وي او هغه کس به ماسوا کړي ماته اجازت را کړه چه زه په قبائلو کېني چاته وروتنستم په هغه خلقو کېني چاچه اسلام قبول کړې دې اودمدینې نه بهراوسیري تردې پورې الله تعالی خپل رسول ته دومره مال ورکړی په څومره مال چه زما قرضه ادا کیري ددې خبرې په کولو سره زه راروان شوم او خپل کور ته راورسیدم اوماتوره موذي پیزار اودال دبالح سره کیښودل کله چه صبح صادق اوختو نوماد تختید و اراده کړې وه گورم چه په دې وخت کېني یوسرې په منډه راغې او وښي وئیل ای بلال نبی ﷺ دي غواړی چنانچه زه روان شوم اودهغه په خدمت کېني حاضر شوم ماچه اوکتل نوهلته څلور اوبښې ترلې شوي پرته وي مادداخلیدو دپاره اجازت وغوښتو نبی ﷺ اوفرمائیل ای بلاله حوشحاله شه الله تعالی ستادقرض ادا کولو دپاره غیبی مال رالیږلې دې نبی ﷺ ددې نه پس اوفرمائیل ایا تا اونه لیدل هغه څلور اوبښان ماعرض او کړو ولی نه نبی ﷺ اوفرمائیل ته دغه څاروی هم واخله او هغه سامان هم واخله کوم چه په دوی باندي بار شوي دې اوته هغه هم واخله کومه کپړه اوغله چه په دې اوبښانو باندي پرته ده دامانه دفدک امیر رالیږلې دي ته دا واخله او خپله قرضه په دې باندي ادا کړه ماه داسې او کړل، بیا بلال اوفرمائیل زه جومات ته حاضر شوم او اومي لیدل چه نبی ﷺ ناست دې اسلام او کړو هغه اوفرمائیل تاته دهغه مال نه څه فائده حاصله شوه؟ ما او وئیل الله تعالی هغه ټول قرض ادا کړو کوم چه دهغه درسول په ذمه وو شیخ قرضه باقی پاتې نشوه نبی ﷺ اوفرمائیل ایا په دې مال کېني څه باقی پاتې شوي دي ما عرض او کړو هو ماته ئې اوفرمائیل کوم مال چه باقی پاتې شوې دهغه په جلتی سره خرچ کړه زه ترهغې پورې پورته نه ځم ترڅوچه تا ماته اطمینان نه وی را کړې کله چه نبی ﷺ دما سخوتن مونځ او کړو ماته ئې رایاد کړل او وښي فرمائیل هغه مال څه شو کوم چه ستاسره باقی پاتې شوې دې؟ ما ورته او وئیل هغه زما سره دې ماته هیڅ څوک راغی چه ما ورته دا ورکړې وي یعنی مستحق، ملا و نه شو بیا نبی ﷺ دشیپې په جومات کېني قیام

او کړو راوي وائی هرکله چه بله شپه د ماسخوتن دمونځ نه فارغ شو نوزه ئې راوغوښتم اوماته ئې او فرمائیل هغه مال څنگه شو کوم چه ستاسره باقی پاتې شوې وو؟ معارض او کړو ای دالله رسوله الله تعالی ته دهغه نه مطمئن کړي نبی ﷺ چه دا واوریدل نو تکبیر ئې او وئیلو دالله تعالی شکرئې ادا کړو او حمدئې بیان کړو چه هغه ذات ماته دمال نه نجات را کړو، دنبی ﷺ سره دا اندیخنه وه هسی نه چه زه وفات شم اودا مال زما سره موجود پاتې شي بیازه په هغه پسي روان وم اونبی ﷺ خپلو بیبیانو ته ورغې او هري یوې ته ئې سلام او کړو تردې چه خپل ارام گاه ته ورسیدو ای عبدالله دا هغه خبره ده دکوي چه تا زمانه تپوس کړې دي.

﴿ حدیثی عبدالله الهوزنی قال لقیته بلالا مؤذن رسول الله ﷺ یحلب فقلت یا بلال حدیثی کیف کانت نفقة رسول الله ﷺ قال ما کان له شیء کنت انا الذی الی ذلک منه منذ بعثه الله تعالی حتی توفی ﷺ الحدیث ﴾

د رسول الله ﷺ د معیشت او د وخت تیروولو په باره کښې یو اوږد حدیث

دا یو اوږد حدیث دی چه د هغې مضمون دا دی عبدالله الهوزنی وائی چه د رسول الله ﷺ د مؤذن سیدنا بلال رضی الله عنیه سره زما ملاقات په حلب ښهر کښې اوشو. (بلال رضی الله عنیه د رسول الله ﷺ د وفات نه پس د مدینې طیبې نه شام ته تلې وو تردې چه وفات ئې هم هلته اوشو) ما اووې چه نن خو راته د رسول الله ﷺ د کور د اخراجاتو کیفیت بیان کړئ، بلال رضی الله عنیه د هغه په درخواست باندې بیانول شروع کړل، او وې فرمائیل چه د رسول الله ﷺ سره به پیسې وغیره نه وې، او د دې کارونو ذمه دار هم زه اوم ﴿ کنت انا الذی الی ﴾ دا د متکلم صیغه ده یعنی د رسول الله ﷺ د ضروریاتو لین دین او د اخستلو او خرڅولو، د رسول الله ﷺ د نبوت نه ترد وفات پورې، د رسول الله ﷺ دا حال وو چه کله به یو مسلمان هغوی ته راغلو او رسول الله ﷺ به هغه بریند اولیدو نو هغوی به ماته حکم او کړو په دې باره کښ، نو ما به د چا نه قرض اخستلو سره د هغه دپاره څادر واخستلو او خوراک به مې پرې هم او کړلو (دا د هغوی د یوې ورځې واقعه نه ده بلکه مطلب ئې دا ده چه هغوی سره به همیشه هم دغه شان کیدل چه ما به د چا نه قرض واخستلو او د ضرورت مندو ضرورتونه به مې د رسول الله ﷺ په فرمان باندې پوره کول، یوه ورځ داسې اوشوه چه یو مشرک سوداگر ماته راغلو هغه ماته اووې چه ای بلاله د چا نه قرض مه اخله، ما سره کافی گنجائش دی صرف زما نه اخله، ما هم دغه شان کول، د یوې ورځې خبره ده چه د اودس کولو نه پس آذان ته اودریدم نو او مې کتل چه ناڅاپه هغه مشرک د څو سوداگرو سره زما مخې ته راغلو او ماته کتلو سره ئې او وئیل ﴿ یا حبشی! قلت یا لثاه ﴾ (د لیبیک په شان د غائب ضمیر سره هم استعمالیږي) او په دې وینا سره ئې ما ته ډیرې خبرې او کړې او وې وئیل چه تاته معلومه هم ده چه په میاشت پوره کیدو کښې څومره ورځې باقی پاتې شوې؟ ما اووې او پوره کیدو والا ده، وې وئیل صرف څلور ورځې باقی پاتې شوې دی، وې وئیل که په څلورو ورځو کښې دې ادا نه کړو، نو د هغې په بدله کښې به زه تا اونیسم او په تا باندې به بیزي څروم

څنگه چه به دي مخکنې خړولي، (وراندې سيدنا بلال رضي الله عنه فرمائي) چه هغه وخت زما زړه کښې داسې تنگ والې او پريشانې پيدا شوه کومه چه خلقو ته په داسې موقعو باندي وي، تردي چه کله زه د ماسخوتن د مانځه نه فارغ شوم او رسول الله ﷺ خپل کور ته تشریف يورو، نو ما اجازت واخستلو او هغوی ته حاضر شوم او عرض مي اوکړو يا رسول الله ﷺ زما مور پلار دي په تاسو باندي قربان وي هغه مشرک د چا نه چه ما قرض اخستلو هغه ما ته نن داسې داسې وټيلې دي، او نه خو تاسو سره د ادا کولو دپاره څه شته او نه ماسره، (وهو فاضحي) دا د اسم فاعل صيغه ده چه د يائي متکلم طرف ته مضاف شوي ده يعني هغه به ما نور هم رسوا کړي (که په وخت باندي د ادا کولو دپاره څه اونشو) لهذا ماته اجازت را کړې چه د مدينې طبيې خواؤشا چه کومو بعض قبيلو اسلام راوړې دي هلته او تختم، ترڅو چه الله پاک تاسو ته څه درکړي هغه خيز په کوم سره چه قرض ادا شي (رسول الله ﷺ زما په خبره اوريدو باندي خاموش وو) زه د رسول الله ﷺ نه راغلم، او خپل کور ته راتلو سره مي تهيلې، خپلې، توره او ډهال خپل سر ته کيخودل، تردي چه کله صبح صادق شونو ما اراده اوکړه چه په سفر روان شم، هم دي دوران کښې يو سړي ما ته په منډه راغلو چه رسول الله ﷺ دي غواړي، زه د هغوی طرف ته روان شوم، په لاره کښې ما څلور اوبڼې اوليدي چه په هغې باندي سامان تړلې شوي وو، زه اجازت اخستلو سره د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شوم، رسول الله ﷺ زما په ليدو سره او فرمائيل خوشحاله شه، الله پاک ستا د قرض د ادا کولو انتظام او فرمائيلو او وي فرمائيل (الم تر الکرکات المناجات الاربع) آيا تا څلور اوبڼې ناستې او نه ليدې ما عرض اوکړو جي او مي ليدې، رسول الله ﷺ او فرمائيل دا اوبڼې سره د دي سامانونو کوم چه په هغې باندي دي ستا په حواله دي، او رسول الله ﷺ دا هم او فرمائيل چه په دي اوبڼو باندي کپړه او غله هم بار ده (اهداهن الي عظيم فذک) د فذک يهودو کښې يو لوڼې سړي دا هديه ماته راليرلې ده، د دي په ذريعه خپل قرض ادا کړه، هغوی فرمائي چه ما هم دغه شان اوکړل، بعض سامان مي خرڅ اوکړو او خپل قرض مي پرې ادا کړو، د دي نه پس په روايت کښې دي (فذكر الحديث) چه د هغې نه معلوميري چه دلته نور هم څه مضمون وو کوم چه مصنف رضي الله عنه د اختصار په وجه حذف کړو، حضرت شيخ په بذل کښې د کنز العمال په حوالې سره د دي قصې باقي حصه نقل کړې ده، بيا (يعنی د قرض د ادا کولو نه پس) زه جمات ته لارم نو اومي کتل چه رسول الله ﷺ تشریف فرما دي ما سلام عرض کړو؟ رسول الله ﷺ د قرض په باره کښې تپوس اوکړو، ما عرض اوکړو چه الله پاک قرض پوره ادا کړو، رسول الله ﷺ تپوس اوکړو څه مال بچ شوي دي؟ ما عرض اوکړو اوجي بچ شوي دي. رسول الله ﷺ او فرمائيل گوره په دي باقي باندي ماته آرام راکړه، ځکه چه زه به ترهغه وخته پورې خپلو کور والو کښې يو کړه هم نه ورځم تردي چه ته ما ته د هغې نه آرام راکړې بيا چه کله ما بنام شو او رسول الله ﷺ د ماسخوتن د مانځه نه پس فارغ شو، نو هغوی زه راغوبستلم او تپوس ئې رانه اوکړو چه د باقي مال څه اوشو؟ ما عرض اوکړو جي ماسره دي څوک ئې د اخستلو دپاره نه دي راغلي،

پس رسول الله ﷺ دا شپه په جمات کښې تیره کړه، بیا د دویمې شپې د ماسخوتن د مانځه نه فارغ شو نو زه ئې را طلب کړم او تپوس ئې رانه او فرمائیلو، ما عرض او کړو چه الله پاک تاسو ته د هغې نه آرام درکړو، رسول الله ﷺ په دې باندې تکبیر او د الله پاک حمد او وې.

﴿ شفقاً من ان یدرکه الموت وعنده ذلک ﴾ یعنی رسول الله ﷺ د دې خبرې نه ویریدو چه چرته داسې او نه شی چه ماته په دې حال کښې مرگ راشی چه دا مال ماسره وی (د دې نه پس رسول الله ﷺ د ازواج مطهرات کورونو طرف ته لاړو) زه هم په هغوی پسې شاته لاړم نو رسول الله ﷺ ټولو بیبیانو ته تشریف یووړو، هرې یوې بی بی محترمې ته د سلام کولو نه پس د نمبر ځانې ته اورسیدل (په آخر کښې سائل یعنی عبدالله الهوزنی ته فرمائی) ﴿ فسکت عنی رسول الله ﷺ فاغتمزتها ﴾ رسول الله ﷺ زما د ټولې خبرې اوریدو نه پس خاموشی اختیار کړه یعنی د قصې په شروع کښ، پس دا حالت زما خوښ نه شو، غالباً اشاره د رسول الله ﷺ خاموشی ته ده چه رسول الله ﷺ د تسلی یو جمله هم او نه فرمائیله، دا هم د هغوی د تعلق او د مینې خبره ده چه داسې وائی، د دې حدیث د ترجمه الباب سره مطابقت ښکاره دې، اگر چه عظیم فدک یهودی وو، خو یهود هم د مشرکانو په حکم کښې دی ﴿ لقوله تعالی قالت اليهود عزیر ابن الله ﴾ اگر چه په بعض نورو احکامو کښې په مشرکانو او یهودو کښې یقیناً د دې.

[۳۰۵۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ، جَمَعَنِي إِسْنَادُ أَبِي تَوْبَةَ وَحَدِيثِهِ، قَالَ: عِنْدَ قَوْلِهِ مَا يَقْضِي عَنِّي فَسَكَتَ عَنِّي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَغْتَمَزْتَهَا.

محمود بن خالد هم مروان بن محمدنه او هغه د معاویه نه د تیرروایت په شان روایت نقل کړې دې مگر په دې کښې دا اضافه ده چه کله ما نبی ﷺ ته عرض وکړو چه نه زما سره مال شته اونه ستاسره دومره سرمایه شته چه د قرض دپاره پوره شی نو نبی ﷺ ددې په اوریدو سره خاموش پاتې شو او مادامحسوس کړه چه شاید دې زما په خبره باندې خفه شو.

[۳۰۵۷] (۲) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا عَمْرَانُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشَّخِيرِ، عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ، قَالَ: أَهْدَيْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاقَةً، فَقَالَ "أَسْلَمْتَ، فَقُلْتُ: لَا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنِّي نَهَيْتُ عَنْ زَيْدِ الْمُشْرِكِينَ".

د عياض بن حمارنه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ ته مې یوه سورلی هدیة کړه نو هغه راته او فرمائیل ایا اسلام دي قبول کړو؟ ما وویل نه نو نبی ﷺ او فرمائیل زه د مشرکانو د هدی قبلولونه منع کړي شوي يم.

﴿ عن عياض بن حمار قال قال للنبي ﷺ ناقة فقال اسلمت؟ قلت لا فقال النبي ﷺ اني نهيت عن زيد المشركين ﴾

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۰۴۰) (صحيح الإسناد)

۲: سنن الترمذي للسيبر ۲۴ (۱۵۷۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۰۱۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۶۲/۴) (حسن صحيح)

د مشرکینو د هدایا قبولولو او نه قبولولو په باره کښې دوه مختلف احادیث :

دا حدیث د مخکښې حدیث په ظاهره خلاف دې چې په هغې کښې د رسول الله ﷺ د عظیم فدک د هدیې قبولولو ذکر دې، او په دې حدیث کښې رسول الله ﷺ دا فرمائی چې زه د مشرکانو د عطیې د قبولولو نه منع کړې شوې یم، بیهقی رضی الله عنه فرمائی چې «روایات القبول اصح» او هغوی فرمائی، او یا دې دا او ویلې شی چې د منع تعلق د مشرکینو د هدایا سره دې، او د قبول په روایاتو کښې د اهل کتابو د هدایا ذکر دې (۱) او خطابی وائی چې دا د منع روایت منسوخ دې ځکه چې رسول الله ﷺ د ډیرو مشرکانو هدایا قبول کړې دي، لکه مقوقس ماریه قبطیه رضی الله عنها او بغله. او هم دغه شان اکیدر دومه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې هدیه پیش کړه. آه (مختصراً من البذل) هم دغه شان په باب احياء الموات کښې د ملک ايله د هدیه ذکر دې. «فاتینا تبوک فاهدی ملک ايلة الی رسول الله ﷺ بغلة بیضاء» امام ترمذی رضی الله عنه هم په دې تعارض باندې کلام کړې دې، هغوی د نسخ په باره کښې دواړه احتمالات لیکلې دي یعنی په دواړو کښې دې یو ته منسوخ او بل ته ناسخ او ویلې شی. د کتاب الجهاد په آخر کښې «باب فی حمل السلاح الی ارض العدو» په هغې کښې چې کوم حدیث تیر شوې دې، په هغې کښې د مشرک د هدیه رد مذکور دې، فتذکر

والحدیث اخرجه الترمذی وقال حسن صحیح، قاله المنذری

باب فی اقطاع الارضین

د زمکې ورکولو بیان

په بعض نسخو کښې د دې باب نه مخکښې کتاب القطائع لیکلې شوې دې چې د هغې نه معلومېږي چې کتاب الخراج په دې ځانې باندې ختم شو.

د اقطاع او احياء تعريف او په دواړو کښې فرق :

او د دې نه پاس دویم باب راروان دې د «احیاء الموات» دلته مصنف رضی الله عنه ترجمه قائم کړه اقطاع الارضین یعنی ارض ئې مطلقاً ذکر کړو او د احياء اضافت ئې موات طرف ته او کړو، چې د هغې وجه دا ده چې احياء بالاتفاق د ارض موات وی، موات یعنی ارض مباحه غیر مملوکه او هغه بنجر زمکه چې د چا په ملک کښې نه وی، فقهاء کرامو لیکلې دي چې موات هغه زمکه ده چې د چا په ملک کښې نه وی د ښهر نه بهر وی، او د مرافق بلد نه هم نه وی یعنی د ښهر د خلقو هغې سره څه ضرورت او فائده نه وی ترلې شوې. په خلاف د اقطاع چې هغه اکثر خو د ارض موات نه وی او کله د ارض مملوکه نه هم، یعنی امام د خپلې مملوکه زمکې نه اقطاع او کړی یا مملوکه للغير وی او د هغه په اجازت سره امام اقطاع او کړی، دا د احنافو مسلک دې، د امام شافعی رضی الله عنه په نزد د امام دپاره ارض مملوکه لبیت المال اقطاع هم جائز ده، امام نووی رضی الله عنه د دې تصریح کړې ده.

(۱) پس وړاندې چې د کومو هدایا ذکر د خطابی وغیره په کلام کښې راروان دې هغه ټول هدایا د اهل کتاب د طرف نه وې.

اقطاع وائی د وخت د خلیفه د طرف نه د زمکې څه رقبې لره نامزد کول (۱) قطیعه په معنی د جاگیر چه د هغې جمع قطائع راځي، کتاب القطیعة یعنی جاگیر نامه، چه د چا دپاره ئې امام اولیکې او ور ئې کړې، اقطاع او احیاء کښې فرق واضح دې، ځکه چه اقطاع د امام د فعل نوم دې هغه په بل څیز باندي موقوف نه دې، په خلاف د احیاء چه هغه د زمکې د خدمت نوم دې، پس څوک چه د یو ارض مباحه غیر مملوکه خدمت کولو سره هغه آباده کړې هغه به د هغې مالک شی، په دې کښې اختلاف دې چه په احیاء کښې د امام اذن شرط دې که نه، د امام صاحب رضی الله عنه په نزد ضروری دې او د امام شافعی، احمد او صاحبینو رضی الله عنهم په نزد ضروری نه دې، او د امام مالک رضی الله عنه په نزد په موات قریب کښې اذن شرط په بعید کښې نه دی، یعنی کومه چه د آبادی نه زیاته لرې وی.

[۳۰۵۸] (۲) حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مَرْزُوقٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَايِلٍ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَهُ أَرْضًا بِحَضْرَمَوْتَ.

علقمه بن وائل رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله راته دیمن په حضرموت ښار کښې زمکه په طور د ملکیت را کړې وه.

﴿ عن علقمة بن وائل عن ابيه ان النبي ﷺ اقطعه ارضا بحضرموت ﴾

حضرموت د یمن مشهور علاقه ده چه په هغې کښې ډیر ښهرونه دی، حضرموت کښې د اقطاع نه دا نه لازمیږي چه هغه دې خاص په ښهر کښې وی ﴿ اذ لا يجوز عندنا في المصر كما سيأتي قريبا ﴾ والحديث أخرجه الترمذي، قاله المنذري

[۳۰۵۹] (۳) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ مَطَرٍ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَايِلٍ، بِأَسَانِدٍ مِثْلَهُ.

ابو وائل په خپل سند سره د تیرشوی روایت په شان روایت نقل کړې دې.

[۳۰۶۰] (۴) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ فِطْرِ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ عُمَرُ بْنُ حُرَيْثٍ، قَالَ: خَطَلِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَارًا بِالْمَدِينَةِ بِقَوَيْسٍ، وَقَالَ: "أَزِيدُكَ أَزِيدُكَ".

د عمرو بن حريث رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله راته په مدینه کښې دکور دپاره زمکه را کړه او پخپله لینده ئې کرځه راځکله او ئې فرمائیل نوره زمکه هم درکوم (یعنی

۱، په بدائع الصنائع کښې د زمکو اقسام او د احکامو په ضمن کښې لیکلی دی چه امام ته د اقطاع موات حق په دې وجه دی چه دا سبب دې د عمارت دبلاد دپاره ځکه چه د اقطاع نه پس چه کله هغه زمکه په رعایا کښې د چا ملکیت شی نو هغه د هغې خدمت کولو سره هغه آباده او فائده ورکونکې کړې په دې وجه که یو انسان د اقطاع نه پس د هغه زمکې خدمت کولو سره هغې فائده ورکونکې نه کوي نو تر درې کالو پورې به هغه سره هیڅ تعرض نه شی کولی د درې کالو نه پس هم که هغه څه نه کوي نو د هغه نه دې واپس واخستلی شی هغه زمکه به بیا موات شی لهذا اوس امام د هغه زمکې اقطاع د بل سړی دپاره کولی شی (بدل)

۲: سنن الترمذي للأحكام ۳۹ (۱۳۸۱)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۹۹/۶)، سنن الدارمي البيوع ۶۶ (۲۶۵۱) (صحيح)
 ۳: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۳) (صحيح)
 ۴: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۷۱۸) (ضعيف الإسناد)

اوس دومره واخله بیابه ئې زیاته کړم.

شرح الحدیث :

قوله: (عن فطر قال حدثني ابي عن عمرو بن حريث قال خط لي رسول الله ﷺ دارا بالمدينة بقوس وقال ازیدک ازیدک) : عمرو بن حريث رضي الله عنه فرمائی چه رسول الله ﷺ زما دپاره د لیندې په ذریعه نخبنه واچوله په مدینه طیبه کښې د یو کور د زمکې، یعنی د لیندې په ذریعه په زمکه باندي نخبنه اچولو سره او فرمائیل چه دومره حصه ستاسو دپاره ده، د امام دهم دې فعل نوم اقطاع دې، په دې حدیث کښې تصریح ده چه رسول الله ﷺ هغه صحابی ته د یو کور په اندازه زمکه په ښهر کښې ورکړه، د احنافو په نزد اقطاع فی المصر جائز نه دې ځکه چه په ښهر کښې کومه زمکه وی هغه به ضرور د چا ملک وی؟ جواب دا دې : الحدیث ضعیف ضعفه الائمة یرویه فطر بن خلیفة عن ابيه، وابوه مجهول، یا دې د حدیث تاویل او کړې شی یعنی (اقطع برضاء المالک . او ارضا ملکها هو صلی الله علیه وسلم)

د دې حدیث د آخری جملې په شرح کښې دوه احتمالات لیکلې دی یو دا چه دا استفهام دې د رسول الله ﷺ د طرف نه چه رسول الله ﷺ د زمکې د ناپ کولو په وخت هغوی ته او فرمائیل چه دومره مقدار کافی دې یا که نوره اضافه او کړم، او دویم احتمال دا دې چه رسول الله ﷺ فرمائی دې صحابی رضي الله عنه ته چه گوره زه تا ته زیاته حصه درکوم، او دریم مطلب ئې دا دې چه اوس خو درله هم دومره درکوم روستو به ئې درته اضافه او کړم.

[۳۰۶۱] () حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ غَيْرِ وَاحِدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ بِلَالَ بْنَ الْحَارِثِ الْمَزْنِيَّ مَعَادِنَ الْقَبْلِيَّةِ وَهِيَ مِنْ نَاحِيَةِ الْفُرْعِ فَتِلْكَ الْمَعَادِنُ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا إِلَّا الزَّكَاةُ إِلَى الْيَوْمِ.

ترجمه: مالک بن ربیعه بن ابی عبد الرحمن د یوڅو کسانونه اوریدلی دی چه نبی صلی الله علیه و آله بلال بن حارث ته د قبلیه نوم کلي کانونه کوم چه دمکې اود مدینې په مینځ کښې واقع دي د فرع مقام طرف ته ورکړی وو، دننه پورې دزکات نه علاوه ددې کانونونه نور څه شې نه وصول کیږي.

(عن ربیعه بن ابی عبدالرحمن عن غیر واحد ان النبى صلی الله علیه و آله اقطع بلال بن الحارث المزنی معادن القبلیة وهی من ناحیة الفرع فتلك المعادن لا یؤخذ منها الا الزکوة الی الیوم)

یعنی رسول الله ﷺ د بلال بن الحارث دپاره مقام قبل کښې د معادن (کانونو) اقطاع او فرمائیله یعنی په طور د جاگیر ئې ورته ورکړل، قبل د یو ځانې نوم دې چه په مدینه کښې د فرع په کلی کښې واقع دې، او د فرع په باره کښې ئې لیکلې دی چه هغه یو قریه ده په طرفونو د ربذه کښې ^(۱) د هغې او د مدینې منورې ترمینځه د اتو بریدو فاصله ده. (بذل)

^(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۷۷)، وقد أخرجه: موطأ امام مالك للزكاة ۳ (۸)، مسند احمد (۳۰۶۱) (ضعیف)

^(۲) ربذه خو د مدینې منورې نه په مشرق کښې د عراق قدیم په لاره واقع ده تقریبا د دوه سوو نه زیات کلومیتره فاصلې باندي، او فرع د مدینې منورې نه په جنوب مغرب کښې تقریبا اویا کلومیتره فاصله باندي دې، د مکې مکرمې په طرق اریعه معروفه کښې یو طریق فرعی هم دې کوم چه په کتاب الحج کښې تیر شوی دی

په معدن کښې زکوة واجب وی یا خمس :

وراندې په روایت کښې دی چه د هغه معادنو نه د هغه وخت نه تر اوسه پورې صرف زکوة اخستلې کيږي چه د هغې مطلب دې چه ربع العشر اخستلې کيږي حال دا چه د احنافو په نزد په معادن کښې خمس واجب وی، مسئله مختلف فیه ده، د احنافو په نزد په معدن کښې د خزاني په شان خمس واجب وی، په خلاف د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه چه د هغوی په نزد خمس صرف په کنز یعنی د جاهلیت په دفينو کښې دې او په معدن کښې زکوة واجب دې، د احنافو دلیل وړاندې په کتاب الخراج کښې د هغې په آخرو کښې په «باب ما جاء فی الرکاز وما فيه» کښې را روان دې، یعنی د رسول الله ﷺ مشهور حدیث «وفی الرکاز الخمس» اصل کښې د رکاز په مصداق کښې اختلاف واقع دې د جمهور او ائمه ثلاثه په نزد رکاز د کنز په شان دې، کنز په اتفاق سره د جاهلیت د دفينې نوم دې او معدن بالاتفاق د هغه کان نوم دې چه مخلوق لله تعالی وی،^(۱) د احنافو په نزد د معدن مقابل کنز دې او رکاز د هغوی په نزد دواړو ته شامل دې، پس استدلال خو د هر دواړو لهو هم د دې حدیث نه دې «وفی الرکاز الخمس» خو چونکه د رکاز په مصداق کښې د احنافو او د ائمه ثلاثه اختلاف شو، په دې وجه په دې مسئله کښې هم اختلاف شو.

د معادن قبله والا حدیث د احنافو د طرف نه جوابات :

خو د حدیث الباب نه ښکاره ده چه د جمهورو تائید کيږي، د احنافو د طرف نه د دې ډیر جوابونه کړي شوي دي، اول دا چه په دې حدیث کښې دا جمله «فلک المعادن الخ» متکلم فیه ده. حضرت شیخ په دې باندې په او جزج ۳ کښې تفصیلی کلام فرمائلې دې او بیاني په اخیر کښې د خلاصې په طور د دې حدیث شپږ جوابونه ذکر کړي دي. وفیه واستدل من قال بوجوب الزکوة فی المعادن بحديث بلال المذكور، وأجيب عنه بوجوه الاول ما تقدم من کلام الحافظ ان زیادة وجوب الزکوة لا توجد فی الروایات الموصولة (یعنی دا اصل حدیث خو مشهور او صحیح دې) خو د دې آخری جمله هغه متکلم فیه ده. په روایات موصوله کښې نه ده ذکر کړې شوې، صرف په روایات مرسله کښې ده، والثانی ما تقدم من کلام الشافعی د دې حاصل هم دا دې چه دا تکره ثابت نه ده، الثالث ما اشار الیه الامام محمد ﷺ فی موطاه اذ قال بعد ذکر حدیث الباب قال محمد : الحديث المعروف ان النبي ﷺ قال فی الرکاز الخمس الخ وهو اشارة الی ان حدیث الباب يخالف الحديث المعروف فهو شاذ والرابع والخامس ما فی الزیلعی : قال ابو عبید فی کتاب الاموال : حدیث منقطع ومع انقطاعه لس فيه ان النبي ﷺ امر بذلك، وانما قال یؤخذ منها الزکوة الی اليوم، قال ابن الهمام یعنی فیجوز کون ذلك من اهل الولايات اجتهادا منهم والسادس

^۱ لهذا د کنز او معدن ترمینځه بالاتفاق د مفهوم په اعتبار سره د تباين نسبت شو، الاول مدفون والثانی مخلوق، او د جمهورو په نزد رکاز او معدن دواړو کښې هم د تباين نسبت دې ځکه چه رکاز د هغوی په نزد مرادف دې د کنز. او د احنافو په نزد رکاز او باقی دواړو کښې د عموم وخصوص نسبت شو، رکاز عام دې دواړو ته شامل دې لهذا په دواړو کښې به خمس واجب وی.

ما اجاب به صاحب البدائع : یحتمل انه انما لم یأخذ منه ما زاد علی ربع العشر لما علم من حاجته وذلك جائز عندنا، یعنی د دې صحابی د حاجت او فقر د وجې رسول الله ﷺ صرف د هغوی نه په زکوة اخستلو باندې اکتفاء او کره د خمس په ځانې اه یو جواب بل هم ورکړې شوې دې چه مراد دا دې چه د حوالان حول نه پس رسول الله ﷺ د هغوی نه زکوة واخستلو، (واما فی الحال فالخمس)

[۳۰۶۲] (۱) حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ مُحَمَّدٍ بْنِ حَاتِمٍ، وَغَيْرُهُ، قَالَ الْعَبَّاسُ حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو أُوَيْسٍ، حَدَّثَنَا كَثِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ عَوْفِ الْمُزْنِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ بِلَالَ بْنَ الْحَارِثِ الْمُزْنِيِّ مَعَادِنَ الْقَبْلِيَّةِ جَلْسِيهَا وَغَوْرِيهَا، وَقَالَ غَيْرُهُ: جَلَسَهَا وَغَوْرَهَا، وَحَيْثُ يَصْلُحُ الزَّرْعُ مِنْ قُدَيْسٍ وَلَمْ يُعْطِهِ حَقَّ مُسْلِمٍ وَكَتَبَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ هَذَا مَا أُعْطِيَ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ بِلَالَ بْنَ الْحَارِثِ الْمُزْنِيِّ أَعْطَاهُ مَعَادِنَ الْقَبْلِيَّةِ جَلْسِيهَا وَغَوْرِيهَا، وَقَالَ غَيْرُ الْعَبَّاسِ: جَلَسَهَا وَغَوْرَهَا وَحَيْثُ يَصْلُحُ الزَّرْعُ مِنْ قُدَيْسٍ وَلَمْ يُعْطِهِ حَقَّ مُسْلِمٍ. قَالَ أَبُو أُوَيْسٍ: وَحَدَّثَنِي ثَوْرُ بْنُ زَيْدٍ مَوْلَى ابْنِ الدَّيْلَمِيِّ بْنِ بَكْرِ بْنِ كِنَانَةَ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ مِثْلَهُ.

کثیر بن عبد الله بن عمرو دخپل پلار نه او هغه دده دنیکه نه روایت کوی چه نبی ﷺ بلال بن حاث مزنی ته دقبلیه نوم کلي کانونه کوم چه دمکې اودمدینې په مینځ کښې واقع دي دفرع مقام طرف ته ورکړی وو، اوپه قدس غرکښې د کروندې لائق زمکه په طور دملکیت ورکړې وه اودکوم مسلمان دحق نه ئې ورته نه وه ورکړې اونبې ﷺ دهغه دپاره یو دستاویز تحریر کړې وو دهغه تحریر مضمون داسې وو : بسم الله الرحمن الرحيم، دا هغه خط دې دکوم په لحاظ سره چه محمد الرسول الله ﷺ بلال بن حارث مزنی ته دقبیله کي دکانونو تیکه ورکړې وه کوم چه پورته اوبسکته واقع دي او هغه زمکه کومه چه په قدس کښې د کروندې قابل ده، اوده ته مې دکوم مسلمان حق نه دې ورکړې، ابو اویس راوي وائی چه ماته دثور بن زید بن ویل ازاد کړي غلام داسې حدیث بیان کړې وو کوم چه هغه دعکرمه نه اوریدلې وو او هغه دابن عباس رضی الله عنهما نه نقل کړې وو.

(حدیثنا العباس بن محمد بن حاتم وغيره الخ)

د دې معادن قبلیه والا حدیث مصنف ﷺ په ډیرو طرقو سره ذکر کړې دې، په دې کښې رومبې طریق چه کوم تیر شو هغه مرسل دې، او دویم طریق او د دې نه پس چه کوم طریق دې هغه مسند دې، خو طریق مسند ضعیف دې ځکه چه په هغې کښې کثیر بن عبد الله ابن عمرو بن عوف المزنی دې چه منکر الحدیث دې، بلکه د هغوی تکذیب هم کړې شوې دې، ﴿قال ابو زرعة واهي الحديث، وقال النسائي والدارقطني متروك الحديث، وقال ابن عبد البر مجمع على ضعفه (بذل)﴾ په ظاهره مصنف ﷺ طریق مسند موخر ځکه کړو چه هغه ضعیف دې.

[۳۰۶۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ النَّضْرِ، قَالَ: سَمِعْتُ الْحُسَيْنِيَّ، قَالَ: قَرَأْتُهُ غَيْرَ مَرَّةٍ بَعْنِي كِتَابَ قَطِيعَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَحَدَّثَنَا غَيْرُ وَاحِدٍ، عَنِ حُسَيْنِ بْنِ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو أُوَيْسٍ، حَدَّثَنِي كَثِيرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِيهِ، عَجَبِيَّةٌ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ بِلَالَ بْنَ الْحَارِثِ الْمَزْنِيَّ مَعَادِنَ الْقَبَلِيَّةِ جَلْسِيهَا وَعُورِيهَا، قَالَ ابْنُ النَّضْرِ: وَجَرَسَهَا وَذَاتَ النَّصَبِ، ثُمَّ اتَّفَقَا وَحَيْثُ يَصْلُحُ الزَّرْعُ مِنْ قُدْسٍ وَلَمْ يُعْطِ بِلَالُ بْنُ الْحَارِثِ حَقَّ مُسْلِمٍ، وَكُتِبَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَا مَا أُعْطِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَالُ بْنُ الْحَارِثِ الْمَزْنِيَّ أُعْطَاهُ مَعَادِنَ الْقَبَلِيَّةِ جَلْسِيهَا وَعُورِيهَا وَحَيْثُ يَصْلُحُ الزَّرْعُ مِنْ قُدْسٍ وَلَمْ يُعْطِ حَقَّ مُسْلِمٍ، قَالَ أَبُو أُوَيْسٍ: وَحَدَّثَنِي ثَوْرُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عِكْرَمَةَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ، زَادَ ابْنُ النَّضْرِ، وَكُتِبَ أَبِي بِنُ كَعْبٍ.

حمد بن نصر وانی داسحق بن ابراهیم نه می داخبره دونیلو په وخت کښې اوریدلي وه چه مادنبی عليه السلام دا تحریر خوخله ولوستو په کوم کښې چه دمقطعي ذکر وو، ابوداود وانی مونږ ته حدیث بیان کړې شوي دي چه خلقو دحسین بن محمد نه اوهغه داویس نه اوریدلي دی اوایس وانی مونږ ته کثیر بن عبدالله حدیث بیان کړې دي کوم چه هغه دخپل پلارنه اوهغه دده دنیکه نه نقل کړې وو چه نبی عليه السلام د قبليه نومي کلي کانونه په مقطعه طور باندي بلال بن حارث مزني ته ورکړي وو کوم چه په لوړو او رغرنده خایونو کښې واقع وو اوهغه خایونه هم کوم چه ذکرلو قابل وو د قدس په غر کښې باهرهغه خاني کوم چه لوړ وي هغه ئې ورته ورکړل او نبی عليه السلام بلال بن حارث مزني ته دکوم مسلمان حق نه وو ورکړې ابواویس وئیلی دی چه ماته ثور بن یزید دعکرمه نه حدیث بیان کړې دي اوهغه دابن عباس رضي الله عنه نه اوهغه دنبي عليه السلام نه ددی روایت په شان روایت بیان کړې مگر ابن نصر دا اضافه کړي ده چه داتحریر ابی بن کعب لیکلي وو.

(جلسيها وغوريها) جلسنی اوچتې زمکې او غوری ښکته زمکې ته وانی، یعنی ټول معادنن دقبليه که هغه په اوچته زمکه کښې وی یا په ښکته زمکه کښې وی، په دې طریق کښې کتاب القطیعة هم ذکر شوي دي.

(قال ابن نصر: وجرسها) یعنی ابن النصر په خاني د جلسيها، جرسها وئيلي دي، خو دلته د دې لفظ هيخ معنی نه جوړیږي کذا قيل، (ذات النصب) مدینې طبيې ته نزدې د یو خاني نوم دي، او قدس د یو مشهور غر نوم دي یا هر هغه خاني کوم خاني چه د کروندې صلاحیت وی.

[۳۰۶۴] (۱) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ التَّقْفِيُّ، وَمُحَمَّدُ بْنُ الْمُتَوَكِّلِ الْعَسْقَلَانِيُّ، الْمَعْفِيُّ وَاحِدٌ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ يَحْيَى بْنَ قَيْسٍ الْمَارِيَّيَّ حَدَّثَهُمْ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ شَرَّاحِيلَ، عَنْ سَمِيِّ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ شَمِيرٍ، قَالَ ابْنُ الْمُتَوَكِّلِ ابْنُ عَبْدِ الْمَدَّانِ، عَنْ أَبِيضِ بْنِ حَمَّالٍ، أَنَّهُ وَقَدَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَقَطَّعَهُ الْمِلْحَ، قَالَ ابْنُ الْمُتَوَكِّلِ: الَّذِي يَمَّارِبُ فِقَطَّعَهُ لَهُ فَلَمَّا أَنْ وَلَّى، قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْمَجْلِسِ: أَنْتَ ذِي مَا قَطَّعْتَ لَهُ إِمَّا قَطَّعْتَ لَهُ الْمَاءَ الْعِدَّ، قَالَ: فَأَنْزَعَهُ مِنْهُ، قَالَ وَسَأَلَهُ عُمَايِمَةُ مِنَ الْأَرَاكِ، قَالَ: مَا لَمْ تَنْلُهُ حِقَافٌ وَقَالَ ابْنُ الْمُتَوَكِّلِ: أَخْفَافُ الْإِبِلِ.

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۷۷) (حسن)

(۲): سنن الترمذي/الأحكام ۳۹ (۱۳۸۰)، سنن ابن ماجه/الرهون ۱۷ (۲۴۷۵)، (تحفة الأشراف: ۱)، وقد أخرجه: سنن الدارمي/البيوع ۶۶ (۲۶۵۰) (حسن لغيره)

دابیض بن حمال رضی اللہ عنہ نه روایت دي فرمائی چه د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کښې حاضر شوم او عرض مې اوکړو چه دیمن دمارب کلي دمالگي کان را که نبی صلی اللہ علیہ وسلم ورته هغه کان ورکړو کله چه ابیض - لارو نویوکس عرض اوکړو ای دالله رسوله ایا تاته معلومه ده چه ده ته دي څه ورکړل؟ تاخوده ته تیاري اوبه ورکړي نبی صلی اللہ علیہ وسلم چه دا واوریدل نودده نه ئې واپس کړل ده بیادنبی صلی اللہ علیہ وسلم نه تپوس اوکړو چه ددغه زمکې نه دي دکيکر دغنو شپول تاوکړې شي چه څوک ورته نه ورځي اوخپل څاروی په کښې نه څروي نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه داوښانو څپي ورته ونه رسيږي (یعنی چه د چراگاه او آبادی نه جداوي).

« عن ابیض بن حمال انه وفد الی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فاستقطعه الملح »

یعنی دي صحابی رضی اللہ عنہ د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه د مالگي د کان اقطاع طلب کړه کومه چه په مقام د مارب کښې دي.

« قال رجل من المجلس اتدری ما قطعت له انما قطعت له الماء العذ »

شرح الحديث :

یعنی کله چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د ابیض بن حمال دپاره د مالگي د کان اقطاع اوکړه نو په حاضرین مجلس کښې یو سړی عرض اوکړو یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تاسو ته پته هم شته چه تاسو ددي سړي دپاره دڅه څیز اقطاع فرمائیلې ده؟ تاسو دهغه دپاره دداسې اوبو اقطاع فرمائیلې ده چه تیاره شوې مالگه ده، په دي باندې رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دا اقطاع واپس کړه. علماء کرامو لیکلي دي چه کوم څیز ظاهر العین او حاضر النفع وی، چه د هغې نه بغير د محنت او کوشش نه د آمدنی وصولی اوشی د هغې اقطاع جائز نه ده په ظاهره په دي وجه چه په دي باندې موات کیدل نه صادق کیږي.

« قال : وساله عما يحمي من الاراك، قال ما لم تنله خفاف »

دلته د حمی نه مراد احیاء ده ځکه چه د حمی خو زمونږ په شریعت کښې اجازت نشته لکه چه زربه په حدیث کښې راشی، اراک یعنی د کيکر اونه، یعنی هغه سړی د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نه تپوس اوکړو چه د اراک کومې اونې داسې دی چه د هغې احیاء کول جائز دي رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل د هغه اونو چه چرته اوبن تلو سره اونه رسیدې شی یعنی چه د آبادی نه په زیاته فاصله باندې وی، د داسې اراک احیاء جائز ده او یا مطلب دا دي چه د اونو احیاء مطلقا جائز نه ده ځکه اوبن خو ټولو ځایونو ته رسیدې شی، یعنی احیاء خو د ارض موات وی د اشجارو نه، او دریمه معنی د دي جملې خپله په دي حدیث کښې را روانه ده « یعنی ان الابل تاكل منتهی رؤسها ويحمي ما فوقه » یعنی د اونو چه څومره حصه داسې ده چرته چه د اوبنې ست رسیدې شی، هغه پریخودلو سره د هغې نه د پورته حصې حمی جائز ده، « فقال اراکه فی حظاری » یعنی چه کله رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دا او فرمائیل چه په اراک او اشجار کښې حمی نه وی نو هغه سړی اووي چه زه د هغې اراک په باره کښې تپوس کوم چه زما د زمکې په احاطه کښې دی، په ظاهره کښې مطلب دا دي چه دي سړی چه د کومو مواتو احیاء کړې وه او په هغې باندې ئې خپله نخښه وغیره کولو سره هغه محفوظ کړې وو نو په هغه زمکه

کښې څه اونې د اراک نه مخکښې قائم وي، نو هغه سړی اووې چه زه د داسې اونو په باره کښې سوال کوم نو په دې صورت کښې به د رسول الله ﷺ د جواب حاصل دا وي چه ته د هغې زمکې مالک شوي د احیاء د وجې نه، خو د دې احیاء د وجې نه به د اونو مالک نه ئې، خو که یو سړی د ارض موات احیاء اوکړی او بیا د هغې نه پس په هغې کښې اونې پیدا شی د هغې حکم دا نه دې، د هغې به هغه مالک وي. (بذل)

[۳۰۶۵] (۱) حَدَّثَنِي هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ الْمَخْزُومِيُّ: مَا لَمْ تَنْلُهُ أَخْفَافُ الْإِبِلِ يَعْنِي أَنَّ الْإِبِلَ تَأْكُلُ مِنْتَهَى رُغْوِهَا وَمِنْهَا مَا فَوْقَهُ.

رجمه: هارون بن عبد الله محمد بن حسن مخزومي نه نقل کوي چه د «ما لم تنله اخاف الابل» مطلب دادې چه دومره غني لار بندولي شي چه داوښانو خولي ورته اونه رسيږي کوم ځانې ته چه داوښانو خولي رسيږي هغه نه بچ کيږي اوښان ئې خوري البته ددې نه اخوا بچ کيږي.

[۳۰۶۶] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ الْقُرَشِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ، حَدَّثَنَا فَرْجُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي عَمِّي ثَابِتُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ أَبِيضِ بْنِ حَمَّالٍ أَنَّهُ سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ حِمَى الْأَرَاكِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا حِمَى فِي الْأَرَاكِ، فَقَالَ: أَرَاكَةٌ فِي حِطَارِي، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا حِمَى فِي الْأَرَاكِ"، قَالَ: فَرَجٌّ يَعْنِي بِحِطَارِي الْأَرْضِ الَّتِي فِيهَا الزَّرْعُ الْمُحَاطُ عَلَيْهَا.

دا بيض بن حمال ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه د نبی ﷺ نه مي تپوس اوکړو دغنو د شپول په باره کښې نبی ﷺ او فرماتیل دغنو شپول نه شی جوړيدې ده او وئیل دا هغه غني وي کومې چه زما په فصل کښې ولاړې وي، بيانې ﷺ او فرماتیل چه غني بندول نه شی راوستلې.

[۳۰۶۷] (۳) حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ أَبُو حَفْصٍ، حَدَّثَنَا الْفِرْيَابِيُّ، حَدَّثَنَا أَبَانُ، قَالَ عُمَرُ وَهُوَ ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ صَخْرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزَا بُعَيْثًا، فَلَمَّا أَنْ سَمِعَ ذَلِكَ صَخْرٌ رَكِبَ فِي خَيْلٍ يُمِدُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَجَدَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ انْصَرَفَ وَلَمْ يَفْتَحْ، فَبَعَلَ صَخْرٌ يَوْمَئِذٍ عَهْدَ اللَّهِ وَذِمَّتَهُ أَنْ لَا يُقَارِقَ هَذَا الْقَصْرَ حَتَّى يَنْزِلُوا عَلَى حُكْمِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمْ يُقَارِقَهُمْ حَتَّى نَزَلُوا عَلَى حُكْمِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَكَتَبَ إِلَيْهِ صَخْرٌ: أَمَا بَعْدُ فَإِنَّ نَقِيبًا قَدْ نَزَلَتْ عَلَى حُكْمِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَأَنَا مُقْبِلٌ إِلَيْهِمْ وَهُمْ فِي خَيْلٍ، فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالصَّلَاةِ جَامِعَةً فَدَعَا لِأَحْمَسَ عَشْرَ دَعَوَاتٍ اللَّهُمَّ بَارِكْ لِأَحْمَسَ فِي خَيْلِهَا وَرِجَالِهَا، وَأَنَاةَ الْقَوْمِ فَتَكَلَّمَ الْمُؤَيَّدَةُ بْنُ شُعْبَةَ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّ صَخْرًا أَخَذَ عَمَّتِي وَدَخَلَتْ فِيهَا دَخَلَ فِيهِ الْمُسْلِمُونَ فَدَعَا فَقَالَ: "يَا صَخْرُ إِنَّ الْقَوْمَ إِذَا أَسْلَمُوا أَحْرَزُوا دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ فَادْفَعْ إِلَى الْمُؤَيَّدَةِ عَمَّتَهُ، فَدَفَعَهَا إِلَيْهِ وَسَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا لِي بِئِي سَلِمٍ قَدْ هَرَبُوا عَنِ الْإِسْلَامِ وَتَرَكُوا ذَلِكَ الْمَاءَ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَنْزَلْتَنِيهِ أَنَا وَقَوْمِي، قَالَ: نَعَمْ فَأَنْزَلَهُ وَأَسْلَمَ، يَعْنِي السَّلِيمِينَ فَأَتَوْا صَخْرًا فَسَأَلُوهُ أَنْ يَدْفَعَ إِلَيْهِمُ الْمَاءَ فَأَتَى، فَأَتَوْا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَسْلَمْنَا

(۱): تفرد به أبو داود (ضعيف جداً)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳)، وقد أخرجه: دي / البيوع ۶۶ (۲۶۵۰) (حسن لغيره) (ملاحظه هو: صحيح ابني

داود ۸، ۳۹۰)

(۳): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۸۵۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۳۱۰)، سنن الدارمي / الزكاة ۳۴ (۱۷۱۵)

(ضعيف الإسناد)

وَأَتَيْنَا صَخْرَ الْيَدْفَعِ الْبَيْنَا مَاءً فَأَبَى عَلَيْنَا فَأَنَاهُ فَقَالَ: يَا صَاحِبِ الرَّقْمِ إِذَا الْقَوْمُ إِذَا أَسْلَمُوا أَحْرَزُوا أَمْوَالَهُمْ وَمَاءَهُمْ فَأَذْفَعُوا إِلَى الْقَوْمِ مَاءَهُمْ، قَالَ: نَعَمْ يَا نَبِيَّ اللَّهِ، "فَرَأَيْتُ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَغَيَّرُ عِنْدَ ذَلِكَ مَغْمَرَةً حَيَاءً مِنْ أَخْذِهِ الْجَارِيَةَ وَأَخْذِهِ الْمَاءَ."

د صخر بن عیل رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم د طائف په قلا کبسي د قبيله بنو ثقیف سره جهاد او کړو هر کله چه صخر دا واوریدل نو په اسونو سواره یو خو کسان ئې دخان سره د نبی صلی اللہ علیہ وسلم دامداد دپاره بوتلل و ئې لیدل چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم تلې دې او فتح نه ده شوي صخر په دغه ورځ د الله تعالی سره لوظ او کړو چه زه به دا قلا نه پریردم ترخوچه مافتح نه وی حاصله کړي او ترخوچه دي خلقو د نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمان په قبلو لوسره دا خانې نه وي خالی کړې، هغه ددوی سره په جنگ شروع شو تر دې چه قلعه ئې فتح کړه او خلق ترې راکوز شول په دې وخت کبسي صخر نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته ولیکل چه ای د الله رسوله د حمد او صلوات نه پس دي واضح وي چه د بنو ثقیف خلق ستاد پیغام په قبلو لوسره د قلا نه راکوز شول اوزه هغوی ته ورځم او دهغوی سره اسونه دی کله چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ته دا خبر اورسید و نو دپه جمع سره دمونځ کولو حکم ئې وکړو او قبيله احمس ته ئې لس پیړی دعا او کړه او وبې فرمائیل ای الله ته د قبيله احمس په اسونو اوسر و کبسي برکت واچوي، د ثقیف قبيلې والا ټول خلق د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کبسي حاضر شول په دې وخت کبسي مغیره بن شعبه رضی اللہ عنہ عرض او کړو ای د الله رسوله صخر زما ترور گرفتاره کړي ده حالانکي هغې اسلام قبول کړې وو نبی صلی اللہ علیہ وسلم صخر را طلب کړو او ورته ئې او فرمائیل کله چه څوک اسلام قبول کړي نو دهغوی خانونه او مالونه محفوظ کیږی په دې وجه ته مغیره ته دده ترور واپس حواله کړه چنانچه صخر مغیره ته دده ترور واپس حواله کړه بیا صخر عرض او کړو چه د قبيله بنو سلیم یوه چینه ده دغه خلقو د اسلام دویری نه دغه اوبه پرېخودلي دي او تختیدلی دي ای د الله رسوله ماته اوزما قوم ته ددې اوبو سره خواته داوسیدو اجازت راکړه نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل ته هلته اوسیره بیاڅه ورځې پس بنی سلیم قبيلې والا مسلمانان شول اودوی د صخر نه دچینی دواپس کولو مطالبه او کړه صخر انکار او کړو نو په دې وخت کبسي بنی سلیم قبيلې والا د نبی صلی اللہ علیہ وسلم په خدمت کبسي حاضر شول او عرض ئې او کړو ای د الله رسوله مونږ اسلام قبول کړې دې مونږ صخر ته ورغلو چه مونږ ته زمونږ چینه را واپس کړي لیکن صخر انکار او کړو نبی صلی اللہ علیہ وسلم صخر راوغوښتو او وئې فرمائیل ای صخر کله چه یو قوم اسلام قبول کړي نو هغوی خپل خانونه او مالونه محفوظ کړل دوی ته ددوی چینه حواله کړه صخر عرض او کړو ای د الله رسوله په سر سترگو، صخر عرض او کړو په دې وخت کبسي ماد نبی صلی اللہ علیہ وسلم مخ ته وکتل چه تک سور شو د حیا دوجې نه چه ماد هغه نه وینځه او اوبه واپس اخستلي وو.

« حدیثی عثمان بن ابی حازم عن ابيه عن جده صخران رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم غزا ثقیفا »

شرح الحدیث :

دا صخر بن عیله الاحمسی دې دده د حدیث د شروع دا حصه مونږ د غزوه طائف په بیان کبسي لیکلې ده هلته دې اوکتلې شی، د دې د وړاندې حصې شرح لیکلې شی، دا حدیث لږ

اورد دې، او شرح ته هم محتاج دې. ﴿ فكتب اليه صخر اما بعد : فان ثقيفا قد نزلت على حكمك يا رسول الله ﴾

يعنى صخر بن عيله چه كله دا د طائف حصن فتح كړو نو د دې اطلاع هغوى رسول الله ﷺ ته وركړه ﴿ فدعا لاحمسن عشر دعوات اللهم بارك لاحمسن فى خيلها ورجالها ﴾ يعنى رسول الله ﷺ د صخر بن عيله ﷺ په دې كارنامې باندې خوشحاليده و سره د هغوى قوم احمسن ته لس دعاگانې او كړې چه د هغې نه يو دعا خو دلته ذكر ده باقى غير مذكور دى او كيده شى چه دا مراد وى چه رسول الله ﷺ هم دا دعا لس كړته او كړه.

قوله: ﴿ واتاه القوم فتكلم المغيرة بن شعبة فقال يا نبى الله ان صخر اخذا عمتى ودخلت فيما دخل فيه المسلمون ﴾ د قوم نه مراد قبيله ثقيف دې، دا خو پورته ذكر شوه چه قبيله بنو ثقيف ايمان راوړې وو، نو په هغوى كښې بعضو يعنى مغيره بن شعبة ﷺ چه ثقفى دې هغوى رسول الله ﷺ ته عرض او كړو چه صخر بن عيله ﷺ زما ترور (د پلار خور) نيولې ده حال دا چه هغه په اسلام كښې داخله شوې وه، د مغيره ﷺ په دې خبره اوريدو سره رسول الله ﷺ صخر را طلب كړو او وې فرمائيل ﴿ ان القوم اذا اسلموا احرزوا اموالهم فادفع الى المغيرة عمته ﴾ چه كله كافر خلق په اسلام كښې داخل شى نو د هغوى نفس او مال محفوظ شى، لهذا د مغيره ﷺ ترور واپس كړه، هغوى واپس كړه. ﴿ وسال نبى الله ماء لبنى سليم قد هربوا من الاسلام وتركوا ذلك الماء ﴾ يعنى د مغيره ﷺ د ترور واپس كولو نه پس صخر بن عيله د رسول الله ﷺ نه د قريه بنو سليم سوال او كړو چه د اسلام راوړلو نه بچ كيدو سره او تختيدل، او هغه قريه ئې پريخودلې وه او درخواست ئې دا او كړو چه ﴿ انزلني انا وقومى ﴾ چه په دې كښې ماته او زما قوم ته د اوسيدو اجازت راكړئ، رسول الله ﷺ د هغوى دا درخواست قبلولو سره هغوى ته هلته داوسيدو اجازت وركړو — د دې نه پس په روايت كښې دا دى چه بيا روستو دا خلق يعنى بنو سليم اسلام راوړلو او صخر ﷺ ته راغلل او هغوى ته ئې اووې چه زمونږ قريه واپس كړئ، هغوى انكار او كړو، هغوى رسول الله ﷺ ته راغلل او صورت حال ئې بيان كړو، رسول الله ﷺ بيا صخر ﷺ را طلب كړو او وې فرمائيل ﴿ ان القوم اذا اسلموا احرزوا اموالهم ودمالهم ﴾ وې فرمائيل دا كلې واپس كړه، هغوى اووې ديره ښه ده. ﴿ فرايت وجه رسول الله ﷺ يتغير ذلك حمرة حياء من اخذه الجارية واخذه الماء ﴾ راوى بيان فرمائى چه په دې موقع باندې ما رسول الله ﷺ اوليدو چه د هغوى مخ مبارك متغير شوې وو صخر ﷺ سره د دې معاملې كولو د شرم نه چه د هغه نه جاريه هم واخستلې شوه او قريه هم، اگر چه صخر ﷺ څه تامل نه وو كړې د رسول الله ﷺ په فيصله باندې، خو رسول الله ﷺ پخپله شرمنده كيدو.

په حديث باندې يو قوى اشكال او د هغې جواب :

دلته دوه خبر بيا موندلې شوې اول د مغيره ﷺ د ترور واپس كول، دويم د بنو سليم د كلې واپس كول، او دا واپسى رسول الله ﷺ پخپله دې وينا سره او كړه چه كفار كله اسلام قبول

کړی نو که هغوی قیدیان وی او که غیر قیدیان نو د اسلام راوړلو نه پس د هغوی نفسونه او مال محفوظ شی، دلته د مغیره رضی الله عنه د ترور په باره کښې خو دا احتمال دې چه کیدې شی چه هغې د صخر رضی الله عنه د اخستلو نه مخکښې ایمان راوړې وی په دې صورت کښې د هغې واپسی د قاعدې مطابق ده خو د بنو سلیم د کلی په باره کښې په روایت کښې تصریح ده چه هغوی د اسلام نه مخ اړولې وو او دا چینه ئې پریخودلې وه او د دې نه روستو هغوی اسلام ته راغلل بیا هغوی د خپل کلی د واپسی مستحق چرته وو؟ رسول الله صلی الله علیه و آله د دواړو په باره کښې هم دا قاعده او فرماتیله چه **« ان القوم اذا سلموا احرزوا دمانهم و اموالهم »** کافر قیدی که روستو اسلام راوړی نو د هغوی نفس او مال د غنیمت کیدو نه خو نه خارج کیږی دا خو اجماعی مسئله ده، دا ډیر سخت مقام دې (۱) شرح د دې توجیه دا کړې ده (۲) اصل خبره دا ده چه رسول الله صلی الله علیه و آله ته دا د بنو سلیم چینه او هم دغه شان د مغیره رضی الله عنه ترور واپس کول وو د څه مصلحت په بنیاد باندې په دې وجه رسول الله صلی الله علیه و آله چه دا جمله ارشاد او فرماتیله چه **« ان القوم اذا سلموا احرزوا الخ »** په دې کښې رسول الله صلی الله علیه و آله توریه اختیار او فرماتیله، یعنی کول مول خبره ئې او کړه، اصل مراد ئې ښکاره نه کړو د مقام د مصلحت د وجې نه، د دې جملې معنی حقیقی او مرادی خو دا ده چه کفار که قبل الاخذ او قبل القید اسلام کښې داخل شی نو د هغوی نفسونه او مال مامون او محفوظ کیږی، خو د مخاطب او د سامع مخې ته رسول الله صلی الله علیه و آله دا معنی مرادی واضحه او نه فرماتیله قصدا بلکه دا جمله ئې په اطلاق او او عموم سره او فرماتیله چه هغه یعنی صخر بن عیله پخپله د بنو سلیم چینه واپس کړی، پس هغوی واپس کړه یو واقعه په ابوداؤد کښې وړاندې هم د دې قسم را روانه ده هلته رسول الله صلی الله علیه و آله اصل ضابطه شرعیه واضح فرماتیلې ده او دا فیصله ئې او فرماتیله چه د قید کیدو نه پس کافر قیدی که اسلام راوړی نو بیا به هغه نه شی پریخودلې هغه به غلام او مملوک وی، دا واقعه په کتاب الایمان والندور، **« باب النذر فيما لا یملک »** کښې راخی، **« عن عمران بن حصین رضی الله عنه قال كانت العضاء لرجل من بنی عقیل وکانت من سوابق الحاج »** الخ

د رسول الله صلی الله علیه و آله د غضباء اوښې واقعه :

د دې خلاصه دا ده چه د رسول الله صلی الله علیه و آله مشهوره اوښه غضباء چه په بنو عقیل کښې د یو کافر سړی وه هغه او د هغې مالک قید کړې شوې وو، رسول الله صلی الله علیه و آله په هغه باندې تیر شو په داسې حال کښې چه هغه سړې په قید کښې وو نو هغه رسول الله صلی الله علیه و آله ته سوال اوکړو چه تاسو زه او زما اوښه ولې نیولې یو؟ رسول الله صلی الله علیه و آله هغه ته الزامی جواب ورکړو چه **« ناخذک**

۱) که رسول الله صلی الله علیه و آله دا جمله ارشاد نه فرماتیلې نو مونږ به د دې حدیث دا تاویل کړې وې چه دا واقعه حال لاعموم لها د قبیلې نه ده،

۲) خو د روایت بعض الفاظ د دې توجیه سره څه مطابقت نه لری، والله تعالی اعلم بمراد النبی صلی الله علیه و آله، باقی دا خبره اتفاقی ده چه په هغې باندې زموږ ایمان دې چه د رسول الله صلی الله علیه و آله د خولې مبارکې نه هیڅ ناحق خبره نه شی راوتلې

بجريرة حلفائك ثقيف قال وكان ثقيف قد روا رجلين من اصحاب النبي ﷺ ... وړاندې راوی وائی چه هغه سړی دا هم اووې « وانا مسلم » رسول الله ﷺ مخکښې روان شو هغه رسول الله ﷺ ته آواز ورکړو یا محمد یا محمد (ﷺ) رسول الله ﷺ بیا هغه ته راوایس شو او تپوس ئې ترې اوکړو څه خبره ده؟ هغه اووې « انی مسلم » په دې موقع باندي رسول الله ﷺ اصل قاعده شرعیه د هغه مخې ته بیان کړه او وې فرمائیل « لو قلتها وانت تملک امرک افلحت کل الفلاح » یعنی که تا د قید کیدو نه مخکښې هم دا خبرې کړې وه نو په خپل مقصد کښې به کامیاب شوې وې، د قید کیدو نه پس اسلام راوړلو سره نفس نه بچ کیرې غلام پاتې کیرې (۱)

[۳۰۶۸] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي سَبْرَةُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ الرَّبِيعِ الْجُهَنِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَائِدَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ فِي مَوْضِعِ الْمَسْجِدِ تَحْتَ دَوْمَةٍ، فَأَقَامَ ثَلَاثًا ثُمَّ خَرَجَ إِلَى تَبُوكَ وَإِنْ جُهَيْنَةَ لِحَقْوَةٍ بِالرَّحْبَةِ فَقَالَ لَهُمْ: "مَنْ أَهْلُ ذِي الْمَرْوَةِ؟" فَقَالُوا: بَنُو رِفَاعَةَ مِنْ جُهَيْنَةَ فَقَالَ: قَدْ أَقْطَعْتُهَا لِيَنِي رِفَاعَةَ فَأَقْتَسَمُوهَا فَيُنْهَمُّ مَنْ بَاعَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَمْسَكَ فَعَمِلَ، ثُمَّ سَأَلْتُ أَبَا عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ، فَحَدَّثَنِي بَعْضُهُ وَلَمْ يَحْدِثْنِي بِهِ كَلِمَةً.

سبره بن عبد العزيز بن الربيع الجهني دخپل پلار نه او هغه دده دنيکه نه روايت کوي فرمائي چه د جهينه په کلي کښې په کوم ځائي کښې چه جومات دي هلته نبي ﷺ د يوې ونې لاندې درې ورځې ناست وو او بيا تبوک ته روان شو د جهينه خلقو د نبي ﷺ سره په يوفراخ ميدان کښې ملاقات اوکړو نبي ﷺ او فرمائيل دلته څوک اوسيري؟ خلقو عرض اوکړو چه د جهينه قبيلې يو شاخ بن رفاعه دلته اوسيري نبي ﷺ چه دا واوريدل نو وئې فرمائيل دا زمکه ما بنورفاعه ته ورکړه او هغه خلقو دغه زمکه تقسيم کړه بعضې خلقو خپله حصه خرڅه کړه او بعضو خلقو محفوظ وساتله او په دې کښې ئې محنت و مشقت (زمينداري) اوکړو ابن وهب وائی باما ددې حديث په باره کښې د سبره د پلار عبد العزيز نه تپوس اوکړو هغه ئې راته يو څه حصه بيان کړه او څه حصه ئې بيان نکړه.

« عن ابيه عن جده ان النبي ﷺ نزل في موضع المسجد تحت دومة فاقام ثلاثا ثم خرج الى تبوك »

شرح الحديث :

مضمون د حديث دا دې : ربیع بن سبرة الجهني ﷺ فرمائي چه رسول الله ﷺ د غزوه تبوک په سفر کښې يو ځائي په لار کښې چه چرته روستو جمات هم جوړ شوې دي د يوې لوئې اونې د لاندې کوز شو او هلته ئې ترد درې ورځو پورې قیام او فرمائیلو او بیا ئې وړاندې تبوک ته تشریف یووړو، په لاره کښې چه کله رسول الله ﷺ یو فراخه میدان کښې وو د قبيله جهينه واله د رسول الله ﷺ د ملاقات دپاره راغلل هلته نزدې یو کلي وو چه د هغې نوم ذوالمروة وو، رسول الله ﷺ تپوس اوکړو چه ذوالمروة کښې اوسیدونکی کوم خلق دی؟ په

(۱) اوگوری دلته رسول الله ﷺ د بنکاره قاعدې خبره بیان کړه.

(۲) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۸۱۲) (ضعيف)

حاضرینو کښې بعضو جواب ورکړو چه د قبيله جهينه شاخ بنو رفاعه دی. رسول الله ﷺ او فرمائیل (قد اقطعها لینی رفاعه) چه د هغه کلی زه اقطاع کوم د بنو رفاعه دپاره (یعنی هم د هغوی دپاره کوم چه په هغې کښې اوسیرې، وړاندې په روایت کښې دی چه د رسول الله ﷺ د دې فرمان نه پس هغه خلقو هغه کلی خپل مینخ کښې باقاعده تقسیم کړلو بعضو خپله حصه خرڅه کړه او بعضو نه کړه، دا ذوالمره په وادی القری کښې یو کلی دې چه رسول الله ﷺ دهغې د اوسیدونکو دپاره اقطاع او فرمائیله.

[۳۰۶۹] (۱) حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَعْنَى ابْنَ آدَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ الزَّبِيرَ نَخْلًا.

داسماء بنت ابی بکر رضی الله عنہا نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ ددې خاوند زبیر بن العوام ته دکهجوړو ونې تمليکا ورکړې.

(۲) عن هشام بن عروة عن ابيه عن أسماء بنت ابی بکر ان رسول الله ﷺ اقطع الزبير نخلا (۳) اسماء بنت ابی بکر رضی الله عنہا فرمائی چه رسول الله ﷺ د هغې د خاوند زبیر دپاره د کهجوړو د یو باغ اقطاع اوکړه.

الكلام على الحديث من حيث الفقه :

د شوافعو په مسلک باندې خو په دې کښې هیڅ اشکال نشته ځکه چه د هغوی په نزد اقطاع د ارض مملوکه هم جائز ده، د احنافو په نزد جائز نه ده لکه چه مخکښې تیر شو د اقطاع او احیاء په تعریف کښ، په بذل کښې د ملا علی قاری نه نقل کړې دی چه نحل چونکه داسې مال دې چه ظاهر العین او حاضر النفع دې چه د هغې اقطاع جائز نه ده، لهذا دا به وئیلې شی چه د دې اقطاع هغوی په خپله حصه خمس کښې اوکړه کوم چه د هغوی ملک وه (فلا اشکال فيه) او دویم احتمال دا دې کیدې شی چه دا نخیل د قبیلې د موات نه وی چه د هغې څوک مالک نه وی، دا روایت دلته مختصر دې دوباره د دوه احادیثو نه پس تفصیل سره را روان دې.

[۳۰۷۰] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، الْمُعْتَمِدُ وَاحِدٌ قَالَا: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ حَسَّانَ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَمْرٍو، وَدُحَيْبَةُ ابْنَتَا عَلِيَّةَ وَكَانَتَا رِبِيئِي قِيلَةَ بِنْتِ فَرْمَةَ، وَكَانَتْ جَدَّةَ أَبِيهِمَا أَتَمَّا أَخْبَرْتَهُمَا، قَالَتْ: قَدِمْنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَتْ: تَقَدَّمَ صَاحِبِي تَعْنِي حُرَيْثُ بْنُ حَسَّانٍ وَأَفْدَى بَكْرُ بْنُ وَايِلَ فَبَايَعَهُ عَلَى الْإِسْلَامِ عَلَيْهِ وَعَلَى قَوْمِهِ ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَكْتُبُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ بَنِي تَمِيمٍ بِالْذَّهْنَاءِ أَنْ لَا يُجَاوِزَهَا إِلَيْنَا مِنْهُمْ أَحَدٌ إِلَّا مُسَافِرًا أَوْ مُجَاوِرًا، فَقَالَ: "أَكْتُبُ لَهُ يَا غُلَامُ بِالذَّهْنَاءِ، فَلَمَّا رَأَيْتَهُ قَدْ أَمَرَهُ بِهَا شَخِصٌ مِنِّي وَهِيَ وَطَنِي وَدَارِي، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ لَمْ يَسْأَلْكَ السُّوْتَةَ مِنَ الْأَرْضِ إِذْ سَأَلَكَ إِتَمَّا هِيَ هَذِهِ الذَّهْنَاءُ عِنْدَكَ مُقْبِدُ الْجَبَلِ وَمَرْعَى الْغَنَمِ وَسَاءَ بَنِي تَمِيمٍ وَأَبْنَاؤُهَا وَرَاءَ ذَلِكَ، فَقَالَ: أَمْسِكْ يَا غُلَامُ صَدَقَتْ الْمَسْكِينَةُ الْمُسْلِمِ أَعُو الْمُسْلِمِ يَسْعُهُمَا الْمَاءُ وَالشَّجَرُ وَيَتَعَاوَنَانِ عَلَى الْفِتَانِ".

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۷۳۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/فرض الخمس ۱۹ (۲۸۱۵)، مسند احمد (۳۴۷/۸) (حسن صحيح)

۲: سنن الترمذي للأدب ۵۰ (۲۸۱۴)، (تحفة الأشراف: ۱۸۰۴۷) (حسن) (ملاحظه هو: صحيح ابی داود ۳۹۲/۷)

د قبيلة بنت مخرمه رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او زموږ ملگري حريث څوک چه دبکر بن وائل د طرف نه نبی ﷺ ته په وفد کښې تلي وواو دخپل طرف نه او دخپل قوم د طرف نه ئې په اسلام باندې بيعت کړي وو، عرض ئې وکړو چه اې د الله رسوله زموږ او د بنو تميم په مينځ کښې مقام د هئا سرحد مقرر کړئ ددې دپاره چه دهغوی نه څوک زموږ طرف ته نه را اوړي مگر مسافر او اور وړلو والا، نبی ﷺ او فرمائيل اې هلکه ددوی د هئا سرحد اوليکه هرکله چه ما اوليدل چه د هئا مقام ئې دده دپاره اوليکلو نوزه فکر مند شوم ځکه چه دغه زما وطن وواو هلته زما کور هم وو، ما عرض وکړو چه اې د الله رسوله، ده په سرحد غوښتلو کښې انصاف نه دې کړي د هئا د اوسانو د ترلو خاي دی او د چيلو گډو چراگاه ده او د بنی تميم ښځې او ماشومان په دې پسې وي، نبی ﷺ چه دا واوريدل نو او ئې فرمائيل اې هلکه او دريره يعنی مه ليکه دي ضعيفي سمه خبره او کړه، يو مسلمان د بل مسلمان وروړدې ديو مسلمان داوبو او اونونه بل مسلمان فائده حاصلولې شي او پکار ده چه دوی په خپل مينځ کښې ديوبل مدد وکړي.

﴿نا عبدالله بن حسان العنبري قال حدثني جدتاي صفيه وحبية ابتا عليه وكانتا ربيتي قبيلة

بنت مخرمه _ وكانت جدة ايها _ انها اخبرتها﴾

مضمون د حديث مع الشرح :

عبدالله بن حسان عنبري وائی چه ماته بيان اوکړو زما دوه نياگانو صفيه بنت عليبة او د حبية بنت عليبة دا دواړه خپل مينځ کښې خوښدې وې، کيدې شی چه يو په دوی کښې د عبدالله بن حسان ام الاب وي او دويمه ئې ام الام وي. يا کيدې شی چه په دې کښې يوې ته د اخت جده کيدو د وجې نه جده وئيلې شوې وي، راوی وائی چه دا دواړه د قبيله بنت مخرمه ربيبه وې يعنی دا دواړه د قبيله په غير کښې لوئې شوې وې او بيا وړاندې دا دی چه دا قبيله د دې دواړو د پلار نيا وه، گويا خپله د دې دواړو د پلار نيا وه دا دواړه وائی چه مونږ ته قبيله بيان کړه، هغه واقعه چه وړاندې په حديث کښې را روانه ده.

﴿قدمنا على رسول الله ﷺ قالت تقدم صاحبي تعني حريث بن حسان وافد بکر بن وائل﴾
قبيله رضي الله عنها فرمائی چه کله زه د رسول الله ﷺ خدمت ته روانه اوم نو کوم سرې چه په دې سفر کښې زما ملگري وو هغه حريث بن حسان وو هغه د رسول الله ﷺ دربار عالی ته رسيدو سره زما نه مخکښې د خپل خان دپاره او د خپل قوم دپاره بيعت على الاسلام اوکړو، ﴿ثم قال يا رسول الله ﷺ اكتب بيننا وبيننا بني تميم بالدهناء ان لا يجاوزها الينا منهم احدا الا مسافر او مجاوز﴾ دا قبيله رضي الله عنها چه کومه واقعه بيانوي د قبيله بنی تميم نه ده او دا د هئا د بنو تميم د يوې علاقه نوم دې، نو حريث رضي الله عنه د اسلام راوړلو نه پس رسول الله ﷺ ته دا درخواست اوکړو چه دا مقام د د هئا دې زموږ دپاره مخصوص کړې شی، او دا چه بنو تميم د دې نه منتفع نه شی، او دا چه دې زمکې ته دې نه راځي مگر دا چه که څوک مسافر وي په دې لاره ځي نو دا امر آخر دې د حريث په درخواست باندې رسول الله ﷺ يو هلک ته چه هلته موجود وو او فرمائيل چه دغه مقام د هغه د حريث په نوم باندې اوليکه، يعنی دهغه دپاره

نې اقطاع كړه، (فلما رايته قد امر له بها شخص بي وهي وطني وداري) دا قيله وائي چه كله ما اوليدل چه رسول الله ﷺ هغه هلك ته مقام دهنا د حرith بن زبير د پاره د ليكلو او تيل نوزه او بريدم زما د خپو نه زمكه او تختيدله، ځكه چه دا مقام دهنا زمونږ كور او وطن ته بالكل متصل وو (لهذا دهغي حق دار خو مونږ يو) (فقلت يا رسول الله ﷺ انه لم يستلك السوية من الارض) د دې جملې دوه مطلبه كيدې شي. ۱: دې سړي د داسې زمكې فرمائش تاسو نه دې كړې چه په هغې كنبې زمونږ او د هغه استحقاق برابر وي، يعني دا زمكه خو خالص زمونږ حق دې داسې هم نه چه هغه مشترك او منلې شي (يعني اول خو د مشترك كيدو په صورت كنبې هم د دة د خپل ځان د پاره ليكل صحيح نه وو پاتې لا دا صورت چه هغه خالص زمونږ حق دې) ۲: سوية نه مراد عدل او انصاف دې يعني د دې زمكې په غوښتلو كنبې دة عدل او انصاف مخې ته نه دې كيخودلې وړاندې قيله ﷺ رسول الله ﷺ ته د دې زمكې نوعيت بيانوي (انما هذه الدهناء عندك مقيد الجمل مرعى الغنم ونساء بني تميم وابناءها وراء ذلك) او يواځې دا نه چه دا دهنا تاسو ته نژدې دې (زيات لري نه دې تاسو پخپله د دې ليدو سره اندازه لگولې شي) دا خو زمونږ يعني د بنو تميم د اوبانو د تړلو ځانې او د هغوی د گډو بيزو د څرن ځانې دې او د قبيله بنو تميم زنانه او ماشومان بالكل د دې نه شاته آباد دي، (فقال امسك يا غلام صدقت المسكينة السلم اخو المسلم يسعهم الماء والشجر) چه كله رسول الله ﷺ د قيله ﷺ دا خبره پوره واوريدله او د هغوی په علم كنبې د مقام دهنا نوعيت راغلو كوم چه مخكښې نه وو، په دې باندې رسول الله ﷺ دې هلك ته او فرمائيل چه بس مه ليكه دا مسكينه رښتيني معلوميری او بيا رسول الله ﷺ او فرمائيل مسلمانانو لره خپل مينځ كنبې د روڼو په شان اوسيدل پكار دي، يو ځانې اوبو او يو ځانې د څرن د ټولو د پاره كافي كيدې شي يعني د روڼو په شان اوسيری او د داسې مشترك څيز د خپل ځان د پاره كول غلط دي، گویا رسول الله ﷺ خپله فيصله واپس واخستله (ويتعاونون على الفتن) فتنان كه بالفتح دې نو بيا خو دا صيغه د مبالغې ده او كه بالضم دې نو جمع ده د فتن، په يو نسخه كنبې دي (سئل ابو داؤد عن الفتن فقال : الشيطان) يعني مسلمانانو لره خپل مينځ كنبې د شيطان په مقابله كنبې تعاون كول پكار دي، په دې جمله كنبې په ظاهره په فعل د حرith باندې تعريف دې، والحديث اخرجه الترمذی مختصراً، قال المنذرى.

[۳۰۷۱] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الْحَمِيدُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنِي أَبُو جَنْوَبٍ بِنْتُ مُمَيْلَةَ، عَنْ أَبِي سُوَيْدَةَ بِنْتِ جَابِرٍ، عَنْ أُمِّهَا عَقِيلَةَ بِنْتِ أَسْمَرِ بْنِ مُضَرِّيسٍ، عَنْ أَبِيهَا أَسْمَرِ بْنِ مُضَرِّيسٍ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَايَعْتُهُ، فَقَالَ: "مَنْ سَبَقَ إِلَى مَاءٍ لَمْ يَسْبِقْهُ إِلَيْهِ مُسْلِمٌ فَهُوَ لَهُ"، قَالَ: فَخَرَجَ النَّاسُ يَتَعَادُونَ يَتَخَاطَبُونَ.

د اسمربن مضرنه روايت دې فرمائي چه زه دنبي ﷺ په خدمت كنبې حاضر اودهغه په مبارك لاس مې په اسلام بيعت وكړو، نبي ﷺ او فرمائيل څوك چه داسې اوبوته ورسيرې

۱: تفرد به ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۱۴۵) (ضعيف)

چرته چه دده نه مخکښې کوم بل مسلمان نه وی رسيدلي نودغه اوبه دده دي خلقو چه دا واوريدل نو کرخي ئې راڅکلي اولارل (ددي دپاره چه ددوی نښه باقی پاتې شي چه مونږ دلته رارسيدلي وو).

(عن ايها اسمر بن مضرس قال اتيت النبي ﷺ فبايعته فقال من سبق الى ماء لم يسبقه اليه مسلم فهو له قال فخرج الناس يتعادون يتخاطون)

مضمون د هديت:

اسمر بن مضرس رضي الله عنه فرمائی چه زه د رسول الله ﷺ خدمت کښې حاضر شوم او د هغوی په لاس باندې مې بيعت اوکړو، دا اسمر بن مضرس طائی دې، د یوې معروفې قبیلې نوم دې نو ښکاره ده چه دوی د خپل وطن بلاد طئی نه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شوي وو، نو رسول الله ﷺ د هغه د واپسې په وخت باندې هغوی ته او فرمائیل چه زمونږ د طرف نه لار شه او هلته دا زيرې ورکړه چه په تاسو کښې کوم انسان هم په کوم غیرآباده چينه چه د مخکښې نه د چا ملک نه وی رسيدو سره هغه اختيار کړی نو هغه هم د هغه دپاره ده، پس چه کله هغوی د رسول الله ﷺ خبره هلته اورسوله نو ټول خلق د خپلو کورونو نه په منډه منډه داسې قسم چينو ته اورسيدل او د چا چه کومه چينه خوښه وه په هغې باندې هغه خپله نخښه او خط رانښکلو. دا هم د اقطاع يو صورت دې کوم چه رسول الله ﷺ اختيار او فرمائيلو، دا باب هم د اقطاع روان دې.

[۳۰۷۲] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ الزَّيْبَرَ حَضَرَ فَرَسَهُ فَأَجْرِي فَرَسَهُ حَتَّى قَامَ، ثُمَّ رَمَى بِسَوْطِهِ فَقَالَ: "أَعْطُوهُ مِنْ حَيْثُ بَلَغَ السَّوْطُ".

د ابن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ زبیر بن عوام ته زمکه ورکړې وه، تر کوم ځانې پورې چه دده اس منډه وهلي شوه اوبيا هغه اس اوزغلولو تر دې اودريدو او خپل چابک ئې اوغورزلو نبی ﷺ او فرمائیل چه ده دومره زمکه ورکړی تر کوم ځانې پورې چه دده چابک ورسپړي.

فوله: (عن ابن عمر رضي الله عنه ان النبي ﷺ اقطع الزبير حضر فرسه فاجرى فرسه حتى قام ثم رمى بسوطه فقال اعطوه من حيث بلغ السوط) : يعنى رسول الله ﷺ د زبير رضي الله عنه دپاره د زمکې د يوې رقبې اقطاع او فرمائيله او مقدار قطيعه ئې حضر د فرس مقرر کړو يعنى د آس يو ځل منډه، پس هغوی خپل آس اوزغلولو بيا چه د دې يوې منډې نه پس هغه چرته اودريدو د هغه ځانې نه هغوی خپله کوره نوره هم وړاندې وپيښته، په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائيل چه هغه ته دې د هغه ځانې نه د کوم ځانې نه چه آس زغلولې وو د هغه ځانې نه تر هغه ځانې پورې کوم ځانې ته چه ئې چابک اورسيدو، ورکړې شي يعنى د دواړو مقدارونو مجموعه، دا د اقطاع زبير رضي الله عنه والا روایت اوس مخکښې مختصراً ذکر شو، او په دې باندې کلام هم هلته تير شو.

۱: تفرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۷۷۲۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۷۲) (ضعيف الإسناد)

باب فِي أَحْيَاءِ الْمَوَاتِ

بنجر (غیر اباده) زمکه ابادول

په دې باب باندې کلام په تیر باب کښې تیر شو.

[۳۰۷۳] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ أَحْيَا أَرْضًا مَيْتَةً فَهِيَ لَهُ وَلَيْسَ لِعَرَقِ ظَالِمٍ حَقٌّ".

د سعید بن زید ^{رضی اللہ عنہ} نه روایت دې فرمائی چه نبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} فرمائیلی دی: خوګ چه شاره زمکه اباده کړې هغه دده ده، او پده باندې به د ظالم رګ شه حصه نه وی (یعنی که چرې خوګ په ظلم سره دلته ونې وکړې بابل قسم تصرف وکړې نو هغه ددې حقدار نه جوړیږي).

﴿ من احی ارضا میتة فهی له و لیس لعرق ظالم حق ﴾

د دې حدیث نه د احیاء مشروعیت او د هغې سبب د ملک کیدل ښکاره کیږي، او نفس مسئله هم متفق علیه ده اگر چه په بعض شرطونو او تفصیلاتو کښې اختلاف دې چه د هغې بیان مخکښې تیر شوې دې.

د عرق ظالم تفسیر وړاندې پخپله په متن کښې راځي، دا په اضافت او صفت دواړو سره لوستلې شوې دې. والحديث اخرجه الترمذی والنسائی، قاله المنذری

[۳۰۷۴] () حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ أَحْيَا أَرْضًا مَيْتَةً فَهِيَ لَهُ" وَذَكَرَ مِثْلَهُ، قَالَ: "فَلَقَدْ خَبَّرْتَنِي الَّذِي حَدَّثَنِي هَذَا الْحَدِيثَ، أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرَسَ أَحَدُهُمَا تَخْلًا فِي أَرْضِ الْآخَرِ فَقَضَى لِصَاحِبِ الْأَرْضِ بِأَرْضِيهِ وَأَمَرَ صَاحِبَ التَّخْلِ أَنْ يُخْرِجَ تَخْلَهُ مِنْهَا، قَالَ: "فَلَقَدْ رَأَيْتَهَا وَإِنَّهَا لَتَضْرَبُ أَصُولَهَا بِالْفُؤُوسِ وَإِنَّهَا لَتَخْلُ عُمَرًا حَتَّى أُخْرِجَتْ مِنْهَا".

عروه ^{رضی اللہ عنہ} دخپل پلار نه روایت کوي فرمائی چه نبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} فرمائیلی دی: خوګ چه شاره زمکه اباده کړې دادده شوه، اود تیر شوي روایت په شان روایت ئې بیان کړو مگر دا اضافه ئې او کړه چه خبر را کړې دې ماته هغه کس چا چه دا حدیث بیان کړې دې چه دوه کسانو نبی ^{صلی اللہ علیہ وسلم} ته جگړه راوړله چه یوکس په دوی کښې دبل په زمکه کښې کجوري کړلې وي نوفيصله ئې او کړه د زمکې د مالک دپاره په زمکه باندې او کجورو والاته ئې حکم او کړو د کجورو په ویستلو باندې، راوي وائی ما اولیدل چه ددغه ونو جرړې په تېرونو وهلي کیدلې حالانکه هغه ونې غتمې شوې او مکملې وي تردې چه دغه ونې ددې زمکې نه وښکلې شولې.

تشریح: قوله: ﴿ عن يحيى بن عروة عن ابيه ان رسول الله ﷺ ﴾

په رومبې روایت کښې کوم لره چه د عروه نه روایت کونکې هشام دې موصوله وو، هلته صحابې ذکر کړې شوې وو او په دې طریق کښې چه د عروه نه روایت کونکې د

۱. سنن الترمذی الأحكام ۲۸ (۱۳۷۸)، (تحفة الأشراف: ۱۹۰۴۳، ۴۴۶۳)، وقد أخرجه: موطنام ملك الأفضية ۲۴ (۳۶) (صحیح)

۲. نظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۴۴۶۳) (حسن)

هشام رور يحيي دي مرسل دي.

(قال فلقد خبرني الذي حدثني هذا الحديث ان رجلين اختصما الى رسول الله ﷺ غرس احدهما نخلا في ارض الاخر)

شرح الحديث :

د دې قال قائل عروه دې هغوی فرماني چه کوم سړی ما ته حديث بيان کړو هغه ماته د دې خبرې خبر راکړو (الذي حدثني) د دې مصداق هغه دې کوم چه د باب په رومبي حديث کښې تير شوې دی هغه سعيد بن زيد رضي الله عنه صحابي دې د دې روايت مضمون دا دې چه يو سړی د بل په زمکه کښې اونه نال کړه، روستو په هغوی کښې اختلاف پيدا شو هم په دې خبره باندي چه د بل په زمکه کښې تا اونه څنگه لگولې ده، دې دواړو خپلو مسئله د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضره کړه نو رسول الله ﷺ د زمکې فيصله د زمکې د مالک په حق کښې اوکړه، او چا چه اونه نال کړې وه هغه ته ئې حکم اوکړو چه خپله اونه د هغه د زمکې نه اوباسه، وړاندي راوی وائی چه ما هغه اونې اوليدي چه د هغې په جرړو باندي تېرونه وهلي کيدل او هغه ډيرې اوږدې اوږدې اونې وې. تردي چه هغه ټولې ويستلې شوې د هغه زمکې نه (لفظ عم په تشديد د ميم سره جمع ده د عميم يا د عميمه دپاره).

[۳۰۷۵] (حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ الْبَدْرِيُّ، حَدَّثَنَا وَهْبٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ ابْنِ إِسْحَاقَ، بِإِسْنَادِهِ وَمَعْنَاهُ، إِلَّا أَنَّهُ قَالَ عِنْدَ قَوْلِهِ مَكَانَ الَّذِي حَدَّثَنِي هَذَا، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَكْثَرُ ظَنِّي أَنَّهُ أَبُو سَعِيدٍ الْخَدْرِيُّ، فَأَنَارَ آيَتُ الرَّجُلِ يَضْرِبُ فِي أَصُولِ النَّخْلِ.

داسحق نه په هم دي سند سره روايت دې ليکن په دې سند کښې دومره فرق دې چه عروه په دې طريقي سره اووئيل چه په صحابه کرامو کښې يوکس داسې بيان کړې دې او زما غالب گمان دادې چه هغه صحابي وو، ابوسعيد خدری رضي الله عنه کيدې شی چه وو هغه فرمائيلي دی چه دغه کس د خپلو ونو جرړي په تېرونو وهلي.

تشریح: قوله: (حدثنا احمد بن سعيد....) دا دويم سند دې دې کښې په ځانې د (الذي حدثني) دا عبارت دې (فقال رجل من اصحاب النبي ﷺ) او بيا عروه هم دا وائی چه زما غالب گمان دا دې چه هغه صحابي رضي الله عنه ابوسعيد خدری وو، په دواړو روايتونو کښې فرق دا دې چه په رومبي روايت کښې عروه د خپل استاد تعين نه وو کړې او په دويم روايت کښې ئې په طريقيه د ظن د هغه تعين په ابوسعيد خدری رضي الله عنه سره کوي، او دويم فرق دا دې چه د رومبي روايت نه معلومېږي چه د تبر چلونکي ډير کسان وو او په دې دويم روايت کښې دی چه تبر چلونکي خپله د اونو مالک وو.

(عن عروة قال اشهد ان رسول الله ﷺ قضى ان الارض ارض الله)

۱: انظر حديث رقم: (۳۰۷۳)، (تحفة الأشراف: ۴۴۶۳) (حسن)

[۳۰۷۶] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الْأَمَلِيِّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَانَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، أَخْبَرَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ، عَنْ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى أَنْ الْأَرْضَ أَرْضُ اللَّهِ، وَالْعِبَادَ عِبَادُ اللَّهِ وَمَنْ أَحْيَا مَوَاتًا فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ جَاءَنَا، بِهَذَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِينَ جَاءُوا بِالصَّلَوَاتِ عَنْهُ.

د عمر، ^{رضي الله عنه} نه روایت دې فرمائی چه زه په دې خبره گواهي وركوم چه نبی ^{صلی الله علیه و آله} اور فرمائیل چه زمكه توله دالله تعالی ده او ټول انسانان هم دالله تعالی بندگان دي او څوك چه بنجر زمكه اباده كړي دې ددې ډير حقدار دې دا روایت مونږ ته دنبی ^{صلی الله علیه و آله} نه هغه كسانو رانقل كړې دې چاچه دهغه نه دمونځ روایات نقل كړي دي.

عروه تابعی دې هغوی په شروع کښې دا حدیث د رسول الله ^{صلی الله علیه و آله} نقل کړو بغیر د سند ذکر کولو نه بیا روستو په «جاءنا بهذا عن النبي ^{صلی الله علیه و آله}» سره ئې مروی عنه طرف ته اشاره او کړه چه هغوی ډیر صحابه کرام ^{رضی الله عنهم} دی. دا حدیث د مسند په حکم کښې شو. مراد د زمکې نه مطلق زمکه نه ده بلکه موات دې یعنی ارض موات د یو انسان مملوک نه وی بلکه د الله پاک ده او هم دغه شان ټول خلق د الله پاک بندگان دی، لهذا د دې احیاء کولو سره مالک کیدل صحیح دی.

[۳۰۷۷] (۲) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشِيرٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ الْحَسَنِ، عَنْ سَمْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ أَحَاطَ حَاطًا عَلَى أَرْضٍ فَهِيَ لَهُ".

د سمره نه روایت دې فرمائی چه نبی ^{صلی الله علیه و آله} فرمائیلی دی څوك چه په بنجر زمكه كښې حدبندي او كړي نو دا دده شوه.

«عن الحسن عن سمرَةَ ^{رضي الله عنها} عن النبي ^{صلی الله علیه و آله} وقال من احاط حائطاً على ارض فهي له»
شرح الحديث:

یعنی کوم انسان چه په یو ارض موات باندې په دیوال وغیره جوړولو سره احاطه او کړی نو هغه د هغه دپاره شو، د دې حدیث نه دا معلومیږی چه د ارض موات په نفس احاطې سره د احیاء تحقق کیږی، د امام احمد ^{رضی الله عنه} مذهب هم دا دې چه د هغوی په نزد نفس احاطه او تحجیر کافی دې. او د جمهور په نزد نفس تحجیر (څلورو وارو طرفونو ته کانږی کیخودلو) سره د احیاء تحقق نه کیږی چه کله د هغه زمکې گټه او خدمت او استوگنه اختیار نه کړی. لهذا د جمهور په نزد به دا حدیث هم په دې باندې حمل کولی شی یعنی من احاط حائطاً للسكنی.

[۳۰۷۸] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرِّحِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهَبٍ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، قَالَ هِشَامُ: الْعِرْقُ الطَّالِمُ أَنْ يَغْرَسَ الرَّجُلُ فِي أَرْضٍ غَيْرِهِ فَيَسْتَحِقَّهَا بِذَلِكَ، قَالَ مَالِكٌ: وَالْعِرْقُ الطَّالِمُ كُلُّ مَا أَخِذَ وَاحْتَفِرَ وَغُرِسَ بِغَيْرِ حَقِّ.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۳۷) (صحیح الإسناد)

۲: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۴۵۹۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۲/۵، ۲۱) (ضعیف)

۳: انظر حديث رقم (۳۰۷۳)، (تحفة الأشراف: ۴۴۶۳) (صحیح)

هشام بن عروه وئیلی دی چه د ظالمانو خلقو، نه مرادهغه څوک دي څوک چه د چاپه زمکه کښې بغير اجازته ونې او کړي او په دي باندې قبضه کول غواړي مالک وئیلی دی ظالم رگ دادې چه د چاپه زمکه باندې قبضه او کړې شي يا کنده اوکي او په ناجائز طريقي سره ونې نالي کړي.

﴿ اخبرني مالک قال هشام العرق الظالم ان يفرس الرجل في ارض غيره فيستحقها بذلك ﴾
د باب رومې حديث چه د هغې په راويانو کښې هشام هم دي، هشام د هغې تفسير کوي چه عرق ظالم دا دي چه يو سرې د بل په زمکه کښې اونې اولگوي په دي نيت چه هغه بيا د دي زمکې مستحق شي.

[۳۰۷۹] (۱) حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ بَكَّارٍ، حَدَّثَنَا وَهَيْبُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنِ الْعَبَّاسِ السَّاعِدِيِّ يُعْنِي ابْنَ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَبُوكَ فَلَمَّا آتَى وَادِيَ الْقُرَى إِذَا امْرَأَةً فِي حَيْقَةٍ لَهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَصْحَابِهِ: "اخرصوا، فخرص رسول الله صلى الله عليه وسلم عشرة أوسق، فقال للمرأة: أخصي ما يخرج منها، فأتينا تبوك فأهدى ملك أبله إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم بغلة بيضاء وكساة بردة وكتب له يعني بخره، قال: فلما أتينا وادي القرى، قال للمرأة: كم كان في حديقتك؟ قالت: عشرة أوسق خرص رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: إني متعجل إلى المدينة فمن أراد منكم أن يتعجل معي فليتعجل".

د ابو حميد ساعدي رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه دنبي صلى الله عليه وسلم سره غزوه تبوك ته لارم هرکله چه وادي القري مقام ته ورسيدو نويوه ښځه ئې اوليدله چه په خپل باغ کښې ناسته وه نبي صلى الله عليه وسلم صحابه کراموته او فرمائيل چه ددي ښځې دباغ دميوو اندازه واخلئ بيا پخپله نبي صلى الله عليه وسلم ددي دميوو لس وسقه اندازه مقرر کړه بيانبي صلى الله عليه وسلم هغه ښځې ته او وئيل کله چه ميوه پخه شي نو ددي اندازه ياد وساته ابو حميد وائي چه بيا مونږ ټول تبوک ته راغلو په شام کښې دايکه نوم کلي بادشاه نبي صلى الله عليه وسلم ته يوسپين قچر په هديه کښې راوليږو اونبي صلى الله عليه وسلم ورته هم يوخادر ورگړو اود جزئي په شرط ئې دده دملک سند اوليکلو کله چه مونږ په واپسئ کښې وادي القري ته راورسيدو نونبي صلى الله عليه وسلم دهني ښځې نه تپوس وکړو چه ستا په باغ کښې څومره ميوه وه هغې او وئيل لس وسقه دهغه مقدار مطابق دکوم چه نبي صلى الله عليه وسلم اندازه لگولي وه ددي نه پس نبي صلى الله عليه وسلم او فرمائيل په مونږ باندې مدينې ته په تلو کښې ناوخته دي که چرې په تاسو کښې څوک زر رسيدل غواړي نو زما سره دي روان شي.

﴿ عن ابى حميد الساعدي رضي الله عنه قال غزوت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم تبوكا فلما اتى وادي الخ ﴾

شرح الحديث :

ابو حميد الساعدي رضي الله عنه فرمائي چه د تبوک په سفر کښ، زه د رسول الله صلى الله عليه وسلم سره اوم، چه کله د سفر په دوران کښې وادي القري ته اورسيدو نو هلته يو زنانه په خپل باغ کښې وه، رسول

(۱) صحيح البخاري/الزكاة ۵۴ (۱۴۸۱)، والجزية ۲ (۳۱۶۱)، صحيح مسلم للحج ۹۳ (۱۳۹۲)، (تحفة الأشراف: ۱۱۸۹۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵/۴۷۴) (صحيح)

الله ﷺ د دې باغ په لیدو باندي د دې په باره کښې خرص (۱) او فرمائیلو د خرص مقدار رسول الله ﷺ لس وسقه بیان او فرمائیلو، رسول الله ﷺ صحابه کرامو ﷺ ته کوم چه هغوی سره وو هم او فرمائیل چه تاسو هم خرص او کړئ، او د دې باغنه د وتلو په وخت رسول الله ﷺ هغه زنانه ته اووې چه خیال کوه په دې باغ کښې خومره پیدوار کیرې (چه معلومه شی چه د چا خرص صحیح دې) پس وړاندي په روایت کښې دی چه د سفر نه په واپسې کښې رسول الله ﷺ د هغه زنانه نه د میوې په باره کښې تپوس او کړو چه خومره اوختل، نو هغې هم هغه لس وسقه بیان کړل، د رسول الله ﷺ د خرص موافق.

د دې حدیث ذکر د کتاب الزکوة په باب الخرص کښې هم تیر شوی دې.

﴿ فاتینا تبوک فاهدی ملک ایله الی رسول الله ﷺ بغلة بیضاء ﴾ راوی بیان کوی چه کله مونږ تبوک ته اورسیدو نو هلته د قیام په دوران کښې د ایله بادشاه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې د بغله بیضاء هدیه پیش کړه، او رسول الله ﷺ د هغې په عوض کښې هغه ته یو قیمتی شال ورکړو.

﴿ وکتب له یعنی ببحره ﴾ یعنی رسول الله ﷺ ملک ایله دپاره د هغه کلې اولیکلو.

په (بذل القوة) کښې لیکلې دی چه رسول الله ﷺ په ۹ هجری کښې د یحنه طرف ته د دعوت الی الاسلام خط اولیرلو کوم چه د ایله بادشاه وو او نصرانی وو، نو د رسول الله ﷺ د تبوک د زمانې په قیام کښې دا بادشاه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو اسلام خو ئې قبول نه کړو خو جزیه ورکول ئې قبول کړل درې سوه دیناره د کال، په دې باندي رسول الله ﷺ د هغه سره صلح نامه اولیکله. دا کتاب بذل القوة فی حوادث سنی النبوة د علامه مخدوم محمد هاشم سندي بی مثالہ تالیف دې چه د هغې اردو ترجمه "عهد نبوت کې ماه وسال" از محمد یوسف لدهیانوی، شائع شوی دې.

مناسبة الحديث للترجمة:

په دې حدیث کښې د مصنف ﷺ غرض ﴿ وکتب له ببحره ﴾ سره تعلق دې هم د دې وجې نه مصنف ﷺ دا حدیث دلته یعنی په احیاء الموات کښې راوړې دې — کذا فی البذل عن تقرير الشيخ الجنجومي.... خو اولی دا ده لکه چه ظاهره ده، چه مصنف ﷺ دا روایت د باب الاحیاء په خاڼي په باب الاقطاع کښې ذکر فرمائیلې وې او صاحب د عون المعبود د حدیث د باب سره مناسبت په بله طریقه لیکلې دې هغه دا چه هغه زنانه په ارض موات کښې اونې لگولو سره د هغې احیاء کړې وه د رسول الله ﷺ د علم باوجود هغوی هغه زنانه په هغه باغ باندي برقرار اوساتله او د هغې نه ئې وانخستلو هم په دې وجه د دې احیاء په سبب هغه مالک شوه معلومه شوه چه احیاء موات د هغې د ملک سبب دې. والله تعالی اعلم آه

﴿ فقال رسول الله ﷺ انی متعجل الی المدينة فمن اراد منکم ان يتعجل معی فليتعجل ﴾

۱ خرص یعنی په خپل انداز سره متعین کول چه په دې باغ کښې چه کومې اونې دی په هغې باندي د میوو دومره مقدار دې

یعنی د تبوک نه په واپسی باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه زه مدینې ته زر رسیدل غواړم چه په تاسو کښې هم چه کوم انسان په تندې هلته رسیدل غواړی نو هغه دې هم ما سره راځی، د دې شرح ئې دا لیکلې ده چه کله رسول الله ﷺ مدینې طیبې ته اورسیدلو نو د هغه ځانې نه مدینې ته د داخلیدو دپاره رسول الله ﷺ طریق غراب اختیار او فرمائیله ځکه چه هغه د مدینې اقرب ترین لار وه او دویمه لار رسول الله ﷺ ترک کړه، لښکر خو ټول په دویمه لار باندې لارو کومه چه لرې وه رسول الله ﷺ او د هغوی سره بعض صحابه کرامو دا نزدې لاره اختیار او فرمائیله. والحديث اخرجہ البخاری ومسلم قاله المنذری، قلت اخرجہ البخاری فی مواضع الزکوة والحج والجهاد وغيرها

[۳۰۸۰] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ كَلْثُومٍ، عَنْ زَيْنَبَ: أَنَّهُمَا كَانَتَا تَقْلِي رَأْسَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَعِنْدَهُ امْرَأَةٌ عُمَانَ بْنِ عَفَانَ، وَنِسَاءٌ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ وَهُنَّ يَشْتَكِينَ مَنَازِلَهُنَّ أَنَّهُمَا تَضِيقُ عَلَيْهِنَّ وَيُخْرَجْنَ مِنْهَا، فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُورَثَ ذُورَ الْمُهَاجِرِينَ النِّسَاءُ، فَمَاتَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ فَوَرَّثَهُ امْرَأَتُهُ دَارًا بِالْمَدِينَةِ.

ترجمه: د ام المومنین زینب رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی چه ما دنبی ﷺ په سر کښې سپرې لټولې په دې وخت کښې د عثمان رضی اللہ عنہم بی بی او نورې ښځې هم ناستې وې او نبی ﷺ ته ئې دخپلو کورونو نه شکایت کوو چه داکورونه په مونږ باندې زمونږ دخاوندانو دوفات کیدونه پس تنگ کړې شوي دي او مونږ دهغه ځانې نه ویستل شوي یو نبی ﷺ حکم اوکړو چه دمهاجرینو زنانو ته دې کورونه په میراث کښې ورکړې شي کله چه عبدالله بن مسعود وفات شو نو ددې نه دده ښځې کور په میراث کښې یوروکوم چه په مدینه کښې وو.

مضمون د حدیث:

(عن ام کلثوم عن زینب رضی اللہ عنہا انها کانت تقلی راس رسول الله ﷺ وعنده امراءه عثمان بن عفان رضی اللہ عنہما ونساء من المهاجرات وهن يشتكين منازلهن انها تضيق عليهن)

د زینب ام المومنین رضی اللہ عنہا نه روایت دې چه هغې یو ورځ د رسول الله ﷺ سر مبارک گرولو، او هغه وخت رسول الله ﷺ سره د عثمان بن عفان رضی اللہ عنہ کور والا ناسته وه، او نورې هم ډیر مهاجرې زنانو کومو چه رسول الله ﷺ ته دخپلو کورونو د تنگ والی شکایت کولو یعنی د وارثانو د طرف نه بلکه هغوی به ترې نه ویستلې شوې. په دې باندې رسول الله ﷺ حکم او فرمائیلو چه د مهاجرینو د وفات نه پس دې د هغوی د کورونو د هغوی ښځې وارثانې کړې شي، پس چه کله د عبدالله بن مسعود رضی اللہ عنہ وفات او شو نو هم د هغوی بی بی د هغوی د کور وارثه شوه کوم چه په مدینه طیبه کښې وو.

په حدیث باندې یو اشکال او د هغې توجیه:

په دې باندې دا اشکال واقع کیږی چه کور په ترکه کښې داخل دې او د ترکې مستحقین خو په قرآن کریم کښې منصوص دی نو صرف ښځې څنگه وارثانې کیدلې د هغوی د

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۸۸۹)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۱۲/۸) (صحیح الإسناد)

کورونو؟ د دې ډیر جوابونه ورکړې شوي دي ۱: دا د مهاجرينو زنانو خصوصیت دې د رسول الله ﷺ د طرف نه. ۲: د دې نه مراد سکني ده په زمانه د عدت کښې تمليک دکور مراد نه دې یعنی د مړي وارثانو لره پکار دی چه د هغه بی بی لره په آرام سره د هغه په کور کښې عدت تیروولو ته پرېږدی او هغه نه پریشانه کوی. ۳: یا دا مراد دې چه د تقسیم ترکه په وخت د هغې خیال اوساتلې شی چه کور د مړي د ښځې په حصه کښې راشی، والاظهر هو المعنی الاخیر، امام خطابی رحمته الله رومبې جواب اختیار کړې دې یعنی خصوصیت په دې وجه چه د مهاجرينو زوجات په مدینې طیبه کښې مسافرې وې د هغوی خاندان او قبيله وغیره هلته نه وه، او په حاشیة کښې دی (او کیدې شی چه د سیوطي رحمته الله د طرف نه وی، ما دا مسئله په طور د دونړې په یو شعر کښې وئیلی ده.

سلم على مفتي الانام وقل له :: هذا سوال في الفرائض مبهم
قوم اذا ماتوا تحوز ديارهم :: زوجاتهم ولغيرها لا تقسم
وبقية المال الذي قد خلفوا :: يجرى على حكم التوراث منهم

وجوابه قلت:

هم المهاجرون ذاك بطيبة :: صلى على ذبيها الكريم المعلم

آه من البذل

باب مَا جَاءَ فِي الدُّخُولِ فِي أَرْضِ الْخُرَاجِ

د خراج په زمکه باندي داسيدو بيان

يعنى خراجي زمکه په بيعة اخستلو سره د هغې مالک جوړيدل يا په خراجي اوبو باندي خپله زمکه خروب کول.

[۳۰۸۱] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ بَكَّارِ بْنِ بَلَّالٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى يُعْنَى ابْنَ سَمِيْعٍ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ مُعَاذٍ، أَنَّهُ قَالَ: مَنْ عَقَدَ الْجَزِيَّةَ فِي عُنُقِهِ فَقَدْ بَرَّءَ مِنَّا عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دمعاذ رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه پاچه جزیه په خان لازمه کړه نو دې بې لاري شو د هغې لاري نه په کوي باندي چه نبی صلی الله علیه و آله روان دې.

الكلام على الحديث شرحا وفقها:

﴿ عن معاذ رضي الله عنه انه قال من عقد الجزية في عنقه فقد برئ (۲) مما عليه رسول الله ﷺ ﴾

يعنى كوم انسان چه په خپله مړي کښې د جزئي هار واچوی نو هغه بعيد شو د هغه طريق نه چه په هغې باندي رسول الله ﷺ وو په حديث کښې جزئي نه مراد جزية الارض يعنى خراج مراد دې، د دې حديث نه دوه خبرې معلوميری. اول د مسلمان دپاره د خراجي زمکې

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۷۲) (ضعيف الإسناد)

(۲): ددې ظاهري معنی خو ډیره سخته ده يعنى داسلام نه مخ اړول او کفر، خو مقصود ترې زجر او توبيخ (زورنه) ده، حقيقت دکلام نه دې مراد.

اخستل منع دی، دویم دا چه که د یو ذمی نه یو مسلمان خراجی زمکه واخلی او هغه زمکه د ذمی نه منتقل کیدو سره د مسلمان په ملکیت کښې راشی نو په دې صورت کښې د دې زمکې خراج نه ساقطیږی، د احنافو په نزد د مسلمان دپاره خراجی زمکه اخستل خو جائز دی باقی د خراج په باره کښې هغوی هم دا وائی چه هغه نه ساقطیږی لکه چه د حدیث الباب نه په فهم کښې راخی، او د شوافعو په نزد دې مسئله کښې تفصیل دې د زمکو د مختلفو قسمونو په لحاظ سره لکه چه د امام خطابی د کلام نه معلومیږی، دا مسئله د هغوی د فقه په کتابونو کښې په لټون باندې ملاؤ نه شوه، خو په رومی مسئله کښې دا حدیث د احنافو خلاف دې، ففي الهدایة، ويجوز ان يشتري المسلم ارض الخراج من الذی یوخذ منه الخراج لما قلنا، وقد صح ان الصحابة اشتروا اراضی الخراج وکانوا یؤدون خراجها فدل علی جواز الشراء واخذ الخراج وادائه للمسلم من غیر کراهة (هدایة ۳۴۲/۲) وفي البذل: والجواب عن الحدیث ان الحدیث غیر محتج به لان فی سنده مجهولا اه په دې وجه چه د رومی حدیث په سند کښې محمد بن عیسی دې هغه متکلم فیه دې، قیل لا یحتج به، او په دویم حدیث کښې عمارة بن ابی الشعثاء دې چه مجهول دې

[۳۰۸۲] () حَدَّثَنَا حَبِوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ الْحَضْرَمِيُّ، حَدَّثَنَا بَقِيَّةٌ حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ أَبِي الشَّعَثَاءِ، حَدَّثَنِي سِنَانُ بْنُ قَيْسٍ، حَدَّثَنِي شَيْبَةُ بْنُ نَعِيمٍ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ حُمَيْرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو الدَّرْدَاءِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ أَخَذَ أَرْضًا بِحِزْبَيْهَا فَقَدْ اسْتَقَالَ هِجْرَتَهُ وَمَنْ نَزَعَ صَعَارًا كَافِرٍ مِنْ عُنُقِهِ فُجِعَلَهُ فِي عُنُقِهِ فَقَدْ وُلِيَ الْإِسْلَامَ ظَهْرَهُ"، قَالَ: فَسَمِعَ مِنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ هَذَا الْحَدِيثَ، فَقَالَ لِي: أَشَيْبَةُ حَدَّثَكَ؟ قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: فَأَذَا قَدِمْتُ فَسَلُهُ فَلْيَكْتُبْ إِلَيَّ بِالْحَدِيثِ، قَالَ: فَكَتَبَهُ لِي، فَلَمَّا قَدِمْتُ سَأَلَنِي خَالِدُ بْنُ مَعْدَانَ الْقُرْطَاسَ فَأَعْطَيْتُهُ فَلَمَّا قَرَأَهُ تَرَكَ مَا فِي يَدِهِ مِنَ الْأَرْضِ حِينَ سَمِعَ ذَلِكَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا يَزِيدُ بْنُ حُمَيْرٍ الْيَزَنِيُّ لَيْسَ هُوَ صَاحِبُ شُعْبَةَ.

دابوالدرداء نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی خوک چه زمکه واخلی او جزیه اداکول منظور کړي نودده هجرت مات شو او چاچه دمشرک دشرمولو خبره (جزیه) دهغه دشت نه اوویستله او په خپل خټ کښې ئې واچوله نرده اسلام ته شاه وگرخوله دحدیث راوي سنان واثیلی دي چه دا حدیث ما دخالد بن معدان نه نقل کړې دې هغه وئیلی دی چه تاته دا حدیث شیبې بیان کړې دې ما او وئیل اوبیا ماته هغه و وئیل چه کله ته شیبې ته ورشي نو ورته اووایه چه ماته دا حدیث لیکلی راوایره سنان وائی چه شیبې دخالد دپاره تحریر کړې کله چه زه راغلم نو خالد بن معدان هغه کاغذ طلب کړو ما ورته ورکړو هغه چه کله ولوستو نو دهغه سره چه خومره خراجی زمکه وه توله ئې پریخوده ابوداود وائی چه یزید بن خمیر یزنی وم چه دشعبه شاگرد د هغه مراد نه دې

قوله: (حدیثی ابوالدرداء رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله ﷺ من اخذ ارضا بحزبها فقد استقال هجرته) رسول الله ﷺ او فرمائیلی چه کوم سړی یو زمکه واخلستله د هغې د خراج سره مراد ترې شراء ده. نو هغه خپل هجرت باطل کړو. او د دې نه روستو جمله هم د دې هم

۱: تفرد به ابوداود، (تحفة الأشراف: ۱۰۹۶۹) (ضعیف الإسناد)

معنی او هم د دې تاکید دې چه د هغې ترجمه دا ده. چه کوم انسان د کافر د ذلت خیز د هغه د مرئ نه ویستلو سره واچولو، نو هغه اسلام طرف ته خپله شا او گرزوله.
کتب الشیخ فی البذل : وهذا علی سبیل التغلیظ والتشدید.

﴿ قال فسمع منی خالد بن معدان هذا الحدیث فقال لی : اشیب حدیثک؟ فقلت نعم ﴾

شرح الحدیث :

سنان بن قیس وائی چه زما نه دا حدیث خالد بن معدان واوریډو. د اوریډو نه پس ئې تپوس او کړو چه آیا دا حدیث تا د شیب نه اوریډلې دې؟ ما اووې جی (زمونږ په دې سند کښې د سنان استاد شیب دې) په دې باندي هغوی اووې چه کله ستاسو هغه ته تگ وی نو د هغه ته درخواست او کړه چه هغه دې دا حدیث ماته په لیکلو سره راولیږی، سنان وائی چه ما په هغه باندي دا حدیث اولیکلو بیا چه کله زه راغلم خالد ته نو هغه زما نه هغه کاغذ طلب کړو چه په کوم باندي حدیث لیکلې شوې وو. سنان وائی چه کله خالد هغه حدیث اولوستلو نو هغوی سره چه کومه خراجی زمکه وه هغه ئې پریخودله.

د خالد بن معدان عمل چونکه د عدم علم په وجه د دې حدیث خلاف وو، په دې وجه هغوی په دې حدیث باندي د عمل کولو دپاره دا تحقیق او کړو چه د حدیث د محقق کیدو نه پس په هغې باندي عمل آسان شی. دادواړه احادیث د احنافو خلاف دی د دې جواب پورته ذکر شو د صحابه کرام رضی الله عنہم نه د خراجی زمکو اخستل ثابت دی دا احادیث ضعیف دی.

﴿ قال ابو داؤد : هذا یزید بن خمیر الیزنی، لیس هو صاحب شعبة ﴾

مصنف رضی الله عنہ فرمائی چه دا یزید بن خمیر کوم چه حدیث لره د ابو الدرداء نه روایت کوی دا یزید بن خمیر الیزنی دې، او هغه یزید نه دې کوم چه د شعبه شاگرد دې، ځکه چه هغه بل یزید، یزید بن خمیر الرجی دې، دا د اسماء رجال سره متعلق یو علمی افاده ده، چه د چا شک پیدا نه شی.

باب فی الأرض یحییها الإمام أو الرجل

که امام یا بل څوک د چا زمکې کښا، اوبه منع کړي نوڅه حکم دي؟

[۳۰۸۳] (۳۰۸۳) حَدَّثَنَا ابْنُ السَّرْحِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهَبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنْ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ الصَّعْبِ بْنِ جَثَامَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا حِمَى إِلَّا لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ"، قَالَ ابْنُ شَهَابٍ: وَبَلَّغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَمَى النَّقِيعِ.

د صعب بن جثامه رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی: منع کول جائز نه دی مگر د الله اودهغه در رسول دپاره یعنی د جهاد خاروی یا دزکات دخاروو نه علاوه حمی منع کول جائز نه دي، ابن شهاب وئیلی دی چه نبی صلی الله علیه و آله دنقیع زمکه منع کړې وه.

﴿ عن ابن عباس رضی الله عنہما عن الصعب بن جثامة رضی الله عنہ ان رسول الله صلی الله علیه و آله قال لا حمى الا لله ولرسوله ﴾

: صحيح البخاري/المساقاة ۱۱ (۲۳۷۰)، الجهاد ۱۴۶ (۳۰۱۲)، تحفة الأشراف: (۴۹۴۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷/۴، ۳۸، ۷۱، ۷۳) (صحيح)

شرح الحدیث :

حمی لفظاً مصدر دې چه د هغې معنی د حفظ کولو ده، دلته اسم مفعول یعنی د محمی په معنی کښې دې، د جاهلیت په زمانه کښې د قوم د رئیسانو دا عادت وو چه داسې ځانې چه چرته شینکې وی هغه به ئې د ځان دپاره ساتلو، په رعایا کښې به چاته هم اجازت نه وو خپلو څاروو لره هلته د څرولو. اسلام خپلو. راتلو سره د دې عادت ابطال او کړو، خو په دې کښې د رسول الله ﷺ استثناء او کړې شوه، د الله پاک نوم خو د برکت دپاره دې، پس دا مسئله د علماء کرامو ترمینځه اتفاقی ده چه د رسول الله ﷺ نه علاوه د یو امام دپاره هم د حمی جواز نشته یعنی د خپل ذات دپاره، او که د مصلحت عامه دپاره وی لکه د جهاد آسونه او د صدقې اوبنان نو د دې په جواز کښې اختلاف دې، او اگر چه د رسول الله ﷺ دپاره د حمی د جواز خپله په دې حدیث کښې تصریح ده خو رسول الله ﷺ کله هم د خپل ذات دپاره د حمی انتخاب نه دې کړې او وړاندې چه په روایت کښې راځی چه د نقیع رسول الله ﷺ حمی او کړه هغه د خپل ځان دپاره نه وه.

په حمی او احياء کښې فرق :

دا د احياء الموات کتاب شروع دې چه په هغې کښې مصنف رحمته الله علیه حمی ذکر کړه د احياء الموات خو شریعت اجازت ورکړې دې خو د حمی نه ئې منع کړې ده اگر چه د دواړو تعلق د ارض مباحه غیر مملوکه سره دې خو هغه موات د کوم د احياء چه اجازت دې د دې نه مراد هغه بیکاره او بنجر زمکه ده او د حمی تعلق د هغه موات سره دې چه شنه وی، چه د خلقو فائده د هغې سره تړلې وی، هم په دې وجه د دې نه منع کړې شوې ده چه په دې کښې د عوامو ضرر او نقصان دې. دا نقیع په نون سره دې د یو ځانې نوم دې کوم چه د مدینې طیبې نه په شلو فرسخو کښې واقع دې. یو نقیع هغه هم دې چه د هغې ذکر په باب الجمعة فی القرى کښې راغلې دې یعنی نقیع الخضعات هغه بل ځانې دې. (بذل)

والحدیث اخرجه البخاری والنسائی، قاله المنذری

[۳۰۸۴] (۱) حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ الصَّعْبِ بْنِ جَثَامَةَ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، حَمَى النَّقِيعِ، وَقَالَ: "لَا حَمَى إِلَّا لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ".

دصعب بن جثامه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ نقیع مقام حمی مقرر کړه او وئې فرمائیل چه حمی (اوبه بندول) جائز نه دی مگر دالله تعالی دپاره.

(۱): انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۴۹۴۱) (حسن)

بَاب مَا جَاءَ فِي الرِّكَازِ وَمَا فِيهِ

د خښ کړې شوی مال بیان

[۳۰۸۵] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْبَانٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ، سَمِعَا أَبَا هُرَيْرَةَ، يُحَدِّثُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "فِي الرِّكَازِ الْخُمْسُ".

د ابو هريرة رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی: در کازنه به خمس اخستلی شی

﴿ عن ابی هريرة رضي الله عنه ان النبي صلی الله علیه و آله قال : فی الرکاز الخمس ﴾

الكلام على الحديث من حيث الفقه ومذاهب العلماء :

په دې حدیث باندې کلام د معادن قبلیه والا حدیث کښې تیر شوې دې چه د هغې خلاصه من حیث الفقه واختلاف الائمة دا ده چه کانونه په دوه قسمه دی، یو مخلوق لله تعالی یعنی د الله پاک پیدا کړی کوم چه الله پاک د زمکې سره پیدا او فرمائیل چه هغې ته معدن وئیلې شی، دویم مدفون د فینه جاهلیه یعنی د انسانانو په زمکه کښې ښخ کړې مال د دې نوم کنز دې، د احنافو په نزد د دې دواړو حکم یو شان دې یعنی وجوب الخمس، او د جمهورو علماء کرامو چه په کښې درې امامان هم دی په دواړو کښې د فرق قائل دی، یعنی په معدن کښې د زکوة او په کنز کښې د خمس، او د اختلاف د منشاء بحث مخکښې تیر شوې دې چه د هغې خلاصه دا ده چه په حدیث کښې دی ﴿ وفي الرکاز الخمس ﴾ او د احنافو په نزد د رکاز اطلاق په دواړو باندې کیږی په دې وجه د هغوی په نزد په دواړو کښې خمس دې او د جمهورو په نزد د رکاز مصداق صرف کنز دې په دې وجه د هغوی په نزد په معدن کښې خمس نشته بلکه زکوة دې.

دویم اختلاف دلته دا دې چه کانونه خو د مختلفو خیزونو وی، کومو کانونو کښې خمس واجب کیږی په دې کښې د شوافعو او مالکیانو مذهب دا دې چه صرف د نقدو پیسو (ذهب وفضة) په کان کښې، د امام احمد رضي الله عنه په نزد هر قسم کان کښې او د احنافو په نزد په هر جامد منطبع کښې، یعنی داسې منجمد او خشک خیز چه په اور باندې کیخولو سره ویلې کیږی لکه سره او سپین زر او نور دهاتونه، او په معادن کښې د جمهور په نزد د نصاب شرط نشته، په قلیل او کثیر ټولو باندې خمس واجب دې مگر په یو روایت د امام شافعی رضي الله عنه کښې، او په اجماع سره په دې کښې د کال تیریدو اعتبار هم نشته.

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه مطولا ومختصرا قاله المنذری

۱: صحیح البخاری/الزکاة ۶۶ (۱۴۹۹)، والمساقاة ۳ (۲۳۵۵)، والديات ۲۸ (۶۹۱۲)، ۲۹ (۶۹۱۳)، صحیح مسلم/الحدود ۱۱ (۱۷۱۰)، سنن الترمذی/الأحكام ۳۷ (۱۳۷۷)، سنن النسائی/الزکاة ۲۸ (۲۴۹۴)، سنن ابن ماجه/الأحكام ۴ (۲۶۷۳)، (تحفة الأشراف: ۱۳۱۲۸، ۱۵۱۴۷)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للعقول ۱۸ (۱۲)، مسند احمد (۲۲۸/۲، ۲۲۹، ۲۵۴، ۲۷۴، ۲۸۵، ۳۱۹، ۳۸۲، ۳۸۶، ۴۰۶، ۴۱۱، ۴۱۴، ۴۵۴، ۴۵۶، ۴۶۷، ۴۷۵، ۴۸۲، ۴۹۲، ۴۹۵، ۴۹۹، ۵۰۱، ۵۰۷)، سنن الدارمی/الزکاة ۳۰ (۱۷۱۰)، ویأتي هذا الحديث في الديات (۴۵۹۳) (صحیح)

(۳۰۸۶) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي أُيُوبَ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ الْعَوَّامِ، عَنْ هِشَامِ بْنِ الْحَسَنِ، قَالَ: "الرِّكَازُ الْكَنْزُ الْعَادِيُّ".

دحسن بصري نه روايت فرمائي چه رڪاز خزاني ته وئيلي شي.

(۳۰۸۷) حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مُسَافِرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، حَدَّثَنَا الزَّمْعِيُّ، عَنْ عَمَّتِهِ قُرَيْبَةَ بِنْتِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ وَهَبٍ، عَنْ أُمِّهَا كَرِيمَةَ بِنْتِ الْبِقْدَادِ، عَنْ ضَبَاعَةَ بِنْتِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ هَاشِمٍ، أَنَّهَا أَخْبَرَتْهَا، قَالَتْ: ذَهَبَ الْبِقْدَادُ لِحَاجَتِهِ بِبَقِيعِ الْخَبْجَةِ، فَإِذَا جُرِّدَ يُخْرِجُ مِنْ جُحْرِ دِينَارًا، ثُمَّ لَمْ يَزَلْ يُخْرِجُ دِينَارًا دِينَارًا حَتَّى أُخْرِجَ سَبْعَةَ عَشَرَ دِينَارًا، ثُمَّ أُخْرِجَ خِرْقَةٌ حُمْرَاءُ يَعْنِي فِيهَا دِينَارٌ، فَكَانَتْ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ دِينَارًا، فَذَهَبَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبَرَهُ وَقَالَ لَهُ: خُذْ صَدَقَتَهَا، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "هَلْ هَوَيْتَ إِلَى الْجُحْرِ؟ قَالَ: لَا، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِيهَا".

دضباعه بن زبیر بن عبدالمطلب بن هاشم نه روايت دي فرمائي چه ددي خاوند مقداد رضي الله عنه دڅه کاردياره بقیع الخبجة نوم کلي ته لاړو (دمدیني خواته هلته ئې وه مړه اولیدله چه دیوسوري نه ئې پودینار راوويستلو اوبیا ئې بل راوويستلو ددي نه پس ئې بیابل راوويستلو تردې چه ولس دینار ئې پوره کړل اوبیا ئې پوه سره کڅوره راوويستله په کومه کنبې چه یو دینار موجود وو نوتول اتلس دیناره شول مقداد نبی صلی الله علیه و آله ته راوړل او واقعه ئې ورته بیان کړه او نبی صلی الله علیه و آله ته ئې عرض اوکړو چه ددي دینارونو زکات واخله نبی صلی الله علیه و آله ورته او فرمائي ایا ته سوري ته متوجه شوې وي؟ مقداد اووئیل نه، نبی صلی الله علیه و آله او فرمائل الله تعالی دي تاته په دې مال کنبې برکت واچوي.

شرح الحديث وتوضیح المسئلة الثابتة بالحديث:

(نا الزمعي عن عمته قريبة بنت عبد الله بن وهب عن امها كريمة بنت المقداد عن ضباعة بنت الزبير بن عبدالمطلب انها اخبرتها، قالت ذهب المقداد لحاجته بنقيع الخبجة (۳))

دې حديث لره قريبه روايت كوي د خپلې مور كريمه نه او كريمه روايت كوي د خپلې مور ضباعه نه او ضباعه د خپل خاوند مقداد رضي الله عنه قصه بيانوي هغه دا ده چه ضباعه وائې چه مقداد بن الاسود رضي الله عنه خپل څه كار پسې مقام نقيع الخبجة ته لاړو نو هغه يو ځانې كنبې ناست وو هغه يو لويه مړه اوليده چه په يو سوري كنبې يو دینار راكارې او راوړلو سره ئې د سوري نه بهر پريخودله، هغه مړه بار بار دې سوري ته ځي او هر ځل يو يو دینار راوړي، دغه شان اوولس دیناره جمع شو، او بیا ئې په آخیر كنبې يو سره تهيلئ رانكوله چه په هغې كنبې يو دینار وو، اوس دا ټول اتلس دیناره شو، ضباعه وائې چه مقداد دې دینارونو لره اخستلو سره د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت كنبې حاضر شو او عرض ئې اوکړو چه د دې نه كومه صدقه واجب وي هغه ترې نه واخلي، رسول الله صلی الله علیه و آله د هغوی نه تپوس اوکړو (هل

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۵۵) (صحیح)

(۲): سنن ابن ماجه لأحكام ۳ (۲۵۰۸)، (تحفة الأشراف: ۱۱۵۰) (ضعیف)

(۳): بغاه وجيم ويخاتين ويجيمين، اسم موضع بناحية المدينة.

هویت (۱) الی الجحر قال لا فقال له رسول الله ﷺ بارک الله لک فیها
 په دې قصه کښې چه کوم فقهي بحث دې هغه دا دې چه د دې دنيارونو دوه حیثیتونه کیدې
 شی یا خو دې دا لقطه اومنلې شی یا رکاز که دا د قبیلې د لقطې نه وې (۲) نو د دې اعلان
 واجب وو، او په حدیث کښې اعلان ذکر نه دې خو د اعلان نفی هم نه ده، لهذا اعلان واجب
 دې، او یا دې داسې بیان کړې شی چه (سقط التعریف لاجل عدم محل التعریف وعدم امکانه)
 یعنی دا چه کوم خاڼې واقع دې هغه لاره عامه د تیریدو نه ده، چه اعلان اوکړې شی نو
 څنگه اوکړې شی، او که دا د قبیلې د رکاز نه اومنلې شی نو بیا په دې کښې خمس واجب
 وو، خو د خمس اخستلو په دې حدیث کښې نشته دې بلکه (بارک الله لک فیها) کښې
 اشاره د دې خلاف ده. نو کیدې شی چه خمس رسول الله ﷺ د مقدار په حق کښې معاف
 کړې وی، لاجل فقره وحاجته.

والحدیث اخرجہ ابن ماجه، قاله المنذری

بَابُ نَبْشِ الْقُبُورِ الْعَادِيَةِ يَكُونُ فِيهَا الْمَالُ

د پخوانو قبرونو (چه مال پکښې وی) د سپردلو بیان

عادیه په معنی د قدیمه، عرب خلق عادیه وئیلو سره قدیمه مراد کوی ځکه چه د
 قوم عاد زمانه زمونږ په اعتبار سره ډیره قدیم ده یعنی پخوانی قبرونه په وخت د ضرورت
 سپردل، د جمهور په نزد جائز دی په دې باندې شامی بغیر د کراهت نه تصریح کړې ده، او د
 مالکیانو په نزد سره د کراهت نه.

[۳۰۸۸] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعِينٍ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا أَبِي سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْحَاقَ يُحَدِّثُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ
 بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ بُجَيْرِ بْنِ أَبِي بُجَيْرٍ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدِ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ
 حِينَ خَرَجْنَا مَعَهُ إِلَى الطَّائِفِ فَمَرَرْنَا بِقَبْرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَا قَبْرُ أَبِي رِغَالٍ وَكَانَ يَهْدِي الْحَرَمَ
 يَدْفَعُ عَنْهُ فَلَمَّا خَرَجَ أَصَابَتْهُ النَّقْمَةُ الَّتِي أَصَابَتْ قَوْمَهُ يَهْدِي الْمَكَانَ قَدْ فُتِنَ فِيهِ وَآيَةٌ ذَلِكَ أَنَّهُ دُفِنَ مَعَهُ عُصْنٌ مِنْ
 ذَهَبٍ إِنْ أَنْتُمْ نَبَشْتُمْ عَنْهُ أَصَابَتْكُمْ مَعَهُ فَأَبْتَدَرَهُ النَّاسُ فَاسْتَحْرَجُوا الْغُصْنَ.

د عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ کله دنبي صلى الله عليه وسلم سره طائف
 ته لاړو نو په لاره کښې مویوقبر اولیدو نبي صلى الله عليه وسلم قبرته اوکتل اووئې وئیل دادابورغال قبر
 دې او هغه به دحرم دحدودونه نه وتلو اوگمان به ئې دارو چه دحرم په حدودوکښې به
 دعذاب نه بیچ یم کله چه دحرم نه بهر لاړو نو هلته په هغه باندې هغه عذاب راغې کوم چه دده
 په قوم باندې راغلې وو اولتنه دفن کړې شو او ددې نښه داده چه هغه کله دفن کیدو
 نودهغه سره دسرو زرو یوه لښته دفن کړې شوه که چرې تاسودا قبر راوسپړی نو هغه لښته

(۱) قال الخطابي يدل علي انه لو اخذها من الجحر لكان ركازا يجب فيها الخمس اهـ

(۲) ابن العربي په شرح د ترمذی کښې دا احتمال داسې ليکلی دې چه رسول الله ﷺ چونکه د هغوی
 نه تپوس اوکړو (هل هويت الي الجحر) نو گویا په دې سره اشاره اوشوه دې طرف ته چه که هوی
 موندلې شوې وې نو بیا به رکاز وې، لهذا دا لقطه اومنلې شوه الخ

(۳) تفرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۶۰۷) (ضعيف)

به درته ملار شي خلقو چه داخبره واوريده نو دقبر طرف ته ئې ورمنده كړل او وئې سپرېدو او هغه لښته ئې تري بهر راوويستله.

﴿ سمعت عبد الله بن عمرو رضي الله عنه يقول سمعت رسول الله ﷺ يقول حين خرجنا معه الى الطائف فمررنا بقبر فقال رسول الله ﷺ هذا قبر ابي رغال وكان بهذا الحرم يدفع عنه ﴾

شرح الحديث او د ابورغال تذکره:

عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه فرماني چه ما د رسول الله ﷺ نه دا واوريدل چه كله مونږ هغوی سره طائف طرف ته روان وو او مونږ په يو قبر باندي تير شو نو رسول الله ﷺ او فرمائيل چه دا د ابورغال قبر دې، او د حرم مکه طرف ته اشاره فرمائيلو سره ئې او فرمائيل چه هغه دلته راغلي وو د خپل خان نه د عذاب لرې كولو دپاره بيا چه كله د حرم نه راووتلو نو هغه هم عذاب راو نيولو كوم چه هغه قوم ته رسيدلې وو هم دې خائي كښې نو هغه دفن هم دلته كړې شوې وو، او رسول الله ﷺ او فرمائيل چه د دې يو نخښه دا هم ده چه د هغه سره د سرو زرو يو خانگه دفن كړې شوې وه كه تاسو د هغه قبر اوكنئ نو هغه به ورسره بيا مومي په دې او ريډو باندي صحابه كرامو رضي الله عنهم د هغه دقبر طرف ته منډه كړه او هغه قبر كنستلو سره ئې هغه د سرو زرو خانگه راويستله. وئيلي شوې دي چه دا د سرو زرو تكړه د شل رطل وزن وه.

په ترجمه الباب كښې خو دا شبهه كيده چه دا باب د دې خائي نه دې بلكه د كتاب الجنائز كوم چه شروع كيدونكي دې په هغې كښې كيدل پكار وو، خو د حديث د مضمون نه د دې باب دلته د راوړلو مناسبت ښكاره شو مضمون د ركاز روان وو د هغه په قبر كښې هم چونكه سره زر دفن وو چه هغه راويستلې شو نو دا قبر په منزله د ركاز شو، فله در المصنف رضي الله عنه، د ابورغال په باره كښې ليكلې شوې دي چه: هو ابو ثقيف يعني د قبيله ثقيف جد اعلى هم دې وو او د قوم شمود نه وو د صالح عليه السلام عامل وو، د هغه تاريخ دير خراب دې، قيل دليل الحبشة حين جاؤا لهدم الكعبة ﴿ يعني د حبشه د فوج چه د ابرهه په امارت كښې د كعبې د وړانولو دپاره راغلي وو د هغې رهبر هم دا وو، په ظلم او سپيره والي كښې ضرب المثل وو حاجيان خلق د هغه د قبر رجم هميشه كوي، د دې وجې نه جرير شاعر وائي د خپل حريف فرزديق په حق كښې

اذا مات الفرزدق فارجموه كما ترمون قبر ابي رغال

د ده ذكر په سنن ترمذي كښې هم راغلي دي چه يو سرې چه د قبيله بنو ثقيف وو چه هغه خپلو ټولو بيبيانو ته په يو ځل باندي طلاق وركړو نو عمر رضي الله عنه هغه ته او فرمائيل ﴿ لتراجعن نساءك او لارجمن قبرك كما رجم قبر ابي رغال ﴾ اهـ

دا حديث د اعلام نبوة نه دې او د اخبار بالمغيبات د قبيلې نه دې. دا ابواب القطائع واحياء الموات د كتاب الخراج د ملحقاتو نه دي لهذا پوهه شئ چه دلته رارسيدو سره كتاب الخراج پوره شو. فله الحمد والمنة

کتاب الجنائز

د جنازې د احکامو بیان

د دې کتاب په مناسبت باندې د کتاب الخراج والقی سره خان داسې پوهه کړې چې خراج څه مستقل کتاب نه دې بلکه هغه د متعلقاتو او ملحقاتو د جهاد نه دې او په جهاد او جنائزو کې مناسبت ښکاره دې، (اذا الجهاد یبئ عن الموت) یعنی جهاد د مرگ د یادولو څیز دې او هغې ته ډیر زیات نزدې دې، په جهاد کې د خپل نفس بازی وی او په صحیح بخاری او مسلم کې کتاب الجنائز، په کتاب الصلوة پسې متصلا ذکر کړې شوې دې د صلوة الجنائز د مناسبت د وجې نه کوم چې د مړې په احکاماتو کې دې، او په جامع ترمذی کې دا کتاب د کتاب الحج نه پس متصلا دې یعنی د ارکان اربعه نه فارغ کیدو نه پس دې خبرې طرف ته اشاره کوی چې د انسان مقصود په دې عباداتو او ارکان اسلام سره د آخرت تیارې دې، د صلاة الجنائز مشروعیت لکه څنگه چې په اوچتو کې لیکلې شوې دی د ۱ هجری نه دې لهذا کوم صحابه کرام رضی الله عنهم د هجرة نه مخکې په مکه مکرمه کې وفات شوي هغوی باندې مونځ نه دې کړې شوې. (کذا فی هامش البذل)

فائده تاریخیه د بذل المجهود متعلق :

حضرت شیخ په حاشیه کې دا هم لیکلې دی چې د سهارنپوری رحمته الله علیه چې کوم آخری سفر د حجاز په نیت د هجرت او د بذل د تکمیل اوشو نو مدنی منورې ته د رسیدو نه پس په دیارلسم محرم ۱۳۴۴ هجری کې د خالی په ورځ باندې د ابوداؤد د شرح باقی حصه دلته (د کتاب الجنائز) نه لیکل شروع شو آه او د بذل المجهود په آخر کې خپله سهارنپوری رحمته الله علیه دا لیکلې دی چې د دې شرح تسوید په مدینه طیبه کې په روضه من ریاض الجنة کې سید ولد آدم بلکه د سید الخلق و العالم د قبر سره خوا کې په ۲۱ شعبان ۱۳۴۵ هجری کې پوره شو، یعنی د کتاب الجنائز نه اخیر پورې تقریباً یو نیم کال کې.

جنائز د جنازې جمع ده او په جنازه کې دوه لغات دی یو په فتحې د جیم سره او دویم په کسری د جیم سره، په فتحې د جیم سره مړې ته ائی او په کسری د جیم سره د جنازې کتبه ته وائی چې په هغې باندې مړې اوچتولې شی، وقیل بعکس ذلك..... دا مشتق دې د جنزه په معنی د ستر چې د باب ضرب نه دې، په ظاهره د مجنوز په معنی کې دې یعنی مستور، ځکه چې مړې مستور کیخودلې شی، پس په حدیث کې راځی چې د انسان چې کله انتقال اوشی نو هغه دې په یو څادر باندې پټ کړې شی، بغیر د ضرورت نه د هغه مخ ښکاره کول مناسب نه دی، په غسل وغیره کې هم د پوره پردې لحاظ ضروری دې.

باب الْأَمْرَاضِ الْمَكْفِرَةِ لِلذُّنُوبِ

دهغه مرضونو بیان کوم چې د کناهو نو دپاره کفارو جوړیږی

امراض چونکه عام طور سره د مرگ مقدمه وی په دې وجه ئې د کتاب الجنائز

شروع هم د دې باب نه اوکړه.

[۳۰۸۹] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّفِيلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، قَالَ: حَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الشَّامِ يُقَالُ لَهُ أَبُو مَنْظُورٍ، عَنْ عَمِّهِ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَمِّي، عَنْ عَامِرِ الرَّامِرِيِّ أَخِي الْخَضِرِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، قَالَ النَّفِيلِيُّ: هُوَ الْخَضِرُ، وَلَكِنْ كَذَا قَالَ، قَالَ: إِنِّي لَيْسَ لَدُنَّا إِذْ رُفِعَتْ لَنَا رَأْيَاتٌ وَالْوَيْبَةُ، فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالُوا: هَذَا الْوَاءُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَيْتُهُ، وَهُوَ تَحْتَ شَجَرَةٍ قَدْ بَسَطَ لَهُ كِسَاءً، وَهُوَ جَالِسٌ عَلَيْهِ، وَقَدْ اجْتَمَعَ إِلَيْهِ أَصْحَابُهُ، فَجَلَسْتُ إِلَيْهِمْ، فَذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْأَسْقَامَ، فَقَالَ: "إِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا أَصَابَهُ السَّقَمُ، ثُمَّ أَعْقَاهُ اللَّهُ مِنْهُ، كَانَ كَقَارَةَ لِمَا مَضَى مِنْ ذُنُوبِهِ، وَمَوْعِظَةٌ لَهُ فِيمَا يَسْتَقْبِلُ، وَإِنَّ الْبُنَافِقَ إِذَا مَرَضَ ثُمَّ أَغْفِيَ كَانَ كَالْبَعِيرِ، عَقَلَهُ أَهْلُهُ، ثُمَّ أُرْسِلَتْ فَلَمْ يَدْرِ لِمَ عَقِلَتْ، وَلَمْ يَدْرِ لِمَ أُرْسِلَتْ، فَقَالَ رَجُلٌ مِمَّنْ حَوْلَهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَمَا الْأَسْقَامُ؟ وَاللَّهِ مَا مَرِضْتُ قَطُّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قُمْ عَنَّا، فَلَسْتُ مِنَّا، فَبَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَهُ إِذَا أَقْبَلَ رَجُلٌ عَلَيْهِ كِسَاءٌ، وَفِي يَدَيْهِ شَيْءٌ قَدِ اتَّفَقَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي لَمَّا رَأَيْتُكَ أَقْبَلْتُ إِلَيْكَ، فَمَرَرْتُ بِقَيْصَةَ شَعْبٍ، فَسَمِعْتُ فِيهَا أَصْوَاتَ فِرَاحٍ طَائِرٍ، فَأَخَذْتُهُنَّ فَوَضَعْتُهُنَّ فِي كِسَابِي، فَجَاءَتْ أُمَّهُنَّ فَاسْتَدَارَتْ عَلَيَّ رَأْسِي، فَكَشَفْتُ لَهَا عَنْهُنَّ فَوَقَعَتْ عَلَيْهُنَّ مَعْرَبٌ، فَلَفَقْتُهُنَّ بِكِسَابِي، فَهَنَّ أَوْلَادٌ مَعِيَ، قَالَ: ضَعْبُهُنَّ عِنْدَكَ، فَوَضَعْتُهُنَّ، وَأَبَتْ أُمَّهُنَّ إِلَّا لَزُومَهُنَّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَصْحَابِهِ: أَتَعْجَبُونَ لِرُوحِ أَمْرِ الْأَفْرَاحِ فِرَاحِهَا؟ قَالُوا: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَوَالَّذِي بَعْتَنِي بِالْحَقِّ، لِلَّهِ أَرْحَمُ بَعِيدَةٍ مِنْ أَمْرِ الْأَفْرَاحِ بِفِرَاحِهَا، أَرْجَمَ بَيْنَهُنَّ حَتَّى تَضَعَهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَخَذْتَهُنَّ، وَأُمَّهُنَّ مَعَهُنَّ، فَرَجَعَ بَيْنَهُنَّ."

دعامر الرام خضري نه روايت دي فرمائي چه زه په خپل وطن کښې وم چه مونږ نشانونه او جهنډې اوليدلې ماتپوس او کړو چه داخه دي؟ نوراته معلومه شوه چه دا د رسول الله جهنډې دي، نوزه دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شوم هغه د يوې ونې لاندې ناست وو په يوخادر باندې کوم چه دهغه دپاره غورولې شوې وو، اودهغه نه گيرچاپيره صحابه کرام ناست وو زه هم ورسره په مينځ کښې کيناستم، نبی عليه السلام دمرضونو تذکره کوله اووښي فرمائيل کله چه يومومن ته مرض اورسيږي اوبياالله تعالی هغه ته ددې نه نجات ورکړي نودا مرض دده دپاره دتيرو شوو گناهونو کفارو جوړيږي اودا دمستقبل دپاره يونصيححت دي، اومنافق سرې چه کله بيمار شي اوبياروغ شي نودده مثال داوښ په شان دي کله چه دده مالک ده لره اوتږي اوبيا ښې پريږدي اوداخيال اونکړي چه دي ولي ترلې شوې وو اوولې پرانستې شو، په دي وخت کښې يوکس دښې عليه السلام په خدمت کښې حاضر شو اوعرض ښې اوکړو اي دالله رسوله مرض څه شې وي؟ په الله مې دي قسم وي زه هيڅ کله نه يم مريض شوې ښې عليه السلام اوفرمائيل پاسه ددې ځانې نه لار شه ته زمونږ نه نه ښې، عامر وئيلي دي چه مونږ دښې عليه السلام سره موجود وو چه يوکس دخان نه خادر تاو کړې وو اوراغې اوپه لاس کښې ښې څه شې نيولي وو ده اووئيل اي دالله رسوله ماچه کله ته اوليدي نوتاته راروان شوم په لاره کښې مې دونو يوخنګل اوليدو هلته مې دمرغو د بچو آوازونه واوريدل زه ورغلم اوهغه چي مې اونيول په خپل خادر کښې مې راونغښتل بياددي بچومور راغله اوزمادسردپاخه گرزيدله ماددي بچي پريښودل اوهغه هم پخپلو بچوباندې راوغورځيدله ددې بچوسره ماداهم اونيوله اوس مې په دي خادر کښې دخان سره راوړي دي ښې عليه السلام چه

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۵۰۵۶) (ضعيف)

دا واوریدل نو وئې فرمائیل داتول دلته کیرېده ماتول هلته کیښودل لیکن دخوسره مې مور پریڼه خوله ددې دپاره چه بچی پریږدي او پخپله چرته وتښتی، نو په دې وخت کښې نېی ﷺ صحابه کراموته افرمائیل ایا تاسو تعجب کوئ درحم گولوددې مرغئ نه پخپلو چوباندې هغوی او وئیل هو، ای دالله رسوله نېی ﷺ افرمائیل په هغه ذات مې دې قسم وي چاچه زه په ریښتیا سره نې جوړ کړې یم یقینا الله تعالی په خپل مخلوق باندې ددې نه هم زیات مهربان دې خومره چه دا مرغئ پخپلو بچوباندې مهربانه ده تاسو داچې ددې ځانې نه یوسئ او هم هلته ئې کیردئ دچرته نه چه تاسو داراوري دي او ددې بچودامور هم ورسره ویسئ نو هغه کس داتول هلته یورل.

﴿ عن عامر الرام اخی الحضرم قال النفیلی هو الحضرم ولكن کذا قال ﴾

مضمون د هدیث :

ابومنظور شامی راوی وائی چه ما ته زما تره بیان او کړو د عامر رام نه روایت کولو سره چه د حضر رور دې، وړاندې مصنف ﷺ فرمائی چه ما ته زما استاد عبدالله بن محمد النفیلی ﷺ وائی چه دا لفظ صحیح خضر دې خو زما استاد یعنی محمد بن سلمه هم دغه شان وئیلی وو، دا عامر رام چه هغه ته عامر رامی هم وائی د هغه شمیر په صحابه کرامون ﷺ کښې دې لکه چه په تهذیب کښې دی (دې ډیر ښه غشي ویشتونکې وو هم په دې وجه ورته رامی وائی) ﴿ قال انی... لیلادنا اذ رفعت لنا رایات والویة ﴾ مضمون د حدیث دا دې : عامر فرمائی چه زه په خپل ښهر کښې اوم نو ناڅاپه څو جهندی اوچتې شوې نو ما ورته کتلو سره اووې چه دا څه دی؟ نو خلقو اووې چه دا د رسول الله ﷺ جهنده ده نوزه فورا د هغوی خدمت ته لارم، هغه وخت هغوی د یوې اونې لاندې تشریف فرما وو یو څادر خور وو چه په هغې باندې هغوی ناست وو، د هغوی نه څلورو وارو اړخونو ته صحابه کرام ﷺ وو زه هم په هغوی کښې کیناستلم نو هغه وخت رسول الله ﷺ د بیماریانو تذکره کوله او فرمائیل ئې چه مومن ته چه کله یو بیماری اورسیږي او بیا الله پاک هغه ته د هغې نه شفاء ورکړي نو دا بیماری د هغه د تیرو گناهونو کفاره شی، او د بیا دپاره د عبرت سبب، او د دې په مقابله کښې چه کله مناف انسان بیمارشی او بیا د هغې نه روغ شی نو د هغه حال په منزله د هغه اوبن دې کوم لره چه د هغه مالک په یو وخت کښې تری، او بیا ئې په دویم وخت کښې پرانیزی نو هغه اوبن په دې نه پوهیږي چه د هغه مالک هغه ترلې ولې وو اوس ئې پرانستی ولې دې. ﴿ قال تعالی اولئک کالانعام بل هم اضل ﴾

وړاندې په روایت کښې دی چه په دې موقع باندې په حاضرینو کښې یو کس په بې پرواهئ سره تپوس او کړو یا رسول الله ﷺ دا امراض څه وی؟ والله زه خو چرته نه یم بیمار شوي؟ نو رسول الله ﷺ د هغه په دې طرز باندې ناراضه شو او وې فرمائیل ﴿ قم عنا فلست منا ﴾ چه پاسه د دې ځانې نه ته زمونږ د ملگرتیا قابل نه ئې. ﴿ فبينا نحن عنده اذا قبل رجل علیہ کساء وفي یده شی قد التفت علیه ﴾ راوی وائی چه مونږ د رسول الله ﷺ په مجلس کښې ناست وو چه یوسرې راغلو او د هغه په لاس کښې یو څیز وو چه په هغې باندې ئې د څادر پلو اچولې

وو هغه رسول الله ﷺ ته عرض او کړو چه کله زما په تاسو باندې نظر پریوتلو نو فوراً تاسو طرف ته راروان شوم نو زه په یو جاخ باندې راتیر شوم (د اونو وغیره مجموعه) نو په هغه جاخ کښې ما د مارغانو د بچو آواز واوریدلو نو ما هغه راوښول او په خپل خادر کښې مې هغه کیخودل نو د هغه بچو مور راغله د خپلو بچو د وجې نه او بالکل زما په سر باندې تاویده په الوتلو سره، چه ما د هغې بچو نه کپړه لرې کړه نو هغه فوراً په هغې باندې کیناستله او د هغې نه نه اخوا کیده تردې چه ما په هغوی ټولو باندې خادر ور واچولو، او وې وئیل چه هغه ټول بچی وغیره ما سره دی رسول الله ﷺ او فرمائیل دا دلته لاندې کیده ما هغه لاندې کیخودل بیا هم د هغوی مور د هغې نه نه اخوا کیده، ټول صحابه کرام ﷺ په دې منظر لیدو باندې متعجب وو، ځکه چه مارغان خود انسان خوا کښې نه ایساریږي.

د الله پاک په خپلو بندگانو باندې غیر محدودو رفت او رحمت:

نو په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل (تعجبون لرحم ام الافراخ فراخها) چه آیا تاسو د دې بچو د مور په رحم باندې تعجب کوئ چه دا په خپلو بچو باندې څومره مهربانه ده؟ صحابه کرام وﷺ عرض او کړو او جی، رسول الله ﷺ او فرمائیل (فوالدی بعشی بالحق لله ارحم بعباده من ام الافراخ بفراخها) قسم دی په هغه ذات چه زه ئې په حقه نبی رالیږي یم بیشکه الله پاک په خپلو بندگانو باندې زیات مهربانه دې په نسبت د دې بچو د مور نه په خپلو بچو باندې، او بیا رسول الله ﷺ هغه سړی ته اووې چه لار شه او دا چه دې د کوم ځانې نه راوچت کړی دی هم هلته ئې پرېږده.

بَابُ إِذَا كَانَ الرَّجُلُ يَعْمَلُ عَمَلًا صَالِحًا فَشَقَلَهُ عَنْهُ مَرَضٌ أَوْ سَفَرٌ

که څوک نیک اعمال کول غواړي خو مرض او سفر ورته مانع جوړشي

[۳۰۹۱] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَيْسَى، وَمُسَدَّدٌ، الْمَعْنَى قَالَ: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنِ الْعَوَامِرِ بْنِ حَوْشَبٍ، عَنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ السَّكْسَكِيِّ، عَنِ أَبِي بَرْدَةَ، عَنِ أَبِي مُوسَى، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيْرَ مَرَّةٍ، وَلَا مَرَّتَيْنِ، يَقُولُ: "إِذَا كَانَ الْعَبْدُ يَعْمَلُ عَمَلًا صَالِحًا، فَشَقَلَهُ عَنْهُ مَرَضٌ، أَوْ سَفَرٌ، كَتَبَ لَهُ كَسَالِهِ مَا كَانَ يَعْمَلُ، وَهُوَ صَحِيحٌ مُقِيمٌ."

د ابو موسی رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه یو ځل دوه ځله نه بلکه ډیر ځله مې د نبی ﷺ نه اوریدیدلي دي چه فرمائیل في: کله چه یو انسان د نیکو عملونو ارادي کوي بیادڅه مرض یا د سفر په وجه باندې دا کار سرته ونه رسولې شي نو دده دپاره به هم دومره ثواب اولیکې شي څومره چه به د دصحت او دقیام په وخت کښې حاصلولو.

(عن ابی بردة عن ابی موسی رضی الله عنه قال سمعت رسول الله ﷺ غیر مرة ولا مرتین)

ابو موسی اشعری رضی الله عنه فرمائی چه ما د رسول الله ﷺ نه یو ځل دوه ځله نه بلکه ډیر کرته اوریدلي دي هغوی به فرمائیل چه کله یو انسان یو نیک عمل کوي او بیا د یو سفر یا مرض د وجې نه هغه اونکړې شي نو د هغه په اعمال نامه کښې عمل صالح ډیر عمده کولو

(۱) صحیح البخاری/الجهاد ۱۳۴ (۲۹۹۶)، (تحفة الأشراف: ۹۰۲۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۱۰، ۴۱۸) (حسن)

سره ليكلې شي لکه څنگه چه به هغه د صحت او اقامت په حالت کښې کول. والحديث
اخرجه البخاري، قاله المنذري
دلته په حاشيه د بذل کښې د ابوداؤد د يوې نسخې نه (ابن العبد او ابن داسه) يو
حديث نقل کړې دي

[۳۰۹۰] حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النُّعَيْمِيُّ، وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ مَهْدِيٍّ الْمِصْبِصِيُّ، الْمَعْنَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الْمَلِيعِ،
عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ خَالِدٍ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، قَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَهْدِيٍّ السَّلْمِيُّ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، وَكَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ مِنْ رَسُولِ
اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا سَبَقَتْ لَهُ مِنَ اللَّهِ
مَنْزِلَةٌ، لَمْ يَبْلُغْهَا بِعَمَلِهِ، ابْتِلَاؤُ اللَّهِ فِي جَسَدِهِ، أَوْ فِي مَالِهِ، أَوْ فِي وَلَدِهِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: زَادَ ابْنُ نُعَيْمٍ، ثُمَّ صَبْرَةٌ عَلَى
ذَلِكَ، ثُمَّ اتَّفَقَا حَتَّى يُبْلِغَهُ الْمَنْزِلَةَ الَّتِي سَبَقَتْ لَهُ مِنَ اللَّهِ تَعَالَى.

ابراهيم بن مهدي السلمي دخپل پلار نه او هغه دده د نيکه نه روايت کوي فرمائي چه د نبی ﷺ
نه مې اوريدلی دی چه فرمائيل ئې. کله چه ديو بنده دپاره دالله تعالی يوه مرتبه جوړه شي کله
چه ده دغه په خپل عمل نه وی حاصله کړي نوالله تعالی به پده باندي دده جسم يامال يا
اولاد کښې آزمائش وکړي. ابوداؤد وائی چه دابن نفيل په روايت کښې دا اضافه ده چه
اوبيا ئې دصبر تلقين وکړوپه دې باندي، په باقی روايت کښې ټول راويان متفق دي، تردي
چه اورسوي ده لره دده مرتبه کومه چه دده دپاره دالله تعالی دطرف نه ليکلې شوي ده.

مضمون د حديث :

﴿ عن محمد بن خالد عن ابيه عن جده (٢) وكانت له صحبة من رسول الله ﷺ الخ ﴾

چه د هغې مضمون دا دې : محمد بن خالد د خپل پلار نه او هغه د هغه د نيکه نه روايت کوي
چه رسول الله ﷺ به ارشاد فرمائيلو چه کله د يو بنده دپاره د الله پاک په علم قديم کښې
داسې منزلت او مرتبه وی چه هغې ته هغه د خپل عمل صالح په وجه نه شی رسيدې نوالله
پاک هغه لره د بدن يا د مال يا د اولاد په از مښت کښې واچوی او بيا هغه ته د صبر توفيق
ورکړی تر دې چه هغه لره د هغه مرتبې ته اورسوي کومه چه د هغه دپاره مقدر شوي وی.

د دې حديث نه د مصائبو د رفع درجات سبب کيدل معلوميری، او دويمه ترې نه دا
خبره هم فهميری چه اگر چه بنده ته هر څه خو ملاویري د الله پاک په فضل سره خو دنيا
دار العمل والاسباب دې الله پاک صورته ثواب او عقاب هر دواړو لره د عمل سره تړلې دی.
﴿ قال الله تعالى : الذي خلق الموت والحياة لبلوكم ايكم احسن عملا ﴾

١: تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ١٥٥٦٢)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٧٢/٥) (صحيح)

٢: والحديث رواه ابوداؤد ورواه احمد والطبراني في الكبير والوسط، كذا في كتاب من روي عن ابيه عن جده للقاسم بن
قطروبا وفي تعليقه وقال في مجمع الزوائد ٢٩٢/٢ ومحمد بن خالد وابوه لم اعرفهما واورده الهيثمي كذلك في مجمع
البحرين ٩٩/١ - مختصرا وفي هذا التعليق تفصيل من شاء فليراجع اليه

بَابُ عِيَادَةِ النِّسَاءِ

کومې پنځې چه د مريض د عيادت د پاره لارې شي دهغوی بیان

[۳۰۹۲] (۱) حَدَّثَنَا سَهْمٌ بْنُ بَكَّارٍ، عَنْ أَبِي عَوَّانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَمْرِ الْعَلَاءِ، قَالَتْ: عَادَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنَا مَرِيضَةٌ، فَقَالَ: "أَبْشِرِي يَا أَمْرُ الْعَلَاءِ، فَإِنَّ مَرَضَ الْمُسْلِمِ يَذْهَبُ اللَّهُ بِهِ خَطَايَاهُ، كَمَا تَذْهَبُ النَّارُ خَبَثَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ".

د ام علاء رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله زما بیمار پرسئ ته راغې اوزه مریضه وم اوونې فرمائیل خوشخبرې واوره ای ام العلاء یقینا مرض دمسلمان گناهونه لرې کوي اوداسې نې لرې کوي لکه څنگه چه اور د سپینو او سرو زرونه خیرې لرې کوي ای عیادة الرجال النساء فالاضافة الى المفعول.... پس په حدیث الباب کښې دی ام العلاء فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله زما بیمار پرسئ او فرمائیله «وانا مریضة» او د بیمار پرسئ په وخت رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل ای ام العلاء خوشحاله شه ځکه چه د مسلمان د بیمارې په وجه باندي الله پاک د هغه نه د هغه گناهونه داسې لرې کوي لکه چه اور د سرو او سپینو زرو خیرې لره، دا ام العلاء د حکیم بنت حزام ترور وه.

[۳۰۹۳] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عَمَرَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَهَذَا لَفْظُ ابْنِ بَشَّارٍ، عَنْ أَبِي عَامِرٍ الْخَزَّازِيِّ، عَنْ ابْنِ أَبِي مَلِيكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي لِأَعْلَمُ أَشَدَّ آيَةٍ فِي الْقُرْآنِ، قَالَ: "آيَةُ آيَةِ يَا عَائِشَةُ؟" قَالَتْ: قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى: مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزِ بِهِ سَوَاءُ النِّسَاءِ آيَةٌ ۳۳، قَالَ: أَمَا عَلِمْتِ يَا عَائِشَةُ أَنَّ الْمُؤْمِنَ تُصِيبُهُ النَّكْبَةُ أَوِ الشُّوْكَةُ فَيُكَافَأُ بِأَسْوَأِ عَمَلِهِ، وَمَنْ حَوَسِبَ عَذَابَ، قَالَتْ: أَلَيْسَ اللَّهُ يَقُولُ: فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حِسَابًا يَسِيرًا سَوَاءُ النِّسَاءِ آيَةٌ ۸، قَالَ: ذَاكُمُ الْعَرَضُ، يَا عَائِشَةُ، مَنْ نَوَقِشَ الْحِسَابَ عَذَابٌ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا لَفْظُ ابْنِ بَشَّارٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَلِيكَةَ.

د ام المؤمنین عائشة رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه ما او وئیل ای د الله رسوله زه دهغه ایت نه خبره یم کوم چه په قران کریم کښې ډیر شدید اوسخت دې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل هغه کوم یو ایت دې ای عائشي، ما او وئیل دا ایت «من يعمل سوءا یجز به» کله چه دا ایت نازل شو نوصحابه گراموته ډیر گران ښکاره شونې صلی الله علیه و آله او فرمائیل ای عائشي ایاتاته معلومه نه ده کله چه په مسلمانانو باندي څه قسم افت راشي پانې په خپه کښې ازغې لارشي نوهغه ددوی دبدو عملونو دپاره کفارو جوړیږي مگردچا سره چه حساب اوشی نوهغه د عذاب نه نه شی بچ کیدلې عائشي او فرمائیل الله تعالی فرمائی «فسوف یحاسب حسابا یسیرا» نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل ددې نه مراد صرف داعمالو پیش کیدل دي ای عائشي د قیامت په ورځ په حساب کتاب کښې چه د کوم کس نه د عملونو تپوس او کرې شي نوهغه هیڅ کله د عذاب نه نه شی بچ کیدلې. ابوداود وائی دا دابن بشار الفاظ دي او هغه دابن ابی ملیکه نه دا روایت

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۳۹) (صحیح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۲۴۰)، وقد أخرجه: صحیح البخاري/العلم ۳۶ (۱۰۳)، وتفسیر القرآن ۱ (۴۹۳۹)، صحیح مسلم للجنة وصفة نعيمها ۱۸ (۲۸۷۶)، سنن الترمذي/صفة القيامة ۵ (۲۴۲۶)، وتفسیر القرآن ۷۵ (۳۳۳۷)، مسند احمد (۴۷/۴) (صحیح)

په خبرنا سره بیان کړې دې.

(عن عائشة رضی اللہ عنہا قالت قلت یا رسول الله ﷺ انی لاعلم اشد ایه فی کتاب الله عزوجل الخ) مضمون د حدیث دا دې: عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی چه ما یو ځل رسول الله ﷺ ته عرض اوکړو چه په قرآن کریم کښې چه د ټولو نه زیات کوم آیت کریمه سخت دې (ویرونکې هغه ماته معلوم دې. رسول الله ﷺ تپوس اوکړو کوم آیت دې هغه؟ نو هغې عرض اوکړو (من یعمل سوء یجز به) چه کوم انسان هم گناه کوی هغه ته به د هغه بدله ملاویږی، په دې باندي رسول الله ﷺ او فرمائیل ای عائشې! تا ته پته نشته چه کله یو مسلمان ته څه مصیبت اورسیږی یا ئې ازغې هم مات شی نو دا د هغه د بدو اعمالو بدله شی په دنیا کښې (مطلب دا دې چه په آیت کریمه کښې د جزاء نه مراد صرف د آخرت عذاب نه دې بلکه مطلق جزاء ترې نه مراد ده که په دنیا کښې وی او که په آخرت کښې وی پس د ډیرو گناهو بدله په دنیا کښې ورکولې شی او بیا ترې نه په آخرت کښې مطالبه نه کیږی. (ومن حوسب عذب) خو چه د چا نه هلته حساب واخستلې شو هغه د عذاب نه شی بچ کیدې. په دې باندي عائشې رضی اللہ عنہا عرض اوکړو چه آیا الله پاک دا نه دی فرمائیلې، (فسوف یحاسب حسابا یسیرا) چه د هغې نه معلومیږی چه بعض حساب به آسان هم وی نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه په دې آیت کریمه کښې د حساب نه مراد نفس عرض دې یعنی د اعمال نامې صرف پیش کیدل، او زما مراد د حساب نه مناقشه فی الحساب ده چه هغې ته جرح وائی، یعنی چه د حساب په وخت ترې نه تپوس اوکړی چه داسې دې ولې کړې وو؟

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم (من قوله) الیس یقول الله الی آخر الحدیث، قاله المنذری وکتب فی البذل هذا الحدیث لا مناسبة له بیاب عیادة النساء بل له مناسبة بالیاب الذی قبله.

باب فی العیادة

د مریض د عیادت کولو بیان

[۳۰۹۴] (حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ، قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ عَرَفَ فِيهِ الْمَوْتَ، قَالَ: "قَدْ كُنْتُ أَنهَأِكَ عَنْ حُبِّ يَهُودٍ"، قَالَ: فَقَدْ أَبْغَضَهُمْ أَسْعَدُ بْنُ زُرَّارَةَ قَبْلَهُ، فَلَمَّا مَاتَ أَنَاةُ ابْنُهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أَبِي قَدْ مَاتَ، فَأَعْطِنِي قَبِيصَكَ أَكْفَنَهُ فِيهِ، فَتَزَعَّرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبِيصَهُ، فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ.

داسامه بن زيد نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ د عبد الله بن ابی د عیادت دپاره لاړو په هغه مرض کښې په کوم مرض کښې چه هغه وفات شوې وو هرکله چه ورته داخل شو نو دمرگ علامې ئې په کښې اولیدلې ورته ئې او فرمائیل ماخوته دیهودیانو دمحبت نه منع کړې وي هغه او وئیل: سعد بن زراره دیهودیانو سره دشمني اوکړه څه فائده ئې اوشوه؟ کله چه عبد الله بن ابی مړ شو تودده خوي دنبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې

۱: تفرد به أبو داؤد، (تحفة الأشراف: ۱۰۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۰۱/۵) (حسن)

او کړو ای د الله رسوله عبد الله بن ابی مرشو تا سوراته دهغه دکفن دپاره خپل قمیص مبارک را کړی، نبی ﷺ خپل قمیص او ویستلو او ورته ئې ورکړو.

شرح الحدیث :

مضمون د حدیث دا دې: سیدنا اسامه رضی الله عنه فرمائی چې د عبد الله بن ابی رئیس المنافقین په مرض الموت کښې رسول الله ﷺ هغوی ته د بیمار پرسی دپاره تشریف یوړولو رسول الله ﷺ هغوی ته کتلو سره په هغوی کښې د مرگ علامات اولیدل، او رسول الله ﷺ او فرمائیل **« قد كنت انهاک عن حب یهود »** ما به ته د یهودو د مینې نه منع کولې (او د یهودو مینې ته په دې منافقت کښې اخته کړې وې او اوس د منافقت په حالت کښې مړې، صرف په ژبه باندي اسلام راوړل مفید نه دی، هغه د رسول الله ﷺ دې خبرې اوریدو سره اووې **« فقد ابعضهم اسعد بن زرارة فمه »** چه اسعد بن زرارة خو د یهودو سره مینه نه کوله بلکه د هغوی سره ئې بغض کولو پس څه پکار ئې راغلو دا د یهودو بغض، دا ناپوهه د رسول الله ﷺ د ارشاد په مطلب پوهه نه شو د رسول الله ﷺ اشاره خو د آخرت د عذاب طرف ته وه، هغه دا اوگنړله چه اصل فائده خو د مرگ نه په بچ کیدو کښې ده په دې وجه ئې اووې چه اسعد بن زرارة د مرگ نه کوم بچ شو.

عبد الله بن ابی د اسعد بن زرارة رضی الله عنه په باره کښې د یهودو بغض ثابت کړو، د هغوی د بغض څه خاص واقعه خو نه ده ملاؤ شوې. البته په اصابه وغیره کښې خو دا وئیلې کیدې شی چه د هغه بغض داسې ثابت دې چه دې اول من اسلم من الانصار علی الاطلاق دې. یعنی مدینه چرته چه په کثرت سره یهود او سیدل هلته د اسلام شروع هم د دوی نه اوشوه **« علی رعم انف یهود او ښکاره خبره ده چه د مدینې نه د یهودو جرړه اهل اسلام پرې کړې ده او د هغوی نور هم ډیر خصوصیتونه دی »** فانه اول من جمع الجمعة فی المدينة قبل هجرته علیه الصلوة والسلام) کما مر فی کتاب الصلوة باب الجمعة فی القرى.

د دې نه پس په روایت کښې دی چه کله هغه مړ شو نو رسول الله ﷺ ته د هغه ځامن چه د هغه د خوی نوم هم عبد الله رضی الله عنه وو او اسلام ئې راوړې وو هغوی راغلل او رسول الله ﷺ ته ئې درخواست اوکړو چه تاسو خپل قمیص ماته را کړی چه د خپل پلار تکفین په هغې کښې اوکړم، رسول الله ﷺ هغوی ته خپل قمیص مبارک ورکړو، د ابوداؤد په دې روایت کښې خو صرف دومره دی او د صحیحینو په روایت کښې دا هم راغلی دی چه رسول الله ﷺ د هغوی قبر ته تشریف یوړو او هغه ئې د قبر نه راویستلو او هغه ئې په خپلو زنگونو باندي کیخودلو او په هغه باندي ئې د خپلې خولې مبارک لارې پورې کړې، او خپل قمیص ئې هغه ته واغوستلو.

په بذل کښې لیکلی دی چه د رسول الله ﷺ قمیص ورکول د هغه د خوی د زړه د ساتلو دپاره وؤرخکه چه هغه مسلمان شوې وو، سره د دې چه رسول الله ﷺ ته معلومه وه چه د هغوی قمیص د نفاق سره هیڅ فائده نه ورکوی، او وئیلې شوې دی چه د رسول الله ﷺ دا قمیص ورکول صرف د هغه احسان په بدل کښې وو چه عبد الله بن ابی منافق د رسول

الله ﷺ محترم تره عباس رضي الله عنه ته خپل قميص ورکړې وو، ځکه چه عباس رضي الله عنه په جنگ بدر کښې قيد کړې شوې وو او د هغوی قميص شليدلې وو د هغوی دپاره د قميص ضرورت وو نو ابن ابی هغه وخت هغوی ته خپل قميص ورکړې وو ځکه چه د طويل القامت کيدو د وجې نه د بل چا قميص په هغوی باندې نه برابریدو، بيا اسلام خو هغوی روستور اوږو د خيبر د فتح نه مخکښې د يو قول مطابق.

باب فِي عِيَادَةِ الدِّمِيِّ د کافر او ذمی عیادت کول

[۳۰۹۵] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ يَعْنِي ابْنَ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ غُلَامًا مِنَ الْيَهُودِ كَانَ مَرِيضًا، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُهُ، فَقَعَدَ عِنْدَ رَأْسِهِ، فَقَالَ لَهُ: "أَسْلِمَ، فَنَظَرُ إِلَى أَبِيهِ وَهُوَ عِنْدَ رَأْسِهِ، فَقَالَ لَهُ أَبُوهُ: أَطْعَمَ أَبَا الْقَاسِمِ، فَأَسْلَمَ، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَهُوَ يَقُولُ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْقَذَهُ مِنِّي مِنَ النَّارِ."

د انس نه روایت دې فرمائی چه یو یهودي هلك مريض شو او نبی صلی الله علیه و آله ئې دتپوس دپاره ورغې دسر سره ئې کیناستوورته ئې اووئیل اسلام قبول کړه نوهغه خپل پلار ته وکتل اودده پلار دده سر ته ولاړ وو پلار ئې ورته اووئیل دابو القاسم رضي الله عنه خبره اومنه نوهغه مسلمان شو نبی صلی الله علیه و آله پاخیدو او وئې فرمائیل دالله شکر دې چاچه زماپه وجه باندې دي هلك ته ددوزخ داوړ نه نجات ورکړو.

﴿ عن رضى الله تعالى عنه ان غلاما من اليهود ﴾

مضمون دا دې چه انس رضي الله عنه فرمائی چه یو یهودي هلك بیمار شو، رسول الله صلی الله علیه و آله د هغه د بیمار پرسئ دپاره تشریف یووړو او دهغه د سرطرف ته کیناستلو او هغه ته ئې اوفرمائیل اسلام راوړه، هغه هلك د خپل پلار طرف ته اوکتل هغه هم هلته ولاړ وو، هغه اووې او د ابو القاسم رضي الله عنه اطاعت اوکړه پس هغه اسلام قبول کړو، رسول الله صلی الله علیه و آله د الله پاک حمد وثناء کولو سره را واپس شو چه الله پاک زما په وجه باندې هغه ته د دوزخ نه خلاصې ورکړو.

دا حدیث په صحیح بخاری کښې هم دې ﴿ فی باب اذا اسلم الصبی فمات هل یصلی علیه وهل یرض علی الصبی الاسلام ﴾ د دې په شروع کښې داسې دی ﴿ عن انس رضي الله عنه قال کان غلام یهودی یخدم النبی صلی الله علیه و آله فمرض الحدیث ﴾ مصنف رضي الله عنه د دې نه د ذمی د عیادت جواز ثابت کړې دې، په حاشیه د بذل کښې دی، ﴿ ویجوز عندنا الذمی عندنا بالاجماع ﴾ کذا فی الشامی، وعن احمد فیه روایتان کما فی الشرح الکبیر.

والحدیث اخرجه البخاری والنسائی، قاله المنذری

(۱) صحیح البخاری/الجنائز ۷۹ (۱۳۵۶)، والمرضي ۱۱ (۵۶۵۷)، (تحفة الأشراف: ۲۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۷۵/۳، ۲۷۰، ۲۸۰) (صحیح)

بَابُ الْمَشْيِ فِي الْعِيَادَةِ

د عیادت دپاره د بیدل تلو د فضیلت بیان

[۳۰۹۶] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سُقْيَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُكَدَّرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَوِّدُنِي، لَيْسَ بِرَأْكِبٍ بَغْلٍ، وَلَا بِرُذُونٍ.

د جابر نه روایت دې فرمائی چې نبی ﷺ به زما بيمار پرسی ته راتلو چه نه به په قره سورور اونه به په ترکی اس باندي.

﴿ عن جابر بن عبد الله قال كان النبي ﷺ يعودني ليس براكب بغلا ولا برذونا ﴾

جابر بن عبد الله فرمائی چه رسول الله ﷺ زما د تپوس دپاره تشریف راوړو (یعنی پیاده) هغوی به نه سوریدل نه په خچر باندي او نه په ترکی اس باندي.

مصنف رحمته الله د حدیث هم هغه معنی اخستلې ده کومه چه مونږ په ترجمه کښې لیکلې ده، یعنی د مطلقا رکوب نفی، د حضرت شیخ په حاشیه کښې دې: ما ترجم به المصنف علیه حمل الجمهور الحديث، وحمله بعضهم على انه كان راكبا على غير البغل والبرذون آه مختصرا، حافظ منذری رحمته الله فرمائی د حدیث نه ثابت ده چه رسول الله ﷺ د سعد بن عباده عیادت اوفرمائیلو راکبا علی حمار او د جابر رحمته الله په حدیث کښې دې ﴿ اتاني النبي ﷺ يعودني وابوبكر وهما ماشيان ﴾ لهذا د مریض عیادت راکبا او ماشیا دواړو طریقو سره مسنون دې.

والحدیث اخرجه البخاری والترمذی قاله المنذری

بَابُ فِي فَضْلِ الْعِيَادَةِ عَلَى وَضْوءٍ

د اودس په حالت کښې د بيمار پرسی کولو د فضیلت بیان

[۳۰۹۷] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَوْفٍ الطَّائِيُّ، حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ رَوْحٍ بْنِ خَلِيدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا الْقَضْلُ بْنُ دَهْمٍ الْوَاسِطِيُّ، عَنْ ثَابِتِ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضْوءِ، وَعَادَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ مُحْتَسِبًا، بُوْعِدَ مِنْ جَهَنَّمَ مَسِيرَةَ سَبْعِينَ خَرِيفًا". قُلْتُ: يَا أَبَا حَمْرَةَ، وَمَا الْخَرِيفُ؟ قَالَ: الْعَامُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَالَّذِي تَفَرَّدَ بِهِ الْبَصْرِيُّونَ مِنْهُ الْعِيَادَةُ، وَهُوَ مُتَوَضِّئٌ.

دانس بن مالک رحمته الله نه روایت دې فرمائی چه رسول پاک فرمائیلی دې چاچه اودس اوکړو اوبنائسته اودس ئې اوکړو اودخپل مسلمان ورور عیادت ئې اوکړو دشواب په اراده باندي نوداویا خریفو په فاصله باندي به دجهنم نه لرې کړې شي، ما اووئیل ای ابو حمزه خریف څه شي وي کلونه، ابوداود وائی هغه روایتونه کوم چه صرف بصریانو نقل کړی دی یو په هغوی کښې دا روایت دې.

(۱) صحیح البخاری/المرضي ۱۶ (۵۶۶۴)، سنن الترمذی/المناقب ۵۳ (۳۸۵۱)، (تحفة الأشراف: ۳۰۲۱)، وقد أخرجه:

صحیح مسلم/الفرائض ۲ (۱۶۱۶) (صحیح)

(۲) تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۴۶۱) (ضعیف)

[۳۰۹۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نَافِعٍ، عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: "مَا مِنْ رَجُلٍ يَهُودٌ مَرِيضًا مُنْسِيًّا، إِلَّا خَرَجَ مَعَهُ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ يَسْتَغْفِرُونَ لَهُ حَتَّى يُصْبِحَ، وَكَانَ لَهُ خَرِيفٌ فِي الْجَنَّةِ، وَمَنْ أَتَاهُ مُصْبِحًا، خَرَجَ مَعَهُ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ يَسْتَغْفِرُونَ لَهُ حَتَّى يُمْسِيَ، وَكَانَ لَهُ خَرِيفٌ فِي الْجَنَّةِ."

د علی کرم الله وجهه نه روایت دې هریوکس چه دمانبام په وخت کښې دیو مریض تپوس اوکړي نودده سره او یازره فرشتې روانې شي کومې چه دده دپاره دسحره پورې دگناهونو نه بخښنه غواړي اودده دپاره به په جنت کښې یوباغ مقرر کړې شي اوڅوک چه د ورځې دشروع کیدو په وخت کښې دچاییمار پرسي اوکړي نودده دپاره او یازره فرشتې دمانبام پورې دمغفرت دعاگانې غواړي اودده دپاره به په جنت کښې یوباغ مقرر کړې شي.

زمونږ استاد حضرت مولانا اسعد الله صاحب رحمته به فرمائیل «العبادة افضل من العبادة لفظا ومعنى» په دې باب کښې مصنف رحمته اول د انس رضي الله عنه حدیث ذکر کړې دې چه د هغې مضمون دا دې چه رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه کوم انسان په ښه طریقي سره اودس کولو نه پس د خپل مسلمان رور عیادت اوکړي صرف د ثواب په نیت سره نو هغه د دوزخ نه د اویا کالو فاصله باندي لرې کړې شي، او دویم ئې د علی رضي الله عنه حدیث ذکر کړې دې چه د هغې مضمون دا دې چه کوم انسان د یو مریض عیادت اوکړي د سحر په وخت نو د هغه سره اویا زره ملائک اوځی کوم چه د هغه دپاره ترد مانبامه پورې استغفار کوي، او کوم انسان چه د یو مریض تپوس اوکړي د مانبام په وخت نو د هغه سره اویا زره ملائک راوځي چه د هغه دپاره د سحره پورې بخښنه غواړي، او د هغه دپاره په جنت کښې یو باغ لگولې شي.

خریف په معنی د بستان چه هغې ته مخراف هم وائی او د ترمذی په یو روایت کښې دې «من حدیث ثوبان رضي الله عنه لم یزل فی خرفة الجنة» او هم د دې روایت په دویم طریق کښې دا زیادت دې «قیل ما خرفة الجنة قال جناها» یعنی د جنت میوې، فواکه، زمونږ استاذ محترم مولانا اسعد الله صاحب رحمته فرمائی چه هر کله دا خبره ده نو بیا چه په کومه زمانه کښې ورځ لویه وی هغه وخت تپوس د سحر په وخت کول پکار دی او کله چه شپه لویه وی نو هغه وخت تپوس د مانبام په وخت کول پکار دی.

[۳۰۹۹] (۲) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو مَعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِمَعْنَاهُ، لَمْ يَذْكُرِ الْخَرِيفَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَاهُ مَنْصُورٌ، عَنِ الْحَكَمِ أَبِي حَفْصٍ، كَمَا رَوَاهُ شُعْبَةُ.

د علی کرم الله وجهه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی دا روایت دتیر روایت په شان دې لیکن په دې کښې دخرید ذکر نشته، ابوداود وائی دا روایت منصور هم دحکم نه او هغه دابوحفص نه دشعبه په شان نقل کړې دې.

۱: تفرد به ابو داود، وانظر الحديث الاثني، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۱۱) (صحیح)

۲: سنن ابن ماجه/الجنائز ۲ (۱۴۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۱۱)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الجنائز ۲ (۹۶۹)، مسند

احمد (۱/۱، ۱۲۰) (صحیح)

[۳۱۰۰] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنِ أَبِي جَعْفَرٍ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نَافِعٍ، قَالَ: وَكَانَ نَافِعٌ غُلَامًا الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ: جَاءَ أَبُو مُوسَى إِلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ يَعُودُهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، وَسَأَى مَعْنَى حَدِيثِ شُعْبَةَ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَسْنَدُ هَذَا عَنِ عَلِيٍّ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ غَيْرِ وَجْهِ صَحِيحٍ.

علی کرم الله وجهه دنبی ﷺ نه نور داسې روایات هم نقل کړې دي چه نبی ﷺ فرماتیلی دي لیکن په هغه روایتونو کښې دباغ ذکر نشته، ابوداود وائی ددې حدیث د علی ﷺ نه او هغه دنبی ﷺ نه په غیر صحیح وجه باندي بیان شوې دي.

بَابُ فِي الْعِيَادَةِ مِرَارًا د بار بار عیادت کولو د فضیلت بیان

[۳۱۰۱] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُمَيَّرٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا أَصِيبَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ يَوْمَ الْخَنْدَقِ، رَمَاهُ رَجُلٌ فِي الْأَكْحَلِ، فَضَرَبَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خِيَمَةً فِي الْمَسْجِدِ، فَيَعُودُهُ مِنْ قَرِيبٍ.

دام المومنین عائشة رضی اللہ عنہا نه روایت دې فرمائی کله چه په غزوه خندق کښې سعد بن معاذ زخمی کړي شو او هغه داسې یوکس دده لاس په غشي ویشتلي وو اورگ ئې شلیدلې وو نونبې ﷺ دده دپاره په مسجد کښې دننه یوه خیمه ولگوله ددې دپاره چه دنزدې نه ئې عیادت وکړی.

(عن عائشة رضي الله عنها قالت لما اصيب سعد بن معاذ رضي الله عنه يوم الخندق رماه رجل في الاكحل الخ) شرح الحديث:

یعنی سعد بن معاذ رضی اللہ عنہ په غزوه خندق کښې یو کافر په اکحل کښې په غشي باندي ویشتلو نو رسول الله ﷺ سعد رضی اللہ عنہ لره په مسجد کښې ایسارولو سره د هغوی دپاره په مسجد کښې خیمه نصب کړه او په مسجد کښې ئې خکه ایسار کړو چه د نزدې کیدو د وجې نه په تپوس کولو کښې سهولت وی په دې باندي مصنف ﷺ ترجمه قائم کړې ده العیادة مرارا، مصنف ﷺ گویا په دې کښې د سعد رضی اللہ عنہ په مسجد کښې د دیره کولو او ایسارولو فائده او مصلحت بیان کړې دي چه بار بار تپوس او کړې شی.

(اکحل) د یو رگ نوم دې چه د زراغ په مینځ کښې وی، او خلیل لیکلې دي چه اکحل د عرق حیات هغه بناخ دې کوم چه په لاس کښې وی، او کوم بناخ چه د دې په ملا کښې وی هغې ته ابهر وائی او کوم چه په پنډی کښې وی هغې ته نساء وائی. وئیلې شوې دي چه په هر اندام کښې د عرق حیات یو خانگه وی د هغه رگ که خوله پرانستلې شی نو وینه نه او دریرې اکحل ته په فارسی کښې رگ هفت اندام وائی.

دا حدیث دلته خو مختصر دې اوږد او مفصل حدیث د بخاری په کتاب المغازی کښې دي. والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والنسائي، قاله المنذرى

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۱۱) (صحیح مرفوع)
۲: صحیح البخاری الصلاة ۷۷ (۴۶۳)، والمغازي ۳۰ (۴۱۲۲)، صحیح مسلم الجهاد ۲۲ (۱۷۱۹)، سنن النسائي للمساجد ۱۸ (۷۱۱)، (تحفة الأشراف: ۱۶۷۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۶۶، ۱۳۱، ۲۸۰) (صحیح)

بَابُ فِي الْعِيَادَةِ مِنَ الرَّمَدِ

د سترگو د خوږیدو په وجه د چا د عیادت دپاره د تلود فضیلت بیان

غرض المصنف من الترجمة :

رمد یعنی د سترگو خوږیدل، د دې د تخصیص سره د ترجمې قائلولو په ظاهره ضرورت ځکه راغلو چه یو حدیث دې چه په هغې کنبې درې څیزونه د تپوس کولو نه مستثنی کړې شوي دي، (ثلاثة ليس لهم عيادة العين والدمل والضرس) اخرجہ البیهقي، چه درې درې بیماریانې داسې دي چه په دې کنبې تپوس نشته، یو هم دا د سترگو خوږیدل، دویم دمَل دانه، دریم د غاښ درد، خو صحیح دا دې چه دا حدیث موقوف دې مرفوع نه دې، او حدیث الباب کوم چه مصنف رضی اللہ عنہ ذکر کړې دې هغه اصح دې، یا دا چه په دې حدیث کنبې د تاکد نفی کړې شوي ده خو په بعض کتابونو د فقه کنبې هم د دې دريو بیمارو د عیادت نفی ذکر کړې شوي ده، د دې جواب هم دا ورکړې شوي دي چه د تاکد نفی مقصود ده د مطلق سنت کیدو نه.

[۳۱۰۲] (١) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ النَّقِيلِيُّ، حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ أَبِي اسحاق، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمٍ، قَالَ: "عَادَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ وَجَعٍ كَانَ بَعِينِي."

د زید بن ارقم رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم زما د عیادت دپاره راغې دهغه درد په وجه کوم چه زما په سترگو راغلي وو.

(٢) عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمٍ رضی اللہ عنہ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلی اللہ علیہ وسلم مِنْ وَجَعٍ كَانَ بَعِينِي (٣) د حدیث نه د ترجمه الباب ثبوت ښکاره دي.

بَابُ الْخُرُوجِ مِنَ الطَّاعُونِ

د طاعون زده علاقې نه دوتلوی بیان

طاعون یوه مشهوره بیماری ده کومه چه د بدن په مختلفو حصو کنبې مثلا ځنگلو، ترخونو یا گوتو کنبې یا د بدن په ټولو حصو کنبې څه دانې او زخمو نه پیدا شی چه د هغې سره ورم هم وی او سحت قسم پریشانی هم او سوزې، اود هغې زخمونو گیر چا پیره ځایونه سره شی یا شین والی ته مائل، چه د هغې سره د زړه حرکت تیز شی، او قی هم وی او د دې اطلاق په هغه وبا او مرض عام (لکه زمونږ د زمانې د هینگی، باندي هم کیږي چه په هغې سره فضاء فاسده شی او بیا د هغې اثر په بدن کنبې خورشی.

[۳۱۰۳] (١) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدِ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ تَوْقَلٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلَا تُقْدِمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَع بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلَا تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ" يَعْنِي الطَّاعُونَ.

(١) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۶۹۷۸)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۷۵/۴) (حسن)

(٢) صحيح البخاري/الطب ۳۰ (۵۷۲۹)، والحيثل ۱۳ (۶۹۷۳)، صحيح مسلم/السلام ۳۲ (۲۲۱۹)، (تحفة الأشراف: ۹۷۲۱)، وقد أخرجہ: موطا امام مالك/الجامع ۷ (۲۲)، مسند احمد (۱۹۲/۱، ۱۹۳، ۱۹۴) (صحيح)

د عبد الرحمن بن عوف رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلي الله عليه وسلم فرمائيلي دي په کومه ځمکه کښې چه طاعون مرض وي هلته مه ورځئ او کله چه په کوم ځانې کښې په تاسو باندي طاعون راشي نو ددغه ځانې نه مه تختئ (يعنی دطاعون مرض نه).

شرح الحديث

﴿ اذا سمعتم بارض فلا تقدموا ﴾ (۱) عليه واذا وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا فرارا منه ﴿
د دي بيماري په باره کښې رسول الله صلي الله عليه وسلم دا ارشاد فرمائي چه په کومه علاقه کښې د دي کيدل معلوم شی نو هلته مه ځانې، او که په هم هغه ځانې کښې بيا موندلې شی چرته چه تاسو يئ نوبيا دهغه ځانې نه مه تختئ يعنی ددي بيماري نه بچ کيدو دپاره، معلومه شوه چه که د څه ضرورت د وجې نه ځي نو بيله خبره ده ځکه چه په رومي صورت کښې د جراحت او استغناء معنی موندلې شی او په دويم صورت کښې د فرار عن القدر شبهه پيدا کيږي.
د حديث نه معلوم کيږي چه طاعون د کفارو په حق کښې د الله پاک عذاب دي او د مومنانو په حق کښې رحمت دي، که په دي باندي صبر او کړي نو دهغه دپاره د شهيد اجر دي، پس وړاندي مستقل باب را روان دي، ﴿ فضل من مات بالطاعون ﴾ چه په هغې کښې دا راځي ﴿ المطعون شهيد ﴾ حضرت په بذل کښې د طاعون په باره کښې دا روایت ذکر کړې دي د عائشي رضي الله عنها د حديث چه ما د رسول الله صلي الله عليه وسلم نه د طاعون په باره کښې تپوس او کړو ﴿ فاخبرني انه عذاب يبعثه الله على من يشاء وان الله عزوجل جعله رحمة للمؤمنين ﴾ الحديث واخرجه الشيخان من حديث سامة بن زيد مرفوعا ﴿ الطاعون رجز ارسل على طائفة من بني اسرائيل او على من كان قبلكم الحديث ﴾ اه مختصرا.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم مطولا، قاله المنذرى

باب الدُّعَاءِ لِلْمَرِيضِ بِالشِّفَاءِ عِنْدَ الْعِيَادَةِ

د عيادت په وخت کښې د مريض دپاره د الله تعالی نه د شفا غوښتلو بيان

[۳۱۰، ۴] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا مَكِيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا الْجَعِيدُ، عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ سَعْدٍ، أَنَّ أَبَاهَا، قَالَ: اشْتَكَيْتُ بِمَكَّةَ، فَجَاءَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي، وَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى جَبْهَتِي، ثُمَّ مَسَحَ صَدْرِي وَبَطْنِي، ثُمَّ قَالَ: "اللَّهُمَّ اشْفِ سَعْدًا، وَأَثِمِرْ لَهُ هَجْرَتَهُ".

عائشه بنت سعد دخپل پلار نه روایت کوي فرمائي - چه زه په مکه کښې مريض شوم او نبی صلي الله عليه وسلم زما بيمار پرسئ ته راغي او خپل لاس ئې زما په تندي باندي کيچود و او زما په خيټه او شاه باندي ئې لاس رانښکل او بياني او فرمائيل اي الله سعد ته شفا ورکړي او دده هجرت کامل او گرځوي

﴿ عن عائشة بنت سعد رضي الله عنها ان اباهما قال اشتكيت بمكة ﴾

(۱) بضم التاء من الاقدام وفي بعض النسخ يفتح التاء والدال، والمحفوظ ضم التاء. (بذل).

(۲) صحيح البخاري / المرضي ۱۳ (۵۶۵۹)، سنن النسائي / الوصايا ۳ (۳۶۵۶)، تحفة الأشراف: ۳۹۵۳، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۷۱/۱) (صحيح)

سعد بن وقاص رضي الله عنه فرمائي چه ما يو ځل په داسې حال کښې چه زه په مکه مکرمه کښې اوم بیمار شوم نو رسول الله صلى الله عليه وسلم زما د تپوس دپاره تشریف راوړلو او زما په تندي مبارک باندې ئې خپل لاس مبارک کيخودلو او په سينه او شا باندې هم او دا دعا ئې اوکره ﴿اللهم اشف سعد واتمم له هجرته﴾ د دې نه معلومه شوه چه کله د يو مريض تپوس له انسان لارشی نو د هغه په تندي باندې دې لاس کيږدي (يا دې د هغه په لاس باندې لاس کيږدي) او هغه ته دې دعاء هم اوکړي، لکه چه وړاندې مستقل باب را روان دې.

د رسول الله صلى الله عليه وسلم دعا د سعد رضي الله عنه په حق کښې قبوله شوه او هغه جوړ شو او د اسلام ئې ډير خدمت اوکړو ﴿فمات بعد ذلك بالمدينة المنورة سنة ۵۵ هـ بعد ما فتح العراق﴾ د سعد رضي الله عنه دا حديث په کتاب الوصايا کښې تير شوې دې چه په هغې کښې دا وو ﴿قلت يا رسول الله صلى الله عليه وسلم اتخلف عن هجرتي الخ﴾ هلته نور هم ډير څه ليکلې شوې دي فتذكر. والحديث أخرجه البخاري اتم منه، قاله المنذري

[۳۱۰۵] (١) حَدَّثَنَا ابْنُ كَثِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا سَفِيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَطْعِمُوا الْجَائِعَ، وَعَوِّدُوا الْمَرِيضَ، وَفُكُوا الْعَانِيَّ." قَالَ سَفِيَانُ: وَالْعَانِيُّ: الْأَسِيرُ.

د ابو موسی اشعری رضي الله عنه نه روایت دې فرمائي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم فرمائي دي: وږوته خوراک ورکوي او دمريض بیمار پرسي کوي او مسلمانان قيديان دکفارود قبيضي نه ازادوي، سفيان ثوري وئيلي دي چه عاني اثيرته وئيلي شي.

﴿اطعموا الجائع وعودوا المريض وفكوا العاني قال سفيان : والعاني الاسير﴾

يعني اوږو باندې خوراک کوي او د مريضانو تپوس کوي، او هر څومره چه کيدې شي د قيديانو د خلاصولو کوشش کوي، اي المسلم المحبوس عند الكفار، وكذا المحبوس ظلما فيجب على المسلمين انقاذه بالفدية (بذل) د دې حديث حواله او ذکر په کتاب الفرائض کښې هم تير شوې دې، ﴿وافك عانة﴾ الحديث دلاندې فتذكر.

باب الدُّعَاءِ لِلْمَرِيضِ عِنْدَ الْعِيَادَةِ

د عيادت په وخت کښې د مريض دپاره دصحت دپاره د دعا غوښتلو د فضيلت بيان

[۳۱۰۶] (٢) حَدَّثَنَا الرَّبِيعُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ أَبُو خَالِدٍ، عَنِ الْمُنْهَالِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جَبْرِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ عَادَ مَرِيضًا، لَمْ يَحْضُرْ أَجَلُهُ فَقَالَ عِنْدَهُ سَبْعَ مِرَارٍ: أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ، رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، أَنْ يَشْفِيكَ، إِلَّا عَافَاكَ اللَّهُ مِنْ ذَلِكَ الْمَرَضِ."

د عبد الله بن عباس رضي الله عنه نه روایت دې فرمائي چه نبی صلى الله عليه وسلم فرمائي دي: څوك چه ديوداسې مريض عيادت وكړي دچاچه دمرگ نيته نه وي پوره شوي او دهغه خواته دادعاء:

(١) صحيح البخاري/الجهاد ١٧١ (٣٠٤٦)، النكاح ٧١ (٥١٧٤)، الأطعمة ١ (٥٢٧٣)، الطب ٤ (٥٦٤٩)، الأحكام ٢٣ (٧١٧٣)، (تحفة الأشراف: ٩٠٠١)، وقد أخرجه: مسند احمد (٣٩٤/٤)، سنن الدرهمي للسير ٢٧ (٢٥٠٨) (صحيح)
(٢) سنن الترمذي للطب ٣٢ (٢٠٨٣)، (تحفة الأشراف: ٥٦٢٨)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٣٩/١، ٢٤٣) (صحيح)

«أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ»، اوه پيري او وائی نوالله تعالیٰ به ئی ضرور ددغه مرض نه جوړ کړي.

قوله: «عن ابن عباس رضي الله عنهما عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من عاد مريضا لم يحضر اجله الخ» کوم انسان چه د يو داسې مريض تپوس او کړي چه لا د هغه وخت نه وي راغلي «د مرگ» هغه تپوس کونکې دې هغه سره د ناستې په وخت دا دعاء اووه کرته اولولي، الله پاک به هغه ته شفاء ورکوي: «اسأل الله العظيم رب العرش العظيم ان يشفيك» والحديث اخرجه الترمذي والنسائي، قاله المنذري او د دې نه روستو حديث کښې کوم چه د عبدالله بن عمرو بن العاص نه مرفوعا روايت کړې شوي دې په دې کښې د عيادت په وخت د دې دعا لوستل ذکر شوي دي «اللهم اشف عبدك ينكالك عدوا ويمشي لك الى جنازة» او په يو نسخه کښې «الي صلوة» دې اي الله دې خپل بنده ته شفاء ورکړه دا به د صحت نه پس ستا د دشمنانو سره جهاد کوي هغوی به زخمی کوي او ستا د رضا دپاره به د جنازې سره ځي، په دې حديث کښې لک، لک بار بار راغلي دي معلومه شوه چه د الله پاک په نزد هم هغه عمل معتبر دې کوم چه خالص د هغه دپاره وي، او د دې حديث نه جنازو سره د تلو اهميت معلومېږي.

[٣١٠٧] (١) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدِ الرَّمْلِيِّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبَلِيِّ، عَنْ ابْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا جَاءَ الرَّجُلُ يَعُودُ مَرِيضًا، فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ اشْفِ عَبْدَكَ، يَنْكَالِكَ عَدُوًّا، أَوْ يَمْشِي لَكَ إِلَى جَنَازَةٍ." قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَقَالَ ابْنُ السَّرْحِ: إِلَى صَلَاةٍ.

دا بن عمر رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول پاک صلي الله عليه وسلم فرمائيلى دي: كله چه څوك د چا بيمار پرسي ته ورشي نو داد عاء ذي او وائی: يعنى الله دي خپل بنده ته شفا ورکړي ددې دپاره چه ستاد رضا دپاره ستادشمن زخمي کړي او ستاد خوشحالو لودپاره د چا د جنازې سره لاړشي.

بَابُ فِي كَرَاهِيَّةِ تَمَتِّي الْمَوْتِ

د مرگ د تمنا کولو د ممانعت بيان

[٣١٠٨] (٢) حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ هِلَالٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَدْعُونَ أَحَدَكُمْ بِالْمَوْتِ لِيُعْرَبَ نَزْلُ بِهِ، وَلَكِنْ لِيَقُلْ: اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتْ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي، وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتْ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِي."

دانس بن مالك رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول الله فرمائيلى دي په دنيا کښې دي د تکليف رسيدو په وجه باندې څوك د مرگ تمنا نه کوي مگر که چرې داسې کول غواړي نو بيادي داسې او وائی اي الله دخو پورې چه زما دپاره زندگي بهتره وي تر هغې مې ژوندي

(١): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٨١٦٠)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٧٢/٢) (صحيح)

(٢): سنن النسائي للجنائز ٢ (١٨٢٢)، سنن ابن ماجه للزهد ٣١ (٤٢٦٥)، (تحفة الأشراف: ١٠٣٧)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للمرضي ١٩ (٥٦٧٢)، والدعوات ٣٠ (٦٣٥١)، صحيح مسلم للذكر ٤ (٢٦٨٠)، سنن الترمذي للجنائز ٣ (٩٧١)، مسند احمد (١٠١/٣)، ١٠٤، ١٦٣، ١٧١، ١٩٥، ٢٠٨، ٢٤٧، ٢٨١ (صحيح)

اوساتي او کله چه زما دپاره مرگ بهتروي نوبيا ماته مرگ راکړي.
(لا يدعون احدكم الموت لضر نزل به)

يعنى انسان لره د مرگ غوښتنه بالکل نه دى کول پکار د يو دنيوى ضرر او پريشانئ د وجې نه، او که ضرر ورکول وي نو د هغې نه د بچ کيدو دپاره جائز دى کذا قال العلماء نو اوس نوبيا څه دعا کول پکار دى په داسې موقع باندې هغه په حديث کښې ذکر شوې دى **(اللهم احيني ما كانت الحياة خيرا لى وتوفنى اذا كانت الوفاة خيرا لى)**

ژوند د مسلمان دپاره ډير لوڼې نعمت دې د يو مصيبت نه ويريدو سره د خپل خان دپاره د مرگ دعا کول د دې نعمت ناقدرى ده په حديث کښې راځي چه د مسلمان دپاره خو په هر حال کښې خير دې که د مصيبت حالت وي او که د خوشحالي، که په مصيبت کښې صبر کوى نو د هغه دپاره اجر دې، او که د خوشحالي په حالت کښې شکر کوى نو بيا هم د هغه دپاره اجر دې د انسان هم دا دوه حالتونه وي نو گويا د هغه دپاره په هر حال کښې نفع او فائده ده. الحمد لله الذى هدانا وجعلنا من المسلمين..... والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۱۰۹] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا يَأْتَمَتِينَ أَحَدُكُمْ الْمَوْتُ"، فَذَكَرَ مِثْلَهُ.

د مالک بن انس نه په بل سند سره د تير روايت په شان روايت منقول دى.

بَابُ مَوْتِ الْفَجَاءَةِ د ناڅاپي مرگ بيان

په فجاءة کښې دوه لغات دى بضم الفاء والمد، او بفتح الفاء واسكان الجيم بلا مد.

[۳۱۱۰] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ تَمِيمِ بْنِ سَلَمَةَ، أَوْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ خَالِدِ السُّلَمِيِّ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ مَرَّةً عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ مَرَّةً عَنْ عُبَيْدٍ، قَالَ: "مَوْتُ الْفَجَاءَةِ أَخْذَةُ أَسِيفٍ".

د عبید بن خالد سلمی (صحابي) نه روايت دې چه فرمائیل ئې او یوخل ئې او فرمائیل چه نبی **ﷺ** فرمائیلی دژ او بل خل ئې او وئیل چه عبید وئیلی دى چه چاته ناڅاپي مرگ راتلل د الله د غضب علامه ده.

(موت الفجاءة اخذة اسف) اسف کښې د سين فتحه او کسره دواړه لوستلې شی، په رومي صورت کښې د دې معنی د غضب ده او په دويم صورت کښې د صفت صيفه ده په معنی د غضبان، يعنى فجائی مرگ يعنى ناڅاپي مرگ د الله پاک د غصې نيول دى يا غضبان نيول دى، خو دا د کافر په حق کښې ده، او د مومن په حق کښې داسې نه ده بلکه رحمت دې ځکه چه کامل مومن هميشه د آخرت دپاره تيار او مستعد وي. (بذل) وفي

۱: تفرده ابو داود، وانظر ما قبله (تحفة الأشراف: ۱۲۷۴) (صحیح)

۲: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۹۷۴۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۲۴۴، ۲۱۹/۴) (صحیح)

الهامش البذل..... وورد ایضا موت الفجاءة راحة المومن، وقد توفى فجاءة ابراهيم وداؤد وسليمان على نبينا وعليهم الصلوة والسلام. (تفريح الاذكياء في تاريخ الانبياء)

باب فِي فَضْلِ مَنْ مَاتَ فِي الطَّاعُونَ

دهغه کس فضیلت چه په طاعون مرض کسبې مرشي

[۳۱۱۱] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَابِرِ بْنِ عَتِيكٍ، عَنِ عَتِيكِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ عَتِيكٍ وَهُوَ جَدُّ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَبُو أُمِّهِ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ، أَنَّ عَمَّهُ جَابِرَ بْنَ عَتِيكٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَ يَعُودُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ تَابِتٍ، فَوَجَدَهُ قَدْ غَلَبَ، فَصَاحَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمْ يُجِبْهُ، فَاسْتَرْجَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ: "غَلَبْنَا عَلَيْكَ يَا أَبَا الرَّبِيعِ، فَصَاحَ النِّسْوَةُ وَيَكِينِ، فَجَعَلَ ابْنُ عَتِيكٍ يُسَكِّتُهُنَّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دَعِينِ، فَإِذَا وَجِبَ فَلَا تَبْكِينَ بِأَكْيَةٍ، قَالُوا: وَمَا الْوَجُوبُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: الْمَوْتُ، قَالَتْ ابْنَتُهُ: وَاللَّهِ إِنْ كُنْتُ لِأَرْجُو أَنْ تَكُونَ شَهِيدًا، فَإِنَّكَ كُنْتَ قَدْ قَضَيْتَ جِهَارَكَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنْ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ قَدْ أَوْقَعَ أُجْرَةَ عَلِيٍّ قَدْرَ نَبِيَّتِهِ، وَمَا تَعْدُونَ الشَّهَادَةَ؟ قَالُوا: الْقَتْلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الشَّهَادَةُ سَبْعٌ، سِوَى الْقَتْلِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ: الْمَطْعُونُ شَهِيدٌ، وَالغَرِقُ شَهِيدٌ، وَصَاحِبُ ذَاتِ الْجَنْبِ شَهِيدٌ، وَالْمَبْطُونُ شَهِيدٌ، وَصَاحِبُ الْحَرِيقِ شَهِيدٌ، وَالَّذِي يَمُوتُ تَحْتَ الْهَنْدَمِ شَهِيدٌ، وَالْمَرَأَةُ تَمُوتُ بِجَمْعِ شَهِيدٍ."

د جابر بن عتيك د ترور نه روایت دي فرمائی چه نبی ﷺ د عبد الله بن ثابت بيمار پرسى ته راغې نوپه بې هوشی کسبې ئې اوليدو نبی ﷺ ورته په چغه آواز وکړو هغه هيخ جواب ورنکړو نونبى ﷺ «إنا لله وانا إليه راجعون» او وئيل اوونې فرمائيل مونږ ستا متعلق مغلوب شو مونږ خو غوښتل چه ته روغ شي مگر د الله تقدير زمونږ په اراده باندې غالب شونځو چه دا واوريدل نوپه چغوشوي او جراني شروع کړه نو ابن عتيك شروع شو چه چپ کولې يې نبی ﷺ او فرمائيل دوى پرېږده کله چه واجب شي نوڅوک دي نه جاري خلقو عرض اوکړو اي د الله رسوله واجب کيدونه څه مراد دي؟ نبی ﷺ او فرمائيل چه مرگ واجب شي، دده لور خپل پلار عبد الله بن ثابت ته او وئيل په الله قسم مونږ په دي پوهيږو چه ته شهيد ئې ځکه چه تاد جهاد دپاره اسباب تيار کړي وو نبی ﷺ او فرمائيل الله تعالى هرچاته دهغه دنيت موافق ثواب ورکوي او عذاب دنيت موافق نه ورکوي ترڅو چه گناه بالفعل ونکړي، خو بيا هم د الله نه دبخشش اميد دي زمونږه مالک رحيم کريم دي نبی ﷺ او فرمائيل تاسو شهيد چاته وايئ؟ هغوى او وئيل شهيد هغه څوک دي څوک چه د الله په لار کسبې په جهاد کسبې د کافرانو د لاس نه مرشي نبی ﷺ او فرمائيل د الله په لار کسبې د قتل کيدونه علاوه اوه قسمه شهادتونه نور هم شته دي يوهغه کس شهيد دي څوک چه په طاعون مړ شي بل هغوڅوک دي چه په اوبو کسبې ډوب شي او مرشي او څوک چه د ذات الجنب په مرض مړ شي هغه شهيد دي څوک چه دخيبي د بيمارى په وجه (هيضه) مړ شي شهيد دي څوک چه په اور وسوزي هغه شهد دي څوک چه د ديوال نه لاندي شي او مرشي

(۱) سنن النسائي/الجنائز ۱۴ (۱۸۴۷)، الجهاد ۴۸ (۳۱۹۶)، سنن ابن ماجه/الجهاد ۱۷ (۲۸۰۳)، (تحفة الأشراف: ۳۱۷۳، وقد أخرجها: موطا امام مالك/الجنائز ۱۲ (۳۶)، مسند احمد (۴۴۷۵) (صحيح)

هغه شهید دې او کومه نسخه چه په اولاد پیدا کیدو کښې مړه شي هغه شهیده ده.
 ﴿ان رسول الله ﷺ جاء يعود عبدالله بن ثابت رضي الله عنه فوجده قد غلب الخ﴾

مضمون د حدیث :

یعنی رسول الله ﷺ د عبدالله بن ثابت رضي الله عنه د تپوس دپاره تشریف یووړو، چه کله هغوی هلته اورسیدل نو وې کتل چه هغوی بیهوشه شوی دی، رسول الله ﷺ هغوی ته آواز اوکړو نو هغه په دې باندي هیڅ هم او نه وئیل، رسول الله ﷺ ﴿انا لله﴾ اوئیل او وې فرمائیل چه مونږ ستا په باره کښې مغلوب شو، یعنی قضاء او قدر غالب شو او د وفات وخت رانژدې شو، کومې زنانه چه په دې کور کښې وې هغوی چغې او فریاد شروع کړو، جابر بن عتیک رضي الله عنه هغوی خاموش کولې، رسول الله ﷺ هغه ته او فرمائیل پریرده دا زنانه یعنی ژړا ته ئې پریرده، خو چه کله وفات شی نو بیا به هیڅوک نه ژاړې، د دې نه پس په روایت کښې دی چه د هغوی لور په افسوس سره اوئیل چه والله مونږ خو دا امید لرلو چه ته به شهید کیږې ځکه چه تاسو د جهاد اسباب تیار کړې وو په دې باندي رسول الله ﷺ او فرمائیل ﴿ان الله قد اوقع اجره علی قدر نیته﴾ یعنی الله پاک هغه ته د هغه اجر ورکړې دې د هغه د نیت او ارادې مطابق ﴿وما تعدوا الشهادة؟﴾ او رسول الله ﷺ تپوس اوکړو چه تاسو شهادت څه څیز گنړئ؟ هغوی جواب ورکړو د الله پاک په لاره کښې قتل کیدل، په دې باندي رسول الله ﷺ او فرمائیل اسباب د شهادت د دې نه علاوه اووه نور دی ﴿المطعون شهید، والفرق شهید وصاحب ذات الجنب شهید، المبطن شهید، وصاحب الحریق شهید والذی يموت تحت الهمد شهید والمرأة تموت بجمع شهید﴾

د شهادت د اسباب سبعة تشریح :

مطعون یعنی څوک چه د طاعون په مرض باندي هلاک شی، ذات الجنب یو مشهوره بیماری ده چه د هغې دوه قسمونه دی یو حقیقی او بل عرفی، حقیقی خو ډیر خطرناک مرض دې چه په هغې کښې په پختو کښې دننه ورم او زخم پیدا شی او توخې او تبه د هغې سره لازم وی، او په دویم قسم باندي ځان داسې پوهه کړئ چه کوم بادی درد وی هغې ته وائی، ترمذی په کتاب الطب کښې د دې ډیر په کثرت سره ذکر کړې دې او هم دغه شان د رسول الله ﷺ په مرض الوفات کښې د لدود ذکر کوم چه د رسول الله ﷺ د کور خلقو رسول الله ﷺ لره د ذات الجنب مریض گنړلو سره کړې وو او د مبطن نه مراد چه د خیتې په مرض کښې مړ شی یعنی استطلاق البطن (د دستونو مرض) (بذل)، وفي العون : ای اسهال واستسقاء او وجع بطن، وصاحب الحریق یعنی چه په اور کښې سوزیدو سره مړ شی، تحت الهمد یعنی د دیوال د لاندې، قال القاری الهمد بفتح الدال ویسکن... ﴿ والمرأة تموت بجمع ﴾ بضم الجیم ویکسر سکون المیم قاله القاری، قال الخطابی معناه ان تموت وفي بطنها ولد اه وقال فی النهاية ای تموت وفي بطنها ولد وقيل التي تموت بکرا، والجمع بالضم بمعنی المجموع، کالذخر بمعنی المدخور، وکسر الکسائی الجیم والمعنی انها ماتت مع شی مجموع فیها غیر منفصل عنها من

حمل او بکاره آه قال النووی ضم جیمه اشهره الثلاثة (بذل، عون) یعنی هغه زنانه چه د حمل په حالت کښې مړه شی یا د واده نه مخکښې په پیغلنوب کښې مړه شی، یا په حالت نفاس کښې د ماشوم د پیدائش نه پس مړه شی لکه چه وړاندې د مسند احمد په روایت کښې را روان دی او یو قول په هغې کښې دا دې چه د چا وفات په مزدلفه کښې اوشی (خکه چه د مزدلفې دویم نوم جمع هم دې) وهو خطاء ظاهر کذا فی هامش البذل.

دا حدیث په مختلفو الفاظو او سیاق سره وارد شوې دې، د مسند احمد په یو روایت کښې دی، ﴿ان فی القتل شهادة وفي الطاعون شهادة وفي البطن شهادة وفي الفرق شهادة وفي النفساء يقتلها ولدها جمعها شهادة﴾

د اسباب الشهادة تعداد :

په دې حدیث کښې د اسباب شهادت ذکر دې او دا چه هغه اووه دی، امام مالک رحمته الله علیه په موطاء کښې عنوان قائم کړې دې، ﴿الشهداء فی سبیل الله﴾ حضرت شیخ رحمته الله علیه په اوجز ۷۰/۴ کښې د هغې د لاندې لیکلې دی : وتقدم فی ابواب الجنائز ان اسباب الشهادة الواردة فی الاحادیث ترتقی الی قریب من الستین وتقدم ذکرها (۱) ومع ذلك فالشهيد الحقيقي هو قاتل المعركة

۱ باب الشهادة بالتفصيل : ففیه تحت حدیث جابر بن عتيك رضي الله عنه، فالمذكور فی حدیث جابر رضي الله عنه هذا ثمانية أنواع مع الشهادة الحقيقية ولخص الزرقاني تبعاً لشرح البخاري وغيرها الروايات التي اطلق فيها اسم الشهادة فزاد علي هذه الثمانية، الميت علي فراشه في سبيل الله، وصاحب السل بكسر المهمله وتشديد اللام، ومن قتل دون ماله، او دينه، او دمه، او اهله، او دون مظلمته، ومن وقصه فرسه، او بعيره في سبيل الله، او لدغته هامة او مات علي فراشه علي اي حتف شاء الله كما في رواية ابي مالك الاشعري مرفوعاً عند ابي داؤد والحاكم والطبراني، وموت الغريب والشريق والذي يفترسه السبع، والخار عن دابته، والمائد في البحر الذي يصيبه القي له اجر شهيد ومن طلب الشهادة بنيتة صادقة يكتب شهيداً، ومن تردي من رؤس الجبال، وفي رواية البخاري من حدیث عائشة رضي الله عنها ليس من احد يقع الطاعون فيمكث في بلده صلباً محتسباً يعلم انه لا يصيبه الا ما كتب الله له الا كان له مثل اجر شهيد. فهذه سبع وعشرون خصلة سوي القتل في سبيل الله، ذكر الحافظ ان طرقها جيدة، وانه وردت خصال اخري في احاديث لم اعرج عليها الضعفاء آه زاد الزرقاني صاحب الحمي، والميت في السجن، وقد حبس ظلماً، والميت عشقاً، او طالباً للعلم، وزاد العيني من حبسه السلطان الظالم، او ضربه فمات فهو شهيد، والمرابط يموت في فراشه وحكي عن ابن العربي، وصاحب النظرة وهو المعين والغريب شهيدان، قال وحدثهما حسن، ومن مات مريضاً مات شهيداً، والنفساء ومن احتسب نفسه علي الله، ومن عشق وعف وكم ومات، مات شهيداً، وعند الترمذي، وقال حسن غريب. من قال حين يصبح ثلاث مرات اعوذ بالله السميع العليم من الشيطان الرجيم وقرأ ثلاث آيات من آخر سورة الحشر فان مات من يومه مات شهيداً، وعنده غيره من قراء آخر سورة الحشر فمات من ليلته مات شهيداً، وعند الأجرى يا انس ان استطعت ان تكون ابدا علي وضوء فافعل فان ملك الموت اذا قبض روح العبد وهو علي وضوء كتب له شهادة، وعن ابن عمر من صلي الضحي وصام ثلثة ايام من كل شهر ولم يترك الوتر كتب له اجر شهيد، وورد من مات يوم الجمعة او ليلة الجمعة اجير من عذاب القبر وجاء يوم القيامة وعليه طابع الشهداء، قال ابونعيم غريب من حدیث جابر، ومن خرج به خراج في سبيل الله كان عليه طابع الشهداء وزاد القاري عن ابواب السعادة علي بعض المذكورين صاحب السل اي الدق، والمسافر، والمرعوب علي فراشه في سبيل الله، وعن ابي عبيدة بن الجراح رضي الله عنه قلت يا رسول الله صلى الله عليه وسلم اي الشهداء اكرم علي الله؟ قال: رجل قام الي امام جاتر فامر به بمعروف ونهاه عن منكر فقتله، وعن ابن مسعود رضي الله عنه مرفوعاً ان الله كتب الفيرة علي النساء والجهاد علي الرجال فمن صبر منهن كان لها اجر شهيد، وورد من قال في كل يوم خمسا وعشرين مرة اللهم بارك لي في الموت وفيما بعد الموت ثم مات علي فراشه اعطاه الله تعالي اجر شهيد، ومنها المتمسك بالسنة عند فساد الامة، والموذن المحتسب، ومن عاش مدارياً، ومن جلب طعاماً الي المسلمين، ومن سعي علي امراته وولده، وما ملكت يمينه، وغير ذلك مما يطول ذكره، فكل من كثر اسباب شهادة زيد له في.....

او من قتله اهل البغى او اهل الحرب او قطاع الطريق ونحو ذلك، وتقدم حكمه فى الجنائز من انه لا يغسل ويدفن بدمه، واختلف فى وجه تسمية الشهيد شهيدا على اقوال تقدم ذكرها فى باب العتمة والصبح وبسطها النووى فى شرح مسلم آه د علامه سيوطى رحمته الله هم په دې كښې مستقل يو تاليف دې، ابواب السعادة فى ابواب الشهادة..... چه په هغې كښې هغوى اسباب د شهادة اوياته رسولې دى. والحديث اخرجه النسائى وابن ماجه، قاله المنذرى

باب الْمَرِيضِ يُؤَخِّدُ مِنْ أَطْفَارِهِ وَعَائَتِهِ

د قريب الموت دپاره د نوكانو كټ كولو او د ترخ د ويختو صفا كولوييان

يعنى مريض ته پكار دى چه د خپلو بريټو او د نامه نه لاندې ويښتو خيال ساتي.

[۳۱۱۲] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ حَلِيفُ بَنِي زُهْرَةَ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: ابْتِغَاءَ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلٍ خُبَيْبًا، وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْحَارِثَ بْنَ عَامِرٍ يَوْمَ بَدْرٍ، فَلَبِثَ خُبَيْبٌ عِنْدَهُمْ أَسِيرًا. حَتَّى أَجْمَعُوا الْقَتْلَةَ، فَاسْتَعَارَ مِنْ ابْنَةِ الْحَارِثِ مُوسَى يَسْتَحِدُّ بِهَا، فَأَعَارَتْهُ، فَدَرَجَ بَنِيهَا وَهِيَ غَافِلَةٌ. حَتَّى أَتَتْهُ، فَوَجَدَتْهُ فُحْلِيًّا وَهُوَ عَلَى فُحْدِيَّةٍ، وَالْمُوسَى بَيْدَةٌ، فَفَزَعَتْ فَزَعَةً عَرَفَهَا فِيهَا، فَقَالَ: أَمْخَشِينَ أَنْ أَقْتَلَهُ؟ مَا كُنْتُ لِأَفْعَلَ ذَلِكَ. قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى هَذِهِ الْقِصَّةَ شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبِيدُ اللَّهِ بْنُ عِيَاضٍ، أَنَّ ابْنَةَ الْحَارِثِ أَخْبَرَتْهُ، أَنَّهُمْ جِئُوا أَجْمَعُوا يَعْنِي لِقَتْلِهِ اسْتَعَارَ مِنْهَا مُوسَى يَسْتَحِدُّ بِهَا، فَأَعَارَتْهُ.

دابوهريرة رحمته الله نه روایت دې فرمائی چه بنو حارث بن عامر بن نوفل خبيبه په سلو اوښاتو باندي واخستو، «ددي دپاره چه دپلار په بدل كښې ئې قتل كړي او خبيبن حارث بن عامر د بدر په ورځ قتل كړي وو او خبيب نه ددوى سره په قيد كښې يوه موده تيره كړه، تردې چه هغوى دده د قتل دپاره راجمع شول نو خبيب د حارث دلورنه چاره وغوښتله د صفايي دپاره نو هغې ورته وركړه په دې وخت كښې ددوى يوماشوم د خبيب رحمته الله خواته ورغې او مورني غافله وه اود خبيب په پتون باندي ناست وو اونورڅوك ورسره نه وو او چاره ئې په لاس كښې وه نود ماشوم مور ويريدله نو خبيبه دهغې په پريدلو باندي پوه شو نو ورته ئې ووييل اياته په دې ويريزى زه به داماشوم قتل كړم زه هيڅكله داسې نه كوم

﴿ وعن ابى هريرة رحمته الله قال ابتاع بنو الحارث بن عامر بن نوفل خبيبا الخ ﴾

د خبيب بن عدى رحمته الله د قتل قصه :

په دې باب كښې مصنف رحمته الله د خبيب بن عدى رحمته الله د قتل قصه ذكر كړې ده، دا قصه په

٦.....فتح ابواب سعاده آه قلت: وزاد ابن عابدين: من قال في مرضه اربعين مرة لا اله الا انت سبحانك اني كنت من الظالمين فمات، ومن يقرأ كل ليلة سورة ياسين ومن بات على طهارة فمات ومن صلى على النبي رحمته الله مائة مرة، وسئل الحسن عن رجل اغتسل بالثلج فاصابه البرد فمات فقال يالها من شهادة، وهذا كما رايت ترتقي الشهداء الي قريب من ستين، وذكر صاحب مظاهر حق، بعض انواع اخر، وكذا في كنز العمال وفيه قال العيني، وفي التوضيح: الشهداء ثلاثة وهم من ذكروا انفا، وشهيد في الدنيا دون الآخرة وهو من غل في الغنيمة ومن قتل ملجرا او ما في معناه. آه (انظر حديث رقم: (٢٦٦٠)، (تحفة الأشراف: ١٤٢٧١) (صحيح)

کتاب الجهاد کښې په (باب فی الرجل یتاسر) کښې په تفصیل سره تیره شوې ده هغه دې اوکتلی شی، خیبب رضی الله عنہ د خپل قتل د واقعي نه مخکښې ډیر په اطمینان سره د قاتلینو نه چاره طلب کړې وه او د نامه نه لاندې وینسته ئې صفا کړې وو، لکه چه په حدیث الباب کښې ذکر دی. والحديث اخرجه البخاری والنسائی مطولا، قاله المنذری

بَاب مَا يُسْتَحَبُّ مِنْ حُسْنِ الظَّنِّ بِاللَّهِ عِنْدَ الْمَوْتِ

د مرگ په وخت کښې په الله تعالی باندې د ښه گمان کولو د فضیلت بیان

[۳۱۱۳] (حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي سُقْيَانَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ قَبْلَ مَوْتِهِ بِثَلَاثٍ: قَالَ: "لَا يَمُوتُ أَحَدُكُمْ، إِلَّا وَهُوَ يُحْسِنُ الظَّنَّ بِاللَّهِ".

د جابر بن عبد الله رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ته مې اوریدلی دی چه فرمائی یسې رو دخپل وفات کیدونه درې ورځې مخکښې مړ دي نه شی په تاسو کښې یوکس مگر په داسې حال کښې چه په الله باندې ښه گمان کونکې وي
(عن جابر بن عبد الله رضی الله عنہ قال سمعت رسول الله ﷺ يقول قبل موته بثلاث لا يموت احدكم الا وهو يحسن الظن بالله)

شرح الحديث:

یعنی رسول الله ﷺ د خپل وفات نه درې ورځې مخکښې دا او فرمائیل چه د مرگ په وخت انسان لره خاص طور سره د الله پاک سره نیک گمان پکار دې، یعنی دا خیال دې کوی چه ان شاء الله، الله پاک به په هغه باندې رحم فرمائی او د الله پاک نه دې د بخښنې امید ساتی، او په دې وخت مریض له دا هم پکار دی چه په دې آیتونو او احادیثو کښې غور او تدبیر او کړی کوم چه د الله پاک د کرم او عفو او رحمت په باره کښې دې ——— کما قال الله تعالی فی الحدیث الصحیح القدسی انا عند ظن عبدي بی، قال النووی هذا هو الصواب فی معناه وقاله جمهورهم، وشد الخطابی وذكر معه تاویلات اخر الخ (بذل) د خطابی راثې په دې کښې دا ده چه د حسن ظن نه مراد حسن عمل دې ځکه په الله پاک باندې حسن ظن بغیر د حسن عمل نه نه حاصلیږی، امام نووی رحمته الله علیه دا رد کړې دې لکه چه اوس تیرشو، پس صحیح هم داده چه په داسې وخت کښې حاضرینو او پوښتنه کونکو لره پکار دی چه په کومو آیتونو کښې د رحمت او بخښنې ذکر دې، هغه دهغه مخې ته اولولی، بله دا چه هغه ته خپل نیک اعمال هم وریاد کړې شی، په الله پاک باندې د ښه گمان پیدا کیدو دپاره هم دا آسان صورت دې، (رزقنا الله حسن الظن به تعالی فی هذا الوقت).

والحدیث اخرجه مسلم وابن ماجه، قاله المنذری

۱: صحیح مسلم الجنة وصفة نعيمها ۱۹ (۲۸۷۷)، سنن ابن ماجه للزهدي ۱۴ (۴۱۶۷)، (تحفة الأشراف: ۲۲۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۳۱۵، ۳۲۵، ۳۳۰، ۳۳۴، ۳۹۰) (صحیح)

بَاب مَا يُسْتَحَبُّ مِنْ تَطْهِيرِ ثِيَابِ الْمَيِّتِ عِنْدَ الْمَوْتِ

د مرگ په وخت کښې د پاکو جامو اغوستلو د فضیلت بیان

یعنی غوره دا ده چه د وفات په وخت د انسان جامې پاکې وې
د حضرت الشیخ او والد صاحب حال د وفات په وخت :

زمونږ د شیخ نور الله مرقده چه په کومه ورځ وفات اوشو، وفات خو ئې د مازیگر نه روستو شوې وو د وفات په ورځ سحر هغوی د خپل خادم نه د معمول خلاف دا تپوس اوکړو: ابو الحسن زما بستره پاکه ده؟ هغه اووې اوجی پاکه ده، بیا ئې په دویم وخت کښې هم یو ځل دا سوال او فرمائیلو، او زما والد نور الله مرقده چه هغوی تر آخره پورې د طهارت او پاکوالی ډیر اهتمام کولو، پس په استنجاء کښې به ئې اول استنجاء بالحجر او د دې نه پس استنجاء بالماء په خپل اختیار او اهتمام سره کوله، تقریباً د (۸۸) اته اتیا کالو په عمر کښې وفات شو، یو شپه او نیمه ورځ ئې د غفلت په حالت کښې تیره شوه، د دې نه مخکښې به ئې په خپل لاس سره اودس او استنجاء وغیره کوله، د وفات نه پس چه کله د بستري نه مړې اوچت کړې شو نو ما قصدا او کتل چه د بستري څه حال دې ځکه چه تقریباً څلیرشت گنتې د غفلت په حالت کښې تیرې شوې وې. چه اومې کتل نو بستره بالکل صفا وه پکښې هیڅ قسم نخښه نه وه، تموتون کما تحیون، وتحشرون کما تموتون الحدیث.

[۳۱۱۴] () حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخَدْرِيِّ، أَنَّهُ لَمَّا حَضَرَ الْمَوْتَ دَعَا بِثِيَابِ جَدِّهِ، فَلَبَسَهَا، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِنَّ الْمَيِّتَ يُبْعَثُ فِي ثِيَابِهِ الَّتِي يَمُوتُ فِيهَا".

د ابوسلمه رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه کله د ابوسعيد خدریه دوفات کیدو وخت راغې نو نوې جامې ئې اوغوبنتلي او وائی غوستلي اوبیا ئې اووئیل ماد نبی صلى الله عليه وسلم نه اوریدلي وو چه فرمائیل ئې چه مړ به په هغه جامو کښې پورته کولې شی په کومو کپرو کښې چه مړ شوې وې.
(عن ابی سعید الخدری رضي الله عنه انه لما حضره الموت دعا بثياب جدد فلبسها... الميت يبعث في ثيابه التي يموت فيها)

د ابوسعيد خدری رضي الله عنه د وفات وخت چه کله نزدې شو نو هغوی نوې جامې راوغوبنتلي او هغه ئې واغوستلې او وې فرمائیل چه ما د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه اوریدلې دی چه مړې به د قبر نه هم په هغه جامو کښې اوچتولې شی په کومو جامو کښې چه هغه مړی.
د دوه احادیثو ترمینځه تطبیق :

دلته یو مشهور اشکال دا کولې شی چه دا حدیث د هغه حدیث خلاف دې چه په هغې کښې دا دی (يحشر الناس حفاة عراة) د دې یو جواب خو دا ورکړې شوې دې چه په دې کښې په یو حدیث کښې خو د بعث ذکر دې او په دویم کښې د حشر، او دا دواړه ځانله ځانله څیزونه دی. بعث خو وائی د قبر نه پاسیدو ته او حشر وائی په میدان حشر کښې جمع کیدو ته، او

په دې دواړو وختونو کښې به کافي فاصله وي، ځکه چه دا به ډیره اوږده ورځ وي، د زرو کالو برابر او یو جواب دا ورکړې شوي دي چه په حدیث الباب کښې د ثياب نه مراد اعمال دي چه انسان خپلو اعمالو لره او چتولو سره د قبر نه پاسی که هغه هر څنگه وي، خو دې صحابی رضی الله عنه په دې حدیث کښې ثياب لره په ظاهري معنی باندي حمل کړې دي نو په دې دواړو احادیثو کښې هیڅ تعارض نشته، هم دا دویم جواب راجح دي، هم دغه شان وئیلې شوي دي چه آیت کریمه، «و ثيابک فطهر» کښې د ثياب نه مراد اعمال دي، او علامه قرطبي رحمته الله علیه فرمائي (فی التذکرة فی احوال الموتی وامور الاخرة) چه کیدی شي چه حشر فی الاکفان د شهداء کرامو سره خاص وي (عون) وفي هامش البذل وخصه فی الفتاوی الحدیثية ۱۳۳ بالشهید.

په جامع ترمذی کښې دي: قال ابن المبارک احب الی ان یکفن فی ثیابه التي کان یصلی فیها، او د دې شرح په تحفة الاخوذی کښې ده په حواله د فتح الباری چه صدیق اکبر رضی الله عنه فرمائیلي وو چه زما تکفین زما په دې دواړو کپرو کښې او کړي په کومو کښې چه زه مونځ کوم، او په تذکرة الحفاظ کښې دا نقل کړې شوي دي امام زهري رحمته الله علیه فرمائي چه د سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه چه کله وخت نزدې راغلو نو هغوی خپله پخوانی د وړي جبه راوغوښتله او وې فرمائیلي چه ما هم په دې کښې کفن کړي ځکه چه په جنک بدر کښې ما دا اغوستلې وه او ما دا هم د دې وخت دپاره پته کړې وه، او خپله د رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم د کفن په باره کښې وړاندې د ابن عباس رضی الله عنه په حدیث کښې را روان دي چه هغوی ته په درې کپرو کښې کفن ورکړې شو چه په هغې کښې یو د هغوی هغه قمیص وو په کوم کښې چه د رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم وفات اوشو، فی ثلاثة اثواب نجرانية، الحلة ثوبان، وقمیصه الذي مات فيه... خو د رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم په باره کښې په روایاتو کښې اختلاف دي.

بَاب مَا يُسْتَحَبُّ أَنْ يُقَالَ عِنْدَ الْمَيِّتِ مِنَ الْكَلَامِ

د مړ کیدونکی کس په وړاندې کوم قسم خبرې کول پکار دي؟

[۳۱۱۵] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا حَضَرَ تَمُّ الْمَيِّتِ، فَقُولُوا خَيْرًا، فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ يُؤْمِنُونَ عَلَى مَا تَقُولُونَ، فَلَمَّا مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا أَقُولُ؟ قَالَ: قُولِي: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ، وَأَعْقِبْنَا عَقْبَى صَالِحَةٍ". قَالَتْ: فَأَعْقَبَنِي اللَّهُ تَعَالَى بِهِ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

دام المومنين ام سلمه رضی الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله و سلم فرمائیلي دي کله چه تاسو ته مرگ راشي نو نبی خبرې کوي ځکه چه فرشتي امین وائي په هغه خبرو کوي چه تاسو کوي کله چه ابو سلمه مړ شو ماعرض او کړو اي د الله رسوله زه څه او وایم؟ نبی صلی الله علیه و آله و سلم او فرمائیلي داسې وایه: یعنی اي الله بخښنه ورته وکړي او مونږ ته دده نه بهتر عوض را کړي، ام سلمه وائي دهغه په عرض کښې الله تعالی ماته نبی صلی الله علیه و آله و سلم را کړو.

(۱) صحیح مسلم/الجنائز ۳ (۹۱۹)، سنن الترمذی/الجنائز ۷ (۹۷۷)، سنن النسائي/الجنائز ۳ (۱۸۲۴)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۴ (۱۴۴۷)، ۵۵ (۱۵۹۸)، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۶۲، ۱۸۲۴۷)، وقد أخرجها: موطا امام مالك/الجنائز ۱۴ (۴۲)، مسند احمد (۳۰۶، ۲۹۱/۶) (صحیح)

شرح الحديث :

قوله: (عن ام سلمة رضي الله عنها قالت قال رسول الله ﷺ): «ام سلمة رضي الله عنها د رسول الله ﷺ ارشاد نقل كوی چه كله تاسو د یو مری كور ته لاړ شی نو هلته تلو سره ښه خبره د خولې نه اوباسی، ځكه چه هغه وخت هلته ملائك موجود وی او تاسو چه څه وایی په هغې باندي هغوی آمین وائی، لهذا هلته تلو سره ډیر په احتیاط خبره كول پكار دی، هغه فرمائی چه كله زما د وړاندي خاوند ابوسلمة رضي الله عنه وفات اوشو نو ما رسول الله ﷺ ته عرض اوکړو یا رسول الله ﷺ اوس زه څه اولولم؟ نو رسول الله ﷺ او فرمایل دا اولوله (اللهم اغفر له واعقبنا عقبی صالحه) (ای الله هغه ته بخښنه اوکړه او ماته دهغه نعم البدل راکړه، هغه فرمائی چه الله پاک ماته دهغې نعم البدل رسول الله ﷺ راکړو.

دا حدیث په صحیح مسلم کښې هم دې، د هغې سیاق د دې نه لږ شان مختلف دې او په هغې کښې لږ زیادت هم دې،

ولفظه: سمعت رسول الله ﷺ يقول: ما من مسلم تصيبه مصيبة فيقول ما امره الله وانا اليه راجعون اللهم اجرنی فی مصیبتی واخلف لی خیرا منها، الا اخلف الله له خیرا منها، قالت فلما مات ابوسلمة قلت ای المسلمین خیر من ابی سلمة، اول بیت هاجر الی رسول الله ﷺ ثم انی قلتها، په دې روایت کښې د رسول الله ﷺ هغې ته د نکاح د پیغام لیرلو ذکر دې.

یعنی هغه داسې فرمائی چه كله رسول الله ﷺ ما ته د وئیلو دپاره داسې او فرمایل نو ما به دا سوچ كولو چه د هغوی نه به غوره څوك وی، خو بیا هم ما دا دعا لوستله د دې روایت څه حصه په باب فی الاسترجاع کښې هم را روانه ده.

والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

باب فی التلقین

مر کیدونکی ته د تلقین بیان

تلقین د جمهورو په نزد مستحب دې او د تلقین نه مراد دا دې چه هغه سره کینی، کلمه او وئیلې شی دا نه چه هغه ته د وئیلو دپاره اوئیلې شی، خو د مری دې طرف ته د متوجه كولو دپاره دا هم وئیلې کیدی شی چه نزدې خلق خپل مینځ کښې داسې اوئی چه د الله پاک نوم مبارک دې راځی چه مونږ ټول د الله پاک ذکر اوکړو، او د حدیث د ظاهر تقاضا د تلقین وجوب دې پس یو جماعت د وجوب قائل دې، بلکه بعض مالکیانو خو په وجوب باندي اتفاق نقل کړې دې. (بذل عن القاری) وفي الدر المختار: یلقن ندبا وقیل وجوبا بلذکر الشهادتین عنده من غیر امره بها، ولا یلقن بعد تلحیده وان فعل لا ینهی عنه، وفي الجوهره انه مشروع عند اهل السنة (هامش البذل) یعنی تلقین بعد الدفن اگر چه د احنافو په نزد مستحب نه دې خو که څوك ئې اوکړی نو هغه دې منع نه کړې شی.

[۳۱۱۶] (۱) حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ السَّمْعِيُّ، حَدَّثَنَا الضَّحَّاكُ بْنُ قُلَيْبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ أَبِي عَرِيبٍ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ مَرْثَةَ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ كَانَ آخِرَ كَلَامِهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، دَخَلَ الْجَنَّةَ".

دمعاذ بن جبل رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی دچا اخرنی خبره چه «لا إله إلا الله» وی نوجنت ته به داخل شی.

[۳۱۱۷] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ غَزِيَّةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عُمَارَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَقِنُوا مَوْتَكُمْ قَوْلَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ".

دابوسعيد خدری رضي الله عنه نه روایت دی فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی خپلو مروته د «لا إله إلا الله» تلقین کوی.

﴿ عن معاذ بن جبل رضي الله عنه (مرفوعا) من كان آخر كلامه لا اله الا الله دخل الجنة ﴾
دا د باب رومبی حدیث دی او د باب دویم حدیث د ابوسعيد خدری رضي الله عنه نه مرفوعا روایت دی ﴿ لقنوا موتاكم لا اله الا الله ﴾

په رومبی حدیث راوړلو سره مصنف رحمته الله عليه اشاره او کړه د تلقین فاندې او د غرض طرف ته چه مقصد دا دی چه د مړی آخری کلام د دنیا نه د رخصت کیدو په وخت کلمه توحید وی هم په دې وجه علماء کرامو لیکلی دی چه کله یو ځل هغه کلمه اولولی نو بیا دې ورته تلقین اونکړې شی مگر دا چه د هغې نه روستو څوک دنیاوی کلام او کړی او په دویم حدیث کښې د موتی نه مراد محتضر دې مجازا، دا د مجاز د مایوئل د قبیلې نه دې، کذا قال الطیبي کما فی البذل، والامام النووی فی شرح مسلم، وکذا فی مغنی المحتاج ۱/۳۳۰ (فی فقه الشافعية) او بعض شوافعو مړې په حقیقی معنو باندې محمول کولو سره حدیث لره په تلقین بعد الدفن باندې محمول کړې دې خو په بذل کښې دی چه تلقین بعد الدفن امر محدث دې په سلفو کښې معروف نه وو لهذا حدیث لره په دې باندې محمول کول صحیح نه دی، هم په دې باندې حضرت شیخ د بذل په حاشیه کښې لیکلې دی ﴿ لکنه وارد فی الروایات العديدة کما فی منتخب کنز العمال ۶/۲۶۰ بله دا چه علامه عینی رحمته الله عليه او حافظ ابن حجر د دواړو په کلام کښې دا دی چه د لا اله الا الله نه مراد پوره کلمه ده،

قال الكرمانی : والمراد هی وضمیمتها محمد رسول الله، زین ابن المنیر وائی چه لا اله الا الله شرعا د شهادتین لقب دې (عون) او هم دا پورته د درمختار نه نقل کړې شو خو په مغنی المحتاج کښې د محمد رسول الله د زیادت په مسنون کیدو او نه مسنون کیدو باندې بحث کړې شوې دې، د هغوی میلان د عدم زیادت طرف ته دې، حدیث ابی سعید رضي الله عنه اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۵۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۳۳/۵، ۲۴۷) (صحیح)
(۲) : صحیح مسلم/الجنائز ۱ (۹۱۶)، سنن الترمذی/الجنائز ۷ (۹۷۶)، سنن النسائی/الجنائز ۴ (۱۸۲۷)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۳ (۱۴۴۵)، (تحفة الأشراف: ۴۴۰۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳/۳) (صحیح)

باب تَغْيِيزِ الْمَيِّتِ

دمری دسترگو بندولو بیان

[٣١١٨] حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ حَبِيبٍ أَبُو مَرْوَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو اسْمَاعِيلَ يَعْزِي الْفَزَارِيُّ، عَنْ خَالِدِ الْحَدَّادِ، عَنْ أَبِي قِلَابَةَ، عَنْ عَنُقَيْبَةَ بْنِ دُوَيْبٍ، عَنْ أُمِّ سَلْمَةَ، قَالَتْ: دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَبِي سَلْمَةَ، وَقَدْ شَقَّ بَصَرَهُ، فَأَغْمَضَهُ، فَصَبَّحَ نَاسٌ مِنْ أَهْلِهِ، فَقَالَ: "لَا تَدْعُوا عَلَيَّ أَنْفُسَكُمْ إِلَّا بِخَيْرٍ، فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ يُؤْمِنُونَ عَلَى مَا تَقُولُونَ، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَبِي سَلْمَةَ، وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّينَ، وَاخْلُفْهُ فِي عَقْبِهِ فِي الْغَابِرِينَ، وَاعْفِرْ لَنَا وَلَهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ، اللَّهُمَّ افْسَحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ، وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ". قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَتَغْيِيزُ الْمَيِّتِ بَعْدَ خُرُوجِ الرُّوحِ، سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ مُحَمَّدِ بْنِ النُّعْمَانِ الْمُقْرِيَّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا مَيْسَرَةَ رَجُلًا عَابِدًا، يَقُولُ: غَمَضْتُ جَعْفَرَ الْمُعَلِّمَ، وَكَانَ رَجُلًا عَابِدًا فِي حَالَةِ الْمَوْتِ، فَرَأَيْتُهُ فِي مَنْامِي لَيْلَةَ مَاتَ، يَقُولُ: أَعْظَمَ مَا كَانَ عَلَيَّ، تَغْيِيزُكَ لِي قَبْلَ أَنْ أَمُوتَ.

دام سلمه رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله ابو سلمه ته راغي (دمرگ نه پس) اودهغه سترگي بيرته پاتي شوي وي نبی صلی الله علیه و آله دهغه سترگي بندي کړي نو دده کور خلقو شور جوړ کړو په دي وخت کښې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائيل دخان دپاره دخير او کاميابي نه علاوه بله دعامه غواړئ ځکه تاسو چه څه وائی فرشتې په هغې امين وائی بيانې صلی الله علیه و آله او فرمائيل اي الله ابو سلمه ته مغفرت او کړي او په هدايت موندونو کښې دده درجه لوړه کړي اودده نه په پاتي شوو خلقو کښې دده قائم مقام پيدا کړي او مونږ او ده ته خنه وکړي اي د ټول عالم پرورش کونکيه ده ته دده قبر فراخه کړي اودده قبر منور کړي.

﴿ عن ام سلمة رضي الله عنها قالت دخل رسول الله صلی الله علیه و آله على ابي سلمة وقد شق بصره (٢) فاعمضه ﴾

ام سلمه رضي الله عنها فرمائی چه د ابو سلمه رضي الله عنه د وفات په وخت رسول الله صلی الله علیه و آله تشریف راوړو هغه وخت د هغوی سترگې غړيدلې وې رسول الله صلی الله علیه و آله هغه بندي کړې په دي باندي د هغوی د کور خلقو ژړا او چغې جوړې کړې، رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائيل: د خير دعا کوئ ځکه چه ملائک امين وائی ستاسو په خبره باندي، د دي نه پس رسول الله صلی الله علیه و آله دا دعا اولوستله ﴿اللهم اغفر لابي سلمة وارفع درجته في المهديين واخلفه (٢) في عقبه في الغابرين واعفِرْ لَنَا وَلَهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ افسح له في قبره ونور له فيه﴾

د ابوداؤد په بعض نسخو کښې دلته يو زيادت دي چه د هغې مضمون دا دي چه ابوداؤد فرمائی چه تغميض العين د روح د وتلو نه پس پکار دي او بيا ئې وړاندي دا واقعه ليکلې ده چه ما د خپل استاد محمد بن محمد بن نعمان المقرئ نه واوريدل هغوی به فرمائيل چه ما د ابوميسره نه واوريدل چه يو عابد او زاهد سرې وو هغوی وائی چه ما د جعفر معلم د مرگ په وخت د هغوی سترگې پټې کړې نو چه کله د هغوی وفات اوشو هم په هغه شپه ما هغه په خوب کښې اوليدو چه وې وئيل: اعظم ما كان علي تغميضك لي قبل ان

(١) صحيح مسلم / الجنائز ٤ (٩٢٠)، سنن ابن ماجه / الجنائز ٦ (١٤٥٤)، (تحفة الأشراف: ١٨٢٠٥، ١٩٦٠١)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٩٧/٦) (صحيح)

(٢) قال النووي هو بفتح الشين ورفع بصره وهو فاعل شق، اي بقي بصره مفتوحا، هكذا ضبطناه وهو المشهور، وضبطه بعضهم بصره بالنصب وهو صحيح أيضا، والشين مفتوحة بلا خلاف (أه)

(٣) يعني اي الله ته خليفه شه د دي مری په باقی پاتي کيدونکو کښې د دي مری د اولاد دپاره

اموت..... چه په ما باندې د ټولو نه زیاته بده خبره دا راغله چه تا زما سترگې د روح قبض کیدو نه مخکښې بندې کړې آه. لهذا د دې خیال ساتل پکار دی چه کله د مرگ یقین پیدا شی نو بیا دې سترگې پټې کړې شی.

په دې حدیث کښې د اغماض میت ذکر کړې شوې دې، د علماء کرامو د دې په استحباب باندې اجماع ده چه د هغې حکمت دا لیکلې شوې دې چه د مړې هیئت خراب نه شی او علامه طیبی لیکلې دی چه کله روح قبض کیږي نو د سترگو رنړا هم ورسره ورسره ختمه شی لهذا د سترگو په غړیدلې پاتې کیدو کښې هیڅ فائده نشته. (هامش البذل) هم دغه شان علماء کرامو لیکلې دی چه هم په دې وخت د هغوی خوله هم بندول پکار دی. والحديث اخرجہ مسلم والنسائی وابن ماجه (منذری)

بَابُ فِي الْإِسْتِرْجَاعِ

دانا لله وانا اليه راجعون ونيلو بيان

حدیث الباب (باب ما يقال عند الميت من الكلام) کښې اختلاف د سیاق سره تیر شوې دې.

[۳۱۱۹] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ، عَنْ ابْنِ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا أَصَابَتْ أَحَدَكُمْ مُصِيبَةٌ، فَلْيَقُلْ: إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، اللَّهُمَّ عِنْدَكَ أَحْتَسِبُ مُصِيبَتِي، فَأَجِرْنِي فِيهَا، وَأَبْدِلْ لِي خَيْرًا مِنْهَا".

دام سلمه رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی کله چه په تاسو کښې یو کس ته مصیبت اورسیري نو دا کلمات دي او وائی: «إنا لله وإنا إليه راجعون» ای الله زه په خپل مصیبت کښې دخان دپاره ستاسره دثواب امید لرم ته ماته په دې کښې اجر را کړي او ددې بهتره بدله را کړي.

﴿اللهم عندك احتسب مصيبتى فاجرنى﴾ مثل اکرمی او مثل فانصرنی (یعنی فاجرنی) دواړو طریقو سره ضبط کړې شوې دې اول د ایجار نه یعنی اجرت او عوض ورکول او دویم د اجر نه اخستلې شوې دې.

بَابُ فِي الْمَيِّتِ يُسَجَّى

په مړې باندې د خادر غوړولو بیان

یعنی د انسان د وفات نه پس په هغه باندې خادر اچول پکار دی هغه ښکاره نه دی پریخودل پکار ښکاره ده چه په غسل کښې خو به وخت لگی خو دا عمل هم دغه وخت کول پکار دی، لکه چه په حدیث الباب کښې دی

[۳۱۲۰] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "سَجَّى فِي تَوْبِ جِبْرَةَ".

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۲۰۲)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۱۷/۶) (ضعيف)

(۲): صحيح البخاري للباس ۱۸ (۵۸۱۴)، صحيح مسلم للجنائز ۱۴ (۹۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۷۷۱۵)، وقد أخرجہ: مسند

احمد (۲۶۹، ۸۹/۶) (صحيح)

دام المومنین عائشي رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله (چه کله وفات شو نو) په یوه یمني کپړه کښې پټ کړې شو.

(عن عائشة رضي الله عنها ان النبي صلی الله علیه و آله سجي في ثوب حبرة)

حبرة... په وزن د عنبه دا په وصف او اضافت دواړو سره لوستلې شوې دې، یعنی یمني خادر کوم چه د کرنو والا وو. عائشه رضي الله عنها فرمائی چه رسول الله صلی الله علیه و آله د هغوی د وفات نه پس په یمني خادر کښې پټ کړې شو.

صلی الله علیه وسلم شرف وکرم ___ والحديث اخرجه البخاري ومسلم، قاله المنذري

باب الْقِرَاءَةِ عِنْدَ الْمَيِّتِ

د مرکيدونکی خواته د تلاوت کولو بيان

[۳۱۲۱] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ مَكِّيٍّ الْمُرَوِّزِيُّ، الْمَعْنَى قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ سَلِيمَانَ التَّمِيمِيِّ، عَنْ أَبِي عُمَرَ، وَلَيْسَ بِالتَّهْدِي عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَقْرَأُوا عَلَيَّ عَلَى مَوْتَاكُمْ". وَهَذَا الْقَطُّ ابْنُ الْعَلَاءِ.

دمعقل بن یسار رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی خوک چه په تاسو کښې مړه کیږي تاسو د هغوی خواته سورة یس وائي.

قوله: (أَقْرَأُوا عَلَيَّ عَلَى مَوْتَاكُمْ): دلته د موتی نه مراد محتضر دې، د اکثر و علماء کرامو رائي دا ده او د بعضو رائي دا ده چه سورة یاسین د هغه په خوا کښې د هغه د مرگ نه پس اولوستلې شی چه په هغه باندې خادر اچولې شوې وی (۲) او درسم قول دا دې چه یقراء علیه عند القبر علماء کرامو د دې سورة د لوستلو په حکمت کښې لیکلې دی چه په دې وخت انسان کښې د تلفظ کولو طاقت خو وی نه. د ډیر زیات ضعف د وجې نه هغه په دې وخت کښې خپل حاجت نه شی بنکاره کولې، خو د مومن سړی زړه په دې وخت کښې بالکلیه الله پاک طرف ته متوجه وی نو په هغه باندې سورة یاسین په دې وخت کښې خکه لوستلې شی چه د هغه په ایمان او قوت قلبیه کښې اضافه پیدا شی، خکه چه په دې سورة کښې د شریعت امهات اصول او هغه لوڼې لوڼې مسائل کومه چه علماء کرامو په خپلو تصنیفاتو کښې بیان کړې ده د مختلفو امتونو احوال، د تقدیر اثبات او دا چه د بندگانو د افعالو استناد د الله پاک طرف ته دې، او اثبات توحید، نفی شرک او احال قیامت، د حشر او نشر منظر، حساب او کتاب، ثواب او عقاب وغیره څیزونه ذکر شوې دی، او په حدیث کښې هم دی چه د هر څیز دپاره زړه وی او د قرآن زړه سورة یاسین دې لهذا دا سورة د هغه مخکښې لوستلو سره به هغه ته روحانی طاقت حاصلیږي او تسلی به ورته ملاویږي او د ایمانیاتو استحضار به ورته کیږي. (په دې شرط چه هغه د قرآن کریم په ترجمه باندې پوهیږي)

۱: سنن ابن ماجه للجنائز ۴ (۱۴۴۸)، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۷۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷، ۲۷۵) (ضعيف)
 ۲: خو په دې باندې دا اشکال دې چه فقهاء کرامو مړی ته تر دې ناسته کښې قبل الغسل د قرآن کریم د تلاوت نه منع فرمائیلې ده.

هره جمعه د خپل مور پلار په قبرونو باندې سورة ياسين نوستل :

او د سورة ياسين د قبر په خوا کښې د لوستلو په باره کښې په يو حديث کښې دی کوم چه ابن عدی وغيره روايت کړې دي، ﴿من زار قبر والديه او احدهما في كل جمعة فقراء عندهما ياسين غفر له بعدد كل حرف منها﴾ (البذل)

والحدیث اخرجه النسائی وابن ماجه، قاله المنذرى

باب الْجُلُوسِ عِنْدَ الْمُصِيبَةِ

د مصيبت په وخت کښې کي ناستلو بيان

[۳۱۲۲] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: لَمَّا قُتِلَ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ، وَجَعْفَرٌ، وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ، جَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ، يُعْرِفُ فِي وَجْهِهِ الْحُزْنَ، وَذَكَرَ الْقِصَّةَ.

دام المومنين عائشي رضي الله عنها نه روايت دي فرمائي چه كله زيد بن حارثه او جعفر او عبد الله بن رواحه رضي الله عنهم قتل کړې شول نو نبی صلی الله علیه و آله په جومات کښې کي ناستو چه په مخ باندې ئې دخفگان آثار ښکاره شول، حديث تر آخره پورې

شرح الحديث :

يعنى دمرگ په شان د يو مصيبت په وخت که د لږ ساعت دپاره سکون او وقار او سکوت سره کيښي چه په هغې کښې د غم آثار ښکاره کيږي نو په دې کښې هيڅ باک نشته، دا خپله د رسول الله صلی الله علیه و آله نه ثابته ده لکه چه په حديث الباب کښې دی، عائشه رضي الله عنها فرمائي چه كله په غزوه موته کښې د زيد بن حارثه رضي الله عنه، جعفر بن ابی طالب او عبد الله بن رواحه رضي الله عنهم د شهادت خبر رسول الله صلی الله علیه و آله ته اورسيد و نو هغوی په مسجد کښې ناست و او د هغوی په مخ مبارک باندې د غم آثار ښکاريدل، علامه طيبي رحمته الله عليه ليکي يعنى رسول الله صلی الله علیه و آله خپل غم پټ کړې و نو فطري طور چه د هغې کوم اثر په مخ باندې ښکاره کيدل پکار و و هغه ښکاره شو، علماء کرامو ليکلې دي چه په دې کښې د اعتدال تعليم دي چه په ټولو احوالو کښې اعتدال مسلک مستقيم دي، لهذا که چاته يو عظيم مصيبت اورسيږي نو هغه له پکار دي چه نه خو د غم په اظهار کښې افراط او کري خان وهل او گريوان شلول او چغې وهل وغيره چه ناجائز او ممنوع دي، او نه دي په دې باره کښې تفريط کوي چه بې پرواهي کوي او بهادري ښائي چه علامت دي د زړه د سخت والي، بلکه د رسول الله صلی الله علیه و آله اتباع کول پکار دي، او دې وخت کښې د رسول الله صلی الله علیه و آله د جلوس في المسجد په باره کښې ليکلې شوې دي چه د هغوی په مسجد کښې دا ناسته د معمول او عادت شريفه مطابق وه، يعنى په دې نيت باندې نه وه چه خلق دي هغوی ته د تعزيت دپاره راشي، لهذا دا د هغوی مجلس مجلس د ماتم نه وو.

۱: صحيح البخاري للجائز ۴۰ (۱۲۹۹)، ۴۵ (۱۳۰۵)، والمغازي ۴۴ (۴۲۶۳)، صحيح مسلم للجائز ۱۰ (۹۳۵)، سنن النسائي للجائز ۱۴ (۱۸۴۸)، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۳۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۷۷، ۵۹/۶) (صحيح)

وراندې په روایت کښې دې « و ذکر القصة » دا قصه تفصیلا په بخاری ۱۷۳/۱ کښې ذکر شوې ده « فی باب من جلس عند المصیبة يعرف فیہ الحزن » (بذل) چه د هغې مضمون دا دې عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی چه کله د دې درې وارو حضراتو د شهادت په خبر باندي ما رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم په مجلس کښې په ناسته باندي اولیدو او د هغوی د مخ مبارک نه د غم آثار ښکاره کیدل او ما د خپلې حجرې د دننه نه د دروازي په چاؤدی کښې کتل نو هغه وخت رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته یو سرې راغلو چه د جعفر رضی اللہ عنہ د کور خلق چغې وهی، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغه ته او فرمائیل چه لار شه او هغوی منع کړه، هغه لارو او بیا راغلو چه هغوی خو نه منی، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل لار شه او هغوی منع کړه هغه لارو او بیا راغلو او وې وئیل یا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی خو زموږ نه اوری، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل لار شه بیا د هغوی په خلو کښې خاورې واچوه..... عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی چه ما هغه راطلب کړو چه هلاک شې نه ته پخپله هغه کار کولې شې، کوم چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم فرمائی او نه ته رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم پریرېدې، مطلب دا وو چه تاله داسې عرض کول پکار وو چه دا زما د وس خبره نه ده زه دا نه شم کولې لهذا تاسو بل څوک اولیرېئ (والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والنسائی، قاله المنذری)

باب فی التّعزیه

دمری وارثانو ته د تعزیت کولویان

تعزیه دعزاء نه مشتق دې چه د هغې معنی صبر ده. لهذا د تعزیه معنی شوه چا لره په عزاء یعنی صبر باندي تیارول او د هغې تلقین کول، صبر ښودل، یعنی هغه ته د اجر او ثواب دعا کول چه د هغه په دې باندي تسلی اوشی او صبر شی.

[۳۱۲۳] () حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبِ الْهَمْدَانِيِّ، حَدَّثَنَا الْمُقْضَلُ، عَنْ رَيْبَعَةَ بِنِ سَيْفِ الْمَعَاظِرِيِّ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبَلِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِ، قَالَ: قَبِرْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْنَى مَيْتًا، فَلَمَّا قَرَعْنَا، انْصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنْصَرَفْنَا مَعَهُ، فَلَمَّا حَادَى بِأَبِهِ وَقَفَ، فَأَذَانُ بِنِ بِأَمْرٍ مُقْبِلَةٍ، قَالَ: أَطْنَةُ عَرَفِيًّا، فَلَمَّا ذَهَبَتْ، إِذَا هِيَ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَامُ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا أَخْرَجَكَ يَا فَاطِمَةُ مِنْ بَيْتِكَ؟" فَقَالَتْ: أَتَيْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَهْلَ هَذَا الْبَيْتِ، فَرَحِمْتُ إِلَيْهِمْ مَيْتَهُمْ، أَوْعَزَيْتُهُمْ بِهِ، فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَلَعَلَّكَ بَلَّغْتِ مَعَهُمُ الْكُدَى، قَالَتْ: مَعَاذَ اللَّهِ، وَقَدْ سَمِعْتِكَ تَذَكُرُ فِيهَا مَا تَذَكُرُ، قَالَ: لَوْ بَلَّغْتِ مَعَهُمُ الْكُدَى "فَذَكَرْتُ شِدِيدًا فِي ذَلِكَ، فَسَأَلْتُ رَيْبَعَةَ عَنِ الْكُدَى، فَقَالَ: الْقَبُورُ فِيمَا أَحْسَبُ.

د عمرو بن العاص خانه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی اللہ علیہ وسلم سره یومرې دفن کړو کله چه مونږ د دفن کولو نه فارغ شوو نو نبی صلی اللہ علیہ وسلم واپس روان شو او مونږ هم ورسره وو کله چه دمري دکور دروازي ته اورسیدو نو اودریدو مخامخ یوه ښځه راروانه وه راوی وائی زما کمان دې چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم پیژندلي و کله چه هغه لاره نو معلومه شوه چه هغه فاطمه رضی اللہ عنہا وه نبی صلی اللہ علیہ وسلم ترې تپوس او کړو چه ته دخپل کور نه په څه وجه وتلي بي؟ هغې او وئیل ای د الله رسوله زه دمري

(۱) سنن النسائی، الجناز ۲۷ (۱۸۸۱)، (تحفة الأشراف: ۸۸۵۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۱۶۹، ۲۲۳) (ضعیف)

کورته راغلي ومه ددې دپاره چه دصبر تلقين ورته او کرم اودوی ته تعزيت او کرم نبی ﷺ او فرمائيل شاید چه ته دهغوی سره مقبري ته هم تلي وي هغې عرض او کړو په الله پناه غواړم ماخوپه دې باره کښې ستانه اوریدلی دی چه ښخې دي مقبروته دتللونه منع کړي وي نبی ﷺ او فرمائيل که چرې ته ددوی سره تلي وې، راوي وائی چه یوه سخته خبره ئې ورته او کړه.

« عن عبدالله بن عمرو بن العاص رضي الله عنه قال قبرنا مع رسول الله ﷺ يعني ميتا فلما فرغنا الحديث »

د دې حديث مضمون په باب في صفايا رسول الله ﷺ د رومبي حديث په ضمن کښې تير شوې دې هغه دې او کتلې شی دوباره دلته د ليکلو ضرورت نشته.

« قال لو بلغت معهم الكدى فذكر تشديدا في ذلك »

د امام ابوداؤد يو خاص عادت شريفه په سلوک او ادب کښې :

د امام ابوداؤد په دې عادت شريفه باندي مونږ په رومبي خاني کښې ليکل کړی دی، دلته علامه شيخ محمد عوامه حفظه الله په خپل تعليق کښې ليکی : وفي الكناية عن بقية الحديث ادب من الامام ابی داؤد رحمه الله تعالى مع يضة النبي ﷺ ورضى الله تعالى عنها ينبغي الاقتداء به، قال السخاوي رحمته الله في اواخر في بذل المجهود في ختم سنن ابی داؤد وهو يعدد مناقب الامام ابی داؤد : ومن وفور ادبه انه لما اورد الحديث في رؤية النبي ﷺ ابنته فاطمة رضي الله عنها في الطريق وقالت له انها كانت تعزى اناسا في ميت لهم، لم يذكر الكلام الاخير بل اشار اليه بقوله فذكر تشديدا في ذلك... وهذا يذكرنا بادب ائمة آخرين في حديث سرقة المرأة المخزومية وقوله ﷺ لو ان فاطمة بنت محمد ﷺ فقد رواه ابن ماجه بسنده قال محمد بن رمح سمعت الليث بن سعد يقول قد اعادها الله ان تسرق وكل مسلم ينبغي له ان يقول هذا، او د دې نه پس حافظ په فتح الباري کښې ليکلي دي چه امام شافعي رحمته الله هم چه کله دا حديث د سرقه ذکر کړو نو هغوی هم داسې او فرمائيل : فذكر عضوا شريفا من امرة شريفة آه

د رسول الله ﷺ د مور پلار اخروي حکم :

د رسول الله ﷺ د مور پلار د ايمان او عدم ايمان په باره کښې د علماء کرامو اختلاف حضرت سهارنپوری په بذل کښې په دې خاني کښې او په را روان باب « باب في زيارة القبور » کښې اتی رسول الله ﷺ قبر امه فبکی وایکی من حوله د لاندې او حضرت شيخ په حاشیه د بذل کښې (۱) د ډيرو کتابونو حوالي او مختصر مختصر عبارتونه ليکلي دي او د اهل فتره په باره کښې ئې د علماء کرامو اختلاف ذکر کړې دې چه څوک کتل غواړی هغې ته دې رجوع او کړی، او دا احقر په خپل سبق کښې دا وائی چه په دې مسئله کښې تحقيق

(۱) د علامه سيوطی، وشي الديباج علي صحيح مسلم بن الحجاج نه نقل کړی سيوطی فرمائی چه ما په دې باره کښې اووه رسالي اوليکلي او هغوی د حديث الباب استافتت ربي تعالي ان استغفر لها فلم ياذن لي باندي كلام کولو سره فرمائيلي دي چه دا د مسلم په بعض نسخو کښې موجود نه دي، او که ثابت شی نو منسوخ دي الی آخر ما فی الحاشية، او په دې باره کښې د امام برزنجی هم ډيره مشهوره رساله « سداد الدين في اثبات النجاة والدرجات للوالدين » دې هغه کتل پکار دی، خاص هم په دې موضوع باندي مفصل او مدلل تصنيف دي

که هر څه وی خو رښتینې خبره دا ده چه د رسول الله ﷺ د یو امتی خواهش پکار دې چه په څه طریقه د هغوی ایمان او اسلام ثابت وی نو غوره ده، یعنی چه کله د هغوی ذکر یا خیال راشی د رسول الله ﷺ د مور پلار په باره کښې تفصیل په شپږم جلد کښې را روان دې.

بَابُ الصَّبْرِ عِنْدَ الصَّدْمَةِ

د مصیبت په وخت کښې د صبر کولو د فضیلت بیان

[۳۱۲۴] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: أَتَى نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى امْرَأَةٍ تَبْكِي عَلَى صَبِيٍّ لَهَا، فَقَالَ لَهَا "اتَّقِي اللَّهَ، وَاصْبِرِي، فَقَالَتْ: وَمَا تَبَالِي أَنْتَ بِمُصِيبَتِي؟ فَقِيلَ لَهَا: هَذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَتْهُ، فَلَمْ تَجِدْ عَلَى بَابِهِ بَوَائِينَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَمْ أَعْرِفْكَ. فَقَالَ: إِنَّمَا الصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْأُولَى، أَوْ عِنْدَ أَوَّلِ صَدْمَةٍ."

دانس نه روایت دې چه نبی ﷺ د یوې ښځې خواته ورغې د چاچه بچې مروو او جړل ئې په تیز آواز سره نبی ﷺ ورته او فرمائیل د الله نه ویریره په چغومه جاړه، او صبر کوه نودې ښځې په جواب کښې او وئیل مصیبت خو په ماراغلې دې په تاخوندې په دې وخت کښې دې ښځې ته او ویلې شول دا نبی ﷺ دې کله چه دا خبره شوه نودنې ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه اود نبی ﷺ په دروازه کښې یو څو کیداران اونه موندل او عرض ئې او کړوای د الله رسوله مامعاف کړه ما ته نه وی پیژندلې، بیانې ﷺ دې ته او فرمائیل صبر خودغم په شروع کښې وي او که داسې ئې او فرمائیل صبر په اول غم کښې وي.

(عن انس رضي الله عنه انه قال اتى نبي الله ﷺ على امرأة تبكي الخ)

یعنی رسول الله ﷺ په یو زنانه باندې تیر شو چه په خپل بچی باندې ئې ژړل، رسول الله ﷺ هغې ته د صبر او تقوی تلقین او کړو (هغې چونکې رسول الله ﷺ د غم د شدت د وجې نه نه وو پیژندلې په دې وجه، هغې اولته جواب ورکړو چه ستا زما په مصیبت باندې څه پرواه ده، په دې باندې چا روستو هغې ته او وې چه دا خو رسول الله ﷺ وو نو هغه فوراً د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضره شوه، راوی وائی چه هغې د رسول الله ﷺ په دروازه باندې دربان او چوکیداران بیا نه موندل، یعنی څنگه چه د دنیوی بادشاهانو په دربارونو باندې وی نو دې زنانه رسول الله ﷺ ته عرض او کړو چه یا رسول الله ﷺ ما تاسو پیژندلې نه وی... رسول الله ﷺ د دې خبرې خو هیڅ جواب ورنکړو خو د ئې او فرمائیل: ﴿ انما الصبر عند الصدمة الاولى ﴾ چه صبر خو هم هغه دې کوم چه د مصیبت په شروع کښې حاصل شی (روستو خو هر څوک صبر کوی)

والحديث اخرجه البخارى ومسلم والترمذى والنسائى، قاله المنذرى

١: صحيح البخاري للجائز ٣١ (١٢٨٣)، ٤٢ (١٣٠٢)، الأحكام ١١ (٧١٥٤)، صحيح مسلم للجائز ٨ (٩٢٦)، سنن النسائي للجائز ٢٢ (١٨٧٠)، سنن الترمذي/الجائز ١٣ (٩٨٨)، سنن ابن ماجه للجائز ٥٥ (١٥٩٦)، (تحفة الأشراف: ٤٣٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٣٠٣، ١٤٣، ٢١٧) (صحيح)

باب فِي الْبُكَاءِ عَلَى الْمَيِّتِ

په مړي پسې د خپلو وارثانو د جړلو بيان

[۳۱۲۵] حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّلَبِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَاصِمِ الْأَحْوَلِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عُمَانَ، عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ: أَنَّ ابْنَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُرْسِلَتْ إِلَيْهِ، وَأَنَا مَعَهُ، وَسَعْدٌ، وَأَحْسَبُ أَيَّامًا أَنْ ابْنِي أَوْ بِنْتِي قَدْ حَضَرَ، فَأَشْهَدُنَا، فَأَرْسَلَ يَقْرَأُ السَّلَامَ، فَقَالَ: قُلْ "اللَّهُ مَا أَخَذَ وَمَا أَعْطَى، وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ إِلَى أَجَلٍ، فَأَرْسَلْتُ تُقِيمُ عَلَيْهِ، فَأَتَاهَا، فَوَضِعَ الصَّبِيَّ فِي حِجْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَنَفْسُهُ تَقَعُّمٌ، فَقَاضَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ: مَا هَذَا؟ قَالَ: إِنَّمَا رَحْمَةٌ وَضَعَهَا اللَّهُ فِي قُلُوبِ مَنْ يَشَاءُ، وَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللَّهُ مِنَ عِبَادِهِ الرَّحْمَاءَ."

داسامه بن زيد رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د نبی صلی الله علیه و آله لور مبارکي په نبی صلی الله علیه و آله پسې خوک راولیږل او په دې وخت کښې زه او سعد د نبی صلی الله علیه و آله سېره وم اور شاید ابی هم ورسره وو سوال جواب داسې وو چه زما دلور یا خوی ځنګدن شروع دې مونږ ته راشه نبی صلی الله علیه و آله ورته سلام اولیږلو او وئې فرمائیل داسې او وایه خاص د الله تعالی دي هغه څه، څه چه ئې واخستل او هریوشې دهغه د طرف نه تریوی نیټي پورې وري زینب نبی صلی الله علیه و آله دوباره او غوښتو او په قسم ئې وغوښتو نونبې صلی الله علیه و آله ورته ورغې او ماشوم ئې ورته په غیر کښې واچوو او د ماشوم ساه روانه شوي وه د نبی صلی الله علیه و آله سترګې د اوبښکونه ډکې شوي، سعد ورته او وئیل دا څه دي؟ نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا د الله رحمت دې چه اچولې دي الله تعالی په زړونو دهغه چا کښې چه خوک ئې خوښ وي او یقینا الله تعالی پخپلو بندګانو کښې په رحم کرنکو باندې رحم کوي.

﴿ عن أسامة بن زيد رضي الله عنه أن ابنة رسول الله ﷺ أرسلت إليه وأنا معه وسعد احسب ايما الخ ﴾

مضمون د حديث:

سیدنا اسامه بن زيد رضي الله عنه فرمائی چه د رسول الله صلی الله علیه و آله لور (زینب) د هغوی په خدمت کښې یو قاصد د راغوښتلو دپاره راولیږلو، او هغه وخت د هغوی سره زه او سعد بن عباده او ابی بن کعب رضي الله عنه په مجلس کښې ناست وو، قاصد د هغوی پیغام راوړلو چه زما د خوی یا د لور د راوی شک دې آخری وخت دې زمونږ خواله تشریف راوړئ. رسول الله صلی الله علیه و آله قاصد ته او فرمائیل: لا رښه او زما سلام ورته او کړه او دا ورته وایه ﴿ الله ما اخذ وله ما اعطى وكل شیء عنده الى اجل ﴾ قاصد لاړو او د هغوی خبره ئې اورسوله هغوی دوباره قاصد د رسول الله صلی الله علیه و آله په خدمت کښې راولیږلو په دې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله هلته تشریف یووړو، هغه ماشوم د رسول الله صلی الله علیه و آله په غیر کښې کیخودلې شو په داسې حال کښې چه د هغه ماشوم روح په وتلو باندې وو، د رسول الله صلی الله علیه و آله د سترګو نه اوبښکې روانې شوې، په دې باندې سعد رضي الله عنه رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو چه دا زړا ځنګه ده؟ رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل دا اوبښکې رحمت دي د الله پاک د طرف نه کومې چه الله پاک په خپلو بندګانو کښې چه د چا په زړه

۱: صحيح البخاري/الجنائز ۳۲ (۱۲۸۴)، والمرضي ۹ (۵۶۵۵)، والقدر ۴ (۶۶۰۲)، والأيمان والندور ۹ (۶۶۵۵)، والتوحيد ۲ (۷۳۷۷)، ۲۵ (۷۴۴۸)، صحيح مسلم/الجنائز ۶ (۹۲۳)، سنن النسائي للكبري الجنائز ۲۲ (۱۹۶۹)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۵۳ (۱۵۸۸)، (تحفة الأشراف: ۹۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۵، ۲/۶، ۲/۷) (صحيح)

کښې غواړي اچوي او رسول الله ﷺ او فرماييل چه الله پاک هم په خپلو بندگانو کښې په هغه چا باندې رحم کوي چه رحم دل وي، سعد رضي الله عنه دا گنډله چه کيدې شي دا صرف په اوبښکو سره ژړل به هم منع وي په دې باندې رسول الله ﷺ هغه ته وضاحت او کړوچه دا ژړا په منع کړې شوې ژړا کښې داخله نه ده بلکه دا خو غوره ده د زړه د رحم علامت دې، علماء کرامو ليکلي دي چه کمال خو په اعطاء کل ذی حق حقه کښې دې، او هغه چه د بعض صوفيه او زهاد نه نقل دی چه کله هغوی ته د هغه د يو خپلوان د مرگ خبر راغلو نو هغه په خدا شو د تقدير په فيصلې باندې د رضا کيدو د وجې نه، نو دا د کمال خبره نه ده.

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۱۲۶] (۱) حَدَّثَنَا شَيْبَانُ بْنُ فَرُّوخَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتِ الْبُنَاتِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَلِدَلِي اللَّيْلَةَ غَلَامًا، فَسَمَّيْتُهُ بِأَسْمِ أَبِي إِبْرَاهِيمَ، فَذَكَرَ الْحَدِيثَ، قَالَ أَنَسٌ: لَقَدْ رَأَيْتُهُ يَكِيدُ بِنَفْسِهِ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَمَعْتُ عَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: تَذَمُّعُ الْعَيْنِ، وَيَحْزَنُ الْقَلْبُ، وَلَا تَقُولُ إِلَّا مَا يَرْضَى رَبُّنَا، إِنَّا بَكَ يَا إِبْرَاهِيمُ لَمَحْزُونُونَ".

دانس بن مالک رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی نن شپه زمونږ یو ماشوم پیداشو او ماد هغه دپاره نوم دخپل نیکه ابراهیم علیه السلام نوم کیخودو او حدیث ئې تراخړه بیان کړو انسه او وئیل چه مادا ماشوم لیدلې وو چه دنی علیه السلام په مخکښې ئې روح ختلو دده په لیدلو سره دنی علیه السلام دسترگونه اوبښکي روانې شوي نبی صلی الله علیه و آله او فرمائییل دسترگونه اوبښکي خي اوزره خفه وي او مونږ نه وایو مگر هغه خبره کومه چه زمونږ دپروردگار خوښه وي یعنی انالله وانا الیه راجعون، یقینامون ای ابراهیم یقینا په تا پسې خفه یو.

(عن انس بن مالک رضي الله عنه قال قال رسول الله ﷺ ولد لي الليلة غلام فسميته باسم ابي

ابراهيم فذكر الحديث)

د حدیث مضمون دا دې : انس رضي الله عنه روایت کوي چه رسول الله ﷺ او فرمائییل چه نن ما کره یو ماشوم پیدا شوې دې نو ما د هغه نوم د خپل پلار (نیکه) ابراهیم علیه السلام په نوم باندې کیخودلې دې، وړاندې به په دې روایت کښې بل څه وی کوم چه مصنف رضي الله عنه اختصارا حذف کړې دی، بیا وړاندې په حدیث کښې دی چه ما د رسول الله ﷺ دا خوئې په ساه وتلو باندې لیدلې دې په داسې حال کښې چه هغه د رسول الله ﷺ مخې ته وو، د رسول الله ﷺ د سترگو مبارکو نه اوبښکې روانې شوې او هغوی ارشاد او فرمائییلو چه سترگې اوبښکې بهیوی او زړه غمگین دې او مونږ به په ژبه باندې هم هغه وایو څه چه الله پاک خوښوی (انا بک یا ابراهیم لمحزونون) چه ای ابراهیم مونږ ستا په تلو باندې غمژن یو.

یرضی یا یرضی، په رومی صورت کښې ربنا د فاعل کیدو په وجه باندې او په دویم صورت کښې ربنا بالنصب، د ابراهیم رضي الله عنه ولادت او وفات او د عمر موده په کتاب

۱. صحیح البخاری للجناز ۴۳ (۱۳۰۳)، صحیح مسلم للفضائل ۱۵ (۲۳۱۵)، (تحفة الأشراف: ۴۰۵)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱۹۴/۳) (صحیح)

الكسوف كسبي بيان كړې شوې ده او وړاندې دلته په «باب في الصلوة على الطفل» په متن كښې هم را روانه ده.

والحديث اخرجه مسلم، واخرجه البخاري تعليقا، قاله المنذري

باب في النوح

د مړي صفتونه يادول او په چغو چغو د جړ لوي بيان

[۳۱۲۷] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ حَفْصَةَ، عَنْ أَمْرِ عَطِيَّةَ، قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَانَا عَنِ النَّيَاحَةِ".

ام عطية رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چې نبی صلی الله علیه و آله دنياحه په مړي باندي په چغه ج ه لونه منع فرمائیلی ده.

[۳۱۲۸] (۲) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَسَنِ بْنِ عَطِيَّةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: "لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاحِيَةَ وَالْمُسْتَمِعَةَ".

د ابوسعید خدری رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې لعنت وئیلی دې د الله رسول ا په ویرگره ښځه باندي او په هغه ښځه چې ویر ته غوږ ږدي.

نوح یا نياحه د مړي صفتونه کولو سره ژړل یا په چغو چغو باندي ژړل، دواړه تفسیرونه کړې شوې دي او دواړه ممنوع دي بغير د صفتونو د ذکر کولو نه ژړا ثابت ده.

﴿ لعن رسول الله ﷺ الناحية والمستمعة ﴾

یعنی په نوحه کونکې زنانه او د هغې په اوریدونکې دواړو باندي رسول الله صلی الله علیه و آله لعنت فرمائیلی دي، نائحه کښې که تاء د تانیث دپاره وی نو د زنانه تخصیص د دې دپاره دې چې زیات تر دا نوحه په زنانو کښې موندلې شی او کیدې شی چې په دې کښې تاء د مبالغې دپاره وی په دې صورت کښې به اشاره وی دې طرف ته چې کوم انسان په کثرت سره دا کوی هم هغه د لعنت مستحق دي، او د چا نه چې اتفاقیه دا صادره شوې وی هغه په دې کښې داخل نه دي.

[۳۱۲۹] (۳) حَدَّثَنَا هَنَادُ بْنُ السَّرِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ، وَأَبِي مُعَاوِيَةَ، الْمَعْنَى عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ الْمَيِّتَ لَيُعَذَّبُ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ، فَذَكَرَ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ، فَقَالَتْ: وَهَلْ تُعَذِّبُ ابْنَ عُمَرَ؟ إِمَّا مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى قَبْرِ، فَقَالَ: إِنَّ صَاحِبَ هَذَا الْبُعْدَبِ، وَأَهْلَهُ يَبْكُونَ عَلَيْهِ". ثُمَّ قُرَأَتْ: وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى سُوْرَةُ الْأَنْعَامِ آيَةٌ ٢٣. قَالَ عَنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ: عَلَى قَبْرِ يَهُودِيٍّ.

د عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې رسول الله صلی الله علیه و آله فرمائیلی دي یقینا مړي ته عذاب

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۲۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للجنائز ۴۵ (۱۳۰۶)، والأحكام ۴۹ (۷۲۱۵)، صحيح مسلم للجنائز ۱۰ (۹۳۶)، سنن النسائي للبيعة ۱۸ (۴۱۵۸)، مسند احمد (۴۰۷/۱، ۴۰۸) (صحيح)

(۲): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۴۱۹۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۶۵/۳) (ضعيف الإسناد)

(۳): صحيح مسلم للجنائز ۹ (۹۳۱)، سنن النسائي للجنائز ۱۵ (۱۸۵۶)، (تحفة الأشراف: ۷۳۲۴، ۱۷۰۶۹، ۱۷۲۲۶)، وقد أخرجه: صحيح البخاري للمغازي ۸ (۳۹۷۸)، مسند احمد (۳۸۷/۲، ۳۹۶/۱، ۵۷، ۹۵، ۲۰۹) (صحيح)

ورکولې شی په جراداهل دهغه په ده باندې، راوي وائی دا حدیث عائشې رضی اللہ تعالیٰ عنہا ته ذکر شوهني او وئیل ابن عمر سهوه شوي دي نبي صلی اللہ علیہ وسلم په یوقبر باندې تیریدو وبې وئیل دي قبر والا ته دده داهل والا په وجه باندې عذاب ورکولې شی چه هغوی په ده باندې جاري اویا ئې دا ایت شریف ولوستلو: «ولا تزر وازرة وزر اخرى» راوی وائی د معاویه په روایت کښې د یهودي د قبر ذکر دي،

﴿ عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال قال رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ان الميت ليعذب ببكاء اهله عليه فذكر ذلك لعائشة فقالت وهل، یعنی ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما انما مر النبي صلی اللہ علیہ وسلم علی قبر الخ ﴾

د ﴿المیت یعذب ببكاء اهله علیه﴾ حدیث تحقیق او توجیه

یو ځل عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما دا حدیث نقل کړو چه مړی ته د هغه د کور د خلقو د ژړا په وجه باندې عذاب ورکولې شی، د عائشې رضی اللہ تعالیٰ عنہا مخکښې چه کله د دې حدیث ذکر راغلو نو هغې اوفرمائیل چه د ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما وهم پیدا شوي دي، او په نقل کولو کښې ئې غلطی کړې ده، او د صحیحینو په روایت کښې دي ﴿اما انه لم یکذب ولكنه نسی او اخطاء﴾ او بیا هغې د خپل طرف نه صحیح حدیث بیان کړو چه اصل حدیث خودا دي چه رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یو ځل د یو یهودي په قبر باندې تیر شو د هغه په باره کښې رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اوفرمائیل چه هغه د قبر والا ته عذاب ورکولې شی یعنی د هغه د کفر او فسق د وجې نه، او حال دا چه د هغه د کور خلق په هغه باندې ژاړی یعنی بیا دي د دې قابل چرته دي چه په هغه دي ژړا او کړې شی، بیا د دې نه پس عائشې رضی اللہ تعالیٰ عنہا د ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما د حدیث د تردید دپاره دا ایت کریمه تلاوت اوفرمائیلو ﴿ولا تزر وازرة وزر اخرى﴾ امام خطابی رحمته اللہ علیہ فرمائی: کیدې شی چه خبره هم دغه شان وی څنگه چه عائشه رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرمائی چه دا حدیث د یو یهودي په باره کښې رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلې وو. ﴿والخبر المفسر اولی من المجمل﴾ او کیدې شی چه د ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما روایت هم صحیح وی او هغه د ایت کریمه خلاف نه دي ځکه چه د جاهلیت والا خلقو به د ژړا او نوحه کولو وصیت کولو او په دې صورت کښې چه به کوم عذاب وی هغه به د وصیت په وجه باندې وی کوم چه هغه په ژوند باندې کړې وو، او علامه سندهی په فتح الودود کښې لیکي چه دا حدیث په مختلفو طرقو او د ډیرو صحابه کرامو رضی اللہ عنہم نه نقل دي، او د دې معنی هم صحیح او ثابت ده د هغه توجیه نه پس کومه چه پورته ذکر شوه لهذا په دې حدیث باندې د انکار هیڅ وجه نشته، هم دا خبره ملا علی قاری رحمته اللہ علیہ هم لیکلې ده چه دا حدیث په مختلفو الفاظو سره او په ډیرو روایتونو د ابن عمر او غیر ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نه ثابت دي، لهذا د عائشې رضی اللہ تعالیٰ عنہا اعتراض د خپل اجتهاد په اعتبار سره دي امام نووي رحمته اللہ علیہ فرمائی چه د دې حدیث تاویل جمهورو هم دا کړې دي چه دا په وصیت باندې محمول دي چه داسې انسان ته عذاب ملاویږي د هغه د وصیت کولو د وجې نه او په کوم مړی باندې چه د هغه اهل بغیر د هغه د وصیت نه ژړا او کړی (او بغیر د هغه د رضا نه) نو هغه نه په عذاب کیږي ﴿لقوله تعالی ولا تزر وازرة وزر اخرى آه﴾ د دې حدیث نور هم ډیر توجیها ت کړې شوي دي. حضرت شیخ په اوجز المسالک کښې لیکلې دي چه علامه عینی رحمته اللہ علیہ په دې کښې د علماء کرامو اته

اقوال ليكلې دې، او سيوطی په شرح الصدور كښې نهه اقول، او حضرت د احاديثو د نورو شرحو نه د دې نه علاوه هم ليكلې دې چه د هغې مجموعه خوارلس اقولو ته رسيږي مونږ د هغې نه دلته خو ليكوا

۱: ﴿الميت يعذب بما نبح عليه﴾ كښې باء سببیه نه ده بلکه د حال دپاره ده، ای يعذب فی حال بکاء اهله عليه.... مطلب دا چه مړی ته عذاب ورکولې شی «د څه گناه په وجه باندي، په داسې حال كښې چه د هغه د کور خلق په هغه باندي ژړا کونکې وی یعنی د مړی خو په قبر كښې حال دا دې چه د هغه د گناه په وجه باندي هغه ته سزا ملاويږي او دلته دا کيږي چه د هغه د فراق د وجې نه د هغه د کور خلق ژاړی او دا مطلب نه دې چه د ژړا د وجې نه هغه ته عذاب ملاويږي.

۲: دا عذاب ورکول خاص دی د کافر سره مسلمان په دې كښې داخل نه دې.

۳: دا د هغه مړی په حق كښې ده چه د هغه په معمول او د ژوند په طریقو كښې نوحه وی امام بخاری رحمته الله علیه هم دا توجیه اختیار فرمائيږي ده لکه چه د هغوی د تبویب نه معلوميږي، باب قول النبي ﷺ يعذب الميت بکاء اهله اذا كان النوح من سته.

۴: دا معمول دې په هغه چا باندي چه هغه د نوحې وصیت کولو سره مړ شوې وی، جمهورو هم دا توجیه اختیار کړې ده.

۵: دا د هغه چا په باره كښې ده چا چه د ترک نوحه وصیت نه وی کړې، د دې قول په بناء باندي به د ترک نوحه وصیت کول واجب وی، د داؤد ظاهري رحمته الله علیه او یو جماعت رأيي هم دا ده.

۶: مطلب دا دې د حدیث چه مړی ته د هغه صفاتو او احوالو د وجې نه عذاب ورکولې شی په کومو صفاتو او احوالو بیانولو سره چه هغوی ژاړي، ځکه چه هغه شرعا مذموم او ناجائز وی مثلا هغوی به دا وئیل د نوحه په وخت یا مرمل النساء (۱) یا متیم الاولاد، یا مخرب الدور، یعنی د ژړا کونکو زنانو په کلام كښې چه د کومو صفتونو طرف ته اشاره ده کوم چه په دې مړی كښې موجود وو اصل عذاب خو ورته د هغه صفتونو د وجې نه ملاويږي، او دا ژړا کونکې بې عقله زنانه هغه مذموم صفات په فخر سره بیانوي، یعنی د مړی هغه سیادت او بهادری او مالداري کومه چه به هغه په ناحقه ځایونو كښې استعمالوله او د کومو په وجه باندي چه هغه ته عذاب ملاويږي دوی د هم هغه صفتونو په بیانولو باندي ژاړي. ورجح هذا القول الاسماعيلي وهو اختيار ابن حزم وطائفة.

۷: د تعذیب نه مراد عذاب اخروی نه دې بلکه د ملائکو توبيخ او رتنه ده. مړی چه به په کومو صفتونو سره یادولې شو مثلا راځي په روایت كښې چه کله نائحه وائی «واعضداه واناصراه واكاسياه» نو ملائک دې مړی ته موکه ورکوي او هغه ته وئیلې شی انت عضدها، انت ناصرها، انت كاسيها..... یعنی وایه کنه ته رښتیا داسې ئې او هم داسې ئې؟

۸: د مړی نه مراد محتضر دې مجازا، او د تعذیب نه مراد تعذیب فی الدنيا یعنی هغه

۱: بنحو ته ارملة یعنی کنده جوړونکې، ماشومانو لره يتيمانان جوړونکې، کورونه وړانونکې، یعنی چه دهغې په مرگ باندي دا مصيبتونه راځي.

ته د کور د خلقو د ژړا د وجې نه تکلیف رسیږي، په دې ټولو کښې زیات معروف څلورم جواب دې هم دا اختیار کړې شوې دې په درمختار او شرح اقناع کښ، او لیکلې ئې دی چه دا څیز په اهل جاهلیت کښې معروف وو چه هغوی به ډیر ځل د مرگ په وخت د ژړا وصیت کولو، پس طرفه بن العبد وائی.

اذا مت فالغنی بما انا اهله :: وشقی علی الجیب یا ابنة معبد^۱

په دې سلسله کښې د ائمه اربعه مذاهب د هغوی د فروعو د کتابونو نه په اوجز کښې نقل کړې شوې دی، مجموعی طور سره په ټولو مذاهبو کې دا ده چه په نفس بکاء کښې هیڅ باک نشته نه د مرگ نه، ځکه کښې او نه د مرگ نه روستو. خو ندبه حرام ده یعنی د مړی صفتونه بیانولو سره ژړل په آواز سره د زیادت د الف او د هاء نه لکه واسیاده واخلیلا او لیکلې دی چه نباحه حرام ده یعنی چغې وهل، او ژړا فریاد او واویلا کول، والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى.

[۳۱۳۰] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي أُوَيْسٍ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، فَذَهَبَتْ امْرَأَتُهُ لَتَبِكِي، أَوْ تَهْمُرِيهِ، فَقَالَ لَهَا أَبُو مُوسَى: أَمَا سَمِعْتِ مَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: بَلَى، قَالَ: فَسَكَتَتْ، فَلَمَّا مَاتَ أَبُو مُوسَى، قَالَ يَزِيدُ: لَقِيتُ الْمَرْأَةَ، فَقُلْتُ لَهَا: مَا قَوْلَ أَبِي مُوسَى لَكَ؟ أَمَا سَمِعْتِ قَوْلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَيْسَ مِنَّا مَنْ حَلَقَ، وَمَنْ سَلَقَ، وَمَنْ خَرَقَ".

د یزید بن اوس نه روایت دې فرمائی چه زه ابوموسی نه ته ورغلم او هغه مریض وو نو بنځه ئې دجرلودپاره پاڅیده او یادخفگان په وجه، ابوموسی ورته او وئیل ایاتانه دی اوریدلې هغه چه نبی ﷺ وئیلې دی هغې او وئیل ولي نه، راوي وائی دابوموسی بنځه خاموش شوه هرکله چه ابوموسی وفات شو یزید وائی زه ددغې بنځې سره ملاو شوم ماورته او وئیل ابوموسی تاته څه یادول چه دنبی ﷺ نه دې نه دی اوریدلې؟ یوه شیبه خاموش شوه بیا ئې او وئیل رسول الله ﷺ فرمائیلی دی هغه څوک زمونږ دا مت نه نه دې څوک چه جامې شلوي (دغم په وخت کښې) یاسر و خروي او مخ وهي

« عن امرأة من الممبايعات قالت كان فيما اخذ علينا رسول الله ﷺ في المعروف الذي اخذ علينا ان لا نعصيه فيه وان لا نخمش وجهها ولا ندعو ويلا ولا نشق جيبها ولا ننشر شعرا »

[۳۱۳۱] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ عَامِلٌ لِعُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَلَى الرَّيْدِ، حَدَّثَنِي أَبِي إِسِيدُ بْنُ أَبِي إِسِيدٍ، عَنِ امْرَأَةٍ مِنَ الْمُبَايَعَاتِ، قَالَتْ: "كَانَ فِيمَا أَخَذَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَعْرُوفِ الَّذِي أَخَذَ عَلَيْنَا، أَنْ لَا نَعْصِيَهُ فِيهِ: أَنْ لَا نَخْمَشَ وَجْهًا، وَلَا نَدْعُو وَيْلًا، وَلَا نَشَقَّ جَيْبًا، وَأَنْ لَا نَنْشُرَ شَعْرًا".

^۱ شاعر خپلې بنځې ته خطاب کولو سره وائی او وصیت کوی چه کله زه مړ شم نو زما د مرگ خبر داسې خور کړه د کوم چه زه اهل یم، او زما په مرگ باندي په ژړا ژړا کړیوان او شلوه،

^۲: سنن النسائي للجنائز ۲۰ (۱۸۶۶)، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۳۴)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للإيمان ۴۴ (۱۰۴)، سنن ابن ماجه للجنائز ۵۲ (۱۵۸۶)، مسند احمد (۳۹۷۴، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۱۱، ۴۱۶) (صحيح)

^۳: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۶۶) (صحيح)

ابو اسید په هغه ښځو کښې د یوې ښځې نه روایت کوی چاچه د نبی ﷺ سره بیعت کړې و و چه ویلي ئې و و نبی ﷺ چه زمونږ نه بیعت اخستلې و و په هغې کښې یوه داخبره هم وه چه مونږ به نافرمانی نه کوو اونه به دمخ نه وینسته اوباسو اودتباشي او هلاک شي آواز به نه کوو اودغم په وخت کښې به وینسته او جامې نه شلوو.

شرح الحديث :

اسید بن ابی اسید د هغې صحابیه رضی الله عنہا نه روایت کوی چه د مبايعاتو نه ده. قال الحافظ الم اقف علی اسمها) هغه فرمائی چه رسول الله ﷺ په کومو څیزونو باندې زمونږ نه بیعت اخستلې و و په هغې کښې یو دا خبره وه چه مونږ زنانه به په نیکو خصلتونو کښې د رسول الله ﷺ نافرمانی نه کوو نو د هغه نیکو خصلتونو نه دا هم دی چه د مصیبت په وخت باندې به مخ نه وهو او دغه شان به واویلا نه کوو او هم دغه شان به گریوان نه شلوو او نه به وینستو لره خواره کوو.

د دې مهاجرو زنانو نه چه رسول الله ﷺ په کوم مضمون باندې بیعت اخستلې و و هغه د سورة ممتحنه په آیت کښې ذکر شوې دې ﴿ یا ایها النبی اذا جاءک المومنات یابعنک علی ان لا یشرکن بالله شیئا ولا یسرقن ولا یزنین ولا یقتلن اولادهن ولا یتینن بهتان یفترنه بین یدیهن وارجلهن ولا یعصینک فی معروف ﴾ په دې حدیث کښې د دې آخری جزء ذکر دې چه د هغې مصداق هغوی په دې حدیث کښې خمش وجه او دعا بالویل او شق جیب او نشر شعر وئیلې دې.

بَابُ صَنْعَةِ الطَّعَامِ لِأَهْلِ الْمَيْتِ

دمری دکوردپاره د خوراک تیارولو بیان

[۳۱۳۲] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْبَانٌ، حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اصْنَعُوا لِآلِ جَعْفَرٍ طَعَامًا، فَإِنَّهُ قَدْ أَتَاهُمْ أَمْرٌ شَقِيحٌ".

عبدالله بن جعفر رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ فرمائیلی دی د جعفر دکورنۍ دپاره خوراک تیار کړئ ځکه چه په دوی داسې مصیبت راغلې دې چه دوی دي کار ته فارغ نه دي.

الكلام على الحديث شرحها وفقها :

یعنی د مری د کور والو دپاره د رومبئ ورځې د سحر او ماښام د خوراک انتظام کول د لرې خپلوانو دپاره مستحب دی، فقهاء کرامو د دې تصریح کړې ده او د حدیث الباب نه ئې استدلال کړې دې او یو قول دا دې چه د دې خوراک انتظام ترد درې ورځو پورې کول پکار دی چه د تعزیت موده ده او دا ئې هم لیکلې دی چه د خوراک رالیږونکو دپاره مناسبه ده چه په تاکید سره په هغوی باندې خوراک او کړی چه داسې او نه شی چه د زیات غم او ژړا د وجې نه هغوی خوراک پریردی. (بذل) د حدیث الباب مضمون دا دې: جعفر بن ابوطالب رضی الله عنہ چه په غزوه موته کښې شهید شوې و و د هغوی ځونې عبدالله رضی الله عنہ فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی و و ﴿ اصنعوا لآل جعفر طعاما فانه قد اتاهم امر یشملهم ﴾ یعنی د آل جعفر دپاره

(۱): تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۳۶۶) (صحیح)

دودئ تياره كړئ ځكه چه په هغوى باندي داسې حادثه راغلې ده چه هغوى ئې په خپل ځان اخته كړي دي اود خوراك دپاره فارغ نه دي، ددې نه مرادغم او خفكان دي، تجهيز او تكفين نه دي ځكه چه د هغوى شهادت خو په موته كښې شوې وو چه په ملك شام كښې دي. دا خوراك كوم چه د نورو د طرف نه وي صرف د مړي د كور والا دپاره وي. د عام دعوت خوراك نه وي لهذا نورو خلقو لره خپلو خپلو كورنو ته تلل پكار دي. او هم دغه شان خپله د مړي د كورو والو د طرف نه د ميلمستيا كيدل دا خو قلب موضوع ده او بدعت مستقبجه دي قاله ابن الهمام... والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المذری

بَابُ فِي الشَّهِيدِ يُغَسَّلُ

شهيد ته د غسل وركولو بيان

شهيد ته د غسل وركولو مسئله خو تقريبا اتفاقی ده چه هغه ته غسل نه دي وركول پكار، په دي كښې د حسن بصری اختلاف دي هغه د شهيد د غسل وركولو قائل دي، د هغوى دليل دا ليكلي شوي دي ﴿ لان الغسل كرامة لبني آدم والشهيد مستحق الكرامة وانما لم تغسل شهداء احد تخفيفا على الاحياء لكون اكثرهم مجروحين فلم يقدرُوا على غسلهم ﴾ او د جمهورو دليل دا حديث دي چه رسول الله ﷺ د احد د شهيدانو په باره كښې وفرمائيل ﴿ زملوهم بكلومهم ودمانهم فانهم يبعثون يوم القيامة واوداجهم تشخب دما اللون لون الدم والريح ريح المسك الى آخر ما في البدائع ﴾

خو په شهيد باندي د مونخ كولو مسئله مختلف فيده ده، ائمه ثلاثه د دي قائل نه دي، او احناف د صلوة على الشهيد قائل دي او د امام احمد په يو روايت كښې تخير دي، حافظ ابن قيم رحمته الله فرمائي چه د شهداء احد په باره كښې روايات مختلف دي، والصواب في المسئلة انه مخيرين الصلوة عليهم وتركها لمجئ الآثار بكل واحد من الامرين، وهذا احدى الروايات عن الامام احمد (عون مختصرا) د صلوة على الشهيد بحث وړاندي هم په دي باب كښې را روان دي.

[۳۱۳۳] (١) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيسَى. وَحَدَّثَنَا عُثَيْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ الْجَشْمِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ طَهْمَانَ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "رُمِيَ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فِي صَدْرِهِ، أَوْ فِي حَلْقِهِ، فَمَاتَ، فَأُذِرْجَ فِي لِيَابِهِ كَمَا هُوَ، قَالَ: وَنَحْنُ مَعْرَسُونَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ."

د جابر رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه يوسرې په سينه كښې په غشي باندي ولگيدو ياپه مړي كښې او مړ شو په خپلو جامو كښې ونغښتلې شو څنگه چه هغه مخكښې وړ جابرواتي او مونږ دنبي صلی الله علیه و آله سره ملگري وو.

﴿ عن جابر رضي الله عنه قال رمى رجل بسهم في صدره او في حلقه فمات فادرج في ليايه كما هو ﴾ يعنى يو سرې چه په غشي لگيدلې وو په سينه كښې يا په حلق كښې چه د هغې نه ئې مرگ واقع شو نو هغه هم دغه شان د هغه په كپړو كښې دفن كړئ شو. يعنى بغير د غسل نه.

(١): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ٢٦٤٧)، وقد أخرجه: مسند احمد (٣٦٧/٤) (حسن).

[۳۱۳۴] حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ، وَعَيْسَى بْنُ يُونُسَ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَاصِمٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَتْلِ أَحَدٍ، أَنْ يُزَعَّ عَنْهُمْ الْحَدِيدُ، وَالْجُلُودُ، وَأَنْ يُدْفَنُوا بِدِمَائِهِمْ وَثِيَابِهِمْ".

دا بن عباس رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله راته حکم کړې وو دا حد دشهیدانو په باره کښې چه وسپني (اسلحه) او خرمني ترې لرې کړئ او په خپلو جامو او وینو کښې ئې دفن کړئ.

(عن ابن عباس رضي الله عنه قال امر رسول الله صلی الله علیه و آله بقتلي احد ان ينزع عنهم الحديد... الخ):

يعني د شهداء احد په باره کښې رسول الله صلی الله علیه و آله دا او فرمائيل چه د هغوی د بدنونو نه دي وسله وغيره کوزه کړې شي او هم دغه شان زیاتي جامه هم، او دوی دي په خپلو وینو او جامو کښې دفن کړې شي (۱) د جمهورو مسلک خو هم دا دي په دي کښې د امام مالک رضي الله عنه اختلاف دي د هغوی په نزد وسله خو به کوزولې شي خو زیاتي جامه وغيره به نه شي ويستلې. والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذري

[۳۱۳۵] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ. وَحَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، وَهَذَا الْقَطْعُ، أَخْبَرَنِي أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ اللَّيْثِيُّ، أَنَّ ابْنَ شَهَابٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ، حَدَّثَهُمْ: أَنَّ نَهْدَاءَ أَحَدٍ لَمْ يُقْسَلُوا، وَدَفِنُوا بِدِمَائِهِمْ، وَلَمْ يُصَلَّ عَلَيْهِمْ.

دانس بن مالک رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه دا حد شهیدانو ته غسل نه وو ورکړې شوي او په خپلو وینو کښې دفن کړې شوي وو او جنازه هم ورباندې نه وه شوي.

(عن انس بن مالك رضي الله عنه ان شهداء احد لم يغسلوا ولم يصل عليهم)

د صلوة علی الشهید بحث :

د صلوة علی الشهید مسئله لکه چه اوس پورته تیره شوه مختلف فيه ده، وړاندې یو مستقل باب د کتاب الجنائز په آخره کښې را روان دي، (باب الصلوة علی القبر بعد حين) چه په هغې کښې دا حدیث دي (عقبه بن عامر رضي الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه و آله خرج يوما فصلی علی اهل احد صلاته علی الميت) او د دي حدیث په دویم طریق کښې دا دي (صلی علی قتلي احد بعد

(۱) سنن ابن ماجه الجنائز ۲۸ (۱۵۱۵)، (تحفة الأشراف: ۵۵۷۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۴۷/۱) (ضعيف)

(۲) قال الموفق: وينزع من ثيابه ما لم يكن من عامة لباس الناس من الجلود والفراء والحديد قال احمد: لا يترك عليه فردو ولا خف ولا جلد وبهذا قال الشافعي وابو حنيفة، وقال مالك لا ينزع عنه فرو ولا خف ولا محشوم لموم قوله صلی الله علیه و آله ادفنوهم بثيابهم، وما رويناها اخص فكان اولي آه..... د دي نه معلومه شوه چه د جمهور علماء او ائمه ثلاثه مذهب خو دا دي چه د عام جامو نه علاوه دي ترې نه زیاتي جامه وغيره موزي او يستلې شي. خو د امام مالک رضي الله عنه په دي کښې اختلاف دي د هغوی په نزد به ترې نه زیاتي جامه او موزي وغيره هم نه شي ويستلې. هم دغه شان په دسوقی کښې هم دي، پس په هغې کښې دي مع خف وقلنسوة ومنطقة قل ثمنها وخاتم فضة قل فصه اي قيمته لا بالة حرب من درع وسلاح آه معلومه شوه چه وسله وغيره او زغري به د امام مالک رضي الله عنه په نزد هم کوزولې شي.

(۳) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۷۸) (حسن)

ثمان سنين كالمودع للاحياء والاموات) امام بخاری رضی اللہ عنہ په (باب الصلوة علی الشہید) کښي دوه احاديث ذکر کړي دي يو هم دا د عقبه بن عامر رضی اللہ عنہ والا او دويم د جابر بن عبد الله رضی اللہ عنہ چه د هغې په اخر کښي دي (وامر بدفنههم في دمانهم ولم يغسلوا ولم يصل عليهم) امام ابن قدامة په دې دواړو حديثونو کښي يو لره د خپل مسلک دليل منلو سره د دويم حديث يعنى حديث عقبه رضی اللہ عنہ دا جواب کړي دي چه دا مخصوص دې د شهداء احد سره، ځکه چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم دا مونځ په شهيدانو باندي مونځ وو د هغوی په قبرونو باندي او اته کاله پس وو، او احناف د صلوة علی القبر بالکل نه دي قائل، او جمهور هم د يو مياشت نه پس د صلوة علی القبر قائل نه دي، لهذا هم دا به وئييلې شي چه دا د شهداء احد سره خاص دي، بله دا چه هغوی وئييلې دي چه د ابن عباس رضی اللہ عنہما دا حديث (ان النبي صلی اللہ علیہ وسلم صلى على قتلى احد) ضعيف دي ځکه چه د دې راوی حسن بن عماره دي چه ضعيف دي، وقد انكر عليه شعبة رواية هذا الحديث آه او قسطلاني فرمائي چه د ابن حزم ظاهري رضی اللہ عنہ مذهب دا دي چه صلوة علی الشہيد هم حسن دي او ترک الصلوة هم حسن دي، او هغوی استدلال کړي دي د بخاری هم د دې دواړو احاديثو نه، وقال ليس يجوز ان يترك احد الاثرين المذكورين للاخر، بل كلاهما حق مباح وليس هذا مكان نسخ لان استعمالهما معا ممكن آه وقال العيني: ذهب ابن ابي ليلي والحسن بن حي وعبيد الله بن الحسن وسليمان بن موسى وسعيد بن عبدالعزيز والاوزاعي والثوري وابو حنيفة وابويوسف ومحمد واحمد في رواية واسحاق في رواية الى انه يصلى عليه وهو قول اهل الحجاز ايضا واحتجوا في ذلك بحديث عقبه عند البخاري، وقوله فيه صلاته على الميت يرد قول من قال ان الصلوة فيه محمولة على الدماء وممن قال به ابن حبان والبيهقي والنووي، امام نووي رضی اللہ عنہ فرمائي چه د صلاته علی الميت مطلب دا دي چه کومه دعا به هغوی د مرو دپاره غوښتله هم هغه دعا ئې د هغوی دپاره او غوښتله، او دا مطلب نه دي چه د هغوی دپاره ئې مونځ او کړو، هم دا تاويل ابن حبان او بيهقي هم کړي دي، قال العيني: وهذا عدول عن المعنى الذي يتضمنه هذا اللفظ لاجل تمشية مذهبه في ذلك، وهذا ليس بانصاف، واحتجوا في ذلك ايضا بما رواه ابن ماجه بسنده عن ابن عباس رضی اللہ عنہما قال اتى بهم رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم يوم احد فجعل يصلى على عشرة عشرة وحمزة وهو كما هو يرفعون، هو كما هو موضوع، يعنى په لسو لسو کسانو باندي به مونځ کولې شو او په حمزه رضی اللہ عنہ باندي، د مونځ نه پس به خو د حمزه رضی اللہ عنہ جنازه هم هلته پرته وه او باقي به اوچتولي شو، الى آخر ما في اولاجز..... وفيه ايضا: وسط الزيلعي في نصب الراية، طرق الصلوة على الشهداء ولخصها الحافظ في الدراية فارجع اليهما لو شئت.

په دې سلسله کښي بعض روايات حافظ ابن قيم رضی اللہ عنہ هم په تهذيب السنن کښي ذکر کړي دي، ومنها: حديث انس ان النبي صلی اللہ علیہ وسلم صلى على حمزة، وحديث ابي مالك الفقاري كان قتلى احد يوتى منهم بتسعة وعاشرهم حمزة فيصلى عليهم رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ثم يحملون ثم يوتى بتسعة فيصلى عليهم وحمزة مكانه، هذا مرسل صحيح ذكره البيهقي، وقال هو اصح ما في الباب..... د دې روايت مقتضى دا ده چه په حمزه رضی اللہ عنہ باندي اووه کرته مونځ کړي شوې دي په باقي ټولو

باندې یو یو کورت. ومنها وقد روی ابن اسحاق. عن رجل من اصحابه عن مقسم عن ابن عباس رضی اللہ عنہما ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم علی حمزة فکبر سبع تکبیرات ولم یؤت بقتیل الاصلی علیہ معه حتی صلی علیہ اثنتین وسبعین صلوة، ولكن هذا الحدیث له ثلاث علل الی آخر ما ذکر، دا آخری روایت دهغه مخکنی روایت هم خلاف دې کوم چه مرسل قوی دې.

[۳۱۳۶] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا زَيْدُ يَعْنِي ابْنَ الْحُبَابِ. ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ يَعْنِي الْمُرَوَّانِيَّ، عَنْ أَسَامَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، الْمَعْنَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَى حَمْزَةَ، وَقَدْ مِثْلَ بِهِ، فَقَالَ: لَوْلَا أَنْ تَجِدَ صَفِيَّةَ فِي نَفْسِهَا، لَتَرَكْتَهُ حَتَّى تَأْكُلَهُ الْعَاقِيَةُ. حَتَّى يُحْشَرَ مِنْ بَطُونِهَا، وَقَلَّتِ الشِّيَابُ، وَكَثُرَتِ الْقَتْلَى، فَكَانَ الرَّجُلُ وَالرَّجُلَانِ وَالثَّلَاثَةُ يُكْفَنُونَ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ، زَادَ قُتَيْبَةُ: ثُمَّ يُدْفَنُونَ فِي قَبْرِ وَاحِدٍ، فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْأَلُ: "أَيُّهُمْ أَكْثَرُ قُرْآنًا؟ فَيَقْدِمُهُ إِلَى الْقَبِيلَةِ".

دانس بن مالک رضی اللہ عنہ نه دتير روایت په شان روایت نقل شوې دې مگر ددې اضافي سره چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم په حمزه باندې تير شو او هغه مثله شوې وو، نبی صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائی که چېرې صفيه نه خفه کيدلې نومابه د حمزه لاش همداسې بهر په ډاگه پريخودلې وو تردې چه ليوانوبه خوه لې رې بيابه دقيامت په ورځ دليوانودخيتونه راوتلو په هغه زمانه کښې دجامو کمې وو اودشهيدانو تعداد زيات وو يو او دوه اودرې کسان به په يوه جامه کښې دفن کولې شو ليکن ددفن کولونه مخکښې به نبی صلی اللہ علیہ وسلم تپوس او کړو چه په دوی کښې دقران علم دچاسره زيات دې؟ نو هغه به ئې دقبلي طرف ته مخامخ کړو.

﴿عن انس بن مالك رضی اللہ عنہ ان رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم مر على حمزة وقد مثل به فقال رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم لولا ان تجد صفيه في نفسها لتركته حتى تأكله العاقية حتى يحشر من بطونها﴾

شرح الحدیث :

يعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د احد په جنگ کښې په حمزه رضی اللہ عنہ باندې تير شو په داسې حال کښې چه هغوی مثله کړې شوې وو نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم او فرمائیل چه که ماته د خپلې ترور صفيه رضی اللہ عنہا خیال نه وې نو ما به دوی هم په دې حال کښې دلته پريخودلې وې چه حیواناتو او مارغانو د هغوی بدن خورلې وې او بیا په آخرت کښې د هغه حیواناتو د خیتونه د هغوی اجزاء جمع کولو سره د هغه حشر شوې وې.

دا رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ځکه غوښتله چه د هغوی په اجر او ثواب کښې اضافه اوشی، او د هغوی شهادت د الله پاک نزد بڼه ښکاره شی وړاندې په روایت کښې دی چه چونکه د جامو کمې وو او د مقتولینو کثرت په دې وجه دوه دوه او درې درې مړی په یو کپړه کښې کفن کړې شو، او بیا به هغوی ټول په یو قبر کښې دفن کولې شو، په قبر کښې د کيخودلو په وخت به رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تپوس کولو چاته قران زيات یاد دې پس هم هغه به ئې د قبلي طرف ته مخکښې کولو.

په دې روایت کښې دا هم دی چه په یو کپړه کښې به د دوه او درې کسانو تکفین کيدلو، خو په دې صورت کښې به د یو بدن د بل سره لگی او دا جائز نه ده، لهذا د دې

(۱) سنن الترمذی/الجنائز ۳۱ (۱۰۱۶)، (تحفة الأشراف: ۱۴۷۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۲۸۳) (حسن)

تاویل به دا کولې شی چه مثلا یو لوڼې خادر دې د هغې دوه یا درې ټکرې کولو سره به هر یو مړې په ځانله ځانله ټکره کښې کفن کولې شو چه د یو بل سره او نه لگې او یا بیا دا په ضرورت او مجبورئ باندي محمول کولې شی. (بذل) او مظهر شارح د مصابیح د ثوب واحد تاویل په قبر واحد سره کړې دې ممکنه ده چه دا تاویل په بعض نورو روایتونو کښې اوچلیپرې خو زموږ په دې روایت کښې نه شی چلیدې ځکه دلته د دې نه پس په روایت کښې دی ﴿ثم یدفنون فی قبر واحد﴾

په حدیث الباب باندي د امام ترمذی اعتراض :

د دې نه پس په دې باندي ځان پوهه کړئ چه دا حدیث په ترمذی کښې هم دې او په هغې کښې په اخر کښې دا زیادت دې ﴿قال فدفنهم رسول الله ﷺ ولم یصل علیهم﴾ امام ترمذی رحمته د دې حدیث په سند باندي کلام کړې دې او هغه دا چه د دې حدیث په سند کښې د اسامة بن زید نه خطاء واقع شوې ده هغه دې حدیث لره په دې سند سره روایت کولو کښې متفرد دې. د اسامة نه علاوه د امام زهری رحمته نورو شاگردانو دا حدیث بل شان روایت کړې دې ﴿فروی اللیث بن سعد عن ابن شهاب عن عبدالرحمن بن کعب بن مالک عن جابر بن عبدالله رحمته﴾ او هم دغه شان معمر دا روایت کړو ﴿عن الزهری عن عبدالله بن ثعلبة عن جابر﴾ یعنی اسامة دا د انس د مسانیدو نه گنرلې دې، او د اسامة نه علاوه لیث بن سعد او معمر د جابر د مسانیدو نه.

[۳۱۳۷] حَدَّثَنَا عَبَّاسُ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا اسَامَةُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِحِمْزَةَ، وَقَدْ مَثَلَ بِهِ، "وَلَمْ يُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنَ الشُّهَدَاءِ غَيْرِهِ".

دانس بن مالک رحمته نه روایت دې چه نبی صلی الله علیه و آله په حمزه باندي تیرشو او هغه مثله شوې وو، او جنازه ئې اونکره په یوکس باندي ددوی نه.

﴿عن انس رحمته ان النبي صلی الله علیه و آله مر بحمزة وقد مثل به ولم یصل علی احد من الشهداء غیره﴾

په دې روایت کښې ﴿لم یصل علی احد﴾ نه پس ﴿بعد﴾ د غیره لفظ دې چه د هغې نه د حمزة رحمته استثناء معلومیږي چه په هغه باندي ئې اولوستلو او د هغه نه علاوه ئې په چا باندي هم او نه لوستلو، امام دارقطنی په دې زیادت باندي کلام کړې دې پس هغوی فرمائی: ورواه عثمان بن عمر عن اسامة عن الزهری عن انس وزاد فيه حرفا لم یات به غیره فقال "ولم یصل علی احد من الشهداء غیره وليس بمحفوظ" خو حافظ منذری رحمته ته لکه چه د هغوی د کلام کتلو نه معلومیږي د دارقطنی په اعتراض باندي انشراح نشته، ځکه چه هغوی د دارقطنی د اعتراض نقل کولو نه پس لیکي چه ﴿فاسامة بن زید فقد احتج به مسلم واستشهد به البخاری، واما عثمان بن عمر فقد اتفق البخاری ومسلم علی الاحتجاج بحديثه﴾ او بیا وړاندي تلو سره هغوی صلوة علی حمزة چه په طریق د عثمان کښې دی د دې تاویل د بعض علماء کرامو نه دا نقل کړې دې چه دا صلوة په معنی د دعا دې.

فانده : دا حدیث چه په هغې کښې د احد په شهیدانو باندې د مانځه نفی او د حمزه رضی الله عنه د پاره ثبوت ذکر دې، د امام دارقطنی وغیره په دې باندې اعتراض کول او د حافظ منذری په ځانې د رد د دې تاویل کول په دې کښې د صلوة علی حمزة نه دعاء مراد دې، د دې نه دا معلومیږي چه دا حضرات محدثین کوم چه د صلوة علی الشهید قائل نه دی په دې کښې بعض د حمزه رضی الله عنه استثناء هم نه قبلوی بلکه علی العموم د نفی قائل دی.

وکت اظن قدیما ان الاختلاف انما هو فی غیر حمزة لا فی حمزة فظهر من هذا خلافه.....

[۳۱۳۸] () حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، وَبُرَيْدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ مَوْهَبٍ: أَنَّ اللَّيْثَ حَدَّثَهُمْ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "كَانَ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أَحَدٍ، وَيَقُولُ: أَيُّهُمَا أَكْثَرَ أَخَذَ الْقُرْآنَ؟ فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدِهِمَا، قَدَّمَهُ فِي اللَّحْدِ، وَقَالَ: أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هَؤُلَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَأَمْرٌ بَدَفْنِهِمْ بِدَمَائِهِمْ، وَلَمْ يُعْسَلُوا".

د جابر بن عبدالله رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله به دوه دوه کسان دا حد شهیدان یو ځانې دفن کول او وئیل به ئې چه په دوی کښې دقران علم دچاسره زیات دې؟ نوچه کله به یو تن ته اشاره وشوه نو هغه به ئې لحد ته مخکښې کوز کړو او وئیل به ئې زه به په دوی باندې گواه یم په ورځ دقیامت اوبیا به ئې حکم اوکړو په دفن کولو ددوی باندې سره دویڼونه او غسل به ئې ورنکړل.

﴿ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ وَبُرَيْدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ مَوْهَبٍ أَنَّ اللَّيْثَ حَدَّثَهُمْ عَنِ ابْنِ شَهَابٍ عَنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ أَخْبَرَهُ الْخ ﴾

دا هم هغه طریق دې کوم ته چه امام ترمذی رحمته الله ترجیح ورکړې ده په طریق د اسامة بن زید باندې، او طریق د اسامة ته ئې وهم وئیلې دې، داسې معلومیږي چه د امام ابوداؤد په نزد هر دواړه طریق صحیح دی ځکه چه هغوی حدیث په هر دواړو طریقو سره ذکر کړو او سکوت ئې اختیار کړو. والله تعالی اعلم بالصواب

[۳۱۳۹] () حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ الْمَهْرِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهَبٍ، عَنِ اللَّيْثِ: بِهَذَا الْحَدِيثِ بِمَعْنَاهُ، قَالَ: يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أَحَدٍ فِي تَوْبٍ وَاحِدٍ.

په دې سند سره هم د لیت نه ددې مفهوم حدیث نقل دې، په دې کښې دی چه نبی کریم صلی الله علیه و آله د احد شهیدان دوه دوه سړی یو ځانې په یوه کپړه کښې دفن کول.

۱: صحیح البخاری للجنائز ۷۲ (۱۳۴۳)، ۷۳ (۱۳۴۵)، ۷۵ (۱۳۴۷)، ۷۸ (۱۳۵۳)، المغازی ۲۶ (۴۰۷۹)، سنن الترمذی للجنائز ۴۶ (۱۰۳۶)، سنن النسائی للجنائز ۶۲ (۱۹۵۷)، سنن ابن ماجه للجنائز ۲۸ (۱۵۱۴)، (تحفة الأشراف: ۲۳۸۲) (صحیح) ۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۲۳۸۲) (صحیح)

باب فِي سُرِّ الْمَيْتِ عِنْدَ غَسْلِهِ

د غسل به وخت کښې مړی ته د پردې کولو بیان

او په بعض نسخو کښې، فی ستر المیت دی وهو الاوضح.

[۳۱۴۰] (۱) حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سَهْمٍ الرَّمْلِيُّ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرْتُ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ ضَمْرَةَ، عَنْ عَلِيٍّ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "لَا تَبْرُزْ فُحْدَكَ، وَلَا تَنْظُرَنَّ إِلَى فُحْدِي حَتَّىٰ تَمُوتَ".

د علی کرم الله وجهه نه روایت دي فرمائی چه نبی کریم صلی الله علیه وسلم فرمائیلی دی: خپل ورون مه ښکاره کوه اودچا ورون ته مه گوره چه مړوي اوکه ژوندي.

﴿ عن علی بن ابی طالب ان النبی ﷺ قال: لا تبرز فحذک ولا تنظر الی فخذ حی ولا میت ﴾

د دې حدیث نه معلومه شوه چه د ستر عورت په مسئله کښې مړې په شان د ژوندي دي، لهذا د غسل په وخت د مړی د ستر اهتمام واجب دي، کما فی ترجمه الباب. والحديث اخرجہ ابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۱۴۱] (۲) حَدَّثَنَا النُّفَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ عَبَّادٍ، عَنْ أَبِيهِ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ، تَقُولُ: لَمَّا أَرَادُوا غَسْلَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالُوا: وَاللَّهِ مَا نَدْرِي، أَنْجَرِدُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ ثِيَابِهِ كَمَا نُجَرِدُ مَوْتَانَا، أَمْ نَغْسِلُهُ وَعَلَيْهِ ثِيَابُهُ؟ فَلَمَّا اخْتَلَفُوا أَلْفَى اللَّهُ عَلَيْهِمُ النَّوْمَ. حَتَّىٰ مَا مِنْهُمْ رَجُلٌ إِلَّا وَدَقَّتْهُ فِي صَدْرِهِ، ثُمَّ كَلَّمَهُمْ مُكَلِّمٌ مِنْ تَأْخِيَةِ الْمَيْتِ، لَا يَدْرُونَ مَنْ هُوَ: أَنْ اغْسِلُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ ثِيَابُهُ، فَقَامُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَغَسَلُوهُ وَعَلَيْهِ قَبِيصُهُ، يَصُبُّونَ الْمَاءَ فَوْقَ الْقَبِيصِ، وَيَدْلِكُونَهُ بِالْقَبِيصِ دُونَ أَيْدِيهِمْ، وَكَانَتْ عَائِشَةُ تَقُولُ: لَوْ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ، مَا غَسَلَهُ إِلَّا نِسَاءُ.

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائی چه كله صحابه كرامو اراده وكړه چه نبی کریم ﷺ ته غسل ورکړی نو مختلف شول چه ایاد جامونه بغير بریند غسل ورکړو د نورو مړو پشان اوکه د جاموسره غسل ورکړو نوچه كله دوی مختلف شول نو الله تعالی ورباندي پرکالي (خوب) راوستونو په دوی کښې څوک هم داسې نه ووجه دخوب دوجې نه زنه په سینه باندي نه وی لگیدلي، په دې وخت دکورپه گوټ کښې گنگوسي اوشو معلومه نشوه چه دچا آوازوو، هغه خبره داوه چه نبی کریم ﷺ ته دجاموسره دي غسل ورکړی شي خلقو چه دا واوریدل نودقمیص سره ئې غسل ورکړو، یعنی خلقوبه پری دقمیص دپاسه اوبه اړولي اوبه قمیص به ئې مېلونه چه په لاسونو هام المومنين عائشة رضي الله عنها وائی که چرې ماته مخکښي رایاد شوي وي کومه خبره چه ماته روسته رایاده شوه نونبی ﷺ ته به خپلوبیانو غسل ورکړي وي.

﴿ سمعت عائشة رضي الله عنها تقول: لما ارادوا غسل النبي ﷺ قالوا والله ما ندرى انجرد رسول الله ﷺ من ثيابه كما نجرد موتانا ام نغتسله وعليه ثيابه ﴾

۱: سنن ابن ماجه/الجنائز ۸ (۱۴۶۰)، (تحفة الأشراف: ۱۰۱۳۳)، وقد أخرجہ: حم (۱۴۷۱) (ضعيف جلد)
 ۲: سنن ابن ماجه/الجنائز ۹ (۱۴۶۴)، (تحفة الأشراف: ۱۶۱۸۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۶۷/۶) (حسن)

شرح الحديث :

عائشة رضي الله عنها فرمائی چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم د غسل متعلقينو چه كله هغوی ته د غسل وركولو اراده او كړه نو خپل مينځ كښي نې اوئيل او سوچ نې او كړو چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم كپړې ويستلو سره هغوی ته غسل وركړې شي لكه چه د عامو مرو سره كولي شي يا د هغوی د جامو ويستلو نه بغير هغوی ته غسل وركړې شي، لا تراوسه پورې څه راتې نه وه قائمه شوي چه ناڅاپه په دوی باندي الله پاك خوب راوستلو چه د هغې په وجه باندي د هريوزنه د سينې سره اولگيده، بيا د حجرې شريفې د يو طرف نه د يو آواز كونكي آواز راغلو چه د هغې په باره كښې چاته هم پته نه وه چه څوك دې، هغه دا كلام او كړو چه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته د هغوی د كپړو سره غسل وركړي، د دې نه پس ټولو هم دغه شان او كړه، **(فغسلوه وعليه قميصه يصبون الماء فوق القميص)** چه اوبه نې بهيولي د قميص د پاسه او بدن مبارك نې هم په هغه قميص باندي مړلو په لاسو سره نه، په دې باندي بذل كښې ليكلي دي **(ويستدل بهذا الحديث ان الميت اذا اغتسل يجب ان لا يمس عورته الا بلف الثوب على يده)**

(كما نجرد موتانا الخ) په دې باندي حضرت شيخ رحمته الله په حاشيه د بذل كښې ليكلي دي چه د جمهور علماء ثلاثه په نزد مستحب طريقه هم دا ده چه د مړي نه كپړې ويستلې شي او په بله كپړه كښي ورته غسل وركړې شي، د امام شافعي رحمته الله مسلك دا دې چه د مړي غسل د هغه په مخكښي كپړو كښې كيدل پكار دي، او د جمهور په نزد دا حديث په خصوصيت باندي محمول دي.

په صديق اكبر رضي الله عنه كښې قدرة د اثار خلافت موجود كيدل :

د رسول الله صلى الله عليه وسلم په وفات باندي صحابه كرامو رضي الله عنهم ته په ډيرو مسائلو كښې حيراني پيدا شوي وه چه په دې كښې څه او كړې شي، او د حيرانتيا راتلل قياس ته هم زياته نژدې وه ځكه چه اصل معلم او مفتي د صحابه كرامو رضي الله عنهم دپاره رسول الله صلى الله عليه وسلم وو. اوس كه تپوس او كړي نو د چا نه او كړي، ځكه چه دې مخكښي مسئله كښې خود الله پاك د طرف نه غيبي امداد راغلو، د دې نه پس چه صحابه كرامو رضي الله عنهم ته څه قسمه مسئله پيدا شوه په هغې كښې نې صديق اكبر رضي الله عنه پوره پوره رهنمائي او كړه چه په هغې باندي د صحابه كرامو رضي الله عنهم تسلي كيده، پس صحابه كرامو رضي الله عنهم ته د جنازې په مانځه كښې هم شك پيدا شو، او هم دغه شان نې د دفن په باره كښې هم شك پيدا شو، لكه چه د شمائل ترمذي په روايت كښې دي، په دې ټولو كارونو كښې صديق اكبر رضي الله عنه فيصله كن جواب وركړو او صحابه كرامو رضي الله عنهم د هغې مطابق عمل كولو، رښتيا دا ده چه الله پاك د چا نه كوم كار اخلي هغه پخپله مخامخ راشي او د خلقو په هغې باندي اتفاق پيدا شي

(وكانت عائشة تقول لو استقبلت من امرى ما استدبرت ما غسله الا نساؤه)

شرح الحديث :

راوى وائى چه مور بى بى (عائشة رضي الله عنها) به فرمائيل چه كومه خبره ماته روستو معلومه شوه كه وړاندي معلومه وه نو بيا به رسول الله صلى الله عليه وسلم ته غسل د هغوی بيبيانو وركولو نه صحابه

کرام رضی اللہ عنہم، شارحانو د دې دا مطلب لیکلې دې چه د دې نه مراد د تعلق د نکاح باقی پاتې کیدل دی په موده د عدت کښ، یا د نکاح نه منقطع کیدل د ازواج مطهرات په حق کښې په خصوصیت سره د همیشه دپاره، دا دواړه مطلبه خو یو بل ته نزدې نزدې دی، دلته د دې جملې په مطلب کښې دوه احتمال له نور هم دی کوم چه حضرت شیخ په سبق کښې بیان فرمائیلې وو، اول دا چه که ماته د مخکښې نه معلومه وه چه بعض خلق به د عدم غسل ازواج نه استدلال کوی په دې باندې چه د زوجې دپاره زوج ته غسل ورکول جائز نه دی نو بیا به هم مونږ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته غسل ورکړې وې، دویم احتمال ئې دا فرمائیلې وو چه عائشې رضی اللہ عنہا ته به علم شوې وی چه بعض علوی حضرات طعن کوی چه څنگه ئې پلار یعنی ابوبکر رضی اللہ عنہ د استخلاف په مسئله کښې مشغول شوي وو، د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم تجهیز او تکفین پریخودلو سره هم دغه شان ئې لور بی بی عائشه صدیقه رضی اللہ عنہا هم په دې کښې مشغوله شوې وه، نو په دې باندې عائشه رضی اللہ عنہا فرمائی که ماته دا مخکښې معلومه وه نو بیا به د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم بیبیانو هغوی ته غسل ورکړې وې آه

د اهد الزوجین یو بل ته غسل ورکول او مذاهب الاثمة په دې کښې :

اوس پاتې شوه دا مسئله چه په زوجینو کښې یو بل ته غسل ورکولې شی او که نه؟ د جمهور علماء کرامو او ائمة ثلاثه په نزد خود دواړو د طرف نه جائز دې یعنی احد الزوجین یو بل ته غسل ورکولې شی که زوج وی که زوجه، او احناف په دې کښې د فرق قائل دی د هغوی په نزد د زوجې دپاره د خاوند غسل جائز دې ځکه چه په عدت کښې نکاح باقی پاتې وی، او د دې عکس جائز نه دې، د جمهور علماء کرامو استدلال د علی رضی اللہ عنہ د غسل نه دې فاطمې رضی اللہ عنہا ته چه فاطمې رضی اللہ عنہا ته د هغې د وفات نه پس علی رضی اللہ عنہ غسل ورکړې وو، جواب د دې دا دې چه دا متفق علیه امر نه دې چه فاطمې رضی اللہ عنہا ته علی رضی اللہ عنہ غسل ورکړې وو فقد قبل غسلتها ام ایمن، ولو سلم فقد انکر ابن مسعود علی علی رضی اللہ عنہ (بذل)

په مذاهبو کښې صحیح هم دغه شان دې او کوم چه په بذل کښې د امام شوکانی رحمته اللہ علیہ نه منقول دی چه د امام احمد رحمته اللہ علیہ په نزد د ښځې دپاره خاوند ته غسل ورکول جائز نه دی دا سهو ده، حضرت شیخ په اوجز کښې د حنابله د کتابونو نه جواز نقل کړې دې، بلکه په اوجز کښې ئې د امام شوکانی رحمته اللہ علیہ په نقل باندې اعتراض هم کړې دې چه یا خو هغه صحیح نه دی یا کیدې شی چه د امام احمد رحمته اللہ علیہ یو روایت وی، په اوجز کښې دا مسئله د موطاء د دې روایت د لاندې لیکلې شوې ده چه په هغې کښې دی ﴿ان اسماء بنت عمیس امرأة ابی بکر الصدیق غسلت ابابکر الصدیق حین توفی﴾ (اوجز ۲/۴۲۸)

والحدیث اخرج ابن ماجه منه قول عائشة لو استقبلت الخ، واخرج ابن ماجه من حدیث

بریده بن الحصیب رضی اللہ عنہ لما اخذوا فی غسل قاله المنذری.

[۳۱۴۲] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ وَحْدَانَةَ مَسَدَدٍ، حَدَّثَنَا عَمَادُ بْنُ زَيْدٍ الْمَعْفِيُّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أُرْعَطِيَّةَ، قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ تُوُفِّيَتْ ابْنَتُهُ، فَقَالَ: "اغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا، أَوْ ثَمْسًا، أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ إِنْ رَأَيْتُنَّ ذَلِكَ، بِنَاءٍ وَسِدْرٍ، وَأَجْعَلْنَ فِي الْأَخِرَةِ كَافُورًا، أَوْ شَيْئًا مِنْ كَافُورٍ، فَإِذَا فَرَعْتُنَّ، فَأَذْنِي، فَلَمَّا فَرَعْنَا أَذْنَاهَا، فَأَعْطَانَا حَقْوَةً، فَقَالَ: أَشْجِرْتَهَا أَيَّاهُ." قَالَ عَنْ مَالِكٍ: يَعْنِي زَارَةً، وَلَمْ يُقَلِّ مَسَدَدٌ دَخَلَ عَلَيْهَا.

دام عطية رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله مونږ ته راغي په هغه وخت کښې کله چه دهغه لور وفات شوي وه چه درې ځله يا پنځه ځله ياددينه زيات غسل ورکړئ او که مناسب درته ښکاره شوه نو دبيرو په پانړو کښې په بشيدلو اوبو غسل ورکړئ او په اخر کښې ورسره کافور هم شامل کړئ او کله چه دغسل ورکولو نه فارغ شئ نومانه اطلاع راکړئ، ام عطية او وئيل کله چه مونږ فارغ شو نو نبی صلی الله علیه و آله ته مو اطلاع ورکړه نو نبی صلی الله علیه و آله مونږ ته خپل لنگ راکړو او وئې فرمائيل چه په دې کښې ئې راو نغاړئ او نبی صلی الله علیه و آله دا دبرکت دوجې نه ورکړو او دمسدد په روایت کښې دخل علينا الفاظ نشته.

(عن ام عطية رضي الله عنها) قالت دخل علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم حين توفيت ابنته فقال اغسلنها ثلاثا او خمسا او اكثر من ذلك ان رايتن ذلك بماء وسدر

شرح الحديث:

ام عطية رضي الله عنها فرمائی چه کله د رسول الله صلى الله عليه وسلم د لور وفات اوشو (او هغې ته غسل ورکړې کيدو نو) رسول الله صلى الله عليه وسلم مونږ ته تشریف راوړو او د غسل په باره کښې ئې خو هدايات مونږ ته راکړل هغوی او فرمائيل چه غسل درې کرته يا پنځه کرته يا د دې نه زيات څومره چه ضرورت گنږئ هم هغه شان ورکړئ، او د بيړې په پانړو سره غسل ورکړئ او آخری ځل په اوبو کښې کافور يو ځانې کړئ. د دې لور نه مراد کومه لور ده؟ په بذل کښې زينب رضي الله عنها ليکلې شوې ده او د شيخ په حاشيه د بذل کښې دا دی

(بسط الحافظ في الفتح ۸۳/۲ الكلام على مسمى البنت هذه، وكلنا في الاجز، والاكثر على انها زينب، وقيل ام كلثوم ومال ابوالطيب في شرح الترمذي الى الجمع بينهما) آه وقال المنذري هي زينب زوج ابی العاص ابن الربيع وهي اكيرناته رضي الله عنه هذا هو اكثر المروي وذكر بعض اهل السير انها ام كلثوم وقد ذكره ابوداؤد في ما بعد وفي اسناده مقال والصحيح الاول لان ام كلثوم توفيت ورسول الله صلى الله عليه وسلم غائب بيد آه (اغسلن) د امر حاضر جمع مونث صيغه ده چه د هغې اصل مخاطب خو ام عطيه ده ځکه چه د مړې په لامبلو کښې هم دا ډيره ماهره وه د رسول الله صلى الله عليه وسلم په زمانه کښ، تردې چه وړاندې په روایت کښې راځي چه محمد بن سيرين جليل القدر تابعي به د مړې د غسل طريقه د ام عطيه رضي الله عنها نه زده کوله، زرقانی فرمائی چه دا امر ام عطيه رضي الله عنها ته او کومې زنانه چه د هغې سره مدد کونکې وې هغوی ته دي.

۱: صحيح البخاري للوضوء ۳۱ (۱۶۷)، والجنائز ۸ (۱۲۵۳)، ۹ (۱۲۵۴)، ۱۰ (۱۲۵۵)، ۱۱ (۱۲۵۶)، ۱۲ (۱۲۵۷)، ۱۳ (۱۲۵۸)، ۱۴ (۱۲۶۰)، ۱۵ (۱۲۶۱)، ۱۶ (۱۲۶۲)، ۱۷ (۱۲۶۳)، صحيح مسلم للجنائز ۱۲ (۹۳۹)، سنن الترمذي للجنائز ۱۵ (۹۹۰)، سنن النسائي للجنائز ۲۸ (۱۸۸۲)، سنن ابن ماجه للجنائز ۸ (۱۴۵۸)، (تحفة الأشراف: ۱۸۰۹۴)، وقد أخرج: موطا امام مالك للجنائز ۱ (۲)، مسند احمد (۴۰۷/۶، ۴۰۸) (صحيح)

﴿ بماء وسدر ﴾ باندې په حاشیه د بذل کښې لیکلې دی: وهل الغسلات كلها بماء السدر او مرتین فقط کما رجحه ابن الهمام لروایة ابی داؤد الاتیة قریبا، او الواحدة فقط کما اختاره شیخ الاسلام وصاحب البدائع مختلف فیها کما فی الشامی ۶۳۲/۱ والکبیری ۵۳۵ والبحر الرائق ۱۷۲/۲.

دلته یو بله مسئله هم مختلف فیها ده کومه چه په کتاب الطهارة کښې تیره شوې ده، یعنی طهارة بماء مخلوط بشی طاهر چه په هغې کښې ائمه ثلاثه د عدم جواز قائل دی، او احناف د جواز، گویا حدیث الباب د احنافو دلیل دی په دې مسئله کښ، تفصیل په اوجز کښې او گورې (هامش بذل) د جمهورو د طرف نه د دې جوابات په باب فی تقبیل المیت کښې را روان دی.

﴿ فاذا فرغتن فاذنی ﴾ رسول الله ﷺ غسل وركونكو ته او فرمائیل چه د غسل د فراغت نه پس ماته خبر راکړئ مونږ د فارغ کیدو نه پس چه خبر ورکړو نو رسول الله ﷺ خپل خادر مونږ ته راکړو او وې فرمائیل چه په شروع کښې ئې په دې کښې راونغاړئ، او دا د هغې شعار جوړ کړئ، شعار هم هغه کپړې ته وائی کوم چه د بدن د وینستو سره لگي، او دا په دې وجه چه د هغې برکت د هغې وجود سره اولگي،

د استبراک باثار الصالحین ثبوت او استحباب :

په دې باندې په حاشیه د بذل کښې لیکلې دی: فيه استبراک باثار الصالحین ويؤيده ايضا حديث البخاری فی استعداد الكفن (اوجز) د بخاری د حدیث مضمون دا دی چه یو ځل یو زنانه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې یو خادر راوړو رسول الله ﷺ هغه قبول کړو او رسول الله ﷺ ته د هغې حاجت هم وو، رسول الله ﷺ هغه د لنگ په ځانې استعمال کړو رسول الله ﷺ په هغې کښې لا وتلې نه وو چه د یو صحابی رضی الله عنه خوښ شو هغه رسول الله ﷺ ته درخواست او کړو چه دا ماته راکړئ رسول الله ﷺ هغه ته ورکړو خلقو هغه صحابی رضی الله عنه ته او وې چه دا تا ښه اونکرل رسول الله ﷺ ته خود دې حاجت وو بیا هم تا د رسول الله ﷺ نه د هغې سوال او کړو سره د دې چه تا په دا هم معلومه ده چه هغوی د چا سوال نه رد کوی، هغوی جواب ورکړو چه والله ما دا د اغوستلو دپاره نه دې اخستلې. دا خو ما د خپل کفن دپاره اخستلې دې، راوی وائی چه بیا هغه هم د هغوی د کفن په کار راغلو. (اوجز ۴۲۷/۲)

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم وابن ماجه، قاله المنذری

باب كَيْفَ غُسْلِ الْمَيِّتِ

مړی ته غسل څنګه ورکول پکار دی؟

[۴۳] (۳۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدَةَ، وَأَبُو كَامِلٍ، بِمَعْنَى الْإِسْنَادِ أَنَّ يَزِيدَ بْنَ زُرَيْعٍ حَدَّثَهُمْ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَبْرِينَ، عَنْ حَفْصَةَ أُخْتِهِ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ، قَالَتْ: مَشَطْنَا هَاتِلَاثَةَ قُرُونٍ.

دام عطية رضی الله عنها نه روایت دې فرمائی چه مونږ د هغې دسر ویخته گومنز کړل او درې گوڅی مو ترې جوړې کړې.

۱: صحیح مسلم / الجنائز ۱۲ (۹۳۹)، سنن النسائی / الجنائز ۳۵ (۱۸۹۲)، تحفة الأشراف: ۱۸۱۳۳، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۷/۱) (صحیح)

[۳۱۴۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ، قَالَتْ: وَضَفَرْنَا رَأْسَهَا ثَلَاثَةَ قُرُونٍ، ثُمَّ الْقَيْنَاهَا خَلْفَهَا مَقْدَمَ رَأْسِهَا، وَقَرْنَيْهَا.

دام عطية رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه مونږ ددې دوختونه درې کوڅی جوړي کړي او شاه طرف ته مو زورنډې کړي یوه په مینځ کښې او یوه یو اړخ ته او بله بل اړخ ته.

﴿ عن ام عطية رضي الله عنها قالت وضفرنا راسها ثلاثة قرون ثم القيناها خلفها مقدم راسها وقرنيها ﴾

د تجهيز په وخت د زنانه ويښتو سره څه او کړې شي؟

دا حديث د رسول الله صلى الله عليه وسلم د لور په باره کښې دې کوم چه پورته تير په دې کښې دا دی چه ام عطية رضي الله عنها فرمائی چه مونږ د هغې ويښته گومنځ کړل د هغې مو درې حصې کړې او بيا مو شاته يعنی د ملا طرف ته هغه و اچول، وړاندې په روایت کښې د دې ويښتو د درې حصو تفسير ذکر کړې شوي دي، د تندي ويښته او د اړخونو ښی او گس طرف ته.

د زنانه ويښته گومنځول او د کمسې په شان هغې لره ول ورکولو سره شاته اچول د احنافو په نزد نشته، امام شافعی او احمد او ابن حبيب مالکی رضي الله عنه د دې قائل دي، ابن القاسم د دې انکار کړې دي (کذا في هامش البذل عن الابي) او حضرت په بذل کښې ليکلې دي چه دا ټول څيزونه د باب زينت نه دي او دا وخت د زينت نه دي او د حديث جواب دا دي چه دا د ام عطية فعل دي، او د رسول الله صلى الله عليه وسلم په حديث کښې دې باره کښې هيڅ هدايت نشته او نه د دې چه رسول الله صلى الله عليه وسلم ته د دې علم شوي هم دي که نه،

وفي الهداية : ولا يسرج شعر الميت ولا لحيته، ولا يقص ظفره ولا شعره لقول عائشة رضي الله عنها : علام تنصون ميتكم وفي حاشيته للسبلي من نصوت الرجل اذا مددت ناصية، والاثر رواه عبدالرزاق عن الثوري عن حماد عن ابراهيم عن عائشة رضي الله عنها انها رأت امرأة يكدون راسها بمشط فقالت علام تنصون ميتكم : وفيه ايضا : وتلبس المرأة الدرع اولا ثم يجعل شعرها ضفيرتين على صدرها فوق الدرع.

[۳۱۴۵] (۲) حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ لَهْنٌ فِي غُسْلِ ابْنَتِهِ: "ابْدَأَنَّ بِمَيَامِنِهَا، وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا".

دام عطية رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم هغه زنانه او فرمائیل چاچه دده لور ته غسل ورکول چه ددې دښې طرفونو او داودس دخايونونه غسل ورکول شروع کړی.

﴿ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ لَهْنٌ فِي غُسْلِ ابْنَتِهِ: "ابْدَأَنَّ بِمَيَامِنِهَا، وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا". ﴾

يعنی رسول الله صلى الله عليه وسلم غسل ورکونکو زنانه او فرمائیل چه هغوی دې ابتداء او کړی د ښی طرفونو نه او د اودس د اندامونو نه يعنی د اودس د اندامونو نه دې شروع او کړی او د دې سره دې د ابتداء باليمين هم خيال ساتی په ټول غسل کښ.

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

۱: صحيح البخاري/الجنائز ۱۶ (۱۲۶۲)، وانظر حديث رقم: (۳۱۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۳۸) (صحيح)

۲: انظر حديث رقم: (۳۱۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۲۴) (صحيح)

[۳۱۴۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي يُونُسَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ، بِمَعْنَى حَدِيثِ مَالِكٍ، زَادَ فِي حَدِيثِ حَفْصَةَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ بِمَعْنَى هَذَا، وَزَادَتْ فِيهِ: أَوْسَبَعًا، وَأَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ، إِنْ رَأَيْتَهُ.

دام عطية رضي الله عنها نه دتير روايت په شان روايت منقول دي البته ددي داضافي سره چه دي ته اوه خله غسل ورکړي ياد دي نه هم زيات خو مره چه مناسب وي غسل ورکړي.

[۳۱۴۷] (۲) حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُ الْفُسْلَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ، يُغْسِلُ بِالسُّدْرِ مَرَّتَيْنِ، وَالثَّلَاثَةَ بِالْمَاءِ وَالْكَافُورِ.

دمحمدبن سيرين نه روايت دي فرمائي چه مابه دام عطيه نه دغسل معلومات حاصلول هغې او وئيل چه مري به اول دبيري په اوبو باندي دوه ځل اولمبولې شي بيا په دريم ځل باندي كافور ياپه عامو اوبو باندي دي اولمبولې شي.

بَابُ فِي الْكَفَنِ مَرِي تَه د كفن وركولوييان

[۳۱۴۸] (۳) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ: أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ يُحَدِّثُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ خَطَبَ يَوْمًا، فَذَكَرَ جُلَامًا مِنْ أَصْحَابِهِ قَبِيضٌ، فَكَفَّنَ فِي كَفَنِ غَيْرِ طَائِلٍ، وَقَبِرَ لَيْلًا، فَزَجَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُقْبَرَ الرَّجُلَ بِاللَّيْلِ، حَتَّى يُصَلَّى عَلَيْهِ، إِلَّا أَنْ يَضْطَرَّ لِسَانَ إِلَى ذَلِكَ، وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا كَفَّنَ أَحَدَكُمْ أَخَاهُ، فَلْيُحْسِنْ كَفَنَهُ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه يوه ورځ نبي كريم صلى الله عليه وسلم خطبه ورکړه او په خپلو صحابه کرامو کبسي نې ديوکس ذکر او کړو څوک چه وفات شوې وو او په يولند کفن کبسي دشپې دفن کړې شوې وو نبي صلى الله عليه وسلم منع وفرمائيله دشپې په وخت کبسي دمري ددفن کولونه او په ده باندي دجنازي کولونه مگر هله چه مجبوري وي، اوبيا نې اوفرمائيل په تاسو کبسي چه څوک خپل مسلمان ورور ته کفن ورکوي نو بڼه کفن دي ورکړي.

(فكفن في كفن غير طائل وقبر ليلًا فزجر النبي صلى الله عليه وسلم ان يقبر الرجل بالليل)

مضمون د حديث دا دي: يو ځل رسول الله صلى الله عليه وسلم خطبه ورکړه او په هغه خطبه کبسي رسول الله صلى الله عليه وسلم په خپلو صحابه کرامو رضي الله عنهم کبسي د يو صحابي رضي الله عنه ذکر او کړو چه هغه وفات شوې وو او هغه په کمزوري شان کفن کبسي کفن کړې شوې وو او د شپې دفن کړې شوې وو، رسول الله صلى الله عليه وسلم په دي خطبه کبسي د شپې په دفن کولو باندي نکير اوفرمائيلو مگر دا چه که څه سخته مجبوري وي، او وي فرمائيل چه کله په تاسو کبسي څوک خپل ورور بنخوي نو هغه دي په بڼه کپره کبسي کفن کړي.

په دي حديث کبسي د دفن بالليل نه منع فرمائيلې شوې ده. د حسن بصری مذهب هم دا دي د هغوی په نزد مکروه دي، د جمهورو په نزد بغير د کراهت نه جائز دي، وړاندي په

(۱): انظر حديث رقم: (۳۱۴۲)، (تحفة الأشراف: ۱۸۰۹۴) (صحيح)

(۲): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۰۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۵/۵) (صحيح)

(۳): صحيح مسلم للجناز ۱۵ (۹۴۳)، سنن النسائي للجناز ۲۷ (۱۸۹۶)، (تحفة الأشراف: ۲۸۰۵)، وقد أخرجه: مسند

احمد (۲۹۵/۳) (صحيح)

دې باندي مستقل باب را روان دي، د جمهور د طرف نه د دې حديث جواب دا ورکړې شوي دي چه دا نهی د ترک صلوة د وجې نه ده او لقله المصلين، او لاجل اساءة الکفن او للجمع. والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذري

[۳۱۴۹] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: "أَدْرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ثَوْبِ حَبْرَةٍ، ثُمَّ أَخْرَجَتْهُ."

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و سلم په یوه یمني کپړه کنبې په کفن کړي شو او دفن کړي شو او بیا ترینه لرې کړي شو.

(عن عائشة رضي الله عنها قالت ادراج رسول الله صلی الله علیه و سلم في ثوب حبرة ثم اخر عنه) دا روایت مختصر دي وړاندي د دي تفصيل را روان دي.

[۳۱۵۰] (۲) حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبُرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ عَبْدِ الْكَرِيمِ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ عَقِيلٍ بِنِ مَعْقِلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ وَهْبٍ يَعْنِي ابْنَ مُنْبِهِ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "إِذَا تَوَفَّى أَحَدُكُمْ، فَوَجَدَ شَيْئًا، فَلْيُكْفَنْ فِي ثَوْبِ حَبْرَةٍ."

د جابر رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه د نبی کریم صلي الله عليه وسلم نه مې اوریدلی دی چه فرمائی في: خوک چه په تاسو کنبې وفات شوي او وارثان مال دار وي نو پکار ده چه د حبره کپړي کفن دي ورکړی (ديمن جوړه اعلي کپړه ده).

(اذا توفى احدكم فوجد شيئا فليكن في ثوب حبرة)

يعني په تاسو کنبې چه کله د يو داسې انسان وفات اوشی چه په هغه کنبې مال گنجائش وي نو غوره دا ده چه هغه په يمني کپړو کنبې دفن کړي شی.

[۳۱۵۱] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي، أَخْبَرَنِي عَائِشَةُ، قَالَتْ: "كَفَّنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ثَلَاثَةِ أَثْوَابٍ يَمَانِيَّةٍ بَيْضٍ، لَيْسَ فِيهَا قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَةٌ."

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائی چه رسول الله صلي الله عليه وسلم ته د دري يمني سپينو کپړو کفن ورکړی شو چه قميص او عمامه پکنبې نه وه.

(عن هشام قال اخبرني عائشة رضي الله عنها قالت كفن رسول الله صلی الله علیه و سلم في ثلاثة اثواب يمانية بيض

ليس فيها قميص ولا عمامة)

يعني رسول الله صلی الله علیه و سلم ته خالص سپينو يمني دري خادرو کنبې کفن ورکړې شو. او د دي نه روستو روایت کنبې دي (زاد من كرسف) چه هغه دري واړه کپړي د تار وي،

[۳۱۵۲] (۳) حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَفْصٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ، مِثْلَهُ، زَادَ مِنْ كَرْسَفٍ، قَالَ: فَذَكَرَ لِعَائِشَةَ قَوْلَهُمْ: فِي ثَوْبَيْنِ وَبُرْدٍ حَبْرَةٍ، فَقَالَتْ: قَدْ آتَى بِالْبُرْدِ وَلَكِنَّهُمْ رَدُّوهُ وَلَمْ يُكْفَنُوا فِيهِ.

۱: تفرد به أبو داود، انظر حديث رقم: (۳۱۲۰)، (تحفة الأشراف: ۱۷۵۵۲) (صحیح)

۲: تفرد به أبو داود: (تحفة الأشراف: ۳۱۳۶)، وقد أخرجه: حم (۳۱/۳) (صحیح لغيره)

۳: صحیح البخاري/الجنائز ۱۸ (۱۲۶۴)، ۲۳ (۱۲۷۱)، ۲۴ (۱۲۷۲)، ۹۴ (۱۳۸۷)، (تحفة الأشراف: ۱۷۳۰۹)، وقد أخرجه:

موطا امام مالك/الجنائز ۲ (۵)، مسند احمد (۴۰/۶)، ۹۳، ۱۱۸، ۱۳۲، ۱۶۵، ۲۳۱ (صحیح)

صحیح مسلم/ الجناز ۱۳ (۹۴۱)، سنن الترمذی/ الجناز ۲۰ (۹۹۶)، سنن النسائی/ الجناز ۳۹ (۱۹۰۰)، سنن ابن ماجه/ الجناز ۱۱ (۱۴۶۹)، (تحفة الأشراف: ۱۶۷۸۶)، وقد أخرج: موطأ امام مالك/ الجناز ۲ (۵)، مسند احمد (۱۶۵، ۱۳۲، ۱۱۸، ۹۳، ۴۰/۶) (صحیح)

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه دتيرروايت په شان روايت منقول دي مگر ددي اضافي سره چه دكفن كپره دمالوچوچوره وه، راوي وائی چه عائشې رضي الله عنها ته ووئيلي شول چه صحابه كرامو وئيلي دي چه دنبي صلى الله عليه وسلم كفن ددوه سپينو كپرو او حبري خادر نه وو، عائشې رضي الله عنها او وئيل چه اول حبري خادر راوي شوليكن صحابه كرامو واپس كړو او په دې كښې ئې ورته كفن ورنكړو.

﴿ قال فذكر لعائشة قولهم في ثوبين وبرد حبرة فقالت قد اتى بالبرد ولكنهم ردوه ولم يكفوه فيه ﴾

د رسول الله صلى الله عليه وسلم د كفن متعلق تحقيق كښې د عائشې رضي الله عنها رائي :

يعني عائشې رضي الله عنها ته اوئيلي شو چه بعض خلق خو وائی چه رسول الله صلى الله عليه وسلم په دوه سپينو كپرو او يو برگه يمني كپره كښې كفن كړې شو (او تاسو وايئ چه په درې سپينو كپرو كښې نو هغوی جواب وركړو : بيشكه برگ خادر راوړلې شوې وو خو كفن كونكو هغه واپس كړو په هغې كښې ئې كفن كړې نه وو. او د موطاء په روايت كښې دي ﴿ كفن في ثلاثة اثواب بيض سحولية ﴾ د سين په ضمې سره او په دي كښې فتح هم راغلې ده نسبت دې سحول طرف ته چه د يمن يوه علاقه ده. علامه زرقاني رحمته الله عليه هم د دې روايت د لاندې د كوم چه عائشې رضي الله عنها ترديد كړې دي د احنافو مسلك دا ليكلې دي چه د هغوی په نزد په كفن كښې مستحب دا ده چه په هغې كښې يو ثوب حبره يعني يمني خادر وي، خو د هغوی دا نقل صحيح نه دي، د احنافو په نزد هم بياض ته ترجيح ده فقی البدائع الافضل ان يكون التكفين بالثياب البيض لرواية جابر حرفوعا احب الثياب الى الله تعالى البيض فليلبسها احياءكم وكفنوا فيها موتاكم (اوجز ۴۳۱/۲)

د سړي د كفن په مصداق كښې د ائمه اربعة مسلكونه :

بيا خان پوهول پكار دي چه په دې حديث كښې دا راغلل ﴿ ليس فيها قميص ولا عمامة ﴾ دا باب في الكفن شروع دي چه په هغې كښې بيان د كفن الرجل دي حكه چه ﴿باب في كفن المرأة﴾ وړاندې مستقل را روان دي، د سړي كفن د ائمه ثلاثه احنافو شوافعو او حنابلو په نزد درې كپرې دي، د احنافو په نزد قميص، ازار او لفافه، او د امام شافعي رحمته الله عليه او احمد په نزد ثلاث لفائف، يعني درې خادري دوي دواړه د قميص قائل نه دي، او د امام مالك رحمته الله عليه په نزد د سړي كفن مسنون د دريو په خائي پنځه كپرې دي. د احنافو په شان هغوی د قميص قائل دي، او لفافي د هغوی په نزد دوه دي، او پنځم خيز عمامه ده. يعني قميص ازار لفافتين او عمامه.

په حديث د عائشې رضي الله عنها كښې د چا دليل دي؟

دا حديث د عائشې رضي الله عنها چه په هغې كښې دي ﴿ في ثلاثة اثواب ليس فيها قميص ولا عمامة ﴾ د ائمه ثلاثه مسلك په اعتبار د عدد ثلاث سره خو موافق دي خو چونكه په دې كښې د قميص نفی ده په دې وجه دا د شوافعو او حنابلو دليل شو او د احنافو او د مالكيانو

خلاف، احنافو د دې توجیه داسې کړې ده چه د قميص نه مراد د مطلق قميص نفی نه ده مراد بلکه د جدید یا د مخیط نفی مراد ده ځکه چه وړاندې د ابن عباس رضی الله عنهما په روایت کښې راځی **« کفن رسول الله ﷺ فی ثلاثة اثواب نجرانية، الحلة ثوبان وقميصه الذي مات فيه »** لهذا اوس دا حدیث د عائشې رضی الله عنها زموږ خلاف نه دې، او دا حدیث د عائشې رضی الله عنها د عدد کفن په اعتبار سره د مالکیانو خلاف دې، هغوی د دې توجیه دا کوی چه د عائشې رضی الله عنها مراد دا دې چه په دې دریو کښې دا دواړه داخل نه دی، بلکه د دې نه علاوه دی لهذا ټول پنځه شو.

امام ترمذی رحمته الله باب قائم کړو **« باب ما جاء في كم كفن النبي ﷺ »** او بیانی په هغې کښې هم دا حدیث د عائشې رضی الله عنها **« فی ثلاثة اثواب بيض يمانية ليس فيها قميص ولا عمامة »** ذکر کولو نه پس فرمائیلي دي: قال ابو عيسى حديث عائشة حديث حسن صحيح، وقد روى في كفن النبي ﷺ روايات مختلفة، وحديث عائشة اصح الاحاديث التي رويت في كفن النبي ﷺ والعمل على هذا عند اكثر اهل العلم، وقال سفيان الثوري: يكفن الرجل في ثلاثة اثواب ان شئت في قميص ولفافتين وان شئت في ثلاث لفائف ويجزئ ثوب واحد ان لم يجدوا ثوبين، والثوبان يجزئان، والثلاثة لمن وجدوا احب اليهم، وهو قول الشافعي واحمد واسحاق، وقالوا تكفن المرأة في خمسة اثواب **«** او بيا وړاندې فرمائی: وفي الباب عن علي وابن عباس وعبدالله بن مغفل وابن عمر رضي الله عنهم آه په تخفة الاخوذي کښې د علي رضي الله عنه د حدیث په باره کښې ليکلی دی: اخرج ابن ابي شيبة واحمد والبخاري قال كفن النبي ﷺ في سبعة اثواب، وفي اسناده عبدالله بن محمد بن عقيل، وهو سئ الحفظ لا يصلح الاحتجاج به حديثه اذا خالف الثقات كما هنا، (كذا في النيل) آه د علي رضي الله عنه په دې حدیث کښې دا دی چه رسول الله ﷺ ته په اووه کپرو کښې کفن ورکړې شو، خو دا حدیث ضعیف دې، د دې حدیث عائشې رضی الله عنها د کوم په باره کښې چه امام ترمذی رحمته الله فرمائی، حدیث حسن صحيح، دا د صحاح سته روایت دې پس په تخفة الاخوذي کښې دی اخرج الجماعة.

د کفن درې درجې دي:

خان پوهول پکار دی چه د کفن درې درجې دي يو کفن السنة کوم چه پورته ذکر شو يعنى درې جامې، او کفن الكفاية يعنى دوه کپرې، او دريم قسم کفن الضرورة، وهو ما وجد، يعنى د مجبورئ حالت کښې چه څه هم ملاؤشى.

[۳۱۵۳] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، وَعُمَرَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ يَزِيدَ يَعْنِي ابْنَ أَبِي زِيَادٍ، عَنْ مِقْسَمٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "كَفَّنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ثَلَاثَةِ أَثْوَابٍ نَجْرَانِيَّةٍ الْحُلَّةُ: ثَوْبَانِ وَقَمِيصُهُ الَّذِي مَاتَ فِيهِ"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ عُثْمَانُ: فِي ثَلَاثَةِ أَثْوَابٍ: حُلَّةٌ حُمْرَاءُ، وَقَمِيصُهُ الَّذِي مَاتَ فِيهِ.

دا بن عباس رضي الله عنهما نه مروی دي فرمائی چه نبی ﷺ ته په درې نجراني کپرو کښې کفن ورکړې شوي وو یولنگ یو خادر اوبو قميص په کوم کښې چه وفات شوي وو. ابوداود وائی چه عثمان بن ابي شيبه دا روایت داسې نقل کړې دې چه نبی ﷺ ته په درې کپرو کښې کفن

۱: سنن ابن ماجه للجناز ۱۱ (۱۴۷۱)، (تحفة الأشراف: ۶۴۹۶)، وقد أخرج: مسند احمد (۲۲۲/۱) (ضعيف الإسناد منكر)

ورکړی شوي وويوسورخادر اوبل هغه قميص په کوم کښې چه وفات شوي وو.

﴿ عن مقسم عن ابن عباس..... وقميصه الذي مات فيه ﴾

دا حديث اوس پورته زمونږ په کلام کښې تير شو، ورواه ابن ماجه، قاله المنذرى، خود دې نه

مخکښې ﴿باب فى ستر الميت عند غسله﴾ کښې چه کوم حديث تير شوې دې په هغې کښې

دا تير شوى دى ﴿ففسلوه وعليه قميصه يصبون الماء فوق القميص الخ...﴾

په دې دواړو کښې منافات دې چه په کوم قميص کښې غسل ورکړې شى هم په هغې کښې

کفن کړې شى او دغه شان حديث د ابن عباس رضي الله عنه هم ضعيف دې، انظر التعليق المسجد فيه

دليل الحنفية.

باب كَرَاهِيَةِ الْمَغَالَاةِ فِي الْكَفَنِ

مړى ته د قيمتى كفن وركولو د ممانعت بيان

[۳۱۵۴] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمُحَارِبِيِّ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ هَاشِمٍ أَبُو مَالِكٍ الْجَنْبِيُّ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، قَالَ: لَا تُغَالِ لِي فِي كَفْنٍ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "لَا تُغَالُوا فِي الْكَفْنِ، فَإِنَّهُ يُسَلَبُهُ سَلْبًا سَرِيعًا".

د علي رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه زما د پاره په كفن كښې ډيره قيمتي كپړه مه استعمالوي، ماد نبى عليه السلام نه اوريدلي دي چه فرمائيل ئې چه تاسو په كفن كښې دحدنه تجاوز مه كوي ځكه چه دا ډيرزر خرابيږي (يعنى فضول خرچي).

﴿ عن علي بن ابي طالب رضي الله عنه قال لا تغالى في كفن ﴾

د حديث د يو مشكل لفظ تحقيق :

﴿ لا تغالى ﴾ د دې لفظ په باره كښې په بذل كښې دا دى چه بصيغة المجهول من المغالاة خو په

دې باندې اشكال دې چه د تانيث څه وجه ده؟ ﴿ لا يغالى ﴾ پكار وو او زمونږ استاد مولانا

اسعد الله صاحب رحمته الله ليكلي دى، ﴿ لعله لا تغالى ﴾ يعنى د باب تفاعل نه مصدر، او په مصرى

نسخو كښې دا لفظ داسې دې ﴿ لا تغال لى فى الكفن ﴾ په دې صورت كښې به دا د نهى

صيغه وي دپاره د مخاطب د مغالاة نه، او په بعض نسخو كښې دى، ﴿ لا يغالى ﴾ قال الشيخ

محمد عوامه : وهو اظهر ليكون كلام عاما ليس خاصا لمخاطب معين فى حق شخص معين آه

علي رضي الله عنه فرمائي چه په كفن كښې مغالاة نه دى كول پكار، يعنى زيات قيمت

اختيارول، ځكه چه ما د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه اوريدلى دى هغوى به فرمائيل چه كفن د زيات

قيمت ولا مه جوړوي ځكه چه هغه د مړى نه ډير زر سلب كولى شى، يعنى خاورې هغه

اوخورى نو څه فائده ده په قيمتى جوړولو كښ.

١: تفرد به ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ١٠١٤٩) (ضعيف)

[۳۱۵۵] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ خَبَابٍ، قَالَ: إِنَّ مُصْعَبَ بْنَ عَمِيرٍ قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ إِلَّا نَمْرَةٌ، كُنَّا إِذَا غَطَيْنَا بِهَا رَأْسَهُ، خَرَجَ رَجُلًا، وَإِذَا غَطَيْنَا رِجْلَيْهِ، خَرَجَ رَأْسَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "عَطُوا بِهَا رَأْسَهُ، وَاجْعَلُوا عَلَى رِجْلَيْهِ شِقَاقِينَ الرَّذْخِ".

د خباب رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مصعب بن عمیر رضي الله عنه دا حد په ورځ شهید شو او دهغه سره د کفن دپاره دیوی کپړي نه علاوه نورڅه نه وو او هغه خادر هم دومره وړوکې وو که چرې مونږ پرې دده پښې پټولې نوسر ئې بریند پاتې کیدو او که سرمو پټولې نو پښې ئې بریندې پاتې کیدي په دې وخت کښې نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه دده سر پټ کړئ او په پښو ئې سرگړې واچوئ

(عن خباب قال ان مصعب بن عمير رضي الله عنه قتل يوم احد ولم يكن له الا نمرة الخ)

یعنی مصعب بن عمیر رضي الله عنه په احد کښې شهید شوي وو او د کفن دپاره هیڅ خیز نه وو سوا د هغوی د یو برگ او مختصر خادر نه چه په هغې کښې کفن کولې شو، که هغه به ئې د سر طرف ته کولو نو خپې به ئې ښکاره کیدې او که د خپو طرف ته به ئې کولو نو سر به ئې ښکاره کیدو، رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه دا دې د سر طرف ته کړې شی او په خپو دې ورته سرگړې واچولې شی هم دا هغه دې کوم ته چه فقهاء کرام کفن الضرورة وائی

د مصعب بن عمیر رضي الله عنه ذکر :

دا مصعب بن عمیر رضي الله عنه د چا چه دا واقعه ده په اوچتو صحابه کرامو رضي الله عنهم کښې دې قدیم الاسلام او په مهاجرین اولین کښې دې، د اسلام راوړلو نه مخکښې په وړوکوالی کښې ډیر نیاز بین وو، ډیر ښه ژوند ئې تیروولو او ښکلې جامه به ئې اچوله، لیکلې شوې دی چه د مور پلار ورسره ډیره مینه وه او مور به ورته د غوره نه غوره لباس اچولو، د رسول الله صلی الله علیه و آله سره په جنگ بدر کښې شریک شو او په احد کښې شهید شو، لکه چه په پورته روایت کښې ذکر دی، په ترمذی کښې د هغوی په باره کښې د علی رضي الله عنه روایت موجود دې چه یو ورځ مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله سره په مسجد نبوی صلی الله علیه و آله کښې ناست وو چه ناڅاپه مصعب بن عمیر رضي الله عنه مخې ته راغلو په داسې حال کښې چه د هغوی په بدن باندي صرف یو خادر وو او په هغې کښې هم پیوندونه وو، چه کله رسول الله صلی الله علیه و آله هغوی په داسې حالت کښې اولیدل نو په ژړا شوه هغوی په تیر حالت اود موجوده حالت په تفاوت لیدلو باندي. الحديث (اسد الغابة)

والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي. قاله المنذرى

[۳۱۵۶] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ حَاتِمِ بْنِ أَبِي نُضَيْرٍ، عَنْ عَبَادَةَ بْنِ نُسَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "خَيْرُ الْكُفْرِ الْحُلَّةُ، وَخَيْرُ الْأَهْلِيَّةِ الْكُفُّ الْأَقْرَنُ".

۱: صحيح البخاري/الجنائز ۲۷ (۱۲۷۶)، ومناقب الأنصار ۴۵ (۳۹۱۳)، والمغازي ۱۷ (۴۰۴۷)، ۲۶ (۴۰۸۲)، والرقاق ۷ (۶۴۳۲)، ۱۶ (۶۴۴۸)، صحيح مسلم/الجنائز ۱۳ (۹۴۰)، سنن الترمذي/المناقب ۵۴ (۳۸۵۳)، سنن النسائي/الجنائز ۴۰ (۱۹۰۴)، (تحفة الأشراف: ۳۵۱۴، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۰۹/۵، ۱۱۲، ۳۹۵/۶) (صحيح)

۲: سنن ابن ماجه/الجنائز ۱۲ (۱۴۷۳)، (تحفة الأشراف: ۵۱۱۷) (ضعيف)

دعبادة بن الصامت نه روایت دي چه نبی ﷺ فرمائيلى دى بهترين كفن جوړه ده (قميص اولنگ او غوره قرباني دښكرو والاگه دي).

(خير الكفن الحلة، وخير الاضحية الكبش الاقرن)

حله خو دوه كپړې وى ازار او رداء حال دا چه مسنون بالاتفاق درې كپړې دي، لهذا دا به وئيلې شى چه د حلة لهتر والى او افضليت به د ثوب واحد په اعتبار سره وى، او بله دا چه بعض علماء كرامو د دې حديث د وجې نه دا وئيلې دي چه په كفن كښې غوره دا ده چه هغه يمنى خادرې وى كوم چه برگ وى، ملا على قارى رحمته الله فرمائي: خو اصح دا ده چه ابيض افضل دي د حديث عائشة رضي الله عنها د وجې نه. د دې نه روستو په حديث كښې دى بهترين د قرباني والا خاروې د ښكرو والاگه دي، دا ليكلې دي چه كيدې شى وجه د فضيلت ئې دا وى چه كفش اقرن عام طور سره سمين او جسيم وى، يا د حسن صورت په اعتبار سره فرمائيلى شوې دي چه د ښكرو والا زيات ډولى او ښكلې ښكاره كيږي. (بذل) والحديث اخرجه ابن ماجه مقتصرًا منه على ذكر الكفن، قاله المنذرى

بَابُ فِي كَفَنِ الْمَرْأَةِ

بښخې ته د كفن وركولو بيان

د زنانه د كفن تفصيل د ائمه اربعه په نزد:

د زنانه مسنون كفن پنځه كپړې دي د جمهورو په نزد او په هغوى كښې ائمه ثلاثه هم دي هغه پنځه د امام شافعي رحمته الله او احمد رحمته الله په نزد دا دي: ازار، قميص، خمار، لفافتين، او د امام مالك په نزد اووه دي د هغوى په نزد لفافې د دوو په خائي څلور دي، زمونږ فقهاء كرامو د دې پنځو كپړو نه داسې تعبير كړې دي: ازار، قميص، لفافه، خمار، (سربند) او خرغه (سینه بند) چه د هغې په ذريعه د هغې سينې پټولې شى، او خمار كوم چه په سر باندي تړلې شى او بيا د هغې په ذريعه ويښته پټ كړې شى كوم چه په سينه باندي پراته وى چه د هغې ترتيب داسې ليكلې شوې دي چه اول دي په سر باندي لفافه خوره كړې شى د هغې دپاسه ازار، د هغې دپاسه خرغه، د هغې دپاسه خمار او د ټولو نه دپاسه قميص، اول دي ورته قميص واغوندى بغير د لستونږو نه، د دې نه پس دي په خمار باندي د هغې سره او تړلې شى او په سينه باندي چه كوم ويښته دى هغه دي پټ كړې شى، د دې نه پس دي په خرغه باندي د هغې سينې او تړلې شى بيا دي ورته ازار واغوستلې شى، روبي به د كس طرف نه راټولولې شى او د دې نه پس د ښى طرف نه چه ښې پلو پرې دپاسه وى بيا به هم دغه شان لفافه راټولولې شى

[۳۱۵۷] (۱) حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنِ ابْنِ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي وَكَانَ قَارِئًا لِلْقُرْآنِ، نُوحُ بْنُ حَكِيمٍ الثَّقَفِيُّ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي عَرُوثَةَ بْنِ مَسْعُودٍ يُقَالُ لَهُ دَاوُدُ قَدْ وُلِدَتْهُ أُمُّ حَبِيبَةَ بِنْتُ أَبِي سَفْيَانَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. عَنْ لَيْلَى بِنْتِ قَائِبِ الثَّقَفِيَّةِ، قَالَتْ: كُنْتُ فِيمَنْ غَسَلَ أُمَّ كَلْبُومَ بِنْتَ

۱: تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۰۵۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۸۰/۶) (ضعيف)

رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ وَقَاتِمَا، فَكَانَ أَوَّلَ مَا أُعْطَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْحَقَاءَ، ثُمَّ الذَّرْعَ، ثُمَّ الْخِمَارَ، ثُمَّ الْمَلْحَفَةَ، ثُمَّ أَذْرَجَتْ بَعْدُ فِي الثُّوبِ الْآخِرِ، قَالَتْ: وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ عِنْدَ الْبَابِ، مَعَهُ كَفْنُهَا، بِنَاوِلْنَاهَا ثَوْبًا ثَوْبًا.

دليلي بنت قانف رضي الله عنها نه روایت دي فرمائي چه زه په هغه بنخو کښې وم چاچه دنبي صلی الله علیه و آله لورام کلثوم ته غسل ورکړې وو دهغې دوفات په وخت کښې، دهرڅه نه مخکښې مونږ ته نبی صلی الله علیه و آله خپل لنگ راکړې وو اوبياقميص بيا يوخادر اوبو سربند اويوه کپړه ئې بله راکړه چه دبره طرف نه په کښې اونغبنتل شوليلي وائي نبی صلی الله علیه و آله ددروازې سره ناست وو اودکفن کپړې ورسره وي او مونږ ته به ئې يوه يوه کپړه راکوله.

﴿ عن رجل من بنی عروه بن مسعود یقال له داؤد قد ولدته ام حبیبة بنت ابی سفیان رضي الله عنه ﴾
یعنی د قبيله بنو عروه یو سړې چه د هغه نوم داؤد دي کوم چه د ام حبیبة رضي الله عنها مخکښې پیدا شوي وو یعنی کومه دائی چه د پیدائش په وخت زنانه سره وی هغه ام حبیبة رضي الله عنها بنت ابی سفیان رضي الله عنه وه، دا ذکر کړې شوې سړې روایت کوی د لیلی بنت قانف نه چه صحابیه ده هغه فرمائي چه زه په هغه زنانو کښې یم چا چه د رسول الله صلی الله علیه و آله لورام کلثوم رضي الله عنها ته غسل ورکړې وو، هغه فرمائي چه د غسل نه پس د تکفین په وخت رسول الله صلی الله علیه و آله په داسې حال کښې چه هغوی په دروازه کښې ناست وو د کفن کولو دپاره د کفن کپړې په دې ترتیب سره راکړې اول حقاء یعنی ازار بيا قميص بيا ملحفه (لقافه) بيا په يوه بله کپړه کښې هغه راغونډه کړې شوه (لقافه ثانیه) هغه فرمائي چه رسول الله صلی الله علیه و آله دروازي سره ناست وو رسول الله صلی الله علیه و آله سره د ام کلثوم رضي الله عنها کفن وو، يوه يوه کپړه به ئې مونږ ته په ترتیب سره راکوله، د دې حدیث نه معلومه شوه چه دا خو ظاهره ده چه د زنانو غسل او تجهیز او تکفین خو کوی زنانه، خو سړوله په خپله نگرانی کښې په زنانو باندې دا ټول کارونه کول پکار دی.

بَابُ فِي الْمِسْكِ لِلْمَيِّتِ په مری د مشکو لگولو بیان

[۳۱۵۸] حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا الْمُسْتَمِرُّ بْنُ الرِّثَّانِ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "أَطْيَبُ طَيْبِكُمُ الْمِسْكُ".

دابوسعید خدری رضي الله عنه نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائيلى دی ستانوپه خوشبوگانو کښې بهترینه خوشبو مشک دي.

او امام بخاری رضي الله عنه باب قائم کړې دي ﴿ باب الحنوط للميت ﴾ او په دې کښې ئې د ابن عباس رضي الله عنهما هغه حدیث ذکر کړې دي چه په هغې کښې دا دی چه د حجة الوداع په کال یو صحابی په عرفات کښې د خپلې اوبښې نه غورځیدو سره وفات شو د هغوی په باره کښې رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائيلى ﴿ ولا تحنطوه ولا تخمروا راسه ﴾ چه په دة باندې خوشبوئی مه لگوی او نه ورله سر پټ کړی دا سړې به د قیامت په ورځ د احرام په حالت کښې پاسی.

۱: سنن النسائي/الجنائز ۴۲ (۱۹۰۷)، (تحفة الأشراف: ۴۳۸۱)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للأدب ۵ (۲۲۵۲)، سنن الترمذي/الجنائز ۱۶ (۹۹۱)، مسند احمد (۳۷۳، ۴۰، ۴۶، ۶۲) (صحيح)

گویا امام بخاری رحمته الله د دې حدیث د مفهوم مخالف نه د غیر محرم مړی دپاره حنوط ثابت کړل، پس په فتح الباری ۱۶۳/۳ کښې دې **(قال البيهقي فيه دليل على ان غير المحرم يحنط كما يخمر راسه آه)** او امام ابوداؤد رحمته الله حدیث الباب **(اطيب طبيكم المسك)** لره راوړلو سره گویا د عموم د حدیث نه استدلال کړې دې چه په دې کښې ژوندی او مړی دواړه برابر دی.

د ترجمة الباب والا مسئله کښې د علماء کرامو اختلاف :

امام ترمذی رحمته الله هم بعینه هم دغه شان ترجمة الباب او هم دا حدیث ذکر کړو او بیا ئې وړاندې او فرمائیل **(والعمل على هذا عند بعض اهل العلم وهو قول احمد واسحاق، وقد ذكره بعض اهل العلم المسك للميت)** په دې باندې په تحفة الاخوذی کښې لیکلی دی **(لم اقف على وجه الكراهة والحق هو الجواز آه)** د حضرت شیخ په حاشیه د بذل کښې په دې باندې تفصیلی لیکل شوې دی د مختلفو شراحو نه د دې په باره کښې نقل کړی دی، علامه عینی رحمته الله فرمائی چه د اکثر علماء کرامو په نزد دا جائز ده وبه قال مالک والشافعی واحمد واسحاق وکرهه عطاء والحسن ومجاهد، وقالوا انه ميتة الخ بله دا چه شیخ د ازالة الخفاء ۹۸/۲ نه نقل کړی دی چه عمر رحمته الله او فرمائیل چه زما دپاره مشک په خوشبویئ کښې مه استعمالوئ، **(لا تحنطوني بمسك)** قال الشيخ لعله كره لان فيه دليل الاباحة والحرمة، خو هم په دې ازالة الخفاء کښې په بل ځای کښې دا هم لیکلې شوې دی چه عمر رحمته الله به په ژوند باندې خو مشک استعمالول خو وصیت ئې دا او فرمائیلو چه زما نه پس زما دپاره دا مه استعمالوئ، **(وكان الحسن يكرهه للميت لا للحی آه)** د مشک حقیقت چونکه دم منجمد دې نو کیدې شی هم په دې وجه باندې بعض خلقو ته د دې په استعمال کښې تردد پیدا شوې دې، حضرت شیخ لیکلی چه که دا وجه وې نو بیا په دې حکم کښې مړی او ژوندی یو شان پکار وو یا به بله څه وجه وی والله تعالی اعلم (هامش البذل) والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری

باب التَّعْجِيلِ بِالْجَنَازَةِ وَكَرَاهِيَةِ حَبْسِهَا

د مړی په تجهیز او تکفین کښې د عجلت کولو او د ایسارولو د کراهت بیان

یو باب د څو ابوابو نه پس را روان دې **(باب الاسراع بالجنابة)** په دواړو کښې فرق دې، په دې باب کښې د تعجیل نه مراد تعجیل فی التجهيز والتكفين دې، او په وړاندې باب کښې د اسراع نه مراد اسراع فی المشی ده لکه چه د دواړو ابوابو دا حدیثونه معلومیري.

[۳۱۵۹] () حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ بْنُ مُطَرِّفٍ الرَّوَّاسِيُّ أَبُو سُهَيْبَانَ، وَأَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، قَالَا: حَدَّثَنَا عَيْسَى، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هُوَ ابْنُ يُونُسَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْبَلْخَوِيِّ، عَنْ عَزْرَةَ، وَقَالَ عَبْدُ الرَّحِيمِ: عَزْرَةُ بِنْتُ سَعِيدِ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ الْمُحْصِنِ بْنِ وَحُوحٍ: أَنَّ طَلْحَةَ بْنَ الْبَرَاءِ مَرَّضٌ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُهُ، فَقَالَ: "إِنِّي لَا أَرَى طَلْحَةَ إِلَّا قَدْ حَدَّثَ فِيهِ الْمَوْتُ، فَأَذِنُونِي بِهِ، وَعَجَّلُوا، فَإِنَّهُ لَا يَنْبَغِي لِحَبِيفَةِ مُسْلِمٍ أَنْ يُحْبَسَ بَيْنَ ظَهْرَانِي أَهْلِيه".

۱: تفرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۳۴۱۸) (ضعيف)

د حصین بن وحوح رضی اللہ عنہ نه روایت دي طلحه بن براء رضی اللہ عنہ مریض شو او نبی صلی اللہ علیہ وسلم دده دعیادت دپاره راغې رسول الله او فرمائیل طلحه نه وینم زما خیال دي چه په هغه باندي دمرگ اثار سرگند شوي دي خو کله چه وفات شي ماخبر کړي او توندي وکړي دهغه په خښولو ځکه چه مناسب نه دی چه د مسلمان مړي دي دتکفین او تجهیزنه بغیر دخپل اهل سره پروت وي.

قوله: «ان طلحة بن البراء رضی اللہ عنہ مرض فاته النبي صلی اللہ علیہ وسلم يعودہ فقال اني لا اری طلحة الا قد حدث فيه الموت الخ»: یعنی طلحة بن البراء رضی اللہ عنہ چه کله بيمار شو نو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ئې د تپوس دپاره تشریف یووړو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم هغوی ته کتلو سره او فرمائیل چه زه وینم چه د دوی د مرگ وخت نزدې راغلی دي، پس ماته دده خبر راکړي او تادی کوي، یعنی د هغه په تیاري کښ، ځکه چه د مسلمان د مړي دپاره دا مناسب نه ده چه هغه دي د کور د خلقو تر مینځه اوساتلې شي، په تعجیل کښې مصحلت:

په دي باندي علامه طیبی رحمۃ اللہ علیہ فرمائي چه مومن انسان د الله پاک په نزد او د انسانانو په نزد هم قابل اکرام او معزز وی خو د روح وتلو نه پس چه کله هغه بدن بې ساه پاتي شي نو په دي حیثیت سره طبیعتونه د هغه نه متوحش او متنفر شي هغه وخت هغه د هغوی په سترگو کښې مانوس او مرغوب فیه نه پاتي کیږي، په دي وجه مناسبه هم دا ده چه هغه دي سمدستی پټ کړي شي، سبحان الله... د احکام شرعيه مصلحتونه او گوري.

بَابُ فِي الْغُسْلِ مِنَ غَسْلِ الْمَيِّتِ

بیان د غسل کولو دهغه چا دپاره څوکه چه مړي ته غسل ورکړي

یعنی کوم انسان چه مړي ته غسل ورکړي هغه به روستو خپله هم غسل کوي؟

[۳۱۶۰] حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشِيرٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا، حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ شَيْبَةَ، عَنْ طَلْحِ بْنِ جَبِيْبِ الْعَنْزِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّهَا حَدَّثَتْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَغْتَسِلُ مِنْ أَرْبَعٍ: مِنَ الْجَنَابَةِ، وَيَوْمَ الْجُمُعَةِ، وَمِنَ الْحِجَامَةِ، وَغَسَلَ الْمَيِّتَ.

ام المومنین عائشة رضی اللہ عنہا نه روایت دي فرمائي چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم به په څلورو وجوباندي غسل کول دجنابت نه او دجمعي په ورځ دښکر لگولونه او دمړي دلمبولونه.

قوله: «عن عائشة رضی اللہ عنہا ان النبي صلی اللہ علیہ وسلم كان يغتسل من اربع من الجنابة ويوم الجمعة من الحجامة وغسل الميت»: دا حديث په كتاب الطهارة «باب غسل الجمعة» كښې تیر شوې دي، په دي كښې دا دي چه رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم به د حجاجت د وجې نه غسل فرمائیلو او د غسل ميت د وجې نه هم، خو د حجامت نه پس د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم غسل کول ثابت نه دی، صرف غسل محاجم ثابت دي او دا حديث ضعيف دي د مصعب بن شيبه د وجې نه، بله دا چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم چا مړي ته غسل ورکول هم ثابت نه دی، اول خو دا حديث ضعيف دي يا به د دي تاويل داسې کولې شي چه د غسل نه مراد امر بالغسل دي.

(۱): انظر حديث رقم: (۳۴۸)، (تحفة الأشراف: ۱۶۱۹۳) (ضعيف)

[۳۱۶۱] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي ذَلْبٍ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "مَنْ غَسَلَ الْمَيِّتَ، فَلْيَغْتَسِلْ، وَمَنْ حَمَلَهُ، فَلْيَتَوَضَّأْ".

د ابوهريره نه روایت دي فرمائی چه رسول الله ﷺ فرمائیلی دی چاچه غسل ورکړل مړي ته نو دي غسل وکړي او چاچه جنازه پورته کړه نو هغه دي اودس اوکړي
په مسئله الباب کښي د علماء گرامو اختلاف :

امام خطابی رحمته الله فرمائی : زما په علم کښي نشته دا خبره چه د يو فقيه په نزد دي مړي ته غسل ورکولو سره غسل واجب وي () او هم دغه شان نه په حمل کولو د مړي باندې اودس شته، او ظاهره دا ده چه امر په دي کښي د استحباب دپاره دي، چه د هغې دا وجه کيدي شي چه مړي ته غسل ورکونکي د خاڅکو نه محفوظ او په امن نه وي او ډير کرته د مړي په بدن باندې نجاست هم وي نو په دي لحاظ سره غسل ورکونکي ته د غسل کولو حکم اوکړي شو، او کوم چه په حديث کښي دي (ومن حملة فليتوضأ) د دي معنی دا کيدي شي چه مړي اوچتونکو يعني جنازه اوړونکو له پکار دي چه هغوی دي د مخکښي نه په اودس کښي وي د مانځه په تياري کښي، او حافظ ابن قيم رحمته الله په تهذيب السنن کښي په دي کښي دري مذاهب ليکلي دي، مطلقا وجوب، دا مسلک د ابن المسيب او ابن سيرين رحمته الله دي، مطلقا عدم وجوب دا مسلک د ائمه اربعه دي، د کافر مړي ته د غسل ورکولو نه د غسل واجب کيدل، دا يو روایت دي د امام احمد رحمته الله آه پس وړاندې يو مستقل باب را روان دي (باب الرجل يموت له قرابة مشرك) چه په هغې کښي د علي رحمته الله دا حديث ذکر کړي شوي دي هغوی فرمائی چه کله زه د رسول الله ﷺ د حکم مطابق د ابوطالب د دفن کولو نه پس راغلم نو هغوی ماته د غسل کولو حکم راکړو خو په هغه واقعه کښي غسل من غسل الميت الکافر نشته بلکه غسل من دفن الميت الکافر دي، د ائمه اربعه مذاهب په دي کښي دا دي د امام احمد رحمته الله په نزد د غسل ميت نه غسل کوم سنت دي کما في الروض المربع، او د امام مالک رحمته الله نه دوه روايتونه دي يو د جوب او يو د استحباب، د امام شافعي رحمته الله هم دوه اقوال دي يو د استحباب وهو القول الجديد والقديم الوجوب، او يو روایت د امام شافعي رحمته الله نه دا دي چه (ان صح الحديث لقلت بوجوبه) او د احنافو په نزد اصالة خو مستحب نه دي خو خروجا عن الخلاف (۳) مستحب دي او په ترمذي کښي دي: (وقد اختلف اهل العلم في الذي يغسل الميت فقال بعض اهل العلم من اصحاب النبي رحمته الله وغيرهم اذا غسل ميتا فعليه الغسل وقال بعضهم عليه الوضوء وقال مالك بن انس استحباب الغسل من غسل

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۴۲۷۵)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للجناز ۱۷ (۹۹۳)، سنن ابن ماجه للجناز ۸ (۱۴۶۳) (صحيح)

(۲) په دي باندې حافظ تعقب کړي دي حيث قال كانه مادري ان الشافعي في البويطي علق القول به علي صحة الحديث والخلاف فيه ثابت عند المالكية وصار اليه بعض الشافعية آه من الاجز ۲/۲۲۹

(۳) ځکه چه د بعضو په نزد واجب دي د هغوی په رعایت کښي (۱۲)

المیت ولا ادري ذلك واجبا، وهكذا قال الشافعي، وقال احمد من غسل ميتا ارجو ان لا يجب عليه الغسل، واما الوضوء فاقبل ما قيل فيه، وقال اسحق لا بد من الوضوء، وروى عن عبدالله بن المبارك انه قال لا يغتسل ولا يتوضأ من غسل الميت آه) د امام ترمذی رحمہ اللہ د کلام نه معلومه شوه چه په دې مسئله کښې درې مسلکونه دي، د بعض صحابه کرامو رضي الله عنهم په نزد غسل واجب دې لکه ابوهريره رضي الله عنه کما قيل او د بعضو علماء کرامو لکه اسحاق بن راهويه د هغوی په نزد اودس واجب دې او بعض علماء کرام لکه ابن المبارک د هغوی مسلک مطلق د عدم استحباب دې، لا الغسل ولا الوضوء...

[۳۱۶۲] (۱) حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ إِسْحَاقَ مَوْلَى زَائِدَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، بِمَعْنَاهُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا مَنْسُوخٌ، وَسَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ، وَسَبَلَ عَنِ الْغُسْلِ مِنْ غَسْلِ الْمَيِّتِ، فَقَالَ: يُجْزِيهِ الْوُضُوءُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَدْخَلَ أَبُو صَالِحٍ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَبِي هُرَيْرَةَ فِي هَذَا الْحَدِيثِ، يَعْنِي إِسْحَاقَ مَوْلَى زَائِدَةَ، قَالَ: وَحَدِيثٌ مُصْعَبٌ ضَعِيفٌ، فِيهِ خِصَالٌ لَيْسَ الْعَمَلُ عَلَيْهِ.

د ابوهريره نه د تير روايت په شان روايت منقول دې، ابوداود وائي دا حديث منسوخ دې ماد احمد بن حنبل نه اوريدلی دی کله چه دهغه نه تپوس او شو د غسل کولو په باره کښې په وجه د غسل ورکولو مري ته نووئي فرمائيل اودس ورله کاني دې، ابوداود وائي چه ابوصالح په دې حديث کښې خپل او ابوهريره په مينځ کښې اسحق داخل کړې دې او وئيلي يسي دي چه دمصعب په روايت کښې څه داسې خيزونه دی کوم چه ضعيف دي او په هغې عمل نشته.

﴿ قال ابوداؤد ادخل ابوصالح بينه وبين ابي هريرة في هذا الحديث يعني اسحاق مولى زائدة ﴾ مصنف رحمہ اللہ فرمائي چه د دې په سند کښې ابوصالح د خپل خان او ابوهريره رضي الله عنه ترمنيځه د اسحاق مولى زائدة واسطه ذکر کړې ده، يعنى اگر چه هغه د دوى شاگرد دې خو د دې باوجود واسطه ده، د دې نه پس په دې خان پوهول پکار دی چه دا روايت په ترمذی کښې هم دې په هغې کښې د ابوصالح او ابوهريره رضي الله عنه ترمنيځه دا واسطه نشته، ﴿ عن سهل بن ابي صالح عن ابيه عن ابي هريرة ﴾ لهذا دا د ترمذی والا سند منقطع شو، او د امام شافعي رحمہ اللہ په کلام کښې دا دی چه دا حديث زما په نزد قوی په دې وجه نه دې چه دا حديث داسې روايت دې ﴿ عن سهل بن ابي صالح عن ابيه عن ابي هريرة ﴾ او بعض حفاظو په دې سند کښې د ابوصالح او ابوهريره ترمنيځه اسحاق داخل کړې دې او وئيلې شوی دی چه ابوصالح دا حديث د ابوهريره رضي الله عنه نه نه دې اوريدلې، کذا في تهذيب السنن لابن القيم. حافظ ابن القيم په دې باندي تفصيلی کلام کړې دې.

﴿ قال وحديث مصعب فيه خصال ليس العمل عليه ﴾ وفي البذل : وفي حاشية الكانفورية في رواية ابن داسه : حديث مصعب ضعيف آه او د ضعف وجه خپله هم دا مصعب بن شيبه راوی دې، په ده باندي کلام او جرح په كتاب الطهارة ﴿ باب السواك من الفطرة ﴾ کښې تير شوې دې،

(۱): تفرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۱۸۴) (صحیح)

د امام مسلم په نزد دا ثقه او قوی دې او د امام بخاری رحمتهما علیهما او نسائی رحمتهما علیهما په نزد ضعیف دې، مصنف رحمتهما علیهما فرمائی چه په دې حدیث باندې د علماء کرامو عمل نشته یعنی د دې حدیث په بعض اجزاء باندې کالغسل من غسل المیت گڼي بعض خو اجماعی دی.

بَابُ فِي تَقْبِيلِ الْمَيِّتِ

د مړي د بشکولو بڼيان

[۳۱۶۳] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "يَقْبِلُ عُثْمَانَ بْنَ مَطْعُونٍ وَهُوَ مَيِّتٌ. حَتَّى رَأَيْتُ الدَّمْعَ تَسِيلُ".

د عائشه رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه مانبي عليه السلام اولیدو چه عثمان بن مظعون رضي الله عنه نې بشکل کړو او هغه مړ وو تردې چه ما دهغه اوبسکي مبارکي اوليدي چه بهیدلي (عثمان بن مظعون د نبی عليه السلام رضاعي ورور وو او د مهاجرینونه وو).

(عن عائشة رضي الله عنها قالت رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقبل عثمان بن مظعون وهو ميت حتى رايت الدموع تسيل)

دا عثمان بن مظعون رضي الله عنه د رسول الله صلى الله عليه وسلم رضاعي ورور دې د هجرت نه دوه کاله او درې میاشتي پس د هغه په مدینه طيبه کښي وفات اوشو وهو اول من دفن بالقيع، رسول الله صلى الله عليه وسلم د وفات نه پس د هغوی تقبيل او فرمائيلو د صديق اکبر رضي الله عنه په باره کښي هم راځي چه هغوی هم د وفات نه پس د رسول الله صلى الله عليه وسلم تقبيل فرمائيلي وو.

د مړي د غسل په علت کښي د علماء گرامو اقوال:

دلته يو بحث دې چه د مړي د غسل علت څه دې، فقيل تعبدی، وقيل للتطهير من الحدث او النجاسة، وقيل للتنظيف، په کتاب الطهارة کښي دا مسئله تيره شوې ده، چه ماء مخلوط بشي طاهر یعنی کومو اوبو سره چه څه پاک څيز يو ځانې شي لکه صابون او اشنان يا د دې نه علاوه بل څيز، چه د هغې د وجې نه د اوبو په اوصاف ثلاثه کښي يو وصف متغير شوې وي په دې سره ازاله د احداث جائز ده يا نه، د ائمه ثلاث په نزد نه ده جائز د هغوی په کتابونو کښي د دې خبرې تصريح ده، د احنافو په نزد جائز ده وهو رواية عن احمد كما في المغني، د احنافو په دلائلو کښي يو دليل مړي ته په اوبه او بيرو سره غسل ورکولو والا روايات هم دي، ځکه چه ظاهره ده چه ماء سدر ماء مخلوط دی او د جمهورو په نزد په دې سره تطهير جائز نه دې هم دغه شان دا حضرات د دې حدیث مختلف توجيها ت بيانوي، يو تاويل دا کړې شوې دې چه د مړي غسل د تنظيف دپاره دې د تطهير دپاره بالکل هم نه دې، زين ابن المنير هم دا ليکلي دی، او يو دا توجيه دا کړې شوې ده چه د سدر استعمال په ټولو غسلاتو کښي نه ده بلکه يو ځل په شروع کښي يا په آخیر کښي ماء قراح (ساده اوبه) استعمال کول مراد دی، يو توجيه دا کړې شي ده چه سدر لره په اوبو کښي اچولو سره

(۱) سنن الترمذي/الجنائز ۱۴ (۹۸۹)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۷ (۱۴۵۶)، (تحفة الأشراف: ۱۷۴۵۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴۳۸، ۵۵، ۲۰۶) (صحیح)

استعمالول مراد نه دی بلکه د دې د استعمال یو شکل دا هم دې چه د بیرې پانړو لره په اوبو کښې لوندولو سره د هغې نه په بدن باندې اومرلې شی او بیا روستو خالص اوبو استعمال کړې شی، ونحو ذلک من التوجیهاث..... اوس که غسل د تنظیف دپاره اومنلې شی نو بیا خو په تقبیل میت کښې هیڅ اشکال نشته او که د تطهیر دپاره دې نو بیا اشکال کیدې شی، او په دې سلسله کښې د احنافو مذهب په حاشیه د لامع ۱۰۹/۲ کښې د بدائع نه دا نقل کړې شوې دې چه په دې کښې محمد بن شجاع بلخی خو دا فرمائیلې دی چه انسان په مرگ سره نه نجس کیږی کرامه له ځکه چه که هغه هم د عام حیواناتو په شان د مرگ په وجه ناپاک کیدې نو بیا به په غسل سره د پاکیدو حکم نه ورکړې کیدو، خو زمونږ د اکثر و مشائخو نه دا منقول دی چه د مرگ په وجه باندې انسان هم ناپاک کیږی لما فیه من الدم المسفوح څنگه چه نور حیوانات ناپاکه کیږی په کومو کښې چه دم مسفوح دې خو فرق د نور حیواناتو او د انسان دا دې چه انسان بعد الموت د غسل نه پس پاکیږی کرامه له، پس د امام محمد رضی الله عنه نه منقول دی چه مړې په کوهی کښې او غورزیږی د غسل نه مخکښې نو کوهی ناپاکه کیږی په خلاف د بعد الغسل (غورخیدو).

بَابُ فِي الدَّفْنِ بِاللَّيْلِ

د شپې د مړی د دفن کولو بیان

[۳۱۶۴] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمٍ بْنُ بَرِيْعٍ، حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَوْ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: رَأَى نَاسًا نَارًا فِي الْمَقْبَرَةِ، فَأَتَوْهَا، فَأَذَارَسُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْقَبْرِ، وَإِذَا هُوَ يَقُولُ: "نَاوَلُونِي صَاحِبَكُمْ"، فَإِذَا هُوَ الرَّجُلُ الَّذِي كَانَ يَرْفَعُ صَوْتَهُ بِالذِّكْرِ.

د جابر بن عبد الله نه روایت دې فرمائی چه مونږ په قبرستان کښې رنړا اولیدله چه ورغلو نو ومولیدل چه نبی صلی الله علیه و آله په قبر کښې ولاړ دې او وائی خپل ملگری ماته راکړې (لاش) دا هغه کس وو چه په تیزه به نې ذکر کولو.

﴿ سمعت جابر بن عبد الله رضی الله عنه قال رای ناس ناراً فی المقبرة فاتوها فاذا رسول الله صلی الله علیه و آله فی القبر واذا هو يقول ناولوني صاحبكم فاذا هو الرجل الذي كان يرفع صوته بالذكر ﴾

د یو ذکر جهری کونکی خوش نصیبی :

مضمون د حدیث دا دې، جابر رضی الله عنه فرمائی چه یو ځل داسې اوشو چه د شپې په وخت خلقو ته د لرې نه په قبرستان کښې رنړا ښکاره شوه خلق هلته اورسیدل، د رسیدو نه پس گورو چه رسول الله صلی الله علیه و آله پخپله یو قبر ته کوز شوې دې او فرمائی راوړئ مړې راکړئ د دې نه معلومه شوه چه رسول الله صلی الله علیه و آله هغه صحابی رضی الله عنه په خپل لاس باندې قبر ته کوز کړو، او چونکه شپه وه په دې وجه د رنړا ضرورت پښین شو د کوم چه په روایت کښې ذکر دې، راوی وائی (مونږ چه په غور او کتل نو) دا مړې هم هغه سړې وو چه په اوچت آواز به نې ذکر کولو، د راوی د دې کلام نه معلومیږی چه دا صاحب په ذکر جهری کښې معروف وو، او

(۱): تفرده په ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۲۵۶۴) (ضعیف)

کیدې شی چه هغوی ته دا سعادت هم د دې خصلت د وجې نه حاصل شوې وی، دفن باللیل باندي کلام او اختلاف وغیره اوس نزدې په باب فی الکفن کښې د یو حدیث د لاندې تیر شوې دي.

په شپه کښې د دفن قصه د خو صحابه کرامو رضی الله عنہم سره پښه شوې ده پس علی رضی الله عنہ فاطمه رضی الله عنہا په شپه کښې دفن کړې وه، هم دغه شان د عثمان او عائشې رضی الله عنہما تدفین هم په شپه کښې شوې دي، هم دغه شان د صدیق اکبر رضی الله عنہ، او خپله د رسول الله صلی الله علیه و آله تدفین په آخر د شپه کښې اوشو (ابن القيم) د دې ن علاوه د نورو صحابه کرامو رضی الله عنہم تدفین هم په شپه کښې شوې دي او په کوم روایت کښې چه د دفن لیللا ممانعت راغلي دي د هغې په علت کښې دا وثیلې شوی دی چه لرداءة الکفن او لترك الصلوة علی الميت او شفقة علی الدافین، حدیث الباب ته نزدې د ترمذی په روایت کښې دی

عن ابن عباس رضی الله عنہما ان النبی دخل قبراً لیلاً فاسرج له بسراج فاخذہ من قبل القبلة وقال رحمک الله ان کنت لاواها تلا القران

د رسول الله صلی الله علیه و آله د بعض صحابه کرامو قبر ته کوزیدل :

ابن القيم رحمته الله فرمائی : وقد نزل النبی صلی الله علیه و آله فی قبر ذی البجادین لیلاً آه او په حاشیه د بذل کښې دی چه حافظ رحمته الله په اصابه کښې د ذو البجادین په ترجمه کښې لیکلی دی چه د رسول الله صلی الله علیه و آله د پنځو صحابه کرامو رضی الله عنہم قبرونو ته نزول ثابت دي.

بَابُ فِي الْمَيِّتِ يُحْمَلُ مِنْ اَرْضٍ إِلَى اَرْضٍ وَكَرَاهَةِ ذَلِكَ

د یو ځانې نه بل ځانې ته د مړی د نقل کولو د ممانعت بیان

د دې قسم باب وړاندې هم را روان دي د کتاب الجنائز په اواخر کښې (باب فی تحویل الميت من موضعه للامر یحدث) ظاهره دا ده چه په دې مخکښې باب کښې تحویل میت قبل الدفن مراد دي، او په وړاندې باب کښې تحویل بعد الدفن.

د مړی د نقل په باره کښې مذاهب د ائمه :

د مړی تحویل قبل الدفن وبعده د امام شافعی او مالک رضی الله عنہم په نزد جائز دي د یو مصلحت د وجې نه کجوار الصالحین یا تقدس ارض (۱) د وجې نه لکه مکه مکرمه او مدینه طیبه، خو په

۱ د موسی علیه السلام د روح د قبض کولو قصه : پس امام بخاری رحمته الله باب قائم کړې دي، باب من احب الدفن فی الارض المقدسة او نحوها او په هغې کښې نې د ابوهریره رضی الله عنہ حدیث ذکر فرمائیلې دي (قال ارسل ملک الموت الي موسی فلما جاءه صكه ففقا عينه فرجع الي ربه فقال ارسلني الي عبد لا یرید الموت فرد الله علیه عینه وقال ارجع فقل له یضع یدہ علی متن ثور فله بكل ما غطت به یدہ لكل شعرة سنة، قال اي رب ثم ماذا قال ثم الموت، قال فالآن فسال الله ان یدنيه من الارض المقدسة رمية بحجر، قال رسول الله صلی الله علیه و آله فلو کنت ثم لاريتکم قبره الي جانب الطريق عند الکثيب الاحمر، یعنی کله چه الله پاک ملک الموت د انسان په شکل کښې موسی علیه السلام ته راو لیرلو د روح د قبض کولو دپاره نو هغه لږو او هغه ته نې عرض چه زه ستاسو د روح د قبض کولو دپاره راغلي يم، موسی علیه السلام هغه او نه پیژندلی په دې باندي هغوی هغه ته یو سپیره ورکړه چه په هغې سره یوه سترگه رنده شوه هغه الله پاک ته واپس شو او هلته نې عرض او کړو چه زه تاسو داسې بنده ته له

دې شرط چه د مړې عزت به نه شی خرابولې ولم يوجد فيه مسلک احمد، او د احنافو په نزد د دفن نه مخکښې مړې نقل کول جائز دی تر یو میل او دوه میلو پورې، او هر چه پس د دفن نه دی نو بغیر د عذر شرعی نه ناجائز دی، لکه یو سړې په هغه زمکه کښې دفن شی چه غصب کړې شوې وی، او فقهاء کرامو دا هم لیکلې دی چه عدم غسل یا عدم صلوة علی المیت د وجې نه نبش د قبر جائز نه دي هم دغه شان که مړې غیر مستقبل القبلة دفن کړې شی نو د استقبال قبله دپاره هم نبش د قبر جائز نه دي.

[۳۱۶۵] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الْأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ نُبَيْعٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: كُنَّا حَمَلْنَا الْقَتْلَى يَوْمَ أُحُدٍ لِنَدْفِنَهُمْ، فَبَاءَ مُنَادِي النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَدْفِنُوا الْقَتْلَى فِي مَضَاجِعِهِمْ، فَرَدَدْنَا هُمْ".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه دغزوه احد په ورځ باندي مونږ شهيدان د دفن کولو دپاره بل ځانې ته وړل دنبي صلى الله عليه وسلم اعلان کونکې راغي او اواز ئې اوکړو چه نبي صلى الله عليه وسلم حکم کړې دي چه شهيدان دفن کړئ په هغه ځايونو کښې چرته چه قتل کړې شوي دي نوبيا مونږه د شهيدانو لاشونه د شهادت ځايونو ته واپس کړل.

﴿ عن جابر بن عبد الله قال كنا حملنا القتلى يوم احد لندفنهم الخ ﴾

جابر رضي الله عنه فرمائی چه په جنگ احد کښې د شهيدانو بعض خپلوانو هغوی لره په بقیع کښې د دفن کولو دپاره اوړل اوغوښتل، په دې باندي د رسول الله صلى الله عليه وسلم د طرف نه یو منادی اواز اوکړو چه رسول الله صلى الله عليه وسلم حکم فرمائی چه مقتولین دي د هغوی په شهادت گاه کښې دفن کړې شی پس مونږ هغوی هم هلته واپس کړل.

د دې حدیث نه د احنافو تائید کیږي د نقل میت په مسئله کښ، شوافع وغیره کوم چه د جواز قائل دی هغوی د دې جواب دا ورکوی چه دا حکم مختص دي د شهداء سره، یا دا چه

۶۱..... اولیې لم چه د مرگ اراده نه لري، الله پاک د هغه سترگه روغه کړه او ورته ئې او فرمائیل چه اوس لاره شه او هغه ته اوایه چه خپل لاس دي د غوثی په شا باندي کیږدي نو څومره وینسته چه د هغه د لاس د لاندې راغلل د هر وینسته په اندازه به ورته د یو کال ژوند ورکړې شی پس هغه هم دغه شان اوکړل په دې باندي، موسی صلى الله عليه وسلم عرض اکړو یا زما ربه د دې نه پس به څه وی؟ الله پاک او فرمائیل بیا به هم مرگ راځی، هغوی عرض اوکړو بیا ئې اوس واخلي، او دا دعا ئې او فرمائیله چه هغه دي بیت المقدس ته نزدې کړې شی، د دې نه پس رسول الله صلى الله عليه وسلم فرمائی چه که زه په دغه ځانې کښې وي نو ما به تاسو ته د هغه قبر ښودلې وي، د لاری طرف ته د سړې سړې کمر ته نزدې، په دې واقعه باندي یو مشهور اشکال دي چه موسی صلى الله عليه وسلم ملک الموت په سپیره څنگه او وهلو د دې جواب کوم چه په حاشیه د بخاری کښې لیکلې شوې دي هغه دا دي چه هغه وخت دا ملک الموت د هغوی په خدمت کښې د انسان په شکل راغلی وو او د راتلو سره ئې ورته اونیل چه زه خو د روح د قبض کولو دپاره راغلی یم او د موسی صلى الله عليه وسلم په ذهن کښې دا وه چه ماته به د مرگ په وخت اختیار را کولې شي په دې وجه هغه پوهه نه شو چه دا ملک الموت دي په دې وجه داسې اوشو، نور هم د دې توجیحات کړې شوې دي، د بخاری دا ترجمه الباب او دا قصه مونږ دلته د دې غرض دپاره ذکر کړه چه تقدس د ارض هم یو امر مطلوب دي ﴿ لا من حیث اصل المسئلة اغني نقل المیت ﴾

۱: سنن الترمذي/الجهاد ۲۷ (۱۷۱۷)، سنن النسائي/الجنائز ۸۳ (۲۰۰۶)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۲۸ (۱۵۱۶)، تحفة الأشراف: (۳۱۱۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۹۷/۳، ۳۰۸، ۳۹۷)، سنن الدارمي/المقلمة ۷ (۴۶) (صحيح)

دا حکم ابتداء و و ځکه چه نقل کړې شوی دی چه جابر بن عبدالله رضی الله عنهما خپل پلار لره چه په جنگ احد کښې شهید شوې و و د احد نه بقیع ته شپږ میاشتي پس منتقل کړې و و دا روایت خپله وړاندې په دې کتاب کښې را روان دې. والحديث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

باب فِي الصُّفُوفِ عَلَى الْجَنَازَةِ

په جنازه کښې د صفونو د تعداد بیان

او په بعض نسخو کښې دی الصفوف علی الجنازة....

[۳۱۶۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ مَرْثَدِ بْنِ الْيَزِيدِ، عَنْ مَالِكِ بْنِ هَبِيرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَا مِنْ مُسْلِمٍ مَاتَ، فَيُصَلِّيَ عَلَيْهِ ثَلَاثَةَ صُفُوفٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، إِلَّا أُوجِبَ"، قَالَ: فَكَانَ مَالِكٌ إِذَا اسْتَقَلَّ أَهْلَ الْجَنَازَةِ، جَزَأَهُمْ ثَلَاثَةَ صُفُوفٍ لِلْحَدِيثِ.

د مالک بن هبیره رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلی دی هریو مسلمان چه مړ شي او د مسلمانانو درې صفونه ورباندې جنازه او کړي نودده دپاره مغفرت واجب شو، راوي وائی کله چه به مالک بن هبیره ته په جنازه کښې د مونخ کونکو تعداد کم ښکاریدو نود هغوی نه به ئې درې صفونه جوړ کړل ددې حدیث په وجه

مضمون د حدیث دا دې چه په کوم مړی باندې د جنازه کونکو درې صفونه وی نو هغه انسان د جنت مستحق کیږی — د دې حدیث راوی مالک بن هبیره دې ﴿فکان مالک اذا استقل اهل الجنازة جزاهم ثلاثة صفوف للحدیث﴾ یعنی مالک بن هبیره رضی الله عنه د دې حدیث د وجې نه چه کله به کتل چه د مونخ کونکو تعداد ډیر زیات کم دې نو هغوی به ئې په درې حصو کښې تقسیم کړل او د هغوی نه به ئې درې صفونه جوړ کړل، مثلاً که مونخ کونکی به ټول شپږ کسان و و نو د دوه دوه کسانو به ئې درې صفونه جوړ کړل

د جنازې د صفونو په باره کښې د امام مالک رضی الله عنه مذهب :

امام بخاری رضی الله عنه باب قائم کړې دې، ﴿من صف صفتین او ثلاثة﴾ د دې باب په باره کښې حضرت شیخ په حاشیة د لامع ۲/ کښې خپله رائي دا لیکلې ده چه ممکنه ده د امام بخاری غرض په هغه خلقو باندې رد کول وی کوم چه داسې وائی چه د جنازې د مانخه خو بس یو صف کیدل پکار دی، پس ابن العربی د امام مالک رضی الله عنه نه نقل کړی دی ﴿انه استحباب ان یکون المصلون علی الجنازة سطرًا واحدًا، قال ولا اعلم لذلك وجهًا آه﴾ او بیا حضرت شیخ وړاندې د ابن قدامه نه نقل کړی دی چه مستحب دا ده چه په جنازه باندې درې صفونه قائم کړې شی هم د دې مالک بن هبیره رضی الله عنه د حدیث نه استدلال کولو سره، امام ترمذی د امام احمد رضی الله عنه نه هم دا نقل کړی دی چه که مونخ کونکی کم وی نو د هغوی دې درې صفونه جوړ کړې شی، خلقو د هغه نه تپوس او کړو چه که مونخ کونکی صرف څلور وی نو بیا څه او کړې

۱: سنن الترمذی للجنائز ۴۰ (۱۰۲۸)، سنن ابن ماجه للجنائز ۱۹ (۱۴۹۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۰۸)، وقد أخرجه: مسند

شی نو وې فرمائیل بیا په دې صورت کښې دې صرف دوه صفونه جوړ کړې شی فی کل صف
رجلین، او د درې صفونو جوړولو اجازت نه ورنکړو چه په دې صورت کښې به په یو صف
کښې صرف یو سرې پاتې شی. والحديث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذری

بَابُ اِتِّبَاعِ النِّسَاءِ الْجَنَائِزِ

د جنازي سره د بنخود تللو د ممانعت بيان

[۳۱۶۷] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ حَفْصَةَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ، قَالَتْ: "نَهَيْتُ أَنْ تَتَّبِعَ الْجَنَائِزَ، وَلَمْ يُعْزَمْ عَلَيْنَا".

دام عطية رضي الله عنها نه روایت دې فرمائی چه مونږ په جنازه پسې دتلونه منع کړې شوي وو مگر
په دې کښې سختې نه ده شوي په مونږ باندې.

﴿ عن ام عطية رضي الله عنها قالت : نهينا ان نتبع الجنائز ولم يعزم علينا ﴾

ام عطية رضي الله عنها فرمائی چه مونږ، یعنی زما نه منع کړې شوې دی جنازو سره دتلونه خو
په سختی سره منع نه ده کړې شوي

په مسئله الباب کښې مذاهب د ائمه :

امام نووي رحمته الله فرمائی یعنی در رسول الله صلی الله علیه و آله د طرف نه په دې کښې تنزیهاً منع کړې شوې ده
نه تحریم، او بیا هغه اووې چه زمونږ مسلک هم دا دې چه مکروه دی حرام نه دی، قاضی
عیاض رحمته الله فرمائی چه د جمهور په نزد منع ده خو د مدینې طیبې علماء کرامو دا جائز کړې
ده، واجازه مالک وکړه للشابة.... او د احنافو مسلک په درمختار کښې لیکلې دې : ویکړه
خروجهن تحریماً لقوله عليه الصلوة والسلام ارجعن ما زورات غير ماجورات رواه ابن ماجه بسند
ضعيف، لکنه بعضده المعنى الحادث باختلاف الزمان الذى اشارت اليه عائشة رضي الله عنها بقولها لو ان رسول
الله صلی الله علیه و آله رای ما احدث النساء بعده لمنعهن كما منعت نساء بنی اسرائیل، وهذا فی نساء زمانها فما
ظنک بنساء زماننا، واما فی الصحیحین عن ام عطية (یعنی حدیث الباب) فینفی ان یختص بذلك
الزمن حيث یباح لهن الخروج الى المساجد والاعیاد اهـ (بذل) په حاشیه د بذل کښې دی چه علامه
عینی کراهه تنزیه ته ترجیح ورکړې ده. والحديث اخرجه البخاری ومسلم وابن ماجه، قاله المنذری

بَابُ فَضْلِ الصَّلَاةِ عَلَى الْجَنَائِزِ وَكُشْيِبِهَا

په مری با لدې د جنازي سره د تللو د فضیلت بيان

[۳۱۶۸] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ، عَنْ سَمِيِّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ بِرَوِيهِ، قَالَ: "مَنْ تَبِعَ جَنَازَةً فَصَلَّى عَلَيْهَا، فَلَهُ قِيرَاطٌ، وَمَنْ تَبِعَهَا حَتَّى يُفْرَغَ مِنْهَا، فَلَهُ قِيرَاطَانِ، أَصْفَرُهُمَا مِثْلُ أَحَدٍ، وَأُحَدُّهُمَا مِثْلُ أَحَدٍ".

(۱) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۱۲۲)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/للجناز ۲۹ (۱۲۷۸)، صحيح مسلم/للجناز ۱۸ (۹۳۸)، سنن ابن ماجه/للجناز ۵۰ (۱۵۷۷)، مسند احمد (۴۰۸۶) (صحيح)
(۲) : تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۵۵۹)، وقد أخرجه: صحيح البخاري/الإيمان ۳۵ (۴۷)، الجناز ۵۸ (۱۳۲۵)، صحيح مسلم/للجناز ۱۷ (۹۴۵)، سنن النسائي/للجناز ۷۹ (۱۹۹۶)، سنن ابن ماجه/للجناز ۳۴ (۱۵۳۹)، مسند احمد (۵۲۱، ۵۰۳، ۴۹۸، ۴۹۳، ۴۸۰، ۴۷۵، ۴۵۸، ۴۳۰، ۴۰۱، ۳۸۷، ۳۲۱، ۲۸۰، ۲۴۶، ۲۳۳، ۲۲۲) (صحيح)

د ابوهریره نه روایت دې فرمائی چې رسول پاک ﷺ فرمائیلی دی: خوک چه د جنازي سره لار شي اود جنازي مونخ او کړي نودده دپاره د یو قیراط برابر اجر دې او خوک چه د جنازي سره لار شي اود فارغیدو پورې ورسره وي نودده دپاره دوه قیراطه اجر دې اود قیراط کم مقدار داحد دغر هومره وي یا د یو قیراط مقدار داحد دغر هومره وي.

﴿من تبع جنازة فصلی علیها فله قیراط الخ﴾

یعنی خوک چه جنازي سره لارو او په هغې باندي ئې مونخ او کړو او د قبرستان پورې لانرو نو د هغه اجر به په اندازه د یو قیراط وی، او کوم انسان چه د مونخ د کوکو نه پس هغه سره قبر ته لار شي او د دفن پورې هم هلته پاتې شي نو د هغه دپاره دوه قیراط ثواب دې او رسول الله ﷺ او فرمائیل چه یو قیراط ثواب داحد دغر برابر دې، د یو قیراط مقدار په لغت کښې خو نصف دانق دې، او دانق د درهم سدس ته وائی لهذا یو قیراط د درهم دولسمه حصه شوه خو دلته په حدیث کښې لغوی معنی نه ده مراد بلکه ډیر لوئی مقدار مراد دې لکه چه په حدیث کښې دی داحد دغر برابر، وفي البذل تحت قوله فصلی علیها فرجع ولم یمش معها الی القبر حتی یدفن. فی هامشه: وقال الطحاوی فی مشکل

الآثار ان هذا الاجر مع المشی لا لمجرد الصلوة الخ آه فلیراجع الی مشکل الآثار.

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

[۳۱۶۹] حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حُسَيْنِ الْأَمْزَوِيِّ، قَالَا: حَدَّثَنَا الْمُقْرِئُ، حَدَّثَنَا حَبِيبَةُ، حَدَّثَنِي أَبُو صَخْرٍ وَهُوَ حَمِيدُ بْنُ زِيَادٍ، أَنَّ يَزِيدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَسِيطٍ، حَدَّثَهُ أَنَّ دَاوُدَ بْنَ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ كَانَ عِنْدَ ابْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، إِذْ طَلَعَ خَبَابٌ صَاحِبِ الْمَقْصُورَةِ، فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ، أَلَا تَسْمَعُ مَا يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "مَنْ خَرَجَ مَعَ جَنَازَةٍ مِنْ بَيْتِنَا، وَصَلَّى عَلَيْهَا، فَذَكَرَ مَعْنَى حَدِيثِ سُفْيَانَ"، فَأَرْسَلَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى عَائِشَةَ، فَقَالَتْ: صَدَقَ أَبُو هُرَيْرَةَ.

د عامر بن سعد بن ابی وقاص نه روایت دې فرمائی چه زما پلار دابن عمر سره ناست وو چه خباب راغې او وئې وئیل ای ابن عمر رضی الله عنه ایاتاته معلومه ده چه ابوهریره وئیلی دی چه هغه د نبی صلی الله علیه و آله نه اوریدلي وو چه فرمائیل ئې خوک چه دخپل کور نه وخی اود یوې جنازي سره روان شي او جنازه ورباندي اوکړي اوباقی روایت ئې دسفيان دروایت په شان ذکر کړو، نو ابن عمر رضی الله عنه د معلومات دپاره عائشې رضی الله عنها ته خوک ولیږو عائشې ورته او وئیل ابوهریره رښتیا وئیلی دي.

﴿الا تسمع ما يقول ابوهريرة رضی الله عنه انه سمع رسول الله صلی الله علیه و آله يقول الخ﴾

یعنی ابن عمر رضی الله عنه ته چه کله د ابوهریره رضی الله عنه دا حدیث اورسیدو د یو قیراط اود دوه قیراطو والا نو هغوی د دې د تحقیق دپاره عائشې رضی الله عنها ته سرې را ولیږلو چه په هغې باندي عائشې رضی الله عنها د ابوهریره رضی الله عنه تصدیق اوکړو.

دا روایت دلته مختصر دې او په ترمذی کښې په دې باندي دا زیادت دې، ﴿فقال ابن

عمر رضي الله عنه لقد فرطنا في قراريط كثيرة ﴿ او د مسلم شريف په يو روايت كښې د دې د پاسه دا هم دى ﴿ عن سالم بن عبدالله قال كان ابن عمر يصلى على الجنابة ثم ينصرف فلما بلغه حديث ابى هريرة قال فذكره، يعنى د ابن عمر رضي الله عنهما معمول په شروع كښې صرف د جنازې د مونځ كولو وو جنازې سره قبرستان ته د تلو عادت ئې نه وو چه كله هغوى ته د ابو هريره رضي الله عنه دا حديث اورسيدو او بيا عائشې رضي الله عنها هم د دې تصديق او فرمائيلو نو هغوى په خپل عمل باندي د افسوس اظهار او كړو، او وې فرمائيل چه مونږ د ډيرو قيراطونو نقصان او كړو (تحفه) دا د صحابه كرامو رضي الله عنهم د يقين خبره ده هم دا خو د ټولو نه لوئې دولت وو د هغوى سره چه هغوى سره كمال يقين وو وخير ما القى فى القلوب اليقين.

والحديث اخرجه مسلم بمعناه اتم منه، قاله المنذرى

[۳۱۷۰] حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ شَجَاعٍ السَّكُونِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهَبٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ، عَنْ شَرِيكَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَا مِنْ مُسْلِمٍ مَمُوتٌ، فَيَقُومُ عَلَى جَنَازَتِهِ أَرْبَعُونَ رَجُلًا، لَا يُشْرِكُونَ بِاللَّهِ شَيْئًا، إِلَّا شَفَعُوا فِيهِ".

دا ابن عباس رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه دنبي صلي الله عليه وسلم نه مي اوريدلى دى چه فرمائيل ئې هيڅوك داسې مسلمان نشته چه مړشي او دده په جنازه كښې څلويښت كسان اودريري داسې كسان چاچه دالله سره شريك نه وي گرځولې او هغوى دده جنازه او كړي مگر الله تعالى به ددوى سفارش ددې مړي په حق كښې قبول كړي

﴿ ما من مسلم يموت فيقوم على جنازته اربعون رجلا الخ ﴾

يعنى د كوم سړي د جنازې د مونځ كونكو تعداد چه څلويښتو ته اورسيري نو د هغوى دا شفاعت د الله پاك په نزد قبليري، او په صحيح مسلم كښې د عائشې رضي الله عنها په حديث كښې ﴿يلفون مائة﴾ او د دې نه مخكښې د مالك به هبیره رضي الله عنه په روايت كښې ثلاثة صفوف راغلي دې چه په هغې كښې نه د سلو قيد دې نه د څلويښتو، په دې كښې د اختلاف عدد يو جواب دا وركړې شوې دې، چه دا اختلاف د سائلينو په سوال باندي محمول دې يعنى دا حديثونه رسول الله صلي الله عليه وسلم د سائلينو په سوال باندي ارشاد فرمائيلې دى يو سائل د سلو د عدد په باره كښې تپوس او كړو او چا د څلويښتو په باره كښې، د دواړو په جواب كښې رسول الله صلي الله عليه وسلم او فرمائيل او هم داسې ده يعنى د دې عدد تحديد په شروع كښې د رسول الله صلي الله عليه وسلم د طرف نه نه دې ممكنه ده چه كه د دې نه د كم په باره كښې سوال كړې شوې وې نو په دې باندي به هم رسول الله صلي الله عليه وسلم هم داسې فرمائيلې وې وې هامش البذل

وجمع بينهما اى بين المئة والاربعين الطحاوى فى مشكل الآثار ۱۰۴/۲ بحمل اربعين على آخر الزمان آه ان شئت التفصيل فارجع اليه.

والحديث اخرجه مسلم اتم منه، واخرجه ابن ماجه بنحوه، قاله النووى.

١: صحيح مسلم للجناز ۱۸ (۹۴۸)، سنن ابن ماجه للجناز ۱۹ (۱۴۸۹)، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۴)، وقد أخرجه: سنن الترمذي للجناز ۴۰ (۱۰۲۹)، سنن النسائي للجناز ۷۸ (۱۹۹۳)، مسند احمد (۳۲/۱، ۴۰، ۹۷، ۲۳۱) (صحيح)

باب فِي النَّارِ يُتْبَعُ بِهَا الْمَيِّتُ

د جنازې سره د اور وړلو د ممانعت بيان

[۳۱۷۱] (۱) حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، ح وَحَدَّثَنَا ابْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَرْبٌ يَعْنِي ابْنَ شَدَّادٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا بَابُ بْنُ عُمَيْرٍ، حَدَّثَنِي رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: لَا تُتْبَعُ الْجَنَازَةُ بِصَوْتٍ وَلَا نَارٍ، زَادَ هَارُونُ: وَلَا يُمَشَى بَيْنَ يَدَيْهَا.

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چې رسول الله ﷺ فرمائیلى دى په جنازه پسې دي څوك اور نه وړي اونه دې په جنازي پسې څوك آواز كوي اونه دې د جنازي نه څوك مخكښې ځي اودهارون په روايت كښې ورسره دا اضافه ده چې د جنازي سره دي برابر هم څوك نه ځي قوله: (لا تتبع الجنازة بصوت ولا نار ولا يمشی بين يديها): ابوهريره رضي الله عنه د رسول الله ﷺ نه نقل كوي چې په جنازه پسې د هغې نه شاته آواز نه دى كيدل پكار او نه اور، د آواز نه مراد عام دې كه د ژړا وى او كه د ذكر او تلاوت د وجې نه وى اود اور نه مراد دخوشبويى اور دې قبر لره دخوشبويه كولو دپاره لكه چې اهل كتابو به كول، او منع د دوه وجو نه ده لاجل التناول وهو لان النار آلة العذاب او مخالفت د اهل كتابو، او كه د رنړا دپاره اور ځان سره واخستلې شى په دې كښې هيڅ باك نشته، هغه خو ثابت دې اوس نزدې حديث تير شوې دې او وړاندې په دې روايت كښې دى چې د جنازي نه مخكښې مه ځئ. او په دې باندې وړاندې مستقل باب را روان دې.

باب الْقِيَامِ لِلْجَنَازَةِ

د جنازې د ليدلو په وخت كښې د اودريدلو بيان

[۳۱۷۲] حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْبَانٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ، يَتْلُمُ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا رَأَيْتُمُ الْجَنَازَةَ، فَقُومُوا لَهَا حَتَّى تُخَلِّقَكُمْ، أَوْ تَوْضِعَ".

عامر بن ربيع رضي الله عنه نه دنسې رضي الله عنه نه روایت كوي چې فرمائیلى شي وو كله چې جنازه اووینئ نو ورته اودريريئ تردې چې هغه دخلقونه مخكښې شي يادغه جنازه كيخودلې شي (اذا رأيتم الجنازة فقوموا لها حتى تخلقكم او توضع)

دلته دوه مسئلې دي او د دواړو متعلق چې كوم احاديث دي هغه مصنف هم په دې باب كښې ذكر كړې دي په هغې كښې يو مسئله خو دا ده كومه چې په دې حديث كښې ذكر كړې شوې ده، دويمه مسئله هغه ده كومه چې د باب په آخرى حديث كښې را روانه ده (كان رسول الله ﷺ يقوم في الجنازة حتى توضع في اللحد فمر به حبر من اليهود فقال هكذا يفعل فعلنا فقال النبي ﷺ وقال اجلسوا خالفوهم) هم په دې وجه امام ترمذي رحمته الله دوه ځانله ځانله ابواب قائم كړي دي (باب ما جاء في الجلوس قبل ان توضع) او دويم باب (باب ما جاء في القيام للجنازة)

۱: تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۰۵۱۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۲۷۲، ۵۲۸، ۵۳۱) (ضعيف)

د ابوداؤد په آخری حدیث کښې چه کومه مسئله ذکر شوې ده دا هم هغه مسئله ده کومه چه امام ترمذی رحمته الله علیه په باب اول کښې بیان کړې ده، او د باب رومبې حدیث کوم چه مونږ په شروع کښې نقل کړو په دې کښې هغه مسئله ده کومه چه امام ترمذی رحمته الله علیه په اول کښې ذکر کړې ده، خو امام ابوداؤد دواړه قسم احادیث د یو ترجمه الباب د لاندې ذکر او فرمائیل، بیا د دویم باب نه پس امام ترمذی یو دریم باب قائم کړو لکه چه مونږ به وړاندې بیان کړو.

(ههنا مسئلتان) المسئلة الاولى :

د باب په دې رومبې حدیث کښې چه کومه مسئله ذکر شوې ده هغه خو دا ده چه کوم سړی ته نزدې جنازه تیره شی هغه لره پکار دی چه هغې ته اودریږی، یعنی دا نه چه په خپل کار کښې هم هغه شان مشعول وی او د جنازې تیریدو څه پرواه نه کوی ځکه چه په حدیث کښې دې **(ان الموت فزع)** لکه چه د دې باب په دریم حدیث کښې دی، چه د هغې مضمون دا دی: د جابر رضی الله عنه نه روایت دې چه مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم سره وو چه یو جنازه مونږ ته نزدې تیره شوه نو رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم د هغې په لیدو سره اودریدو چه د هغې په اوچتولو کښې شریک شی نو معلومه شوه چه هغه د یو یهودی جنازه ده، مونږ عرض او کړو یا رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم دا خو د یهودی جنازه ده، رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم او فرمائیل: **(ان الموت فزع فاذا رأتم جنازة فقوموا)** چه مرگ د ویرې څیز دې، یعنی د بل جنازه لیدو سره خپل مرگ یادول پکار دی او وې فرمائیل چه کله تاسو یو جنازه وینئ نو اودریږئ.

خو دا حدیث د جمهورو په نزد منسوخ دې، خو امام احمد رحمته الله علیه، اسحاق بن راهویه، ابن حبیب مالکی او بعض شوافع چه په هغوی کښې امام نووی هم دې، د دې حضراتو په نزد د جنازې د تیریدو په وخت قیام مستحب دې، د جمهورو په نزد منسوخ دې، پس د دې باب په څلورم حدیث کښې راځی کوم چه د علی رضی الله عنه نه مرفوعا روایت دې **(قام فی الجنازة ثم قعد بعده)** چه رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم به په شروع کښې خو اودریدو روستو ئې پریخودلې وو، د جمهورو مسلک هم دا دې هغوی په دې کښې د نسخ قائل دی او فریق مخالف کوم چه د استحباب قائل دی حنابله وغیره (د هغوی دا دویم حدیث یعنی د نفی حدیث په جواز باندې محمول کړې دې، یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله و سلم به کله قیام نه کولو د جواز د بیان دپاره دې، د دې وجې نه امام ترمذی رحمته الله علیه باب قائم کړې دې **(باب ما جاء فی القیام للجنازة)** نه پس دویم باب **(باب الرخصة فی ترک القیام لها)** قائم کړو ځنګه چه د جمهور مسلک دې، پس امام ترمذی رحمته الله علیه فرمائی د علی رضی الله عنه د حدیث نه پس: **والعمل علی هذا عند بعض اهل العلم قال الشافعی: وهذا اصح شی فی هذا الباب، وهذا الحديث ناسخ للحديث الاول (اذا رأتم الجنازة فقوموا)** وقال احمد ان شاء قام وان شاء لم یقم، وهكذا قال اسحاق بن ابراهیم آه وفي تحفة الاخوذی فعند احمد حدیث علی هذا لیس بناسخ للحديث الاول، بیا هغوی د حازمی نه د مذاهبو د بیانولو د لاندې لیکلې دی: وقال احمد بن حنبل ان قام لم اعبه، وان قعد فلا باس به

۱، بلکه صرف ابن حزم، او د حنابله د مذهب تحقیق وړاندې را روان دې

وبه قال اسحاق الحنظلي، وقال اكثر اهل العلم ليس على احد القيام للجنائز الى آخر ما ذكر، د امام ترمذی او حازمی رضی اللہ عنہ د کلام نه معلومه شوه چه د امام احمد رضی اللہ عنہ په نزد په دې مسئله کښې تخییر دې، مونږ پورته د هغه مسلک د استحباب د قیام لیکلې دې، ذکره الشیخ فی البذل عن الشوکانی او د حضرت شیخ په حاشیه د بذل کښې دی هذا القيام منسوخ عند الائمة الاربعة وما حکى اهل الشروح عن الامام احمد انه ليس بمنسوخ عنده ياباه كتب فروعه نعم یندب عند ابن حزم وغيره قلت ومنهم النووي كما سبق.

المسئلة الثانية :

او دویمه مسئله دا ده چه رسول الله ﷺ به د کومې جنازې سره تلو نو قبرستان ته رسیدو سره به کیناستلو نه (حتی توضع فی اللحد) ترڅو چه به مړې په قبر کښې کینخودلې شو، یو ځل داسې او شوه چه په علماء یهود کښې یو سړې تیریدو هغه د رسول الله ﷺ په لیدو باندي اووې (هكذا فعل) چه او تاسو صحیح کوئ مونږ هم داسې کوو. د دې واقعي نه پس رسول الله ﷺ او دریدل پریخودل او وې فرمائیل (اجلسوا خالفوهم) یعنی د وضع فی اللحد نه مخکښې کینئ.

د دې مسئلې هم جمهور علماء کرام قائل دی چه د وضع فی اللحد نه مخکښې په جلوس کښې هیڅ باک نشته کیناستلې شی، خو د وضع عن اعناق الرجال نه مخکښې جلوس مکروه دې عند الجمهور خلاف ثابت دې مالکیانو لره چه د هغوی په نزد جائز دې، په دې دواړو مسائلو باندي ځانله ځانله پوهیدل پکار دی، ډیر کرته د دې دواړو په پوهه کښې بلکه په بیانولو کښې هم لکه چه تاسو به اوگورئ گډوډ شی.

[۳۱۷۳] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِذَا تَبِعْتُمُ الْجَنَائِزَ، فَلَا تَجْلِسُوا حَتَّى تُوَضَعَ". قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رَوَى هَذَا الْحَدِيثَ الثَّوْرِيُّ، عَنْ سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ فِيهِ: حَتَّى تُوَضَعَ بِالْأَرْضِ، وَرَوَاهُ أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنْ سُهَيْلٍ، قَالَ: حَتَّى تُوَضَعَ فِي اللَّحْدِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ، وَسُفْيَانُ: أَحْفَظُ مِنْ أَبِي مُعَاوِيَةَ.

د ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ نه روایت دې فرمائی چه رسول الله ق فرمائیلی دی کله چه تاسو په جنازه پسې ځئ نو تر هغې مه کینئ ترڅو چه دا ایښودل شوي نه وي، ابوداؤد وائی داروایت سفیان ثوري په واسطه دسهیل هغه دخپل پلار نه او هغه دابوهریره رضی اللہ عنہ نه نقل کړې دې او الفاظ ئې دادي: تردې چه جنازه په زمکه کیخودلې شي او دابوهریره نه په واسطه دسهیل دالفاظ نقل کړې شوي دي: تردې چه مړې په قبر کښې کیخودلې شي، امام ابوداؤد وائی چه سفیان په نسبت دابومعاویه قوی حافظي والاوو.

قوله: () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ الْخ وَفِيهِ قَالَ أَبُو دَاوُدَ : رَوَى الثَّوْرِيُّ هَذَا الْحَدِيثَ عَنْ سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ فِيهِ: حَتَّى تُوَضَعَ بِالْأَرْضِ، رَوَاهُ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ سُهَيْلٍ : قَالَ حَتَّى تُوَضَعَ فِي اللَّحْدِ

(۱): تفرد به ابوداؤد، (تحفة الأشراف: ۴۱۲۴)، وقد أخرج: صحيح البخاري للجنازة ۴۸ (۱۳۱۰)، صحيح مسلم للجنازة ۲۴ (۹۵۹)، سنن الترمذي للجنازة ۵۱ (۱۰۴۳)، سنن النسائي للجنازة ۴۴ (۱۹۱۵)، ۴۵ (۱۹۱۸)، ۸۰ (۲۰۰۰)، مسند احمد (۳/۲۵)، ۴۱، ۵۱، ۸۵، ۹۷ (صحيح)

وسفيان احفظ من ابى معاوية: د دې وضاحت دا دې چه دې حديث لره د سهيل نه روايت كونكى درې دى، اول زهير د چا روايت چه په شروع كښې دې، دويم ثورى، دريم ابومعاويه، د زهير په روايت كښې خو «حتى توضع» مطلقا دې او د ثورى په روايت كښې «حتى توضع بالارض» دې او د ابومعاويه په روايت كښې «حتى توضع فى اللحد» دې، مصنف فرمائى چه سفيان احفظ دې د ابومعاويه نه لهذا «حتى توضع بالارض» اصح دې او مسئله هم دغه شان ده، اوس د دې باب په ټولو روايتونو باندې مشترك كلام راغلو، د دې احاديثو تخريج داسې دې، حديث عامر بن ربيعه رضي الله عنه اخرج به البخارى ومسلم والترمذى والنسائى وابن ماجه.

[۳۱۷۴] (۱) حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ الْقُضَيْلِ الْحَرَانِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ مِقْسَمٍ، حَدَّثَنِي جَابِرٌ، قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِذْ مَرَّتْ بِنَا جَنَازَةٌ، فَقَامَ لَهَا، فَلَمَّا ذَهَبْنَا لِنَحْمِلَ، إِذَا هِيَ جَنَازَةٌ يَهُودِيٍّ، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّمَا هِيَ جَنَازَةٌ يَهُودِيٍّ، فَقَالَ: "إِنَّ الْمَوْتَ فَرَعٌ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ جَنَازَةً، فَقُومُوا".

د جابر بن عبد الله رضي الله عنه نه روايت دې فرمائى چه مونږ درسول پاك اسره وو چه يوه جنازه راوړل شوه نبي صلى الله عليه وسلم ورته پاخيدو بيا مونږه ددې جنازي دپورته كولو دپاره ورغلو نو معلومه شوه چه ديهودي جنازه ده نومونږ نبي صلى الله عليه وسلم ته عرض او كړو چه اي دالله رسوله دا خو د كوم يهودي جنازه ده، نبي صلى الله عليه وسلم او فرمائيل البته مرگ دويري خيزدې كله چه تاسو جنازه اووينئ نوورته ودريرئ.

[۳۱۷۵] (۲) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ وَاقِدِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذِ الْأَنْصَارِيِّ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ مَسْعُودِ بْنِ الْحَكَمِ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "قَامَ فِي الْجَنَائِزِ، ثُمَّ قَعَدَ بَعْدُ".

د على بن ابى طالب كرم الله وجهه نه روايت دې فرمائى چه مخكښې چه به نبي صلى الله عليه وسلم كله جنازه اوليدله نوورته به اودريدلو ليكن بيا نبي صلى الله عليه وسلم جنازونه اودريدل پريخودل او ناست به پاتې شو.

[۳۱۷۶] (۳) حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ بَهْرَامٍ الْمَدَائِنِيُّ، أَخْبَرَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو الْأَسْبَاطِ الْحَارِثِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سُلَيْمَانَ بْنِ جُنَادَةَ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، عَنْ عَبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "يَقُومُ فِي الْجَنَازَةِ حَتَّى تُوَضَعَ فِي اللَّحْدِ فَمَرَّ بِهِ حَبْرَمٌ يَهُودِيٌّ، فَقَالَ: هَكَذَا نَفَعَلُ، فَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ: اجْلِسُوا خَالِفُوهُمْ".

۱: صحيح البخاري/الجناز ۴۹ (۱۳۱۱)، صحيح مسلم/الجناز ۲۴ (۹۶۰)، سنن النسائي/الجناز ۴۶ (۱۹۲۳)، (تحفة الأشراف: ۲۳۸۶)، وقد أخرجها: مسند احمد (۳۱۹/۳، ۳۵۴) (صحيح)

۲: صحيح مسلم/الجناز ۲۵ (۹۶۲)، سنن النسائي/الجناز ۸۱ (۲۰۰۱)، سنن الترمذي/الجناز ۵۲ (۱۰۴۴)، سنن ابن ماجه/الجناز ۳۵ (۱۵۴۴)، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۷۶)، وقد أخرجها: موطا امام مالك/الجناز ۱۱ (۳۳)، مسند احمد (۸۲/۱) ۸۳، ۱۳۱، ۱۳۸) (صحيح)

۳: سنن الترمذي/الجناز ۳۵ (۱۰۲۰)، سنن ابن ماجه/الجناز ۳۵ (۱۵۴۵)، (تحفة الأشراف: ۵۰۷۶) (حسن)

دعبادة بن الصامت رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله به چه کله جنازه اولیدله نو تر هغې به ولاړ وو ترخوچه به مړې قبرته کوز کړې شوې نه وو، یوخل دیهودیانور عالم د نبی صلی الله علیه و آله خواته تیریدو اووې وئیل چه مونږ به هم داسې کول نو نبی صلی الله علیه و آله کیناستو اووې فرمائیل کینئ او دیهودیانو مخالفت اوکړئ.

وحدیث ابی سعید خدری رضي الله عنه اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی من حدیث ابی سلمة بن عبدالرحمن بن عوف عن ابی سعید بنحوه، واخرجه مسلم من حدیث ابی صالح السمان عن ابی سعید رضي الله عنه. و حدیث جابر رضي الله عنه اخرجه البخاری ومسلم والنسائی و لیس فی حدیثهم ﴿ فلما ذهبنا لنحمل ﴾

و حدیث علی رضي الله عنه اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه بنحوه.

و حدیث عبادة بن الصامت رضي الله عنه اخرجه الترمذی وابن ماجه قاله المنذری.

باب الرُّكُوبِ فِي الْجَنَازَةِ

د جنازې سره یوځانې په سورلئ باندې د سورتللو د ممانعت بیان

د جنازې سره په سورلئ تلل بغیر د عذر نه خلاف اولی دی او د واپسئ په وخت په سورلئ باندې راتلو کښې هیڅ باک نشته، د شوافعو په نزد د کراهت تصریح ده، و فی مغنی المحتاج ۲۵۹/۱ ولا یاس بالركوب فی الرجوع منها لانه صلی الله علیه و آله ركب فرسا معرورا لما رجع من جنازة ابی الدحداح رواه مسلم من حدیث جابر بن سمرة واما فی الذهاب فتقدم انه یکره لا لعذر کبعد المكان او ضعف آه وهکذا قال النووی.

[۳۱۲۷] () حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى الْبَلْخِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْبَرٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، عَنْ ثَوْبَانَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَتَى بِدَايَةِ، وَهُوَ مَعَ الْجَنَازَةِ، فَأَبَى أَنْ يَرْكَبَهَا، فَلَمَّا انْصَرَفَ أَتَى بِدَايَةِ فَرَكِبَ، فَقِيلَ لَهُ: فَقَالَ: "إِنَّ الْمَلَائِكَةَ كَانَتْ تَمْشِي، فَلَمْ أَكُنْ لِأَرْكَبْ وَهُمْ يَمْشُونَ، فَلَمَّا ذَهَبُوا رَكِبْتُ".

ثوبان رضي الله عنه نه روایت دې چه نبی صلی الله علیه و آله ته دسوریدو دپاره یوڅاروې پیش کړې شو او هغه د جنازې سره روان وو، نبی صلی الله علیه و آله د سورلئ قبلولونه انکار او فرمائیلو لیکن کله چه د جنازې نه د فارغیدلونه واپس شو نویوه سورلئ ورته راوستلی شوه نبی صلی الله علیه و آله ورباندې سور شو خلقو ددې دوجې تپوس اوکړو نووئې فرمائی د جنازې دکولونه مخکښې خود جنازې سره فرشتې روانې وې ما مناسب اونه گنرل چه فرشتې پیدل روانې وې اوزه سور یم کله چه فرشتې واپس لاړې نوزه سور شوم.

قوله: ﴿ عن ثوبان ان رسول الله صلی الله علیه و آله اتى بدابة وهو مع الجنابة فابى ان يركب فلما انصرف اتى بدابة فركب الخ ﴾ یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله د یوې جنازې سره تشریف اورولو خلقو ورته سورلئ پیش کړه رسول الله صلی الله علیه و آله د سوریدو نه انکار اوکړو، او په واپسئ کښې چه ورته کله سورلئ پیش کړې شوه نو بیا پرې سور شو، د یو صحابې رضي الله عنه په سوال باندې رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل چه

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۲۱۲۱)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه للجناز ۱۵ (۱۴۸۰) (صحيح)

د یوې جنازې سره ملائک پیدل روان وو په دې وجه ما د هغه رکوب مناسب او نه گنړلو،
 اوس هر کله چه هغوی لارل نوزه سور شوم
 او د باب په دویم حدیث کښې دی چه رسول الله ﷺ په ابن الدحداح رضی الله عنه باندې د جنازې
 مونځ او کړو (ویقال ابوالدحداح) بیا آس راوستلې شو او رسول الله ﷺ پرې سور شو، چه
 رسول الله ﷺ ئې په منډه یوو، او مونږ به په رسول الله ﷺ پسې پیدل منډې وهلي.

[۳۱۷۸] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سِمَاكٍ، سَمِعَ جَابِرَ بْنَ سَمْرَةَ، قَالَ: "صَلَّى
 النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ابْنِ الدَّحْدَاحِ، وَتَحَنُّنٌ شُهُودٌ، ثُمَّ أَتَى بِفَرَسٍ، فَعَقِلَ حَتَّى رَكِبَهُ، فَجَعَلَ يَتَوَقَّصُ بِهِ،
 وَتَحَنُّنٌ نَسَعَى حَوْلَهُ".

د جابر بن سمرة رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله په ابن دحداح باندې جنازه او کړه او
 په دې وخت کښې مونږ حاضر وو چه نبی صلی الله علیه و آله ته یواس پیش کړې شو نبی صلی الله علیه و آله دغه اس
 وتړلو تردې چه ورباندې سور شو او اس دانگونه وهله شروع کړل او په منډه شو نومونږ هم
 ور پسې گیر چاپیر ورپه منډه شو.

دا د رسول الله واپس کیدل په واپسې کښې وو، د ابوداؤد روایت اگر چه د دې نه
 ساکت دې خو د ترمذی په روایت کښې د رجوع تصریح ده، لهذا په دواړو روایتونو کښې
 دې تعارض او نه گنړلې شی.

په حدیث الباب کښې کراهت د رکوب خلف الجنازة ثبوت معلومېږي خو دا حدیث
 په ظاهر کښې د هغه حدیث خلاف دې کوم چه په را روان باب کښې راخی، د مغیره بن
 شعبه حدیث، (الراکب یسیر خلف الجنازة والماشی یمشی خلفها وامامها) الحدیث... ځکه چه د
 دې نه د رکوب خلف الجنازة د جواز ثبوت ملاوېږي، د دې په بذل کښې د علامه
 شوکانی رحمته الله علیه نه دوه جوابونه نقل کړي دی اول دا چه دا حدیث په عدم کراهت باندې دال نه
 دې زیات نه زیات په جواز باندې دلالت کوی پس کیدې شی چه رکوب جائز مع الکراهة
 وی، او یا دې داسې اوئیلې شی چه تاسو چه په کوم رکوب باندې نکیر فرمائیلې دې هغه د
 مشی ملائکه سره معلل دې او د ملائکو دا مشی د رسول الله ﷺ سره وه، پس د دې نه دا نه
 لازمېږي چه د ملائکو معیت او شرکت دې د جنازې سره وی آه او یو جواب دا ورکړې
 شوې دې چه حدیث د مغیره رضی الله عنه د معذور په حق کښې دې، او حدیث الباب د غیر معذور
 په حق کښې حدیث ثوبان رضی الله عنه اخرجه البزار،

وحدیث جابر بن سمرة رضی الله عنه اخرجه مسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری

(۱) صحیح مسلم الجنائز ۲۸ (۹۶۵)، سنن الترمذی الجنائز ۲۹ (۱۰۱۳)، (تحفة الأشراف: ۲۱۸۰)، وقد أخرجه: مسند
 احمد (۹۸، ۹۵، ۹۰/۵) (صحیح)

باب المَشْيُ أَمَامَ الْجَنَازَةِ

د جنازې نه د مخکښې تلو بیان

په مسئله الباب کښې مذاهب ائمه:

په دې کښې د علماء کرامو پنځه مذاهب دي، د امام شافعي رحمته الله په نزد د جنازې نه مخکښې تلل مطلقا مستحب دي، او د امام مالک او احمد رحمته الله په نزد په راکب او ماشي کښې فرق دي، د راکب دپاره روستو تلل افضل دي او د ماشي دپاره وړاندې تلل، او د احنافو په نزد مطلقا روستو تلل افضل دي او د سفیان ثوري رحمته الله په نزد التخيير بلا ترجيح، يعنی دواړه برابر دي، او هم دې ته د امام بخاري رحمته الله ميلان دي، او پنځم مذهب دا دي «ان كان مع الجنزة نساء فالأفضل امامها والا فحلقها» (هامش البذل) دا پنځم مذهب د ابراهيم نخعي دي کما في الاوجز، دا اختلاف صرف په افضليت کښې دي او په جواز کښې هيڅ کلام نشته فيجوز في الجهات الاربع بالاتفاق كما في التعليق الممجد، د احنافو دليل يو خو هغه دي کوم چه مخکښې په «باب اتباع الميت بالنار» کښې تير شو چه په هغې کښې دي «ولا يمشي بين يديها» او يو هغه دي کوم چه د را روان باب په آخره کښې راځي، «الجنزة متبوعة ولا تتبع، ليس معها من تقدمها» خو دا حديث ضعيف دي د ابوماجده راوي د وجې نه، قال ابو داؤد: «ابوماجده هذا لا يعرف» او د شوافعو دليل د باب رومي حديث دي،

[۳۱۷۹] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا سَفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبَا بَكْرٍ، وَعُمَرَ، يَمْشُونَ أَمَامَ الْجَنَازَةِ."

د عبدالله بن عمر رضي الله عنهما نه روايت دي فرماني چه مانبي عليه السلام او ابوبکر صديق او عمر رضي الله عنهما ليدلي وو چه د جنازې نه مخکښې تلل

«عن سالم عن ابيه قال رايت النبي و ابا بكر و عمر يمشون امام الجنزة، د مصنف عبدالرزاق د يو اوږد حديث د لاندې داسې دي چه ابوسعيد خدری رضي الله عنه د علي رضي الله عنه په خدمت کښې حاضر شو او د اسلام نه پس ئې د هغوی نه دا تپوس اوکړو چه ماته دا بيان کړئ چه په جنازې پسې تلل افضل دي يا روستو نو په دې باندې هغوی تندي تريو کړو، او وې فرمائيل سبحان الله! ستا په شان سرې داسې تپوس کوي او بيا ئې او فرمائيل قسم دي په هغه ذات چا چه محمد رسول الله صلوات الله عليه حق نبي راليرلي دي چه په جنازه پسې د روستو تلونکي فضيلت په وړاندې تلونکي باندې داسې دي لکه د فرض مونځ فضيلت چه په نفل دي په دې باندې ابوسعيد خدری رضي الله عنه عرض اوکړو چه ما خو ابوبکر او عمر رضي الله عنهما د فلاني انصاري صحابي په جنازه کښې د جنازې وړاندې تلونکي ليدلي دي. په دې باندې علي رضي الله عنه مسکي شو او وې فرمائيل چه آيا واقعي تا داسې ليدلي دي هغوی؟ هغوی عرض اوکړو او بيا علي رضي الله عنه او فرمائيل چه په دې کښې لږ شک هم نشته چه هغوی ته د روستو تلو

(۱) سنن الترمذي/الجنائز ۲۶ (۱۰۰۷)، سنن النسائي/الجنائز ۵۶ (۱۹۴۶)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۱۶ (۱۴۸۲)، تحفة الأشراف: ۶۸۲۰، وقد أخرجها: موطا امام مالك/الجنائز ۳ (۸)، مسند احمد (۸۷۲، ۱۲۲) (صحيح)

فضيلت هم دغه شان معلوم وو څنگه چه ما بيان كړو، خو خبره دا ده چه كه هغوی په جنازه پسې روستو تلل نو جنازه اوړونكي به تنگ شي د هغوی په ادب او احترام كښې په دې وجه به هغوی وړاندې تلل د خلقو د سهولت په رعايت كښې آه. مختصرا (مصنف عبدالرزاق ۴۴۷/۳) په بذل المجهود كښې دا روايت مختصرا د بدائع نه هم ليكلې شوې دې.

وحدیث ابن عمر رضی اللہ عنہما اخرجہ الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

[۳۱۸۰] (۱) حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ بَقِيَّةَ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ جَبْرِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ الْمُغِيرَةَ بْنِ شُعْبَةَ، وَأَحْسَبُ أَنَّ أَهْلَ زِيَادٍ أَخْبَرُونِي، أَنَّهُ رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "الرَّاكِبُ يَسِيرُ خَلْفَ الْجَنَازَةِ، وَالْمَاشِي يَمْشِي خَلْفَهَا، وَأَمَامَهَا، وَعَنْ يَمِينِهَا، وَعَنْ يَسَارِهَا، قَرِيبًا مِنْهَا، وَالسَّقَطُ يُصَلِّي عَلَيْهِ، وَيُدْعَى لِوَالِدَيْهِ بِالْمَغْفِرَةِ وَالرَّحْمَةِ".

زياد بن جبیر دخپل پلار نه او هغه دمغیره بن شعبه رضی اللہ عنہ نه روايت كوی یونس وائی زماخیال دې چه زیاد داسې اووئیل چه مغیره وئیلی دی چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرمائیلی دی په سورلی سور کس دي په جنازه پسې وروسته ځي او پیاده تلونکی دي هم په جنازه پسې وروسته ځي اود جنازي نه دې مخکښې هیڅوک نه ځي ددې بنی طرف اوگس طرف ته او ددې سره یوځای روان اوسئ اوچي دکوي زنانه ته ماشوم اوغورزېري نوپه هغه باندي هم جنازه کوي اود مور اوپلار دپاره ئې دمغفرت اورحمت دعا غواړي.

په صلوة علی الطفل كښې د ائمة مذاهب :

قوله: ﴿الراكب يسير خلف الجنابة والماشي يمشي خلفها واما مهاو عن يمينها... الخ﴾

دمغیره بن شعبه رضی اللہ عنہ دا روايت په ترمذی شریف كښې د لفظی تغیر سره دې: الراكب على الجنابة والماشي حيث شاء منها، والطفل يصلی عليه قال ابو عيسى هذا حديث حسن صحيح، امام ترمذی رحمته اللہ علیہ دې حديث لره ﴿ما جاء في الصلوة على الاطفال﴾ كښې ذكر كړې دې، او د امام احمد او اسحاق بن راهويه مذهب ئې دا بيان كړې دې چه د هغوی په نزد به په طفل باندي مونځ كولې شي اكر چه د پیدائش په وخت استهلال یعنی د ژوند آثار نه وی موندلې شوې، بعد ان يعلم انه خلق یعنی په دې شرط چه روح پكښې پوكولې شوې وی چه د هغې موده علماء كرامو څلور میاشتي او لس ورځې ليكلې ده د دې نه پس امام ترمذی رحمته اللہ علیہ دویم باب قائم كړې دې ﴿باب في ترك الصلوة على الطفل حتى يستهل﴾ او بیانی د هغې د لاندي د جابر رضی اللہ عنہ دا حديث مرفوع ذكر فرمائيلې دې: ﴿الطفل لا يصلی عليه ولا يرث ولا يرث حتى يستهل﴾ خو امام ترمذی رحمته اللہ علیہ د دې حديث په سند كښې اضطراب بیانولو سره د دې وقف لره په رفع باندي ترجیح وركړې ده، خود جمهور علماء كرامو او باقی ائمه ثلاثه مذهب هم دا دې، قال السندی: احد الجمهور بحديث جابر ترجيحاً للحرمة على الحل عند التعارض... دې مسئلې ته اشاره زمونږ په نزد په كتاب الفرائض كښ، اذا استهل المولود ورث... د حديث د لاندي راغلي ده.

والحديث اخرجہ الترمذی والنسائی وابن ماجه..... وحدث ابن ماجه مختصر، قاله المنذری

(۱) سنن الترمذی/الجناز ۴۲ (۱۰۳۱)، سنن النسائی/الجناز ۵۵ (۱۹۴۴)، سنن ابن ماجه/الجناز ۱۵ (۱۴۸۱)، ۲۶ (۱۵۰۷)، (تحفة الأشراف: ۱۱۴۹۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۲۴۷/۴، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۲) (صحيح)

باب الإسراع بالجنازة

باب: جنازه دزر (جلتی سره) داورلوبیان

او د دې نه مخکښې (باب تعجيل بالجنازة) تیر شوي دې او په دې دواړو کښې فرق هم، قال الحافظ المراد بالاسراع ما فوق المشي المعتاد ويكره الاسراع الشديد آه عون المعبود... ابن قدامه رضي الله عنه فرمائی چه دا امر بالاتفاق د استحباب دپاره دې، او د ابن حزم رضي الله عنه په نزد د وجوب دپاره، قال صاحب الهداية ويمشون بها مسرعين دون الخبب آه او وئيلي شوي دي چه په دې حديث كښې د اسراع نه مراد اسراع في التجهيز دې قال القرطبي والاول اظهر، وقال النووي الثاني باطل مردود بقوله في الحديث: تضعونه عن رقابكم (بذل) او د مصنف رضي الله عنه په نزد خو گویا دا متعین ده چه په دې احادیثو كښې د اسراع نه مراد اسراع في المشي ده لکه چه د احادیث الباب نه معلومیږي، او دویم دا چه د اسراع بالتجهيز باب د دې نه مخکښې (باب تعجيل الجنازة) كښې تیر شوي دي.

[۳۱۸۱] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُبْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيْبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "أَسْرِعُوا بِالْجَنَازَةِ، فَإِنَّ تَكَّ صَالِحَةٌ فَخَيْرٌ تَقَدِّمُومَهَا إِلَيْهِ، وَإِنْ تَكَّ سِوَى ذَلِكَ، فَشَرٌّ تَضَعُونَهُ عَنْ رِقَابِكُمْ".

ابوهريره رضي الله عنه د نبی صلی الله علیه و آله نه روایت کوي چه فرمائیلي ئي وو تاسو جنازه زر زر وړئ که چرې مړې نیک انسان وي نو تاسو دده په څښلولو سره دې د کامیابی طرف ته زر ور ورسوئ که چرې مړې نیک انسان نه وی نو دا یو شر دي کوم چه تاسو د خپلو اوږونه کوزوئ (یعنی چه څومره زر کوزي شي نو غوره ده).

وراندې په دې حديث كښې اسراع د حکمت طرف ته اشاره ده چه که هغه مړې نیک او صالح سړي دې نو ښکاره ده چه د هغه دپاره هلته په عالم آخرت كښې خیر او خوبی ده نو د هغې تقاضا هم دا ده چه هغه د خیر طرف ته زر اورسولې شي او که هغه سړې داسې نه وی نو بیا هغه شر دي چه د خپلو اوږونه د هغې زر کوزول غوره دي.

[۳۱۸۲] (۲) حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عِيْنَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ كَانَ فِي جَنَازَةِ عَثْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ، وَكُنَّا مَشِيًا خَفِيفًا، فَلَجِئْنَا أَبُو بَكْرَةَ، فَرَفَعَ سَوْطَهُ، فَقَالَ: "لَقَدْ رَأَيْتُنَا وَمَنْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَرْمِلُ رَمَلًا".

عبد الرحمن دخپل پلار نه روایت کوي فرمائی چه زه د عثمان بن ابی العاص نه په جنازه كښې وم او مونږ په مزه مزه روان وو په دې وخت كښې ابوبکر صديق ته راغي اوزمونږ دوهلو دپاره ئي خپل چابك سراواخستو اوونې وئيل ایا تاسونه دی لیدلي چه کله به مونږ د نبی صلی الله علیه و آله سره جنازه وړله اوروان به وو نوزر زر به تللو.

(۱) صحیح البخاري/الجناز ۵۱ (۱۳۱۵)، صحیح مسلم/الجناز ۱۶ (۹۴۴)، سنن الترمذي/الجناز ۳۰ (۱۰۱۵)، سنن النسائي/الجناز ۴۴ (۱۹۰۹)، سنن ابن ماجه/الجناز ۱۵ (۱۴۷۷)، تحفة الأشراف: (۱۳۱۲۴)، وقد أخرجه: موطا امام مالك/الجناز ۱۶ (۵۶)، مسند احمد (۲۴۰/۲) (صحیح)

(۲) سنن النسائي/الجناز ۴۴ (۱۹۱۴)، تحفة الأشراف: (۱۱۶۹۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۳۷۵، ۳۷، ۳۸) (صحیح)

﴿ وکنا نمشی مشیا خفیفاً فلحقنا ابوبکره رضی اللہ عنہ فرغ سوطه ﴾

یعنی مونږ په جنازه کښې رو روان وو نو د شاته نه ابوبکره رضی اللہ عنہ خپله کوره او چتونکې په مونږ پسې شو، د خبرداری دپاره، او وې فرمائیل چه کله به مونږ د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سره په جنازه کښې روان وو نو ښه تیز به تلو.

وحدیث ابی بکره اخرجہ النسائی، قاله المنذری

[۳۱۸۳] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَسْعَدَةَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، ح وَحَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا عِيسَى يَعْنِي ابْنَ يُونُسَ، عَنْ عَيْنَةَ، بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ فِي جَنَازَةِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ وَقَالَ: فَحَمَلَ عَلَيْهِمْ بَغْلَتَهُ، وَأَهْوَى بِالسُّوْطِ.

دعیننه نه په بل سند سره هم داسې روایت نقل شوې دې لیکن په دې روایت کښې داسې دي چه دا جنازه د عبد الرحمن بن سمره نه وه او ابوبکر صدیق په خپل، قچر او زغلولو او په خپل چابک ئې اشاره وکړه چه زر زر خئ.

[۳۱۸۴] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ يَحْيَى الْمُجَبِّرِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ وَهُوَ يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللَّهِ التَّمِيمِيُّ، عَنْ أَبِي مَاجِدَةَ، عِنَابِ بْنِ مَسْعُودٍ، قَالَ: سَأَلْنَا نَبِيَّنَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمَشْيِ مَعَ الْجَنَازَةِ، فَقَالَ "مَا دُونَ الْخَبَبِ إِنْ يَكُنْ خَيْرًا تَعَجَّلَ إِلَيْهِ، وَإِنْ يَكُنْ غَيْرَ ذَلِكَ فَبَعْدَ الْأَهْلِ النَّارِ، وَالْجَنَازَةُ مَتَّبُوعَةٌ، وَلَا تُتَّبَعُ لَيْسَ مَعَهَا مَنْ تَقَدَّمَهَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهُوَ ضَعِيفٌ، هُوَ يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللَّهِ وَهُوَ يَحْيَى الْجَابِرِيُّ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذَا كُوفِيٌّ، وَأَبُو مَاجِدَةَ بَهْرَمِيُّ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: أَبُو مَاجِدَةَ هَذَا لَا يَعْرِفُ ۱۰.

د عبد الله بن مسعود نه روایت دې فرمائی چه مونږ دنسې عليه السلام نه تپوس او کړو چه د جنازي سره څنگه تلل پکار دي؟ نبی عليه السلام او فرمائیل دخیب نه کم (خبیب یوقسم منده ده) که چرې جنازه دنیک انسان وي نو ده لره دده منزل (قبر) ته زر رسول پکار دي او که چرې نیک نه وی نو ددو زخیانو نري ویستل بهتر دي او جنازه دتولو خلقونه مخکښې وړل پکار دي نه چه وروسته او څوک چه د جنازي نه مخکښې ځي نو داسې ده گویا کښې چه دې ددې جنازي سره نه دې روان.

﴿ والجنازة متبوعة ليس معها من تقدمها ﴾ په دې حدیث باندي کلام مخکښې تیر شوې دې، اخرجہ الترمذی وابن ماجه، و حدیث ابن ماجه مختصر، قاله المنذری

بَابُ الْإِمَامِ لَا يُصَلِّي عَلَى مَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ

په خودکشی کونکي باندي دې امام جنازه نه کوي

د ترجمه الباب والا مسئله کښې مذاهب ائمه :

یعنی کوم انسان چه خودکشی سره مړ وي د هغه به د جنازي مونځ کولې شی او که نه؟ د جمهور علماء کرامو او ائمه اربعه په نزد به کولې شی، د امام مالک رضی اللہ عنہ یو روایت د کراهت دې او د امام احمد رضی اللہ عنہ یو روایت د اهل علم وفضل دپاره د کراهت دې یعنی صرف

۱: سنن الترمذی/الجناز ۲۷ (۱۰۱۱)، سنن ابن ماجه/الجناز ۱۶ (۱۴۸۴)، (تحفة الأشراف: ۹۶۳۷)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱/۳۷۸، ۳۹۴، ۴۱۵، ۴۱۹، ۴۳۲) (ضعيف)

عوامو لره کول پکار دی او بعض علماء کرامو لکه امام اوزاعی او عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنہم د مطلق مونخ قائل نه دی. حضرت په بذل کښې هم دا لیکلې دی چه مشرانو امامانو او علماء کرامو لره کول نه دی پکار، او رسول الله ﷺ هم پخپله په داسې انسان باندې اگر چه جنازه نه ده کړې خو نور ئې د کولو نه نه دی منع کړی، پس دلته په روایت کښې دی ﴿ قال اذا لا اصلی علیه ﴾ او د نسائی په روایت کښې دی ﴿ اما انا فلا اصلی علیه ﴾

[۳۱۸۵] (۱) حَدَّثَنَا ابْنُ نُعَيْلٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا سِمَاكٌ، حَدَّثَنِي جَابِرُ بْنُ سَمْرَةَ، قَالَ: مَرَّ بِرَجُلٍ، فَصَبَّ عَلَيْهِ، فَجَاءَ جَارُهُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ: إِنَّهُ قَدْ مَاتَ، قَالَ: "وَمَا يُدْرِيكَ؟" قَالَ: أَنَا رَأَيْتُهُ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ لَمْ يَمُتْ، قَالَ: فَرَجَعْتُ، فَصَبَّ عَلَيْهِ، فَجَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: إِنَّهُ قَدْ مَاتَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ لَمْ يَمُتْ، فَرَجَعْتُ، فَصَبَّ عَلَيْهِ، فَقَالَتْ امْرَأَتُهُ: انْطَلِقْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبِرْهُ، فَقَالَ الرَّجُلُ: اللَّهُمَّ الْعَنَّهُ، قَالَ: ثُمَّ انْطَلَقَ الرَّجُلُ، فَرَأَاهُ قَدْ نَحَرَ نَفْسَهُ بِمَشْقِصٍ مَعَهُ، فَانْطَلَقَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَدْ مَاتَ، فَقَالَ: مَا يُدْرِيكَ؟ قَالَ: رَأَيْتُهُ يَنَحِرُ نَفْسَهُ بِمَشْقِصٍ مَعَهُ، قَالَ: أَنْتَ رَأَيْتَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: إِذَا لَا أَسْأَلُكَ عَلَيْهِ."

د جابر بن سمره رضی الله عنه نه روایت دی فرمائی چه یوکس مریض شو او بیا دده دمرگ خبر خور شو نودده یوگاونډي د نبی ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او عرض ئې اوکړو ای دالله رسوله فلانې مړ شو نبی ﷺ ورته او فرمائیل تاته څنگه معلومه شوه چه هغه مړ دی، ده او وئیل ماخپله اولیدو او راغلم نبی ﷺ او فرمائیل مړ نه دی بیا هغه سې واپس لاهو دهغه دمرگ خبر بیامشهور شو نودغه کس بیا نبی ﷺ ته راغې او عرض ئې اوکړو ای دالله رسوله فلانې مړ شو نبی ﷺ او فرمائیل هغه مړ نه دی بیا واپس لاړو ددې نه پس چه کله بیا خبر مشهور شو دده دمرگ نودمړي بسخې همدې گاونډي ته او وئیل څوک چه دوباره راغلي وو، لاړ شه اونبې ﷺ خبرکړه نودي گاونډي او وئیل ای الله په ده باندې لعنت اوکړي، راوي وائی چه دغه کس د مریض خواته راغې او وئې لیدل چه خپله مړئ ئې پرې کړي ده په یوغشي باندې نودې نبی ﷺ ته ورغې او عرض ئې اوکړو ای دالله رسوله هغه مړشوي دی نبی ﷺ او فرمائیل تاته څنگه معلومه شوي ده ده ورته او وئیل ما پخپله اولیدو اوراغلم چه خپله مړئ ئې په غشي پریکړي وه نبی ﷺ او فرمائیل ایاتا ولیدو هغه سړی او وئیل هو، نبی ﷺ او فرمائیل بیاخوزه په ده باندې جنازه نه کوم.

مضمون د حدیث :

قوله: ﴿ حدثنی جابر بن سمره رضی الله عنه قال مرض رجل فصیح علیه... الخ ﴾

دا دی چه جابر بن سمره رضی الله عنه فرمائی چه یو سړې مریض وو په هغه باندې ژړا او چغې وهل شروع شو، د هغه چه کوم یو گاونډی وو هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او هغوی ته ئې د هغه د مرگ خبر ورکړو، رسول الله ﷺ ترې نه تپوس اوکړو چه تاته څه خبر دی چه هغه مړ شو؟ هغه اووې چه زه خو هم داسې گنرم، رسول الله ﷺ او فرمائیل هغه لا مړ

۱: تقرده ابو داود، (تحفة الأشراف: ۲۱۶۰)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للجناز ۳۶ (۹۷۸)، سنن الترمذي للجناز ۶۸ (۱۰۶۶)، سنن النسائي للجناز ۶۸ (۱۹۶۳)، سنن ابن ماجه للجناز ۳۱ (۱۵۲۶)، مسند احمد (۵/ ۸۷، ۹۲، ۹۴، ۹۶، ۹۷) (صحيح)

نه دې، دا سرې را واپس شو د دې نه پس ئې بيا د ژړا او چغو او ازونه واوريدل، نو د دې مريض بنځې هغه گاونډی ته اووې چه لاره شه او رسول الله ﷺ ته خبر ورکړه نو دې گاونډی رومبې خو مړ کيدونکی ته خيرې اوکړې (اللهم العنه) بيا هغه گاونډی د دې مړ کيدونکی کور ته لاړو او هغه ئې اوليدو چه هغه په څه تيره څيز سره خودکشی کړې ده، (دا ترجمه د مشقص ده چه هغې ته پيکان هم وائی، د غشی سوکه، د دې نه پس هغه گاونډی د رسول الله ﷺ په خدمت کښې حاضر شو او هغوی ته ئې د هغه د هلاکيدو خبر ورکړو، او د رسول الله ﷺ په تپوس ئې عرض اوکړو چه ما خپله اوليده د هغه خودکشی، رسول الله ﷺ تاکيدا بيا تپوس اوکړو چه تا داسې اوليدل هغه اووې اووې اووې اووې او فرمائيل په داسې صورت کښې زه په هغه باندي د جنازې مونځ نه کوم.

والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه مختصرا بمعناه

بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى مَنْ قَتَلْتَهُ الْحُدُودُ

د جنازې مونځ په هغه کس باندي چه په شرعي حد کښې مړ کړې شي

يعنی کوم انسان چه په حد شرعي کښې مړ شي په هغه به د جنازې مونځ کيږي او که نه؟ د جمهور په نزد به پرې کيږي او د امام زهري رحمته الله په نزد به په مرجوم باندي د جنازې مونځ نه کيږي او د قصاص په صورت کښې به پرې کيږي. او د امام مالک او احمد رحمته الله نه روايت دي چه امام دي خپله مونځ نه کوي په هغه باندي، خو د احنافو مذهب د قطاع الطريق او بغاة په باره کښې دا دي چه د هغوی د جنازې مونځ دي اونکړې شي،

[۳۱۸۶] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو كَامِلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بَشِيرٍ، حَدَّثَنِي نَعْرُ بْنُ أَهْلِ الْبَصْرَةِ، عَنْ أَبِي بَرزَةَ الْأَسْلَمِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "لَمْ يُصَلِّ عَلَى مَا عَزَبَ بَيْنَ مَالِكٍ، وَلَمْ يَنْهَ عَنِ الصَّلَاةِ عَلَيْهِ".

د ابوبرزه اسلمي نه روايت دي فرمائي چه رسول پاک ﷺ خو ماعز بن مالک باندي جنازه اونکره په چاباندي چه دزنا حد جاري کړې شوې وو اونه ئې خلق په ده باندي د جنازې کولونه منع کړي وو.

قوله: «عن أبي برزة الأسلمي رضي الله عنه انه ان رسول الله ﷺ لم يصل على ما عزب... الخ»

ماعز بن مالک الاسلمي رضي الله عنه چه د هغه د رجم قصه مشهوره ده د هغوی د جنازې د مونځ په باره کښې روايات مختلف دي، په بعضو کښې اثبات دي په بعضو کښې نفی، نفی خو په حديث الباب کښې ده او د بخاری په يو روايت کښې دي د جابر رضي الله عنه نه روايت دي:

«فقال له النبي ﷺ خيرا وصلى عليه» قال البخاري: لم يقل يونس وابن جريج عن الزهري «فصلى

عليه» او د مسلم په روايت کښې دي «فما استغفر له ولا سبه» او هم د دې مسلم په يو

روايت کښې دي «استغفر لماعز بن مالک فقالوا غفر الله لماعز بن مالک» حافظ ابن حجر رحمته الله

په فتح الباری کښې جمع بين الروايتين داسې کړې ده چه رسول الله ﷺ په رومبې ورځ په

هغه باندي د جنازې مونځ اونکړو او په دويمه ورځ ئې پرې اوکړو، لکه چه په سنن د ابوقرة

(۱): تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۶۱۰) (حسن صحيح)

کنبې دی، په هغې کنبې دی: فقيل يا رسول الله ﷺ اتصلي عليه؟ قال لا قال فلما كان من الغد قال صلوا على صاحبكم فصلى عليه رسول الله ﷺ والناس آه وقيل المراد بالصلوة الدعاء.

فانده: په ماعز بن مالک رضي الله عنه باندې د جنازې د مونځ کولو روایات مختلف دي خو «امراة غامدية جهينية» چه په هغې باندې به مستقل باب په کتاب الحدود کنبې راشی، په هغې باندې د مونځ کولو ټول روایات متفق دي چه رسول الله ﷺ په هغې باندې جنازه اوکړه د دې فرق وجه څه ده؟ په دې باندې امام طحاوی رحمته الله عليه په مشکل الآثار کنبې داسې ليکلې دي چه امراة جهينية په خپل ځان باندې د حد جاری کولو دپاره راغلې وه، د هغې په روایت کنبې تصریح ده چه زه په خپل ځان باندې حد جاری کوم د دې گناه د وجې نه، په خلاف د ماعز رضي الله عنه چه د هغوی په باره کنبې دا راځي چه کله د هغوی نه دا گناه صادره شوه او هغوی د دې ذکر بعض خلقو ته اوکړو نو هغوی دا مشوره ورکړه چه ته د دې خبرې ذکر رسول الله ﷺ ته اوکړه پس هغه د رسول الله ﷺ په خدمت کنبې په دې نیت باندې تلې وو چه کيدې شی رسول الله ﷺ به د توبې او استغفار طريقه بيان کړي، خو چه کله دهغه د باقاعده اقرار د وجې نه د زنا ثبوت شرعي راغلو، او رسول الله ﷺ د رجم کولو فيصله او فرمائيله او په هغې باندې عمل شروع شو نو هغه اووي «غرنی قومی» چه ماته مشوره راکونکو غلطه مشوره راکړه وغيره وغيره، امام طحاوی رحمته الله عليه فرمائي چه په دې صورت کنبې د هغوی د توبې تحقق او نه شو، هم دا سبب شو د دواړو په باره کنبې د اختلاف دروایت.

باب في الصلاة على العليل

په نابالغه ماشوم باندې د جنازې کولو بيان

د نومولود د جنازې مونځ به په کوم صورت کنبې کولې شی او په کوم صورت کنبې نه دا مسئله بالتفصيل سره د اختلاف د امامانو د دې نه مخکېني «باب المشي امام الجنابة» کنبې د «السقط يصلی عليه» د لاندې تيره شوه.

رسول الله ﷺ د خپل ځوی ابراهيم رضي الله عنه د جنازې مونځ اوکړو که نه؟

په دې باره کنبې خو مصنف رحمته الله عليه صرف هم د يو مضمون حديث ذکر کړې دي يعنی په ابراهيم رضي الله عنه باندې د مونځ کولو او نه کولو.

[۳۱۸۷] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ قَارِسٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ اِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ ابْنِ اِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: "مَاتَ اِبْرَاهِيمُ ابْنُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ ابْنُ ثَمَانِيَةِ عَشْرَ شَهْرًا، فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ."

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روایت دي فرمائي چه دنبي عليه السلام ځوی ابراهيم وفات شو او اتلس مياشتي عمرئى وو اونبى عليه السلام ورباندې د جنازې مونځ ونکړو.

(عن عائشة رضي الله عنها قالت مات ابراهيم ابن النبي صلى الله عليه وسلم وهو ابن ثمانية عشر شهرا فلم يصل عليه

رسول الله ﷺ)

(١) تفرده ابو داؤد، (تحفة الأشراف: ۱۷۹۰۴)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۶۷/۱) (حسن الإسناد)

د دې نه پس مصنف رضي الله عنه دوه روايتونه ذکر کړي دي (سمعت البهي قال : لما مات ابراهيم ابن النبي صلى الله عليه وسلم صلي عليه رسول الله صلى الله عليه وسلم في المقاعد) او دويم روايت د (عن عطاء ان النبي صلى الله عليه وسلم صلي على ابنه ابراهيم وهو ابن سبعين ليلة) په دې رواياتو کښې د باب حديث اول يعنى حديث عائشة رضي الله عنها کوم چه موصولا دې په دې کښې د مانځه نفی ده چه رسول الله صلى الله عليه وسلم په خپل ځوی باندي د جنازې مونځ اونکړو او په روستنو دوه روايتونو يعنى مرسل د بهي او مرسل د عطاء په دې دواړو کښې د صلوة اثبات دې چه رسول الله صلى الله عليه وسلم په هغه باندي د جنازې مونځ اوکړو، علامه زيلعي رحمته الله عليه په نصب الرايه کښې د اثبات صلوة په باره کښې متعدد احاديث مسنده او مرسله بيان کړي دي، هغه فرمائي (فيه احاديث مسنده واحاديث مرسله، فالمسندة عن ابن عباس، والبراء بن عازب وانس والخدرى) د دې نه پس په دې يو په خپل سند کښې ذکر کړي دي، پس د ابن عباس رضي الله عنه روايت ئي د ابن ماجه نه، او حديث البراء لره مسند احمد او بيهقي نه، او حديث د انس رضي الله عنه د مسند ابويعلی نه، او حديث د ابوسعيد خدری رضي الله عنه د مسند بزار نه، او د روايات مرسله د لاندې په شروع کښې دا د ابوداؤد دوه مرسل روايتونه ذکر کړي دي او بيا ئي وړاندي ليکلې دي، ورواهما البيهقي وقال هذه الاثار مرسله وهى تشد الموصول، وروايات الاثبات اولی من روايات الترك، د دې نه علاوه نور هم روايات مرسله هغوی ذکر کړي دي، د دې نه پس په احاديث الترك کښې د ابوداؤد حديث د عائشه رضي الله عنها ذکر کړي دي او بيا فرمائي چه وذكر الخطابي مرسل عطاء وقال هذا اولی الامرین وان كان حديث عائشة رضي الله عنها احسن ايصالا آه امام بيهقي، خطابی او امام زيلعي رحمته الله عليهم د دې حضراتو ميلان د ترجيح اثبات طرف ته دي، د دې نه پس علامه زيلعي فرمائي چه کوم خلق ترک صلوة لره تسليموی هغوی د دې بعض علل ضعيفه بيان کړي دي يو دا چه رسول الله صلى الله عليه وسلم په دې ورځ باندي په صلوة الكسوف کښې مشغول وو، او يو دا چه هغه د بنوة نبي (د نبي د ځوی کيدو د وجې نه) د فضيلت د وجې نه د مانځه نه مسغنی وو څنگه چه شهداء د شهادة د وجې نه مستغنی وي، او بله دا چه نبي په نبي باندي مونځ نه کوي ځکه چه د دوی په باره کښې راغلي دي چه (لو عاش لکان نبيا) او يا دا مراد دې چه (انه لم يصل عليه بنفسه وصلى عليه غيره) والله تعالى اعلم بالصواب (زيلعي ۲/۲۸۰)

[۳۱۸۸] (۱) حَدَّثَنَا هَذَا بِنِ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمِيْدٍ، عَنْ وَايِلِ بْنِ دَاوُدَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْمُهَيَّبِيَّ، قَالَ: "لَمَّا مَاتَ اِبْرَاهِيْمُ ابْنُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، صَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَقَاعِدِ". قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَرَأْتُ عَلَى سَعِيْدِ بْنِ يَعْقُوبَ الطَّالِقَانِيَّ، قِيلَ لَهُ: حَدَّثَكُمْ ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ عَطَاءٍ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "صَلَّى عَلَى ابْنِهِ اِبْرَاهِيْمَ وَهُوَ ابْنُ سَبْعِيْنَ لَيْلَةً".

د بهي رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي هرکله چه دنبي صلى الله عليه وسلم ځوي ابراهيم وفات شونو نبي صلى الله عليه وسلم ورباندي د جنازې مونځ په خپل قيامگاه کښې وکړو. ابوداؤد وائي: چه ما سعيد بن يعقوب طالقاني ته اولوستل چه ستاسو نه حديث بيان کړو ابن مبارک، هغوی د يعقوب بن قعقاع

(۱): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۸۹۴، ۱۹۸۴) (ضعيف منكر)

نه او هغوی د عطاء نه روایت کړې دې، هغه وائی چه نبی اکرم ﷺ د خپل خوی ابراهیم د جنازې مونځ او کړو په دغه وخت هغه د اویا ورځو وو.

د ابراهیم ﷺ د عمر په موده کښې د روایاتو اختلاف:

دویمه خبره د حدیث الباب نه د ابراهیم ﷺ د عمر د مودې په باره کښې ده په رومبې حدیث اتلس میاشتی ده او په دویم حدیث کښې اویا شپې، یعنی دوه نیمې میاشتی، په دې کښې رومبې روایت صحیح دې او یو قول په دې کښې د شپاړسو میاشتو هم دې او هغه په دې وجه چه د هغوی پیدائش په ذی الحجة ۸ هجری کښې دې او وفات ئې په ۱۰ ربیع الاول ۱۰ هجری کښې دې په دې صورت کښې د ولادت او د وفات میاشت مستقل حسابولو سره پوره شپاړس میاشتی جوړیږی، وقد مر فی کتاب الصلوة فی باب صلوة الکسوف.

باب الصلوة علی الجنائز فی المسجد

باب په مسجد کښې د جنازې کولو بیان

دا د شوافعو او حنابله په نزد جائز دې بغیر د کراهت نه، او د احنافو او مالکیانو په نزد په مسجد کښې مکروه دې تحریم، او وئیلی شوې دی چه تنزیها.

[۳۱۸۹] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ صَالِحِ بْنِ عَمَلَانَ، وَمُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّادٍ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: وَاللَّهِ مَا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى سَهِيلِ ابْنِ الْبَيْضَاءِ، إِلَّا فِي الْمَسْجِدِ.

دام المومنین عائشة ﷺ نه روایت دې فرمائی چه په الله قسم نبی ﷺ په سهیل بن بیضاء باندې په جومات کښې جنازه کړې وه.

قوله: «عن عائشة ﷺ قالت والله ما صلى رسول الله ﷺ على سهيل بن البيضاء الا في المسجد» او د دې نه روستور روایت کښې دې «على ابني البيضاء في المسجد»

عائشه ﷺ فرمائی چه والله رسول الله ﷺ په سهیل بن بیضاء او د هغه په رور باندې په مسجد کښې د جنازې مونځ کړې وو.

دا روایت دلته مختصر دې او په صحیح مسلم کښې مفصل دې هغه دا چه عائشې ﷺ د سعد بن ابی وقاص ﷺ د جنازې د مانځه په باره کښې او فرمائیل چه هغه مسجد ته راوړئ چه هغه هم په هغوی باندې جنازه او کړې شی، د خلقو په دې باندې اشکال پیدا شو، په دې باندې هغوی او فرمائیل، «ما اسرع بالنبي الناس، ما صلى رسول الله ﷺ على سهيل ابن البيضاء الا في المسجد»

[۳۱۹۰] حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي قُدَيْكٍ، عَنِ الضَّحَّاكِ يَعْزِي ابْنَ عُمَانَ، عَنْ أَبِي النَّهْرِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: وَاللَّهِ لَقَدْ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ابْنِي بَيْضَاءَ فِي الْمَسْجِدِ.

۱: سنن ابن ماجه للجناز ۲۹ (۱۵۱۸)، (تحفة الأشراف: ۱۶۱۷۴)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للجناز ۳۴ (۹۷۳)، سنن الترمذي للجناز ۴۴ (۱۰۳۳)، سنن النسائي للجناز ۷۰ (۱۹۶۹)، موطا امام مالك للجناز ۸ (۲۲)، مسند احمد (۷۹/۱)، ۱۳۳، (صحيح) ۱۶۹، ۱۳۳، ۱: صحيح مسلم للجناز ۳۴ (۹۷۳)، (تحفة الأشراف: ۱۷۱۱۳) (صحيح)

سُهَيْلٌ، وَأَخِيهِ.

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دي فرمائي چه په الله قسم يقينانبي عليه السلام په دوه خامنود بيضاء باندې په جومات كښي جنازه كړې وه، چه سهيل او دهغه ورور وو.
د شوافعو او د حنابله استدلال د باب د رومي حديث نه دي، او د احنافو او د مالكيانو دليل د باب دويم حديث دي.

[۳۱۹۱] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ أَبِي ذَنْبٍ، حَدَّثَنِي صَالِحٌ مَوْلَى التَّوَعْمَةِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ صَلَّى عَلَيَّ جَنَازَةً فِي الْمَسْجِدِ، فَلَا شَيْءَ عَلَيْهِ".

د ابو هريرة رضي الله عنه نه روايت دي فرمائي چه نبی عليه السلام فرمائيلى دي: خوك چه په كوم مري باندې د جنازي مونخ په جومات كښي وكړي نو پده باندې څه گناه نشته.

قوله: ﴿عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ صَلَّى عَلَيَّ فِي الْمَسْجِدِ فَلَا شَيْءَ لَهُ﴾

شوافعو وغيره د دي دوه جوابونه وركړي دي اول دا چه دا ضعيف دي تفرد به صالح مولى التوامة، دويم دا چه په يو روايت كښي ﴿فلا شى عليه﴾ دي، خو كه د دي حديث ضعف تسليم هم كړي شى نو بيا هم حديث د عائشي رضي الله عنها كوم چه په صحيح مسلم كښي دي هم كوم د شوافعو موافق دي د دوه وجونه اول دا چه په هغه روايت كښي دي، ﴿فانكر الناس عليها﴾ چه د هغې نه معلوميرى چه د صحابه كرام رضي الله عنهم په ذهنونو كښي د هغې كراهت وو، آخر دا ولي وو، دويم په دي وجه عائشي رضي الله عنها چه د صلوة فى المسجد دپاره كوم مثال پيش كولو هغه صرف د يو يا دوه جنازو وو چه د هغې نه معلوميرى چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم دا عادت نه وو، د معمول خلاف غالبا د څه عارض په بناء باندې ئې دا مونخ په مسجد كښي كړي وو ممكنه ده د اعتكاف وغيره حالت وو يا زيات نه زيات جواز كوم چه د كراهت منافي نه دي. والله اعلم بالصواب په اوجز كښي په دي باندې تفصيلى كلام حضرت شيخ كړي دي هغه لاندې په حاشيه كښي اوگورئ ()

۱: سنن ابن ماجه للجناز ۲۹ (۱۵۱۷)، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۰۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۴۴۴، ۴۵۵) (حسن)

۲: قال ابن رشد وسبب الخلاف في ذلك حديث عائشة رضي الله عنها التي عند مالك في الموطأ وحديث أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من صلى علي جنازة في المسجد فلا شيء له وحديث عائشة ثابت وحديث أبي هريرة غير ثابت أو غير متفق علي ثبوته لكن انكار الصحابة علي عائشة يدل علي اشتهاار العمل بخلاف ذلك عندهم، ويشهد لذلك بروزه رضي الله عنه للمصلي لصلاته علي النجاشي أه قلت حديث أبي هريرة أخرجه ابوداؤد والطحاوي وابن ماجه وابن ابي شيبة، قال الحلبي رواه ابوداؤد وابن ماجه عن ابن ابي ذئب عن صالح مولى التوامة، وصالح قال ابن معين ثقة لكنه اختلط قبل موته فمن سمع منه قبل ذلك ثبت حجة، وكلهم علي ان ابن ابي ذئب سمع منه قبل الاختلاط أه قلت حديث أبي هريرة عند ابن ابي شيبة فيه زيادة ونصه: قال وكان اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا تضايق بهم المكان رجعوا ولم يصلوا وبسط ابن التركماني في الجوهر النقي ان صالحا اتما تكلم فيه لاختلاطه، ولا اختلاف في عدالته، وابن ابي ذئب سمع منه قبل الاختلاط الي آخر في الاوجز ۴۵۹/۲ وفيه ايضا قال محمد في موطأ، وموضع الجنازة بالمدينة خارج المسجد وهو الموضع الذي كان النبي صلى الله عليه وسلم يصلي علي الجنازة فيه، وقال الحافظ في الفتح ان مصلي الجنازة بالمدينة كان لاصقا بمسجد النبي صلى الله عليه وسلم من ناحية جهة المشرق ودل حديث ابن عمر انه كان للجنازة مكان معد للصلوة عليها فقد يستفاد منه ان ما وقع من الصلوة علي بعض الجناز في المسجد كان لامر عارض او لبيان الجواز أه

په سهیل ابن بیضاء کښې بیضاء د سهیل رضی الله عنه د مور لقب دې، او د هغې نوم دعد دې او د سهیل د پلار نوم وهب بن ربیعة القرشی دې، قال النووی وکان سهیل قدیم الاسلام هاجر الی الحبشة ثم عاد الی مکه ثم هاجر الی المدینة وشهد بدرا وغیرها توفی سنة ۹ هجرى او امام نووی رحمته الله دا هم فرمائی چه د بیضاء خامن درې دی سهل، سهیل او صفوان آه.

باب الدَّفْنِ عِنْدَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَعِنْدَ غُرُوبِهَا

د نمر ختلو او نمر پریوتلو په وخت کښې د تدفین نه کولو بیان

[۳۱۹۲] (۱) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا وَكَيْعٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عَلِيِّ بْنِ رَبَاحٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي، يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ عُقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ، قَالَ: "ثَلَاثُ سَاعَاتٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَانَا أَنْ نُصَلِّيَ فِيهِنَّ، أَوْ نَقْبُرَ فِيهِنَّ مَوْتَانَا: حِينَ تَطْلُعُ الشَّمْسُ بَارِغَةً حَتَّى تَرْتَفِعَ، وَحِينَ يَقُومُ قَائِمُ الظُّهْرِ حَتَّى تَمِيلَ، وَحِينَ تَضِيْفُ الشَّمْسُ لِلْغُرُوبِ حَتَّى تَغْرُبَ، أَوْ كَمَا قَالَ."

د عقبه بن عامر رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه درې ساعتونه په ورځ کښې داسې دي چه په هغې کښې مونږ نبی صلی الله علیه و آله دمونځ کولو او د مرود تدفین نه منع کړي وویو خو هغه وخت دې چه د نمر سترگه او پر قیبري او راوخیږي ترخوچه ښه راپورته شوي نه وی او بل دغري او ماسپخین وخت دي ترخوچه سوري روان شوي نه وی او بل هغه وخت دي چه نمر د پریوتلو د پاره ښکته رازورند شي ترخوچه پریوتلي نه وي.

قوله: (انه سمع عقبه بن عامر رضی الله عنه قال ثلاث ساعات كان رسول الله صلی الله علیه و آله ينهانا ان نصلی فيهن او نقبر فيهن موتانا الخ)

یعنی رسول الله صلی الله علیه و آله په اوقات ثلاثه کښې د مونځ کولو او د مری د دفن کولو نه منع فرمائلي ده یو د نمر ختلو په وخت، دویم د استواء په وخت، او دریم د غروب په وخت، د اوقات منهیة مکروه بیان په کتاب الصلوة باب الصلوة بعد العصر کښې په الدرر المنضود دویم جلد ۵۲۳ صفحه باندې تیر شوي دي.

په اوقات منهیة کښې په صلوة جنازة کښې مذاهب اربعة :

د صلوة جنازه په باره کښې هلته دا تیر شوی دی چه بعد العصر او بعد الفجر خو بالا جماع جائز دی، او د دې اوقات ثلاثه مذکوره فی الحدیث په باره کښې د احنافو مذهب دا دې چه که جنازه خاص هم په دې وختونو کښې رارسیدلي وی نو بیا خو په دې اوقاتو کښې کول جائز دی بلکه افضل دی او تاخیر دې اونکرې شی، كما فی الطحطاوی علی المراقی گینې نه، او د امام شافعی رحمته الله په نزد په دې درې وختونو کښې بغیر د کراهت نه جائز ده ځکه د جنازه ذات السبب دې او نوافل ذوات السبب د هغوی په نزد مطلقا په ټولو اوقاتو کښې جائز دی، او د امام احمد رحمته الله په نزد په دې درې وارو اوقاتو کښې ناجائز دې، او د

(۱) صحیح مسلم للمسافرین ۵۱ (۸۳۱)، سنن الترمذي للجناز ۴۱ (۱۰۳۰)، سنن النسائي للمواقیت ۳۰ (۵۶۱)، ۳۳ (۵۶۶)، الجناز ۸۹ (۲۰۱۵)، سنن ابن ماجه للجناز ۲۰ (۱۵۱۹)، تحفة الأشراف: (۹۹۳۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۵۲/۴)، سنن الدارمي للصلاة ۱۴۲ (۱۴۷۲) (صحیح)

امام مالک رضی اللہ عنہ په نزد په دې درې وارو وختونو کښې په دوه وختونو کښې ناجائز دې او د استواء په وخت جائز دې ځکه چه دا وخت د هغوی په نزد په اوقات منهيۃ کښې نه دې.

به اوقات منهيۃ کښې د مړی په دفن کولو کښې اختلاف د امامانو :

دویم جزء د دې حدیث دفن فی هذه الاوقات دې، د دې په باره کښې دا دی چه دفن د جمهور په نزد په دې اوقاتو کښې مکروه نه دې هم دا د مالکیانو او احنافو مذهب دې، خود امام احمد رضی اللہ عنہ په نزد مکروه دې لکه په المغنی او الروض المربع کښې دی، او د امام شافعی رضی اللہ عنہ مسلک امام خطابي رضی اللہ عنہ دا لیکلې دې: وكان الشافعي يرى الصلوة على الجنائز ای ساعة شاء من ليل او نهار وكذلك الدفن ای وقت كان من ليل او نهار، یعنی د امام شافعی رضی اللہ عنہ په نزد د صلوة او دفن د وارو حکم یو شان دې یعنی مطلقا جواز فی جميع الاوقات، لهذا خلاصه دا راووتله چه دفن په دې اوقاتو کښې د جمهورو په نزد چه په هغې کښې درې امامان یعنی احناف، مالکیان او شوافع دی جائز دې او په امامانو کښې صرف د امام احمد په نزد مکروه دې. لهذا دا حدیث د حنابلة په نزد خو په خپل ظاهر پاتې شو، د دې وجې نه امام ابوداؤد رضی اللہ عنہ چونکه حنبلي دې هغوی دې حدیث لره په ظاهر باندې کیخودلو سره باب الدفن قائم کړو، او د احنافو او مالکیانو په نزد دا حدیث موول دې چه د دفن نه مراد صلوة على الجنازة دې، او د شوافعو په هر حال کښې خلاف دې ځکه چه د هغوی په نزد د وارو جائز دی د هغوی په نزد دا په صلوة على الجنازة باندې محمول کول مفید نه دی هم په دې وجه امام نووی رضی اللہ عنہ یو بله لار اختیار کړه هغه دا چه د دې نه مراد خو دفن دې، خو مطلق دفن ترې نه نه دې مراد بلکه تعمد الدفن فی هذه الاوقات یعنی قصدا تاخیر کولو سره په دې اوقاتو کښې جنازه کول، کما صرح به فی شرح مسلم فی شرح هذا الحدیث، خو امام ترمذی رضی اللہ عنہ دا حدیث په صلوة باندې محمول کولو سره ترجمه قائم کړې ده (باب ما جاء فی کراهية صلوة الجنازة عند طلوع الشمس وعند غروبها) د امام ترمذی رضی اللہ عنہ په باره کښې مشهوره خو هم دا ده چه هغه شافعی المسلك دې خو د هغوی د ترجمې نه د مسلک شافعيه موافقت لیکن نه کیږي، خو د جمهورو تاویل هم دا دې، والحدیث اخرجه مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری.

باب إِذَا حَضَرَ جَنَازَ بَرِّجَالٍ وَنِسَاءٍ مَنْ يُقَدِّمُ

یعنی که د سرو او زنانو جنازې په یو وخت کښې راجمع شي

نو څوک به مقدم کولې شي یعنی امام ته نزدې؟

[۳۱۹۳] (۱) حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خَالِدِ بْنِ مَوْهَبِ الرَّمْلِيِّ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ صَبِيحٍ، حَدَّثَنِي عَمَّارُ مَوْلَى الْحَارِثِ بْنِ نَوْفَلٍ، أَنَّهُ شَهِدَ جَنَازَةَ أَمِّ كَلْثُومٍ، وَأَبْنَيْهَا، فَجَعَلَ الْغُلَامُ مِمَّا يَلِي الْإِمَامَ، فَأَلْكَرَتْ ذَلِكَ، وَفِي الْقَوْمِ ابْنُ عَبَّاسٍ، وَأَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ، وَأَبُو قَتَادَةَ، وَأَبُو هُرَيْرَةَ، فَقَالُوا: هَذِهِ السَّنَةُ.

دحارث بن نوفل ازاد کړي شوي غلام عمار نه روایت دې فرمائي چه زه دام کلثوم او دهغې

(۱) سنن النسائي للجنائز ۷۴ (۱۹۷۹)، (تحفة الأشراف: ۴۲۶۱) (صحیح)

دخوي جنازي ته حاضر شوي وم نو دهلك جنازه امام ته نزدې كيخودلې شوه نو ما دا كار بد وگنرلو او په خلقو كښې ابن عباس او ابوسعيد خدری او ابوقتاده او ابوهريرة رضي الله عنهم موجود وو هغوی ووئيل چه دا سنت عمل دې (يعنی هلك مخكښې ايخودل او بيا زنانه دهغه نه شاته). قوله: «حدثني عمار مولى الحارث بن نوفل انه شهد جنازة ام كلثوم وابنها فجعل الغلام مما يلي الامام فانكرت ذلك الخ»

يعنی ام كلثوم بنت علي رضي الله عنها زوجه عمر رضي الله عنه او دهغې خوښې زید بن عمر د دې دواړو جنازه راوړې شوه او د زید جنازه امام ته نزدې كيخودلې شوه، عمار فرمائی چه ما په دې باندي اشكال او كړو، هغه وخت په جماعت كښې ابن عباس، ابوسعيد خدری، ابوقتاده ابوهريرة رضي الله عنهم هم موجود وو. «فقالوا هذه السنة» يعنی دې ټولو او فرمائيل چه مسنون طريقه هم دا ده. في الاوجز: وعلى هذا اكثر العلماء وقول الصحابي: هي السنة له حكم الرفع وقال الحسن وسالم والقاسم النساء مما يلي الامام والرجال مما يلي القبلة قاله الزرقاني، يعنی د دې حضراتو په نزد ترتيب بالعكس دې چه د زنانه جنازه دې امام ته نزدې او د سړي جنازه دې قبلي ته نزدې كيخودلې شي او ابن رشد په دې كښې يو دريم قول هم ليكلي دې هغه دا چه چه د دواړو د جنازي مونخ دې خانله او كړې شي، د سړو خانله او د زنانو خانله، والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

بَابُ أَيُّنَ يَقُومُ الْإِمَامُ مِنَ الْمَيِّتِ إِذَا صَلَّى عَلَيْهِ

يعنی امام لره د جنازي كومي حصې ته مخامخ او دريدل پكار دي

مسئلة الباب كښې مذاهب ائمة:

په دې كښې مذاهب دائمة دا دي چه كه د سړي جنازه ده نو د جمهورو په نزد او د ائمة ثلاثه په نزد د هغه سينې ته، او د امام مالك رضي الله عنه په نزد د هغه وسط ته، او كه جنازه د ښخې وي نو په دې كښې د احنافو مسلك هم هغه دې كوم چه د سړي په حق كښې دې يعنی عند صدرها او د باقي ائمة ثلاث په نزد داسې دې عند الشافعي حيال عجيزتها وعند احمد عند وسطها، وعند مالك حيال منكبها.

[۳۱۹۴] (۱) حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ مَعَانٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ نَافِعِ أَبِي غَالِبٍ، قَالَ: كُنْتُ فِي سَكَّةِ الْيَرِيدِ، فَمَرَّتْ جَنَازَةٌ مَعَهَا نَاسٌ كَثِيرٌ، قَالُوا: جَنَازَةُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَيْرٍ، فَتَبِعْتُهَا، فَإِذَا أَنَا بِرَجُلٍ عَلَيْهِ كِسَاءٌ رَقِيقٌ عَلَى بُرَيْذِيَّتِهِ، وَعَلَى رَأْسِهِ خِرْقَةٌ تَقِيهِ مِنَ الشَّمْسِ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا الدِّهْقَانُ؟ قَالُوا: هَذَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، فَلَمَّا وُضِعَتِ الْجَنَازَةُ، قَامَ أَنَسٌ فَصَلَّى عَلَيْهَا، وَأَنَا خَلْفُهُ، لَا يَحْوُلُ بَيْنِي وَبَيْنَهُ شَيْءٌ، فَقَامَ عِنْدَ رَأْسِهِ، فَكَبَّرَ أَرْبَعَ تَكْبِيرَاتٍ، لَمْ يُطَلِّ، وَلَمْ يُسَرِّعْ، ثُمَّ ذَهَبَ يَقْعُدُ، فَقَالُوا: يَا أَبَا حَمْرَةَ، الْمَرْأَةُ الْأَنْصَارِيَّةُ، فَقَرَّبُوها وَعَلَيْهَا نَعَشٌ أَخْضَرٌ، فَقَامَ عِنْدَ عَجِيزَتِهَا، فَصَلَّى عَلَيْهَا مَحْوُ صَلَاتِهِ عَلَى الرَّجُلِ، ثُمَّ جَلَسَ، فَقَالَ الْعَلَاءُ بْنُ زِيَادٍ: يَا أَبَا حَمْرَةَ، هَكَذَا كَانَ يَفْعَلُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يُصَلِّي عَلَى الْجَنَازَةِ كَصَلَاتِكَ: يَكْبُرُ عَلَيْهَا أَرْبَعًا، وَيَقُومُ عِنْدَ رَأْسِ الرَّجُلِ، وَعَجِيزَةَ الْمَرْأَةِ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: يَا أَبَا حَمْرَةَ، غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: نَعَمْ، غَزَوْتُ مَعَهُ حُنَيْنًا، فَخَرَجَ الْمُشْرِكُونَ، فَحَمَلُوا عَلَيْنَا حَتَّى رَأَيْنَا

(۱) سنن الترمذي/الجناز ۴۵ (۱۰۳۴)، سنن ابن ماجه/الجناز ۲۱ (۱۴۹۴)، (تحفة الأشراف: ۱۶۲۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۱۸۳، ۱۵۱، ۲۰۴) (صحيح)

خَيْلَنَا وَرَأَى ظُهُورَنَا، وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ يَجْعَلُ عَلَيْنَا، فَيَدُقُّنَا، وَيَخْطِئُنَا، فَهَزَمَهُمُ اللَّهُ، وَجَعَلَ يُجَاءُ بِهِمْ، فَيَبَايَعُونَهُ عَلَى
 الْإِسْلَامِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ عَلِيَّ نَذْرًا، إِنْ جَاءَ اللَّهُ بِالرَّجُلِ الَّذِي كَانَ مِنْذُ
 الْيَوْمِ يَخْطِئُنَا، لِأَضْرِبَنَّ عُنُقَهُ، فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَجِيءَ بِالرَّجُلِ، فَلَمَّا رَأَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى
 اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، ثَبْتُ إِلَى اللَّهِ، فَأَمْسَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَأَيَّاعَهُ، لِيَقْبِي الْآخِرَ
 بِنَذْرِهِ، قَالَ: فُجِعِلَ الرَّجُلُ يَتَصَدَّى لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيَأْمُرَهُ بِقَتْلِهِ، وَجَعَلَ يَهَابُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى
 اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَقْتُلَهُ، فَلَمَّا رَأَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ لَا يَصْنَعُ شَيْئًا، بَأَيَّاعَهُ، فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا
 رَسُولَ اللَّهِ، نَذْرِي، فَقَالَ: "إِنِّي لَمْ أَمْسِكْ عَنْهُ مِنْذُ الْيَوْمِ، إِلَّا لِتَوْفِي بِنَذْرِكَ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَلَا أَوْمَضْتَ إِلَيَّ؟"
 فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّهُ لَيْسَ لِنَبِيِّ أَنْ يُؤْمِضَ، قَالَ أَبُو غَالِبٍ: فَسَأَلْتُ عَنْ صَنِيعِ أَنَسٍ فِي قِيَامِهِ عَلَى
 الْمَرَاةِ عِنْدَ عَجِيزَتِهَا، فَحَدَّثُونِي أَنَّهُ إِذَا كَانَ لَمْ تَكُنِ النَّعُوشُ، فَكَانَ الْإِمَامُ يَقُومُ حِيَالَ عَجِيزَتِهَا يَسْتَرْهَا مِنْ
 الْقَوْمِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَوْلُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمِرْتُ أَنْ أَقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، "نَسَخَ مِنْ
 هَذَا الْحَدِيثِ: الْوَفَاءَ بِالنَّذْرِ فِي قَتْلِهِ، بِقَوْلِهِ: إِنِّي قَدْ ثَبْتُ.

دا بوغالب نه روایت دې فرمائی چه زه په سکه المرید مقام کنبي موجود وم چه یوه جنازه راوړل شوه او دیر خلق ورسره وو خلقو او وئیل دا د عبد الله بن عمر رضی اللہ عنہ جنازه ده ماچه داو او ریدل نوزه هم ور پسي شوم او یوکس می اولیدو چه نری جامی ئی اغوستي دي او په وړو کنبي اس باندي سور دې او په خپل سر باندي ئی دنمر نه دبیچ کیدو دپاره د یوې کپري نه سورې کپري وو ماتپوس او کړو چه دازمیدار خوک دې خلقو راته او وئیل انس بن مالک نه دې کله چه جنازه کیښودې شوه نوانس نه پاخیدو او د جنازي مونخ ئی ورکړو زه هم ور پسي ولاړ وم زما او دهغه په مینخ کنبي خه شي حائل نه وو هغه دمري دسر سره نزدې اودریدو او خلور تکبیرونه ئی او وئیل نه دیر زر زر اونه په دیر تاخیر سره اوبیاروان شو چه کنبني خلقو ورته او وئیل ای ابو حمزه دیوانصاري زنانه جنازه هم ده، بیا هغه جنازه نزدې راوړې شوه او په شین رنگ تابوت کنبي وه دهغي دملاپه برابر اودریدو او د جنازي مونخ ئی پرې او کړو لکه خرنگه چه په سروبه ئی جنازه کوله، بیا ددې نه پس کیناستو علاء بن زیاد او وئیل ای ابو حمزه نبی صلی اللہ علیہ وسلم به هم داسې جنازه کوله خرنگه چه تا او کړه او خلور تکبیرونه به ئی وئیل د سړی دسر سره به اودریدو اودنخې دملا سره انس په او وئیل هو نبی صلی اللہ علیہ وسلم به هم داسې جنازه کوله او په دې خایونو کنبي به اودریدو، علاء بن زیاد او وئیل ای ابو حمزه آیاته دنبی صلی اللہ علیہ وسلم سره جهاد ته تلې وي؟ هغه او وئیل هو زه دنبی صلی اللہ علیہ وسلم سره په عزوه حنین کنبي موجود وم چه مشرکان بهر راوتل او په مونږ ئی حمله او کړه، تردې چه مونږ خپل اسونه دخان نه شاته اولیدل او په کافرانو کنبي یوکس وو چا چه به په مونږ حمله کوله او په توره به ئی زخمي کولو او قتل کولو به ئی بیا الله تعالی دوی ته شکست ورکړو ددې نه پس دجنگ قیدیان راوستل شروع شول چه کله به راغلل نو په اسلام باندي به ئی دنبی صلی اللہ علیہ وسلم سره بیعت کولو، په صحابه کرامو کنبي یوکس ددې خبرې نذر او منلو که چرې دغه کس الله تعالی دقیدی په شکل کنبي مونږ ته راوستو چاچه په دغه ورځ مونږ زخمي کړي وو نوزه به ئی قتل کوم داخبره چه نبی صلی اللہ علیہ وسلم واوریده نو خاموش شو او بیا هغه سړې راوستلې شو کله چه دغه صحابي نبی صلی اللہ علیہ وسلم اولیدو نوعرض ئی او کړو ای دالله رسوله ماتوبه ویستلې ده نبی

ﷺ دهغه سره په بیعت کولو کښې توقف او کړو په دې اراده باندې چه د اصحابي خپل نذر پوره کړي لیکن هغه صحابي ددې خبرې په انتظار کښې وو چه نبی ﷺ ماته ددغه کس د قتل کولو حکم او کړي نوزه به ئې قتل کړم اوزه ددې خبرې نه ویریدم هسې نه چه زه دې قتل کړم او نبی ﷺ راته غصه شي کله چه نبی ﷺ اولیدل چه هغه څه نه کوي یعنی په هیڅ طریقه ئې نه وژني نوبیا ئې مجبورا دده سره بیعت او کړو، په دې وخت کښې صحابي عرض . او کړو ای دالله رسوله زماندر به څنگه مکمل شي نبی ﷺ او فرمائیل زه چه ددې وخته پورې اودریدم او انتظار مې او کړو او بیعت مې درسره نه کوو زما دا خیال وو چه ته خپل نذر پوره کړي، ده عرض او کړو چه ای رسول الله ماته دې اشاره ولي نه کوله؟ نبی ﷺ او فرمائیل دپیغمبردشان سره دامناسب نه دی چه په سترگوچاته خفیه اشاره او کړي، ابو غالب او وئیل مادخلقونه تپوس او کړو چه انس رضی الله عنه ددې ښځې دملا په برابر په څه وجه دجنای دپاره ودریدلې وو؟ خلقو او وئیل په دې وجه چه په تیره شوي زمانه کښې تابوتونه نه وو امام به دجنای کولو په وخت کښې دښځې دکوناتوسره نزدې اودریدو ددې دپاره چه دمقتدیانو دنظرنه پته شی. ابوداؤد وائی د نبی کریم صلی الله علیه و آله حدیث «أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا لا إله إلا الله» نه ددې د قتل نذر پوره کول منسوخ کړې شوی دی ځکه چه هغه راتلو سره دا وئیلی وو چه ما توبه کړې ده او اسلام مې راوړلې دې.

قوله: ﴿ عن نافع ابی غالب قال كنت فی سكة المرید فمرت جنازة معها ناس كثير، قالوا جنازة عبدالله بن عمير ﴾:

سکه المرید په بصره کښې د یو ځانې نوم دې، هسې خو مرید د گډو بیزو او اوبسانو د ترلو ځانې ته وائی، ابو غالب وائی چه زه په سکه المرید کښې ام نوزما مخې ته یو جنازه تیره شوه چه د هغې سره یو لویه مجمع وه خلقو وئیل چه دا د عبدالله بن عمیر جنازه ده نوزه هم د هغې سره روان شوم، ناڅاپه زما نظر په یو داسې سړی باندې پریوتلو چه هغه یو نرې څادر د ځان تاؤ کړې وو چه په یو ترکی اس باندې سور وو، چه هغه په خپل سر باندې یو کپړه اچولې وه د گرمئ نه د بچ کیدو دپاره، نو ما تپوس او کړو چه دا ملک صاحب څوک دې؟ خلقو اووې دا انس بن مالک رضی الله عنه دې پس جنازه کیخودلې شوه نو انس رضی الله عنه په هغه باندې د جنازه کولو دپاره هغه ته نزدې اودریدو چه په هغې کښې ئې څلور تکبیرونه اولوستل، د مانځه د فراغت نه پس چه کله هغوی کیناستل نو خلقو عرض او کړو دا د یوې انصاری زنانه جنازه ده په دې هم جنازه او کړئ ﴿وعليها نعل احضر﴾ چه په هغې کښې باندې د شین رنگ څادر وو ﴿فقام عند عجیزتها﴾ خلقو ترې نه تپوس او کړو چه ایا رسول الله صلی الله علیه و آله به هم دغه شان مونځ کولو؟ یعنی څلور تکبیرونه او د سړی په جنازه کښې سر ته نزدې او د ښځې په جنازه کښې کوناتو ته نزدې؟ نو هغوی جواب ورکړو او ا هم دغه شان به ئې کولو، د دې نه پس په روایت کښې بیا انس رضی الله عنه د غزوه حنین یو خاص واقعه واوروله چه په هغې کښې دا دی چه په غزوه حنین کښې په شروع کښې مسلمانان تختیدلې وو او په کفارو کښې یو سړې داسې وو چه هغه په مسلمانانو کښې ډیره خونریزی کړې وه چه د

هغه په باره کښې یو صحابی نذر او منلو چه که ما په دې کافر باندې قابو بیا موندله نو زه به ئې سراووه، بیا چه کله په آخر کښې مسلمانانو ته فتح اوشوه او هغه کافران رسول الله ﷺ ته راوستلې کیدل د اسلام د بیعت دپاره نو په دې کښې دا کافر هم هغوی ته راغلو او د رسول الله ﷺ په لاس باندې ئې د بیعت کیدو اراده اوکړه خو رسول الله ﷺ قصدا د هغه د بیعت نه ایسار شو چه هغه صحابی خپل نذر پوره کړی، خو هغه صحابی ﷺ په دې انتظار کښې وو چه رسول الله ﷺ د هغه د قتل حکم او فرمائی، او بغیر د رسول الله ﷺ د اجازت ئې د هغه د قتل کولو همت پیدا نه شو، په دې کښې څه وقفه هم اوشوه چه کله رسول الله ﷺ او کتل چه هغه صحابی هم هغه شان ولاړ دې او خپل نذر نه پوره کوی نو رسول الله ﷺ د هغه بیعت کولو سره هغه په اسلام کښې داخل کړو، په دې باندې هغه صحابی رضی الله عنه عرض اوکړو یا رسول الله ﷺ زما د نذر به څه کیږی؟ رسول الله ﷺ او فرمائیل چه ما خپل لاس هم د دې دپاره خو بند کړې وو د بیعت نه چه ته خپل نذر پوره کړې، نو هغه عرض اوکړو یا رسول الله ﷺ تاسو ماته په سترگو باندې اشاره ولې اونکړه؟ نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه نبی په خپلو سترگو سره دا قسم اشارې نه کوی چه په هغې کښې د ظاهر او باطن مطابقت نه وی. د دې قسم واقعه په کتاب الجهاد (باب قتل الاسیر ولا يعرض عليه السلام) کښې د عبدالله بن ابی السرح متعلق تیره شوې ده هلته د رسول الله ﷺ دا ارشاد تیر شوې دې (انه لا یبغی ان تكون له خائنة الاعین) او دلته د روایت الفاظ داسې دی (انه لیس لیبی ان یومض)

په دې باندې هلته یو سوال او جواب هم تیر شوې دې، دلته وړاندې په روایت کښې دی، ابو غالب وائی چه ما د خلقو نه تیوس اوکړو د انس رضی الله عنه د عمل په باره کښ، یعنی د زنانه په جنازه کښې د هغې کوناتهو ته نزدې اودریدل، نو هغوی دا بیان اوکړو چه هغوی داسې ځکه اوکړل چه په هغه زمانه کښې به د زنانه په جنازو باندې جنگله نه وه په دې وجه به امام د هغې کوناتهو ته اودریدو د پردې دپاره، په دې باندې حضرت په بذل کښې لیکلې دی چه د دې نه معلومه چه د زنانه په جنازه کښې د امام قیام حیال عجیزتها خلاف اصل او د عارض په وجه دې، او اصل محل د دې سینه دې، خو چونکه صدر او سر دواړه نزدې نزدې دی نو کیدې شی چه د لرې نه کتونکې دا اوگنډی چه سر ته نزدې ولاړ وی په دې وجه ئې (عند راسه) اووې، خو د خلقو په دې جواب باندې اشکال دې چه دلته خو په روایت کښې تصریح ده د جنگلې کیدو (وعلیها نعر احضر) نو د هغې توجیه دا کیدې شی چه اصل خبره خو هم هغه ده کومه چه خلقو بیان کړه خو انس رضی الله عنه چونکه مطلقا د قیام حیال عجیزتها قائل وو په دې وجه هغوی سره د جنگلې داسې اوکړل

والحدیث اخرجه الترمذی وابن ماجه، قاله المنذری

.....

[۳۱۹۵] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ الْمُعَلِّمِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ بَرِيدَةَ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ، قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَأَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى امْرَأَةٍ مَاتَتْ فِي نَفْسِهَا، فَقَامَ عَلَيْهَا لِلصَّلَاةِ وَسَطَهَا.

دسمرة بن جندب رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه ماد نبی صلی الله علیه و آله په اقتداء کښې د یوې ښځې جنازه وکړه کومه چه دنفاس په حالت کښې مړه شوي وه نبی صلی الله علیه و آله دهغې د جنازي دپاره دنیمايي حصې په برابر اودریدو.

قوله: « عن سمرة بن جندب رضي الله عنه فقام عليها للصلاة وسطها »

زمونږ استاد مولانا امیر احمد کاندهلوی رحمته الله به فرمائیل چه دا حدیث د احنافو خلاف نه دي ځکه چه سینه هم وسط دي په دي لحاظ سره چه د سینی د لاندې هم دوه اندامونه دي بطن او رکتین (خپي) او پورته هم دوه اندامونه دي سر او ځنگلې، او که څوک د پیمائش په اعتبار سره اشکال او کړی نو مونږ به وایو چه دواړه لاسونه دي سر طرف ته او چتولو سره خواره کړې شی بیا به په پیمائش کښې برابر والې اوشی. دا جواب خوبس یو لطیفه ده. والحديث أخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

بَابُ التَّكْبِيرِ عَلَى الْجَنَازَةِ

د جنازي د تکبير و نوبیان

د جنازي په مونځ کښې په عدد د تکبيراتو کښې روايات مختلف دي، قاضي عياض فرمائی، چه د صحابه کرامو رضي الله عنهم آثار په دي کښې د دريو نه واخله تر نهو پورې دي، خوروستو په څلورو باندې د فقهاء او اهل فتوى اجماع منعقد شوه د احاديث صحيحه په بناء، او زما په علم کښې نشته چه د يو فقيه په نزد په دي کښې پنځه تکبيرونه وي سوا د ابن ابی لیلی نه (بذل) په حدیث الباب کښې د صلوة علی القبر ذکر دي، په صلوة علی القبر باندې وړاندې مستقل باب راروان دي.

[۳۱۹۶] (۲) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلَاءِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "مَرَّ بِقَبْرِ رَطْبٍ، فَصَفَّوْا عَلَيْهِ، وَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعًا"، فَقُلْتُ لِلشَّعْبِيِّ: مَنْ حَدَّثَكَ؟ قَالَ: الثَّقَفَةُ مَنِ شَهِدَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ.

د شعبي رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله په یوتازه قبر باندې تیریدو نوبی صلی الله علیه و آله اودریدو اوصحابه کرامو صفونه جوړ کړل او څلور تکبيرونه ئې ووئیل. ابواسحاق وئیلی دی چه د شعبي نه مې تپوس وکړو چه دا حدیث درته چایبان کړې دي نووئې وئیل چه یوثقه (معتبر) کس راته بیان کړی دی یعنی ابن عباس که څوک چه دغلته په دغه وخت کښې موجود وو.

۱: صحيح البخاري/الحيض ۲۹ (۳۲۲)، والجنائز ۶۲ (۱۳۳۱)، ۶۳ (۱۳۳۲)، صحيح مسلم/الجنائز ۲۷ (۹۶۴)، سنن الترمذي/الجنائز ۴۵ (۱۰۳۵)، سنن النسائي/الحيض والاستحاضة ۲۵ (۳۹۳)، الجنائز ۷۳ (۱۹۷۸)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۲۱ (۱۴۹۳)، (تحفة الأشراف: ۴۶۲۵)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۹، ۱۴/۵) (صحيح)

۲: صحيح البخاري/الأذان ۱۶۱ (۸۵۷)، والجنائز ۵ (۱۲۴۷)، ۵۴ (۱۳۱۹)، ۵۵ (۱۳۲۲)، ۵۹ (۱۳۲۶)، ۶۶ (۱۳۳۶)، ۶۹ (۱۳۴۰)، صحيح مسلم/الجنائز ۲۳ (۹۵۴)، سنن الترمذي/الجنائز ۴۷ (۱۰۳۷)، سنن النسائي/الجنائز ۹۴ (۲۰۲۵)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۲۲ (۱۵۳۰)، (تحفة الأشراف: ۵۷۶۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱، ۲۲۴/۱، ۲۸۳، ۳۳۸) (صحيح)

[۳۱۹۷] () حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، م وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ: "كَانَ زَيْدٌ يَعْنِي ابْنَ أَرْقَمَ يُكْتَبُ عَلَى جَنَازَتِنَا أَرْبَعًا، وَإِنَّهُ كَثُرَ عَلَى جَنَازَةِ خَمْسًا، فَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكْتَبُهَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَأَنَا لِحَدِيثِ ابْنِ الْمُثَنَّى أَتَقَنَّ.

د ابن ابی لیلی نه روایت دې فرمائی چه زیدبن ارقمه به زمونږ په جنازو کښې خلور تکبیرونه وئیل او هغه یوخل په یوه جنازه کښې پنځه تکبیرونه وئیل مونږ ترې تپوس وکړو چه تاخوبه مخکښې په جنازه کښې خلور تکبیرونه وئیل نن دي ولي پنځه وکړل؟ نو وئې وئیل چه نبی ﷺ به کله کله پنځه تکبیرونه هم وئیل ابوداود وائی زما په نزد باندي د ابن مثنی روایت زیات محفوظ دې.

«عن ابن ابی لیلی قان کان زید یعنی ابن ارقم، یکبر علی جنازتنا اربعا وانه کبر علی جنازة خمساً الخ» ابن ابی لیلی چه د هغه مسلک پورته د قاضی عیاض په کلام کښې تیر شو د هغې ماخذ به هم دا روایت وی، او پورته دا تیر شوې دی چه په دې کښې اختلاف د شروع نه دې روستو په خلورو تکبیرونو باندي اجماع شوې وه.

والحدیث اخرجہ مسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

بَاب مَا يَقْرَأُ عَلَى الْجَنَازَةِ

د جنازې په مونځ کښې څه لوستل پکار دي؟

[۳۱۹۸] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَوْفٍ، قَالَ: "صَلَّيْتُ مَعَ ابْنِ عَبَّاسٍ عَلَى جَنَازَةٍ، فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ، فَقَالَ: إِنَّهَا مِنَ السَّنَةِ".

د طلحه بن عبدالله بن عوف رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه د ابن عباس سره مې د یوې جنازې مونځ کړو نو سورة فاتحه ئې په جنازه کښې اولوستله او وئې ئیل چه دا سنت عمل دې. قوله: «صليت مع ابن عباس رضي الله عنهما على جنازة فقرا بفاتحة الكتاب، فقال انها من السنة» د جنازې په مونځ کښې د احنافو او مالکیانو په نزد د فاتحې قراءت نشته، د امام شافعی رضي الله عنه او احمد په نزد شته، زمونږ فقهاء کرام فرمائی «والآثار في عدمها أكثر» یعنی په نفی د قرأت کښې آثار ډیر دی په نسبت د ثبوت، د احنافو په نزد سورة فاتحه د ثناء په نیت لوستلې شی د قرأت په نیت نه.

د صلوة جنازه ارکان د ائمه اربعه په نزد څه څه دی د هغې تفصیل په اوچر کښې ذکر شوې دي، د احنافو مذهب په دې کښې دا لیکلې شوې دې چه د هغوی په نزد صرف دوه ارکان دی تکبیرات اربعه او قیام، لهذا په ناسته بغیر د عذر نه جائز نه دې صرف په تکبیر اولی کښې دې رفع یدین او کړې شی او ثناء دې اولوستلې شی، او د دویم تکبیر نه پس دې په

۱: صحيح مسلم/الجنائز ۲۳ (۹۶۱)، سنن الترمذي/الجنائز ۲۷ (۱۰۲۳)، سنن النسائي/الجنائز ۷۶ (۱۹۸۴)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۲۵ (۱۵۰۵)، (تحفة الأشراف: ۳۶۷۱)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۶۷/۴، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲) (صحيح)
 ۲: صحيح البخاري/الجنائز ۶۵ (۱۳۳۵)، سنن الترمذي/الجنائز ۳۹ (۱۰۲۷)، سنن النسائي/الجنائز ۷۷ (۱۹۸۹)، (تحفة الأشراف: ۵۷۶۴)، وقد أخرجہ: سنن ابن ماجه/الجنائز ۲۲ (۱۴۹۵) (صحيح)

نبي ﷺ درود او د دريم تکبير نه پس دعا، او د خلور تکبير نه پس سلام کذا في الدر المختار، وقال ابن الهمام اما ارکانها فالذی يفهم من کلامهم انها الدعاء والقيام والتکبير، الى آخر ما بسط، او قرأت فاتحه په کتب د شوافعو او حنابله کښې په ارکانو کښې شمير ده. والحديث اخرجه البخاری والترمذی والنسائي، قاله المنذری

باب الدُّعَاءِ لِلْمَيِّتِ

دمري دپاره دعاء غوښتلو بيان

[۳۱۹۹] حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ يَعْقِبَ الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ يَعْنِي ابْنَ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَاقَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "إِذَا صَلَّيْتُمْ عَلَى الْمَيِّتِ، فَأَخْلَصُوا لَهُ الدُّعَاءَ".

دابوهريرة رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول پاك ﷺ فرمائيلى دى: كله چه په مري باندي د جنازي مونخ كوي نو دمري دپاره په اخلاص سره دعاء او غواړئ. قوله: ﴿اذا صليتم على الميت فاخلصوا له الدعاء﴾

رسول الله ﷺ ارشاد فرمائي چه كله تاسو په يو مري باندي مونخ كوي نو د هغه دپاره په اخلاص دعا كوي، اوس پاتي شوه دا چه خه دعا او كړې شي د هغې ذكر په را روان روايت كښې راځي، والحديث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذرى

قوله: ﴿شهدت مروان سال اباهريرة كيف سمعت رسول الله ﷺ يصلى على الجنابة؟ قال امع الذى قلت؟ قال نعم قال كلام بينهما قبل ذلك﴾

على بن شماخ وائى چه زه مروان د مدينې طيبې امير سره موجود اوم په داسې حال كښې چه هغه تپوس او كړو د ابوهريرة رضي الله عنه نه چه تا رسول الله ﷺ د جنازي په مانخه كښې په كومه دعا كولو باندي اوريدلې دې؟ د دې سوال جواب وړاندي را روان دې، خو د جواب نه مخكښې ابوهريرة رضي الله عنه هغه ته او فرمائيل چه ته سره د دې چه ما نه تپوس كوي كوم چه ما وئيلې وو او كيدې شي دا د خطاب صيغه وي، يعنى سره د هغې چه تا وئيلې وو، د دې تشريح راوى دا كوي چه د دې دواړو تر مينځه د دې نه مخكښې خه خبره پيښه شوې، هغې طرف ته اشاره ده نو د ابوهريرة رضي الله عنه د كلام حاصل دا دې چه كومه خبره زما او ستا تر منځه پيښه شوې وه دهغې تقاضه خودا وه چه تا زما نه تپوس نه وې كړې، مروان جواب وركړو چه او سره د دې تپوس كوم، چه خه اوشو د حاجت په وخت خورجوع كولې شي

د جنازي په مانخه كښې چه كومي دعا گانې راغلې دي

وړاندي د دې دعا بيان دې: ﴿اللهم انت ربها وانت خلقتها وانت هديتها للاسلام وانت قبضت روحها وانت اعلم بسرها وعلايتها جتنا شفعا فاغفر له﴾ او د موطاء په روايت كښې دى ابوسعيد مقبري د ابوهريرة رضي الله عنه نه تپوس او كړو چه تاسو د جنازي مونخ څنگه كوي نو

۱: سنن ابن ماجه/الجناز ۲۳ (۱۴۹۷)، (تحفة الأشراف: ۱۴۹۹۳) (حسن)

هغوی او فرمائیل چه زه د جنازي سره د مړي د کور نه خم بيا چه کله هغه مخامخ کيخودلې شي نو د تکبير اولي نه پس د الله پاک حمد او ثناء لولم او د دويم تکبير نه پس د الله پاک په نبي ﷺ باندې درود او سلام او د دريم تکبير نه پس دا لولم ﴿اللهم عبدک وابن عبدک وابن امتک کان يشهد ان لا اله الا انت وان محمدا عبدک ورسولک وانت اعلم به، اللهم ان کان محسنا فزدنی فی احسانه وان کان مسينا فتجاوز عن سيئاته، اللهم لا تحرمنا اجره ولا تفتنا بعده﴾ د دې دعا په باره کښې په اوجز کښې ليکلې دي چه د مالکيانو په نزد دا د ابوهريره رضي الله عنه دعا لوستل مستحب دي لکه چه د هغوی په کتابونو کښې تصريح ده، او د احنافو په کتابونو کښې چه کومه دعا ذکر ده هغه په را روانو روايتونو کښې لږه په تفاوت سره را روانه ده، وفي الاوجز ۲/۲۵۴ وروی هذا الدعاء (يعني کومه چه په کتب حنفيه کښې ده) ﴿عن ابی هريرة رضي الله عنه مرفوعا عند احمد والترمذي وابی داؤد وابن حبان والبيهقي الخ﴾ او په شرح اقناع صفحه ۱۸۹ کښې ليکلې دي چه کامله دعا دا ده او بيا هغوی د دې شروع هم د هغه دعا نه کړې ده کومه چه د احنافو په کتابونو کښې ده. د هغې نه پس څه نورې دعاگانې دي کومې چه د هم هغه دعا سره شاملولو باندې د هغوی په نزد لوستلې شي، او په صحيح مسلم ۱/۳۱۱ کښې عوف بن مالک رضي الله عنه فرمائي چه مارسول الله ﷺ د جنازي په يو مونخ کښې په دې دعا لوستلو باندې واوريدو

﴿اللهم اغفر له وارحمه وعافه واعف عنه واکرم نزله ووسع مدخله واغسله بالماء والثلج والبرد ونقه من الخطايا كما نقيت الثوب الابيض من الدنس، وابدله دارا خيرا من داره واهلا خيرا من اهله وزوجا خيرا من زوجته وادخله الجنة واعذه من عذاب القبر ومن عذاب النار﴾ وړاندې هغه فرمائي چه په دې دعا اوريدو سره ما دا غوښتنه او کره چه ارمان دا جنازه زما وې، او د حنابله په نزد لکه چه د هغوی په کتابونو کښې ليکلې شوې دي دعا دا ده: ﴿اللهم اغفر لحينا وميتنا وشاهدنا وغائبنا وصغيرنا وكبيرنا وذكرونا واثاننا انک تعلم منقلبنا ومثوانا وانت علی كل شی قدير، اللهم من احييته منا فاحييه علی الاسلام والسنة ومن توفيته فتوفه عليهما اللهم اغفرله وارحمه﴾ ۰----- او د دې سره هغه دعا کومه چه د صحيح مسلم په حواله تيره شوه.

[۳۲۰۱] (۱) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مَرْوَانَ الرَّقْمِيُّ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ يَحْيَى ابْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيَّ جَنَازَةً، فَقَالَ: "اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا، وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا، وَذَكَرْنَا وَأُنْثَانَا، وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا، اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِيمَانِ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِسْلَامِ، اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ، وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمايلي چه نبي ﷺ په يو مړي باندې د جنازي مونخ او کړو او دادعائي وغوښتله: «اللهم اغفر لحينا وميتنا وصغيرنا وكبيرنا وذكرونا واثاننا وشاهدنا وغائبنا اللهم من احييته منا فاحييه على الإيمان ومن توفيته منا فتوفه على الإسلام اللهم لا تحرمنا أجره ولا

(۱) سنن الترمذي/الجناز ۲۸ (۱۰۲۴)، (تحفة الأشراف: ۱۵۳۸۵)، وقد أخرجه: سنن النسائي/الجناز ۷۷ (۱۹۸۵)، سنن ابن ماجه/الجناز ۲۳ (۱۴۹۹)، مسند احمد (۳۳۷۲) (صحيح)

تضلنا بعده» یعنی ای الله بخښنه او کړي زمونږه ژوندو او مړوته زمونږو پرو اولویوته زمونږه نارینه او زنانه ته زمونږه حاضر او غائبوته، ای الله په مونږ کښې چه دي څوک ژوندي پریخودلې دي نو دایمان سره ئې ژوندي اوساتي او په مونږ کښې چه چاله وژني نوهغه ته داسلام سره مرگ ورکړی ای الله ته مونږ لره ددې داجرته مخروم نه کړی او ددې نه پس خلقو لره په فتنه کښې مبتلا نکړي.

قوله: ﴿ عن ابی هريرة رضي الله عنه قال صلى رسول الله ﷺ على جنازة فقال اللهم اغفر لحينا وميتنا وصغيرنا وكبيرنا الخ وفي اخره اللهم لا تحرنا اجره ولا تضلنا بعده ﴾ حديث سماخ اخرجہ النسائي في اليوم واللييلة، وحديث ابی سلمة اخرجہ الترمذی والنسائي، قاله المنذرى

[۳۲۰۲] () حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ، وَحَدِيثُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَيْضًا، حَدَّثَنَا مَرْوَانَ بْنُ جُنَاحٍ، عَنْ يُونُسَ بْنِ مَيْسَرَةَ بْنِ حَلْبِيسٍ، عَنْ وَائِلَةَ بِنِ الْأَسْقَعِ، قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: "اللَّهُمَّ إِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانَ فِي ذِمَّتِكَ، فَقِهِ فِتْنَةَ الْقَبْرِ، قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فِي ذِمَّتِكَ، وَحَبْلُ جَوَارِكٍ، فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَعَذَابِ النَّارِ، وَأَنْتَ أَهْلُ الْوَفَاءِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، فَاعْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، إِنَّكَ أَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ." قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ مَرْوَانَ بْنِ جُنَاحٍ.

واثلة بن اسقع نه روایت دي چه رسول الله قا مونږ ته دیو جنازي مونږ را کړو دیو مسلمان دپاره نوما ترې واوریدل چه فرمائیل هی: «اللَّهُمَّ إِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانَ فِي ذِمَّتِكَ فَقِهِ فِتْنَةَ الْقَبْرِ» یعنی ای الله یقینا دفلانی بچی ستا په پناه کښې دي ته ورته دقبر د عذاب نه نجات ورکړی او ددوزخ د عذاب نه ورته نجات ورکړی بائې داسې او فرمائیل ستا په ذمه اوستا په پناه کښې دي یعنی په دي وجه چه هغه بنده په تا ایمان لرلو اوت ه دغه بنده لره دقبر دفتني یعنی د عذاب نه نجات ورکړي، د عبد الرحمن په روایت کښې داسې دي: چه دا بنده ستا په پناه کښې درکړې شوې دي ته ده لره دقبر دفتني او عذاب ددوزخ نه بچ کړي اوت ه وفاء کونکې ئې یعنی دبنده گانوسره چه کومه وعده کوي هغه پوره کوي اوت ه دحق مالک ئې ای الله دي بنده ته مغفرت او کړي او په ده باندې رحم او کړي یقیناته بخشش کونکی او مهربان ئې عبد الرحمن دمروان نه دا روایت په صیغه د عن سره نقل کړې دي.

﴿ عن وائلة بن الاسقع رضي الله عنه قال صلى بنا رسول الله ﷺ على رجل من المسلمين فسمعتة يقول: اللهم ان فلان ابن فلان في ذمتك وحبل جوارك فقه من فتنه القبر وعذاب النار وانت اهل الوفاء والحق اللهم فاغفر له وارحمه انك انت الغفور الرحيم ﴾ اخرجہ ابن ماجه، قاله المنذرى

بَابُ الصَّلَاةِ عَلَى الْقَبْرِ

په قبر باندې د جنازې کولو بیان

په دي مسئله کښې مذاهب ائمه:

د صلوة على القبر مسئله مختلف فيه ده، د شوافعو او حنابلة په نزد مطلقا جائز ده، د مالکیانو په نزد على المشهور ناجائز ده، او هم دا د احنافو مذهب دي لکه چه په شروحو

۱: سنن ابن ماجه/الجناز ۲۳ (۱۴۹۹)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۵۳)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳/۴۹۱) (صحیح)

کنسې دې، ففي الاوجز عن الزرقاني : واما الصلوة على القبر فقال بمشروعته الجمهور منهم الشافعي واحمد وابن وهب ومالك في رواية شاذة، والمشهور عنه منعه، وبه قال ابوحنيفة والنخعي وجماعة، وعنهم ان دفن قبل الصلوة شرع والا فلا آه وقال الابي في الاكمال : مشهور قول مالك المنع، والشاذ جوازها فيمن دفن بغير صلوة آه د امام مالک عليه السلام چه کوم قول شاذ دې هم هغه د احنافو مذهب دې ففي الهداية ان دفن الميت ولم يصل عليه صلى على قبره لان النبي صلى الله عليه وسلم صلى على قبر امرأة من الانصار، ويصلى عليه قبل ان يتفسخ، والمعتبر في معرفة ذلك اكبر الرائي هو الصحيح، لاختلاف الحال والزمان والمكان، وفي هامشه احتراز عما روى في الامالي عن ابى يوسف رضي الله عنه انه يصلى على الميت فى القبر الى ثلاثة ايام آه

گويا د مالکيانو مشهور قول دا شو چه مطلقا ناجائز دې او د احنافو په نزد صلوة على القبر په دې صورت کنسې جائز دې چه مړې بغير د صلوة نه دفن کړې شوې وي، او دا چه تر کومې پورې پري د جنازې مونخ کولې شی؟ په دې کنسې يو روايت دا دې چه تر درې ورځو پورې، او دويم قول کوم چه صاحب الهداية غوره کړې دې مالم يتفسخ ولم يتفسخ، يعنى چه ترڅو پورې غالب گمان دا وي چه د مړې بدن چاودلې نه وي او بدبويه شوې نه وي، تر هغه وخته پورې پري کولې شی.

کوم خلق چه مطلقا د جواز قائل دی د هغوی په نزد په دې کنسې هم اختلاف دې چه تر کومې پري کولې شی، د امام اسحاق او احمد په نزد تر يومياشتې پورې، اود شوافعو په دې کنسې مختلف روايتونه دی منها کقول احمد، ومنها الى ثلاثة ايام، ومنها ما لم يبل جسده (اوجز ۲/)

[۳۲۰۳] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُسَدَّدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: "أَنَّ امْرَأَةً سَوْدَاءَ، أَوْ رَجُلًا، كَانَ يَقُمُ الْمَسْجِدَ، فَقَفَدَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَأَلَ عَنْهُ، فَقِيلَ: مَاتَ، فَقَالَ: "أَلَا أَذْنَمُونِي بِهِ؟" قَالَ: دَلُونِي عَلَى قَبْرِهِ، فَدَلُوهُ، فَصَلَّى عَلَيْهِ."

د ابوهريره رضي الله عنه نه روايت دې فرمائی چه يوه تورنسل والا بنځه او که سرې چه په جومات کنسې به ئې جارو وهله نويوه ورځ نبي صلى الله عليه وسلم اونه ليدو نو د خلقونه ئې تپوس او کړو چه ايا هغه مړ شوې خونه دې خلقو ورته او وئيل چه مردې نبي صلى الله عليه وسلم او فرمائيل ماته موخبر ولې نه وو راکړې؟ ماته دهغه قبر وښائي خلقو ورته دقبر په باره کنسې معلومات ورکړو نبي صلى الله عليه وسلم دهغه قبر ته لاړو او جنازه ئې ورباندې اوکړه.

په حديث الباب کنسې د رواياتو اختلاف :

قوله: « عن ابى هريرة رضي الله عنه ان امرأة سوداء او رجلا كان يقم المسجد فقده النبي صلى الله عليه وسلم فسأل عنه فقيل مات، فقالا الا اذنموني به، قال دلوني على قبره فدلوه فصلى عليه »

په حاشيه د بذل کنسې حضرت شيخ ليکلې دی قال الحافظ فى الفتح ۳۷۱/۱ ان الشك من ثابت والصواب امرأة اسمها خرقاء وكنيتها ام محجن الخ، وقال ايضا ۷۵/۳ المذكور فى حديث ابن

(۱) صحيح البخاري/الصلوة ۷۴ (۴۵۸)، صحيح مسلم/الجناز ۲۳ (۹۵۶)، سنن ابن ماجه/الجناز ۳۲ (۱۵۲۷)، (تحفة الأشراف: ۱۴۶۵۰)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲/۳۵۲، ۳۸۸، ۴۰۶) (صحيح)

عباس رضی اللہ عنہ بلفظ مات انسان کان ﷺ یعوده وهو طلحة بن البراء رضی اللہ عنہ ووهم من قال بالاول لتغایر القصتين وكذا قال العینی آه...

او د موطاء په روایت کښې دې **من حديث ابی امامة سهل بن حنيف ان مسکينة مرضت فاخبر رسول الله ﷺ بمرضها فقال رسول الله ﷺ اذا ماتت فاذنونی بها فخرج بجنائزتها لیلا فکروهوا ان یوقظوا رسول الله ﷺ، فلما اصبح رسول الله ﷺ اخبر بالذی کان من شأنها (بعد سواله عنها کما فی روایة ابن ابی شیبة) فقال الم أمر کم ان تؤذنونی بها فقالوا یا رسول الله ﷺ کرهنا ان نخرجک لیلا ونوقظک الحدیث، قال ابن عبدالبر هذا الحدیث روى من وجوه كثيرة عن النبی ﷺ کلها ثابتة من حدیث ابی هريرة وعامر بن ربيعة وابن عباس وانس رضی اللہ عنہم آه**

وكتب الشيخ فی (الأوجز) قوله ان مسکينة وفي حدیث ابی هريرة فی الصحیحین وغيرهما ان رجلا اسود او امرأة سوداء كان یقم المسجد الی آخر ما بسط.

د حدیث مضمون دا دې ابوهريرة رضی اللہ عنہ فرمائی چه یوه توره زنانه، یا سرې (د راوی شک دې) چه په مسجد کښې به ئې جارو وهله، قم یقم مرادف دې د کنس یکنس، قمامة وائی کناسه ته یعنی خزلې لره جارو باندي یو ځانې ته جمع کړې شوه، یو ورځ چه رسول الله ﷺ هغه اونه لیده نو د هغې په باره کښې ئې سوال او فرمائیلو نو خلقو عرض او کړو چه هغه خو د شپې وفات شوې دې، یعنی دفن کړې شوې دې، رسول الله ﷺ او فرمائیل تاسو زه د هغه نه خبر ولې نه کړم؟ او بیا ئې او فرمائیل چه ما ته د هغه قبر او بنایئ چه کوم ځانې دې؟ صحابه کرام رضی اللہ عنہم رسول الله ﷺ ته د هغه قبر او بنودلو، رسول الله ﷺ پرې او دریدو او مونځ ئې پرې او کړو.

پورته دا د موطاء روایت کښې تیر شو چه رسول الله ﷺ صحابه کرام رضی اللہ عنہم ته داسې فرمائیلې وو چه د هغه د مرگ خبر ماته او کړئ، خو صحابه کرام رضی اللہ عنہم هم په دې خیال رسول الله ﷺ ته خبر ورنکړو چه په شپه کښې هغوی ته تکلیف او نه رسی،

بهر حال دا حدیث د احنافو او مالکیانو خلاف دې، په دې حدیث باندي پوره کلام زما په یو تقریر کښې داسې لکيلې شوې دې، د مفید کیدو د وجې نه نقل کولې شی، په هغې کښې لیکلې شوې دې: د شوافعو او حنابلو په نزد قبر باندي مونځ مطلقا کولې شی، اوس دا چه د کله پورې؟ په دې کښې روایات مختلف دی، د امام احمد رضی اللہ عنہ په نزد زیات نه زیات — تریومیاشتي پورې، او د شوافعو په دې کښې متعدد اقوال دی، د هغې نو یو خو هم دا دې، او یو قول دې الی ثلاثة ایام، وقيل ما لم تبلى الجنة، ابن عبدالبر وائی چه په دې باندي اجماع ده چه د ډیرې مودې د تیریدو نه پس به نه کولې کولې خو یو قول دا هم دې یجوز الی الابد.

د احنافو د طرف نه د حدیث الباب توجیه:

د احنافو او مالکیانو د طرف نه د دې روایت جواب د دې چه دا د رسول الله ﷺ خصوصیت دې کومو صحابه کرام رضی اللہ عنہم چه د رسول الله ﷺ سره مونځ او کړو هغوی تبعا او کړلو، او دلیل د خصوصیت دا دې چه د صحیح مسلم په روایت کښې یو زیادت دې هغه دا چه رسول

اللہ ﷺ او فرمائیل: ﴿ان هذه القبور مملوءة ظلمة وان الله ينورها بصلاتي عليها﴾ یعنی دا قبرونه بالکل تیاره وی او بیشکه زما په هغوی باندې زما د جنازې د مانخه د وجې نه هغه روښانه کوی، صحیح جواب هم دا دی، هسی یو جواب دا هم ورکړې شوي دي چه چونکه رسول الله ﷺ صحابه کرامو ﷺ ته د اطلاع کولو حکم فرمائیلې وو او هغوی اطلاع نه وه کړې نو گویا هغه رومبې مونخ صحیح شو، او یو جواب دا هم ورکړې شوي دي چه رسول الله ﷺ هغه وسره وعده کړې وه پس دا په منزله د نذر شو، دا جواب ابی په شرح د مسلم کښې ورکړې دي، اول ئې صحیح گرزولی دي، او یو جواب د احنافو د طرف نه بعضو دا هم کړې دي چه په عموم بلوی کښې اخبار احاد معتبر نه دی، او امام مالک ﷺ دا جواب هم ورکړې دي چه په دي باندې عمل د اهل مدینه نشته، ابن الهمام وئیلې دي چه دا حدیث زمونږ خلاف دي مگر دا چه اوئیلې شی چه هغه به بغیر د مانخه نه دفن کړې شوي وی، خو دا خبره د صحابه کرامو ﷺ نه مستبعد ده. آه من الاوجز

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم وابن ماجه. قاله المنذری

بَابُ فِي الصَّلَاةِ عَلَى الْمُسْلِمِ مَمُوتٍ فِي بِلَادِ الشِّرْكِ

کوم مسلمانان چه د مشرکانو په ملک کښې مړه شی په هغوی د جنازې کولو بیان

او امام ترمذی باب قائم کړې دي باب صلوة النبي ﷺ على النجاشي، د مصنف ﷺ اشاره هم اگر چه هم دي طرف ته ده خو په وصف عام سره چه د نجاشي خصوصیت اونگنرلې شی، گویا په دي باب کښې مصنف د صلوة على الغائب حکم بیانوي، په دي کښې هم دغه اختلاف دي کوم چه په رومبې باب کښې وو، د شوافعو او حنابله په نزد دا جائز دي، د احنافو او مالکیانو په نزد ناجائز، د ابن تیمیه مسلک په دي کښې دا دي چه د کوم مسلمان وفات په دار الحرب کښې اوشی د هغه غائبانه د جنازې مونخ په دار الاسلام کښې کیدې شی، او هم دا هغه قید دي کوم چه مصنف ﷺ په ترجمه الباب کښې ذکر کړې دي، او د بعض علماء کرامو (ابن حبان) په نزد دا په هغه صورت کښې ده چه کله مړې د قبلي په جهت کښې وی او که د مړی علاقه قبلي طرف ته نه وی نو جائز نه دي.

[۳۲۰، ۴] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَعَى لِلنَّاسِ النَّجَاشِيَّ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ، وَخَرَجَ بِهِمْ إِلَى الْمُصَلَّى، فَصَفَّ بِهِمْ، وَكَبَّرَ أَرْبَعًا تَكْبِيرَاتٍ".

د ابوهریره نه روایت دي فرمائی چه په کومه ورځ د نجاشي (حبشي بادشاه) مړشو نو صحابه کرامو نبی ﷺ ته دهغه دمرگ خبر ورکړونې ﷺ د صحابه کرامو سره عیدگاه ته لاړونې ﷺ د خلقو سره صفونه جوړ کړل او خلور تکبیرونه ئې اوونیل.

۱: صحیح البخاري/الجناز ۶۰ (۱۳۳۴)، ومناقب الأنصار ۲۸ (۳۸۸۰)، صحیح مسلم/الجناز ۲۲ (۹۵۱)، سنن النسائي/الجناز ۷۲ (۱۹۷۳)، تحفة الأشراف: ۱۳۳۳۲، وقد أخرج: موطا امام مالك/ الجناز ۵ (۱۴)، مسند احمد (۴۳۸/۲، ۴۳۹) (صحیح)

قوله: ﴿ عن ابی هريرة رضي الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نعى للناس النجاشي في اليوم الذي مات فيه وخرج بهم الى المصلى فصف بهم وكبر اربعا تكبيرات ﴾

د نجاشي رضي الله عنه نوم اصحمه وو، خو نجاشي لقب دې د حبشه د هر يو بادشاه د هغوی وفات په ۹ هجري کښې اوشو کما في الخميس والتلقيح، وقال ابن الاثير: اسلم في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم وتوفى ببلاده قبل فتح مكة آه مختصرا (عون)، د هغوی ذکر په کتاب الطهارت باب المسح على الخفين کښې تیر شوې دې.

په حديث الباب کښې دا دی چه په کومه ورځ نجاشي شاه حبشه رضي الله عنه وفات شو هم په هغه ورځ رسول الله صلى الله عليه وسلم صحابه کرام رضي الله عنهم ته د هغوی د وفات خبر ورکړو، او رسول الله صلى الله عليه وسلم صحابه کرام رضي الله عنهم سره مصلى ته تشریف یووړو او په صحابه کرام رضي الله عنهم باندې نې باقاعده صفونه جوړ کړل او د جنازې مونځ نې ادا کړو د څلورو تکبیرونو سره.

د مصلى نه مراد په حديث کښې مصلى عیدین نه دی بلکه هغه ځانې مراد دې کوم چه د جنازې د مانځه د کولو دپاره معین وو، یعنی په بقیع الغرقد کښ، دا حديث د احنافو او مالکیانو خلاف دې کوم چه د ﴿ صلوٰة على الغائب ﴾ قائل نه دی، مختصرا د دې دوه جوابونه دی: ۱: د رسول الله صلى الله عليه وسلم خصوصیت دې، پس د بعض روایتونو نه معلومیږي چه ټول حجابات د هغوی د مخې نه لرې کړې شوې وو او گویا جنازه بالکل د هغوی مخې ته وه، او ښکاره خبره ده چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه علاوه دا څیز چاته هم نشي حاصلیدې. ۲: یا دې داسې اوئیلې شي چه دا د نجاشي رضي الله عنه خصوصیت وو ځکه چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم نه د نجاشي نه علاوه په بل غائب مړي باندې د جنازې مونځ کول ثابت نه دی (۱)، والحديث اخرجه البخاري ومسلم والترمذي والنسائي، وابن ماجه، قاله المنذرى.

[۳۲۰۵] (۱) حَدَّثَنَا عَيَّادُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ يَعْنِي ابْنَ جَعْفَرٍ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي اسْحَاقَ، عَنْ أَبِي بَرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: "أَمَرْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَنْطَلِقَ إِلَى أَرْضِ النَّجَاشِيِّ، فَذَكَرَ حَدِيثَهُ، قَالَ النَّجَاشِيُّ: أَتَمَّهَدُ أَنَّهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنَّهُ الَّذِي بَشَّرَ بِهِ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ، وَلَوْلَا مَا أَنَا فِيهِ مِنَ الْمَلِكِ، لَأَتَيْتُهُ حَتَّى أَحْمِلَ نَعْلَيْهِ".

ابو برده دخپل پلار نه روایت کوی چه نبی صلى الله عليه وسلم مونځ ته حکم کړې وو چه مونځه دي د نجاشي ملک ته لاړ شو او بیا نې دنجاشي واقعه بیان کړه نجاشي اوئیل زه گواهي ورکوم ددې خبرې چه محمد دالله رسول دې او محمد هغه کس دې دچاپه باره کښې چه عیسی صلى الله عليه وسلم زیږې ورکړې وو، او که چرې زه د بادشاهي په کارونو کښې مشغول نوې نو همدا اوس به زه هغه ته تلې وم اودهغه پيزار به مې گرځول.

(۱) کذا تذکر من بعض الاساتذة لکن ذکر صاحب عون المعبود: روي انه صلى الله عليه وسلم صلي علي اربعة من الصحابة الاول النجاشي، وقصته في الكتب الستة وغيرها، والثاني معاوية بن معاوية المزني والثالث والرابع زيد بن حارثة وجعفر بن ابي طالب، ثم بسط للروايات في ذلك، وفيه بعد ذكر الروايات والكلام عليها: والحاصل ان الامر كما قال الحافظ ابن عبد البر والبيهقي والذهبي ان لسانيد هذه الاحاديث ليست بالقوية ولكن فيه تفصيل وهو الي آخر ما ذكر

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۱۱۷) (صحيح الإمام)

قوله: «عن ابی بردة عن ابیه قال امرنا رسول الله ﷺ ان نطلق الی ارض النجاشی، فذكر حدیثه» ابو بردة د خپل پلار ابو موسی اشعری رضی الله عنه نه نقل کوی چه رسول الله ﷺ مونږ ته حکم فرمائیلې وو د هجرت الی الحبشه یعنی د مکې مکرمې نه، د هغې نه پس به د هغوی پلار هغوی ته د هجرت تفصیلات بیان کړی وی کوم چه د مصنف رضی الله عنه د غرض نه بیل خیز دې هم په دې وجه مصنف رضی الله عنه حدیث لره مختصر کولو سره او فرمائیل، فذكر حدیثه د دې نجاشی رضی الله عنه واقعات د مسلمانانو سره دا احسان او حسن سلوک د تاریخ په کتابونو کښې مشهور دی. په حدیث الباب کښې د هغوی د اسلام راوړلو ذکر دې هغه دا چه هغوی او وې زه گواهی ورکوم د دې خبرې چه محمد ﷺ د الله پاک رسول دې او دا هم چه هغه نبی آخر الزمان دې د کوم بشارت چه عیسی بن مریم علیه السلام ورکړې وو، او د اسلام راوړلو په وخت ئې دا هم او وې «ولولا انا فیه من الملك لایتیه حتی احمّل نعلیه» په دې کښې هغوی د خپل ترک هجرت الی المدینة عذر بیان کړې دې چه که په دې بادشاهت او حکومت کښې چه زه پکښې دې وخت یم که د دې په عوارضو او لوازمو کښې نه وې اخته نو ما به مدینې طیبې ته هجرت کړې وې او د هغوی په خدمت کښې به حاضر شوی وې تر دې چه د رسول الله ﷺ د نعلین شریفین د اوچتولو (او په خپل سر باندې د کیخودلو) سعادت به مې حاصل کړې وې، رضی الله تعالی عنه وارضاه وجعل الجنة مثواه

کوم بادشاه چه زمونږ د نبی ﷺ داسې تعریف کوی او په هغوی باندې خپل خان قربانوی مونږ لره هم د هغوی سره محبت کول پکار دی، اگر چه رسول الله ﷺ ته د یو بادشاه یا د مخلوق د تعریف کولو او منقبت بیانولو حاجت نشته. که چه د رسول الله ﷺ تعریف کونکې خو خپله رب العلمین دې، صلی الله علیه وسلم و شرف و کرم و قر و عظم

باب فی جمع الموتی فی قبره والقبر یعلم

دیر مری په یو قبر کښې ښخول او په قبر باندې د نشان لیکولو بیان

[۳۲۰۶] حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابُ بْنُ نَجْدَةَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سَالِمٍ، وَحَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْفَضْلِ السَّجِسْتَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَاتِمُ يَعْنِي ابْنَ إِسْمَاعِيلَ، بِمَعْنَاهُ، عَنْ كَثِيرِ بْنِ زَيْدِ الْمَدَنِيِّ، عَنِ الْمُطَّلِبِ، قَالَ: لَمَّا مَاتَ عُمَانُ بْنُ مَطْعُونٍ، أَخْرَجَ بِجَنَازَتِهِ قَدْفِينَ، أَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا أَنْ يَأْتِيَهُ بِحَجَرٍ، فَلَمْ يَسْتَطِعْ حَمَلَهُ، فَقَامَ إِلَيْهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَحَسَرَ عَنْ ذِرَاعَيْهِ، قَالَ كَثِيرٌ: قَالَ الْمُطَّلِبُ: قَالَ الَّذِي يُخْبِرُنِي ذَلِكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: تَأْتِي أَنْظُرَ إِلَى بَيَاضِ ذِرَاعِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ حَسَرَ عَنْهَا، لَمْ حَمَلَهَا فَوَضَعَهَا عِنْدَ رَأْسِهِ، وَقَالَ: أَتَعَلَّمُ بِهَا قَبْرَ أَخِي، وَأَذْفِنُ إِلَيْهِ مِنْ مَاتَ مِنْ أَهْلِي".

د مطلب نه روایت دې فرمانی هر کله چه عثمان بن مطعون وفات شو او دهغه جنازه پورته کړې شوه او دفن کړې شونې ﷺ یوکس ته حکم او کړو چه یوه گټه راوړه نو هغه کس هغه گټه نشوه اوچتولې نبی ﷺ ورپاڅیدو ددواړه لاسونو لوستونږي ئې ونغښتل، مطلب وائی چاچه د نبی ﷺ دا واقعه بیان کړي ده هغه ونیلی دی چه گویا کښې زه اوس هم د نبی

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۵۶۷۲) (حسن)

عليه السلام ددواړو لاسونو سپين والي وينم چه دواړه متي ئې نغښتلي وي او کانرې يې اوچت کړې وو او د عثمان په قبر کښې ئې دهغه دسر طرف ته ئې کيخودلې وو او فرمائيلې ئې وو: اي قبره تاته خبرشته چه دا کس زما ورور ئې اوزما په خاندان کښې چه څوک هم وفات کيږي نودلته به ئې دده په خوا او شاه کښې دفن کوم.

په دې باب کښې مصنف عليه السلام چه کوم حديث ذکر کړې دې دهغې مضمون دا دې چه کله د عثمان بن مظعون رضي الله عنه وفات اوشو کوم چه د رسول الله صلى الله عليه وسلم رضاعي رور وو، نو چه کله هغه دفن کړې شو نو رسول الله صلى الله عليه وسلم يو صحابي ته حکم او فرمائيلو چه يو لوئې کانرې راوړئ هغه لارو خو هغوی اوچت نه کړې شو، په دې باندي رسول الله صلى الله عليه وسلم پخپله تشریف يوړو او رسول الله صلى الله عليه وسلم خپل لستونري مبارک اوچت کړل او هغه کانرې ئې اوچت کړو او د عثمان بن مظعون رضي الله عنه سر ته ئې هغه کيخودلو او وي فرمائيل چه دا زه د علامت په طور ږدم، او دا ئې هم او فرمائيل او هم ده ته نزدې به نور خپلوان دفن کوم د دې نه معلومه شوه چه د قبر سر ته د نخښې په طور يو کانرې وغيره کيخودل مناسب دی، او دا هم معلومه شوه چه که د يو خاندان او کورنئ خلق په يو ځائې کښې دفن کړې شي نو غوره ده. په ترجمه الباب کښې دوه اجزاء وو، اعلام قبر يعنی په قبر باندي يو نخښه لگول، او دويم جزء جمع الموتى فی قبر دې، د حديث الباب نه جزء ثاني خو ثابتيږي، د جزء اول په ثبوت کښې اشکال دې، خو دا چه اوئييلې شي چه په ترجمه کښې د قبر نه مراد قبرستان او مقبره ده، ځکه چه په بعض نسخو کښې هم دغه شان دی، فلا اشکال حينئذ

باب فِي الْحَفَارِ يَجِدُ الْعَظْمَ هَلْ يَتَنَكَّبُ ذَلِكَ الْمَكَانَ

قبر کنستونکی چه کله دبل مړي هډوکي بيامومي نوماتوی دې نه بلکه بل چرته دې قبر جوړ

کړی دفن دې کړی

يعنی که قبر کنستو والا يو قبر کنی او بيا په هغه ځائې کښې د يو مړي هډوکي راوځي نو آیا هغه ځائې پريخودلو سره دې بل ځائې قبر او کنی؟

[۳۲۰۷] حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سَعْدِ يَعْنِي ابْنَ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "كَسْرُ عَظْمِ الْمَيِّتِ، كَكْسْرِ حَيًّا".

دام المومنين عائشة رضي الله عنها نه روايت دې فرمائي چه نبي صلى الله عليه وسلم فرمائيلې دی: دمړي هډوکي ماتول داسې دي لکه د ژوندی انسان هډوکي ماتول

(كسر عظم الميت ككسر حيا)

عائشه رضي الله عنها فرمائي چه رسول الله صلى الله عليه وسلم او فرمائيل چه د مړي هډوکي ماتول داسې بده گناه ده لکه د ژوندی هډوکي ماتول

د دې حديث نه دومره خو معلوميږي چه قبر کنستلو والا ته پکار دی چه دا هډوکي دې مات نه کړي خو پوره ترجمه الباب د دې نه نه ثابتيږي، خو د دې حديث چه کوم سبب

۱: سنن ابن ماجه/الجنائز ۶۳ (۱۶۱۶)، (تحفة الأشراف: ۱۷۸۹۳)، وقد أخرجه: مسند احمد (۵۸۶، ۱۰۰، ۱۰۵، ۱۶۸، ۲۰۰) (صحيح)

دې په کومه موقع باندې چه رسول الله ﷺ دا حدیث بیان فرمائیلي وو د هغې نه د ترجمه الباب حکم معلومیري، او هغه روایت دا دې کوم حضرت په بذل کښې د درجات مرقة الصعود نه نقل کړې دې هغه دا چه جابر رضی الله عنه فرمائی چه یو ځل مونږ د رسول الله ﷺ سره د یوې جنازې سره قبرستان ته لاړو، چه مونږ هلته اورسیدو نو قبر کنستلې کیدو رسول الله ﷺ د قبر په غاړه باندې کیناستلو، قبر کنستلو والا یو هډوکی راویستلو او رسول الله ﷺ ته ئې اوښودلو چه ماتولو ئې نو رسول الله ﷺ د هغې د ماتولو نه منع او فرمائیله و ذکر ما فی حدیث الباب، او دا ئې هم او فرمائیل چه دا هډوکی هم په دې قبر کښې یو طرف ته ښخ کړه، د دې نه د ترجمه الباب حکم معلوم شو چه بل ځانې کښې د قبر کنستلو ضرورت نشته، بلکه هم هلته دې دا هډوکی پټ کړې شی، خو په احترام سره مات دې نه کړې شی، والحدیث اخرجه ابن ماجه، قاله المنذری

باب فی اللحد

دلحد (بغلی) قبر جوړولو بیان

[۳۲۰۸] (۱) حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا حَكَّامُ بْنُ سَلَمٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ عَبْدِ الْأَعْلَى، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "اللَّحْدُ لَنَا، وَالشَّقُّ لِعَيْرِنَا".

د عبداللہ بن عباس رضی الله عنه نه روایت دی - فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله فرمائیلي دي: لحد زمونږ دپاره دې اوشق دنورو خلقو دپاره وي.

قوله: (اللحد لنا والشق لغيرنا) د قبر دوه قسمونه دي لحد اوشق، شق خو هغه دې کوم چه زمونږ په علاقه کښې رواج دې یعنی نیغ قبر، او لحد د ترخ والا قبر د شق کولو نه پس د قبلي طرف ته یو غاړه شان کنستلې شی، او بیا مړې په هغې کښې ږدلې شی، د شا د طرف نه هغه بندولې شی، د کوم ځانې زمکه چه سخته وی هلته دا قبر جوړېدې شی، جائز دواړه قسمه دی، په صحابه کرامو رضی الله عنهم کښې یو صحابی لحد وو یعنی لحد به ئې جوړولو — ابو طلحه انصاری رضی الله عنه، او یو صحابی شقاق وو هغه به شق جوړولو یعنی ابو عبیده بن الجراح رضی الله عنه.

(د لنا او غیرنا نه مراد)

(لنا) نه مراد مومنان د امت محمدیه رضی الله عنهم او د (غیرنا) نه مراد مومنانو د امم سابقه، او مطلب دا دې چه مونږ لحد اختیاروو هغه زمونږ دپاره اولی دې د شق په مقابله کښ، په دې صورت کښې د دې نه مقصود د لحد فضیلت بیانول دی، د شق نه منع مقصود نه ده ځکه چه ابو عبیده رضی الله عنه به سره د خپل جلالت شان نه په دین او امانت کښ، دا کار کولو، بله دا چه که شق ممنوع وی نو صحابه کرامو رضی الله عنهم به د رسول الله ﷺ د قبر په باره کښې دا فیصله نه فرمائیله چه په لحد او شقاق دواړو کښې چه کوم وړاندې راشی هم هغه به اختیارولې شی، او د مسند احمد په یو روایت کښې دی (اللحد لنا والشق لغيرنا من اهل الكتاب) شیخ

(۱) سنن الترمذی/الجنائز ۵۳ (۱۰۴۵)، سنن النسائی/الجنائز ۸۵ (۲۰۱۱)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۳۹ (۱۵۵۴)، (تحفة الأشراف: ۵۵۴۲) (صحیح)

عبدالحق محدث دهلوی رحمۃ اللہ علیہ فرمائی چه که مراد د لنا نه مسلمانان او د لغیرنا نه یهود او نصاری وی نو بیا خو په دې صورت کښې د لحد فضیلت بلکه د شق په کراهت باندې د دې حدیث دلالت ښکاره دې او که مراد د لغیرنا نه امم سابقه دی نو په دې کښې صرف اشاره ده د لحد افضلیت طرف ته (عون المعبود) او وئیلی شوې دی چه په لنا کښې د ضمیر د جمع نه خپله د متکلم ذات دې یعنی لی یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د خپل خان په باره کښې فرمائی چه زه د خپل خان دپاره لحد غوره کوم، او د غیرنا نه مراد نور خلق، فقی الاوجز ۲: قال الطیبی یمكن ان يكون عليه الصلاة والسلام عنی بضمیر الجمع نفسه ای اوثر لی اللحد وهو اخبار عن الکائن فیکون معجزة، قال السید هذا التوجیه بعید جدا لقوله عليه الصلوة والسلام الشق لغیرنا، او دې نه پس ئی یو احتمال دا لیکلې دې چه د لنا نه مراد معاشر الانبیاء یعنی اللحد لنا معاشر الانبیاء والشق جائز لغیرنا آه والحدیث اخرجه الترمذی والنسائی وابن ماجه، قاله المنذری

بَابُ كَمْ يَدْخُلُ الْقَبْرَ

څو کسان به مړې قبر ته کوزوی؟

یعنی مړی ته په قبر کښې د کیخودلو دپاره څومره سړی کوز شی.

[۳۲۰۹] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ عَامِرٍ، قَالَ: "غَسَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيٌّ، وَالْفَضْلُ، وَأَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، وَهُمْ أَدْخَلُوا قَبْرَهُ، قَالَ: حَدَّثَنَا مَرْحَبٌ، أَوْ ابْنُ أَبِي مَرْحَبٍ، أَنَّهُمْ أَدْخَلُوا مَعَهُمْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ، فَلَمَّا فَرَّغَ عَلِيٌّ، قَالَ: إِنَّمَا يَلِي الرَّجُلَ أَهْلُهُ."

د عامر شعبي نه روایت دې فرمائی چه علي کرم الله وجهه او فضل بن عباس او اسامه بن زيد رسول پاک صلي الله عليه وسلم ته غسل ورکړل او هم دوی قبر ته کوز کړو، مرحب یا ابن أبي مرحب وئیلی دی چه دوی دخان سره عبدالرحمن بن عوف هم ملگري کړي وو، کله چه دوی دنبي صلی اللہ علیہ وسلم د تدفین نه فارغ شول نو علي هار فرمائیل: دهر سړی خدمت دهغه د کور خلق کوي.

﴿ عن عامر قال غسل رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم على والفضل واسامة بن زيد وهم ادخلوه قبره ﴾

یعنی رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم ته غسل ورکونکی دا درې حضرات وو، علی، فضل بن عباس او اسامة بن زيد رضی اللہ عنہم او هم دې کسانو رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم قبر ته کوز کړې وو، او وړاندې په یو روایت کښې دی چه دې درې وارو خپل خان سره عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ عنہم هم شامل کړې وو، یعنی اصل خو دا درې کسان وو چه د کور وو او دوی ضرورة عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ عنہم هم شامل کړې وو، ﴿ قال علی انما یلی الرجل اهله ﴾ یعنی کله چه د رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم د تدفین نه دا حضرات فارغ شو نو چونکه نور لوڼې لوڼې حضرات صحابه کرام رضی اللہ عنہم خان قریانونکی موجود وو کوم چه په دې عمل کښې شریک شوې نه وو یعنی په غسل او قبر ته کوزولو کښې نو په دې وجه علی رضی اللہ عنہ د معذرت په طور دا جمله او فرمائیله چه مړی لره دهغه د کور خلق دفن کوی، مطلب خو ښکاره دې چه دا فرمائیل غواړی چه د دې کار کونکی مونږ په دې وجه نه یو چه مونږ د نورو نه افضل نه یو، بلکه وجه دا ده کومه چه هغوی بیان

اوفرماييله، اصل کښي دا مقام مقام د تنافس وو، او د ډير شرف خيز وو کوم چه الله پاک هغوی ته نصيب اوفرماييلو اهل بيت کښي د کيدو د وجي نه.

[۳۲۱۰] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ، أَخْبَرَنَا سَفِيَّانُ، عَنِ ابْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ أَبِي مُرْحَبٍ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ نَزَلَ فِي قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: كَأَنِّي أَنْظَرُ إِلَيْهِمْ أَرْبَعَةً.

د ابو مرحب نه روایت دي فرمائي چه عبد الرحمن بن عوف دنبي علیه السلام قبر ته کوز شوې وو او وئيل ئې چه گویا کښي هغه څلور کسان زه اوس هم وينم (علي کرم الله وجهه او فضل بن عباس او اسامه بن زيد او عبد الرحمن بن عوف).

د څلورو سړو قبر ته کوزيدل کوم چه زمونږ رواج دي يعنی شق په دي کښي خو گران دي خو په لحد کښي گنجائش وي.

بَابُ فِي الْمَيِّتِ يُدْخَلُ مِنْ قِبَلِ رِجْلَيْهِ

مړې به قبر ته د خپو داړخه داخلولې شي

يعنی د مړي په قبر کښي د کوزولو کیفیت څه کيدل پکار دي؟ په دي کښي دوه مذاهب دي يو هغه کوم چه احنافو اختيار کړې دي چه مړې دي قبر ته د قبلي د طرف نه کوز کړې شي يعنی د مړي کټ دي د قبر نسي طرف ته په دي عرض کيخودلې شي او بيا دي د هغه پوره بدن يو شان په دي کښي داخل کړې شي، دويمه طريقه دا ده کومه چه شوافعو او حنابله اختيار کړې ده کومه چه حديث الباب کښي ده چه مړې لره قبر ته د خپو د طرف نه داخلول اولی دي په دي صورت کښي دي د مړي کټ د قبر خپو طرف ته اوږد کيخودلې شي او بيا به په مزه مزه د سر د طرف نه قبر ته داخل کړې شي او په دي کښي يوه دريمه طريقه دا ده کوم چه د امام شافعي علیه السلام يو قول دي چه مړې دي قبر ته د قبر د سر د طرف نه داخل کړې شي، لهذا دا درې اقوال شو، کذا في العون عن سبل السلام.

علامه شوکاني علیه السلام د احنافو وغيره په دليل کښي دا ليکلې دي چه «انه يسر» چه دا طريقه د داخلولو زياته آسانه ده او دا ئې هم وئيلې دي چه د سنت اتباع غوره ده د رائي نه، خو صاحب د سبل السلام وئيلې دي چه دا خبره نه ده قلت بل ورد النص فانه اخرج الترمذی من حديث ابن عباس علیه السلام ما هو نص في ادخال الميت من قبل القبلة وانه حديث حسن فيستفاد من المجموع انه فعل مخير فيه آه په حاشيه د هدايه کښي حضرت مولانا محمد حسن سنهلي علیه السلام دا تخير د امام مالک او اهل ظواهر مذهب ليکلې دي، يعنی د هغوی په نزد اختيار دي او دواړه برابر دي، دا حديث د ابن عباس علیه السلام کوم ته چه صاحب د السبل اشاره کړې ده هغه دي کوم چه امام ترمذی علیه السلام په باب ما جاء في الدفن بالليل کښي ذکر فرماييلې دي، «عن ابن عباس علیه السلام ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل قبراً ليلاً فاسرج له سرج فاخذه من قبل القبلة وقال رحمك الله ان كنت لاواها تلاء للقران وكبر عليه اربعاً» قال ابو عيسى حديث ابن عباس عليه السلام حديث حسن قد ذهب بعض اهل العلم الى هذا وقال يدخل الميت القبر من قبل القبلة، وقال بعضهم يسلم سلا آه.

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۱۲۴۶) (صحيح)

(نبی کریم ﷺ قبر ته څنګه کوز کړې شو؟)

اوس پاتې شوه دا مسئله چه خپله رسول الله ﷺ د کوم طرف نه داخل کړې شوې وو، نو په دې سلسله کېنې روایت مختلف دی پس په بیهقی کېنې دی په روایت د ابن عباس او ابن مسعود رضی الله عنهما انهم ادخلوا النبی ﷺ من قبل القبلة، لکن ضعفه البیهقی او په مسند شافعی ﷺ کېنې دی ان رسول الله ﷺ سل من قبل راسه، او په مراسیل دابی داؤد کېنې دی عن النخعی انه علیه السلام ادخل من قبل القبلة ولم یستل سلا (زیلعی ۲/۲۹۹) وفي الهدایة : ویدخل المیت مما یلی القبلة خلافا للشافعی فان عنده یسل سلا، لما روی انه ﷺ سل سلا ولنا ان جانب القبلة معظم فیستحب الادخال منه، واضطربت الروایات فی ادخال النبی ﷺ آه د رسول الله ﷺ په باره کېنې چه دا یو قول دې د سل د دې یو جواب زمونږ په نزد د بعض علماء کرامو نه دا منقول دې چه په حجره شریفه کېنې چه په کوم ځانې کېنې هغوی دفن کړې شوې دی په هغې کېنې د قبلي طرف ته د دیوال د نزدې والی د وجې نه ګنجائش نه وو چه کت هغه طرف ته کیخودلې شوې وې، والله تعالی اعلم بالصواب په دې موضوع باندې د مولانا عبدالحي ﷺ یو مستقل تالیف دې، ﴿ کشف الستر عن ادخال المیت فی القبر ﴾

[۳۲۱۱] (۱) حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: "أَوْصَى الْحَارِثُ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ، فَصَلَّى عَلَيْهِ، ثُمَّ أَدْخَلَهُ الْقَبْرَ مِنْ قِبَلِ رِجْلِي الْقَبْرِ، وَقَالَ: هَذَا مِنْ السَّنَةِ".

د ابواسحاق نه روایت دې فرمائی چه حارث دا وصیت کړې وو چه عبدالله بن یزید به ورباندې جنازه کوي، نوهغه ورباندې جنازه وکړله اودخپودار څه ئې قبرته کوز کړو او وئې فرمائیل داسنت طریقه ده.

قوله: ﴿ اوصی الحارث ان یصلی علیه عبدالله بن یزید فصلی علیه ثم ادخله القبر من قبل رجلی القبر وقال هذا من السنة ﴾ امام ترمذی ﷺ په دې مسئله باندې مستقل باب نه دې قائم کړې بلکه ﴿ باب الدفن باللیل ﴾ د لاندې ئې حدیث د ابن عباس رضی الله عنهما کوم چه مخکېنې تیر شو ذکر فرمائیلو سره دا مسئله ضمنا هم په دې باب کېنې بیان کړې ده، او په ابن ماجه کېنې د دې مضمون دوه روایتونه ذکر شوې دی، عن ابی رافع قال سل رسول الله ﷺ سعد او رش علی قبره ماء، او دویم عن ابی سعید ان رسول الله ﷺ اخذ من قبل القبلة واستل استلالا.... او په یو نسخه کېنې داسی دی: واستقبل استقبالا.

باب کَيْفَ يَجْلِسُ عِنْدَ الْقَبْرِ

د قبر سره ناسته په څه طریقه باندې پکار ده؟

[۳۲۱۲] (۱) حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الْأَعْمَشِ، عَنِ الْيَنْبِغَالِيِّ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ زَادَانَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ، قَالَ: "خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَةٍ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ، فَأَلْتَمَيْنَا إِلَى

(۱) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۹۶۷۵) (صحیح)

(۲) سنن النسائي للجناز ۸۱ (۲۰۰۳)، سنن ابن ماجه للجناز ۳۷ (۱۵۴۸)، (تحفة الأشراف: ۱۷۵۸)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۸۷/۴، ۲۹۵، ۲۹۷، ۲۹۶) ويأتي هذا الحديث في السنة (۴۷۵۲، ۴۷۵۴) (صحیح)

الْقَبْرِ، وَلَمْ يُلْحَدْ بَعْدُ، فَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ، وَجَلَسْنَا مَعَهُ".

د براء بن عازب رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه مونږ د نبی صلی الله علیه و آله سره دیوانصاري جنازي ته لاړو قبرته ورسیدو خو په دې وخت کښې قبر نه ووتیار شوې نونبې صلی الله علیه و آله (دقبر په خوا کښې) قبلي ته مخامخ کیناستو او مونږ هم ورسره کیناستو.

یعنی که په قبر تیاریدو کښې وخت وی او هغه کښتلی کیرې نو په داسې صورت کښې خلقو لره څه کول پکار دی، عام طور خلق په خبرو اترو او فضولیاتو کښې اخته شی، په دې باره کښې په حدیث الباب کښې دا دی سیدنا براء بن عازب رضي الله عنه فرمائی چه مونږ د رسول الله صلی الله علیه و آله سره د یو انصاري صحابی جنازي دپاره قبرستان ته لاړو، قبر تر اوسه تیار شوې نه وو نو رسول الله صلی الله علیه و آله قبلي طرف ته خاموش کیناستلو، مونږ هم د رسول الله صلی الله علیه و آله سره هم هغه شان کیناستلو، په بذل کښې دی چه د نسائی په روایت کښې دا زیادت دې، ﴿وجلستا حوله کان علی رؤسنا الطیر﴾ غوره دا ده چه دې موقعې لره غنیمت گنړلو سره د مړی د ایصال ثواب دپاره تلاوت او کرې شی، د حضرت شیخ یوه لور واده شوې چه د هغې په خوانی کښې وفات اوشو او حضرت شیخ د جنازي سره قبرستان ته تشریف اوړې وو، قبر کښتلی کیدو خلق د یو سوری لاندې په انتظار کښې ناست وو، دا احقر هم د حضرت شیخ سره ناست وو نو حضرت ماته او وئیل چه سورة یاسین اولوله، او خپله ئې هم مسلسل لوستلو، یغفر الله تعالی لنا ولها. والحديث اخرجه النسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

بَابُ فِي الدُّعَاءِ لِلْمَيِّتِ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ

بابه مړې په قبر کښې د ایخودو په وخت د دعا بیان

[۳۲۱۳] (١) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، ح وَحَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الصَّدِيقِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ إِذَا وُضِعَ الْمَيِّتُ فِي الْقَبْرِ، قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ، وَعَلَى سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، هَذَا الْقَظْمُ مُسْلِمٌ.

د ابن عمر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه کله به نبی صلی الله علیه و آله مړې په قبر کښې کیخودو نو دادعا به ئې ووتیله «بسم الله و علی سنة رسول الله -صلی الله علیه وسلم» ابوداود وئیلی دی دا دمسلم بن ابراهیم دروایت الفاظ دي
یعنی مړی لره په قبر کښې د کیخودلو په وخت څه دعا کول پکار دی، په حدیث الباب کښې د رسول الله صلی الله علیه و آله دا معمول ذکر کرې شوې دې هغوی به په دې وخت کښې ﴿بسم الله و علی سنة رسول الله﴾ (صلی الله علیه و آله) لوستل

والحديث اخرجه النسائي مسندا وموقوفا، قاله المنذرى

(١): تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ٦٦٦٠)، وقد أخرجه: سنن الترمذي/الجنائز ٥٤ (١٠٤٦)، سنن ابن ماجه/الجنائز ٣٨ (١٥٥٠)، مسند احمد (٢٧/٢، ٤٠، ٥٩، ٦٩، ١٢٧) (صحيح)

بَاب الرَّجُلِ يَمُوتُ لَهُ قَرَابَةٌ مُشْرِكٌ

د کوم مسلمان چه کوم مشرک رشته دار مرشي نوڅه کول پکار دی؟

یعنی که د یو مسلمان کافر خپلوان مرشي نوڅه به کوی!

[۳۲۱۴] (۱) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ نَاجِيَةَ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ عَلِيٍّ عَلَيْهِ السَّلَامُ، قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ عَمَكَ الشَّيْخَ الضَّالَّ قَدْ مَاتَ، قَالَ: أَذْهَبُ فَوَارِ أَبَاكَ، ثُمَّ لَا تُحَدِّثُنَّ شَيْئًا حَتَّى تَأْتِيَنِي، فَذَهَبْتُ فَوَارَيْتُهُ، وَجِئْتُهُ، فَأَمَرَنِي، فَأَغْتَسَلْتُ وَدَعَا لِي."

د علی رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه عرض مې او کړو ای د الله رسوله چه ستا بوډا تره په گمراهی کښې وفات شوې دې «د علی رضی الله عنہ والد محترم ابوطالب صاحب نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل لار شه خپل والد دفن کړه بیاراشه او ترڅو چه ماته نه ئې راغلي نوڅه کار مه کوه، دې وائی چنانچه زه لارم خپل پلاري دفن کړو بیا راغلم، نبی صلی الله علیه و آله راته د غسل کولو حکم او کړو ما غسل او کړل اوزمادپاره ئې دعا او غوښتله.

قوله: (عن علی رضی الله عنہ قال قلت للنبي صلی الله علیه و آله ان عمك الشيخ الضال قد مات الخ) علی رضی الله عنہ فرمائی چه ما رسول الله صلی الله علیه و آله ته عرض او کړو چه ستاسو بوډا گمراه تره وفات شو، په دې باندې رسول الله صلی الله علیه و آله او فرمائیل: نو بیا لار شه او پلار دې ښخ کړه، او دا ئې هم او فرمائیل د اهتمام په طور چه د ښخولو نه پس په بل څه کار کښې مشغول نه شې فوراً راتلو سره ماته خبر راکړه (ثم لا تحدثن شینا) دا د احداث نه دې چه د هغې معنی ده څه کار کول، هغه فرمائی چه زه فوراً لارم او دهغه د ښخولو نه پس رسول الله صلی الله علیه و آله ته راغلم نو هغوی ماته د غسل کولو حکم او کړو، اوزمادپاره ئې دعا او فرمائیله. والحديث اخرجه النسائي، قاله المنذرى

بَاب فِي تَعْمِيقِ الْقَبْرِ

د قبره ژورولو بیان

یعنی قبر څومره ژور کنستل پکار دی؟ قالت الحنفية: ان يعمق الى الصدر والا فالى السترة (بذل) وفي نور الايضاح او يحفر القبر نصف القامة او الى الصدر، وان يزد كان حسنا، او د امام شافعی رحمته الله په نزد د قامت په اندازه، وقال مالك لا حد لاعماقه (عون)

[۳۲۱۵] (۱) حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ الْقَعْنَبِيُّ، أَنَّ سُلَيْمَانَ بْنَ الْمُغِيرَةَ حَدَّثَهُمْ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ يَعْنَى ابْنِ هِلَالٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ، قَالَ: جَاءَتِ الْأَنْصَارُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ، فَقَالُوا: "أَصَابَنَا قَرْحٌ، وَجَهْدٌ، فَكَيْفَ تَأْمُرُنَا؟" قَالَ: احْفَرُوا، وَأَوْسِعُوا، وَأَجْعَلُوا الرَّجُلَيْنِ وَالثَّلَاثَةَ فِي الْقَبْرِ، قَيْلٌ: فَأَيُّهُمْ يُقَدَّمُ؟ قَالَ: أَكْثَرُهُمْ قَرَانًا، قَالَ: أَصِيبَ أَبِي يَوْمِيذٍ عَامِرِ بْنِ النَّيْنِ، أَوْ قَالَ: وَاحِدٌ."

دهشام بن عامر رضی الله عنہ نه روایت دې فرمائی چه دغزه احدیه ورځ انصار در رسول الله په

(۱): سنن النسائي للجنائز ۸۴ (۲۰۰۸)، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۸۷)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۹۷، ۱۳۱) (صحيح)
 (۲): سنن الترمذي للجهاد ۳۳ (۱۷۱۳)، سنن النسائي للجنائز ۸۶ (۲۰۱۲)، ۸۷ (۲۰۱۳)، ۹۰ (۲۰۱۷)، ۹۱ (۲۰۲۰)، سنن ابن ماجه للجنائز ۴۱ (۱۵۶۰)، (تحفة الأشراف: ۱۱۳۱، ۱۸۶۷۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۴/۱۹، ۲۰) (صحيح)

خدمت کښې حاضر شول او عرض ئې اوکړو چه اې الله رسوله مونږ زخمي شوي اوستړي شوي يو اياز مونږ دپاره څه حکم شته نبی ﷺ ورته او فرمائيل قبرونه ازاد جوړوي او که ضرورت وي نودوه دوه او درې درې کسان په يوقبر کښې دفن کړي مونږ عرض اوکړو چه مونږ به کوم يوقبرته مخکښې کوزوو نبی ﷺ او فرمائيل څوک چه دقران زيات عالم وي هشام وائي زما والد عامر هم په دې ورځ شهيد شوې وو او دهغه سره يو يادوه کسان دفن کړي شوي وو.

قوله: (عن هشام بن عامر قال جاءت الانصار الى رسول الله ﷺ يوم احد فقالوا اصابنا قرح وجهد الخ) يعنى په جنگ احد کښې د رسول الله ﷺ په خدمت کښې بعض انصار راغلل، او عرض ئې اوکړو يا رسول الله ﷺ تاسو ته معلومه ده چه مونږ زخميان يو او په تکليف کښې يو نو اوس څه کول پکار دي؟ يعنى اويا قبرونه کنستل ډير گران کار دي نو په دې باندي رسول الله ﷺ او فرمائيل چه قبرونه ښه ژور او فراخه اوکنئ او دوه دوه او درې درې په يو يوقبر کښې دفن کړي، هشام وائي چه زما پلار عامر هم په دې ورځ شهيد شوې وو چه د دوه کسانو تر مينځه دفن کړي شوې وو يوځانې، او د نسائي په روايت کښې دي (فكان ابى ثالث ثلاثة فى قبر) بغير د شک نه، يعنى په کوم قبر کښې چه زما پلار دفن کړي شوې وو په هغې کښې د هغوى نه علاوه دوه نور هم وو.

والحديث اخرجه الترمذى والنسائى وابن ماجه، قاله المنذرى

[۳۲۱۶] (۱) حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ يَعْنِي الْأَنْطَاكِيَّ، أَخْبَرَنَا أَبُو إِسْحَاقَ يَعْنِي الْفَزَارِيَّ، عَنِ الثَّوْرِيِّ، عَنْ أَبِي يُونُسَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ هِلَالٍ، بِإِسْنَادٍ وَهَّاءٌ زَادَ فِيهِ، وَأَعْمَقُوا.

د حميد بن هلال نه د تير شوي روايت په شان روايت منقول دي البته په دې کښې دا اضافه ده چه قبر ژور وکښي

[۳۲۱۷] (۲) حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ هِلَالٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ، بِهَذَا الْحَدِيثِ.

ترجمه: د حضرت سعد بن هشام بن عامر نه هم دا حديث را نقل دي.

بَابُ فِي تَسْوِيَةِ الْقَبْرِ

د قبر د برابرولو بيان

[۳۲۱۸] (۳) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي هَيَّاجٍ الْأَسَدِيِّ، قَالَ: بَعَثَنِي عَلِيٌّ، قَالَ لِي: "أَبْعَثُكَ عَلَى مَا بَعَثَنِي عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ! أَنْ لَا أَدَعَّ قَبْرًا مُشْرِفًا إِلَّا سَوَّيْتَهُ، وَلَا تَمْتَا إِلَّا طَسَّيْتَهُ."

۱: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۳۱، ۱۸۶۷۶) (صحيح)

۲: انظر حديث رقم: (۳۲۱۵)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۳۱، ۱۸۶۷۶) (صحيح)

۳: صحيح مسلم للجناز ۳۱ (۹۶۹)، سنن الترمذي للجناز ۵۶ (۱۰۴۹)، سنن النسائي للجناز ۹۹ (۲۰۳۳)، (تحفة الأشراف: ۱۰۰۸۳) وقد أخرجه: مسند احمد (۹۶۷، ۸۹، ۱۱۱، ۱۲۸) (صحيح)

د ابوهیاج اسدي نه روایت دې فرمائی چه علی رضی الله عنه اولیبرلم اوراته ئې او فرمائیل چه زه دي په داسې کار پسې لیږم په کوم پسې چه زه نبی صلی الله علیه و آله لیږلې وم هغه داچه زه به هیخ یو لوړ قبر بغیرد برابرولونه نه پریږدم او هیخ یو تصویر به بغیر دضایع کولونه نه پریږدم.

(عن ابی هیاج الاسدی قال بعثنی علی رضی الله عنه قال الی ابغثک علی ما بعثنی علیه رسول الله صلی الله علیه و آله ان لا ادع قبراً مشرفاً الا سویته ولا تمثالاً الا طمسته)

او هیاج اسدی وائی چه ما ته علی رضی الله عنه او فرمائیل چه زه تا د هغه کار دپاره لیږم د کوم کار دپاره چه زه رسول الله صلی الله علیه و آله لیږلې اوم بیا ئې وړاندې هغه کار بیان کړو چه څه دي چه نه به پریږدم زه هیخ یو قبر چه لوړ وی مگر دا چه هغه برابر کړم یعنی د زمکې سره، مراد ترې قرب دي، او نه به پریږدم یو تصویر هم مگر دا چه هغه ختم کړم.

په دې حدیث کښې د ارتفاع دقبر نه منع کړې شوي ده چه قبر دې زیات لوړ جوړ نه کړې شی، دا امر خو مجمع علیه دي چه قبر زیات اوچت نه دی جوړول پکار، زمکې ته نزدې لږ شان اوچتول پکار دی، قال النووی یرفع نحو شبر.

دویم څیز کوم چه په دې قبر کښې مذکور دي هغه تسوية القبر دي لکه چه په ترجمة الباب کښې دي، اوس دا خبره چه د تسوية نه مراد څه دي؟ جمهور وائی چه د دې نه مراد عدم الرفع الزائد دي چه زیات لوړ نه وی، او دویم قول په دې کښې دا دي چه د دې نه مراد تسطیح دي، یعنی قبر لره مسطح جوړول، دا مسئله مختلف فیه ده چه په قبر کښې تسنیم اولې دي یا تسطیح؟ ائمه ثلاث چه احناف هم پکښې دی د تسنیم دقبر قائل دی یعنی قبر مسنم یعنی د قب په شان کیدل پکار دی، امام شافعی رحمته الله علیه فرمائی چه د قبر مسطح کیدل پکار دی.

د رسول الله صلی الله علیه و آله د قبر په باره کښې روایات مختلف دي، په هدایه کښې دی: ویسمن القبر ولا یسطح ای لا یربع لانه صلی الله علیه و آله نهی عن ترییع القبور، من شاهد قبره احبر انه مسنم، یعنی د رسول الله صلی الله علیه و آله د قبر کتونکو وئیلې دي چه هغه مسنم دي، قال الحافظ فی الدارایة: ویعارضه ما روی من عدة طرق من انها كانت مسطحة، ثم قال: وجمع بينهما الحاکم بانها كانت اولاً کذالک ای مسطحة ثم لما سقط الجدار سمت، یعنی حاکم د رسول الله صلی الله علیه و آله د قبر په باره کښې په اختلاف د روایاتو کښې تطبیق داسې فرمائیلې دي چه په شروع کښې خو هغه مسطح وو (کما قال الشافعی) بیا چه کله په یو زمانه کښې (په خلافت د ولید بن عبدالملک او په اماره د عمر بن عبدالعزيز رضی الله عنه) کښې د حجرې شریف دیوال او غورځیدو نو هغه وخت مسنم جوړ کړې شوي وو، قلت واخرج البخاری فی صحیحہ عن سفیان التمار انه رای قبر النبی صلی الله علیه و آله مسنماً آه (عون) والحديث أخرجه مسلم والترمذی والنسائی، قاله المنذری

[۳۲۱۹] () حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَمْرٍو بْنِ السَّرِّحِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ، أَنَّ أَبَا عَلِيٍّ الْهَمْدَانِيَّ حَدَّثَهُ، قَالَ: "كُنَّا مَعَ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ بِرُودَسَ مِنْ أَرْضِ الرُّومِ، فَتَوَقَّيْ صَاحِبَ لَنَا، فَأَمَرَ فَضَالَةَ بِقَبْرِ

۱. صحیح مسلم الجناز ۳۱ (۹۶۸)، سنن النسائي الجناز ۹۹ (۲۰۳۲)، تحفة الأشراف: (۱۱۰۲۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۲۱، ۱۸۸) (صحیح)

فَسُوِي، ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ بِتَسْوِيَتِهَا"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: رُوِيَ فِي جَزِيرَةِ فِي الْبَحْرِ.

د ابوعلی همدانی نه روایت دې فرمائی چه مونږ دفضاله بن عبید سره د اسکندریه نزدې جزیره، رودس مقام کنسې وو کوم چه په روم کنسې واقع دې او هلته زمونږ یو ملگری وفات شو فضاله رضی الله عنہ حکم اوکړو اودهغه قبر دزمکې سره برابر جوړ کړې شو ددې نه پس ماییا دنبی صلی الله علیه و آله نه واوریدل چه د قبرونو د برابرولو حکم ئې کولو (یعنی دزمکې سره) نه چه ددې دلورولو، ابوداود وائی رودس دسمندر سره د یوې جزیرې نوم دې.

قوله: ﴿ كما عند فضالة بن عبید بروذس بارض الروم الخ ﴾ ابو علی همدانی وائی چه مونږ د فضاله بن عبید رضی الله عنہ سره وو په مقام روذس کنسې چه په ملک د روم کنسې دې، زمونږ د یو ملگری وفات اوشو نو فضاله رضی الله عنہ دهغه دپاره قبر جوړ کړو چه هغه ئې د زمکې نه زیات اوچت نه کړو (علی قول الجمهور) یا مسطح جوړ کړې شو غیر مسنم او فرمائی چه ما خپله د رسول الله صلی الله علیه و آله نه واوریدل چه هغوی به هم د دې حکم فرمائیلو.

وراندې مصنف رضی الله عنہ فرمائی چه روذس یو جزیره ده په بحر روم کنس، د روذس په ضبط کنسې هم کافی اختلاف دې چه بضم الراء دې یا بفتح الراء او د واؤ نه پس دال مهمله دې یا ذال معجمه، هسې دا هم هغه ځانې دې کوم چه په روذس مشهور دې د یورپ په علاقه کنس، والحديث اخرجه مسلم والنسائي، قاله المنذرى

[۳۲۲۰] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَالِجٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي فُدَيْكٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ عُثْمَانَ بْنِ هَاشِمٍ، عَنِ الْقَاسِمِ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَيَّ عَائِشَةَ، فَقُلْتُ: يَا أُمَّةَ، أَكْشَفِي لِي عَنْ قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصِيَابِجِيهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، فَكَشَفَتْ لِي عَنْ ثَلَاثَةِ قُبُورٍ، لَا مَشْرِفَةَ وَلَا لَاطِنَةَ، مَبْطُوحَةٌ بِبَطْحَاءِ الْعَرِصَةِ الْحُمْرَاءِ، قَالَ أَبُو عَلِيٍّ: "يُقَالُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقْدَمٌ، وَأَبُو بَكْرٍ عِنْدَ رَأْسِهِ، وَعُمَرُ عِنْدَ رِجْلَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ".

دقاسم نه روایت دې فرمائی چه دام المومنین عائشې رضی الله عنہا په خدمت کنسې حاضر شوم او عرض مې ورته اوکړو چه ای موري ماته دنبی صلی الله علیه و آله او دهغه ددوه ملگرو یعنی ابوبکر رضی الله عنہ او عمر رضی الله عنہ قبرونوته مې پریږده (یعنی هغه کمره راته کولو کړه په کومه کنسې چه د قبرونه موجود دي) دادرې واره قبرونه دزمکې نه نه ډیر لوړ وو او نه دزمکې سره برابر وو بلکه دیوبالچ برابر دزمکې نه پورته وو او سري گتنې پرې خوري شوي وي ابوعلی و نیلی دی چه خلق وائی چه دنبی صلی الله علیه و آله قبر دتولونه مخکنې دې اودسر مبارک سره ئې نزدې قبر دابوبکر دې اودخپوسره ئې نزدې د عمر فاروق رضی الله عنہ قبر دې د عمر فاروق نه سر در رسول پاک صلی الله علیه و آله دخپونه لاندې دې.

﴿ عن القاسم قال دخلت على عائشة رضی الله عنہا فقلت يا امه اكشفي لي عن قبر رسول الله صلی الله علیه و آله وصاحبيه رضی الله عنہم فكشفت لي عن ثلاثة قبور لا مشرفة ولا لاطنة مبطوحة ببطحاء العرصة الحمراء ﴾

شرح الحديث:

د عائشې رضی الله عنہا وراړه قاسم بن محمد فرمائی چه یو ځل عائشې رضی الله عنہا ته لارم (او چونکه هم د

۱: تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۷۵۴۶) (ضعيف)

هغې په حجره کښې د رسول الله ﷺ او شېخينو قبرونه دي چه د هغې طرف ته پرده پرته وه، او هغې ته مې عرض او کړو چه مورې ماته د رسول الله ﷺ اودهغوی د صاحبينو قبرونه اوبښايي، هغوی پرده لرې کړه () نو ما درې قبرونه داسې اوليدل چه نه اوچت وو او نه زمکې سره بالکل برابر وو، چه په هغې باندې د مقام عرصه سره کانړی پراته وو، مبطوحه يعنی مفروشه، او عرصه د خائې نوم دې او بطحاء په معنی د حصاء او الحمراء د بطحاء صفت دې.

﴿ قال ابو علي : يقال ان رسول الله ﷺ مقدم وابوبکر عند راسه وعمر عند رجليه، راسه عند رجلي رسول الله ﷺ ﴾ يعنی داسې !

عمر رضی الله عنه

رسول الله صلی الله علیه وسلم

ابوبکر رضی الله عنه

او دویم قول په دې کښې دا دې چه د عمر رضی الله عنه قبر د صدیق اکبر رضی الله عنه قدمونو مبارکو سره برابر دې داسې !

رسول الله صلی الله علیه وسلم

عمر رضی الله عنه

ابوبکر رضی الله عنه

باب الإِسْتِغْفَارِ عِنْدَ الْقَبْرِ لِلْمَيِّتِ فِي وَقْتِ الإِنْصِرَافِ

د تدفین نه پس د واپس په وخت کښې د مړي دپاره دبڅښنې غوښتلو بیان

[۳۲۲۱] () حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَجْرِ، عَنْ هَانِئِ مَوْلَى عُمَانَ، عَنْ عُمَانَ بْنِ عَفَانَ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا فَرَغَ مِنْ دَفْنِ الْمَيِّتِ، وَقَفَ عَلَيْهِ، فَقَالَ: اسْتَغْفِرُوا لِأَخِيكُمْ، وَسَلُّوا لَهُ بِالتَّثْبِيتِ، فَإِنَّهُ الآنَ يُسْأَلُ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: بَجْرِ بْنُ رَسَانَ.

د عثمان بن عفان رضی الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی ﷺ به کله دمړي ددفن کولونه فارغ شونودقبرسره به اودریدو او اوبه ئې فرمائیل دخپل دي ورورد پاره مغفرت اوغواړی اودده دپاره داستقامت سوال وکړي حکه چه اوس دده نه تپوس کیدي شی.

۱، دا خو د هغه زمانې خبره ده چه د قبرونو طرف ته پرده پرته وه، روستو په دې حجره شریفه کښې مختلف زمانو کښې تعمیری تغیرات کیدل د سقوط حائط قصه هم پښنه شوه چه د هغې ذکر په صحیح بخاری ۱۸۲۱۱ کښې هم دې. عمر بن عبدالعزیز رضی الله عنه د دې قبور ثلاثه نه گیر چاپیره د اوچت دیوال احاطه کړې وه اوس خو دې قبرونو ته رسیدل هم ممکن پاتې نه شو.

۲، تقرده به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۸۹۴۰) (صحیح)

قوله: ﴿ عن عثمان بن عفان رضي الله عنه قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا فرغ من دفن الميت وقف عليه فقال استغفروا لآخيكم واسألوا له بالتثبيت فإنه الآن يسئل ﴾

د تدفين نه پس د مړي دپاره دعا گول:

يعنى د رسول الله صلى الله عليه وسلم معمول وو چه كله به هغوى د مړي د دفن كولو نه فارغ كيدو نو په قبر باندي به د لږ ساعت دپاره اودريدو او فرمائيل به ئي چه د خپل رور دپاره استغفار او د تثبيت دعا او كړئ خكه چه د هغه نه به اوس تپوس كولې شي، د تثبيت دعا او كړئ په دې كښې اشاره ده دې آيت كريمه طرف ته ﴿ يثبت الله الدين امنوا بالقول الثابت فى الحياة الدنيا والآخرة ﴾ د قول ثابت نه مراد كلمه توحيد ده، زمونږ د شيخ رحمته الله عليه وفات په مدينه طيبه كښې شوې وو او تدفين په جنت البقيع كښې اهل بيت ته نزدې، د دفن په وخت د مسجد نبوي څه امامان هم موجود وو، د دفن د فراغت نه پس د مسجد نبوي امام شيخ عبدالله خربوش رحمته الله عليه چه د قبر په غاړه تر آخره پورې ناست وو هغوى د رفع يدين سره جهرا د شيخ دپاره دعا او فرمائيله او باقى امامان د بقيع په دروازه باندي ولاړ وو او د ملاويدونكو سره ئي تعزيتى جملې استعمالولې، او هم دغه شان د حضرت شيخ كور والا مرحومه، مور د مولانا طلحه چه د هغوى وفات په نظام الدين دهلى كښې شوې وو او د مسجد په يواړخ كښې ئي تدفين شوې وو، د تدفين نه پس مولانا انعام الحسن صاحب او مولانا افتخار الحسن صاحب كاندهلوى لږ ساعت په قبر باندي ولاړ وو او نور خلق هم، او حضرت جى د مولانا افتخار صاحب نه د تپوس پوښتنې نه بعد رفع يدين سره په خپل ځانې باندي ناست ناست دعا او كړله، يغفرالله لنا ولهم

باب كراهية الذبح عند القبر

د قبر په خوا كښې د ذبح كولو د ممانعت بيان

[۳۲۲۲] (١) حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى الْبَلْخِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا عَقْرَ فِي الْإِسْلَامِ"، قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: كَانُوا يَعْقِرُونَ عِنْدَ الْقَبْرِ بَقْرَةً أَوْ شَاةً.

دانس بن مالك رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه نبی صلى الله عليه وسلم فرمائی دي: عقربه اسلام كښې نشته دي، عبد الرزاق وئيلي دي چه خلقوبه د جاهليت په وخت كښې د قبرونوسره غواگانې او چيلی ذبح كولي (دبته عقروئيلي شي كوم چه ممنوع دي)

﴿ عن انس رضي الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا عقر في الاسلام ﴾

دا هم هغه حديث دې د كوم حواله چه مونږ په كتاب الاضحيه كښې ﴿ نهى رسول

الله صلى الله عليه وسلم عن معاقره الاعراب ﴾ الحديث د لاندې وركړې ده.

شرح الحديث:

ددې حديث تفسير خپله په كتاب كښې د راوى د طرف نه ذكر كړې شوې دي، ﴿ كانوا يعقرون عند القبر ﴾ يعنى د جاهليت په زمانه كښې به بعضو خلقو د يو لوئي سخي په قبر باندي يو

(١): تفرده أبو داود، (تحفة الأشراف: ٤٧٥)، وقد أخرجه: مسند احمد (١٩٧/٣) (صحيح)

څاروي ذبح کولو سره پريخودلو غوا وغيره د درندگانو او مارغانو د ميلمستيا دپاره، چه څنگه به دوی د خلقو په خپل ژوند کښې ميلمستيا کوله هم دغه شان مونږ د مرگ نه پس هم د هغوی د طرف نه د څاروو د ضيافت انتظام اوکړو، او بعضو به په دې نيت باندي ذبح کوله کوم چه په هغوی کښې د بعث قائل وو چه د دې صاحب قبر حشر په دې څاروي باندي سوريډو سره اوشی د قيامت په ورځ، (والا فيعث راجلا) يعنی که مونږ داسې اونکړو نو دې به پيدل ځی، هم د دې رسم جاهليت په ترديد کښې رسول الله ﷺ فرمائی (لا عقر فی الاسلام) په کتاب الاضحیة کښې يو بل حديث تير شوې دې، (نهی رسول الله ﷺ عن شریطة الشيطان) دا حديث هم چونکه د ذبح متعلق دې په دې وجه مونږ په دې باندي تنبيه اوکړه چه د طالبانو په ذهن کښې وی دا احاديث، او په امتحان ورکولو کښې سهولت وی.

بَابُ الْمَيِّتِ يُصَلَّى عَلَى قَبْرِهِ بَعْدَ حِينٍ

د څه زمانې تيريدو نه پس په قبر باندي د جنازی کولو بيان

د دې نه مخکښې هم يو باب تير شوې دې، (باب الصلوة على القبر) دلته د (بعد

حين) قيد دې.

[۳۲۲۳] () حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "خَرَجَ يَوْمًا، فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أَحَدٍ صَلَاتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ، ثُمَّ انْعَرَفَ".

د عقبه بن عامر نه روايت دې فرمائی چه ني کریم ﷺ يوه ورځ دمديني نه بهر اووتلو او د احد دشهيدانو په قبرونو باندي ئې جنازه وکړله دعامو مړو د جنازي په شان اوبيا واپس راغي. قوله: (عن عقبه بن عامر رضي الله عنه ان رسول الله ﷺ خرج يوما فصلی علی اهل احد صلته علی الميت ثم انصرف) يعنی رسول الله ﷺ يو ځل د شهداء احد په قبرونو باندي هم دغه شان مونځ اوکړو څنگه چه په مړی کولې شی، او د هغې نه روستو په دويم بيان کښې دی چه دا مونځ رسول الله ﷺ اته کاله پس کړې وو گویا په ۱۱ هجري کښ.

د دې حديث ذکر په (باب الشهيد يغسل) کښې د صلوة علی الشهيد په بحث کښې تير شوې دې، وړاندي په روايت کښې دی (کالمودع للاحياء والاموات) يعنی د رسول الله ﷺ د احد په شهيدانو باندي مونځ کول د دومره مودې نه پس او خپل وفات ته نزدي په طور د توديع او رخصت وو، د احياء توديع هم او د اموات توديع هم، د احياء توديع خو رسول الله ﷺ په حجة الوداع کښې بار بار او فرمائيله (بقوله خذوا عني مناسككم لعلی لا اراکم بعد عامی هذا) د حجة الوداع په ډيرو ځايونو باندي رسول الله ﷺ دا جمله ارشاد او فرمائيله، دا خو شوه توديع دا احياء او دا د شهداء احد په قبرونو باندي مونځ کول د امواتو توديع او گنړی... والحديث اخرجه البخاري ومسلم، والنسائي، قاله المنذري

۱: صحيح البخاري/الجنائز ۷۲ (۱۳۴۴)، والمناقب ۲۵ (۳۵۹۶)، والمغازي ۱۷ (۴۰۴۲)، ۲۷ (۴۰۸۵)، والرقاق ۷ (۶۴۲۶)، ۵۳ (۶۵۹۰)، صحيح مسلم/الفضائل ۹ (۲۲۹۶)، سنن النسائي/الجنائز ۶۱ (۱۹۵۶)، (تحفة الأشراف: ۹۹۵۶)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۴۹/۴، ۱۵۳، ۱۵۴) (صحيح)

[۳۲۲۴] حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ حَبِيبَةَ بِنِ شَرِيحٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ: "إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى عَلَى قَتْلَى أَحَدِ ثَمَانِ سِنِينَ، كَالْمَوْدِعِ لِلْأَحْيَاءِ وَالْأَمْوَاتِ".

د یزید بن ابی حبیب نه دتیر شوي روایت په شان روایت منقول دي فرمائی چه نبی ﷺ دا حد په شهیدانو باندي اته کاله پس د جنازي مونغ وکړو گویا کښې چه نبی ﷺ د مرو او ژوندو نه رخصتیري.

باب فِي الْبِنَاءِ عَلَى الْقَبْرِ

په قبر باندي د تعمیر جوړولو د ممانعت بیان

[۳۲۲۵] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا، يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "نَهَى أَنْ يُقْعَدَ عَلَى الْقَبْرِ، وَأَنْ يُقَصَّصَ، وَيُنَى عَلَيْهِ".

د جابر بن عبد الله رضی الله عنه نه روایت دي فرمائی چه د نبی کریم صلی الله علیه وسلم نه مي اوریدل دي چه منع ئي فرمائیلي وه په قبر د کیناستونه او د قبر د پخولونه او په قبر باندي د عمارت جوړولونه.

شرح الحديث :

قوله: « نهى ان يقعد على القبر وان يقصص وينى عليه »

يعنى منع فرمائيلې ده رسول الله ﷺ په قبر باندي د ناستې نه، ځكه چه په هغې كښې د حق مسلم استخفاف دي او ترك حرمت دي، او وئيلې شوې دي چه د دي نه مراد جلوس عند القبر للاحداد دي، يعنى د غم كولو دپاره هم هلته ناست او د هغه ځانې نه خوزى نه، او وئيلې شوې دي چه د دي نه مراد جلوس للتغوط والحدث دي، يعنى په قبر باندي ناسته كولو سره استنجاء كول، دا د امام مالك رحمه الله طرف ته منسوب دي (۱) احناف وائى چه مطلق جلوس خو مكروه تنزيهى دي، او لاجل الغائط حرام، د امام طحاوى رحمه الله نه هم د حديث معنى كښې قعود لاجل الحدث روایت كړې شوې دي.

وراندې په حديث كښې دي چه رسول الله ﷺ د تقصيص دقبر نه هم منع فرمائيلې ده، تقصيص په معنى د تجصيص، حص يعنى نوره او قصه يو څيز دي، يعنى قبر په چونې كلكول، قال الترمذى بعد تخريج الحديث : وقد رخص بعض اهل العلم منهم الحسن البصرى فى

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۹۹۵۶) (صحيح)

(۲) صحيح مسلم/الجناز ۳۲ (۹۷۰)، سنن الترمذى/الجناز ۵۸ (۱۰۵۲)، سنن النسائى/الجناز ۹۶ (۲۰۲۹)، (تحفة الأشراف: ۲۲۷۴، ۲۷۹۶)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه/الجناز ۴۳ (۱۵۶۲)، مسند احمد (۲/۲۹۵، ۳۳۲، ۳۹۹) (صحيح)

(۳) وفي الكوكب ۳/۱۹۱ قال بعضهم هو اي الجلوس علي ظاهره، وقال الطحاوي ان الامام لم يكره الجلوس مطلقا هو كناية عن قضاء الحاجة وقال هو المكروه عندنا الجلوس بمعناه المشهور اهد وفي هامشه : ووافقه مالك فقال في الموطاء المراد بالقعود الحدث، وقال النووي هذا تاويل ضعيف او باطل، والصواب ان المراد بالقعود الجلوس وهو مذهب الشافعي وجمهور العلماء، وتعقب بان ما قاله مالك ثبت مرفوعا عن يزيد بن ثابت رضي الله عنه قال قال انما نهى رسول الله ﷺ عن الجلوس علي القبر لحدث غائط او بول اخرج الطحاوي، د دي نه پس ئي بيا د ازهار نه دا نقل كړى دي چه اولې دا ده چه دواړه دي ممنوع كړي شى، جلوس للحدث د تحريم دپاره او مطلق جلوس د تنزيه دپاره وهذا تفصيل حسن، قاله ابو الطيب

تطيين القبور، وقال الشافعي لا باس ان يطين القبر، په حاشيه د كوكب كښې دې چه د احنافو په نزد هم د شوافعو په شان ممانعت د تجصيص قبر د دې د تطيين د قبر نه دې فقی شرح السراج للترمذی عن البرجندی: ينبغي ان لا يجصص القبر وما اطينه ففي الفتاوى المنصورية لا باس به خلافا لما يقوله الكرخي، وفي المضمرة، المختار انه لا يكره آه یعنی په ختې سره كه قبر ليو كړې شي نو په دې كښې هيڅ بدې نشته چه د قبر خاوره په ځانې باندي ولاړه وي، په هوا او بهيدو سره ضائع نه شي او دريم څيز په حديث كښې په قبر باندي د آبادي كولو نه ممانعت دې، په بذل كښې ليكلي دي نقلا عن القاري چه نهې د بناء نه د كراهت دپاره ده په دې شرط چه هغه مقبره خپل ملك وي، او كه مقبره موقوفه وي نو په هغې كښې د حرمت دپاره دې، تورپشتي وائي چه په بناء على القبر كښې دوه احتمالات دي يا خو دا چه په هغې باندي كانړي وغيره كيخودلې شي، دويم دا چه په قبر باندي خيمه قائم كړې شي او دا دواړه ممنوع دي لعدم الفائدة فيه.

[۳۲۲۶] () حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، وَعُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ سَلْمَانَ بْنِ مُوسَى، وَعَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ، عَنْ جَابِرٍ، بِهَذَا الْحَدِيثِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ عُمَانُ: أَوْزَادَ عَلَيْهِ، وَزَادَ سَلْمَانُ بْنُ مُوسَى: أَوْ أَنْ يُكْتَبَ عَلَيْهِ، وَلَمْ يَذْكُرْ مُسَدَّدٌ فِي حَدِيثِهِ: أَوْزَادَ عَلَيْهِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: خَفِيَ عَلَيَّ مِنْ حَدِيثِ مُسَدَّدٍ حَرْفٌ وَأَنَّ

جابر بن عبد الله رضي الله عنه د تيرروايت په شان روايت بيان كړي دي. امام ابوداود وئيلي دي چه دمسدديه روايت د... وان، لفظ ماته ظاهره كړې شو.

قوله: ﴿ نهې ان يقعد على القبر وان يقصص وينى عليه ﴾ (قال عثمان او يزاد عليه) يعني د دې جملې زيادت د عثمان په روايت كښې دې د مسدد په روايت كښې نه دې، د دې جملې مطلب په ظاهر كښې دا دې چه د قبر په اوچتوالي كښې زيادت كول په مقدار دشبر سره، (او ان يكتب عليه) يعني په يو كانړي باندي د مړي نوم وغيره يا بل څيز د الله او رسول نوم د برکت دپاره ليكلو سره هلته نصب كول مناسب نه دي، قال ابوالطيب السندي في شرح الترمذی: يحتمل النهي عن الكتابة مطلقا ككتابة اسم صاحب القبر وتاريخ وفاته، او كتابة شيء من القرآن واسماء الله تعالى ونحو ذلك للتبرك لاحتمال ان يوطأ او يسقط على الارض فيصير تحت الارجل آه په حاشية د ترمذی كښې هم داسې ليكلي شوي دي چه دمنع علت د بې حرمتي ويږه ده لثلا يبول عليه كلب او غيره... والحديث اخرجه مسلم والترمذی والنسائي وابن ماجه بنحوه.

[۳۲۲۷] () حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شَهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: " قَاتِلِ اللَّهُ الْيَهُودَ، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ "

دابوهريرة رضي الله عنه نه روايت دې فرمائي چه رسول پاك صلي الله عليه وسلم فرمائي دي: يهوديان دي الله تعالى هلاك كړي دخپلو انبياؤ د قبرونونه ئې جوماتونه جوړ كړي دي.

١: انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ٢٢٧٤، ٢٧٩٦) (صحيح)

٢: صحيح البخاري/ الصلاة ٥٤ (٤٢٧)، صحيح مسلم/ المساجد ٣ (٥٣٠)، سنن النسائي/ الجنائز ١٠٦ (٢٠٤٩)، (تحفة الأشراف: ١٣٢٣٣)، وقد أخرجه: مسند احمد (٢٤٦٢، ٢٦٠، ٢٨٤، ٢٨٥، ٣٦٦، ٣٩٦) (صحيح)

شرح الحديث:

قوله: ﴿ قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُودَ، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ ﴾ (۱) یعنی الله پاک دې هلاک کړی یهود چه هغوی د خپلو انبیاء کرامو ﷺ د قبرونو نه مسجدونه جوړ کړل، یا خو واقعه په قبر باندي مسجد جوړول مراد دی ځکه چه په قبر باندي مسجد جوړ کړې شی نو قبر به په مسجا کښې دننه راشی چه د هغې نه صلوة الی القبور لزمیږی، او یا دا چه د بناء مسجد نه مراد هم دا دې قبور انبیاء طرف ته مونه کول والمصنف حمل الحديث علی المعنی الاول کم يظهر من الترجمة، كتب الشيخ فی البذل: لعنهم رسول الله ﷺ علی ذلك لانه يشابه عبادة الاصنام آه دا حدیث په صحیح مسلم کښې هم دې او په هغې کښې د یهود نه پس د نصاری زیادت دې، په دې باندي هم اشکال دې چه د انبیاء د نصاری قبر په زمکه باندي چرته دې؟ د دې جواب دا ورکړې شوې دې چه په یو روایت کښې د انبیاء هم نه پس د ﴿ وصالحیهم ﴾ زیادت دې، په دغه زیادت سره اشکال حل کیږی، د انبیاء تعلق به د یهودو سره شی او د صالحین تعلق به د نصاری سره. والحديث اخرجہ مسلم والنسائي، قاله المنذرى

بَابُ فِي كَرَاهِيَةِ الْقُعُودِ عَلَى الْقَبْرِ

په قبر باندي د کیناستلو د ممانعت بیان

[۳۲۲۸] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا يَجْلِسُ أَحَدُكُمْ عَلَى جَمْرَةٍ فَتَحْرُقَ ثِيَابَهُ حَتَّى تَخْلُصَ إِلَى جِلْدِهِ، خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَجْلِسَ عَلَى قَبْرِ".

د ابو هريرة رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه رسول پاک صلي الله عليه وسلم فرمائیلى دى: كه چرې يو كس په تاسو كښې دا ورپه سكرونه باندي كيني او جامې ئې اوسوزي او خرمني ته ئې اور ورسپري نودده دپاره خه ده ددې نه چه دې په قبرباني كيني ﴿ لان يجلس احدكم على جمرة الخ ﴾ خو دا خبره چه په تاسو كښې يو انسان په سكروتو كيني او د هغه جامي اوسوزي او د هغې ضرر د هغه خرمني ته اورسي دا غوره ده د دې نه چه هغه په قبر باندي كيني، يعنى د انجام اخروي په اعتبار سره

[۳۲۲۹] (۳) حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى الرَّازِيُّ، أَخْبَرَنَا عَيْسَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَعْنِي ابْنَ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ، عَنْ بُسَيْرِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ، قَالَ: سَمِعْتُ وَائِلَةَ بْنَ الْأَسْقَمِ، يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا مَرْثَدٍ الْقَنْوِي، يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ

(۱) قلت وفي الترمذي ص ۴۳ لعن رسول الله ﷺ زائرات القبور والمتخذين عليها المساجد، وفي حديث الباب اتخذوا قبور انبيائهم مساجد فهنا امران اتخاذ المسجد علي القبر معناه ظاهر والامر الثاني اتخاذ القبر مسجدا، وهو يحتمل معنيين ان يسجد لله تعالي متوجها الي القبر تعظيما للقبر بحيث يجعله قبلة والثاني ان يسجد للقبر فالاول شرك خفي والثاني شرك جلي كذا يستفاد من الشروح

(۲) تفرد به أبو داود، (تحفة الأشراف: ۱۲۶۳۸)، وقد أخرجه: صحيح مسلم للجناز ۲۳ (۹۷۱)، سنن النسائي للجناز ۱۰۵ (۲۰۴۶)، سنن ابن ماجه للجناز ۴۵ (۱۵۶۶)، مسند احمد (۳۱۱/۲، ۳۸۹، ۴۴۴، ۵۲۸) (صحيح)

(۳) صحيح مسلم للجناز ۲۳ (۹۷۲)، سنن الترمذي للجناز ۵۷ (۱۰۵۰)، سنن النسائي للقبلة ۱۱ (۷۶۱)، (تحفة الأشراف: ۱۱۱۶۹)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱۳۵/۴) (صحيح)

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَجْلِسُوا عَلَى الْقُبُورِ، وَلَا تَصَلُّوا إِلَيْهَا".

د ابومرثد غنوي رضي الله عنه نه روایت دې فرماني چه درسول پاک صلي الله عليه وسلم نه مي اوريدلي چه فرمائيلي نې وو: په قبرونو باندي مه کيني اومه قبرونوته مخامخ مونخ کوي. اخرجه مسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

﴿ لا تجلسوا على القبور ولا تصلوا اليها ﴾ يعنى نه خو په قبرونو باندي ناسته کولو سره د هغې بې حرمتي کوي او نه هغې طرف ته مونخ کولو سره د هغې بې خايه تعظيم، د افراط او تفريط دواړو نه خان بچ کړي، په جلوس على القبر باندي کلام په تير شوي باب کښې تير شوي دې اخرجه مسلم والترمذى والنسائي، قاله المنذرى

بَابُ الْمَشْيِ فِي النَّعْلِ بَيْنَ الْقُبُورِ

د پيزار سره په قبرونو باندي د گرځيدو بيان

د امام احمد رضي الله عنه په نزد په قبرستان کښې د خپلو سره گرځيدل مکروه دي، او د ابن حزم ظاهري رضي الله عنه په نزد نعل سبتي په خپو کولو سره تلل مکروه دي، ځکه چه په حديث کښې چه کوم منع ده هغه په سبتي پيزار باندي دي، او د جمهور علماء کرامو او ائمه ثلاثه په نزد په قبرستان کښې د خپلو سره گرځيدل بغير د کراهت نه جائز دي، مصنف رضي الله عنه په دې باب کښې دوه احاديث ذکر کړي دي د رومي حديث نه د حنابله د مسلک تائيد کيږي، او د دويم حديث نه د جمهورو د مسلک يعنى د جواز

[۲۲۳۰] (۱) حَدَّثَنَا مَهْلَبُ بْنُ بَكَّارٍ، حَدَّثَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ شَيْبَانَ، عَنْ خَالِدِ بْنِ سَمِيرِ السَّدُوسِيِّ، عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهْيِكَ، عَنْ بَشِيرِ مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ اسْمُهُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ زَحْمَ بْنَ مَعْبِدٍ، فَهَذَا جَرَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "مَا اسْمُكَ؟" قَالَ: زَحْمٌ، قَالَ: بَلْ أَنْتَ بَشِيرٌ، قَالَ: بَيْتِي أَنَا أَمَا شَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مَرَّ بِقُبُورِ الْمُشْرِكِينَ، فَقَالَ: لَقَدْ سَبَقَى هَؤُلَاءِ خَيْرًا كَثِيرًا، ثَلَاثًا، ثُمَّ مَرَّ بِقُبُورِ الْمُسْلِمِينَ، فَقَالَ: لَقَدْ أَدْرَكَ هَؤُلَاءِ خَيْرًا كَثِيرًا، وَحَانَتْ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَظْرَةٌ، فَأَذَارَ جُلَّ يَمْنَى فِي الْقُبُورِ عَلَيْهِ نَعْلَانِ، فَقَالَ: يَا صَاحِبَ السَّبْتَيْنِ، وَنَحَكَ، أَلَيْ سَبْتَيْتِكَ، فَنَظَرَ الرَّجُلُ، فَلَمَّا عَرَفَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، خَلَعَهُمَا، فَرَمَى بِهِمَا".

بشير بن نهيك نه روایت څوك چه دنبي عليه السلام ازاد كړې شوې غلام وو، د جاهليت په زمانه كښې دده نوم زخم وو بيا ئې دنبي عليه السلام سره هجرت او كړو نبي عليه السلام ترې تپوس او كړو نوم دې څه دې، ده او وئيل زخم، نبي عليه السلام ورته او وئيل ته بشير ئې، فرماني چه زه دنبي عليه السلام سره روان وم په دې وخت كښې نبي عليه السلام دمشركانو په قبرونو باندي تير شو وئې فرمائيل داخل د لوئې كاميابي نه مخكښې رخصت شوي دي اودا خبره ئې درې ځل او فرمائيله بيانبي عليه السلام دمسلمانانو د قبرونو په خوا كښې تير شو وئې فرمائيز دي خلقو كاميابي حاصله كړي. ده په دې وخت كښې نبي عليه السلام اچانك يو كس اوليدو چه د پيزار سره د قبرونو په مينځ كښې گرځيدو نبي عليه السلام ورته او فرمائيل اي پيزار والا په تا افسوس دې، پيزار اوباسه، ده چه

۱: سنن النسائي الجناز ۱۰۷ (۲۰۵۰)، سنن ابن ماجه الجناز ۴۶ (۱۵۶۸)، (تحفة الأشراف: ۱۰۲۱)، وقد أخرجه: مسند احمد (۸۳/۵، ۸۴، ۲۲۴) (حسن)

او کتل نووئي پيژندو چه نبي ﷺ دې نو پيزار ئې اوويستل او وئي غورخول.
 ﴿ قال بينما انا اماشي رسول الله ﷺ مر بقبور المشركين فقال لقد سبق هؤلاء خيرا كثيرا.

ثلاثا، ثم مر بقبور المسلمين فقال لقد ادرك هؤلاء خيرا كثيرا ﴾

بشیر بن معبد رضی اللہ عنہ فرمائی چه یو ورځ زه د رسول الله ﷺ سره روان اوم چه رسول الله ﷺ د مشرکانو په بعض قبرونو باندې تیر شو نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه دې خلقو د خان نه روستو خیر کثیر پریخودلو او مخکښې لارل، یعنی هغه ئې حاصل نه کړو دا خبره رسول الله ﷺ درې کرته او فرمائیله، بیا رسول الله ﷺ د مسلمانانو په بعض قبرونو باندې ورتیر شو، د هغوی په باره کښې رسول الله ﷺ او فرمائیل چه دې خلقو ته خیر کثیر ملاؤ شو بیا ناخپه د رسول الله ﷺ نظر په یو داسې سړی باندې اولگیدو چه په قبرستان کښې د پیزار سره گرځیدو، په دې باندې رسول الله ﷺ او فرمائیل ﴿ یاصحاب السبئین ﴾ خپل سبتی پیزار اوباسه هلاک شی هغه چه کله او کتل چه دا خبره رسول الله ﷺ او کړه نو فوراً ئې ویستلې او وې غورخولې. اخرجہ النسائی وابن ماجه قاله المنذری

[۳۲۳۱] () حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمَانَ الْأَنْبَارِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ يَعْنِي ابْنَ عَطَاءٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ: "إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ، وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ، إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قُرْعَ نِعَالِهِمْ".

انس رضی اللہ عنہ دنبي ﷺ نه روایت کوی چه فرمائیلی ئې دی کله چه مړ په خپل قبر کښې کیخودلې شي او دده ملگری دده د دفن کولونه پس واپس روان شی نو هغه د دوی د پیزار کشار آوری.

﴿ عن انس رضی اللہ عنہ عن النبي ﷺ الخ ﴾ یعنی رسول الله ﷺ او فرمائیل چه کله مړی لره دفن کولو نه پس د هغه متعلقین واپس کیږي ﴿ انه لیسع قرع نعالهم ﴾ نو هغه مړې په قبر کښې د هغوی د خپلو د کشاری آواز آوری.

د دې نه معلومه شوه چه مشی بین القبور فی النعل جائز ده لکه چه د جمهورو مذهب دې، او د رومی حدیث جواب د جمهورو د طرف نه په ډیرو طریقو ورکړې شوې دې اول دا چه هغه په اولویت باندې محمول دې، او دا د جواز په بیان باندې، یا دا چه په هغه حدیث کښې نهی د خیلاء د وجې نه وه چه هغه سړی سبتی خپلئ په خپو کړې په تکبر روان وو، په هغه زمانه کښې به سبتی پیزار غوره شمیر کیدلو، یعنی د څرمنې پیزار صفا چه په هغې باندې وینسته نه وی، یا دا چه هلته کښې نهی د قدر د وجې نه وه، د هغه پیزار به ناپاک وو، والله تعالی اعلم بالصواب

والحدیث اخرجہ البخاری ومسلم والنسائی، قاله المنذری.

۱: صحیح البخاری/الجنائز ۶۷ (۱۳۳۸)، ۸۶ (۱۳۷۳)، صحیح مسلم/الجنة ۱۷ (۲۸۷۰)، سنن النسائی/الجنائز ۱۰۸ (۲۰۵۱)، (تحفة الأشراف: ۱۱۷۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱۲۶۳، ۲۳۳)، ویاتی هذا الحدیث فی السنة (۴۷۵۱)، (۵۷۵۲) (صحیح)

باب فِي تَحْوِيلِ الْمَيِّتِ مِنْ مَوْضِعِهِ لِلْأَمْرِ بِحَدَثٍ

د ضرورت په وجه مړې د قبر نه د ويستلو بيان

د دې نه مخکښې باب تير شوې دې «باب الميت يحمل من ارض الى ارض» و تقدم
هناك بيان الفرق بين الترجمتين.

[۳۲۳۲] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ أَبِي مَسْلَمَةَ، عَنْ أَبِي نَضْرَةَ، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: "دُفِنَ مَعَ أَبِي رَجُلٍ، فَكَانَ فِي نَفْسِي مِنْ ذَلِكَ حَاجَةٌ، فَأَخْرَجْتُهُ بَعْدَ سِتَّةِ أَشْهُرٍ، فَمَا أَنْكَرْتُ مِنْهُ شَيْئًا، إِلَّا شَعِيرَاتٍ كُنَّ فِي لِحْيَتِهِ وَمَا يَلِي الْأَرْضَ".

د جابر رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی چه زما د پلار سره يو بل کس دفن کړې شوې وو او زما په زړه کښې دا ارمان وو چه جدانې کرم نوشپږ مياشتې پس مې د قبر نه وويستو دهغه په هيڅ يوڅيز کښې تبديلي نه وه راغلي البته د گيري يوڅو ويښته چه د زمکې سره لگيدلي وو دهغوی حالت بدل شوې وو.

«عن جابر رضي الله عنه قال دفن مع ابي رجل فكان في نفسي من ذلك حاجة»

جابر رضي الله عنه فرمائی چه زما والد صاحب چه په جنگ احد کښې شهيد شوې وو، د هغوی سره يو بل مړې هم دفن کړې شوې وو په يو قبر کښې، هغه فرمائی چه زما په زړه کښې د دې احساس وو (يعني هغوی غوښتل چه د هغوی پلار دې په خپل قبر کښې ځانله وي) هغوی فرمائی چه ما د هغوی بدن د قبر نه شپږ مياشتې پس راويستلو، نو ما د هغوی په بدن کښې هيڅ تغير بيا نه موندلو سوا د هغوی د گيري د څو ويښتنو نه چه د زمکې سره يو ځانې شوې وو.

په دې حديث کښې تحويل د ميت پس د دفن نه ذکر شوې دې، په دې کښې مذاهب وغيره په رومي باب کښې تير شوې دي.

باب فِي الثَّنَاءِ عَلَى الْمَيِّتِ

د مړې د تعريف کولو بيان

[۳۲۳۳] (۱) حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَامِرٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "مَرُّوا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْزَرَةٍ، فَأَتْنُوا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ: وَجِبَتْ، ثُمَّ مَرُّوا بِآخَرِي، فَأَتْنُوا عَلَيْهَا شَرًّا، فَقَالَ: وَجِبَتْ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ شُهَدَاءٌ".

ابو هريره رضي الله عنه نه روایت دې فرمائی دنبي صلى الله عليه وسلم په خوا کښې يوه جنازه تيره شوه او دهغې تعريف ئې کور نبي صلى الله عليه وسلم او فرمائيل واجب شو (بخشش او جنت) بيا يوه بله جنازه دهغه په خواه کښې تيره کړې شوه هغوی ددغي جنازي بد وئيل نبي صلى الله عليه وسلم او فرمائيل واجب شو (دوزخ) او وئې فرمائيل په تاسو کښې هريو کس په بل باندي گواه دې.

(۱): تفرد به ابو داود، (تحفة الأشراف: ۳۱۱۰) (صحیح الإسناد)

(۲): سنن النسائي للجناز ۵۰ (۱۹۳۵)، (تحفة الأشراف: ۱۳۵۲۸)، وقد أخرجه: سنن ابن ماجه للجناز ۲۰ (۱۴۹۱)، مسند احمد (۲/۲۶۱، ۲۶۶، ۴۷۰، ۴۹۹، ۵۲۸) (صحیح)

« عن ابی هريرة رضي الله عنه قال مروا على رسول الله ﷺ بجنزة فاثنوا عليها خيرا فقال وجبت، » یعنی د رسول الله ﷺ مخکښې خلقو یو جنازه یوره حاضرینو د هغه مړی نیکی بیان کړه نو رسول الله ﷺ او فرمائیل چه د هغه دپاره جنت واجب شو، بیا په بل وخت کښې یوه بله جنازه تیره شوه د هغوی مخې ته خلقو د هغه مړی شریبان کړو نو رسول الله ﷺ او فرمائیل د هغه دپاره جهنم واجب شو، بیا رسول الله ﷺ ارشاد او فرمائیلو چه بیشکه بعض مسلمانان د نورو مسلمانانو په حق کښې گواهان دی، یعنی داسې گواهان چه د هغوی گواهی د الله پاک په نزد معتبر ده، او د صحیحینو په روایت کښې دی « انتم شهداء الله فی الارض » و فی روایة « المومنون شهداء الله فی الارض » د دې حدیث په شرح کښې ملا علی قاری رحمته الله علیه فرمائی چه دې حضراتو چه د جنازې په باره کښې کوم شهادت ورکړې وو په هغې باندې رسول الله ﷺ د دې گواهانو تزکیه او فرمائیله نو اوس ظاهره خبره ده چه د صحابه کرامو په شان خلقو شهادت وی او بیا د رسول الله ﷺ په شان انسان د هغه گواهانو تزکیه کوی نو یقینا د هغې نفع او اثر د مشهود له په حق کښې ښکاره کیدل یقینی دی.

د دې نه معلومه شوه چه د دیانت دارو او نیکو خلقو گواهی د یو مړی په باره کښې د خیر یا د شر د الله پاک په نزد معتبر ده اگر چه د واقع خلاف وی، الله پاک د مومنانو د گواهی لحاظ ساتی (خود خالص دنیا دارو خلقو گواهی نه ده مراد) او د دې تائید د دې نه کیږی چه یو خل داسې اوشو چه صحابه کرامو رضي الله عنهم د رسول الله ﷺ مخکښې د یوې جنازې تعریف او فرمائیلو، لږ ساعت پس جبرائیل عليه السلام رسول الله ﷺ ته تشریف راوړو او هغوی او فرمائیل یا محمد ان صاحبکم لیس کما یقولون الخ... یعنی دا مړی داسې نه دې څنگه چه دا خلق د هغه په باره کښې وائی ځکه چه د هغه ظاهری حالت بل څه وو او باطنی بل څه، ولكن الله صدقهم فيما یقولون وغفرله مالا یعلمون، یعنی کومه نیکی چه واقعی په دې مړی کښې وه کومه چه صحابه کرامو رضي الله عنهم بیان کړې وه الله پاک په هغه نیکی کښې د صحابه کرامو رضي الله عنهم تصدیق کولو سره، او د کوم څیز چه دوی ته خبر نه وو د هغې معاف کولو سره د شهادت موافق معامله او کړله (بذل) د مخلوق وینا د الله پاک اعلان دې، یعنی کوم انسان ته چه ټول خلق ښه وائی نو هغه انشاء الله ښه دې، یا کم از کم الله پاک د هغه سره د ښه خلقو معامله کوی. والحديث اخرجه النسائی، وقد اخرجه البخاری ومسلم والنسائی من حدیث ثابت البنانی عن انس رضي الله عنه، قاله المنذری.

باب فی زیارة القبور

د قبرونو د زیارت کولو بیان

په دې سلسله کښې مصنف رحمته الله علیه دوه بابونه قائم کړی دی، دا رومې باب په حق الرجال کښې دې، دویم باب په حق د نساء کښې دې، د دې نه په مخکښې باب کښې دی رسول الله ﷺ فرمائی « نهیتکم عن زیارة القبور فزوروا فان فی زیارتها تذکرة » یعنی رسول الله ﷺ فرمائی چه ما تاسو ټول قبرستان ته د تلو نه منع کړی وی خو اوس وایم چه هلته خانې ځکه چه په زیارة قبور سره د خپل مرگ او د آخرت یاد تازه کیږی.

[۳۲۳۴] حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلْمَانَ الْأَنْبَارِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبِيدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ كَيْسَانَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: "أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّرَ أَبِي، فَكَبَّرَ وَأَبْكَى مِنْ حَوْلِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اسْتَأذَنْتُ رَبِّي تَعَالَى عَلَى أَنْ أَسْتَغْفِرَ لَهَا، فَلَمْ يُؤْذَنْ لِي، فَاسْتَأذَنْتُ أَنْ أُزَوِّرَ قَبْرَهَا، فَأَذِنَ لِي، فَزَوَّرُوا الْقُبُورَ، فَأَتَيْنَا تَذْكِيرًا بِالْمَوْتِ".

د ابوهريره رضي الله عنه نه روایت دي فرمائی چه نبی صلی الله علیه و آله دخپلي مور دقبر زیارت اوکړو وښي ژړل اونور خلق ښي هم وژړول څوک چه بده خواته وو نبی صلی الله علیه و آله او فرمائیل مادخپل رب نه اجازت وغوښتو چه زه دخپلي مور دپاره دبخبښي دعا وغواړم لیکن ماته اجازت اونکړي شو مادخپل رب نه اجازت اوغوښتو چه زه دخپلي مور دقبر زیارت اوکړم نواجازت راته را کړي شو او مونږ ته ښي او فرمائیل تاسو د قبرونو زیارت کوي ځکه چه په دي سره مرگ راياديږي.

[۳۲۳۵] حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا مَعْرَفُ بْنُ وَاصِلٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ دِنَارٍ، عَنْ ابْنِ بَرِيْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ، فَزُورُوهَا، فَإِنَّ فِي زِيَارَتِهَا تَذْكِيرًا".

ابو بريده دخپل پلار نه روایت کوي فرمائی چه رسول الله فرمائيلي دي ماتاسو د قبرونو د زیارت کولونه منع کړي وي مگر اوس زیارت کوي ځکه چه په دي سره مرگ او اواخت راياديږي.

په دي حديث کښي ناسخ او منسوخ دواړه جمع دي، روميې زیارت قبور ممنوع وو، روستو رسول الله صلی الله علیه و آله د دي نه صرف اجازت ورکړو بلکه ترغيب ښي ورکړو، او دا دواړه خبرې خپله په دي حديث کښي جمع دي، د دي حديث په شرح کښي شارحينو د زیارة القبور للرجال په باره کښي د علماء کرامو اجماع ليکلې ده خو په دي کښي لږ اختلاف دي کوم چه به وړاندي راشي خو د زنانو په باره کښي اختلاف دي چه په دي اجازت کښي هغوی هم داخلي دي يا نه؟ د جمهورو په نزد چه په هغوی کښي امام شافعي رحمته الله علیه او مالک رحمته الله علیه هم دي په دي کښي زاننه هم داخلي دي، د احنافو اصح قول هم دا دي دپاره د بودي گانو زنانو دون الشاب وان قيل بالجواز مطلقا ايضا وسياتي المزيد عليه، د امام احمد رحمته الله علیه نه په دي کښي دوه روايتونه دي مصنف رحمته الله علیه د زیارة النساء دپاره ځانله مستقل باب قائم کولو سره په هغې کښي چه کوم حديث ذکر کړي دي هغه د منع دي ﴿لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَائِرَاتِ الْقُبُورِ وَالْمُتَخَذِينَ الْخ﴾ د مصنف رحمته الله علیه ميلان د عدم جواز طرف ته معلوميري وفي الاوجز ۵۳۱/۲ قال الحافظ قال النووي تبعاً للعبدري والحازمي وغيرهما : اتفقوا على ان زيارة القبور للرجال جائزة.... كذا اطلقوا وفيه نظر، حافظ وائي چه په دي کښي د مرو په حق کښي هم اختلاف روایت کړي شوي دي پس په مصنف ابن ابی

شيبه کښي د ابن سيرن، نخعي او شعبي رضي الله عنهم نه د کراهت روایت کړي شوي دي، قال الحافظ : وكان هؤلاء لم يبلغهم الناسخ، او د دي بالمقابل د ابن حزم رحمته الله علیه په نزد زیارة قبور واجب دي

١: صحيح مسلم للجناز ٣٦ (٩٧٦)، سنن النسائي للجناز ١٠١ (٢٠٣٦)، سنن ابن ماجه للجناز ٤٨ (١٥٧٢)، تحفة الأشراف: (١٣٤٣٩)، وقد أخرجه: مسند احمد (٤٤١/٢) (صحيح)

اگر چه په عمر کښې يو ځل وي،

وفي الشرح الكبير من فروع المالكية. جاز زيارة القبور بل هي مندوبة بلا حد بيوم او مقدار ما يمكث عندها، قال الدسوقي: ذكر في المدخل في زيارة النساء للقبور ثلاثة اقوال المنع والجواز بشرط الستر والتحفظ والثالث الفرق بين المتجالة والشابة اه، وفي الدرالمختار لا بأس بزيارة القبور ولو للنساء، قال ابن عابدين قوله لا بأس بل تندب كما في البحر، وقوله ولو للنساء قيل تحرم عليهن والاصح ان الرخصة ثابتة، وجزم في شرح المنية بالكرهية، وقال الخير الرملي ان كان ذلك لتجديد الحزن والبكاء على ما جرت به عاتهن فلا تجوز، وعليه حمل الحديث اللعن، وان كان للاعتبار والترحم فلا بأس اذا كن عجائز، ويكره اذا كن شواب كحضور الجماعة في المسجد، قال ابن عابدين: وهو توفيق حسن آه حضرت سهارنپوري په بذل کښې د زنانو په حق کښې جواز ته ترجيح ورکړې ده بشرط ارتفاع موانع مثلا جزع فزع التبرج بزينة او اضاعت حق زوجيت وغيره، د بعضو رواياتو په بناء، پس د مسلم په روايت کښې دې چه عائشي رضي الله عنها رسول الله ﷺ ته عرض او کړو چه زه د زيارت قبور په وخت کښې کومه دعا لولم نور رسول الله ﷺ او فرمائيل قولي السلام على اهل الديار من المومنين والمسلمين ويرحم الله المستقدمين منا والمستأخرين وانا ان شاء الله بكم للاحقون..... او هم دغه شان د حاکم روايت دې چه فاطمي رضي الله عنها به د خپل تره حمزه رضي الله عنه د قبر زيارت هره جمعه کولو (فتصلی وتبکی عنده) حضرت فرمائی چه د زيارت قبور علت د مرگ ياديدل بيان کړې شوې دې او د دې ضرورت ټولو ته دې سړو او زنانو دواړو ته.

او په دې باندي هم خان پوهول پکار دې چه دا خبره د زيارت قبور للنساء په باره کښې ده او د اتباع النساء الجنائز په باره کښې نه ده (د زنانو جنازي سره قبرستان ته تلل) هغه جائز نه دې، وقد تقدم باب اتباع النساء الجنائز.

حديث ابى هريرة اخرجہ مسلم والنسائي وابن ماجه، وحديث بريدة رضي الله عنه اخرجہ مسلم

والنسائي بنحوه، قاله المنذرى

بَابُ فِي زِيَارَةِ النِّسَاءِ الْقُبُورِ

د بنځودپاره د قبرونو د زيارت کولو بيان

[۳۲۳۶] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُمَادَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ، يُحَدِّثُ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زِيَارَاتِ الْقُبُورِ، وَالْمَأْخِذِينَ عَلَيْهَا الْمَسَاجِدَ وَالسُّرُجَ".

سنن الترمذی/الصلاة ۱۲۲ (۳۲۰)، سنن النسائي/الجنائز ۱۰۴ (۲۰۴۵)، سنن ابن ماجه/الجنائز ۴۹ (۱۵۷۵)، (تحفة الأشراف: ۵۳۷۰)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۱/۲۲۹، ۲۸۷، ۳۲۴، ۳۳۷) (ضعيف)

د ابن عباس نه روايت دې فرمائی چه نبی ﷺ لعنت ونيلى دې په هغه بنځه باندي څوك چه د قبرونو زيارت كوي او څوك چه د قبرونو نه جو ماتونه جوړ كړي او هلته ډيري بلوى.

(۱) صحيح مسلم/الجنائز ۳۶ (۹۷۷)، والأضاحي ۵ (۱۹۷۷)، والأشربة ۶ (۱۹۹۹)، سنن النسائي/الجنائز ۱۰۰ (۲۰۳۴)، الأضاحي ۳۶ (۴۴۴۱)، الأشربة ۴۰ (۵۶۵۴، ۵۶۵۵، ۵۶۵۶، ۵۵۵۷)، (تحفة الأشراف: ۲۰۰۱)، وقد أخرجہ: مسند احمد (۳۵۰/۵، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۶۱) (صحيح)

باب مَا يَقُولُ إِذَا زَارَ الْقُبُورَ أَوْ مَرَّ بِهَا

د قبرستان سره د تیریدو په وخت کښې څه وئیل پکار دي؟

[۳۲۳۷] (۱) حَدَّثَنَا الْقَعْنَبِيُّ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "خَرَجَ إِلَى الْمَقْبَرَةِ، فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ ذَارِقَوْمٍ مُؤْمِنِينَ، وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ".

د ابوهریره رضي الله عنه نه روایت دي فرماني چه نبی عليه السلام مقبري ته لاړو او وئې فرمائیل اي د مومنانو کورنو والا په تاسو دي سلام وي او مون انشاء الله ستاسو سره ملاقات کونکی يو. **﴿ عن ابی هريرة رضي الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم خرج الى المقبرة فقال السلام عليكم دار قوم مؤمنين وانا ان شاء الله بكم لاحقون ﴾**

په دي دعا کښې په **﴿ ان شاء الله ﴾** باندې شراحو کلام کړې دي چه دا استثنا د شک په طور نه ده ځکه چه مرگ خو يقيني دي بلکه دا لفظ متکم دکلام د تحسين په طور باندې دي ذکر کوي، او دا هم وئيلي شوي دي چه کله رسول الله صلى الله عليه وسلم قبرستان ته داخل شونو گويا دا لفظ د دي قسم خلقو په باره کښې د هغوی د ايمان د توقع دپاره راوړلې شو، او وئيلي شوي دي چه دا استثنا د نفس موت په اعتبار سره نه ده بلکه د موت على الايمان په اعتبار سره ده چه انشاء الله مونو په هم په ايمان باندې د خاتمي نه پس هم تاسو سره شامل شو، والحديث اخرجه مسلم والنسائي وابن ماجه، قاله المنذرى

باب الْمُحْرِمِ مَوْتُ كَيْفَ يُصْنَعُ بِهِ

څوك چه د احرام په حالت كښې وفات شي نو څه سره كول پكار دي؟

[۳۲۳۸] (۱) حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِى عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: "أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرَجُلٍ، وَقَصَّتُهُ رَأْسَهُ، فَمَاتَ وَهُوَ مُحْرِمٌ، فَقَالَ: كَفَّنُوهُ فِي ثَوْبَيْهِ، وَأَغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، وَلَا تُخَيِّرُوا رَأْسَهُ، فَإِنَّ اللَّهَ يَبْعَثُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَلْبَسِي"، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: سَمِعْتُ أَحْمَدَ بْنَ حَنْبَلٍ، يَقُولُ فِي هَذَا الْحَدِيثِ: خَمْسٌ سُنَنٌ كَفَّنُوهُ فِي ثَوْبَيْهِ، أَمَى يَكْفَنُ الْمَيِّتَ فِي ثَوْبَيْنِ وَأَغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ، أَمَى إِنْ فِي الْفَسَلَاتِ كُلِّهَا سِدْرًا، وَلَا تُخَيِّرُوا رَأْسَهُ، وَلَا تُقَرَّبُوهُ طَيْبًا، وَكَانَ الْكَفْنُ مِنْ جَمِيعِ الْمَالِ.

د ابن عباس رضي الله عنه نه روایت دي فرماني چه نبی عليه السلام ته يو کس راوړې شو چه اوښ دهغه ورمی مات کړې وو او د احرام په حالت کښې وفات شوي وونې عليه السلام او فرمائیل ده ته دده په

۱: صحيح مسلم الطهارة ۱۲ (۲۴۹)، سنن النسائي الطهارة ۱۱۰ (۱۵۰)، سنن ابن ماجه الزهد ۳۶ (۴۳۰۶)، (تحفة الأشراف: ۱۴۰۸۶)، وقد أخرجه: موطا امام مالك للطهارة ۶ (۲۸)، مسند احمد (۲/۳۰۰، ۴۰۸) (صحيح)
 ۲: صحيح البخاري الجنائز ۱۹ (۱۲۶۵)، ۲۱ (۱۲۶۷)، جزاء الصيد ۲۰ (۱۸۴۹)، ۲۱ (۱۸۵۰)، صحيح مسلم الحج ۱۴ (۱۲۰۶)، سنن الترمذي الحج ۱۰۵ (۹۵۱)، سنن النسائي الجنائز ۴۱ (۱۹۰۵)، المناسك ۴۷ (۲۷۱۴)، ۹۷ (۲۸۵۶)، ۱۰۱ (۲۸۶۱)، سنن ابن ماجه المناسك ۸۹ (۳۰۸۴)، (تحفة الأشراف: ۵۵۸۲)، وقد أخرجه: مسند احمد (۱/۲۱۵، ۲۶۶، ۲۸۶)، سنن الدارمي المناسك ۳۵ (۱۸۹۴) (صحيح)

دې دواړو جامو کښې کفن ورکړئ (لنگ او خادر) اوده - ته دبیرو دپانړو په اوبو باندې غسل ورکړئ اوسرئ په څه شي باندې پټ نه کړئ ځکه چه دقیامت په ورځ به الله تعالی ده لره دلبيک وئیلو په حالت کښې راپورته کوي. ابوداؤد وائی مادامام احمد بن حنبل نه اوریدلی دی چه وئیل ئې په دې حدیث کښې پنځه سنتونه دی یو خودا دې چه په دوه جامو کښې کفن ورکول دویم دبیرو په اوبو باندې غسل ورکول یعنی په هر یو غسل کښې دبیر و پانړي په اوبو کښې شاملول پکار دي دریم داحرام والاكس سرنه پټول څلورم خوشبونه لگول پنځم دتول مال نه کفن ورکول.

یعنی چه د یو سړی د احرام په حالت کښې وفات اوشی نو د هغه سره به د محرم معامله کولې شی که د غیر محرم په شان؟ د شوافعو او حنابله او اهل ظواهر په نزد به هغه سره د محرم معامله کولې شی، یعنی عدم تطیب او عدم تخمیر راس یعنی د کفن نه به د هغه سر ښکاره پریخودلې کیږي او خوشبوئی به هم هغه ته نه شی نزدې کولې، د دې دواړو امامانو استدلال د حدیث الباب نه دې چه د هغې مضمون دا دې: ابن عباس رضی الله عنهما فرمائی چه رسول الله ﷺ ته یو داسې سړې راوستلې شو چه د هغه ست د هغه سورلئ مات کړې وو، یعنی د سورلئ نه غورځیدو سره د هغه ست مات شوې وو او وفات شوې وو او هغه په حالت د احرام کښې وو. رسول الله ﷺ او فرمائیل چه دې هم د دې احرام په کپرو کښې کفن کړئ او غسل ورته ورکړئ او د دة سر مه پټوئ **﴿ فان الله يبعثه يوم القيامة يلي ﴾** دا سړې به د قیامت په ورځ باندې تلبیه ویونکې پاسی یعنی د احرام په حالت کښ.

د احنافو او مالکیانو په نزد به د دې سړی سره هم هغه معامله کولې شی کومه چه د غیر محرم سره کولې شی ځکه چه احرام یو عمل دې او په مرگ باندې ټول اعمال منقطع کیږي لکه چه د مشهور حدیث نه ثابت ده^(۱) پاتې شو دا حدیث نو دا محمول دې خاص هم د هغه سړی په حق کښ، او دلیل دخصوصیت د رسول الله ﷺ دا قول دې **﴿ فانه يبعث يلي ﴾** د بل محرم په باره کښې دا هرگز نه شی وئیلې کیدې چه **﴿ انه يبعث يلي ﴾** دا خود اخبار بالغیب د قبیلې نه دې، دا حدیث مصنف رضی الله عنه خو راوړې دې په کتاب الجنائز کښې او امام ترمذی رضی الله عنه په کتاب الحج کښې او امام بخاری په دواړو ځایونو کښ.

والحدیث اخرجه البخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن ماجه، قال المنذری

(۱) اذا مات ابن ادم انقطع عنه عمله الا عن ثلاث صدقة جارية او علم يتفخ به او ولد صالح يدعو له، قال الزيلعي رواه مسلم وابوداؤد والنسائي في الوصايا والترمذي في الاحكام.

[۳۲۳۹] (۱) حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْمَعْنَى، قَالَا: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَمْرٍو، وَأَيُّوبَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ نَحْوَهُ، قَالَ: وَكَفَنُوهُ فِي ثَوْبَيْنِ. قَالَ أَبُو دَاوُدَ: قَالَ سُلَيْمَانُ: قَالَ أَيُّوبُ: ثَوْبِيهِ، وَقَالَ عَمْرٍو: ثَوْبَيْنِ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ أَيُّوبُ: فِي ثَوْبَيْنِ، وَقَالَ عَمْرٍو: فِي ثَوْبِيهِ، زَادَ سُلَيْمَانُ وَحَدَّثَهُ: وَلَا تُحْتَمِلُوهُ.

دا بن عباس رضي الله عنه نه د تير روايت په شان روايت منقول دې مگر ددي اضافي سره چه كفن ورته ور كړئ په دوه جامو كښې ابوداود وائي دخپل شيخ سليمان نه مې اوريدلى دى هغه دايوب نه چه ددوه جامو ذكر نې كوو. ابو داود وائي ايوب د سليمان نه ثوبيه،، لفظ نقل كړې دې او عمرو د ثوبين لفظ نقل كړې دې ابو عبیده وئيلي دى چه دايوب په روايت كښې ئې ثوبين لفظ دې او د عمرو په روايت كښې ئې ثوبيه لفظ دې او سليمان ورسره دا اضافه كړې ده چه خوشبو ورباندې مه لگوئ.

[۳۲۴۰] (۲) حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ نَحْوَهُ، بِمَعْنَى سُلَيْمَانَ: فِي ثَوْبَيْنِ.

دا بن عباس رضي الله عنه نه د تير روايت په شان روايت منقول دې لكه خرنګه چه د سليمان نه ئې ثوبين لفظ نقل كړې شوې دې،

[۳۲۴۱] (۳) حَدَّثَنَا عُمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: وَقَصَّتْ بَرَجَلٌ مُخْرِمٌ نَاقَتَهُ، فَقَتَلْتَهُ، فَأَتَى بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: "اغْسِلُوهُ وَكَفَنُوهُ، وَلَا تَغْطُوا رَأْسَهُ، وَلَا تَقْرَبُوهُ طَبِيبًا، فَإِنَّهُ يُبْعَثُ يَهُلًا."

دا بن عباس نه روايت دې فرمائي يو كس چه په احرام كښې وو اونې دهغه خټ مات كړو او مړ شو اونې عليه السلام ته راوړلې شونې عليه السلام او فرمائيل ده ته غسل وركړئ او كفن وركړئ اوسر ئې مه پتوئ او دده خواته نزدې خوشبو مه وروړئ ځكه چه دې به د قيامت په ورځ لبيك ويونكي راپورته كولي شي.

الحمد لله كتاب الجنائز پوره شو او د دې خاتمه هم ماشاء الله په داسې حديث باندې اوشوه چه په هغې كښې په ايمان باندې د خاتمې زيرې دې څه چه مو اوليكل الله پاك دې قبول كړي او زمونږ د ټولو دې په ايمان باندې خاتمه بالخير او فرمائي آمين

آخر كتاب الجنائز

[الحمد لله! شپږم جلد ختم شو.]

(۱) انظر ما قبله، (تحفة الأشراف: ۵۴۳۷، ۵۵۸۲) (صحیح)

(۲) انظر حديث رقم: (۳۲۳۸)، (تحفة الأشراف: ۵۵۸۲) (صحیح)

(۳) انظر حديث رقم: (۳۲۳۸)، (تحفة الأشراف: ۵۴۹۷) (صحیح)